सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश : (भाग ३)

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

देवी खण्ड पूर्वार्द्ध

गायत्री प्रयोग
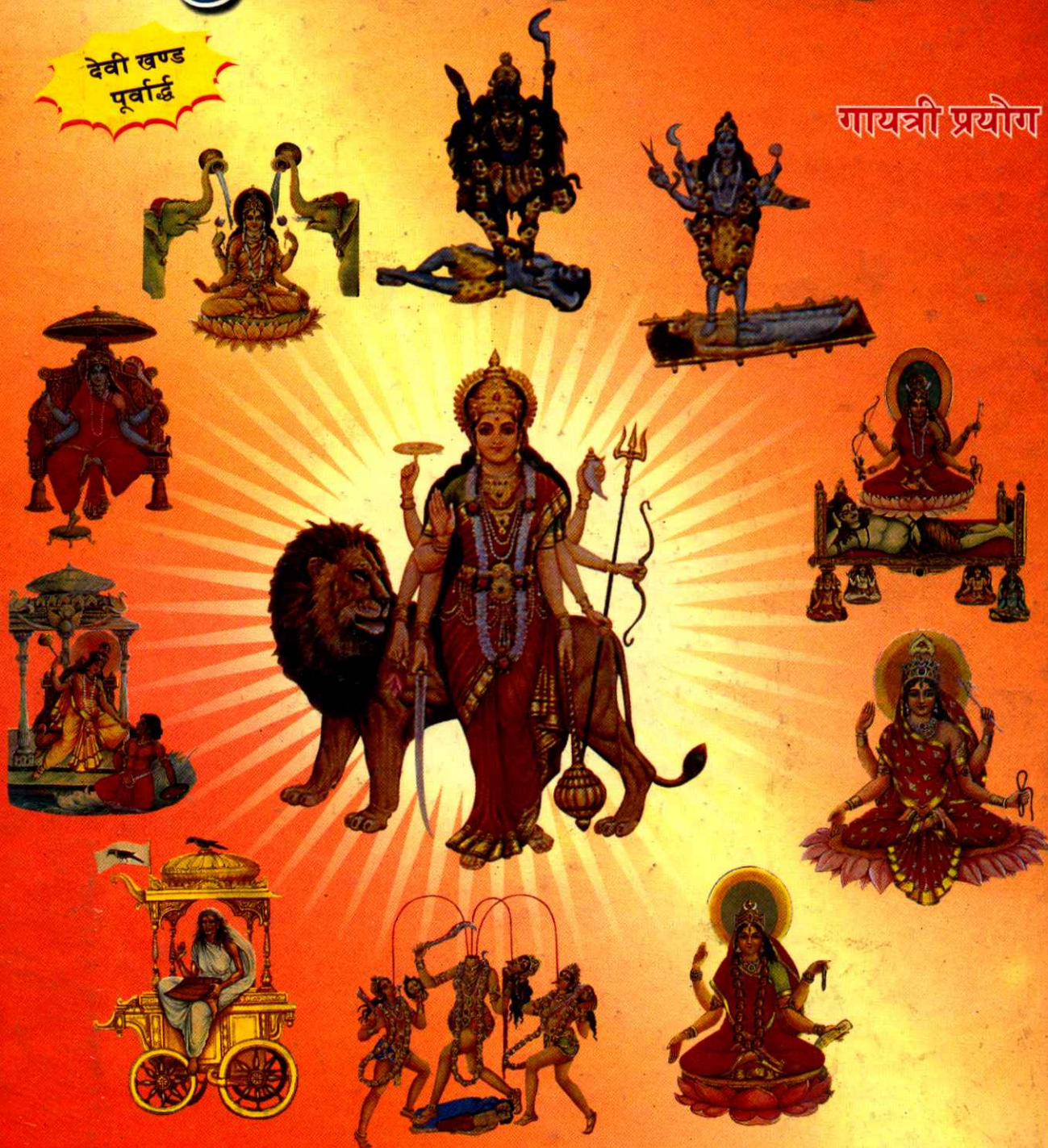
संस्कर्ता एवं प्रकाशक - पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

मयूरेश प्रकाशन - मदनगंज, किशनगढ़ (राज.)
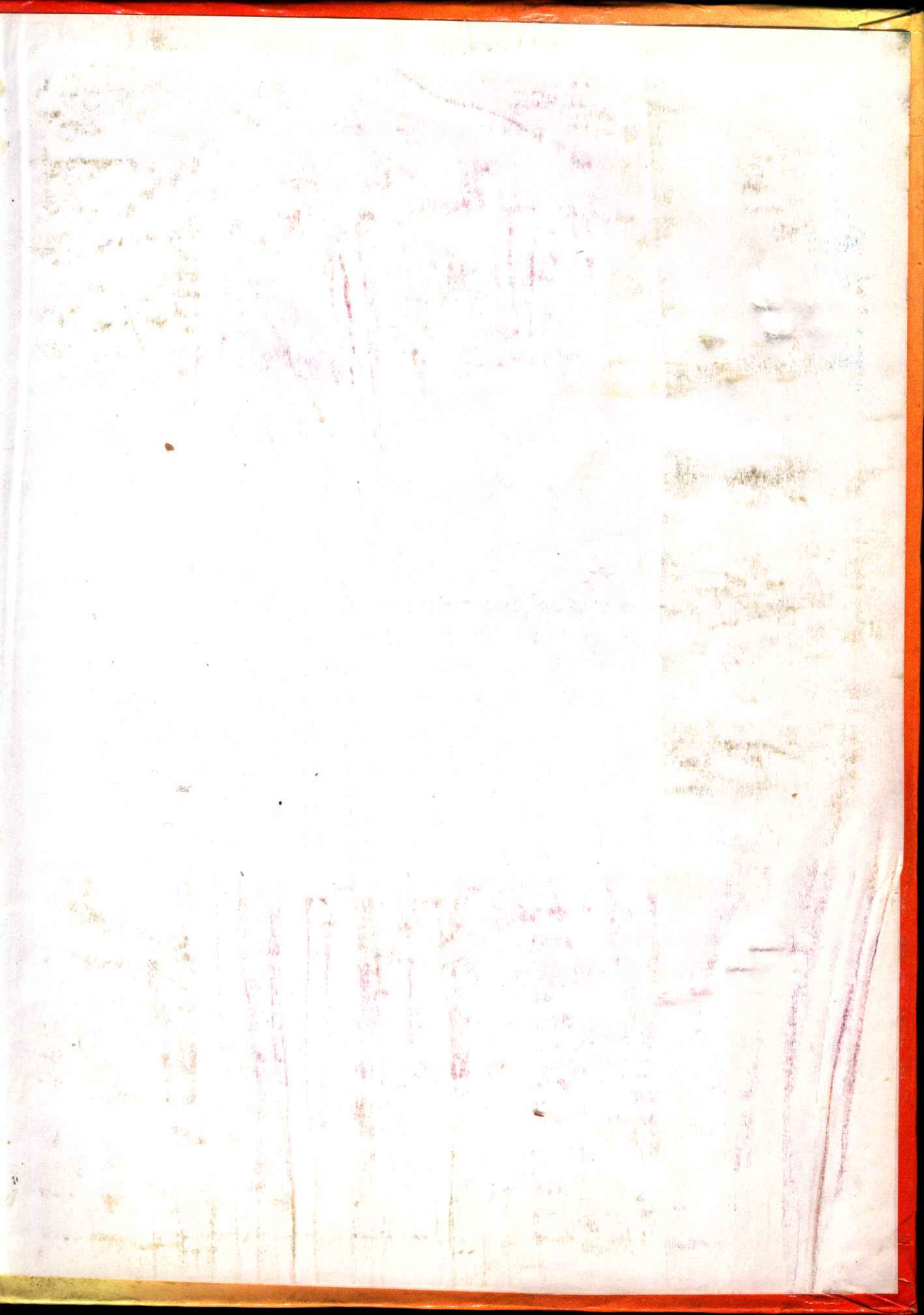
सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (३)

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

'देवीखण्ड पूर्वार्द्ध'

* सविधि गायत्री मन्त्र प्रयोग।
* नव कुमारी पूजा का वृहत् विधान।
* उत्तर व दक्षिण भारतीय नवरात्र विधान का विस्तृत वर्णन।
* दशमहाविद्या एवं नवदुर्गा के आनुभविक प्रयोगों की सरल पुस्तका
* भगवती दुर्गा के विविध स्वरूपों के प्रयोगों का अच्छा उल्लेख है।
* काली, तारा, षोडशी, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगुलामुखी, प्रत्यंगिरा, दुर्गा, गायत्री, मातंगी धूमावती, एवं कमलादि देवियों के यंत्रार्चन का सरल विधान स्तोत्र, कवच, सहस्त्रनाम एवं विविध काम्य प्रयोगों का वर्णन साधकों के हित के लिये किया गया है।

संस्कर्त्ता :
पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

प्रकाशक :
मयूरेश प्रकाशन
मदनगंज–किशनगढ़, जिला–अजमेर (राज.)
फोन – 01463–244198, 9829144050

* प्रकाशक :-
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला - अजमेर (राज.)
✆ : (01463) 244198, 9829144050

प्रथम संस्करण : - सितम्बर २००३
* **तृतीय संस्करण** : - अक्टूबर २००७
* **चतुर्थ संस्करण** : - अगस्त, २००९

* **मूल्य** :- ५००/-
(पाँच सौ रुपये मात्र)

* **लेजर टाईप सेटिंग :**
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
✆ : 9214511897
9214512223

❖ मुख्य प्राप्ति स्थल ❖

१. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर ✆ 2425505
२. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर ✆ 2575532
३. सुधीर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर ✆ 2573655
४. किताब घर, जोधपुर ✆ 2637334
५. रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, बीकानेर ✆ 2549712
६. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली ✆ 23923021
७. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली ✆ 23275344
८. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली ✆ 23273220
९. K.K. गोयल & कम्पनी, दिल्ली ✆ 23253604
१०. सरदार करमसिह, हरिद्वार ✆ 225619
११. सरदार सोहनसिंह, इन्दौर ✆ 2532344
१२. कुल्लुका ज्योतिष केन्द्र, उज्जैन ✆ 4013150
१३. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
१५. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना ✆ 9234797825
१५. खण्डेलवालएण्ड सन्स, वृन्दावन ✆ 2443101
१६. केशव पुस्तकालय, मथुरा ✆ 2401130
१७. गोवर्धन प्रकाशन मथुरा ✆ 2415311
१८. श्रीकृष्ण पुस्तक भण्डार, गया

कोटा, भीलवाडा, उदयपुर, चित्तोड, सीकर, हैदराबाद अहमदाबाद, होशंगाबाद, नीमच, मन्दसौर, भोपाल, रायपुर, ओंकारेश्वर, बडौदा, देवघर(झारखण्ड), विलासपुर लखनऊ, वाराणसी, कुरुक्षेत्र, झाँसी, विलासपुर, कलकत्ता, अहमदाबाद, गया, रायपुर, C.P. Tank बम्बई।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

गुरुदेव श्री श्री श्री १०८ श्री नथमलजी दाधीच कौलाचार्य
श्रीभुवनेश्वरी महाशक्तिपीठ, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

लेखक – पं. रमेश चन्द शर्मा 'मिश्र'

॥ प्रस्तावना ॥

मेरे गुरु कौलाचार्य पं. श्री नथमल जी दाधीच की कृपा एवं सिद्ध पुरुषों की अनुकंपा से तंत्रशास्त्र में मेरी रूचि बढ़ी और साथ ही साहित्य संग्रह एवं शोध की प्रवृत्ति दृढ़ता से जागृत हुई। गुरुजी का मनोसंकल्प मेरे माध्यम से प्रखर होने लगा फलतः तंत्र साहित्य में लेखन का कार्य अभिभूत हुआ।

प्राचीन तंत्र साहित्य गूढ़ भाषा में है, मंत्र प्रयोग की पद्धति भी सीमित श्लोकों में ही परिपूर्ण कर दी गई है, जिनके मर्म का स्पष्टीकरण अच्छे विद्वानों के लिये ही संभव है। अच्छे मुद्रणालयों द्वारा मुद्रित ग्रन्थों में भी प्रयोगों का वर्णन बिना किसी विराम, स्पष्टीकरण व परिशिष्ट के किया गया है, जिससे साधक को किसी प्रयोग को ढूंढने व समझने में बहुत परेशानी व परिश्रम का सामना करना पड़ता है। अतः साहित्य को प्रायोगिक, आनुभविक व सरल हस्तक्रिया युक्त पद्धति से समझाने का प्रयास मैनें अपनी पुस्तकों में किया है।

मंत्र तंत्र यंत्र पर भारतीय मनीषियों का शोध विस्तृत रहा है। उन्होंने कई वैज्ञानिक सुझाव अपनी कृतियों में दिये, जो आज हमारे लिये अप्राप्य है। कुलगुरु परंपरानुसार वे कृतियां कहीं कहीं सुरक्षित हैं किन्तु जो ग्रन्थ प्राचीन काल में मुद्रित हुये उन ग्रन्थों में से वर्तमान समय में उपलब्ध ग्रन्थों पूर्व की अपेक्षा में बहुत न्यूनता है। कई प्रयोगों के विषय में ग्रन्थों के प्रमाण दिये जाते है, परन्तु मैंने देखा है कि रुद्रयामल, विष्णुयामल, तंत्रसार, मंत्रकोष, मंत्रमहोदधि, पुरश्चर्यार्णव, आकाश भैरव कल्प आदि जो वर्तमान में उपलब्ध है, उनमें कई स्थानों पर प्रमाणित प्रयोगों का वर्णन नहीं मिलता है, अतः मूल शोध दुर्लभ है।

ऋषियों ने अपने अपने अनुभव, प्रयोगों के आधार पर तंत्र ग्रन्थों की रचना की। सिद्ध पुरुषों एवं विशिष्ट विद्वानों ने अनेक तंत्र ग्रन्थों का सार संकलित कर स्वतंत्र ग्रन्थों की रचना की। **श्री विद्यारण्य जी परमहंस** ने १८०-२०० तंत्र ग्रन्थों का अवलोकन कर **श्री विद्यार्णव तंत्र** की रचना की। **श्रीमन्महीधर भट्ट** ने **मंत्रमहोदधि** की तथा **श्री माधव भट्ट ने मंत्रमहार्णव** की रचना की जो आज हमारे आदर्श ग्रन्थ हैं, जिनमें अनेक तंत्र ग्रन्थों का सार संकलित है। मैंने यह अनुभव किया कि इन ग्रन्थों में वर्णित प्रयोगों के अतिरिक्त विशिष्ट साधकों को अन्य साहित्य सामग्री की आवश्यकता है, अतः उनका यत्र-तत्र से संकलन करने का प्रयास किया है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु महाकाल संहिता, श्रीविद्यार्णव तंत्र, मंत्र महोदधि, मंत्र महार्णव, हिन्दी तंत्रसार, काली उपासना, श्यामा उपासना, काली कल्पतरु , समयाचार रहस्य, पुरश्चर्यार्णव तंत्र, कालिका पुराण, विश्वसार तंत्र, रुद्रयामल,

सिद्धियामल, ज्ञानार्णव तंत्र, कुब्जिका तंत्र, डामर तंत्र, जयद्रथयामल, कुलार्णव तंत्र, कालीविलास तंत्र, कामधेनु तंत्र, संमोहन तंत्र, मुण्डमाला तंत्र, दक्षिणकाली मंत्र विग्रह, गुह्यकाली तंत्र, रहस्यसार, परा तंत्र, निरुत्तर तंत्र, फेत्कारिणी तंत्र, तोडल तंत्र, कंकालमालिनी तंत्र, मंत्रकोष, शक्तिसङ्गम तंत्र, कुमारी कल्प, योगिनी तंत्र, प्राणतोषिणी तंत्र, कामाख्या तंत्र, नवरात्र कल्पतरु , कालिका पुराण, देवी पुराण, वायु पुराण, मार्कण्डेय पुराण, तारा तंत्र, ताराभक्ति सुधार्णव, तारानित्यार्चन, श्री कल्पद्रुम, बगलामुखी रहस्य, भुवनेश्वरी रहस्य, श्रीविद्यास्तव मंजरी, भुवनेश्वरी स्तव मंजरी, छिन्नमस्ता तंत्रम्, धूमावति तंत्रम्, कमला तंत्रम्, भुवनेश्वरी तंत्र, सुभगोदय, गायत्री तंत्रम्, गायत्री कल्पतरु, दुर्गा तंत्रम्, श्री दुर्गाकल्पद्रुम, अनुष्ठान प्रकाशः, इत्यादि कई ग्रन्थों से मंत्र तंत्र विधान स्तोत्रादि का संकलन कर साधकों की सुविधा हेतु प्रस्तुत किया है।

अन्यत्र बिखरा हुआ तंत्र साहित्य, तंत्र-मंत्र की लौकिक व प्रादेशिक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित होता रहता है। 'चण्डी पत्रिका' प्रयाग, शाक्त साहित्य को प्रकाशित करने में अधिक विश्वसनीय है। चण्डी परिवार वर्षों से इस कार्य में शोधरत है। इस पत्रिका से सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है तदर्थ चण्डी परिवार व उनकी पत्रिका के लेखकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हुँ।

'सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाशः' ग्रन्थ के विस्तृत होने के कारण पहले ही इसके तीन विभाग **(१) पूजा-प्रतिष्ठा, (२) 'काम्य प्रयोग-देव खण्ड' (३) 'काम्य प्रयोग-देवी खण्ड'** अलग-अलग कर दिये गये, किन्तु 'देवी खण्ड' के भी विस्तृत होने के कारण (१) **'पूर्वार्द्ध खण्ड'** (२) **'उत्तरार्ध खण्ड'** में विभक्त कर दिये गये हैं।

'पूर्वार्द्ध खण्ड' में नवदुर्गा का संपूर्ण विधान, चारों नवरात्र का विस्तृत विधान, दशमहाविद्याओं के कई मंत्रों के प्रयोग व स्तोत्रादि विस्तृत क्रम से दिये गये हैं।

'उत्तरार्द्ध खण्ड' 'उप महाद्यिा रहस्य' पुस्तक लेखन के समय करीब ४०० पृष्ठों की रचना की कल्पना की थी। परन्तु भगवति की इच्छानुसार अब यह ग्रन्थ १००० पृष्ठों का हो गया है। इसलिये इसे भी २ भागों में प्रकाशित करेंगे।

भाग प्रथम में सभी देवियों की मातृकायें, भगवती त्रिपुर सुन्दरी की १५ नित्याओं का अर्चन, त्रिपुर सुन्दरी के कई विधान, नवदुर्गा ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का यंत्रार्चन, कौशिकी, अंबिका, शिवदूति का यन्त्रार्चन, १, ८, १०, १८ भुजा देवी का ध्यान व प्रयोग, भद्रा, स्वाहा, स्वधा व षष्ठी देवी, मंगल चण्डी विधान, गायत्री ब्रह्मास्त्र, गायत्री ब्रह्मदण्ड, गुह्यकाली प्रयोग, पार्श्वनाथ, पद्मावति, पञ्चागुलि, वाराही आदि देवियों के प्रयोग दिये गये हैं।

भाग द्वितीय में कादिक्रम की १५ नित्याओं के प्रयोग, कामकला काली, महामाया वैष्णवी (पञ्चमुखी चणडिका) ज्वाला मालिनि प्रयोग, ज्वालादेवी यन्त्रार्चन, कवच, सहस्रनाम, सारिका यन्त्रार्चन, कवच, सहस्रनाम, महाराज्ञि यन्त्रार्चन, कवच, सहस्रनाम, गंगादि देवियों के प्रयोग, शब्दकोष, जिसमें गुप्त संकेतों के हिन्दी अर्थ दिये गये हैं, व अन्य कई दुर्लभ प्रयोग दिये गये हैं।

यह लघु ग्रन्थ पूज्य गुरु की अभिलाषा, इच्छानुसार उनके श्रीचरणों में एवं साधकों की सेवा में समर्पित है।

(पं रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र')

लेखक एवं प्रकाशक

विषय सूची

॥ पात्रासादनादि प्रयोग ॥

॥ श्री दुर्गा तंत्रम् ॥

॥ नवरात्र विधानम् ॥

॥ दक्षिणभारत मते नवदुर्गाभेद रूपाणी ॥

॥ कालिका तंत्रम् ॥

॥ प्रत्यंगिरा तन्त्रम् ॥

॥ श्री तारा तन्त्रम् ॥

॥ ललिता तंत्रम् ॥

॥ भुवनेश्वरी तंत्रम् ॥

॥ भैरवी तंत्रम् ॥

॥ छिन्नमस्ता तंत्रम् ॥

॥ धूमावती तंत्रम् ॥

॥ बगलामुखी तंत्रम् ॥

॥ मातंगी तंत्रम् ॥

॥ कमला तंत्रम् ॥

॥ मिश्रित तंत्रम् ॥

॥ भूमिका ॥

तंत्र-मंत्र साधना के नाम से व्यक्ति सहज ही आसक्त होता है, सोचता है सभी सिद्धियाँ शीघ्र मेरे करतलगत होगी एवं मेरा जीवन आनन्दमय होगा। वस्तुत: तंत्र का मार्ग कठिन है इसमें विशेष व्रत, नियम, तपस्या की आवश्यकता होती है एवं फल प्राप्ती के हेतु धैर्य रखना आवश्यक होता है। कहा गया है कि खड्ग की धार पर चलो या तंत्र के मार्ग को अपनाओ। देव माध्यम से आप अपने कार्य सिद्ध करने की सोचते हैं तो देव की सेवा आराधना में या मंत्र जप में त्रुटि, अपभ्रंश होने पर देव आपको अवश्य दंड देगा। अत: निष्काम उपासना करें।

॥ मंत्र साधना ॥

मंत्र आपके मन को शुद्ध करता है, आत्मा में नया बल का संचार करता है आपके चारों ओर दिव्य प्रकाश का शक्ति पुंज पैदा करता है जो समस्त विघ्नों को एवं पूर्वजन्म के पापों का क्षय कर सर्व प्रकार से अभ्युदय करता है। मंत्र मन को नियंत्रित कर वायु के गमन को उर्ध्वरता करता है एवं चित्त बुद्धि अहं के संयोग से समाधिस्थ होकर परमानन्द को प्राप्त कर अमृत का पान करवाता है। मंत्र जाप वैश्वरी वाणी में जप करने से सामान्य फल तथा उपांशु जप करने से नाभिमंडल में गुंजन प्रारंभ हो जाता है। मानसिक जप करने से हृदयकमल तथा कण्ठ में विशुद्धचक्र जागृत होने लगता है। मंत्र जप में अब पहले से कम समय लगता है। पश्चात् भ्रूमध्य में ध्यान करते हुये जप करें पंचतत्त्वों के रंग, तारे दिव्याकाश का दर्शन इत्यादि अब आपके चित्त को अंत: लोकों की ओर ले जाने के लक्षण हैं।

योगनिद्रा में जप करने का अभ्यास इस समय किया जाय तो उत्तम रहें। साथ ही 'नाद' खुलने से कुछ उत्तम अनुभुति होने लगेगी। मंत्र की गति इस समय तेज हो जाती है। साधक इस समय जप करने के स्थान पर मंत्र का श्रोता हो जाता है, यह अवस्था साधना की उन्नति को दर्शाती है।

ध्यान या स्वप्न में मंत्र के स्वर्णाक्षरों में दर्शन या देव दर्शन होना सामान्य शुरुआत है परन्तु योगनिद्रा या प्रगाढ़ ध्यान में विशिष्ट स्वप्न देखकर जाग उठना यह सब कुछ ठीक अवस्था है।

सहस्त्रार में सहस्त्रदल का भान प्रारंभ में स्वप्नलोक की तरह निचले केन्द्रों में भी होने लगता है जबकि आत्मतत्त्व की गति अभी वहां नहीं पहुंची है। परन्तु इस क्रिया हेतु सतत् अभ्यास रत रहें।

नीचे के केन्द्रों में बिना प्राणायाम बंध लगाना। गर्दन का झुककर हंसली पर दबाव पड़ना, जिह्वा स्वत: उल्टी का होकर तालु से लगना **खेचरी मुद्रा** बनना ये सब बिना प्राणायाम के स्वत: होने लगता है निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है।

ध्यान में हूं हूं या गर्जना के शब्द करना, मेंढक की परह फुदकना, गर्दन में कुकुद का भाग ऊंचा होना, सहस्त्रार में चीटियां चलना, कपाल के १-२ इंच ऊपर तक वायु खिंचाव के लक्षण कुण्डलिनी जागरण के सामान्य लक्षण हैं।

साधक अपने आप को सतत प्रयत्नशील रखे, पुण्य का क्षय नहीं करे तो उन्नति होकर समाधि का मार्ग खुलकर सहस्त्रार में प्रवेश होता है। अजपाजप व निरंतर अभ्यास से समाधि के ये अनुभव कल्पनालोक व स्वप्नलोक की तरह

दिवास्वप्न के से अनुभव होकर जाग्रत अवस्था में व चलते फिरते अनायास होते रहते हैं। जिनकी परिणति आगे चलकर **सहज समाधि अवस्था** में होजाती है। धीरे-धीरे व्यक्ति परमहंस अवस्था को प्राप्त रकता है।

ध्यान में जब व्यक्ति मंत्र जपकर्ता के स्थान पर **श्रोता बनता है** तब उसका सूक्ष्म शरीर जाग्रत हो जाता है। पश्चात् महासूक्ष्म, कारण, महाकारण शरीर का शोधन होकर साधक परमात्मा रूपी आत्मतत्त्व का साक्षात्कार करता है।

साधना सिद्धि कार्य में क्या सामान्य है? शरीर की क्या अवस्थायें होती है? क्या सावधानियां रखें इनका वर्णन पुस्तक के पूर्व भाग **सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाशः 'देवखण्ड'** में किया जा चुका है।

हमारे गुरुजी ने भी सात्विक कर्म योग में तत्पर रहकर वर्षाऋतु में वर्षाकालीन तपस्या, सर्दी में शरदकालीन तपस्या तथा गर्मी में ग्रीष्मकालीन पंचाग्नि तपस्यायें की, १२-१२ वर्ष चांद्रायण कृच्छ चान्द्रायण व्रत कर जीवन को साधना हेतु समर्पित किया।

समाधिकाल में उनका ब्रह्मकपाल करीब ३ इंच ऊँचा हो जाता था, जिससे शिष्यों में उनके देह विसर्जन का भय बना रहता था। ३-४ महीनों में कपाल वापस कुछ सामान्य अवस्था में आ जाता था। यदा कदा परिहास में कहते थे आप लोगों की जगह तपस्या हमने कर ली है अब तुमको शेष कार्य धर्म जागृती हेतु तंत्र ग्रन्थों का मर्मसार शाक्त साधकों हेतु प्रकट करना है। संभवतया उन्हीं प्रेरणा शब्दों के योग से अनायास ही लेखन कार्य व संपादन कार्य का योग बना।

मेरे अनुभव में यह भी आया है कि अच्छे उपासकों को भी सामान्य अभिचार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति पीड़ा पहुंचा देते हैं। संभवतया कारण यह है कि अच्छे उपासकों का चित्त ऊपर के केन्द्रों में स्थिर रहता है नीचे के केन्द्र खाली रहते हैं, कवच रक्षा प्रयोग बलिप्रयोग का अभाव रहता है। कुछ उनको अनुभव हो भी जाता है तो वे ध्यान नहीं देते।

वशिष्ठजी ने रक्षाकर्म एवं प्रतिकार की उपेक्षा की इसी कारण उनके पुत्रों का मरण हुआ।

उदाहरण : माना कि कोई अच्छा उपासक है योगनिद्रावस्था में १० सैकिण्ड में वायु की उर्ध्वगति बनकर विशेष अवस्था प्राप्त हो जाती है। उस व्यक्ति पर किसी ने अभिचार कर्म कर दिया तो धीरे धीरे साधना हेतु समय कम मिलने लगा, पारिवारिक विपत्तियां बढी तो मन की एकाग्रता पर भी फर्क पड़ा, ध्यानावस्था न्यून होने लगी फिर भी कारण को नहीं ढूंढा। कभी कभी भाग्य अनुकूल होता है तो इष्टदेव भी स्वप्नादि में संकेत देते हैं, परन्तु इष्ट द्वारा आपका प्रारब्ध भोग काटने की इच्छा हो तो आपको कोई संकेत नहीं मिलेगा। समय भी उस समय प्रतिकूल रहेगा मन में श्रद्धा व अश्रद्धा दोनों ही प्रकट होगी।

विषय व रक्षा कारणों पर ध्यान नहीं देने से अभिचार कर्म धीरे धीरे प्रबल होने लगा। ध्यान धारणा में भी बाधा आने लगी। योगनिद्रा में ललिता, षोडशी या बगलामुखी का मंत्र भी मनोयोग बनने नहीं देता जहां १० सैकिण्ड में ही वायु उर्ध्वगमन करती थी अब यत्न करने पर पूरा शरीर कंपायमान होने लगे, शरीर जड़ हो जाये, पीड़ा होवे यह दुष्क्रिया का प्रभाव बना।

इस तरह साधक को अभिचार कर्म की अनुभूति होती है तब तक बहुत विलंब हो गया है। अभिचार निवृत्ति हेतु कर्म करे तो शरीर व चित्त का विशेष उच्चाटन होवे, जिस मंत्र को जपने में १० मिनिट लगते थे उसमें ४० मिनिट तक लगने लगे । बगलामुखी मंत्र का प्रभाव विपरीत रूप से स्वयं ही महसूस होने लगा अत: अन्य विद्याओं का सहारा लिया।

ज्वालामालिनी व जातवेद दुर्गा मंत्र से कुछ उन्नति हुई, शयनावस्था में वायु कमर के मध्यभाग में आकर रुकने लगी। पश्चात् प्रत्यंगिरा मंत्र के जाप से वायु कंधों के पास आकर रुकने लगी। प्रत्यंगिरा माला मंत्र के प्रयोग से वायु आगे कपाल की ओर अग्रसर होने लगी पश्चात् छिन्नमस्ता का प्रयोग काम में लिया गया तो वायु ऊपर के केन्द्रों में गमन करने लगी ध्यान भी ठीक लगने लगा। इस तरह कई तरह के कर्म शुभ-अशुभ दोनों ही है। आवश्यकता है वस्तु व मर्म को

समझने की। अतः आज अनुभवी गुरुओं की विशेष आवश्यकता है जो साधकों व संकटग्रस्त व्यक्तियों का हित कर सके।

॥ तंत्र साधना ॥

तंत्र-मंत्र की एक कर्मकाण्ड विधि है जो उसके फल को प्रतिपादित करती है। मंत्र के साथ अमुक वस्तु के प्रयोग अभिषेक व हवनादि से अलग अलग फल प्राप्त होगा। जैसे कडुवा तेल, निम्ब व सरसों का तेल, फटा हुआ दूध इनके अभिषेक व हवन से शत्रु का उच्चाटन होता है।

पुनः त्रिमधु, पंचगव्य, पौष्टिक अन्न से हवन करने व दूध व फलों के रस से अभिषेक करने से शांति प्राप्त होती है। हवन समय मंत्र वीर्य का काम करता है तथा हवन में प्रयुक्त द्रव्य उसके वंशाणु के समान कार्य करते हैं, एवं उसी कर्म के अनुसार गर्भफल-कर्मफल की प्राप्ति होकर साधक का यथार्थ सिद्ध होता है। जैसे इक्षु, मधुत्रय, श्रीफल, बिल्वपत्र, क्षीरान्न, मधुरान्न के होम से लक्ष्मी प्राप्ती। कालीमिर्च, सरसों के हवन से रोग-शत्रु का नाश होवे। निम्बपत्र, काकपक्ष के होम से शत्रु का उच्चाटन। हरताल व हल्दी के होम से स्तंभन। इलायची, सुगंधित द्रव्यों के होम से आकर्षण। पंचगव्य होम से पापनाश, त्रिमधुहोम व दुग्धान्न से शांति प्राप्ति होवें। मधु माँसादि से अभीष्ट सिद्धि होवे। लवण होम से वशीकरण, राई के होम से भी वशीकरण व शत्रुनाश होवे। इसलिये मंत्रसिद्धि के साथ तत्फल की सिद्धि हेतु कामना द्रव्यों का हवन करना चाहिये।

॥ यंत्र साधना ॥

यंत्र, मंत्र व देवता की गति को निर्धारित करता है। कार्य की दिशा को इंगित कारता है। वर्णाक्षरों व अंकों का लेखन भी भूतलिपि माध्यम से मंत्र की सत्ता को निहित करते हैं। यंत्र देवता की प्राकृतिक सत्ता का भी बोध कराते हैं। जैसे -

त्रिकोण - सत्, रज, तम तीन अवस्थाएं।

षट्कोण - सृष्टि, स्थिति, संहार, निग्रह, अनुग्रह, निग्रह-अनुग्रह अवस्थायें। पट्कोण में देवता के षडाङ्गों की कल्पना कर देवभाव को प्राकट्य किया जाता है।

अष्टदल - अष्टदलों में अधिकतर ब्राह्मयादि अष्टमातृका या अष्टभैरवों का पूजन अथवा देवी की अष्टांग शक्तियों का वर्णन होता है।

षोडशदल - देवी के सहायक कला शक्तियों का वर्णन आवाहन किया जाता है।

भूपुर - साध्य देवता का एक स्वतंत्र सृष्टि खण्ड है एवं उसकी रक्षा हेतु दिक्पालों का पूजन किया जाता है। इस तरह देवताओं को उसकी अंग शक्तियों सहित आवाहित कर मंत्र में कार्य सिद्धि हेतु पूर्णता प्राप्त की जाती है।

शब्द ब्रह्म है इस सिद्धान्त के अनुसार आकर्षण, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, अर्थसिद्धि, धनप्राप्ति, देह रक्षा, मार्गरक्षा, संतान प्राप्ति, राजविजय हेतु अनेकानेक कार्य हेतु मनीषियों ने कई यंत्रों का निर्माण किया है।

इस तरह तंत्र साधना में तीनों क्रियाओं का समावेश है। मंत्र साधना के साथ, देवता का यंत्रार्चन पश्चात् हवनादि कर्म एवं बलिकर्म सन्निहित है।

॥ बलिकर्म ॥

नवदुर्गा, दशमहाविद्या, वटुक, क्षेत्रपाल, योगिनी व अन्य देवों के हितार्थ तंत्रशास्त्र में बलिकर्म का उल्लेख मिलता है। यह भी उल्लेख मिलता है कि दशमहाविद्याओं की उपासना पंचमकार से करनी चाहिये। अतः विप्रजन हितार्थ प्रयोग कैसे

किया जाये इस विषय पर विधान इस प्रकार से प्राप्त है -

१. मेरु तंत्रे -

पंचामृतं सुरास्थाने, मांसस्थाने च सूरणम् । मत्स्यस्थाने खण्डकाद्यं धर्मपत्न्यां रतं मतम् ॥

अर्थात् सुरा के अनुकल्प में पंचामृत, मांस के अभाव में मसूरान्न, मत्स्य व मुद्रा के अनुकल्प में शर्करा, नमकीन तथा पंचम कर्म हेतु धर्मपत्नि से सहयोग प्राप्त करें।

कई विद्वान सुरा के विकल्प में आसव तथा मांसादि के अभाव में अदरक तथा पूपात्रादि प्रयोग में लेते हैं।

२. महाकाल संहितायाम् - (सात्विक बलि प्रकरणे)

क्षीरेण ब्राह्मणैस्तर्प्या घृतेन नृपवंशजैः । माक्षिकैर्वैश्यवर्णैस्तु आसवैः शूद्रजातिभिः ॥

३. श्रीधर्माचार्यकृते लघुस्तवे -

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवै ॥

४. अन्यत्र -

एवं दद्यात् क्षत्रियोऽपि पेष्टिकीं न कदाचन। नारिकेलोदकं कांसे ताम्रे दद्यात्तथा मधु ॥
राजन्यवैश्ययोर्दानं न द्विजस्य कदाचन । एवं प्रदान मात्रेण हीनायुर्ब्राह्मणो भवेत् ॥

५. भैरवी तंत्रे -

यत्रावश्यं विनिर्दिष्टं मदिरादान पूजनम् । ब्राह्मणस्ताम्रपात्रे तु मधुं प्रकल्पयेत् ॥
ब्राह्मणो मदिरां दत्वा ब्राह्मण्यादेव हीयते । स्वगात्र रुधिरं दत्वा स्वात्महत्यामवाप्नुयात् ॥

६. श्रीक्रम संहितायाम् -

आवाम्यां पिशितं रक्तं सुरा वापि सुरेश्वरि। वर्णाश्रमोचितं धर्ममविचार्यार्पयन्ति ये ॥
भूतप्रेत पिशाचास्ते भवन्ति ब्रह्मराक्षसाः ॥

७. **ब्राह्मणस्य सदाऽपेया क्षत्रियस्य रणागमे । वैश्यधनसंयोगे शूद्रस्य न कदाचनः ॥**

(८) कुलार्णवे-

सर्वसिद्धिकरी षैष्ठी गौडी भोगप्रदायिनी । माध्वीमुक्तिकरी ज्ञेया सुराख्या त्रिविधा प्रिये ॥
विद्याप्रदैक्षवी प्रोक्ता द्राक्षा राज्यदायिनी । तालजा स्तंभने प्रोक्ता खार्जूरी रिपुनाशिनी ॥
नारिकेलभवा श्रीदा पानसाख्या शुभप्रदा । माधूकाख्या ज्ञानकरी दारिद्र्य- रिपुहारिणी ॥
मैरेयाख्या कुलेशानि सर्वपाप-प्रणाशिनी । क्षीरवृक्षसमुद्भुतं मद्यं वल्कल संभवम् ॥
यस्यानन्दं निर्विशेषं सामोदं च मनोहरम् । द्रव्यं तदुत्तमं देवि देवता - प्रीतिकारकम् ॥

॥ दशमहाविद्या महिमा ॥

पुराणोक्त कथानुसार सतीमहिमा के अन्तर्गत कहा है कि जब शिव ने सती को दक्ष के यज्ञ में जाने से मना किया सती ने भयंकर रूप धारण किया जिससे शिव भयभीत होकर दशों दिशाओं में भागने लगे तो दशों दिशाओं में सती अपना अलग-अलग स्वरूप दिखाया वे स्वरूप ही दशमहाविद्या नाम से प्रसिद्ध है तथा महाविद्याक्रम इस प्रकार है-

(१) काली (२) तारा (३) षोडशी (४) भुवनेश्वरी (५) भैरवी (६) छिन्नमस्ता (७) धूमावति (८) बगलामुखी (९) मातंगी (१०) कमला।

मुख्यतया एक ही महाविद्या की दीक्षा दी जाती है शेष विद्याऐं गौण रहती है।

इन विद्याओं का कादि, हादि, सादि क्रमसे उपासना भेद है "**कालीकुल** " के अन्तर्गत काली, तारा, एवं धूमावती मानी गयी है शेष विद्यायें "**श्रीकुल**" के अन्तर्गत मानी गई है

मुख्यतया सभी विद्यायें एक ही प्रकाशमान शक्ति की भासमान अंग शक्तियाँ है जिस तरह शरीर के किसी अंग की उपेक्षा नही की जा सकती एवं सभी अंगो के विकास का ध्यान रखा जाता है उसी तरह एक प्रधान इष्ट के साथ क्रम दीक्षा पूर्वक समया विद्या के अनुरूप अन्य दवियों के मंत्र भी विधिवत् ग्रहण करने चाहियें।

दशमहाविद्याओं को सृष्टि की उत्पत्ति से बाद की अवस्थाओं का द्योतक भी शास्त्रों में कहा है। यथा- सृष्टि आदिकाल में शून्यमय, निर्विकारमय, अंधकारमयी थी तब "**कालिका**" का साम्राज्य था। ब्रह्मचेतना से सृष्टि में कुछ चेतन्यता आई एवं तारों के समान प्रतिबिम्ब की अवस्था आयी इससे "**तारा** " का प्रादुर्भाव हुआ। **श्रीषोडशी** के प्रादुर्भाव से जीव एवं लोकों का सृजन हुआ तथा **भुवनेश्वरी** ने लोकों का पालन किया। **भैरवी शासन** की अधिष्ठात्री हुई। **छिन्नमस्ता** के प्रभाव से सत, रज, तम की क्रियाये सक्रिय हुयी शुद्ध ज्ञान का प्रकाश हुआ एवं अज्ञान व प्रदूपणता को **धूमावती** ने अपने रूप में समेट लिया दुष्टों का दमन करने हेतु एवं पृथ्वी के उद्धार हेतु **बगलामुखी** ने वाराही रूप धारण किया। आनन्दानुभूति व शास्त्रज्ञान हेतु **मांतगी** ने कार्य किया तो कमला ने "**श्री**" प्रदान कर देव - दानवों वे मनुष्यों तथा जीवों का पालन किया।

१. काली - महाकाल की शक्ति जो समय व काल का नियंत्रण कर सृष्टि संचालन करती है। आप चतुर्भुजा होकर चतुर्वर्ग दायिनी है। तो दश शिर, दशभुजा, दश पादयुक्त होकर ज्ञानेन्द्रियो व कर्मेन्द्रियो का गति देती है। आप शक्तिरूपा है तथा शव पर आरूढ है अर्थात् शव में आपकी शक्ति संनिहित होने पर ही शिव "**शिवत्त्व**" को प्राप्त करते है, शक्तिहीन अवस्था में ब्रह्माण्ड एवं शिव भी शिवतुल्य रहते हैं। साधक का शरीर जब निर्विकार होक ध्यानावस्था में होता है तो प्रारंभ में उसे सब ओर शून्याकाश कालिमा दिखाई देती है।

२. तारा - भगवती तारा, कालिका का ही दूसरा रूप है आप ही नील सरस्वती रूप में भासमान है। इसके ध्यान में भगवती के दोनों पैर शव पर है जबकि कालिका के ध्यान में एक पैर नीचे एवं एक पैर शव के हृदय पर है। जिह्वा बाहर नहीं है। समुद्र मंथन के समय जो कालकूट विष निकला था उसे शिव ने ग्रहण किया था जिसके प्रभाव से शिव नीलकण्ठ हो गये। वे शिव ही अक्षोभ्य शिव है जिनको भगवती तारा मस्तक पर धारण किए हुये है। आप शीघ्र फलप्रदा हैं इसलिए "**तारिणी विद्या**" के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसका एकाक्षरी बीज "**स्त्रीं**" शीघ्र फल देता है। भाव समाधि शीघ्र प्राप्त होती है। तारा, एकजटा, नीलसरस्वती रूप में आप ही ज्ञान की परमाशक्ति है। यह बौद्धो की मुख्य अधिष्ठात्री देवी है।

साधक जब साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ता है तो अब उसे ध्यानावस्था में किंचित ज्योति व तारों का भासमान होता है। यह साधक की दूसरी अवस्था है।

३. षोडशी - श्रीकुल की मुख्य अधिष्ठात्री देवी है। इसी को तृतीया विद्या भी कहते है। इन्हीं का आदि रूप "**काली**" है। षोडशी को "**रक्तकाली**" भी कहते है। भगवती षोडशी के मुख्य तीन रूप है **(१) बाला त्रिपुरा (२) श्रीविद्या - ललिता त्रिपुर सुन्दरी (३) षोडशी महात्रिपुरसुन्दरी।** इनका पूजा यंत्र "**श्रीचक्र**" या "**श्रीयंत्र**" के नाम

से प्रसिद्ध है। श्रीविद्या, षोडशी, सदाशिव के आसन पर अपने पतिकामेश्वर के साथ विराजमान है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर इनके इस सिंहासन के चार पायें (स्तंभ) है। अर्थात् इन पंचभूतो की सर्वोपरि सत्ता है।

महाषोडशी पंचवक्त्रा है इनके शिव भी पंचवक्त्र हैं पूर्वादि दिशाओं के मुख हरित, रक्त, धूम्र, नील है। तथा उर्ध्वमुख पीत वर्ण का है। देवी के दस हाथ है जिनमें वे अभय, टंक, शूल, व्रज, पाश, खड्ग, अंकुश, घण्टा, नाग और अग्नि लिये हुये है।

चतुर्भुज रूप में पूजा प्रयोग अधिक प्रचलित है। यथा- **बालार्कमण्डलाभासां .... शिवां भजे।** षोडशी की उपासना सभी प्रमुख देवों ने की है तथा षोडशी के मंत्र वर्णमाला अक्षरों के संयोग से बनते है जिनका वैज्ञानिक बीजगणित सिद्धान्त, प्रत्येक वर्णाक्षरों के अनुसार तद्देव की शक्ति, कूटाक्षरों का भावार्थ व रहस्यार्थ आज भी एक अति रहस्य है। आप पूर्ण रूपेण शब्द ब्रह्ममयी है।

श्रीशंकराचार्य ने सौन्दर्यलहरी तथा ललिता त्रिंशतिस्तव के भाष्य में भगवती का श्रेष्ठ वर्णन किया है। चारों पीठों में श्री यंत्रार्चन का प्रयोग सविधि होता है।

भगवती प्रेम व कामना की वात्सल्यमयी मूर्ति है साधक के हृदय स्थल में आप विराजमान होकर भक्तिभाव पैदा करती है। वर्णाक्षरों से समान्वित कूट बीजाक्षरों की अधिष्ठात्री देवी "ॐ" का एवं अनहद नाद का शीघ्र अनुभव अपने भक्त को कराती है तथा मणिद्वीपवास सायुज्य मुक्ति भी भक्त को प्रदान करती है।

४. भुवनेश्वरी - शब्द ब्रह्म से सृष्टि उपरान्त सप्त पाताललोक, **भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः तपः, सत्य** इत्यादि सप्त उर्ध्व लोकों की रचना, पालन का कार्य स्वयं भुवनेश्वरी शक्ति संचालित करती है। मणिद्वीप की अधिष्ठात्री देवी हल्लेखा (ह्रीं) मंत्र की स्वरूपा है। और सृष्टिक्रम में महाकाली रूपा तथा शिव के लीला विलास की सहचरी आप ही है। भक्तों को अभय एवं समस्त सिद्धियां देने वाली आप शिव की अन्नपूर्णा शक्ति भी है।

साधक का भाव भक्ति का बोध कराने के बाद भगवती भुवनेश्वरी साधक का योग, क्षेम स्वयं वहन करती है। अतः साधक को भी जो कुछ प्राप्त हो उसे भगवती को अर्पण कर पुनः प्रसाद रूप में गृहण करना चाहिए। यथा- **ददाति.....प्रतिगृह्णाति।**

५. भैरवी - भैरवी शासन स्वरूपा देवी है। त्रिपुर भैरवी महात्रिपुर सुन्दरी की रथवाहिनी है। आप सौम्य स्वरूपा है तो दुष्टों के संहार हेतु रौद्ररूप भी धारण करती है। भैरवी के विविध स्वरूपों की त्रिपुर सुन्दरी साधना के अन्तर्गत उपासना की जाती है।

साधक की अवस्था का भान भगवती साधना के दौरान कराती है। साधक में आत्मबल का संचार करती है एवं साधक अपने आप को शिवस्वरूप समझकर (**शिवोऽहं परिचिन्तयेत्**) साधना करने लगता है।

६. छिन्नमस्ता - छिन्नमस्ता ने अपना शिर काटकर अपनी रक्तधारा से अपनी सहचरी डाकिनी एवं वर्णिनी की क्षुधा शान्त की थी। कबन्ध में से रक्त की तीन धारायें निकली, दो धाराएें अपनी सखियों को पिला रही है तथा तीसरी धारा उसके कटे हुये शिर में गिर रही है जिसे स्वयं ग्रहण कर रही है।

भगवती के दाहिने हाथ में खेटक या कर्त्री लिये हुये है तथा बाँये हाथ में अपना कटा मस्तक लिये हुये है। जो भगवती दूसर [illegible] तृप्ती के लिये अपना मस्तक काट सकती है वह भगवती भक्तों की सहायता में कमी कैसे रख सकती है। भक्तों के सक[illegible] एवं दुष्टों के नाश हेतु रौद्ररूप धारण कर लेती है अतः आप **प्रचण्ड-चण्डिका** के नाम से भी प्रसिद्ध है आप साधक को ज्ञानवान तथा शास्त्र का मर्मज्ञ बनाती है, विद्या एवं विवेचन तथा विजय प्रदान करती है।

साधना के अन्तर्गत साधक को सत, रज, तम अलग-अलग प्रभाव दिखाकर साधना पथ में भ्रमित करते हैं अकल्पित कठिनाई भी आती है। ध्यान योग में वायु मेरुदण्ड के बीच में ही रुक जाती है या कनपट्टीयों के पास, रोधनी नाड़ी के पास आगे मस्तिष्क में प्राणवायु अथवा कुण्डलिनी की गति रुक जाती है तो साधक को छिन्नमस्ता की उपासना करनी चाहिए।

७. धूमावती - एक बार पार्वती जी को विशेष क्षुधा व्याप्त हुयी तब उन्होने क्षुधा शान्ति हेतु महादेवजी से निवेदन किया उपेक्षा करने पर आपने महादेवीजी को उदरस्थकर लिया, उस समय उनके शरीर से घूमराशि निकली। उस स्वरूप को देखकर शिवजी ने शिवा से कहा हे पीताम्बरे (बगलामुखी) आपका यह स्वरूप संसार में धूमावती के नाम से जाना जायेगा।

आप वृद्धावस्था वाली है, कृशकाय है, विधवा स्वरूप खुले केशो वाली है। रथ की ध्वजा पर "**काक**" विराजमान है हाथ में अस्त्र रूप में "**सूप**" है जिसमें प्रलय समय समस्त सृष्टि को समेट लेती है।

साधना की दृष्टि से देखते है तो "**सूप**" के लिये कहावत है कि- **सार सार को गहि लहे, थोथा देय उडाय।** अर्थात् अवगुणों का विसर्जन एवं सद्गुणों का संग्रह करने वाली विद्या है।

जिस तरह समुद्रमंथन के समय पहले "**कालकूट विष**" उत्पन्न हुआ था उसी तरह साधना के कारण साधक के पूर्व जन्मों के पाप-पुण्यों का उदय होता है। परिणाम स्वरूप विशद परिस्थितियां भी पैदा हो सकती है। धूमावती की उपासना से भगवती उन पापों को अपने "**सूप**" में समेट लेती है

यह देवी दुःख, दरिद्रता, कलह, पीड़ा की अधिष्ठात्री देवी है अतः इसका आवाहन चिरस्थायी नहीं होता है। साधक को मंत्रादि प्रयोग समय यह भावना करनी चाहिए कि धूमावती देवी कलह, दुःख, दारिद्रता, पीड़ा एवं समस्त विघ्नों को अपने सूप में समेटकर मेरे घर से बाहर जारही है और मुझे अभय प्रदान कर रही है।

इस विद्या का प्रयोग शत्रुनाश के लिये भी किया जाता है सिद्ध पुरुष इस विद्या के प्रभाव रूप में परिवर्तन भी कर लेते थे।

८. बगलामुखी - विष्णु जब महाराष्ट्र के पास हरिद्रा सरोवर में आये तूफान को रोक नही सके तो उन्होने श्रीविद्या की उपासना की। उस समय मकार युक्त नक्षत्रादि योगों में बगलामुखी प्रकट हुई, उन्होने एक हाथ में दैत्य की जिह्वा पकड़ी एवं मुद्गर से उसका संहार किया।

देवी का स्वरूप पीत है इनकी उपासना भी पीताचार से होती है। आसन, माला, वस्त्र, परिधान पूजा द्रव्य, पूजास्थान सब पीतवर्ण के होने चाहिये। कृत्यानाश, शत्रुनाश में इसका विशेष प्रयोग होता है अतः इसके प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए प्रत्येक पद के अर्थ को समझकर भावना युक्त करे, धैर्यपूर्वक मंत्र जप करना चाहिये यह देवी द्विभुजा एवं चतुर्भुजा भी है।

रथारूढ, सिंहारूढ, शवारूढ सभी तरह के प्रयोग इस विद्या के है। इसे ब्रह्मास्त्रविद्या भी कहते है। **ब्रह्मास्त्र विद्या के उपशमन** (निवारण) में कालरात्रि के प्रयोगों का वर्णन आता है।

साधक की साधना अवस्था को देखते है तो जब पापों के उदय से साधक का मन विचलित होने लगता है तथा विघ्न निवारण हेतु, मन की गति स्तंभन हेतु बगलामुखी की उपासना आवश्यक है।

९. मातङ्गी - मतङ्ग मुनि के यहाँ अवतरित होकर भगवती मातङ्गी कहलायी। चाण्डाल रूप को प्राप्त शिव की भार्या होने से चाण्डाली या उच्छिष्ट चाण्डाली कहलायी। मातङ्गी-सुमुखी इत्यादि रूपों में ६४ विद्या, संगीत विद्या, सभी तरह का शास्त्र ज्ञान प्रदान करती है। उच्छिष्ट चाण्डालिनि होकर अन्नादि भंडार को अक्षय करती है। **इसके प्रयोग से साधुजन थोड़े से अन्नादि से बडा भण्डारा** भी आयोजित कर देते है। कर्णमातंगी, कूष्माण्डा मांतगी की उपासना से ज्योतिष फलित कहते है।

साधक के जब विघ्नों का स्तंभन हो जाता है तो मन की प्रसन्नता अधिक उर्ध्वमुखी हो जाती है। ध्यान व प्रेम भक्तिमय साधना से मन के चारों ओर अभूतपूर्व आनन्द को प्राप्त करता है। शब्द ब्रह्म एवं पूर्णब्रह्म तथा जीवात्मा का भेद समझने लगता है।

१०. कमला – आपका स्थान दशमहाविद्याओं दशवाँ है। कमला से अभिप्राय केवल समुद्र से उत्पन्न विष्णु पत्नि से नही है। आप षड्एश्वर्य स्वरूपा "**श्री**" भी है। यथा "**श्रीश्च ते लक्ष्मीश्चते ..... इषाण।**" अर्थात् धन प्राप्ति के अलावा आप अन्य ऐश्वर्य भी साधको को इनकी उपासना से प्राप्त होता है। साधना की दृष्टि से देखें तो उपरोक्त साधनाक्रमों से मोक्ष मार्ग खुल जाता है तो अन्य सिद्धियां स्वत: ही खुल जाती है। षड्ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। अत: दशमहाविद्याओं की सांगोपांग उपासना से भोग एवं मोक्ष दोनों को प्राप्त कराती है।

॥ महादुर्गा ॥

महादुर्गा मूल प्रकृति संज्ञा है। यह षडाम्नाय की अधिष्ठात्री है। महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, दशमहाविद्या, नवदुर्गा, सभी अंश रूपों में आप समान है।

कालरात्रि रूप में आप सम्मोहन की देवी तथा संहारकर्ता है। इसके ध्यान में एक हाथ में ज्वाला भी कही गयी है। अर्थात् अंधकार में प्रकाशकर ज्ञानोदय करती है। ब्रह्मास्त्र विद्या के उपशमन में मंत्रो का प्रयोग भी किया जाता है। उत्तर भारत व दक्षिण भारत में नवदुर्गा भेद है उनके प्रयोग पुस्तक में दिये गये है। अन्य स्वरूप जैसे- **आसुरी दुर्गा, लवण दुर्गा, आर्द्रपटी दुर्गा, जातवेद दुर्गा, ज्वालामालिनी, अतिदुर्गा, सिन्धुदुर्गा, इत्यादि कई प्रयोग दुर्गा के प्रचलित है।** दुर्गा सप्तशती में भगवती के चरित्र आख्यान है। **उत्तर चरित्र** में भ्रामक विषय आता है कि महासरस्वती वीणा वादिनी है इनका नाम विनियोग में कैसे है वे वीणावादिनी शत्रुओं का संहार कैसे करेगी। मूलत: यदि **मूर्ति रहस्य** को देखा जाये तो आप सिंहवाहिनी एवं दिव्यास्त्रों से युक्त हैं। आप ही मूल प्रकृति महादुर्गारूप होकर "**शुम्भ**" से कहती है-

एकैव वा जगत्त्रय द्वितीय का ममाऽपरा।

दुर्गाविधान में बहुत कुछ पूजाक्रम देने की कोशिश की गई है सम्भव है साधकों को उपयुक्त लगें।

अन्तत: भक्तो को निष्काम भाव से उपासना करनी चाहियें। तंत्र जीव को ब्रह्म तक पहुँचने व ब्रह्मयुक्त बनने का (सायुज्य मुक्ति) का मार्ग बताता है, न कि षड्कर्म द्वारा किसी को हानि पहुँचाये। देवताओं के षड्कर्म प्रयोग तो रक्षा विधान व जनहित हेतु दिये गये है। साधना में मुद्राओं का भी विशेष महत्व है, ये ऊर्जा का सम्पादन करती है जैसे अञ्जलि करके या हाथ खुले करके दुआ माँगने की मुद्रा में जप ध्यान करें तो आपको हथेलियों पर दबाव व कम्पन महसूस होगा। संयोग से कभी आप किसी पूजापात्र भोगपात्र का स्पर्श कर रहे है और पात्र आगे सरकने लगे तो यह कोई चमत्कार नहीं है आपकी अंगुलियों से प्रवाहित ऊर्जा के विकरण द्वारा ऐसा हुआ है, ऐसा जाने।

अलग-अलग मंत्रो की तरंगे आम्नाय भेद से अलग-अलग दिशाओं में चलती है। ऐसा अनुभव साधक ध्यान समय में अपने मस्तिष्क में स्पंदन व खिंचाव से महसूस कर सकता है। जिस तरह मिठाई का प्रथम ग्रास अच्छा लगता है बाद में सामान्य, उसी तरह नये मंत्र को ग्रहण करते समय उसके कुछ लक्षण अनुभव होते है बाद में सामान्य स्थिति हो जाती है।

अत: सबकुछ माँ भगवती पर छोड़कर निष्काम भाव से, शरणापन्न भाव से सेवा साधना करते रहना चाहिए। गुरु के मार्ग दर्शन में चलते रहें यही अधिक उपयुक्त है

आपका शुभेच्छु

पं रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र'

साधक साधना एवं संकेत

साधारणत: व्यक्ति यह समझ लेता है कि मैं तन्त्र मार्ग में प्रविष्ट कर रहा हुं, एक अच्छे गुरु से संपर्क हो गया है, गुरु कृपा भी है अत: सिद्धियाँ करतल होगी, लक्ष्मी प्राप्ति होगी, शत्रु पराजित होंगे, मैं शत्रु को दण्ड दे सकूंगा। परन्तु ऐसा सर्वत्र संभव नहीं होता। अच्छे गुरु कर्म संस्कार के भोगवाद में विश्वास रखते हैं। किसी के कर्म संस्कार में परिवर्तन करना प्रकृति के कार्य में दखल मानते हैं। प्रकृति या इष्ट की यदि यहि इच्छा है तो भोग को भोगना ही चाहिये। इष्ट पर श्रद्धा-अश्रद्धा भाव प्रकट नहीं करें।

यदि गुरु की इच्छा आपको मोक्ष मार्ग की ओर ले जाने की है तो आपको भोग भोगना होगा। सकाम प्रयोगों से इच्छा प्राप्ति तो होगी परन्तु मोक्ष मार्ग दूर रहेगा।

पुन: प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति दु:खी होता है तभी साधु सन्तों, सिद्ध पुरुषों की तलाश में निकलता है। वह इच्छा करता है कि एक बार संकट मुक्ति हो जाये तो बाद में निष्काम भाव से कर्म करुंगा।

गुरु भी कभी कभी कृपा कर कुछ समय राहत के लिये मन्त्र उपासना कर्म की आज्ञा दे देते हैं, कुछ भोगवाद के द्वारा संकट कटवाते हैं।

परन्तु यदि किसी व्यक्ति का कर्म विशेष कमजोर हो, होनी प्रबल हो तो सकाम प्रयोगों का फल शीघ्र नहीं मिलता, वर्षों का समय लग जाता है। प्रकृति बीच बीच में तिनके का सहारा देती है। परन्तु साधक के मन में श्रद्धा-अश्रद्धा के भाव प्रकट होते रहते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण की पाण्डवों पर विशेष कृपा थी। श्रीकृष्ण आगे होनी को जानते थे, तभी तो उनके कर्म को भोगने दिया, जब विशेष विपत्ति महसूस हुई तब सहारा दिया।

मेरे पुत्र को स्वास्थ संबंधी परेशानी प्राप्ति हुई। अन्य संकट निवारण हेतु कभी कभी कुछ दृष्टांत व आदेश मिल जाते थे कि अमुक प्रयोग करो परन्तु पुत्र के संकट निवारण हेतु कोई आदेश प्रार्थना करने पर भी प्राप्त नहीं हुआ। अच्छे सिद्ध पीठ स्थानों में जाते थे तो कभी मूर्ति की माला खिसकने, या पुष्प गिरने या देवी को पहनाये वस्त्रों में विशेष हलचन दुपट्टा, साड़ी खिसकना जैसें संकेतों से आश्वासन मिलता था। स्वास्थ्य बाधा से गृहस्थ योग में भी बाधा थी, कालान्तर में सब कुछ ठीक हुआ। अर्थात् प्रकृति की इच्छा कर्म भोग में थी।

परम भक्त एवं विद्वान भास्करराय के जीवन में भी संघर्ष का कुछ समय रहा। हमारे गुरुजी के जीवन में भी कठिनाईयाँ, कठिन संघर्ष कई बार आये चाहे खुद के कर्म या दूसरों का कर्म अपने ऊपर लेने से बाधायें आयी, उनकी उन समस्याओं को देखकर उन्हें साधारण मानव ही कई लोगों ने समझा, परन्तु आंतरिक शक्ति का आभास उन्होनें कभी कभी ही प्रकट किया।

कठिनाईयां व्यक्ति को निर्मल करती है। व्यक्ति अर्थ के कारण अहंकारित होता है। कोई सिद्धियों के बल से अहंकारित हो जाता है। व्यक्ति को जब अपने पराये से धोख मिलता है तो उसका मोह टूटता है। अपने बल व पैसे के दम पर चलने वाला जब अर्थ हीन व बल हीन होकर अपने को असहाय समझता है तब ही उसे शान्ति की तलाश सूझती है। पृथ्वी पर एक से एक सिद्ध पुरुष है, उसे स्वयं से ऊपर कोई मिलता है तो उसे अपनी स्थिति का ज्ञान होता है।

गोरखनाथ ने भक्त नामदेच को अपनी वज्रांगता सिद्धि दिखाई। नामदेव ने गोरखनाथ के शरीर पर तलवार चलाई तो लोहे से टकराने की आवाज आयी। परन्तु जब गोरखनाथ ने नामदेव पर तलवार चलाई तो तलवार शरीर के अंगों को चीरती हुई ऐसे निकल गई जैसे हवा में चली हो। गोरखनाथ ने जब इसका कारण पूछा तो नामदेव ने कहा कि तुम्हारी अभी पृथ्वी तत्त्व पर विजय हुई है, मैनें आकाश तत्त्व पर विजय प्राप्त कर शरीर को आकाश मय बना दिया है। इसके बाद गोरखनाथ अपनी साधना में आगे अग्रसर हुये। परन्तु कथानक से नामदेव व गोरखनाथ के काल का समय निर्धारण

नहीं कर सकते हैं। गोरखनाथ दीर्घजीवी है प्रकट होते रहते हैं।

जैसे हिरण के पीछे शेर दौड़ता है तथा हिरण दौड़कर थक कर खड़ा हो जाता है और अपना शरीर शेर को अर्पण कर स्थिर हो जाता है। उसी तरह जब मनुष्य थक हार कर स्थिर चित्त हो जाता है, सभी कुछ प्रभु के भरोसे छोड़ देता है तब ही उसके जीवन का नया सवेरा होता है।

वैभव के आधार पर संत की उपलब्धि की तुलना नहीं करें। संत कबीर, तुलसीदास, श्री भास्करराय, स्वामी विद्यारण्य जी के जीवन में आर्थिक समस्यायें व अन्य समस्यायें रही है। भगवान शङ्कर श्मशान के वासी हैं, फिर भी त्रिलोकी नाथ हैं। अभिप्राय यह है कि आध्यात्मिक शक्ति अलग व भैतिक सुख अलग है। यदि किसी को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु या शत्रुनाश हेतु हो ई प्रयोग बताया गया हो तो उसका फल तत्काल मिलेगा या नहीं, कभी कभी फल प्राप्ति में विलंब भी हो सकता है।

साधक जब भक्ति में लीन हो जाता है तो भावुक भी हो जाता है। वह मन ही मन बातें करता रहता है। कभी कभी मानसिक संकेतों को देवी का आदेश समझ कर कार्य करने लगता है। परन्तु मानसिक संकेतों या मन ही मन किये प्रश्नोत्तर का भान ५० प्रतिशत ही सही होता है, बाकी ५० प्रतिशत बातें सही होने की आशा में भावुक बना रहता है। उसके संकेत से मिलती-जुलती कोई घटना या वातावरण बनने लगता है तो उसे पूर्ण मानकर अंधविश्वास से आगे बढ़ता है, ऐसे क्षणों में व्याक्ति अधिकतर ठगा जाता है।

जैसे कोई व्यक्ति नौकरी हेतु प्रयास रत है, आराधना समय उसके मन में भाव आये कि उसकी नौकरी दक्षिण दिशा में लगेगी, संयोग से दक्षिण दिशा से इन्टरव्यू का पत्र आता है तो वह समझने लगेगा कि मेरा कार्य यहीं होगा, उसके लिये चाहे कोई उससे रिश्वत मांगे या ठगा जायेगा, इस पर वह तर्क वितर्क या विवेक से कोई काम नहीं लेता। अत: मन की भावना के साथ बाह्य पक्ष पर भी विवेक से विचार करना चाहिये।

जप करते समय निद्रा आवेश भी अक्सर हो सकता है। निद्रा, तन्द्रा, योगनिद्रा तीन तरह के लक्षण प्रकट होते हैं। जप कते समय जब अन्दर के षट्चक्रों पर दबाव पड़ता है तो शक्ति अन्दर से बाहर की ओर आती है तो मांसपेशियों पर दबाव पड़कर थकान महसूस होती है। लेकिन उस समय उर्जा भी उत्पन्न होती है जो राहत पहुंचाती है तो निद्रा आती है। तन्द्रा में थकान महसूस नहीं होती है, शरीर कुछ हल्का होने लगता है, प्राणवायु का स्पन्दन आगे बढ़ने लगता है तो भोहों पर दबाव पड़ता है। तब कुछ समय के लिये पलकें बन्द होने लगती है।

तन्मयता से जप करते समय या स्तोत्र पाठ करते समय भावुकता बढ़ती है। हृदय कमल पर दबाव पड़ता है तो बुद्धि एवं चित्त पर उर्ध्वगमन वायु का प्रभाव बढ़ता है, शरीर विचार शून्य होने लगता है परन्तु शरीर को स्तोत्र पाठ हेतु जागरुक रखना पड़ता है आँखों के हीरे ऊपर की ओर घूमने लगने जैसा आभास होता है। चित्त को जबरदस्ती खींचते रहने पर ही स्तोत्र पाठ संभव है। अगर मन्त्र जाप करते हैं तो तन्मयता योगनिद्रा में परिवर्तित होकर ध्यानमुद्रा में आपका चित्त स्थिर होगा।

मैं दुर्गासप्तशी संपुटित पाठ करता हुं तो कामना मंत्र पढते समय चित्त आगे बढ़ने लगता है, पलकों को हल्की सी खोलकर दुर्गा पाठ की पंक्ति का पहला शब्द पढ़कर ही आगे श्लोक कण्ठस्थ होने से बोल लेता हु, अथवा केवल मूल पाठ करता हुं संपुट पाठ नहीं। कारण स्तोत्र पाठ करते समय वैखरी उच्चारण अधिक होता है तथा दृष्टी पुस्तक पर अधिक रहती है।

योगनिद्रा एवं ध्यान का आपस में संबंध है। योगनिद्रा का सोते समय अधिक अभ्यास करें। जब जप करते समय आपकी तन्मयता अधिक बढ़कर शरीर शून्य होकर चित्त व प्राणवायु का उर्ध्वगमन होने लगता है, आज्ञाचक्र से जब वायु ऊपर जाती है तो किसी किसी की आँखों के हीरे एकदम 90 डिग्री ऊपर घूम जाते हैं। जिस तरह आँखें सीधी रखकर

हम सामने देखते हैं उसी तरह आँखें ऊपर घूमने से ऊपर के लोकों के, देवताओं के व अन्य दृश्य दिखाई देने लगते हैं। उस समय नाद खुलने लगता है कुण्डली ऊर्ध्व गमन करती है। साधक की भावुकता बढ़ती है कोई बैठे-बैठे फुदने लगता है, कोई हूंकार मारता है, कोई शेर की आवाज निकालता है, कोई 'शिवोहं' 'दुर्गोहं' की आवेश पूर्ण भावना महसूस करता है।

इस तरह यदि चित्त अधिक समय तक चढ़ जाये तो सहायक व्यक्ति कान के पीछे की नसों को हाथ फेरकर नीचे की ओर मालिश करें। गर्दन के पास की नसों में तथा रीढ़ की हड्डी में ऊपर से नीचे की ओर मालिश करें। कान में आवाज दें, घण्टा ध्वनि सुनायें।

ध्यान का अभ्यास होने से योगनिद्रा समय स्मरण मात्र से सोते समय ध्यान लग जाता है। सोते समय शरीर ढीला छोड़ें, मस्तिष्क को विचार शून्य करें तो २-४ घण्टे योगनिद्रा (ध्यान) रहकर बाद में प्रगाढ़ निद्रा आ जायेगी। जो योगनिद्रा का अभ्यास करता है उसके लिये विशेष बात यह है कि यदि उसका चित्त बहुत ऊपर चढ़ गया है और कोई उसे जगा रहा है, तो चित्त धीरे-धीरे नीचे उतारें अन्यथा उसके हृदय पर दबाव पड़ेगा, पशीना आ जायेगा। वायु का दबाव अगर गुदा द्वार पर पड़ेगा तो गुदा द्वार फट् जायेगा, जल्दीबाजी में अगर वायु नाक से निकली तो नाक से रक्त भी आ सकता है।

साधक को सहज समाधि का अभ्यास करना चाहिये, क्यों कि साधक कि अवस्था वृद्ध है तो न तो दृढ़ आसन लग सकेगा न मूल बंध आदि योगिक क्रियायें हो सकेगी। इसलिये सभी अवस्थाओं में जीवन की घटनाओं को प्रभु की लीला समझें। **'सर्वरूप मयं देवी सर्व देवी मयम् जगत्'** यह भावना रखें।

ऊर्जा प्राप्ति व ध्यान धारणा के दो मार्ग मुख्य हैं।

१. **कुण्डलनी को जाग्रत करके सहस्त्रार में ले जाने व वापस सहस्त्रार से मूलाधार में ले जाने का मार्ग।** इसमें गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलनी को मूलाधार से जागृत करता है, बाद में जो गुरु क्रम, मार्ग उपासना बताये उसी से करें।

२. **सहस्त्रार में जो पराशक्ति कुण्डलनी है उसके तेज को नीचे मूलाधार में ले जाने का मार्ग।** सहस्त्रार के केन्द्रों को अच्छा सिद्ध ही पहले खोल सकता है। वह सिद्ध सहस्त्रार में मूल बिन्दु चन्द्राकार स्वरूप है उसका आभास करा देता है, वहां से जो अमृत गिरता है उसे चक्रों में पहुंचाया जाता है। इस क्रिया में नीचे बंध नहीं लगते हैं, सहज अवस्था रहती है। ऊपर से उर्जा को नीचे ऐसे प्रवाहित करते हैं जैसे गुफा से बाहर आते हैं, उसे सिद्धि का भान भी नहीं होने देते हैं।

३. **तीसरा मार्ग जिसमें मेरी व्यक्तिगत राय है वह इस प्रकार है -**
सहस्त्रार में शिखा के पास गुरु का ध्यान करें। यहीं पर कुछ समय मूल मंत्र का जाप करें। यह क्रिया सेतु, महासेतु का कार्य करती है अपने चारों ओर अपने इष्ट शक्ति के प्रकाश का अनुभव करें एवं भावना करें कि बाहर से दिव्य शक्तियाँ मेरे शरीर में प्रविष्ट कर रही है। अब सहस्त्रार में गुरु का ध्यान रखते हुये नाभि व हृदय में जप करें तो नाभि तथा नीचे मूलाधार आदि केन्द्रों में बंध लगकर प्राणवायु ऊपर चढ़ने लगेगी। इस प्राणवायु को सहस्त्रार तक ले जाये ऊपर सहस्त्रार में भी गुरु का ध्यान बराबर रखें जैसे किसी रस्सी के दोनों मुँह आपने पकड़ रखे हों। इस तरह प्रारंभ में तीनों क्रियायें करें। इसके पश्चात् प्राणवायु का गमन ही महसूस होगा, पश्चात् चित्त केवल सहस्त्रार में स्थिर रहेगा, ध्यान लगा रहेगा। गुरु पर निष्ठा पूर्ण होवे तो साधक की आवाज व सूरत भी गुरु से मिलने लगती है।

सहज समाधि के अभ्यास में जो क्रियायें क्रम दो या तीन के प्रयोग में बतायी है उनका अभ्यास करने पर बिना ध्यान लगाये दैनिक दिनचर्या में भी बैठे, चलते-फिरते इन दृश्यों का काल्पनिक लोक की तरह आभास होने लगेगा। जप करते समय कभी कभी वीरभाव महसूस होता है, जैसे मेरे आसन पर मैं नहीं मेरे गुरु हैं, वे ही जप कर रहें है या मैं ही देवी रूप हुं, मेरे इतनी भुजायें है, मैनें अमुक अमुक अस्त्र धारण किये हुय हैं। उस समय आपको बाहरी शरीर का भान नहीं

रहेगा। शरीर धीरे धीरे बाहर से शून्य होता हुआ महसूस होकर ऐसा लगेगा जैसे मेरे शरीर का कोई अस्तित्व नहीं है मेरा शरीर लुप्त हो गया है।

इस तरह इस क्रिया का अगर आपको अभ्यास हो जाता है, चलते-फिरते दैनिक दिनचर्या में सहस्रार की स्थिति का भान, शरीर के शून्य होने का भान व अन्य लक्षण बने रहते हैं तो प्रकृति आपको सहज समाधि अवश्य प्रदान करेगी। नाद बिन्दु कला, सहस्रार आदि की स्थिति खुली आँखें ये देख सकेंगे, किसी योग क्रिया की आवश्यकता नहीं रहेगी।

अन्यथा जब शरीर स्थूल हो जाये, पेट मोटा हो जाये, शरीर की कमजोरी व बीमारी के कारण मूलबंध आदि नहीं लग पायेंगे तो ध्यान समाधि कैसे प्राप्त होगी। यदि सहस्रार का चित्र अपने मस्तिष्क में रखें, कहां कैसा है, कहां पर चन्द्र बिन्दु, मूल बिन्दु से प्रकाश आ रहा है केवल उस ज्योति का ध्यान ही २४ घण्टे रखें तो किसी मन्त्र न्यास आदि की जरुरत नहीं है।

अंग देवताओं की उपेक्षा नहीं करें। साधक के पूजा काल का समय निश्चित होना चाहिये। यह नहीं कि कभी ७ बजे कभी ९ बजे। महसूस किया गया है पूजा का जो समय आप निश्चित करते हैं, उस समय प्रधान देवता या अंग देवता का आगमन अवश्य होता है। इसकी अनुभूति तब होती है जब साधना में आप लापरवाही करने लग जाते हैं। ऐसे समय में अंग देवता आकर पूजा कर जाते हैं आपको महसूस होगा कि पूजा पात्र आगे-पीछे है, चन्दन गीला है, परिवार में किसी को घण्टी की आवाज सुनाई देगी।

अंग देवताओं के जप व बलि कर्म (सात्विक) अवश्य करने चाहिये अन्यथा यह अन्य विघ्न पैदा करेंगे। आपका समय व्यथा व्यर्थ होगा। कोई वस्तु जिसे आपने आवश्यक समझ कर सुरक्षित रखी हो, मतिभ्रम होकर भूल जायेंगे। भान होगा जैसे किसी बालक ने इधर- उधर रख दी हो। भैरव-योगिनी इस प्रकार के नाटक अधिकतर करते हैं। अतः भैरव, योगिनी, क्षेत्रपाल, हनुमान की उपासना प्रधान देवता के साथ अवश्य करें।

यदि आपको नाद सुनाई देना प्रारंभ हो गया है तो इस विषय में भी समयका ध्यान रखें। मान लिया जाये कि आप रात्रि १० बजे जप प्रारंभ करते हैं तो उस समय बाहर जहां कहीं भी बैठे हो, आपका नाद चालू हो जायेगा। दूसरों से कोई बात कर रहें हैं तो भी नाद गुंजन होता रहेगा, अतः चित्त को ऊपर भी स्थिर रखिये और वार्ता भी करते रहें।

बत्ति बुझी हुई होने पर भी ध्यान या योग निद्रा में कभी कभी ऐसा महसूस होवे कि रोशनी आ रही है और इस कारण नींद नहीं आ रही है। यह कोई चमत्कार नहीं वरन् आज्ञा चक्र पर व आँखों की नसों पर दबाव पड़ने पर ऐसी अनुभूति होती है। ध्यान समय हरे, पीले, लाल, नीले रंग दिखाई दें, आकाश व तारे दिखाई दें तो यह कोइ चमत्कार नहीं है। (आजकल निर्गुण संप्रदाय वाले इसे अपने ध्यान व गुरु कृपा के लक्षण बताकर कहते हैं कि हमने आपको सिद्ध अवस्था में पहुंचा दिया है) उपरोक्त लक्षण आपके आज्ञा चक्र पर दबाव तथा उस समय जो आपका श्वांस चल रहा है उस समय जल, अग्नि, पृथ्वि, वायु, आकाश में से जो तत्त्व चल रहा हो उसका रंग ध्यान अवस्था में दिखेगा।

भजन, ध्यान, धारणा से जो शक्ति प्रकट होती है वह अक्सर अन्दर ही अन्तर्निहित होती रहती है। परन्तु कभी कभी बहिर्गत भी होती है। हाथ व अंगुलियों व पैरों में यह स्पंदन अधिक होता है। मान लिया जाये कि आप पात्र में भगवान को भोजन अर्पण कर रहें है तो पात्र एकदम खिसककर आगे चला गया है, आपको हाथ आगे करने की आवश्यकता नहीं रही है। तो यह भी कोई चमत्कार नहीं है वरन् आपके हाथों से जो शक्ति प्रवाहित हो रही थी उसी का प्रभाव है।

इसी कारण प्राचीन समय में ऋषियों के हाथों में शिष्य जल छोड़कर अर्घ्य प्रदान करते तथा उनके पाद प्रक्षालन करते। उस शक्ति पात वाले जल को आदर से नेत्राभिषर्स करते व आचमन किया करते थे।

क्षुद्र सिद्धियाँ, कर्ण पिशाचिनी, योगिनी, यक्षिणी व अन्य कई अनुष्ठान भाग ५ मिश्र खण्ड में दिया गया है।

परन्तु मेरा अनुग्रह यह है कि उपासना मोक्ष कर्म हेतु करें, केवल सिद्धि हेतु नहीं करें।

॥ श्री भुवनेश्वरी ॥

॥ श्री दक्षिण कालिका ॥

॥ श्री महादुर्गा ॥

॥ श्री ललिता त्रिपुरसुन्दरी ॥

॥ श्री तारा ॥

॥ श्री भैरवी ॥
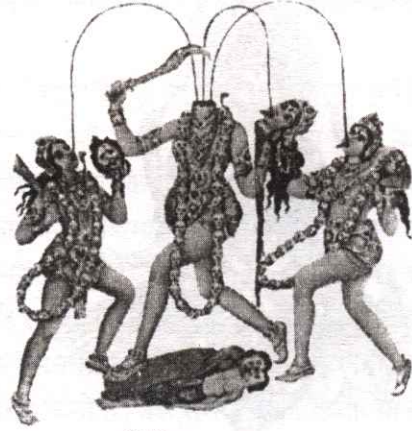
॥ श्री छिन्नमस्ता ॥

॥ श्री धूमावती ॥

॥ श्री बगला ॥

॥ श्री कमला ॥

॥ श्री मातंगी ॥

॥ मुद्रा प्रकरणम् ॥

अर्चने जपकाले च ध्याने काम्ये च कर्मणि। स्नाने चावाहने शङ्खे प्रतिष्ठाया च रक्षणे ॥१॥ नैवेद्ये च त. न्यत्र तत्तत्कल्पप्रकाशिते। स्थाने मुद्राः प्रदष्टव्या स्वस्वलक्षणसंयुताः ॥२॥ आवाहनादि मुद्रा नव साधारणी मताः। तथा षडङ्गमुद्राश्च सर्वमन्त्रेषु योजयेत् ॥३॥ एकोनविंशतिर्मुद्रा विष्णोरुक्ता मनीषिभिः। काममुद्रा परा ख्याता शिवस्य दश मुद्रिकाः। सूर्यस्यैकैव पद्माख्या सप्तमुद्रा गणेशितुः ॥४॥ लक्ष्मीमुद्रार्चने लक्ष्म्या वाग्वादिन्यास्तु पूजने। अक्षमाला तथा वीणा व्याख्या पुस्तकमुद्रिका ॥५॥ सप्तजिह्वाह्वया मुद्रा विज्ञेया वह्निपूजने। मत्स्यमुद्रा च कूर्माख्या लेलिहा मुण्डसंज्ञिका ॥६॥ महायोनिरिति ख्याता सर्वसिद्धि समृद्धिदाः। शक्त्यर्चने महायोनिः श्यामादौ मुण्डमुद्रिका ॥७॥ मत्स्यकूर्मलेलिहाख्या सर्वसाधारणी मता। दश मुद्राश्च समाख्यातास्त्रिपुरायाः प्रपूजने ॥८॥ संक्षोभ द्रविणा कर्षवश्योन्मादमहांकुशाः। खेचरी बीजयोन्याख्या त्रिखण्डा परिकीर्तिता ॥९॥ कुम्भमुद्राभिषेकेस्यात्पद्ममुद्रासने तथा। कालकर्णी प्रयोक्तव्या विघ्नप्रशमकर्मणि ॥१०॥ गालिनी च प्रयोक्तव्या जलशोधनकर्मणि। श्रीगोपालार्चने वेणुर्मृहरेर्नारसिंहिका ॥११॥ वराहस्य च पूजाया वराहाख्यां प्रदर्शयेत्। रामार्चने धनुर्बाणमुद्रे पर्शुस्तथार्चने ॥१२॥ परशुरामस्य विज्ञेया तथा परशुमुद्रिका। वासुदेवाह्वया ध्याने कुम्भमुद्रा तु रक्षणे ॥१३॥ सर्वत्र प्रार्थने चैव प्रार्थनाख्यां नियोजयेत्। उद्देशानुक्रमादासामुच्यते लक्षणन्तथा ॥१४॥

॥ विष्णु की १९ मुद्राओं के लक्षण ॥

१. शङ्खमुद्रा– बायें हाथ के अँगूठे को दाहिनी मुट्ठी में रक्खें, दाहि.. मुट्ठी को ऊर्ध्वमुख रखकर उसके अँगूठे को फैलाये। बायें हाथ की सभी उँगलियों को एक दूसर के साथ सटाकर फैला दे। अब बायें हाथ की फैली उँगलियों को दाहिनी ओर घुमा कर दाहिने हाथ के अँगूठे का स्पर्श करे। यह शङ्ख मुद्रा कहलाती हैं।

२. चक्रमुद्रा – दोनों हाथों को सम्मुख इस प्रकार रक्खें कि हथेलियाँ ऊपर हों। फिर दोनों हाथों की उँगलियों को मोड़ कर मुट्ठियाँ बना ले। अब दोनों अँगूठों को झुका कर परस्पर स्पर्श कराये और तर्जनियों को छोड़ कर दोनों हाथों की उँगलियों को फैला दे। अँगूठे ही की भाँति दोनों तर्जनियाँ भी एक दूसरे का स्पर्श करती रहनी चाहिये। यह चक्र मुद्रा हैं।

३. गदामुद्रा – दोनों हाथों की हथेलियों को मिलायें, फिर दोनों हाथ की उँगलियाँ परस्पर ग्रथित करे। इस स्थिति में मध्यमा उँगलियों को मिलाकर सामने की ओर फैला दे। यह विष्णु को प्रसन्न करने वाली गदा मुद्रा हैं।

४. पद्ममुद्रा – दोनों हाथों को सम्मुख करके हथेलियाँ ऊपर करे, उँगलियों को बन्द कर मुट्ठी बाँधे। अब दोनों अँगूठों को उँगलियों के ऊपर से परस्पर स्पर्श कराये। यह पद्म मुद्रा हैं।

५. **वेणुमुद्रा** – बायें हाथ के अँगूठे को ओठ का और कनिष्ठा को दाहिने हाथ के अँगूठे का स्पर्श करना चाहिये। दाहिने हाथ की कनिष्ठा को फैला होना चाहिये। दाहिने हाथ की शेष तीन उँगलियों (तर्जनी, मध्यमा और अनामा) को थोड़ा झुका कर आगे- पीछे चलायमान करना चाहिये। यह वेणुमुद्रा हैं जो अत्यन्त गोपनीय होने के साथ-साथ श्री कृष्ण को अत्यधिक प्रिय हैं।

६. **श्रीवत्समुद्रा** – दोनों हाथों की हथेलियों को आमने सामने रखकर दोनों की मध्यमा और अनामिकाओं को थोड़ा झुकाकर अँगूठों से दबा ले। अब दोनों हाथों की तर्जनी को अपने-अपने हाथ की कनिष्ठिका मूलों में लगाये। यह श्रीवत्स मुद्रा हैं।

७. **कौस्तुभमुद्रा** – दाहिने हाथ के अँगूठे का स्पर्श करते हुये अनामिका और कनिष्ठिका को बायें हाथ की कनिष्ठिंका से और दाहिनी तर्जनी को बाँयी अनामिका से बाँधे। बायें अँगूठे और मध्यमा से दाहिने अँगूठे के मूल का स्पर्श करे। शेष उँगलियों को सीधा रक्खें। दोनों हाथ की चारों उँगलियों को सीधा रक्खें। दोनों हाथ की चारों उँगलियाँ परस्पर स्पर्श करती रहनी चाहिये। यह कौस्तुभ मुद्रा हैं।

८. **वनमालामुद्रा** – दोनों हाथों को परस्पर स्पर्श किये हुये तर्जनी और अँगूठे से ग्रीवा से लेकर पाद पर्यन्त शरीर का स्पर्श करे। यह वनमाला मुद्रा हैं।

९. **ज्ञानमुद्रा** – दाहिने हाथ के अँगूठे और तर्जनी को एक दूसरे से मिलाये, शेष उँगलियाँ थोड़ी झुकी रक्खें। इस प्रकार उँगलियों को संयोजित करके हाथ को हृदय पर रक्खे। बायें हाथ को जाँघ पर इस प्रकार रक्खे कि हथेली ऊपर की ओर रहे। यह श्रीरामचन्द्र को ज्ञानमुद्रा अत्यन्त प्रिय हैं।

१०. **बिल्वाख्यमुद्रा** – बाँयें हाथ के अँगूठे को सीधा खड़ा करके उसे दाहिने अँगूठे से पकड़े, फिर इस बाँयें अँगूठे को पकड़े हुये दाहिने अँगूठे को दाहिने हाथ की सभी उँगलियों को (जो पहले से ही अँगूठे को पकड़े हुये हैं) पकड़े। साथ ही साथ कामबीज **'क्लीं'** का उच्चारण भी करना चाहिये। यह बिल्व मुद्रा हैं जिसे ज्ञानियों ने अत्यन्त गोपनीय कहा हैं।

११. **गरुडमुद्रा** – दोनों हाथों के पृष्ठ भाग को एक दूसरे से मिलाइये। अब नीचे की ओर लटके हुये दोनों हाथों की तर्जनी और कनिष्ठिका को एक दूसरे के साथ ग्रथित कीजिये। इसी स्थिति में दोनों हाथों की अनामिका और मध्यमाओं को उल्टी दिशाओं में किसी पक्षी के पङ्खों की भाँति ऊपर नीचे कीजिये। यह विष्णु का सन्तोषवर्धन करने वाली गरुड़ मुद्रा हैं।

१२. **नारसिंही मुद्रा** – दोनों जाँघों के बीच में हाथ रखकर भूमि पर रखिये, चिबुक और ओठों को परस्पर स्पर्श करना चाहिये। फिर भूमि पर रक्खे हाथों को बार-बार कम्पायमान कीजिये और मुख को सामान्य स्थिति में लाते हुये जिह्वा को लेलिहाना मुद्रा की भाँति बाहर निकालिये। यह विष्णु का प्रीतिवर्द्धन करने वाली नारसिंही मुद्रा हैं।

१३. **नृसिंह या नृहरि मुद्रा** – हथेलियों को अधोमुख करके दोनों हाथ के अँगूठों और कनिष्ठिकाओं को नीचे की ओर फैलाइये। इस प्रकार भी नृसिंह मुद्रा प्रदर्शित की जाती हैं।

१४. **वाराहमुद्रा** – दाहिने हाथ के पृष्ठभाग पर बाँयीं हथेली रखिये। बायें हाथ की उँगलियों को इस प्रकार मोड़िये कि वे अधोमुख दाहिने हाथ की हथेली का स्पर्श करने लगें। अब इस प्रकार घूमी हुई बाँयें हाथ की उँगलियों को दाहिने हाथ की उँगलियों से पकड़ लीजिये। यह वाराह मुद्रा कहलाती हैं।

द्वि. वाराहमुद्रा – द्वितीया बाँईं हथेली को दाहिनी हथेली पर इस प्रकार रखिये कि दोनों हाथ की उँगलियों का अगला भाग परस्पर स्पर्श करता रहे। यह दूसरी वाराह मुद्रा हैं।

१५. हयग्रीवमुद्रा– दाहिने हाथ की उँगलियों को बाँये हाथ की हथेली के नीचे रखिये। दाहिने हाथ की उँगलियाँ अधोमुख होनी चाहिये। अब उँगलियों को उठाइये और बायें हाथ की मध्यमा तथा अनामिका से दाहिने हाथ की उँगलियों को उठाते हुये मुख के पास लाकर खोल दीजिये। हयग्रीव के स्वरूप को व्यक्त करने वाली यह हयग्रैवी मुद्रा हैं।

१६. धनुर्मुद्रा– बाँयें हाथ की मध्यमा को दाहिने हाथ की तर्जनी से और बायें हाथ की अनामिका को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से मिलाये। इस प्रकार मिली अनामिका और कनिष्ठा को अँगूठे से दबा कर उनसे बायें कन्धों का स्पर्श करे। यह धेनु मुद्रा हैं।

१७. बाणमुद्रा – दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर उसकी तर्जनी को सीधी खड़ी करे। यह बाण मुद्रा हैं।

१८. परशुमुद्रा – दोनों हथेलियों को मिलाकर हाथ को ऊपर नीचे इस प्रकार करें मानों कुल्हाड़ी चला रहे हों। यह परशु मुद्रा हैं।

१९. त्रैलोक्यमोहिनी मुद्रा – दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर मुट्ठियों को मिलाये और फिर दोनों अँगूठों को परस्पर स्पर्श करते हुये उठाये। यह त्रैलोक्यमोहिनी मुद्रा हैं।

२०. काममुद्रा – दोनों हाथों को मिलाकर सम्पुट बनाये और उँगलियों को आगे फैली रक्खे। अब दोनों तर्जनियों को अपनी-अपनी मध्यमाओं के पीछे रक्खे। दोनों अँगूठों को भी अपनी-अपनी मध्यमाओं पर रखे। सभी देवताओं को प्रिय और आनन्दकर यह काम मुद्रा हैं।

॥ शिव की दश मुद्राओं के लक्षण ॥

१. लिङ्गमुद्रा– दाहिने हाथ के अँगूठे को ऊपर उठाकर उसे बायें अँगूठे से बाँधे। उसके बाद दोनों हाथों की उँगलियों को परस्पर बाँधे। यह शिवसान्निध्यकारक लिङ्ग मुद्रा हैं।

२. योनिमुद्रा– दोनों कनिष्ठिकाओं को, तथा तर्जनी और अनामिकाओं को बाँधे। अनामिका को मध्यमा से पहले किञ्चित् मिलाये और फिर उन्हें सीधा कर दे। अब दोनों अँगूठों को एक दूसरे पर रक्खे यह योनि मुद्रा कहलाती हैं।

३. त्रिशूलमुद्रा– कनिष्ठिकाओं को अँगूठों से बाँधकर शेष उँगलियों को सीधा रक्खें। यह त्रिशूल मुद्रा हैं।

४. अक्षमाला मुद्रा– अँगूठों और तर्जनियों के अग्रभाग को मिलाये। दोनों हाथों की शेष तीन-तीन उँगलियों को परस्पर ग्रथित करके सीधा करे। यह अक्षमाला मुद्रा हैं।

५. अभय मुद्रा– बाँयें हाथ को उठाये और हथेली खुली रक्खें। यह अभय मुद्रा हैं।

६. वरमुद्रा – दाहिनी हथेली को अधोमुख करके हाथ फैलायें।

७. मृगमुद्रा– अनामिका और अँगूठे को मिलाकर उस पर मध्यमा को भी रक्खे। शेष दो उंगलियों को ऊपर की ओर सीधा खड़ा करे। यह मृग मुद्रा हैं।

८. खट्वाङ्गमुद्रा– दाहिने हाथ की सभी उँगलियों को मिलाकर ऊपर उठाये। यह शिव की अत्यन्त प्रिय खट्वाङ्ग मुद्रा हैं।

९. **कपालाख्यमुद्रा**– बायें हाथ को पात्रवत बनाकर ऐसे व्यवहार करना चाहिये मानो अपनी बाँई ओर से कुछ उठाकर उस पात्र में रक्खा जा रहा हैं यह कपाल की मुद्रा हैं।

१०. **डमरुमुद्रा**– हल्की मुट्ठी बाँधकर मध्यमाओं को थोड़ा ऊपर उठाये। फिर दाहिनी को कान तक उठाये। यह डमरू मुद्रा हैं जो सब विघ्नों का विनाश करती हैं।

॥ गणेश जी की सात मुद्राओं के लक्षण ॥

१. **दन्तमुद्रा**– दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँधे और उनकी मध्यमा उँगलियों को सीधा करे। इसे सर्वागम विशारदों ने दन्त मुद्रा कहा हैं।

२. **पाशमुद्रा**– दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँधकर बाई तर्जनी को दाहिनी तर्जनी से बाँधे। फिर दोनों तर्जनियों को अपने-अपने अँगूठों से दबाये इसके बाद दाहिनी तर्जनी के अग्रभाग को कुछ अलग करे। इसे विद्वानों ने पाश मुद्रा कहा हैं।

३. **अंकुश मुद्रा**– दोनों मध्यमाओं को सीधा रखते हुये दोनों तर्जनियों को मध्य पोर के पास परस्पर बाँधे। अब तर्जनियों को थोड़ा झुकाकर एक दूसरे को खीचें। यह अंकुश मुद्रा हैं।

४. **विघ्नमुद्रा**– मुट्ठियाँ बाँधकर अँगूठों को तर्जनी तथा मध्यमाओं के बीच इस तरह रक्खें कि अँगूठे का अग्रभाग थोड़ा बाहर निकला दिखाई पड़े। अब मध्यमाओं को अधोमुख करे। यह विघ्न मुद्रा हैं।

५. **लड्डु मुद्रिका**– ऊपर वर्णित विघ्न मुद्रा ही लड्डु मुद्रा के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।

बीजपूराह्वया मुद्रा प्रसिद्धत्वादुपेक्षिता। इति पर्शुलड्डुकबीजपूरादिमुद्राः इति ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ इति गणेशसप्तमुद्राः।

॥ शक्ति की दश मुद्रायें ॥

शाक्तेयीनां च मुद्राणां कथ्यन्ते लक्षणानि तु। पाशांकुशवराभीतिधनुर्बाणाः समीरिताः। इति षड् मुद्राः पूर्ववत् ज्ञेयाः।

पाश, अंकुश, वर, अभिति, धनु, वाण आदि छः प्रमुख मुद्रायें हैं। शेष चार मुद्रायें इस प्रकार है –

१. **खड्गमुद्रिका**– कनिष्ठिका और अनामिका उँगलियों को एक दूसरे के साथ बाँधकर अँगुठों को उनसे मिलाये। शेष उँगलियों को एक साथ मिलाकर फैला दे। इस प्रकार खड्ग मुद्रा बनती हैं।

२. **चर्ममुद्रा**– फैले हुये बायें हाथ को थोड़ा मोड़कर उँगलियों को भी थोड़ा मोड़ ले। यह चर्म मुद्रा हैं।

३. **मुसलमुद्रा**– दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधे फिर दाहिनी मुट्ठी को बाँयें पर रक्खे। इसे मुसल मुद्रा कहते हैं जो सभी विघ्नबाधाओं को दूर करती हैं।

४. **दौर्गीमुद्रा**– दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँधकर दाहिनी मुट्ठी को बाँयें पर रक्खे और फिर उन्हें शिर से मिलाये। यह दुर्गा मुद्रा हैं।

॥ लक्ष्मी की एक मुद्रा ॥

लक्ष्मीमुद्रा– पहले चक्र मुद्रा बनाये और फिर मध्यमाओं को फैला दे। अब अनामिका और कनिष्ठिकाओं के बीच से अँगूठों को बाहर निकाले। सभी सम्पत्तियों को देने वाली यह लक्ष्मी मुद्रा हैं।

॥ सरस्वती की पाँच मुद्रायें ॥

१. **वीणामुद्रा**- दोनों हाथों को इस प्रकार रक्खे मानो वीणा लिये हो और फिर कुछ देर तक वीणा बजाने का उपक्रम करे। यह सरस्वती की प्रिय वीणा मुद्रा हैं।

२. **पुस्तकमुद्रा**- बाँयें हाथ की मुट्ठी बनाकर अपने सामने करे। यह पुस्तक मुद्रा हैं।

३. **व्याख्यान मुद्रा**- दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे के अग्रभाग को मिलाये। शेष उँगलियों को मिलाकर ऊपर उठाये। यह श्रीराम और सरस्वती की अत्यन्त प्रिय व्याख्यान मुद्रा हैं।

४. **अक्षमालामुद्रा**- अक्षमाला आदि मुद्राओं को पूर्व वर्णन के अनुसार व पाँचवी वादन अथवा अभिति मुद्रा जानें।

॥ वह्नि की एक मुद्रा ॥

सप्तजिह्वाख्याग्निमुद्रा- अपनी-अपनी कलाइयों से हाथ को सीधा करके सभी उगलियों को ऊपर उठाये। अब अँगूठे और कनिष्ठिकाओं के अग्रभाग को मिलाकर सामने फैलाये। यह वैश्वानर (अग्नि) की अत्यन्त प्रिय सप्तजिह्वा मुद्रा हैं।

॥ अनेक अन्य मुद्राओं के लक्षण ॥

१. **गालिनी मुद्रा**- दोनों हथेलियों को एक दूसरे पर रक्खे। कनिष्ठिकाओं को इस प्रकार मोड़े कि वे अपनी-अपनी हथेलियों को स्पर्श करें। तर्जनी, मध्यमा और अनामिका उँगलियाँ सीधी और परस्पर मिली रहें। यह शङ्ख बजाने की गालिनी मुद्रा हैं।

२. **कुम्भमुद्रा**- दाहिने अँगूठे को बाँयें के ऊपर रक्खे। इसी अवस्था में दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँधे परन्तु दोनों मुट्ठियों के बीच थोड़ी जगह होनी चाहिये। यह कुम्भ मुद्रा हैं।

३. **कुम्भमुद्रा द्वितीया**- दोनों हाथ को मिलाकर एक ही मुट्ठी बनाये और दोनों अँगूठों को मिलाकर तर्जनी के अग्रभाग पर रक्खे। यह द्वितीय कुम्भ मुद्रा हैं जो साधक की हर प्रकार से रक्षा करती है।

४. **प्रार्थनामुद्रा**- दोनों हाथों को फैलाये हुये हृदय पर रक्खे। यह प्रार्थना मुद्रा हैं।

५. **अंजलि मुद्रा**- दोनों हाथों को मिलाकर अञ्जलि बनाये। यह वासुदेव को प्रिय अञ्जलि मुद्रा है।

६. **कालकर्णी मुद्रा**- दोनों हाथों की बँधी मुट्ठियों को एक दूसरे से मिलाकर दोनों अँगूठों को ऊपर उठाये। इस प्रकार हाथों को अपने सामने रक्खे। यह कालकर्णी मुद्रा है।

७. **विस्मयमुद्रा**- दाहिने हाथ की कसकर मुट्ठी बनाकर उसकी तर्जनी से नाक को हल्के से दबाये। यह विस्मय मुद्रा हैं जो विस्मयावेश को व्यक्त करती हैं।

८. **नादमुद्रिका**- दाहिने अँगूठे को बाँयी मुट्ठी में बन्द करे। यह नाद मुद्रा है।

९. **बिन्दुमुद्रा**- तर्जनी और अँगूठे के अग्रभाग को मिलाये। यह बिन्दु मुद्रा हैं।

१०. **संहारमुद्रा**- अधोमुख बाँयें हाथ को ऊर्ध्वमुख दाहिने हाथ पर रक्खे। दोनों हाथ की उँगलियों को परस्पर ग्रथित करे। इस प्रकार संयोजित हाथों को घुमाकर बिल्कुल उलट देवें। देवता के विसर्जन के समय प्रयुक्त होने वाली यह संहार मुद्रा है।

११. मत्स्यमुद्रा- बाँयी हथेली को दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर रक्खे और फिर दोनों अँगूठों को हथेली को पार करते हुये मिलाये। यह मत्स्य मुद्रा हैं।

१२. कूर्ममुद्रा- बाँयी तर्जनी को दाहिनी कनिष्ठिका से मिलाये। पुनः दाहिनी तर्जनी को बाँयें अँगूठे से मिलाये और दाहिने अँगूठे को ऊपर उठा दे। अब बाँयें हाथ की मध्यमा और अनामिका को दाहिने हाथ की हथेली से लगाये। दाहिने हाथ को कछुए की पीठ की तरह बनाये। देवता के ध्यान कर्म में प्रयुक्त होने वाली यह कूर्म मुद्रा है।

१३. मुण्डमुद्रा- अँगूठे को भीतर करके बायें हाथ की मुट्ठी बाँधे। दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका को थोड़ा मोड़े। दाहिने अँगूठे को दाहिनी तर्जनी के मध्य पर्व पर लगाये। इस प्रकार संयोजित दाहिने हाथ पर बाँयी मुट्ठी को रक्खें। फिर साधक इस प्रकार रक्खें हाथों की दाहिनी ओर अपनी दृष्टि को केन्द्रित करे। यह मुण्ड मुद्रा है।

१४. लेलिहाना मुद्रा- तर्जनी, मध्यमा और अनामिका को बराबर करके अधोमुख करे। कनिष्ठिका को सीधा रक्खे। यह जीवन्यास में प्रयुक्त होने वाली लेलिहाना मुद्रा है।

१५. महायोनिमुद्रा- दोनों हाथों की तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिलाकर दोनों हथेलियों को इस प्रकार मिलाये कि उनका निचला भाग एक दूसरे को अच्छी तरह स्पर्श करता रहे। अब दोनों अँगूठों को अपनी-अपनी कनिष्ठिकाओं के मूल पर्वो पर रक्खे। यह महायोनि मुद्रा है।

१६. त्रिखण्डमुद्रा दोनों हाथों को एक दूसरे को काटते हुये (दाहिना बाँई ओर और बायाँ दाहिनी ओर) पीठ पर रक्खे और अँगूठों को बराबर करके मिलाये। अनामिकाओं को भीतर की ओर फैलाये और तर्जनियों को थोड़ा मोड़े। कनिष्ठिकाओं को यथास्थान मिलाये। त्रिपुरा देवी के ध्यान में प्रयुक्त होने वाली यह त्रिखण्ड मुद्रा है।

१७. प्रथमा मुद्रा- मध्यमा को मध्य में रखकर अँगूठों और कनिष्ठिकाओं को मिलाये। तर्जनी को सीधा और अनामिका को मध्यमा के ऊपर रक्खें। यह प्रथम सर्वसंक्षोभकारिणी मुद्रा है।

१८. सर्वविद्रावणी- मुद्रा उपरोक्त संक्षोभकारिणी मुद्रा में जब मध्यमा को ढीला कर दिया जाता हैं तो, वह सर्वविद्रावणी मुद्रा बन जाती है।

१९. आकर्षिणी मुद्रा- कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा तथा तर्जनी को बराबर करके मध्यमा को अँकुशाकार बनाकर कनिष्ठिका और अनामिका पर रक्खे और अँगूठे को उससे मिलाये। यह तीनों लोकों को आकर्षित करने वाली आकर्षिणी मुद्रा है।

२०. सर्ववश्यकरी मुद्रा- दोनों हाथों को मिलाकर सम्पुट बनाये और फिर तर्जनियों को अँकुशाकार करे। इसी प्रकार मध्यमा, कनिष्ठिका और अनामिकाओं को भी क्रमशः मोड़ें और सभी को अँगूठे के अग्रदेश से कसकर मिलाये। यह सर्ववश्यकरी मुद्रा है।

२१. उन्मादिनी मुद्रा- दोनों हाथों को सम्मुख करके मध्यमा को मध्यमा से और कनिष्ठिका को कनिष्ठिका से मिलाये। अनामिकाओं को सीधा रखकर परस्पर मिलाये तथा दोनों तर्जनियों को बाहर रक्खें जिससे अँगूठों को सीधे मध्माओं के नख पर रक्खा जा सके। यह सब स्त्रियों को क्लेदित करने वाली उन्मादिनी मुद्रा है।

२२. महांकुशमुद्रा- दोनों अनामिकाओं को अँकुशाकार अधोमुख करके मिलाये। पुनः दोनों तर्जनियों को भी उसी

प्रकार अँकुशाकार करके मिलाये। यह सर्व इच्छाओं को पूर्ण करने वाली महांकुशा मुद्रा है।

२३. खेचरी मुद्रा– हे देवी! बाँयें हाथ को दाहिनी ओर और दाहिने हाथ को बाँई ओर रक्खे। फिर इसी क्रम से कनिष्ठा और अनामिकाओं को मिलाये। दोनों तर्जनियों को एक दूसरे के ऊपर रक्खे। दोनों मध्यमाओं को सबके ऊपर उठाये। अँगूठों को सीधा रक्खे। यह सर्वोत्तम खेचरी मुद्रा है।

२४. बीजमुद्रा– हाथों को एक दूसरे को काटते हुये चन्द्राकार करे। दोनों अँगूठों को अपनी-अपनी तर्जनियों से मिलाये। फिर नीचे से दोनों कनिष्ठिकाओं को मध्यमाओं से मिलाये। इसी प्रकार अनामिकाओं को सबसे नीचे कुछ मोड़ कर मिलाये। यह सर्वसम्पत्तियों को बढ़ाने वाली बीजमुद्रा है।

२५. योनिमुद्रा– मुड़ी हुई मध्यमाओं को तर्जनियों पर रक्खे। इसी प्रकार अनामिकाओं को कनिष्ठकाओं को मोड़ कर, सबको जोड़ कर एक साथ अँगूठों से दबाये। यह प्रथम योनिमुद्रा है।

२६. सौभाग्यदायिनी मुद्रा– बाँयें हाथ की मुट्ठी बाँधकर उसे कान तक लाये। फिर तर्जनी को सीधा कर मन्त्रवित श्रेष्ठ साधक उसे वृत्ताकार घुमाये। न्यास के समय प्रयुक्त होने वाली यह सौभाग्यदायिनी मुद्रा है।

२७. रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा – अँगूठे को मुट्ठी के भीतर रखकर उसे तर्जनी से दबाये। न्यास के समय प्रयुक्त होने वाली यह रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा है।

२८. भूतिनीमुद्रा– योनिमुद्रा बनाकर मध्यमाओं को मोड़े। अँगूठों के अग्रभाग को मध्यमाओं के अग्रभाग पर रक्खे। यह भूतिनी मुद्रा है।

२९. तर्जनी मुद्रा– तर्जनी और मध्यमा को दबाते हुये बायें हाथ से मुट्ठी बाँधे। फिर मुट्ठी बँधे दाहिने हाथ को कसकर उसकी तर्जनी को सामने फैलाये। यह तर्जनी मुद्रा हैं।

महायोनि मुद्रा –

मध्ये कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते । अनामिका मध्यगते तथैव हि कनिष्ठिके ॥
सर्वा एकत्र संयोज्या अंगुष्ठ परिपीड़िता । एषा तु प्रथमा मुद्रा महायोन्यमधि मता ॥

खेचरी मुद्रा –

सव्यं दक्षिणहस्ते तु सव्यहस्ते तु दक्षिणम् । बाहू कृत्वा महादेवी हस्तौ संपरिवर्त्य च ॥
कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेन क्रमेण तु । तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोर्ध्वमपि मध्यमे ॥
अंगुष्ठौ तु महादेवि सरलावापि कारयेत् । इमं सा खेचरी नाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा ॥

महांकुशा मुद्रा –

अस्यास्त्वनामिका युग्ममधः कृत्वांकुशाकृति ।
तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ॥
इयं महांकुशामुद्रा सर्वकामार्थ साधिनी ॥

उन्मादिनी मुद्रा –

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यमेनुजे । अनामिके तु सरले तदधस्तर्जनीद्वयम् ॥
दण्डाकारौ ततोङ्गुष्ठौ मध्यमान स्वदेशगौ । मुद्रैषोन्मादिनी नाम क्लेदिनी सर्वयोषिताम् ॥

वश्य मुद्रा -

पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृति ।
परिवार्यं क्रमेणैव मध्यमे तदधोगते ।
क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठानामिका हृदः ॥
संयोज्य निविडाः सर्वा अंगुष्ठवग्रदेशतः ।
मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मता ॥

आकर्षिणी मुद्रा -

मध्यमा तर्जनीभ्यां तु कनिष्ठानामिके समे ।
अंकुशाकाररूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि ॥
इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणे समा ॥

द्राविणी मुद्रा -

क्षोभाभिधान मुद्राया मध्यमे सरले यदा । क्रियते परमेशानि तदा विद्राविणी मता ॥

क्षोभ मुद्रा-

मध्यमा मध्ये कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोषिते ।
तर्जन्यौ दण्डवत् कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके ।
क्षोभाभिधानमुद्रेयं सर्वक्षोभणकारिणी ॥

॥ इति श्रीमुद्रा प्रकरण समाप्त ॥

॥ गायत्री जप की चौबीस मुद्रायें ॥
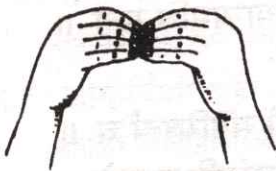
१. सुमुख मुद्रा

२. संपुट मुद्रा
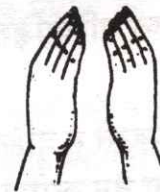
३. वितत मुद्रा
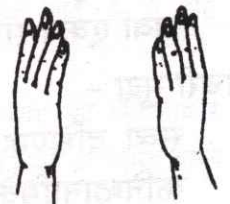
४. विस्तृत मुद्रा

५. द्विमुख

६. त्रिमुख मुद्रा

७. चर्तुमुख मुद्रा
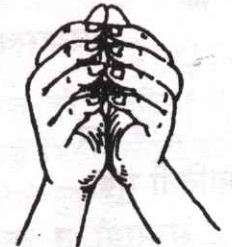
८. पंचमुख मुद्रा

९. षणमुख मुद्रा
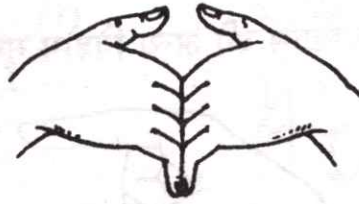
१०. अधोमुख मुद्रा

११. व्यापक मुद्रा

१२. शकट मुद्रा
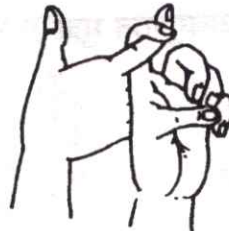
१३. यमपाश मुद्रा

१६. प्रलंब मुद्रा

१९. कूर्म मुद्रा

१४. ग्रन्थि मुद्रा

१७. मुष्ठि मुद्रा
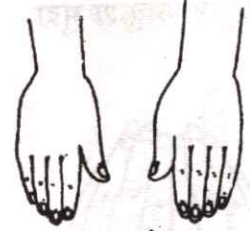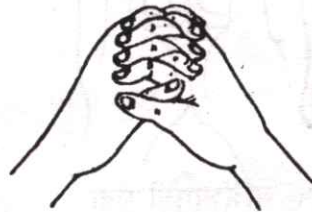
२० वराह मुद्रा
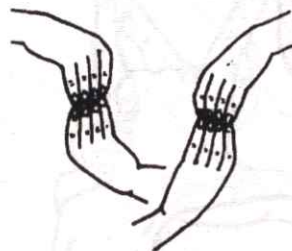
१५. उन्मुख मुद्रा
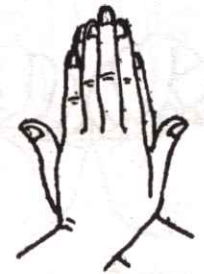
१८. मत्स्य मुद्रा

२१. सिंहाक्रान्त मुद्रा

२२. महाक्रांत मुद्रा

२३. मुद्गर मुद्रा

२४. पल्लव मुद्रा

॥ पूजाक्रम की अन्य विशेष मुद्रायें ॥
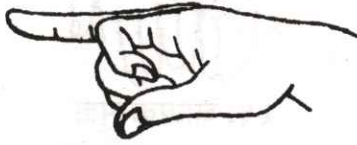
१. अंकुश मुद्रा

२. अवगुण्ठन मुद्रा

३. आवाहनी मुद्रा

४. संस्थापनी मुद्रा
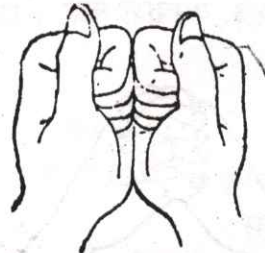
५. सन्निधापनी मुद्रा
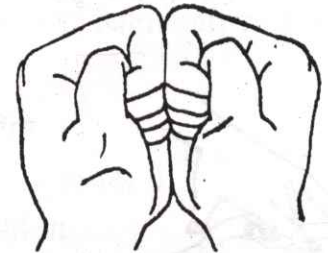
६. सन्निरोधनी मुद्रा
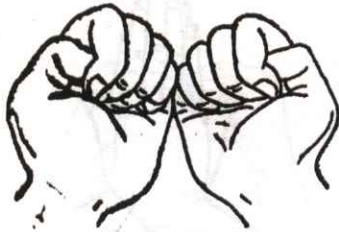
७. सुमुखीकरण मुद्रा
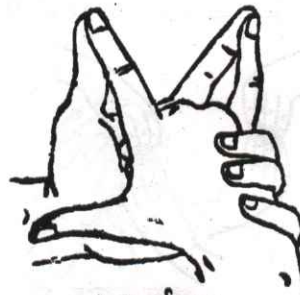
८. कूर्म मु
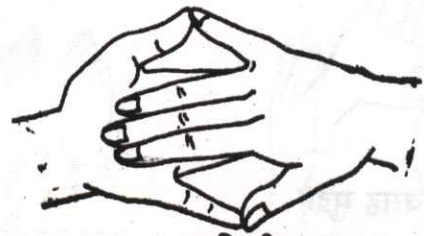
९. गालिनीमुद्रा
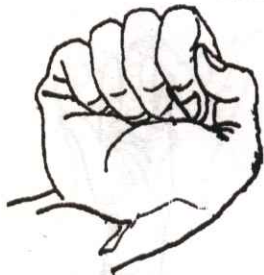
१०. गौयोनि मुद्रा

११. ग्रास मुद्रा
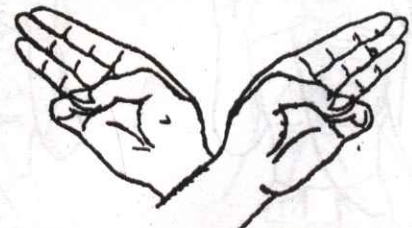
१२. चक्र मुद्रा
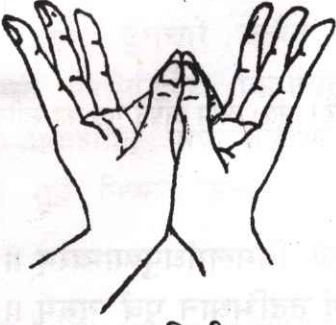
१३. ज्वालिनी मुद्रा
१४. तत्त्व मुद्रा
१५. धेनु मुद्रा
१६. नाराच मुद्रा
१७. परमीकरण मुद्रा
१८. प्राण मुद्रा
१९. अपान मुद्रा
२०. व्यान (मृग) मुद्रा
२१. उदान मुद्रा
२२. समान मुद्रा
२३. भूतिनी मुद्रा
२४. मत्स्य मुद्रा
२५. योनि मुद्रा
२६. लेलिहान मुद्रा
२७. संहार मुद्रा
२८. निर्माल्य मुद्रा
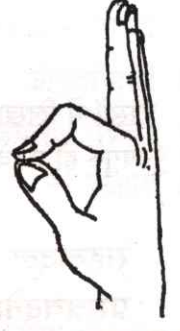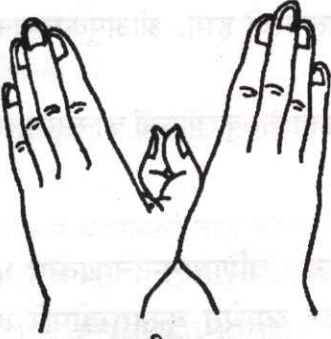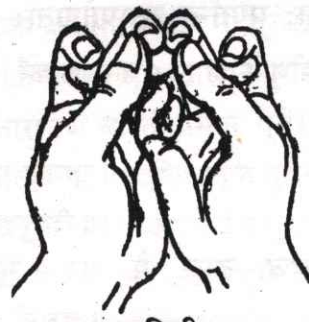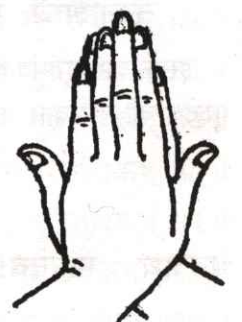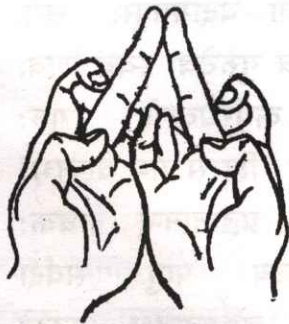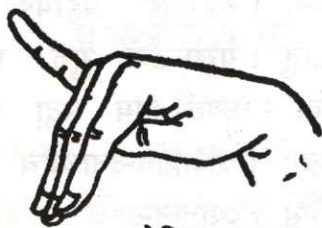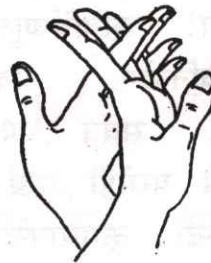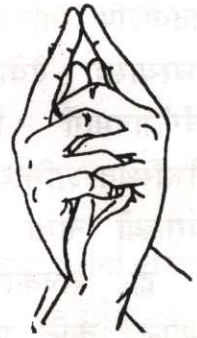
॥ श्रीगुरु कवचम् ॥

शास्त्रों में लिखा है कि सर्वदोषशान्ति हेतु गुरु एवं ब्राह्मणों की सेवा वन्दना करें। अतः आप अपने गुरु का स्त्रीगुरु या पुरुषगुरु हो उनके हेतु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

॥ गुरुदेव ध्यानम् ॥

सहस्त्रदल पङ्कजे सकलशीत रश्मिप्रभम् ।वराभय कराम्बुजं विमलगंधपुष्पाम्बरम् ॥
प्रसन्नवदनेक्षणं सकल - देवतारूपिणम् ।स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधान पूर्वं गुरुम् ॥

ध्यान करने के बाद पादुका मंत्र का उच्चारण कर सम्प्रदाय परम्परा से गुरुदेव के नाम का उच्चारण कर पूजा करें।

पादुका मंत्र- **ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह स क्ष म ल व र यूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं हसौः श्रीअमुकानन्दनाथ श्रीअमुकीदेव्याम्बा श्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।**

उक्त पादुकामंत्र से पूजन और जप करने के बाद वाग्भववीज ''ऐं'' से प्राणायामत्रय कर कुलगुरुओं का स्मरण करें- यथा-

॥ कुलगुरु स्मरणम् ॥

प्रह्लादानन्दनाथाख्यं सनकानन्दनाथकम् । कुमारानन्दनाथाख्यं वशिष्ठानन्दनाथकम् ॥
क्रोधानन्द सुखानन्दौ ध्यानानन्दं ततः परम् ।बोधानान्दं ततश्चैव ध्यायेत् कुलमुखोपरि ॥
महारस रसोल्लास-हृदयाघूर्णलोचनाः ।कुलालिङ्गन - सम्भिन्नचूर्णिताशेष - तामसाः ॥
कुलशिष्यैः परिवृताः पूर्णान्तः करणोद्यताः ।वराभयकराः सर्वे कुलतन्त्रार्थवादिनः ॥

इसके बाद गुरुमंत्र वाग्भव वीज **ऐं** का १०८ बार जप करें। तदन्तर गुरुस्तोत्र और कवच का पाठ कर संयतचित्त होकर गुरुदेव को नमस्कार करें।

॥ कवच पाठः ॥

॥ देव्युवाच ॥

भूतनाथ महादेव! कवचं तस्य मे वद । गुरुदेवस्य देवेश! साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणः ॥

॥ इश्वरोवाच ॥

अथातः कथयामीशे कवचं मोक्षदायकम् । यस्य ज्ञानं विना देवि! न सिद्धिर्न च सद्गतिः ॥
ब्रह्मादयोऽपि गिरिजे सर्वत्र याजिनः स्मृताः । अस्य प्रसादात् सकला वेदागमपुरः सराः ॥
कवचस्यास्य देवेशि! ऋषिर्विष्णुरुदाहृतः । छन्दो विराड् देवता च गुरुदेवः स्वयं शिवः ॥
चतुर्वर्गज्ञानमार्गे विनियोगः प्रकीर्तितः । सहस्त्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो गुरुः ॥
वामोरुस्थित-शक्तिर्यः सर्वत्र परिरक्षतु । परमाख्यो गुरुः पातु शिरसं मम वल्लभे! ॥
परापराख्यो नासां मे परमेष्ठी मुखं सदा । कण्ठं मम सदा पातु प्रह्लादानन्द नाथकः ॥
बाहू द्वौ सनकानन्दः कुमारानन्दनाथकः । वशिष्ठानन्दनाथश्च हृदयं पातु सर्वदा ॥
क्रोधानन्दः कटिं पातु सुखानन्दः पदं मम । ध्यानानन्दश्च सर्वाङ्गं बोधानन्दश्च कानने ॥
सर्वत्र गुरवः पातु सर्व ईश्वररूपिणः । इति ते कथितं भद्रे! कवचं परमं शिवे ॥

भक्तिहीने दुराचारे दत्वैतं मृत्युमाप्नुयात् । अस्यैव पठनाद् देवि! धारणात् श्रवणात् प्रिये! ॥
जायते मंत्रसिद्धिश्च किमन्यत् कथयामि ते । कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ शिखायां वीरवन्दिते! ॥
धारणान्नाशयेत् पापं गङ्गायां कल्मषं यथा । इदं कवचमज्ञात्वा यदि मंत्र जपेत् प्रिये! ॥
तत् सर्वं निष्फलं कृत्वा गुरुर्याति सुनिश्चतम् । शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन ॥

॥ इति कङ्कालमालिनी तंत्रे गुरु कवचमं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीगुरु स्तोत्रम् ॥

॥ ॐ नमः श्रीनाथाय ॥

॥ श्रीमहादेव्युवाच ॥

गुरोरर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा । विशेषस्तु महादेव! तद् वदस्व दयानिधे ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

जीवात्मनं परमात्मनं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम् । उत्कलकाशीगङ्गामरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१॥
प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम् । भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥२॥
वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकचरितम् । साधोःसेवां बहुसुखभुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥३॥
विष्णोभक्तिं पूजनरक्तिं वैष्णवसेवां मातरिभक्तिम् । विष्णोरिव पितृसेवनयोगं नगुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥४॥
प्रत्याहारं चेन्द्रियजनं प्राणायां न्यासविधानम् । इष्टे पूजा जप तपभक्तिर्न न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥५॥
काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा । श्रीमातङ्गी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥६॥
मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम् । नरनारायण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥७॥
श्रीभृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम् । अवतारा दश वेदविधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥८॥
गङ्गा काशी काञ्ची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा । यमुना रेवा पुष्करतीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥९॥
गोकुलगमनं गोपुररमणं श्रीवृन्दावनमधुपुररटनम् । एतत् सर्वंसुन्दरि! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१०॥
तुलसीसेवा हरिहरभक्तिः गङ्गासागरसङ्गममुक्तिः । किमपरमधिकं कृष्णेभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥११॥
एतत्स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽपि च धन्यम् । ब्रह्माण्डान्तर्यद्-यद्ध्येयंनगुरोरधिकंनगुरोरधिकम् ॥१२॥

॥ वृहद्विज्ञान परमेश्वरतंत्रे त्रिपुराशिवसंवादे श्रीगुरोःस्तोत्रम् ॥

॥ स्त्रीगुरु कवचम् ॥

॥ शिव उवाच ॥

स्तोत्रं समासं देवेशि! कवचं शृणु सादरम् । यस्य स्मरण मात्रेण वागीश समतां व्रजेत् ॥
स्त्रीगुरु कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः । तवाख्या देवता ख्याता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥
क्लीं बीजं चक्षुषोर्मध्ये सर्वाङ्गे मे सदाऽवतु । ऐं बीजं मे मुखं पातु ह्रीं जिह्वां परिरक्षतु ॥

श्रीं बीजं स्कन्धदेशं मे हसखफ्रें भुजद्वयम् । हकारः कण्ठ देशं मे सकारः षोडशं दलम् ॥
क्ष-वर्णस्तदधः पातु लकारो हृदयं मम । वकारः पृष्ठदेशं च रकारो दक्षपार्श्वकम् ॥
युङ्कारो वामपार्श्वं च सकारो मेरुमेव च । हकरो मे दक्षभुजं क्षकारो वामहस्तकम् ॥
मकारश्चांगुलि पातु लकारो मे नखं वतु । वकारो मे नितम्बं च रकारो जठरं वतु ॥
यीङ्कारः पाद युगलं हसौः सर्वाङ्गमेव च । हसौर्लिङ्गं च लोमानि केशं च परिरक्षतु ॥
ऐं वीजं पातु पूर्वे मे ह्रीं वीजं दक्षिणे वतु । श्री वीजं पश्चिमे पातु उत्तरे भूतसम्भवम् ॥
श्रीं पातु अग्निकोणे च वेदाख्या नैर्ऋते वतु । देव्यम्बा पातु वायव्यां शम्भौ श्रीपादुका तथा ॥
पूजयामि तथा चोर्ध्वं नमश्चाधः सदाऽवतु । इति ते कथितं कान्ते! कवचं परमाद्भुतम् ॥
गुरुमन्त्रं जपित्वा तु कवचं प्रपठेद् यदि । स सिद्धः सगणः सोऽपि शिव न संशयः ॥
पूजा काले पठेद् यस्तु कवचं मंत्रविग्रहं । पूजाफलं भवेत् तस्य सत्यं सत्यं सुरेश्वरि ॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् देवि स सिद्धौ नात्र संशयः । भुर्जे विलिखितं चैव स्वर्णस्थं धारयेद् यदि ॥
तस्य दर्शन मात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः । विवादे जयमाप्नोति रणे च निर्ऋतेः समः ॥
सभायां जयमाप्नोति मम तुल्यो न संशयः । सहस्त्रारे भावयन् तां त्रिसंध्यं प्रपठेद् यदि ॥
स एव सिद्धो लोकेषु निर्वाण पदमीयते । समस्त मंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन । देयं शिष्याय शान्ताय चान्यथा पतनं भवेत् ॥
अभक्तेभ्यश्च देवेशि! पुत्रेभ्योऽपि न दर्शयेत् । इदं कवचमज्ञात्वा दशविद्यां च यो जपेत् ॥
स नाप्नोति फलं तस्य चान्ते च नरकं व्रजेत् ।

॥ इति मातृकाभेद तंत्रे स्त्रीगुरु कवचम् ॥

॥ स्त्रीगुरु स्तोत्रम् ॥

नमस्ते देव-देवेशि! नमस्ते हरपूजिते! । ब्रह्मविद्यास्वरूपायै तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया । यया चक्षुरुन्मीलितं तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
भवबंधन पाशस्य तारिणी जननी परा । ज्ञानदा मोक्षदा नित्या तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
श्रीनाथवामभागस्था सदया सुरपूजिता । सदाविज्ञानदात्री च तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
सहस्त्रारे महापद्मे सदाऽऽनन्दस्वरूपिणी । महामोक्षप्रदा देवि तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
ब्रह्माविष्णुस्वरूपा च महारुद्रस्वरूपिणी । त्रिगुणात्मस्वरूपा च सदा घूर्णितलोचना ।
स्व-नाथं च समालिङ्ग्य तस्यै नित्यं नमो नमः ॥ ब्रह्मविष्णुशिवत्वादि - जीवन्मुक्तिप्रदायिनी ।
ज्ञानविज्ञानदात्री च तस्यै श्रीगुरवे नमः ॥

॥ श्रीमातृकाभेदतन्त्रे हरपार्वती संवादे स्त्रीगुरोः स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीनाथादि गुरुत्रयं मण्डल पूजन प्रयोग:॥

श्री नाथादि गुरुत्रयं.....के अनुसार गुरु मंडल देवताओं का पूजन प्रयोग पूर्व में पुस्तक देवखण्ड में दिया जा चुका है। दूसरे प्रकार का पूजन प्रयोग इस प्रकार है।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं, सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्। वीरानष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं, श्रीमन्मालिनि मन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

(उपर्युक्त 'श्रीनाथादिगुरुत्रयं०' गुरुमण्डल के अर्चन का रहस्यमय 'मन्त्र' है।)

विनियोग: - **ॐ अस्य श्रीगुरुमण्डलमहामन्त्रस्य हंस ऋषि:। गायत्री छन्द:। श्रीगुरुमण्डल: देवता। ऐं बीजं। ह्रीं शक्ति:। क्लीं कीलकं। श्रीगुरुमण्डलप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।**

ऋष्यादिन्यास- **श्रीगुरुमण्डलमहामन्त्रस्य हँसऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयो:। क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीगुरुमण्डलप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय: नमः अञ्जलौ।**

इस प्रकार विनियोग, ऋष्यादिन्यास कर मूलमन्त्र से करहृदयादिन्यास करे। फिर दिग्बन्धन करे। अनन्तर 'श्रीनाथादिगुरुत्रयं०' इस मन्त्र को पढ़कर 'गुरुमण्डल' का ध्यान करे तथा ब्रह्मरन्ध्र में **श्रीनाथादिगुरु** पंक्ति का चिन्तन एवं पूजन करे। '**श्रीनाथादिगुरु**' तीन प्रकार के माने गए हैं-

१ दिव्यौघ, २ सिद्धौघ और ३ मानवौघ। अत: प्रथम 'दिव्यौघ' का पूजन करना चाहिए।

१. दिव्यौघ- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिवानन्दनाथ पराशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदाशिवानन्दनाथ चिच्छक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीईश्वरानन्दनाथ आनन्दशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्री श्रीरुद्रदेवानन्दनाथ इच्छाशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ ज्ञानशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मदेवानन्दनाथ क्रियाशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥**

२. सिद्धौघ- प्रत्येक नाम के पूर्व **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** लगा लें- **१. श्रीसनकानन्दनाथ। २. श्रीसनन्दनानन्दनाथ। ३. श्रीसनातनानन्दनाथ। ४. श्रीसनत्कुमारानन्दनाथ। ५. श्रीशौनकानन्दनाथ। ६. श्रीसनत्सुजातानन्दनाथ। ७. श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ। ८. श्रीरैवतानन्दनाथ। ९. श्रीवामदेवानन्दनाथ। १०. श्रीव्यासानन्दनाथ। ११. श्रीशुकानन्दनाथ।**

३. मानवौघ (प्रत्येक नाम के पूर्व **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** लगा लें)। **१. श्रीनृसिंहानन्दनाथ। २. श्रीमहेशानन्दनाथ। ३. श्रीभास्करानन्दनाथ। ४. श्रीमहेन्द्रानन्दनाथ। ५. श्रीमाधवानन्दनाथ। ६. श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ।** कादिविद्या, हादिविद्या, षोडशी तथा परोपासकों के ओघत्रय पृथक् पृथक् हैं। जो जिस विद्या का उपासक हो, वह उपर्युक्त ओघत्रय के स्थान पर अपने-अपने देवता के ओघत्रय का पूजन कर सकता हैं।

४. गुरुत्रय- **(१ गुरु, २ परम गुरु, ३ परमेष्ठि गुरु)- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शिवः सोहंस्वरूपनिरूपणहेतवे स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सोहं हंसः शिवः सोहं स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे परमगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्री ॐ हंसः शिवः सोहं स्वात्मारामपरमानन्द पञ्जरविलीनतेजसे परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥**

५. गणपति (महागणपतिं)- **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।**

६. पीठत्रय- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः शिवः सोहं अं आं सौः श्रीकामगिरिपीठ ब्रह्मात्मकशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः शिवः सोहं श्रीपूर्णगिरिपीठ विष्णवात्मकशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः शिवः सोहं श्रीजालन्धरपीठ रुद्रात्मक शक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥**

७. भैरव (अष्टभैरव) - **ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं मन्थानभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीषट्चक्र भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ऐं ह्रीं श्री फ्रें फट् फां फीं ह्रीं रां फट्कारभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीऐकात्मभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीहविभक्ष्यभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीचण्डभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीभ्रमरभास्करभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥७॥**

८. सिद्धौघ- (प्रत्येक नाम के आदि में **ह्री श्रीं सौः अं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। **१ श्री महादुर्मताम्बा सिद्ध। २ श्री सुन्दर्यम्बा सिद्ध। ३. श्री करालिकाम्बा सिद्ध। ४. श्रीत्रिवाणाम्ब सिद्ध। ५. श्री श्रीमाम्बा सिद्ध। ६. श्री कराल्यम्बा सिद्ध। ७. श्री खरानताम्बा सिद्ध। ८. श्रीविशालिन्यम्बा सिद्ध।**

९. वटुकत्रय- (आदि में **ह्रीं श्रीं सौः क्लीं फट्** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। **१ श्रीस्कन्दवटुक। २. श्रीचित्रवटुक। ३. श्रीविरञ्चिवटुक।**

१०. पदयुग- (आदि में **हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। **१ श्रीप्रकाश। २. श्रीविमर्श।**

११. दूतीक्रम- (आदि में **अं आं सौ. ह्रीं श्रीं सौः** और अन्त में **दूतिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। **१ श्रीयोन्यम्बा। २ श्रीयोनिसिद्धनाथाम्बा। ३ श्रीमहायोन्यम्बा। ४. श्रीमहायोनिसिद्धनाथाम्बा। ५. श्रीदिव्ययोन्यम्बा। ६. श्रीदिव्ययोनिसिद्धनाथाम्बा। ७. श्रीशङ्खयोन्यम्बा। ८. श्रीशङ्खयोनिसिद्धनाथाम्बा। ९. श्रीपद्मयोन्यम्बा। १०. श्रीपद्मयोनिसिद्धनाथाम्बा।**

१२. मण्डल- **ह्रीं श्रीं ऐं अग्निमण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ह्रीं श्रीं सौः सोममण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥**

१३. वीरानष्ट- (आदि में **ह्रीं श्रीं फट् फां फीं और अन्त में श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि** नमः जोड़ लें)। **१. श्रीसृष्टिभैरव। २. श्रीस्थितिभैरव। ३. श्रीसंहारभैरव। ४. श्रीरक्तवीरभैरव। ५. श्रीयमवीरभैरव। ६. श्रीमृत्युवीरभैरव। ७. श्रीभद्रवीरभैरव। ८. श्रीपरमार्थवीरभैरव। ९. श्रीमार्तण्डवीरभैरव। १० श्रीकालाग्निरुद्रवीरभैरव।** मन्त्र में '**अष्ट वीर**' बताए गए हैं, किन्तु व्याख्या में तथा तन्त्रग्रन्थों में १० बताए गए हैं। तन्त्रग्रन्थों के अनुसार ही व्याख्या की गई हैं, अतएव १० लिखे हैं।

१४. चतुष्कषष्टि (६४)-(आदि में '**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं सौः ह्रीं**' एवं '**श्रीं**' और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें।) **१ मङ्गलानाथा। २ चण्डिकानाथा। ३ कलुकानाथा। ४ पट्टहानाथा। ५ कूर्मानाथा। ६ धनदानाथा। ७ गन्धानाथा। ८ गगनानाथा। ९ मतङ्गानाथा। १० चम्पकानाथा। ११ कैवर्तानाथा। १२**

मातङ्गगमनानाथा। १३ सूर्यभक्ष्यानाथा। १४ नभोभक्ष्यानाथा। १५ स्तौतिकानाथा। १६ रूपिकानाथा। १७ दंष्ट्रापूज्यानाथा। १८ धूम्राक्षानाथा। १९ ज्वालानाथा। २० गान्धारानाथा। २१ गगनेश्वरानाथा। २२ मायानाथा। २३ महामायानाथा। २४ नित्यानाथा। २५ शालानाथा। २६ विश्वानाथा। २७ कामिनीनाथा। २८ उमानाथा। २९ श्रियानाथा। ३० सुभगानाथा। ३१ सर्वगानाथा। ३२ लक्ष्मीनाथा। ३३ विद्यानाथा। ३४ मीनानाथा। ३५ अमृतानाथा। ३६ चन्द्रानाथा। ३७ सिद्धानाथा। ३८ श्रद्धानाथा। ३९ अनन्तानाथा। ४० शम्बरानाथा। ४१ उल्कानाथा। ४२ त्रैलोक्यानाथा। ४३ भीमानाथा। ४४ राक्षसीनाथा ४५ मणिनाथा ४६ प्रचण्डानाथा। ४७ अनङ्गानाथा। ४८ विधिनाथा। ४९ अनभिहितानाथा। ५० नन्दिनीनाथा। ५१ महामनानाथा। ५२ सुन्दरीनाथा। ५३ विश्वेश्वरीनाथा। ५४ कालनाथा। ५५ महाकालनाथा। ५६ अभयानाथा। ५७ विकारानाथा। ५८ महाविकारानाथा। ५९ सर्वगानाथा। ६० सकलानाथा। ६० पूतनानाथा। ६२ सर्वरीनाथा। ६३ व्योमानाथा। ६४ ज्येष्ठानाथा। किसी पुस्तक में '**श्रीज्येष्ठानाथा**' तीसरा संख्या पर है। किसी पुस्तक में '**अनङ्गविधिनाथा**' एक पद कर दिया है। जहाँ एक पद है, वहाँ '**विधिनाथा**' के स्थान में '**रविनाथा**' लिखी गई है। हस्तलिखित तान्त्रिक पुस्तकों में पीठपरिवर्तन होना स्वाभाविक है।

१५. मुद्रानवक (नवमुद्रा)–**१ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः। २ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रायै नमः। ३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रायै नमः। ४ ब्लूँ सर्ववशङ्करीमुद्रायै नमः। ५ सः सर्वोन्मादिनीमुद्रायै नमः। ६ क्रौं सर्वमहांकुशामुद्रायै नमः। ७ हसखफ्रें सर्वखेचरीमुद्रायै नमः। ८. हस्रौं सर्वबीजामुद्रायै नमः। ९ ऐं सर्वयोनिमुद्रायै नमः। नवमुद्राम्बायै नमः।**

१६. वीरावलीपञ्चक– (पाँचवीरसमूह) 'आदि में **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः**' और अन्त में '**नमः**' जोड़ ले। **१ लं ब्रह्मवीरावल्यै। २ वं श्रीविष्णुवीरावल्यै। ३ रं श्रीरुद्रवीरावल्यै। ४ यं श्रीईश्वरवीरावल्यै। ५ हं श्रीसदाशिववीरावल्यै।** किसी-किसी आचार्य ने '**वीरावली**' को पृथक कर '**पञ्चकं**' को अलग कर दिया है। '**पञ्चकं**' पृथक माननेवालों के मत में– **१ पञ्चलक्ष्मी, २ पञ्चकोश, ३ पञ्चकल्पलता, ४ पञ्चकामदुघा और ५ पञ्चरत्नविद्या** यह '**पञ्चपञ्चिका**' दी गई है, किन्तु हमारी समझ में तो तत्पुरुष समास ठीक है। पञ्चब्रह्मों के नाम से '**वीरावलीपञ्चक**' की कल्पना की गई है और यदि '**पञ्चपञ्चिका**' भी सम्मिलित की जाए, तो हानि कोई नहीं। '**अधिकस्याधिकं फलम्**' के अनुसार '**गुरुमण्डल**' की वृद्धि ही है।

१७. श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज के सहित– **(१) ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं। शं षं सं हं ळ क्षं। हंसः सोहं मालिन्यम्बायै नमः। (२) ॐ उग्रं वीरं महाविष्णु, ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिहं भीषणं भद्रं, मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्॥** यहाँ पर भी '**श्रीमालिनी मन्त्र**' अलग दिखाकर '**मन्त्रराज**' पद की अलग व्याख्या कर '**श्रीनृसिंह**' का ध्यान तथा मन्त्र दिया गया है तथा '**वन्दे गुरोर्मण्डलम्**' से पूर्वोक्त गुरुमण्डल की वन्दना समष्टिरूप से की गई है, किन्तु बहुत सी पुस्तकों में '**गुरुमण्डल**' की व्याख्या भी पृथक दी गई है।

॥ श्री क्रम के कुलगुरु ॥

श्रीकुल साधकों के कुल गुरु इस प्रकार है– दिव्यौघगुरु– **१. परप्रकाशानंदनाथ २. परशिवानंदनाथ ३. पराशक्त्यम्ब ४. कौलेश्वरानंदनाथ ५. शुक्लदेव्यम्ब ६. कुलेश्वरानंदनाथ ७. कामेश्वर्यम्बा।** सिद्धौघ गुरु– **भोगानंदनाथ। क्लिन्नानंदनाथ। समयानन्दनाथ। सहजानंदनाथ।** मानवौघ गुरु– **गगनानंदनाथ। विश्वानंदनाथ। विमलानंदनाथ। मदनानंदनाथ। भुवनानंदनाथ। प्रियानंदनाथ। श्रीशङ्कर भगवतपाद। (दिव्यौघ सिद्धौघ मानवौघ गुरुकवच** हमारी

दूसरी पुस्तक **सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश 'देवीखण्ड-उत्तरार्ध खण्ड'** में अवलोकन करे)

॥ कादीक्रम के कुलगुरु ॥

१. परमानंदनाथ, २. प्रकाशनन्दनाथ ३. भोगानंदनाथ ४. समयानंदनाथ, ५. गगनानंदनाथ ६. विश्वानंदनाथ ७. भुवनानंदनाथ ८. स्वात्मानंदनाथ (इन आठ गुरुओं के अलावा **मदनानंदनाथ। लीलानंदनाथ और महेश्वरानंदनाथ** गुरु कहे हैं।) (दोनों प्रकार के कुल गुरुओं का यंत्रार्चन दूसरी पुस्तक उत्तरार्ध भाग में अवलोकन करे।)

(विद्यार्णव तंत्रे) काली मत के अनुसार गुरुक्रम इस प्रकार है-

'कालीमत' के अनुसार **'गुरुक्रम'** निम्न प्रकार है-

श्री प्रह्लादानन्दनाथ, सनकानन्दनाथ, वशिष्ठानन्दनाथ, कुमारानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, शुकानन्दनाथ, ध्यानानन्दनाथ, बोधानन्दनाथ और सुरानन्दनाथ ये नौ (नव) **'कुलगुरु'** हैं। ये द्विनेत्र, द्विभुज तथा वराभय धारण करनेवाले हैं। **श्री विरूपानन्दनाथ, चिन्मयानन्दनाथ और चित्शक्त्याम्बा** ये तीन **'दिव्यौघ'** गुरु हैं। **श्री प्रबोधानन्दनाथ, सुवेशानन्दनाथ, अनन्तानन्दनाथ, सितानन्दनाथ, सुधानन्दनाथ, त्रिमूर्त्यानन्दनाथ और झिण्टीशानन्दनाथ** ये सात **'मानवौघ'** गुरु हैं।

'कादिविद्या' के उपासकों की गुरुपरम्परा निम्न प्रकार है- **परप्रकाश, परशिव, परशक्ति, कौलेश्वर, शुक्लदेव्यम्बा, कुलेश्वर** ओर **कामेश्वर्यम्बा**- ये सात **'दिव्यौघ'** गुरु हैं। **भोगानन्दनाथ, क्लिन्नानन्दनाथ, समयानन्दनाथ** और **सहजानन्दनाथ**-ये चार **'सिद्धोघ'** गुरु हैं। **गगनानन्दनाथ, विश्वानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ** और **प्रियानन्दनाथ**- ये चार **'मानवौघ'** गुरु हैं। इन सबकी यथास्थान पूजा कर पश्चात् नीचे दी गई **'गुरुसन्तति'** की पूजा करे- कपिल से लेकर व्यासपर्यन्त पूर्वोक्त २१ गुरु सन्तति (श्रीविद्याक्रम में वर्णित है) तथा **करुण, वरुण, विजय, समर, गुण, बल, विश्वम्भर, सत्य, प्रिय, श्रीधर, शारद, सकलेश, विलास, नित्येश, विश्वपुरुष, गोविन्द, विबुध, सिंह, वीर, सोम, दिवाकर, अचल, वाग्भव, नाद, मोहन, सुलभ, शिव, मृत्युञ्जय, वासुदेव, शरण, सनन्दन, आकाश, गोप्रिय, हर्ष, भर्ग, काम, महीधर, ईशान, गणेश, कपाल, भैरव ओर दिव**- ये ४२ गुरु तथा **गौड़** से लेकर **शङ्कर** तक ये सात गुरु अर्थात् **गौड़पादाचार्य, भगवत गोविन्दाचार्य, शङ्कराचार्य, पद्मपादाचार्य, हस्तामलकाचार्य, तन्त्रोटकाचार्य और वर्तिककार (सुरेश्वराचार्य)**। भगवान् शङ्कराचार्य के शिष्यों की उपाधि भी शंकराचार्य थी। अतएव अधावधि भी चार पीठों के शंकराचार्य के नाम से व्यवहृत होते हैं। इस सम्पूर्ण **'गुरुसन्तति'** की संख्या मिलाकर ७१ इकहत्तर होती हैं।

॥ श्री कुलगुरुपरम्परा (विद्यार्णव तंत्रे)॥

श्री १०८ देशिकप्रवर स्वामी विद्यारण्यविरचित **'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र'** में गुरुओं के आयुधों का वर्णन दिया है। यथा-

खेटं कपालं च त्रिशूलं मुद्गरं तथा।खट्वाङ्गं शरचापौ च, दधानाश्च वराभये ॥
तुरीये यामिनीयामे, कुण्डलिन्या महौजसि। ते विसर्गादधोभागे, लाक्षारससमप्रभे ॥
चिन्तनीयाः प्रयत्नेन, विद्यासंसिद्धिहेतवे।एतान् कुलगुरुन् यत्नान्, न चिन्तयति साधकः ॥
तस्य पूजा जपश्चैव, स्नानदानादिकं वृथा।एतान् कुलगुरुन्, ध्यायेत्, ऊर्ध्वाम्नायर्णदीक्षितः ॥

ऊर्ध्वाम्नायक्रम में ओघत्रय (दिव्य, सिद्ध और मानव) गुरुओं को पृथक् पृथक् इस प्रकार बताया गया है-

१. ग्यारह दिव्यौघ- **१ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ रुद्र, ४ ईश्वर, ५ सदाशिव, ६ इच्छाशक्ति, ७ ज्ञानशक्ति, ८ क्रियाशक्ति, ९ कुण्डलिनी, १० मातृका और ११ पर शक्ति।**

२. आठ सिद्धौघ- **१ आदिनाथ, २ परशक्ति, ३ अचिन्त्यनाथ, ४ अचिन्त्यशक्ति, ५ अव्यक्तनाथ, ६ अव्यक्तशक्ति, ७ कुलेश्वर और ८ कुलेश्वरी।**

३. मानवौघ- **१ तूष्णीश, २ सिद्धाम्बा, ३ मित्र, ४ कुब्जाम्बा, ५ गगन, ६ चाटुली, ७ चन्द्रगर्भ ८ बलिभागिनी ९ मुक्त, १० महिला, ११ ललित, १२ शङ्खाम्बा, १३ श्रीकण्ठ, १४ श्रीकण्ठाम्बा, १५ परमेश्वरी १६ कुमार, १७ सहजाम्बा, १८ रत्न, १९ ज्ञानदेवी, २० ब्रह्मा, २१ नादिनी, २२ अजेश्वर, २३ अजेश्वराम्बा, २४ प्रतिष्ठानन्दनाथ, २५ सहजाम्बा, २६ शिव, २७ प्रतिभाम्बा, २८ चिदानन्द, २९ सहजाम्बा, ३० श्रीकण्ठ, ३१ आनन्दविद्या, ३२ शिव, ३३ सहजाम्बा, ३४ सोम, ३५ सहजाम्बा, ३६ संविदानन्दनाथ, ३७ सहजाम्बा, ३८ विबुधानन्दनाथ, ३९ विबुधाम्बा, ४० भैरव, ४१ भैरव्यम्बा, ४२ आनन्दनाथ, ४३ अनन्दिन्यम्बा, ४४ कामेश्वर, ४५ कामेश्वर्यम्ब, ४६ कमलानन्दनाथ** और **४७ सहजाम्बा**- ये मानवौध गुरु हैं। ये द्विभुज हैं और वराभय धारण करते हैं।

ऊर्ध्वाम्नायान्तर्गत शाम्भवक्रम में **श्रीषोडशी महाविद्या के उपासकों का गुरुक्रम** इस प्रकार दिया है-

१ श्री व्योमातीताम्बा, २ व्योमेश्यम्बा, ३ व्योमगाम्बा, ४ व्योमवारिण्यम्बा और ५ व्योमस्थाम्बा ये पञ्चाम्बाएँ दिव्यौघ गुरु हैं।

सिद्धौघ गुरु - **१. उन्मनाकाशानन्दनाथ, २ समनाकाशानन्दनाथ, ३ व्यापकाकाशानन्दनाथ, ४ शक्त्याकाशानन्दनाथ, ५ ध्वन्याकाशानन्दनाथ, ६ ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथ, ७ अनाहताकाशानन्दनाथ, ८ विन्द्वाकाशानन्दनाथ और ९ द्वन्द्वाकाशानन्दनाथ**- ये नौ 'सिद्धौघ गुरु' हैं।

मानवौघ गुरु - **१ परमात्मानन्दनाथ, २ शाम्भवानन्दनाथ, ३ चिन्मुद्रानन्दनाथ, ४ वाग्भवानन्दनाथ, ५ लीलानन्दनाथ ६ सम्भ्रमानन्दनाथ, ७ चिदानन्दनाथ, ८ प्रसन्नानन्दनाथ और ९ विश्वानन्दनाथ**- ये नौ 'मानवौघ गुरु' हैं।

उक्तदिव्यौघ, सिद्धोघ और मानवौघ गुरुओं की पूजा के अनन्तर-स्वगुरुक्रम की पूजा होती है। प्रत्येक गुरुनाम के प्रारम्भ में '**श्री**' और अन्त में '**आनन्दनाथ नमः**' जोड़ लेना चाहिए, जैसे- **श्रीकपिलानन्दनाथ नमः** इत्यादि। **कपिल, वशिष्ठ, सनक, सनन्दन, भृगु, सनत्त्, सुजत्त वामदेव, नारद, गौतम, शौनक, शक्ति, मार्कण्डेय, कौशिक, पराशर, शुक्र, अङ्गिरा, कण्व, जावालि, भरद्वाज, वेदव्यास, ईशान, रमण, कपर्दी, भूधर, सुभट, जलज, भूतेश, परम, विनय, भरण, पद्मेश, सुभग, विशुद्ध, समर, कैवल्य, गणेश्वर, सुपाथ, विबुध, योग, विज्ञान, अनङ्ग, विभ्रम, दामोदर, चिदाभास, चिन्मय, कलाधर, वीरेश्वर, मन्दार, त्रिदश, सागर, मृड़, हर्ष, सिंह, गौड़, वीर, अघोर, धुव, दिवाकर चक्रधर, प्रमथेश, चतुर्भुज, आनन्द, भैरव, वीर, गौड़, पराचार्य, सत्यनिधि, रामचन्द्र, गोविन्द और श्रीशङ्कराचार्य।** इन गुरुओं की संख्या एकसप्तति अर्थात इकहत्तर ७१ है।

'**श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र**' के अनुसार भगवान् शङ्कराचार्य के च्रोदह शिष्य दर्शाए हैं, जिनमें से **शङ्कराचार्य, बोधाचार्य, गीर्वाणाचार्य, पद्मपादाचार्य और आनन्दतीर्थाचार्य**- ये पाँच भिक्षु अर्थात् संन्यासी थे। शेष नौ शिष्य **सुन्दर, विष्णु, शर्मा, लक्ष्मण, मल्लिकार्जुन, त्रिविक्रम, श्रीधर, कपर्दी, केशव और दामोदर गृहस्थ** थे। ये लोग अपने विषय के अद्‌भुत विद्वान थे और '**शङ्कर**' की उपाधि से विभूषित थे तथा भगवती की ही आत्मा माने जाते थे। **पद्मपादाचार्य के माण्डलिक, परपावक, निर्वाण, गोवर्धन, चिदानन्द और शिवोत्तम**- ये छः शिष्य थे। **बोधाचार्य** के शिष्य केरलप्रदेश के निवासी थे अर्थात् केरल प्रदेश में शाक्तधर्म को फैलानेवाले बोधाचार्य थे। **गीर्वाणाचार्य** के

शिष्य **गीर्वाण पण्डित** तथा उनके शिष्य **विबुधेन्दु** और उनके शिष्य **सुधीन्द्र** तथा उनके शिष्य **मन्त्रगीर्वाण** हुए और उनके भी अनेक शिष्य हुए। **महात्मा आनन्दतीर्थ** के अनेक गृहस्थ शिष्य हुए, जो पादुका, पीठ और सम्प्रदाय के विशेषज्ञ थे।

भगवान् शङ्कराचार्य के जो नौ गृहस्थ शिष्य बने थे, उनकी परम्परा निम्न प्रकार है- **सुन्दराचार्य** के शिष्य पीठनायक (पीठाधिपति), भिक्षु (संन्यासी) और गृहस्थ तीनों प्रकार के लोग थे। **विष्णु शर्मा** के शिष्य **पण्डित प्रगल्भाचार्य** हुए और उनके शिष्य 'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के रचयिता **श्री १०८ स्वामी विद्यारण्य हुए।**

श्री स्वामी जी ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि इस ग्रन्थ की समाप्ति पर श्री महात्रिपुरसुन्दरी जगदम्बा ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर मुझे वर माँगने के लिए कहा, तो मैंने निवेदन किया कि हे माता! यदि आप प्रसन्न हैं, तो जो साधक मेरी पुस्तक में मेरा लिखा गुरुक्रम और मन्त्रों को देखकर श्रद्धापूर्वक मुझे अपना गुरु मानकर योग्य गुरु के अभाव में गुरुसन्तति के ज्ञान से दीक्षा के बिना भी तेरे मन्त्र का जप करें, उनको सब प्रकार की सिद्धि तुम्हारे प्रसाद से प्राप्त हो जाए, यही मेरी तुम्हारे चरणों में प्रार्थना हैं। श्री महात्रिपुरसुन्दरी **'एवमस्तु'** कहकर अन्तर्ध्यान हो गई। अतः इस 'गुरुक्रम' के ज्ञानमात्र से जगदम्बा सन्तुष्ट हो जाती हैं। विन्ध्यप्रदेश के सब निवासी **मल्लिकार्जुन** के शिष्य बने और वहाँ पर उनकी ही शिष्य परम्परा विद्यमान है।

महात्मा त्रिविक्रम के शिष्य उड़ीसा प्रान्त में व्यापत हुए। उड़ीसा का प्राचीन नाम **'जगन्नाथ प्रदेश'** था। गौड़, मैथिल और वङ्ग प्रदेश के निवासी **श्रीधराचार्य** के मतानुयायी हैं अर्थात् उनके द्वारा वहाँ शाक्तधर्म का प्रचार हुआ। विश्वनाथपुरी 'काशी' तथा महाराज रामचन्द्र की पुरी 'अयोध्या' में तथा उनके चारों ओर **कपर्दी** के द्वारा इस सम्प्रदाय को व्याप्ति हुई अर्थात् वहाँ के निवासी आचार्य कपर्दी के शिष्य हुए। भगवान् शङ्कर के शिष्यों के अतिरिक्त इस सम्प्रदाय को चलानेवाला दूसरा नहीं हुआ।

अतएव लिखा है- **सम्प्रदायो हि नान्योऽस्ति, लोके श्रीशङ्कराद् बहिः।**

॥ अथ भूतशुद्धि प्रयोगः॥

सर्वप्रथम भू शुद्धि करें। यथा -

तन्त्रों के रचियता भगवान शिव का स्मरण करें। शिव मन्त्र अथवा इष्ट मन्त्र से आचमन प्राणायाम का संकल्प करें।

विनियोगः - **ॐ नमो भगवते रुद्राय इति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः रुद्रो देवता विराट् छन्दः आचमने प्राणायामे विनियोगः।**

इष्ट मन्त्र से तीन बार आचमन कर, हस्तशुद्धि कर प्रणायाम करें। आसन पूजा भूमिपूजा करें।

विनियोगः - **ॐ भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः मातृका देवताः प्रस्तारपंक्ति छन्दः भू शुद्धौ विनियोगः।**

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्यभुवनस्वधर्त्री पृथिवीयच्छ पृथिवीन्दृ ठं ह पृथिवीम्माहि ठं सीः।

शिखा बन्धन करें। गुरु नमस्कार कर स्मरण करें।

स्वदक्षिणे - **ॐ गुरुभ्यो नमः, सरस्वत्यै नमः, शङ्खनिधये नम।** स्ववामे - **गंगणेशाय नमः, दुं दुर्गायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ पद्मनिधये नमः, हृदये-इष्टदेवताभ्यो नमः।**

भैरव को नमस्कार करें -

विनियोग: – **यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिः नारायणो देवता अनुष्टुप्छन्दः भैरव नमस्कारे विनियोगः।**

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिल्लोका अधिश्रिताः। यऽइशे महतो महाँस्तेन गृह्णामित्त्वामहम्मयि गृह्णामि त्वामहम्॥ भैरवाय नमः।

॥ भूतशुद्धिः॥

भूतशुद्धि प्रयोग हेतु शरीर में छः स्थित चक्रों का तथा कुण्डली शक्ति एवं ब्रह्मरंध्र स्थित सहस्त्रदल का ज्ञान होना जरुरी है।

मूलाधार से आज्ञा चक्र कौन कौन से चक्र हैं, उनका क्या वर्ण है एवं कौन कौन सी मातृकायें किस-किस दल में है इनका वर्णन अन्तर्मातृकान्यास में दिया गया है।

परब्रह्म की दिव्य चेतना शक्ति मूलाधारचक्र में सर्पिणी रूप में शिवलिङ्ग के साढे तीन आवृत्ति कर लिपटी हुई है। साधक उसको जागृत कर सुषुम्ना मार्ग से ले जाते हुये ब्रह्मरंध्र में परब्रह्म से मिलावें तथा '**ॐ हंसः सोहं**' इस मन्त्र को स्मरण करते हुये हृदयकमल से **जीवतत्व** को उठाकर ब्रह्मरंध्र में परब्रह्म से संयोजन कर जीव को ब्रह्ममय बनायें। **इस तरह जीव का शोधन हुआ जाने।**

मातृकोपसंहारः – शब्दब्रह्म के मातृकावर्णों की ब्रह्म में समष्टि करने से मातृका तत्त्व का शोधन होगा। मातृका के अन्तिम वर्ण को अपने पूर्व तत्व से संयोजन करते हुये **ॐ** तत्व तक संयोजन करें। इस तरह से समस्त मातृकावर्णों का **ॐ कार** में उपशमन होगा। यथा –

ॐ क्ष कारं हकारे उपसंहरामि। ॐ हकारं सकारे उपसंहरामि। ॐ सकारं षकारे उप०। ॐ षकारं शकारे उप०। ॐ शकारं वकारे उप०। ॐ वकारं लकारे उप०। ॐ लकारं रकारे उप०। ॐ रकारं यकारे उप०। ॐ यकारं मकारे उप०। ॐ मकारं भकारे उप०। ॐ भकारं बकारे उप०। ॐ बकारं फकारे उप०। ॐ फकारं पकारे उप०। ॐ पकारं नकारे उप०। ॐ नकारं धकारे उप०। ॐ धकारं दकारे उप०। ॐ दकारं थकारे उप०। ॐ थकारं तकारे उप०। ॐ तकारं णकारे उप०। ॐ णकारं ढकारे उप०। ॐ ढकारं डकारे उप०। ॐ डकारं ठकारे उप०। ॐ ठकारं टकारे उप०। ॐ टकारं ञकारे उप०। ॐ ञकारं झकारे उप०। ॐ झकारं जकारे उप०। ॐ जकारं छकारे उप०। ॐ छकारं चकारे उप०। ॐ चकारं ङकारे उप०। ॐ ङकारं घकारे उप०। ॐ घकारं गकारे उप०। ॐ गकारं खकारे उप०। ॐ खकारं ककारे उप०। ॐ ककारं अःकारे उप०। ॐ अःकारं अंकारे उप०। ॐ अंकारं औकारे उप०। ॐ औकारं ओकारे उप०। ॐ ओकारं एकारे उप०। ॐ ऐकारं एकारे उप०। ॐ एकारं लृकारे उप०। ॐ लृकारं लृकारे उप०। ॐ लृकारं ॠकारे उप०। ॐ ॠकारं ऋकारे उप०। ॐ ऋकारं ऊकारे उप०। ॐ ऊकारं उकारे उप०। ॐ उकारं ईकारे उप०। ॐ ईकारं इकारे उप०। ॐ इकारं आकारे उप०। ॐ आकारं अकारे उप०। ॐ अकारं सहस्त्रदलाम्बुजाकारे बह्मरन्ध्रे परमात्मनि लयं गत इति भावयेत्।

इसके बाद पञ्चतत्वों का शरीर में ध्यान कर उनका एक दूसरे में प्रविलाय करें।

विनियोग: – **शरीरस्यात्मा ऋषिः, प्रकृतिश्छन्दः, परमात्मा देवता , शरीरभूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

[शरीराकारभूतानां भूतानां यद्विशोधनम्। अव्यक्त ब्रह्मसंपर्काद्भूत शुद्धिरियं मता॥ भूतशुद्धिं विना कर्म क्रियते यज्जपादिकम्। तत्सर्वं निष्फलं यस्मात्तस्मात्तां पूर्वमाचरेत्॥] **ॐ पृथ्वीबीजमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीश्छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्वीभूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

पादादिजानु पर्यन्तं पृथ्वीस्थानं चतुरस्त्रं पीतवर्णं सबिन्दुकं लँ बीज सहितं ध्यायेत्।

विनियोगः - **ॐ वरुण बीजमन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः वरुणो देवता वारुणि भूतशुद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।**

जानु से नाभिपर्यन्त धनुषाकार शुभ्रवर्ण बिन्दू वँ बीज का ध्यान करें।

विनियोगः - **ॐ वह्नि बीजमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः जगतिछन्दः जातवेदोऽग्निर्देवता आग्नेय भूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

नाभि से हृदय पर्यन्त रक्तवर्ण के त्रिकोण अग्निमण्डल का ध्यान कर रँ बीज का स्मरण करें।

विनियोगः - **ॐ वायुबीजमन्त्रस्य किष्किन्थ ऋषिः बृहति छन्दः वायुर्देवता वायव्याख्य भूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

हृदय से भ्रूमध्य पर्यन्त धूम्रवर्ण के वर्तुलाकार वायुमण्डल का **यँ** बीज सहित ध्यान करें।

विनियोगः - **ॐ आकाशबीजमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः परमात्मादेवता आकाशाख्य भूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

भ्रूमध्य से ललाट पर्यन्त आकाशमण्डल का **हँ** बीज युक्त ध्यान करें।

ततो वायु सम्यङ् निरुध्य पृथिवीं अप्सु लयं नयेत्।

इसके बाद पृथ्वितत्व की जल में लय की भावना करें।

मन्त्र - ॐ लँ ह्रां ह्रूं फट् भुवं जले प्रविलापयामि।

ततो जलं अग्नौ संहरेत् **-ॐ वँ ह्रीं ह्रः फट् जलं शुचौ प्रविलापयामि।**

ततः अग्निः वायौ संहरेत् **-ॐ रँ ह्रूँ ह्रः फट् अग्निं वायौ प्रविलापयामि।**

वायु आकाशे लयं नयेत् **- ॐ यँ ह्रैः ह्रुं ह्रः फट् वायुं आकाशे प्रविलापयामि।**

आकाशं अहंकारे संहरेत् **-ॐ हँ ह्रौं ह्रः फट् आकाशं अहंकारे प्रविलापयामि।**

ॐ अहंकारं प्रकृतौ प्रविलापयामि। ॐ प्रकृतिं परमात्मनि प्रविलापयामि।

तत्पश्चात् शिर में कर्णिका व केसर युक्त अष्टदल की भावना करें, वहां चित्प्रकाशवान् चन्द्रमा के समान शीतल स्वरूप भगवान शिव का ध्यान करें।

(यदि भूतशुद्धि करने में असमर्थ हो तो **ॐ ह्रौं** इस मन्त्र का १०८ बार जप कर अपने शरीर को शुद्ध करें)

इसके पश्चात् अपने शरीर में स्थित पापपुरुष का दहन कर स्वशरीर की प्राण प्रतिष्ठा कर मातृका न्यास करें।

तदनन्तर बाईं कोख में **पाप पुरुष का ध्यान** इस प्रकार करें -

वामकुक्षि स्थितं कृष्णामंगुष्ठ परिमाणांकं। विप्रहत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेय बाहुकम्॥
मदिरापान हृदयं गुरु तल्प कटीयुतम्। तत्संयोगि पदद्वन्द्वमुपपातक रोमकम्॥
खड्ग चर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं च दुःसहम्।

इसके बाद **यं** बीज को १६ बार जपते हुये बायीं नासिका से वायु को भीतर खींचे और बाँयी कोख में ले जाकर वहाँ

पर स्थित पाप पुरुष का उससे शोषण करें। इस समय दाहिनी नासिका को दाहिने अंगुष्ठ से बन्द किये रहें। इसके बाद **रं** अग्नि बीज को ६४ बार जपते हुये उस वायु को भीतर भरे रहें और यह समझें कि उस वायु से पाप पुरुष सहित सारी देह जल गई है। तदनन्तर **यं** वायु बीज को ३२ बार जपते हुये उस वायु को दाहिनी नासिका से बाहर निकाल दें और यह समझें कि जले हुये पाप पुरुष की देह की सारी राख उसके साथ बाहर निकल गई है। इस समय बायीं नासिका को अनामा और कनिष्ठा से बन्द किये रहें। **वं** सुधा बीज को सोलह बार जपते हुए ललाट में स्थित चन्द्रमा कि अमृत वृष्टि करावें और यह समझें कि उस अमृतवृष्टि से यह भस्मीभूत शरीर पुनः सावयव होकर पहले जैसे ही अस्तित्व में आ गया है। अत **लं** पृथ्वी बीज को १६ बार जपे और यह समझें कि वह देह पहले के समान सुदृढ़ हो गई है। इसके बाद **सोऽहं** इस बीज मन्त्र का उच्चारण कर परमात्मा से युक्त जीवात्मा और कुण्डलनी को उसी मार्ग से ले जाकर हृदयकमल में जीवात्मा को और कुण्डलनी को मूलाधारचक्र में स्थापित करें। इस प्रकार अपनी आत्मा को प्रगञ्चों से परे समझें।

इस प्रकार देह की शुद्धि कर लेलिहानीमुद्रा से अपने हृदय के दशदल के कमल में अपने इष्ट देवता की प्राणप्रतिष्ठा करें। पहले स्वयं की **मम प्राणा** इत्यादि बोलकर प्रतिष्ठा करें। फिर **अमुक देवताया इष्टदेवताया प्राणा** इत्यादि मन्त्र पढ़ें। यथा -

॥ स्वप्राणप्रतिष्ठा ॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम वाङ्मनो चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणपदानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़े और यह समझें कि मेरा शरीर दिव्यप्राणमय हो गया है। पश्चात् **मम प्राणा** की जगह इष्टदेवता का अपने हृदय में आवाहन **अमुक देवताया प्राणा इह प्राणा** सहित उपरोक्त मन्त्र जपें एवं समझें कि देवता अपने साकार रूप में उसके हृदय में स्थित होगया है।

करशुद्धिन्यासः - इसके बाद न्यासक्रिया के लिये अंगुलियों की शुद्धि के लिए करशुद्धि न्यास करें। यथा -

ॐ अं नमः दक्ष करतले। ॐ आं नमः वाम करतले। ॐ इं नमः दक्ष करपृष्ठे। ॐ ईं नमः वाम करपृष्ठे। ॐ उं नमः दक्ष करतले। ॐ ऊं नमः वाम करतले। ॐ ऋं नमः दक्ष अंगुष्ठे। ॐ ॠं नमः दक्ष तर्जन्यां। ॐ लृं नमः दक्ष मध्यमायाम्। ॐ लॄं नमः दक्ष अनामायाम्। ॐ एं नमः दक्ष कनिष्ठायाम्। ॐ ऐं नमः वाम कनिष्ठायाम्। ॐ ओं नमः वामअनामायाम्। ॐ औं नमः वाममध्यमायाम्। ॐ अं नमः वामतर्जन्याम्। ॐ अः नमः वामअंगुष्ठे।

ॐ कं नमः वामतर्जनीप्रथम पर्वे। ॐ खं नमः वामतर्जनीमध्यपर्वे। ॐ गं नमः वामतर्जनीतृतीयपर्वे। ॐ घं नमः वामतर्जनीअग्रे। ॐ ङं नमः वाममध्यमाप्रथम पर्वे। ॐ चं नमः वाममध्यमा द्वितीयपर्वे। ॐ छं नमः वाममध्यमा तृतीयपर्वे। ॐ जं नमः वाम मध्यमाअग्रे। ॐ झँ नमः वामअनामा प्रथमपर्वे। ॐ ञं नमः वामअनामा द्वितीयपर्वे। ॐ टं नमः वामअनामा तृतीयपर्वे। ॐ ठं नमः वामअनामाअग्रे।

ॐ डं नमः वामकनिष्ठा प्रथमपर्वे। ॐ ढं नमः वामकनिष्ठा द्वितीयपर्वे। ॐ णं नमः वामकनिष्ठा तृतीयपर्वे। ॐ तं नमः वामकनिष्ठाअग्रे। ॐ थं नमः दक्षकनिष्ठा प्रथमपर्वे। ॐ दं नमः दक्षकनिष्ठा द्वितीयपर्वे। ॐ धं नमः दक्षकनिष्ठा तृतीयपर्वे। ॐ नं नमः दक्षकनिष्ठाअग्रे। ॐ पं नमः दक्षअनामा प्रथमपर्वे। ॐ फं नमः दक्षअनामा द्वितीयपर्वे। ॐ बं नमः दक्षअनामा तृतीयपर्वे। ॐ भं नमः दक्षअनामाअग्रे। ॐ मं नमः दक्षमध्यमाप्रथम पर्वे। ॐ यं नमः दक्षमध्यमा द्वितीयपर्वे। ॐ रं नमः दक्षमध्यमा तृतीयपर्वे। ॐ लं नमः दक्षमध्यमाअग्रे। ॐ वं नमः दक्षतर्जनीप्रथम पर्वे। ॐ शं नमः दक्षतर्जनीद्वितीयपर्वे। ॐ षं नमः दक्षतर्जनीतृतीयपर्वे। ॐ सं नमः दक्षतर्जनीअग्रे।

ॐ हं नमः दक्ष अंगुष्ठे। ॐ लं नमः वाम अंगुष्ठे। ॐ क्षं नमः सर्वाङ्गे।

॥ अन्तर्मातृकान्यासः॥

इसके बाद मातृकान्यास करें। पहले अन्तर्मातृकान्यास करें। यथा -

विनियोगः - अस्य अन्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुकदेवताया पूजाङ्गत्वेन (श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन) देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि। इं गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे। उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये। एं हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये। ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः। अ अव्यक्तकीलकाय नमः अः ना। श्री बालात्रिपुरा पूजांगत्वेन देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्या से विनियोगाय नमः अंजलौ।

प्राणायाम् - अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः इन स्वरों से पूरक। कं खं गं घं ङंचं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं रं लं वं शं षं सं हं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।

करन्यासः - अं कं खं गं घं ङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास - अं कं खं गं घं ङंआं हृदयाय नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ ध्यानम् ॥

आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे । द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के ॥
वासान्ते वालमध्ये डफकठ सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम्। हक्षौ तत्त्वार्थचिन्त्यं सकल दलगतं वर्णरूपं नमामि ॥
शारत्पूर्णेन्दुशुभ्रां सकललिपिमयीं लोलरक्तत्रिनेत्राम्। शुक्लालंकारभासां शशिमुकुटजटाभार हार प्रदीप्ताम् ॥
विद्यास्त्रक् पूर्णकुम्भान्वरमपि दधतीं शुद्ध पट्टाभिराढ्याम। वागदेवी पद्मपत्रां कुचभर नमितां चिन्तयेत् साधकेन्द्रः ॥

यह अन्तर्मातृकान्यास मेरुदण्ड में स्थित छहों चक्रों में करें। यथा -

॥ न्यासः ॥

कठे धूम्रवर्णे षोडशदले विशुद्धे - ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लॄं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः।

हृदये रक्तवर्णे द्वादशदले अनाहते - ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः।

नाभौ मेघवर्णे दशदले मणिपूरे - ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।

लिङ्गमूले विद्युद्वर्णे षट्दले स्वाधिष्ठाने - **ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।**

सुवर्णवर्णे चतुर्दले मूलाधारे - **ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।**

भ्रूमध्ये श्वेतवर्णे द्विदले आज्ञाचक्रे - **ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।**

॥ बहिर्मातृकान्यासः ॥

॥ सृष्टिमातृका न्यासः॥

इसके बाद बहिर्मातृकान्यास करें। पहले सृष्टिमातृका न्यास करें।

मतान्तरे सृष्टिन्यास स्त्री को एवं स्थितिन्यास पुरुष को करना चाहिये। बहिर्मातृकान्यास सृष्टि, स्थिति और संहार के क्रम से तीन प्रकार का होता है। यह किसी मत से यह ब्रह्मचारी सृष्टिन्यास से प्रारंभ करते हैं परन्तु गृहस्थ संहारक्रम से न्यास करते हैं। परन्तु सृष्टिन्यास सर्वत्र प्रचलित है।

विनियोगः - **अस्य बहिर्मातृकान्यासे सृष्टिमातृकान्यास मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्री छन्दः सृष्टिमातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुकदेवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सृष्टिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरा पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

प्राणायाम - **अं.......अः इन स्वरों से पूरक। कं.......मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं......क्षं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।**

करन्यासः - **अं कं......ङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं....मं औं कनिष्ठाकाभ्यां नमः। अं यं....क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास - **अं कं....ङंआं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं....नं ऐं कवचाय हुम्। ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

अर्द्धोन्मुक्त शशांक कोटिसदृशीमापीनतुङ्गातनीम् । चन्द्रार्द्धाङ्कितशेखरां मधुदलैरालोलनेत्रत्रयाम् ॥ विभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैः। आद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये ॥

॥ न्यासः॥

अं नमः ललाटे-मध्यमा+अनामिका

आं मुखवृत्ते-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका

इं नमः दक्षनेत्रे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

ईं नमः वामनेत्रे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

उं नमः दक्षकर्णे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

ऊं नमः वामकर्णे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

ऋं नमः दक्षनासायाम्-अंगुष्ठा+कनिष्ठा

ॠं नमः वामनासायाम्-अंगुष्ठा+कनिष्ठा
लृं नमः दक्षगण्डे -तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
ॡ नमः वामगण्डे-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
एं नमः ऊर्ध्वओष्ठे-मध्यमा
ऐं नमः अधोओष्ठे-मध्यमा
ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ-अनामिका
औं नमः अधो दन्तपंक्तौ-अनामिका
अं नमः शिरसि-मध्यमा
अः नमः मुखे-अनामिका (अनामिका+मध्यमा)
कं नमः दक्षबाहुमूले-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
खं नमः दक्षकूर्परे--मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
गं नमः दक्षमणिबन्धे-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
घं नमः दक्षकरतले-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
ङं नमः दक्षकराग्रे-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
चं नमः वामबाहुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
छं नमः वामकूर्पर-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
जं नमः वाममणिबन्धे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
झं नमः वामकरतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ञं नमः वामकराग्रे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
टं नमः दक्षोरुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ठं नमः दक्षजानुनि-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
डं नमः दक्षगुल्फे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ढं नमः दक्षपादतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
णं नमः दक्षपादाग्रे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
तं नमः वामोरुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
थं नमः वामजानुनि-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
दं नमः वामगुल्फे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
धं नमः वामपादतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
नं नमः वामपादाग्रे--कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
पं नमः दक्षपार्श्वे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
फं नमः वामपार्श्वे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
बं नमः पृष्ठे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
भं नमः नाभौ-अंगुष्ठ+कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
मं नमः जठरे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
यं त्वगात्मने नमः हृदि-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

रं असृगात्मने नमः दक्षांशे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

लं मांसात्मने नमः ककुदि-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

वं मेदात्मने नमः वामांशे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष करांगुल्यन्तम्।

षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम करांगुल्यन्तम्।

सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्।

हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्।

लं परमात्मने नमः हृदयादि कुक्षौ।

क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदयादि मुखे।

अब **स्थितिमातृकान्यास** करें। यथा -

॥ स्थितिमातृकान्यासः ॥

विनियोगः - **अस्य बहिर्मातृकान्यासे स्थितिमातृकान्याससमन्त्रस्य विष्णु ऋषिः गायत्रीछन्दः स्थितिमातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुक देवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **विष्णवे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। स्थितिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हलो बीजाय नमः गुह्ये। स्वराः शक्तये नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ**

प्राणायाम - **अं.......अः इन स्वरों से पूरक। कं.......मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं......क्षं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।**

करन्यासः - **अं कं......ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहाः। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं। ओं पं....मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं....क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।**

षडङ्गन्यास - **अं कं....ङं आं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं....नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

पक्षीन्द्रासनसंस्थितां भगवतीं श्यामां पिशंगावृताम् । शखं चक्रगदाब्जपाशसृणिभिर्मालां दधानां पराम् ॥
विद्याभीतिवरप्रदां त्रिनयनामापीनतुङ्गस्तनीम् । देवीं विष्णुमयीं समस्तजननीं ध्यायामि तामम्बिकाम् ॥

॥ न्यासः ॥

डं नमः दक्षगुल्फे। ढं नमः दक्षपादांगुलिमूले। णं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। तं नमः वामोरु मूले। थं नमः वामजानुनि। दं नमः वामगुल्फे। धं नमः वाम पादांगुलिमूले। नं नमः वाम पादांगुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं त्वगात्मने नमः हृदि। रं असृगात्मने नमः दक्षांशे। लं मांसात्मने नमः ककुदि। वं मेदात्मने नमः वामांशे। शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्षकरान्तम्। षं मज्जात्मने नमः हृदादि वाम करान्तम्। सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्षं पादान्तम्। हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वामपादान्तम्। लं परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ। क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदादिमुखे। अं नमः ललाटे। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्ष नेत्रे।

ईं नमः वाम नेत्रे। उं नमः दक्ष कर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षनासायाम्। ॠं नमः वाम नासायाम्। लृं नमः दक्षगण्डे। लॄं नमः वामगण्डे। एं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे। ऐं नमः अधो ओष्ठे। ओं नमः उर्ध्व दंतपंक्तौ। औं नमः अधो दंतपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमः मुखे। कं नमः दक्षबाहुमूले। खं नमः दक्ष कूर्परे। गं नमः दक्ष मणिबन्धे। घं नमः दक्ष करांगुलिमूले। ङं नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे। चं नमः वाम बाहुमूले। छं नमः वाम कूर्परे। जं नमः वाम मणिबन्धे। झं नमः वाम करतले। ञं नमः वाम करांगुल्यग्रे। टं नमः दक्षोरुमूले। ठं नमः दक्ष जानुनि।

इसके बाद **संहारमातृकान्यास** करें। यथा-

॥ संहारमातृकान्यासः ॥

विनियोगः - **अस्य बहिर्मातृकान्यासे संहारमातृकान्यासमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः गायत्रीछन्दः संहारमातृकासरस्वती देवता, मं इत्यारभ्य कं इति अन्तं हलानि बीजानि, अः आरम्भ अं इति अंतं स्वराः शक्तयः क्षं इति आरभ्य यं इति पर्यन्तः व्यंजनानि कीलकं अमुकदेवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - रुद्र ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। संहार मातृकासरस्वती देवतायै नमः हृदि। मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं बीजाय नमः गुह्ये। अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं शक्तये नमः पादयो। क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ

प्राणायाम - **अं......अः इन स्वरों से पूरक। कं......मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं......क्षं इन वर्णों से रेचक प्राणयाम करें।**

षडङ्गन्यास - **अः क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं अं अस्त्राय फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं शिखायै वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं शिरसे स्वाहा। आं ङं घं गं खं चं अं हृदयाय नमः।**

करन्यास - **अः क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं अं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं अनामिकाभ्यां हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं मध्यमाभ्यां वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं तर्जनीभ्यां स्वाहा। आं ङं घं गं खं कं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः।**

॥ ध्यानम् ॥

धूम्रांगीं मुक्तकेशीं शशिमलिनमुखीं घोररूपां त्रिनेत्राम्। व्यस्तैर्हस्तैर्दधानां व्यजनकरधृतां दीप्तमग्निं वहाहाम्। हाहाकाराट्टहासामभयवरकरां ज्वालयन्तीं दिशाश्च। भक्तेभ्यः प्रेमबद्धां दिशतु प्रतिदिनं भारतीं तां नमामि॥

॥ न्यास ॥

क्षं ज्ञानात्मने नमः ललाटे। ळं परमात्मने नमः मुखवृत्ते। हं जीवात्मने नमः दक्ष नेत्रे। सं शुक्रात्मने नमः वामनेत्रे। षं मज्जात्मने नमः दक्षकर्णे। शं अस्थ्यात्मने नमः वामकर्णे। वं मेदात्मने नमः दक्ष नासायाम्। लं मांसात्मने नमः वाम नासायाम्। रं असृगात्मने नमः दक्ष गंडे। यं त्वगात्मने नमः वामगण्डे। मं नमः ऊर्ध्वओष्ठे। भं नमः अधा ओष्ठे। बं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ। फं नमः अधो दंतपंक्तौ। पं नमः शिरसि। नं नमः मुखे। धं नमः दक्ष बाहुमूले। दं नमः दक्ष कूर्परे। थं नमः दक्ष मणिबन्धे। तं नमः दक्ष करांगुलिमूले। णं नमः दक्ष करांगुल्यग्रे। ढं नमः वामबाहुमूले। डं नमः वाम कूर्परे। ठं नमः वाममणिबन्धे। टं नमः वामकरांगुलिमूले। ञं नमः वामकरांगुल्यग्रे। झं नमः वामोरु मूले। जं नमः वामजानुनि। छं नमः दक्षगुल्फे। चं नमः दक्ष पादांगुलिमूले। ङंनमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। घं नमः वामोरुमूले। गं

नमः वामजानुनि। खं नमः वाम गुल्फे। कं नमः वामपादांगुलिमूले। अः नमः वामपादांगुल्यग्रे। अं नमः दक्ष पार्श्वे। औं नमः वाम पार्श्वे। ओं नमः पृष्ठे। ऐं नमः नाभौ। एं नमः जठरे। लृं नमः हृदये। लृं नमः दक्षांशे। ॠं नमः ककुदि। ऋं नमः वामांशे। ऊं नमः हृदयादि दक्ष करान्तम्। उं नमः हृदयादि वाम करान्तम्। ईं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। इं नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्। आं नमः हृदयादि कुक्षौ। अं नमः हृदयादि मुखे।

॥ इति ॥

॥ भूतलिपि प्रयोगः॥

मन्त्र जागृति हेतु वर्णात्मिका वागेश्वरी देवी का भूतलिपी सिद्धि हेतु प्रयोग करना चाहियें। शारदा तिलक में इसका विधान है - **प्राणतोषणी ग्रन्थ व अन्य ग्रन्थों** में भी विधान है कहीं कहीं मतान्तर भिन्नता भी है।

भगवान शिव ने कहा है कि जो साधक योनिमुद्रा नहीं कर सकते उन्हें **भूतलिपि का प्रयोग** करना चाहियें। योनिमुद्रा से तात्पर्य रतिसाधना की अंतरंग पूजा से है।

पाँच ह्रस्व - **अ इ उ ऋ लृ यह प्रथम वर्ग है।**

संधिवर्ण - **ए ऐ ओ औ यह द्वितीय वर्ग है। य र ल व ह यह तीसरा वर्ग है। क....ङ। च....ञ। ट....ण। त....न। प....म। ये पाँच अन्य वर्ग है। नवां वर्ग श ष स का हुआ। इस तरह ४२ अक्षर की यह भूतलिपि है।**

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, अश्वि, प्रजापति, इन्द्र, यम, वरुण एवं सोम इन नौ वर्गों के देवता है।

ऋष्यादिन्यासः - **ॐ श्रीभूतलिपि मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीवर्णेश्वरी देवता मन्त्रोर्जाग्रति हेतवे न्यासे जपे विनियोगः।**

क, च, ट, त, प वर्ग एवं श ष स इन छः वर्गों से हृदयादि षडङ्गन्यास करें।

भूतलिपि वर्णाक्षरों की एक वृक्षरूप में कल्पना करें, परसंवित् जिसका महाबीज है। बिन्दुनाद जिसकी महाशिफा है एवं पृथ्वीरूपी अक्षरों की शाखाओं से सभी दिशायें आच्छादित है।

भूतलिपि वर्णाक्षरों को भोजपत्र या ताम्रादिपात्र पर लिखें। सभी वर्ण बिन्दु अनुस्वार युक्त हों यथा - **कं खं गं घं....।**

भूतलिपि की प्राणप्रतिष्ठा कर देवी का ध्यान करें -

अङ्कोन्मुक्त शशाङ्ककोटिसदृशीमापीन तुङ्गस्तनीम्। चन्द्रार्द्धाङ्कितमस्तकां मधुमदादालोल नेत्रत्रयाम्। बिभ्राणामनिशं वरं जपवटीं विद्यां कपालं करैराद्यां। योवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये॥

नववर्गों से आचार्य मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि, हृदय, कण्ठ, बिन्दु, नाद, शिव एवं शक्ति इन नवाधारों में न्यास करें। क. च. ट. त. प. इन पाँचों वर्गो के वर्णो में बाहुओं एवं पादों में न्यास करें।

अग्रमूल, उपमूलाग्र, और मध्य देश के क्रम से समाहित होकर जठर, में दोनों पार्श्वों में, नाभि में, पृष्ठ में न्यास करें।

र ल च इन तीनों वर्णों से गुह्य हृदय एवं भ्रूमध्य में न्यास करें। वर्णाक्षरों का सृष्टि स्थिति तथा संहार क्रम से यथा प्रयोगानुसार न्यास करेना चाहिये।

सृष्टयां सर्गावसानां स्यात् स्थितौ वह्निर्मरुत् प्रियः। वियद्भूमि क्रमान्न्यस्येद् बिन्दुसर्गावसानिकाम्। संहृतौ प्रतिलोमेन विन्यसेद् विन्दुभूषिताम्। सृष्टयामिति सर्गावसानिका भूतलिपिरितिशेषः। स्थितौ विन्दुसर्गावसानिकां तां क्रमान्न्यसेद्

इत्यर्थः।

तत्रायं क्रमः – ऊः ईः ऋृः अः लृः ओः औः ऐंः एंः रंः यंः वंः हंः लंः। खंः कंः घंः गंः ङंः छंः चंः झंः जंः ञंः ठंः टः ढंः डंः णंः थंः तंः धंः दंः नंः फंः पंः भंः बंः मंः संः षंः शंः।

कश्चित् तु वह्नि वर्ग वर्णान् प्रथमं विन्यस्य पश्चान्मरुद् वर्णान् ततोजलान्तान् एतान् सविन्दून् ततो वियद्भूमि वर्णान् सविसर्गान् न्यस्येदित्याहस्म नौ वर्गों के प्रथमादि वर्ण व्योमादि नामों वाले होते हैं। यथा - क आदि ५ वर्णों वाले में आकाश, वायु, अग्नि, जल और भूमि होते हैं। द्वितीयवर्ग ए ऐ ओ औ में भू तत्व नहीं है। नवम वर्ग श ष स में जल एवं पृथ्वी तत्व नहीं है।

॥ भूतलिपि यन्त्रपूजनम् ॥

बिन्दु, षट्कोण, अष्टदल, षोडशदल, बत्तीसदल एवं उसके बाहर चौसठदल का कमल बनायें उनके बाहर चारद्वार युक्त भूपूर (परिधि) बनायें। नववर्गों के मातृका वर्णों को आसन प्रदान करें। मूर्ति की कल्पना कर पूर्वोक्त ध्यान करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **कं....ङंहृदयाय नमः। चं....ञं शिरसे स्वाहा। टं....णं शिखायै वषट्। तं....नं कवचाय हुम्। पं....मं नेत्रत्रयाय वौषट। शं षं सं अस्त्राय फट्। भगवती वर्णेश्वरी अंबिका वाग्भवी, दुर्गा श्रीशक्ति स्वरूपा सभी लक्षणों से युक्त है ऐसा ध्यान करें।**

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) अष्टदल में चतुर्थी लगाकर ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं का पूजन करें। यथा - **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ ऐन्द्रट्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - (षोडशदले) **काली, विकराली, उमा, सरस्वती, श्री, दुर्गा, उषा, लक्ष्मी, श्रुति, स्मृति, धृति, श्रद्धा, मेधा, मति, क्रीन्ति और आर्या** इन सोहल शक्तियों का चतुर्थी से आवाहन प्रथमा से स्थापन करें। ये सभी खड्ग और खेटक धारण किये हुये श्याम आभा वाली हैं।

चतुर्थावरणम् (द्वित्रिंशद्दले) - **विद्या, ह्री, पुष्टि, प्रज्ञा, सिनीवाली, कूहू, रुद्रवीर्या प्रभा, नन्दा, योषा, ऋद्धिदा, शुभा, कालरात्रि, महारात्रि, भद्रकाली, कपर्दिनी, विकृति, दण्डी, मुण्डिनी, इन्दुखण्डा, शिखण्डिनी, निशुंभशुंभ मथनी, महिषासुरमर्दिनी, इन्द्राणी, रुद्राणी, शंकरार्धशरीरिणी, नारी, नारायणी, त्रिशूलनी, पालिनी, अंबिका एवं ह्लादिनी का पूजन करें।**

ये सभी पिशाचमुण्ड एवं उरुभूषण युक्त हैं तथा हाथों में चक्र धारण किये हैं।

पंचमावरणम् - **(चतुष्षष्टिदले) सभी ६४ शक्तियों का चतुर्थी से आवाहन, प्रथमा से स्थापन करें।** सभी शक्तियाँ चाप व वाण धारण किये हुये है। उर्ध्वकेशी एवं तीखी दाढों वाली युद्धोन्मुखी है।

पिङ्गलाक्षी, विशालाक्षी, समृद्धि, वृद्धि, श्रद्धा, स्वाहा, स्वधा, माया, वसुन्धरा, संज्ञा, त्रिलोकधात्री, सावित्री, गायत्री, त्रिदशेश्वरी, सुरूपा, बहुरूपा, स्कन्दमाता, अनुच्युतप्रिया, विमला, अमला, अरुणी, आरुणी, प्रकृति, विकृति, सृष्टि, स्थिति, संहृति, संध्या, माता, सती, हंसी, मर्दिका, कुब्जिका, अपरा, देवमाता, भगवती, देवकी, कमलासना, त्रिमुखी, सप्तमुखी, अन्या, सुरासुरविमर्दिनी, लंबोष्टा, उर्ध्वकेशी, बहुशीर्षा, वृकोदरी, रथरेखा, शशिरेखा, अपरा, गगनवेगा, पवनवेगा, भुवनमाला, मदनातुरी, अनङ्गामदना, अनङ्ग-मेखला, अनङ्गकुसुमा, विश्वरूपा, असुरभयंकरी, अक्षोभ्या, सत्यवादिनी, वज्ररूपा, शुचिव्रता, वरदा एवं वागीशा ये चौसठ शक्तियाँ है। इनका पूजन करें।

षष्ठावरणम् – (भूपूर में दशों दिशाओं में) – **इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा एवं अनन्त का पूजन करें।**

सप्तमावरणम् – (भूपूरे) – **लोकपालों के आयुधों का पूजन करें। वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अङ्कुश, गदा, त्रिशूल, पद्म, एवं चक्र का आवाहन पूजन करें।**

इस तरह यन्त्रावरण पूजन कर भूतलिपि वर्णमाला का जप करें। दस हजार कमलपुष्पों के होम से राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ढाक के पुष्पों के हवन से वाणी सिद्धि होवे कवित्व प्राप्त होवें। राई, नमक के होम से वनिता को भी वश कर सके।

भूतलिपि (वर्णमाला) के संपुट से अपने मूल मन्त्र को १०० बार जपे तो मन्त्र सिद्ध होवे।

भूतलिपि के पूजन से अन्य मन्त्रों की सिद्धि भी शीघ्र होती है।

॥ इति भूतलिपि प्रयोगः॥

॥ अथ मंत्र भेदः॥

मंत्र तीन प्रकार के होते हैं –

(१) वेदोक्त (२) तंत्रोक्त (३) पुराणोक्त।

१. वैदिक मंत्रों के आगे **ॐ** या **व्याहृति** लगायी जाती है अंत में मंत्र **स्वाहा फट् हूं** इत्यादि नहीं लगते हैं।

२. तंत्रोक्त मंत्रों में प्रारंभ में **ॐ**, व्याहृति या बीजमंत्र एवं अन्त में **हूं फट्, स्वाहा, नमः** इत्यादि का प्रयोग होता हैं।

३. पुराणोक्त मंत्रों में आवश्यकतानुसार **ॐ** या बीजमंत्र तथा अंत में **नमः स्वाहा** इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता हैं। मंत्र के प्रारम्भ में ॐ व्याहृति या बीजमंत्र जो लगाये जाते हैं उनको मंत्र का शिर कहते हैं तथा अंत में स्वाहा, हूं, फट्, नमः इत्यादि जो लगाये जाते हैं उनको पल्लव कहते हैं। ॐ बीज मंत्रादि कामना मंत्र को दिशा देते हैं, उसका गर्भ भी हैं तथा पल्लव, पुष्प व फल के रूप में मंत्र का आभरण करते हैं। पल्लवों के आधार पर मंत्र की तीन प्रकार की जाती होती है।

पुल्लिंगः– जिस मंत्र के अन्त में **हूं, फट्, ठः ठः** इत्यादि का प्रयोग ह[illegible]ह मंत्र पुल्लिंग होता है। यह त्वरित फल देता है।

स्त्रीलिंगः– जिस मंत्र के अन्त में **स्वाहा, स्वधा** का प्रयोग होवे वह स्त्रीलिंग मंत्र होता है।

नपुंसकः– जिस मंत्र के अन्त में **नमः** का प्रयोग हो वह नपुंसक मंत्र होता हैं। इसका प्रभाव धीमा होता है परन्तु साधक की भूलचूक होने पर अनिष्ट की संभावना कम होती है।

नमस्कार युक्तमंत्रः– जिन मंत्रों के प्रारंभ में "**नमः**" "**नमो,**"**ॐ** का प्रयोग होता हैं वह संहारात्मक व उग्र नहीं होता है, शांत होता है शनै शनै पुष्टिकारक होता हैं। तांत्रिक लोग शीघ्र फल चाहते है अतः "**ॐ**" का प्रयोग माला प्रारंभ के समय पूर्ण होने पर पुनः "ॐ" का प्रयोग करते हैं। बीजाक्षरीं के आगे "**ॐ**" लगाकर मंत्र जप नहीं करते। नवार्ण मंत्र नौ अक्षरों का होता हैं। "**ॐ**" लगाने से दशाक्षरी हो जाता है एवं नमस्कार युक्त हो जाने से शीघ्रफलदः नहीं मानते, इसलिये बीजाक्षर युक्त नवार्ण मंत्र ही जपते है। दक्षिण भारत में कई जगह दशाक्षर नवार्णमंत्र का जप किया जाता हैं।

मंत्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः। शिरः पल्लव संयुक्तो मंत्रः कामदुधः फले ॥१॥
पल्लवेन विना मंत्रो नग्नः संपरिकीर्तितः। शिरोहीनो मृतः प्रोक्तो वृथा मंत्रो गुरु विना ॥२॥

न्यास- मंत्र के न्यास हमेशा करने चाहिये। यथा- **न्यासं विना भवेन्मूकः सुप्तः स्यादासनं विना।**

पल्लव भेदः- मंत्र के अंत में व प्रारम्भ में नमोकार युक्त मंत्र पुष्टि कारक व शांति कारक होता हैं। वश्य व आकर्षण व देवता के शीघ्रावाहन तथा होम समय में "**स्वाहा**" का उच्चारण करें। "**वौषट्**" लक्ष्मी प्राप्ति हेतु, "**फट्**" उच्चाट्न हेतु, मारण हेतु "**हुं**", एवं "**वषट्**" भयनाश तथा ग्रहपीड़ा निवारण हेतु प्रयोग करे। **ठः ठः ठः** का प्रयोग शीघ्र करकर के उद्देश्य से है तथा ठं ठं ठं मंत्र को तड़ित कर चेतन करता हैं।

॥ सर्व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रोत्कीलन स्तोत्रम् ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

देवेश परमानन्द भक्तानामभयं प्रद! आगमाः नगमाश्चैव, वीजं वीजोदयस्तथा ॥
समुदायेन वीजानां, मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता। ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वैदिकं यामलादिकम् ॥
धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञानं च विकल्पन। निर्विकल्प विभागेन तथा षट्कर्म सिद्धये ॥
भुक्ति - मुक्ति - प्रकारश्च सर्वंप्राप्तं प्रसादतः। कीलनं सर्वमन्त्राणां शंसयद् हृदये वचः ॥
इति श्रुत्वा शिवानाथः, पार्वत्यावचनं शुभं। उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवां ॥

॥शिव उवाच॥

वरानने! हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य वस्तुनः। साक्षी भूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा ॥
त्वया पृष्टं वरारोहे! तद् वक्ष्याम्युत्कीलनं। उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत् ॥
पुरा तव मया भद्रे! समाकर्षण वश्यजा। मन्त्राणां कीलिता - सिद्धिः सर्वे ते सप्तकोटयः ॥
तवानुग्रह प्रीतस्त्वात् सिद्धिस्तेषां फलप्रदा। येनोपायेन भवति तं स्तोत्रं कथयाम्यहम् ॥
शृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिल जगत्। तस्य सिद्धिभवेत् तिष्ठे माया येषां प्रभावकम् ॥
अन्नं पानं हि सौभाग्यं दत्तं तुभ्यं मया शिवे! सञ्जीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तुं पुनर्धुवम् ॥
यस्य स्मरण मात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा। अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं सत्यं न संशयः ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य सर्वयन्त्रमंत्र तन्त्राणामुत्कीलन मंत्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृतिः ऋषिः, जगतीः छन्दः, निरञ्जनो देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रः सौं कीलकं, सप्तकोटि मंत्र यंत्र तन्त्र कीलकानां उत्कीलन सञ्जीवन सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ॐ मूल प्रकृति ऋषये नमः शिरसि। ॐ जगतीच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ निरञ्जन देवतायै नमः हृदि। ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ह्रः सौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ मंत्र यंत्र तन्त्र उत्कीलन सञ्जीवन सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

मंत्र	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	ह्रदयाय नमः।
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुं।
ॐ ह्रौं	कनिष्ठाकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरञ्जनं तं ज्योतिः प्रकाशमनिशं महतो महान्तम् ।
कारुण्य रूपमति बोधकरं प्रसन्नं दिव्यं स्मरामि सततं मनु जीवनाय ॥

एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं, तस्य सिद्धिस्तु सर्वदा। वाञ्छितं फलमाप्नोति, मन्त्र संजीवनं ध्रुवम् ॥

मन्त्र :- ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्रादीनामुत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। (जपं कुर्यात्)

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट्पञ्चाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ॐ जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्राणां सञ्जीवनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं, शं षं सं हं ळं क्षं। मात्राऽक्षराणां सर्वं उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ सोऽहं हंसोऽहं ११, ॐ जूं सोहं हंसः ॐ ॐ ११, हं जूं हं सं गं ११, सोऽहं हंसो यं ११, लं ११, ॐ ११, यं ११, ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्र स्तोत्र कवचादीनां सञ्जीवय सञ्जीवय कुरु कुरु स्वाहा। ॐ सोऽहं हंसः ॐ सञ्जीवनं स्वाहा। ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणामुत्कीलय, उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ॐ प्रणव रूपाय, अं आं परम रूपिणे। इं ईं शक्ति स्वरूपाय, उं ऊं तेजोमयाय च ॥ ऋं ॠं रंजितदीप्ताय, लृं लॄं स्थूल स्वरूपिणे । एं ऐं वाचां विलासाय, ओं औं अं अः शिवाय च ॥ कं खं कमल नेत्राय, गं घं गरुड़ गामिने । ङं, चं श्री चन्द्रभालाय, छं जं जयकराय च ॥ झं ञं टं ठं [illegible]वकर्त्रे, डं ढं णं, तं पराय च । थं दं धं नं नमस्तस्मै, पं फं यन्त्रमयाय च ॥ बं भं मं बलवीर्याय, यं रं लं यशसे नमः । वं, शं षं बहुवादाय सं हं लं क्षं स्वरूपिणे ॥ दिशामादित्य रूपाय, तेजसे रूपधारिणे । अनन्ताय अनन्ताय, नमस्तस्मै नमो नमः ॥ मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः। प्राणेशायै क्षीणदायै, सं सञ्जीव नमो नमः ॥ निरञ्जनस्य देवस्य, नामकर्म विधानतः। त्वया ध्यानं च शक्त्या च, तेन सञ्जायते जगत् ॥ स्तुतामहमचिरं ध्यात्वा, मायाया ध्वंस हेतवे। सन्तुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः ॥

ब्रह्माणं चेतयन्ती विविध सुर नरास्तर्पयन्ती प्रमोदाद् । ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगम जप मनुं षट्पदं प्रेरयन्ती ॥

सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुत दमनी साऽप्यहङ्कारमूर्ति । स्तुभ्यं तस्मै च जाप्यं स्मररचित मनुं मोचये शाप जालात् ॥

इदं श्रीत्रिपुरा स्तोत्रं पठेद् भक्त्या तु यो नरः । सर्वान् कामानवाप्नोति सर्व शापाद् विमुच्यते ॥

॥ क्षेत्ररक्षक चतु: षष्ठि गणेश नामावलि ॥

मेरु तंत्र में क्षेत्र रक्षा हेतु ६४ गणपति के नाम है उनके साथ उनकी ६४ योगिनीयाँ एवं चेटिका के नाम तथा दुर्गा, शूलिनी, ज्वालामालिनी, बाला, आदि शक्तियों का उनके साथ अर्चन का भी उल्लेख है। अत: अमुक शक्तियों के साथ अमुक गणपति का पूजन करें।

१. महागणपति। २ सिद्धि विनायक। ३ क्षिप्रप्रसाद। ४ विनायक। ५ वीरगणपति। ६ सुरगणपति। ७ वरदाक्ष विनायक। ८ ऐभ वक्त्र। ९ एकदन्त। १० लम्बोदर। ११ दुर्गविनायक। १२ चण्ड विनायक। १३ देहलि विनायक। १४ उद्दण्ड विनायक। १५ पाशपाणि विनायक। १६ खर्व विनायक। १७ तुन्दिल। १८ सीमा विनायक। १९ कूटदन्त विनायक। २० कूष्माण्ड। २१ मुण्ड विनायक। २२ राजपुत्र। २३ प्रवर गणेश। २४ वक्रतुण्ड। २५ कपिसिंह द्विपानन। २६ पंचास्य गजानन। २७ हेरम्ब। २८ विघ्नराज। २९ मोदकप्रिय। ३० सिंहतुण्ड। ३१ कुपिताक्षङ्गजानन। ३२ विघ्नेश। ३३ चिन्तामणि विनायक। ३४ दन्तिहस्त। ३५ पिचिण्डिल विनायक। ३६ उद्दण्डमुण्ड हेरम्ब। ३७ स्थूल दन्त। ३८ कलिप्रिय। ३९ चतुर्दन्त विनायक। ४०. द्विदन्त विनायक। ४१ द्वितुण्ड। ४२ जेष्ठ विनायक। ४३ गजविनायक। ४४ कालसंज्ञ विनायक। ४५ नागेशाख्यो विनायक। ४६ सृष्टि गणेश। ४७ यक्ष गणेश। ४८ गजकर्ण। ४९ चित्रघण्ट। ५० मंगल विनायक। ५१ मित्र गणेश। ५२ अदिरथ गणेश। ५३ वानन्द कानन गणेश। ५४ व्यवस्थित गणेश। ५५ मोद गणेश। ५६ प्रमोद गणेश। ५७ सुमुख गणेश। ५८ दुर्मुख गणेश। ५९ द्वार विघ्नेश। ६० अविमुक्तेश गणेश। ६१ विमुक्त गणेश। कुछ नाम पुन: प्रयुक्त हुयें है।

अमुक शक्तियों के साथ अमुक गणेश का अर्चन भी लिखा है। यथा- दुर्गा के साथ दुर्ग विनायक, मायूरी योगिनी। महिषमर्दिनी के साथ- पाशपाणि विनायक, कुजाव्यालग्रहा योगिनी। जय दुर्गा के साथ- खर्व विनायक, विकट लोचना योगिनी। ज्वालामालिनी के साथ- कूटदन्त गणेश, ज्वलाज्जिह्वा योगिनी। षट्कूट भैरवी के साथ चिन्तामणि गणेश, रुधिरवाहिनी योगिनी। पंचकामेश्वरी **(ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं श्रीं)** के स्थूल दन्त विनायक। बाला के साथ- कलिप्रिय गजानन, एवं बृहत्कुक्षी योगिनी अन्यत्र (कुपिताक्षङ्गजानन, पापहंत्री योगिनी)। काली ललिता के साथ- क्षिप्रप्रसाद गणपति। शूलिनी दुर्गा के साथ लंबोदर विनायक। कात्यायनी के साथ सुरगणपति (गं सुराय नम:)। सरस्वती के साथ- हेरम्ब गणपति, कपोतिका योगिनी अथवा विघ्नराज गणपति पाशहस्ता योगिनी। कूष्माण्डा देवि के कूष्माण्ड विनायक, चारुणानना योगिनी है जो बालग्रहों की अधिपति है। यह योगिनी वेणुवादन रत है।

कूष्माण्ड गणेश के साथ वैनतेयाक्षी नागदेवी है जो विन्ध्यवासिनी है, कमलासीन है एवं सर्पो से वेष्टित है। यथा मंत्र- **ॐ वेनतेयाक्षि सर्वसेवित नागदेवी फट् स्वाहा।**

बगलामुखी के हरिद्रा गणेश, पाण्डवी चेटिका है। उसका मंत्र - **ॐ पाण्डवी बगले बगलामुखि शत्रो: पादं स्तंभय स्तंभय क्लीं ह्रीं भुवंचरे स्फ्रीं स्वाहा।**

ध्यानम्–

पीताम्बरां पीतवर्णां पीतगंधानुलेपनाम् । प्रेतासनां पीतवर्णां विचित्रां पाण्डवीं भजे ॥

इसी तरह तारा के साथ तार गणपति। कमला के साथ विघ्नेश, हेरम्ब गणपति। मातंगी के साथ मतंग गणपति तथा धूमावति के साथ धूम्राक्ष गणपति। भुवनेश्वरी के हेरम्ब, विघ्नेश गणपति यथा-यथा पूजा विधान में प्रचलित है।
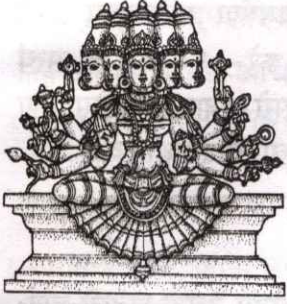
॥ गायत्री तंत्रम् ॥

गायत्री को वेदमाता कहा है। अतः वेदमंत्रों की जागृति के लिये गायत्री उपासना आवश्यक हैं। पापनिवृत्ति एवं प्रायश्चित्त शुद्धि के लिये भी गायत्री उपासना महत्वपूर्ण हैं। यह ब्रह्ममयी तेजस शक्ति हैं जो हमें तेज व उर्जा प्रदान करती है। प्रत्येक देवता का भी गायत्री मंत्र हैं अतः जो भी इष्ट देवता हैं उसके गायत्री मंत्र का जप करने से उस देवता के मंत्र का उत्कीलन हो जाता हैं एवं नूतन उर्जा की प्राप्ति होती है। गायत्री पंजर स्तोत्र के अनुसार गायत्री एकपदा से नवपदा, शताक्षरी एवं सहस्त्राक्षरी मंत्र युता है, जिनके विविध प्रयोग तंत्रों में हैं। त्रिपदा की त्रिसंध्या काल में तथा चतुष्पदा की मध्यरात्रि में उपासना करें।

॥ अथ संध्योपासन विधिः॥

संध्योपासन द्विज मात्र के लिये बहुत ही आवश्यक कर्म है। इसके बिना पूजा आदि कार्य करने की योग्यता नहीं आती है अतः द्विजमात्र के लिये संध्या करना आवश्यक है। स्नानके बाद दो वस्त्र धारणकर पूर्व, ईशानकोण या उत्तर की ओर मुँह कर आसनपर बैठ जाय। आसनकी ग्रन्थि उत्तर-दक्षिणकी ओर हो। तुलसी, रुद्राक्ष आदिकी माला धारण कर ले। दोनों अनामिकाओं में पवित्री धारण कर ले। गायत्री मन्त्र पढ़कर शिखा बाँधे तथा तिलक लगा ले और आचमन करे-

आचमन- '**ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः**' इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करके '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' इस मन्त्र को बोलकर हाथ धो ले। पहले विनियोग पढ़ ले, तब मार्जन करे (जल छिड़के)।

मार्जन विनियोग मन्त्र-'**ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।**'

इस प्रकार विनियोग पढ़कर जल छोड़े तथा निम्नलिखित मन्त्रसे मार्जन करे (शरीर एवं सामग्रीपर जल छिड़के)। **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥** तदनन्तर आगे लिखा विनियोग पढ़े-

विनियोग - '**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।**' फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आसन पर जल छिड़के- **ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥**

संध्याका संकल्प- इसके बाद हाथ में कुश और जल लेकर संध्याका संकल्प पढ़कर जल गिरा दे- '**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य...उपात्तदुरितक्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।**'

आचमन- इसके लिये निम्नलिखित विनियोग पढ़े- **ॐ ऋतं चेति माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।** फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आचमन करे- **ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।**

तदनन्तर दायें हाथ में जल लेकर बायें हाथ से ढककर '**ॐ**' के साथ तीन बार गायत्रीमन्त्र पढ़कर अपनी रक्षा के लिये अपने चारों ओर जल की धारा दे। फिर प्राणायाम करे।

प्राणायामका विनियोग- **'ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः अग्निः परमात्मा देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।' ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाज गौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्नि-वाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्रविष्णवो देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।**

ॐ तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः। ॐ आपो ज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

प्राणायाम के मन्त्र- फिर आँखें बंद कर नीचे लिखे मन्त्रोंका प्रत्येक प्राणायाम में तीन-तीन बार (अथवा पहले एक बारसे ही प्रारम्भ करे, धीरे-धीरे तीन-तीन बारका अभ्यास बढ़ावे) पाठ करे।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

प्राणायाम के बाद आचमन- (प्रातः काल का विनियोग और मन्त्र) प्रातः काल नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दे- **सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।** पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर आचमन करे- (अन्य ब्रह्माऋषि प्रकृति छन्द कहा हैं)

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

॥ मार्जन ॥

इसके बाद मार्जनका निम्नलिखित विनियोग पढ़कर बायें हाथ में जल लेकर कुशों से या दाहिने हाथ की तीन अँगुलियों से १ से ७ तक मन्त्रों को बोलकर सिर पर जल छिड़के। ८ वें मन्त्र से पृथ्वी पर तथा ९ वें से फिर सिरपर जल छिड़के।

ॐ आपो हि ष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १. ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा च नः।

मस्तकपर जल छिड़कने के विनियोग और मन्त्र- निम्नलिखित विनियोग पढ़कर बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से ढक ले और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर सिरपर छिड़के।

विनियोग- **द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः।**

मन्त्र- ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

अघमर्षण और आचमनके विनियोग और मन्त्र - नीचे लिखा विनियोग पढ़कर दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाकर मन्त्र पढ़े और ध्यान करे कि 'समस्त पाप दाहिने नाक से निकलकर हाथ के जल में आ गये हैं। फिर उस जलको बिना देखे बायीं और फेंक दे।' **अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः।**

मन्त्र- **ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥** पुनः निम्नलिखित विनियोग करे- **अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

फिर इस मन्त्र से आचमन करे- **ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥**

॥ सूर्यार्घ्य विधिः ॥

इसके बाद निम्नलिखित विनियोग को पढ़कर अञ्जलिसे अँगूठे को अलग हटाकर गायत्री मन्त्र से सूर्य भगवान् को जल से अर्घ्य दे। अर्घ्य में चन्दन और फूल मिला ले। सबेरे और दोपहर को एक एड़ी उठाये हुए खड़े होकर अर्घ्य देना चाहिये। सबेरे कुछ झुककर खड़ा होवे और दोपहर को सीधे खड़ा होकर और शाम को बैठकर। सबेरे और शाम को तीन-तीन अञ्जलि दे और दोपहर को एक अञ्जलि। सुबह और दोपहर को जल में अञ्जलि उछाले और शाम को धोंकर स्वच्छ किये स्थल पर धीरे से अञ्जलि दे। ऐसा नदीतटपर करे। अन्य जगहोंमे पवित्र स्थलपर अर्घ्य दे, जहाँ पैर न लगे। अच्छा है कि बर्तन में अर्घ्य देकर उसे वृक्ष के मूल में डाल दिया जाय।

सूर्यार्घ्य का विनियोग- **(क) 'ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता अर्घ्यदाने विनियोगः।' (ख) 'ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्यादेवताः अर्घ्यदाने विनियोगः।' (ग) 'ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।'**

इस प्रकार विनियोग कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर अर्घ्य दे- **'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।'** इस मन्त्र को पढ़कर **'ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः'** कहकर अर्घ्य दे।

विशेष- यदि समय (प्रातः सूर्योदय से तथा सूर्यास्तसे तीन घड़ी बाद) का अतिक्रमण हो जाय तो प्रायश्चित्तस्वरूप नीचे लिखे मन्त्र से एक अर्घ्य पहले देकर तब उक्त अर्घ्य दे- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ।**

॥ उपस्थान ॥

सूर्य के उपस्थान केलिये प्रथम नीचे लिखे विनियोगों को पढ़े-

(क) उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः। (ख) उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः। (ग) चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः। (घ) तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः

सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

इसके बाद प्रातः खड़े होकर तथा दोपहर में दोनों हाथों को उठाकर और सायंकाल बैठकर हाथ जोड़कर नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़ते हुए सूर्योपस्थान करे।

प्रातः कालीन सूर्योपस्थान सूर्योपस्थान के मन्त्र- (प्रातः संध्या)

(क) ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ (ख) ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। (ग) ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षः ७ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ (घ) ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतः ७ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

॥ गायत्री जपका विधान ॥

षडङ्गन्यास - **(१) ॐ हृदयाय नमः (२) ॐ भूः शिरसे स्वाहा (३) ॐ भुवः शिखायै वषट्** (शिखाका अँगूठेसे स्पर्श करे)। **(४) ॐ स्वः कवचाय हुम् (५) ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् (६) ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।**

प्रातः काल ब्रह्मरूपा गायत्रीमाता का ध्यान-

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्ष सूत्रकरां तथा॥
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्॥
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्।

गायत्री का आवाहन- इसके बाद गायत्रीमाताके आवाहनके लिये निम्नलिखित विनियोग करे- **तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ॠषिर्यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।**

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रसे गायत्रीका आवाहन करे- **'ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।' गायत्रीदेवीका उपस्थान (प्रणाम) - गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः। ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।**

(गायत्रीउपस्थानके बाद गायत्रीशापविमोचनका तथा गायत्रीमन्त्रजप से पूर्व चौबीस मुद्राओं के करनेका भी विधान है, परंतु नित्यसंध्यावन्दनमें अनिवार्य न होनेपर भी इन्हें जो विशेषरूपसे करने के इच्छुक हैं, उनके लिये यहाँ पर दिया जा रहा हैं।)

॥ गायत्री शापविमोचन ॥

(१) ब्रह्मशापविमोचन- विनियोग- **ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता, गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः।**

मन्त्र- ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः। तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः॥ ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्। ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।

(२) वसिष्ठशापविमोचन- विनियोग- ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र- ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः। आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्॥ योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपे। ॐ देवि! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

(३) विश्वामित्र शापविमोचन- विनियोग- ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्रऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र- ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः। देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये॥ ॐ देवि! गायत्रि! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।

(४) शुक्रशापविमोचन- विनियोग- ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र- सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः। आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्॥ ॐ देवि! गायत्रि! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

प्रार्थना- ॐ अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति! अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते॥ ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव, शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

जपके पूर्वकी चौबीस मुद्राएँ- सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा॥ षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्॥ प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥ एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः॥

गायत्रीमन्त्र का विनियोग- ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, अग्निवायुसूर्या देवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

॥ गायत्री मन्त्र ॥

'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।'

॥ ध्यानम् ॥

मुक्ता विद्रुम हेमनील धवलच्छायै मुंखैस्त्रीक्षणैः, युक्तामिन्दुनिबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थ वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाऽभयांऽकुशकशां शूलं कपालं गुणम्, शङ्खं चक्रमाथरविन्द युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

जपके बादकी आठ मुद्राएँ सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्। लिङ्गनिर्वाणमुद्राश्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्॥

सूर्यप्रदक्षिणा- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥ भगवान्को जपका अर्पण- अन्तमें भगवान्को यह वाक्य बोलते हुए जप निवेदित करे- अनेन गायत्रीजपकर्मणा सर्वान्तर्यामी

(जप बाद की आठ मुद्रायें)

भगवान् नारायणः प्रीयतां न मम।

गायत्री देवीका विसर्जन– विनियोग– **'उत्तमे शिखरे' इत्यस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।** (गायत्रीके विसर्जनका मन्त्र)– **ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम्॥** संध्योपासनकर्मका समर्पण **'अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।'**

फिर भगवान्का स्मरण करे– **यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः॥ श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णतास्तु।**

गायत्रीतर्पण (केवल प्रातः संध्यामें करे) **ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्रीतर्पणे विनियोगः। ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं त०। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं त०। ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त०। ॐ जनः इतिहासपुराण पुरुषं त०। ॐ तपः सर्वागमपुरुषं त०। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त०। ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त०। ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त०। ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त०। ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त०। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त०। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं त०। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं त०। ॐ उषसीं त०। ॐ गायत्रीं त०। ॐ सावित्रीं त०। ॐ सरस्वतीं त०। ॐ वेदमातरं त०। ॐ पृथिवीं त०। ॐ अजां त०। ॐ कौशिकीं त०। ॐ सांकृतिं त०। ॐ सार्वजितीं तर्पयामि। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥** (देवीभागवत) **तत्सद्ब्रह्मार्पणं कर्म कृत्वा त्रिर्विष्णुं स्मरेत्।** (आचारभूषण)

मध्याह्नसंध्या

(प्रातः संध्याके अनुसार करे)

प्राणायामके बाद '**ॐ सूर्यश्च मेति**' के विनियोग तथा आचमनमन्त्र के स्थान पर नीचे लिखा विनियोग तथा मन्त्र पढ़े।

विनियोग:– **ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन– **ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्।**

यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ ठं स्वाहा।

उपास्थान- दोनों हाथ ऊपर करे। अर्घ्य- सीधे खड़े होकर सूर्यको एक अर्घ्य दे।

विष्णुरूपा गायत्रीका ध्यान-

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्। युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम्॥

सायंसंध्या

(प्रातः संध्याके अनुसार करे)

उत्तराभिमुख हो सूर्य रहते करना उत्तम है। प्राणायामके बाद '**ॐ सूर्यश्च मेति०**' के विनियोग तथा आचमनमन्त्र के स्थान पर नीचे लिखा विनियोग तथा मन्त्र पढ़कर आचमन करे।

विनियोग- **ॐ अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन- **ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।** अर्घ्य- पश्चिमाभिमुख होकर बैठे हुए तीन अर्घ्य देवें।

उपस्थान- दोनों हाथ बन्दकर कमल के सदृश करें।

शिवरूपा गायत्रीका ध्यान-

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्। सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्॥

आशौचमें संध्योपासनकी विधि- महर्षि पुलस्त्य ने जननाशौच एवं मरणाशौचमें संध्योपासनकी अबाधित आवश्यकता बतलायी हैं। शास्त्रोंने इसमें मानसी संध्याका विधान किया हैं। इसमें उपस्थान नहीं होता। यह संध्या आरम्भसे सूर्यके अर्घ्यतक ही सीमित रहती हैं। यहाँ दस बार गायत्रीका जप आवश्यक है। इतनेसे संध्योपासनका फल प्राप्त हो जाता है। एक मत यह है कि इसमें कुश और जलका भी प्रयोग न हो। निर्णीत मत यह हैं कि बिना मन्त्र पढ़े प्राणायाम करे, मार्जनमन्त्रोंका मनसे उच्चारण कर, मार्जन करे। गायत्रीका सम्यक् उच्चारण कर सूर्यको अर्घ्य दे। फिर पैठीनसिके अनुसार सूर्यको जलाञ्जलि देकर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे। आपत्तिके समय, रास्तेमें और अशक्त होनेकी स्थितिमें भी मानसी संध्या की जाती हैं।

॥ गायत्री मंत्र पुरश्चरण विधानम् ॥

पर्वत के शिखर पर, नदी के तट पर, बेल की छाया में, जलाशय में, गोशाला में, देवालय में, पीपल की छाया में, बगीचे में, तुलसीवन में, पुण्य क्षेत्र में, गुरु के निकट तथा जहां चित्त एकाग्र हो उस स्थल पर गायत्री का पुरश्चरण करने वाला निश्चय ही सिद्धि को प्राप्त करता हैं, इसमें लेशमात्र संशय नहीं है। गायत्री मन्त्र में जितने अक्षर हैं, उतने लाख गायत्री का पुरश्चरण, परन्तु विश्वामित्र के अनुसार ३२ लाख का पुरश्चरण करना चाहिये।

जीव हीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः। पुरश्चरणहीनस्तु तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः ॥७॥ ज्येष्ठाषाढौ भाद्रपदं पौषं तु मलमासकम्। अङ्गारं शनिवारं च व्यतीपातं च वैधृतिम् ॥८॥ अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीम्। चतुर्दशीममावस्यां प्रदोषं च तथा निशाम् ॥९॥ यमाग्निरुद्रसर्पेन्द्रवसुश्रवणजन्मभम्। मेषकर्कतुलाकुम्भान्मकरं चैव वर्जयेत् ॥१०॥ सर्वाण्येतानि वर्ज्यानि पुरश्चरणकर्मणि। चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे विशेषतः ॥११॥

पुरश्चरणकं कुर्यान्मन्त्रसिद्धिः प्रजायते। स्वस्तिवाचनकं कुर्यान्नान्दीश्राद्धं यथाविधि ॥१२॥

ब्राह्मणों को यत्न से भोजन वस्त्रादि के दान से प्रसन्न करके पश्चिमाभिमुख होकर द्विज किसी शिवालय में गायत्री मन्त्र का जप करे। जप आरम्भ करने के दिन से लेकर समाप्ति के दिन तक मन्त्र का जप समान होना चाहिये। जप की संख्या किसी दिन न तो कम हो न अधिक। **नैरन्तर्येण कुर्वन्ति पुरश्चर्यां मुनीश्वराः।** प्रातरारभ्य विधिवज्जपेन्मध्यंदिनावधि ॥१५॥ मुनीश्वर लोग पुरश्चरण हेतु प्रातः प्रारम्भ करके मध्याह्न तक निरन्तर जप करते है। **गायत्री चैव संसेव्या धर्मकामार्थमोक्षदा। गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥१६॥**

तथा च कर्ता प्रारम्भत्पूर्वदिने ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय यथोपदेशं शौचं कृत्वा नद्यादौ स्नात्वा प्रातः सन्ध्यादि नित्यकर्म समाप्य आचार्यमाहूय सम्पूज्य तदनुज्ञया सपत्नीकः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सपवित्रकरः आचम्य प्राणानायम्य सामान्यतो गणपत्यादिस्मरणं कृत्वा देहशुद्ध्यर्थं प्रायश्चितं कुर्यात्। देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणगायत्री पुरश्चरणेऽधिकारप्रांत्यर्थं कृच्छ्त्रयममुकप्रत्याम्ना येनाहमाचरिष्ये।

इस प्रकार संकल्प के पश्चात् गोदान करके तिल का होम सुवर्णादि प्रत्याम्नाय द्वारा कृच्छ्र पूरा करके हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से कहे : **अमुकशर्मणो मम गायत्रीपुरश्चरणेऽनेन कृच्छ्त्रयानुष्ठानेनाधिकार सिद्धिरस्त्वितिविप्रान् वदेत्।** तब ब्राह्मण कहें : **''अधिकारसिद्धिरस्त्विति''। पुनर्देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणपुरश्चणाङ्गत्वेन पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं गायत्र्ययुत जपं करिष्ये इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत्।**

ततः ॐ तत्सवितुरित्यस्याऽचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥१॥ **गायत्रीछन्दस्तर्पयामि ॥२॥ सवितृदेवतां तर्पयामि ॥३॥ इति तर्पणं कृत्वा रुद्रं नमस्कृत्य कद्रुदायेत्यादीनि रुद्रसूक्तानि सकृज्जपेत्** इति पूर्वदिनकृत्यम्। **जपप्रारम्भदिने सुमुहूर्ते सपत्नीको यजमानः सुगन्धतैलाभ्यंगपूर्वकमुष्णोदकेन मङ्गलस्नानं कृत्वा शुक्लधौतवामांसि परिधाय यथायोग्यालंकृतो धृतकुंकुमादित्रिपुण्ड्रतिलकः सपवित्रोपग्रहः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य- देशकालौ संकार्त्य मम इह जन्मनि जन्मान्तरेषु कृतकायिकवाचिकमानसिकसासर्गिक समस्त पापक्षयार्थं पुत्रपौत्रधनधान्यभिवृद्ध्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सप्रणवव्याहृतिपूर्वक चतुर्विंशतिलक्षजपात्मक गायत्रीपुरश्चरणं स्वयं विप्रद्वारा वा करिष्ये।** यह संकल्प करें। **तदंगत्वेन गणेशपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यजपकर्तृवरणं च करिष्ये** इति संकल्प्य **गणेशपूजनादिनान्दी श्राद्धान्तं कृत्वा नान्दीश्राद्धान्ते सविता प्रीयतामिति पठित्वा आचार्यजपकर्तृवरणं कुर्यात्। तथा च आचार्य जपकर्तृंश्चोदंमुखानासनेषूपवेश्य सर्वेषां पादप्रक्षालनं कृत्वा दक्षिणहस्ते वरण द्रव्याणि गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य मम सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणगायत्रीजपपुरश्चरण कर्मणि अमुकगोत्रोत्पन्नममुक वेदशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्ध.[illegible]ततताम्बूल स्वर्णांगुलीयकासनमाला कमण्डलु युग्मवासोभिर्जपकरणार्थं आचार्यत्वेन त्वा महं वृणे । इति ॥**

आचार्यं वृत्वा ॐ वृतोस्मीति प्रतिवचनान्तरं पृथक्पृथक् हस्तेयज्ञकङ्कणं बद्ध्वा गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य। प्रार्थयेत्- ॐ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं मद्यज्ञं विधिपूर्वकम् ॥१॥ अङ्गीकुर्वन्तु कमैतत्कल्पद्रुमसमांशिषः। यथोक्तनियमैर्युक्त जपार्थे स्थिरबुद्धयः ॥२॥ अस्मिन् यज्ञे मया पूज्याः सन्तु मे नियमान्विताः। अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ॥३॥ जपध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा। अदुष्टभाषिणः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः। ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥४॥

इति सम्प्रार्थ्य प्रत्येकं वस्त्रद्वयम् आसनं १ अर्घ्यपात्रं १ आचमनपात्रं १ जलपात्रं १ सुवर्णांगुलीयकं १ मालां १ च दद्यात्। अत्र जापकास्त्वेकविंशतिः २१ न्यूनाधिका वा कार्याः। ततः सर्वे जापका आचम्य प्राणानायम्यः इसके

बाद जप करनेवाले आचमन और प्राणायाम करके- **''सूर्यः सोमो यमः कालः सन्ध्ये भूतान्यहः क्षपा। पवमानो दिक्पतिर्भूराकाशं खेचरामराः। ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्निधिम्''** यह प्रार्थना करे।

इसके पश्चात् **''देशकालौ संकीर्त्य ममामुकशर्मणो यजमानस्य सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यजमानानुज्ञया गायत्रीपुरश्चरणान्तर्गतामुक सहस्त्रसंख्यापरिमितविहितगायत्रीजपं करिष्ये।''**

॥ अथ प्रयोगः विधानम् ॥

भगवती श्री गायत्री की विशेष महिमा है, इसका विस्तृत पूजा प्रकरण है यह एकपदा, द्विपदा, त्रिपदा, चतुष्पदा, पञ्चपदा, षट्पदा .... शतपदा एवं सहस्त्राक्षरी भी है। अतः इसकी उपासना का क्षेत्र वृहद् है।

सामान्यतया त्रिपदागायत्री की उपासना प्रचलित है। रात्रि समय तुरीय संध्या में चतुष्पदा गायत्री करें। अलग-अलग दीक्षा क्रम सिद्धि में भिन्नपाद गायत्री मंत्र करना चाहिये अन्यथा सफलता में बाधायें रहती है।

अच्छिन्नाद् गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छिति । भिन्नपाद गायत्री ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥

भिन्नपाद मंत्र - ॐ भू भुर्वः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ धियो योनः प्रचोदयात् ॐ।

कामना भेद से **ऐं, ह्रीं, श्रीं, क्लीं** कोई भी बीज मंत्र का प्रयोग कर भिन्नपाद मंत्र का जाप किया जा सकता है।

न्यासा : - **ॐ गुरुवे नमः ॥१॥ गणपतये नमः ॥२॥ दुर्गायै नमः ॥३॥ वेदमातृभ्यो नमः ॥४॥**

प्रणव न्यास - **ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द, परमात्मा देवता, शरीर शुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ परमात्मदेवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

सप्तव्याहृति न्यास :- **ॐ सप्तव्याहृतीनां जगदग्नि भारद्वाजात्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वशिष्ठाः ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्वृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छंदासि, अग्निवायु सूर्य वृहस्पतिवरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवताः न्यासे जपे विनियोगः।**

ॐ जमदाग्नि भारतद्वाजात्रि गौतम विश्वामित्र वशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्वृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगती छंदोभ्यो नमः मुखे। अग्नि वायु सूर्य बृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेव देवताभ्यो नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ अस्य श्री गायत्री मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः। गायत्रीछन्दः। सविता देवता। न्यासे जपे च विनियोगः। ॐ विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ सवितृदेवतायै नमः हृदि।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अंगन्यास
ॐ भूः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
ॐ भुवः	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
ॐ स्वः	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्।**
ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**
ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्	**करतलपृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्।**

व्याहृति न्यास :- **ॐ भू नमः हृदये। ॐ भुवः नमो मुखे। ॐ स्वः नमो दक्षांसे। ॐ महः नमो वामांसे। ॐ जनः नमो दक्षिणोरौ। ॐ तपः नमो वामौरो। ॐ सत्यः नमः जठरे।**

मन्त्रवर्णन्यासः - (मन्त्रमहार्णवोक्त) **ॐ भूः नमः हृदये ॥१॥ ॐ भुवः नमः मुखे ॥२॥ ॐ स्वः नमः दक्षांसे ॥३॥ ॐ महः नमः वामांसे ॥४॥ ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ ॥५॥ ॐ तपः नमः वामोरौ ॥६॥ ॐ सत्यं नमः जठरे ॥७॥ ॐ तत् नमः पादांगुलिमूलेषु ॥८॥ ॐ सं नमः गुल्फयोः ॥९॥ ॐ विं नमः जानुनोः ॥१०॥ ॐ तुं नमः पादमूलयोः ॥११॥ ॐ वं नमः लिङ्गे ॥१२॥ ॐ रें नमः नाभौ ॥१३॥ ॐ णिं नमः हृदये ॥१४॥ ॐ यं नमः कण्ठे ॥१५॥ ॐ भं नमः हस्तांगुलिमूलेषु ॥१६॥ ॐ र्गों नमः मणिबन्धयोः ॥१७॥ ॐ दें नमः कूर्परयोः ॥१८॥ ॐ वं नमः बाहुमूलयोः ॥१९॥ ॐ स्यं नमः आस्ये ॥२०॥ ॐ धीं नमः नासापुटयोः ॥२१॥ ॐ मं नमः कपोलयोः ॥२२॥ ॐ हिं नमः नेत्रयोः ॥२३॥ ॐ धिं नमः कर्णयोः ॥२४॥ ॐ यों नमः भ्रूमध्ये ॥२५॥ ॐ यों नमः मस्तके ॥२६॥ ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे ॥२७॥ ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे ॥२८॥ ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे ॥२९॥ ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे ॥३०॥ ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे ॥३१॥** इति मन्त्रवर्णन्यासः।

अन्यच्च : **ॐ तत् नमः पादद्वयांगुलिमूलयोः। ॐ संनमः गुल्फयोः। ॐ विं नमः जानुनोः। ॐ तुर् नमः पादमूलयो। ॐ वं नमः लिङ्गे। ॐ रें नमः नाभौ। ॐ णिं नमः हृदये। ॐ यं नमः कण्ठे। ॐ भं नमः हस्तद्वाङ्गुली मूलयोः। ॐ र्गो नमः मणिबन्धयो। ॐ दें नमः कर्पूरयोः। ॐ वं मः बाहूमूलयोः। ॐ स्यं नमः आस्ये (मुखे)। ॐ धीं नमः नासापुटयोः। ॐ मं नमः कपोलयोः। ॐ हिं नमः नेत्रयोः। ॐ धीं नमः कर्णयोः। ॐ यों नमः भ्रूमध्ये। ॐ यों नमः मस्तके। ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे। ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे। ॐ चों नमः दक्षिण वक्त्रे। ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे। ॐ यात् नमः उर्ध्ववक्त्रे।**

पदन्यास :- **ॐ तत् नमः शिरसि ॥१॥ ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥२॥ ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः ॥३॥ ॐ भर्गो नमः मुखे ॥४॥ ॐ देवस्य नमः कण्ठे ॥५॥ ॐ धीमहि नमः हृदये ॥६॥ ॐ धियो नमः नाभौ ॥७॥ ॐ यो नमः गुह्ये ॥८॥ ॐ नः नमः जानुनोः ॥९॥ ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः ॥१०॥ ॐ आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि ॥११॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलीपर्यन्तम् ॥१२॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यान्तम् ॥१३॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्द्धादिहृदयान्तम् ॥१४॥** इति पदन्यासः।

षडङ्गदेवन्यासः - **ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः। ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा। ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट्। ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुँ। ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्राय वौषट्। ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट्।**

व्यापक न्यास - **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादि पादांगुलि पर्यन्तम्। ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नमः हृदयादि नाभ्यान्तम्। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् मूर्द्धादि हृदयांतम्।**

इसके बाद मूल मन्त्र से दोनों हाथों की हथेलियों से शिर से पाँव तक तथा पैर से शिर तक ४ बार व दो-दो बार पार्श्व में न्यास करें।

गायत्रीमन्त्र के प्रत्येक अक्षर के ऋषि छन्दादि

क्रम	अक्षर	ऋषि	छन्द	देवता	वर्ण	तत्त्व	शक्ति	मुद्रा	कला	फल
१	तत्	वशिष्ठ	गायत्री	अग्नि	पीत	पृथ्वी	ब्राह्मी	सुमुख	तपनी	आयुष्य
२	स	भरद्वाज	उष्णिक्	वायु	श्याम	अप्	गौरी	सम्पुट	सकला	आरोग्य
३	वि	गौतम	अनुष्टुप्	सूर्य	श्वेत	तेज	प्रमा	वितत	विश्वा	ऐश्वर्य
४	तुर्	विश्वामित्र	वृहती	विद्युत्	नील	वायु	नित्या	विस्तीर्ण	तुष्टा	धन
५	व	भृगु	पंक्ति	यम	वह्नि	आकाश	विश्वा	एकमुख	वरदा	कामना
६	रे	शाण्डिल्य	त्रिष्टुप्	वरुण	अतिशुभ्र	गन्ध	भद्रा	द्विमुख	रेवती	विद्या
७	णि	लोहित	व्यक्ति	वृहस्पति	हरित	रस	विलासिनी	त्रिमुख	सूक्ष्मा	काम
८	यं	गर्ग	कान्ति	पर्जन्य	अतिपीत	रूप	वित्ता	चतुर्मुख	ज्ञाना	धन
९	भ	शातातप	वृहती	इन्दु	ताम्र	स्पर्श	काली	पञ्चमुख	भर्गा	सन्तति
१०	र्गो	सनत्कुमार	सत्या	गन्धर्व	रक्त	शब्द	जया	षण्मुख	गोमती	अभीष्ट
११	दे	शुनःशेप	पंक्ति	त्वष्टा	श्याम	वाक्	कान्ता	अधोमुख	भर्गा	सन्तति
१२	व	भार्गव	विराट्	मैत्रावरुण	पीत	पाणि	शान्ता	शटक	वरा	कान्ति
१३	स्य	पाराशर	विभ्राट्	पौष्ण	विद्युत्	चरण	दुर्गा	यमपाश	सिद्धान्ता	चिन्तित
१४	धी	पुण्डरीक	विस्तारपंक्ति	सुरेश	शुभ्र	उपस्थ	सरस्वती	ग्रथित	ध्योना	कीर्ति
१५	म	कुत्स	कात्यायनी	मरुत्	रक्त	पायु	विद्युद्वर्णा	उन्मुखोन्मु.	मर्यादा	सौभाग्य
१६	हि	दक्ष	पंक्ति	सौम्य	नील	श्रोत्र	विशाल	प्रलम्ब	स्फुटा	अभीष्ट
१७	धि	कश्यप	त्रिष्टुप्	अंगिरा	रक्त	त्वचा	विभूति	मुष्टिक	बुद्धि	मोहन
१८	यो	जमदग्नि	जगती	विश्वेदेव	रुक्मवत्	चक्षु	कमला	मत्स्य	योगमाताएँ	आश्रय
१९	यो	आत्रेय	महाजगती	अश्विनी.	उद्यत्सूर्य	जिह्वा	कला	कूर्म	योगान्तर	देवप्रीति
२०	नः	विष्णु	महिष्मती	प्रजापति	श्वेत	नासिका	पाप्मा	वराहका	पृथ्वी	त्रैलोक्य
२१	प्र	अङ्गिरा	नृमती	कुबेर	रोचनाभ्र	मन	अचला	सिंहाक्रान्त	प्रभवा	परानुग्रह
२२	चो	कुमार	भूः	शङ्कर	चन्द्रचत्	अहंकार	परा	महाक्रान्त	उष्मा	तेज
२३	द	मृगशृङ्ग	भुवः	ब्रह्मा	पीत	बुद्धि	भृशीला	मुद्गर	दिध्यमान	स्वर्ग
२४	यात्	भग	स्वः	विष्णु	शुभ्र	गुदा	पज्जद्वया	पल्लव	निरञ्जन	सर्वलोक

॥ गायत्री यंत्रार्चनम् ॥

॥ यन्त्रस्थदेवानां पीठ पूजा ॥

सर्वतोभद्रमण्डल रचित पीठ पर मण्डूक से लेकर परतत्व तक के पीठ देवों को सब देवताओं की उपयोगी पद्धति से संस्थापित करके "**ॐ मण्डूकादिपरतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः**" से पूजा करके अथवा स्व-स्व नामों से पूजा करके नवपीठ शक्ति की पूजा करे।

पीठपूजा क्रम :- **ॐ मं मण्डूकाय नमः। ॐ कूं कूर्माय नमः। ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः। ॐ वां वाराहाय नमः। ॐ पृं पृथिव्यै नमः। ॐ अं अमृत सागराय नमः। ॐ मं मणिद्वीपाय नमः। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। ॐ नं नंदनोद्यानाय नमः। ॐ कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः। ॐ रं रत्न वेदिकायै नमः। ॐ रं रत्न सिंहासनाय नमः। ॐ अं अग्निमण्डलाय नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ सों सोममण्डलाय नमः।**

नवशक्ति देवता : (मध्ये - पूर्वादक्रमेण अष्टदलेषु -) **ॐ रां दीप्तायै नमः। ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः। ॐ रुं जयायै नमः। ॐ रें भद्राय नमः। ॐ रैं विभूत्यै नमः। ॐ रों विमलायै नमः। ॐ रौं अमोधायै नमः। ॐ रं विद्युतायै नमः। मध्ये - ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः।**

त्रिकोण मध्ये (बिन्दु से) - **पूर्वादि चतुर्दिक्षुमध्ये - ॐ प्रभूताय नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ साराय नमः। ॐ समाराध्याय नमः।** मध्ये - **ॐ परमसुखाय नमः।**

इसके बाद पीठ पर कलश मध्ये गायत्री देवी का आवाहन करें।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायै मुंखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दु निबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशापाशं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥१॥
कुमारीमृग्वेदयुतां ब्रह्मरूपां विचिन्तयेत् । हंसस्थितांकुशकरां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥२॥
मध्याह्ने विष्णुरूपाञ्च तार्क्ष्यस्थां पीतवासिनीम् । युवतीं सयजुर्वेदां सूर्यमंडलसंस्थिताम् ॥३॥
सायाह्ने शिवरूपाञ्च वृद्धां वृषभवाहिनीम् । सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेद समायुताम् ॥४॥
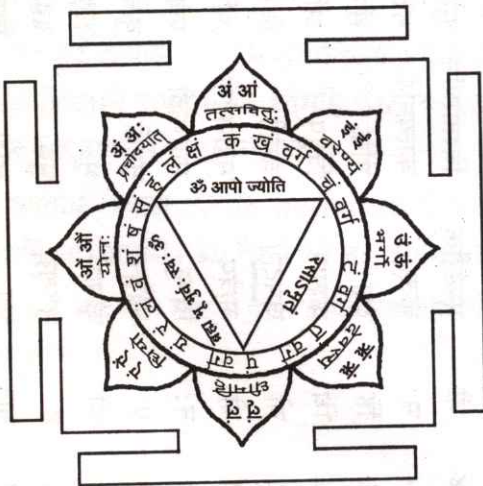
॥ गायत्री पूजन यन्त्रम् ॥
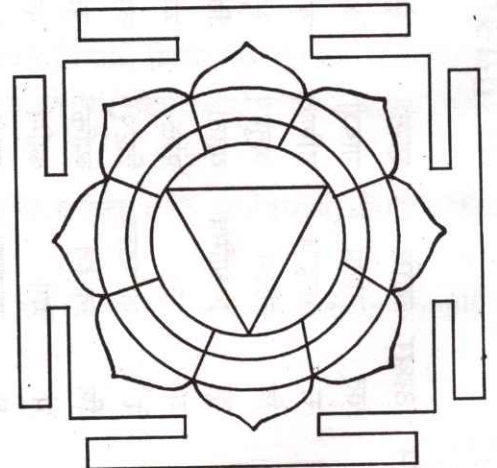
॥ ब्रह्मगायत्री यन्त्रम् (मंत्र महार्णवोक्त)॥

मन्त्र महार्णव के अनुसार बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, अष्टदल युक्त वृत्त एवं भूपूर युक्त यन्त्र बनावें। स्त्री देवता के पूजन में त्रिकोण का मुँह नीचे की ओर तथा पुरुष देवता के पूजन में त्रिकोण का मुँह ऊपर की ओर होता है।

मंत्रमहार्णव में अष्टदल की पूजा वृत्त के अष्टखण्ड बनाकर के दी है। तथा षडङ्ग पूजा नहीं दी है यहां बिंदु, त्रिकोण, अष्टदल पद्म एवं भूपुर युक्त यंत्र का अर्चन दिया है।

पूजन तर्पण के लिये पात्रा सादन करें या विशेषार्घ जल एवं पञ्चामृत एक पात्र में मिलाकर तर्पण करें पात्र की पूजा करे। गंध, अक्षत, खुले पुष्पों को एक पात्र में इकट्ठा करें। पूजन तर्पण यंत्र पर करें या यंत्र व अपने मध्य में अन्य पात्र रखलें उसमें पूजन तर्पण करते रहें। दो व्यक्ति अलग-अलग करें या स्वयं करें तो प्रत्येक नामावलि के साथ **'श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः स्वाहा'** का उच्चारण करते हुये दाहिने हाथ से ज्ञान मुद्रा से पुष्पाक्षत गंध अर्पण करें तथा बायें हाथ से तत्वमुद्रा से तर्पण करें।

हाथ जोड़ें -

ॐ सचिन्मये परे देवि परामृत रस प्रिये। अनुज्ञां देहि गायत्री! परिवारार्चनाय मे॥

अथ प्रथमावरणम् - बिन्दु में मूल मंत्र से **श्री सविता देवता श्री पा. पू. न. त.।**

स्वगुरु क्रम - **ॐ अमुकानन्दनाथ स्वगुरु श्री पा. प. न. त.। ॐ अमुकानन्दनाथ परमगुरु श्री पा. पू. न. त.। ॐ अमुकानन्दनाथ परात्परगुरु श्री पा. प. न. त.। ॐ अमुकानन्दनाथ परमेष्ठिगुरु श्री पा. पू. न. त.।**

अत्रैव षडङ्ग पूजा - (षट्कोणे) बिन्दु समीपे - **ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः श्री पा. पू. न. त.। ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा.। ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट्.। ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुँ.। ॐ धियो यो नः सदाशिव नेत्रत्रयाय वौषट्.। ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट्.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** से अर्घेन संतृप्त।

अथ द्वितीयावरणम् - त्रिकोणे - जिस गुरु क्रम में पूजन रेखाओं में कहा है उसी क्रम में पूर्व रेखा, नैर्ऋत्य एवं वायव्य रेखा में करें एवं जिस गुरु क्रम में कोणों में पूजन बताया गया है वे अग्निकोण, पश्चिम एवं ईशान कोण में पूजन करें। **ॐ गायत्र्यै नमः श्री पा. पू. न. त.। ॐ सावित्र्यै नमः.। ॐ सरवत्यै नमः.।**

ॐ अभीष्ट....द्वितीयावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ तृतीयावरणम् - त्रिकोण के बाहरी कोणों में वृत्त में - **ॐ ब्रह्मणे नमः श्री पा. पू. न. त.। ॐ विष्णवे नमः.। ॐ रुद्राय नमः.।**

ॐ अभीष्ट....तृतीयावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ चतुर्थावरणम् - अष्टदल में पूर्वादि क्रमेण - **ॐ आदित्याय नमः श्री पा. पू. न. त.। ॐ उषायै नमः.। ॐ भानवे नमः.। ॐ प्रज्ञायै नमः.। ॐ भास्कराय नमः.। ॐ प्रभायै नमः.। ॐ रवये नमः.। ॐ संध्यायै नमः.।**

ॐ अभीष्ट....चतुर्थावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ पञ्चमावरणम् - पुनः अष्टदले पूर्वादिक्रमेण (केसरेषु) - **ॐ प्रह्लादिन्यै नमः श्री पा. पू. न. त.। ॐ प्रभायै नमः.। ॐ नित्यायै नमः.। ॐ विश्वम्भरायै नमः.। ॐ विशालिन्यै नमः.। ॐ प्रभावत्यै नमः.। ॐ जयायै**

नम:.। ॐ शान्त्यै नम:.।

ॐ अभीष्ट....पञ्चमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ षष्ठमावरणम् – अष्टदल के मूल भाग में प्राची क्रमेण – **ॐ कान्त्यै नम: श्री पा. पू. न. त.। ॐ दुर्गायै नम:.। ॐ सरस्वत्यै नम:.। ॐ विश्वरूपायै नम:.। ॐ विशालायै नम:.। ॐ ईशायै नम:.। ॐ चापिन्यै नम:.। ॐ विमलायै नम:.।**

ॐ अभीष्ट.....षष्ठवरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ सप्तमावरणम् – अष्टदल के मध्य में प्राची क्रमेण – **ॐ अपरिहारिण्यै नम: श्री पा. पू. न. त.। ॐ सूक्ष्मायै नम:.। ॐ विश्वयोन्यै नम:.। ॐ जयावहायै नम:.। ॐ पद्मालयायै नम:.। ॐ परायै नम:.। ॐ शोभायै नम:.। ॐ पद्मरूपायै नम:.।**

ॐ अभीष्ट....सप्तमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ अष्टमावरणम् – अष्टदलाग्रे (कर्णिकायै) पूर्वादिक्रमेण – **ॐ आं ब्राह्मयै नम: श्री पा. पू. न. त.। ॐ ईं माहेश्वर्यै नम:.। ॐ ऊं कौमार्यै नम:.। ॐ ॠं वैष्णव्यै नम:.। ॐ लृंवाराह्यै नम:.। ॐ ऐं इन्द्राण्यै नम:.। ॐ औं चामुण्डायै नम:.। ॐ अ: महालक्ष्म्यै नम:.।**

ॐ अभीष्ट.....अष्टमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ नवमावरणम् – भूपूरे (प्रथम श्वेत रेखायां) पूर्वादिक्रमेण – **ॐ शुं शुक्राय नम: श्री पा. पू. न. त.। ॐ शुं शुक्राय नम:.। ॐ सों सोमाय नम:.। ॐ बुं बुधाय नम:.। ॐ गुं गुरवे नम:.। ॐ भौं भोमाय नम:.। ॐ शं शनैश्चराय नम:.। ॐ रां राहवे नम:.। ॐ कें केतवे नम:.।** (मंत्रमहार्णव में प्रथम सोम की एवं गुरु के बाद शुक्र की पूजा लिखि है)

ॐ अभीष्ट....नवमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ दशमावरणम् – भूपुरे रक्त परिधौ (पूर्वादिदशदिक्षु) – **ॐ लं इन्द्राय नम: श्री पा. पू. न. त.। ॐ रं अग्नये नम:.। ॐ मं यमाय नम:.। ॐ क्षं निर्ऋत्ये नम:.। ॐ वं वरुणाय नम:.। ॐ यं वायवे नम:.। ॐ सं सोमाय नम:.। ॐ ईं ईशानाय नम:.। ॐ** (ईशानपूर्वयोर्मध्ये) **आं ब्रह्मणे नम:.। ॐ (निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये) ॐ अं अनंताय नम:.।**

ॐ अभीष्ट....दशमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ एकादशमावरणम् – भूपुरे कृष्ण परिधौ (पूर्वादिदशदिक्षु) – **ॐ वं वज्राय नम: श्री पा. पू. न. त.। ॐ शं शक्तये नम:.। ॐ दं दण्डाय नम:.। ॐ खं खड्गाय नम:.। ॐ पं पाशाय नम:.। ॐ अं अङ्कुशाय नम:.। ॐ गं गदायै नम:.। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नम:.। ॐ पं पद्माय नम:.। ॐ चं चक्राय नम:.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिता: तर्पिता: सन्तु:** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

ॐ मूलमंत्रेण .... श्री गायत्री यंत्र स्थापित देवताभ्यो प्रसन्ना वरदा भव कहकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

अगर यन्त्र पर पूजन किया हो तो निर्माल्य पर यन्त्र को शुद्धकर गंधोपचार से पूजन कर धूप दीप नैवेद्य अर्पण कर

निराजन करें।

ततो जप होमादि कर्म विशेष –

ततो गायत्रीशापमोचनं कृत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् सर्वे जापकाः बद्धासनेषूपविष्टाः सुनिश्चलाः जपध्यानसमायुक्ताः नासाग्रमवलोकिनो मौनिनः समाहितमानसउन्नतगात्रा एकाग्र चित्तेन मन्त्रदेवतां सवितारं ध्यायन्तो मन्त्रार्थं स्मरन्तः सप्तव्याहृतीस्त्यक्त्वा सप्रणवव्याहृतित्रयपूर्वकं **''ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि॥ धियो यो नः प्रचोदयात्''॥ इति मन्त्रं मध्यंदिनावधिजपेयुः॥**

ततो जपान्ते **''ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥१॥ ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः॥** इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहस्ये स्थापयेत्॥ न कस्यापि दर्शयेत्॥ नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्येस्मै दद्यात्॥ स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात्। इति जपं कृत्वा त्रिःप्राणानायम्य पूर्वोक्त न्यासं कृत्वा कवचादिना प्रार्थयित्वा पञ्चोपरारैः सम्पूज्य नीराजनं कृत्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा **''ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसन्ना सर्वदा भव ॥१॥ ''** इति देव्या दक्षिणकरे जपसमर्पणजलं च दद्यात्॥ एवं प्रत्यहं समासंख्य एव जपो न तु न्यूनाधिकः।

सर्वे जापका भूमौ शयानाः हविष्यान्नमश्नन्तो ब्रह्मचर्याऽस्पृश्यस्पर्शादिनियमांश्चरेयुः। अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षजपः। जपदशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्॥ **देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुरश्चरणसाङ्गत्तासिद्ध्यर्थं होमविधिं करिष्ये॥** इति सङ्कल्प्य सामान्यतो गणपतिं सम्पूज्य ततः **कुण्डे स्थण्डिले** वा स्वगृह्योक्तविधिना पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहपीठे सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवानावाह्य सम्पूज्य कलशस्थापनं कृत्वा कुशकण्डिकां सम्पाद्याघारावाज्यभागौ हुनेत्॥ **'ॐ इदं हवनीयद्रव्यमन्वाधानोक्त देवताभ्योस्तु न मम॥'** इति यजमानो द्रव्यत्यागं कुर्यात्॥ ततः **सूर्यादि ग्रहेभ्योऽर्कादिसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रत्येकमष्टाविंशतिमष्टौ वा हुत्वा तैरैव व द्रव्यैरधिप्रत्यधि देवताभ्यश्चतुश्च तुः संख्याकाभिः पञ्चलोकपालदिक्पालेभ्यश्च द्विद्विसंख्याकाभिर्जुहुयात्॥ ''ॐ इदं हवनीय द्रव्यमन्वाधानोक्त देवताभ्योस्तु न मम''**

इस प्रकार यजमान द्रव्य का त्याग करे। इसके बाद सूर्यादि ग्रहों से अर्कादि समिधा, चरु तथा घी की आहुतियों से प्रत्येक को अट्ठाइस या आठ आहुति देकर उन्हीं द्रव्यों से प्रत्येक देवता के लिये चार-चार संख्यक पञ्च लोकपालों तथा दिक्पालों के लिये दो-दो संख्यक आहुतियों से होम करे।

ततः आवरणदेवताभ्यश्चर्वादिद्रव्यैरेकैकाहुतिभिर्हुत्वां प्रधानहोमं कुर्यात्। तथा च प्रधानदेवसवित्रे चतुर्विंशति सहस्रतिलाहुतिभिस्त्रिसहस्र संख्याकाभिः पायसाहुतिभिस्तवतीभिर्घृताहुतिभिस्तावंतीभिर्दूर्वाहुतिभिस्तावतीभिः क्षीरद्रुमसमिधाहुतिभिश्च हुत्वा शेषेण **स्विष्टकृद्धोमं कृत्वा** समापयेत्॥ होमकाले **'इदं सवित्रे न मम'** इति त्यागः॥

''होमे सप्रणवा व्याहृतिरहिता स्वाहान्ता गायत्री।'' दूर्वात्रयस्यैकाहुतिः। दूर्वासमिधां दधिमध्वाज्याक्तानां होमः॥ ततो **बलिदानान्ते** मूलादौ संयोज्य **''समुद्रज्येष्ठ०''** इत्यादिभिर्यजमानस्याभिषेकः॥ **अभिषेकान्ते** प्रतिलक्षं तु स्वर्णनिष्कत्रयं तदर्धं वा शक्त्या वा दक्षिणां प्रत्येकब्राह्मणाय दत्वा **आचार्याय द्विगुणा** दद्यात्। ततो **जले सवितारं** सम्पूज्य होमसंख्यादशांशेन **गायत्र्यंते सवितारं तर्पयामीत्युक्त्वा** दुग्धमिश्रितजलेन तर्पणं कुर्यात्॥ ततस्तर्पण **दशांशेन गायत्र्यन्ते** ''आत्मानमभिषिंचामि नमः'' इति यजमानमूर्ध्न्यभिषेकः॥ होमतर्पणाभिषेकानां **मध्ये समर्थो न भवति** चेत् **तत्तत्स्थानेतद्द्विगुणो जपः॥** तत् अभिषेकसंख्यादशांशं वाधिकं ब्राह्मणान् भोजयेत्॥ **ततो ब्राह्मणान् दक्षिणादिभिः परितोष्य** आशीर्वादं गृहीत्वा चतुर्विंशति लक्षात्मकगायत्रीपुरश्चरणं **सम्पूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्त्विति** विप्रान प्रार्थ्य ते च गायत्रीपुरश्चरणं सम्पूर्णमस्त्विति ब्रूयः॥ ततः कर्मपूर्तिकामो **विष्णुं स्मरेत्॥** कर्ता ब्राह्मणैः सह हविष्याशी सत्यवागधःशायी परिगृहीतभूप्रदेशानतिचारी च भवेत्॥

एवं कृते गायत्रीपुरश्चरणं सिद्धं भवित। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्॥

तथा च- ''गायत्रीच्छन्दोमन्त्रस्य **यथासंख्याक्षराणि च॥ तावल्लक्षाणि कर्त्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥१॥** जुहुयात्तद्दशांशेन सघृतेन पयोंधसा॥ तिलैः पत्रैः प्रसूनैश्च यवैश्च मधुरान्वितैः ॥२॥'' (शारदातिलके तु शतांशहोमोप्युक्तः)॥ तेन मया प्रोक्तम्॥ तथा च- ''तत्वसंख्यासहस्राणि मन्त्रविज्जुहुयात्तिलैः॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुः स विंदति ॥३॥ **आयुषेनाज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा॥ दूर्वात्रिकैस्तिलैर्मन्त्री जुहुयात्रिसहस्त्रकम् ॥४॥ अरुणाब्जैस्त्रिमध्वक्तैर्जुहयाद युतं** ततः **महालक्ष्मीर्भवेत्तस्य** षण्मासान्नात्र संशयः ॥५॥ ब्रह्मश्रियेऽत्र जुहुयात्प्रसूनैर्बह्मवृक्षजैः॥ बहुना किमिहोक्तेन यथा वत्साधुसाधिता ॥६॥ द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धा कामदुघा मता। आमध्याह्नं जपं कुर्यादुपांशु वाऽथ मानसम्॥७॥ ''

मन्त्रमहोदधौः- हविष्यं निशि भुंजीत त्रिःस्नाय्यभ्यङ्गवर्जितः॥ व्यग्रतालस्य निष्ठीवक्रोधपादप्रसारणम् ॥८॥ अन्यभाषां त्यजेक्षे च जपकाले त्यजेत्सुधीः॥ स्त्रीशूद्रभाषणं निन्दां ताम्बूलं शयनं दिवा ॥९॥ प्रतिग्रहं नृत्यगीते कौटिल्यं वर्जयेत्सदा॥ भूशय्यां ब्रह्मचर्यं च त्रिकालं देवतार्चनम् ॥१०॥ नैमित्तिकार्चनं देवस्तुतिं विश्वासमाश्रयेत्। प्रत्यहं प्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित् ॥११॥ एवं जपान्समाप्यान्ते दशांशं होममाचरेत्। तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशतः ॥१२॥ एवं कृत पुरश्चर्यः पुरश्चरणसिद्धये। सिद्धे मन्त्रे प्रकुर्वीत प्रयोगान्मनसेप्सितान्॥१३॥

॥ अथ कार्यपरत्वेन प्रयोगः॥

यथा। विद्यार्थी वाग्भवाद्यम्। **लक्ष्मीकामः श्रीबीजम्।** वश्यार्थी कामबीजम्। सर्वकामार्थी मायाबीजम्। **आयुःकामार्थी मृत्युञ्जयचतुरक्षसहितं जपेदिति जपविधिः।** मध्याह्ने मितभुग्मौनी त्रिस्थानार्चनतत्परः। जपेल्लक्षत्रयं धीमान्नान्यमानसिकस्तु यः ॥१४॥ कर्मभिर्यो जपेत्पश्चात् क्रमशः स्वेच्छयापि वा। यावत्कार्यं न कुर्वीत न लोपेत्तावता व्रतम् ॥१५॥ आदित्यस्योदये स्नात्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत्। आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनं च लभते ध्रुवम् ॥१६॥ त्रिरात्रोपोषितः सम्यग्घृतं हुत्वा सहस्रशः। सहस्रं लाभमाप्नोति **हुत्वाग्नो खदिरेन्धनम् ॥१७॥ समिद्भिश्चैव पालाशैर्घृताक्तैश्च हुताशने। सहस्रं लाभमाप्नोति राहुसूर्य समागमे ॥१८॥**

हुत्वा तु खदिरं वह्नौ घृताक्तं रक्तचन्दनम्। सहस्त्रहेम चाप्नोति राहुचन्द्रसमागमे ॥१९॥ रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने। हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्रं गोमयं द्विजः ॥२०॥ जातीचम्पकराजार्ककुसुमानां सहस्रशः। हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां हुताशने ॥२१॥ सूर्यमण्डलविम्बे च हुत्वा तोयं सहस्रशः। सहस्रं प्राप्नुयाद्धेम रौप्यमिन्दुमये हुते ॥२२॥ अलक्ष्मीपापसंयुक्ते मल व्याधिविनाशके। मुच्येत्सहस्रजाप्येन स्नायाद्यस्तु जलेन वै ॥२३॥

गोघृतेन सहस्रेण लोध्रेण जुहुयाद्यदि। चौराग्निमारुतोत्थानि भयानि न भवन्ति वै ॥२४॥ क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्युमपोहति। घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहुविज्ञानसञ्चयाम् ॥२५॥ हुत्वा वेत सपत्राणि घृताक्तानि हुताशने। लक्षाधिपस्यपदवीं सार्वभौमं न संशयः ॥२६॥ लक्षेण भस्महोमस्य हुत्वा ह्युत्तिष्ठते जलात्। आदित्याभिमुखः स्थित्वा नाभिमात्रे जले शुचौ ॥२७॥ गर्भपातातिप्रदराश्चान्ये स्त्रीणां महारुजः। नाशमेष्यन्ति ते सर्वे मृतवत्सादि दुःखदाः ॥२८॥ तिलानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने। सर्वकामसमृद्धात्मा परं स्थानमवाप्नुयात् ॥२९॥ यवानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने। सर्वकामसमृद्धात्मा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ॥३०॥ घृतस्याहुतिलक्षेण सर्वान् कामानवाप्नुयात्। पञ्चगव्याशनो लक्षं जपेज्जातिस्मृतिर्भवेत् ॥३१॥ तदेव ह्यनले हुत्वा **प्राप्नोति बहुसाधनम्।** अन्नादिहवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत्सदा ॥३२॥ जुहुयात्सर्वसाध्यानामाहुत्यायुतसंख्यया। **रक्तसिद्धार्थकान् हुत्वा सर्वान् साधयते रिपून्** ॥३३॥ लवणं मधुसंयुक्तं हुत्वा सर्ववशी भवेत्। करवीराणि च हुत्वा तु रक्तानि ज्वालयेज्जलम् ॥३४॥

हुत्वा भल्लातकं तैलं देशादेव प्रचालयेत्। **हुत्वा तु निम्बपत्राणि नृणां विद्वेषशान्तये** ॥३५॥ रक्तानां तण्डुलानां च घृताक्तानां हुताशने। हुत्वा बलमवाप्नोति शत्रुभिर्न स जीयते ॥३६॥ प्रत्यानयन सिद्धयर्थं **मधुसर्पिःसमन्वितम्।** गवां क्षीरं

प्रदीप्तेग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ॥३७॥ ब्रह्मचारी मिताहारो यः सहस्त्रत्रयं जपेत्। **संवत्सरेण लभते धनैश्वर्यं न संशयः** ॥३८॥ **शमीबिल्वपलाशानामर्कस्य** तु विशेषतः। **पुष्पाणां समिधश्चैव** हुत्वा हेमह्यवाप्नुयात् ॥३९॥ आब्रह्मत्र्यम्बकादीनां यस्यायतनमाश्रितः। जपेल्लक्षं निराहारः स तस्य वरदो भवेत् ॥४०॥ बिल्वानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने। परां श्रियमवाप्नोति यदि न भ्रूणहा भवेत् ॥४१॥ पद्मानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने। प्राप्नोति राज्यमखिलं सुसम्पन्नमकण्टकम् ॥४२॥ **पञ्चविंशतिलक्षेण दधिक्षीरं हुताशने।** स्वदेहे सिद्ध्यते जन्तुः कौशिकस्य मतं तथा ॥४३॥ एकाहं पञ्चगव्याशी एकाहं मारुताशनः। एकाहं च द्विजोन्नाशी गायत्रीजप उच्यते ॥४४॥ महारोगा विनश्यन्ति लक्षजप्यानुभावतः। स्नात्वा शतेन गायत्र्याः शतमन्तर्जले जपेत् ॥४५॥ शतेन यस्त्वपः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। गोघ्नः पितृघ्नमातृघ्नौ ब्रह्महा गुरुतल्पगः ॥४६॥ स्वर्णहा तैलहारी यस्तु विप्रः सुरां पिबेत्। चन्दनद्वय संयुक्तं कर्पूरं तण्डुलं यवम् ॥४७॥ लवङ्गं सुफलं चाज्यं सिता चाम्रस्य दारुकैः। अन्यो न्यूनविधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्रासिकारकः ॥४८॥ **एवं कृते महासौख्यं प्राप्नोति साधको** ध्रुवम्। अन्नाज्यभोजनं हत्वा कृत्वा वा कर्म गर्हितम् ॥४९॥ न सीदेत् प्रतिगृह्णानो महीमपि ससागराम्। ये चास्य उत्थिता लोके ग्रहाः सूर्यादयो भुवि। ते यान्ति सौम्यतां सर्वे शिवे इति न संशयः ॥५०॥

॥ इति शारदातिलकादिप्रोक्तो ब्रह्मगायत्री पुरश्चरणप्रयोगः॥

॥ अथ भिन्नपाद गायत्री मंत्रप्रयोगः॥

शास्त्रों में शीघ्र मंत्र सिद्धि हेतु भिन्नपाद गायत्री मंत्र की उपासना कही गयी हैं। अर्थात् इस विधि के बिना ब्राह्मण कर्म फलहीन हैं जिसकी महिमा बताते हुये कहा हैं-

अछिन्नपादा गायत्री ब्रह्महत्या प्रयच्छति । भिन्नपादातुं गायत्री ब्रह्महत्या व्यपोहति॥

अर्थात् प्रत्येक पद के बाद **ॐ, ऐं, ह्रीं, श्रीं** कामना भेद के अनुसार प्रयुक्त करें।

सर्वशांति हेतु- **ॐ भू भुंवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।**

विद्या प्राप्ति हेतु - व्याहृति बाद **ॐ** की जगह **''ऐं''** लक्ष्मी प्राप्ति हेतु व्याहृति बाद **ॐ** की जगह **'' श्रीं''** का प्रयोग करे।

कामनासिद्धि हेतु - **''ह्रीं''**, वशीकरण हेतु **''क्लीं''**, शत्रुनाश हेतु **''क्रीं''** के द्वारा भिन्नपाद गायत्री मंत्र का प्रयोग करें।

चतुष्पाद गायत्री मन्त्रः- २४ अक्षर गायत्री त्रिपाद गायत्री का जप त्रिकाल संध्या हेतु ही कहा गया हैं। मध्यरात्रि में चतुष्पाद गायत्री का जप करना चाहिये। **चतुर्थपादः- (१) परो रजसे सविता (२) ''परो रजसे सावदोम्'' अतः मंत्र- ॐ परो रजसे सावदोम्। (३) ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं॥ चतुष्पाद गायत्री मंत्र- ॐ भू भुंवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् परोरजसे सावदोम्॥**

पंचपाद गायत्री- ॐ भू भुंवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् आपो ज्योती रसोऽमृतं परोरजसे सावदोम् । इस तरह गायत्री षट्पदा, सप्तपदा, अष्टपदा, नवपदा, शताक्षरी एवं सहस्त्राक्षरी भी हैं।

॥ शताक्षरी गायत्री ॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

विनियोगः- **अस्य शताक्षरा गायत्री मंत्रस्य विश्वामित्र मरीचि कश्यप वशिष्ठ ऋषयो गायत्री त्रिष्टुप् अनुष्टुप्**

छन्दांसि सवितृ जातवेदस्त्र्यम्बक देवता गायत्र्यक्षराणि बीजानि अनुष्टुबक्षराणि शक्तयस्त्रिष्टुबक्षराणि कीलकानि ममारिष्टशान्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- **विश्वामित्र मरीचि कश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः मुखे। सवितृ** जातवेदस्त्र्यम्बक देवेभ्यो नमः हृदये। **गायत्र्यक्षरेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। अनुष्टुबक्षरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः। त्रिष्टुबक्षरेभ्यः कीलकेभ्यो नमः नाभो। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः- **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।** हृदयाय नमः॥ **ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्।** शिरसे स्वाहा॥ **ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।** शिखायै वषट्॥ **ॐ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यनिः।** कवचाय हुं॥ **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टि वर्धनम्।** नेत्रत्रयाय वौषट्॥ **ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।** अस्त्राय फट्॥

ध्यानम्—

स्मर्तव्याऽखिलालोकवर्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरं, व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्च विहितं मुक्तिर्यतः सिद्ध्यति। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यद् गीयते, तद्वस्तु स्थिति सिद्ध्येऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः॥

॥ अथ यंत्र पूजनम्॥

मेरुतंत्र के अनुसार षडङ्गन्यास मंत्रों से सूर्य बिम्ब में (षट्कोण में) षडङ्ग पूजा करें। बाद में तीन आवरणों में गायत्री का यंत्रार्चन करें। पश्चात् पांचवें आवरण (विथि) में जातवेददुर्गा की ४४ शक्तियों का पूजन तथा छठे आवरण में आग्नेयास्त्र की ४ शक्तियों का पूजन। सातवें, आठवें, नवें आवरण में मृत्युञ्जय कि शक्तियों का पूजन दशवें, ग्यारहवें, आवरण में इन्द्रादि लोकपालों व उनके अस्त्रों का पूजन करें।

दुर्वा व त्रिमधु के होम से धनायु की वृद्धि करें।

॥ क्रमदीक्षा ॥

गायत्री मंत्र की तीन व्याहृतियों का जप कर त्रिपाद गायत्री मंत्र की दीक्षा ग्रहण कर २४ लाख का पुरश्चरण करे। तुरीय संध्या हेतु चतुष्पाद गायत्री का जप करे। एक एक क्रम से बढते हुये तीन व्याहृतियों के बाद महः, जनः, तपः, सत्यः, के सहित सप्त व्याहृतियों सहित गायत्री मंत्र की साधना करे। वीराचार के अनुसार दीक्षा ग्रहण करके गायत्री की पंचमकारों से साधना करे। यह वीरमार्ग का कर्म हैं विशिष्ट साधक ही करे। इसके बाद हंसगायत्री, परमहंसगायत्री एवं अजपाजप गायत्री की साधना करे।

परमहंसगायत्रीमंत्रः - ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

षड्ङ्गन्यासः - **ॐ परमहंसाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महातत्त्वाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इस प्रकार करन्यास भी करें।

हंसमंत्र- ॐ सोहं सोहं परो रजसे सावदोम्।

ब्रह्मगायत्रीमन्त्रः- ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- **ॐ वेदात्मने च हृदयाय नमः ॥१॥ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ हिरण्यगर्भाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो ब्रह्मा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥**

अजपागायत्री - यह साधना कुण्डली जागरण हेतु हैं। शिव से प्रार्थना करे कि प्रभो मेरी कुण्डलिनी को जाग्रत करे। पश्चात् कुण्डलिनी को उठाकर सुषुम्रा मार्ग द्वारा लाकर भ्रूमध्य में स्थापित कर परमशिव से जोड़े। प्रत्येक श्वास लेने पर ''**सोऽहं**'' तथा निःश्वास छोड़ते समय ''**हंसः**'' मंत्र का ध्यान करते रहे। अभ्यास द्वारा धीरे धीरे ब्रह्मरन्ध्र सहस्त्रार में अजपा जप करे।

मंत्र- (१) ''**सोऽहं हंसः**'' (२) **सोऽहं हंसः स्वाहा।** जपपूर्व ''भूतशुद्धि'' प्रयोग अवश्य कर शरीर शुद्धि कर लेवे।

॥ विलोमगायत्री मंत्र साधना ॥

मंत्र- ॐ स्वः भुवः भूः **त्यादचोप्र नः यो योधि हिमधी स्यवदे गोंभ ण्यंरेवतुः वि (तुर्वि) सतत भू र्भुवः स्वः ॐ।**

अन्यच्च - **ॐ भू र्भुवः स्वः द्यादचोप्र नः यो योधि हिमधी स्यवदे गोर्भ ण्यंरेव तुर्विसतत् स्वः भुवः भू ॐ।**

विलोम मंत्र अग्नि के समान कार्य करता हैं। मारण प्रयोगों में भी कार्य करता हैं। इष्टमंत्र सिद्ध नहीं हो रहा हो तो अनुलोम गायत्री मंत्र पश्चात् पुनः विलोम गायत्री मंत्र जपने से गायत्री शीघ्र सिद्धिप्रदा होती हैं। किसी भी मंत्र के आगे लोमगायत्री तथा मंत्र के बाद विलोम गायत्री मंत्र लगाकर (इस तरह ३ मंत्रों का एक ही मंत्र बनेगा) जप करने से वह मंत्र शीघ्र कार्य करता हैं।

॥ सावित्री साधना मंत्रः॥

मंत्र- ॐ भगवति सावित्रि कं खं गं घं ङंलं तं थं दं धं नं रं क्लीं स्वाहा। इस मंत्र के २४ लाख जप ३ वर्ष में पूर्ण करे तो वाक्सिद्धि प्राप्त होवे।

॥ गायत्री सावित्री समष्टि मंत्र साधना ॥

मंत्र- ॐ ह्रौं ह्रीं ऐं ईं सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् वेदगर्भे भगवति स्वाहा।

यह मंत्र दैन्य, दुरित का क्षय कर सौभाग्य वृद्धि करता हैं। विद्या एवं विवेक प्रदान करता हैं। त्रिपुरसुंदरी का ध्यान करते हुये उसके त्रिनेत्रों का अलग अलग वर्ण का ध्यान करे। एक नेत्र सोनभद्रनदी के जल की तरह लाल, दूसरा नेत्र गंगाजल के समान धवल, तीसरा यमुनाजल के समान श्यामवर्ण का हैं। नित्य १००८ बार जप करे। श्री हरिहरानन्द करपात्री जी ने भी नरवर (बुलन्दशहर) में यह साधना की थी।

॥ वाग्वादिनी सावित्री मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्र-ॐ ऐं त्रिपुरे देवि विद्महे ऐं कामेश्वरि धीमहि ऐं तन्नो देवि प्रचोदयात्। यह त्रिपुरसुंदरी गायत्री मंत्र हैं जिसको ''ऐं'' बीज से भिन्नपाद मंत्र बनाने से यह सरस्वती प्रधान मंत्र हो गया हैं। यह मंत्र विद्या बुद्धि देता हैं तथा संमोहन में भी कार्य करता हैं।

॥ अन्य देवताओं के गायत्री मंत्र ॥

सरस्वतीगायत्रीमन्त्रः - ॐ ऐं वाग्देव्यै विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात् षडङ्गन्यास :- **ॐ ऐं वाग्देव्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कामराजाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥**

विष्णुगायत्रीमन्त्रः:- ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यास- ॐ श्री विष्णवे च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो विष्णुर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ द्वितीय विष्णुगायत्रीः- ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। तृतीय विष्णुगायत्रीः- ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

लक्ष्मीगायत्रीमन्त्रः:- ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ महादेव्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ विष्णुपत्न्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो लक्ष्मीर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ लक्ष्मीमन्त्रः- ॐ क्लीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीदेव्यै नमः। द्वितीय लक्ष्मीगायत्रीः ॐ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्। वा ॐ महालक्ष्यै च विद्महे महाश्रियै च धीमहि। तन्नः श्रीः प्रचोदयात्।

नारायणगायत्री मन्त्रः:- ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ नारायणाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो नारायणो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्। मूलमन्त्रः- ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमन्नाराणाय नमः।

श्रीरामगायत्रीमन्त्रः:- ॐ दशरथाय (दाशरथाय) विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्। विनियोगः ॐ अस्य श्रीरामगायत्रीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीजानकीवल्लभो देवता। श्रीरामेति बीजम् दाशरथायेति शक्तिः। गायत्र्यावाहने जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यास : ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ श्रीजानकीवल्लभ देवतायै नमः हृदये ॥३॥ श्रीरामेति बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ दाशरथायेति शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। षडङ्गन्यासः- ॐ दाशरथाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो रामः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ श्रीराममूलमन्त्रः- ॐ ह्रां ह्रीं रां रामाय नमः। श्रीरामतारकमन्त्रः- ॐ जानकीकान्ततारक राँ रामाय नमः। **जानकीगायत्रीमन्त्रः**:- ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि। तन्नः सीताप्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ जनकजायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ रामप्रियायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः सीता नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ सीतामूलमन्त्रः- ॐ सीं सीतायै नमः। **लक्ष्मणगायत्रीमन्त्रः**:- ॐ दाशरथाय विद्महे अलबेलाय धीमहि। तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ दाशरथाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अलबेलाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो लक्ष्मणः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ ह्राँ ह्रीं राँ राँ लँ लक्ष्मणाय नमः। **हनुमद्गायत्रीमन्त्रः**:- ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ अंजनीजाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हनुमान् नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमंत्र : ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ हैं ह्रौं हः।

गरुडगायत्रीमन्त्रः:- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपर्णाय (तन्त्रान्तरे तु सुवर्णपक्षायेति पाठः) धीमहि। तन्नो

गरुडः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सुवर्णपर्णाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गरुडो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहियें। मूलमन्त्रः ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः।

श्रीकृष्णगायत्रीमन्त्रः- ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ देवकीनन्दनाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः कृष्णः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्। इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमंत्रः ॐ क्लीं कृष्णाय नमः। द्वितीय श्रीकृष्णगायत्रीमन्त्रः ॐ श्रीकृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। गोपालगायत्रीमन्त्रः- ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि। तन्नो गोपालः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ गोपालाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ गोपीजनवल्लभाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गोपालः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः ॐ गोपालाय गोचराय वंशशब्दाय नमोनमः। राधिकागायत्रीमन्त्रः- ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि। तन्नो राधिका प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ वृषभानुजायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कृष्णप्रियायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो राधिका नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ राँ राधिकायै नमः।

परशुरामगायत्रीमन्त्रः-ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नः परशुरामः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महावीराय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ राँ राँ ॐ राँ राँ ॐ परशुहस्ताय नमः। नृसिंहगायत्रीमन्त्रः- ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ उग्रनृसिंहाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वज्रनखाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोः नृसिंह नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ नृँ नृँ नृँ नृसिंहाय नमः। द्वितीय नृसिंहगायत्रीमन्त्रः- ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्। हयग्रीवगायत्रीमन्त्रः- ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ वागीश्वराय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ हयग्रीवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

शिवगायत्रीमन्त्रः- ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि। तन्नः शिवः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ महादेवाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः शिवः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ सं सं सं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ शिवाय नमः। रुद्रगायत्री मंत्रः- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महादेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो रुद्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

दक्षिणामूर्तिगायत्रीमन्त्रः- **ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि। तन्नो धीशः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ दक्षिणामूर्तये हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ ध्यानस्थाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो धीशः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

गौरीगायत्रीमन्त्रः- **ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः **ॐ सुभगायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ काममालायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः **ॐ क्लीं ॐ गौं गौरीभ्यो नमः।**

गणेशगायत्रीमन्त्रः- **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वक्रतुण्डाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो दन्तिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

षण्मुखगायत्रीमन्त्रः- **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महासेनाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः षण्मुखः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

नन्दीगायत्रीमन्त्रः- **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ चक्रतुण्डाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो नन्दिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

सूर्यगायत्रीमन्त्रः- **ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय (तन्त्रान्तरे तु महाद्युतिकरायेति पाठः) धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ भास्कराय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महातेजाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः सूर्यः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।** मूलमन्त्रः- **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ विष्णु तेजसे ज्वालामणिकुण्डलाय स्वाहा।** द्वितीय सूर्यगायत्रीमन्त्रः- **ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।**

चन्द्रगायत्रीमन्त्रः- **ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि। तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ क्षीरपुत्राय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अमृततत्त्वाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नश्चन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः **ॐ चन्द्रत्त्वां चन्द्रेण क्रीणामि शुक्रेण मृतममृतेनगोरस्मोरतेचन्द्राणि।**

भौमगायत्रीमन्त्रः- **ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः **ॐ अङ्गारकाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ शक्तिहस्ताय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ**

धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो भौमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ अं अङ्गारकाय नमः। पृथ्विगायत्रीमन्त्रः- ॐ पृथिवीदेव्यै च विद्महे सहस्त्रमूर्त्यै च धीमहि। तन्नो मही प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ पृथिवीदेव्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सहस्त्रमूर्त्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोमहीः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ भूरसिभूतादिरसिश्विस्यधायाभुवनस्यमाहिंसीर्नमः।

अग्निगायत्रीमन्त्रः - ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्न्याय धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ महाज्वालाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्निमध्न्याय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोऽग्निः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः ॐ अं अं अग्नये नमः। द्वितीय अग्निगायत्रीः- ॐ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्। जलगायत्रीमन्त्रः- ॐ जलविम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि। तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ जलविम्बाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नस्त्वम्बु नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ जँ जँ ॐ वँ वँ ॐ लँ लँ ॐ जलविम्बाय नमः। आकाशगायत्रीमन्त्रः- ॐ आकाशाय च विद्महे नभोदेवाय धीमहि। तन्नो गगनं प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ आकाशाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ नभोदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गगनं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास करना चाहिये। मूलमन्त्रः- ॐ गँ गँ ॐ नँ नँ ॐ आँ आँ ॐ गगनाय नमः। पवन (वायु) गायत्रीमन्त्रः- ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्त्रमूर्तये च धीमहि। तन्नो वायुः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः- ॐ पवनपुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सहस्त्रमूर्तये च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो वायुः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्रः ॐ पँ पँ ॐ वाँ वाँ ॐ युँ युँ ॐ पवनपुरुषाय नमः।

इन्द्रगायत्रीमन्त्रः - ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्त्राक्षाय धीमहि। तन्न इन्द्रः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सहस्त्राक्षाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्न इन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

कामगायत्रीमन्त्रः - ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि। तन्नोनङ्गः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ मन्मथेशाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कामदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोनङ्गः नेत्रत्रयाय वषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। द्वितीय कामगायत्रीः- ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोनङ्गः प्रचोदयात्।

गुरुगायत्रीमन्त्रः- ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ गुरुदेवाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ परब्रह्माय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गुरुः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना

चाहिये। मूलमन्त्र: ॐ हुँ सँ क्राँ सौः गुरुदेवपरमात्मने नमः।

तुलसीगायत्री मन्त्रः:- ॐ श्रीत्रिपुराय हृदयाय तुलसीपत्राय धीमहि। तन्न तुलसी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः:- ॐ श्रीत्रिपुराय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ तुलसीपत्राय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नतुलसी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

देवीगायत्रीमन्त्रः:- ॐ देव्यब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः:- ॐ देव्याब्रह्माण्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महाशक्त्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। मूलमन्त्र: ॐ ह्रौं श्रीं क्लीं नमः।

शक्तिगायत्रीमन्त्रः:- ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः:- ॐ सर्वसम्मोहिन्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ विश्वजनन्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः शक्तिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। **दुर्गागायत्रीमन्त्रः**:- ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ कात्यायन्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कन्याकुमार्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो दुर्गाः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। द्वितीय दुर्गागायत्रीमन्त्र-: ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात्। जयदुर्गागायत्रीमन्त्र: ॐ नारायण्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ नारायण्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ दुर्गायै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

अन्नपूर्णागायत्रीमन्त्रः:- ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि। तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ भगवत्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ माहेश्वर्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोऽन्नपूर्णा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

कालीगायत्रीमन्त्रः - ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ कालिकायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ श्मशानवासिन्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोऽघोरा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

तारागायत्रीमन्त्रः:- ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः ॐ तारायै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महोग्रायै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) गायत्रीमन्त्रः– **ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि। सौस्तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः– **ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ क्लीं कामेश्वर्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ सौस्तन्नः क्लिन्ने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।** द्वितीय त्रिपुरासुन्दरीगायत्रीमन्त्रः – **ॐ क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वरी धीमहि। तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।** तृतीय त्रिपुरासुन्दरीगायत्रीमन्त्रः– **ॐ ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहिय्यै सोस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। इति षोडशीभेदेन बालागायत्रीमन्त्रः।** भुवनेश्वरीगायत्रीमन्त्रः **ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः **ॐ नारायण्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ भुवनेश्वर्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

भैरवीगायत्रीमन्त्रः– ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः– **ॐ त्रिपुरायै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ भैरव्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

छिन्नमस्तागायत्रीमन्त्रः– ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः– **ॐ वैरोचन्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ छिन्नमस्तायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

धूमावतीगायत्रीमन्त्रः– ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः– **ॐ धूमावत्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ संहारिण्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो धूमा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

बगलामुखीगायत्रीमंत्रः– ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः– **ॐ बगलामुख्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ स्तम्भिन्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मातङ्गीगायत्रीमन्त्रः– ॐ मातङ्ग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः– **ॐ मातङ्ग्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ उच्छिष्टचाण्डाल्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

महिषमर्दिनीगायत्रीमन्त्रः– ॐ महिषमर्द्दिन्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। षडङ्गन्यासः– **ॐ महिषमर्द्दिन्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ दुर्गायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

त्वरितागायत्रीमन्त्रः:- **ॐ त्वरिता देवी विद्महे महानित्यायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।** षडङ्गन्यासः- **ॐ त्वरिता देवी हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महानित्यायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥** इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये। **इति श्रीत्र्यधिकपञ्चाशद्देवता गायत्रीमन्त्रे गायत्रीपटलतन्त्रं समाप्तम्।**

॥ श्री गायत्री कवचम् ॥

इस कवच में श्लोक ३१ से ३४ अन्य प्रयोग विधि है।

॥ याज्ञवल्क्य उवाचः ॥

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम्। चतुः षष्टिकलानां च पातकानां च तद्वद ॥१॥
मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं भवेत्। देहश्च देवतारूपं मन्त्ररूपं विशेषतः ॥२॥
क्रमतः श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम्।

॥ ब्रह्मोवाचः ॥

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री गायत्रीकवचस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः। ऋग्यजुः सामाथर्वाणिच्छन्दांसि। परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता। भूः बीजम्। भुवः शक्तिः। स्वः कीलकम्। श्रीगायत्री प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुः सामाथर्वच्छन्दोभ्यो नमः मुखे। परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवतायै नमः हृदि। भूः बीजाय नमः गुह्ये। भुवः शक्तये नमः पादयोः। स्वः कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यासः- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य मध्यमाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वःधीमह्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यासः- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरिति हृदयाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्येति शिखायै वषट्। ॐ भूर्भुवः स्वःधीमहीति कवचाय हुम्। ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः इति नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयादिति अस्त्राय फट्।**

इति न्यासं कृत्वाकरौ बद्ध्वा प्रार्थयेत्। तथा च-

वर्णास्त्रां कुण्डिका हस्तां शुद्धनिर्मलज्योतिषीम्। सर्वतत्त्वमयीं वन्दे गायत्रीं वेदमातरम् ॥१॥
इति सम्प्रार्थ्य ध्यानं कुर्यात्-

॥ ध्यानम् ॥

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दु निबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थ वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाऽभयांऽकुशकशां शूलं कपालं गुणं, शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥
ॐ गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे। ब्रह्मविद्या च मे पश्चादुत्तरे मां सरस्वती ॥१॥
पावकीं मे दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्वल शालिनी। यातुधानीं दिशं रक्षेद्यातुधान गणार्दिनी ॥२॥

पावमानीदिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी । दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥३॥
उर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा । एवं दशदिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ॥४॥
ब्रह्मास्त्र स्मरणादेव वाचां सिद्धः प्रजायते । ब्रह्मदण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्रास्त्रभक्षकः ॥५॥
ब्रह्मशीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः । सप्तव्याहृतयः पातु स सदा बिन्दुसंयुतः ॥६॥
वेदमाता च मां पातु सरहस्या सदैवता । देवीसूक्तं सदा पातु सहस्त्राक्षरदेवता ॥७॥
चतुःषष्टिकला विद्या दिव्याद्यां पातु देवता । बीजशक्तिश्च मे पातु पातु विक्रमदेवता ॥८॥
तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् । वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥९॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा । धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥१०॥
ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात् । तद्वर्णः पातु मूर्द्धानं सकारः पातु भालकम् ॥११॥
चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तुकारकः । नासापुटे वकारो मे रेकास्तु कपोलयोः ॥१२॥
णिकारस्त्वधरोष्ठे च यंकारस्त्वधरोष्ठके । आस्यमध्ये भकारस्तुर्गोकारस्तु कपोलयोः ॥१३॥
देकारः कण्ठदेशे च वकारः स्कंधदेशयोः । स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तके ॥१४॥
मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा । धिकारो नाभिदेशं च योकारस्तु कटिद्वयम् ॥१५॥
गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नः पदाक्षरम् । प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जङ्घदेशयोः ॥१६॥
दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम् । जातवेदेति गायत्री त्र्यम्बकेति दशाक्षरा ॥१७॥
सर्वतः सर्वदा पातु आपोज्योतीति षोडशी । इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशत विनाशकम् ॥१८॥
चतुः षष्टिकलाविद्या सकलैश्वर्य सिद्धिदम् । जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत् ॥१९॥
स्त्रीगोब्राह्मणमित्रादि द्रोहाद्यखिल पातकैः । मुच्यते सर्व पापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥२०॥
पुष्पाञ्जलिं च गायत्र्या मूलेनैव पठेत्सकृत् । शतसाहस्त्रवर्षाणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥२१॥
भूर्जपत्रे लिखित्वै तत्स्वकण्ठे धारयेद्यदि । शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद् बुधः ॥२२॥
त्रैलोक्यं क्षोभयेत्सर्वं त्रैलोक्यं दहति क्षणात् । पुत्रवान्धनवाञ्छी मान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥२३॥
ब्रह्मास्त्रादीनि सर्वाणि तदङ्गस्पर्शनात्ततः । भवन्ति तस्य तुल्यानि किमन्यत्कथयामि ते ॥२४॥
अभिमंत्रित गायत्री कवचं मानसं पठेत् । तज्जलं पिबतो नित्यं पुरश्चर्याफलं भवेत् ॥२५॥
लघुसामान्यकं मंत्रं महामंत्रं तथैव च । यो वेत्ति धारणां युञ्जञ्जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥२६॥
सप्त व्याहृदयो विप्र सप्तावस्थाः प्रकीर्तिताः । सप्तजीवशता नित्यं व्याहृती अग्निरूपिणी ॥२७॥
प्रणवे नित्ययुक्तस्य व्याहृतीषु च सप्तसु । सर्वेषामेव पापानां सङ्कटे समुपस्थिते ॥२८॥
शतं सहस्त्रमभ्यर्च्च्य गायत्री पावनं महत् । दशशतमष्टोत्तरशतं गायत्री पावनं महत् ॥२९॥
भक्तिमान्यो भवेद्विप्रः संध्याकर्मसमाचरेत् । कालेकाले तु कर्त्तव्यं सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥३०॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च । तुर्यं सहैव गायत्रीजप एव उदाहृतः ॥३१॥

तुरीयपादमुत्सृज्य गायत्रीं च जपेद्विजः । स मूढो नरकं याति कालसूत्रमधोगतिः ॥३२॥
मंत्रादौ जननं प्रोक्तं मन्त्रान्ते मृतसूतकम् । उभयोर्दोषनिर्मुक्तं गायत्री सफला भवेत् ॥३३॥
मंत्रादौ पाशबीजं च मन्त्रान्ते कुशबीजकम् । मन्त्र मध्ये तु या माया गायत्री सफला भवेत् ॥३४॥
वाचिकस्त्वहमेव स्यादुपांशु शतमुच्यते । सहस्त्रं मानसं प्रोक्तं त्रिविधं जपलक्षणम् ॥३५॥
अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् । जपं चाक्षस्वरूपेणानामिकामध्यपर्वणि ॥३६॥
अनामा मध्यमा हीना कनिष्ठादिक्रमेण तु । तर्ज्जनीमूलपर्यन्तं गायत्रीजपलक्षणम् ॥३७॥
पर्वभिस्तु जपेदेवमन्यत्र नियमं स्मृतम् । गायत्री वेदमूलत्वाद्वेदः पर्वसु गीयते ॥३८॥
दशभिर्ज्जन्मजनितं शतेनैव पराकृतम् । त्रियुगं तु सहस्त्राणि गायत्री हन्ति किल्बिषम् ॥३९॥
प्रातः कालेषु कर्त्तव्यं सिद्धिं विप्रो य इच्छति । नादालये समाधिश्च सन्ध्यायां समुपासते ॥४०॥
अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घने । असंख्यया च यज्जप्तं यज्जप्तं निष्फलं भवेत् ॥४१॥
विना वस्त्रं प्रकुर्वीत गायत्री निष्फला भवेत् । वस्त्रपुच्छं न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः ॥४२॥
गायत्रीं तु परित्यज्य अन्य मन्त्रमुपासते । सिद्धान्नं च परित्यज्य भिक्षामटति दुर्मतिः ॥४३॥
ऋषिश्छन्दो देवताख्या बीजशक्तिश्च कीलकम् । नियोगं न च जानाति गायत्रीं निष्फला भवेत् ॥४४॥
वर्णमुद्रा ध्यान पदमावाहन विसर्जनम् । दीपचक्रं न ज़ानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४५॥
शक्तिन्यासस्तथा स्थानं मन्त्रसम्बोधनं परम् । त्रिविधं यो न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४६॥
पञ्चोपचारकाश्चैव होमद्रव्यं तथैव च । पञ्चाङ्गं च विना नित्यं गायत्री निष्फला भवेत् ॥४७॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेज्जातु विश्वामित्रेण भाषितम् । व्यासो वाचस्पतिं जीवस्तुता देवी तपः स्मृतौ ॥४८॥
सहस्त्रं जप्ता सा देवी ह्युपपातकनाशिनी । लक्षजाप्ये तथा तच्च महापातकनाशिनी ॥४९॥
कोटिजाप्येन राजेन्द्र यदिच्छति तदाप्नुयात् । न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।
शिष्येभ्यो भक्ति युक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥५०॥

॥ इति श्रीमद्वसिष्ठ संहितायां महात्म्यसहितं गायत्री कवचं संम्पूर्णम् ॥

॥ मंत्रात्मक गायत्री कवच ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

देव देव महादेव! संसारार्णव तारक ! गायत्री कवचं देव! कृपया कथय प्रभो ।

॥ महादेव उवाच ॥

मूलाधारेषु या नित्या कुण्डली तत्त्वरूपिणी । सूक्ष्माति सूक्ष्मा परमा विसतन्तुस्वरूपिणी ॥
विद्युत्पुञ्जप्रतीकाशा कुण्डलाकृतिरूपिणी । परमब्रह्म गृहिणी पञ्चाशद् वर्णरूपिणी ॥
शिवस्य नर्तकी नित्या परंब्रह्मपूजिता । ब्रह्मणः सैव गायत्री सच्चिदानन्दरूपिणी ॥
तद् भ्रमावर्त्तवातोऽयं प्राणात्मा नित्यनूतनः । नित्यं तिष्ठतु सानन्दा कुण्डली भवविग्रहे ॥

अति गोप्यं महत् पुण्यं त्रिकोटितीर्थसंयुतम् । सर्वयज्ञमयं देवि! सर्वदानमयं सदा ॥
सर्वज्ञानमयं देवि! परंब्रह्ममयं सदा । कवचं कथयाम्याद्य पार्वति! प्राणवल्लभे ॥
ॐ भूः पातु ॐ पातु मे मूलं चतुर्दल समन्वितम् । ॐ भुवः ॐ पातु मे लिङ्गं षड्दल समन्वितम् ॥१॥
ॐ स्वः ॐ पातु मे कण्ठं साकाशं दलषोडशम् । ॐ तत् ॐ पातु मे रूपं ब्रह्मण्य कारणं परम् ॥२॥
ॐ स ॐ वदनं पातु रसना संयुतं मम । ॐ वि ॐ पातु मे गन्धं सदा शरीरसंयुतम् ॥३॥
ॐ तुः ॐ पातु मे स्पर्शं शरीरस्य च कारणम् । ॐ व ॐ पातु मे शब्दं शब्दविग्रहकारणम् ॥४॥
ॐ रे ॐ पातु मे नित्यं त्वचं शरीर रक्षकम् । ॐ णि ॐ पातु मे अक्षं सर्वतत्वैककारणम् ॥५॥
ॐ यं ॐ पातु मे श्रोत्रं श्रवणस्य च कारणम् । ॐ भ ॐ पातु मे घ्राणं गन्धोपादान कारणम् ॥६॥
ॐ र्गो ॐ पातु मे वाक्यं सभायां शब्दरूपिणी । ॐ दे ॐ पातु मे बाहुयुगलं ब्रह्मकारणम् ॥७॥
ॐ व ॐ पातु मे पादयुगलं ब्रह्मकारणम् । ॐ स्य ॐ पातु मे लिङ्गं सजलं षड्दलैर्युतम् ॥८॥
ॐ धी ॐ पातु मे नित्यं प्रकृतिं शब्दकारणम् । ॐ म ॐ पातु मे नित्यं मनो ब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥९॥
ॐ हि ॐ पातु मे बुद्धिं परब्रह्ममयं सदा । ॐ धि ॐ पातु मे नित्यमहङ्कारं यथा तथा ॥१०॥
ॐ यो ॐ पातु मे नित्यं पृथिवीं पार्थिवं वपुः । ॐ यो ॐ पातु मे नित्यं जलं सर्वत्र सर्वदा ॥११॥
ॐ नः ॐ पातु मे नित्यं तेजः पुञ्जं यथा तथा । ॐ प्र ॐ पातु मे नित्यमनिलं देह कारणम् ॥१२॥
ॐ चो ॐ पातु मे नित्यमाकाशं शशि सन्निभम् । ॐ द ॐ पातु मे जिह्वां जप यज्ञस्य कारणम् ॥१३॥
ॐयात् ॐ पातु मे चित्तं शिवज्ञानमयं सदा । ॐ तत्वानि पातु मे नित्यं गायत्री परदेवता ॥१४॥
ॐ भू र्भुवः स्वः पातु मे नित्यं ब्रह्माणी जठरं क्षुधा । ॐत्वष्टा मे सततं पातु ब्रह्माणी भूर्भुवः स्वरः ॥१५॥

विनियोग :- ॐ अस्याः श्रीगायत्र्याः श्रीपरब्रह्म ऋषिः । ऋग्-यजुः-सामाथर्वांश्छन्दांसि । श्रीगायत्री ब्रह्माणी देवता । धर्मार्थकाम मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

ॐ भू र्भुवः स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

॥ फल श्रुति ॥

काम क्रोधादिकं सर्वस्मरणाद् याति साम्यताम् । इदं कवचमज्ञात्वा गायत्रीं प्रजपेद् यदि ।
लक्षादि जपेनैव न सिद्धिः जायते प्रिये ॥
गायत्री वाचनात् सर्वं स्मरणं सिद्ध्यति ध्रुवम् । पठित्वा कवचं विप्रो गायत्रीं सकृदुच्चरेत् ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो जीवन्मुक्तो भवेद् द्विजः । इदं कवचमज्ञात्वा कवचान्यं पठेत् तु यः ।
सर्वं तस्य वृथा देवि! त्रैलोक्य - मङ्गलादिकम् ॥
गायत्री कवचं यस्य जिह्वायां विद्यते सदा । तदाऽमृतमयी जिह्वा पवित्रा जप पूजने ॥
इदं कवचमज्ञात्वा ब्रह्मविद्यां जपेद् यदि । व्यर्थं भवति चार्वङ्गि! तज्जपं वन रोदनम् ॥
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः । महानि पातकान्येव स्मरणान्नाशमाप्नुयुः ॥

॥ इति श्री मंत्रात्मक गायत्री कवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ गायत्री पञ्जर स्तोत्रम् ॥

नारदजी ने जिस ब्रह्म स्वरूप का दर्शन किया था उसका वर्णन श्लोक १ से ४ तक तक है।

भगवन्तं देवदेवं ब्रह्माणं परमेष्ठिनम् । विधातारं विश्वसृजं पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥१॥
शुद्धस्फटिक संकाशं महेन्द्रशिखरोपमम् । बद्धपिङ्गजटाजूटा तडित्कनककुण्डलम् ॥२॥
शरच्चन्द्राभवदनं स्फुरदिन्दीवरेक्षणम् । हिरणमयं विश्वरूपमुपवीताजिनावृतम् ॥३॥
मौक्तिकाभाक्ष - वलयस्तन्त्रीलय समन्वितः । कर्पूरोद्धूलिततनुः स्त्रष्टुर्नयनवर्द्धनम् ॥४॥
विनयेनोपसङ्गम्य शिरसा प्रणिपत्य च । नारदः परिपप्रच्छ देवर्षिगणमध्यगः ॥५॥

॥ नारद उवाचः ॥

भगवन्देवदेवेश सर्वज्ञ करुणानिधे । श्रोतुमिच्छामि प्रश्नेन भोगमोक्षैकसाधनम् ॥६॥
ऐश्वर्यस्य समग्रस्य फलदं द्वन्द्ववर्जितम् । ब्रह्महत्यादि पापघ्नं पापाद्यरिभयापहम् ॥७॥
यदेकं निष्कलं सूक्ष्मं निरञ्जनमनामयम् । यत्ते प्रियतमं लोके तन्मे ब्रूहि पितर्मम् ॥८॥

॥ ब्रह्मोवाचः ॥

विनियोग एवं ध्यान श्लोक ४२ से ५१ तक है'

शृणु नारद वक्ष्यामि ब्रह्ममूलं सनातनम् । सृष्ट्यादौ मन्मुखे क्षिप्तं देवदेवेन विष्णुना ॥९॥
प्रपञ्चबीजमित्याहुरुत्पत्तिस्थिति हेतुकम् । पुरा मया तु कथितं कश्यपाय सुधीमते ॥१०॥
सावित्रीपञ्जरं नाम रहस्यं निगमत्रये । ऋष्यादिकं च दिग्वर्णं साङ्गावरणकं क्रमात् ॥११॥
वाहनायुध मन्त्रास्त्रं मूर्तिध्यान समन्वितम् । स्तोत्रं शृणु प्रवक्ष्यामि तव स्नेहाश्च नारद ॥१२॥
ब्रह्मनिष्ठाय देयं स्याददेयं यस्य कस्यचित् । आचम्य नियतः पश्चादात्मध्यानपुरः सरम् ॥१३॥
ओमित्यादौ विचिंत्याथ व्योम हेमाब्ज संस्थितम् । धर्मकन्दगतज्ञानमैश्वर्याष्टदलान्वितम् ॥१४॥
वैराग्य कर्णिकासीनां प्रणवग्रहमध्यगाम् । ब्रह्मवेदी समायुक्तां चैतन्यपुरमध्यगाम् ॥१५॥
तत्त्वहसंसमाकीर्णां शब्दपीठे सुसंस्थिताम् । नादबिन्दुकलातीतां गोपुरैरूपशोभिताम् ॥१६॥
विद्याविद्यामृतत्वादि प्रकारैरभि संवृताम् । निगमार्गलसंच्छन्नां निर्गुणद्वारवाटिकाम् ॥१७॥
चतुर्वर्ग फलोपेतां महाकल्प वनैर्वृताम् । सान्द्रानंद सुधासिन्धु निगम द्वारवाटिकाम् ॥१८॥
ध्यानधारण योगादितृणगुल्मलतावृताम् । सदसच्चित्स्वरूपाख्य मृगपक्षिसमाकुलाम् ॥१९॥
विद्याविद्याविचारत्वाल्लोकालोका चलावृताम् । अविकार समाश्लिष्ट निजध्यान गुणावृताम् ॥२०॥
पञ्चीकरण पञ्चोत्थभूततत्व निवेदिताम् । वेदोपनिषदर्थाख्य देवर्षिगण सेविताम् ॥२१॥
इतिहासग्रहगणैः सदारैरभिवन्दिताम् । गाथाप्सरोभिर्यक्षश्च गणकिन्नर सेविताम् ॥२२॥
नारसिंह पुराणाख्यैः पुरुषैः कल्पचारणैः । कृतगानविनोदादि कथालापनतत्पराम् ॥२३॥
तदित्यवाङ्मनोगम्य तेजोरूपधरां पराम् । जगतः प्रसवित्रीं तां सवितुः सृष्टिकारिणीम् ॥२४॥

वरेण्यमित्यन्नमयीं पुरुषार्थफलप्रदाम् । अविद्यावर्णवर्ज्यां च तेजोवद्गर्भसंज्ञिकाम् ॥२५॥
देवस्य सच्चिदानन्दपरब्रह्म रसात्मिकाम् । धीमह्यहं स वै तद्वद् ब्रह्माद्वैतस्वरूपिणीम् ॥२६॥
धियो यो नस्तु सविता प्रचोदयादुपासिताम् । परोसौ सविता साक्षादेनोनिर्हरणाय च ॥२७॥
परोरजस इत्यादि परंब्रह्म सनातनम् । आपोज्योतिरिति द्वाभ्यां पाञ्चभौतिकसंज्ञकम् ॥२८॥
रसोकतं ब्रह्मपदैस्तां नित्यां तपिनीं पराम् । भूर्भुवः सुररित्येतैर्निगमत्व प्रकाशिकाम् ॥२९॥
महर्जनस्तपः सत्यलोकोपरि सुसंस्थिताम् । तादृगस्या विराड्रूपरहस्यं प्रवदाम्यहम् ॥३०॥
व्योमकेशालकाकाशद्यो किरीटविराजिताम् । मेघभ्रुकुटिमाक्रान्तविधि विष्णुशिवार्चिताम् ॥३१॥
गुरुभार्गवकर्णान्तां सोमसूर्याग्निलोचनाम् । इडापिङ्गलसूक्ष्माभ्यां वामनासापुटान्विताम् ॥३२॥
संध्याद्विरोष्टपुटितां लसद्वाग्भूपजिह्विकाम् । सन्ध्यासौद्युमणेः कण्ठलसद्बाहु समन्विताम् ॥३३॥
पर्जन्यहृदयासक्त वसुसुस्तनमण्डलाम् । आकाशोदर वित्रस्तनाभ्यवान्तरदेशिकाम् ॥३४॥
प्रजापत्याख्यजघनां कटीन्द्राणीति संज्ञिकाम् । ऊरूमलयमेरुभ्यां शोभमानाऽसुरद्विषाम् ॥३५॥
जानुनी जह्नुकुशिक वैश्वदेवसदाभुजाम् । अयनद्वयजङ्घाद्य सुराद्यपितृसंज्ञिकाम् ॥३६॥
पदांघ्रिनखरोमाणि भूतलद्रुम लांछिताम् । ग्रहराश्यर्क्षदेवर्षिमूर्तिं च परसंज्ञिकाम् ॥३७॥
तिथिमासर्तु वर्षाख्यसुकेतु निमिषात्मिकाम् । अहोरात्रार्द्धमासाख्यां सूर्यचन्द्रमसात्मिकाम् ॥३८॥
मायाकल्पित वैचित्र्यसंध्याच्छादनसम्वृताम् । ज्वलत्कालानलप्रख्यां तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥३९॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् । सुधामण्डलमध्यस्थां सान्द्रानन्दाऽमृतात्मिकाम् ॥४०॥
वागतीतां मनोरम्यां वरदां वेदमातरम् । चराचरमयीं नित्यां ब्रह्माक्षरसमन्विताम् ॥४१॥
ध्यात्वा स्वात्मनिभेदेन ब्रह्मपञ्जरमारभे । पञ्जरस्य ऋषिश्चाहं छन्दो विकृतिरुच्यते ॥४२॥
देवता च परो हंसः परब्रह्माधिदेवता । प्रणवो बीजशक्तिः स्यादोंकीलकमुदाहृतम् ॥४३॥
तत्तत्वं धीमहि क्षेत्रं धियोऽस्त्रं यत् परं पदम् । मन्त्रमापोज्योतरिति योनिर्हंसः सवेधकम् ॥४४॥
विनियोगस्तु सिद्ध्यर्थं पुरुषार्थचतुष्टये । ततस्तैरङ्गषट्कं स्यात्तैरेव व्यापकत्रयम् ॥४५॥
पूर्वोक्तदेवतां ध्यायेत्साकारगुण संयुताम् । पञ्चवक्त्रां दशभुजां त्रिपञ्चनयनैर्युताम् ॥४६॥
मुक्ताविद्रुमसौवर्णां सितशुभ्रसमाननाम् । वाणीं परां रमां मायां चामरैर्दर्पणैर्युताम् ॥४७॥
षडङ्गदेवतामन्त्रैरूपाद्यवयवात्मिकाम् । मृगेन्द्रवृष पक्षीन्द्रमृगहंसासनस्थिताम् ॥४८॥
ऊर्ध्वेन्दुबद्धमुकुटकिरीट मणिकुण्डलाम् । रत्नताटङ्कमाङ्गल्यपरग्रैवेयनूपुराम् ॥४९॥
अंगुलीयककेयूर कङ्कणौघैरलंकृताम् । दिव्यस्त्रग्वस्त्र संछन्नरविमण्डलमध्यगाम् ॥५०॥
वराभयाब्जयुगलां शङ्खचक्रगदाऽकुशाम् । शुभ्रं कपालं दधतीं वहन्तीमक्षमालिकाम् ॥५१॥
गायत्रीं वरदां देवीं सावित्रीं वेदमातरम् । आदित्यपथगां नित्यां स्मरेद्ब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥५२॥
विचित्रमन्त्रजननीं स्मरेद्विद्यां सरस्वतीम् । त्रिपदाऋषिड्मयी पूर्वामुखी ब्रह्मास्त्रसंज्ञिका ॥५३॥

चतुर्विंशतितत्त्वाख्या पातु प्राचीं दिशं मम। चतुष्पाद यजुर्ब्रह्मदण्डाख्या पातु दक्षिणाम् ॥५४॥
षट्त्रिंशत्तत्त्वयुक्ता सा पातु मे दक्षिणां दिशम्। प्रत्यङ्मुखी पञ्चपदी पञ्चाशत्तत्त्वरूपिणी ॥५५॥
पातु प्रतीचीमनिशं सामब्रह्मशिरोऽङ्किता। सौम्यां ब्रह्मस्वरूपाख्या साथर्वाङ्गिरसात्मिका ॥५६॥
उदीचीं षट्पदा पातु चतुष्षष्टिकलात्मिका। पञ्चाशत्तत्त्वरचिता भवपादाश ताक्षरी ॥५७॥
व्योमाख्या पातु मे चोर्ध्वां दिशं वेदाङ्गसंस्थिता। विद्युन्निभा ब्रह्मसंज्ञा मृगारूढा चतुर्भुजा ॥५८॥
चापेषुचर्मासिधरा पातु मे पावकीं दिशम्। ब्राह्मीकुमारी गायत्री रक्ताङ्गी हंसवाहिनी ॥५९॥
बिभ्रत्कमण्डल्वक्षस्त्रक्स्नुवान्मे पातु नैर्ऋतीम्। चतुर्भुजा वेदमाता शुक्लाङ्गी वृषवाहिनी ॥६०॥
वराभयकपालाक्षस्त्रग्विणी पातु वारुणीम्। श्यामा सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडासना ॥६१॥
शङ्खार्यब्जाभयकरा पातु शैवीं दिशं मम। चतुर्भुजा वेदमाता गौराङ्गी सिंहवाहना ॥६२॥
वराभयाब्जयुगुलैर्भुजैः पात्वपरां दिशम्। तत्तत्पार्श्वस्थिता स्वस्ववाहनायुधभूषणा ॥६३॥
स्वस्वदिक्षुस्थिताः पान्तु ग्रहशक्त्यङ्गदेवताः। मन्त्राधिदेवता रूपा मुद्राधिष्ठानदेवताः ॥६४॥
व्यापकत्वेन पात्वस्मानापादतलमस्तकम्। तत्पदं मे शिरः पातु भालं मे सवितुः पदम् ॥६५॥
वरेण्यं मे दृशौ पातु श्रुती भर्गः सदा मम। घ्राणं देवस्य मे पातु पातु धीमहि मे मुखम् ॥६६॥
जिह्वां मम धियः पातु कण्ठे मे पातु यः पदम्। नः पदं पातु मे स्कंधौ भुजौ पातु प्रचोदयात् ॥६७॥
करौ मे च पराः पातु पादौ मे रजसोऽवतु। ॐ मे नाभिं सदा पातु कटिं मे पातु मे सदा ॥६८॥
ओमापः सक्थिनी पातु गुह्यं ज्योतिः सदा मम। ऊरू मम रसः पातु जानुनी अमृतं मम ॥६९॥
जंघे ब्रह्मपदं पातु गुल्फौ भूः पातु मे सदा। पादौ मम भुवः पातु सुवः पात्वखिलं वपुः ॥७०॥
रोमाणि मे महः पातु रोमकं पातु मे जनः। प्राणश्च धातुस्तत्त्वानि तदीशः पातु मे तपः ॥७१॥
सत्यं पातु ममायूंषि हंसो वृद्धिं च पातु मे। शुचिषत्पातु मे शुक्रं वसु पातु श्रियं मम ॥७२॥
मतिं पात्वन्तरिक्षे सद्धोता दानं च पातु मे। वेदिषत्पातु मे विद्यामतिथिः पातु मे गृहम् ॥७३॥
धर्मं दुरोणसत्पातु नृषत्पातु सुतान्मम। वरसत्पातु मे मायामृतसत्पातु मे सुतान् ॥७४॥
व्योमसत्पातु मे बन्धून् भ्रातृनब्जश्च पातु मे। पशून्मे पातु गोजाश्च ऋतजाः पातु मे भुवम् ॥७५॥
सर्वं मे अद्रिजा पातु यानं मे पातवृतं सदा। अनुक्तमथ यत्स्थानं शरीरन्तर्बहिश्च यत् ॥७६॥
तत्सर्वं पातु मे नित्यं हंसः सोऽहमहर्निशम्।

॥ माहात्म्यः ॥

इदं तु कथितं सम्यङ् मया ते ब्रह्मपञ्जरम् ॥७७॥
सन्ध्ययोः प्रत्यहं भक्त्या जपकाले विशेषतः। धारयेद् द्विजवर्यो यः श्रावयेद्वा समाहितः ॥७८॥
स विष्णुः स शिवः सोहं सोऽक्षरः स विराट् स्वराट्। शताक्षरात्मकं देव्यानामाष्टाविंशतिः शतम् ॥७९॥
शृणु वक्ष्यामि तत्सर्वमतिगुह्यं सनातनम्। भूतिदा भुवना वाणी वसुधा सुमना मही ॥८०॥
हरिणी जननी नन्दा सविसर्गा तपस्विनी। पयस्विनी सती त्यागा चैन्दवी सत्यवीरसा ॥८१॥

विश्वा तुर्या परा रेच्या निर्घृणी यमिनी भवा । गोवेद्या च जरिष्ठा च स्कन्दिनी धीर्मतिर्हिमा ॥८२॥
भीषणा योगिनी यक्षी नदी प्रज्ञा च चोदिनी । धनिनी यामिनी पद्मा रोहिणी रमणी ऋषिः ॥८३॥
सेनामुखी सामयी च वकुला दोषवर्जिता । सर्वकामदुघा सोमोद्भावाहङ्कारवर्जिता ॥८४॥
द्विपदा च चतुष्पदा त्रिपदा चैकषट्पदा । अष्टापदी नवपदी सा सहस्राक्षरात्मिका ॥८५॥
इदं यः परमं गुह्यं सावित्रीमन्त्रपञ्जरम् । नामाष्टविंशतिशतं शृणुयाच्छावयेत्पठेत् ॥८६॥
मर्त्यानाममृतत्वाय भीतानामभयाय च । मोक्षाय च मुमुक्षूणां श्रीकामानां श्रिये सदा ॥८७॥
विजयाय युयुत्सूनां व्याधितानामरोगकृत् । वश्याय वश्यकामानां विद्यायैवेदकामिनाम् ॥८८॥
द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पापशान्तये । वादिनां वादिविजये कवीनां कविताप्रदम् ॥८९॥
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गायनाममिच्छताम् । पशुभ्यः पशुकामानां पुत्रेभ्यः पुत्रकांक्षिणाम् ॥९०॥
क्लेशिनां शोकशान्त्यर्थं नृणां शत्रुभयाय च । राजवश्याय द्रष्टव्यं पञ्जरं नृपसेविनाम् ॥९१॥
भक्त्यर्थं विष्णुभक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मनि । नायकं विधिसृष्टानां शान्तये भवति ध्रुवम् ॥९२॥
निः स्पृहाणां नृणां मुक्तिः शाश्वती भवति ध्रुवम् । जप्यं त्रिवर्णसंयुक्तं गृहस्थेन विशेषतः ॥९३॥
मुनीनां ज्ञानसिद्ध्यर्थं यतीनां मोक्षसिद्धये । उद्यन्तं चन्द्रकिरणमुपस्थाय कृताञ्जलिः ॥९४॥
कानने वा स्वभवने तिष्ठञ्छुद्धो जपेदिदम् । सर्वान्कामानवाप्नोति तथैव शिवसन्निधौ ॥९५॥
मम प्रीतिकरं दिव्यं विष्णुभक्तिविवर्द्धनम् । ज्वरार्त्तानां कुशाग्रेण मार्जयेत्कुष्ठरोगिणाम् ॥९६॥
अङ्गमङ्गं यथालिङ्गं कवचेन तु साधकः । मण्डलेन विशुद्ध्येत् सर्वरोगैनै संशयः ॥९७॥
मृतप्रजा च या नारी जन्मवन्ध्या तथैव च । कन्यादिवन्ध्या या नारी तासामङ्गं प्रमार्जयेत् ॥९८॥
पुत्रानरोगिणस्तास्तु लभन्ते दीर्घजीविनः । तास्ताः संवत्सरादर्वाग्गर्भन्तु दधिरे पुनः ॥९९॥
पतिविद्वेषिणी या स्त्री अङ्गं तस्याः प्रमार्जयेत् । तमेव भजते सा स्त्री पतिं कामवश नयेत् ॥१००॥
अश्वत्थे राजवश्यार्थं बिल्वमूले स्वरूपभाक् । पलाशमूले विद्यार्थी तेजसाभिमुखो रवौ ॥१०१॥
कन्यार्थी चण्डिकागेहे जपेच्छत्रुभयाय च । श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्याने श्रीवशी भवेत् ॥१०२॥
आरोग्यार्थे स्वगेहे च मोक्षार्थी शैलमस्तके । सर्वकामो विष्णुगेहे मोक्षार्थी यत्र कुत्रचित् ॥१०३॥
जपारम्भे तु हृदयं जपान्ते कवचं पठेत् । किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः ।
यं यं चिन्तयते नित्यं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥१०४॥

॥ इति श्रीमद्वसिष्ठ संहितायां ब्रह्मनारदसंवादे श्रीमद्गायत्रीपञ्जरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री गायत्री हृदयम् ॥

प्राप्त गायत्री हृदय स्तोत्र हमें अधूरा लगता है। गायत्री उपनिषद् के अन्त फलश्रुति में उपनिषद् को ही हृदय बताया है, अत: उपनिषद् का पाठ अवश्य करें।

विनियोग:- **ॐ अस्य श्रीगायत्री हृदयस्य श्री नारायण ऋषि:। गायत्री छन्द:। श्रीपरमेश्वरी देवता। श्रीपरमेश्वरी देवता प्रीत्यर्थे पाठे विनियोग:।**

ऋष्यादि न्यास:- **श्री नारायण ऋषये नम: शिरसि। गायत्री छन्दसे नम: मुखे। श्रीपरमेश्वरी देवतायै नम: हृदि श्रीपरमेश्वरी देवता प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।**

अंगन्यास :- नाम के बाद **नम:** बोलकर उच्चारण कर न्यास करें। यथा - **द्यौ: नम: मूर्ध्नि। अश्विनौ नम: दन्तपंक्तौ। उभयो: सन्ध्यो: नम: ओष्ठौ। अग्नि: नम: मुखे। सरस्वती जिह्वायां। वृहस्पति: ग्रीवायां। अष्टौ वसव: स्तनयो:। मरुत: बाह्वो:। पर्जन्य: हृदये। आकाश: उदरे। अन्तरिक्षं नाभौ। इन्द्राग्नी कट्यो:। विज्ञान घन: प्रजापति: जघने। कैलास-मलय: ऊरौ। विश्वेदेवा: जान्वो:। कौशिक: जङ्घयो:। गुह्य: अयने। पितर: ऊरौ। पृथिवी पादयो:। वनस्पतय: अंगुलिषु। ऋषय: रोमसु। मुहूर्तानि नखेषु। ग्रहा: अस्थिषु। ऋतव: असृङ् -मांसयो:। सम्वत्सरा: निमिषे। आदित्यश्चन्द्रमा: अहोरात्रयो:। प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्त्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये।**

ॐ तत्-सवितुर्वरेण्याय नम:। ॐ तत्-पूर्वा जयाय नम:। तत्-प्रातरादित्य-प्रतिष्ठायै नम:। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातरधीयानोऽपापो भवति। सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। अवाच्य-वचनात् पूतो भवति। अभक्ष्य भक्षणात् पूतो भवति। अभोज्य भोजनात् पूतो भवति। अचोष्य चोषणात् पूतो भवति। असाध्य साधनात् पूतो भवति। दुष्प्रतिग्रह शतसहस्त्रात् पूतो भवति। सर्वप्रतिग्रहात् पूतो भवति। पंक्ति दूषणात् पूतो भवति। अनृतवचनात् पूतो भवति। अथाब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति।

अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्त्रेणेष्टं भवति। षष्टिशत-सहस्त्र-गायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयेत्। तस्य सिद्धिर्भवति। य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मण: प्रात: शुचि: सर्वपापै: प्रमुच्यते। इति ब्रह्मलोके महीयते। इत्याह भगवान् श्रीनारायण:।

॥ इति श्री गायत्री हृदय स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ गायत्री स्तवराज: ॥

इस स्तव में श्लोक ४, ५, ८, १०, ११, २५, २६ में अन्य मंत्रों के प्रयोग हैं।

विनियोग:- **ॐ अस्य श्री गायत्री स्तवराज मन्त्रस्य श्रीविश्वामित्र: ऋषि:। सकल जननी चतुष्पदा गायत्री परमात्मा देवता। सर्वोत्कृष्टं परम धाम तत्-सवितुर्वरेण्यं बीजं। भर्गो देवस्य धीमहि शक्ति:। धियो यो न: प्रचोदयात् कीलकं। ॐ भू: ॐ भुव ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यं ॐ तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो न: प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं व्यापकं। मम धर्मार्थ काममोक्षार्थे जपे विनियोग:।**

ऋष्यादि न्यासः– श्रीविश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि। सकल जननी चतुष्पदा गायत्री परमात्मा देवतायै नमः हृदि। सर्वोत्कृष्टं परम धाम तत्–सवितुर्वरेण्यं बीजाय नमः लिङ्गे। भर्गो देवस्य धीमहि शक्तये नमः नाभौ। धियो यो नः प्रचोदयात् कीलकाय नमः पादयोः। ॐ भूः ॐ भुव ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्–सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं व्यापकाय नमः सर्वाङ्गे। मम धर्मार्थ काममोक्षार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ध्यानम्॥

गायत्रीं वेदधात्रीं शतमखफलदां वेदशास्त्रैक वेद्याम्।
चिच्छक्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपदां श्रीपदं वै करोति।
सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनु पदान्ते वरेण्यं शरण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयादित्यौर्वतेजः ॥१॥
साम्राज्यवीजं प्रणव त्रिपादं सव्यापसव्यं प्रजपेत् सहस्रकं।
संपूर्ण कामं प्रणवं विभूतिं तथा भवेद् वाक्यविचित्रवाणी ॥२॥
शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं सौभाग्यभोगोत्सवमस्तु नित्यं।
प्रकाशविद्या त्रयशास्त्रसर्वं भजेन्महामन्त्रफलं प्रिये! वै ॥३॥

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डंशिरसि शिखिमहद्ब्रह्मशीर्षं नमोऽन्तकं। सूक्तंपारायणोक्तं प्रणवमथ महावाक्य सिद्धान्तमूलम्।
सूर्यं त्रीणि द्वितीयं प्रथममनु महावेद वेदान्तसूक्तं। नित्यं स्मृत्यनुसारं नियमित चरितं मूलमंत्रं नमोऽन्तम् ॥४॥
अस्त्रं शस्त्रहतं त्वघोरसहितं दण्डेन वाजीहतम्, आदित्यादिहतं शिरोऽन्तसहितं पापक्षयार्थं परम्।
तुर्यान्त्यादि विलोममंत्र पठनं बीजं शिखान्तोर्ध्वकम्, नित्यं कालनियम्य विप्रविदुषां किं दुष्कृतं भूसुरान् ॥५॥
नित्यं मुक्तिप्रदं नियम्य पवनं निर्घोषशक्तित्रयम्, सम्यग्ज्ञान गुरूपदेश विधिवद् देवीं शिखां तामपि।
षष्ट्यैकोत्तर संख्ययानुगत सौषुम्णादि मार्गत्रयीम्, ध्यायेन्नित्य समस्त वेदजननीं देवीं त्रिसंध्यामयीम् ॥६॥
गायत्रीं सकलागमाथ विदुषां सौरस्य बीजेश्वरीम्, सर्वाम्नाय समस्तमंत्रजननीं सर्वज्ञधामेश्वरीम्।
ब्रह्मादि त्रयसम्पुटार्थ करणीं संसार पारायणीम्, सन्ध्यां सर्वसमानतन्त्र परया ब्रह्मानु–सन्धायिनीम् ॥७॥
एक द्वि त्रि चतुः समानगणना वर्णाष्टकं पादयोः, पादादा प्रणवादि मन्त्रपठने मन्त्रत्रयी सम्पुटाम्।
सन्ध्यायां द्विपदं पठेत् परतरं सायं तुरीयं युतम्, नित्यानित्यमनन्त कोटिफलदं प्रातं नमस्कुर्महे ॥८॥
ओजोऽसीति सहोस्यवो बलमसि भ्राजोऽसि तेजस्विनी, वर्चस्वी सवितानि सोमममृतं रूपं धरं धीमहि।
देवानां द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्तार्थिनां शान्तिनां, ओमित्येकमृचं पठन्ति यमिनो यं यं स्मरेत् प्राप्नुयात् ॥९॥
ओमित्येकमज–स्वरूपममलं तत्सप्तधा भादितम्, तारं तन्त्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं गर्भितम्।
आपो ज्योति रसोऽमृतं जनमहः सत्यं तपः स्वर्भुवः, भूयो भूय नमामि भूर्भुवः स्वरोमेतैर्महामंत्रकम् ॥१०॥
आदौ बिन्दुमनुस्मरन् परतरे बालात्रिवर्णोच्चरन्, व्याहृत्यादि सबिन्दुयुक्त त्रिपदातारत्रयं तुर्यकम्।
आरोहादवरोहतः क्रमगता श्रीकुण्डलीत्थं स्थिता, देवी मानस पङ्कजे त्रिनयना पञ्चानना पातु माम् ॥११॥
सर्वे सर्ववशे समस्त समये सत्यात्मिके सात्विके, सावित्री सहितात्मके शशियुते सांख्यायन गोत्रजे!।
सन्ध्या त्रीण्युपकल्प्य संग्रहविधिः सन्ध्याभिधा नामके, गायत्री प्रणवादि मन्त्रगुरुणा सम्प्राप्य तस्मै नमः ॥१२॥

क्षेमं दिव्यमनोरथाः परतरे चेतः समाधीयताम् , ज्ञानं नित्य वरेण्यमेतदमलं देवस्य भर्गो धियन् ।
मोक्ष श्रीर्विजयार्थिनोऽथ सवितुः श्रेष्ठं विधिस्तत्पदम् , प्रज्ञामेध प्रचोदयात् प्रतिदिनं यो नः पदं पातु माम् ॥१३॥

सत्यं तत्सवितुर्वरेण्य विरलं विश्वादि मायात्मकम् , सर्वाद्यं प्रतिपाद पादरमया तारं तथा मन्मथम् ।
तुर्याऽन्य त्रितयं द्वितीयमपरं संयोग सव्याहृतिम् , सर्वाम्नाय मनोन्मनी मनसिजा ध्यायामि देवीं पराम् ॥१४॥

आदौ गायत्रि मन्त्रं गुरुकृत नियमं धर्मकर्मानुकूलम्,
सर्वाद्यं सारभूतं सकल मनुमयं देवतानामगम्यम् ।
देवानां पूर्वदेव द्विजकुल मुनिभिः सिद्ध विद्याधराद्यैः,
को वा वक्तुं समर्थस्तव मनु महिमा बीज राजादिमूलं ॥१५॥

गायत्रीं त्रिपदां त्रिबीजसहितां त्रिव्याहृतिं त्रैपदाम्, त्रिब्रह्म त्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीं तां पराम् ।
सांख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयनां मातृत्रयीं तत्पराम्, त्रैलोक्य त्रिदश त्रिकोटि सहितां सन्ध्यां त्रयीं तां नुमः ॥१६॥

ओमित्येतत् त्रिमात्रा त्रिभुवन करणं त्रिस्वरं वह्निरूपं, त्रीणि त्रीणि त्रिपादं त्रिगुणगुणमयं त्रैपुरान्तं त्रिसूक्तं ।
तत्वानां पूर्वशक्तिं द्वितयगुरुपदं पीठयन्त्रात्मकं तम, तस्मादेतत् त्रिपादं त्रिपदमनुसरं त्राहि मां भो नमस्ते ॥१७॥

स्वस्ति श्रद्धाति मेधा मधुमति मधुरः संशयः प्रज्ञकान्तिः, विद्या बुद्धिर्बलं श्रीरतनुधनपतिः सौम्यवाक्यानुवृत्तिः ।
मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुपतिमधुरा पूर्णविद्याप्रपूर्णम्, प्राप्तं प्रत्यूषचिन्त्यं प्रणवपरवशात् प्राणिनां नित्यकर्मम् ॥१८॥

पञ्चाशद्वर्णमध्ये प्रणवपरयुते मन्त्रमाद्यं नमोऽन्तम्, सर्वं सव्यापसाव्यं शतगुणमभितो वर्ममष्टोत्तरं ते ।
एवं नित्यं प्रजप्तं त्रिभुवनसहितं तुर्यमन्त्रं त्रिपादम्, ज्ञानं विज्ञानगम्यं गगनसुसदृशं ध्यायते यः स मुक्तः ॥१९॥

आदिक्षान्तसविन्दुयुक्तसहितं मेरुं क्षकारात्मकम्, व्यस्ताव्यस्तसमस्तवर्ग सहितं पूर्णं शताष्टोत्तरम् ।
गायत्रीं जपतां त्रिकाल सहितां नित्यं सनैमित्तिकम्, चैवं जाप्यफलं शिवेन कथितं सद्भोगमोक्ष प्रदम् ॥२०॥

ससव्याहृतिसप्ततारविकृतिः सत्यं वरेण्यं धृतिः, सर्वं तत्सवितुश्च धीमहि महाभर्गस्य देवं भजे ।
धाम्नो धामधर्माधिधारण महान् धीमत्पदं ध्यायते, ॐ तत्सर्वमनुप्रपूर्ण दशकं पादत्रयं केवलम् ॥२१॥

विज्ञानं विलसद्विवेकवचसः प्रज्ञानुसन्धारिणीम्, श्रद्धामेध्ययशः शिरः सुमनसः स्वस्तिश्रियः स्वां सदा ।
आयुष्यं धनधान्यलक्ष्मिमतुलां देवीं कटाक्षं परम् । तत्काले सकलार्थसाधनमहान् मुक्तिर्महत्वं पदम् ॥२२॥

पृथ्वी गन्धार्चनायां नभसि कुसुमता वायुर्धूप प्रकर्षो, वह्निर्दीपप्रकाशो जलममृतमयं नित्यसङ्कल्पपूजा ।
एतत् सर्वं निवेद्य सुख वसति हृदि सर्वदा दम्पतीनाम्, त्वं सर्वज्ञ! शिवं कुरुष्व ममता नाहं त्वया ज्ञेयसि ॥२३॥

सौम्यं सौभाग्यहे तु सकलसुखकरं सर्वसौख्यं समस्तं, सत्यं सद्भोगनित्यं सुखजनसुहृदं सुन्दरं श्रीसमस्तं ।
सौमङ्गल्यं समग्रं सकलशुभकरं स्वस्तिवाचं समस्तं, सर्वाद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं प्राप्तमध्या समस्तं ॥२४॥

गायत्री पदपञ्च पञ्चप्रणवद्वन्द्वं त्रिधा सम्पुटम्, सृष्ट्यादि क्रममन्त्रजाप्य दशकं देवी पदं क्षुत्त्रयम् ।
मन्त्रादिस्थितकेषु सम्पुटमिदं श्रीमातृकावेष्टितं, वर्णान्त्यादिविलोममन्त्र जपनं संहारसम्मोहनम् ॥२५॥

भूराद्यं भूर्भुव स्वस्त्रिपदपदयुतं त्र्यक्षमाद्यन्तयोज्यम्, सृष्टिस्थित्यन्तकार्यं क्रमशिखि सकलं सर्वमन्त्रं प्रशस्तम् ।
सर्वाङ्गं मातृकाणां मनुमयवपुषं मन्त्रयोगं प्रयुक्तं, संहारं क्षादिवर्णं वसुशतगणनं मन्त्रराजं नमामि ॥२६॥

वैश्वामित्र मुदाहृतं हितकरं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्, स्तोत्राणां परमं प्रभातसमये पारायणं नित्यशः ।
वेदानां विधिवादमन्त्रसकलं सिद्धिप्रदं सम्पदाम्, सम्प्राप्नोत्यपरत्र सर्वसुखदामायुष्यमारोग्यताम् ॥२७॥

॥ श्रीविश्वामित्र कृतो श्रीगायत्रीस्तवराजः शुभं भूयात् ॥

॥ श्री गायत्री उपनिषद् ॥

नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छति- त्वं ब्रूहि भगवन्! गायत्र्या उत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि।

ब्रह्मोवाच-प्रणवेन व्याहृतयः प्रवर्तन्ते। तमसस्तु परं ज्योतिः कः पुरुषः स्वयम्भूर्विष्णुरिति हताः स्वांगुल्याः मथयेत्। मथ्यमानात् फेनो भवति। फेनाद् बुद्बुदो भवति। बुद्बुदादण्डो भवति। अण्डवानात्मा भवति। आत्मनः आकाशो भवति। आकाशाद् वायुर्भवति। वायोरग्निर्भवति। अग्नेरोङ्कारो भवति।

ॐकाराद् व्याहृतिर्भवति। व्याहृत्या गायत्री भवति। गायत्र्याः सावित्री भवति। सावित्र्याः सरस्वती भवति। सरस्वत्या वेदा भवन्ति। वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति। ब्रह्मणो लोकाः भवन्ति। तस्माल्लोकाः प्रवर्तन्ते चत्वारो वेदाः साङ्गाः सोपनिषदः सेतिहासास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्तन्ते।

यथाग्निर्देवानां, ब्राह्मणो मनुष्याणां, मेरुः शिखरिणां, गंगा नदीनां वसन्त ऋतूनां, ब्रह्मा प्रजापतीनामेवासौ मुख्यः गायत्र्या गायत्री छन्दो भवति।

किं भूः? किं भुवः? किं स्वः? किं महः? किं जनः? किं तपः? किं सत्यं? किं तत्? किं सवितुः? किं वरेण्यं? किं भर्गः? किं देवस्य? किं धीमहि? किं धियः? किं यः ? किं नः? किं प्रचोदयात्?

भूरिति भूर्लोकः। भुवरित्यन्तरिक्ष लोकः। स्वरिति स्वर्लोकः। महरिति महर्लोकः। जन इति जनो लोकः। तप इति तपोलोकः। सत्यमिति सत्यलोकः।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति त्रैलोक्यम्। तदसौ तेजः, यत् तेजसोऽग्निर्देवता। सवितुरित्यादित्यस्य। वरेण्यमित्यन्न मन्नमेव प्रजापतिः। भर्ग इत्यापो वै भर्गः, एतास्तत्-सर्वा देवताः। देवस्येन्द्रो वै देवयद् दिवं तदिन्द्रस्तस्मात् सर्वकृत् पुरुषो नाम विष्णुः। धीमहि किमध्यात्मं तत् परमं पदमित्यध्यात्मं। येन इति पृथिवी वै यो नः प्रचोदयात्।

काम इमाँल्लोकान् प्रच्यवन् यो नृशंस्योस्तोष्यस्तत् परमो धर्मः। इत्येषा गायत्री किं गोत्रा? कत्यक्षरा? कतिपदा? कतिकुक्षिः? कतिशीर्षाणि?

सांख्यायन सगोत्रा गायत्री। चतुर्विंशत्यक्षरा। त्रिपदा। षटकुक्षिः सावित्री।

कऽस्यास्त्रयः पादा भवन्ति? काऽस्याः कुक्षिः? कानि पञ्चशीर्षाणि?

ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति, यजुर्वेदो द्वितीयः, सामवेदस्तृतीयः। पूर्वा दिक् प्रथमा कुक्षिर्भवति, दक्षिणा द्वितीया, पश्चिमा तृतीया, उदीची चतुर्थी, ऊर्ध्वा पञ्चमी, अधरा षष्ठी कुक्षिः। व्याकरणमस्याः प्रथमं शीर्षं भवति, शिक्षा द्वितीयं, कल्पस्तृतीयं, निरुक्तं चतुर्थं, ज्योतिषमयनं पञ्चमं। किं लक्षणं? किमु चेष्टितं? किमुदाहृतं? किमक्षरं?

दैवत्यं लक्षणं। मीमांसा अथर्ववेदो विचेष्टितं। छन्दोविधिरित्युदाहृतं। को वर्णः? कः स्वरः।

श्वेतो वर्णः। षट्स्वराणि। इमान्यक्षराणि दैवतानि भवन्ति। पूर्वा भवति गायत्री, मध्यमा सावित्री, पश्चिमा सन्ध्या सरस्वती।

प्रातः संध्या रक्ता, रक्तपद्मासनास्था, रक्ताम्बरधरा, रक्तवर्णा, रक्तगंधानुलेपना, चतुर्मुखा, अष्टभुजा, द्विनेत्रा, दण्डाक्षमाला कमण्डलु स्त्रुकस्त्रुव धारिणी, सर्वाभरण भूषिता, कौमारी ब्राह्मी हंस वाहिनी, ऋग्वेद सहिता ब्रह्म दैवत्या, त्रिपदा गायत्री, षटकुक्षिः, पञ्चशीर्षा, अग्निमुखा, रुद्र शिव विष्णु हृदया, ब्रह्मकवचा, सांख्यायन

सगोत्रा, भूर्लोक व्यापिनी, अग्निस्तत्वम्, उदात्तानुदात्तस्वरित स्वर मकारः आत्मज्ञाने विनियोगः।

इत्येषा गायत्री मध्याह्न संध्या श्वेता, श्वेत पद्मासनस्था, श्वेताम्बरधरा, श्वेतगन्धानुलेपना पञ्चमुखी, दशभुजा, त्रिनेत्रा, शूलाक्षमाला कमण्डलुकपालधारिणी, सर्वाभरणभूषिता सावित्री युवती माहेश्वरी, वृषभवाहिनी, यजुर्वेदसहिता, रुद्रदैवत्या त्रिपदा सावित्री, षट्कुक्षिः, पञ्चशीर्षा, अग्निमुखा, रुद्रशिखा, ब्रह्मकवचा, काश्यप सगोत्रा स्वर्लोकव्यापिनी, सूर्यस्तत्वं, उदात्तानुदात्त-स्वरितमकारः, कृष्णवर्णो मोक्षज्ञाने विनियोगः।

इत्येषा सरस्वती रक्ता गायत्री, श्वेता सावित्री, कृष्णवर्णा सरस्वती, प्रणवो नित्य युक्तश्च व्याहृतिषु च सप्तसु सर्वेषामेव पापानां सङ्करे समुपस्थिते। दशशतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी महत्। प्रह्लादोऽत्रिर्वशिष्ठश्च शुकः कण्वः पराशरः। विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान्। याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपो निधिः। गौतमो मुद्गलः श्रेष्ठो वेदव्यासश्च लोमशः। अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो माण्डुकस्तथा। दुर्वासास्तपसा श्रेष्ठो नारद कश्यपस्तथा। उक्तात्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठान्यास पूर्विकाः।

गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेव च। त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाति जगती मता। शक्करी सति पूर्वास्यादष्ट्यत्यष्टी तथैव च। धृतिश्चाति धृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिराकृतिः। विकृतिः संकृतिश्चैव तथाति कृतिरुत्कृतिः। इत्येताश्छन्दसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि साम्प्रतम्। भूरिति छन्दो भुवरिति छन्दः स्वरितिच्छन्दो भूर्भुवः स्वरोमिति दैवी गायत्री। इत्येतानिच्छन्दांसि प्रथममाग्नेयं, द्वितीयं प्राजापत्यं, तृतीयं सौम्यं, चतुर्थमैशानं, पञ्चममादित्यं, षष्ठं बार्हस्पत्यं, सप्तमं पितृदैवत्यं, अष्टमं भगदैवत्यं नवममार्यम्णं, दशमं सावित्रं, एकादशं त्वाष्ट्रं, द्वादशं पौष्णं, त्रयोदशमैन्द्राग्नं, चतुर्दशं वायव्यं, पञ्चदशं वामदैवत्यं, षोडशं मैत्रावरुणं, सप्तदशं भ्रातृव्यमष्टदशं, वैश्वदेव्यं, एकोनविंशं वैष्णवं, विंशं वासवं, एकविंशं रौद्रं, द्वाविंशमाश्विनं, त्रयोविंशं चतुर्विंशं ब्राह्मं, दीर्घान् स्वरेण संयुक्तान् विन्दुनाद समन्वितान्।

व्यापकान् विन्यसेत् पश्चाद् दश पंक्त्याक्षराणि च। द्रुवुंपुस इति प्रत्यक्ष बीजानि।

प्रह्लादिनी प्रभा सत्या विश्वा भद्रा विलासिनी। प्रभावती जया कान्ता शान्ता पद्मा सरस्वती। विद्रुमस्फटिकाकारं पद्मराग समप्रभम्। इन्द्रनीलमणि प्रख्यं मौक्तिकं कुंकुम प्रभम्। अजनाभं च गाङ्गेयं वैदूर्यं चन्द्रसन्निभम्। हारिद्रं कृष्णदुग्धाभं रविकान्तिसमं भवम्। शुकपिच्छ समाकारं क्रमेण परिकल्पयेत्।

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च। गन्धो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च। घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक् छोत्रं च तथापरं। उपस्थपायु पादादि पाणिर्वागपि च क्रमात्। मनो बुद्धिरहङ्कारमव्यक्तं च यथा क्रमम्। सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। एकमुखं द्विमुखं च त्रिमुखं च चतुर्मुखं। पञ्चमुखं षणमुखं चाधोमुखं चैव व्यापकं। आञ्जलिकं ततः प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशं। शकटं यमपाशं च ग्रंथितं सम्मुखोन्मुखं। प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकं। सहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लव तथा। एता मुद्राश्चतुर्विंशद् गायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः।

ॐ मूर्ध्नि सङ्घाते ब्रह्मा, विष्णुर्ललाटे, रुद्रो भ्रूमध्ये, चक्षुषोश्चन्द्रादित्यौ, कर्णयोः शुक्र-बृहस्पति, नासिके वायुदैवत्यं, प्रभातं दोषा उभे सन्ध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती, ग्रीवा स्वाध्यायास्तनयोर्वसवः, बाह्वोर्मरुतः, हृदयं पर्जन्यं, आकाशमपरं नाभिरन्तरिक्षं, कटिरिन्द्रियाणि, जघनं प्राजापत्यं, कैलास मलयौ ऊरू, विश्वेदेवा जानुभ्यां, जान्वोः कुशिकौ, जङ्घयोरयन द्वयं, सुराः पितरः पादौ, पृथिवी वनस्पतिः गुल्फौ रोमाणि, मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतुमासा ऋतवः, सन्ध्याकाल त्रयमाच्छादनं सम्वत्सरो निमिषः। अहोरात्रा-वादित्य चन्द्रमसौ सहस्र परमां देवीं शतमध्यां दशापरां। सहस्रनेत्रां देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये।

तत्-सवितुर्वरदाय नमः। तत्-प्रातरादित्याय नमः। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। तत्-सायं-प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति।

य इदं गायत्री हृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्, चत्वारो वेदा अधीता भवति, सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति, सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति, सर्वप्रति प्रत्यूहात् पूतो भवति, अलेह्य लेहात् पूतो भवति, अचोष्य-चोषात् पूतो भवति, सुरापानात् पूतो भवति, सुवर्णस्तेयात् पूतो भवति, पंक्तिभेदनात् पूतो भवति, पतित सम्भाषणात् पूतो भवति, अनृत वचनात् पूतो भवति, गुरुतल्प गमनात् पूतो भवति, अगम्या गमनात् पूतो भवति, वृषली गमनात् पूतो भवति, ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति, भ्रूणहत्यायाः पूतो भवति, वीरहत्यायाः पूतो भवति, अ-ब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवति।

अनेन हृदयाधीतेन क्रतु शतेनेष्टं भवति, षष्टिसहस्त्रं गायत्रीपा भवन्ति। अष्टब्राह्मणान् ग्राहयेत् अर्थसिद्धिर्भवति। य इदं गायत्री हृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्। सर्वं पापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते।

॥ इति श्री गायत्री उपनिषद् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीगायत्री अष्टोत्तर सहस्त्रनाम स्तोत्रम्॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीगायत्री अष्टोत्तर सहस्त्रनाम स्तोत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीदेवी गायत्री देवता। हलो बीजानि। स्वराः शक्तयः। सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीदेवी गायत्र्यै नमः हृदि। हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यः नमः पादयोः। सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगायः नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः - आं, ईं, ऊं, ऐं, औं, अः मातृकाक्षरोंः से हृदयादिन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

रक्त श्वेत हिरण्य नील धवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलाम्,
रक्तां रक्त नवस्त्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम्।
गायत्रीं कमलासनां करतलव्यानद्ध कुण्डाम्बुजाम्,
पद्माक्षीं च वरस्त्रजं च दधतीं हंसाधिरूढां भजे ॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

भगवन्! सर्वधर्मज्ञ! सर्वशास्त्र विशारद! श्रुतिस्मृति पुराणानां रहस्यं त्वन्मुखाच्छ्रुतम् ॥१॥
सर्वपापहरं देव! येन विद्या प्रवर्तते। केन वा ब्रह्मविज्ञानं किं नु वा मोक्ष साधनम् ॥२॥
ब्राह्मणानां गतिः केन केन वा मृत्युनाशनम्। ऐहिकामुष्मिक फलं केन वा पद्मलोचन ॥३॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण सर्वं निखिलमादितः।

॥ नारायण उवाच ॥

साधु साधु महाप्राज्ञ! सम्यक् पृष्टं त्वयानघ ॥४॥
शृणु वक्ष्यामि! यत्नेन गायत्र्यष्ट सहस्त्रकम्। नाम्नां शुभानां दिव्यानां सर्वपाप विनाशनम् ॥५॥

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

अचिन्त्य लक्षणाव्यक्ताप्यर्थ मातृमहेश्वरी। अमृतार्णव मध्यस्थाप्यजिता चापराजिता ॥१॥
अणिमादि गुणाधाराप्यर्कमण्डल संस्थिता। अजराजापराधर्मा अक्षसूत्र धराधरा ॥२॥

अकारादि क्षकारान्ताप्यरि षड्वर्ग भेदिनी । अञ्जनाद्रि प्रतीकाशाप्यञ्जनाद्रि निवासिनी ॥३॥
अदितिश्चाजपाविद्याप्यरविन्द निभेक्षणा । अन्तर्बहिः स्थिताविद्या ध्वंसिनी चान्तरात्मिका ॥४॥
अजा चाजमुखावासाप्यरविन्द निभानना । अर्धमात्रार्थ दानज्ञाप्यरि - मण्डलमर्दिनी ॥५॥
असुरघ्नी ह्यमावास्याप्यलक्ष्मी घ्न्यन्त्यजार्चिता । आदिलक्ष्मीश्चादि शक्तिराकृतिश्चायतानना ॥६॥
आदित्य पदवीचाराप्यादित्य परिसेविता । आचार्याऽऽवर्तनाऽऽचाराप्यादि मूर्ति निवासिनी ॥७॥
आग्नेयी चामरी चाद्या चाराध्या चासनस्थिता । आधार-निलयाऽऽधारा चाकाशान्त निवासिनी ॥८॥
आद्याक्षर समायुक्ता चान्तराकाश रूपिणी । आदित्य मण्डलगता चान्तरध्वान्त नाशिनी ॥९॥
इन्दिरा चेष्टदा चेष्टा चेन्दीवर निभेक्षणा । इरावती चेन्द्रपदा चेन्द्राणी चेन्दुरूपिणी ॥१०॥
इक्षुकोदण्डसंयुक्ता चेषुसन्धानकारिणी । इन्द्रनील समाकारा चेडा पिङ्गलरूपिणी ॥११॥
इन्द्राक्षी चेश्वरी देवी चेहा त्रयविवर्जिता । उमा चोषा ह्युडुनिभा उर्वारुक फलानना ॥१२॥
उडुप्रभा चोडुमती ह्युडुपा ह्युडुमध्यगा । ऊर्ध्वं चाप्यूर्ध्वकेशी चाप्यूर्ध्वाधो गतिभेदिनी ॥१३॥
ऊर्ध्वबाहुप्रिया चोर्मिमाला वाग्ग्रंथदामिनी । ऋतं चर्षिर्ऋतुमती ऋषिदेव नमस्कृता ॥१४॥
ऋग्वेदा ऋणहर्त्री च ऋषिमण्डल चारिणी । ऋद्धिदा ऋजु मार्गस्था ऋजुधर्मा ऋतुप्रदा ॥१५॥
ऋग्वेदनिलया ऋज्वी लुप्तधर्म प्रवर्तिनी । लूतारिव सम्भूता लूतादि विषहारिणी ॥१६॥
एकाक्षरा चैकमात्रा चैका चैकैक निष्ठिता । ऐन्द्री ह्यैरावतारूढा चैहिकामुष्मिकप्रदा ॥१७॥
ओंकारा ह्योषधी चोता चोतप्रोत निवासिनी । और्वा ह्यौषध - सम्पन्ना औपासन फलप्रदा ॥१८॥
अण्डमध्यस्थिता देवी चा:कार मनुरूपिणी । कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी ॥१९॥
कमला कामिनी कान्ता कामदा कालकण्ठिनी । करिकुम्भस्तनभरा करवीर सुवासिनी ॥२०॥
कल्याणी कुण्डलवती कुरुक्षेत्र - निवासिनी । कुरुविन्द -दलाकारा कुण्डली कुमुदालया ॥२१॥
कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी । कमनीयगुणा कान्तिः कलाधारा कुमुद्वती ॥२२॥
कौशिकी कमलाकारा कामचार प्रभञ्जिनी । कौमारी करुणापाङ्गी ककुबन्ता करिप्रिया ॥२३॥
केशरी केशवनुता कदम्ब कुसुमप्रिया । कालिन्दी कालिका काञ्वी कलशोद्भव - संस्तुता ॥२४॥
काममाता क्रतुमती कामरूपा कृपावती । कुम ारी कुण्डनिलया किराती कीरवाहना ॥२५॥
कैकेयी कोकिलालापा केतकी - कुसुमप्रिया । कमण्डलुधरा काली कर्मनिर्मूलकारिणी ॥२६॥
कलहंसगतिः कक्षा कृतकौतुक मंगला । कस्तूरी तिलका कम्प्रा करीन्द्रगमना कुहूः ॥२७॥
कर्पूर लेपना कृष्णा कपिला कुहराश्रया । कूटस्था कुधरा कम्रा कुक्षिस्थाऽखिल विष्टपा ॥२८॥
खड्ग खेटकरा खर्वा खेचरी खगवाहना । खड्वाङ्गधारिणी ख्याता खगराजोपरिस्थिता ॥२९॥
खलघ्नी खण्डितजरा खण्डाख्यान प्रदायिनी । खण्डेन्दुतिलका गंगा गणेशगुह - पूजिता ॥३०॥
गायत्री गोमती गीता गान्धारी गानलोलुपा । गौतमी गामिनी गाधा गन्धर्वाप्सर सेविता ॥३१॥

गोविन्द - चरणाक्रान्ता गुणत्रय विभाविता। गन्धर्वी गह्वरी गोत्रा गिरीशा गहना गमी ॥३२॥
गुहावासा गुणावती गुरुपाप प्रणाशिनी। गुर्वी गुरुवती गुह्या गोप्तव्या गुणदायिनी ॥३३॥
गिरिजा गुह्यमातङ्गी गरुड़ध्वज - वल्लभा। गर्वापहारिणी गोदा गोकुलस्था गदाधरा ॥३४॥
गोकर्ण निलयासक्ता गुह्यमण्डलवर्तिनी। धर्मदा घनदा घण्टा घोर दानव मर्दिनी ॥३५॥
घृणिमन्त्रमयी घोषा घनसम्पात दायिनी। घण्टारवप्रिया घ्राणा घृणिसन्तुष्ट कारिणी ॥३६॥
घनारि मण्डला घूर्णा घृताची घनवेगिनी। ज्ञानधातुमयी चर्चा चर्चिता चारुहासिनी ॥३७॥
चटुला चण्डिका चित्रा चित्रमाल्यविभूषिता। चतुर्भुजा चारुदन्ता चातुरी चरितप्रदा ॥३८॥
चूलिका चित्रवस्त्रान्ता चन्द्रमः कर्णकुण्डला। चन्द्रहासा चारुदात्री चकोरी चन्द्रहासिनी ॥३९॥
चन्द्रिका चन्द्रधात्री च चौरीचौरा च चण्डिका। चञ्चद्-वाग्वादिनी चन्द्रचूडा चोरविनाशिनी ॥४०॥
चारुचन्दन लिप्ताङ्गी चञ्चच्चामर - वीजिता। चारुमध्या चारुगतिश्चन्दिला चन्द्ररूपिणी ॥४१॥
चारुहोमप्रिया चार्वाचरिता चक्रबाहुका। चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रमण्डलदर्पणा ॥४२॥
चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी। चित्स्वरूपा चन्द्रवती चन्द्रमाश्चन्दनप्रिया ॥४३॥
चोदयित्री चिरप्रज्ञा चातका चारुहेतकी। छत्रयाता छत्रधरा छाया छन्दः परिच्छदा ॥४४॥
छायादेवी छिद्रनखा छन्नेन्द्रिय विसर्पिणी। छन्दोऽनुष्टुप् प्रतिष्ठान्ता छिद्रोपद्रवभेदिनी ॥४५॥
छेदा छत्रेश्वरी छिन्ना छुरिका छेदनप्रिया। जननी जन्मरहिता जातवेदा जगन्मयी ॥४६॥
जाह्नवी जटिला जेत्री जरामरणवर्जिता। जम्बूद्वीपवती ज्वाला जयन्ती जलशालिनी ॥४७॥
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जितामृता जगत्प्रिया। जातरूपामयी जिह्वा जानकी जगती जरा ॥४८॥
जनित्री जह्नुतनया जगत्त्रयहितैषिणी। ज्वालामुखी जपवती ज्वरघ्नी जितविष्टया ॥४९॥
जिताक्रान्तमयी ज्वाला जाग्रती ज्वरदेवता। ज्वलन्ती जलदा ज्येष्ठा ज्याघोषास्फोट-दिङ्मुखी ॥५०॥
जम्भिनी जृम्भणा जृम्भा ज्वलन्माणिक्य कुण्डला। झिंझिका झणनिर्घोषा झंझा मारुत योगिनी ॥५१॥
झल्लरी वाद्यकुशला अरूपा अभुजा स्मृता। टङ्कबाणसमायुक्ता टङ्किनी टङ्कभेदिनी ॥५२॥
टङ्कोगण कृताघोषा टङ्कनीय महोरसा। टङ्कारकारिणी देवी ठठशब्दनिनादिनी ॥५३॥
डामरी डाकिनी डिम्भा डुण्डुमारैक निर्जिता। डामरीतन्त्र मार्गस्था डमड्डमरुनादिनी ॥५४॥
डिण्डीरवसहा डिम्भल सत्क्रीडा परायणा। ढुण्ढिविघ्नेश जननी ढक्काहस्ता ढिलिव्रजा ॥५५॥
नित्यज्ञाना निरुपमा निर्गुणा नर्मदानदी। त्रिगुणा त्रिपदा तन्त्री तुलसी तरुणातरुः ॥५६॥
त्रिविक्रम पदाक्रान्ता तुरीयपदगामिनी। तरुणादित्य सङ्काशा तामसी तुहिना तुरा ॥५७॥
त्रिकालज्ञान सम्पन्ना त्रिवेणी च त्रिलोचना। त्रिशक्तिस्त्रिपुरा तुङ्गा तुरङ्गवदना तथा ॥५८॥
तिमिङ्गिलगिला तीव्रा त्रिस्त्रोता तामसादिनी। तन्त्रमन्त्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिविष्टपा ॥५९॥
त्रिसन्ध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था तालप्रतापिनी। ताटङ्किनी तुषाराभा तुहिनाचल वासिनी ॥६०॥

तन्तुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया । तिलहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः ॥६१॥
तारका त्रियुता तन्वी त्रिशंकुपरिवारिता । तलोदरी तिलाभूषा ताटङ्कप्रिय वाहिनी ॥६२॥
त्रिजटा तित्तिरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः । तप्तकांचनसङ्काशा तप्तकांचनभूषणा ॥६३॥
त्रैयम्बका त्रिवर्गा च त्रिकालज्ञानदायिनी । तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुम्बुरु स्तुता ॥६४॥
ताक्ष्र्यस्था त्रिगुणाकारा त्रिभङ्गी तनुवल्लरिः । थात्कारी थारवा थान्ता दोहिनी दीनवत्सला ॥६५॥
दानवान्तकरी दुर्गा दुर्गासुर - निबर्हिणी । देवरीतिर्दिवा रात्रिर्द्रौपदी दुन्दुभिस्वना ॥६६॥
देवयानी दुरावासा दारिद्र्योद्भेदिनी दिवा । दामोदरप्रिया दीप्ता दिग्वासा दिगविमोहिनी ॥६७॥
दण्डकारण्य निलया दण्डिनी देवपूजिता । देववन्द्या दिविषदा द्वेषिणी दानवाकृतिः ॥६८॥
दीनानाथस्तुता दीक्षा दैवतादिस्वरूपिणी । धात्री धनुर्धरा धेनुर्धारिणी धर्मचारिणी ॥६९॥
धुरन्धरा धराधारा धनदा धान्यदोहिनी । धर्मशीला धनाध्यक्षा धनुर्वेद विशारदा ॥७०॥
धृतिर्धन्या धृतपदा धर्मराजप्रिया ध्रुवा । धूमावती धूमकेशी धर्मशास्त्रप्रकाशिनी ॥७१॥
नन्दा नन्दप्रिया निद्रा नृनुता नन्दनात्मिका । नर्मदा नलिनी नीला नीलकण्ठसमाश्रया ॥७२॥
नारायणप्रिया नित्या निर्मला निर्गुणा निधिः । निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरञ्जना ॥७३॥
नादविन्दु कलातीता नादविन्दुकलात्मिका । नृसिंहिनी नगधरा नृपनागविभूषिता ॥७४॥
नरकक्लेश शमिनी नारायणपदोद्भवा । निरवद्या निराकारा नारदप्रियकारिणी ॥७५॥
नानाज्योतिः समाख्याता निधिदा निर्मलात्मिका । नवसूत्रधरा नीतिर्निरुपद्रव कारिणी ॥७६॥
नन्दजा नवरत्नाढ्या नैमिषारण्यवासिनी । नवनीतप्रिया नारी नीलजीमूतनिःस्वना ॥७७॥
निमेषिणी नदीरूपा नीलग्रीवा निशीश्वरी । नामावलिर्निशुम्भघ्नी नागलोकनिवासिनी ॥७८॥
नवजाम्बूनदप्रख्या नागलोकाधिदेवता । नूपुराक्रान्त - चरणा नरचित्त प्रमोदिनी ॥७९॥
निमग्नारक्तनयना निर्घातसम-निस्वना । नन्दनोद्यान निलया निर्व्यूहोपरिचारिणी ॥८०॥
पार्वती परमोदारा परब्रह्मात्मिका परा । पञ्चकोश विनिर्मुक्ता पञ्चपातक नाशिनी ॥८१॥
परचित्तविधानज्ञा पञ्चिका पञ्चरूपिणी । पूर्णिमा परमा प्रीतिः परतेजः - प्रकाशिनी ॥८२॥
पुराणी पौरुषी पुण्या पुण्डरीक - निभेक्षणा । पातालतल - निर्मग्ना प्रीता प्रीतिविवर्धिनी ॥८३॥
पावनी पादसहिता पेशला पवनाशिनी । प्रज्ञापतिः परिश्रान्ता पर्वतस्तनमण्डला ॥८४॥
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसम्भवा । पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी ॥८५॥
पशुपाश - विनिर्मुक्ता पुरन्ध्री पुरवासिनी । पुष्कला पुरुषा पर्वा पारिजातसुमप्रिया ॥८६॥
पवित्रा पवित्राङ्गी पुष्पहास - परायणा । प्रज्ञावतीसुता पौत्री पुत्रपूज्या पयस्विनी ॥८७॥
पट्टिपाशधरा पंक्तिः पितृलोक - प्रदायिनी । पुराणी पुण्यशीला च प्रणतार्ति विनाशिनी ॥८८॥
प्रद्युम्न जननी पुष्टा पितामह परिग्रहा । पुण्डरीक - पुरावासा पुण्डरीक - समानना ॥८९॥
पृथुजङ्घा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी । प्रवालशोभा पिङ्गाक्षी पीतवासाः प्रचापला ॥९०॥

प्रसवा पुष्टिदा पुण्या प्रतिष्ठा प्रणवागतिः। पञ्चवर्णा पञ्चवाणी पञ्चिका पञ्जरस्थिता ॥९१॥
परमाया परज्योतिः परप्रीतिः परागतिः। पराकाष्ठा परेशानी पाविनी पावकद्युतिः ॥९२॥
पुण्यभद्रा परिच्छेद्या पुष्पहासा पृथूदरी। पीताङ्गी पीतवसना पीतशय्या पिशाचिनी ॥९३॥
प्रीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया। पञ्चभक्ष - प्रियाचारा पूतना - प्राणघातिनी ॥९४॥
पुन्नागवन - मध्यस्था पुण्यतीर्थनिषेविता। पञ्चाङ्गी च पराशक्तिः परमाह्लादकारिणी ॥९५॥
पुष्पकाण्डस्थिता पूषा पोषिताखिल विष्टपा। पानप्रिया पञ्चशिखा पन्नगोपरि शायिनी ॥९६॥
पञ्चमात्रात्मिका पृथ्वी पथिका पृथुदोहिनी। पुराणन्यायमीमांसा पाटली पुष्पगंधिनी ॥९७॥
पुण्यप्रजा पारदात्री परमार्गैक गोचरा। प्रवालशोभा पूर्णाशा प्रणवा पल्लवोदरी ॥९८॥
फलिनी फलदा फल्गुः फूत्कारी फलकाकृतिः। फणीन्द्रभोगशयना फणिमण्डलमण्डिता ॥९९॥
बालबाला बहुमता बालातप निभांशुका। बलभद्रप्रिया वन्द्या वडवा बुद्धिसंस्तुता ॥१००॥
बन्दीदेवी बिलवती बडिशघ्नी बलिप्रिया। बान्धवी बोधिता बुद्धिर्बन्धूक कुसुमप्रिया ॥१०१॥
बालभानु प्रभाकारा ब्राह्मी ब्राह्मण देवता। बृहस्पतिस्तुता वृन्दा वृन्दावन विहारिणी ॥१०२॥
बालाकिनी बिलाहारा बिलवासा बहूदका। बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णावतंसिका ॥१०३॥
बहुबाहुयुता बीजरूपिणी बहुरूपिणी। बिन्दुनाद कलातीता बिन्दुनादस्वरूपिणी ॥१०४॥
बद्धगोधांगुलि त्राणा बदर्याश्रमवासिनी। बृन्दारका बृहत्स्कंधा बृहती बाणपातिनी ॥१०५॥
बृन्दाध्यक्षा बहुनुता बनिता बहुविक्रमा। बद्धपद्मासनासीना बिल्वपत्र तलस्थिता ॥१०६॥
बोधिद्रुम निजावासा बडिस्था बिन्दुदर्पणा। बाला बाणासनवती बडवानल वेगिनी ॥१०७॥
ब्रह्माण्ड बहिरन्तःस्था ब्रह्मकङ्कणसूत्रिणी। भवानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी ॥१०८॥
भद्रकाली भुजङ्गाक्षी भारती भारताशया। भैरवी भीषणाकारा भूतिदा भूतिमालिनी ॥१०९॥
भामिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा। भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिता ॥११०॥
भागीरथी भोगवती भवनस्था भिषग्वरा। भाविनी भोगिनी भाषा भवानी भूरिदक्षिणा ॥१११॥
भर्गात्मिका भीमवती - भवबन्ध विमोचिनी। भजनीया भूतधात्री रञ्जिता भुवनेश्वरी ॥११२॥
भुजङ्गवलया भीमा भेरुण्डा भागधेयिनी। माता माया मधुमती मधुजिह्वा मधुप्रिया ॥११३॥
महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचना। मायातीता मधुमती मधुमांसा मधुद्रवा ॥११४॥
मानवी मधुसम्भूता मिथिलापुर - वासिनी। मधुकैटभसंहर्त्री मेदिनी मेघमालिनी ॥११५॥
मन्दोदरी महामाया मैथिली मसृणप्रिया। महालक्ष्मीर्महाकाली महाकन्या महेश्वरी ॥११६॥
माहेन्द्री मेरुतनया मन्दारकुसुमार्चिता। मञ्जु-मञ्जीर-चरणा मोक्षदा मञ्जुभाषिणी ॥११७॥
मधुरद्राविणी मुद्रा मलया मलयान्विता। मेधा मरकतश्यामा मागधी मेनकात्मजा ॥११८॥
महामारी महावीरा महाश्यामा मनुस्तुता। मातृका मिहिराभासा मुकुन्दपदविक्रमा ॥११९॥

मूलाधार स्थिता मुग्धा मणिपूरकवासिनी । मृगाक्षी महिषारूढ़ा महिषासुरमर्दिनी ॥१२०॥
योगासना योगगम्या योगा यौवनकाश्रया । यौवनी युद्धमध्यस्था यमुना युगधारिणी ॥१२१॥
यक्षिणी योगयुक्ता च यक्षराजप्रसूतिनी । यात्रा यानविधानज्ञा यदुवंशसमुद्भवा ॥१२२॥
यकारादि हकारान्ता याजुषी यज्ञरूपिणी । यामिनी योगनिरता यातुधान भयङ्करी ॥१२३॥
रुक्मिणी रमणी रामा रेवती रेणुका रतिः । रौद्री रौद्रप्रियाकारा राममाता रतिप्रिया ॥१२४॥
रोहिणी राज्यदा रेवा रमा राजीवलोचना । राकेशी रूपसम्पन्ना रत्नसिंहासनस्थिता ॥१२५॥
रक्तमाल्याम्बरधरा रक्तगन्धानुलेपना । राजहंस समारूढ़ा रम्भा रक्तबलिप्रिया ॥१२६॥
रमणीय युगाधारा राजिताखिल भूतला । रुरुचर्म परीधाना रथिनी रत्नमालिका ॥१२७॥
रोगेशी रोगशमनी राविणी रोमहर्षिणी । रामचन्द्र पदाक्रान्ता रावणच्छेदकारिणी ॥१२८॥
रत्नवस्त्रपरिच्छन्ना रथस्था रुक्मभूषणा । लज्जाधिदेवता लोला ललिता लिङ्गधारिणी ॥१२९॥
लक्ष्मीर्लोला लुप्तविषा लोकिनी लोकविश्रुता । लज्जालम्बोदरी देवी ललना लोकधारिणी ॥१३०॥
वरदा वन्दिता विद्या वैष्णवी विमलाकृतिः । वाराही विरजा वर्षा वरलक्ष्मीविलासिनी ॥१३१॥
विनता व्योममध्यस्था वारिजासन-संस्थिता । वारुणी वेणु सम्भूता वीतिहोत्रा विरूपिणी ॥१३२॥
वायुमण्डल मध्यस्था विष्णुरूपा विधिप्रिया । विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुन्धरा ॥१३३॥
वामदेवप्रिया वेला वज्रिणी वसुदोहिनी । वेदाक्षर - परीताङ्गी वाजपेयफलप्रदा ॥१३४॥
वासवी वामजननी वैकुण्ठ - निलया वरा । व्यासप्रिया वर्मधरा वाल्मीकि परिसेविता ॥१३५॥
शाकम्भरी शिवा शान्ता शारदा शरणागतिः । शातोदरी शुभाचारा शुम्भासुर - विमर्दिनी ॥१३६॥
शोभावती शिवाकारा शङ्करार्द्धशरीरिणी । शोणा शुभाशया शुभ्रा शिरःसंधान कारिणी ॥१३७॥
शरावती शरानन्दा शरज्ज्योत्स्ना शुभानना । शरभा शूलिनी शुद्धा शबरी शुक्रवाहना ॥१३८॥
श्रीमती श्रीधरानन्दा श्रवणानन्ददायिनी । शर्वाणी शर्वरीवन्द्या षड्भाषा षड्ऋतुप्रिया ॥१३९॥
षडाधारस्थिता देवी षण्मुखप्रियकारिणी । षडङ्गरूप सुमति सुरासुर नमस्कृता ॥१४०॥
सरस्वती सदाधारा सर्वमङ्गलकारिणी । समागानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसम्भवा ॥१४१॥
सर्वावासा सदानन्दा सुस्तनी सागराम्बरा । सर्वैश्वर्यप्रिया सिद्धिः साधुबन्धु - पराक्रमा ॥१४२॥
सप्तर्षि मण्डलगता सोममण्डलवासिनी । सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक वर्जिता ॥१४३॥
सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना सद्गुणा सकलेष्टदा । सरघा सूर्यतनया सुकेशी सोमसंहतिः ॥१४४॥
हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रींकारी हंसवाहिनी । क्षौमवस्त्रपरीताङ्गी क्षीराब्धितनया क्षमा ॥१४५॥
गायत्री चैव सावित्री पार्वती च सरस्वती । वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री पराऽम्बिका ॥१४६॥

॥ फलश्रुति ॥

इति साहस्त्रकम् नाम्ना गायत्र्याश्चैव नारद! पुण्यदं सर्वपापघ्नं महासम्पत्तिदायकम् ॥१॥
एवं नामानि गायत्र्यास्तोषोत्पत्ति कराणि हि। अष्टम्यां च विशेषेण पठितव्यं द्विजैः सह ॥२॥
जपं कृत्वा होमपूजा ध्यानं कृत्वा विशेषतः। यस्मै कस्मै न दातव्यं गायत्र्यास्तु विशेषतः ॥३॥
सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै। भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्च बान्धवेभ्यो न दर्शयेत् ॥४॥
यद्गृहे लिखितं शास्त्रं भयं तस्य न कस्यचित्। चञ्चलाऽपि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति ॥५॥
इदं रहस्यं परम गुह्याद् गुह्यतरं महत्। पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदम् ॥६॥
मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदम्। रोगाद् वै मुच्यते रोगी बद्धो मुच्येत् बन्धनात् ॥७॥
ब्रह्महत्या सुरापानं सुवर्णस्तेयिनो नराः। गुरुतल्पगतो वापि पातकान्मुच्यते सकृत् ॥८॥
असत्प्रतिग्रहाच्चैवाभक्ष्यभक्षाद् विशेषतः। पाखण्डानृत मुख्येभ्यः पठनादेव मुच्यते ॥९॥
इदं रहस्यममलं मयोक्तं पद्मजोद्भव! ब्रह्मसायुज्यदं नृणां सत्यं सत्यं न संशयः ॥१०॥

॥ इति श्रीगायत्री अष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ इति गायत्री तंत्रम् ॥

॥ श्री चक्रपूजार्चने पात्रा-सादनादि प्रयोग:॥

॥ सुधाकुम्भ स्थापनम् ॥

तान्त्रिक यन्त्रार्चन आवरण पूजा से पहले सुधा मांसादि द्रव्यों का शोधन करना जरुरी है। अत: प्रथम सुधा कुंभ का पूजन स्थापन कर सुधा (प्रथम तत्व) का शोधन करें।

अपने वामभाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल बनाकर शङ्खमुद्रा दिखायें। इष्ट मन्त्र के तीन विभाग करें उनको कूट कहते हैं।

जैसे बटुक मंत्र में- **१. ह्रीं बटुकाय २. आपदुद्धारणाय ३. कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।**

त्रिकोण के तीनों कोणों में त्रिपुर सुन्दरी के तीनों कूटों से पूजन करें। त्रिकोण में माया बीज '**ह्रीं**' से पूजन करें।

षट्कोण में अधोमुख एवं उर्ध्वमुख दो त्रिकोण बनते हैं। इनमें मन्त्र के त्रिकूटों से प्रथम बार दक्षिणावर्त से एवं द्वितीय आवृत्ति वामावर्त से करने पर षट्कोणों का पूजन होता है। **पुनः अग्निकोणे हृदयशक्तिं पूजयामि। ईशान्ये शिरः शक्तिं पूजयामि। वायव्ये शिखाशक्तिं पूजयामि। नैर्ऋत्ये कवचशक्तिं पूजयामि। त्रिकोणमध्ये नेत्रशक्तिं पूजयामि। द्वारे अस्त्रशक्तिं पूजयामि।** इस प्रकार षट्कोण का पूजन कर वृत्त की '**अं आं इं ईं.........हं लं क्षं**' इत्यादि मातृकावर्णों से पूजन करें।

चतुरस्र के चारों द्वारों में पूजन करें - पूर्वे - **ओड्यान पीठाय नमः**। दक्षिणे -**जालंधर पीठाय नमः**। पश्चिमे - **पूर्णगिरि पीठाय नमः**। उत्तरे - **कामरूप पीठाय नमः**।

इस प्रकार मण्डल की पूजा करें। '**ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः**' से आधार पात्र का प्रक्षालन कर मण्डल पर रख कर पूजन करें। एवं अग्नि की दश कलाओं का पूजन उस पर करें।

ॐ अर्थप्रद दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। वह्निकलां पूजयेत् - **यं धूम्रार्चिषे नमः, रं उष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिंगिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः।**

तदनन्तर कलश को '**फट्**' मंत्र से धोकर, '**नमः**' से आधार पर स्थापित करें। कलश पात्र में सूर्य की कलाओं का पूजन करें।

ॐ धर्मप्रद द्वादशकलाय अर्कमण्डलकलात्मने नमः, ॐ कं भं तपिन्यै नमः, ॐ खं बं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्नायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः।

कारण अर्थात् सुधा पात्र अलग हो तो उसका भी उपरोक्त विधि से मण्डल बनायें, आधारपात्र स्थापन करें, कलश पूजन करें, उसके बाद सुधा के संस्कार कर फिर '**अं आं.........लं क्षं**' मातृका वर्ण बोलते हुये पात्र में सुधा ड़ालें। अथवा इसी पात्र में सुधा के संस्कार करें।

यथा - **ॐ कामप्रद षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। चन्द्रमा की कलाओं का पूजन करें-**

ॐ अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं पूषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। लृं चन्द्रिकायै नमः। लॄं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः। इसके बाद सुधा के संस्कार करें।

(१) '**ॐ वौषट्**' मन्त्र पढकर देखें (२) ''**फट्**'' मन्त्र से रक्षा करें (३) '**हुँ**' से अवगुण करें(४)'**वषट्**' से शुद्ध करें (५) '**स्वाहा**' से पूजन करें।

सुधा गायत्री का दश बार जप करें।

ॐ सुधा देव्यै च विद्महे कामेश्वर्य्यै च धीमहि। तन्नो रक्ताक्षिः प्रचोदयात्॥

॥सुधायाः शापविमोचनम्॥

एवमेव परंब्रह्म स्थूल सूक्ष्ममयं ध्रुवम्। कवचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
सूर्यमण्डल संभूते वरुणालयसंभवे। आस्यबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥
वेदानां प्रणवोबीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि। तेन सत्येन मे देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु॥

पात्र को आच्छादित करके उपरोक्त मन्त्रों को पढ़ें -

ॐ सां सीं सूं सैं सौं सः शुक्रशाप विमोचिकायै सुरादेव्यै नमः। इति द्वादशा जपेत्॥१॥ **ॐ व्रां व्रीं व्रूं व्रैं व्रौं व्रः ब्रह्मशाप विमोचिकायै सुरादेव्यै नमः।** इति दशधा जपेत्॥२॥ **ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय विमोचय श्रावय श्रावय स्वाहा।** इति दशधा जपेत्॥३॥ **ॐ रां रीं रुं रैं रौं रः रुद्रशापविमोचिकायै सुरादैव्यै नमः।** इति दशधा जपेत्॥४॥ **ॐ ह्रीं क्रीं परमस्वामिनी परमाकाश शून्यवाहिनी चन्द्रसूर्याग्नि भक्षिणि त्वं पात्रं विश विश स्वाहा।** इति घटोपरि दशधा जपेत्॥५॥ **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि। तन्नोऽर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात्।** इति दशधा जपेत्॥६॥

इसके बाद पात्र पर दश दोष निवारण हेतु ''अक्षत्'' फेंके।

दोष निवारण हेतु चाण्डालिनियों के बीजाक्षरों में अलग-अलग तंत्रों में मतभेद है। कहीं ''**ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें**'' है तो कहीं ''**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह त् क्ष् ल् व् फ्रें** '' इत्यादि बीज मन्त्र है। कहीं तपनीय वध चाण्डालिनी की जगह बुध चाण्डालिनी है, निर्दय चाण्डालिनी की जगह निर्दोष चाण्डालिनी का प्रयोग है तो सर्वजन दृष्टि दोष निवारण हेतु - **पशुपाश चाण्डालिनी** का उल्लेख है। (तन्त्रों में अज्ञानी व निंदक को पशु संज्ञा दी गई है)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिक देवताभ्यो हुं फट् स्वाहा ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें यं रं लं आं आस्फालिनी ग्रामचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां संगम स्पर्श चाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें घं ङं लं क्षं दृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लौं ग्लां क्रोधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥५॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥६॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं क्रों घटचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥७॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं तपनीयवधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥८॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं आं क्रों क्लीं निर्दयचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥९॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्त्रूं छं स्त्रौं खेदय खेदय सर्वजन दृष्टिस्पर्श दोषाय हुँ फट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ हंसः शुचिषद्व- सुरंतरिक्षसद्धौता वेदिपदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत-सद्व्योम सदब्जागोजा-ऋतजा अद्रिजा ऋतंबृहत् ॥११॥

इस मन्त्र को ३ बार द्रव्य पर पढ़ें। गंध पुष्पाक्षत छोड़ें तथा दोष रहित इस सुधाद्रव्य के मध्य में **आनन्दभैरव व आनन्दभैरवी** का ध्यान करें।

ॐ सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् । अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥१॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम् । वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् ॥२॥
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम् । पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम् ॥३॥
खडगखेटक पट्टीशं मुद्गरं शूलदण्डधृक् । विचित्र खेटकं मुण्डं वरदाभयधारिणम् ॥४॥
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः ॥५॥

आनन्दभैरव का तीन बार पूजन करें – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरवाय वौषट् । इति मन्त्रेण संपूज्य॥**

तदनन्तर आनन्दभैरवी का ध्यान करें। यथा –

भावयेच्च सुधां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम् । हेमकुंदेंदुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥१॥
अष्टदशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् । प्रहसंतीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥२॥

इतिध्यात्वा। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयीं आनन्दभैरवीं सुधादेव्यै वौषट् ।** इत्यानन्दभैरवीं संपूजयेत्॥

ततः स्थालीमध्ये किंचिद्द्रव्यंगृहीत्वाद्रव्य मध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेन विलिख्य। उर्ध्वरेखायाम् अं आं.......अं अः । दक्षिणरेखायाम् – **कं खं......णं तं।** उत्तररेखायाम् – **थं दं......सं हं।** दक्षिणपार्श्वे – **ॐ लं नमः।** वामपार्श्वे – **ॐ क्षं नमः।** त्रिकोणमध्ये – **ईं (कामकलां) विलिख्य।**

इसके बाद उन दोनों का संयोगीवस्था का ध्यान करें और यह समझें कि उनके दिव्य स्राव से यह द्रव्य अमृतमय हो गया है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्लूं स्त्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा शुक्रादिशापात् सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरिन्ति सिन्धवः। इत्यादि तीन ऋचाओं से पूजन करें। गङ्गादि तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ ह्रीं ॐ जूं सः का २२ बार जप करें। ८ बार मूल मन्त्र का जप करें। सुधामन्त्र से अभिमन्त्रित करें यथा –

पावमानः परानन्द पावमानः परो रसः । पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम् ॥

पश्चात् धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें, मत्स्यमुद्रा से आच्छादन करें। कवच मन्त्र **'हुँ'** से अवगुंठन, अस्त्र से रक्षा, च्छटिका मुद्राभिदर्श, दिग्बंधनं कृत्वा।

कलश का ध्यान करें –

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि महाकुंभ विष्णुनाविधृतः करे॥१॥ त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्ववेदाः समाश्रिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयिप्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥ शिवस्त्वं च घटोऽसि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्याद्या ग्रहाःसर्वे विश्वेदवाः सपैतृकाः॥३॥ त्वयि तिष्ठंति कलशे यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवे॥४॥ त्वदावलोकनमात्रेण भुक्तिमुक्तिफलं महत्। सान्निध्यं कुरु भो कुंभ प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

इसके बाद "**घटसूक्त**" का पाठ कर प्रार्थना करें –

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदे सागरोत्तमे । तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत् कन्यकारूपधारिणीम् ॥१॥

अष्टादशभुजां देवीं रक्तान्तायत-लोचनाम् । आपीनवर्णां स्वर्गाभां बहुरूपां परां सुराम् ॥२॥
सा सर्वे संस्तुताः सर्व देवानामभयंकरि । या सुरा सा रमादेवी यो गंधः स जर्नादनः ॥३॥
यो वर्णः स भवेद् ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः । स्वादे तु संस्थितः सोमः शब्दसंस्थो हुतासनः ॥४॥
इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः । घटो ब्रह्माः रसोविष्णुर्विद्रवो रुद्र एव च ॥५॥
हुंकारः ईश्वरो प्रोक्तो व्योमादेस्तु सदाशिवः । घटमूले स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः ॥६॥
घटकण्ठे नीलकण्ठो घटाग्रे सर्वदेवताः । लध्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिया ॥७॥
सर्वविद्या तु या देवी सुरो देवि नमोऽस्तुते । अनेन घट सूक्तेन द्रव्यशुद्धि प्रजायतेः ॥८॥

इसके बाद कलश की प्राणप्रतिष्ठा करें। हाथ से कलश को आच्छादित करें। **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्रीमद्त्रिपुरसुन्दर्यास्याधार सहितस्य कलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः।**

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्री बटुकभैरव कलशेऽस्मिन् जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्री बटुकभैरव कलशेऽस्मिन् सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्त्वक्-चक्षुर्जिह्वा- श्रोत्र- घ्राण - प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा॥ इति प्राण प्रतिष्ठा॥ गंधादिभिः कलशं संपूजयेत्।

कलश में पाँच रत्नों की पूजा करें - (पूर्वे) **ग्लूं गगन रत्नाय नमः।** (दक्षिणे) **स्लूं स्वर्ग रत्नाय नमः** (पश्चिमे) **प्लूं पाताल रत्नाय नमः।** (उत्तरे) **म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः।** (मध्ये) **न्लूं नागरत्नाय नमः।**

कलश बलिः- रक्तचन्दन सिन्दूर कुंकुम से कलश के पास त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मंडल बनाये। '' **सर्वपथिक देवेभ्यो नमः** '' से गंधार्चन करे। मत्स्य मुद्रा से बलि रखें। बांये हाथ से ३ बार कलश पर घुमावे एवं बलि को बाहर विर्सजित करे।

॥ शुद्धि स्थापन विधिः (द्वितीय तत्त्वं मासं)॥

कुम्भस्य वामतः शुद्धिं संस्थाप्य। अग्नि मण्डलाय नमः। ॐ धर्मप्रद द्वादश कलात्मने शुद्धिपात्राय नमः। कामप्रद षोडश सोमकलात्मने नमः। धेनुमुद्रा दिखावें।

ॐ उद्बुध्यस्व पशो त्वं हि न पशुस्त्वं शिवोऽसि भोः। शिवोकृत्यमिदं पिण्डंयतस्त्वं शिवतां व्रज॥

ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि। तन्नो छागः (मांस) प्रचोदयात्॥ यह पशु गायत्री मंत्र तीन बार कहें।

॥ अथ पात्रासादन प्रयोगः॥

शङ्खस्थापनम् :- कुंभ के समीप त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डल बनाकर **ॐ आधारशक्तये नमः** से पूजन करें। इस पर त्रिपदी स्थापन करें। **ॐ धर्मप्रद दशकलात्मने वह्निमण्ड़लाय नमः** से उसका पूजन करें। शङ्ख का प्रक्षालन करके उस पर रखें एवं **ॐ अर्थप्रद द्वादशकलात्मने सूर्यमण्ड़लाय नमः** से पूजन करें।

तीर्थमण्ड़लों का आवाहन कर शुद्धजल से पूरण कर जल में **ॐ कामप्रद षोड़शकलात्मने सोममण्डलाय नमः** से पूजन करें।

शङ्ख का पूजन करें -

शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्यचाज्ञया। शङ्खे तिष्ठति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥

प्रार्थना करें–

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्न शङ्खः प्रचोदयात् ॥

घण्टास्थापनम् – देव दक्षिणतः घण्टां संस्थाप्यः, नादं कृत्वा, पूजयेत – ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः। ॐ जगद्ध्वने मन्त्रमातः स्वाहा। गरुड मुद्रा दिखावें।

दीपस्थापनम् – देवस्य दक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं स्थापयेत्। सुदर्शन मन्त्र से घृतदीप का पूजन करें। ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः सुदर्शनायास्त्राय फट् स्वाहा। तेलदीप की "ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा"। इस पाशुपत मन्त्र से पूजन करें।

दीपशिखा का स्पर्श करें – **ॐ अघोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टप्राणोपसंहर्त्रे हुं फट स्वाहा।**

"**ॐ मार्तण्ड भैरवाय नमः**" से नमस्कार करें तेज को अपनी आत्मा से समीभूत कर चित्त का शोधन करें।

"**हुं फट् स्वाहा**" से मुख एवं **ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा हृदये** से हृदय पर हाथ रख कर रक्षा करें।

हाथ में अक्षत पुष्प लेवें उन्हें सूंघकर मर्दन करके ईशान दिशा में दूर फेंके –

-ॐ ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः। मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ॥

हस्त प्रक्षालन करें।

विशेषार्घ्यस्थापनम् – अपने एवं श्रीचक्र (देवयन्त्र) के बीच में सुधाकुंभ कलश की पूर्व विधि के समान विशेषार्घ का स्थापन करें।

वामे शङ्ख प्रतिष्ठाय मध्ये चार्घ्यं प्रकल्पयेत्। दक्षिणे प्रोक्षणीपात्र मर्घ्यत्रय विकल्पने। दृष्ट्वार्घ्यपात्रं देवेशि ब्रह्माद्या देवताः सदाः। नृत्यंति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धि ददत्यपि॥

विशेषार्घ में सुधाकुंभ से सुधा का पूरण कर निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें –

ऐं क्लीं सौः ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरस संभवम्। आपूरितं महापात्रं पीयूष रसमावह ॥१॥
ऐं अखण्डैक रसानन्द कलेवर सुधात्मनि। स्वच्छंदस्फुरणा मन्त्रा निधेहिकुलरूपिणि ॥२॥
क्लीं अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञान करे परे। अमृत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तूनि क्लिन्नरूपिणी ॥३॥
सौः तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वाह्येतद स्वरूपिणी। भूत्वा परामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु ॥४॥

देवता के दक्षिण में प्रोक्षणीपात्र रखें। विशेषार्घ के वाम भाग में –

श्रीपात्र ॥१॥ गुरुपात्र ॥२॥ भैरवपात्र ॥३॥ शक्तिपात्र ॥४॥ योगिनीपात्र ॥५॥ भोगपात्र ॥६॥ वीरपात्र ॥७॥ आत्मपात्र ॥८॥ बलिपात्र ॥९॥ की स्थापना करें।

दक्षिण में पाद्य, अर्घ्य, आचमन एवं मधुपर्कादि चार पात्रों की स्थापना करें। अशक्ति में गुरु पात्र, वीरपात्र, आत्मपात्र,

बलिपात्र एवं भोगपात्र की स्थापना करें। तथा पाद्यादि अन्य उपचार हेतु एक पात्र की स्थापना करें।

पात्रों का उपयोग यन्त्रार्चन में अलग-अलग देवों के अर्चन हेतु होता है। श्रीपात्र से प्रधान देवों का, गुरुपात्र से गुरुमण्डल का एवं गुरु के हेतु, भैरवपात्र में अष्टभैरवों का, शक्तिपात्र से प्रधानदेव की शक्तियों का तथा पूजन समय में आपके सहभाग में मैथुन शोधन हेतु अपनी संगिनी शक्ति हेतु, योगिनीपात्र से योगनियों का, भोगपात्र एवं वीरपात्र से यन्त्र के परिधि देवता व इन्द्रादि लोकपालों का तथा आत्मपात्र से स्वयं का तथा बलिपात्र से बलिदेवताओं का तर्पण एवं प्रसाद ग्रहण होता है।

माँसशोधनम् - **ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि। तन्नो माँस प्रचोदयात् ॥** इसका १० बार जप करें।

मीनशोधनम् - **ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

मुद्राशोधनम् - (मुद्रा अर्थात् चर्वण वस्तु नमकीन इत्यादि) **ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनौ धत्तां वर्धेतां पुष्करस्त्रजौ ॥**

ॐ प्लूं ज्लूं ग्लूं स्वाहा। इति मन्त्रेण मांसमीनमुद्राः शोधयेत्।

शक्तिशोधनम् - मैथुनानन्द शोधन हेतु (रेतसः तर्पण हेतु) शक्ति की आवश्यकता है, अतः शक्ति दीक्षित होनी चाहिये अन्यथा उसके बायें कान में १० बार "**ह्रीं**" मन्त्र का जप कर शोधन करें। शक्ति का अर्चन अन्तरयाग पूजन में आता है जिसे चक्रपूजा कहते हैं अतः इसका विधान गुप्त है एवं इसके अधिकारी बिरले ही होते है, कारण शक्ति के अर्चन में बिन्दु का क्षरण नहीं होना चाहिये बिन्दु के क्षरण की अवस्था जब आने लगे तब उस बिन्दु को साधक प्राणायाम द्वारा नाभि मण्डल में खींचता है।

इस प्रकरण हेतु साधक को योग क्रियायें सीखनी चाहिये अन्यथा सुजाक व अन्य बिमारियाँ होने की संभावना रहती है।

चक्रपूजा अन्तर्गत शक्ति व स्वयं के अङ्गों में देवता के यन्त्रावरण देवों के न्यास करें, योनिकवच, योनिस्तोत्र, लिङ्गस्तोत्र द्वारा मातृमुख व पितृमुख का पूजन करें त्रिपुष्कर (योनि) एवं शिवदण्ड (लिङ्ग) की एक दूसरे में समष्टि करें। इसमें बिपरीत रतिक्रिया करने से साधक बिन्दु को नाभिमण्डल तक खींच सकता है।

अशक्त साधक रक्तपुष्प में आनन्दभैरवी तथा श्वेतपुष्प में आनन्दभैरव का पूजन करें। यन्त्रार्चन के बाद श्वेतपुष्प को नीचे रखकर उसके ऊपर रक्तपुष्प को अधोमुख कर दोनों का संयोग अवस्था अर्थात् विपरीत रति का ध्यान करें।

उसके बाद पात्रों से सुधा ग्रहण कर, मांसादि का प्रसाद ग्रहण करें। पात्र ग्रहण करने के भी कई मन्त्र हैं।

शक्तिशोधन हेतु **सामान्य विधान इस प्रकार है-**

ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः, इमां शक्तिं पवित्रीं कुरु कुरु स्वाहा।

"**मम शक्ति कुरु कुरु**" से सामान्य जल से प्रोक्षण करें। उसके कर्ण में अपने इष्ट मन्त्र का जप करें। सुगन्धित द्रव्यों से शक्ति का लेपन करें -

कर्पूरं चैव कस्तूरीमिश्रितं चन्दनं तथा। सर्वाङ्गलेपनं कुर्यात् लक्ष्मीसूक्तेन बुद्धिमान ॥
पर्यङ्कोपरि तां कन्यां चन्दनं विलेपिताम्। ध्रुवा द्यौः इति मन्त्रेण कन्यां दक्षिणतोमुखीम् ॥

उन्मुखीशयनं कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारकः। तस्याः पादौ प्रसार्याऽथ गुप्तेनाऽर्चनमाचरेत् ॥
न्यस्त्वा षोढाद्वयं चैव स्तोत्रं पञ्जरं न्यसेत्। कन्यां चैव न्यसेदेवं तत्तदङ्गानि संस्मरन् ॥
पादं जपपुरं चैव मार्जयेन्मूलविद्यया। गंधद्वारेति मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम् ॥
मूलमन्त्रेण सम्यक् च पुष्पमालां समर्पयेत्। निवेदयेद द्रव्यशुद्धिं तत्रैव जपमाचरेत् ॥

ॐ हं ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं सुरतप्रिये॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ फट् स्वाहा।

ऐं प्लूं ह्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि शुक्रशापं मोचय मोचय अमृतं स्त्रावय स्त्रावय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥
गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं तेऽश्विनौ देवौ आधत्तां पुष्करस्त्रजौ ॥

॥ तिरस्करणीदुर्गा पूजनम् ॥

साधक जब मद्य माँसादि द्रव्यों से पूजन करता है तो निन्दकों द्वारा या अन्य किसी कारण से विघ्न की आशंका रहती है।

विशिष्ट साधक तिरस्करणी दुर्गा को सिद्ध करते हैं जिससे पूजा समय यदि किसी निन्दक या अदीक्षित का प्रवेश हो जाये तो मांसादि द्रव्यों का अन्य व्यञ्जनों में या पूजा सामग्री स्वरूप अन्य द्रव्यों में बदला हुआ रूप दिखाई देवें।

॥ ध्यानम् ॥

नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयाति नीलांशुकभरणमास्य विलेपनाढ्या।
निद्रापुटेन भुवनानि तिरोदधाना खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् ॥

गंधाक्षत से पूजन कर मन्त्र का स्मरण करें।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि सर्व पशुजनमनश्चक्षु स्तिरस्करणीं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ग्लौं तिरस्करणीं सर्वजन वाग्वादिनी सकलपशुजन मनश्चक्षुषी श्रोत्र जिह्वा घ्राण तिरस्करणं कुरु कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

॥ अथ पात्र वन्दना ॥

भैरवी चक्र पूजन में पंच मकार पूजनान्तर देव्यार्चन करें पश्चात् तत्वों को गुरु आज्ञानुसार ग्रहण करें। तंत्र की साधना कठिन है भोग एवं योग का मिश्र योग है। कहा है- **करे माला मुखे हाला, वामे बाला सुकोमला।** प्रथम कारण द्रव्य को पहले शक्ति के अर्पण करे फिर साधक उच्छिष्ट ग्रहण करें। कारण ग्रहण करते समय साधक मूलाधार से कुण्डलिनी को उठावे एवं कण्ठ तक लाएं फिर कारण द्रव्य मैं ग्रहण नहीं कर रहा हुं यह कुण्डलिनी शक्ति ग्रहण कर रही है, ऐसी भावना करें। प्रत्येक पात्र के ग्रहण समय वंदना करे यथा-

प्रथम पात्रवन्दनम् (१) **ॐ श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसच्चन्द्रामृतप्लावितम्, क्षेत्राधीश्वरयोगिनीसुरगणैः सिद्धैः**

समाराधितम् ॥ आनन्दार्णवकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डाऽमृतम्, वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम् ॥१॥ इति स्थूलशरीरं शोधयामि स्वाहा।

(२) द्वितीयं पात्रम्- ॐ हैमं मीनरसावहं दयितया दत्तं च पेयादिभिः किञ्चिच्चञ्चलरक्तपङ्कजदशा तस्यै समावेदितम् ॥ वामे स्वादु विशुद्धिशुद्धिकरणं पाणौ निधायाऽऽत्मके, वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनाऽऽनन्दैकसंवर्धनम् ॥२॥ इति सूक्ष्मशरीरं शोधयामि स्वाहा।

(३) तृतीयं पात्रम्- ॐ सर्वाम्नायकलाकलापकलितं कौतूहलद्योतनम्, चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशम्भुवरुणब्रह्मादिभिः सेवितम् ॥ ध्यातं देवगणैः परं मुनिवरैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा, वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोधक्षमम् ॥३॥ इति कारणशरीरं शोधयामि स्वाहा।

(४) चतुर्थं पात्रम्- ॐ मद्यं मीनरसावहं हरिहरब्रह्मादिभिः पूजितम्, मुद्रामैथुनधर्मकर्मनिरतं क्षाराम्लतिक्ताश्रयम् ॥ आचाराष्टकसिद्धिभैरवकला मांसेन संशोधितम् पायात् पञ्चमकारतत्त्वसहितं पात्रं चतुर्थं नमः ॥४॥ इति महाकारणशरीरं शोधयामि स्वाहा।

(५) पञ्चमं पात्रम्- ॐ आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं महीमण्डलम्, मद्यं सप्तसमुद्रवारि पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः ॥ सोऽहं भैरवमर्चयन् प्रतिदिनं तारागणौ रक्षितम्, आदित्यप्रमुखैः सुरासुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः ॥५॥ इति आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

(६) षष्ठमं पात्रम्- ॐ रुद्र चामरभद्रपीठपरमानन्दोदितं दीपनम्, वामां राज्यमनोरमां शुभकरं सायुज्यसाम्राज्यदम् ॥ नानाव्याधिभवान्धकूपहरणं जन्मान्तरं नाशनम्, श्रीमत्सुन्दरितर्पणं हरिरसं पात्रं च षष्ठं भजे ॥६॥ इति विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

(७) सप्तमं पात्रम्- ॐ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिकार्यपरत श्चैतन्यसाक्षिप्रदम्, बिन्दुर्भास्करवह्निचन्द्रधनुषो ज्योतिः कलां चार्पितम् ॥ ईडापिङ्गलमध्यमाह्निवलया यत्कुण्डलीमध्यगम्, पात्रं सप्तमपूरणेन परमानन्दाधिकं पातु माम् ॥७॥ इति कुलतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

(८) अष्टमं पात्रम्- ॐ मूढाज्ञानकदम्बकाननकठोराग्निस्वरूपां पराम् ज्ञानध्वस्तसमस्तसंशयधिया पूर्णं सुधाधारया ॥ भोगं मोक्षकरं सभावशकरं मूर्ध्नि ज्वलन्तीं पराम्, देवीं वक्षसि संजपन्ननुदिनं पात्रं भजे चाऽष्टमम् ॥८॥ इति मूलतत्वं शोधयामि स्वाहा।

(९) नवमं पात्रम्- ॐ मन्ये ब्रह्ममयं समस्तजगतां सारं महत् शाश्वतम्, दुर्ज्ञेयं भवभोग चञ्चलधियां स्थूलाकृतिं ध्यायताम् ॥ अस्माकं द्रवरूपतां करुणया पात्रं तदेतद् द्रुतम्, तत् पात्रं नवमं पिवेच्च नियतं भुक्तिं च मुक्तिप्रदम् ॥९॥ इति विशेषतत्वं शोधयामि स्वाहा।

(१०) दशमं पात्रम्- ॐ वामे चन्द्रमुखी मुखे च मधुरं पात्रं कराम्भोरुहे, मूर्ध्नि श्रीगुरुचिन्तनं भगवतीध्यानास्पदं मानसे ॥ जिह्वायां जपसाधनं परिणतं कौलक्रमाभ्यासनम्, तत् पात्रं दशमं पिवेच्च परमं भुक्ति च मुक्तिप्रदम् ॥१०॥ इति देवीतत्वं शोधयामि स्वाहा।

(११) एकादशं पात्रम्- ॐ वामां वामकरे, सुधां च अधरे, मन्त्रं जपन् मानसे वीणावेणुरवावयन्त्रविधिवद् गायन्ति पञ्चो रसः क्रीडाकेलिकुतूहलेन रसनालावण्यलीलारसः। प्राणोल्लासविलासपूर्णसमये पात्रं च एकादशम् ॥११॥ इति सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

पात्र वंदना करके कारण ग्रहण करने के बाद साधक **शांति स्तोत्र** का पाठ कर क्रम समापन करे। शक्ति की प्रसन्नता हेतु कुलाङ्गना स्तोत्र पाठ, शक्तिशोधन समय, चक्रपूजा समय अथवा सौभाग्यार्चन समय करे।

॥ शांतिस्तोत्रम् ॥

ॐ नशन्तु प्रेतकूष्माण्डा नश्यतु दूषका नराः। साधकानां शिवाः सन्तु आम्नाय परिपालिनाम् ॥
जयन्ति मातरः सर्वा जयन्ति योगिनीगणाः । जयन्ति सिद्धडाकिन्यो जयन्ति गुरवः सदा ॥
जयन्ति साधकाः सर्वे विशुद्धाः कौलिकाश्च ये । समयाचारसम्पन्ना जयन्ति पूजका नराः ॥
नन्दन्तु अणिमासिद्धाः नन्दन्तु कुलपालकाः। इन्द्राद्या देवताः सर्वान्तृप्यन्तु वास्तुदेवताः ॥
चन्द्रसूर्यादयो देवास्तुष्यन्तु मम भक्तितः। नक्षत्राणि ग्रहा योगाः करुणा राशयस्तथा ॥
सर्वे ते सुखिनो यान्तु सर्वा नद्यश्च पक्षिणः। पशवस्तरवश्चैव पर्वताः कन्दरा गुहाः ॥
ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे शान्ति कुर्वन्तु मे सदा। शुभा मे विदिताः सन्तु मित्रास्तिष्ठन्तु पूजकाः ॥
ये ये पापधियः सुदूषणरता मन्निन्दकाः पूजने। वेदाचारविमार्गनष्टहृदया भ्रष्टाश्च ये साधकाः ॥
दृष्ट्वा चक्रमपूर्वमर्चनविधौ ये कोलिका दूषकाः। ते ते यान्तु विनाशमत्र समये श्रीभैरवस्याऽऽज्ञया ॥
साधकानां च द्वेष्टारः सदैवाम्नायदूषकाः। डाकिनीनां मुखे यान्तु तृप्तास्तत्पिशितैस्तु ताः ॥
शत्रवो नाशमायान्तु मम निन्दाकराश्च ये । द्वेष्टारः साधकानां च ते नश्यन्तु शिवाऽऽज्ञया ॥
ॐ शान्तिरस्तु शिवं चास्तु वासवाग्निप्रसादतः। मरुतां ब्राह्मणैश्चैव वसुरुद्रप्रजापतेः ॥

॥ अथ कुलाङ्गना स्तोत्रम् ॥

कुलाङ्गना स्तोत्र का पाठ शक्ति शोधन समय, चक्रपूजा अथवा सौभाग्यार्चन समय करे।

मातर्देवि नमस्तेऽस्तु ब्रह्मरूपधरेऽनघे । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥१॥
माहेशि वरदे देवि परमानन्दरूपिणि । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥२॥
कौमारि सर्वविघ्नेशे कुमारक्रीडने परे । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥३॥
विष्णुरूपधरे देवि विनतासुतवाहिनि । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥४॥
वाराहि वरदे देवि दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥५॥
शक्ररूपधरे देवि शक्रादिसुरपूजिते । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥६॥
चामुण्डे मुण्डमालासृक् चर्चिते विघ्ननाशिनि। कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥७॥
महालक्ष्मि महोत्साहे क्षोभसन्तापनाशिनि । कृपया हर मे विघ्नं मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥८॥
मितिमातृमये देवि मितिमातृवहिष्कृते । एके बहुविधे देवि विश्वरूपे नमोऽस्तु ते ॥९॥

॥फलश्रुति॥

एतत् स्तोत्रं पठेद्यस्तु कर्मारम्भेषु संयतः। विदग्धां वा समालोक्य तस्यविघ्नं न जायते ॥१॥
कुलीनस्य द्वारदेवाः कथितास्तव पुत्रक। दीक्षाकाले नित्यपूजासमये नार्चयेद्यदि ॥२॥
तस्य पूजाफलं वत्स नीयते यक्षराक्षसैः । यदि व्रीडापरा सा तु भोजने तद्गृहाद्बहिः ॥३॥
स्थितः पठेत् स्मरेत् स्तोत्रं यावत् तृप्तिः प्रजायते । आचम्य मुखवासादि ताम्बूलं च निवेदयेत् ॥४॥
ततो दद्यात् पुनर्माल्यं गन्धं चन्दनपङ्किलम् । विसृज्य प्रदक्षिणीकृत्य वरं प्रार्थ्य सुखी भवेत् ॥५॥
अन्या यदि न गच्छेतु निजकन्यां निजानुजाम्। अग्रजा मातुलानीं वा मातरं तत्सपत्निकाम् ॥६॥
पूर्वाभावे परा पूज्या मदंशा योषितो मतः । सर्वाभावे ह्येकतरा पूजनीया प्रयत्नतः ॥७॥
एकश्चेत् कुलशास्त्रज्ञः पूजार्हस्तत्र भैरव । सर्व एव सुराः पूज्याः सत्यं ब्रह्मशिवादयः ॥८॥
एका चेद्युवती तत्र पूजिता चावलोकिता । सर्वा एव परादेव्यः पूजिताः कुलभैरव ॥९॥

१. शैलपुत्री

२. ब्रह्मचारिणी

१. चन्द्रघण्टा

४. कूष्माण्डा

५. स्कंदमाता

६. कात्यायनी

७. कालरात्री

८. महागौरी

९. सिद्धिदात्री

॥ अथ श्री दुर्गा तंत्रम् ॥

नित्यकर्मविधिः- तांत्रिक संध्यानुसार साधक प्रारम्भ में गुरु व इष्ट का ध्यान करे। पृथ्वी की वंदनाकर अपना जो स्वर चल रहा हो वहीं पैर भूमि पर प्रथम रखे। शौचादि से निवृत्त हो तांत्रिविधि मंत्रों से दातुन, स्नान, तर्पण कर पूजागृह में प्रवेश करे। स्थान पूजा, आसनशुद्धि तत्वशोधन, शरीरशोधन, भूतशुद्धि करे। गुरुगणेश स्मरण करे, दीपपूजा वरुण पूजादि कर, तत्वों का शोधन कर पात्रा सादन कर, गणेश मातृका नवग्रह एवं इष्टदेव का षोड़शोपचार से पूजन करे। मातृका न्यास मूलमंत्र न्यासादि कर मंत्र जप करे, कवच, हृदय शतनाम सहस्रनाम एवं स्तव वंदना करे। नित्य होमादि कर्म करे। कवच एक बार करे तो मंत्र जाप के प्रारंभ में करें। दो बार करे तो पुनः कवच पाठ कर्म समाप्ति समय करें।

॥ दुर्गाभुवनवर्णनम् ॥

॥श्री भैरव उवाच ॥

तंत्रादौ देवि वक्ष्ये ऽहं दुर्गाभुवनमद्भुतम्।

जयं नाम महादिव्यं बहुविस्तारविस्तृतम् । नानारत्न समाकीर्णं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥१७॥
इन्द्रगोपकवर्णं च चन्द्रकोटिमनोहरम् । अप्रमेयमसंख्यैयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥१८॥
इदं दिव्यं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि । तत्रैव वसते दुर्गा नवरूपात्मिका परा ॥१९॥
या देवदेवी वरदा सर्वलोकैकसुन्दरी । या दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्माण्डोदरवर्तिनी ॥२०॥
विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरी । महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायाव तारिता ॥२१॥
योगमाया महामाया सर्वदा परमेश्वरी । तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्यां परमां जपे ॥२२॥
तामद्याहं प्रवक्ष्यामि विद्याचरणदायिनीम् । यां श्रुत्वा स शिवो जातः पञ्चनादात्मकः शिवः ॥२३॥
यदाऽभूद्धरिहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी । साक्षाद्भुवनरूपाऽपि महज्ज्योतिः स्वरूपिणी ॥२४॥
तदा शवहकाले तु ज्योतीरूपे महीश्वरि । शिवः प्रभामण्डलतो निर्गतो ऽचेतनो विभुः ॥२५॥
अश्रृणोन्नादमाधारं जगतां बीजमुत्तमम् । अवमं सारमायां त्वं सृष्टोऽग्रे मनुनायकः ॥२६॥
इति श्रुत्वा परानादं तारमित्युपदीर्यते । शिवो जजाप सहसा बीजं त्रिजगतां शिवे ॥२७॥

तेन मायेति शब्दं स शुश्राव गगना त्ततः। दमं भज महेशान सदानन्दालयं परम् ॥२८॥
बिन्दुनादमयो देवः शिवोऽभूत्परमेश्वरः । ततो नादं स शुश्राव दृष्टिकर्ण विवर्जितम् ॥२९॥
दुर्गां भजेति स शिवः पञ्चनादात्मकोऽभवत् । ततो जप्त्वा पराविद्यामसृजज्जगदम्बिके ॥३०॥
आदौ वायुं शिवः सृष्ट्वा ततः सृष्टिं यथेच्छया । इच्छामात्रं शिवे विश्वं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥३१॥
ससर्ज लवमात्रं स शितिकण्ठः शिवः शिवे । इतीमां गुप्तविद्यां तु लब्ध्वा गुरुपदार्चनात् ॥३२॥

दुर्गापञ्चरत्नेश्वरी विद्यानम्:- दुर्गा की सिद्धि हेतु उसकी ५ शक्तियों का यजन पूजन करने से पूर्ण फल मिलता हैं। दुर्गायाः परमं तत्वं पंचरत्नेश्वरीमयम्। श्री दुर्गा शारिका शारी सुमुखी बगलामुखी ॥ पञ्चरत्नेश्वरीविद्या दुर्गायाः कथितामया। सुदिने देवि दुर्गायाः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ॥ अर्थात् श्री दुर्गा, सरस्वती, शारिका, मातंगी व बगलामुखी की समग्र साधना से पुरश्चरण का फल प्राप्त होता हैं।

॥ भगवती गौरी ॥

चतुरक्षर मंत्रः- ह्रीं भवान्यै नमः मंत्र के **अज ऋषि, छन्द अनुष्टुप्, देवता गौरी हैं।**

बालार्काऽभां त्रिनयनां खड्गखेटवराभयान्। दोर्भिदधानां सिंहस्थां भवानीं भावयेत् सदा॥

एकादशाक्षर मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं सौं ग्लौं गं गौरी गीं स्वाहा।

गौराङ्गीं घृत्पङ्कजां त्रिनयनां श्वेताम्बरां सिंहगां, चन्द्रोद्भासितशेखरां स्मितमुखीं दोर्भ्यां वहन्तीं गदाम् । विष्णिवन्द्राम्बुजयोनि शम्भुत्रिदशैः संपूजितांघ्रिद्वयां, गौरी मानसपङ्कजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे ॥

मंत्र के **अजऋषि, छन्द निचृद्, देवता त्रैलोक्य मोहिनी गौरी हैं।** गौरी मंत्रों का **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः** से अंगन्यास करे।

षोडशाक्षरमंत्रः- ह्रीं गौरि रुद्रदयिते योगेश्वरि हुं फट् स्वाहा। मंत्र के देवता ऋषि चतुरक्षर वाले हैं। हेमाभां बिभ्रतीं दोर्भिदर्पणाञ्जनसाधने। पाशाङ्कुशौ सर्वभूषां तां गौरीं सर्वदा स्मरेत्॥

उनविंशाक्षरमंत्र :- कांक्षितस्त्रीवशङ्करि सुभगेपृथक् पृथक् स्त्री स्वाहा। ऋषि देवता उपरोक्त मंत्रवत्।

सप्तचत्वारिंशाक्षर राजमुखी गौरीः- ॐ राजमुखि राजाधिमुखि वश्यमुखि ह्रीं श्रीं क्लीं देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा। मेरु तन्त्र के अनुसार प्रारंभ में ''ॐ'' है तथा मंत्रकोष के अनुसार ''हस्त्रैं'' हैं।

अष्टचत्वारिंशाक्षर मंत्र :- मेरुतंत्र के अनुसार राजमुखि के पहिले **''हस्त्रैं ॐ''** है तथा मंत्रकोष के अनुसार **''हस्त्रैं व्यरूं''** राजमुखि के पहले लगावे शेष मंत्र पूर्ववत् हैं।

एक षष्ट्यक्षर मंत्र :- ह्रीं नमः ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जयविजये गौरि गांधारि त्रिभुवनवशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सुसु दुदु घे घे वावा ह्रीं स्वाहा।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य अज ऋषि, निचृद् छंदः, श्रीत्रैलोक्यमोहिनी गौरी देवता ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिं सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे सर्वजन वशमानार्थे जपे विनियोग। कहीं कहीं पाठान्तर में जयेविजये हैं।**

अंग न्यास के छः विभाग ह्रीं ..... राजपूजिते ॥१॥ जय....गांधारी ॥२॥ त्रिभुवनवशंकरि ॥३॥ सर्वलोकवशंकरि ॥४॥ सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि ॥५॥ सुसु....स्वाहा॥६॥

गीर्वाण सङ्घार्चित पादपङ्कजारुणप्रभा बाल-शशांङ्कशेखरा ।
रक्ताम्बरालेपनपुष्य युङ्मुदे सृणिं सपाशं दधती शिवाऽस्तु नः ॥

॥ भगवती दुर्गा ॥

एकाक्षर :- भगवती दुर्गा का एकाक्षरी बीजमंत्र "दुं" है। दां दीं दूं दें दौं दः से अङ्गन्यास करे।

॥ अथ अष्टाक्षर मंत्र प्रयोगः॥

भगवती दुर्गा का अष्टाक्षर मंत्र प्रधान हैं।

मंत्रोद्धार :- **मायाद्रि (माया-ह्रीं, अद्रि-द) कर्णविन्द्वाढ्यो (कर्ण-उ, बिन्दुअनुस्वार) भूयोऽसौ सर्गवान भवेत्। (पुन यह वर्ण विसर्ग युक्त :दुः) पञ्चान्तकः (ग) प्रतिष्ठावान (आ) मारुतो (य) भौतिकासनः (ऐ)** इस तरह **ह्रीं दुं दुर्गायै हुआ। इसके बाद " तारादि (ॐ) हृदयान्तो ऽयं (हृदयः नमः) मंत्रोवस्वक्षरात्मकः।** आदि में **ॐ** और अंत में **नमः** लगाने से

यथा मन्त्रः- ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः"।

॥ अष्टाक्षर मन्त्रस्य विधानम् ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीदुर्गाष्टाक्षरमंत्रस्य महेश्वर ऋषिः। श्री दुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता। दुं बीजम्। ह्रीं शक्तिः॥ ॐ कीलकाय नम इति दिग्बंधः। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥१॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिकादेवतायै नमो हृदि ॥३॥ दुं बीजाय नमो नाभौ ॥४॥ ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये ॥५॥ ॐ कीलकाय नम : पादयोः ॥६॥ नमो दिग्बंधः इति सर्वाङ्गे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः।**

करन्यास :- **ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः ।**

हृदयादिन्यास :- **ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॥२॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥६॥** इति हृदयादिषडंगन्यासः।

वर्णन्यास :- **ॐ ॐ नमः शिरसि ॥१॥ ॐ ह्रीं नमो मुखे ॥२॥ ॐ दुं नमो वक्षसि ॥३॥ ॐ गां नमो नाभौ ॥४॥ ॐ यैं नमः पृष्ठे ॥५॥ ॐ नं नमो जान्वोः॥६॥ ॐ मः नमः पादयोः॥७॥** इतिवर्णन्यासः।

तत्त्वन्यास :- **ॐ ॐ आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि॥१॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे॥२॥ ॐ ह्रीं दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदि॥३॥ ॐ गुरुतत्त्वाय नमो नाभौ॥४॥ ॐ ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमः जंघयोः ॥५॥ ॐ दुं शिवशक्तित्त्वाय नमः पादयोः ॥६॥** इति तत्त्वन्यास।

शुद्धमातृकान्यास :- ॐ अँ आँ कँ खँ गँ घँ ङँ इँ ईं हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं उँ ऊँ चँ छँ जँ झँ ञँ ऋँ ॠँ शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ दुं लृँ टँ ठँ डँ ढँ णँ लॄँ शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ गां एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ यैं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ नमः अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति शुद्धमातृकान्यासः। एवं करन्यासं कुर्यात्।

ततः पद्धतिमार्गेण देवीकलामातृका विन्यस्य पूर्वोक्तषडंगं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम्॥

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शंखाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान्।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥

॥ अथ यंत्रपूजनम् ॥

भद्रमंडल पर दुर्गा की नवपीठशक्तियों का अर्चन करे। यंत्र की आवरण पूजा हेतु गंध, पुष्पाक्षत को मिश्रण कर लेवे। प्रत्येक आवरण पूजा के पहले अनुमति हेतु पुष्पांजलि देवे। आवरण देवताओं का पादुकापूजन गंधपुष्पाक्षत से कर पुनः पुष्पांजलि देवे तथा विशेषार्ध से जल छोड़े एवं कहे **पूजितास्तर्पिताः संतु।**

नवपीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा-**ॐ प्रभायै नमः ॥१॥ ॐ मायायै नमः ॥२॥ ॐ जयायै नमः ॥३॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥४॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥५॥ ॐ नंदिन्यै नमः ॥६॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥७॥ ॐ विजयायै नमः ॥८॥ ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥९॥** इति पूजयेत्।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तस्योपरि श्रीचक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तमष्टदलं वृत्तं षडस्त्रं त्रिकोणं बिंद्वात्मकयंत्रमष्टगंधेन विलिख्य-

मंत्र - **''ॐ ह्रीं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्।''** इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञया आवरणपूजां कुर्यात्। तद्यथा-पुष्पांजलिमादाय -

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते ॥१॥

ॐ ह्रीं दुं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीचक्राय नमः। इति पुष्पांजलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारंभेत्।

प्रथमावरणम् :- तद्यथा- भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु- **ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय नमः गणेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ ह्रौं कुमाराय नमः कुमारश्रीपा० ॥२॥ ॐ प्रीं पुष्पदंताय नमः पुष्पदंतश्रीपा० ॥३॥ ॐ वें विकर्तनाय नमः विकर्तनश्रीपा० ॥४॥** इति द्वारपालान् संपूजयेत्। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य **पूजितास्तर्पिताः संतु** इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् ॥१॥

द्वितीयावरणम् :- ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च **ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्री० ॥१॥ ॐ नारायण्यै नमः नारायणीश्री० ॥२॥ ॐ चामुंडायै नमः चामुण्डाश्री० ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः अपराजिताश्री० ॥४॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीश्री० ॥५॥ ॐ कौमार्यै नमः कौमारीश्री० ॥६॥ ॐ वाराह्यै नमः वाराहीश्री० ॥७॥ ॐ नरसिंह्यै नमः। नारसिंहीश्री० ॥८॥**

इत्यष्टौ संपूज्य पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य **''अभीष्टसि०'' ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापूरकाय श्रीचक्राय नमः।** इति

पुष्पांजलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ॥२॥
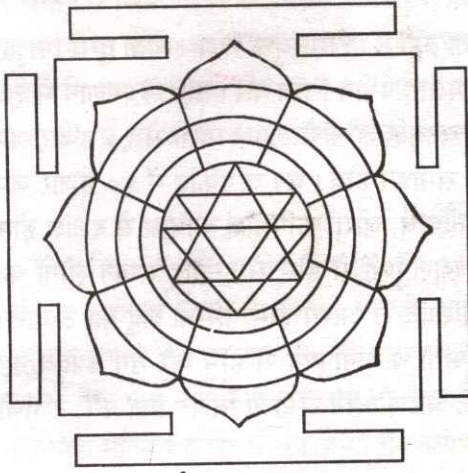
॥ दुर्गा पूजन यन्त्रम् ॥

तृतीयावरणम् :- ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च। **ॐ असितांगभैरवाय नमः असिगांगभैरवश्री० ॥१॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः। रुरुभैरवश्री० ॥२॥ ॐ चंडभैरवाय नमः। चंडभैरवश्री० ॥३॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः। क्रोधभैरवश्री० ॥४॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवश्री० ॥५॥ ॐ कपालभैरवाय नमः। कपालभैरवश्री० ॥६॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः। भीषणभैरवश्री० ॥७॥ ॐ संहारभैरवाय नमः। संहारभैरवश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ भैरवान्पूजयित्वा पर्वोक्तं पुष्पांजलिं च दद्यात्।** इति तृतीयावरणम् ॥३॥

चतुर्थावरणम् :- ततः नवकोणे देव्यग्निकोणमारभ्य वामावर्तेन च। **ॐ शैलपुत्र्यै नमः। शैलपुत्रीश्रीपा० ॥१॥ ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ब्रह्मचारिणीश्रीपा० ॥२॥ ॐ चंद्रघंटायै नमः। चंद्रघंटाश्रीपा० ॥३॥ ॐ कूष्माण्डायै नमः। कूष्मांडाश्री० ॥४॥ ॐ स्कंदमात्रे नमः। स्कंदमातृश्री० ॥५॥ ॐ कात्यायन्यै नमः। कात्यायनीश्रीपा० ॥६॥ ॐ कालरात्र्यै नमः। कालरात्रिश्रीपा० ॥७॥ ॐ महागौर्यै नमः। महागौरीश्री० ॥८॥ ॐ सिद्धिदायै नमः। सिद्धिदाश्रीपा० ॥९॥** इति संपूज्य **अभीष्ट० ॐ ह्रीं दुं अष्टसिद्धिदाय श्रीचक्राय नमः।** इति दूर्वादलांजलिं च दद्यात्। इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

पंचमावरणम् :- ततो वृत्ते (प्रथम वीथिकायाम्) पूर्वादिक्रमेण वामावर्तेन च। **ॐ अंबिकायै नमः अंबिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ अष्टाक्षरायै नमः अष्टाक्षराश्रीपा० ॥२॥ ॐ अष्टभुजायै नमः। अष्टभुजाश्री० ॥३॥ ॐ नीलकंठायै नमः नीलकण्ठाश्रीपा० ॥४॥ ॐ जगदंबिकायै नमः जगदंबिकाश्री० ॥५॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्।** इति पंचमावरणम् ॥५॥

षष्ठावरणम् :- ततो वृत्ते (द्वितीय वीथिकायाम्) प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च। **ॐ शंखाय नमः ॥१॥ ॐ पद्मायनमः ॥२॥ ॐ खड्गाय नमः ॥३॥ ॐ बाणेभ्यो नमः ॥४॥ ॐ धनुषे नमः ॥५॥ ॐ खेटकाय नमः ॥६॥ ॐ शूलाय नमः ॥७॥ ॐ तर्जन्यै नमः ॥८॥** इत्यस्त्राणि संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति षष्ठावरणम् ॥६॥

सप्तमावरणम् :- ततो भूपुरे पूर्वादिकमेण। **ॐ लं इन्द्राय नमः ॥१॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥२॥ ॐ मं यमाय नमः ॥३॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ॥४॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥५॥ ॐ यं वायवे नमः ॥६॥ ॐ कुं कुबेराय नमः ॥७॥ ॐ हं ईशानाय नमः ॥८॥ ॐ आं ब्रह्मणे नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं अनंताय नमः ॥१०॥ तद्बाह्ये इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥२॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥४॥ ॐ पां पाशाय नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः ॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥८॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥९॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥१०॥** इति इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति सप्तमावरणम् ॥७॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य षडंगं कृत्वा पुनर्ध्यात्वा देव्यग्रे मालामादाय जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षं चतुर्लक्षं वा एकलक्षं वा कुर्यात्। तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो

भवति सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्।

॥ प्रयोगविधानम् ॥

आठ लाख जप से मंत्र का पुरश्चरण करे। दशांश होम की आवश्यकता नहीं हैं। त्रिमधुयुक्त तिल अथवा दुग्ध मिश्रित अन्न से आठ हजार होम करे। महाचीनक्रम के अनुसार १ लाख जप करे पश्चात् प्रयोग विधि करें। रात्रि में श्मशान में १० हजार जप कर सर्षप व मांस से दशांश होम करे तो शत्रु का स्तंभन होवे। वटवृक्ष के नीचे रुद्राक्ष माला से १० हजार जप करे तथा घृत कमलपुष्प व कमलगट्टे से हवन करे तो लक्ष्मी प्राप्ति होवे संमोहन होवे। वन व एकांत में १० हजार जप कर वेत की जड से दशांश होम करे शत्रुनाश होवे। १० हजार जपकर, घृतोषधि, जीरा, कपिबीज कपित्थ से दशांश होम से स्त्री आकर्षण होवे। १० हजार जप कर घी, इक्षुरस, गन्ने के टुकडे, लालपुष्पों से होम से इन्द्रादि समान लोगों का वशीकरण होवे। पीपल के नीचे १० हजार जप करे तथा स्त्री के नख केशादि से आज्य होम करे तो शत्रु का उच्चाटन होवे। सुरलता, कनेर, विल्वपेड़ के नीचे १० हजार जप करे कुक्कुट के अंगों व नानापुष्पों से होम करे रोग उपद्रव नष्ट होकर शांति होवे। इस मंत्र के जप होम से अभिषिक्त होने पर तथा भस्मादि धारण करने से राजा विजय प्राप्त करे, गर्भिणी पुत्र प्राप्त करें।

॥ इति दुर्गाष्टाक्षर मंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ नवार्ण महामंत्र प्रयोगः ॥

॥ अथ नवार्ण मंत्र मंत्रोद्धार ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे: ऐं बीजमादीन्दुसमानदीप्तिं ह्रीं सूर्यतेजोद्युतिमद्वितीयम्। क्लीं मूर्तिवैश्वानरतुल्यरूपं तृतीयमानन्त्यसुखाय चिन्त्यम् ॥१॥ चां शुद्धजाम्बूनदकान्ति तुर्यं मुं पञ्चमं रक्ततरं प्रकल्प्य। डां षट्कमुग्रार्तिहरं सुनीलं यैं सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम् ॥२॥ विं पाण्डुरं चाष्टममादिसिद्धं च्चें धूम्रवर्णं नवमं विशालम्। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति नवाक्षरो मन्त्रः। एतानि बीजानि नवात्मकस्य जप्तुः प्रदद्युः सकलार्थसिद्धिम् ॥३॥

अथ मंत्र – **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।**

॥ बहुविध नवार्ण मंत्राः ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लं श्रीं क्लीं नमः ॥१॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥२॥ हूं ऐं ऐं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा (इतिडामरोक्तः) **॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लं श्रीं ह्रीं नमः** (इति दाक्षणात्या) **॥४॥ हूं ऐं ऐं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा ॥** इति सारस्वताः ॥५॥

श्रीं ह्रीं ऐं चामुण्डायै विच्चे ॥६॥ ह्रीं श्रीं ऐं चामुण्डायै विच्चे ॥७॥ ऐं क्लीं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे ॥८॥ क्लीं ह्रीं ऐं चामुण्डायै विच्चे ॥९॥ ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डायै विच्चे ॥१०॥ ह्रीं क्लीं ऐं ॐ चामुण्डायै विच्चे ॥११॥

कामना भेद से नवार्ण मंत्र निम्न प्रकार से भी प्रयोग में आते हैं।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (सरस्वती प्रधान) **॥१२॥ ह्रीं क्लीं ऐं चामुण्डायै विच्चे** (लक्ष्मी प्रधान) **॥१३॥ ह्रीं ऐं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** (माया प्रधान) **॥१४॥ क्लीं ऐं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे** (आकर्षण प्रधान) **॥१५॥ क्लीं ह्रीं ऐं चामुण्डायै विच्चे** (काली प्रधान) **॥१६॥**

नवार्ण महामंत्र- **ऐं ह्रीं महादुर्गे नवाक्षरि नवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डि महामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहत्रि चण्डमुण्ड विनाशिनि रक्तबीजान्तके निशुंभविध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टबाहुके कपाल खट्वाङ्ग शूल शंख खड्ग खेटक धारिणि छिन्नमस्तधारिणि रुधिर मांस भोजिनि समस्तभूतप्रेतादि योग ध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां रक्षय रक्षय मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूं फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥१२॥** इत्यादि अनेकभेदाः।

॥ अथ नवार्ण मंत्र जप विधि ॥

तंत्र क्रिया व कामना भेद से नवार्ण मंत्र १२-१३ तरह के हैं। ***सप्तशती में जो मूल मंत्र है वह नवाक्षर है। ॐ लगाने से दशाक्षरी हो जाता है,*** किन्ही किन्ही आचार्यो के मत से किसी मंत्र में प्रारंभ में प्रणव या नमः लगाने से मंत्र में नपुंसक प्रभाव शुरु हो जाता है, बीजाक्षर प्रधान है। तांत्रिक प्रणव ''**ह्रीं**'' हैं। अतः माला के जप में प्रारंभ में ''ॐ'' लगावे तथा जब माला पूरी हो जावे तो माला के अंत में ''ॐ'' लगाये यही **मंत्र जाग्रति** हैं। दक्षिण भारत में दसपदा, दसवक्त्रा मानकर दशाक्षरी मंत्र जपते हैं। नवार्ण मंत्र षड़ाम्नाय युक्त है, षड़ाम्नाय मंत्र होने से सभी चतुर्विध कार्यों में ग्राह्य है। अगर मंत्र सिद्ध नहीं हो रहा हैं, विपत्ति, परेशानियाँ आती है तो ''**ऐं**'' के सवालाख ''**ह्रीं**'' के सवा लाख ''**क्लीं**'' के सवा लाख ''**चामुण्डायै विच्चे**'' के सवा लाख जप करायें फिर नवार्ण का पुरश्चरण करायें, ऐसा कराने से हमने सफलता देखी है। इसके बाद भी संघर्ष रहता है तो लोम विलोम मंत्र का पुरश्चरण करें, व्याहृतीयों का लोम विलोम संपुट लगाकर जप करें। अन्य कई क्रियायें हैं जो साधना विषय में आती हैं, गुरु गम्य हैं।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्री नवार्ण मंत्रस्य.ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः नन्दा शाकम्भ्री भीमाः शक्त्यः रक्तदंतिकादुर्गा भ्रामर्यो बीजानि, अग्नि वायु सूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुः सामानि स्वरूपाणि, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं श्री महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपा त्रिगुणात्मिका श्री महादुर्गा देव्या प्रीत्यर्थे श्री दुर्गासप्तशती पाठांगत्वेन जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **(१) ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषिभ्यो नमः शिरसि। (२) गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः मुखे। (३) श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि। (४) ऐं बीज सहिताय रक्तदंतिका, दुर्गायै, भ्रामरी देवताभ्यो नमः लिङ्गे (मनसा)। (५) ह्रीं शक्ति सहिताय नन्दा शाकम्भरी भीमा देवताभ्यो नमः नाभौ। (६) क्लीं कीलक सहितायै अग्नि वायु सूर्य तत्वेभ्यो नमः गुह्ये** (लिंग मूल के ऊपर एवं छोटी आंतों के बीच का भाग)। **(७) ऋग्यजु साम स्वरूपिणी श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः पादौ। (८) श्री महादुर्गाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः सर्वाङ्गे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**- मंत्र पढकर शुद्धि करें॥

नवार्ण कराङ्ग न्यासः - '**करन्यास क्रिया** से मूल मंत्र की ऊर्जा को हाथों में स्थापित कर उन्हें ओजमय बनाया जाता हैं। यथा तर्जनी अंगुली इंगित करने के काम आती हैं अतः पहिले तर्जनी से अंगूठे में ऊर्जा स्थापित करते हैं (**ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः**) अंगुष्ठ बुद्धिका केन्द्र है। अतः उस शक्ति का सहस्त्रार से सम्बन्ध बनता है फिर अंगुष्ठ से उर्जा को अन्य अंगुलियो में स्थापित करते हैं। अब संपूर्ण हाथों के शुद्ध होने पर पांचों अंगुलियों से आकर्षिणी शक्ति माध्यम से शरीर के अन्य अंगो में ऊर्जा स्थापित करने के लिये हृदयादि न्यास करते हैं।

अगर हथेली को अंजलि मुद्रा की बजाय विलोम करके शरीर के किसी अंग पर या रोग स्थान पर रखें और उस जगह ध्यान करके मंत्र जाप करें तो ५-१० मिनट में आप महसूस करेंगे कि हथेली एवं उस भाग के मध्य में वायु का स्पंदन हो रहा हैं, विद्युत धारा झन झन करके बह रही है और रोगी को आराम मिलता हैं। **इस क्रिया को जापानी में**

रैकी पद्धति कहते हैं। इसी तरह शरीर के आध्यात्म केन्द्रों को जागृत किया जा सकता है। ऐसा मेरा अनुभव है।

षडङ्गन्यास:- **ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (हृदयायनमः)। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। (शिरसे स्वाहा)। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायै वषट्)। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। (कवचाय हुँ)। ॐ विच्चे कनिष्ठाभ्यां नमः। (नेत्रत्रयाय वौषट्)। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, करतल पृष्ठाभ्यां नमः। (अस्त्रायफट्)।**

अक्षरन्यास:- **ॐ ऐं नमः शिखायां, ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे। ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः दक्षिण नासापुटे। ॐ यैं नमः वामनासापुटे। ॐ विं नमः मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये।**

व्यापकन्यास:- **मूल मंत्र से चार बार सम्मुख दो-दो बार दोनों कुक्षि की ओर कुल आठ बार (दोनों हाथों से, सिर से पैर तक) न्यास करें।**

दिङ्न्यास:- **ॐ ऐं प्राच्यै नमः, ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः, ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः, ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः, ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः, ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।**

॥ ध्यानम् ॥

खड्गं चक्रगदेषुचाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः , शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकां, यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुंकैटभम् ॥१॥
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥
घण्टाशूल हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशुतुल्य प्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

मालापूजन :- माला के गंधाक्षत् करें निम्न मंत्र बोलकर नमस्कार करें।

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः। ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धिदाभव।। ॐ अविघ्नं कुरुमाले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥ ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमंत्रार्थ साधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा। (इसके बाद **''ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे''** इस मंत्र का जप १०८ बार करे)।

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत् प्रसादान्महेश्वरि॥

सप्तशती न्यास :- (सप्तशती पाठक्रमे) **ॐ प्रथममध्यमोत्तर चरित्राणां ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभछंदांसि, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः। नंदा शाकम्भरी भीमाः शक्त्यः, रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि। अग्नि वायुसूर्यास्तत्त्वानि ऋग्यजुः सामवेदा ध्यानानि। सकलकामनासिद्ध्यर्थे श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास :- **ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा। ॐ शङ्खिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा॥ अंगु. नमः। हृदयाय नमः॥ ॐ शूलेन पाहिनो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टा स्वनेन नः पाहि**

चापज्यानिःस्वनेन च॥ तर्ज. नमः। शिरसे स्वा.। ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। ॐ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरेस्यां तथेश्वरि॥ मध्य. नमः। शिखा. वषट्। ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्तिते। यानि चात्त्यर्थं घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ अना. नमः। कवचा. हुँ। ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लव सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ कनि. नमः। नेत्र वौषट्॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गेदेवि नमोऽस्तु ते॥ कर. नमः। अ. फट्।

॥ ध्यानम्॥

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां, कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेविताम्। हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं, बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

॥ अथ दुर्गा नवार्ण यन्त्र आवरण पूजा ॥

॥ यंत्राधार पीठ पूजा॥

हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा- **ॐ पूं पूर्व पीठाय नमः। ॐ पूं पूर्ण पीठाय.। कं कामपीठाय.**। प्राच्यां दिशि- **ॐ उड्डीयान पीठाय.**। आग्रेयां **मातृपीठाय.**। दक्षिणे **जं जालंधर पीठाय.**। नैर्ऋत्ये **कं कोल्हापुर पीठाय.**। पश्चिमे **पूं पूर्णगिरिपीठाय.**। वायव्यां-**सौं सौहारोप पीठाय.**। उत्तरे **कं कोल्हागिरिपीठाय.**। ऐशानां-**कं कामरूप पीठाय नमः।** दक्षिणे- **गुरुवे.। परम गुरुवे.। परात्पर गुरुवे.। परमेष्ठि गुरुवे.। मातृपितृभ्यां.। उपमन्यु, नारद, सनक, व्यासादिभ्यो नमः।** वामे- **गं गणपतये.। दुं दुर्गाये.। सं सरस्वत्यै.। क्षं क्षेत्रपालाय.।**

॥ पीठ देवता स्थापनम् ॥

मं मण्डूकाय नमः। कां कालाग्रिरुद्राय नमः। मूं मूल प्रकृत्यै नमः। आं आधार शक्त्यै नमः। कूं कूर्माय नमः। ॐ अं अनंताय नमः। वं वराहाय नमः। पृं पृथिव्यै.। ॐ अं अमृतार्णवाय.। ॐ आं...क्षं नवरत्नमय मणिद्वीपाय नमः। नं नन्दनोद्यानाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। स्वं स्वर्णप्राकाराय नमः। चिं चिन्तामणि मण्डपाय.। रं रत्न वेदिकायै.। रं रत्नसिंहासनाय नमः। मंडल के चारो कोनों में पूजा करें। **धं धर्मायनमः आग्रये। ज्ञां ज्ञानाय नमः नैर्ऋत्ये। वैं वैराग्याय नमः वायव्ये। ऐं ऐश्वर्याय नमः ईशाने।**

सभी देवताओं के अर्चन व यंत्रार्चन समय उनके पीठ देवताओं की पूजा करने से आधरशक्ति की जागृति होती है एवं सद्य सिद्धि प्राप्त होती है।

इसके बाद मंडल की पूर्वादि चारों दिशाओं में- **अं अधर्माय नमः** पूर्वे। **अं अज्ञानाय नमः** दक्षिणे। अं **अवैराग्य नमः** पश्चिमे। **अं अनैश्वर्याय नमः** उत्तरे। इसके बाद मण्डल के बीच अष्टदल में। **ह्रीं आदिमायायै नमः। विं विद्यायै.। आं. आनन्दकन्द पद्माय.। सं सविन्नालाय नमः। प्रं प्रकृति मय पत्रेभ्यो नमः। विं विकारमय केसरेभ्यो नमः। रं वह्नि मण्डलाय नमः। अं सूर्य मण्डलाय नमः। अं सोंसोममंडलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं मोहात्मने नमः मां मायातत्वाय नमः। विं विद्यातत्वाय.। शं शिवतत्वाय.। ब्रं ब्रह्मणे.। वि. विष्णवे नमः। मं. महेश्वराय नमः।** इसके बाद आग्नेयादि चारों कोनों में **आं आत्मेन नमः आग्नये। अं अंतरात्मने नमः वायव्ये। अं परात्मने नमः नैर्ऋत्ये। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ईशाने।**

॥ अथ नवशक्ति स्थापयेत् ॥

(दुर्गोपसनायाम्)-तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु- **नं नन्दायै.। भगवत्यै.। रक्तदन्तिकायै.। शाकम्भर्यै। दुर्गायै। भीमायै.। कालिकायै.। भ्रामर्यै.। मध्ये शिवदूत्यै.। धं धर्मस्वरुपाय सिंहाय नमः।** (ललितोपसनायाम्) पूर्वादिक्रमेण- **इं**

इच्छायै नमः पूर्वे। ज्ञां ज्ञानायै. आग्नये किं क्रियायै. दक्षिणे। कां कामिन्यै. नैर्ऋत्ये। कां कामदायै नमः पश्चिमे। रं रत्यै नमः। रं रतिप्रियायै. उत्तरे। नं नन्दायै नमः ईशाने। मध्ये मं मनोन्मयै नमः ऐं परायै अपरायै हसौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः।

तंत्र में आवरण पूजा का विशेष महत्व है, इसके पूजन से यज्ञ का फल मिलता है, समस्त तीर्थों के पूजन का फल मिलता है अतः आवरण पूजा अवश्य करें चाहे समय कम हो तो अन्य क्रम से करें।

इसमें पाँच क्रम एक साथ होते हैं **(१) सम्बोधन (आवाहन ध्यान) (२) पूजन (३) नमस्कार (४) तर्पण (५) स्वाहाकार।**

अतः प्रत्येक देवता के नाम के बाद **'ध्यायामि पूजयामि, नमः, तर्पयामि स्वाहा'** बोलते हुये पूजन तर्पण होता है। अतः पूजयामि उच्चारण के बाद गंध, अक्षत्, पुष्प छोड़ें एवं तर्पण के लिये तर्पण पात्र से जल डालें।

अतः पूजन की तैयारी के लिये अक्षत् व खुले पुष्पों को गंध से कुमकुम से अर्चित कर एकत्रित कर एक पात्र में रख लें। सात्विक पूजा में तर्पण या तो पंचामृत से करें या एक पात्र में जल ड़ालें उसमें सुपारी, लौंग, जीरा, हींग, हल्दी, कस्तूरी, गंध गेरें तथा उसमें थोड़ा पंचामृत ड़ाल देवें।

तामसी पूजा में तर्पण - सुरा व पंच मकार द्रव्यों से करे। सामान्य पूजा में एक ही पात्र से तर्पण करे। विशेष पूजा में वीरपात्र, योगिनीपात्र, गुरुपात्र, भोगपात्र, शक्तिपात्र, बलिपात्र की अलग से स्थापना करें उन्हें द्रव्यो से पूरित करें।

विधि - **श्री महालक्ष्मीं पादुकाम् ध्यायामि, पूजयामि** (गंध, पुष्प, अक्षत् छोड़ें), **नमः** (नमस्कार) **तर्पयामि** (तर्पण पात्र से तर्पण) **स्वाहा** (मानसिक हवन)। इस तरह सभी आवरण देवताओं की नामावलि के बाद **पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** कहें।

कहीं कहीं **पादुकां ध्यायामि पूजयामि नमः स्वाहा** उच्चारित करते हैं। समयाभाव में पूजयामि तर्पयामि उच्चारण करें, तथा गंधाक्षत् पुष्प छोड़कर तर्पण करते है। यंत्र पर तर्पण करे तो उसे थाली में रखें या यंत्र को मंडल पर रहने देवें पूजन तर्पण किसी अन्य पात्र में करें। (यंत्र को थाली में रखें तो यंत्र पर करें।)

इसे एक व्यक्ति भी कर सकता है और दो व्यक्ति साथ बैठकर कर सकते है। श्री चक्रार्चन में समुदाय में पूजन होता है।

आवरण - यंत्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल व चतुस्त्र, चतुर्विंशतिदल, ६४ दल आदि कई आवरण होते हैं। प्रत्येक खण्ड की पूजा को अलग-अलग आवरण पूजन नाम से सम्बोधन करते हैं।

॥ अथ दुर्गा यन्त्रस्थ देवानामवारण पूजा ॥

हाथ जोड़कर देवी से आज्ञा मांगे। भद्रपीठ पर नौ पीठ शक्तियों का पूजन करें।

पूर्वादि क्रमेण- ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ द्रोग्ध्रै नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ मंगलायै नमः।

प्रार्थना -

संचिन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये । अनुज्ञां देहि मातः! परिवारार्चनाय मे ॥

(यथा स्वयं ही पूजन करे तो दाहिने हाथ से अक्षत पुष्प ज्ञान मुद्रा से चढ़ावें एवं वामहस्त से तत्वमुद्रा से विशेषार्घ जल में पंचामृत ड़ालकर तर्पण करें)

प्रथमावरण पूजा - (मध्य बिन्दु में) **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावर्णायै**

सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यै नमः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः स्वाहा ॥१॥

(अधिक समय नहीं हो तो पादुकां पूजयामि तर्पयामि ही बोलें।)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गा. सप. सवा. सायु. स.शक्त्यै, श्रीमहाकाल्यै नमः श्रीमहाकाली पा. पू. त.। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गा. सप. सवा. सायु. सशक्त्यै, श्रीमहालक्ष्म्यै नमः श्रीमहालक्ष्मी पा. पू. त.। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गा. सप. सवा. सायु. सशक्त्यै, महासरस्वत्यै नमः श्रीमहासरस्वती पा. पू. त.।

पुष्पाञ्जलिमादाय – **मातः त्वां दधि दुग्ध पायसमहाशाल्यन्न सन्तानिकै। सूपापूप सिता घृतै सवटकैः सक्षौद्र रम्भाफलैः। एला जीरक हिंगु नागर निशा कस्तुम्भरी संस्कृतैः, शाकैः साकमहं सुधाऽधिक रसैः सन्तर्पयाम्यर्चयन्॥**

(इसके बाद दिव्यौघ, सिद्धौघ, मनवौघ एवं गुरु परम्परा के चार गुरुओं का पूजन तर्पण भी मध्य बिन्दु व त्रिकोण की रेखा के बीच करें।)

दिव्यौघगुरु – **ॐ दिव्यौघाख्यो गुरुभ्योनमः।** पुष्पाञ्जली प्रदान करें। **ॐ महादेव्यम्बा मयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। महादेवानन्दनाथमयी.। त्रिपुराम्बामयी.। त्रिपुर भैरवानन्दनाथमयी.। पा. पू. त.॥ सिद्धौघगुरु – ॐ सिद्धौघाख्यो गुरुभ्योनमः।** पुष्पाञ्जली प्रदान करें।

ॐ ब्रह्मानन्दनाथमयी श्रीपादु. पू. न. तप.। पूर्णदेवानन्दनाथ मयी.। चलितचित्तानन्दनाथमयी। लोचनानन्दनाथमयी.। कुमारानन्दनाथमयी.। क्रोधानन्दनाथमयी.। वरदानन्दनाथमयी.। स्मरद्वीपानन्दनाथमयी.। मायाम्बनाथमयी.। मायावत्यम्बानन्दनाथमयी.। श्री पा. पू. न. त.।

मानवौघगुरु – **ॐ मानवौघाख्य गुरुभ्यो नमः। पुष्पाञ्जली प्रदान करें। ॐ विमलानन्दनाथ मयी.। श्री पा. पू. न. त.। कुशलानन्दनाथ मयी.। भीमसुरानन्दनाथ मयी.। सुधाकरानन्दनाथ मयी.। मीनानन्दनाथ मयी.। गोरक्षानन्दनाथ मयी.। भोजदेवानन्दनाथ मयी.। प्रजापत्यानन्दनाथ मयी.। मूलदेवानन्दनाथ मयी.। रन्तिदेवानन्दनाथ मयी.। विघ्नेश्वरानन्दनाथ मयी.। हुताशनानन्दनाथ मयी.। समरानन्दनाथ मयी.। संतोषानन्दनाथ मयी.।**

गुरुचतुष्टय :- **ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमरलमवरयीं स्वगुरु .... अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बा सहिताय पा. पू. त. नमः स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं परम गुरवे सशक्ति पा. पू. त. न. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं. सहक्षमलवरयीं परात्पर गुरुदेव सशक्ति पा. पू. त. न. स्वाहाः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं परमेष्ठिगुरवे साम्बायै नमः श्रीपरमेष्ठि गुरुनाथ साम्बा पा. पू. त. नमः स्वाहाः।**

षडङ्ग पूजन – (बिन्दु में)– **ऐं हृदयाय नमः हृदयशक्तिं पादुका पू. त.** आग्नेये। **ह्रीं शिरसे स्वाहा, शिर शक्तिं पा. पू. त.** ईशाने। **ॐ क्लीं शिखायै वषट् शिखाशक्तिं पा. पू. त.**नैऋत्ये। **ॐ चामुण्डायै कवचाय हूँ कवचशक्तिं पा. पू. त.** वायवे। **ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिं पा. पू. त.** अग्रे। **मूलमंत्रेन् अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिं पा. पू. त. स्वाहा** दिक्षु।

पुष्पाञ्जलीमादाय - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गायै सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥**

अथ द्वितीयावरणम् - त्रिकोण में (अग्निकोणे, पश्चिमे, ईशानकोणे) तर्पण करें। **ॐ सावित्र्या सहविधात्रे नमः विधातृशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः विष्णुशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ उमया सहशिवाय नमः शिवशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ क्षुं नमः सिंहायसशक्त्यै नमः सिंहशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ हुं नमः महिषाय सशक्त्यै नमः महिषशक्ति श्री पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलीमादाय - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घ जलेन - **एताः द्वितीयावरण देवताः सा. सप. सायु. सशक्ति पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

अथ तृतीयावरणम् - षट्कोण में अग्नि, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य कोणों में पूर्व व पश्चिम कोणों में क्रमशः तर्पण करें। अग्निकोणे - **ॐ नन्दजायै नमः नन्दजा शक्ति श्री पा. पू. त.।** ईशानकोणे - **ॐ ह्रीं रक्तदन्तकायै नमः रक्तदंतिका शक्ति श्री पा. पू. त.।** नैर्ऋत्ये - **ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरी शक्ति श्री पा. पू. त.।** वायव्ये - **ॐ दुं दुर्गायै नमः दुर्गाशक्ति श्री पा. पू. त.।** पूर्वे - **ॐ हूँ भीमायै नमः भीमाशक्ति श्री पा. पू. त.।** पश्चिमे - **ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्ति श्री पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एतास्तृतीयावरण देवता सा. सप. सायु सवा.सश. पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

अथ चतुर्थावरणम् :- षट्कोण के ऊपर अष्टदल है अष्टदलपत्रों के मध्यभाग में पूजन तर्पण पूर्वादिक्रम से करे। **ॐ ऐं ब्राह्मयै नमः ब्राह्मी शक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरी शक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.। ॐ क्लीं कौमार्यै नमः कौमारीशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः वैष्णवीशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.। ॐ लूं वाराह्यै नमः वाराहीशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.। ॐ क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः नारसिंहीशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.।** ॐ लं ऐंद्र्यै नमः ऐन्द्रीशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.। **ॐ स्यें चामुण्डायै नमः चामुण्डाशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.।** (मध्ये या ईशाने) **ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्ति श्री पादुकां पूज. तर्प.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय - **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एताचतुर्थावरण देवता सा. सप. सायु सवा.सश. पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

अथ पञ्चमावरणम् - (अष्टदल में) भैरव पूजा का कहीं-कहीं अष्टदल में लेख नहीं है परन्तु **असितांगादि अष्टभैरव एवं अष्टडाकिनी पुत्रेभ्यो नमः।(डाकिनी, राकिनी, लाकिनी, काकिनी, शाकिनी, हाकिनी, याकिनी देवी पुत्रेभ्यो नमः)** इत्यादि अष्टभैरव का भी पूजन अष्टदलपत्रों के अग्रभाग (कर्णिका) में करें। यथा पूर्वादिक्रम से -

ॐ अं असिताङ्ग भैरवाय नमः असितांग भैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ रुं रुरुभैरवाय नमः रुरुव भैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ चं चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ कों क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ उं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ कं कपालिभैरवाय नमः कपालभैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ भीं भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.। ॐ सं संहारभैरवाय नमः संहारभैरव सशक्तिं श्री पा. पू. त.।

पुष्पाञ्जलिमादाय - **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गा. सप. सायु. सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥**

(देवीभागवत नवम स्कंध में अष्टनायिका पूजन लिखा है) अतः - अष्टदलाग्रे पूर्वादिक्रमेण - **ॐ उग्रचण्डायै नमः पा. पू. त.। ॐ प्रचण्डायै नमः पा. पू. त.। ॐ चण्डोग्रयै नमः पा. पू. त.। ॐ चण्डयै पा. पू. त.। ॐ अतिचण्डायै नमः पा. पू. त.। ॐ चामुण्डायै नमः पा. पू. त.। ॐ चण्ड्यै नमः पा. पू. त.। ॐ चण्डवंत्यै नमः पा. पू. त.।**

अथ षष्ठावरणम् - (अष्टदल के ऊपर 'चतुर्विंशति दले') पूर्वादिक्रम से विष्णुमायादि देवताओं का तर्पण करें। यथा - **ॐ विं विष्णु मायायै नमः विष्णुमाया शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ चें चेतनायै नमः चेतना शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ बुं बुद्ध्यै नमः बुद्धिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ निं निद्रायै नमः निद्राशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ छां छायायै नमः छायाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ शं शक्तयै नमः शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ तृं तृष्णायै नमः तृष्णाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्ति शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ जां जात्यै नमः जाति शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ लं लज्जायै नमः लज्जाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ शां शांत्यै नमः शान्तिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ कां कान्त्यै नमः कान्तिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ धृं धृत्यै नमः धृतिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ वृं वृत्त्यैनमः वृत्तिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ श्रुं श्रुत्यैनमः श्रुतिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृतिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ दं दयायै नमः दयाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ पुं पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ मां मातृभ्यो नमः मातृशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिशक्ति श्री पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय - **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्टमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गा. सप. सायु. सवा. सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥**

कहीं कहीं इसके बाद ६४ दल में ६४ योगनियों का पूजन लिखा है, अतः ६४ योगिनी नामावली से अर्चन करें।

अथ सप्तमावरणम् - भूपूर के चारों कोणों में आग्न्येयादि क्रम से - (आग्रये) **ॐ गं गणपतये नमः गणपति शक्ति श्री पा. पू. त.।** (निर्ऋत्ये) - **ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशक्ति श्री पा. पू. त.।** (वायव्ये) - **ॐ बं बटुकाय नमः वटुकशक्ति श्री पा. पू. त.।** ईशान्ये - **ॐ यां योगिन्यै नमः योगिनीशक्ति श्री पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय - **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एताः सप्तमावरण देवताः सा. सप. सायु. सवा. सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु॥**

अथ अष्टमावरणम् - भूपूर (चतुस्र) में पूर्वादिक्रम से - **ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ रं अग्नये नमः अग्निशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ यं यमाय नमः यमशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ वं वरुणाय नमः वरुणशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ वं वायवे नमः वायुशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ सं सोमाय नमः सोमशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ हं ईशानाय नमः ईशानशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ बं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तशक्ति श्री पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय - **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् - **एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गा. सप. सायु. सवा. सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥**

अथ नवमावरणम् – तद्बहिः पूर्वादिक्रमेण – **ॐ वं वज्राय नमः वज्रशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ शं शक्त्यै नमः शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ दं दण्डाय नमः दण्डशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ खं खड्गाय नमः खड्गशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ पां पाशाय नमः पाशशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ अं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ गं गदायै नमः गदाशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः त्रिशूलशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ पं पद्माय नमः पद्मशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ चं चक्राय नमः चक्रशक्ति श्री पादुकां पू. त.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय – **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन – **एताः नवमावरण देवताः साङ्गा. सप. सायु. सवा. सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥**

अथ दशमावरणार्चनम् – कलशात्पूर्वादिदिक्षु दिक्पाल समीपे **ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरी देव्यैनमः कादम्बरी देवी शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ शक्ति हस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः, उल्काशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ दण्डहस्तायै महिषारूढायै कराली देव्यै, नमः कराली देवी शक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी दैव्यै नमः रक्ताक्षी देवीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ पाश हस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षी देव्यै नमः श्वेताक्षीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ अङ्कुश हस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षी देव्यै नमः हरिताक्षीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ गदाहस्तायै सिंहारुढायै यक्षिणी देव्यै नमः यक्षिणी देवीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै काली देव्यै नमः काली देवीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरजेष्ठायै नमः सुरज्येष्ठा देवीशक्ति श्री पा. पू. त.। ॐ पद्महस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञी देव्यै नमः सर्पराज्ञी देवीशक्ति श्री पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलिमादाय – **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम् ॥**

सामान्यर्घजलेन् – **एताः दशमावरणं देवताः साङ्गा. सप. सायु. सवा. सशक्त्यै पूजिताः तर्पिताः सन्तु॥**

॥ दुर्गापञ्चरत्नविद्याः ॥

श्रीदुर्गा, शारिका (शारदा), शरि, सुमुखी (मातंगी), बगलामुखी का पूजन करें। अर्थात् इनकी उपासना से दुर्गाक्रम सिद्धि पूर्णतया सफल होती है। ये सभी अंग विद्यायें हैं लिखा है – **येन मंत्रो हि दुर्गायाः सद्य स्फुरति भारते।**
देवीघट में –

गणेशं च दिनेशं च वह्निं, विष्णुं शिवा, शिवां पूजयेत् ॥

इसके बाद आवरण मण्डल देवताओं का पञ्चोपकार पूजन करें एवं योनिमुद्रा दिखाकर नमस्कार करें।

विशेषार्चन – विविध नामावलियों के नाम द्वारा देवी का दूर्वाङ्कुर, पुष्पाक्षत् व तुलसीमञ्जरी से अर्चन करें। कहीं-कहीं तुलसी लिखा है परन्तु दुर्गा, शिव, गणेश व दशमह.विद्याओं के तुलसी नहीं चढ़ती है। प्रमाण में हमने देखा है कि सात्विक पूजा-अर्चन करने वाले दुर्गा उपासकों द्वारा श्री यंत्र का जल तुलसी में विसर्जन करने से ३-४ दिन में बड़ी तुलसी भी विसर्जित हो जाती है। तुलसीदल अर्थात तुलसीमञ्जरी चढ़ावें।

॥ अथ नवार्ण मंत्रस्य विविध प्रयोगाः॥

पहले मूल मंत्र **"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** के मंत्र का नौ लाख या चार लाख जप करे। पायसान्न से दशांश होम व तर्पणादि कर ब्राह्मण भोजन कराये। सभी रोग उपद्रव शत्रु नष्ट होकर कल्याण व ऐश्वर्य की प्राप्ति होवे। नाभिपर्यन्त जल में स्थित होकर १० हजार जप करने से कवित्व की प्राप्ति होवे। बिल्वमूल के पास १ महिने तक जप करे, बिल्वपत्र, मधुत्रय, मांस, क्षीर व कमल के होम से लक्ष्मी प्राप्ति होवें।

॥ नवार्णमंत्र के विविध कामना मंत्रभेद (षट्कर्म प्रयोग) ॥

मन्त्रों के स्वरूप:-

१. वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुक नामानं वषट् मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा'' इति वश्यम्।

२. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा'' इत्युच्चाटनम्।

३. क्लीं क्लीं ॐ ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा'' इति मोहनम्।

४. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खेखे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा'' इति मारणम्।

५. ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय ह्रीं जिह्वांकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा'' इति स्तम्भनम्।

६. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षयाकर्षय स्वाहा'' इत्याकर्षणम्।

७. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन सह विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाहा। इति विद्वेषणं।

॥ नवार्ण महामंत्र स्वरूप ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचंडीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहंत्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनिशुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपालखट्वांगशूलखड्ग- खेटकधारिणि छिन्नमस्तकधारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'' महामन्त्रः।

॥ अस्य विधानम् ॥

ऋष्यादिकं न्यासादिकं च पूर्ववत् कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम् ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुंजवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतियुग्मांबुजा च।
मणिमुकुटविचित्रालंकृता कल्पजातैर्भवतु भुवनमाता संततं श्रीः श्रिये नः ॥१॥
इन्दुप्रख्यामिंदुखंडार्धमौलिं शंकाभीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम्।
हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥२॥
पंचाशद्वर्णं भेदैर्विहितवदनयोः पादहृत्कुक्षि वक्षो देशां
भास्वत्कपर्दा कलित शशिकला - मिंदुकुंदावदाताम्।
अक्षस्त्रक्कुंभ चिंता लिखित वरकरां तीक्ष्ण पद्मासनस्थाम - च्छाकल्पा-
मतुच्छस्तन - जघन - भरां भारतीं तां नमामि ॥३॥

इति ध्यात्वा नवार्णवत् पीठपूजामावरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्यात्।

अस्य संपुटितपाठहोमेऽपि आहुतिसंख्या सप्तशत्यैव।

॥ इति नवार्णमंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ दशाक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

दक्षिण भारत में दशाक्षर मंत्र का अधिक प्रयोग होता है।

(१) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (हिन्दी मंत्र. महा.) **(२) ह्रीं क्लीं ऐं ॐ चामुण्डायै विच्चे** (दुर्गा कल्पद्रुम मे)

विनियोग :- (मेरुतंत्रोक्त) इसमें ऋषियों में महेश्वर या रुद्र की जगह महेश तथा तत्वों में सूर्य के स्थान पर भग का उल्लेख हैं। ध्यान भी भिन्न हैं ।

ॐ अस्य श्री नवार्णमंत्रस्य ब्रह्माविष्णु महेश ऋषयाः गायत्र्युष्णिगनुष्टुमश्च्छन्दासि। नन्दजाशाकम्भरी भीमा शक्तयः। रक्तदंतिका दुर्गाभ्रामर्यो बीजानि। अग्निर्वायुस्भगस्तत्वानि। सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग।

॥ ध्यानम् ॥

ततो देवीत्रयं ध्याये कालिकाध्यानमुच्यते, दशास्यां दशपादां च दशहस्तां विधिस्तुतां ।
इन्द्रनीलद्युतिं खड्गं चक्रं शङ्खं शिरः शरान्, दक्षहस्तेषु दधतीं गदां शूलं भुशुण्डिकां ।
परिघं च धनुर्बाणौ दधतीं ब्रह्मसंस्तुताम्, मधुकैटभनाशार्थं सालङ्कारां त्रिवीक्षणां ॥१॥
ततो ध्याये महालक्ष्मीं महिषासुरमर्दिनीं, समस्तदेवतातेजोजातां पद्मासनस्थिताम् ।
अष्टादशभुजा मक्षमालां पद्मं च सायकान्, खड्गं वज्रं गदां चक्रं दशहस्ते कमण्डलुम् ।
शङ्खं च दधतीं वामे शक्तिं च परशुं धनुः, चर्मदण्डौ सुरापात्रं घण्टां पाशं त्रिशूलकम् ॥२॥
सरस्वतीं ततो ध्याये शरच्चन्द्रसमप्रभां, शङ्खं च मुशलं चक्रं दक्षहस्तेषु बिभ्रतीम् ।
घण्टां शूलं हलं चापं वामहस्तेषु बिभ्रतीं, गौरीदेहसमुद्भूतां नृणामानन्ददायिनीम् ।
आधारभूतां जगतः शुम्भादिकविमर्दिनीं, अधिष्ठात्रीं तृतीयं हिं चरितं च स्मरेत् सदा ॥३॥

॥ अथ सिद्धिचण्डिका सहस्राक्षर मंत्रः॥

वन्दे परागमविद्यां सिद्धिचण्डीं सङ्गिताम् । महासप्तशतीमंत्रस्वरूपां सर्वसिद्धिदाम् ।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्री सर्वविज्ञान महाराज्ञी सप्तशती रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्रीमदाद्या भगवती सिद्धिचण्डिका सहस्राक्षरी महाविद्या मन्त्रस्य श्रीमार्क. डेय सुमेधा ऋषिः, गायत्र्यादि नानाविधानि छंदान्सि, नवकोटि शक्तियुक्ता श्रीमादाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवता, श्रीमदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **श्रीमार्कण्डेय सुमेधा ऋषिभ्यां नमः, शिरसि। गायत्र्यादि नानाविधानि छंदोभ्यो नमः मुखे। नवकोटि शक्तियुक्ता श्रीमदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवतायै नमः हृदि। श्रीमदाद्या भगवती सिद्धिचण्डि प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

महाविद्यान्यास :- **ॐ श्रीं नमः सहस्रारे। ॐ हैं नमः भाले। ॐ क्लीं नमः नेत्रयुगले। ॐ ऐं नमः कर्णद्वये। ॐ सौं नमः नासापुटद्वये। ॐ ॐ नमो मुखे। ॐ ह्रीं ॐ नमः कण्ठे। ॐ श्रीं नमो हृदये। ॐ ऐं नमो हस्तयुगे।**

ॐ क्लीं नमः उदरे। ॐ सौं नमः कट्यां। ॐ ऐं नमो गुह्ये। ॐ क्लीं नमो जंघायुगे। ॐ ह्रीं नमो जानुद्वये। ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वाङ्गे।

ॐ या माता मधुकैटभप्रमथनी या माहिषोन्मूलनी,
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्ड दलनी या रक्तबीजाशनी ।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यमथनी या सिद्धि लक्ष्मीः परा,
सा देवी नवकोटि मूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्यौं श्रीं ह्रीं क्लौं ऐं सौं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं जय जय महालक्ष्मि जगदाद्ये बीजसुरासुर त्रिभुवन निदाने दयांकुरे सर्वतेजो रूपिणि महा महामहिमे महा महारूपिणि महामहामाये महामायास्वरूपिणि विरञ्चि संस्तुते! विधिवरदे सच्चिदानन्दे विष्णुदेहव्रते महामोहिनि मधुकैटभ जिह्वासिनि नित्यवरदान तत्परे! महास्वाध्याय वासिनि महामहातेज्यधारिणि! सर्वाधारे सर्वकारण करणे अचिन्त्यरूपे! इन्द्रादि निखिल निर्जर सेविते! सामगानं गायन्ति पूर्णोदय कारिणि! विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि रक्तांशुके सूर्यकोटि शशांकेन्द्रकोटि सुशीतले अग्निकोटि दहनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटि वहन सुशीतले!

ॐकार नाद बिन्दुरूपिणि निगमागम मार्गदायिनि महिषासुर निर्दलनि धूम्रलोचन वध परायणे चण्डमुण्डादि सिरच्छेदिनि रक्तबीजादि रुधिरशोषणि रक्तपानप्रिये महायोगिनि भूतवैताल भैरवादि तुष्टिविधायनि शुम्भनिशुम्भ शिरच्छेदिनि! निखिलासुर बलखादिनि त्रिदश राज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणि दिव्यदेहनिर्गुणे सगुणे सदसत्रूपधारिणि सुरवरदे भक्तत्राण तत्परे।

वर वरदे सहस्राक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटि चामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायनीरूपे अनेकलक्षालक्ष स्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रुद्राणि ईशानि भ्रामरि भीमे नारसिंहे! त्रयत्रिंशत् कोटिदैवते अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायिके चतुरशीति मुनिजन संस्तुते! सप्तकोटि मन्त्रस्वरूपे महाकाले रात्रि प्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दश भुवन भावा विकारिणि गरुड गामिनि! क्रों कार हों कार ह्रीं कार श्रींकार दलेंकार जूंकार सौं कार ऐं कार क्लें कार ह्रीं कार ह्रौं कार हौं कार नानाबीज कूट निर्मित शरीरे नाना बीज मंत्राग विराजते ! सकल सुन्दरीगण सेवते करुणारस कल्लोलिनि कल्पवृक्षाधिष्ठिते चिन्तामणि द्वीपेऽवस्थिते मणिमन्दिर निवासे! चापिनि खड्गिनि चक्रिणि गदिनि शङ्खिनि पद्मिनि निखिल भैरवाधिपति समस्त योगिनी परिवृते!

कालि कङ्कालि तोर तोतले सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि! त्रिपुरे लोक जननि विष्णुवक्षस्थला लङ्कारिणि! अजिते अमिते अमराधिपे अनूप सरिते गर्भवासादि दुःखापहारिणि मुक्तिक्षेमाधिषयनि शिवे शान्ति कुमारि देवि! सूक्तदश शताक्षरे चण्डि चामुण्डे महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयी विग्रहे! प्रसीद प्रसीद सर्व मनोरथान् पूरय सर्वारिष्ट विघ्नं छेदय छेदय, सर्वग्रह पीडा ज्वरोग्र भयं विध्वंसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्षमार्गं दर्शय दर्शय, ज्ञानमार्गं प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञानतमो नाशय नाशय, धनधान्यादि कुरु कुरु, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय। मम वज्र शरीरं साधय-साधय, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमोऽस्तु ते स्वाहा।

(१) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमोदेव्यै महादेव्यै, शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्मताम्।
(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके! शरण्ये त्र्यम्बके गौरि! नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते ॥

सिद्धि चण्डी महामंत्रं यः पठेत् प्रयतो नरः । सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥
संग्रामेषु जयेत् शत्रून् मातङ्गं इव केसरी । वशयेत् सदा निखिलान् विशेषेण महीपतीन् ॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यपुरः सरम् । तस्य नश्यन्ति विघ्नानि ग्रहपीडाश्च वारणम् ॥
पराभिचार शमनं तीव्र दारिद्र्यनाशनं । सर्वकल्याण निलयं देव्याः सन्तोष कारकम् ॥
सहस्त्रावृत्तितस्तु देवि! मनोरथ समृद्धिदम् । द्विसहस्त्रावृत्तितस्तु सर्वसङ्कटनाशनम् ॥
त्रिसहस्त्रावृत्तितस्तु वशयेद् राजयोषितम् ।
अयुतं प्रपठेद् यस्तु सर्वत्र चैवातन्द्रितः । स पश्येच्चण्डिकां साक्षात् वरदान कृतोद्यमाम् ॥
इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः । वाच्यं न कस्यचित् देवि! विधानमस्थ सुन्दरि ॥

॥ श्रीसिद्धि डामरे शिव-देवी संवादे सहस्त्राक्षरं सिद्धि चण्डीमहाविद्योत्तमाम सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री चंडिका मालामंत्र प्रयोगः॥

उक्तं चाथर्वणागमसंहितायाम् मंत्रों यथा-

''ॐ ह्ः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीर्जयजय चंडिका चामुंडे चंडिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविंदे गायत्रि सावित्रि सरस्वति अहिकृताभरणे भैरवरूपधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने ज्वलज्ज्वालासहस्त्रपरिवृते महाट्टहासधवलीकृतदिगंतरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीयभूतवेतालपरिवृते अकंपितधराधरे मधुकैटभ महिषासुरधूम्रलोचन चंडमुंडरक्तबीजशुंभनिशुंभदैत्यनिकृंते कालरात्रि महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐंद्रि आग्नेयि याम्ये नैर्ऋति वारुणि वायवि कौबेरि ऐशानि ब्रह्मविष्णुशिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अंबिके ब्राह्मीमाहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहींद्राणी ईशानी महालक्ष्मीः इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणामणि मुकुटरत्न महाज्वालामलमणिमहाहिहार बाहुकहोत्तमांगनवरत्ननिधि कोटितत्वबाहुजिह्वावाणी शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मिके क्षितिसाहसमध्यस्थिते महोज्ज्वलमहाविषोपविषगंधर्वविद्याधराधिपते ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकारा हस्ते ॐ आँह्रींक्रौंअनग्रेनग्रेपाते प्रवेशय २ ॐ द्रां द्रीं शोषय २ ॐ द्रांद्रींमोहय २ ॐ क्लाँक्लींदीपय २ ॐ ब्लूंब्लूंसंतापय २ ॐ सौंसौंउन्मादय २ ॐ म्लैंम्लैंमोहय २ ॐ खाँखाँशोधय २ ॐ द्याँद्याँउन्मादय २ ॐ ह्रींह्रींआवेशय २ ॐ स्त्रींस्त्रींउच्छादय २ ॐ स्त्रींस्त्रींआकर्षय २ ॐ हुं हुंआस्फोटय २ ॐ त्रूँत्रूँत्रोटय २ ॐ छाँछाँछेदय २ ॐ कूँकूँउच्चाटय २ ॐ हूँहूँहन २ ॐ ह्राँह्राँमारय २ ॐ घ्रींघ्रींघर्षय २ ॐ स्वींस्वींविध्वंसय २ ॐ प्लूँप्लूँप्लावय २ ॐ भ्रांभ्रांभ्रामय २ ॐ ॐ म्रांम्रांदर्शय २ ॐ दांदांदिशांबंधय २ ॐ दींदींवर्तिनामेकाग्रचित्ताविशिकुरुतेंगये ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय २ अमुकं वशे कुरु २ भूतप्रेतपिशाचब्रह्मपिशाच ब्रह्मराक्षसयक्ष यमदूतशाकिनी डाकिनी सर्वश्वापदतस्करादिकं नाशय २ मारय २ भंजय २ ॐ ह्रींश्रींक्लींस्वाहा'' इति मालामंत्रः अस्य विधानम्।

विनियोग :- ॐ अस्यश्रीचंडिकामालामंत्रस्य मार्कंडेय ऋषिः। **अनुष्टुप् छंदः। श्रीचंडिका देवता। ॐ ह्ः बीजम्। ॐ सौं शक्तिः। ॐ कीलकम्। मम श्रीचंडिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचंडिकामालामंत्रजपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ मार्कंडेयऋषये नमः शिरसि ॥१॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ ॐ श्री चंडिकादेवतायै नमः हृदि ॥३॥ ॐ ह्ःबीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ ॐ सौं शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ ॐ ह्रौं**

कीलकाय नमः नाभौ ॥६॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- **ॐ ह्रां फां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं फीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हूं फूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हैं फैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं फौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः फः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यास :- **ॐ ह्राँफाँ हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रींफीं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ हूँफूँ शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ हैं फैं कवचाय हुँ ॥४॥ ॐ ह्रौंफौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ह्रः फः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः।** एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घमश्यामलामाविर्भावित भूषणामभयदामार्द्रैकरक्षैः शुभैः। श्रींह्रींक्लींवरमंत्रराजसहिता मानंदपूर्णात्मिकां श्रीशैले भ्रमरांबिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य सुवासिन्याः कुमार्याः पूजां कृत्वा पश्चाज्जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं नित्यमेकविंशत्यधिकशतम् ॥१२१॥ जपेन स्त्री पुरुषो वा वश्यो भवति। तथा चएकविंशत्यधिकशतजाप्येन वशमानयेत्। स्त्री वापि पुरुषो वापि सत्यं सत्यं न संशयः ॥१॥ राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुसंकटे। शत्रोरुच्चाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत्।

॥ इत्यथर्वणागमसंहितोक्त श्री चंडिकामालामंत्रविधानम् ॥

॥ कुल्लुकादि जप निर्णय ॥

कुल्लुका - मंत्रसिद्धि के लिये मूर्ध्नि में कुल्लुका का जप करें अथवा आयु, विद्या, यश एवं बल की हानि होती है। (विशुद्ध तंत्रे)

मंत्र - **क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट् काली कूर्च वधूर्माया फडन्ता परमेश्वरि पंचाक्षरी चण्डिकाया कुल्लुका परिकीर्तिता ॥**

॥ देवी पूजा यागे विविधन्यासा: ॥

देवी पूजा में व तंत्रोक्त प्रयोगों में न्यासों का बड़ा महत्व हैं। विशेषकर षोढान्यास सिद्धि करने पर समस्त देवता व सिद्धपीठों का निवास उसके शरीर में हो जाता हैं जिसके प्रभाव से साधक किसी को नमस्कार करता हैं तो उसका अहित हो जाता हैं, प्रतिष्ठितमूर्ति को नमस्कार करने से उसका प्रभाव कम हो जाता हैं। इसका अर्थ यह है कि उस व्यक्ति को ग्रह पीड़ा नहीं देते हैं वह व्यक्ति दूसरों को आश्रय देने में समर्थ हो जाता हैं। षोढ़ान्यास भी विविध तरह के हैं। षोढ़ा, लघुषोढ़ा, महाषोढ़ा, कामकला षोढ़ा, गुह्यषोढ़ा आदि फिर एक एक न्यास में पांच पांच न्यास होने से कई न्यास है तथा ४०-५० अन्य न्यास हैं परन्तु हम यहां षोढान्यास व कुछ अन्य न्यास का विवरण दे रहे हैं। केशव, कला, श्री कण्ठादि न्यास, समयानुसार करने से भी उत्तम रहता हैं।

१. मातृका न्यास:- **ॐ ऐ अं आं कं......ङं इं ईं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं उं ऊं चं ञं ऋं ॠं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं ऌं टं.... णं ॡं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डा एं तं..... नं कवचाय हुं। ॐ यैं ओं पं.... मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ विच्चे अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः अस्त्राय फट्।**

२. सारस्वस्तो न्यासः– १ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। १ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः। २ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। २ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा। ३ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ३ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै वषट्। ४ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ४ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय हुं। ५ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ५ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्राय वाषैट्। ६ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करतल पृष्ठाभ्यां नमः। ६ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट्। ७ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्फाराभ्यां नमः। ८ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मणिबन्धाभ्यां नमः इसके बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं से पूर्वादि दशों दिशाओं का बंधन करे।

३. मातृका पंजरन्यासः– ब्रह्माणी मां पूर्वतः पातु, माहेश्वरी माम आग्नेयां पातु। कौमारी मां दक्षिणे पातु, वैष्णवी माम नैर्ऋत्यां पातु। वाराही मां पश्चिमे पातु, नारसिंही मां वायव्यां पातु। इन्द्राणी मां उत्तरे पातु, चामुण्डा माम ईशान्यां पातु। व्योमेश्वरी माम उर्ध्वं पातु, सप्तदीपेश्वरी मां भुवि पातु। नागेश्वरी माम अधः पातु। येन कर्ता त्रिषुलोकेषु निर्भयः सन् सर्वदेवप्रियोभवति।

४. जरामृत्युनाशको न्यासः– कमलाङ्कुश मण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं मे पातु। खड्ग पात्र धरा रक्तदंतिका दक्षिणाङ्गं मे पातु। पुष्प पल्लव मूलादिहस्ता शाकम्भरी पश्चिमाङ्गं मे पातु। धनुर्बाण धरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामाङ्गं मे पातु। शिरः पात्र करा भीमा मस्तकाच्चरणावधि मां पातु। चित्राकांतिभृद्भ्रामरी चरणान्मस्तकावधि मां पातु। येन कर्ता अग्नि वारिभयां निर्भयोभूत्वा जरामरण वर्जितो भवति।

५. वशीकरणः अभेद्योन्यासः– ऐं पादादिनाभिपर्यन्त ब्रह्मा मां पातु। श्री नाभोविशुद्धि पर्यन्त जनार्दनः मां पातु। हंसौं विशुद्धेः शिखापर्यन्तं त्रिलोचनो रुद्रो मां पातु। ऐं हंसौ मे पदं द्वंद्वं पातु। श्रीं वैनेतेयो मे करद्वंद्वं पातु। हंसौं वृषभः चक्षुषी मे पातु। ह्री गजाननः सर्वाङ्ग मे पातु। ह्री आनंदमयो हरिः परापरौ देहभागौ मे पातु। येन कर्ता महापापाति पापाभ्यां मुक्तो भवति।

६. सद्गति प्रापको न्यासः– ह्रीं अष्टादशभुजा महालक्ष्मीः मध्यमाङ्गं मे पातु। ऐं अष्टभुजा सरस्वती उर्ध्वं मां पातु। क्लीं त्रिंशल्लोचना महाकाली अधो मां पातु। क्षौ सिंहो हस्त द्वयं मे पातु। ऐं पर हंसोऽक्षि मण्डल मे पातु। महिषारूढः प्रेतः पद द्वयं मे पातु। हंसौं महेशश्चण्डिका युक्तः सर्वाङ्गं मे पातु। येन वैकुण्ठ सुखं सर्व कष्टोपशांतिश्च भवति।

७. रोगनाशको न्यासः– ऐं नमो ब्रह्मरंध्रे। ह्रीं नमों दक्षिण नेत्रे। क्लीं नमो वामनेत्रे। चां नमो दक्षिण कर्णे। मुं नमो वाम कर्णे। डां नमो दक्षिण नासा पुटे। यैं नमो वामनासापुटे। विं नमो मुखे। च्चें नमों पायौ (गुह्ये)।

८. सर्वदु:ख हरो (विलोमाक्षर) न्यासः– च्चें नमो पादयौ। विं नमो मुखे। यैं नमो वाम नासा पुटे। डां नमो दक्षिण नासा पुटे। मुं नमो वामकर्णे। चां नमो दक्षिण कर्णे। क्लीं नमोवामनेत्रे। ह्रीं नमो दक्षिण नेत्रे। ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे।

९. देवता प्राप्ति कृत (व्यापक) न्यासः– मूल मंत्र से सम्मुख ४ बार शिर से पैर तक तथा पैर से शिर तक तथा दोनों कुक्षी की ओर २-२ बार न्यास करे।

१०. त्रैलोक्य वश कृत्न्यासः– ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नमः। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिरसे स्वाहा। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिखायै वषट। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे कवचाय हुँ। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नेत्र त्रयाय वौषट। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

११. सर्वरक्षा करोन्यासः- भगवति महाकाली का निम्न मंत्र से ध्यान करें-

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनी चापिनी वाण भुशुण्डी परिधायुधा ॥१॥
सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी । परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥२॥
यया त्वया जगत्सृष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत। सोपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥३॥
विष्णु शरीर ग्रहण महमीशान एव च। कारितास्ते यतो तस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमानभवेत ॥४॥

इसके बाद ऐं बीज को श्यामवर्ण रूप में ध्यान करें और शरीर, नेत्र मुख, कर्ण, कण्ठ, ग्रीवा, हृदय, नाभि, हाथ व पैर की पांचों संधियों में (स्कंध, कर्पूर याने कोहनी, मणिबंध, अंगुलिमूल व अंगुल्याग्र तथा पैरों में ऊरू, जानु, गुल्फ अंगुलीमूल व अग्रभाग)- कुक्षिपीठ, जठर, नाभि आदि में न्यास करें।

पुनः प्रार्थना करें-

शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चाप ज्यानिः स्वनेन च ॥१॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥२॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्तिते । यानि चात्यर्थ घोराणि तै रक्षास्माँस्तथा भुवम् ॥३॥
खड्ग शूल गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके । कर पल्लव सङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥४॥

इसके बाद **ह्रीं बीज** का **बालार्क वर्ण** का ध्यान कर **ऐं बीज** की तरह व्यापक या सर्वाङ्ग में न्यास करें। अब निम्न मंत्रों से भगवती का ध्यान करें।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥१॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन त्रयभूषितम् । पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥२॥
ज्वाला कराल मत्युग्रमशेषासुर सूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतिर्भद्रकालि नमोस्तुते ॥३॥
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्येऽनः सुतानिव ॥४॥
असुरा सृग्वसापङ्क चर्चितस्ते करोज्वलः । शुभाय खड्गो [illegible]तु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥५॥

पुनः क्लीं बीज का स्फटिक वर्ण का ध्यान करके व्यापक या शरीर के प्रत्येक अङ्गो में न्यास करें।

१२. पंचब्रह्म न्यासः- **ह्रौं वों ईशानाय नमः अंगुष्ठयो। ह्रैं वैं तत्पुरूषाय नमः तर्जन्योः ह्रूं वूं अघोराय नमः मध्यमयोः। ह्रीं वीं वामदेवाय नमः अनामिकयोः ह्रां वां सद्योजाताय नमः कनिष्ठयोः।**

१३. महाश्री बीजन्यासः- **ॐ श्रूं नमः चिबुके, ॐ श्रूं नमः पादयोः। ॐ श्रूं नमः कर्णयोः। ॐ श्रूं नमः हृदये। ॐ श्रूं नमः मुखे, ॐ श्रूं नमः पादयोः, ॐ श्रूं नमः नाभौ। ॐ श्रूं नमः पादयोः।**

१४. प्राण बीजन्यासः- **ॐ क्रूं नमः हृदये। ॐ क्रूं नमः मुखे। ॐ क्रूं नमः हृदये। ॐ क्रूं नमः नाभौः। ॐ क्रूं नमः हृदये। ॐ क्रूं नमः पादयोः। ॐ क्रूं नमः हृदये। ॐ क्रूं नमः सव्यकुक्षौ। ॐ क्रूं नमः हृदये। ॐ क्रूं नमः वाम कुक्षौ। ॐ क्रूं नमः हृदये।**

१५. सिंह बीजन्यासः- **ॐ हसर्क्षं नमः शिरसि, ॐ हसर्क्षं नमः वाह्वौ। ॐ हसर्क्षं नमः लिङ्गे। ॐ हसर्क्षं नमः नाभौ, ॐ हसर्क्षं नमः हस्तांगुलीषु। ॐ हसर्क्षं नमः पादांगुलीषु।**

॥ अथ दुर्गामातृका ॥

प्रत्येक नामावलि का सृष्टिमातृका न्यास के अनुसार न्यास करें।

दुर्गा च कौशिकी चोग्रा चण्डा माहेश्वरी शिवा। विश्वेश्वरी जगद्धात्री स्थितिसंहारकारिणी ॥१॥
योगनिद्रा भगवती देवी स्वाहा स्वधा सुधा । सृष्टिराहुतिरेवोक्ताः स्वराणां शक्तयः क्रमात् ॥२॥
कला माया रमा ज्येष्ठा स्तुतिः पुष्टिः स्थितिर्गतिः। रतिः प्रीतिर्धृतिर्नीतिर्विभूतिर्भृतिरुन्नतिः ॥३॥
क्षितिः क्षान्तिः क्षतिः कान्तिः शान्तिः कान्तिर्महाद्युतिः । क्षुत्पिपासा स्पृहा लज्जा निद्रा मुद्राचिदात्मिका ॥४॥
गिरिजा भारतीर्लक्ष्मीः शची संज्ञा विभावरी । कादीनां शक्तयः प्रोक्ताः सर्वसिद्धिप्रदायिका: ॥५॥

॥ अथ मातृका कलान्यासः।॥

१. वह्नि कलाः-(नाभौः) **ॐ धर्मप्रद वह्न्यात्मक दश कलात्मने नमः नाभौः। ॐ धूम्रार्चिषे नमः, उष्मायै नमः, ज्वलिन्यै नमः। ज्वालिन्यै नमः, विस्फुलिङ्गिन्यै नमः सुश्रियै नमः। स्वरूपायै नमः, कपिलायै नमः हव्यवाहायै नमः, कव्यवाहायै नमः।**

२. द्वादश सूर्य कलाः- (हृदये) **ॐ अर्थप्रद सूर्यात्मक द्वादश कलात्मने नमः हृदये। ॐ तपिन्यै नमः, तापिन्यै नमः, धूम्रायै नमः। मरीच्यै नमः, ज्वालिन्यै नमः, रूच्यै नमः। सुषुम्णायै नमः, भोगदायै नमः विश्वायै नमः, बोधिन्यै नमः धारिण्यै नमः, क्षमायै नमः।**

३. षोडश सोमकलाः- (सहस्त्रारे) **ॐ कामप्रद सोमात्मक षोडश कलात्मने नमः सहस्त्रारे। ॐ अमृतायै नमः, मानदायै नमः। पूषायै नमः, तुष्ट्यै नमः। पुष्ट्यै नमः, रत्यै नमः। धृत्यै नमः, शशिन्यै नमः। चन्द्रिकायै नमः, कान्त्यै नमः। ज्योत्स्नायै नमः, श्रियै नमः। पीत्यै नमः, अंगदायै नमः। पूर्णायै नमः, पूर्णामृतायै नमः।**

४. दश ब्रह्माकलाः- **ॐ कं सृष्टि कलायै नमः दक्ष बाहुमूले। खं ऋद्ध्यै नमः, दक्ष कर्पूरे। गं स्मृत्यै नमः दक्ष मणिबंधे। धं मेधायै नमः दक्षाङ्गुलिमूले। ड़ं कान्त्यै नमः, दक्षाङ्गुलि पद्मे। चं लक्ष्म्यै नमः, वाम वाहु मूले। छं द्युत्यै नमः वामकर्पूरे। जं, सिद्ध्यै नमः, वाम मणिबंधे। झं स्थित्यै नमः वामाङ्गुलिमूले। ञं, नमः वामाङ्गुल्याग्रे।**

५. दश विष्णुकलाः- **ॐ टं जरायै नमः दक्षोरू। ठं पालिन्यै नमः, दक्ष जानुनि। डं शान्त्यै नमः, दक्ष गुल्फे। ढं ईश्वर्यै नमः दक्ष पादांगुलिमूले। णं रत्यै नमः दक्ष पादाङ्गुल्याग्रे। तं कामिन्यै नमः वामपाद मूले। थं वरदायै नमः वाम जानुनि। दं आह्लादिन्यै नमः वाम गुल्फे। धं प्रीत्यै नमः वामपादाङ्गुलिमूले। नं दीर्घायै नमः वाम पादाङ्गुल्याग्रे।**

६. दश रुद्रकलाः- **पं तीक्ष्णायै नमः, दक्ष पार्श्वे। फं रौद्रायै नमः वाम पार्श्वे। बं भयायै नमः पृष्ठे। भं निंद्राय नमः नाभौ। मं तन्द्रायै नमः जठरे। यं क्षुतायै नमः हृदि। रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे, लं क्रियायै नमः कुकुदि। वं उदगारै नमः वामांसे। शं मृतवे नमः हृदयादि दक्षकरान्तरम्।**

७. चतुः ईश्वर कलाः- **षं पीतायै नमः हृदयादिवामकरान्तम्। सं श्वेतायै नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। हं अरुणायै हृदयादि वाम पादान्तम्। लं असितायै नमः मस्तकादि पादान्तम्।**

८. षोडश सदाशिव कलाः- **ॐ निवृत्ति कलायै नमः शिरसि, आं प्रतिष्ठायै नमः मुखे। इं विद्यायै नमः**

दक्षनेत्रे, ई शान्त्यै नमः वाम नेत्रे। उं इन्धिकायै नमः दक्षकर्णे, ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे, ऋं रेचिकायै नमः दक्ष नासापुटे ॠं मोचिकायै नमः वाम नासापुटे। लृं परायै नमः दक्षगण्डे, लॄं सूक्ष्मायै नमः वाम गण्डे। एं सूक्ष्मामृतायै नमः उर्ध्वोष्ठे, ऐं ज्ञानायै नमः अधरोष्ठे। ओं ज्ञानामृतायै नमः उर्ध्वदन्त पंक्तौ, औं अप्यायिनी नमः अधोदन्तपंक्तौं। अं व्यापिन्यै नमः मुखवृत्ते, अः व्योमरूपायै नमः कण्ठे।

॥ केशवमातृका न्यासः॥

केशव मातृका न्यास विष्णु, लक्ष्मी व ललिता त्रिसुंदरी उपासना में शुभ हैं।

विनियोग –ॐ अस्य श्री केशव मातृका न्यासस्य प्रजापति ऋषिः गायत्रीश्छन्दः अर्द्धलक्ष्मी हरि देवता, क्लीं बीजं, नमः शक्ति, विष्णु लक्ष्मी कीलकं, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

हस्तैर्विभ्रत् सरसिज गदा शंख चक्राणि विधां। पद्मादशो कनक कलशं मेघविद्यद्विलासम् ॥
वामोत्तुङ्ग स्तनमविरला कल्प माश्लेष लोभादेकी भूतं। वपुरवतुः व पुण्डरीकाक्ष लक्ष्म्योः॥

ॐ क्लीं श्रीं अं केशवायकीर्तिभ्यां नमः मस्तके। ॐ क्लीं श्रीं आं नारायणायकांतिभ्यां नमः मुखवृत्ते। ॐ क्लीं श्रीं इं माधवायतुष्टिभ्यां नमः दक्षिण नेत्रे। ॐ क्लीं श्रीं ईं गोविन्दायपुष्टिभ्यां नमः वाम नेत्रे। ॐ क्लीं श्रीं उं विष्णवेधृतिभ्यां नमः दक्षकर्णे। ॐ क्लीं श्रीं ऊं मधुसूदनवेशांतिभ्यां नमः वामकर्णे। ॐ क्लीं श्रीं ऋं त्रिविक्रमायक्रियाभ्यां नमः दक्षनासापुटे। ॐ क्लीं श्रीं ॠं वामनायदयाभ्यां नमः वाम नासापुटे। ॐ क्लीं श्रीं लृं श्रीधरायमेधाभ्यां नमः दक्ष गण्डे। ॐ क्लीं श्रीं लॄं हृषीकेशायहर्षाभ्यां नमः वाम गण्डे। ॐ क्लीं श्रीं एं पद्मनाभायश्रद्धाभ्यां नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ क्लीं श्रीं ऐं दामोदराय लज्जाभ्यां नमः अधरोष्ठे।

ॐ क्लीं श्रीं ओं वासुदेवाय लक्ष्मीभ्यां नमः उर्ध्वदंतपंक्तौ। ॐ क्लीं श्रीं औं संकर्षणायसरस्वतीभ्यां नमः अधः दंतपंक्तौ। ॐ क्लीं श्रीं अं प्रद्युम्नायप्रीतिभ्यां नमः शिरसि। ॐ क्लीं श्रीं अः अनिरुद्धायरतिभ्यां नमः मुखे। ॐ क्लीं श्रीं कं चक्रिनेजयाभ्यां नमः दक्ष स्कंधे। ॐ क्लीं श्रीं खं गदिनेदुर्गाभ्यां नमः दक्ष कर्पूरे। ॐ क्लीं श्रीं गं खड्गिनेसत्याभ्यां नमः दक्ष मणिबंधे। ॐ क्लीं श्रीं घं शार्ङ्गिनेप्रभ्भ यां नमः दक्ष कराङ्गुलिमूले ॐ क्लीं श्रीं ङ़ं शङ्खिनेचण्डाभ्यां नमः दक्ष कराङ्गुल्यग्रे। ॐ क्लीं श्रीं चं हलिनेवाणीभ्यां नमः वाम स्कंधे। ॐ क्लीं श्रीं छं मुसले विलासिनीभ्यां नमः वाम कर्पूरे। ॐ क्लीं श्रीं जं शूलधृतिनेविजयाभ्यां नमः वाममणिबंधे। ॐ क्लीं श्रीं झं पाशिनेविरजाभ्यां नमः वामकराङ्गुलिमूले। ॐ क्लीं श्रीं ञं अंकुशेविश्वाभ्यां नमः वाम कराङ्गुल्यग्रे।

ॐ क्लीं श्रीं टं मुकुन्दो विनदाभ्यां नमः दक्षोरू मूले। ॐ क्लीं श्रीं ठं नन्दजो सुनंदाभ्यां नमः दक्षजानुनि। ॐ क्लीं श्रीं डं नंदी स्मृतिभ्यां नमः दक्ष गुल्फे। ॐ क्लीं श्रीं ढं नरो ऋद्धिभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले। ॐ क्लीं श्रीं णं नरकजितः समृद्धिभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ क्लीं श्रीं तं हरिः शुद्धिभ्यां नमः वामोरुमूले। ॐ क्लीं श्रीं थं कृष्णः भक्तिभ्यां नमः वाम जानुनि। ॐ क्लीं श्रीं दं सत्यः बुद्धिभ्यां नमः वाम गुल्फे। ॐ क्लीं ीं धं सात्त्वाय स्मृतिभ्यां नमः वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ क्लीं श्रीं नं शौरि क्षमाभ्यां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे।

ॐ क्लीं श्रीं पं शूरः रमाभ्यां नमः दक्षपार्श्वे। ॐ क्लीं श्रीं फं जनार्दनः उमाभ्यां नमः वामपार्श्वे। ॐ क्लीं श्रीं बं भूधर क्लेदिनीभ्यां नमः पृष्ठे। ॐ क्लीं श्रीं भं विश्वमूर्ति क्लिन्नाभ्यां नमः नाभौ। ॐ क्लीं श्रीं मं वैकुण्ठ वसुधाभ्यां नमः जठरे। ॐ क्लीं श्रीं यं पुरुषोत्तमाय वसुधाभ्यां नमः हृदये। ॐ क्लीं श्रीं रं बली अपराभ्यां नमः दक्षांसे। ॐ क्लीं श्रीं लं बालानुज परा परायणीभ्यां नमः ककुदि। ॐ क्लीं श्रीं वं बाल सूक्ष्माभ्यां नमः वामांसे।

ॐ क्लीं श्रीं शं वृषघ्न सन्ध्याभ्यां नमः हृदयादिदक्षकरान्तम्। ॐ क्लीं श्री षं वृष प्रज्ञाभ्यां नमः हृदयादि वाम करान्तम्। ॐ क्लीं श्रीं सं हंस प्रभानिशाभ्यां नमः हृदयादि दक्ष पादाग्रान्तं। ॐ क्लीं श्रीं हं वराह अमोघाभ्यां नमः हृदयादि वाम पादाग्रान्तं। ॐ क्लीं श्रीं लं विमल विद्युताभ्यां नमः हृदयादि नाभ्यान्तम्। ॐ क्लीं श्रीं क्षं नृसिंह कीर्तिभ्यां नमः हृदयादि शिरोन्तम्।

॥ श्रीकण्ठादि कलान्यासः॥

श्रीकण्ठादिन्यास शिव, मृत्युंजय एवं दुर्गा उपासना में श्रेयकर हैं।

विनियोग :- अस्य श्री कण्ठादिकलान्यासस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः। गायत्रीश्छन्दः। अर्धनारीश्वरो देवता हलो बीजानि स्वरा शक्तयश्चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धर्थे न्यासे विनियोगः।

॥ ध्यानम्॥

बन्धूक काञ्चननिभं रुचिराक्षमाला, पाशाङ्कुशौ च वरदं निजबाहुदण्डै ॥
विभ्राण मिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र, मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामः ॥

इसके बाद निम्न न्यास मंत्रों से मंत्र के सामने दिखाये गये अङ्गो में न्यास करें.......।

ॐ ह्सौं अं श्री कण्ठेश पूर्णेदरीभ्यां नमः मस्तके। ॐ ह्सौं आं अनन्तेश विरजाभ्यां नमः मुखवृत्ते। ॐ ह्सौं इं सुक्ष्मेश शाल्मलीभ्यां नमः दक्षिण नेत्रे। ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्ति लोलाक्षीभ्यां नमः वाम नेत्रे। ॐ ह्सौं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्ष कर्णे। ॐ ह्सौं ऊं अर्घीश दीर्घघोणाभ्यां नमः वाम कर्णे। ॐ ह्सौं ऋं भारभूतेश दीर्घमुखीभ्यां नमः दक्ष नासापुटे। ॐ ह्सौं ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां नमः वामनासापुटे। ॐ ह्सौं लृ स्थाण्वीश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः दक्ष गण्डे। ॐ ह्सौं लृं हरेश कुण्डोदरीभ्यां नमः दक्ष वाम गण्डे।

ॐ ह्सौं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृतमुखाभ्यां नमः अधरोष्ठे। ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेश ज्वालामुखीभ्यां नमः उर्ध्वदन्तपंक्तों। ॐ ह्सौं औं अनुग्राहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्त पंक्तौ। ॐ ह्सौं अं अक्रूरेश श्रीमुखिभ्यां नमः शिरसि। ॐ ह्सौं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः मुखमध्ये। ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः दक्षस्कन्धे। ॐ ह्सौं खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां नमः दक्षकर्पूरे। ॐ ह्सौं गं पञ्चान्तकेश सर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः दक्ष मणिबंधे। ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्य विद्याभ्यां नमः दक्ष कराङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं ङएकरुद्रेश मंत्रशक्तिभ्यां नमः दक्ष कराङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः वाम स्कन्धे। ॐ ह्सौं छं एक नेत्रेश मूलमातृकाभ्यां नमः वाम कर्पूरे। ॐ ह्सौं जं चतुराननेश लंबोदरीभ्यां नमः वाम मणिबंधे। ॐ ह्सौं झं अजेश द्राविणीभ्यां नमः वामकराङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं ञं सर्वेश नागरीभ्यां नमः वामकराङ्गुल्यग्रे।

ॐ ह्सौं टं सोमेश खेचरीभ्यां नमः दक्षोरूमूले। ॐ ह्सौं ठं लाङ्गलीश मञ्जरीभ्यां नमः दक्ष जानुनि। ॐ ह्सौं डं दारूकेश रूपिणीभ्यां नमः दक्ष गुल्फे । ॐ ह्सौं ढं अर्धनारीश वीरिणीभ्यां नमः दक्ष पादांगुलिमूले। ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः दक्ष पादाङगुल्यग्रे। ॐ ह्सौं तं आषाढीश पूतनाभ्यां नमः वामोरूमूले। ॐ ह्सौं थं दण्डीश भद्रकालीभ्यां नमः वाम जानुनि। ॐ ह्सौं दं अत्रीश योगिनीभ्यां नमः वाम गुल्फे। ॐ ह्सौं धं मीनेश शंखिनीभ्यां नमः वाम पादाङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं नं मेषेश तर्जनीभ्यां नमः वाम पादाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं पं लोहितेश कालरात्रिभ्यां नमः दक्ष पार्श्वे। ॐ ह्सौं फं शिखीश कुब्जिनीभ्यां नमः वाम पार्श्वे। ॐ ह्सौं बं छगलाण्डेश कपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे। ॐ ह्सौं भं द्विरण्डेश वज्राभ्यां नमः नाभौ। ॐ ह्सौं मं महाकालेश जयाभ्यां

नमः जठरे। ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीश सुमुखेश्वरीभ्यां नमः हृदये। ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजगेश रेवतीभ्यां नमः दक्षांसे। ॐ ह्सौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीश माधवीभ्यां नमः ककुदि। ॐ ह्सौं वं मेदात्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः वामांसे। ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां केश वायवीभ्यां नमः हृदयादि दक्ष करान्त। ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यांश्वेतेश रक्षोविदारिणीभ्यां नमः हृदयादि वाम करान्तं। ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजाभ्यां नमः हृदयादि दक्ष पादान्तं। ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीश लक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादि वाम पादान्तं। ॐ ह्सौं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः हृदयादि नाभ्यान्तं। ॐ ह्सौं क्षं परमात्मभ्यां संवर्तकेश मायाभ्यां नमः हृदयादि शिरोन्तं।

॥ भुवन न्यासः॥

ऐं क्लीं सौः अं आं इं अतल लोक शतकोटि गुह्याद्य योगिनी आधार देव्यैम्बो नमः-पादयोः ऐं क्लीं सौः ईं उं ऊं वितल लोक गुह्यान्ते शत संज्ञक नमः गुल्फयोः ऐं क्लीं सौः ॠं ॠं लृं सुतलं परमं गुह्य वाचिन्त्य संज्ञक नमः जंघयोः ऐं क्लीं सौः लृ एं ऐं महातल महागुह्योदि तंत्रकम् नमः जान्वोः ऐं क्लीं सौः ओं औं तलातल परमगुह्यं स्वाधिष्ठकम् नमः उरूवे ऐं क्लीं सौः अं अः रसातल रहस्यं ज्ञान संज्ञक नमः गुह्ये ऐं क्लीं सौः कं खं .... वर्ग पातालं स रहस्यतरं क्रियाम् नमः मूलाधारे ऐं क्लीं सौः चं .... वर्ग भू अति रहस्य डाकिनीमपि नमः स्वाधिष्ठाने ऐं क्लीं सौः टं.... वं भुव महारहस्यपदान्ते राकिनीमपि नमः नाभिदेशेमणिपूरे ऐं क्लीं सौः तं.... वर्ग स्वर्ग परम रहस्यं लाकिनी मपि नमः हृदयेअनाहते ऐं क्लीं सौः पं.... वर्ग महागुप्त काकिनीमपि नमः तालुमूलेविशुद्ध चक्रे ऐं क्लीं सौः यं वर्ग जनः गुप्ततरं शाकिनी मपि नमः आज्ञाचक्रे ऐं क्लीं सौः शं षं सं हं तपः अति गुप्त हाकिनी मपि नमः ललाटे ऐं क्लीं सौः लं क्षं सत्यः महागुप्तं याकिनी मपि नमः ब्रह्मरंध्रे।

॥ अथ देवीकलामातृका न्यासः॥

विनियोग :- अस्य देवीकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ॠषि, गायत्रीछंदः, श्रीमातृकाशारदा देवताः, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अमुक मंत्रांगत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीश्छंदसे नमो मुखे ॥२॥ शारदादेवतायै नमो हृदि ॥३॥ हलोबीजेभ्यो नमो गुह्ये ॥४॥ स्वरशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥६॥ ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ एं ॐ ऐं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट् ॥६॥ एवं करांगन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम्॥

शंख चक्राब्ज परशुं पालानक्षमालिकाः। पुस्तकातनुकुंभौ च त्रिशूलं दधती करैः ॥२॥
सितपीतसितश्वेत रक्तवर्णै स्त्रिलोचनैः। पंचास्यसंयुतां चंद्रसंक्रांतिं शारदां भजे ॥२॥

इति ध्यात्वा मातृका न्यसेत्।

मातृका न्यासः - ॐ अं निवृत्त्यै नमः ललाटे ॥१॥ ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते ॥२॥ ॐ इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे ॥३॥ ॐ ईं शांत्यै नमः वामनेत्रे ॥४॥ ॐ उं इंधकायै नमः दक्षकर्णे ॥५॥ ॐ ऊं दीपकायै नमः वामकर्णे ॥६॥ ॐ ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ॥७॥ ॐ ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे ॥८॥ ॐ लृं

परायै नमः दक्षकपोले ॥९॥ ॐ लृं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले ॥१०॥ ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥११॥ ॐ ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे ॥१२॥ ॐ ओं आप्यायिन्यै नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ ॥१३॥ ॐ औं व्यापिन्यै नमः अधोदंतपंक्तौ ॥१४॥ ॐ अं व्योमरूपायै नमः जिह्वायाम् ॥१५॥ ॐ अः अनंतायै नमः कंठे ॥१६॥ ॐ कं सृष्ट्यै नमः दक्षबाहुमूले ॥१७॥ ॐ खं ऋद्ध्यै नमः दक्षकूर्परे ॥१८॥ ॐ गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबन्धे ॥१९॥ ॐ घं मेघायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥२०॥ ॐ ङं कांत्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥२१॥

ॐ चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमूले ॥२२॥ ॐ छं द्युत्यै नमः वामकर्पूरे ॥२३॥ ॐ जं स्थिरायै नमः वाममणिबन्धे ॥२४॥ ॐ झं स्थित्यै नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥२५॥ ॐ ञं सिद्ध्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥२६॥ ॐ टं जरायै नमः दक्षपादमूले ॥२७॥ ॐ ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि ॥२८॥ ॐ डं क्षांत्यै नमः दक्षगुल्फे ॥२९॥ ॐ ढं ईश्वर्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ॥३०॥ ॐ णं रत्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥३१॥ ॐ तं कामिकायै नमः वामपादमूले ॥३२॥ ॐ थं वरदायै नमः वामजानुनि ॥३३॥ ॐ दं आह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे ॥३४॥ ॐ धं प्रीत्यै नमः वामपादांगुलिमूले ॥३५॥ ॐ नं दीर्घायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥३६॥ ॐ पं तीक्ष्णायै नमः दक्षपार्श्वे ॥३७॥ ॐ फं रौद्र्यै नमः वामपार्श्वे ॥३८॥ ॐ बं भयायै नमः पृष्ठे ॥३९॥ ॐ भं निद्रायै नमः नाभौ ॥४०॥ ॐ मं तंद्रिकायै नमः जठरे ॥४१॥ ॐ यं क्षुधायै नमः हृदि ॥४२॥ ॐ रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे ॥४३॥ ॐ लं क्रियायै नमः ककुदि ॥४४॥ ॐ वं उत्कार्य्यै नमः वामांसे ॥४५॥ ॐ शं मृत्युकायै नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ॥४६॥ ॐ षं पीतायै नमः हृदयादि वामहस्तांतम् ॥४७॥ ॐ सं श्वेतायै नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ॥४८॥ ॐ हं अरुणायै नमः हृदयादिवामपादांतम् ॥४९॥ ॐ क्षं असितायै नमः मूर्द्धादिपादांतम् ॥५०॥ ॐ ज्ञं अनंतायै नमः पादादिमूर्द्धांतम् ॥५१॥

॥ अथ शक्तिकला न्यासः॥

विनियोग - **अस्य श्री शक्तिकला मातृका न्यासस्य प्रजापति ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, श्रीमातृका शारदा देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, मातृकान्यासे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास - **ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः। ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं ॐ ऐं अनामिकाभ्यां कवचाय हुं। ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट्। इसी तरह करन्यास करें।**

॥ ध्यानम् ॥

शङ्ख चक्राब्ज परशु कपालेनाक्षमालिकाः, पुस्तकाऽमृतकुंभौ च त्रिशूलं दधतीं करैः।
सितपीतासित श्वेत रक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः, पंचास्यैः संयुक्तां चन्द्र स कांतिं शारदां भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै नमः ललाटे। ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते। ॐ ह्रीं इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे। ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे। ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै नमः दक्षिण कर्णे। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे। ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे। ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे। ॐ ह्रीं लृं पराभिधायै नमः दक्षगण्डे। ॐ ह्रीं लॄं सूक्ष्मायै नमः वामगण्डे। ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे। ॐ ह्रीं ओं आप्यायन्यै नमः उर्ध्वदंतपंक्तौ। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै नमः अधोदंतपंक्तौ। ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै नमः शिरसि। ॐ ह्रीं अः अनन्तायै नमः मुखे। ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै नमः जिह्वाग्रे। ॐ ह्रीं खं ऋद्धिकायै नमः कण्ठदेशे। ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्षबाहुमूले। ॐ ह्रीं घं मेघायै नमः दक्षकपूरे। ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै नमः दक्षमणिबन्धे। ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै

नमः दक्षहस्तांगुलिमूले। ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं जं स्थिरात्यै नमः वामबाहुमूले। ॐ ह्रीं झं स्थित्यै नमः वाम कपूरे। ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै वाममणिबन्धे।ॐ ह्रीं टं जरायै नमः वामहस्तांगुलिमूले। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं डं क्षान्त्यै नमः दक्षपादमूले। ॐ ह्रीं ढं ईश्वरिकायै नमः दक्षजानुनि। ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः दक्षपादगुल्फे। ॐ ह्रीं तं कामिकायै नमः दक्षपादांगुलिमूले। ॐ थं वरदायै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं दं आह्लादिन्यै नमः वामपादमूले। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै नमः वामजानुनि। ॐ बं भयाये नमः दक्षपार्श्वे। ह्रीं नं दीर्घायै नमः वाम गुल्फे। ॐ ह्रीं पं तीक्षणायै नमः वामपादांगुलिमूले। ॐ ह्रीं फं रोद्रयै नमः वामपादांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः वामपार्श्वे। ॐ ह्रीं मं तंद्रिकायै नमः पृष्ठे। ॐ ह्रीं यं क्षुधायै नमः उदरे। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः हृदि। ॐ ह्रीं लं क्रियायै नमः दक्षांसे। ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै नमः ककुदि (गर्दन में)। ॐ ह्रीं शं समृत्युकायै नमः वामांसे। ॐ ह्रीं षं पीतायै नमः हृदयादि दक्षहस्तांतम्। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः हृदयादि वामहस्तांतम्। ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः हृदयादि दक्षपादान्तम्। ॐ ह्रीं लं सितायै नमः हृदयादि वामपादान्तम्। ॐ ह्रीं क्षं अनन्तायै नमः हृदयादि मस्तकान्तम्।

॥ १. श्रीकण्ठादिन्यासः ॥

श्रीकण्ठादिन्यास, केशव कला मातृकान्यास अन्यत्र स्थान पर पुस्तक में दिये गये है।

॥ अथ षोढान्यासः ॥

॥ १. शुद्धमातृकान्यासः ॥

अं आं .... लृं लॄं नमो हृदि। एं ऐं .... अं अः कं .... घं नमो दक्षभुजे। ङं चं .... ढं नमो वामभुजे। णं तं .... भं नमो दक्षपादे। मं .... लं क्षं नमो वामपादे।

॥ २. द्वितीय न्यासः ॥

श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमो ललाटे। श्रीं आं श्रीं आं श्रीं आं नमो मुखवृत्ते। श्रीं इं श्रीं इं श्रीं इं नमो दक्ष नेत्रे। श्रीं ईं श्रीं ईं श्रीं ईं नमो वामनेत्रे। श्रीं उं श्रीं उं श्रीं उं नमो दक्षकर्णे। श्रीं ऊं श्रीं ऊं श्रीं ऊं नमो वामकर्णे। श्रीं ऋं श्रीं ऋं श्रीं ऋं नमो दक्षनासायाम्। श्रीं ॠं श्रीं ॠं श्रीं ॠं नमो वामनासायाम्। श्रीं लृं श्रीं लृं श्रीं लृं नमो दक्षकपोले। श्रीं ऋं श्रीं ऋं श्रीं ऋं नमो वामनासायाम्। श्रीं लॄं श्रीं लॄं श्रीं लॄं नमो वामकपोले। श्रीं एं श्रीं एं श्रीं एं नमो उर्ध्वोष्ठे। श्रीं ऐं श्रीं ऐं श्रीं ऐं नमो अधरोष्ठे। श्रीं ओं श्रीं ओं श्रीं ओं नमो उर्ध्वदन्तपंक्तौ। श्रीं औं श्रीं औं श्रीं औं नमो अधोदन्तपंक्तौ। श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमो मूर्द्धनि। श्रीं अः श्रीं अः श्रीं अः नमो मुखे। श्रीं कं श्रीं कं श्रीं कं नमो दक्षबाहुमूले। श्रीं खं श्रीं खं श्रीं खं नमो दक्षिण कर्पूरे। श्रीं गं श्रीं गं श्रीं गं नमो दक्षिणमणिबन्धे। श्रीं घं श्रीं घं श्रीं घं दक्षिणहस्तांगुलिमूले। श्रीं ङं श्रीं ङं श्रीं ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे। श्रीं चं श्रीं चं श्रीं चं वामबाहुमूले। श्रीं छं श्रीं छं श्रीं छं नमः वामकर्पूरे। श्रीं जं श्रीं जं श्रीं जं वाममणिबन्धे। श्रीं झं श्रीं झं श्रीं झं नमः वामहस्तांगुलिमूले। श्रीं ञं श्रीं ञं श्रीं ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। श्रीं टं श्रीं टं श्रीं टं नमः दक्षिणपादमूले। श्रीं ठं श्रीं ठं श्रीं ठं नमः दक्षिणजानुनि। श्रीं डं श्रीं डं श्रीं डं नमः वाम दक्षिणगुल्फे। श्रीं ढं श्रीं ढं श्रीं ढं नमो दक्षिण पादांगुलिमूले। श्रीं णं श्रीं णं श्रीं णं नमो दक्ष पादांगुल्यग्रे। श्रीं तं श्रीं तं श्रीं तं नमो वाम पादमूले। श्रीं थं श्रीं थं श्रीं थं नमो वाम जानुनि। श्रीं दं श्रीं दं श्रीं दं नमो वामगुल्फे। श्रीं धं श्रीं धं श्रीं धं नमो वामपादांगुलिमूले। श्रीं नं श्रीं नं श्रीं नं नमो वामपादांगुल्यग्रे। श्रीं पं श्रीं पं श्रीं पं नमो दक्षपार्श्वे। श्रीं फं श्रीं फं श्रीं फं नमो वामपार्श्वे। श्रीं बं श्रीं बं श्रीं बं नमः पृष्ठे। श्रीं भं श्रीं भं श्रीं भं नमो नाभौ। श्रीं मं श्रीं मं श्रीं मं नमः उदरे। श्रीं यं श्रीं यं श्रीं यं त्वगात्मने नमः हृदि।

श्रीं रं श्रीं रं श्रीं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे। श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं मांसात्मने नमः ककुदि। श्रीं वं श्रीं वं श्रीं वं मेदात्मने नमः वामांसे। श्रीं शं श्रीं शं श्रीं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम्। श्रीं षं श्रीं षं श्रीं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वामहस्तान्तम्। श्रीं सं श्रीं सं श्रीं सं शुक्रात्मने हृदयादि दक्षपादान्तम्। श्रीं हं श्रीं हं श्रीं हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्ताम्। श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं परात्मने नमः हृदये। श्रीं क्षं श्रीं क्षं श्रीं क्षं प्राणात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम्।

॥ ३. तृतीय न्यासः ॥

प्रत्येक अंग पर **क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं** उच्चारण करते हुये न्यास करें।

यथा- **क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो ललाटे। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मुखवृत्ते। दक्षनेत्रे। वामनेत्रे। दक्षकर्णे। वामकर्णे। दक्षनासयाम्। वामनासायाम्। दक्षकपोले। वामकपोले। उर्ध्वोष्ठे। अधरोष्ठे। उर्ध्वदन्तपंक्तौ। अधोदंतपंक्तौ। मूर्द्धनि। मुखे। दक्षिणबाहुमूले। दक्षिण कर्पूरे। दक्षिण मणिबन्धे। दक्षकरांगुलिमूले। दक्षकरांगुल्यग्रे। वामबाहुमूले। वामकर्पूरे। वाममणिबन्धे। वामकरांगुलिमूले। वामकरांगुल्यग्रे। दक्षिणपादमूले। दक्षिणजानुनि। दक्षगुल्फे। दक्षपादांगुलिमूले। दक्षपादांगुल्यग्रे। वामपादमूले। वामजानुनि। वामगुल्फे। वामपादांगुलमूले। वामपदांगुल्यग्रे। दक्षपार्श्वे। वामपार्श्वे। पृष्ठे। नाभौ। उदरे। त्वागात्मने नमः हृदि। असृगात्मने नमः दक्षांसे। मांसात्मने नमः ककुदि। मेदात्मने नमः वामांसे। अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम्। मज्जात्मने नमः हृदयादि वामहस्तान्तम्। शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम्। आत्मने नमः हृदयादि वाम पदान्तम्। परामात्मने जठरे(हृदये)। प्राणात्मने हृदयादि मस्तकान्तम्।**

॥ ४. चतुर्थ न्यासः ॥

तृतीय न्यास या सृष्टिन्यास के अंगो में "**ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः**" युक्त कर न्यास करें। यथा- ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः ललाटे।

॥ ५. पंचम न्यासः ॥

तृतीय न्यास या सृष्टिन्यास के अंगो में "**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै हां हां ॠं ॠं क्लूं नमः**" से ललाटादि सभी न्यास करें।

॥ ६. षष्ठं न्यासः ॥

तृतीय न्यास या सृष्टिन्यास के अंगो में "**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै नमः**" से युक्त सृष्टिक्रम के सभी न्यास करें।

॥ ७. सप्तम न्यासः ॥

संहारक्रम (विलोम क्रम) से "**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै नमः**" हृदयादि मस्तकान्तम्। से ललाटे तक न्यास करें।

॥ ८. तत्त्व न्यासः ॥

ऐं ह्री क्लीं आत्मतत्त्वाय नमः पादादि नाभिपर्यन्तम् । चामुण्डायै शिवतत्त्वाय नमः नाभ्यादि हृदयान्तम्। विच्चे परमतत्त्वाय नमः हृदयादि शिरः पर्यन्तम्।

॥ ९. अक्षर न्यासः ॥

ऐं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रीं नम भ्रुवोर्मध्ये। क्लीं नमः ललाटे। चां नमः हृदि। मुं नमो कुक्षयोः। डां नमः नाभौ। यैं नमः लिङ्गे। विं नमो गुह्ये। च्चें नमः वक्त्रे।

॥ इति विविधन्यासाः ॥

॥ मंत्र जाग्रति हेतवे मृत संजीवनी मन्त्र विद्या ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीमृतसंजीवनी महामन्त्रस्य ॐ सदाशिव ऋषिः। ॐ गायत्रीच्छंदः। ॐ पराशक्ति देंवता। ॐ हं बीजं। ॐ सौं शक्तिः। ॐ हं कीलकं। ॐ श्रीं पराशक्ति प्रीत्यर्थं सर्व मंत्र संजीवनार्थं शीघ्रं उपनामं प्रसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।**

करन्यास न्यास :- **ॐ हंसां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हंसीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। । ॐ हंसूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ हंसैं अनामिकाभ्यां हूँ। ॐ हंसौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्। ॐ हंसः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।**

हृदयादि न्यासः- - **ॐ हंसां हृदयाय नमः। ॐ हंसीं शिरसे स्वाहा। ॐ हंसूं शिखाये वषट्। ॐ हंसैं कवचाय हूँ। ॐ हंसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हंसः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

ॐ नमो भगवति मंत्रमातृके अक्षमालिके सर्वदा स्फुरसि सर्वहृदि वससि नमस्ते परारूपे। नमस्ते पश्यंती रूपे। नमस्ते मध्यमारूपे। नमस्ते वैखरी रूपे। सर्व तत्वात्मिके। सर्व विद्यात्मिके। सर्व शक्त्यात्मिके। सर्व मन्त्र शाप विमोचनि। सर्वं मंत्र संजीवनि। सर्व देवतात्मिके भगवति मंत्रमातृके अक्षमालिके नमस्ते नमस्ते नमस्ते। इति ध्यात्वा।

मन्त्रो यथा - **ॐ ह्रीं श्रीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ अं आं इं ईं ह्लीं हैं ह्रीं जूं सः सर्वमंत्रान् संजीवय- संजीवय स्वाहा। ॐ ह्रीं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ उं ऊं ऋं ॠं सर्वमंत्र यंत्राणां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ लृं लॄं ॐ ह्रीं हंसः सोहं रं रं रं सर्व मंत्रान् संजीवय संजीवय कुरु कुरु स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ एं ऐं ॐ ह्रीं रं रं रं सर्वमंत्राक्षराणां उत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ओं औं अं अः ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व मंत्र यंत्र तंत्रादीनां संजीवय संजीवय रं रं रं ठः ठः ठः सर्व मंत्र संजीवन कुरु कुरु स्वाहा। ॐ त्वमाद्यानंत शक्ति स्तवं प्रवाहो जायते त्वया। सास्मृता पूजिता ध्याता योगिनामपि सिद्धिदा॥ ॐ त्वया बद्धा सर्व देवा भ्रमंति निज कर्मणा। सा तुष्टा सर्व मंत्राणां अमृता सिद्धि दायिनि॥ ॐ मंत्र संजीवनी विद्या वसिष्ठेन च साश्रिता। सिद्धिदा सर्व मंत्राणां सदाशिव प्रसादतः॥ जपादौ बा पाठादौ वा जपान्ते वा पाठान्ते। सप्तवारं पठित्वा तु शीघ्रं सिद्धिं लभेन्नरः॥**

॥ इति मृत संजीवनी शुक्र विद्या ॥

॥ षट्कर्म प्रयोग कामनाविधि ॥

॥ शिव पार्वती संवादे ॥

बुद्धिमान मनुष्य मारण में दश लाख, मोहन में बारह लाख, उच्चाटन में चौबीस लाख, वशीकरण में एक करोड जप करे। क्षत्रियों के स्तम्भन में सोलह लाख, विद्वेषण में तेरह लाख जप करना चाहिये, वैश्य के लिये इसका आधा जप कहा गया हैं। ब्राह्मण में इसका दूना तथा शूद्रों में एक चौथाई तथा स्त्रियों में दूना क्योंकि वह शक्तिरूपिणी हैं।

(प्राचीन समय में सभी व्यक्ति नित्यकर्मी व उपासक होते थे अतः उन पर प्रयोग की संख्या भी अधिक होनी चाहिये इसलिये संख्या अधिक लिखी गई है।)

॥ मारण प्रयोगः॥

स्त्रियों में मारण वर्जित हैं इसलिए उनमें अन्य कर्म कराये। जो मोहवश स्त्रियों में मारण करता हैं उसकी निःसंशय मृत्यु होती हैं। मारण, स्तम्भन, वशीकरण तथा उच्चाटन विधि में दक्षिण दिशा अथवा शत्रु के घर की दिशा की ओर मुख, मोहन में पश्चिम दिशा की ओर मुख, विद्वेषण में उत्तर मुख करना चाहिये। मारण में काला कम्बल तथा काला परिधान, मोहन में पीला आसन तथा पीला परिधान, उच्चाटन में लाल आसन तथा लाल परिधान, वशीकरण में सफेद आसन तथा सफेद परिधान, स्तम्भन में चितकबरा आसन तथा चितकबरा परिधान, विद्वेषण में धूमिल आसन तथा धूमिल परिधान होना चाहिये।

मारण में वीरासन, मोहन में कमर को झुकाकर, उच्चाटन में त्रिकोण तथा वशीकरण में एकोर्धपादक, स्तंभन में कमल, विद्वेषण में पृष्ठपातक आसन सिद्धिदायक होते हैं। ये बद्धासन कहे गये हैं। अब प्रयोगों की विधि सुनो।

कर्त्तव्यदिवस से पहले स्नान के लिए बुद्धिमान् चिन्तन करे। बीस दिन तक शरीर की वाम विधि करनी चाहिये। हे मदिराक्षि! निश्चित रूप से शरीर का शोधन करना चाहिये। हे सुभ्रु! द्विज का पादोदक, सौ तालाबों का जल, आठ कूपों का जल, नौ नदियों का जल, छ तलैयों का जल, यह सब जल संग्रह करके ताम्र के पात्र में डाल देवे। मौलसरी, पीपल, बरगद तथा नीम के पत्ते गोदुग्ध से पीसकर बुद्धिमान स्नान करे। इसके बाद लाल चंदन से ललाट में त्रिपुण्ड धारण करके आसन पर काला कम्बल बिछा कर स्वयं कालेवस्त्र पहन कर मारण में दक्षिण दिशा में मुख करके वीर के समान बैठे।

दूसरा भूमिशोधन का कर्म सुनो। सुधी मारण के लिये अष्टकोण भूमिस्थल बनाये। पाँच कुओं से एक हाथ से निकाला गया जल ग्रहण करे। श्मशान भस्म, सिन्दूर, बकरे का खून, तिल, वृद्धगाय का गोबर, बसवारी की मिट्टी इन सब से अष्टकोण युक्त भूमि को लीपे। हे प्रिये! अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से रक्त लेकर भाँगरे का रस, लाल चन्दन, केसर, कपूर, केले के पत्र का रस, हिंगुल यह सब पीसकर लेप तैयार करे । श्मशान की लकडी से नव अंगुल की कलम बनाकर सुधी नवार्ण मन्त्र लिखे। हे शुभे! जगन्माता तथा मन्त्रराज की पूजा सुनो। हे भामिनि! लाल चन्दन मिश्रित अपनी बाईं जांघ का खून, सरसों के तेल के साथ केले के जल में पीसकर सात समान कुशों को उनसे बाँध कर उसी के बाएँ हाथ से यन्त्र को स्नान कराये। लाल फूल, लाल चन्दन, लाल सूत तथा चावल, सिन्दूर, बरगद का दूध तथा बिम्बाफल, हे विशालाक्षि! इन सबों को साधक सदा शोधन करे। इनसे यन्त्र की पूजा करे। इससे महामाया प्रसन्न होती है। यन्त्र पूजन का मंत्र यह हैं: ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते।

गोरोचन, काश्मीरवन सम्भूत कपूर, इलाइची लवंग, कस्तूरी, शराब, लम्बकर्ण का मांस, गोघृत, गाय का दूध, देवदारु, चीनी, लाल चन्दन, सफेद चंदन, नागरमोथा, तगर, बालक्षर, मोहनगन्धी, इन सब को पीसकर एक में मिला लेवे। इसे धूप मन्त्र से धूपित करे तो कार्यसिद्धि होती हैं। सात बार मन्त्र को पढ़कर गद्गद आकृति वाला होकर एकाग्रचित्त हो बुद्धिमान मनुष्य धूप दे। धूप देने का मन्त्र यह हैं-

ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्याखिलेश्वरि एवमेतत्त्वया: कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।

हे देवि! मारण में दीप को ही कारण कहा जाता हैं। लोहे का दीप बनाना चाहिये और तील का तेल उसमें डालना चाहिये। पीली सरसों का तेल, अगर, कपूर, नीम का तेल निश्चित है। हे भामिनी! बायें हाथ में श्मशान से सूत्र लाकर तीन अंगुल लम्बी बत्ती बनानी चाहिये। तीन अंगुल माप की त्रिकोण पृथ्वी को लीप कर उसके बीच नवाक्षर युक्त यन्त्र लिखना चाहिये। बांस की नौ अंगुल लम्बी कमल बनानी चाहिये। यन्त्र को लालचन्दन से मधु से लिखना चाहिये यन्त्रराज

के नीचे भाग के निकट स्थापित करे। इस दीप में रक्तप्रिय, जलती जीभवाली, रुधिरप्रिय, कालिका, महामाया, शत्रुसंहारिणी को सदा ध्यान करे। इससे ध्यान करके लाल चन्दन से महामायाकी पूजा करे एवं इनसे तथा स्तुतियों से यह मन्त्र में निवेदित करे।

केले के सूत से गुँथी हुई सर्प की हड्डियों की माला हे देवि! मारण तथा साधकों के हित के लिए कही गयी हैं। चण्डिका के लिए यन्त्रराज में पान के बीड़े की पूजा करके बाद में सुधी एक-एक उठाकर धीरे-धीरे चबाये। जब तक जप की समाप्ति न हो तब तक पान को चबाना चाहिये। दश लाख मन्त्र का जप करे। वैश्य में आधा कहा जाता हैं। हे देवि! ब्राह्मण में दूना तथा शूद्र में चौथाई कहा गया हैं । स्त्रियों के लिए दूना कहा गया हैं क्योंकि वे शक्तिरूपिणी हैं।

हे वामे! गाय, भैंस, का घी, बकरी का दूध, लवंग, कपूर, सरसों, हिंगुल, हे शुभे! गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बनी पूड़ी। चिंचिडी काष्ठ लाकर त्रिकोण कुण्ड खोदे। लकड़ियों को चार अंगुल का करके चण्डिका का उपासक होम करे। मैंने मारण में यह नवाक्षर मन्त्र कहा हैं।

मंत्र - १. ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्त रं रं खे खे मारय मारय शीघ्रं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

२. एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महाऽसुरम्। पादेनाऽऽक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।

मारण , मोहन तथा वशीकरण में एक बार भोजन कहा गया हैं। हे देवि! तीसरे पहर नमक वर्जित भोजन करना चाहिये। हे सुभ्रु! हे प्रिये! उड़द की दाल, चावल, दोनों मिलाकर गाय का घी शहद से युक्त दूध में मिलाकर खाना चाहिये।

हे देवि! भोजन के अभाव में जो प्राप्त हो वही भोजन करे। भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल होता है। हे प्राणवल्लभे! मन्त्रराज की यह विधि मैंने बता दी।।

॥ इति मारण प्रयोग ॥

॥ मोहन प्रयोगः॥

हाथी के पैर का जल, सात बावली का जल, तीन तालाबों का जल, तथा दो नदियों का जल जलसंग्रह में कहा गया है। इनके जल लाकर मिट्टी के घड़े में रखें। हे सुज्ञे! आम के पत्ते, आम के फल, आँवले और सत्यानाशी के पत्ते, भेड़ी के दूध के साथ पीस कर साधक स्नान करे। पीले चन्दन से ललाट में त्रिपुण्ड़ धारण करे। बुद्धिमान मोहन में पीला आसन तथा पीला वस्त्र धारण करे और कटिनम्रासन सें पश्चिम ओर मुख करके बैठे।

भूमि के शोधन का दूसरा कर्म भी सुनो। हल्दी, केतकी के पत्ते, बांस के पते, गुड, तीनों धूप से पादोद्धृत जल लाकर बाछे का गोबर, नदियों के संगम की मिट्टी इनसे आधी भूमि लीप कर आधी बिना लीपी संयुक्त भूमि जो मैंने मोहन में त्रिकोण से कही हैं छोड़ दे। साधक अपने वाम पैर का रक्त लेवे। कपूर, सोंठ, भाँग, मदार (अर्क) का दूध, चावल, सफेद चन्दन सुधी एक में पीसे। नीम की लकड़ी की चार अंगुल की कलम बनानी चाहिये। उसमें महामाया का मोक्षदायक मन्त्र लिखे।

हे शुभे! जगन्माता तथा मन्त्रराज क़ा पूजन सुनो। कपूर, गन्ने का रस, चावल का चूर्ण, काले तिल का तेल, तीन बँधे कुश, दूब से बँधे दर्भ, इनसे बुद्धिमान स्नान करे।

काले फूल, काला काजल, काला चावल, काला सूत, सिन्दूर, गाय का दूध, तथा जौ इनसे मोहन में यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये।

पूजा का मन्त्रः – ''ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बालादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।'' इति मन्त्रेण पूजयेत्। हे शुभे! इसके बाद आद्य धूप की निर्मल विधि सुनो।

कपूर, भाँग के पत्ते, सफेद मदार के फूल, बकरी का घी, गाय का घी, भैंस का दूध, अष्टगन्ध, चीनी, मधु, गुगुल, लोहे का बाण (लौभान), रेण के बीज, इन सब को पीस कर बुद्धिमान मिलाये। उड़द के बराबर सुधी मछली का मांस उसमें ड़ाले। इससे धूप मन्त्र के द्वारा मन्त्रराज पर धूप देवे।

धूपमन्त्रः – शक्रादयः सुरगणा निहितेऽतिवीर्ये, तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या। तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्र शिरोधरांसा, वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः फट्।

साधक गद्गद आकृति होकर दश बार इस मन्त्र का पाठ करे। एकचित्त होकर मनको एकाग्र करके विलक्षण साधक धूप देवे। कांसे का दीपक बनाना चाहिये, तेल सफेद तिल का होना चाहिये। काला तेल, श्रीफल का तेल, सफेद चीनी, मधु, लाल वस्त्र जो मार्ग में गिरा हो उसे लाकर सात अंगुल उसी से बत्ती बनाकर विद्वान् चौकोर दो अंगुल भूमि को लीपे। उसमें प्रेम से मध्य में साधक यन्त्रराज को लिखे। हे प्रिये! दूब की सात अंगुल लम्बी कलम बनानी चाहिये। हे शुभानने! कपूर और हल्दी से यन्त्र को लिखे। उसे यन्त्रराज के तीन अंगुल ऊपर स्थापित करे। बुद्धिमान पीली सरसों तथा चावल से केसर की पूजा करे। इस दीप में शुभ प्रसन्नवदना महामाया क्लेशनाशिनी कात्यायनी देवी का ध्यान करे। इस प्रकार कात्यायनी का ध्यान करके पीले चन्दन से पूजा करे। हे वीर! यह सब मैंने बताया है, इसे मन्त्र में निवेदन करे। इस प्रकार मैंने दीप बतलाया हैं, अब माला की विधि सुनो।

नीम के बीजों को घोड़े के बाल से गूंथना चाहिये। हे प्राणवल्लभे! मोहन कर्म में माला की यह विधि है। चण्डिका के मन्त्रराज में पान के बीड़े चढ़ाकर बाद में एक-एक उठा कर सुधी धीरे-धीरे चबाते हुए जब तक जप समाप्त न हो तब तक बुद्धिमान चण्डिका सेवक को चबाना चाहिये। बारह लाख जप करे। वैश्यों में आधा कहा जाता है। हे देवि! ब्राह्मण में दूना, शूद्रों मे चौथाई तथा स्त्रियों में दूना कहा गया हैं क्योंकि वह शक्तिरूपिणी हैं। नित्य जप के बाद दशांश से हवन करना चाहिये।

हे देवि! बकरी तथा भेड़ का घी, गाय का दूध, चावल, जव, कपूर, तज, जव का भात इलाइची तथा शक्कर से युक्त। आम की समिधा लाकर पाँच कोनों वाला कुण्ड बनाये। सात अंगुल लम्बी समिधाएँ काट कर साधक.सदा होम करे। मैंने मोहन में षट्कर्म नवाक्षर मन्त्र बतलाया हैं। मारण, मोहन और वशीकरण में एक बार भोजन कहा जाता हैं। हे देवि! तीसरे पहर क्षार से वर्जित भोजन, उड़द की दाल, चावल मिलाकर गाय के घी तथा मधु से युक्त दूध से खाना चाहिये। देवी के भोजन के अभाव में जो प्राप्त हो वही खाना चाहिये। भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल होता हैं।

॥ उच्चाटन प्रयोगः ॥

हे वामे! बैल के पैर का जल, तीन कूओं का जल, एक तालाब का जल लाकर काठ के घडे में डाले। बेर और बबूल के पत्ते, इमली का फल, तीसी उरुथ के दूध में पीसकर ब्राह्मण उच्चाटन में स्नान करे।

भूमिशोधन रूप उत्तम दूसरा कर्म सुनो। नील के पत्ते, भाँग, सफेद मदार के पत्ते, जव तथा एक कूएँ से पैर से निकाला गया पानी,

बछिया का गोबर, बांबी की मिट्टी, इन सब से गोल बनाई गई भूमि का शोधन करे। ललाट में लाल चन्दन से त्रिपुण्ड धारण करके लाल आसन, लाल परिधान से विभूषित त्रिकोण पर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे। अपने बाएँ बगल से साधक रक्त लेकर नीम की लकड़ी, बेल की लकड़ी, बेर की लकड़ी, अद्रक का रस, हींग, हिंगुपत्री

(वाटिका) का रस, सुधी इन सब को लाकर पीस कर मिश्रण तैयार करे। बाहर अंगुल आकार की अनार की कलम बनवाये। उससे स्वयं नग्न होकर बाँए हाथ से लिखे।

हे शुभे! जगन्माता का तथा यन्त्रराज का पूजन सुनो। हल्दी, सफेद चन्दन, हरिताल, जल, वचा केले के रेशे से एक में बँधे पाँच कुश इनसे शक्ति के शुभ शरीररूपी यन्त्र को प्रीतियुक्त मन से नहलाये।

स्नानमंत्रः - ॐ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरीशुभानि भद्राण्यर्भिहान्तुचापदः। पीले फूल, पीला चन्दन, पीला चावल, पीला सूत, सिन्दूर, बकरी का दूध इनसे बुद्धिमान साधक प्रेमपूर्वक मन्त्रराज की पूजा करे।

महुए के फल और फूल, गुग्गुल, दोनों चन्दन, हल्दी, हरिताल, देवरारु, नागरमोथा, चीनी, लवङ्ग, कपूर, शराब, बालछड़ मधु, भेड़ी का घी, गाय का घी, भैंस का घी, इन सबको पीसकर उत्तम धूप बनाये। धूप मंत्र से देवता को धूप देने से निश्चित रूप से कार्य सिद्धि होती है। साधक गद्‌गदाकृति होकर चार बार मंत्र को पढें। एकचित्त होकर सुधी धूपदान करे।

धूपमन्त्रः - **ॐ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे क्लीं।**

हे वरानने! मिट्टी का दीपक बनाना चाहिये। आँवले का तेल, रेंड का तेल, महुए का तेल, पीले वस्त्र की बत्ती तीन अंगुल परिमाण की बनाये। गोबर, मिट्टी से भूमि को लिपे। हे प्रिये! तीन अंगुलियों से बायीं ओर सुधी यन्त्र लिखे। अनार की कलम बनानी चाहिये। मधु तथा घी युक्त गेहूं का आटा, गेरू, लाख, इनसे बाएँ ओर यन्त्र लिखे और पूर्वदक्षिण और स्थापित करे। पाँचों अंगुलियों से लाल चन्दन से पूजा करे। दीप के बीच, हे पार्वति! **दुर्गतिनाशिनी** दुर्गा का ध्यान करे। **'एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।'** इस मन्त्र से दीप दे।

उच्चाटन में मूँगे की माला ऊन के धागे में गूथकर चण्डिका के यन्त्रराज में पान के बीड़ी की पूजा करने के बाद एक-एक बीड़ा निकाल कर सुधी धीरे-धीरे चबाये। जब तक जप समाप्त न हो तब तक विचक्षण चण्डिका-भक्त को पान चबाना चाहिये। मन्त्र को चौबीज लाख जप कहा गया हैं।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे देवदत्त फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहेति मन्त्र जपेत्। वैश्य में बारह लाख, हे देवि! ब्राह्मण में दुगना, शूद्रों में चौथाई, तथा स्त्रियों में दूगना कहा गया हैं क्योंकि वह शक्तिरूपिणी हैं। जप के बाद दशांश से नित्य होम करना चाहिये।

गाय की घी, भैंस का दूध, चावल पीली सरसों, देवदारु, लवङ्ग, बेल का रस, पञ्चकोण कुण्ड बनाकर सात अंगुल लम्बी बबूर की समिधाओं से भक्तिभाव से होम करे। छः प्रयोगों में आहुति के लिये नवार्णमन्त्र कहा गया हैं। उच्चाटन में जौ तथा तिल का चूर्ण गुड से मिलाकर रोटी, बनाकर राजमाष की दाल हल्दी के बिना बाएँ हाथ से, हे शुभे तीसरे पहर खाना चाहिये।

॥ वशीकरण प्रयोगः॥

हे प्राणरंजने! हिरन के पैर से उद्धृत जल, एक कूएँ का जल, ग्यारह तालाबों का जल, नदियों के सङ्गम का जल, हे कान्ते! घड़े में छोड़कर वशीकरण कर्म से इस जल को भैंस के दूध से सुधी पीसे। हे वामे, हे प्रिये! इन्द्रियों को वश में करके द्विज स्नान करके ललाट में लालचन्दन से त्रिपुण्ड धारण करके सफेद आसन पर सफेद परिधान पहन कर, स्वयं बैठकर दक्षिणाभिमुख एक पैर ऊपर करके बैठे।

दूसरा उत्तम कर्म भूमिशोधन सुनो। नीम के पत्ते, हींग, नींबू का रस, मधु, दाहिने हाथ से निकाला हुआ सात कुओं

का जल, तथा नन्दी का गोबर वशीकरण कर्म में भूमि लीपने के लिए लेना चाहिये। वशीकरण कर्म में चौकोर भूमि बनानी चाहिये। हे देवि! अपने सिर का रक्त बाएँ हाथ से निकाले। हे सुभ्रु! भाँगरे का रस, गाय का दूध, मधु, सिन्दूर, कपूर, देवदारु के छाल का रस, एक में सब मिलाकर, सात अंगुल प्रमाण की दूब की लेखनी बनाकर उसके पृष्ठभाग से लिखें।

हे शुभे! तुम जगन्माता के यन्त्रराज का पूजन सुनो। गाय का दूध,भैंस का दूध, बकरी का दूध, भेंड का दूध, इलायची के फल से प्राप्त जल, कपूर, सफेद चन्दन, चन्दन का तेल, सूत, तथा पाँच कुशा (हे प्रिये! कुशा ग्यारह कहे गये हैं) इनसे स्नान करना चाहिये। हे प्रिये! सफेद फूल, सफेद गंध, सफेद चावल, सफेद सूत, सिन्दूर, भैंस का दूध, तिल का तेल, गुड से हे शुभे! महामाया को प्रिय यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये।

उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् तथा विविधमुत्पातं महात्पातं शमयेन्मम् इति मन्त्रेण सर्वं दद्यात्।

हे शुभे! सफेद तथा लाल चन्दन, आम का बीज, अनार हे सुभ्र! नीम के बीज का छिलका, देवरारु, गेरू, हल्दी, गुग्गुल, सफेद सरसों, सफेद जीरा, काला जीरा, लौंग, कस्तूरी, नींबू का उत्तम रस, पीपर, शकर, गोरोचन, भेंड का घी, गाय का दूध, इनको खूब पीसकर कुशल साधक गद्‌गदाकृति होकर धूपमन्त्र से धूप देवे। एकचित्त तथा शान्त होकर बुद्धिमान व्यक्ति धूप देवे।

धूप देने का मन्त्रः- **''शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानि : स्वनेन च।''** पञ्चोद्धारण स्वाहा। इति मन्त्रेण धूपयेत्।

हे देवि! वशीकरण की कामना में दीप ही कहा जाता हैं। दीप पीतल का बनाना चाहिये। तेल नीम या सरसों का होना चाहिये। हे देवि! मदार की रूई से तीन अंगुल की बत्ती बनानी चाहिये। हे सुभ्रू! पाँच अंगुल परिमाण की शुभ भूमि को लीपे। हे प्रिये! उसमें दक्षिणपार्श्व में यन्त्रराज को लिखे।

पाँच अंगुल परिमाण की विष्णु वृक्ष(पीपल?) की लेखनी बनानी चाहिये। सिन्दूर और पीली सरसों से यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये। मदार का दूध, गाय का दूध, बकरी का दूध, हल्दी , हे देवि! इससे चण्डिकाप्रिय साधक यन्त्र को लिखे। इस दीप में कमल पर बैठी कालिका का सदा ध्यान करना चाहिये। हे देवि! वह देवी भुक्ति और मुक्ति का देने वाली तथा सुन्दर हास से युक्त हैं। इस प्रकार महामाया का ध्यान करके गंध तथा चन्दन से पूजा करे तथा इन्द्रादि देवगण को इस मन्त्र में निवेदित करे।

हे प्राणवल्लभे! नीम के बीजों को घोड़े के बाल से गूंथकर माला बनानी चाहिये। वशीकरण कर्म में माला की यह विधि है। चण्डिका के यन्त्रराज में पान के बीड़े की पूजा करने के बाद एक-एक बीडा उठाकर धीरे-धीरे सुधी साधक जप की समाप्ति पर्यन्त चबता रहे। एक करोड मन्त्र का जप करना चाहिये। वैश्य में आधा कहा जाता है। हे देवि! ब्राह्मण में दूना, शुद्र में चौथाई तथा स्त्री में दूना कहा गया हैं क्योंकि वह शक्तिरूपिणी है। चार अंगुल लम्बी नीम की समिधाएँ लाकर शकर लपेट कर भक्तिभाव से हवन करे।

इसके बाद विधि से पाँच कोणों वाले कुंड की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिये। मैंने वशीकरण कर्म में नवाक्षर मन्त्र को कहा हैं। मारण, मोहन तथा वशीकरण में एक समय भोजन करना कहा गया है। हे देवि! तीसरे पहर बिना नमक के भोजन करे। हे सुभ्रु, हे प्रिये! उड़द की दाल, भात, गाय के घी, तथा मधु से मिश्रित दूध के साथ खाना चाहिये। देवी के भोजन के अभाव में जो प्राप्त हो उसे ही भोजन करना चाहिये। भोजन में क्लेश करने वाले साधक का प्रयोग असफल होता हैं।

॥ स्तंभन प्रयोग:॥

हे कान्ते! विवाह के दिन पति के स्पर्श से वर्जित स्त्री (विवाहदिनात् अन्यदिनं पुरुषहस्तस्पर्शवर्जिताया: पतिसङ्गमवर्जिताया:) के पैर का जल, तीन कूएँ का जल, एक तालाब का जल, तीन नदियों के सङ्गम का जल इन सब जलों को लाकर लोहे के घड़े में ड़ाले। नीबू के पत्ते, एरंड के पत्ते, हल्दी के पत्तों के जल को, चावल के जल में पीसकर अद्भुत स्नान करे। हे प्रिये! बेर वृक्ष के जल से पहले स्वयं स्नान करे। ललाट में लाल चन्दन से त्रिपुण्ड धारण करके, चितकबरे आसन पर चितकबरा परिधान धारण कर कम्बलासन पर दक्षिणाभिमुख स्वयं बैठे।

भूमिशोधन के उत्तम अन्य कर्म को सुनो। केले का जल, आम के पत्ते, घुंघची का फल, दालचीनी, क्रमश: कृष्ण (काली मिर्च) सात, सरस (दोनों अगर) दोनों हाथों से कूएँ से निकाला हुआ पानी तथा हरिन के मल, इनसे स्तम्भन कर्म में गोलाकार भूमि को लीपे।

हे प्रिये! हिरन के दाहिने कान का रक्त तथा उसके बायें कान का चमडा, आम का काष्ठ, बबूल का काष्ठा सफेद चन्दन, लाल चन्दन, विजया, कुटकी, सोंठ, चीनी, सेंधा नमक, हे शुभे! इन्हे गङ्गाजल से पीसकर पञ्चांगुल प्रमाण बाँस की लेखनी बनाकर कटिनम्रासन से स्वयं लिखे।

हे शुभ्रे! जगन्माता के यन्त्रराज का पूजन सुनो। कूओं से जल लाकर केले के जल में मिलाये। नव कुशाओं को भेड़ के बालों से बाँधकर उसी से प्रीतिपूर्वक मन्त्र को स्नान कराये। तीसी का फूल, गेरू, हरिताल, मसूर, हे प्रिये! इन द्रव्यों से निश्चित रूप से यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये। हे शुभे! मैंने विस्तार से नहीं कहा हैं। सामान्य रूप से ही कहा हैं।

पूजन मंन्त्र:- शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते। इति मन्त्रेण सर्व. दद्यात्।

मदार का बीज, मदार का फूल, मदार का पत्र, मदार की जड़, मदार की लकड़ी, लौंग, हरिताल, हींग, गेरू, चावल, बेल का गूदा, गुड, तेल, सुगन्धि, बच, नागरमोथा, देवरारु, पीली सरसों का कल्क, गाय का घी, मक्खन, चीनी तथा सुपारी, हे प्राणवल्लभे! इनसे धूप बनाना और **'ज्ञानतोज्ञानतो वापि बलिपूजां तथा कृतांग्रीणि ह्रीं'** इस मन्त्र से धूप देना चाहिये। हे देवि! स्तम्भन में कारण दीप ही कहा जाता है। काठ का दीप बनाना चाहिये तथा उसमें काले तिल का तेल, नीम का तेल तथा कपूर का रस डालकर सात अंगुल लम्बी सन की बत्ती बनानी चाहिये। हे वामे! पाँच कोण युक्त शुभ भूमि को लीपकर तीन अंगुल लम्बी पीपल की लेखनी बनानी चाहिये। हे विशालाक्षि! साधक प्रेम से तत्पर होकर यन्त्र को लिखे। शङ्ख का जल, हल्दी तथा जम्बीरी नींबू का रस इनसे सदा यन्त्र लिखना चाहिये, उसके दायें तीन अंगुल पर दीप को रखना चाहिये तथा सफेद चन्दन से पूजा करनी चाहिये। दीप सदा आनन्दकारिणी, समुद्र से उत्पन्न शुभ लक्ष्मी का ध्यान करना चाहिये।

'सावर्णि: सूर्यतनयो यो मनु: कथ्यतेष्टम:। निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम' इस मन्त्र से सब निवेदित करना चाहिये। इस प्रकार मैंने दीप के बारे में कहा हैं अब माला की विधि सुनो।

स्तम्भन में स्फटिक की माला कपास के सूत्र में गूथ कर बनानी चाहिये। यन्त्रराज में चण्डिका के लिए पान के बीडे की पूजा करके बाद में एक-एक उठाकर सुधी साधक को धीरे-धीरे चबाना चाहिये। जब तक जप समाप्त न हो जाय तब तक पान चबाते रहना चाहिये।

स्तम्भन में जप सोलह लाख हैं। हे देवि! वैश्यों में इसका आधा, ब्राह्मण में दुगना तथा शूद्र में चौथाई जप होता है। स्त्री के लिये दुगना कहा गया हैं क्योंकि वह शक्तिरूपिणी हैं।

'ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्रीं जिह्वां कीलय कीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्रीं ॐ ठँ ठँ स्वाहा' इस मन्त्र का जप करना चाहिये। जप के दशांश से नित्य होम करना चाहिये। बकरी का घी, गाय का घी, भेंड का दूध, चावल, तिल, एरण्ड का बीज, शण का बीज, लवङ्ग, चीनी मिले चने के आटे की पूरी, नव अंगुल परिमाण चन्दन वृक्ष की समिधों से षट्कोण यज्ञकुण्ड बनाकर एकाग्रचित्त होकर हवन करे। हे देवि! स्तम्भन में मसूर और चने की दाल चावल में मिलाकर तीसरे पहर निश्चित रूप से बिना नमक साधक को भोजन करना चाहिये।

॥ विद्वेषण प्रयोग:॥

हे शुभे! बच्चे के पैर का जल, बारह कूएँ का जल, सत्रह तालाबों और नदियों का जल, यह सब जल लाकर चाँदी के घडे में डाले। तिल के तेल की मालिश करके विशेष रूप से स्नान करे। ललाट में लालचन्दन का त्रिपुण्ड धारण करके विद्वेषण में धूम्रवर्ण के आसन पर धूम्रवर्ण का परिधान धारण कर उत्तराभिमुख पृष्ठपातासन से स्वयं बैठे।

दूसरा उत्तम भूमिशोधन कर्म सुनो। गेरू, हरिताल, सेंधा नमक के साथ सुधी साधक कन्या के हाथ से एक कूओं से जल निकलवाकर घोड़े की लीद, जङ्गल की मिट्टी, इनसे पृथिवी को शुद्ध करे तथा विद्वेषण के लिये बुद्धिमान साधक जप करे। ऊँट के गर्दन का रक्त दाहिने हाथ से ले और इलाइची, तेजपात, जायफल, दालचीनी, बकरी के दूध से पीसकर बुद्धिमान साधक मिलावे। हे शुभेक्षणे! कण्टकी वृक्ष के डाल की तीन अंगुल प्रमाण लम्बी लेखनी लेकर इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए बाएँ हाथ से यन्त्र को लिखे। हे मदिराक्षि! यह लेखन कुशलता मैंने बतला दी।

हे शुभे! जगन्माता के यन्त्रराज का पूजन तुम सुनो। लवङ्ग, मिर्च, सोंठ, कटुका, त्रिफला, मधु इन्हें पाँच कूओं से निकाले जल में पीसकर मधुसे मिलाकर बारह कुशाओं को इकट्ठा करके सन के सूत्र से बाँधकर हे प्रिये! चण्डिका को स्नान करावे।

''सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरि। एवमेतत्वया कार्यमस्दद्वैरिविनाशनम्।'' इति मन्त्रेण सर्व दद्यात्।

हे सुभ्रु, भृङ्गराज का रस, सफेद तथा लाल चन्दन, सिन्दूर, भँग के पत्ते मदार की जड़ तथा दूध इनसे हे देवि, बुद्धिमान साधक यन्त्रराज की पूजा करे। हे शुभे, मैंने तुम्हें विस्तार से नहीं कहा है, सामान्य रूप से ही कहा है। इसके आगे निर्मल धूप की आद्य विधि सुनो।

गुग्गुल, लोहबान, हल्दी, तज, हींग, गेरू, कपूर, राई, उद्दालक मक्षिका का मधु, लौंग, कस्तूरी, सफेद तथा लाल चन्दन का चूरा, कटुका, पिप्पली, देवदारु, नागरमोथा, तगर, हे प्रिये, भैंस का दूध तथा घी, चीनी, मिश्री तथा गुड़, इन्हें विधान जानने वाला साधक इकट्ठा करके पीसकर धूप बनाकर गद्गद आकृति का होकर मन्त्र को पञ्चधा पढ़कर एकाग्रचित्त होकर वह बुद्धिमान साधक धूप देवे।

''ॐ इत्थं यदायदा बाधा दानवोत्था भविष्यति। तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयं नमः।'' इति मन्त्रं पञ्चधा पठित्वा धूपयेत्।

हे देवि, विद्वेषण कार्य में दीप ही कारण कहा जाता हैं। इसमें ताँबे का दीप, गोमूत्र, सफेद तिल का तेल तथा रेण के तेल में दश अंगुल लम्बी कपास की बत्ती रखनी चाहिये। नव अंगुल पृथिवी को लीप देना चाहिये। बबूल की लकड़ी की तीन अंगुल लम्बी लेखनी बनानी चाहिये।

हे वामोरु, जव का आटा घृतकुमारिका के रस में मिलाकर उससे मन्त्र को लिखे। हे प्रिये, प्रेम से दीपक को देव के दक्षिण भाग में स्थापित करे। एक अंगुल प्रमाण लाल चन्दन के टुकड़ों से पूजा करे। दीप के बीच में चण्डनाशिनी

चण्डिका का ध्यान करे। इस प्रकार स्नान करके लाल चन्दन से महामाया की पूजा करे।

''शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च'' इस मन्त्र से दीप निवोदित करे।

विद्वेषण कर्म में बेर के बीजों को रेशम के धागे से गूथ कर बनायी गयी माला मैंने साधकों के हित के लिए कही है। चण्डिका के लिए यन्त्रराज में पान के बीड़े की पूजा करके बाद में सुधी साधक एक-एक बीड़ा उठाकर धीरे-धीरे चबाये। जब तक जप की समाप्ति न हो तब तक पान चबाना चाहिये। जप तेरह लाख कहा गया हैं।

जप का मन्त्र - ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन विद्वेषणं कुरु-कुरु स्वाहा। वैश्यों में आधा, हे देवि, ब्राह्मण में दूना तथा शूद्र में चौथाई कहा गया हैं। स्त्री में दूना कहा गयाहै, क्योंकि वह शक्तिस्वरूपिणी हैं। जप के अन्त में उसके दशांश से नित्य होम कराये।

हे प्रिये, गाय का घी, तिल का तेल, जव, काला तिल, चने की दाल, कपूर, चन्दन, लाख, हे शुभानने, देवदारु, वच, दालचीनी, मदार की लकड़ी, उरूथ वृक्ष का दूध, हींग, गेरू, पाँच अंगुल, लम्बी समिधा तथा त्रिकोण यज्ञकुण्ड बनाये। विमल विचारों वाला साधक सुरा का होम करे। मैंने विद्वेषण में नवाक्षर मन्त्र कहा है। हे देवि, हे प्रिये, विद्वेषण में भोजन गेहूं, चावल, मुनिवृक्ष(तूर) की दाल, सेंधा नमक से युक्त करना चाहिये। हे देवि, अभाव में जो प्राप्त हो उसे ही भोजन करना चाहिये। भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल होताहैं। हे प्राणवल्लभे, यह मन्त्रराज की विधि मैंने बताया हैं। शैव तथा शाक्त विप्र साधकों को इसे अवश्य करना चाहिये। जो चण्डिका का सेवक, भक्त और बुद्धिमान् हैं ऐसे साधकों को इस मेरे द्वारा कहे गये मन्त्र की साधना अवश्य करनी चाहिये।

॥ इति डामर में रावणकृत शतहस्त्र प्रतिबद्ध चतु:षष्ठोल्लासे नवार्णमंत्रराज षट्प्रयोग: ॥

॥ दुर्गा पाठे शूलिनी प्रयोगः ॥

(१) मूल मंत्र से दुर्गासप्तशती का संपुटित पाठ करे।

(२) **शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च॥** इस मंत्र के संपुट से दुर्गापाठ करे। विशेषार्चन पूजा शूलिना दुर्गा पूजा में अवलोकन करें।

॥ अथ दुर्गेस्मृता मंत्र प्रयोग:॥

इस मंत्र के कई तरह के प्रयोग हैं।

(१) आगे पीछे बीजाक्षर लगाकर- **ह्रीं, श्रीं, ऐं,** इत्यादि बीजाक्षर व अन्य बीजाक्षर लगाकर अथवा मंत्र को भिन्नपाद बनाकर, ललिता सुंदरी के कूटों से भिन्नपाद बनाकर मंत्र जाप का विधान भी हैं।

(२) इस मंत्र के मध्य में श्रीसूक्त की किसा ऋचा से पुटित करके प्रयोग करके मंत्रजप अथवा १६ ऋचाओं पुटित कर (१६ मंत्रों की एक आवृति मान कर) पाठ करने का विधान भी हैं।

(३) नवार्ण व श्रीसूक्त की ऋचा व अन्य ऋचापुटित प्रयोग भी सर्वापदा का निवारण करता हैं।

(१) दुर्गा मंत्र के आगे पीछे से सर्वसिद्धि हेतु **ह्रीं,** लक्ष्मीं कामना हेतु **श्रीं वाक्सिद्धि** व विद्या प्राप्ति हेतु **ऐं** बीज लगाकर जप करे

(२) ॐ या अन्य बीजाक्षर से भिन्नपाद करके मंत्र जप करें। यथा - **ह्रीं दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः**

ह्रीं स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। ह्रीं द्रारिद्र्य दुःखभयहारिणि का त्वदन्या ह्रीं सर्वोपकारकारणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ह्रीं॥

(३) ललिता सुन्दरी पुटित मंत्र यथा - **दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः हसकल ह्रीं स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि हसकहल ह्रीं। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सकल ह्रीं सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥**

बडे मंत्र की जगह **ऐं, क्लीं, सौः** ये तीन कूटाक्षर लगाकर के भी जप कर सकते हैं।

(२) श्री सूक्त की ऋचायुक्त :-

दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभांददासि ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयंतीम्।
दारिद्र्यदुःख भयहारिणि कात्वदन्या पद्मेस्थितां पद्मवर्णां,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता तामिहोपह्वयेश्रियम्॥

इस मंत्र के जप करें अथवा इस तरह की १६ ऋचाओं से आकृति कर १-१ पाठ यथा संख्यानुसार करे।

अन्य प्रकार से:- ऋचा के मध्य में दुर्गेस्मृता मंत्र पुटित कर मंत्र जप व श्री सूक्त के पाठ का विधान भी हैं यथा **कांसोस्मितां......तर्पयन्तींदुर्गेस्मृता.....शुभांददामि। पद्मेस्थिता.......श्रियम्.......दारिद्रयदुःख.......सदाऽऽर्द्रचित्ता॥**

॥ नवार्ण व श्रीसूक्तऋचायुक्त महामंत्र ॥

मन्त्र :- **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयंतीं पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह। पवमानवितज्जहि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॐ ह्रींश्रींक्लीं। ॐ ह्रींश्रींक्लीं कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलतींतृप्तांतर्पयंती पद्मेस्थितांपद्मम् वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'' इति मंत्रः।**

विनियोग :- **अस्य श्री दुर्गे स्मृता इति मंत्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः। उष्णिक् छंदः। श्रीमहामाया देवता। शाकंभरी शक्तिः। दुर्गा बीजम्। श्रीं वायुस्तत्वम्। मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्ये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ हिरण्यगर्भ ऋषये नमः शिरसि ॥१॥ उष्णिक्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ श्री महामाया देवतायै नमः हृदि ॥३॥ शाकंभरीशक्त्यै नमः दक्षिणस्तने ॥४॥ दुर्गाबीजाय नमः वामस्तने ॥५॥ श्रीं वायुतत्वाय नमः हृदि ॥६॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥७॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- **ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह मध्यमाध्यां नमः ॥३॥ पवमानवितज्जहि अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ दारिद्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥** इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ।

॥ ध्यानम् ॥

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुः शरांश्च दधतीं नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।
आमुक्ताङ्गदहार कङ्कण रणत्काञ्ची रणन्नूपुरा दुर्गादुर्गतिहारिणि भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥१॥
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य योनिमुद्रया नत्वा जपं कुर्य्यात्। महत्कार्ये लक्षमयुतं सहस्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सकलकार्य्यसिद्धिर्भवति दशांशक्षीराज्यहवनं दशांशतर्पणमार्जनसुवासिनी ब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्। इति दुर्गे स्मृता मंत्र प्रयोगाः।

॥ बीजाक्षरयुक्त दुर्गेस्मृता मंत्र प्रयोगः ॥

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री 'दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः' वसंततिलकाछन्दः श्री प्रजापत्यग्निवाय्ववादित्य वृहस्पतिवरुणेन्द्र ऋषयः, श्री महासरस्वती देवता, श्रीं बीजं, रूपिणी शक्तिः, श्री भैरवी महाविद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम० ..... सर्व कामना सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **श्री प्रजापत्यग्निवाय्वादित्य वृहस्पतिवरुणेन्द्रऋषिभ्यो नमः सहस्रारेशिरसि, वसंततिलका छन्दसे नमः मुखे, श्री महासरस्वतीदेवतायै नमः द्वादशारेहृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे लिङ्गे, रूपिणीशक्त्यै नमः दशारेनाभौ, श्रीभैरवीमहाविद्यायै नमः षोडशारेकण्ठे, सतोगुणाय नमः अन्तरारेमनसि, रसना ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्तरसाय नमः चेतसि, योनिकर्मेन्द्रियाय नमः योनिकर्मेन्द्रिये, सौम्यस्वराय नमः कण्ठमूले, वायुतत्वाय नमः गुदेचतुरारे, शान्तिकलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाममुद्रायै नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यासः- **ॐ ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। नमो नमः तर्जनीभ्यां स्वाहा। दुर्गे! स्मृता हरसि भेतिमशेषजन्तोः मध्यमाभ्यां वषट्। स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवशुभां ददासि अनामिकाभ्यां हुं। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।**

षडङ्गन्यासः- **ॐ ऐं श्रीं हृदयाय नमः। नमो नमः शिरसे स्वाहा। दुर्गे! स्मृता हरसि भोतिमशेषजन्तोः शिखायैवषट्। स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवशुभां ददासि कवचाय हुं। दरिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां। कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सोविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं। विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

मंत्र - **ॐ ऐं श्रीं नमः दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवशुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता नमो ऐं श्रीं ॐ ॥**

१०००० जपात् सिद्धिः, पायस, मांस, पक्वान्न, तिलैर्होमः खदिर समिद्भिः।

॥ इति श्री दुर्गा मंत्र प्रयोगः ॥

॥ राहुकाले दुर्गापूजा विद्यानम् ॥

राहुकाल की दक्षिण भारत में विशेष मान्यता हैं। राहुकाल में आसुरी शक्तियों का उदय होता हैं अतः अन्य शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं। आसुरी शक्तियों के दमन हेतु व्यक्ति को जप पाठ एवं स्वाध्याय करना चाहिये। राहुकाल में दुर्गा उपासना श्रेष्ठ फलदायिनी हैं। राहु का शिर एवं केतु का धड़ अलग अलग है अतः प्रचण्ड चण्डिका याने छिन्नमस्ता इस काल की विशेष अधिष्ठात्री देवी हैं। इसकी उपासना बिना दीक्षा के नहीं हो सकती समर्थसाधक ही कर सकते हैं। अतः नवार्णमंत्र जप एवं दुर्गा सप्तशती स्तोत्र पाठ सर्व सुगम उपासना हैं। समर्थ साधक वनदुर्गा, शूलिनी जातवेदा, शांति, शबरी, ज्वालादुर्गा, लवणदुर्गा, आसुरीदुर्गा एवं दीपदुर्गा की उपासना करते हैं।

॥ राहुकाल समय निर्णय ॥

राहुकाल की मान्यता दिन में ही हैं रात्रि में नहीं है। अतः दिनमान के आठ भाग कीजिये उन आठ चौघड़ियों की गणना इस प्रकार करे। रविवार को ८ वां (४.३० से ६बजे) सोम को दूसरा (७.३० से ९ बजे) मंगल को ७ वां (३ से ४.३०तक) बुध को ५ वां (१२ से १.३० तक) गुरु को छठा (१.३० से ३ तक) शुक्र को चौथा (१०.३० से १२ बजे) शनि को तीसरा (९ से १०.३० तक) चौघड़िया राहुकाल का होता हैं। यह समय ६ बजे सूर्योदय व ६ बजे सूर्यास्त के हिसाब से लिखा हैं। दिन छोटे बड़े होते रहते हैं अतः सूक्ष्मगणना पूरे दिनमान के अनुसार करे।

॥ साधना विधि ॥

दुर्गापाठ रविवार को राहुकाल में प्रारम्भ कर सोम को प्रातः समाप्त किया जाता है। नवार्ण जप आदि अंत में अवश्य करे। जो व्यक्ति नित्यपाठ नहीं कर सकते है वे प्रथम दिन (रविवार) को संकल्प कर शापोद्धार आदि कर कवच, अर्गला, कीलक का पाठ करें। नवार्ण जप कर दुर्गासप्तशती को प्रथमाध्याय के श्लोक ''**सर्वमापोमयं जगत**'' तक पाठ करे। दूसरे दिन (सोमवार) को प्रथम अध्याय के शेष श्लोक व द्वितीय तृतीय अध्याय के श्लोक ''**तद् वधाय तदाऽकरोत्**'' तक पाठ करे। तृतीय दिन तृतीय अध्याय के शेष श्लोक, चतुर्थ अध्याय तथा पांचवे अध्याय के श्लोक **या देवि सर्वभूतेषु जातिरूपेण......**पूरा श्लोक पढे। चतुर्थदिन पांचवे अध्याय के शेष श्लोक तथा छठे अध्याय में श्लोक **चकराम्बिका ततः** तक पाठ करे। पंचम् दिन छठे अध्याय के शेष श्लोक, सप्तम् अध्याय तथा अष्टम् अध्याय का श्लोक **ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रि त्रिदशाः नृप** तक पाठ करे। षष्ठमदिन अष्टम् अध्याय का शेष श्लोक नवम दशम तथा एकादश अध्याय के श्लोक ज्वालाकराग्र......तक पाठ करे। सप्तम दिन सप्तशती के शेष पाठकर रहस्यादि करे। इनके अलावा नित्य कवच अर्गला कीलक तथा नवार्ण मंत्र जप १०८ बार आदि अंत में करना हितकर रहेगा।

॥ अथ नवरात्र विधानम् ॥

नवरात्र पर्व विषय में भारतवर्ष में अलग-अलग प्रान्तों में सिद्धि प्राप्ति हेतु अनेक विधियां है। वर्ष चार में नवरात्र विधान लिखा है। **चैत्रे आश्विने तथाषाढे माघे कार्योमहोत्सवः। नवरात्रे महाराज पूजा कार्या विशेषतः॥** नवरात्र दो प्रकार के होते है **शयन और बोधन।** शयन चैत्र में तथा बोधन आश्विन में। चारों नवरात्रों में दुर्गा उपासना का ही महत्व हैं।

शारदीय नवरात्रकल्पः- कल्पभेद से दुर्गापूजा की तीन प्रकार की विधियां हैं।

(१) कात्यायनी कल्प

(२) भद्रकाली कल्प

(३) उग्रचण्डा कल्प

इसके अतिरिक्त **(४) कालरात्रि विधान, (५) अन्य विधान भी हैं।**

शारदीय नवरात्र पर्व में भगवती पूजन में महिषासुरवध के तीन अलग अलग स्वरूप हैं। **रंभकल्प** में अष्टादशभुजी उग्रचण्डी द्वारा महिषासुर का वध हुआ। **नीललोहित कल्प** में षोड़शभुजा भद्रकाली ने महिषासुर का वध किया। **श्वेतवाराहकल्प** में दशभुजा कात्यायनी रूप में महिषासुर का वध किया। आश्विन शुक्ला अष्टमी के दिन भगवती ने रुरु पुत्र **दुर्ग नामक राक्षस** का वध किया। तथा ब्रह्मा को आचार्य बना श्रीराम ने शारदीय नवरात्र किये।

॥ १. कात्यायनी कल्प विधानम् ॥

कात्यायनी कल्प में प्रतिपदा को घटस्थापन होता है। दुर्गा अर्चा होती हैं। प्रधान पूजा ३ दिन की ही है। षष्ठी को व सप्तमी को प्रातः दुर्गा अष्टाक्षर मंत्र से पूरा करे। षष्ठी का शाम को विल्वशाखा व नवपत्रिकाओं को निमंत्रण देवे तथा सप्तमी को प्रातः बिल्वशाखा व नवपत्रिकाओं को लाकर घर पर स्थापित करे। सप्तमी से नवमी पर्यन्त कात्यायनी का ध्यान पूजन कर दशमी में विसर्जन करे।

॥ ध्यानम् ॥

कात्यायनी (दशभुजीदुर्गा) का ध्यान निम्नलिखितप्रकार है-

कात्यायन्याः प्रवक्ष्यामि मूर्तिं दशभुजां तथा, त्रयाणामपि देवानामनुकारणकारिणीम् ।
जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दु - कृतशेखराम्, लोचनत्रय संयुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥
अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां प्रलोचनाम्, नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ।
सुचारुदशनां तद्वत् पीनोन्नतपयोधराम्, त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं क्रमादधः, तीक्ष्णवाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत ।
खेटकं पूर्णचापं च पाशमंकुशमूर्ध्वतः, घण्टां वा परशुं वाऽपि वामतः सन्निवेशयेत् ॥
अधस्तान्महिषं तद्वत् विशिरस्कं प्रदर्शयेत्, शिरश्छेदोद्भवं तद्वत दानवं खड्गपाणिनम् ।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम्, रक्तरक्ती कृताङ्गश्च रक्तविस्फारितेक्षणम् ॥
वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम्, सपाशहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥

॥ २. भद्रकाली कल्प विधानम् ॥

लिङ्गपुराण में लिखा है कि भद्रकाली कल्प में आश्विन कृष्णा एकादशी में उपवास करे, द्वादशी में एक भक्त तथा त्रयोदशी में नक्त भोजी होकर चतुर्दशी में यन्त्र अथवा मूर्ति में प्रबोधन करे। अमावस्या में इसी प्रकार पूजा कर प्रतिपदा में घट स्थापन करे।

नवदुर्गाओं के नाम:- **(१) शैलपुत्री (२) ब्रह्मचारिणी, (३) चन्द्रघण्टा (४) कूष्माण्डा (५) स्कंदमाता (६) कात्यायनी (७) कालरात्रि (८) महागौरी (९) सिद्धिदात्री।**

भद्रकाली का (षोडशभुजा दुर्गा) का ध्यान इस प्रकार है -

॥ ध्यानम् ॥

योगनिद्रा महामाया जगद्धात्री जगन्मयी। भुजैः षोडशभिर्युक्ता भद्रकालीति विश्रुता ॥
क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम् । अतसीपुष्प वर्णाभा ज्वलत्काञ्चनकुण्डला ॥
जटाजूटमखण्डेन्दुमुकुट त्रयभूषिता । नागहारेण सहिता स्वर्णहारविभूषिता ॥
शूलं खड्गं च शङ्खं च चक्रं वाणं तथैव च। शक्तिवज्रौ च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः ॥
विभ्रती सततं देवी विकाशिनयनोज्ज्वला । खेटकं चर्मचापं च पाशं चांकुशमेव च ॥
घण्टां च परशुं चैव मुशलं वामपाणिभिः । सिंहस्था नयनैः रक्तवर्णै स्त्रिभिरभिज्वला ॥
शूलेन महिषं भित्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी । वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी ॥

॥ ३. उग्रचण्डाकल्प विधानम् ॥

आश्विन कृष्णा नवमी में आर्द्रा नक्षत्र होतो श्रेष्ठ है अन्यथा नवमी के दिन करवाल में महामाया का मध्यान्ह में प्रबोधन करे। उग्रचण्डा का द्वात्रिंशाक्षर मंत्र से पूजन व आवरणपूजन करे। अमावस्या तक इसी तरह पूजन करे। प्रतिपत् के दिन घटस्थापन कर नवमीपर्यन्त नव दुर्गा का पूजन करे।

उग्रचण्डाकल्प में नवदुर्गाओं के नाम इस प्रकार हैं- **(१) रुद्र चण्डा (२) प्रचण्डा (३) चण्डोग्रा (४) चण्डनायिका (५) चण्डा (६) चण्डवती (७) चण्डरूपा (८) अतिचण्डिका (९) उग्रचण्डा**

॥ ४. कालरात्रि विधानम् ॥

कृष्णाषष्ठीसमारभ्य नवदुर्गाविधानवत् यो यथा कुरुते जाप्यं कालरात्रिरुदाहृता ॥ इसे किसी भी माह में किया जा सकता है। कोई मास निषेध नहीं हैं।

॥ ५. अन्यविधान (दुर्गोपासना कल्पद्रुमे) ॥

(१) शुक्ला षष्ठी से शुक्ला चतुर्दशी तक नवदुर्गा विधान कहा हैं। इसे भी किसी भी माह में किया जा सकता हैं। बहुधा पितृपक्ष व श्रावण को छोड़कर अन्यमासों में दोनों प्रयोग प्रचलित हैं।

(२) अल्मोड़ा जिले में भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा से नवमीपर्यन्त नवरात्र व्रत करके भाद्र शुक्ला दशमी को विसर्जन होता हैं। भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के दिन में देवी पीठ व यंत्रपूजा करे। एक बार हविष्याम भोजन कर, रात्रि में जागरण महोत्सव का दूसरे दिन ब्राह्मण व कन्या भोजन कराये।

(३) कालीविलास तन्त्र के अनुसार आश्विन कृष्णा अष्टमी या नवमी को जब आर्द्रा नक्षत्र हो उस दिन गाजे बाजे के

साथ पूजा कर देवी का बोधन करें इसके बिना देवी पूजा फल हीन है।

॥ संप्रदाय भेद से नवरात्र की नौ शक्तियाँ ॥

भारतवर्ष में सभी जगह नवरात्र पर्व उत्सुकता से मनाया जाता हैं। प्रथम तीन दिन दुर्गा(महाकाली) प्रधान पूजन, द्वितीय तीन दिन महालक्ष्मी प्रधान पूजन एवं अंतिम तीन दिन महासरस्वती की प्रधान पूजा होती हैं। तिथि को ही देवी स्वरूपा माना है अत: नवतिथि आधार पर ही नवरात्र किये जाते हैं। प्रत्येक तिथि की पूजा उसतिथि की महाशक्ति को अर्पण करे। संप्रदाय भेद से शक्तियां इस प्रकार हैं।

(१) शैव सम्प्रदायः- शारदीय नवरात्र में प्रत्येक तिथि की तिथिदेवता इस प्रकार हैं- **(१) शैलपुत्री (२) ब्रह्मचारिणी (३) चन्द्रघण्टा (४) कूष्माण्डा (५) स्कन्दमाता (६) कात्यायनी (७) कालरात्रि (८) महागौरी (९) सिद्धिदात्री।**

(२) दक्षिण भारतवर्षे- दक्षिण भारत में शैलपुत्री इत्यादि नव शक्तियों कापूजन स्थूलरूप से किया जाता है। दीक्षित साधक वृहत्तररूप से जिन नवदेवियों की उपासना करते हैं वे इस प्रकार हैं-

प्रथमा वन दुर्गा च द्वितीया शूलिनी मता। तृतीया जातवेदा तु चतुर्थीशान्तिरीरिता ॥ पंचमी शबरी चेति ज्वालादुर्गाततः परम्। सप्तमी लवणा चेति आसुरी अष्टमीस्मृता ॥ नवमी दीपदुर्गेति नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः॥ इनके पूजा प्रयोग आगे अलग से दिये गये हैं।

(३) वैष्णव संप्रदायः- वैष्णव संप्रदाय के अनुसार हस्तनक्षत्र से ९ दिनगणना उत्तराषाढ़ा तक होती हैं एवं श्रवण नक्षत्र (१०वे दिन) जो विष्णु का प्रिय नक्षत्र होता हैं उस दिन **"तिरुपति तिरुमल"** में श्री वेंकटेश्वर का ब्रह्मोत्सव मनाया जाता हैं। हस्त नक्षत्र से उत्तराषाढा नक्षत्र तक **९ दिन की महाशक्तियां इस प्रकार हैं-**

(१) श्रीदेवी (२) अमृतोद्भवा (३) कमला (४) चन्द्रशोभिनी (५) विष्णुपत्नी (६) वैष्णवी (७) वरारोहा (८) हरिवल्लभा (९) शार्ङ्गिणी।

(४) माध्वसंप्रदायः- माध्व संप्रदाय में **हनुमान जी** की पूजा का नवरात्र में विशेष महत्व हैं। नवदिन पर्यन्त प्रतिदिन इन नवशक्तियों का क्रमशः पूजन करे यथा (१) अधरा एवं उत्तरा हनु (२) बुद्धि (३) आत्मबल (४) कीर्ति (५) धीरज (६) निडरता (७) आरोग्य (८) चुस्ती स्फुर्ति (९) भाषण सामर्थ्य।

वैष्णव व माध्वसंप्रदाय में **लक्ष्मी ह्यग्रीव** की उपासना भी विशेष की जाती है।

(५) तुलसीकृत रामचरितमानस परायण नवरात्र में वैष्णव जन करते है।

वाल्मीकरामायण का प्रयोग करना चाहे तो कुमार संहितानुसार परायण विधि इस प्रकार हैं- (१) बालकाण्ड सर्ग १ से ७७ (२) अयोध्याकाण्ड सर्ग १ से ६४ (३) अयोध्याकाण्ड सर्ग ६५ से ११९ तक (४) अरण्यकाण्ड सर्ग १ से ६८ तक (५) अरण्यकाण्ड सर्ग ६९ से ७५ तक तथा किष्किन्धाकाण्ड सर्ग १ से ४९ तक (६) किष्किन्धाकाण्ड सर्ग ५० से ६७ तथा सुन्दरकाण्ड सर्ग १ से ५६ तक (७) सुन्दरकाण्ड सर्ग ५७ से ६८ तक तथा युद्धकाण्ड १ से ५० (८) युद्धकाण्ड सर्ग ५१ से १११ (९) युद्धकाण्ड ११२ से १३१ तक हैं।

इस तरह कुल ५३७ सर्ग तथा कुल श्लोक संख्या २०७२४ हैं।

॥ चतु: नवरात्र विषये ॥

महाकाल संहिता के अनुसार वर्ष में चार नवरात्र आते हैं। अलग-अलग युग में अलग-अलग मास की महिमा रही है। सत्ययुग में चैत्र शुक्लपक्ष, त्रैतायुग में आषाढ़ शुक्लपक्ष, द्वापर में माघ शुक्लपक्ष, कलियुग में आश्विन शुक्लपक्ष की नवरात्र पूजा प्रधान है।

॥ माघमासे देवीपूजन विधानम् (शिशिर नवरात्र)॥

माघ मास में शुक्ल प्रतिपदा अथवा द्वितीया युक्त प्रतिपदा में घट स्थापन करे। व्यतिपात ऋक्षदग्धातिथि होतो अभिजित मुहुर्त में कुम्भ स्थापन करें। शिशिर के इस नवरात्र में "**नन्दा देवी**" के नाम से प्रधान पूजन कहा है। नित्य जप, स्तोत्र, सप्तशती पाठ करे अष्टमी के दिन रात्रि में जागरण करे पंच तत्वों से महापूजा करे। नवमी के दिन नित्यपूजापाठ कर नवकन्या व ब्राह्मण भोजन कराये। रात्रि में जागरण कर दशमी को अभिषेक कर मूर्ति विसर्जन करे। यही नन्दोत्सव हैं, मूर्ति को नगर में भ्रमण कराकर नदी तालाब में विसर्जन करे। मधु कैटभ का वध करने हेतु दशमुखी एवं दशपदा भगवती महाकाली इसी नवरात्र में अवतरित हुई।

॥ चैत्रमासे देवी पूजन विधानम् (वासंतिक नवरात्र)॥

चैत्रमास में रेवती या अश्वनी नक्षत्र में घट स्थापित करे। वैधृति योग में घटस्थापन से राज चोर अग्निभय रहे। दोपहर बाद अपराह्न में पूजा करने से गृहभङ्ग व यश हानि होती हैं। अहिर्बुध्न में भी घटस्थापन नहीं करे। अशुभ योग हो तो अभिजित में स्थापन करे। नित्य जप पाठादि करके अष्टमी को जागरण महापूजा करे। नवमी के दिन पारण कर दशमी को विसर्जन करे। "**१८ भुजा वाली महालक्ष्मी महिषमर्दिनी** " चैत्र नवरात्र में उत्पन्न हुई थी। भगवती का यह पर्व "**रक्त चामुण्डा**" नामक दूसरे रूप में भी मनाया जाता हैं। ये रक्तदन्तिका खड्ग, पानपात्र, मूसल व लाङ्गल धारण किये हुये है। दुर्गासप्तशती में खड्ग, पानपात्र, शिर एवं खेट धारण किये हुये बताया हैं। (तारकासुर के आतंक से दु:खी होकर विष्णु ने सपत्नीक हिमालय पर हृल्लेखा "**ह्रीं**" बीज से भुवनेश्वरी की उपासना की तब चैत्र शुक्ला ९ शुक्रवार को भगवती ने प्रकट होकर देवताओं को वर दिया)।

रक्तदंतिका:- रक्त चामुण्डा के बाद भीमा देवी की उत्पति हुई वे एकवीरा, कालरात्रि भी हैं। चैत्र नवरात्र में भीमा देवी के पूजन से पुत्र की प्राप्ति होती हैं। सप्तमी से नवमी पर्यन्त विशेषपूजा विधान हैं। **चैत्र मासे सितापक्षे सप्तम्यादि दिनत्रये। पूजयेद् विधिवद् दुर्गा दशम्यां च विसर्जयेत्॥**

चैत्र शुक्ला सप्तमी को लवङ्ग पुष्पों से कृष्णवर्ण छाग बलि से पूजा करें। कालिका पुराण में अष्टमी से छाग पूजा '**ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा**' मंत्र से अशोक पुष्पों से पूजा करें। देवीपुराण के अनुसार नवमी कल्प हेतु महिषासुरमर्दिनी की पूजा कुंकुम, अगर, शमीपत्र (मरुपत्र) पान ध्वज, तर्पण विधान सहित करें।

॥ आषाढमासे देवीपूजन विधानम् ॥

आषाढ़ के नवरात्र में शुम्भासुरनिवर्हिणी महासरस्वती का प्रधान पूजन नित्य करे। देवताओं के कार्य हितार्थ वे कौशिकी हुई तब सती कृष्णवर्णा हो गई वे ही कालिका है।

सप्तशती के अनुसार **देव्या हते...... कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्.....**॥ उस महासरस्वती ने शुभ निशुंभ का वध कर दिया तो देवताओं ने सौम्यवदना कात्यायनी की स्तुति करी। **एतत् ते वदन सौम्यं लोचनं त्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते।** रौद्र व्याघात एवं अपराह्न को छोड़कर शुभ समय में वा अभिजित मुहुर्त में

रजतघट स्थापन करें। दुर्गामख में प्रतिदिन शुंभासुरनिवहिणी अष्टभुजा महासरस्वती का पूजन स्तुति पाठादि सर्वविध करने से साधक का कल्याण होवे। लक्ष्मी स्थिर रहे।

आषाढ के नवरात्र में शाकम्भरी पूजन का विधान हैं, वही शताक्षी महाशक्ति हैं।

॥ शारदीय नवरात्र पर्वे नवदुर्गोपासना ॥

शास्त्रों में लिखा है कि शरद् काल में देवी का बोधन करके पूजा करें। शरत् ऋतु देवताओं की रात्री है भगवती का शयन काल (अकाल) है। **श्रीराम ने ब्रह्मा को आचार्य बनाकर देवी का बोधन कर अकाल में जगाया था।**

रावणस्य वधार्थाय रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्वयि कृतः पुरा।
अहमप्याश्विने षष्ठ्यां सायाह्ने बोधयाम्यतः॥

वसन्तकाल की पूजा बोधित पूजा है।

शारदीय नवरात्र का महत्व केवल राम द्वारा पूजित होने से ही नहीं है इससे पूर्व में भी देवी पूजा का विधान रहा है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के समय, समय-समय पर देवों ने पूजा की थी।

पुरा स्तुता सा गो-लोके कृष्णेन परात्माना। सम्पूज्य मधुमासे च प्रीतेन रासमण्डले॥
मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना परा। तत्रैव काले सा दुर्गा ब्रह्मणा प्राण-संकटे॥
चतुर्थे संस्तुता देवी भक्त्या च त्रिपुरारिना। पुरा त्रिपुरयुद्धे च महाघोरतरे मुने॥
पञ्चमे संस्तुता देवी वेत्रासुर वधे तथा। शक्रेण सर्वदेवैश्च घोरे च प्राणसंकटे॥
तदा मुनीन्द्रैर्मनुभिर्मानवैः सुरथादिभिः। स्तुता च पूजिता सा च कल्पे कल्पे परात्परा॥

वासन्तीय नवरात्र व शारदीय नवरात्र में समानता है वसन्तकाल की पूजा बोधित पूजा कही गई है। यथा-

व्यवस्था च शारदीयपूजा प्रकरणोक्ता विधिस्तु ग्राह्या। विशेषस्त्वयं बोधनं नास्ति बोधिताया बोधनासंभवात्॥
चैत्रमासि सिते पक्षे सप्तम्यादि दिन त्रये। पूजयेद् विधिवद् दुर्गां दशम्यां तु विसर्जयेत्॥

॥ बोधन ॥

काली विलास तंत्र के अनुसार आश्विन कृष्णा अष्टमी या नवमी के दिन जब आर्द्रा नक्षत्र होवें उस दिन देवी की पूजा करे गाजे - बाजे आदि के द्वारा देवी का बोधन करें।

आर्द्रायां बोधयेद् देवी मूलनैव प्रवेशयेत्। पूर्वात्तराभ्यां संपूज्य श्रवणेन विसर्जयेत्॥
आर्द्रक्षः यः परितज्य दुर्गा देवीं प्रपूजयेत्। विफल । तस्य सा पूजा कदाचिन फलप्रदा॥

भद्रकाली कल्प में आश्विन कृष्णा चतुर्दशी को प्रबोधन लिखा है। यथा ''लिङ्ग पुराणे''-

कन्यायां कृष्णपक्षे तु एकादश्यामुपोषितः। द्वादश्यामेकं - भक्तं च नक्तं कुर्यात् परेऽहानि॥
चतुर्दश्यां महामायां बोधियित्वा विधानतः। गीतवादित्र निर्घोषैर्नाना नैवेद्य वन्दनैः॥
अयाचितं बुधः कुर्यादुपवासं परेऽहानि। एवमेव व्रतः कुर्याद् यावद् वै नवमी भवेत्॥

प्रतिपदा को कुंभस्थापन व देवी पूजा विधान से स्थापना करें। पूजा अर्चन के बाद जप, स्तोत्र पाठ, सप्तशती पाठ

परायण नित्य करें। सप्तमी, अष्टमी, नवमी दशमी का विशेष पूजन क्रम, पत्रिका पूजन, शमी पूजन इत्यादि सभी विधान आगे विवेचना पूर्वक विस्तृत रूप से दिया गया है।

साधको की सिद्धि हेतु - **''ॐ चामुण्डायै विच्चे''** इस षडक्षरी मंत्र को शीघ्र सिद्धिप्रदा कहा है।

चामुण्डा के दोनों पार्श्वों पर नागराज की स्थिति मानी गयी है। उस नागराज के जागरण के लिए उक्त षडक्षरी मंत्र का जप करें। चामुण्डा की **शिवारूप में** पूजा करने की पद्धति है। **शिवा** अपने चार हाथों में पाश, अङ्कुश, वर, अभयमुद्रा धारण किये हुए है।

चामुण्डा व स्कन्दमाता की कुमारी रूप में एकाक्षरी मंत्र से प्रधान पूजा कही गयी है। **बालादुर्गा** का मंत्र कई साधक दो बीजाक्षरों वाले विधान से करते है। **दशाक्षरी मंत्र** का जप दक्षिण भारत के कई साधक करते है उनके अनुसार भगवती दशवक्त्र एवं दशपदा है **अतः दशाक्षरी मंत्र श्रेष्ठ है।** प्रथम ५ अक्षरों से सभी कर्मेन्द्रियों का दमन व द्वितीय पाँच अक्षरों से ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है।

दुर्गा पूजनोत्सव के दो प्रधान अङ्ग है। (१) आगमनी (२)विजया। आगमनी में कैलाश धाम से माँ पार्वती का हिमालय पितृगृह में आगमन एवं सप्तमी, अष्टमी व नवमी इन तीन दिन पितृगृह में मां की उपस्थिति तथा दशमी को ''विजया'' का विसर्जन अथवा माँ पार्वति का स्वामीगृह गमन। इस कारण सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी की पूजा उत्सव का विशेष महत्व है।

भगवती महादुर्गा ही महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती रूपा हैं वे ही नवदुर्गात्मिका हैं अतः मूल रूप से भगवती दुर्गा की उपासना दुर्गासप्तशती स्तोत्र पाठादि कर प्रतिदिन की अधिष्ठात्री शैलपुत्री इत्यादि शक्तियों को अर्पण कर नमस्कार करें।

१. शैलपुत्री

हिमालयराजतनया शैलपुत्री कोटिचन्द्रप्रभा सम हैं वृषारूढ हैं। अर्द्धचारुचन्द्र से बद्धकेशी, हाथों में त्रिशूल एवं वरदमुद्रा धारण करने वाली हैं। आपही बाला त्रिपुरसुंदरी व कन्या कुमारी हैं। भगवती से प्रार्थना करे-

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्। वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ॥

२. ब्रह्मचारिणी

जपमालिका एवं कमण्डल धारण करने वाली आप ही गुरु अंबिका हैं जो ज्ञानानंद प्रदान करती हैं। आप ही गायत्री एवं बालात्रिपुरसुंदरीरूपा हैं। पूजन कर प्रार्थना करे-

दधाना कर पद्माभ्यामक्षमाला कमण्डलू। देवि प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ॥

३. चन्द्रघण्टा

लावण्यमयी त्रिलोचना अपने दश हाथों में दिव्यायुध धारण किये हुये हैं। चन्द्रघण्टे के नाद से ब्रह्माण्ड को विस्मित करती हैं साधकों के विघ्न व भय को दूर करती है। सिंहवाहिनी होकर उग्रवीरा के साथ होकर शत्रुओं का नाश करती हैं। देवी चन्द्रघण्टा का ध्यान चन्द्रखण्डदुर्गा के रूप में भी मिलता है वे इस स्वरूप में उग्ररूपा होकर अपने कोप से असुरों का दमन करती हैं। **प्रार्थनाः-**

पिण्डज प्रवरारूढ चण्डकोपास्त्रकैर्युता। प्रसादं तनुते मध्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥

४. कूष्माण्डा

आपके हंसने मात्र से अण्ड एवं ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति होती हैं। सिंह पर आसीन होकर अपने सात हाथों में दिव्यायुध

एवं आठवें में जपमालिका धारण किये हुये हैं। आपको कूष्माण्ड प्रिय हैं। अतः कूष्माण्ड याने कुम्हड़े के फल की बलि दी जाती हैं। प्रार्थना:-

सुरासंपूर्ण कलशं रुधिराप्लुतमेव च। दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे॥

मंत्र - (प्राकृत ग्रन्थे) **ॐ नमो भगवति अप कूष्माण्डि महाविद्ये कनकप्रभे सिंहरथ गामिनी त्रैलोक्या शूलिनी ऐह्यो ऐह्यो मम चिंतितं कार्यं कुरु कुरु भगवती स्वाहा।** (पाठान्तर) **भगवत्यं अप।**

२. ह्रीं अग्रे कूष्माण्डिनी कनकप्रभे सिंहमस्तक समारूढ़े अवतर अवतर अमोघ वागेश्वरी सत्य वादिनी सत्यं कथय कथय ह्रीं ॐ स्वाहा।

५. स्कन्दमाता

शिव रेतस् को धारण करने वाली षड़ानन माता वात्सल्यमयी मूर्ति हैं। अपने साधकों का पुत्रवत् पालन करती हैं। **प्रार्थना :-**

सिंहासनगतां नित्यं पद्माञ्चित करद्वया। शुभदाऽस्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ॥

६. कात्यायनी

कत के पुत्र कात्य कहलाये। कात्यगोत्र में उत्पन्न कात्यायन ऋषि द्वारा असुरों के संहार हेतु भगवती की साधना करने पर उनके घर अवतीर्ण हुई। गोपियों ने कृष्ण को पाने हेतु इन्हीं कात्यायनी देवी की मार्गशीर्ष महिने में कालिन्दी यमुना किनारे प्रार्थना की। दुर्गासप्तशती के अनुसार आप ही महासरस्वती आपकी कौशिकी, अंबिका, एवं चण्डिका देवी हैं। आप कमल के समान प्रफुल्लित रहने वाली त्रिनेत्रा चन्द्रवदना है तथा जटाजूट में अर्धचन्द्र को धारण किये हुये है। अपने दस हाथों में (दक्षिण से वाम) त्रिशूल, खड्ग, चक्र, शर, शक्ति, खेटक, धनुष, पाश, अंकुश, घण्टा या परशु धारण किये है। **प्रार्थना:-**

चन्द्रहासोज्ज्वल करा शार्दूलवरवाहना। कात्यायनी शुभं दद्याद् देवि दानवघातिनी ॥

॥ अथ कात्यायनी मंत्र प्रयोग:॥

अष्टाक्षर मंत्र:- ॐ ह्रीं कात्यायन्यै स्वाहा ॥१॥ ह्रीं श्रीं कात्यायन्यै स्वाहा ॥२॥

दशाक्षर मंत्र:- ऐं ह्रीं श्रीं चौं चण्डिकायै नमः।

विवाह हेतु मंत्र:- ॐ कात्यायनि महामाये महोयोगिन्यधीश्वरि। नन्दगोपसुते देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।

मंत्रो यथा -'ॐ ह्रीं कात्यायनि स्वाहा' इत्यष्टाक्षरो मंत्रः।

विनियोग :- **अस्य कात्यायनीमंत्रस्य कपिलो मुनिः। गायत्रीच्छंदः। चंडिका कात्यायनी देवता। ह्रीं श्रीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। मम सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ कपिलमुनये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ चण्डिकाकात्यायनी देवतायै नमः हृदि ॥३॥ ह्रीं श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥६॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- **ॐ ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां**

नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादि षडंगन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ सव्यपादसरोजेनालंकृतोरु मृगाधिपाम् । वामपादाग्रदलित महिषासुरनिर्भराम् ॥६॥
सुप्रसन्नां सुवदनां चारुनेत्रत्रयान्विताम् । हार नूपुर केयूर जटामुकुटमंडिताम् ॥७॥
विचित्रपट्टवसनामर्द्धचन्द्रविभूषिताम् । खड्ग खेटकवज्राणि शूलं च विशिखं तथा ॥८॥
धारयंतीं धनुः पाशं शंखघंटे सरोरुहम् । बाहुभिर्ललितैर्देवि कोटिचन्द्रसमप्रभाम् ॥९॥
समाहृतैर्दिविषदैर्वैरै- राकाशसंस्थितैः । स्तूयमानां मोदमानैर्लोकपालादिभिः सदा ॥१०॥

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य '**ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांत पीठदेवताभ्यो नमः**' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तिः पूजयेत्।

तद्यथा-पूर्वादिक्रमेण- **ॐ प्रभायै नमः ॥१॥ ॐ मायायै नमः। ॐ जयायै नमः ॥३॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥४॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥५॥ ॐ नंदिन्यै नमः ॥६॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥७॥ ॐ विजयायै नमः ॥८॥** मध्ये। **ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥९॥** इति नव पीठशक्तीः संपूज्य ततस्ताम्रादिपात्रे रक्तचन्दनेन यंत्रं विलिख्य '**ॐ आधारशक्तिकात्यायन्यै नमः**' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्यावाहनादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

॥ यंत्रार्चनम् ॥

तत्र क्रमः:- षट्कोणकेसरेषु- अग्निकोणे - **ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ॥१॥** निर्ऋति - **ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥२॥** वायु०- **ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ॥३॥** ईशानकोणे- **ह्रीं श्रीं कवचाय हुं ॥४॥** देवीपूजकयोर्मध्ये - **ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥** देवी पश्चिमे - **ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ॥६॥** इति षडंगानि पूजयेत्।

ततो भूपुराभ्यंतरे पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु वामावर्तेन च **ॐ डाकिन्यै नमः ॥१॥ ॐ योगिन्यै नमः ॥२॥ ॐ खेचर्यै नमः ॥३॥ ॐ शाकिन्यै नमः ॥४॥** इति पूजयेत्।

भूपुराद्बाहिः **इन्द्रादिदशदिग्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्।** इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात्। **अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्ततः। मंत्रोऽयं चिंतितो देवि सभायां पुरतो यदि ॥१॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशो दृश्यते वादिभिस्तथा। पलायंते महादेवि साध्वसेन क्षणात्ततः ॥२॥ कार्तिकस्य सिते पक्षे नवम्यामारभेज्जपम्। सहस्रं प्रत्यहं कृत्वा संप्राप्य नवमीं सिताम् ॥३॥ विजयं खड्गमादाय पूजयित्वा यथाविधि। अर्द्धरात्रे बलिं दत्वा प्रातर्यात्रां समाचरेत् ॥४॥ रणभूमिं समासाद्य सहस्रं प्रजपेन्मनुम्। तं दृट्वा पुरुषं देवि हृत्क्षोभो जायते रिपोः ॥५॥**

सदूतं यममायांतं मन्यमाना नराधिपाः। पलायंते महादेवि नात्र कार्या विचारणा ॥६॥ शुक्लांबरधरो मौनी ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। शुक्लवर्णां महादेवीं ध्यात्वा शुक्लविभूषणाम् ॥७॥ सहस्रं मासमेकं तु जपोन्नित्यं यथाविधि। मालतीबकुलैः कुंदैर्मंत्री मधुरसंप्लुतैः ॥८॥ सहस्रत्रितयं हुत्वा वागीशो जायतेऽचिरात्। हेलया कवितां देवि विशदां कुरुते द्रुतम् ॥९॥ जपं या कुरुते नित्यं शतशो वत्सरावधि। वंध्यापि लभते पुत्रं कार्त्तिकेयमिवापरम् ॥१०॥ दुर्भगा च भवेत्पत्युः सुभगाऽतिमनोरमा। रूपं विचिंत्य पूर्वोक्तं लक्षं जप्त्वायुतं ततः। नीलोत्पलैः सरोजैर्वा हुत्वा वैश्रवणायते ॥११॥

अन्यच्च- ध्यानम्-

व्याघ्रचर्मपरीधानां मुंडमालाविभूषिताम् । रक्तवर्तुलभीमाक्षीं जिह्वया लीलयासुरान् ॥१२॥
चर्वयंतीं महाकालीं कालरात्रिमिवापराम् । क्षोभयतीं जगत्सर्वं ससुरासुरपर्वतम् ॥१३॥

एवं ध्यात्वा जपेद्देवि श्मशाने वा चतुष्पथे। सप्ताहं विशसं कृत्वा व्रतस्थः स्थिरमानसः ॥१४॥ जपेद्यो नियतं देवि स रिपून्नाशयेद्ध्रुवम्। अनेनैव विधानेन बलिं दद्याच्चतुष्पथे ॥१४॥ दग्धं मत्स्यं च सक्त्वन्नं पिंडं कृत्वा समाहितः। आममांसं हरिद्राक्तं यं विचिंत्य प्रदापयेत् ॥१५॥ सप्ताहाल्लभते शत्रुर्यमसद्म न संशयः। हरिर्वा शंकरो वापि न शक्तो रक्षितुं क्वचित् ॥१६॥

बलिमंत्रो यथा- ''ह्रीं ह्रीं चौं चौं कालिके खादय खादय वशीकुरु वशीकुरु शत्रुं मारय मारय स्वाहा''।

इति मंत्रः। अंगारकदिने चैव निंदितासु तिथिष्वपि। पूजितं खड्गमादाय निशीथे बलिमाहरेत् ॥१७॥ प्रहारशोणितं चास्य दद्याद्देव्यै यथाविधि। अच्छेद्याभेदकायः स्याद्रिपूणां नात्र संशयः ॥१८॥

॥ इति कात्यायनीमहाकल्पः ॥

७. कालरात्रि

महानिशा की आप अधिष्ठात्री है। विष्णु की योगनिद्रा आप ही है, आप ही ने संमोहित कर मधुकैटभ का संहार किया। आप काल की काल हैं। दानवगणों तथा कुवृत्तियों के नाश हेतु आपकी उपासना शुभ है। आप कृष्णवर्णा है, उर्ध्वकेशी तथा विकराल गोल त्रिनेत्र वाली है। नासिका के श्वास प्रश्वास से असंख्य अग्निज्वालाएँ प्रकट होती है। ऊपर दाहिने हाथ में तलवार व नीचे वरमुद्रा धारण किये हुये है। बाँये उठे हाथ में जलती हुई मशाले तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती है। अर्थात् अंधकार में भक्तों का मार्गप्रदर्शन करती है। प्राकृतिक प्रकोप व अग्निकाण्ड, दुर्घटनाओं का शमन करती हैं। आप गर्दभ पर सवार है। इसके अन्य स्वरूपों में आप **कालीरूपा शवारूढा** भी है तथा संमोहन की अधिष्ठात्री हैं। **मैंने देखा हैं** कि जब शत्रु बाधा विशेष हो, कृत्या प्रयोग भारी हो, प्रेत बाधा मुकाबला कर रही है, प्रत्यंगिरा व शरभराज के प्रयोग शिथिल हो रहे हों तो इसका **ब्रह्मास्त्रशमन** संमोहन मंत्र करना चाहिये। इससे शत्रु व प्रेत संमोहित होकर निप्राण होकर मूर्छित हो जाता है तब आपके अन्य प्रयोग सफल होंगे। **कालरात्रि का स्वतंत्र प्रयोग** मैंने पुस्तक में अलग से दिया है।

॥ १. ध्यानम् ॥

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्न खरास्थिता । लंबोष्ठी कर्णिका कर्णी तैलाभ्याक्तशरीरिणी ॥
वाम पादोल्लसल्लोहलता कण्टकभूषणा । बर्धन् मूर्ध ध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ॥

(२) दूसरा ध्यान जो **सम्मोहन व शत्रुनाश** कारक हैं-

उद्यन्मार्तण्डकातिं विगलितकबरीं कृष्णवस्त्रा वृतांगीं, दण्डं लिगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं संधधानां त्रिनेत्राम्। नानाकल्पैर्विभासं स्मितमुखकमलां सेवितां देवसङ्घैः, र्मायाराज्ञीं मनोभूशर विकलतनूमाश्रये कालरात्रिम्॥

अस्य मंत्रः- ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि (कालेश्वरि) सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि सर्वराजवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बंदिश्रृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ द्वेष्टन् निर्दलय २ सर्वस्तंभय २ संमोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्ववशं कुरु २ स्वाहा देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः॥

॥ कालरात्रि प्रयोग विधानम् ॥

कालरात्रि का प्रयोग अचूक हैं। यह संहार व सम्मोहन दोनों की अधिष्ठात्री हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन्हीं के प्रभाव से योगनिद्रा में रहते हुये आराधना व तपस्या में लीन रहते हैं। मेरा यह अनुभव हैं कि जब शत्रु बाधा, प्रेतादिकबाधा प्रबल हो बगला, प्रत्यंगिरा, शरभराजादि के प्रयोग शिथिल हो रहे हो तो इस विद्या का प्रयोग साथ में करना चाहिये जैसे विष्णु के द्वारा ५००० वर्षो तक युद्ध करने पर भी मधुकैटम को नहीं मार सके तो **इन्ही कालरात्रि** ने उनका संमोहन किया तब ही वे राक्षस मारे गये। यह विद्या तीव्र संमोहन से शत्रु को शिथिल व निष्प्राण भी कर सकती हैं। कालरात्रि के २-३ तरह के ध्यान है। एक ध्यान जो सर्व विदित हैं वे खरारूढ है, भीषण आकृति हैं ऊपर के दांये हाथ में खड्ग हैं व बाँये हाथ में मशाल है जिससे वे भक्तों का मार्ग प्रदर्शन कर अंधकार को दूर करती हैं शत्रुबाधा व विघ्नों को जलाकर नष्ट कर देती हैं। नीचे के हाथों में वर अभय मुद्रा है। कहीं एक तरफ खट्वांग व दण्ड धारण किये हुये है दूसरी तरफ के हाथों में वर अभय मुद्रा है।

ब्रह्मास्त्र शमन मंत्र - **ग्लौं हूं ऐं ह्रीं श्रीं एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय प्रस्फुर प्रफुर सर्वजन संमोहय संमोहय हुं फट् स्वाहा।**

॥ ध्यानम् ॥

एक वेणी जपाकर्णपूरा नग्न खरास्थिता, लंबोष्ठी कार्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्त शरीरिणी ।
वामपादोल्लसल्लोह लताकण्टकभूषणा, वर्धन् मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ॥

कालरात्रि महाकाली व महाषोडशी की समयाविद्या है अर्थात् इनके साथ समयाधार पर कालरात्रि की भी पूजा की जानी चाहिये। ''मंत्र कोष'' में दोनों विद्याओं के अलग अलग ध्यान हैं मूल मंत्र में सामान्य भेद हैं।

कालीक्रमे मंत्र:- **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तंभनि सर्वराजवशङ्करि, सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि : बन्दीश्रृखलाँस्त्रोटय -त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय- २ द्वेष्ट्न् निर्दलय- २ सर्वं स्तंभय २ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय- २ सर्वंवशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वं कालरात्रि! कामिनि! गणेश्वरि नमः।** (मंत्र महार्णव में मनोहरे लिखा हैं, तथा सर्वमुखस्तंभिनि, लिखा हैं, मंत्रमहोदधि में देहि देहि सर्वकालरात्रि लिखा हैं।) मंत्रमहोदधि में द्वेष्ट्टन की जगह ''**द्वेषिणः उच्चाटय- २ सर्ववशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः**'' लिखा हैं। इस मंत्र का प्रयोग आगे दिया गया है।

षोड़शीक्रमोक्त मंत्र:- **ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालेश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखस्तंभिनि सर्वराजवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणि बन्दिश्रृङ्खलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रूञ्जम्भय जम्भय द्वेषं निर्दलय२ सर्वं स्तंभय२ उच्चाटय २ सर्ववश्यं कुरु कुरु सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वरि हुं फट् स्वाहा।**

विनियोग:- **अस्य श्री कालरात्रि महाविद्यामंत्रस्य भैरव ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकालरात्रि देवता, ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिं, हुं कीलकं, आत्मनोऽभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रौं ह्रः से षडङ्गन्यास करे।**

आरक्त भानुसदृशीं यौवनोन्मत्त विग्रहां चतुर्भुजां त्रिनयनां भीषणां चन्द्रशेखराम् ।
प्रेतासनसमासीनं भजतां सर्वकामदां दक्षिणे चाऽभयं पाशं वामे भुवनमेव च ॥
रक्तदण्डधरां कालरात्रिं विचिन्तयेत्॥

॥ अथ कालरात्रि मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा-

ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बंदिश्रृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ द्वेष्टृन् निर्दलय २ सर्वं स्तंभय २ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्वं वशं कुरु २ स्वाहा देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः। इति त्रयस्त्रिंशदुत्तरशताक्षरो मंत्रः।

॥ अस्य विधानम् ॥

विनियोग :- **अस्य कालरात्रिमंत्रस्य दक्ष ऋषिः। जगतीच्छंदः। अलर्कनिवानिसिनी कालरात्रिर्देवता। क्रीं बीजम्। मायाराज्ञीति शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ दक्षऋषये नमः शिरसि ॥१॥ जगतीच्छंदसे नमो मुखे ॥२॥ अलर्कनिवासिनीकालरात्रि देवतायै नमो हृदि ॥३॥ क्रीं बीजाय नमो लिंगे ॥४॥ मायाराज्ञीतिशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे। ॥६॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करांगन्यास :- **ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ऐं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥** इति पंचांगुलीषु करांगन्यासः।

हृदयादिषडंगन्यास :- **ॐ ऐंह्रींक्लींश्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि हृदयाय नमः ॥१॥ सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपरुषाकर्षिणि शिरसे स्वाहा ॥२॥ बंदिश्रृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ शिखायै वषट् ॥३॥ द्वेष्टृन् निर्दलय २ सर्वं स्तंभय २ कवचाय हुं ॥४॥ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्वं वशं कुरु २ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः अस्त्राय फट् ॥६॥** इति हृदयादिषडंगन्यासः। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ उद्यन्मार्तंड कांतिं विगलितकबरीं कृष्णवस्त्रावृतांगीं
दंडं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं संधधानां त्रिनेत्राम् ।
नाना कल्पैर्विभासं स्मितमुखकमलां सेवितां
देवसंघैर्मायाराज्ञीं मनोभूश्शरविकलतनूमाश्रये कालरात्रिम् ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठ देवताः संस्थाप्य **ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः'** इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। पूर्वादिक्रमेण -

ॐ जयायै नमः ॥१॥ ॐ विजयायै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥४॥ ॐ नित्यायै नमः ॥५॥ ॐ विलासिन्यै नमः ॥६॥ ॐ दोग्ध्र्यै नमः ॥७॥ ॐ अघोरायै नमः ॥८॥ मध्ये **ॐ मंगलायै नमः ॥९॥ इति पूजयेत्।**

ततो भूर्जपत्रे बिंदुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलवृत्तषोडशदलवृत्तं च कार्य परत्वेन लेखन्यादिद्वारा लिखित्वा तस्योपरि त्रिरेखात्मकभूपुरं विनिर्माय '**ॐ कालरात्रियोगपीठात्मने नमः**' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा (बिन्दू में मूर्ति की कल्पना कर गंधपुष्पाक्षत से आवरण पूजा करे)।
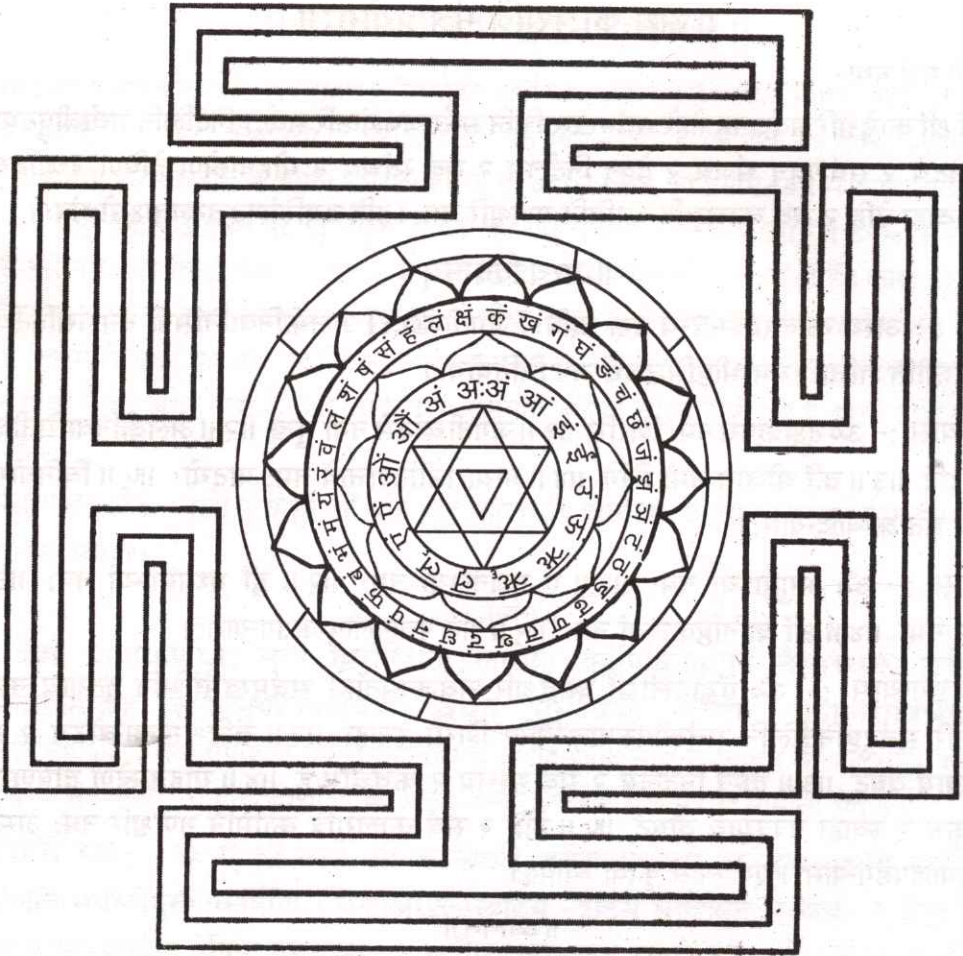
॥ कालरात्रि यन्त्रम् ॥

ॐ संविमन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। देह्यनुज्ञां कालरात्रि परिवारार्चनाय मे ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत। तद्यथा तत्र त्रिकोणे पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च।

प्रथमावरणम् :- (त्रिकोणे) **ॐ संमोहिन्यै नमः। संमोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ इति सर्वत्र। ॐ मोहिन्यै नमः। मोहिनीश्रीपा० २। ॐ विमोहिन्यै नमः। विमोहिनीश्रीपा० ॥३॥** इति पूजयेत्।

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य-

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा **पूजितास्तर्पिताः** संतु इति वदेत् अर्घपात्र से जल छोड़ें॥

द्वितीयावरणम् :- (ततः षट्कोणकेसरेषु)- **आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च - ॐ हृदयाय नमः, हृदयश्रीपा०। ॐ शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा०। ॐ शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० । ॐ कवचाय हुम्। कवचश्रीपा०। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। नैत्रत्रयश्रीपा०। ॐ अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा०। इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

तृतीयावरणम् :- (ततो वृत्ते दक्षिणावर्तेन च)- **ॐ अं आं नमः ॥१॥ ॐ इँ ईं नमः ॥२॥ ॐ उँ ऊँ नमः। ॐ ऋँ ॠँ नमः ॥४॥ ॐ लृँ लॄँ नमः ॥५॥ ॐ एँ ऐं नमः ॥६॥ ॐ ओं औं नमः ॥७॥ ॐ अं अः नमः ॥८॥ इति षोडशस्वरान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

चतुर्थावरणम् :- (ततोऽष्टदलेषु दक्षिणावर्तेन)- **ॐ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीश्रीपा० ॥१॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीश्रीपा० ॥२॥ ॐ कौमार्य्यै नमः। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा० ॥५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीश्रीपा०।६॥ ॐ चामुंडायै नमः। चामुंडाश्री० ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ मातृः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

पंचमावरणम् :- (पुनर्वृत्ते)- **ॐ कं नमः १। ॐ खं नमः २। ॐ गं नमः ३। ॐ घं नमः ४। ॐ ङं नमः ५। ॐ चं नमः ६। ॐ छं नमः ७। ॐ जं नमः ८। ॐ झं नमः ९। ॐ ञं नमः १०। ॐ टं नमः ११। ॐ ठं नमः १२। ॐ डं नमः १३। ॐ ढ़ं नमः १४। ॐ णं नमः १५। ॐ तं नमः १६। ॐ थं नमः १७। ॐ दं नमः १८। ॐ धं नमः १९। ॐ नं नमः २०। ॐ पं नमः २१। ॐ फं नमः २२। ॐ बं नमः २३। ॐ भं नमः २४। ॐ मं नमः २५। ॐ यं नमः २६। ॐ रं नमः २७। ॐ लं नमः २८। ॐ वं नमः २९। ॐ शं नमः ३०। ॐ षं नमः ३१। ॐ सं नमः ३२। ॐ हं नमः ३३। ॐ ळं नमः ३४। ॐ क्षं नमः ३५। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

षष्ठावरणम् :- (ततः षोडशदलेषु दक्षिणावर्तेन च)- **ॐ उर्वश्यै नमः। उर्वशी श्रीपा० ॥१॥ ॐ मेनकायै नमः। मेनकाश्रीपा० २। ॐ रंभायै नमः। रंभाश्रीपा० ३। ॐ घृताच्यै नमः घृताची श्रीपादुका० ४। ॐ मंजुघोषायै नमः। मंजुघोषाश्रीपा ५। ॐ सहजन्यायै नमः। सहजन्याश्रीपा० ६। ॐ सुकेश्यै नमः। सुकेशीश्रीपा० ७। ॐ तिलोत्तमायै नमः। तिलोत्तमाश्रीपा० ८। ॐ गांधर्व्यै नमः। गांधर्वीश्रीपा०९। ॐ सिद्धकन्यायै नमः। सिद्धकन्याश्रीपा० १०। ॐ किन्नर्य्यै नमः। किन्नरीश्रीपा० ११। ॐ नागकन्यकायै नमः। नागकन्यकाश्रीपा० १२। ॐ विद्याधर्य्यै नमः। विद्याधरीश्रीपा० १३ ॐ किंपुरुषायै नमः। किंपुरुषाश्रीपा० १४। यक्षिण्यै नमः। यक्षिणीश्रीपा० १५। ॐ पिशाच्यै नमः। पिशाचीश्रीपा० १६। इति षोडशदेवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥**

सप्तमावरणम् :- (पुनर्वृत्ते)- **ॐ परमात्मने नमः। परमात्मश्रीपा० १। ऐं सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीश्रीपा० २। ह्रीं गौर्य्यै नमः। गौरीश्रीपा० ३। क्लीं कामायै नमः। कामाश्रीपा० ४। श्रीं रमायै नमः। रमाश्रीपा० ५। द्राँ द्रविण्यै नमः। द्रविणीश्रीपा० ६। द्रीं क्षोभिण्यै नमः। क्षोभिणीश्रीपा० ७। क्लीं वशकिरिण्यै नमः। वशीकरिणीश्रीपा ८। ब्लूं कर्षिण्यै नमः। कर्षिणीश्रीपा० ९। सः संमोहिन्यै नमः। संमोहिनीश्रीपा० १०। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

अष्टमावरणम् :- (ततो भूपुराभ्यंतरे प्राच्यादिक्रमेण)- **ॐ अणिमायै नमः। अणिमाश्रीपा० १। ॐ लघिमायै नमः। लघिमाश्रीपा० २। ॐ महिमायै नमः। महिमाश्रीपा० ३। ॐ ईशितायै नमः। ईशिताश्रीपा० ४। ॐ वशितायै नमः। वशिताश्रीपा० ५। ॐ कामपूरण्यै नमः। कामपूरणीश्रीपा० ६। ॐ गरिमायै नमः। गरिमाश्रीपा० ७। ॐ प्राप्त्यै नमः। प्राप्तिश्रीपा० ८। इत्यष्टसिद्धीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।** (प्रत्येक देवता का चार चार दिशाओं पूजन करें)

नवमावरणम् :- (ततो भूगृहस्य प्रथमरेखायां चतुर्दिक्षु)- **ॐ इच्छाशक्त्यै नमः। इच्छाशक्तिश्रीपा० १। ॐ क्रियाशक्त्यै नमः। क्रियाशक्तिश्रीपा० २। ॐ ज्ञानशक्त्यै नमः। ज्ञानशक्तिश्रीपा० ३। इति पूजयेत्। ततो् मध्यरेखायाम्**

ॐ रुद्राय नमः। रुद्रश्रीपा० १। ॐ विष्णवे नमः। विष्णुश्रीपा० २। ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मश्रीपा० ३। इति पूजयेत्। ततोऽन्तरेखायां ॐ सत्त्वाय नमः। सत्त्वश्रीपा० १। ॐ रजसे नमः। रजःश्रीपा० २। ॐ तमसे नमः। तमःश्रीपा० ३। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।

दशमावरणम् :- (ततः भूपुरबाह्ये प्राच्यादिचतुर्दिक्षु)- **ॐ गणेशाय नमः। गणेशश्रीपा० १। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालश्रीपा० २। ॐ बटुकाय नमः। बटुकश्रीपा० ३। ॐ योगिनीभ्यो नमः। योगिनीश्रीपा० ४। इति द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

एकादशमावरणम् :- (ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण)- **ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्रश्रीपा० १। ॐ रं अग्नेय नमः। अग्निश्रीपा० २। ॐ मं यमाय नमः। यमश्रीपा० ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिश्रीपा० ४। ॐ वं वरुणाय नमः। वरुणश्रीपा० ५। ॐ शं वायवे नमः। वायुश्रीपा० ६। ॐ कुं कुबेराय नमः। कुबेरश्रीपा. ७। ॐ हं ईशानाय नमः। ईशानश्रीपा० ८। पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मश्रीपा० ९। वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनन्तश्रीपा. १०। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥**

द्वादशावरणम् :- (तत इन्द्रादिसमीपे)- **ॐ वं वज्राय नमः ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥२॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥४॥ ॐ पां पाशाय नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः ॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

त्रयोदशावरणम् :- इति बाह्यार्चनं कृत्वा पुनः देवीपार्श्वे प्राच्यादिचतुर्दिक्षु (प्राच्याम्)- **ॐ मायायै नमः। मायाश्रीपा० १। ॐ कालरात्र्यै नमः। कालरात्रिश्रीपा० २। ॐ वटवासिन्यै नमः। वटवासिनीश्रीपा० ३।** (दक्षिणे) **ॐ गणेश्वर्य्यै नमः। गणेश्वरीश्रीपा १। ॐ काह्लाख्यायै नमः। काह्लाख्याश्रीपा० २। ॐ व्यापिकायै नमः। व्यापिकाश्रीपा० ३।** (पश्चिमे) **ॐ अलर्कवासिन्यै नमः। अलर्कवासिनीश्रीपा० १। ॐ मायाराज्ञ्यै नमः। मायाराज्ञीश्रीपा० २। ॐ ॐ मदनप्रियायै नमः। मदनप्रियाश्रीपा ३।** (उत्तरे) **ॐ रत्यै नमः। रतिश्रीपा० १। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीश्रीपा०२। ॐ काह्लेश्वर्य्यै नमः। काह्लेश्वरीश्रीपा० ३। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।.**

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य मूलेन मद्यादिबलिं दत्त्वा जपं कुर्यात्।

अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। तद्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री षट् प्रयोगान् साधयेत्। तथा च अयुतं प्रजपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः। पयोरुहैर्वा विप्रेन्द्रान् संतर्प्य श्रेय आप्नुयात् ॥१॥ एवं संपूजिता स्वेष्टं कालरात्रिः प्रयच्छति। सिद्धे मंत्री प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥२॥

॥ अन्य काम्य प्रयोगाः ॥

॥ वशीकरण ॥

शनिवार के दिन सायं सरोवर पर जाकर सरोवर एवं जलौ का (जौंक) का पूजन करे।

मंत्र-**ॐ नमो जलौकायै जलौकायै सर्वजनं वशं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।** रात्रि में देवी स्मरण करते हुये सो जावे। पुन प्रातः काल सरोवर से जलौ का (जौंक) लाकर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बनावे। काले कपास की रुई में चूर्ण मिलाकर बत्तीबनावें, कुम्हार से मिट्टी लाकर दीप बनाये, चलते हुये कोल्हू का शुद्ध तेल लावे, वैश्या के घर से अग्नि लाकर कुचिला की लकड़ी जलाकर उससे दीप प्रज्ज्वलित करे। हल्दी से त्रिकोण षट्कोण एवं भूपूरयुक्त यंत्र

बनाकर उस पर दीप रखें। उस दीपक पर कालरात्रि का आवाहन कर आवरण पूजा करे। उस दीपक पर नवीन खप्पर रखकर कज्जल बनाये। उस कज्जल को लेकर पश्चिमाभिमुख बैठकर तीन सौ बार वक्ष्यमाण मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करें।

॥ अञ्जनभिमंत्रण मंत्र ॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूं हसौः नमः काह्लेश्वरि सर्वान्मोहय मोहय कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाऽकर्षय आकर्षय शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं।

पश्चात् दीप, देवता, व अपनी आत्मा का सामंजस करे। मंगलवार को पुनः देवी व अंजनका पूजन कर अंजन को मक्खन में मिश्रित करे। पश्चात् मूल मंत्र से १०८ आहुति महुआ के पुष्पों से देवे। कुमारी वटुक व सुवासिनियों को भोजन कराये। उपरोक्त सिद्धाञ्जन का तिलक लगाने से राजा प्रजा सभी का संमोहन होवे। दूध में मिलाकर पिलाने से पीने वाला व्यक्ति वशीभूत होवे। दूध में रंगभेद की आशंका रहने से पान में भी खिलाया जा सकता है।

॥ स्तंभन प्रयोग ॥

हल्दी, गोरोचन, कूट एवं तगर को गोमूत्र में पीसकर उसमें हल्दी में रंगे वस्त्र पर अष्टदल बनायें। मध्य में शत्रु का नाम "**अमुकं स्तंभय**" लिखे। अष्टदलों में प्रत्येक में **ॐ, ॐ, ग्लौं, ग्लौं, च-ट, च-ट, (चट-चट)** एक एक अक्षर लिखे। फिर उस मंत्र को पीलेवस्त्र से वेष्टन करे। कुचिला की लकड़ी की सात कीलों से यंत्र को विद्ध कर देवे एवं आक के पत्ते में लपेट कर उस यंत्र को बांबी में रखकर बांबी को भेड़ के मूत्र से भर देवें। फिर बांबी के ऊपर पत्थर रखकर उस पर बैठकर साधक नैऋत्य कोण की ओर मुख कर हल्दी की माला पर एक हजार जप करे।

मंत्र - **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं कामाक्षि मायारूपिणि सर्वमनोहारिणि सर्वमनोहारिणि स्तंभय स्तंभय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लीं क्लीं क्लूं कामाक्षे काह्लेश्वरि हुं हुं हुम्।**

॥ मोहन प्रयोग ॥

रविवार के दिन हल्दीलाकर उसे स्त्री के दूध में पीसकर उससे भोजपत्र पर यंत्र बनावे। एक वृत्त बनाकर उसके बीच में "**क्लीं**" लिखें। उस वृत्त के बाहर चारों ओर वृत्ताकार १० बार कामबीज "**क्लीं**" लिखे। पुनः उसके बाहर वृत्ताकार १२ बार कामबीज "**क्लीं**" लिखे। पुनः उसके बाहर वृत्ताकार १६ बार कामबीज "**क्लीं**" लिखे। इन सबके ऊपर एक बड़ा षट्कोण बनाये (ये अक्षर बीच में रह जायेंगे) उसके प्रत्येक कोणों में "**क्लीं**" लिखे। फिर संपूर्ण यंत्र के चारों ओर "**ऐं**" वृत्ताकार लिखें। अथवा किसी वस्त्र व भूमंडल पर बड़ा सा "**ऐं**" लिखे। उसके मध्य में इस यंत्र को लिख देवे। उस यंत्र पर बैठकर साधक ५ दिन तक एक एक हजार मंत्र जप करे।

मंत्र - "**ॐ कामाय क्लीं क्लीं कामिन्यै क्लीं**"। पश्चात् दशांश होम करे। उस भस्म का तिलक लगाने से संसार का सम्मोहन होता हैं।

॥ आकर्षण प्रयोगः ॥

कृष्णा अष्टमी वा चतुर्दशी को मंगलवार रविवार हो उस दिन नाभिपर्यन्त जल में खड़े होकर मूलमंत्र का ११ सौ जप करे। घर आकर शरीर पर तिलों का तेल या सुगंधित तेल मले। भद्रपीठ पर काम्य स्त्री वा पुरुष की अंजन से आकृति बनाये। उसकी लाजवतीवृक्ष के पत्तों से पूजा कर, लाजवती की जड़ के रस से प्रोक्षण करे। उसके आगे बैठकर मंत्र जप करे-

मंत्र - **ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षण्यै अमुकीं वा अमुकं साध्य** (स्त्री या पुरुष के नाम में द्वितीयान्त) **आकर्षय आकर्षय शीघ्रमानय शीघ्रमानय आं ह्रीं क्रों भद्रकाल्यै नमः।**

इस मंत्र का एक सौ साठ बार जप कर साधक ५० लाल कनेर के पुष्पों से पूर्वलिखित आकृति का पूजन करे। फिर साध्य के नाम के आगे ॐ सहित वर्णमाला के एक एक अक्षर युक्त कर साध्य नाम के पश्चात् आकर्षय आकर्षय नमः बोलते हुये एक पुष्प अर्पण करे।

यथा- **ॐ (अमुकीं अमुकं वा) आकर्षय आकर्षय नमः। इस तरह नाम आगे आं ई......... हं लं क्षं** तक एक एक आगे लगाते हुये पुष्पार्चन करे। फिर उस आकृति का धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन करे। ४४ अक्षर वाले उपरोक्त मंत्र से घृत मिश्रित चने (भुनेहुये) से १०० आहुतियां देवे। पश्चात् काले कपास के कुमारी द्वारा काते गये सूत के २८ धागे अपनी शरीर की लंबाई तुल्य लेवे उनमें आकर्षण मंत्र पढ़ते हुये एक एक गांठ लगाते हुये १०८ गांठों का गण्डा बनाये। उसको धारण करने से वांछित स्त्री पुरुष ३ या ९ दिन में वश में हो जाते हैं। कोई व्यक्ति बाहर चला गया होवे तो उसके लिये भी यह प्रयोग करके देखना चाहिये।

॥ उच्चाटन प्रयोगः॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन निर्जन मकान में दक्षिण की ओर शिखा खोलकर बैठे। नीले वस्त्र धारण कर कुक्कुटासन से बैठे। फिर मूञ्ज की रस्सी की ग्रंथियुक्ता माला पर शबरी देवता का ध्यान कर मंत्र दो हजार बार जपे। (शबरी मंत्र अलग विधान में दिया हैं)

मंत्र- **ॐ ब्लूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमुकमावेश उच्चाटय उच्चाटय आशूच्चाटय छिन्धि २ भिन्धि स्वाहा स्वाहा ह्रीं कामाक्षि क्रों।**

इस मंत्र का प्रधान जप करके रात्रि में सरसों से दशांश होम करे। फिर सरसों की खली व सरसों के तेल को जल में मिलाकर अपनी शिखा प्रोक्षण कर शिखा खोले। भूमि पर बलिदान देवे। ऐसा कम से कम ७ दिन करने से शत्रु का उच्चाटन होकर परदेश गमन करता हैं।

॥ विद्वेषण प्रयोगः ॥

जिन दो व्यक्तियों के बीच में विद्वेषण करना हो उनमें जन्म नक्षत्र वाले वृक्ष या करञ्ज की लकड़ी की दो पट्टे बनावे। फिर गधी के दूध में विषाष्टक (पिप्पली, मिर्च, सोंठ, बाजपक्षी की विष्ठा, चित्रक (अण्डी) गृहधूम, धत्तूरे का रस, लवण) मिलाकर उनके नामाक्षरों की दो आकृति उन पट्टों पर बनाये। फिर अर्द्धरात्रि में मंत्र जप करे।

मंत्र - **ॐ ह्रौं ग्लौं हसौं भ्रौं भगवति दण्डधारिणि अमुकमकुमं शीघ्रं विद्वेषय २ रोधय २ भञ्जय २ श्रीं ह्रीं राज्ञयै ॐ हुं हुं हुम्।**

जप करने के बाद दोनों फलकों (पट्टे) को गदहा, भैंस तथा घोड़े की पूंछ के बालों से बनी रस्सी से बांधकर बांबी के भीतर गाड़कर एक हजार जप करे। बलि प्रदान करे।

॥ मारण प्रयोग ॥

कृष्णा चतुर्दशी को मंगलवार के दिन गौशाला, चौराह एवं श्मशान की मिट्टी लाकर, उसमें बायबिडङ्ग, कनेर, आक के फूल मिलाकर पुतली बनाये। रात्रि में श्मशान में जाकर नील वस्त्र धारण कर शिखा खोलकर पुतली पर शत्रु का नाम लिखे। उसमें शत्रु के नाम से प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर कम्बल से ढंक कर तेल में डुबोकर पूजन करे। पुतली को गदहा, घोड़ा व भैंस के रक्त से स्नान कराये। लाल चंदन व धत्तूरे के फूल चढाकर मारण मंत्र से होम कर पुनः पूजन करे।

मंत्र- **ॐ म्रां म्रीं म्रूं मृतीश्वरि कृं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय २ क्रोम्।**

इस मंत्र से पूजन कर वचा, सरसों, भिलावां, धत्तूरे के बीजों को मिलाकर १०१ आहुतियां देवे। फिर पुतली का शिर

काटकर उसी अग्नि में डाल देना चाहिये। नित्य मद्य मांसादि से बलि देते हुये २१ दिन प्रयोग करे।

विशेषः- जो व्यक्ति ऐसा घातक प्रयोग करता हैं उसे अपनी रक्षा हेतु नृसिंह, शरभ, हनुमान भैरवादि के विशेष रक्षा मंत्रों का प्रयोग करना चाहिये तथा गुरु के मार्गदर्शन में कार्य करना चाहिये।

८. महागौरी

कालरात्रि जब विघ्नों का शमन कर देती है तो शांभवी महागौरी जनकल्याण हेतु आगमन करती है। वे महागौराङ्गी है, वृषवाहना है। ऊपर के दाहिने हाथ में डमरु नीचे के हाथ में वरमुद्रा है, ऊपर के वामहस्त में अभय मुद्रा एवं नीचे के वाम हस्त में त्रिशूल धारण किये हुये है। **प्रार्थनाः**-

श्वेते वृषेसमारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः। महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा॥

९. सिद्धिदात्री

अष्टसिद्धियों व नवनिधियों की अधिष्ठात्री हैं। देवीपुराण के अनुसार सिद्धिदात्री की अनुकंपा से ही शिव अर्द्धनारीश्वर स्वरूप को प्राप्त हुये। ये कमलपुष्प पर विराजमान एवं सिंहवाहिनी हैं। दाहिने हाथों में चक्र एवं गदा तथा बांये हाथों में शंख एवं कमलपुष्प धारण किये हुये हैं। व्यक्ति को ब्रह्माण्ड विजय की क्षमता देती हैं। भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली आप श्रीत्रिपुरसुंदरी हैं। **प्रार्थनाः**-

सिद्धगंधर्व यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि। सेव्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

॥ शारदीय नवरात्र प्रयोग विधानम्॥

अमायुक्ता प्रतिपदा को घट स्थापन करने से विनाश होता हैं। यदि प्रतिपदा दो हो तो द्वितीया युक्त प्रतिपदा कभी घटस्थापन नहीं करे उसे चण्डिका शाप देकर भस्म कर देती हैं। किस किस मास में कौन कौनसे कुयोग आते हैं इसका वर्णन पहले ४ नवरात्र विधान में दे दिया हैं। आठ दिन व्रत करके नवम दिन पारणा करे। दशवें दिन पारणा करने से स्त्री वंश हानि होवे। दशमी को तो विसर्जन ही करे। घट स्थापन समय कुयोग हो तो अभिजित में घट स्थापन करे। अष्टमी रात्रि पर नवमी को होम करे। नवमी के दिन शाम को दशमी वा श्रवण नक्षत्र आ जाये दूसरे दिन अभाव हो तो नवमी को ही विसर्जन करे।

॥ नवचण्डी विधानम्॥

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा के पूर्वाह्न में, तिलतैल से स्नानादि कर नित्यक्रिया समापन पूर्वक साधक सुसंस्कृत शुभ स्थान में, तोरणादि से अलंकृत और कदली के स्तम्भों से शोभायमान तथा सुगन्धित धूपादि एवं उज्ज्वल दीपकों से प्रकाशित अपने आसन पर, पूर्वमुख होकर बैठे। तदनन्तर आचमन और प्राणायाम कर देशकालसङ्कीर्तन पूर्वक यह **सङ्कल्प** करे-

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थं सकलमनोरथ फलावाप्त्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं नवचण्डीविधानमहं करिष्ये।

इसकेबाद गणेशमातृकादि की पूजा कर उक्त गृह की पूर्व दिशा में भगवती का आवाहन निम्न मन्त्र से करे- (बलिदेकर दिग्रक्षण करें) '**ॐ गजारूढे कादम्बरि देवि! इहागच्छ इह तिष्ठ।**' फिर उन्हें किसी पीठासने पर

प्रतिष्ठित कर गन्ध प्रदान करें– **'श्रीकादम्बरि! एष ते गन्धो नमः'**। तव **'श्रीकादम्बरि! इमानि ते पुष्पाणि वौषट्'** से पुष्प, **'ॐ कादम्बरि! एष ते धूपो नमः'** से धूप और **'ॐ कादम्बरि! एष ते दीपो नमः'** से दीप प्रदान करे। इसके बाद किसी अन्य पात्र में विविध व्यञ्जनों के साथ घृतशर्करायुक्त पायस (खीर) सजाकर उसे भगवती के सम्मुख रखे और उस नैवेद्य को निम्न मन्त्र पढते हुए भगवती को समर्पित करे– **'ॐ श्रीकादम्बरि! एष ते बलिः नमः'**। इस प्रकार बलि प्रदान कर **'क्षमस्व'** कहकर भगवती को प्रणाम करे।

अब उपर्युक्त क्रम ही से आग्नेय कोण में–**'ॐ अजवाहने उल्के देवि! इहागच्छ इह तिष्ठ'** से उल्कादेवी का आवाहन कर पूजन करे और उन्हें बलि प्रदान करे। इसी क्रम से दक्षिणादि दिशाओं में क्रमशः **कराली, रक्ताक्षी, श्वेताम्बरा, हरिता, यक्षिणी, कङ्काली, सुरश्रेष्ठा** और **सर्पराज्ञी** देवियों का आवाहन पूजन कर उन्हें 'बलि' प्रदान करे।

यथा– **'ॐ महिषारूढे करालि देवि! इहागच्छ इह तिष्ठ'** से दक्षिण में, **'ॐ प्रेतवाहने रक्ताक्षि देवि! इहागच्छ इह तिष्ठ'**–से नैर्ऋत्य में, **'ॐ श्वेतकौलीरवाहने श्वेताम्बरे देवि! इहागच्छ इह तिष्ठ**– से पश्चिम में, **'ॐ मृगवाहने हरितादेवि ! इहागच्छ इह तिष्ठ'**–से वायव्य में, **'ॐ सिंहासने यक्षिणि देवि ! इहागच्छ इह तिष्ठ'**– से उत्तर में, **'ॐ वृषवाहने कङ्कालि देवि ! इहागच्छ इह तिष्ठ'**– से ईशान में, **'ॐ हंसवाहने सुरश्रेष्ठे देवि ! इहागच्छ इह तिष्ठ'**– से पूर्वईशान के मध्य में, **'ॐ अहिवाहने सर्पराज्ञि देवि ! इहागच्छ इह तिष्ठ'**– से निर्ऋतिवरुण के मध्य में बलि प्रदान करे। तदनन्तर दशों दिशाओं में यथाक्रम इन्द्र आदि दिक्पालों का पूजन कर ग्रहमण्डल में स्वशाखोक्त विधि के अनुसार यथास्थान नवग्रहों की पूजा करे।

इसके बाद चार हाथ की लम्बीचौडी चतुरस्र वेदिका में **'सर्वतोभद्र'** या **'अष्टदलमण्डल'** की रचना करे और उस पर शालिपुञ्ज के ऊपर स्वर्णादिनिर्मित कुम्भ को स्थापित करे। यह कुम्भ नव तन्तुओं से वेष्ठित हो, इसमें चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों का लेप किया हुआ हो, सुधूपित हो और हिरण्यसहित वज्रमुक्ताफलपद्मराग नीलमरकत इन पञ्चरत्नों से समायुक्त हो।

अब **'मही द्यौः'** से भूमि का स्पर्श कर **'ओषधयः सं'** से धान्यराशि को छुए और 'आजिघ्र कलश' से कलश को सूंघे। इस प्रकार कलश स्थापन कर **'इमं मे गङ्गे'** से उसे शुद्ध जल से पूर्ण करे। फिर उस जल में कुंकुम, अगरु, कर्पूर, चन्दनपङ्क और कुसुम छोड़े तथा कलश के मुख पर आम्रपत्र रखकर उसके ऊपर जिस धातु का कलश हो, उसी का बना हुआ पात्र रखे। पात्र तण्डुल से भरा हो और उसमें नारिकेल भी रखा होना चाहिए।

तदनन्तर **'पूर्णादर्वी'** से पूर्णपात्र व कलश को अभिमन्त्रित करे। फिर **'युवा सुवासा'** से उसे रक्त वस्त्र से वेष्ठित करे। कलश में **गणेश, सूर्य अग्नि, विष्णु, शिव** एवं **शिवा** का आवाहन करे। स्वर्णादि निर्मित **महिषघ्नी** देवी की प्रतिमा ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसे अभिषिक्त कर दुग्ध और जल की धारा से क्रमशः उसका अभिषेक करे। फिर स्वच्छ वस्त्र से मूर्ति को प्रोक्षित कर, आसनमन्त्र से पुष्पादि आसन देकर, कलश के ऊपर स्थापित कर वहाँ उसकी प्रतिष्ठा करे। तब निम्न मन्त्र से उसमें भगवती का आवाहन करे–

एहि दुर्गे महाभागे! रक्षार्थं मम सर्वदा। आवाहयाम्यहं देवि! सर्वकामार्थ सिद्धये॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ, स्थितिं मत्कृपया कुरु। रक्षां कुरु सदा भद्रे, विश्वेश्वरि! नमोऽस्तु ते॥ उक्त प्रकार आवाहन कर निम्न मन्त्र से पुष्प समर्पित करे– **ॐ जयन्ती मङ्गला काली, भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु ते॥** इसके बाद उपचारों से पूजन कर **'नवार्ण यन्त्र'** की आवरण पूजा करे और धूपादिपूजन के पश्चात् निम्न मन्त्रों से भगवती की प्रार्थना करे–

ॐ **महिषघ्नि महामाये, चामुण्डे मुण्डमालिनि! द्रव्यमारोग्यविजयो, देहि देवि! नमः सदा॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यो,**

रक्षोभ्यश्च महेश्वरि! देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च, भयेभ्यो रक्ष मां सदा॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके! शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामान् प्रदेहि मे॥ इस प्रकार प्रार्थना कर 'मूलमन्त्र' का यथाशक्ति जप करे। **भगं** का अर्थ षड्ऐश्वर्य से है।

तदनन्तर पहले नारायण आदि को नमस्कार कर कवच अर्गला, कीलकपूर्वक चरितत्रय का रहस्यत्रय के सहित पाठ करे। यदि स्वयं ऐसा करने में असमर्थ हो, तो किसी ब्राह्मण को बुलाकर सादर उसका पूजन करे। फिर **'चण्डीपाठार्थं त्वामहं वृणे'** इस मन्त्र से यज्ञसूत्र द्वारा वेष्ठित पूगीफल को दक्षिणासहित उस ब्राह्मण के हाथ में प्रदान कर उससे जप कराए। जप के अन्त में पुष्पाञ्जलि देकर नमस्कार करे और पद्धति के अनुसार कुमारी पूजा करे। तदनन्तर यथाविधि गुरुदेव की पूजाकर ब्राह्मणों का पूजन करे और उन्हें भोजन कराकर ताम्बूल तथा दक्षिणा से उनको सन्तुष्ट करे।

वृद्धिक्रम में उक्त प्रकार प्रतिपदा में कार्य कर द्वितीया में इसका दुगना, तृतीया में तिगुना, चतुर्थी में चौगुना और इसी क्रम से वृद्धि करते हुए कुमारीभोजन तथा ब्राह्मणसमाराधनादि कर्म नवमी तक करे। नवमी में ये कर्म इस प्रकार प्रतिपदा की अपेक्षा नौ गुना होंगे। इसके बाद नवमी में किए गए जप का दशांश 'होम' करे। इस होम की विधि इस प्रकार से है -

॥ हवन विधानम् ॥

नवचण्डी के सम्बन्ध में एक हाथ का अर्थात् चारों ओर से कुल चौबीस अंगुल का कुण्ड या स्थण्डिल बनाए और पायसतिलादि आज्य द्रव्य तथा फलपुष्पादि सामग्री एकत्र कर हाथ में कुशजल ले देशकाल का सङ्कीर्तन करते हुए **सङ्कल्प पढ़े**। यथा-

'मया कृतस्य कारितस्य वा जपस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशांशेन तिलपायसादिद्रव्यैर्होमं करिष्ये।' तदनन्तर आगमोक्तविधि से पद्धतिमार्गानुसार अग्नि का संस्कार कर प्रधान होम करे। पूर्वोक्त न्यासों को कर वह्नि में पीठ पूजा करे। फिर आवाहनादि मुद्राए दिखाता हुआ देवी का उस पर आवाहन करे। फिर षडङ्गन्यास कर भगवती का वहाँ षोडशोपचारों से पूजन करे। तब मूलमन्त्र से १११ आज्याहुतियाँ देकर पायस, तिल, पलाशपुष्प, सर्षप, पूगीफल, लाजा, दूर्वांकुर, यव, बिल्वफल, रक्तगुग्गुल इन द्रव्यों से या तिलमिश्रित पायस ही से कवच, अर्गला, कीलक, रहस्यों के प्रत्येक श्लोक द्वारा आहुति प्रदान करे। फिर जप के दशांश से प्रतिश्लोक द्वारा सप्तशतीमन्त्रों द्वारा उक्त द्रव्यों या तिलपायस की आहुति प्रदान करे। अध्याय के समाप्त होने पर विशेषाहुति और **'उवाच'** के स्थलों पर पत्र, पुष्प, फलों द्वारा पद्धतिमार्गानुसार हवन करे। नवार्ण के जप का दशांश हवन करे।

इस प्रकार होम कर नामों से स्रुव द्वारा आज्यपायस की आहुतियाँ पद्धतिमार्गानुसार प्रदान करे। इसके बाद पुनः प्रधान होम करे और तब पद्धतिमार्गानुसार पूर्णाहुति दे। अब शेष कर्म समाप्त कर मूलमन्त्र से दशांश होम कर दुग्ध मिश्रित जल या दुग्ध से तर्पण कर उसके दशांश से मार्जन करे। तदनन्तर आचार्यादि का वस्त्र आदि से पूजन करे और आचार्य को सौ, पचास, पचीस या आठ जोड़े गाय तथा सुवर्णचतुष्टय समर्पित करे। ब्राह्मणों को दो निष्क या दो गाय प्रदान करे। इस सम्बन्ध में निर्देश भी हैं। यथा - **वित्तशाठ्यं परित्यज्य, कुर्यादाचार्यतोषणम्। वस्त्रांगुलीयभूधेनु वाजिहेमप्रदानतः॥ अशक्तो नित्यमेकं तु, दद्याद् वै प्रयत्नतः।** इसके बाद द्वारपालों और अन्य लोगों को दक्षिणा देकर कलश के जल से सपरिवार यजमान का वेदोक्त एवं पुराणोक्त मन्त्रों से अभिषेक करे।

तदनन्तर यजमान नवग्रहों की उत्तरपूजा कर उनकाविसर्जन करे और आचार्य के हाथ में ग्रहप्रतिमा प्रदान करें तदन्तर भगवती का पूजन करे। फिर पद्धतिमार्गानुसार छागादि या नारिकेल की या पद्धति अनुसार बलि प्रदान करे।

इसके बाद स्नान कर अपने मस्तक पर तिलक धारण करे और '**खड्गिनी शूलिनी**' इस एक, '**शूलेन पाहि नो देवि**' इस चतुष्टय, '**नमो देव्यै**' इस पञ्चक, '**नमस्तेस्तु महारौद्रे** तथा **सर्वस्वरूपे**' इन पाँचों से स्तुति कर भगवती को नमस्कार करे।

फिर पुष्पाञ्जलि अर्पित कर निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे- **रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामांश्च देहि मे॥ महिषघ्नि महामाये! चामुण्डे मुण्डमालिनि। आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते॥**

उक्त मन्त्र से प्रार्थना कर निम्न मन्त्र पढ़ भगवती के हाथ में जल समर्पित करे-ॐ **गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि! प्रसादात् तव सुन्दरि!** ॥ फिर मूल मन्त्र से देवीघट में पुष्पद्वारा भगवती का उद्वासन कर नासा से उन्हें हृदय में लाकर प्रतिष्ठित करने की भावना करे। तब '**षडङ्गन्यास**' करे। उपर्युक्त क्रम से '**नवरात्र**' सम्पन्न कर दशमी में भगवती का '**विसर्जन**' करे। यथा- **उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि! शुभां पूजां प्रगृह्य च। कुरुष्व मम कल्याणमष्टभिः शक्तिभिः सह॥**

उक्त मन्त्र पढ़कर भगवती को उठाए और- **दुर्गे देवि जगन्मातः! स्थानं गच्छ पूजिते। संवत्सरे व्यतीते तु, पुनरागमनाय वै॥ इमां पूजां मया देवि! यथाशक्त्युपपादितम्। रक्षार्थं त्वं समादाय, व्रज स्वस्थानमुत्तमम्॥** यह 'मन्त्र' पढ़कर स्वर्णमयी प्रतिमा आचार्य को प्रदान करे और निम्न श्लोक पढ़े- **त्रैलोक्यमातर्देवि! त्वं सर्वभूतदयान्विते! दानेनानेन सन्तुष्टा, सुप्रीता वरदा भव॥** फिर '**मृण्मयमूर्त्यादिसर्वम् उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि**' से उत्थापन कर उन सबको जल में प्रवाहित कर दे- **गच्छ गच्छ परं स्थानं, स्वस्थानं देवि चण्डिके! व्रज स्रोतोजलं वृद्ध्यै, स्थीयतां च जले त्विह॥** तदनन्तर अग्नि की पूजा कर विभूति ले और '**गच्छ गच्छ**' से विसर्जन कर दें।

फिर 'संकल्प' करे। यथा- '**कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**' फिर '**यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या, प्रमादात् कुर्वतां कर्म**' श्लोकों को पढ़कर भगवान् विष्णु का स्मरण करे। तब ब्राह्मणों से '**पूर्णतां**' कहला कर सभी कर्म ईश्वर को अर्पण कर दे। अन्त में सुब्राह्मणों को भोजन कराकर हीनदीनान्ध और दुखियों को अन्न देकर उन्हें ताम्बूलदक्षिणादि से सन्तुष्ट करे और तब स्वयं भी सुहृदों के साथ भोजन करे।
उक्त पूजनविधान का माहात्म्य इस प्रकार हैं-

नवमीतिथिपर्यन्तं, वृद्धिपूजाजपादिकम्। एकाहारं व्रती कुर्यात्, सत्यादिनियमैर्युतः॥
क्रीडन्ति विविधैर्भोगेर्देवलोके सुदुर्लभे। नाधयो व्याधयस्तेषां, न च शत्रुभयं भवेत्॥
इन्द्रब्रह्मादयो देवास्तामायान्ति प्रसेवितुम्। अपुत्रो लभते पुत्रं, निर्धनो धनवान् भवेत्॥
अविद्यो लभते विद्यां, स कामश्च मनोरथान्। व्याधयः संक्षयं यान्ति, शत्रवः क्षयमाप्नुयः॥
न तस्यास्ति भयं किञ्चिद्, राजचोराग्निवातजम्।

॥ इति नवरात्रे वार्षिक नवचण्डीविधानं॥

॥ वीरसाधक हेतु उग्रचण्डाकल्प नवरात्रविधानम्॥

वीरसाधक पंच तत्वों से रात्रि में अर्चन करते हैं। सुवासिनीपूजा भी रात्रि में करे प्रतिदिन गणेश, कुमारी की एवं सुवासिनी की अलग अलग नामों से पूजा की जाती हैं। नव दिन उग्रचण्डा की नवशक्तियों का पूजन किया जाता हैं। तथा श्री यंत्र के एक-एक आवरण का पूजन नित्य कर नव आवरण पूजा की जाती हैं। यदि नित्य श्रीयंत्र का अर्चन तर्पण

विधानोक्त हो सके तो उत्तम हैं।

बोधनः- आश्विन कृष्णा ८ या ९ को जिस दिन आर्द्रा नक्षत्र हो, अष्टादश भुजी उग्रचण्डा का ध्यानपूर्वक करवाल में आवाहन करे। कुब्जिका की प्रार्थना करें। ३२ अक्षर के मंत्र का जप कर छागबलि प्रदान करे।

प्रार्थना - रावणस्य बधार्थाय रामस्यानुग्रहाय च। अकाले ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्वयि कृतः पुरा॥ अहमप्याश्विने कृष्णे नवम्यां बोधयाम्यहम्॥

प्रतिप्रदा को घट स्थापन कर शुक्ला नवमी तक पूजा-अर्चना करें दशमी को विसर्जन करें। पश्चात-'**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भगवति महोग्रचण्डिके दुर्गे उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ निद्रां जहि जहि प्रतिबुध्यस्व प्रतिबुध्यस्व मम शत्रून् हन हन पातय पातय स्वाहा**' से बोधन करे सुगंधित द्रव्य हरिद्रा, तैलादि खड्ग या देवी के अङ्गों में लेपन करे। बिल्वपत्र, जपापुष्प, रक्तकरवीर, पाटलीपुष्प द्रोणपुष्प देवी के समर्पित करे वटुकादि को माषभक्तप्रदान करे। देवी के वाम कर में कुमारी सूत्र वेष्टित करे। सर्षप से आठों दिशाओं रक्षा मंत्र से रक्षा करे। दशमी से अमावस्या तक मध्याह्न में उग्रचण्डा की पश्चिमाम्नाय मंत्रों से पूजन करे।

॥ आश्विन शुक्ला प्रतिपदा ॥

सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर देवी प्रतिमा रखें। शुभ मुहुर्त में घट स्थापन करे। घट का चार हाथ की वेदी बनाये। घट में गणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, शिव एवं शिवा का आवाहन करे। घट पर पूजन करे, घट पर अर्धचन्द्राकार लिखे। त्रिकाल पूजन करे तो उत्तम रहे। गणेश मूर्ति पूर्णपात्र रखकर उस पर देवी यंत्र या मूर्ति रख कर देवी का आवाहन करे। प्रतिदिन अणिमा, लघिमा, के अलावा शालिग्राम गणेश या शोणभद्र गणेश वा पूगीफल में गणेश का आवाहन करे। महिमा, ईशत्व, वशित्व, प्राकाम्य, भुक्ति, इच्छासिद्धि, सर्वज्ञानसिद्धि में से एक एक दिन एक एक का पूजन क्रमशः देवी के दक्ष व वाम भाग में करें।

नित्य प्रातः काल महागणपति के नाम से पूजन करे। प्रथम गण षोढान्यास करे। मातृकादि पूजन कर घट पूजन कर यंत्र के पीठ देवताओं की पूजा करे। त्रिखण्डा मुद्रा से देवि का आवाहन करे। **आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिसूदिनि। पूजां गृहाण सुमुखि त्रिपुरे शङ्करप्रिये॥** वैसे नवरात्र क्रम हेतु कथन इस प्रकार हैं **नन्दायां पूजयेत् कुंभे द्वितीयायां च पुस्तके तृतीयां खड्गे चतुर्थ्यां केश शोधनम्।** लेकिन कहीं कहीं प्रतिपत् को ही केश शोधन करते हैं।

मंत्र - **इमां प्रसाधिनीं देवि रम्यपट्टैर्विनिर्मिताम्। गृहाण त्रिपुरे मातः केश सुस्निग्ध कारिणीम्॥**

महादुर्गा का आवाहन करे या त्रिपुरसुंदरी का प्रतिदिन भूपूर से क्रमशः अंदर के आवरणों की पूजा करते जाये। देवि की पूजा करे चतुरस्र चक्र में देवि की आवरण पूजा करे षोड़शोपचार पूजा करे। एक वर्षीय कन्या की '**श्रद्धा नाम**' से पूजा करे तथा हल्लेखा नाम से सुवासिनी की पूजा करे। तत्व शुद्धि करे। जपार्चनकर लाजाक्षत पुष्प पीतवर्तिका दीप पक्वान्न देवि के समर्पण करे।

मध्याह्न में पूजा हेतु सङ्कल्प करे- **ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे अद्यारभ्य नवम्यन्तं मध्याहने यथाशक्ति कुलाचारेण श्रीमहोग्रचण्डाङ्गभूत नवदुर्गा क्रमार्चनमहं करिष्ये।** उग्रचण्डा के मूलमंत्र से न्यास करे। गणेश का **कुलगणपति** नाम से पूजा करे। मूलघट में ऊपर या वाम भाग में दुर्गा का पूजन करे। उग्रचण्डा के बाद **रुद्रचण्डा** का पूजन करे। सिन्दूराक्षत दमनपुष्प सुपक्वान्न, वराह मांस इत्यादि से पूजन करे। कुष्माण्ड बलि देकर पूजा समाप्ति कर देवि के अर्पण करे। सायंकाल में दीप कलश व **लक्ष्मीगणपति** की पूजा कर। काली के २२ अक्षर के मंत्र से न्यासादि कर **कालिका**

का पूजन करे।

दक्षिणे कालिके मातर्दक्षसिंहासनेश्वरि। अस्मिन घटे समायाहि शारदी प्रतिपत् तिथौ॥

त्रिकाल नहीं तों प्रतिदिन शाम को पें आवाहित देवों के निमित्त छाग मांस खण्ड की १-८-१६ आहुतियां देकर पूर्णाहुति करे।

॥ द्वितीया कृत्य ॥

प्रातः द्वितीय गणषोढान्यास कर महागणपति का पूजन करे। दुर्गा की पूजा करे तो भूपूर से पहिले के आवरण की व श्रीयंत्र पूजा करे तो षोडशदल चक्र में त्रिपुरसुंदरी का ध्यान कर उनकी आवरण पूजा करे। वकपुष्प, जयन्तीपुष्प, सीतवर्तिका दीप, क्षीर, तीतर का मांस, सूक्ष्मेल, द्राक्षा, केश बंधन सूत्र अर्पण करें। द्विवर्षीया कुमारी की **'बाला'** तथा सुवासिनी की **'गगना'** नाम से पूजा कर तत्वशुद्धि कर पूजा जप देविके समर्पण करे। मध्याहन में गणेश का **कुलगणपतिरूप** में नवदुर्गा में **प्रचण्डा** का ध्यान करे पूजा कर जयन्तीपुष्प, क्षीर, पक्वान, वराह मांस से कूष्माण्ड बलि प्रदान करे। सायंकाल में **'गों'** मंत्र से गणपति की पूजा करे तथा **अधराम्नाय से श्रीमहोग्रतारा** का न्यासादि कर आवाहन पूजा करे।

महोग्रे तारिणिमातः पातालाम्नायनायिके। सायाह्नेऽद्य द्वितीयायां घटमध्ये स्थिरोभव॥ प्रीताभव महादेवि पूजां तुभ्यं करोम्यहम्॥

प्रतिदिन प्रातः उर्ध्वाम्नाय मंत्रों से, मध्याहन् में पश्चिमाम्नाय से तथा शाम को पृथक् पृथक् आम्नाय मंत्रों से पूजा होती हैं।

॥ तृतीया कृत्य ॥

प्रातः तृतीय गणषोढ़ान्यास करके महागणपति का पूजन करे। रक्तवर्तिक दीप, रक्तचंदन, कुरवक पुष्प, दाडिम फल पुष्प, रक्तोदन, नैवेद्य, दर्पण, सिन्दूर अर्पण करें। दुर्गा में तृतीय आवरण देवता या श्री यंत्र में अष्टदलचक्र का पूजन करे। तद्देवता को न्यास ध्यान करके पूजा करे। त्रिवर्षात्मिका कन्या की **'ललिता'** व सुवासिनी की **'रक्ता'** संज्ञा से पूजा कर कर्म समाप्त करे। मध्याह्न में कुलगणपति व **चण्डोग्रा देवी** का ध्यान कर पूजा करे छाग कूष्माण्ड बलि देवे। चम्पकपुष्प, बालधूप, लड्डू, पक्वान्न, वराहमांस ताम्बूलादि अर्पण करें। सायंकाल में महागणपति व बालात्रिपुरसुंदरी का उर्ध्वाम्नाय ध्यान मंत्रों से पूजन करे। षडक्षरी महाविद्या से पूजन करे।

उर्ध्वाम्नाय समाराध्ये श्री बाला त्रिपुरेश्वरि । घट मध्ये समायाहि सायाह्ने पूजयाम्यहम् ॥

पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

॥ चतुर्थी कृत्य ॥

पूर्ववत् चतुर्थ गण षोढ़ान्यास कर महागणपति का पूजन करे त्रिपुरसुंदरी के न्यास करके श्री यंत्र के सर्वसौभाग्यदायक चौदहत्रिकोण वाले चक्र की आवरण पूजा करे। दुर्गायंत्र में पूर्वदिन से आगे के आवरण की पूजा करे।

अगच्छागच्छ देवेशि त्रिपुरवासिनीश्वरि। सान्निध्यं कुरु कुंभेन पूजां तुभ्यं करोम्यहम्॥ चतुष्मचंदन, निम्बूफल, मारुतपुष्प, यक्षकर्दम, हरिणमांस, हरितवर्तिका दीप, शूंठी, खजूर, अंजन प्रदान करें। चतुर्वर्षात्मिका कन्या की **'मालिनी'** तथा सुवासिनी की **'महोच्छूष्मा'** नाम से पूजा करे तत्वशुद्धि आकर देवि पूजा करे। मध्याह्न में कुलगणपति का पूजन तथा देवि का **चण्डनायिका** नाम से आवाहन पूजा कर बिल्वपत्र पुष्प, यष्टिमधु, वराहमांस, छाग कूष्माण्ड बलि देवे।

सायंकाल का गणेश जी का '**गणानां त्वा**' वेद मंत्र से पूजन करें। उर्ध्वाम्नाय से वेदमाता ब्रह्मगायत्री का न्यास ध्यान कर पूजा करे।

ॐ चतुर्थ्यां वेदजननि ब्रह्मविद्यास्वरूपिणि। घटमध्ये समायाहि गायत्रि पूजयामि ते॥

साधारण पूजा कर कर्म पूर्ववत् समाप्त करे।

॥ पंचमी कृत्य ॥

प्रात: पंचम गण षोढान्यास करके महागणपति का पूजन करे। त्रिपुरा न्यास करे श्री यंत्र के सर्वार्थसाधक १० चक्र दल की आवरण पूजा करे। दुर्गा यंत्र में अग्रिम आवरण की पूजा करे।

आगच्छवरदे देवि त्रिपुरे श्रीपरेश्वरि। घटमध्ये समायाहि पूजये शारदीयकम्। कुरण्टक पुष्प, कुंदपुष्प, शोहलधूप, रक्तवर्तिका दीप, फेनपक्वान्न, मत्स्य, साखोट फल, कूष्टौषधि अर्पण करें। पंचवर्षात्मिका कन्या की '**वसुन्धरा**' तथा सुवासिनी की **करालिनी** नाम से पूजा कर पूर्ववत् पूजा समापन करे। मध्याहन् में '**कुलगणपति**' गणेश पूजन तथा दुर्गा का **चण्डा** नाम से आवाह्न करे पूजा करें। वकुलपुष्प, कर्पूरधूप, दध्योदन, सफेद सरसों वराहमांस, सूक्ष्मेलौषधि छागादि बलि प्रदान करे। सायंकाल में '**उच्छिष्टगणपति**' की पूजा करे। उत्तराम्नाय से दशानना श्री गुह्यकाली की भरतोपासिता महाविद्या के न्यासादि तथा ध्यान कर पूजा करे।

ॐ उत्तराम्नाय संपूज्ये श्रीमत् सिद्धिकरालिके। घटमध्ये समायाहि तिष्ठ श्रीगुह्यकालिके ॥ पंचम्यामद्य देवि त्वां सायाह्ने पूजयाम्यहम्॥ गुह्येश्वर सहित सावरण पूजा कर पूर्ववत् कर्म समापन करे।

॥ षष्ठी कृत्य ॥

पूर्ववत् गणषोढान्यास करके महागणपति पूजा करे। त्रिपुरामालिनी के न्यास ध्यान करे। सर्वरक्षाकर १० दल चक्र की पूजा करे।

ॐ त्रिपुरामालिनि परे षष्ठिके ब्रह्मरूपिणि। आगच्छागच्छ वरदे पूजां तुभ्यं करोम्यहम्॥ षड्वर्षात्मिका कन्या की '**सरस्वती**' तथा सुवासिनीं की '**इच्छा**' नाम से पूजा करे। गोरोचन चंदन, रूपकेशरपुष्प, विचित्र पुष्प, बालधूप, कुंकुमाम वर्तिका, दध्योदन, शल्ल की मांस, मधुपात्र, वंशरोचन औषधी से पूर्ववत् कर्म समापन करे। मध्याह्न में '**कुलगणपति**' का पूजन कर '**चण्डवती**' के न्यासादि कर पूजा कर काश पुष्प, गुग्गल धूप, पूख, वराहमांस, येपानिका ब्रीहि जातीफल, छाग कूष्माण्ड बलि प्रदान करे। सायंकाल में '**विरञ्चिगणपति**' की पूजा कर पूर्वाम्नाय से **भुवनेश्वरी** की पंचाक्षरी विद्या के न्यास ध्यान कर पूजा करे।

भुवनेश्वरि भो मात: पूर्वसिंहासनेश्वरि। षष्ठयां सायाह्नकालेऽस्मिन् पूजां तुभ्यं करोम्यहम्॥ घटमध्ये समायाहि मूलप्रकृति रूपिणि॥

सदाशिव सहित आवारण पूजा करे। षष्ठी, सप्तमी अथवा अष्टमी जिस दिन मूल नक्षत्र हो उस दिन यंत्र लिखकर या कलश के वाम भाग में सरस्वती का आवाहन करे।

॥ सप्तमी कृत्य ॥

सप्तम दिन प्रात: सप्तम गण षोढान्यास करके '**महागणपति**' पूजन करे त्रिपुरासिद्धा के न्यास कर श्रीयंत्र के सर्वरोगहर अष्टदल चक्र के आवरण देवताओं का पूजन करें।

आगच्छ त्रिपुरासिद्धे वशिन्याद्य समन्विते। सर्वरोगहरे चक्रे तिष्ठ त्वां पूजयाम्यहम्॥ देवी पूजा करे। रक्तयज्ञोपवीत, रक्तचंदन, बंधूकपुष्प, जातिपुष्प, महाधूप, रक्तवर्तिका, रक्तोदन नैवेद्य, मृगमांस, रक्तपात्र, कदलीफल, कुरंटब्रीहि, वंशरोचन अर्पण करें। सप्तवर्षीयात्मिका कन्या की **'रमा'** तथा सुवासिनी की **'ज्ञाना'** नाम से पूजा कर पूर्ववत् कर्म समाप्त करे। मध्याह्न में **'कुलगणपति'** का पूजन कर **'चण्डरूपा'** देवी का नीलकमल पुष्प से अर्चा करे, बलिप्रदान करें। अपराह्न में नवपत्रिका (कदली, दाडिमी, धान्य, हरिद्रा, मानक, कचि, बिल्व अशोक तथा जयन्ती) का जय दुर्गा मंत्र से प्रोक्षण कर प्रधान घट पर रख **कर्म कुब्जिका** की पूजा करें। रत्नादियुत घट से देवि का महाभिषेक कर अधिवासन करे। **क्षिप्रप्रसाद गणेश** की पूजा कर उपम्नाय से नवार्णमहाविद्या का न्यास ध्यान सहित पूजन करे।

ॐ आरोपिताऽसि चामुण्डे मृण्मये श्रीफलेऽपि च। स्थिरीभूत्वा तु सततं गृहे त्वं कामदा भव॥ नवपत्रिकाओं में शारदा का पूजन करे। अधिवासन समय शय्या, जलपात्र, भोजन, ताम्बूल, वस्त्रादि देवी के अर्पण करें।

मूलमंत्र युक्त प्रार्थना करे- (विशेष पूजा विधान कात्यायनी मत में देखे) **यज्ञभागान् गृहाण त्वं सर्वाभिः शक्तिभिः सह। शारदीयामिमां पूजां ग्रहीतुं तमिहागता॥** पश्चात् दुर्गा के १५ आयुधों का पूजन करे। ध्वजा छत्र चामर घण्टा समर्पित कर छाग कूष्माण्ड बलि देवे।

॥ अष्टमी कृत्य ॥

नित्य की तरह प्रातः अष्टम गण षोढान्यास कर **महागणपति** का पूजन करे। महाषोडशी का न्यासादि ध्यान कर त्रिपुराम्बा का आवाहन करे। देवी के महास्नान हेतु हो सके तो भूमण्डल पर सिन्दूर से त्रिकोण में १४ दल तक श्री यंत्र बनाये। उसमें अलग अलग आवरणों में छोटे छोटे कलश रखे। १४ दल चक्र वाले कलश में, नदी संगम जल, गंगोदक, शंखोदक, उष्णोदक, चतुस्मोदक, शीतसोदक पंचगव्य व पंचामृत डाले। १० दल चक्र कलश में पंचामृत पुष्पोदक, कुशोदक, फलोदक, गन्ने का रस, नारिकेलोदक, पुनः दूसरे १० दल चक्र कलश में गजदंत व सूअरदंत का प्रक्षालित जल, मृत्तिका जल, सुवर्ण एवं रत्नोदक, सर्वोषधिमिश्रित जल, कस्तूरी, हरिद्रा, केसर, कर्पूर, श्रीखण्डमिश्रित जल, गंधोदक, गोरोचनोदक। अष्टकोण कलश में गंगाजल, वर्षा का जल, समुद्रोदक, पद्मकेशर मिश्रितोदक, सरोवर, झरना व तीर्थ जल डाले।

दुर्गा विधान से पूजा करें तो दुर्गा यंत्र बनाकर आवरण स्थानों में कलश रखें।

त्रिकोण में सुधापूर्ण कलश रखे। अलग अलग राग रागिनियों से अमृतोभिषेक करे जैसे- मालवराग व विजय वाद्य सहित गंगाजल से, ललितराग व देववाद्य से वर्षा जल द्वारा, विभासराग व दुन्दुभिवाद्य से वाग्मती जल से। भैरवराग तथा अमरवाध से समुद्रोदक से। केदाराराग व इन्द्राद्यभिषेक वा[illegible] से पद्मरेणूदक। वैराटीराग व शङ्खवाद्य से झरने के जल से। वसन्तराग व पंचशब्द वाद्य से तीर्थोदक से। धानुषीराग [illegible] विजय वाद्य से सरोवर जल से। भैरवीराग तथा सर्वविजय वाद्य से सुधापूर्ण कलश में स्नान अभिषेक कराये। स्नानवेदी से उठाकर यंत्र व मूर्ति को प्रधान पीठ पर रखे। सर्वसिद्धिप्रद त्रिकोण चक्र में त्रिपुराम्बा का आवाहन करे।

आगच्छ मदगृहे देवि सहशक्तिभिरष्टभि । पूजां गृहाण विधिवत् सर्वकल्याण हेतवे ॥

सुगंधितद्रव्यों से पूजा अर्चा करे जातिपुष्प, कर्पूररसमाला, कृष्णागरु धूप, रक्तवर्तिका दीप, क्षीरान्न, यकृन्मांस, इक्षु, कलिङ्गफल कज्जल विशेषतः अर्पण करे। खड्ग छुरिका, कटार पंचवाण इक्षुचाप, कुन्त, शूल, चर्म, पाश, अंकुश एवं तुला इन ११ आयुधों की स्वबीजमंत्र से पूजा करे। यथा- **खं खड्गाय नमः**। अष्टवर्षात्मिका कन्या की **'गौरी'** तथा सुवासिनी की **'क्रिया'** नाम से पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

मध्याह्न में **'अतिचण्डिका'** का पूजन करे। बन्धूक पुष्प अष्टांग धूप अर्पण कर पूजाविधान कर छाग कुष्माण्ड बलिप्रदान करे। पूर्व में गणपति का **'कुलगणपति'** नाम से पूजन करे। सायंकाल में **'विघ्नगणपति'** की पूजाकर **'महाकुब्जिका'** का न्यास ध्यान युक्तपूजन करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अवतीर्य क्रमान्तस्था मण्डलोर्ध्वे तु पङ्कजे। त्र्यस्रासन समारूढां सिद्धकूटेन संस्थिताम्॥ वक्त्रान्ते दूतीसंयुक्तां आयुधै समलंकृताम्। आराधये महादेवीं सर्वेषां सर्व संस्थिताम्॥ या सा परापरा शक्तिः खगस्था खस्वरूपिणी। सोमसूर्यपदान्तस्था आयान्तु इह मण्डले॥ गृहाण मतकृतां पूजां पश्चिमाम्नाय नायिके॥

कुब्जिकेश्वर सहित आवरण पूजा कर कर्म समापन करे। रात्रि में **उग्रचण्डा** विधान से पूजा करे। कुलगणपति का सावरण पूजा विधान करे। बिल्वपत्र द्रोणपुष्प, करवीरपुष्प, पद्ममाला, जपाकुसुम, कुमुदपुष्प व गुग्गुल धूप पक्वान्नादि अर्पण कर विविध फल अर्पण करे। आनंदकलश (सुधाकलश) में अष्ट दिशाओं में असिताङ्गादि अष्टभैरव तथा मध्य में आनंद भैरव का पूजन करे। देवि तथा भैरव के लिये छाग कूष्माण्ड बलि प्रदान करे।

॥ नवमी कृत्य ॥

नित्य पूजा की तरह नवम् गण षोढ़ान्यास करके महागणपति का पूजन कर। दुर्गायंत्र में बिन्दु में दुर्गा का तथा श्रीयंत्र के बिन्दु मध्य में त्रिपुरभैरवी का न्यास ध्यान युक्त पूजन करे। **आगच्छ मद्गृहेदेवि त्रिपुरे भैरवीश्वरि। गृहाण मत् कृतां पूजां नवम्यां परमेश्वरि॥** सुगंधितद्रव्य सेफालिका व जपापुष्प अर्पण करे। कपिधूप, रक्तवर्तिकादीप, पक्वान्न, हिंगुऔषधि जातीफल इत्यादि अर्पण कर पूजा करे। छाग माँस अर्पण करे। श्री यंत्र में परापर रहस्य योगिनियों की आवरण पूजा करे। नववर्षात्मिका कन्या की **'दुर्गा'** व सुवासिनी की भी 'दुर्गा' संज्ञा से पूजा करे। कुरु कुल्लादि देवियों का आचार्य द्वार मध्य में बैठकर विसर्जन करे। **'मध्याह्न'** में **'महोग्रचण्डा'** का न्यास ध्यान कर पूजा करे। मन्दारपुष्प महाधूप पक्वान्न वराह मांस, रूपकेशर अर्पण करे, पक्वान्न, वराहमांस, छागमांस कुष्माण्डादि अर्पण कर बलि प्रदान करे। 'सायंकाल' में **महागणपति** का पूजन कर उर्ध्वाम्नाय से श्री महाषोडशी महात्रिपुरसुंदरी का न्यास ध्यान कर पूजन करे।

ॐ ११ महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे। सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥

कामेश्वर सहित श्री यंत्र का चक्रार्चन कर पूजा समापन करे। शिवा बलि देवे।

॥ दशमी कृत्य ॥

प्रातः दशमगण षोढान्यास कर महागणपति पूजन करे। घट में कामेश्वर सहित कामेश्वरी श्री यंत्र आवरण देवताओं का पूजन करे, सभी शक्तियों का घटमध्य में विलीन होने की भावना करे।

ॐ रश्मिरूपा महादेव्या ह्यत्र पूजित देवताः। सुन्दर्यङ्गे विलीनास्ताः सन्तु सर्वाशुभावहाः॥ षोडशवक्त्रा अष्टोत्तरभुजा श्रीमन्निर्वाण महात्रिपुरसुंदरी का ध्यान कर श्री विद्या की सर्वाधिकार विद्या निर्वाणविद्या के साथ लघु साम्राज्य मेधा के दशकूटा षोडशी मंत्र से पूजाकर सहस्राक्षरी मंत्र से पुष्पांजलि समर्पण करे। मूलबिन्दुचक्र में परापरातिरहस्य योगिनी स्वरूपिणी महात्रिपुरसुंदरी के चारों ओर मोक्षसिद्धि सर्वत्रिखण्ड मुद्रा से पूजा करे। कौलकुलाचारानुसार चक्र पूजा करे, छाग कूष्माण्ड बलि देवे। देवताओं का विसर्जन करे। अपराजिता पूजा भी सायं करे। आश्विन शुक्ल त्रयोदशी के दिन यज्ञवेदी आदि भूमण्डलों का विसर्जन करे।

॥ कात्यायनी कल्पोक्त नवरात्र विधानम् (प्राणतोषणी तंत्रे) ॥

घट स्थापन प्रतिपत् को करे, द्वितीया को पुस्तक पूजन, तृतीया को खड्ग पूजा चतुर्थी को केश शोधन। पंचमी को सूर्य बिम्ब में पूजा, षष्ठी को बिल्वमूल में पूजा, सप्तमी को सप्त या नवपत्रिका पूजन करे। अष्टमी को मूर्तिपूजा, नवमी को बलिदान दशमी को विसर्जन करे।

पूजाप्रकारोऽपि तत्रैव नन्दायां पूजयेत् कुम्भे द्वितीयायां च पुस्तके ।
तृतीयां तथा खड्गे चतुर्थ्यां केशशोधनं । पञ्चम्यां सूर्यबिम्बे च षष्ठ्यां विल्वस्य मूलके ।
सप्तम्यां पत्रिकायां तु अष्टम्यां प्रतिमासु च । ज्येष्ठानक्षत्रयुक्तायां षष्ठ्यां विल्वाभिमन्त्रणं ।
मूलाद्यपादे सप्तम्यां पत्रिकायाः प्रवेशनं । पूर्वाषाढ़ायुताष्टम्यां देवी पूज्या महोत्सवैः ।
उत्तरेण नवम्यांतु बलिभिः पूजयेच्छिवां । श्रवणान्ते दशम्यां तु प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

॥ षष्ठी कृत्य ॥

नित्य पूजा कर सायंकाल बिल्ववृक्ष के समीप जाये। उत्तराभिमुख हो पीठ का निर्माण करे। पंच देवों को नमस्कार करे। त्र्यम्बक मंत्र से वृक्ष को स्नान कराये, क्षीर, पंचगव्य एवं पंचामृत से स्नान कराये। त्रिगुण या पंचगुणसूत्र से वेष्टन करे। दक्षिणावर्त से पांच जगह व्रीही रखें।

संकल्पः- **अद्यामुके मास्यमुके पक्षे एतस्मिन् पुण्यप्रदेशे भवन्तमम्बिकाशिवयो प्रियतरं शाण्डिल्य गोत्रं बिल्ववृक्ष अमुकगोत्रोऽमुक देवशर्मा अमुककामनया अभिन्नवृन्तफल युगलशाखां दुर्गास्वरूपतः पूजार्थे नेतुं नक्तमेभिरभ्यर्च्य वृणे।** वृक्षमूल में फल माला समर्पण करे। वेदी के उत्तर में गणेश, पूर्व में चण्ड, दक्षिण में प्रचण्ड, पश्चिम में वेताल की पूजा करें। बिल्ववृक्ष में महिषमर्दिनी का ध्यान कर मूल मंत्र से पूजा करे।

महारजतसङ्काशां पूर्णचन्द्रनिभाननां, नानारत्नसमाकीर्णां कङ्कणैः कटकैरपि ।
विभ्राजमानां दशभिर्बाहुभिः सुमनोहरैः, शरदम्भोजसङ्काश विकाशिमुखपङ्कजां ।
इन्दीवराभैर्विषमै र्लोचनैस्त्रिभिरुत्तमैः, विद्योतयन्तीं नयनैरुद्दामद्युतिदामभिः ।
त्रिशूलं करवालं च चक्रं वाणं च शक्त्यपि, चिन्तयेद् वामभागे तु खेटकं पूर्णचापकं ।
पाशांकुशं च परशुं ज्वालामालोपशोभितं, ऊर्ध्वपादं वामपादं महिषोपरिसंस्थितं ।
माहिषं छिन्नशिरसमधस्तात् परिचिन्तयेत्, खड्गचर्मधरं तत्र समुद्भूतं महासुरं ।

मूलमंत्र से आवाहन कर पाद्यादि अर्पण कर अङ्ग पूजा करे। पूर्वादिक्रम से पत्रमूल में **जयन्ति मंगला काली....**इत्यादि शक्तियों का अर्चन करे, पत्र मध्य में अष्टभैरव तथा पत्र के अग्रभाग में ब्रह्मादि देवों की अर्चा करे। वृक्ष के मूल व अग्रभाग में बेतालादि की पूजा करे-

वेतालं मणिभद्रं च यक्षकं च तथैव च। त्रिपुरान्तकं समाख्यातं कण हेतुकमेव च अग्निजिह्वरसं चैव गन्ध पुष्पैः समर्चयेत। नवग्रह इत्यादि की पूजा कर इन्द्रादिदिक्पाल व उनके अस्त्रों की पूजा करे। होम विधान कर बलि प्रदान करे। बिल्ववृक्ष बोधन करे।

ऐं रावणस्य बधार्थाय रामस्यानुग्रहाय च। अकाले ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्वयि कृतः पुरा ॥
अहमप्याश्विने मासि ततस्त्वां बोधयामि ते। षष्ठ्यां नक्षत्र युक्तायां सायाह्ने बोधयामि ते ॥

छठे नक्षत्र का अर्थ कृष्णपक्ष में आर्द्रा नक्षत्र में बोधन से भी है।

श्री शैलशिखरे जातः श्रीफलः श्रीनिकेतनः। नेतव्योऽसि मयागच्छ पूज्यो दुर्गास्वरूपतः ॥
अशेष सुख लाभाय नारीविभव हेतवे। नेतव्यः स्वोदिते गेहे सर्वकामप्रदो भव ॥

युग्मफल अभावे युग्मपुष्प शाखा ग्रहण कर पूजा करे।

नमस्ते बिल्ववृक्षाय सर्वकामप्रदाय च। दातव्यं स्वोदिते हस्तं पूजनीयं फलद्वयं ॥
महादेवप्रियोऽसि त्वं श्रीवृक्ष सर्वकामदः। दुर्गायज्ञ निमित्तार्थं शाखामेकं प्रयच्छ मे ॥

कुश पुष्प अक्षत दुर्वा फल अर्पण करे, शंख से अर्घ देवे, सरसों छिड़के, युग्यवस्त्र से वेष्टन करे।

॥ सप्तमी कृत्य ॥

सप्तमी को प्रातः काल बिल्ववृक्ष की अर्चा करे, कटार से १२ या ६ अंगुल की शाखा काटे।

मंत्र - ॐ छिन्धि-छिन्धि छेदय छेदय ॐ स्वाहा।

थाली या पात्र में पत्रिका रखे। तत्र चालन मंत्र - **ॐ चल चल चालय चालय शीघ्रं मंदिरं प्रविश पूजालयं स्वाहा।**

छेदन करते समय अदीक्षित व स्त्री की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिये। पत्तिया छोटी व छिद्रयुक्त नहीं होनी चाहिये इससे दरिद्रता आती हैं। यदि छेदन काल या स्थापित करते समय पत्तियां व शाखा टूट जाये तो दुःख व मरण होता हैं अतः प्रायश्चित्त करे। मंदिर पर तोरणमाला, आम्रपत्र पुष्पमाला द्वार पर लगाये। दो घट प्रवेश समय द्वार पर स्थापित करे लालवस्त्र लपेटे, आम्रपत्र, दर्भा घट में लगाये। पार्श्व भागों में दो दीपक जलावे। स्त्रियां मंगलगान गावे। कटुत्रय व लवण युक्त व्यंजन का भोग लगावे। गृह के आंगन में स्नान वेदी पर वस्त्रादि बिछाकर उन पर बिल्वशाखा रखे। प्रांतभेद से सप्त या नवपत्रिका का पूजन करते हैं।

यथा- **माणदिंश्चैव श्रीशैले धान्यादिं मलयेगिरौ। क्रमुदादिं सागरान्ते कच्ची चैकाम्रकादिके। रम्भादिं गौड़े वङ्गे (बंगाल) च कौमारे कालरूपके।**

प्रतिपीठे यजेद वापि लक्ष्मी कामेन सुंदरि। रम्भा (केला) कच्ची (दारुहल्दी) हरिद्रा च जयंती (मेहंदी) बिल्व, दाड़िमी (अनार) अशोको माणकश्चैव (अमलतास) धान्यादि नवपत्रिका। हरिद्रा व धान्य विना मूल के ग्रहण करे। रामरम्भा समूल नहीं लेवे। राज्यरंभा, श्वेतरम्भा, सुगंधिनी ग्रहण करे वीजरम्भा (फलवाली) का त्याग करे। ३ पुत्र, एक पुत्र या मृतवत्सा के घर से ग्रहण नहीं करे। शङ्ख से स्नान कराये। दंत काष्ठ रखे। नवार्ण व दशाक्षर से पंचगव्य, पंचामृत, तीर्थोदक, सुगंधित उष्णोदक, सितोदक तीर्थोदक से स्नान कराये। वेदी के ईशान में पत्रिकायें स्थापन करे। मध्य में विल्वशाखा रखें। रम्भामूल विष्णुकांता तीनोंलताओं का वेष्टन करे। पीत वस्त्र से वेष्टन करे। कुमारीयां मंगलगान करे। यात्रा प्रवेश समय बलिकर्म करे फलादि अर्पण करे एवं स्वागत करे।

ॐ शारदीयामिमां पूजां गृहाण त्वमिहागता। स्वगतं ते महादेवि विश्वेश्वरि नमोऽस्तुते ॥
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सफलं जीवितं च नः। आगताऽसि यतो दुर्गे माहेश्वरि ममाश्रमम् ॥
अर्घ्यमन्त्रं फलं पाद्यं मलयवासिनि! गृहाण वरदे देवि कल्याणं च प्रदेहि मे ॥
चण्डिके चण्डरूपे त्वं सर्वकामप्रदे शुभे! गृहाणार्घ्यमिदं भद्रे आगच्छ मम मंदिरं ॥

गृहीत्वा शारदीं पूजां मर्त्यमण्डलमागता । चण्डिके त्वां नमाम्यद्य पुष्पमर्घ्यं प्रगृह्यतां ॥
चण्डि त्वं चण्डारूपाऽसि सुरतेजो महाबले। प्रविश्य तिष्ठ मद्गेहे यावत् पूजां करोम्यहम् ॥

सामान्यार्घ्य स्थापन करे। गणेश मातृका नवग्रह दिक्पाल पूजन करे। मूल मंत्र से सूर्य के अर्घ्य देवे। रक्त चंदन कुंकुम से पूजा कर मनसा ध्यान करे।

जटाजूट समायुक्तामर्द्धेन्दुकृत शेखरां । नवयौवनसंयुक्तां सर्वाभरणभूषितां ।
त्रिनेत्रां पूर्णवदनां महिषासुरमर्दिनीं । त्रिशूलं च तथा चक्रं खड्गं वाणं तथैव च ।
दक्षिणे च तथा शक्तिं वामतः खेटकं धनुः । पाशांकुशं च घण्टां च नागहारगरीयसीं ।
अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् । शिरश्छेदोद्भवं तद्वद् दानवं खड्गपाणिनं ।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितं। देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरिस्थितं ।
किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि ।

तोरण के अर्घ्य देवे। मातृका कलामातृका न्यास करे। मधुयपर्कादिकाशोधन कर। दुर्गागायत्री से आठ बार रक्षण करे **ॐ दुर्गायै विद्महे नारायण्यै धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।** सामान्यर्घ्यपात्र से पूजा सामग्री का प्रोक्षण करे।

ईशान में गणेश व गुरुचतुष्ट्य- गुरु परमगुरु परात्परगुरु परेमेष्ठी गुरु का पूजन करे। वेदी के या यंत्र के पूर्वादि ४ दिशाओं रक्त, श्याम, हरित व नील आभा वाले धर्म, ज्ञान, वैराग्य एवं ऐश्वर्यादिका पूजन करे। आग्नेयादि चार कोणों में धूम्र, कनकविद्युत्, कृष्ण एवं पीतवर्ण के अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य का पूजन करे। द्वारपार्श्व में शूलखट्वाङ्ग व श्वेत भुजङ्ग को धारण करने वाला कृष्णलोचन रक्तपीत वर्ण महाकाल कापूजन करे। नन्दि कापूजन करे। करालमुख पिङ्गोर्ध्व नेत्र वाले चण्डेश का पूजन करे। कूर्म एवं शिवारूढ़ा दो कमल वाली धारण किये हुये शरत् चन्द्र की आभावाली आधारशक्ति की पूजा करें, कूर्म की पूजा करे, ब्रह्मशिला की (मूर्ति के नीचे के आसन की शिला) पूजा करे।

पृथ्वी की पूजा करे–

अधश्चक्र धरं मूर्ध्नि धारयन्तं वसुन्धरा ।
तमालश्यामालाङ्गीं च नीलेन्दीवर लोचनाम् ॥
अभ्यर्चयेद् वसुमतीं स्फुरत् सागरमेखलाम् ॥

अष्टदल मध्य में नवकेशर की कल्पना करे उसमें भूः, भुवः, स्वः, सत्, रज, तम तथा अग्नि, सूर्य, सोम मंडल की पूजा करे। **ॐ वज्रनख दंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् स्वाहा** से सिंह की पूजाकरे। दुर्गा का आवाहन करे।

मधुपर्क प्रदान करें, अंगपूजा करें – **ॐ आवाहिताऽसि दुर्गे त्व मृणमय्यां श्रीफलेऽपि च। स्थिरा त्वं गृहिणी भूत्वा गृहे कामप्रदा भव॥**

एहि दुर्गे! महाभागे! पत्रिकां गृह्यतामियं। तव स्थानमिदं भद्रं शरणं त्वां नमाम्यहम्। त्वं देवि! जगतां मातः! सृष्टिसंहारकारिणि! पत्रिकासु समस्तासु सान्निध्यमिह कल्पय। आयुर्देहि धनं देहि यशो राज्यं च देहि मे। सन्तुष्टा चात्र मद्गेहे मनोऽभीष्टं प्रसाधय।

अष्टदल के पत्रों में '**रुद्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डवती, चण्डरूपा एवं चण्डिका**

पूजन कर मध्य में उग्रचण्डा' का पूजन करे। सभी देवियां रक्तवर्ण की है। पीताम्बर धारण किये हुऐ नाना आभूषणों से सुसुज्जित हैं तथा वर अभय मुद्रा धारण किये हैं। अष्टदल के अग्रभाग में ब्राह्मी माहेश्वरी इत्यादि अष्टशक्तियों का पूजन करें।

॥ ध्यानम् ॥

दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्ष सूत्रमथाभयम्। बिभ्रती कनकच्छायां ब्राह्मी कृष्णाजिनाम्बरा ॥१॥
शूलं परश्वधं क्षुरं दुन्दुभिं चन्द्रशोभितम्। वहन्ती हिमसङ्काशा ध्येया माहेश्वरी सदा ॥२॥
अंकुशं दण्ड खट्वाङ्गं पाशं च दधती करैः। ध्येया बन्धूकसङ्काशा कौमारी कामदायिनी ॥३॥
चक्रं घण्टां कपालं च शङ्खं च दधती करैः। तमालश्यामला ध्येया वैष्णावी विद्युतोज्वला ॥४॥
मुषलं करवालं च खेटकं दधती हलम्। करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालानलच्छवि. ॥५॥
अंकुशं तोमरं विद्यां कुलिशं विभ्रती करैः। इन्द्रनीलनिभेन्द्राणी ध्येया सर्वसमृद्धिदा ॥६॥
शूलं कपालं नृशिरः कृपाणं दधती करैः। मुण्डस्त्रङ्मण्डिता ध्येया चामुण्डा रक्तविग्रहा ॥७॥
अक्षस्त्रजं रक्तस्त्रवं कपालं नीलनीरजम्। वहन्ती हेमसङ्काशा व्याघ्रस्य चर्मणोज्वला ॥८॥
रक्ताक्षीं दण्डिकां चैव नृसिंहीं शिवदूतिकां। नारायणीं कालिकाख्यां मायां चैव तु भ्रामरीं।
अरविन्दां विशालाक्षीं भीमां चैव सरस्वतीं। अपराजितां सोमलतां अनन्तां च कपालिनीं।
भद्रकालीं च पुरत एताः षोडशनायिकाः। चतुर्भुजाः युवत्यश्च शङ्खचक्रगदांकुशाः।
सर्वाभरणसन्दीप्ताः सिंहस्थाः शशिशेखराः। बालाद्यास्त्र्यक्षरेणैव सम्पूज्या रक्तविग्रहाः।

कालीविलास तंत्र में लिखा हैं घट से अष्टादश भुजा देवी का आवाहन करे। पंच देवों के पूजन पश्चात् महिषमर्दिनी की पूजा करे। कार्तिक, जया, विजया, मयूर, मूषक, सिंह, महिष, गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्मादि का पूजन करे।

जया एवं कार्त्तिक देवी के वाम भाग में तथा विजया एवं गणेश की देवी के दक्षिण भाग ५ में पूजा करें।

अथ कार्तिकेय ध्यानमष्टादशपटले देवीपुराणे

सुतप्तकनकप्रेक्षं खड्गपट्टीधरं वरं।
सोष्णीष मस्तकं देवं मयूरवरवाहनं।
ब्रह्माण्डाभ्यन्तरे वीरं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकं।

मंत्र – **ह्रीं गुहाय कार्त्तिकेयाय सेनान्ये स्वाहा।** कार्त्तिकेय के साथ उनकी शक्ति जया तथा वाहन मयूर का ध्यान करे।

॥ अथ जया ध्यानम् ॥

तप्त काञ्चनसङ्काशां द्विभुजां लोललोचनां। कटाक्षविशिखोपेतां दिगम्बरपरिच्छदाम्।
दिव्याभरणसंयुक्तां ध्यायेत् सिद्धिप्रदायिनीं। ध्यात्वा पाद्यादिकं दत्वा सम्पूज्य प्रजपेन्मनुम्।

मन्त्रस्तु-ह्रीं ह्रीं जयायै ह्रीं ह्रीं

॥ विजया ध्यानम् ॥

दलिताञ्जनसङ्काशा द्विभुजां खञ्जनेक्षणां। कटाक्षविशिखोद्दीप्तामञ्जनाञ्चित लोचनाम्।
दिव्याम्बरपरीधानां नानारत्नविभूषितां। ध्यायेत् तां विजयां नित्यां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।

मंत्र – **ऐं शंभुवनिता ह्रीं ऐं॥**

॥ मयूरध्यानम् ॥

नानाचित्रविचित्राङ्ग! गरुडाज्जननं तव। अनन्तशक्तिसंयुक्ता !
कालाहिभक्षणं तव। गरुड़स्तवं महाभाग! अतस्त्वां प्रणमाम्यहम् ।

मंत्र - ह्रीं ऐं सुलोचनाय।

॥ मूषिकध्यानम् ॥

वृषाकार! महाभाग! वृषरूप! महाबल! कर्मरूप !
वृषस्त्वं हि गणेशस्य च वाहनं ।
नमस्करोम्यहं देव! पूजासिद्धिं प्रयच्छ मे ।

मंत्र-ह्रीं ह्रीं मूषिकं वनितां शम्भवाय॥

॥ सिंह ध्यानम् ॥

सिंहस्त्वं हरिरूपोऽसि स्वयं विष्णुर्न संशयः ।
पार्वत्या वाहनस्त्वं हि अतः पूजामि त्वामहं ।

मंत्र - ह्रीं ह्रीं सिंहाय महाबलाय ह्रीं ह्रीं॥ ह्रीं ह्रीं हँ महिषाय हूंहूं ह्रीं ह्रीं।।

॥ गणेश ध्यानम् ॥

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
सर्वदेवमयं देवं पार्वतीनन्दनं भजे।

॥ लक्ष्मीध्यानम् ॥

तप्तकाञ्चनसङ्काशां द्विभुजां लोललोचनाम् ।
कटाक्षविशिखोद्दीप्तामञ्जनाञ्चित लोचनाम् ।
शुक्लाम्बरपरीधानां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ।
शुक्लपद्मासनगतां ध्यायेन्नारायणप्रियाम् ।

मन्त्र - ह्रीं क्लीं कमलवासिन्यै क्लीं ह्रीं ॥

॥ सरस्वती ध्यानम् ॥

शङ्खेन्दुकुन्दसङ्काशां द्विभुजां पद्मलोचनाम् ।
कटाक्षविशिखोद्दीप्तां दिव्याम्बरपरिच्छदाम् ।
दिव्याभरणवेशाढ्यां वाग्रूपां परमां भजे ।

मन्त्र - ह्रीं ऐं सरस्वत्यै ऐं ह्रीं।

॥ ब्रह्मध्यानम् ॥

तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वक्त्रं चतुर्भुजम्।
चतुर्वेदमयं वक्त्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्।

॥ सावित्री ध्यानम् ॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभां द्विभुजां लोललोचनाम्।

दिव्या भरण वेशाढ्यां दिव्याम्बर परिच्छदाम्।
सिन्दूर तिलकोद्दीप्ता मञ्जनाञ्चित लोचनाम्।

मन्त्र - ह्रीं सां सावित्र्यै सां ह्रीं।

॥ नवपत्रिकापूजन (मत्स्यसूक्ते) ॥

रंभा पत्रिका :- रम्भां च द्विभुजां पीतां शूलपुस्तकधारिणीं। पूजयेत् कामवीजेन मन्त्रेणानेन शङ्करि! दुर्गे! देवि! समागच्छ सानिध्यमिह कल्पय। रम्भारूपेण मे देवि! शान्तिं कुरु नमोऽस्तु ते ॥१॥ कच्वी पत्रिका :- खड्गशूलकुशधरमभयं दधती करैः। महिषासुर युद्धे त्वं कच्वीरूपासि सुव्रते! शक्रस्यानुग्रहार्थाय आगच्छ मम मन्दिरं ॥२॥

हरिद्रा पत्रिका :- मायावीजेन सा पूज्या हरिद्रामथ चिन्तयेत्। द्विभुजां पीतवसनां त्रिनेत्रां खड्गधारिणीं। महिषस्थां विशालाक्षीं अम्बरं वामहस्तके हरिद्रे! वरदे! देवि! उमारूपासि सुव्रते! मम विघ्नविनाशाय पूजां गृह्णण सुरेश्वरि ॥३॥

जयंती पत्रिका :- जयन्तीं रक्तवसनां पीतां च चण्डमालिनीं। शूलचक्रधरां चैव सर्वालङ्कारभूषितां। निशुम्भमथने चैव सेन्द्रैर्दैवगणैरपि। पूजितासि जयन्ति! त्वमस्माकं वरदा भव ॥४॥

बिल्व पत्रिका :- विपद्धन्त्रीं च द्विभुजां महावृषभवाहिनीं! श्वेतामभीतिवरदां गगने तु समर्चयेत्। महादेवप्रियकरः सर्वदेवरतः सदा। उमाप्रीतिकरो यस्मात् तस्मात् त्वां प्रणमाम्यहं ॥५॥

दाडिमि पत्रिका :- दाड़िमीपत्रिकां रक्तां रक्ताभरणभूषितां। रक्तवस्त्रधरां सौम्यामर्द्धेन्दुकृतशेखरां। चतुर्भुजां त्रिनयनां महिषोपरिसंस्थितां। खड्गचर्मधरां स्कन्धे वामेनोत्पलपुस्तिकां। मन्दरेणैव वीजेन बालाद्येन समर्चयेत्। सिद्धमन्त्रं पुरा जातं रक्तवीजस्य सम्मुखे। उमाप्रीतिकरं यस्मात् तस्मात् त्वां प्रणमाम्यहं ॥६॥

अशोक पत्रिका :- अशोकपत्रिकां रक्तां सिदूरारुणविग्रहां। वाणचापधरां सौम्यां पद्मस्थां नागवाहनां। हरप्रीतिकरो वृक्षो ह्यशोकः पापनाशनः। उमाप्रीति करस्त्वं हि मा...ोकं सदाकुरु ॥७॥ मान पत्रिका :- श्यामाङ्गीं माणपत्रीं च नीलनीरजधारिणीं। महिषस्थां त्रिनेत्रां च कन्यावीजेन चार्चयेत्। पत्रे वससि कौमारि! माणवृक्षेशचीप्रिये! मम चानुग्रहार्थाय पूजां गृह्ण यथासुखं ॥८॥

धान्य पत्रिका :- धान्यवृक्षे निमग्नां च द्विभुजां श्वेतविग्रहां। श्वेतपद्मोपविष्टां च वराभयकरां शुभां। श्रीवीजेन सतारेण पूजयेत् कमलाननां। जगत्प्राणहितार्थाय ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। उमाप्रीतिकरं धान्यं शान्तिं कुरु नमोऽस्तु ते ॥९॥

जयन्ती इत्यादि देवियों का अर्चन कर दिक्पालों का अर्चन करे। कुमुद, उत्पल, पद्म, कुन्द, शेफालिका, जवाः, वकुल, तगर ये अष्टपुष्प अर्पण करे। मंत्र जपकर १०८ बार होम कर बलिदानादि कर्म करे। प्रार्थना करे-

ॐ कदलीतरु संस्थाऽसि, विष्णोर्वृक्षःस्थलाश्रये। नमस्ते नवपत्रि! त्वं, नमस्ते चण्डनायिके ॥
ॐ कच्वि! त्वं स्थावरस्थाऽसि, सदा सिद्धिप्रदायिनी। दुर्गारूपेण सर्वत्र, स्नानेन विजयं कुरु ॥
ॐ हरिद्रे! हररूपाऽसि, शङ्करस्य सदा प्रिये। रुद्ररूपेण देवि! त्वं, सर्वशान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ जयन्ति! जयरूपाऽसि, जगतां जयकारिणि ! स्नापयामीह देवि! त्वं जयं देहि गृहे मम ॥
ॐ श्रीफल! श्रीनिकेतोऽसि, सदा विजयवर्धन! देहि मे हितकामांश्च, प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
ॐ दाडिम्यघ-विनाशाय, क्षुन्नाशाय सदा भुवि । निर्मिता फलकामाय, प्रसीद त्वं हरप्रिये! ॥
ॐ स्थिरा भव सदा दुर्गे! अशोके शोकहारिणि! मया त्वं पूजिता दुर्गे! मामशोक सदा कुरु ॥
ॐ मानो! मान्येषु वृक्षेषु, माननीयः सुरासुरैः । स्नापयामि महादेवि! मानं देहि नमोऽस्तु ते ॥
ॐ लक्ष्मीः! त्वं धान्यरूपाऽसि, प्राणिनां प्राणदायिनी ! स्थिरात्यन्तं हि नो भूत्वा, गृहे कामप्रदा भव ॥

स्तोत्रंदुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रिया । सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाऽम्बिकां ।
मङ्गलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलां । विश्वेश्वरीं विश्वमातां चण्डिकां प्रणमाम्यहं ।
ईशानमातरं देवीं सर्वलोकभयापहां । ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमां ।
विश्वस्थां विश्वनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीं । योगिनीं योगमातां च चण्डिकां प्रणमाम्यहं ।
ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियां । प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीं ।
य इदं पठति स्तोत्रं श्रृणुयाद् वापि भक्तितः । स मुक्तः सर्वपापेभ्यो मोदते दुर्गया सह ।

गीत मंगलगान जप घोष करे। कथा श्रवण करें। सायं स्नान करके पश्चिमामुख होकर **"हंस मंत्र"** से देवी का पूजन करे।

॥ अष्टमी कृत्य ॥

प्रातः काल नदी स्नान करे। सूर्य के अर्घ्य देवे। तीन प्रहर व अर्द्धरात्रि में देवीपूजा करे। ब्राह्मण अपनी गोत्र से तर्पण करे। देवी स्नान यथा क्रम से कराये।

जल से हृदय स्नान **ॐ चण्डिकायै स्वाहा, ॐ गां गौर्यै हृदयाय नमः** क्षीर से। **ॐ ऐं नेत्राभ्यां सर्वतो हृदयान्तकः** पंचगव्य से। **ह्रीं यं हृदयार्णं** शर्करा से। **ॐ ह्रीं गिरिशे** तथा मधुमंत्र से मधुस्नान। **ह्रीं शिखायै नमः** पानी से स्नान करे। **ॐ ईं भद्रकाली कवचाय हुं** तथा दधिमंत्र से। **ऐं ह्रीं गौर्यै नमः से उष्णोदक** स्नान कराये। गुड़, घृत, इक्षु रस से स्नान कर तथा नवार्ण वा दशाक्षर में गंधोदक स्नान कराये। त्रिगन्ध, त्रिशीत फलोदक, तीर्थोदक, पुष्पोदक कुशोदक स्नान कराये।

पुनः घटस्थापन कर देवि का आवाहन कर पाद्यादि अर्घ्य मधुपर्क प्रदान करे। जयन्ति मंगला काली इत्यादि शक्तियों का आवाहन करें। अष्टदल के अग्रभाग में रोचन आभावाली रुद्रचण्डा, अरुणप्रभा प्रचण्डा, कृष्णवर्णा चण्डोग्रा, श्यामवर्णा चण्डनायिका, शुक्लाभा चण्डरूपा, धूम्रवर्णा चण्डवती, पाण्डुवर्णा अतिचण्डा, पीतवर्णा चण्डिका का आवाहन कर मध्य में अग्निवर्णा उग्र चण्डा का पूजन करे। यंत्र वा भद्रपीठ के पूर्वादि अष्टदिशाओं ६४ योगनियों का पूजन करे। ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी इत्यादि अष्टशक्तियों का अर्चन पूर्वादि दिशाओं में करे। जयन्त्यादि शक्तियों का पूजन करे। देवी के दक्षिणप्रांत व पश्चिम प्रांत में देवियों का इस प्रकार पूजन करे।

दक्षिणप्रांतेषु देव्याः स्वाहां चैव स्वधां ततः। अम्बिकां चर्चिकां चैव तथा कात्यायनीमपि। रक्तदन्तिकां च सर्वादिमङ्गलां च ततः परं। शाकम्भरीं भ्रामरीं च शिवदूतीं ततः परं। महाकालीं च गौरीं च तर्जनीं भाविनीं तथा! महामोहां च प्रयजेत् तथा चैव भयङ्करीं। ततः पश्चिमप्रान्तेषु भीमां पद्मां शचीं तथा। मेधां चैव महामायां सावित्रीं विजयां जयां। देवसेनां धृतिं चैव पुष्टिं धृतिं च भ्रामरीं। महामायां महादेवीं महामेधां तथैव च। कामेश्वरीमुत्तरस्यां

कामदामपि चार्चयेत्। भ्रामरीं कालरात्रिं च महारात्रिं तथैव च। चक्रेश्वरीं ततश्चैव पूजयेद् भगमालिनीं। धूम्रां भीमां च शान्तां च विदारीं च महाऽम्बिकां। लक्ष्मीं चव सुपर्णां च महोग्रोमां तथादरात्। कुलदेवीं त्र्यक्षरेण मन्त्रेण च समर्चयेत्।

पूर्वादि चार दिशाओं में २-२ वटुक व अष्टदिशाओं में अष्टभैरव, मन्दिर, नंदी, सिंह मणिभद्र पूर्णभद्र इत्यादि की पूजा करे।

वटुकान पूजयेद् द्वारे द्वौ द्वौ कृत्वा विभागतः। सिद्धाख्यं चैव सन्देहं कालपुत्राख्यमेव च। क्रियाकुलनिभं चैव मन्त्रांगं देवि! पुत्रकं। मन्देरेणैव बीजेन सतारेण प्रपूजयेत्। भैरवानसिताङ्गादीन् क्षेत्रेशांश्च यजेत् क्रमात्। हेतुकं त्रिपुराङ्गं च अग्निजिह्वं तथैव च। कालास्यं च करालास्यमेकपादं च भीमकं। अनुग्रहं चोर्ध्वभागे अधश्च नासिकेश्वरं। नारसिंहेन बीजेन सतारं हृदयान्तकं। बहिः पीठे चार्चयेद् वै तेन बीजेन साधकः। जम्भकं मणिभद्रं च पूर्णभद्रं तथैव च। विरूपं च विरूपाक्षं चित्रकुण्डलमित्यपि। चित्राक्षं चित्ररूपं च केलिमालिनमेव च। वरेन्द्रं नन्दिनं सिंहं ग्रहान् लोकपतीन् यजेत्। आदित्यादिग्रहा ये च ये ग्रहाः क्रूरकर्मणः। तिथयो वासराः सर्वे तेषां हि सन्निधौ स्थिताः। ते पूजार्थमिहायान्तु पूजयिष्यामि तानहं। क्रूरकर्मण इति छान्दसत्वात् ह्रस्वः।

अस्त्रपूजा - प्रत्येक अस्त्र का स्व स्व बीज से पूजन करे। यथा- **खं खड्गाय नमः चं चक्राय नमः**........इत्यादि।

पंचवाण - **पञ्चतत्व स्वरूपाय पंचवाणायवै नमः।**

धनुष - **धृतं कृष्णेन रक्षार्थं संहारार्थं हरेण च। त्रयीमूर्ति च सगरं धनुरस्त्रं नमाम्यहम्॥** मंत्र - **रामकृष्णाभ्यां धनुषे स्वाहा। जयादि शराय स्वाहा।**

घण्टा - **ॐ चं चन्द्रघण्टाय नमः।**

महापाश (नागराज)- **नागराज महापाश! अनन्त वरणाय च। निर्मितो विष्णुना यस्मादतः पाहि नमः स्वधा। चण्डिकायाः प्रदत्ताऽसि सर्वानुवाल वर्हिणी॥**

छुरिका - **ॐ छुरिके रक्ष मां नित्यं शांति कुरु नमोस्तुते। छुरिकायै स्वाहा॥** शिव विष्णु वनिताः (गरुड़) की पूजा करे। मंत्र जप करे दशांश होम करे। प्रसादन करे। **यन्मयोपहृतं किंचित् पुष्पगन्धानुलेपनैः। तत् सर्वमुपयुञ्जीत प्रसीद वरद भव॥ पुष्टिं प्रज्ञां धृतिं मेधामारारोग्यं भूतिमेव च॥**

॥ अथ षोडशोपचार मन्त्राः॥

प्रसीद जगतां मातः! संसारार्णवतारिणि! मया निवेदितं भक्त्या आसनं सफलं कुरु ॥१॥ आसनपरिमाणं तु मातृकाभेदतन्त्रे, पञ्चमपटलेचतुरंगुल विस्तारं रौप्यनिर्माणपीठकं। अलङ्कारं यथायोग्यं पुरुषस्तु निवेदयेत्। मूलप्रकृतिरूपेण सूयते सचराचरं। पूजामहं विधास्यामि स्वागतं ते महेश्वरि ॥२॥ दुर्गन्धि परमामोदं परं वागीश्वरेश्वरी। पाद्यमेतन्मया दत्तं प्रसीद भुवनेश्वरि ॥३॥ दूर्वातण्डुलसम्मिश्रं कर्पूरागुरुपूरितं। अर्घ्यं दत्तमिदं गृह्ण मत्तस्त्रिभुवनार्चिते ॥४॥ आपो नारायणः साक्षादप्सु सर्वं चराचरं। निवेदयामि ते देवि! अद्भिराचमनीयकं ॥५॥ वाजिमेधफलावाप्त्यै मया दत्तं वरानने! मधुपर्कं प्रतीच्छस्व मातर्मे भुवनेश्वरि ॥६॥

पुनराचमनीयमप्याचमनीयमन्त्रेण वा दद्यात् ॥७॥

शङ्खस्थमुदकं पुण्यं सुगन्धि सुमनोहरं। निवेदितं मया देवि! स्नानीयं प्रतिगृह्यतां ॥८॥
त्वं देवि! परमेशानि! परब्रह्मस्वरूपिणि! गृह्ण वस्त्रमिदं देवि! यज्ञसूत्रमिदं शुभे ॥९॥
ज्योतिषां ज्योतिरेकस्त्वमनादि निधनं न ते। मया दत्तमलङ्कारमलंकुरु नमोऽस्तु ते ॥१०॥
सुगन्धिं दुर्गभं नान्यं कुमुदोत्पलमालिनं। सितपीतारुणादानं गृह्ण पुष्पं वरानने ॥११॥
धूपं गुग्गुलसंयुक्तं चन्दनागुरुचर्चितं। दशाष्टाङ्गसमुद्भूतं गृहाण परमेश्वरि ॥१२॥
परं ज्योतिः परब्रह्म जगेदकं सनातनि! भूतये मम देवेशि! दीपोऽयं प्रतिगृह्यतां ॥१३॥
यद्दत्तं परया भक्त्या फलमूलादिकं मया। गृहाण परमेशानि! नैवेद्यं सुमनोहरं ॥१४॥

मातृकाभेदतन्त्रेनैवेद्यं विविधं रम्यं नानाफलसमन्वितं। शर्करासंयुतं कृत्वा पायसं च निवेदयेत्।

मत्स्यसूक्ते अशेषजगदाधारभूते! त्रैलोक्यवन्दिते! प्रदक्षिणमहं वन्दे विद्वत्सु पादपङ्कजं ॥१५॥
धान्यमुद्गकलायस्य रजोवस्य तिलस्य च। प्रकटानेकफलयुग्रचनां निवेदयेत् ॥१६॥

प्राण् प्राणान् रक्ष यशो रक्ष पुत्रदारधनानि च। सर्वरक्षाकरी यस्मात् त्वं देवि! भुवनत्रये। बलिदान व द्रव्य दान करे। प्रार्थना करे-

॥ अथ स्तुतिः ॥

॥ नारद उवाच ॥

ॐ भगवति! भयोच्छेदेकात्यायनि च कामदे! कौशिकि त्वं महेशानि, कालिके त्वां नमाम्यहम् ॥१॥
प्रचण्डे, पुत्रदे, देवि, सुप्रीते, सुरनायिके! कुलद्योतिकरे, चोग्रे, पार्वति! त्वं प्रसीद मे ॥२॥
दुर्गोत्तारिणि, दुर्गे, त्वं सर्वाशुभनिवारिणि! सर्वे, सर्वार्थदे, देवि, भव त्वं वरदा मम ॥३॥
चण्डोग्रे, वरदे, देवि, प्रचण्डे, विजयप्रदे! धर्मार्थकामदे, देवि, कात्यायनि! नमोऽस्तु ते ॥४॥
जमान्तरसहस्त्रेषु तिर्यग्योनिगतस्य च। अघं संहर मे देवि! ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम् ॥५॥
शान्तिपुष्टिप्रदे, देवि, मातस्त्रैलोक्यतारिणि! नमस्यामि जगद्धात्रि! त्वामहं विल्वभाविनि ॥६॥
नमस्तेऽस्तु शिवे, देवि, सर्वव्यापिनि, शाङ्करि! निजधर्मादिकं काम्यं कल्याणं च प्रदेहि मे ॥७॥
सर्वेषां नाथभूताऽसि त्वमेवैकाकिनी यतः। तस्मान्नमामि देवेशि! प्रसन्ना वरदा भव ॥८॥
इयं सर्वेश्वरीपूजा यन्मया देवि! ते कृता। पूर्णा भवतु सा सर्वा त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥९॥
जातस्य यजमानस्य गर्भस्थस्य च देहिनः। मा भूत् तत्र कुले जन्म यत्र देवी न चण्डिका ॥१०॥

अर्द्धरात्रि को अष्टमी व नवमी में पूजा करे। शिव का पूजन बलि बाहर जाकर करे। रात्रि में रक्तपुष्प अष्टपुष्पों से पूजन करे। १००० पुष्पार्चन करे। नृत्यमीत मंगलगान करे।

॥ नवमी कृत्य ॥

नवमी को पूर्व कृत्य करे दशांश होमादि विधान करे। सायं ब्राह्मण, कुमारी भोजन कराये यथा शक्ति गाय, सुवर्ण, फल, वस्त्रादि का दान करे। अपने बंधु बोधय सहित भोजन करे। शिवभक्तों का आदर सम्मान करे।

॥ दशमी कृत्य ॥

दशमी को पूर्ववत् निवृत होवे। अवनीकृतजानु करके उपहार प्रदान करे-

ॐ कालि कालि महाकालि कालिके पापनाशनि काली कराल निष्क्रान्ते, कालिके त्वां नमोऽस्तु ते। सिंहवाहिनि चामुण्डे पिनाक धनुवल्लभे! उपहारं गृहीत्वैवं प्रसीद परमेश्वरि।

देव निसर्जन कर प्रतिमा को नगर परिक्रमा करते हुये नदी सरोवर पर ले जायें। प्रतिमा को रथ से उतार कर जल में स्थापित करें।

ॐ उत्तिष्ठ देवि चामुण्डे शुभां पूजां प्रगृह्य च। व्रज त्वं स्त्रोतसि जले वृद्धौ च स्थीयतामिह। निर्माल्यधारिणी पूज्या चाण्डाली गंधचंदनैः। समर्पयित्वा मंत्रेण मंत्रमेतदुदीरयेत्। निमज्याम्मसि संपूज्या परिकालार्चिते जले। पुत्रायुर्धन वृद्धयर्थं स्थापितासि जले मया॥ यजमान स्वयं चण्डिका को जल में प्रवेश कराये। चण्डिका को न देखे न जल में नग्न प्रवेश कराये। **न वीक्षे त महेशानीं च नग्नां प्रेषयेज्जले। दशम्यां श्रवणाप्राप्ते अप्सु निक्षिप्य दारकः। अलाभे केवलायां तु न निशायां कथञ्चन। पूजोपहार द्रव्याणि आचार्याय निवेदेयेत्। तदर्द्धं च विधिज्ञाय तदर्द्धं चैव ब्राह्मणे। तच्छेषं ऋत्वजे दद्यात् परितोष च।** आचार्य ब्राह्मण ऋत्वजों को यथा विभाग दक्षिणा देवें। **पूजालयं न वीक्षेत गृहस्थः स्वं कदाचन। अप्सुनिक्षिप्य देवेशीं ब्राह्मणायोपपादयेत्। देवी स्थितगृहेणापि यो गृहं कारयेत् सुधीः। तस्य लक्ष्मीर्बलं चायुः सर्वं नश्यति तत्क्षणात्।**

॥ इति प्राणतोषिण्यां दुर्गोत्सव प्रकरण संपूर्णम् ॥

॥ अथ अश्व गज पूजन प्रयोगः॥

प्रतिपदा से लेकर नवरात्र पर्यन्त गजाश्वों का पूजन करे। वस्त्रादि अलंकारों से सुसज्जित कर गंधादि से पूजन करे। एक पिण्ड प्रतिदिन पायसान्न, घृत, गुड़, शहद एवं सुरायुक्त बनाकर गजाश्वों खिलावें। स्वाति नक्षत्र में उच्चैःश्रवा हय आया हैं। त्वाष्ट्र में गजाश्वों की पूजा नहीं करे। नवरात्र पर्यन्त उनकी सवारी नहीं करे न उनका ताड़न करे। धूपदीप नैवेद्यादि से पूजन करे।

अश्वनामानिः- १. उच्चैःश्रवा, २. मेघपुष्पक ३. क्षेमकृद् ४. बाजीराजहंस, ५. सर्वसौख्यप्रद बाजीमकरालय ६. सुलोचन ७. सुभ्रुवाह ८. कालकेश ९. सिद्धिदायक।

गज नामानिः- १. ऐरावत २. पुण्डरीक ३. कुमुद ४. वामन ५. प्रतीक ६. अंजन ७. सर्वभौम ८. विजय ९. पुष्पदंत

अष्टवसुनामानिः- १. भव २. ध्रुव ३. सोम ४. विष्णु ५. अनिल ६. अनल ७. प्रत्यूष ८. प्रभव।

॥ अश्वपूजन मंत्राः ॥

गन्धर्वकुल जातस्त्वं, मा भूयो कुलनाशकः। सत्यवाक्येन सोमस्य, ब्रह्मणो वरुणस्य च ॥१॥
प्रसादाच्च हुताशस्य, वर्गय त्वं तुरङ्गम! तेजसा चैव सूयस्य, ऋषीणां तपसा तथा ॥२॥
रूद्रस्य ब्रह्मवीर्येण, वायोश्चैव बलेन च। स्मर त्वं राजपुत्रस्त्वं, कौस्तुभं च मणिस्त्वरः ॥३॥
निर्हन्तो यदि चाछिन्नो, युद्धं याति तुरङ्गमः। रिपून् विजित्य समरे, सहभर्ता सुखी भव ॥४॥

॥ गजपूजन मंत्राः ॥

पान्तु त्वां वसवो रुद्रा, आदित्याश्च मरूद्गणाः । भर्तारं रक्ष नागेन्द्र! स्वामिनं प्रतिपालय ॥१॥
अवाप्नुहि जयं युद्धे, गमने स्वस्तिमान् भव । वस्त्रैर्नानाविधैश्चैव, पुष्पैर्गन्धैर्मनोहरैः ॥२॥
प्रथमो मत्स्यरूपी स्याद्, द्वितीयः कूर्मनायकः । तृतीयो यज्ञवाराहश्चतुर्थो नृहरिस्मृतः ॥३॥
वामनः पञ्चमः प्रोक्तो, षष्ठो भार्गवसंज्ञकः । सप्तमो जानकीनाथो, देवकी नन्दनोऽष्टमः ॥४॥
नारायणस्तु नवमो, नवनारायणा स्मृताः ॥५॥

॥ शमी पूजन प्रयोगः ॥

राजा सजधज कर शमी पूजन हेतु नगर के बाहर जब कुछ तारे उदय हों उस समय के **विजय नाम** योग में प्रस्थान करे। शमीवृक्ष के पास भूमि शुद्धकर श्वेत वस्त्र पर चावलों से अष्टदल बनाकर उस पर कुंभ स्थापित करे।

संकल्प करे- **अद्येत्यादि यात्रायां विजय सिद्ध्यर्थं गणेशमातृका वास्तु दिग्पाल पूजन, मार्गदेवता पूजन, शमीपूजन, अपराजिता पूजनञ्च करिष्ये।**

ॐ अपराजितायै नमः। दक्षिणे ॐ क्रियायै नमः। वामे उमायै नमः। इसके बाद शमीपूजन कर प्रार्थना करे।

अपराजिते! नमस्तेऽस्तु, नमस्ते विजये जये! जगन्मातः सुरेशानि! कुण्डलद्योतितानने! ॥१॥
त्वं चापराजिते देवि! शमीवृक्षस्थिते जये! राज्यं मे देहि विश्वेशि! शत्रूणां च पराजयम् ॥२॥
अमङ्गलानां शमनीं, दुःकृतस्य च शमनीम् । दुःस्वप्नशमनीं धन्यां, प्रपद्येऽहं शमीं शमाम् ॥३॥
शमी शमयते रोगान्, शमी शमयते रिपून् । शमी शमयते पापं, शमी सर्वार्थसाधिनी ॥४॥
अर्जुनस्य धनुर्धात्री, रामस्य शोकनाशिनी। लक्ष्मणप्राणदात्री च, सीताशोकशमङ्करी ॥५॥
अपराजिते! नमस्तेऽस्तु, जयदे! कामदायिनी । यात्रामहं करिष्यामि, सिद्धिं सर्वत्र मे कुरु ॥६॥
मन्त्रैर्वेदमयैश्चैव, पूजयेच्च शमीस्थिताम् । अपराजितां भद्ररूपां, विजयार्थप्रदां शिवाम् ॥७॥
क्रमेणेन्द्रस्य ककुभिः, विन्यसेत् तु पदं क्रमात्। रिपोः प्रतिकृतिं कृत्वा, पांशुना तलरूपिणीम् ॥८॥
शरेण शरपुङ्खेण, बिद्धेद् हृदयमर्मणि । दिशां विजयमन्त्राश्च, असिरूपा द्विजातिभिः ॥९॥
पाठनीयास्ततो गेहं, गच्छेच्चैव पुरोधसा । माङ्गल्यमभिषेकं च , गुणप्राशनमेव च ॥१०॥
स्वस्तिवाच्या द्विजाश्चैव, बन्दीभ्योऽभयदक्षिणां । देयाधिक्यं च रजतं, वस्त्रादिनवभूषणम् ॥११॥
परिधयं स्वयं चैव, पत्नीभ्यो देयमेव च। पुत्रादिभ्यो स्नुषादिभ्यो, मन्त्रिभ्यो देयमेव च ॥१२।
अदेयमपि तत्काले, देयं श्रद्धा पुरःसरम् । सम्भाव्य पौरान् भृत्यांश्च, तेषामुत्सर्जनं ततः ॥१३॥
ततः पुरोधसा साकं, स्वयं गच्छेच्छमीं पुनः । वामदक्षिण पार्श्वेभ्यो, गृहीत्वा मृत्तिकां ततः ॥१४॥
श्रीधरं च हिरण्यं च, पट्टकूलं समर्पयेत् । गुरुं सम्पूज्य सस्त्रीकं, ततो गच्छेद् गृहं प्रति ॥१५॥

दुग्ध व जलधारा देवे। **आसिंचिता मयादेवि सदाशांति प्रयच्छ मे।** आचार्य अभिषेक कर मांगल्य एवं आशीष प्रदान करे।

॥ खंजनदर्शन तथा शुभाशुभ फलानि ॥

दशमी को अपराह्न समय खंजन पक्षी का दर्शन हो तो उसे नमस्कार करे। प्रार्थना करें -

वासुदेव स्वरूपेण सर्वकामफलप्रद । पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोस्तुते ॥
खञ्जनाय नमस्तुभ्यं सर्वाभीष्ट प्रदाय च । नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नमः ॥
भद्र त्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरक । स्वस्तिकोऽसि कुरु खञ्जरीट नमोऽस्तुते ॥
नारायण स्वरूपाथ संवत्सर सुखप्रद । नीलकण्ठ महादेव खञ्जरीट नमोऽस्तु ते ॥
देवदानव यक्षाणां नराणां पुष्टिवर्धनम् । दर्शनं तव भद्रस्य विष्णुरूप नमोस्तुते ॥

॥ शुभाऽशुभफलम् ॥

जल प्रासाद शिखरे पर्वते च जलान्ति के । दृष्टे शुभं भवेत् कीर्तिगोष्ठेषु धनवर्द्धनम् ॥
अब्जेषु नृपतिर्भूयान् तथा देवालयेषु च। तड़ागतीरे धनवान श्मशाने मरणं भवेत् ॥
कृष्णग्रीवो नीलकण्ठ श्वेतकण्ठो जनार्दनः । पीते तु पार्वती देवी धुन्वत् पक्षे तु वीक्षणम् ॥
व्याधिर्भवति देवेशि स्थिरे संपत्तिकारकं । भक्तं भुञ्जन् भवेद् रोगी श्रियं दृष्ट्वा च वासवः ॥
सुमानः कीर्तनादेव आयुषस्तु क्षयो भवेत्। तस्मात्तु खंजनं नाम कीर्तयेदविचारयन् ॥

॥ कलश एवं मूर्तिविर्सजन विधिः ॥

देवी घट में प्रधान देवता का मूलतत्व विराजमान माने घट के पास जाकर श्वांस ऊपर खींचे तथा भावना करे कि प्रधान देवता कुंभ में से अब मेरे हृदय में आकर बैठ गये हैं। मृण्मयी प्रतिमा कलश को उठाकर प्रार्थना करे।

उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्व मम कल्याणमष्टभि शक्तिभिः सह ॥
दुर्गे देवि जगन्मातः स्थानं गच्छ पूजिते। संवत्सर व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥
इमां पूजां मयादेवि यथा शक्त्युपपादितम्। रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥

स्वर्णमयी प्रतिमा आचार्य को दान करे।

त्र्यैलोक्य मातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते। दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भव॥

कलश या मृण्मय प्रतिमा को जल में विर्सजन कर प्रार्थना करे कि हमारे पाप रोग दोष को लेकर देवी समुद्र में चली गई हैं हमें शुभाशीष प्रदान करे।

गच्छगच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देविचण्डिके। व्रज स्त्रोतोजलं वृद्ध्यै स्थीयतां च जले त्विह ॥

॥ दक्षिण भारत मते नवदुर्गा भेदरूपाणि ॥

दक्षिण भारत में ब्राह्म्यादि नवदुर्गा की स्थूल रूप से उपासना करते हैं तथा दुर्गा के अन्य नवस्वरूपों की विशेष उपासना करते हैं।

प्रथमा वनदुर्गेति द्वितीया शूलिनीमता। तृतीया जातवेदा च चतुर्थी शांतिरिष्यति॥ पञ्चमी शबरी चैव षष्ठी ज्वालेति गीयते। सप्तमी लवणा चेति अष्टभ्यां आसुरी मता॥ नवमी दुर्गा दुर्गेति नवदुर्गा प्रकीर्तिताः॥

॥ १. वनदुर्गा ॥

वनदुर्गा की उपासना से व्याघ्र, सिंह, सर्प, वृश्चक हाथी वराह इत्यादि हिंसक पशुओं का भय नहीं रहता हैं। वे ही विंध्यवासिनी हैं, भक्तों को अभय प्रदान कर मंगलप्रदान करती हैं। इसका एक सिद्धस्थान चित्रकूट में हैं। धन धान्य वृद्धि हेतु निम्न मंत्र का जप करे।

१. ॐ हूं क्रौं महाभयपरिपन्थिनि वनविहारिणि दुर्गे देवि धन,धान्यं रक्ष रक्ष स्वाहा॥

२. शारदातिलक, मंत्ररत्न, मञ्जूषा, प्रपञ्चसार तंत्र, श्रीविद्यार्णवतंत्र में अन्य मंत्र दिया गया हैं।

मन्त्रः- **उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा।**

विनियोगः- **अस्य श्री वन दुर्गा मंत्रस्य आरण्यक ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, सर्वदुर्गतिमोचनी श्री वनदुर्गा देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिं, सर्वदुर्गति मोचनार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **उत्तिष्ठ पुरुषि हृदयाय नमः। किं स्वपिषि शिरसे स्वाहा। भयं मे समुपस्थितं शिखायै वषट्। यदि शक्यमशक्यं वा कवचाय हुं। तन्मे भगवति नेत्रत्रयाय वौषट्। शमय स्वाहा अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यासः- प्रत्येक वर्ण के आगे नमः लगाकर न्यास करे। **ॐ उं नमः दक्षपादांगुलिमूले। त्तिं दक्ष गुल्फे। ष्ठं दक्षजानुनि। पुं दक्षऊरुमूले। रुं वामपादांगुलिमूले। षिं वामगुल्फे। किं वामजानुनि। स्वं उरुमूले। पिं गुदे। षिं लिङ्गे। भं मूलाधारे। यं उदरे। में दक्ष पार्श्वे। सं वामपार्श्वे। मुं हृदि। पं दक्षस्तने। स्थिं वामस्तने। तं कण्ठे। यं दक्षकरांगुलिमूले। दिं दक्षमणिबन्धे। शं कर्पूरे। क्यं बाहुमूले। मं वामकरांगुलिमूले। शं मणिबन्धे। क्यं कपूरे। वां बाहुमूले। तं मुखे। न्मे दक्षनासापुटे। भं वामनासापुटे। गं दक्षगण्डे। वं वामगण्डे। तिं दक्षनेत्रे। शं वामनेत्रे। मं दक्षकर्णे। यं वामकर्णे। स्वां भ्रूमध्ये। हां नमः शिरसि।**

श्री विद्यार्णव तंत्र में ध्यान इस तरह हैं:-

विद्युद्दामप्रभाभां कनकसरसिजे संस्थितां सत्रिनेत्रां, हस्ताम्भोजैर्वहन्तीमरिदर वरदाभीति संज्ञाः क्रमेण। स्वर्णोद्यत्कान्तिवस्त्रां शशिकलित लसद्रत्नचूडां प्रसन्नां, पार्श्वोद्यत्सन्मृगेन्द्रां हृदि वनवसति दावदुर्गां स्मरेहम्॥

इनके अलावा ४ प्रकार के अन्य ध्यान हैं प्रथम ध्यान साधना कर्म हेतु, दूसरा रक्षा हेतु, तीसरा आपदनिवारण एवं चौथा ध्यान तामस प्रयोग हेतु हैं। ध्यान मंत्र दुर्गाकल्पतरु से कुछ भिन्न हैं।

हेमप्रख्यामिन्दु खण्डात्तमौलिं शङ्खारीष्टाभीति हस्तां त्रिनेत्राम्।
हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि॥१॥

अरिशङ्ख कृपाण खेटबाणान् सधनुः शूलक तर्जनीर्दधाना।
भवतां महिषोत्तमाङ्ग संस्था नवदूर्वा सदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥२॥
चक्रदर खड्ग खेटक शरकार्मुक शूल संज्ञक कपालैः
ऋष्टिमूसलकुन्त नन्दक वलय गदा भिन्दिपाल शक्त्याख्यै।
उद्यद्विकृति भुजाढ्या महिषके सजल जलद सङ्काशा
सिंहस्था वाऽग्नि निभा पद्मस्था वाथ मरकत श्यामा ॥३॥
व्याघ्र त्वक् परिधाना सर्वाभरणान्विता त्रिनेत्रा च
अहिकलित नीलकुन्तल विलसत् किरीट शशिकला।
सर्पमयवलय नूपुरकाञ्ची केयूरहार संभिन्ना
सुरदितिजाभय भयदा ध्येया कात्यायनी प्रयोग विधौ॥

॥ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

(१) मूल बिन्दु में देवी का ध्यान पूजन करे। (२) षट्कोण में हृदयादि षडङ्गन्यास पूजा करे। (३) अष्टदल की कर्णिका(नीचे का भाग) में प्रत्येक नाम के आगे ''ॐ'' तथा पश्चात् 'नमः' लगाकर आवाहन पूजा करें।

यथा - ॐ आर्यायै नमः। दुर्गायै। भद्रायै। भद्रकाल्यै। अंबिकायै। क्षेम्यायै। वेदगर्भायै, क्षेमङ्कर्यै। (४) अष्टदलपत्रों के मध्यभाग में ॐ चक्रायनमः। शङ्खाय। खड्गाय। खेटकाय। वाणाय। चापाय। शूलाय। ॐ कपालाय नमः। (५) अष्टदलों के पत्राग भाग में ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, महालक्ष्मी, चामुण्डा, माहेश्वरी का पूजन करे। (६) भूपूर(चतुरस्त्र) में इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करें।

॥ अथ प्रयोग विधानम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रिये च दुर्गां महिषोत्तमाङ्गस्थितां च दूर्वादलरुग् (भां) वहन्तीम् ।
सचक्रशङ्खासिस खेटबाणचापान् भुजैस्तर्जनिकां वहन्तीम् (त्रिशूलम्) ॥१॥
शङ्ख चक्र कृपाण खेटक बाणधनूंषि शूलवत् । पुंस्कपालसऋष्टिकान् मुसलकुन्तनन्दकान् ॥२॥
सत्करैर्वलय सद्गदा भिण्डिपालकशक्तिकान्। बिभ्रतीं जलदद्युति महिषोत्तमाङ्गनिषेदुषीम् ॥३॥
पावकोल्लसितद्युति हृदि भीमसिंह (समा) गताम्। श्यामलां कमलस्थितां नयनत्रयोल्लसितां शुभाम् ॥३॥
व्याघ्रचर्म सदंशु कामहिबद्ध कुन्तल शोभिताम्। चन्द्रशोभितशेखरां सुरदानवाभयभीतिदाम् ॥४॥

॥ प्रयोगः ॥

प्रजपेत् प्रत्यहं मन्त्री स्वरक्षायै शतं ह्यथ। सहस्त्रं वा तदन्ते च प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥५॥ यद्यदुद्दिश्य च मनुं सहस्त्रं वायुतं जपेत्। अचिराल्लभते तत्तदसाध्यमपि साधकः ॥६॥ प्रातः स्नायी न्यासपूर्वं स्मरन् देवीमनन्यधीः। नित्यं सहस्त्रं प्रजपेन्मन्त्रं साधकसत्तमः ॥७॥ ज्वरसर्पग्रहोत्थांश्च दोषान् प्रशमयेत्सुधीः। हुनेदारण्यकतिलै राजिकाभिश्च वा हुनेत् ॥८॥ अपामार्गसमिद्भिश्च नाशयेत् सकलामयान्। अपस्मारादिकान् मन्त्री नात्र कार्या विचारणा ॥९॥ न्यग्रोधोत्थसमिद्भिर्वा सशुङ्गाभिहुनेत्सुधीः। अयुतं सर्वसम्पत्त्यै सर्वापन्मुक्तयेऽपि च ॥१०॥ ग्रहादिशान्त्यै च तया ह्यभिचारादिशान्तये। अर्कवृक्षसमुद्भूतैर्जुहुयाच्च समिद्वरैः ॥११॥ आरभ्य रविवारं च तद्द्वयं प्रत्यहं सुधीः।

दशाहतो वाञ्छितार्थसिद्धिर्भवति नान्यथा ॥१२॥

त्र्यहं वा सप्तरात्रं वा चेध्मैः सारसमुद्भवैः। एकैकं शकलं मन्त्री हुनेद्वाञ्छितसिद्धये ॥१३॥ त्रिंशच्छरान् शिताग्रांश्च निधाय जुहुयादबुधः। कटुतैलैः सहस्रं वा ह्ययुतं तदनन्तरम ॥१४॥ सम्पाततैलेन शरान् समभ्युक्ष्य यथाविधि। पूर्ववत् प्रजपेन्मन्त्रं ताञ्शरान् अथ भूषतिः ॥१५॥ शुद्धाचारश्च धीरश्च धन्वी संयतमानसः। गृहीत्वा परसेनाया मध्ये गच्छेदभीः क्षिपेत् ॥१६॥ सा धावति दिशः सर्वाः सम्भ्रान्ता विह्वला तदा। स आगत्य पुनर्भूयो गुरुं धान्यैर्धनैरपि ॥१७॥ वस्त्रालङ्करणैश्चैव तोषयेज्जयदायिनम्। अष्टाधिकशतेनाथ सञ्जप्तं शवभस्म च ॥१८॥ निक्षिपेद्यस्य शिरसि स विद्विष्टो भवेज्जनैः। देशाद् देशान्तरं चैव काकवद् भ्रमते सदा ॥१९॥ कारस्करद्रुमोत्थैश्च पत्रैर्वायुनिपातितैः। सहस्रं जुहुयात् पादरजोभिः सह वैरिणः ॥२०॥ उच्चाटोऽस्य भवेत् सद्यो, विषवृक्षसमुद्भवैः। पुष्पैर्हुनेन् सहस्रं च सेनां संस्तम्भयेत्बुधः ॥२१॥ तावद्भिस्तस्य पत्रैश्च मन्त्री सेनां निवर्त्तयेत्। विषवृक्षसमुद्भूतां शत्रोः प्रतिकृतिं शुभाम् ॥२२॥

कृत्वा प्रतिष्ठितप्राणां खण्डं खण्डं कृतैर्निशि। कृष्णपक्षचतुर्दश्यां काकोलूकवसाप्लुतैः ॥२३॥ तद्गात्रैर्विपिने होमः कर्त्तव्योऽष्टसहस्रकम्। चतुर्दशीत्रयादेवं नाशमेति रिपुर्ध्रुवम् ॥२४॥ उलूकवायसपक्षैः सवसारक्तसंयुतैः। होमाद्रिपुर्नाशमेति ह्युन्मत्तसमिधं तथा ॥२५॥ होमान्मत्तो रिपुर्नूनं भवत्येव सहस्रतः। वैरिणः प्रतिमां कृत्वा सम्यक् संस्थापितानिलाम् ॥२६॥ विषत्रिकटुकालिप्तां सम्यगुष्णे जले क्षिपेत्। प्रजपेच्च मनुं सद्यो ज्वराक्रान्तो भवेद्रिपुः ॥२७॥ दुग्धाभिषेकतः शान्तिर्भवत्यस्य न संशयः। प्रतिमां विषवृक्षोत्थां निःक्षिपेदुष्णवारिणि ॥२८॥ उन्मादश्च रिपोः सद्यः पूर्ववच्छान्तिरीरिता। सूर्यबिम्बेऽन्तरारक्तां शूलतर्जनिकाकराम् ॥२९॥ ध्यात्वायुतं प्रजप्याथ मारयेद्रिपुसञ्चयम्। असिखेटकरार्कस्था क्रुद्धा सा वनवासिनी ॥३०॥ संस्मृता मन्त्रजापे तु शमयेच्छत्रुसञ्चयम्। शरधनुष्करां सिंहस्थितां पावकसन्निभाम् ॥३१॥ संस्मृत्य मन्त्रं प्रजपन् क्षिप्रमुच्चाटयेदरीन्। कारस्करद्रुसमिधामयुतं जुहुयात्सुधीः ॥३२॥

रोगिणः करिणः सर्वे जायन्ते ह्यचिरात्सदा। विषवृक्षोत्थितैः पत्रैरमी नाशं प्रयान्ति च ॥३३॥ तद्वृक्षसुमनोभिः स्यादुच्चाटः करिणां ध्रुवम्। राजवृक्षसमिद्भिर्वा रोगा नश्यन्ति दन्तिनाम् ॥३४॥ विषवृक्षप्रसूनैश्च त्रिमध्वक्तैस्तु मानवः (वारणः) वशीभवेत्तथा शीघ्रं पत्रैरानित्यशोभितैः (कोद्भवैः) ॥३५॥ त्रिस्वाधुयुक्तैः करिणो ह्यतिमत्ता भवन्ति च। अभ्यङ्गः पञ्चगव्येन लोके रक्षाकरः परः ॥३६॥ करिणां मनुजप्तोऽयं प्रोक्तो मन्त्रविदुत्तमैः। सर्पिस्तिलानित्यकैस्तु राजिकापञ्चगव्यकैः ॥३७॥ दुग्धतण्डुलकैश्चैव प्रत्येकं च सहस्रतः। जुहुयादिभसङ्घानां वृद्धिर्भवति नान्यथा ॥३८॥

महान्तं विष (द्विज) वृक्षं च छित्वा निर्भिद्य पञ्चधा। दिक्क्रमेणैव पञ्चैवमायुधानि प्रकल्पयेत् ॥३९॥ सम्यक् शिल्पविदा शङ्खो नन्दकश्चक्रशार्ङ्गकौ। कौमोदकीति क्रमेण प्रोक्तमायुधपञ्चकम् ॥४०॥ निक्षिप्य पञ्चगव्येतु जपेन्मन्त्रसहस्रकम्। तावच्चाज्येन जुहुयात् सम्पातं तत्र पातयेत् ॥४१॥ भूयश्च पूर्वसंख्याकं जपं कुर्याद्विचक्षणः। विदध्यादायुधान् पञ्च पञ्चगव्यप्रपूरितान् ॥४२॥ मध्यायुधे स्वा(मध्यावटेष्वा) युधानि निक्षिपेत् (तत्र तत्र च) - बलिं हरेत्समीकृत्य तन्मंत्रैर्मन्त्रिणा तथा ॥४३॥ कार्या रक्षा राष्ट्रपुरग्रामाणामेवमेव च। यत्रैयं विहिता रक्षा लक्ष्मीः) तत्र च वर्धते ॥४४॥ धनधान्यसमृद्धिः स्याद्रिपुचौरभयं नच। पद्मैर्नृपं वशीकुर्यात् तत्पत्नीरुत्पलैरपि ॥४५॥ ब्राह्मणान् कुमुदैर्हुत्वा कह्लारैर्विश एव च। शूद्रांल्लवण होमेन ग्रामं जातिप्रसूनकैः ॥४६॥

चक्रशङ्खगदाम्भोजहस्तं सञ्चिन्तयेच्छुभम्। रविबिम्बे मुकुन्दं च मनुं व्यत्यस्तलिङ्गकम् ॥४७॥ प्रजपेच्चाथ पुरुषभगवत्पदयोरथ। सर्वसिद्धिकरः प्रोक्ताः प्रकारोऽयं सुमन्त्रिभिः ॥४८॥ साध्यनामाक्षरैः सम्यग्विदर्भितंमनुं

लिखेत्। यन्त्रे (पत्रे) ततः कुलालस्य करलग्नं प्रगृह्य मृत ॥४९॥ तया कृता या प्रतिमा तस्याश्च हृदि संन्यसेत्। संस्थाप्य स्वाभिमुख्ये तां सप्ताहं प्रजपेन्मनुम् ॥५०॥ सन्ध्यात्रये शतं चाष्टाधिकं वश्यो भवेत्तु सः। व्रीहीन् हुनेदष्टशतं प्रत्यहं वत्सराद्भवेत् ॥५१॥ व्रीहिमान् गोपयोभिश्च पशुमान् भवति ध्रुवम्। घृतहोमान्मन्त्रिणः स्यात् काञ्चनाप्तिर्महीयसी ॥५२॥ दध्ना सर्वसमृद्धिः स्यादन्नैरन्नसमृद्धियुक्। मधुहोमेन रत्नानां निधिर्भवति नान्यथा ॥५३॥ दूर्वाहोमेन दीर्घायुर्मन्त्री भवति निश्चितम्। श्वेतगुञ्जाः समानीय कुडवप्रमिताः शुभाः ॥५४॥ एतन्मन्त्रसुजप्ताश्च विकिरेच्छत्रुसैन्यके। स्वयं मन्त्री सुगुप्तः सन् तेनासौ वैरिणश्चम् ॥५५॥ ज्वरादिकैर्महारोगैः पीडिता स्यान्मृताचिरात्। सेनाधिपतिमुख्यानां परस्परविरोधतः ॥५६॥ एतदुपद्रवैर्नानाविधनाशं प्रयाति च .....॥

तारे शक्तिं ससाध्यां लिखतु रविदले मध्यतः पत्रमूले मर्दिन्या वर्णयुग्मं दलमनु विलिखेद्वह्निशो मूलवर्णान्। अन्त्ये प्र (चा) न्त्येकबीजं बहिरथ लिपिभिर्भूपुरद्वन्द्वसंस्थं दुर्गाया यन्त्रमेतद्युवतितनयदं सर्व रक्षाकरं स्यात् ॥५७॥ सर्वसंपत्करं नृणां सर्वसौभाग्यपुष्टिदम्। राज्यलक्ष्मीविहीनानां भूपतीनां च राज्यदम् ॥५८॥ आमयग्रस्तनृणां च रोगशान्तिकरं परम्। जपहोमाज्यसम्पातसाधितं मन्त्रमुत्तमम् ॥५९॥

रक्षा प्रयोग हेतु यदि यंत्र प्रयोग करना हो तो मध्य में '' ॐ '' ह्रीं पश्चात् साध्यनाम लिखे। बाहर १२ कमल का दल बनायें। १२ कमलों के नीचे के भाग (केसरों) में महिषमर्दिनि के अष्टाक्षर मंत्र के २-२ वर्ण एक दल में लिखे तो मंत्र की ३ आवृत्ति होगी। इसके बाहर २ वृत्त बनायें। दोनों वृत्तों के बीच की वीथिका में अं आं .... शं षं सं हं लं क्षं मातृका वर्ण लिखे। दो चतुरस्र से अष्टकोण चित्र....... बनाये।

अष्टदलकमलों मे दुर्गा का ध्यान करे व मंत्र जप करे। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः। इसका बीज मंत्र दुः अथवा दुं हैं। एकाक्षरी मंत्र के कश्यपऋषि, गायत्री छन्दः दुर्गा देवता हैं।

दूर्वाश्यामां त्रिनेत्रां शूलवाणचक्र शङ्खखङ्ग खेट धनुः कपालानि। दक्षिणाधः करक्रमेण धारयन्तीं ध्यायेत्।

॥ अथ वनदुर्गा स्तोत्रम् ॥

यत्कर्मधर्मनिलयं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः जज्ञादिपुण्यमखिलं सकलं त्वयैव।
त्वं चेतना यत इति प्रविचार्य चित्ते नित्यं त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१॥
पाथोऽधिनाथतनयापतिरेष शेषपर्यङ्कलालितवपुः पुरुषः पुराणः।
त्वन्मोहपाशविवशो जगदम्ब सोऽपि व्याघूर्णमाननयनः शयनं चकार ॥२॥
तत्कौतुकं जननि यस्य जनार्दनस्य कर्णप्रसूतमलजौ मधुकैटभाख्यौ।
तस्यापि यौ न भवतः सुलभौ निहन्तुं त्वन्माया कवलितौ विलयं गतौ तौ ॥३॥
यन्माहिषं वपुरपूर्वबलोपपन्नं यन्नाक नायकपराक्रम जित्वरं च।
यल्लोकशोकजनन व्रतबद्धहार्दं तल्लीलयैव दलितं गिरिजे भवत्या ॥४॥
यो धूम्रलोचन इति प्रथितः पृथिव्यां भस्मीबभूव स रणे तव हुंकृतेन।
सर्वासुरक्षयकरे गिरिराजकन्ये मन्ये स्वमन्युदहने कृत एष होमः ॥५॥
केषामपि त्रिदश नायक पूर्वकाणां हन्तुं न जातु सुलभाविति चण्डमुण्डौ।

तौ दुर्मदौ सपदि चाम्बरतुल्य मूर्तेर्मातस्तवासि कुलिशात् पतितौ विशीर्णौं ॥६॥
दौत्येन ते शिव इति प्रथित प्रभावो देवोऽपि दानवपतेः सदनं जगाम ।
भूयोऽपि तस्य चरितं प्रथयां चकार सा त्वं प्रसीद शिवदूति विजृम्भितेन ॥७॥
चित्रं तदेत दरैरपि ये न जेयाः शस्त्राभि घात पतिताद्रुधिरादपर्णे ।
भूमौ बभूवुरमिताः प्रतिरक्त बीजास्तेऽपि त्वयैव गगने गिलिताः समस्ताः ॥८॥
आश्चर्यमेतदतुलं यदभूत् सुरारी त्रैलोक्य वैभव विलुण्ठनहृष्टपाणी ।
शस्त्रैर्निहत्य भुवि शुम्भ निशुम्भसंज्ञौ नीतौ त्वया जननि तावपि नाकलोकम् ॥९॥
त्वत्तेजसि प्रलयकाल हुताशनेऽस्मिंस्तस्मिन् प्रयान्ति विलयं भुवनानि सद्यः ।
तस्मिन्निपत्य शलभा इव दानवेन्द्रा भस्मीभवन्ति हि भवानि किमत्र चित्रम् ॥१०॥
तत्किं गृणामि भवतीं भवतीव्रतापनिर्वापण प्रणयिनीं प्रणमज्जनेषु ।
तत्किं गृणामि भवतीं भवतीव्रतापसम्वर्द्धन प्रणयिनीं विपदि स्थितेषु ॥११॥
वामे करे तदितरे च तथोपरिष्टात् पात्रं सुधारसयुतं वरमातुलुङ्गम् ।
खेटं गदां च दधतीं भवतीं भवानि ध्यायन्ति येऽरुणनिभां कृतिनस्त एव ॥१२॥
यद्वारुणात् परमिदं यदि मानवस्ते बीजं स्मरेदनुदिनं दहनाधिरूढम् ।
मायाङ्कितं तिलकितं तरुणेन्दुबिन्दु नादैरमन्दमिह राज्यमसौ भुनक्ति ॥१३॥
आवाहनं यजनवर्णनमग्निहोत्रं कर्मार्पणं तव विसर्जनमत्र देवि ।
मोहान्मया कृतमिदं सकलापराधं मातः क्षमस्व वरदे बहिरन्तरस्थे ॥१४॥
अन्तः स्थिताप्यखिलजन्तुषु जन्तुरूपा विद्योतसे बहिरिवाखिलविश्वरूपा ।
का भूरिशब्दरचना वचनाधिका सा दीनं जनं जननि मामव निष्प्रपञ्चम् ॥१५॥
एतत् पठेदनुदिनं दनुजान्तकारि चण्डीचरित्रमतुलं भुवि यस्त्रिकालम् ।
श्रीमान् सुखी स विजयी सुभगः कृती स्यात् त्यागी चिरन्तनवपुः कविचक्रवर्ती ॥१६॥
श्री सिद्धनाथा परनामधेयः श्रीशम्भुनाथो भुवनैकनाथः ।
तस्य प्रसादात् सकलागम श्रीः पृथ्वीधरस्तोत्रमिदं चकार ॥१७॥

॥ श्री वनदुर्गा गायत्रीकवचस्तोत्रम् ॥

ॐ हसौं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ह्रीं तत्सवितुर ह्रीं वरेण्यं ह्रीं भर्गो देवस्य क्लीं धीमहि क्लीं धियो यो नः क्लीं प्रचोदयात्मिके ह्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूं फट् स्वाहा ॐ हसौं ॐ नमः।

ॐ सहनाववतु ॐ सहनौ भुनक्तु ॐ सहवीर्यं करवावहै। ॐ तेजस्विनावधीतमस्तु ॐ मां विद्विषावहै ॥ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री वनदुर्गा गायत्री महाविद्यामालामंत्रस्य ॐ किरात रूपधर ईश्वर ऋषिः। ॐ

अनुष्टुप् छंदः। ॐ अंतर्यामी नारायणः किरातरूपधरेश्वरी वनदुर्गा गायत्रीर्देवता। ॐ स्वाहा शक्तिः। ॐ हुं बीजं। ॐ क्लीं कीलकं। ॐ श्री वनदुर्गा गायत्री प्रीत्यर्थ मा वशयज्ञा वनदुर्गा गायत्री महामन्त्र पारायणे मम धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

न्यास :- ॐ हंसिनी ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हंसिनी ह्रां हृदयाय नमः। ॐ शंखिनी ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ शंखिनी ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ चक्रिणी ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चक्रिणी ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ गादिनी ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ गदिनी ह्रैं कवचाय हूम्। ॐ शूलिनी ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ शूलिनी ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ चापिनी ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ चापिनी ह्रः अस्त्राय फट्। ॐ भूः र्भुवः स्वः ॐ ह्रीं ॐ तत् सवितुर ह्रीं वरेण्यं ॐ ह्रीं भर्गो देवस्य क्लीं धीमहि ॐ ह्रीं धियो योनः क्लीं प्रचोदयादात्मिके ह्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ ह्रीं परोरजसे सावदों ॐ ह्रीं आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। ॐ सत्यं ॐ।

॥ ध्यानम् ॥

सिंहादुत्थाय कोषाद् दड़ऽदड़ दड़ंधावमाना भवानी ।
दैत्यानां दिव्य शस्त्रैस्त तड तड तडं त्रोटयन्ती शिरांसि ॥
तेषां रक्तं पिवन्ती घुघट घट घटं तोषयन्ती पिशाचा,
त्यक्त्वादहं हसन्ती रवरवड रवडरवडं शांभवी मां पुनातु ॥५॥

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ अरि शंख कृपाण खेट बाणान् सुधनुः पाश मयांबुजं दधाना। भजतां महिषोत्तमांग - संस्था वनदुर्गा सदृशी श्रियोस्तु दुर्गा। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ नमः ॥१॥

अरि शंख गदा बाणं खेटकं परशुं तथा। अम्बुजं पाश हस्ताभ्यां देवी दुर्गामहं भजे ।
ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ हेमप्रख्यामिंदुखंडां तमौलिंशंखारिष्टाऽभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ।
हेमाब्जस्थां पीतवर्णां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्य रूपां नमामि। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ नमः॥

ॐ सहना भवतु ॐ सहनौभुनक्तु ॐ सहवीर्यं करवावहै। ॐ तेजस्विना वधी तमस्तु ॐ मा विद्विया वहै ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

ॐ क्लीं लं पृथिव्यात्मकं वनदुर्गा देवी गायत्र्यै गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं वनदुर्गा देवी गायत्र्यै पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं वनदुर्गा देवी गायत्र्यै धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मकं वनदुर्गा देवी गायत्र्यै दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं वनदुर्गा देवी गायत्र्यै अमृत नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ सं सौमात्मकं वनदुर्गा देवी गायत्र्यै ताम्बूलं कल्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उतिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं च समुपस्थितं यदि शक्यमशवयं वातन्मे भगवति शमय शमय श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा। ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गा देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा ॥१॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ हेतुकं पूर्व पीठे तु क्लीं आग्नेय्यां त्रिपुरां तकं। क्लीं दक्षिणे चाग्नि वैतालं क्लीं नैऋत्यां यम जिह्वकम्। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गा देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा ॥२॥

ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ कालाख्यं वारुणे पीठे क्लीं वायव्यां करालिनम्।

क्लीं उत्तरे एकपादं तु क्लीं ईशान्यां भीमरूपिणम्। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूं फट् स्वाहा ॥३॥ ओं सत्यं ओं तपः ओं जनः ओं महः ओं स्वः ओं भुवः ओं भूः ॥२॥

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ आकाशे तु निरालं बं क्लीं पाताले बडवानलम्। क्लीं यथा ग्रामे तथारण्ये तथा क्षेत्रे क्लीं रक्ष मां बटुक स्तथा। ओं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा ॥४॥ ओं सत्यं ओं तपः ओं जनः ओं महः ओं स्वः ओं भुवः ओं भूः ॥२॥

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ॥१॥ ओं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ओं सर्वमंगल मांगल्ये ऐं ह्रीं शिवे सर्वार्थ साधिके। श्रीं शरण्ये त्र्यंबके गौरी क्लीं नारायणि नमोस्तुते। ह्रीं ओं ऐं शरणागत दीनार्त ह्रीं परित्राण परायणे। श्रीं सर्वस्यार्ति हरेदेवी क्लीं नारायणि नमोस्तुते ह्रीं ओं ॥५॥ ओं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ओं सत्यं ओं तपः ओं जनः ओं महः ओं स्वः ओं भुवः ओं भूः ॥२॥

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ॥१॥ ओं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ओं सत्यं ओं तपः ओं जनः ओं महः ओं स्वः ओं भुवः ओं भूः ॥२॥

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ॐ ब्रह्माण्यै ओं क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ वारुणीखल्विन्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ माहेश्वर्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ओं कुलवासिन्यै ओं क्लीं ओं नमः। ॐ क्लीं ओं कुमारिण्यै ओं क्लीं ओं नमः। ॐ क्लीं ओं जयंतिपुरत्नाहि वारात्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ अष्टमहाकालि माहेश्वर्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ चित्रकूट इंद्राण्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ त्रिपुरहर ब्रह्मचारिण्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ एकवृक्ष शुषिण्यै महालक्ष्म्यै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं त्रिपुरहर ब्रह्मांड नायकायै ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्लीं ॐ क्षं क्षं त्रैलोक्य वशंकराणि हं क्षं बीजाक्षराणि ॐ क्षं हं क्षं क्षं क्लीं ओं नमः। ॐ क्लीं शांभवी मे शुभं कुरु कुरु ओं क्लीं हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥६॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं सकल नरमुख भ्रमरी ॐ क्लीं ओं नमः। ॐ ह्रीं क्लीं ॐ सकल राजमुख भ्रमरी ॐ क्लीं ॐ नमः। ॐ क्रौं सौं क्लीं ॐ सकल- देवता मुखभ्रमरी ॐ क्लीं ओं नमः। ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ॐ सकलकामिनी मुखभ्रमरी ॐ क्लीं ओं नमः। ॐ क्लीं ईं सौं ओं सकल देशमुखभ्रमरी ॐ क्लीं ओं नमः। ॐ क्लीं ॐ त्रैलोक्यचित्त भ्रमरी ॐ क्लीं ओं नमः। ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गा देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२॥ ॥७॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षै क्षौ क्षः उग्रभैरवादि सर्व भूत पिशाचादि चित्त भ्रमरी ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं ॐ वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥८॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां

देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं हुं क्षुं हुं क्लीं राजमंत्र क्लीं राजयंत्र क्लीं राजतंत्र भ्रमरी। ॐ क्लीं हुँ क्षुं हुँ क्लीं सिद्धमंत्रं क्लीं सिद्धयंत्रं क्लीं सिद्धितंत्रं भ्रमरी ॐ क्लीं हुं क्षुं हुं क्लीं साध्य मंत्र क्लीं साध्य यंत्र क्लीं साध्य तंत्रं भ्रमरी। ॐ क्लीं सकल सुरासुर सर्वमंत्र भ्रमरी क्लीं सर्व यंत्र भ्रमरी क्लीं सर्व तंत्र भ्रमरी। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ सत्यं, ॐ तपः, ॐ जनः, ॐ महः, ॐ स्वः, ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥९॥

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ सत्यं, ॐ तपः, ॐ जनः, ॐ महः, ॐ स्वः, ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं सर्वं संक्षोभिणीं क्लीं सर्व क्लेदिनीं क्लीं सकल मनोन्मादिनीम्। ॐ आं ह्रीं क्रों परमकल्याणीं ॐ क्लीं महायोगिनीं। ॐ क्लीं महाविद्यां प्रवक्ष्यामि क्लीं महादेवैन निर्मिताम्। क्लीं चिंतितां किरातरूपेण क्लीं मातृणां हृदयनंदिनीम्। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनःॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥१०॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं उत्तमा सर्व विद्यानां क्लीं सर्वभूत शंकरी। ॐ क्लीं सर्व पापक्षय करीम् क्लीं सर्वशत्रु निवारिणी ॥१॥ ॐ क्लीं कुलकरीं। क्लीं गोत्रकरीं। क्लीं धनकरीं। क्लीं धान्यकरीं। क्लीं बलकरीं। क्लीं यशस्करीं। क्लीं विद्याकरीं। क्लीं उत्साह बल वर्धिनीं । क्लीं सर्व भूतानां विजृंभिणीं। क्लीं सर्वभूतानां स्तंभिनीं। क्लीं सर्वभूतानां मोहिनीं। क्लीं सर्व भूतानां द्राविणीं। क्लीं सर्वभूतानां सर्वभूतानां आकर्षिणीं। क्लीं सर्व मंत्र प्रभंजिनीम्। क्लीं सर्व विद्या प्रभेदिनीम्। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥११॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ एकाहिक ज्वर, द्वयाहिक ज्वर, त्र्याहिक ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, अर्धमासिक, षाणमासिक, सांवत्सरिक, वातिक, पैतृक, श्लैष्मिक, सान्निपाति ज्वर, सतत ज्वर, शीत ज्वर, उष्णिक ज्वर, विषम ज्वर, ताप ज्वर, क्लीं सर्व ज्वर, गंडमाला भू[illegible]गाणां त्रासिनीं। क्लीं सर्पाणां त्रासिनीं, क्लीं सर्व त्रासिनीं, क्लीं शिरः शूल, अस्थि शूल, पक्ष शूल, गुदशूल, गुल्म शूल, लिंग शूल, योनिशूल, पादशूल, सर्वांगशूल, विस्फोटक प्रभेदिनीं। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हुँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥१२॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।२॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं आत्मरक्षा। क्लीं परोक्ष रक्षा। क्लीं अग्निरक्षा। क्लीं अधोरक्षा। क्लीं वायु रक्षा। क्लीं उदक् रक्षा। क्लीं महान्धकारोल्का विद्युदनिल चौर शस्त्रास्त्रेभ्यो रक्षमां रक्षामां रक्षमाम्। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥१३॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं महादेवस्य तेजसा भयंकरीष्ट देवतां बंधयामि। ॐ क्लीं पथानुगत चौरा द्रक्षते बंधकस्य क्लीं कंटकं बंधयामि। ॐ क्लीं महागणेन पंचशीर्षेण पाणिना, ॐ क्लीं

महादेवस्य तेजसा क्लीं सर्वशूलान् कहल पिंगलेन बंधयामि। क्लीं कंठ मयूर रुद्रांगीं क्लीं लृं लृं क्लीं मातंगी क्लीं अं आं क्लीं मातंगी क्लीं एं ऐं क्लीं मातंगी क्लीं इं ईं क्लीं मातंगी क्लीं ओं औं क्लीं मातंगी ॐ क्लीं उं ऊं क्लीं मातंगी क्लीं अं अः क्लीं मातंगी क्लीं ऋं ॠं क्लीं मातंगी क्लीं हिलि हिलि यमदंडं। क्लीं स्वर स्वर ब्रह्म दंडं। क्लीं नित्यापलादिनीं क्लीं विस्वर विस्वर रुद्रदंडं। क्लीं हंसिनी क्लीं प्रज्वल प्रज्वल वायुदंडं क्लीं शंखिनी क्लीं प्रहर प्रहर इंद्रदण्डं क्लीं चक्रिणी क्लीं यक्षभक्ष निर्ऋति दंडं। क्लीं गदिनी क्लीं शूलिनी क्लीं पाशादि धारिणीं ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। । ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥१४॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं आयुर्विद्यां च सौभाग्य धनं धान्यं तथैव च। सदाशिवं पुत्रवृद्धिं देहि मे चण्डिके शुभे। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। । ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥१५॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं शिरोरक्षतु ब्रह्माणी क्लीं मुखे माहेश्वरी तथा। क्लीं कंठे रक्षतु वाराही क्लीं राचीभुजौतु रक्षतु। क्लीं हृदि रक्षतु चामुंडा क्लीं कुक्षौ रक्षतु वारुणी। क्लीं पादौ रक्षतु वैष्णवी क्लीं पृष्ठ देशे धनुर्धरी। क्लीं यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे तथाऽरण्ये। क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं रक्षस्व मां पदे पदे। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२॥ ॥१६॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ब्राह्मी क्लीं इंद्राणी क्लीं नारसिंही ॐ क्लीं माहेश्वरी क्लीं चामुंडा क्लीं महालक्ष्मी ॐ क्ली कौमारी क्लीं सिद्धचामुण्डेश्वरी क्लीं सर्वदा ॐ क्लीं वैष्णवी क्लीं गणश्वरी क्लीं सर्वत्रस्थिता ॐ क्लीं वाराही क्लीं क्षेत्रपाली क्लीं रक्षमां रक्षमां रक्षमां ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२॥ ॥१७॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं मातर्मे मधु कैटभघ्नि महिषघ्नि प्राणापहाराऽमे क्लीं हेल निर्मित धूम्रलोचन वधे हे चंड मुण्डार्दिनि। क्लीं निःशेषी कृत रक्तबीज दनुजेनित्ये निशुंभापहै क्लीं शुंभध्वंसिनी संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूं फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२॥ ॥१८॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं छायायै स्वाहा। ॐ क्लीं चतुरायै स्वाहा। ॐ क्लीं झिलि स्वाहा। ॐ क्लीं झिलिझिलि स्वाहा। ॐ क्लीं हिलि स्वाहा। ॐ क्लीं हिलि हिलि स्वाहा। ॐ क्लीं पिलि स्वाहा। ॐ क्लीं पिलि पिलि स्वाहा। ॐ क्लीं हर स्वाहा। ॐ क्लीं हर हर स्वाहा। ॐ क्लीं गंधर्वाय स्वाहा। ॐ क्लीं गंधर्वाधिपतये नमः। ॐ क्लीं यक्षाय स्वाहा। ॐ क्लीं यक्षाधिपतये स्वाहा। ॐ क्लीं रक्षसे स्वाहा। ॐ क्लीं रक्षोधिपतये स्वाहा। ॐ क्लीं भूः स्वाहा। ॐ क्लीं भुवः स्वाहा। ॐ क्लीं स्वः स्वाहा। ॐ क्लीं महः स्वाहा। ॐ क्लीं जनः स्वाहा। ॐ क्लीं तपः स्वाहा। ॐ क्लीं सत्यं स्वाहा। ॐ क्लीं भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ क्लींभूत प्रेत पिशाचोल्कामुखी स्वाहा। ॐ क्लीं रुद्रमुखी स्वाहा। ॐ क्लीं रुद्रजटी स्वाहा। ॐ क्लीं ब्रह्म विष्णु

रुद्र तेजसे स्वाहा। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रवण शिरसात्मिके हूं फट् स्वाहा ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२॥ ॥१९॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं भ्रां भ्रीं भ्रूं क्लीं भैरविभद्रे सर्वनृपाणां सर्व राजकार्य कर्त सर्वजनानां भ्रामय भ्रामय कीलय कीलय ॐ क्लीं भ्रूं भ्रीं भ्रां ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं भैरविभद्रे भवानि वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२॥ ॥२०॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं भ्रां भ्रीं भ्रूं क्लीं भैरविभद्रे सर्वनृषाणां सर्वराजकार्य कृतं सर्वजनानां भ्रामय भ्रामय कीलय कीलय ॐ क्लीं भ्रूं भ्रीं भ्रां क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं भैरविभद्रे भवानि वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२॥ ॥२१॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्लीं या इमा भूत पिशाच राक्षस नवग्रह भूत वैताल शाकिनी डाकिन्यः कूष्माण्डः वासवः चत्वारि राजपुरुषाः राजकार्यकर्त्ता राजपुरुषः कलह पुरुषः क्लीं सर्वान् बंधयामि। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः। ॥२२॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॥१॥ ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वनदुर्गां देवीं गायत्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा॥३॥ ॐ सर्वदुष्टानां वातेषां क्लीं सर्व दिशि बंधयामि। क्लीं दुर्दिशो बंधयामि। क्लीं हस्तो बंधयामि। क्लीं चक्षुषी बंधयामि। क्लीं श्रोत्रे बंधयामि। क्लीं जिह्वां बंधयामि। क्लीं घ्राणं बंधयामि। क्लीं बुद्धिं बंधयामि। क्लीं गतिं बंधयामि। क्लीं मतिं बंधयामि। क्लीं अंतरिक्षं बंधयामि। क्लीं आकाशं बंधयामि। क्लीं पातालं बंधयामि। क्लीं यममुखेन पंच योजन विस्तीर्णं बंधयामि। क्लीं रुद्रो बध्नातु। क्लीं रुद्रमंडलं रुद्रं सपरिवारं देवता प्रत्यधि देवता सहितं क्लीं रुद्रमंडलं बंधयामि। क्लीं रुद्र मंडलं प्रत्येकं बंधय बंधय सपरिवारकं सर्वं तो मां रक्ष रक्ष मम सर्वोपद्रवं नाशय नाशय ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लां ब्लूं आं ह्रीं क्रीं हूँ फट् स्वाहा। ॐ ब्रह्मद्विषो जहि ॐ अव ब्रह्म द्विषो जहि। ॐ त्र्यंबकं यजाम हे सुगधिं पुष्टि बर्धन उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात्। ॐ सत्यं ॐ तपः ॐ जनः ॐ महः ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॥२३॥

॥ इति वन दुर्गा कवच स्तोत्रम् ॥

॥ २. अथ शूलिनी दुर्गा प्रयोगः ॥

उक्तं च शारदातिलके।

पंचदशाक्षर मंत्र – **ॐ ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहान् हुँ फट् स्वाहा।**

अष्टदशाक्षर मंत्र – **ज्वल ज्वल शूलिनि शूलिनि दुष्टग्रहान. हुं फट स्वाहा।**

विंशाक्षर मंत्र– **ॐ ऐं ह्री श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहान् हुं फट् स्वाहा।**

त्रिंशाक्षर मंत्र – **श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्ध सुपूजिते नन्दिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ।**

॥ अस्य विधानम् ॥

विनियोग :– **ॐ अस्य श्रीशूलिनीदुर्गामंत्रस्य दीर्घतमा ऋषिः । ककुप् छंदः । शूलिनीदुर्गा देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।**

ऋष्यादिन्यास :– **ॐ दीर्घतमा ऋषये नमः शिरसि ॥१॥ ककुप्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ शूलिनीदुर्गादेवतायै नमः हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे ॥४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।**

करन्यास :– **ॐ शूलिनि दुर्गे हुं फट् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥२॥ ॐ शूलिनि विंध्यवासिनी हुं फट् मध्यमाभ्यां वषट् ॥३॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् अनामिकाभ्यां हुं ॥४॥ ॐ शूलिनि देवसिद्धि सुपूजिते नंदिनि रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुँ फट् कनिष्ठिकाभ्यां फट् ॥५॥** इति करन्यासः ।

हृदयादिन्यास :– **ॐ शूलिनि दुर्गे हुँ फट् हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ शूलिनि विंध्यवासिनि हुँ फट् शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ शूलिनि देवसिद्धिसुपूजिते नंदिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् अस्त्राय फट् ॥५॥ इति हृदयादिपंचांगन्यासः** । एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ।

॥ ध्यानम् ॥

अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां पद्महस्तैः
शूलं बाणंकृपाणंत्वरिजलज गदाचाप पाशान्वहंतीम् ।
चंद्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरसिमत्खेटकं बिभ्रतीभिः
कन्याभिः सेव्यमानां प्रतिभटभयदां शूलिनीं भावयामि ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादि पीठदेवताः दुर्गाः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् । पूर्वादिक्रमेण –

ॐ प्रभायै नमः ॐ मायायै नमः ॐ जयायै नमः ॐ सूक्ष्मायै नमः ॐ विशुद्धायै नमः । ॐ नंदिन्यै नमः ॐ सुप्रभायै नमः ॐ विजयायै नमः मध्ये **ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः**। इति पूजयेत् ततः स्वर्णादि निर्मितं यंत्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छ वस्त्रेण संशोष्य।

त्रिकोण मध्य में देवी का आवाहन कर समीप में सिंह का पूजन करें।

"ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हुं फट् नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य -

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते ।

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् । तथा च षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुष्कोणेषु मध्ये दिक्षु च ।
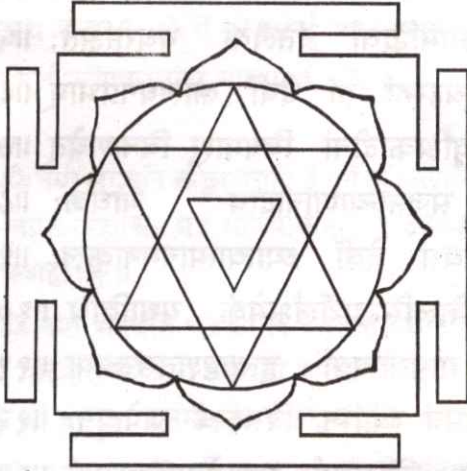
॥ श्री शूलिनी दुर्गा यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम्- (षट्कोणे)- ॐ शूलिनि दुर्गे हुं फट् हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥१॥ **ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा०** ॥२॥ **ॐ शूलिनि विंध्यवासिनि हुंफट् शिखायै वषट् शिखाश्रीपा०** ॥३॥ **ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् कवचाय हुं कवचश्रीपा०** ॥४॥ **ॐ शूलिनि देवसिद्धसुपूजिते नंदिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् अस्त्राय फट्** ॥५॥ इति पंचांगानि पूजयेत्।

ततः पुष्पांजलिमादाय **'मूलमुच्चार्य्य- अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्'** इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य **पूजितास्तर्पिताः संतु** इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् ॥१॥

ततः पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ।

द्वितीयावरणम्- (अष्टदले)- ॐ दुर्गायै नमः दुर्गाश्रीपा० ॥१॥ **ॐ वरदायै नमः । वरदाश्रीपा०** ॥२॥ **विंध्यवासिन्यै नमः । विंध्यवासिनी श्रीपा०** ॥३॥ **ॐ असुरमर्दिन्यै नमः । असुरमर्दिनीश्रीपा०** ॥४॥ **ॐ युद्धप्रियायै नमः। युद्धप्रियाश्रीपा०** ॥५॥ **ॐ देवसिद्धपूजितायै नमः । देवसिद्धपूजिताश्रीपा०** ॥६॥ **ॐ नंदिन्यै नमः । नंदिनीश्रीपा०** ॥७॥ **ॐ महायोगेश्वर्य्यै नमः महायोगेश्वरीश्रीपा०** ॥८॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

तृतीयावरणम् :-(अष्टदलाग्रे)- ततः पत्राग्रेषु तदस्त्राणि पूजयेत् । **तद्यथा चक्राय नमः** ॥१॥ **ॐ शंखाय नमः** ॥२॥ **ॐ खड्गाय नमः ।** ॥३॥ **ॐ गदायै नमः ।** ॥४॥ **ॐ चापाय नमः ।** ॥५॥ **ॐ त्रिशूलाय नमः** ॥६॥ **ॐ बाणेभ्यो नमः** ॥७॥ **ॐ पाशाय नमः।** ॥८॥ इत्यष्टास्त्राणि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥३॥

ततो भूपुरे- इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् । **अस्य पुरश्चरणं पंचदशलक्षजपः सर्पिषान्नेन दशांशतो होमः तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं ब्राह्मण भोजनं च कुर्य्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत्।**

तथा च-

मनुमेनं जपेन्मंत्री वर्णलक्षं विचक्षणः । सर्पिषान्नेन वा होमस्तद्दशांशमितो भवेत् ॥१॥
इत्थं जपादिभिः सिद्धं कुर्य्यात्कर्म निजेप्सितम् । अष्टोत्तरसहस्त्रं यस्तिलैस्त्रिमधुरप्लुतैः ।
नित्यं प्रजुहुयात्तस्य शक्तिः स्यादतिमानुषी ॥२॥
अष्टोत्तरशतं नित्यं सर्पिषा जुहुयान्नरः । वांछितं वत्सरादर्वाक् प्राप्नोति महतीं श्रियम् ॥३॥
पूर्वं होमो भवेन्नृणां सर्ववांछितसिद्धिदः । छुरिकाद्यानि शस्त्राणि जप्तानि मनुनामुना ॥४॥
संसिक्ताज्यविलिप्तानि वितरंति जयश्रियम् । अश्वत्थार्कसमिद्भिर्वा तिलैर्वा मधुरोक्षितैः ॥५॥
होमो वै दिशति क्षिप्रमीप्सितान्मंत्रिणो वरान् । उद्यदायुधहस्तां तां देवीं कालघनप्रभाम् ॥६॥
ध्यात्वात्मानं जपेन्मंत्रं स्पृष्ट्वा तं मुंचति ग्रहः । सर्पाखुवृश्चिकादीनां विषमाशु विनाशयेत् ॥७॥
मनुनानेन विधिवन्मंत्रविद्देवताधिया । मंत्रेणानेन संजप्तान्बाणानादाय योधकः ॥८॥
विमुंचेत्प्रतिसेनायां सा द्रुतं विद्रुता भवेत् । शूलपाशधरां देवीं ध्यात्वात्मानमनाकुलः ॥९॥
प्रविशेद्युद्धदेशं यो जित्वायाति स निर्व्रणः । जुहुयात्तिलसिद्धार्थैर्लक्षमेकं यथाविधि ॥१०॥
नामयुक्तं जपेन्मंत्रं वश्यासौ मतिमेष्यति । गुटिकां गोमयोत्पन्नां हुत्वाष्टशतसंख्यया ॥११॥
सप्ताहात्कुरुते मंत्री विद्वेषं स्निग्धयोर्मिथः । गृहीत्वा गोमयं व्योम्नि त्रिसहस्त्रं जपेत्पुनः ॥१२॥
गमिष्यति द्वारदेशे निखातं स्तंभकृद्भवेत् । बहुनोक्तेन किं सर्वं साधयेन्मनुनाऽमुना ॥१३॥

॥ अथ शूलिनीदुर्गा महामन्त्रः ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीशूलिनीदुर्गामहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता, हुं बीजं, मं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम शूलिनीदुर्गासप्रादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

करन्यास :- ॐ श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ श्रीशूलिनि युद्धप्रिये देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ श्रीशूलिनि महिषासुरमर्दिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ श्रीशूलिनि विन्ध्यवासिनि यन्त्रमन्त्रतन्त्राकर्षिणि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हु ंफट् ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ श्रीशूलिनि सर्वसिद्धिप्रदायिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास :- ॐ श्रीशूलिनि वरदे देव सिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रां हृदयाय नमः । ॐ श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रीशूलिनि युद्धप्रिये देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रूं शिखायै वषट् । ॐ त्रिशूलिनि महिषासुरमर्दिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रौं कवचाय हुं । ॐ श्रीशूलिनि विन्ध्यवासिनि यन्त्र मंत्र तन्त्राकर्षिणि देवसिद्ध- सूपुजिते नन्दी रक्ष रक्ष, महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ श्रीशूलिनि सर्वसिद्धप्रदायिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रः अस्त्राय फट् ।

॥ अथ ध्यानम् ॥

बिभ्राणा शूलबाणास्यभयवर गदाचाप पाशान्कराग्रैर्मेघश्यामा
किरीटोल्लासितशशिकलाभूषणा भीषणास्या ।
सिंहस्कन्धाधिरूढा चतसृभिरचितं खेटकं बिभ्रतीभिः
कन्याभिर्भिन्नदैत्या भवतु भवभयध्वंसिनी शूलिनी नः ॥१॥

संहारमुद्रां प्रदर्श्य योनिमुद्रां प्रणमेत् मूलमिति पञ्चपूजा ।

अथ मन्त्रः - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहान् हुंफट् स्वाहा । अथ शूलिनीदुर्गामूलमन्त्रस्य षडङ्गं कृत्वा मूलं जपित्वाऽनन्तरं मालामन्त्रं पठेत् ।

॥ अथ मालामन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवति कङ्कालरात्रि दुं दुर्गे शुं शूलिनि बं बटुकभैरवि अर्धरात्र विलासिनि प्रतापकेलिनि महाज्ञानधारिणि सर्वभूतप्रेत पिशाच- मद भीषमाकर्षय-२ आवेशय आवेशय, केलय केलय, भाषय भाषय , महाबटुकभैरवी हुँ फट् स्वाहा ॥१॥

ॐ नमो भगवति भद्रकालि कासकूटमोहिनि ऐं ह्रीं श्रीं इष्टकामार्थसिद्धिप्रदायिनि सकलज्ञापिनि संक्रामिणि ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी चामुण्डा भैरवेश्वरी आकर्षय २ आवेशय २ केलय २ भाषय २ ऐं ह्रीं श्रीं हन हन सप्तमातृके हुंफट् स्वाहा ॥२॥

ॐ नमो भगवति ह्रीं ज्वल २ शूलिनि संहारकालि अष्टभुजे शालिनि एहि २ आगच्छ २ आवेशय २ केलय २ भाषय २ बन्धय २ घातय २ छिन्धि २ रारारारा ग्राहय २ सकलग्रहान् संहारय २ भूतग्रहप्रेतग्रह पिशाचग्रह ब्रह्मराक्षसग्रह, डाकिनीग्रह, शाकिनीग्रह, काकिनीग्रह, राकिनीग्रह हाकिनीग्रह, याकिनीग्रह, काल- निग्रह महाकालनिग्रहा, वेशग्रहानावेशग्रह, स्वप्नग्रह, भोगग्रहापस्मारग्रह, नित्यग्रह, सर्वग्रहान् संहारय २ उच्चाटय २ नाशय २ मारय २ शोषय २ दह २ पच २ भक्षय २ खण्डय २ खड्गेन छिन्धि २ शूलेन ताडय २ पाशेन बन्धय २ अनलेन दह २ ह्रीं दुर्गे बटुकभैरवि सकलग्रहसंहारकारिणि भूतज्वर, प्रेतज्वर , पिशाचज्वर, राक्षसज्वर, पित्तज्वर, वातज्वर, श्लैष्मिकज्वर, सन्निपातज्वरैकाहिकज्वर, द्याह्रिकज्वर, त्र्याहिकज्वर, चातुर्थिकज्वर पक्षज्वर, मासज्वर, त्रिमासज्वर, षणमासज्वर, सांवत्सरिकज्वर, सर्वज्वरान् भञ्जय २ कटिशूल कुक्षिशूलाङ्गशूल, पार्श्वशूल, पृष्ठशूल, शिरःशूलाहिसर्वरोगान् संहारय २ ह्रीं दुर्गे परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्र विद्यास्तम्भिनि स्वमन्त्र स्वयन्त्र स्व-तन्त्र विद्याविवर्धिनि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् स्वाहा ॥३॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि सर्वकामफलप्रदा ॥ इति जपं निवेद्य उत्तरन्यासं कृत्वा यथाशक्त्या प्रजप्य स्तुवीत्।

॥ श्रीशूलिनीदुर्गा सुमुखीकरण स्तोत्रम् ॥

श्रीशूलिनी दुर्गा के सुमुखीकरण स्तोत्र के नित्यपाठ से सभी बाधायें दूर होकर अभीष्ट कार्य पूर्ण होते हैं। पहले **ॐ सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।** मन्त्र को तीन बार पढ़ें फिर भगवान गणेश, क्षेत्रपाल बटुक योगिनी को विधिवत् बलि देकर सुमुखीकरण स्तोत्र का पठन करें।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीसुमुखीकरण स्तोत्रमन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः। ककुप् छन्दः। शूलिनी देवता। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीदीर्घतमा ऋषये नमः शिरसि। ककुप्छन्दसे नमः मुखे। शूलिनी देवतायै नमः हृदि। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेद्धेम सहोपलासन परेकन्या जनालंकृते। पञ्चब्रह्म मुखामरैर्मुनिगणैः सेव्ये जगन्मंगले। आसीनां स्मितभाषणां शिवसखीं कल्याण वेषोज्ज्वलाम्। भक्ताभीष्टवर प्रदान निरतां विश्वात्मिकां शूलिनीम्॥

मानस पूजनम् – ॐ लं पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं श्रीशूलिनी देवता प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीशूलिनी देवता प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं श्रीशूलिनी देवता प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं श्रीशूलिनी देवता प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं अमृततत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीशूलिनी देवता प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीशूलिनी देवता प्रीतये समर्पयामि नमः।

॥ अथ पाठः ॥

विशेष :- प्रत्येक श्लोक से पूर्व ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयौं दुं पढ़ें।

ओङ्कार पीठमध्यस्थे ओषधीश महोज्जवले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१॥
श्रीपूर्णे श्रीपरे श्रीशे श्रीप्रदे श्रीविवर्धने। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२॥
कामेशि कामरसिके कामितार्थ फलप्रदे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३॥
मायाविलास चतुरे माये मायाधिमायिके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४॥
ॐ चिन्तामणेऽखिलाभीष्ट सिद्धिदे विश्वमङ्गले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥५॥
सर्वबीजाधिपे सर्वसिद्धिदे सर्वरूपिणि। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥६॥
ज्वलत् तेजस्त्रयानन्त कोटि-कोटि समद्युते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥७॥
लसच्चन्द्रार्ध मुकुटे लयजन्मविमोचिके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥८॥
ॐ ज्वररोगमुखापत्ति भञ्जनैक धुरन्धरे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥९॥
लक्ष्यलक्ष्ये लयातीते लक्ष्मीवर्गधरेक्षणे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१०॥
शूराङ्गनाऽनन्त कोटि व्यावृताशेष जालके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥११॥
पिपीलिङ्गादिदिक् स्थान नियताराधन प्रिये। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१२॥
निर्मले निर्गुणे नित्ये निष्कले निरुपद्रवे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१३॥
दुर्गे दुरितसंहारे दुष्टतूलान्त्य पावके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१४॥
टमामये टमामेव्ये टमावर्धन तत्परे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१५॥
ग्रसिताशेष भुवने ग्रन्थिसन्ध्यर्ण शोभिते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१६॥

हंस ताक्ष्र्य वृषारूढैराराधित पदद्वये । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१७॥
हुङ्कारकाल दहन भस्मीकृत जगत्त्रये । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे॥१८॥
फट्कारचण्ड- पवनोद्धासिताखिल विग्रहे । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥१९॥
स्वाकृते स्वामि पादाब्ज भक्तानां स्वाभि- वृद्धये । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२०॥
हालाहल विषाकार हाटकारुण पीठके । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२१॥
मूलादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं मूलज्वाला स्वरूपिणि । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२२॥
वषडादि क्रिया षट्क महासिद्धिप्रदे परे । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२३॥
सर्वविद्वन्मुखाम्भोज दिवाकर समुद्युते । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२४॥
नाना महीप हृदय नवनीत द्रवानले । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२५॥
अशेष ज्वर सर्पादि चन्द्रोपल शशिद्युते । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२६॥
महापापौघ कलुष क्षालनामृत वाहिनि । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२७॥
अशेष काय सम्भूत रोग तूलाननाऽऽकृते । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२८॥
औषधि कोटि दावाग्नि शान्ति सम्पूर्ण वर्षिणि । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥२९॥
तिमिराराति संहार दिवानाथ शताकृते । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३०॥
सुधाग्र जिह्वाऽऽवर्त्यग्र सुदीपे विश्व वाक्प्रदे । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३१॥
अरात्यवनि पानीक तूलोच्चाट महानिले । ऐश्वर्यमायुरारोंग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३२॥
समस्त मृत्यु तुहिन सहस्त्र किरणोपमे । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३३॥
जगत् सौभाग्य फलदे जङ्गम स्थावरात्मिके । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३४॥
सुभक्त हृदयानन्द सुख सम्वित् स्वरूपिणी । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३५॥
धनधान्याब्धि सम्वृद्धि चन्द्रकोटि समोदयेः । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३६॥
सर्वजीवात्मधेन्वग्र समुच्यानिल वत्सके । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३७॥
तेजःकण महावीर समावीतान्त्य पावके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३८॥
नाना चराचराविष्ट दाहोपशमनामृते । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥३९॥
सर्वकल्याण कल्याणे सर्वसिद्धि विवर्धने । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४०॥
सर्वेशि सर्वहृदये सर्वाकारे निराकृते । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४१॥
अनन्तानन्त जनके अभूते आत्मनायिके । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४२॥
रहस्याति रहस्यात्म रहस्यागम पालके । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४३॥
आचार करणातीते आचार्य करुणामये । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४४॥
सर्वरक्षाकरे भद्रे सर्वरक्षा करेऽतुले । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४५॥

सर्वलोके सर्वदेशे सर्वकाले सताम्बिके । ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे ॥४६॥
आद्येऽनादि कलाविशेष विवृतेऽनन्ताखिलात्माकृते । आचार्याङ्घ्रि सरोज युग्म शिरसामापूरिताशाऽमृते ।
संसारार्णव तारणोद्यत कृपा सम्पूर्ण दृष्ट्यानिशम् । दुर्गे शूलिनि शङ्करि स्त्रपय मां त्वं भाव संसिद्धये ॥४७॥

॥ फलश्रुति ॥

इति परमशिवाया सुमुखी महाशक्त्याः स्तुतिमतिशय सौख्य प्राप्तये यो नु वाऽत्र ।
स्मरति जपति विद्वत् सम्वृतोऽशेषलोकैः निखिलसुखमवाप्य श्रीशिवाकारमेति ॥

॥ श्रीआकाशभैरवकल्पे शूलिनीदुर्गा सुमुखीकरण स्तोत्रम् ॥

॥ ३. जातवेददुर्गा ॥

यह अग्निरूपा हैं। इसका प्रयोग शत्रु संहार हेतु किया जा रहा हैं। विलोम मंत्र करने पर विशेष उग्र स्वरूप हो जाता हैं। इसके प्रधान मंत्र के आगे लोम व पश्चात् विलोम गायत्री मंत्र का जप करे। त्रिपुर सुंदरी केमंत्र से पदविभाग करके भी मंत्र जप किया जाता हैं।

इसका ध्यान मंत्रः-"**विद्युद्दाम समप्रभां**" विशेष हैं तथा सिंहरथपर आरूढ हैं ऐसा भी कहा हैं।

यस्याः सिंहो रथे युक्ते व्याघ्रा यस्यानुगामनः। तामिमां रुद्रसंयुक्तां दुर्गामावाहयाम्यहम्।

मंत्रः- जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरित्याग्निः॥

विनियोगः- अस्य श्री जातवेदसे महामन्त्रस्य मरीचिकश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, जातवेदसेऽग्निस्वरूपिणी दुर्गा देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगः।

ऋषिन्यासः- मरीचिकश्यपऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, जातवेदसेऽग्निस्वरूपिणी दुर्गादेवतायै नमो हृदि, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

षडङ्गन्यासः- जातवेदसे हृदयाय नमः। सुनवाम सोममरातीयतो शिरसे स्वाहा। निदहाति वेदः शिखायै वषट्। स नः पर्षदति कवचाय हुं। दुर्गाणि विश्वा नावेव नेत्रत्रयाय वौषट्। सिन्धुं दुरितात्यग्निः अस्त्राय फट्।

वर्णन्यासः- ॐ जां नमो दक्षपादांगुष्ठे। ॐ तं नमो वामे। ॐ वें नमो दक्षगुल्फे। ॐ दं नमो वामे। ॐ सें नमो दक्षजङ्घायां। ॐ सुं नमो वामायां। ॐ नं नमो दक्षजान्‍नि। ॐ वां नमो वामे। ॐ मं नमो दक्षोरौ। ॐ सों नमो वामे। ॐ मं नमो दक्षकट्यां। ॐ अरां नमो वामायां। ॐ तीं नमः अन्धुनि। ॐ यं नमो नाभौ। ॐ तों नमो हृदि। ॐ निं नमो दक्षस्तने। ॐ दं नमो वामस्तने। ॐ हां नमो दक्षपार्श्वे। ॐ तिं नमो वामपार्श्वे। ॐ वें नमो पृष्ठे। ॐ दः नमो दक्षस्कन्धे। ॐ सं नमो वामे। ॐ नंः नमो मध्ये। ॐ पं दक्षबाहुमूले। ॐ रं नमो वामे। ॐ षं नमो दक्षोपबाहौ। ॐ दं नमो वामे। ॐ तिं नमो दक्षकूर्परे। ॐ दुं नमो वामे। ॐ गां नमो दक्षप्रकोष्ठे। ॐ णिं नमो वामे। ॐ विं नमो दक्षमणिबन्धादितलान्ते। ॐ श्वां नमो वामे। ॐ नां नमो मुखे। ॐ वें नमो दक्षनासिकायां। ॐ वं नमो वामायां। ॐ सिं नमो दक्षनेत्रे। ॐ न्धुं नमो वामे। ॐ दुं नमो दक्षकर्णे। ॐ रिं नमो वामे। ॐ तां नमो ललाटे। ॐ त्यं नमो मस्तिष्के। ॐ ग्निः नमो मूर्ध्नि। इत्यक्षरन्यासः।।

पदन्यासः- जात शिखायां। वेदसे ललाटे। सुनवाम कर्णयोः। सोमं नासिकायां अराती चक्षुषो। यतो

ओष्ठयो.। नि दन्तेषु। दहाति तालुनि। वेदःजिह्वायां। सं ग्रीवायां नः बाह्वोः। पर्षत् स्तनयोः। अति हृदये। दु. कुक्षौ। र्गाणि नाभौ। विश्वा पृष्ठे। नावा पायौ। इव वृषणयोः। सिन्धुं शिश्ने। दुः कट्योः। इता ऊर्वोः। अति जङ्घयोः। अग्निः पादयोः। अग्नी रक्षतु। इति पदन्यासे सृष्टिः।

ततः समग्रमन्त्रेण व्यापकं विन्यस्य, – जातवेदसे पादयोः। सुनवाम अंगुलीषु। सोमं जानुनोः। अरातीयतो ऊर्वोः नि गुह्ये। दहाति कट्योः। वेदः नाभौ। स हृदये। नः पृष्ठे। पर्षत् बाह्वोः। अति कण्ठे। दुर्गाणि वक्त्रे। विश्वा चक्षुषोः। नावेव नासिकयोः। सिन्धु कर्णयोः। दुरिता ललाटे। अति मुकुटे। अग्निः मूर्ध्नि॥

पादयोः विष्णवे नमः। हृदि ब्रह्मणे नमः। मूर्ध्नि परमात्मने नमः। शिखायां सप्तऋषिभ्यो नमः। नासिकायां सप्तवायुभ्यो नमः। चक्षुषोः शशिभास्कराभ्यां नमः। श्रोत्रयोः अश्विनीयदेवाभ्यां नमः। जिह्वायां सरस्वत्यै नमः। वाचि अग्नये नमः। दन्तेषु मरुद्भ्यो नमः। कण्ठे देवेभ्यो नमः। हृदि वरुणाय नमः। उदरे हव्यवाहनाय नमः। कुक्षौ पृथिव्यै नमः। कट्यां नवग्रहेभ्यो नमः। नाभौ मेरवे नमः। अस्त्रे जातवेदसे नमः। शिखायां आज्यस्थाल्यै नमः। शिरसि आज्याय नमः। नेत्रयोः ज्योतिषे नमः। कवचे बर्हिषे नमः।

उद्यन्त शक्तिः ज्वलन्तः प्रहरणं बद्धगोधांगुलित्राणं,
यस्याः सिंहो रथे युक्तो व्याघ्रा यस्यानुगामिनः।
तामिमां रुद्रसंयुक्तां दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

आयातु दुर्गा दुर्गरूपा अभयं मे ददातु तां दुर्गां कुमारीमृषिभिश्च पूजितां शरणमहं प्रपद्ये।

ॐ दुर्गायै नमः, ॐ याम्यै०, ॐ रौद्रयै०, ॐ आदित्यायै०, ॐ कात्यायन्यै०, ॐ गौर्य्यै०, ॐ धात्र्यै०, ॐ शक्त्यै०, ॐ चामुण्डायै०, ॐ सरस्वत्यै०, (इन नवशक्तियों का आवाहन भी करें।)

शङ्खं खेटं तथा बाणान् वामे चाभयदायिनीम्। धनुश्चक्रं तथा पात्रं दक्षिणे सुवरप्रदम्॥
चक्र खड्गशरञ्छूलं लोहमुष्टिं च तोमरम्। वलयं भिण्डिपालं च दधानां चोत्तरे भुजे॥
परिघं चांकुशं चैव धारयन्तीं त्रिलोचनाम्। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि निश्चितं हि द्विजोत्तम॥
ऋग्वेदसंस्तुता देवी कश्यपेन प्रकीर्तिता। जातवेदःप्रभां देवी भुक्तिमुक्ति विधायिनीम्॥

मेरूपर्वत के शिखर पर बैठी हुई देवी का ध्यान करें

मेरूपर्वतकुंभां व्याघ्रानुसारिणीं सिंहचतुर्मुखवाहिनीमष्टादशभुजां,
शुक्लवस्त्रां शुक्लवासिनीं सर्वाभरणभूषितां जातवेदसे देवीं ध्यात्वा।

मनसोपचार पूजन कर षडङ्ग रक्षा करे। यथा-

षडङ्गन्यास – ॐ हरहरिणि मालनि शूलिनि दुष्टग्रहनिवारिणिभ्यां स्वाहा हृदयाय नमः। अग्नितेजोज्वालामालिनि शिरसे स्वाहा। चन्द्रतेजोज्वालामालिनि शिखायै वषट्। ब्रह्मतेजोज्वालामालिनि कवचाय हुं। आदित्यतेजोज्वालामालिनि नेत्रत्रयाय वौषट्। विष्णुतेजोज्वालामलिनि सर्वतेजोज्वालामालिनि ज्वलज्वालामालिनि शूलिनि दुष्टग्रहनिवारिणि देवि दह जातवेदससम्भूते स्वाहा अस्त्रायफट्। इति षडङ्गन्यास कृत्वा,

"ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमं सुरासुरैरर्द्विज गभः पिशाचोरगराक्षसैः रात्रौ भये समुत्पन्ने, अरातीयतो निदहाति वेदः राजद्वारे भये भोरे संग्रामे शत्रुसङ्कटे सर्वं रक्षति दुरितं, स नः. पर्षदति दुर्गाणि विश्वा महद्भये समुत्पन्ने स्मरन्ति च पठन्ति सर्वं तरति दुर्गा, नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः" इति पठन् स्वात्मानं स्वप्रकाशचिदानन्दमग्रं देवतामयं ध्यात्वा

मूलषडङ्गं कुर्यात्।

ॐ जातवेदसे सुनवाम हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनी बद्धगोधांगुलित्राणिनि हृदयाय नमः। सोममरातीयतो हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि शिरसे स्वाहा। निदहाति वेदः हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि शिखायै वषट्। स नः पर्षदति हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि कवचाय हुं। दुर्गाणि विश्वा नावेव हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि नेत्रत्रयाय वौषट्। सिन्धुं दुरितात्यग्निः हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि अस्त्रायफट्।

इति षडङ्गं कृत्वा मन्त्रेण सर्वाङ्गं व्याप्य, स्ववामभागे कलशस्थापनं कृत्वा स्वदक्षिणभागे शङ्खं संस्थाप्य मध्येऽर्घ्यादिपञ्चपात्राणि संस्थाप्य, देवीसूक्तेन देवीमभिषिच्य पीठपूजां कुर्यात्।

ॐ मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः से पीठपूजा करें। इसके बाद जयादि पीठ शक्तियों की यंत्राधार पीठ पर पूजा करे।

केसरेषु पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च पीठशक्तीः प्रपूजयेत्। ह्रीं जं जयायै०, ह्रीं विं विजयायै०, ह्रीं भं भद्रायै०, ह्रीं भं भद्रकाल्यै०, ह्रीं सुं सुमुख्यै०, ह्रीं दुं दुर्मुख्यै०, ह्रीं व्यां व्याघ्रमुख्यै०, ह्रीं सिं सिंहमुख्यै०, मध्ये ह्रीं दुं दुर्गायै नमः, इति सम्पूज्य 'ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः इति पीठं सम्पूज्य, तदुपरि मूलमन्त्रनुच्चरन् देवीयन्त्र संस्थाप्यावाहनं कुर्यात्'।

यस्याः सिंहो रथे युक्तो व्याघ्रा यस्यानुगामनः। तामिमां रुद्रसंयुक्तां दुर्गामाजाहयाम्यहम्॥

इत्यावाह्य आवाहिता भव, आस्थापिता भव, सन्निरोधिता भव, सम्मुखो कृता भव, अवगुण्ठिता भव, सकलीकृता भव, परमीकृता भव, अमृतीकृता भव, इत्युच्चरन् तत्तन्मुद्राः प्रदर्शयेत्।

॥ ध्यानम् ॥

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिःकरवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणा - मनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां स्मरेत्॥

त्रिकोण मध्य में देवी का आवाहन करें। मूलमन्त्रेणार्ध्यपाद्याचमनीयम मधुपर्कादिषोडशोपचारपूजां कृत्वा (आवरण पूजन करे) यथा -
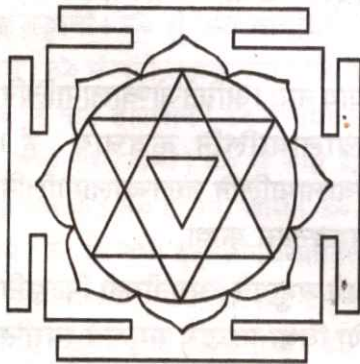
॥ श्री जातवेद दुर्गा यन्त्रम् ॥

प्रथमावरण (षट्कोणे) :- आग्नेयकोणे- **जातवेदसे सुनवाम हृदयाय नमः।** ईशानकोणे **सोममरातीयतः शिरसे स्वाहा।** नैर्ऋत्ये **निदहाति वेदः शिखायै वषट्।** वायव्ये **स नः पर्षदति कवचाय हुं।** मध्ये **दुर्गाणि विश्वानावेव नेत्रत्रयाय वौषट्।** पूर्वादिचतुर्दिक्षु **सिन्धुं दुरितात्यग्निः अस्त्राय फट्।** इति षडङ्गपूजाप्रथमावरणम्॥

द्वितीयावरणम् :- ततोऽष्टदलेषु पूर्वादिप्रादक्षिण्येन- **जातवेदसे नमः, सप्तजिह्वाय नमः, हव्यवाहनाय०, अश्वोदरजाय० वैश्वानराय०, कौमारतेजसे०, विश्वमुखाय०, देवमुखाय नमः।** इति द्वितीयावरणम्॥

तृतीयावरणम् :- ततः अष्टदले पत्राग्रेषु पूर्वादिचतुर्दिक्षु- **ॐ पृथिव्यात्मने०, सलिलात्मने०, अग्न्यात्मने०, वाय्वात्मने०। आग्नेयादि कोणेषु निवृत्त्यै०, प्रतिष्ठायै०, विद्यायै०, शान्त्यै नमः।**

चतुर्थावरणम् :- ततः पूर्वादिकोणेषु (दिग्विदिक्षु)- **प्रादक्षिण्येन वचनात्मिकाभिमुखीभ्योऽधोमुखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः०, ॐ जां जागरायै०, ॐ तं तपनायै०, ॐ वें वेदगर्भायै०, ॐ दं दहनरूपिण्यै०, ॐ सें सेन्दुखण्डायै०। शब्दस्पर्शरूपरस गन्धात्मिकाभिमुखीभ्यस्तिर्यङ्मुखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः, ॐ सुं सुम्भहन्त्र्यै०, ॐ नं नभश्चारिण्यै०, ॐ वां वागीश्वर्यै०, ॐ मं मन्दवाहायै०, ॐ सों सोमरूपायै०। षाट्कोशिकमयात्मिकाभिमुखीभ्यस्तिर्यङ्मुखीभ्यः क्लीवदेवताभ्यो नमः। ॐ मं मनोजवायै०, ॐ मं मरुद्वेगायै०, ॐ रां रात्र्यै०, ॐ तीं तीव्रकोपायै०, ॐ यं यशोवत्यै०, ॐ तों तोयात्मिकायै०, षडूर्म्यात्मिकाभिमुखीभ्यः ऊर्ध्वमुखीभ्यः क्लीवदेवताभ्यो नमः। ॐ निं नित्यायै०, ॐ दं दयावत्यै०, ॐ हां हारिण्यै०, ॐ तिं तिरस्क्रियायै०, ॐ वें वेदमात्रे०, ॐ दं दमनप्रियायै०। सप्तधात्वात्मिकाभिमुखीभ्य उभयमुखीभ्यः क्लीवदेवताभ्यो नमः। ॐ सं समाराध्यायै०, ॐ नं नन्दिन्यै०, ॐ पं पराख्यै०, ॐ रं रिपुमर्दिन्यै०, ॐ षं षष्ठ्यै०, ॐ दं दण्डिन्यै०, ॐ तिं तिग्मायै०।**

पञ्चभूतात्मिकाभिमुखीभ्यस्तियङ्मुखीभ्यः क्लीवदेवताभ्यो नमः। ॐ दुं दुर्गायै०, ॐ गां गायत्र्यै०, ॐ णिं निरवद्यायै०, ॐ विं विशालाक्ष्यै०, ॐ श्वां श्वासोद्वाहायै०। कर्मेन्द्रियात्मिकाभिमुखीभ्य ऊर्ध्वमुखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः। ॐ नां नान्दिन्यै०, ॐ वें वेदनायै०, ॐ वं वह्निगर्भायै०, ॐ सिं सिंहवाहाह्वयायै०, ॐ धुं धुर्यायै०। ज्ञानेन्द्रियात्मिकाभिमुखीभ्य ऊर्ध्वमुखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः। ॐ दुं दुर्विषयायै०, ॐ रिं रिरंसायै०, ॐ ता तापहारिण्यै०, ॐ त्यं त्यक्तदोषायै०, ॐ ग्निः निःसपत्नायै०। (एताः प्रज्वलत्केशवदनाः भीमदंष्ट्रा भयापहा ध्येयाः)। इति चतुर्थावरणम्।

पञ्चमावरणम् :- ततस्तद्बहिः पूर्वादिदिक्षु (भूपुरे) **लं इन्द्राय०, रं अग्नये०, मं (टं) यमाय०, क्षं निर्ऋतये०, वं वरुणाय०, यं वायवे०, सं कुबेराय०, हौं ईशानाय०।** इति पञ्चमावरणम्।

षष्ठावरणम् :- ततस्तद्बहिः वं वज्रायुधाय०, शं शक्त्यायुधाय०, दं दण्डायुधाय०, खं खड्गायुधाय०, पां पाशायुधाय०, क्रों अंकुशायुधाय०, गं गदायुधाय०, शूं शूलायुधाय०। इति षष्ठावरणम्।

एवं सम्पूज्य नैवेद्यादिकं निवेद्य आरार्त्रिकापुष्पाञ्जल्यन्तं समर्प्य, मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा यथाशक्ति जपित्वा "**गुह्यति०**" इति मन्त्रेण जपफलं समर्प्य पूर्वोक्तमन्त्रैदिक्पालेभ्यो बलिं हरेत्। एवं गायत्रीजपद्विगुणसहितचतुश्चत्वारिंशत्सहस्राणि जपित्वा तिलसर्षपचित्रमूलसमिद्भिरुडम्बरप्लक्षाश्वत्थ समिद्भिराज्याक्तहविष्यान्नेन दशांशतो होतव्यं, कृतपुरश्चरणो भवति। तत आग्नेयास्त्राधिकारी भवति तदुक्तं शारदायाम्॥

॥ जातवेद दुर्गास्य अन्य मंत्राः ॥

१. जातवेदसुंदरी - त्रिपुरसुंदरी मंत्र से पदविभाग करने पर श्री विद्या उपासकों को श्रेष्ठ लाभ होता हैं।

मंत्रः- जातवेदसे सुनवाम सोमं हसकलह्रीं अरातीयतो निदहाति वेदः हसकहल ह्रीं स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सकल ह्रीं सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ इसका ध्यान पूर्व मंत्रवत् हैं। ऋषि विनियोग भी पूर्ववत् हैं।

२. तामाग्निवर्णा मंत्र विधानम्:- ऋष्यादि, विनियोग, जातवेद मंत्र के अनुसार ही हैं। **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः** से षडङ्गन्यास करें।

मंत्रोयथा:- **तामाग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं हसकल ह्रीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां हसकहल ह्रीं दुर्गा देवीं शरणमहंप्रपद्ये सकल ह्रीं सुतरसि तरसे नमः।** उपरोक्त व अन्य मंत्र को त्रिपुरसुंदरि मंत्र के बिना पुटित भी कर सकते हैं (अर्थात् हसकल ह्रीं·हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं के बिना भी कर सकते हैं)

३. अग्नेत्वां पारया मंत्र प्रयोगः- (मंत्रः) **अग्ने त्वं पारयो नव्यो अस्मान् हसकल ह्रीं स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा हसकहल ह्रीं पूश्च पृथिवी बहुला न उर्वी सकल ह्रीं भवा तोकाय तनयाय शंयोः।** न्यास ध्यान पूर्व मंत्रोक्त।

४. विश्वानि नो दुर्गहा मंत्र प्रयोगः - (मंत्रः) **विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः हसकल ह्रीं सिन्धुं न नावा दुरिताति पर्षि हसकहल ह्रीं अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानो सकल ह्रीं अस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।**

५. पृतनाजित मंत्र प्रयोगः - (मंत्रः) **पृतनाजितं सहमामुग्रं हसकल ह्रीं अग्निं हुवेम परमात्सधस्तात् हसकहल ह्रीं स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा सकल ह्रीं क्षामद्देवी दुरितात्यग्निः।** सभी मंत्रों के न्यास ध्यान पूर्ववत्।

॥ आग्नेयास्त्र मंत्र प्रयोग विधिः ॥

शत्रुसंहार हेतु जातवेद दुर्गा का विलोम मंत्र प्रयोग में लाया जाता हैं।

मंत्र:- **ग्निस्यतारिदु धुंषि ववेना श्वाविणिर्गादुतिदषरप नः स दः वे तिहादनि तोयतीराममसो मवानसु सेदवेतजा॥**

विनियोग:- **अस्य श्री आग्नेयास्त्र मंत्रस्य मरीचिपुत्रकश्यप ऋषिः त्रिष्टुप् छंदः उग्रकृत्यादेवता शत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।**

न्यास विलोम क्रम से करें यथा - **ग्निस्यतारिदु धुंषि अस्त्राय फट्। ववेना श्वाषिणि र्गादु नेत्रत्रयाय वौषट्। तिदषरप नः स कवचाय हुं। दः वे तिहादनि शिखायै वषट्। तोयतीराममसो शिरसे स्वाहा। मवानसु सेदवेतजा हृदयाय नमः।** वर्णन्यास जो जातवेद मंत्र के दिये हैं उनको विलोम क्रम से **(ॐ ग्निः नमो मूर्ध्नि से)** करे।

आवरण पूजा पूर्ववत् जातवेद मंत्र की विलोम क्रम से करे अर्थात् भुपूर से मध्य बिन्दु तक करे। उग्रनक्षत्रों में अपनीराशि के अनुकूल तथा शत्रु की प्रतिकूल राशि में चन्द्रमा हो तब प्रयोग प्रारंभ करें। नंदा रिक्ता तिथि तथा भौमवार शनिवार को देवक्रम पूरा कर विसर्जन करें। पश्चिमाभिमुख होकर सर्वकार्य करे।

भद्रास्वाअहरणं कुर्याज्ञयास्वत्यन्तमुत्तमम्। उपक्रमो भोमवारे शनिवारे विसर्जनम्। प्रतिसंहरणं वारे गुरोः शुक्रस्या व भवेत्। भानुना मोक्ष संहारौं कुर्यात् पक्षद्वये सुधीः। कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्ण चतुर्दशीम्। धत्तूर विषवृक्षाक्ष भूरुहोत्थान् समिद्वरान्॥ राजीतैलेन् संयुक्तान् पृथक्सप्तसहस्रकम्। जुहुयात्संयतो भूत्वा रिपुर्यमपुरं व्रजेत्।

सप्तरात्रि तक सरसों, मरीचि आर्द्रवस्त्र, विष्टि से होम करे तो शत्रु ज्वर से पीड़ित होवे। तालपत्र पर शत्रु का नाम लिखे उसके चारों ओर अग्निमंत्र से वेष्टन कर कुण्डमध्य में नीचे रखे तो शत्रु को ज्वरदाह होवे। शत्रु के नाम से पुतली बनाकर अधोमुख कुण्ड में गाड़े पश्चात् विषवृक्षों की समिध तथा सरसों मरीचि लवणादि से होम करे तो शत्रु का नाश होंवे। पुतली का तापन करने से भी शत्रुपीड़ित होवे। कार्पास बीज व निम्बपत्रों के होम से विद्वेषण होवे। पुत्तल को निकाल पानी व दूध से धोवे तो शांति होंवे। कृत्या व रोग के शमन हेतु ब्रीहि, क्षीर, मधुत्रय व दुग्धवाले वृक्षों की समिध से होम करे। मेष सिंह व धनु के सूर्य में विशिखा, कृत्तिका, मूल,हस्त,मघा, श्रवण रोहिणी वर शनिवार में प्रयोग हेतु घटस्थापन करे। रक्षा हेतु पंचगव्य, दुग्धावृक्षों की समिधा, दुग्धान्न तिलादि से होम करे।

॥ ऋग्वेदोक्त अग्निसूक्तम् ॥

अग्निः सप्तिं वाजंभरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। अग्नी रोदसी वि चरत्समञ्जन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरन्धिम् ॥१॥
अग्नेरप्नसः समिदस्तु भद्राग्निर्महि रोदसी आ विवेश। अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणि दयते परूणि ॥२॥
अग्निर्ह त्यं जरतः कर्णमावाग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम्। अग्निरत्रिं धर्म उरुष्यदन्तरग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत्सम् ॥३॥
अग्निर्दा द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यः सहस्रा सनोति। अग्निर्दिवि हव्यमा ततानाग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा ॥४॥
अग्निमुक्थैर्ऋषयो विह्वयन्तेऽग्निंनरोयामनि बाधितासः ।अग्निंवयो अन्तरिक्षे पतन्तोऽग्निः सहस्रापरियाति गोनाम्॥५॥
अग्निं विश ईळते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः। अग्निर्गान्धर्वीं पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता॥६॥
अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुरग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम्। अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठाग्ने महि द्रविणमा यजस्व ॥७॥

॥ इति जातवेद दुर्गा प्रयोगः॥

॥ ४. अथ शांतिदुर्गा प्रयोगः॥

इस विद्या का मंत्र प्रयोग सम्प्रदाय भेद से अलग अलग हो सकता हैं। सामान्य विधि में ''**नमो देव्यै**'' मंत्र का जप करे।

मंत्रः- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

ध्यानम्:-

हृत् पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातः सूर्य समप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरा सौम्यां वरदाभय हस्तकाम्
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे॥

अन्य मंत्रः- या देवी सर्वभूतेषु शांतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै। नमस्तस्यै। नमस्तस्यै नमो नमः। दुर्गा अष्टाक्षरी मंत्र का विधिवत् जप करें।

॥ ५. अथ शबरीदेवी मंत्र प्रयोगः॥

शबरी देवी छिन्नमस्ता देवी का ही एक स्वरूप हैं। योगियों के लिये कपाल भेदन क्रिया के लिये यह विद्या सिद्धिप्रद हैं। शिमला से नाहन और दहाद् जाने पर आगे रेणु का तीर्थ हैं। यहां परशुराम जी की माता रेणुका शबरी का मंदिर हैं। तंत्रों में रेणुका शबरी को एकवीरा के नाम से भी संबोधन किया हैं।

१. पञ्चाक्षर मंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।

२. पंचविंशत्यक्षर मंत्र (रेणुका तंत्रे) :- **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं त्रैलोक्य मोहिनि मेऽभीष्ट मनोरथं शीघ्रं कुरु कुरु स्वाहा।**

विनियोगः- **अस्य श्री रेणुका शबरी मंत्रस्य कौशिक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, एकवीरा शबरी देवता, हूं बीजं, स्वाहा शक्तिं, क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

॥ ध्यानम् ॥

मध्येबद्ध मयूरपिच्छ निवहां श्यामां प्रवालाधराम्
गुञ्जाहारधरां धनुः शर करां नीलाम्बराडम्बराम् ।
शृंगीवादन तत्परां सुनयनां मूर्द्धालकैर्बबराम्
भिल्लीवेशधरीं नमामि शबरीं त्वामेकवीरां पराम् ।

पुरश्चरण में मंगलवार या भौमाष्टमी के दिन एक हजार जप कर तिल घृत से दशांश होम करे।

॥ अथ पंचाक्षरी मंत्र विद्यानम् ॥

मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा-**ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं**। इति पंचाक्षरो मंत्रः।

विनियोग :- **अस्य रेणुकाशबरीमंत्रस्य भैरव ऋषिः। पंक्तिच्छंदः। रेणुकाशबरी देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि ॥१॥ पंक्तिच्छंदसे नमो मुखे ॥२॥ रेणुकाशबरीदेवतायै नमो हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥४॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- **ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ श्रीं नमस्तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ह्रीं नमो मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ क्रों नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ऐं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥** इति करन्यासः॥

हृदयादिषडंगन्यास :- **ॐ नमो हृदयाय नमः ॥१॥ श्रीं नमः शिरसे स्वाहा ॥२॥ ह्रीं नमः शिखायै वषट् ॥३॥ क्रों नमः कवचाय हुं ॥४॥ ऐं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं अस्त्राय फट् ॥६॥** इति हृदयादिषडंगन्यासः॥

ॐ हेमाद्रिसानावुद्याने नानाद्रुममनोहरे। रत्नमंडपमध्यस्थवेदिकायां स्थितां स्मरेत्।

इत्युद्यानं स्मृत्वा तत्र ध्यायेत्।

ॐ गुंजाफला कल्पित हाररम्यां श्रुत्योः शिखंडं शिखिनो वहंतीम् ।
कोदंडबाणौ दधतीं कराभ्यां कटिस्थवल्कां शबरीं स्मरामि ॥१॥

इति ध्यायेत्। ततः सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य '**ॐ आं आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः**' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तथा च पूर्वादिक्रमेण **ॐ जयायै नमः ॥१॥ ॐ विजयायै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥४॥ ॐ नित्यायै नमः ॥५॥ ॐ विलासिन्यै नमः ॥६॥ ॐ दोग्ध्रयै नमः ॥७॥ ॐ अघोरायै नमः ॥८॥** मध्ये **ॐ मंगलायै नमः ॥९॥** इति पूजयेत्।

षट्कोण, अष्टदल, भूपुर युक्त यंत्र बनायें।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं व ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य '**ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ रेणुकाशबरि एह्येहि नमः**' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां

कुर्य्यात्।

तद्यथा-पुष्पांजलिमादाय -

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते।

प्रथमावरणम् :- इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च- **ॐ हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१ ॥ इति सर्वत्र। श्रीं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० ॥२ ॥ ह्रीं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ॥३ ॥ क्रों कवचाय हुम्। कवचश्रीपा० ॥४ ॥ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥५ ॥ ॐ श्रींह्रींक्रोंऐं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ॥६ ॥** इति षडंगानि पूजयेत्।

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य- **ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१ ॥** इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्। अर्घ पात्र से जल छोड़े। इति प्रथमावरणम् ॥१ ॥

द्वितीयावरणम् :- ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण **ॐ हुँकार्य्यै नमः। हुँकारीश्रीपा० ॥१ ॥ ॐ खेचर्य्यै नमः। खेचरीश्रीपा० ॥२ ॥ ॐ चंडास्यायै नमः। चंडास्याश्रीपा ॥३ ॥ ॐ छेदिन्यै नमः। छेदिनीश्रीपा० ॥४ ॥ ॐ क्षेपणायै नमः। क्षेपणाश्रीपा० ॥५ ॥ ॐ स्त्रियै नमः। स्त्रीश्रीपा० ॥६ ॥ ॐ हुंकार्य्यै नमः। हुंकारीश्रीपा० ॥७ ॥ ॐ क्षेमकार्य्यै नमः। क्षेमकारीश्रीपा० ॥८ ॥ (इत्यष्टौ शक्तीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्)** ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२ ॥

तृतीयावरणम् - ततो भूपुरे पूर्वादि क्रमेण **इन्द्रादिदशदिक्पालान्** वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरणं पंचलक्षजपः। बिल्वकाष्ठदीपाग्नौ बिल्वफलैर्दशांशतो होमः। ततद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च ध्यात्वैवं प्रजपेल्लक्षपंचकं तद्दशांशतः। फलैर्बैल्वैः प्रजुहुयात्तत्काष्ठैरेधितेऽनले ॥१ ॥ एवं सिद्धं मनुं सम्यक्कृत्वा कर्मणि योजयेत्। मल्लीपुष्पैर्जना वश्या इक्षुदंडैर्धनाप्तयः ॥२ ॥ पंचगव्यैर्धेनवः स्युरशोककसुमैः सुताः। इन्दीवरैः कृते होमे नृपपत्नी वशंवदा ॥३ ॥ अन्नासिरन्नैः सकलं मधूकैर्वांछितं भवेत्। प्रोदिता शाबरी वि[illegible]लौ त्वरितसिद्धिदा ॥४ ॥

॥ इति रेणुकाशाबरीपंचाक्षरमंत्र प्रयोगः ॥

॥ ६. अथ ज्वालामुखी (ज्वालामालिनी) प्रयोगः ॥

इस विद्या को श्रीविद्या की १५ नित्याओं में माना हैं त्रिपुरार्णव, मंत्रमहोदधि में ज्वालामालिनी का श्री विद्या क्रम में मंत्र लिखा हैं। इस विद्या के द्वारा प्रेतादिक शत्रुबाधा का निवारण होता हैं। ज्योतिष विद्या त्रिकाल ज्ञान हेतु भी इसका प्रयोग उत्तम हैं। दिव्य दृष्टि हेतु इस विद्या का एक स्त्रोत्र भी प्रयोग हेतु आगे उल्लिखित हैं कृपया अवलोकन करे।

सप्ताक्षर मंत्र - (प्राणतोषणी तंत्रे) **रुद्राङ्गनाग्नि जयाभ्यां रुद्धवा ज्वालामुखीत्यपि अर्थात् ''ह्रीं ज्वालामुखि स्वाहा'' इति मंत्रः।**

चतुर्विंशात्यक्षर मंत्रः- ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी गृध्रगणपरिवृते हुं फट् स्वाहा।

षडङ्गन्यासः- **ॐ नमो हृदयाय नमः। भगवति शिरसे स्वाहा। ज्वालामालिनि शिखायै वषट्। गृध्रगण परिवृते**

कवचाय हुं। हुं फट् नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्। इसी तरह कराङ्ग न्यास करे। बिना भोजन किये तेईस दिन तक आठ हजार जप करे तो विजय प्राप्त होती हैं। **दीपतैलाक्त पादोऽर्द्धरात्रे गुरुदिनादितः। जपेदष्ट सहस्रं तु त्रयोविंशति वासरान्। प्रत्यहं सा रौप्य षट्कं ददातीति न संशयः।**

अष्टचत्वादिंशरक्षर मंत्रः- **ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूतसंहार कारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्।** यह मंत्र महोदधि में श्री विद्या की नित्याओं में दिया हैं।

विद्यार्णव तन्त्र में ''ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र र'' लिखा है।

एकाशीत्यक्षर मंत्रः- (मंत्र महार्णवे) - प्राकृत ग्रंथ में इसे १८३ अक्षरों का लिखा हैं परन्तु यह ८१ अक्षरों का मंत्र हैं। यथा **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरि ज्वालामुखि जृम्भिणि स्तंभिनि मोहिनि वशीकरिणि परधनमोहिनि सर्वारिष्ट निवारिणि शत्रुगणसंहारिणि सुबुद्धिदायिनि ॐ आं क्रों ह्रीं त्राहि त्राहि क्षोभय क्षोभय अमुकं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।** दीपावलि की रात्रि से नित्य ११००० जप २९ दिन तक करे। चमेली का पुष्प अर्पित करे और बरफी हिंगुल आदि का नैवेद्य अर्पण करे तो अभीष्ट सिद्धि होवे।

इसका पूजा विधान ज्वालामालिनी एवं वह्निवासिनी दोनों रूप में हैं।

॥ ज्वाला मालिनी यंत्रार्चन ॥

॥ ध्यानम् ॥

ज्वल ज्वलन सङ्काशां माणिक्य मुकुटो ज्ज्वलाम्। षड्वक्त्रां द्वादशभुजां सर्वाभरण भूषिताम्॥ पाशांकुशौ खेटखड्गौ चापवाणौ गदाधरौ। शूलवह्नी वराभीती दधानां करपङ्कजैः॥ स्वसमानाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिता। चारुस्मितलसद्वक्त्रसरोजां त्रीक्षणान्विताम्॥

त्रिकोण, षटकोण, अष्टकोण, अष्टदल एवं भूपुर युक्त यंत्र बनावें। १. मध्य में देवी का आवाहन करें। २. गुरुमण्डल का पूजन करें। ३. षडङ्गन्यास मन्त्रों से देवी का पूजन करें। ४. त्रिकोण, षट्कोण के अभ्यन्तर देवी के दक्षिण और वाम भाग में छः-छः अस्त्रों का पूजन करें। यथा -

१. अभीत्यै नमः। २. वह्नये नमः। ३. शंखाय नमः। ४. वाणेभ्यो नमः। ५. खड्गाय नमः। ६. अंकुशाय नमः। ७. पाशाय नमः। ८. खेटकाय नमः। ९. चापाय नमः। १०. गदायै नमः। ११. शूलाय नमः। १२. वराय नमः।

५. त्रिकोणे - **इच्छा शक्ति पा.। ज्ञानशक्ति पा.। क्रियाशक्ति पा.।**

६. षट्कोणे - वामाग्रे - **डाकिनी पा.।** दक्षिणाग्रकोणे - **राकिनी पा.।** पृष्ठकोणे - **लाकिनी पा.।** पृष्ठवामकोणे - **काकिनी पा.।** पृष्ठदक्षे - **शाकिनी पा.।** अग्रकोणे - **हाकिनी पा.।**

७. अष्टकोणेषु - **घस्मरा पा.। विश्वकवला पा.। लीलाक्षी पा.। लोलजिह्विका पा.। सर्वभक्षा पा.। सहस्राक्षी पा.। निःसङ्गा पा.। संहृतिप्रिया पा.।**

८. अष्टदलेषु - **अचिन्त्या पा.। अप्रमेया पा.। पूर्णरूपा पा.। दुरासदा पा.। सर्वा पा.। संसिद्धिरूपा पा.। पावना पा.। एकरूपिणी पा.।**

९. भूपुर के चार द्वारों में प्रत्येक द्वार में दो-दो करके **ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं** का पूजन करें।

१०. भूपुर में **इन्द्रादि लोकपालों** व उनके आयुधों का पूजन करें।

॥ वह्निवासिनी यंत्रार्चन॥

नवार्ण मंत्रः- (त्रिपुरार्णवे) **ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः।**

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, गायत्री छन्दः, वह्निवासिनी देवता, ॐ बीजं, नमः शक्त्य वह्निवासिनी कीलकं, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः** से षडङ्गन्यास करे।

वर्णन्यास:- **ॐ नमः दक्षनेत्रे। ह्रीं नमः वामनेत्रे। वं नमः दक्षकर्णे। ह्निं नम वामकर्णे। वां नमः दक्षनासापुटे। सिं नमः वामनासे। न्यैं नमः मुखे। नं नमः लिङ्गे। मः नमः गुदे।**

॥ आवरण पूजा ॥

दुर्गायंत्र की तरह नवत्रिकोण बनाये। उसके बाहर द्वादशकमल बनाये, बाहर दो वृत्त बनाकर भूपूर बनाये।

॥ ध्यानम् ॥

तप्तकाञ्चनसंकाशां नवयौवनसुन्दरीम्। चारुस्मेरमुखाम्भोजां विलसन्नयनत्रयाम् ॥१॥
अष्टाभिर्बाहुभिर्युक्तां माणिक्याभरणोज्ज्वलाम्। पद्मरागकिरीटां शुसंभेदारुणिताम्बराम् ॥२॥
पीतकौशेयवसनां रक्तमञ्जीरमेखलाम्। रत्नमौक्तिकसंभिन्नस्तबका ऽऽभरणोज्ज्वलाम् ॥३॥
रक्ताब्जकम्बुपुण्ड्रेक्षुचापपूर्णेन्दुमण्डलाम्। दधानां बाहुभिर्वामैः कह्लारं हेमशृङ्गकम् ॥४॥
पुष्पेषु मातुलिङ्गं च दधानां दक्षिणैः करैः। स्वसमानाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिताम् ॥५॥

१. भुवनेश्वरी की जयादि पीठशक्तियों का अर्चन करें।

॥ श्री वह्निवासिनी यन्त्रम् ॥

२. नवकोणों में मध्य में **वह्निवासिनी** का पूजन तथा अन्य अष्टकोणों में देवियों का पूजन करे। प्रारंभ में **ॐ ह्रीं** व अंत में **नमः** का प्रयोग कर शक्तियों का पूजन करें। **ॐ ह्रीं ज्वालिनी श्री पादुकां पूजयामि नमः। विस्फुलिङ्गिनी। मंगला। सुमनोहरा। कनका। कितवा। विश्वा। विविधा।**

३. द्वादशदल में राशि शक्ति का पादुका पूजन करे- **ॐ ह्रीं मेषा श्री पादुकां पूजयामि नमः। वृषा। मिथुना। कर्कटा। सिंहा। कन्या। तुला। कीटा। चापा। मकरा। कुंभा। मीना।**

४. देवी के अग्र, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान में पादुका पूजन करें। **ॐ ह्रीं घस्मरा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। सर्वभक्षा। विश्वा। विविधोद्भवा। चित्ररूपा।** पूर्व से नैऋत्य तक - **ॐ ह्रीं निः सपन्ना। पादुकां पूजयामि नमः। निरातङ्का। पावनी। अचिन्त्य वैभवा। रक्ता।**
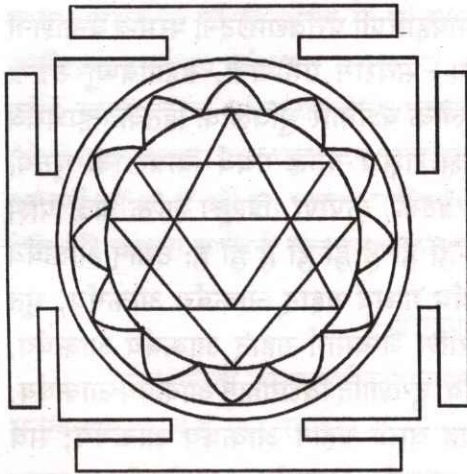
इस तरह दश दिशाओं में पूजन करें।

५. दशदिक्पालों का आयुध सहित पूजन करें।

॥ दिव्यदृष्टीप्रद एवं कृत्यानाशक ज्वालामालिनि स्तोत्रम् ॥

इस मंत्र से त्रिकाल ज्ञान व दिव्यदृष्टि प्राप्त होती हैं। इस मंत्र की २१ माला फेरना चाहिये जो आसान नहीं हैं अत: १०८ पाठ नित्य करें। सूती रेशमी आसन पर जप करें। पूर्णिमा से मंत्र प्रयोग करे। स्तोत्र में प्रारंभ में **पीठसिंहासन देवता** व उसकी शासिका **यवनी देवी** का आवाहन हैं पश्चात् मूलस्तोत्र पाठ प्रारम्भ होता हैं। **इस मंत्र का प्रभाव प्रेतादिक बाधा के निवारण में भी किया जा सकता हैं।** यदि कोई कृत्या प्रयोग आप पर किया हैं अथवा पुत्तल प्रयोग किया है तो इस मंत्र के प्रभाव से किसी वस्तु के जलने की गंध जैसे आपके गले में से निकलेगी ऐसा मेरा अनुभव है। अत: प्रयोग विघ्ननाश हेतु भी उत्तम हैं। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक ३१ दिन प्रयोग करके ११ बालकों एवं १५ कन्याओं को भोजन कराये। जप रुद्राक्ष माला पर करे गुग्गल धूप देवे।

प्राकृत ग्रन्थों के अनुसार पाठान्तर भेद सहित यह प्रयोग 'देवीखण्ड उत्तरार्ध' में दिया गया है।

ॐ नमो भगवते ब्रह्मानन्द पदः गोलोकादि असंख्या ब्रह्माण्ड भुवन नाथाय शशांक शंख गोक्षीर कर्पूर धवल गात्राय नीलांभोधि जलद पटलाधिव्यक्तस्वरूपाय व्याधिकर्म निर्मूलोच्छेदन कराय, जाति जरायमरण-विनाशनाय, संसारकान्तारोन्मूलनाय, अचिन्त्य बल पराक्रमाय, अति प्रतिमाह- चक्राय त्रैलोक्याधीश्वराय, शब्दैके त्रैलोक्याधिनखिल भुवन- कारकाय, सर्वसत्य हिताय, निज भक्ताय, अभीष्ट फलप्रदाय, भक्त्याधीनाय सुरासुरेन्द्रादि मुकुटकोटि- धृष्टवाद- पीठाय, अनन्त- युगनाथाय, देवाधिदेवाय, धर्मचक्राधीश्वराय, सर्व विद्या परमेश्वराय, कुविद्या विघ्नप्रदाय, निर्विघ्न कारकाय तत्पादपंकजाश्रयानि यवनी देवी शासन देवते। (इति यंत्राधार धर्मचक्र शासन देवता)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिभुवन संक्षोभनी, त्रैलोक्य शिवापहारकारिणीं श्री अद्‌भुत जातवेदा श्री महालक्ष्मी देवी (अमुकस्य) स्थावर जंगम कृत्रिम विषमुख संहारिणीं सर्वाभिचार कर्मापहारिणी परविद्योछेदनी परमन्त्र प्रनाशिनीं अष्टमहानाग कुलोच्चाटनीं कालदंष्ट्र- मृत- कोत्यापिनीं (अमुकस्य) सर्वरोग प्रमोचनी, ब्रह्माविष्णु रुद्रेन्द्र चन्द्रादित्यदिग्रह नक्षत्रोत्पात- मरणभय- पीड़ा- मर्दिनी, त्रैलोक्य विश्वलोक वशंकरि भुविलोक हितकं महाभैरवि भैरव शस्त्रोपधारिणी रौद्रे, रौद्ररूपधारी प्रसिद्धे, सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड गंधर्व किन्नर किं पुरुषो दैत्यारगेन्द्र पूजिते ज्वालापात कराल दिगन्तराले महावृषभ वाहिनी, खेटक, कृपाण, त्रिशूल शक्ति चक्र पाश शरासन शिव विराजमान षोडशार्द्ध भूजे एहि एहि लं ज्वाला मालिनीं ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः देवान् आकर्षय आकर्षय, नागग्रहान् आकर्षय आकर्षय, यक्षग्रहान् आकर्षय आकर्षय गन्धर्व ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, भूत ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, दिव्यतर ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, चतुराशि जैन्यमार्ग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, आकर्षय, अखिल मुंडितग्रहान् आकर्षय जंगम ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, दुर्गेशादि विद्यग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व नग निग्रहवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व सर्वनग निग्रह वासी ग्रहान आकर्षय आकर्षय, सर्व जलाशय वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वस्थल वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वात स्थित ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व श्मशान वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व पवनी वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व धर्म शापादि शाप ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व गिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, श्रापित् ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वदुष्टग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वनाथपंथीग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वभूवासी प्रेत ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, वक्र पिंड ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, कट कट, कंपय कंपय, शीर्षं चालय शीर्षं चालय, गात्रं चालय गात्रं चालय, बाहुं चालय बाहुं चालय, पादं चालय पादं चालय, करपल्लवान चालय कर पल्लवान चालय, सर्वांग चालय सर्वांग चालय, लोलय लोलय, धुन धुन, कंपय कंपय, शीघ्रं भव तारय

तारय, ग्रहि ग्रहि, ग्राह्य ग्राह्य, अक्षय अक्षय, आवेशय आवेशय, ज्वलूं ज्वालामालिनीं ह्रां क्लीं ब्लूं द्रां द्रां ज्वल ज्वल रं रं रं रं रं रं रं रं प्रज्वल प्रज्वल धग धग, धूमाक्षकरणी ज्वल विशोषय विशोषय।

देवग्रहान् दह दह, नाग ग्रहान् दह दह, यक्ष ग्रहान् दह दह, गंधर्व ग्रहान् दह दह, ब्रह्म ग्रहान् दह दह, राक्षस ग्रहान् दह दह, भूत ग्रहान् दह दह, दिव्यन्तर ग्रहान् दह दह, चतसराशि जन्य मार्ग ग्रहान् दह दह, चतुर्विंश जिन ग्रहान् दह दह, सर्व जटिल ग्रहान् दह दह, अखिल मुंडित ग्रहान् दह दह, जंगम ग्रहान् दह दह, सर्व दुर्गेशादि विद्या ग्रहान् दह दह, सर्व नगनिग्रहवासी ग्रहान् दह दह, सर्वस्थलवासी ग्रहान् दह दह, सर्वान्तरिक्ष वासी ग्रहान् दह दह, श्मशानवासी ग्रहान् दह दह, सर्व पवनहार्त ग्रहान् दह दह, सर्व धर्म शापादि गोशापवासी ग्रहान् दह दह, सर्वगिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान दह दह, शापित ग्रहान् दह दह, सर्वनाथ पंथि ग्रहान् दह दह, सर्वभूवासी प्रेत ग्रहान् दह दह, (अमुक गृहे) असद्गति ग्रहान् दह दह, वक्रपिण्ड ग्रहान् दह दह, सर्वदुष्ट ग्रहान् दह दह, शतकोटि योजने दोषदायी ग्रहान् दह दह, सहस्त्र कोटि दोष दह दह, आसमुद्रात् पृथ्वी मध्ये देवभूत पिशाचादि (अमुकस्यो) परिकृत दोषान् तस्य दोषान् दह दह, शत्रुकृतभिचार दोषान् दह दह, धे धे स्फोटय स्फोटय, मारय मारय, धगि धगि, धागय मुखे ज्वालामालिनी ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रों ह्रः सर्व ग्रहांणां ह्रदये दह दह, पच पच, छिंधि छिंधि, भिंदि भिंदि दह दह, हा हा, स्फुट स्फुट, थे थे।

क्षम्लुं क्षां क्षीं क्षुं क्षैं क्षौं क्षः स्तंभयः म्म्लूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रैं भ्रौ भ्रः बाडय बाडय। म्मलूं म्रां म्रीं म्रूं म्रैं म्रौं म्रः नेत्रं स्फोटय स्फोटय दर्शय दर्शय। यूम्लुं यां यीं यूं यैं यौं यः प्रेषय प्रेषय। घ्म्लुं घ्रां घ्रीं घ्रुं घ्रैं घ्रौं घ्रः जठरं भेदय भेदय। ग्म्लूं ग्रां ग्रीं ग्रुं ग्रैं ग्रौं ग्रः मुखं बंधयः बंधयः। रक्ष्युं खां खीं खुं खैं खौं खः ग्रीवां भंजय भंजयः। छप्लुं छां छीं छूं छैं छौं छः अंत्रान् भेदय भेदयः। द्रप्लुं द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः महाविद्युत्यामाणास्त्रहन। व्प्मुं व्रां व्रीं व्रूं व्रैं व्रौं व्रः समुद्रे मंजय मंजय। दम्पुं द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः सर्व डाकिनीं सुन्दरीं मर्दयः मर्दयः सर्व योगिनी स्वज्जैय स्वज्जैय। सर्व शत्रुं ग्रासय ग्रासय खं खं खं खं खं खं खं खादय खादय, सर्व दैत्यान् विध्वंसय विध्वंसय सर्व मृत्युं नाशय नाशय, सर्वोपद्रवान् स्तंभय स्तंभय। जः जः जः जः जः जः जः ज्वरान् दह दह, पच पच, घुमु घुमु, घुरु घुरु, खरु खरु, खड्ग रावण सुविद्ययां घातय घातय, अखिल रुजान् दोषोदयान् कृत कार्यणाभिचारोत्थान (अमुकस्य) देहे स्थितान् अधुना रुज कारकान् चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय भेदय भेदय उरु उरु, छरु छरु, स्फुट स्फुट, घे आं क्रौं क्षीं क्षं क्षैं क्षौं क्षः ज्वाला मालिनी (अमुकस्य) सौख्यं कुरु कुरु निरुजं कुरु कुरु अभिलाषित कामना देहि देहि ज्वाला मालिनीं विज्ञापतये स्वाहा।

॥ शत्रुसंहारक ज्वालामालिनी मंत्रः॥

ॐ नमो भगवती ज्वालामालिनी ज्वालामालिनि देवि सर्वभूत- संहारकारके जातवेदसे ज्वल ज्वल विज्ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं फट् स्वाहा।

ध्यानम्ः- नीलवस्त्र धारण किये हुये मस्तक पर कस्तूरी का लेपन हैं एक हाथ में त्रिशूल दूसरे में करवाल हैं शरीर में चित्ताभस्म धारण किये महानीलाञ्जन के समान देवी अग्नि की प्रज्वलित महाज्वालाओं के मध्य खड़ी हुई हैं। भगवती का स्वरूप कराल है। अतः साधना क्रूर है अतः यमनियम से रात्रि समय सूर्यास्त से सूर्योदय तक ५ महिने तक साधना करनी चाहिये बलिकर्मादि नित्य करना चाहिये।

॥ ७. अथ लवणदुर्गा प्रयोग:॥ (चीटि प्रयोग:)

लवण दुर्गा का प्रयोग वशीकरण हेतु विशेष हैं परन्तु इस विद्या के गुप्त मारण प्रयोग भी गुप्ततर रहे हैं। उच्च कोटि की मंत्र साधना संबंध में सुना हैं कि शत्रु के नाम से लवण का बड़ा कंकर अभिमंत्रित कर यदि जल में डाल दिया जाये तो जितनी देरी में लवण का कंकर पानी में घुलेगा उतने ही समय में शत्रु नष्ट हो जायेगा। इसकी आवरण पूजा कर्म सब विधिवत् करना चाहिये दान पुण्य कुमारीपूजा भी नित्य करनी चाहिये। शिवाबलि आदि कर्म करके भद्रकाली को संतुष्ट करना चाहिये। इसके पूजन बलिद्रव्य में सेंधव नमक तथा होम द्रव्यों में भी लवण आंशिक रूप से होवें।

मंत्रः- ॐ चिटि चिटि चण्डालि महाचण्डालि अमुकं मे वशमानय स्वाहा।

विनियोगः- **अस्य श्री लवण दुर्गा मंत्रस्य अङ्गिरस ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अग्निरात्रि दुर्गाभद्रकाली देवता, ह्रीं बीजम्, क्रों शक्तिं, आं कीलकं, मम सकल जगद्वशार्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः- **एषां श्रीलवणदुर्गामन्त्राणां अङ्गिरसऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। अग्निरात्रिदुर्गाभद्रकाली देवताभ्यो नमो हृदये। ह्रींबीजाय नमो गुह्ये। क्रोंशक्तये नमो जान्वोः। आं कीलकाय नमः पादयोः। मम सकलजगद्वशार्थ जपे विनियोगः सर्वाङ्गेषु।**

षडङ्गन्यासः- **ॐ चिटि चिटि हृदयाय नमः, चण्डालि शिरसे स्वाहा, महाचण्डालि शिखायै वषट्, अमुकं मे कवचाय हुं, वशमानय नेत्रत्रयाय वौषट्, स्वाहा अस्त्राय फट्।** इसी तरह करन्यास करें।

अथाक्षरन्यासः- **ॐ ॐ नमो मूर्ध्नि, ॐ चिं नमो भाले, ॐ टिं नमो दक्षनेत्रे, ॐ चिं नमो वामनेत्रे, ॐ टिं नमो दक्षकर्णे, ॐ चं नमो वामकर्णे, ॐ ण्डां नमो दक्षनासिकायां, ॐ लिं नमो वामनासिकायां, ॐ मं नमो मुखे, ॐ हां नमश्चिबुके, ॐ चं नमः कण्ठे, ॐ ण्डां नमो हृदि, ॐ लिं नमो दक्षस्तने, ॐ अं नमो वामस्तने, ॐ मुं नमः कुक्षौ, ॐ कं नमो नाभौ, ॐ में नमो दक्षकट्यां, ॐ वं नमो वामकट्यां, ॐ शं नमो मेढ्रे, ॐ मां नमः पार्श्वयोः, ॐ नं नमः उरुद्वये, ॐ यं नमो जानुयुगे, ॐ स्वां नमो जङ्घायुगे, ॐ हां नमः पादद्वये।** इत्यक्षरन्यासः।

॥ ध्यानम् ॥

नवकुंकुमसन्निभं त्रिनेत्रं रुचिराकल्पशतं नमामि वह्निम्।
स्रुवशक्तिवराभयानि दोर्भिर्दधतं रक्तसरोरुहे निषण्णम् ॥१॥
कालाम्बुवाहद्युतिमिन्दुवक्त्रां हारावली शोभिपयोधराढ्याम्।
कपालपाशांकुशशूलहस्तां नीलांशुकां यामवतीं नमामि ॥२॥
नीलाञ्जनाभामरिशङ्ख शूलखट्वाङ्गहस्तां तरुणेन्दुचूडाम्।
भीमां त्रिनेत्रां जितशत्रुवर्गां दुर्गां भजे दुर्गतिभङ्गदक्षाम् ॥३॥
टङ्कं कपालं डमरुं त्रिशूलं संबिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशी सितभीमदंष्ट्रा भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली ॥४॥

वशीकरण में प्रथम एवं द्वितीय ध्यान। शत्रुनाश में तृतीय। मारण प्रयोग में चतुर्थ ध्यान करें

॥ अथ आवरणपूजा:॥

भद्रमण्डल पर "**ॐ मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः** से पूजन कर पूर्वादि अष्ट दिशाओं में पीठ शक्तियों का

पूजन करे। **ॐ भीषणायै नमः। ॐ बहुरूपायै नमः। ॐ तीक्ष्णद्रंष्ट्रायै नमः। ॐ मदोत्कटायै नमः, ॐ स्मरण्यै नमः, ॐ मोहिन्यै नमः, ॐ कान्तायै नमः। ॐ कमण्डलु धरायै नमः ॐ परायै नमः। ॐ शूं शूल हस्तायै नमः। ॐ दारणवे नमः। ॐ लवणप्रियायै नमः। ॐ परायै नमः। ॐ करालायै नमः। ॐ अत्युग्रायै नमः। ॐ तामसे नमः। मध्ये-ॐ विकेश्यै नमः।**

१. मध्य में देवी का ध्यान करने के पश्चात् षट्कोण में षडङ्गन्यास मंत्रों से पूजा करे।

२. ऊपर से अष्टदल में- **ॐ शूल हस्तायै नमः। ॐ विकेश्यै नमः ....ॐ तामसे नमः।**

अष्टदल के केसर (नीचे के भाग) में- **ॐ उत्कटाय नमः, ॐ विकटाय नमः, ॐ शूलहस्ताय नमः, ॐ महाबलाय नमः, ॐ अग्निजिह्वाय नमः ॐ खड्गधराय नमः, ॐ कपालाय नमः, ॐ तारणप्रियाय नमः।**
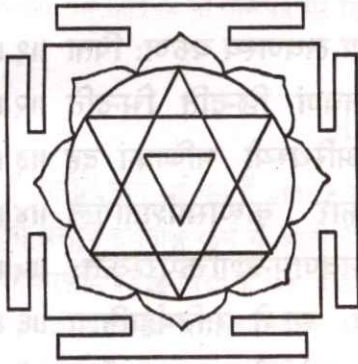
॥ श्री लवण दुर्गा यन्त्रम् ॥

३. अष्टदल के पत्रों के मध्य भाग में **ॐ अं आं असिताङ्ग भैरवाय नमः। ॐ इं ईं रुरुभैरवाय नमः। ॐ उं ऊं चण्डभैरवाय नमः। ॐ ऋं ॠं क्रोधभैरवाय नमः। ॐ लृं लॄं उन्मत्तभैरवाय नमः। ॐ एं ऐं कपालि भैरवाय नमः। ॐ ओं औं भीषणभैरवाय नमः। ॐ अं अः संहारभैरवाय नमः।**

४. अष्टदलपत्राग्रेषु- **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कोमार्यै नमः। ॐ वैष्णाव्यै नमः। ॐ वराह्यै नमः। ॐ ऐन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

५. भूपूर में **इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करे।** आवाहित देवों को धूप, दीप, नैवेद्य अर्पण करे। दस हजार जप कर लवण युक्त दशांश होम करे।

रात्रि में जानुपर्यन्त जलमध्य में जप करे तो साध्य वशीभूत होवे। नाभिपर्यन्त जल में १८००० जप करे तो मध्यम वर्गीय साध्य वशी होवे। कण्ठपर्यन्त जल मध्य में १८००० जप करने से राजा भी वशीभूत होवे। तालपत्र पर यंत्र लिखकर कालीमंदिर में गाड़ देवे तो जीव जन्तु वशीभूत होवे। ताम्रपत्र पर मंत्र लिखकर उसको खदिरकाष्ठ में तपाये तो एक महिने में साध्य वशीभूत होवे। लवण को गाय के दुग्ध में भिगोकर चूणीकृत कर त्रिकोण कुण्ड में होम करे शीघ्र वशीभूत होय। लवण को मधुत्रय से प्रोक्षण कर होम करे तो राजा भी वशीमान होवे। गुड़ आज्य मधु एवं लवण की पिष्टी से पुतली बनाये। उसमें साध्य नाम की प्राण प्रतिष्ठा करे। मंत्र के वर्ण न्यास करे। अष्टमी रात्रि को अपने आसन या देवीमूर्ति के नीचे रखे या कुण्ड में अधोमुख गाड़कर लवण मंत्र की ५ ऋचाओं से होम करे (लवण ऋचायें आगे लिखी गई हैं) १८००० जप कर होम करें। प्रतिमा के अंगों में न्यास मूलमंत्र या ऋचाओं से होम करें। साध्य नक्षत्र में अग्नि चांदी के बर्तन में लाये कुश व राई के पुष्पों से उसका अर्चन करे। देवि व अग्नि की प्रार्थना करें-

ॐ त्वमनेनाप्यमित्रघ्न निशायां हव्यवाहन। हविषा मन्त्रजप्तेन तृप्तो भव तया सह ॥१॥

जातवेदो महादेव तप्तजाम्बूनदप्रभ। स्वाहापते विश्वभक्ष लवणं दह शत्रहन् ॥२॥

ईशे शर्वरि शर्वाणि ग्रस्तं मुक्तं त्वया जगत्। महादेवि नमस्तुभ्यं वरदे कामदा भव ॥३॥

तमोमयि महादेवि महादेवस्य सुव्रते। त्रियामे पुरुषं हत्त्वा वशमानय देवि मे ॥४॥

दुर्गे दुर्गादिरहिते दुर्गसंरोधनाकुले। चक्रशङ्खधरे देवि दुष्टशत्रुभयङ्करि ॥५॥

नमस्ते दह शत्रुं मे वशमानय चण्डिके। शाकंभरि महादेवि शरणं मे भवानघे ॥६॥
भद्रकालि भवाभीष्टे भद्रसिद्धिप्रदायिनि। सपत्नान् मे हन हन दह शोषय तापय ॥७॥
शूलासिशक्तिवज्राद्यैरुत्कृत्योत्कृत्य मारय। महादेवि महाकालि रक्षास्मानक्षरात्मिके ॥८॥

शत्रु की पुतली को काटकर सातभाग करे। दक्षिण पैर, उसका उर्ध्वभाग, शिर, वामहस्त, उर्ध्वभाग, अधांग एवं वाम पाद को क्रमशः ऋचाओं के साथ या मंत्र से होम करें तो शत्रू का मारण व वशीकरण होवें। वराह विष्टा तिल चूर्ण से या व्रण, निम्ब, सरसों से अथवा महीषिमूत्र व लवण युक्त पिष्टी से पुत्तली बनाये। दुर्गा भद्रकाली की पूजा करे। उपरोक्त विधि से पुतली के अंग काट काटकर होम करे।

॥ अथ लवण मन्त्राः ॥

लवणाम्भसि तीक्ष्णोऽस्युग्रोऽसि हृदयं तव। लवणस्य पृथिवी माता लवणस्य वरुणः पिता ॥१॥
लवणे हूयमाने तु कुतो निद्रा कुतो रतिः। लवणं पचति पाच लवणं छिन्दति भिन्दति ॥२॥
अमुष्य दह गात्राणि दह मांसं दह त्वचम्। दह त्वगऽस्थिमज्जानि अस्थिभ्यो मज्जिकां दह ॥३॥
यदि वसति योजनशते नदीनां वा शतान्तरे। नगरे लोहप्राकारे कृष्णसर्पशतार्गले ॥४॥
तं दग्ध्वानय मे शीघ्रमग्ने लोणस्य तेजसा। वशमायातु लवणमन्त्रशक्तिपुरस्कृतः ॥५॥
या ते रात्रिः शल्यविद्धस्य शूलाग्रारोपितस्य च। या ते रात्रिर्महारात्रिः सा ते रात्रिर्महानिशा ॥६॥

इति एतेषु ऋगादिषु प्रणवान् संयोज्य प्रणवपाशादि त्र्यक्षरादि चिटिमन्त्रसमेतं ऋक्पञ्चकं जपेत्। अथवा सर्वेषु ऋगादिषु चिटिमंन्त्रादौ च आवरणदेवतादिषु च प्रणवपाशादित्र्यक्षरं योजयेत्। उपरोक्त मंत्रो के ॐ लगाकर जप करें लवण दुर्गा के मंत्रों का जप को आवरण देवताओं के नाम के साथ "**ॐ आं क्रों**" जोड़कर जप पूजा होम करें।

॥ अथ पिप्पलादमते लवणमन्त्राः॥

लवणाम्भसि तिक्तोऽसि उग्रोऽसि हृदयं तव। लवणस्य पृथिवी माता लवणस्य जलं पिता ॥१॥
लवणं दहति पचति लवणं छिन्धि भिन्दति। लवणे हूयमाने तु कुतो निद्रा कुतो रतिः ॥२॥
अमुकस्य दह गात्राणि दह मांसं दह्यनलम्। दह त्वगस्थिमज्जानि अस्थिभ्यो मज्जिकां दह ॥३॥
यदि वसति योजनशते नदीनां च शतान्तरे। सं दग्ध्वा च स मे शीघ्रमग्नेर्लवणतेजसा ॥४॥
या ते रात्रिर्महारात्रि र्यातिरात्रिर्महानिशा। या रात्रिः शल्यविद्धस्य शूलाग्रारोपितस्य च ॥५॥

ह्रीं चिटि चिटि चण्डालि महाचण्डालि अमुकं मे वशमानय स्वाहा। इति लवणमन्त्राः। **अस्याङ्गिरा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अग्निरात्रिदुर्गाभद्रकाल्यो देवताः, मन्त्रस्य हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, लवणाम्भसि- लवणे हूयमाने-दह त्वगस्थिं संदग्ध्वा या ते रात्रिरित्येतैः पञ्चमन्त्रैः पञ्चाङ्गानि। अथवा चिटिमन्त्राक्षरैः पञ्चत्रिपञ्चचतुष्पञ्चद्विसंख्याकैः क्रमात् षडङ्गानि॥**

॥ ध्यानम् ॥

अरुणो ऽरुणपङ्कज संनिषण्णः स्त्रुवशक्ति वराभययुक्तकरः।
अमिता र्चिरजातगति विलसन्नयन त्रितयोऽवतु वोदहनः ॥१॥

नीलतरांशुक केशकलापा निलतनुर्निबिडस्तनभारा ।
सांकुश पाश सशूलकपाला यामवती भवयोऽवतु नित्यम् ॥२॥
करकमल विराजच्चक्रशंखासिशूला परिलसितकिरीटा पातितानेकदैत्या ।
त्रिनयनलसिताङ्गी तिग्मरश्मिप्रकाशा पवनसखनिभाङ्गी पातु कात्यायनी वः ॥३॥
सुरौद्रसितदंष्ट्रिका त्रिनयनोर्ध्वकेशोल्वणा कपालपरशूल्लसड्डमरुका त्रिशूलोज्ज्वला ।
घनाघननिभा रणद्रुचिरकिङ्किणीमालिका भवद्भिभवसिद्धये भवतु भद्रकाली चिरम् ॥४॥

उपरोक्त ऋचाओं एवं चिटि मंत्र तिल आज्य लवण वा केवल नमक से होम करें। यंत्र में साध्य का नाम लिखें अथवा मंत्र तालपत्र या तामपत्र पर लिखें। क्षार जल में डूबोकर रखें जप करें तो वशीकरण होवें।

॥८. अथ आसुरीदुर्गा प्रयोगः॥

आसुरी नाम राई का हैं अतः इसके प्रयोग में राई प्रधान वस्तु हैं। राई के पंचाङ्ग- जड़, तना, पत्र, पुष्प, फल(राई) सभी वस्तुयें हवनाङ्ग कर्म में आती हैं। अथर्ववेद में इसके काम्य प्रयोग अधिक हैं। यह शीघ्रफलदायिनी विद्या है। यह वशीकरणीय सिद्ध विद्या हैं यह प्रतिकूल व्यक्ति को भी अनुकूल कर देती हैं। पति- पत्नि में अगर तलाक की नौबत भी आजाय तो यह परिस्थिति को अनुकूल बनाकर सामञ्जस करती हैं ऐसा मेरा अनुभव हैं। परन्तु सत्यता के पात्र की ओर से ही प्रयोग करना चाहिये।

मंत्रः- १. ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरी रक्ते रक्तवाससी अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके मम शत्रून् (अमुकं) दह दह पच पच मथ मथ हन हन तावत् दह दह पच पच मथ मथ हन हन यावन्मे वशमानय स्वाहा। शत्रु की गति विधि विपरीत हो तो **मम शत्रून** की जगह **अमुकस्य गतिं दह दह पच पच....** पढ़े।

स्त्री के पति की गतिविधि गलत हो तो मम शत्रून् की जगह अमुस्यक गतिं दह दह पच पच.... यावत् अमुकीं वशमानय स्वाहा। मंत्र प्रयोग करे।

२. मंत्रो यथा - ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरि रक्ते रक्तवाससे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके अमुकस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुँ फट् स्वाहा। इति दशोत्तरशताक्षरो मंत्रः।

यदि स्त्री को अनुकूल करना हो तो अमुकस्य जगह अमुकायाः तथा उपविष्टस्य की जगह उपविष्टायाः सुप्तस्य की जगह सुप्ताया उच्चारण करे।

॥ अस्य विधानम् ॥

विनियोग :- **अस्य आसुरीमंत्रस्य अंगिरा ऋषिः। विराट् छंदः। आसुरी देवता। ॐ बीजम्। स्वाहा शक्तिः। हुं कीलकम्। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ अंगिरऋषये नमः शिरसि ॥१॥ विराट्छंदसे नमो मुखे ॥२॥ आसुरीदेवतायै नमो हृदि ॥३॥ ॐ बीजाय नमो लिंगे ॥४॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ हुं कीलकाय नमो नाभौ ॥६॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे।** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- ॐ कटुके कटुकपत्रे हुँफट्स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ सुभगे आसुरि हुं फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ रक्ते रक्तवाससे हुं फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ अघोरे अघोरकर्मकारिके हुं फट् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ अमुकस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह, हन हन, पच पच, तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादि षडंगन्यासः - ॐ कटुके कटुकपत्रे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः ॥१॥ सुभगे आसुरि हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा ॥२॥ रक्ते रक्तवाससे हुँ फट् स्वाहा शिखायै वषट् ॥३॥ अथर्वणस्य दुहिते हुँ फट् स्वाहा कवचाय हुँ ॥४॥ अघोरे अघोरकर्मकारिके हुँ फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ अमुकस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुँ फट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः। इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ शरच्चंद्र कांतिर्वराभीतिशूलं सृणिं हस्तपद्मैर्दधानांबुजस्था ।
विभूषां वराढ्याहि यज्ञोपवीता मुदेऽथर्वपुत्री करोत्वासुरी नः ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्।

इसका पुरश्चरण दस हजार जप का हैं। घृत राई से होम करे। राई के पंचांग मूल शाखा पत्र पुष्प फलादि से होम करे तथा उस धूप को जिस को सुंघावे वह वशीभूत होवे। मधुत्रय व राई के होम से संसार का वशीकरण होवे। नारी के वशीकरण में बाँये पैर की मिट्टी से व राई से पुतली बनाकर एक सप्ताह होम करे, राई की समिध काम में लेवें तो जीवनभर वशीभूत होवे। राई, निम्बपत्र व सरसों के तेल के होम से शत्रु को ज्वर व्याप्त होवे। राई नमक के होम से उच्चाटन व विस्फोट होवे। अर्क के दुग्ध के होम से शत्रु के नेत्र नाश होवे। ब्राह्मण के वशीकरण हेतु राई, क्षत्रिय के लिये गुड़ एवं राई, वैश्य के वशीकरण हेतु दधियुक्त राई तथा शूद्र के वशीकरण हेतु राई नमक का होम करे। आसुरी समिध ही प्रयोग में लेवे उत्तम रहे। जलकलश में राई के पत्ते रखे एवं घट में देवी का पूजन करे उस जल से अभिषिंचन करने से सब उपद्रव नष्ट होते हैं। राई के पुष्प, सफेद चन्दन, नागकेसर मेनशिल तगर इनके चूर्ण को १०८ बार अभिमंत्रित कर जिसके शिर पर डाले वह वशीभूत होवे। निम्बकाष्ठ, सरसों व राई का होम क्रोध मुद्रा से करें तो शत्रु नष्ट होवे। अगर पुनः ठीक करना हो या किसी के अभिचार को शांत करना हो तो पंचगव्य, पंचामृत, गोदुग्ध छाग के दुग्ध से राई को भिगोकर होम करे तो सबविघ्न बाधा अभिचार कर्म दूर होवे।

॥ ९. अथ जयदुर्गा मंत्र प्रयोगः ॥

भगवती दुर्गा का यह रक्षात्मक मंत्र हैं। इसका प्रयोग शत्रुओं से घिरने पर, दुर्गमस्थान में भय हाने पर, ऋणयोग व अन्य विपत्ति-समस्यायें आने पर किया जाता है।

ऋषि न्यास, यंत्रार्चन अष्टाक्षरी दुर्गामंत्र के समान हैं, इसके **ऋषि नारद, छंद गायत्री, देवता जयदुर्गा** है।

दशाक्षर मन्त्रः- ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा।

मेरुतंत्र में ध्यान व ऋष्यादि न्यास में भेद हैं। यथा **ऋषिनारद, छंद विराट, देवता जय दुर्गा** कहा हैं।

शारदा तिलक में **मार्कण्डेय ऋषिः, गायत्री छंद, ॐ बीजं, स्वाहा** शक्ति कहा है।

॥ ध्यानम् ॥

मेघश्यामां ग्लौकिरीटां त्रिनेत्रां सिंहवाहिनीम् । चक्रं वरं खड्गशूलौ बाहुभिर्बिभ्रतीं भजे॥

द्वादशाक्षर मंत्रः- **ॐ नमः दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा।** हिन्दी तंत्रसार में **ऋषि** नारद, छंद गायत्री, देवता जयदुर्गा कहा हैं। देवी रहस्य में दुर्गा अष्टाक्षर के **महेश्वर ऋषि** कहे है तथा **ॐ कीलक** कहा हैं।

करन्यासः- **ॐ दुर्गे अंगुष्ठाभ्यां नमः। दुर्गे तर्जनीभ्यां स्वाहा। दुर्गायै मध्यमाभ्यां वषट्। भूतरक्षणि अनामिकाभ्यां हुं। ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

ॐ कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दु - रेखाम् ।
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीम् ।
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

इसका अर्चन आवरण पूजा विधान अष्टाक्षरी दुर्गा मंत्र के समान हैं।

॥ इति नवरात्र विधानं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ दीपनी विद्या (दीपदुर्गा) प्रयोगः ॥

दीपनी विद्या का प्रयोग मंत्र जागृति हेतु किया जाता हैं। यदि दीप दुर्गा का आशय दीपक ज्वाला से हो अलग बात हैं तदर्थ दीपक में **''ह्रीं हंसः मार्तण्ड भैरवाय नमः''** से भैरवरूप सूर्य का दीपक में पूजन करे। दुर्गा दीप दान प्रयोग का वर्णन आगे किया गया हैं। दीपक ज्योति में देवी की आवरण पूजा कर त्राटक करते हुये दुर्गा मंत्र का जप करें।

दीपनी मंत्रः- प्रणव, श्रीबीज, वाग्बीज, कामबीज, मायाबीज अर्थात् **''ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं''** यह पंचाक्षर मंत्र हुआ।

इस मंत्र का उच्चारण कर वाग्भव कूट **''ऐं''** का जप करना चाहिये। **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं** इस मंत्र का जप कर कामराजकूट (क्लीं) का जप करने से त्रिभुवन को क्षुब्ध किया जा सकता हैं। स्वप्नावती मंत्र के पहले **'' ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं''** का जपकर कार्य करे। **ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं** इस मंत्र का जप कर मधुमती मंत्र का जप करे। **''हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हूं हंसः''** इस मंत्र का जप कर शक्तिकूट (**सौंः**) का जप करे। इस सारे मंत्र का नाम दीपनी विद्या हैं। यह मंत्र समस्त विद्या का प्राण स्वरूप हैं अतः इस मंत्र का केवल जप नहीं करे, उक्त मंत्र को समस्त मंत्रों के साथ योग कर जप करे। मंत्र जप के आदि अंत में सात बार जप करे। कामराजकूट, वाग्भवकूट और शक्तिकूट **क्लीं, ऐं, सौंः** इनके भी दीपनीमंत्र जो प्रारंभ में बताये हैं उनका जप करे। **''योगिनी हृदय''** में स्वर व्यञ्जन भेद से उक्त विद्या के सैंतीस प्रकार बताये हैं। यह पंचाक्षरी दीपनी मंत्र सर्व प्रचलित हैं। त्रिकूटा, अष्टकूटा, नवकूटा, द्वादश कूट हेतु श्रीविद्या क्रम हेतु मुण्डमालातंत्र, रुद्रयामल अथवा श्रीविद्यार्णव तंत्र उत्तरभाग में अवलोकन करें।

अन्य विशेष **विवरण देवी खण्ड पुस्तक के द्वितीय खण्ड (उत्तरार्द्ध भाग) में अवलोकन करें।**

॥ इति दीपनी विद्या प्रयोगः ॥

॥ अथ जगद्धात्री दुर्गा मंत्रः॥

एकाक्षर मंत्र :- दुँ

त्र्यक्षर मंत्राः- ह्रीं दुं फट्। श्रीं दुं फट्। ऐं दुं फट्। ॐ दुं फट्। क्लीं दुं फट्।

चतुरक्षर मंत्रः- हूं दुं स्वाहा। तंत्रसार में ऋषि नारद, छंद गायत्री, देवता जगद्धात्री दुर्गादेवी बताया हैं। ध्यानादि अष्टाक्षर दुर्गामंत्र की तरह हैं।

॥ अथ वृषारूढा दुर्गामंत्र प्रयोगः॥

चतुर्दशाक्षर मंत्रः- ॐ ॐ ह्रीं क्रों ॐ एहि परमेश्वरी स्वाहा।

एकविंशाक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि एहि परमेश्वरि स्वाहा।

चतुर्दशार मंत्र के न्यास हेतु **ॐ ॐ। ह्रीं। क्रों। ॐ एहि। परमेश्वरि। स्वाहा।** इन छः विभाग से न्यास करे।

॥ ध्यानम् (मेरुतंत्रे) ॥

वृषारूढां भालचन्द्रां त्रिनेत्रां शशिसन्निभाम्। दधतीं शूल डमरुं महाहिवलयां भजे।

घृताक्त विल्व पत्रों से होम करे। ऋष्यादि अश्वरूढा व वृषारूढा दोनों के एक ही हैं।

॥ अथ अश्वारुढा दुर्गा मन्त्राः॥

दशाक्षर मंत्रः- ॐ एहि परमेश्वरि स्वाहा इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट् देवता अश्वारूढ़ा हैं।

न्यास हेतु **ॐ। ॐ। ॐ। एहि। परमेश्वरि। स्वाहा।** से न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

अश्वारूढां चन्द्रभालां त्र्यक्षां पाशेन साध्यकम्। बध्वानयन्तीं वामेन दक्षे कनक वेत्रिकाम्॥

ॐ के बाद ह्रीं लगाने से **एकादशाक्षरी मंत्र** हो जाता हैं।

त्रयोदशाक्षर मंत्रः- ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा।

रक्तामश्वाधिरूढां शशिधर शकलाबद्धमौलिं त्रिनेत्राम्, पाशेनबध्य साध्यां स्मरशर विवशांदक्षिणेनानयन्तीम्।
हस्तेनान्येन वेत्रं वरकनकमयं धारयन्तीं मनोज्ञाम्, देवीं ध्यायेदजस्त्रं कुचभरनमितां दिव्यहाराभिरामाम्॥

॥ अथ विशालाक्षी दुर्गा मंत्रः॥

अष्टाक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं विशालाक्ष्यै नमः।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, पंक्तिच्छंदः, विशालाक्षी देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, चतुर्वर्गलाभार्थे जपे विनियोग।**

षडङ्गन्यास- **ॐ ह्रां, ॐ ह्रीं, ॐ ह्रूं, ॐ ह्रैं, ॐ ह्रौं, ॐ ह्रः,** से न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेद् देवीं विशालाक्षीं तप्तजाम्बूनदप्रभां, द्विभुजामम्बिकां चण्डीं खड्ग खेटक धारिणीम्।

नानालङ्कार सुभगां रक्ताम्बरधरां शुभां, सदाषोडशवर्षीयां प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम् ॥
मुण्डमालावतीरम्यां पीनोन्नत पयोधरां, शवोपरि महादेवीं जटामुकुट मण्डिताम् ।
शत्रुक्षयकरीं देवीं सधकाभीष्ट दायिकां, सर्वसौभाग्य जननीं महासम्पत्प्रदां स्मरेत् ॥

सप्तशती के मंत्र "**नंदगोपगृहे..........विंध्याचल निवासिनी** " के अनुसार आप ही "**नन्दजा**" हैं। स्कंद पुराणान्तर्गत "**विंध्य पुराणखण्ड** " में विंध्यवासिनी महालक्ष्मी का "**विशालाक्षी**" रूप में यंत्रार्चन स्तोत्र दिये है। अन्य ग्रंथो के अनुसार आप ही "**शूलिनी देवी** " है। **आपही कात्यायनी है**। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती रूप में आपका अर्चन विंध्यक्षेत्र में होता है।

यंत्रार्चन विंध्यवासिनी प्रयोग में देखें।

॥ कौशिकी ध्यानम् ॥

साकौशिकीति विख्याता चारुरूपा मनोहरा। शूलं वज्रं च वाणं च खड्गं शक्तिं तथैव च ॥१॥
दक्षिणैः पाणिभिर्देवी गृहीत्वा तु विराजिता । गदां घण्टां च चापं च चर्म शंखं तथैव च ॥२॥
उर्ध्वादिक्रमतो देवी दधती वामपाणिभिः। वज्रेणेत्यस्य स्थाने चक्रेणेत्यपिपाठः॥ कौशिक्याश्चक्रस्याभावात् ॥३॥
सिंहस्योपरितिष्ठन्ती व्याघ्र चर्मणि कौशिकी । विभ्रती रूपमतुलं स सुरासुरमोंहनम् ॥४॥

कौशिकी का प्रयोग प्रत्यंगिरा के समान प्रभावी है वे ही काली स्वरूप अंबिका हैं।

॥ शिवदूती ध्यानम् ॥

शिवदूतीति साख्याता चण्डी फेरुशतैवृता । चतुर्भुजां महाकायां सिन्दूर सदृश द्युतिम् ॥१॥
रक्तदन्तां मुण्डमालां जटाजूटार्ध चन्द्रधृक् । नागकुण्डल-हाराभ्यां शोभितं नखरोज्वलम् ॥२॥
व्याघ्रचर्मपरीधानं दक्षिणे चैव शूलधृक् । वामे पाशं तथा चर्म बिभ्रदूर्ध्वाधरक्रमात् ॥३॥
स्थूलवक्त्रं व पीनौष्ठं भृंगमूर्तिं - भयंकरम् । निक्षिप्य दक्षिणं पादं संतिष्ठत्कुणपोपरि ॥४॥
वामपादं शृगालस्य पृष्ठे फेरु- शतैवृतम् । तादृशं शिवदूत्यास्तु मूर्द्धिन ध्यायेद्विभूतये ॥५॥

मंत्र तंत्र अनुष्ठान में शिवा बलि की श्मशान वा निर्जन स्थान में देने की व्यवस्था कही हैं अतः शिवा का आवाहन समय ध्यान करना चाहिये।

॥ ब्राह्मयादि अष्टमातृका ध्यानम् ॥

देवी के प्रयोगों में आवरण पूजा समय यंत्र मध्य में ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का अवश्य आता हैं अतः उनका ध्यान भी आवश्यक हैं। (विष्णुधर्मोत्तरे)-

तत्रब्राह्मी चतुर्वक्त्रा षड्भुजा हंसवाहना, पिङ्गाभाभूषणोपेता मृगचर्मोत्तरीयका ।
वरं सूत्रं स्त्रुचं धत्ते दक्षबाहुत्रये क्रमात्, वामेतु पुस्तकं कुण्डी ब्रिभती चाभयप्रदा ॥१॥

माहेश्वरी वृषारुढा पञ्चवक्त्रा त्रिलोचना, बालेन्दुभृज्जटाजूटा शुक्ला सर्ववरप्रदा ।
षड्भुजा वरदा दक्षे सूत्रं डमरुकं तथा, शूलं घण्टाभये वामे सैव धत्ते महाभुजा ॥२॥
कौमारी रक्तवर्णा स्यात् षड्वक्त्रा सार्क- लोचना, रविबाहु र्मयूरस्था वरदा शक्तिधारिणी ।
पताकां बिभ्रती दण्डं पानं वाणं च दक्षिणे, वामे चापमधो घंटां कमलं कुक्कुटं त्वधः ॥
परशुं बिभ्रती तीक्ष्णं तदधस्त्वभयान्विता ॥३॥
बाहुभिर्गरुडारूढा शंख चक्र गदासिनी, शार्ङ्गं वाणधरा जाता वैष्णवी रूपशालिनी ॥४॥
कृष्णवर्णास्तु वाराही शूकरास्या महोदरी, वरदा दण्डिनी खड्ग विभ्रती दक्षिणे सदा ।
खेटपाशाभया वामे सैव चाथ लसद्भुजा ॥५॥
विक्षिपन्ती सटाक्षेपैर्ग्रह नक्षत्र तारकाः । नखिनी हृदयज्जाता नारसिंही सुदारुणा ॥६॥
ऐन्द्री दृकसौम्या हेमाभां गजसंस्थिता । वरदा सूत्रिणी वज्रं बिभ्रत्यूर्ध्वे तु दक्षिणे ।
वामेतु कलशं पात्रं त्वभयं दक्षिणे करे ॥७॥

चामुण्डा का ध्यान महादुर्गावत् करे ।

॥ अथ देवीराजोपचार पूजा प्रयोगः॥

॥ अथ महादुर्गा यंत्र देवता स्थापनम् ॥

अपने हृदय कमल में इष्ट देवता का ध्यान करें हाथ में पुष्पाक्षत् लीजिये, फिर बाँयी नासिका से उन पुष्पों पर श्वांस छोड़े भावना करें कि इष्ट देवता, हृदय कमल से बाहर आकर साकार सगुण पूजा ग्रहण करेंगें, फिर उन पुष्पों को यंत्र मध्ये बिन्दु में स्थापित करें। सर्वत्र नाम के आगे बाद **''नमः''** का उच्चारण करें।

१. बिन्दुमध्ये- **ऐं. ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरुपिणी श्री त्रिगुणात्मिका स्वरूपायै श्री महादुर्गा देवतायै नमः।**

फिर गुरुमण्डल का ध्यान करें- **२. श्री नाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्। सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूति क्रमं मण्डलम् ॥१॥ वीरानऽष्ट चतुष्कषष्टि नवकम् वीरावलि पंचकम्। श्रीमन् मालिनी मंत्रराज सहितं वन्दे श्री गुरु मण्डलम् ॥२॥** इसके बाद दिव्यौघ, सिद्धौध, मनवौघ गुंरु तथा गुरु चतुष्टय का आवाहन करे। **''श्री कुलस्वस्वरूप मानने से''**

३. **''काली समष्टिमानने से''** कलिका के दिव्योघ सिद्धौघादि गुरु पूजन करें। यथा **दिव्यौघ- ॐ महादेव्याम्बामयी श्री। ॐ महादेवानंदमयी.। ॐ त्रिपुराम्बामयी। ॐ त्रिपुर भैरवानंदनाथमयी। आवा. स्था.।**

४. सिद्धौघ गुरु- **ॐ ब्रह्मानन्दनाथमयी ॐ पूर्णदेवानन्दनाथमयी आ. स्था.। ॐ चलचित्तानंदनाथमयी आ. स्था.। ॐ लोलानंदनाथमयी.। ॐ कुमारानन्दनाथमयी.। ॐ क्रोधानन्दनाथमयी.। ॐ वरदानन्दनाथमयी.। ॐ स्मरद्वियानंदनाथमयी.। ॐ मायाम्बानन्दनाथमयी.। ॐ मायावत्यानन्दनाथमयी.। आ. स्था.।**

५. मानवौघगुरु- **ॐ विमलानन्दनाथ मयी. आ. स्था.। ॐ कुशलासानन्दनाथ मयी.। ॐ भीम सेनानंदनाथमयी.। ॐ सुधाकरा नंदनाथमयी। ॐ मीनानन्दनाथमयी.। ॐ गोरक्षानन्दनाथमयी.। ॐ भोजदेवानन्दनाथ मयी.। ॐ प्रजापत्यानन्दनाथमयी.। ॐ मूलदेवानंदनाथमयी.। ॐ रन्तिदेवानन्दनाथ मयी.।**

विघ्नेश्वरानन्दनाथ मयी.। हुताशनानन्दनाथमयी.। समरानन्दनाथमयी.। संतोषानन्दनाथ मयी.। आ. स्था.।

६. गों गुरवेनमः परमगुरवेनमः परात्पर गुरवेनमः परमेष्ठि गुरवेनमः।

७. महादुर्गा की षडङ्ग पूजा करे। ऐं हृदयाय.। ह्रीं शिरसे.। क्लीं शिखायै.। चामुण्डायै कवचाय.। विच्चे- नेत्रत्रयाय.। मूलमंत्रेन् अस्त्राय फट्। आ. स्था.।

८. त्रिकोणे- स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन क्रमेण- स्वरया सह विधात्रे. श्रियासह विष्णेवे.। उमया सह शिवाय.। दक्षिणे हुं सिंहाय.। वामे हुं महिषाय.। आ. स्था.॥

९. षटकोणे - ऐं नंदजायै नमः अग्निकोणे। ह्रीं रक्त दंतिकायै नमः ईशाने। क्लीं शाकम्भर्यै नमः निर्ऋत्ये कोणे। दुं दुर्गायै नमः वायव्ये। हुं भीमायै नमः पूर्वे। ह्रीं भ्रामर्यै नमः पश्चिमे (स्वग्रे)। आ. स्था.।

१०. अष्टदले - पूर्वादिक्रमेण- ऐं ब्राह्मै.। ह्रीं माहेश्वर्यै.। क्लीं कौमार्यै। ह्रीं वैष्णव्यै.। हुं वाराह्यै.। क्ष्यौं नारसिंह्यै.। लं ऐन्द्रयै.। स्फ्रें चामुण्डायै नमः ।

११. अष्टदले पत्राग्रे- पूर्वादिक्रमेण- असिताङ्ग भैरवाय नमः। रुरुभैरवाय.। चण्डभैरवाय। क्रोध भैरवाय.। उन्मत्त भैरवाय.। कपालि भैरवाय.। भीषण भैरवाय.। संहार भैरवाय नमः। संहार भैरव। आ. स्था.।

ततश्चतुर्विंशतिदले- १२. पूर्वादिक्रमेण- विं विष्णुमायायै नमः। चें चेतनायै.। बुं बुद्ध्यै.। निं निद्रांयै.। क्षुंक्षुधायै.। छां छायायै.। शं शक्त्यै.। तृं तृष्णायै.। क्षां क्षान्त्यै.। जा. जात्यै.। लं लज्जायै.। शां शान्त्यै.। श्रं श्रद्धायै.। कां कान्त्यै.। लं लक्ष्म्यै.। धृं धृत्यै.। वृं वृत्त्यै.। श्रुं श्रुत्यै.। स्मृं स्मृत्यै.। दं दयायै.। तुं तुष्ट्यै.। पुं. पुष्ट्यै.। मां मातृभ्यो.। भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्ति। आ. स्था.।

१३. भूपूरे कोण चतुष्टये- गं गणपतये. अग्निये। क्षं क्षेत्रपालाय. नैर्ऋत्ये। वं वटुकाय. वाय्यव्ये। यां योगिन्यै. ईशाने। आ. स्था.।

१४. भूपूरे पूर्वादि क्रमेण- इन्द्राय.। अग्नये.। यमाय.। निर्ऋतये.। वरुणाय। वायवे.। सोमाय। ईशानाय। ब्रह्मणे.। अनंताय.। आ. स्था.।

१५. तद्वहिः- वज्राय.। शक्तये.। दण्डाय.। खड्गाय.। पाशाय.। अंकुशाय। गदायै.। त्रिशूलायै.। पद्माय.। चक्राय.। आ. स्था.।

१६. तद्वहिः- पूर्वे वज्रहस्तायै गजारुढायै कादंबरीदेव्यै.। आग्नये- शक्ति हस्तायै अजवाहनायै उल्का देव्यै. । दक्षिणे- दण्डहस्तायै महिषारूढायै कराली देव्यै.। नैर्ऋते- खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै.। पश्चिमे- पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै.। वायवे- अंकुश हस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै। उत्तरे- गदाहस्तायैसिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै.। ईशाने- शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै.। उर्ध्व- पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुर जेष्ठा देव्यै। अधः चक्र हस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञी देव्यै नमः। आ. स्था.।

ॐ यंत्रस्थदेवताभ्यो नमः। यथाशक्त्या पूजनं कुर्यात्॥ आगच्छवरदे देवि दैत्यदर्प निषूदिनि। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये॥ श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी दुर्गे देवते आवाहिता भव स्थापिता भव। सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव। समुखीकृताभव। षडङ्गन्यासेनसकलीकृताभव। अवगुंठिता भव। परमीकृताभव। अमृताकृताभव। ॐ मनोजूति...। ॐ भू भुर्वः स्वः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणि सुप्रतिष्ठिता वरदा भव। ततः श्री सूक्तेन देवीन्यास कृत्वा षोडशोपचारैः पूजयेत्।

॥ अथ देवीराजोपचार पूजा प्रयोगः॥

देवीपूजा की आद्य शंकराचार्यजी ने अच्छी प्रस्तुति की है उसी का समावेश यहाँ किया है। देवी का ध्यान, आवाहन करें-

ध्यानम्- खड्गं चक्र- (१) अक्षस्त्रक्-(२) घंटाशूल- (३) विद्युद्दाम-(४) इति ध्यान मंत्रेण आवाहनं कुर्यात्॥

आवाहनं- कनकमय वितर्दिशोभमानं, दिशि दिशि पूर्ण सुवर्ण कुंभ युक्तम्।
मयि कृपयाऽऽशु समर्चनं गृहीतुं, मणिमय मण्डप मध्यमेहि मातः!॥

(प्रथम दिन मण्डप पर देवता स्थापन बाद दूसरे दिन पूजन में आवाहन नहीं करें प्रबोधन करें।)

प्रबोधनं- उषसि मागध मङ्गल गायनैः, झटिति जागृहि जागृहि जागृहि।
अति कृपार्द्र कटाक्ष निरीक्षणैः, जगदिदं जगदंब! सुखीकुरु॥

मंदिर समर्पणं- तपनीय मयी सुतूलिका, कमनीया मृदुलोत्तरच्छदा।
नवरत्न विभूषितामया, शिविकेयं जगदंब! तेऽर्पिता॥

शिविका समर्पणं- कनक कलश शोभमानशीर्षम्, जलधर चुम्बि समुल्लसत् पताकम्।
भगवति! तव सन्निवास हेतोः, मणिमय मंदिर मे तदर्पयामि।

आसनं- कनकमय वितर्द्धि स्थापिते तूलिकाढ्ये, विविध कुसुम कीर्णे कोटिबालार्क वर्णे।
भगवति! रमणीये रत्न सिंहासनेऽस्मिन्, उपविश पद युग्मं हेमपीठे निधेहि॥

पाद्यं(पाद्य पात्रात्)- दूर्वया सरसिजान्वित विष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम्।
पद्म युग सदृशे पद युग्मेः, पाद्यमेतदुररी कुरु मातः।

अर्घं (अर्घपात्रात्) गंध पुष्प यव सर्षप दुर्वा, संयुतं तिल कुशाक्षत मिश्रम्।
हेमपात्र निहितं सहरत्नैः, अर्घ्य मेतदुररी कुरु मातः।

आचमनीयम् (आचमनी पात्रात्)-
जलजद्युतिना करेण जातीफल, कङ्कोल-लवङ्ग गंध युक्तैः।
अमृतैरमृतैरिवाति शीतैः भगवत्याचमनं विधीयताम्॥

मधुपर्क-(मधुपर्कपात्रात्)
निहितं कनकस्य संपुटे, पिहितं रत्न पिधानकेन यत्।
तदिदं जगदंब! तेऽर्पितं, मधुपर्क जननि! प्रगृह्यताम्॥

आचमनीयम्- तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गांगेन मत्याकल्पितं।
साष्टांगं प्रणिपातमंब, कमले दृष्टया कृतार्थी कुरु॥

पयस्नानम्- स्वर्धेनुजातं बलवीर्य - वर्धनं, दिव्यामृतात्यन्तर सप्रदं सितम्।
श्रीचंडिके दुग्ध समुद्र - संभवे, गृहाण दुग्धं मनसा मयाऽर्पितम्॥

दधिस्नानं- क्षीरोद्भवं स्वादु सुधामयं च, श्री चन्द्रकांति सदृशं सुशोभनम्।
श्रीचण्डिके शुंभनिशुंभनाशिनि, स्नानार्थमंगी कुरु तेऽर्पितं दधि।

घृतस्नानं- श्री क्षीरजोद् भूतमिदं मनोज्ञं प्रदीप्तवह्नि द्युति पावितं च।
श्रीचण्डिके दैत्यविनाश दक्षे, हैयंगवीनं परिगृह्यतां च॥

मधुस्नानं- माधुर्यमिश्रं मधुमक्षिकागणै, र्वृक्षालिरम्ये मधुकानने चित्तम्।
श्रीचंडिके शंकर प्राणवल्लभे, स्नानार्थमंगी कुरु तेऽर्पितं मधु॥

शर्करा स्नानं- पूर्णेक्षुकांभोधि समुद्भवामिमां माणिक्य मुक्ता फलदाममंजुलाम्।
श्रीचण्डिके चंड विनाशकारिणि स्नानार्थमंगीकुरु शर्करां शुभाम्॥

सुगंधितद्रव्य स्नानं- एतच्चम्पक तैलमम्ब विविधैः पुष्पैर्मुहुर्वासितम्।
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृङ्गैर्भ्रमद्भिर्वृतम्।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरमितो हस्तैर्धृतं ते मया केशेषु भ्रमरप्रभेषु सकलेष्वङ्गेषु चालिप्यत॥

उद्वर्तनं- मातः! कुंकुम पङ्क निर्मित मिदं देहे तवोद्वर्तनम्। भक्त्याऽहं कलयामि हेम रजसा सम्मिश्रितं केसरैः। केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकोदञ्चितैः,
स्नानं ते नवरत्न कुम्भसहितैः संवासितोष्णोदकै॥

पंचामृत स्नानं- दधि दुग्ध घृतै स माक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः।
स्नपयामि तवाहमादरात् जननि! त्वां पुनरुष्ण वारिभिः॥

तीर्थजल- एलोशीर-सुवासितैः सकुसुमैर्गङ्गादि तीर्थोदकैः, माणिक्यामल मौक्तिकामृत युतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः। मन्त्रान् वैदिक तांत्रिकान् परिपठन् सानंदमत्यादरात्,
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि! स्नेहात् त्वमङ्गी कुरु॥

श्री महालक्ष्माद्यावाहित देवताभ्यो नमः "मूल मंत्रेण पंचोपचारैः संपूज्य। उत्तरे निर्माल्यं विसृज्य पुनः संपूज्य अभिषेकं कुर्यात्।"

अभिषेक के लिये पात्र में जल, गंध, पुष्प, दुग्ध, सुगंधित द्रव्य आदि डाले। देवीसूक्त, श्रीसूक्त, शक्रादयस्तुति, देव्यथर्वशीर्ष कनकधारा आदि स्तोत्र का पाठ करे।

शुद्धोदक स्नानं- उद्गंधैरगरुद्भवैः सुरभिणा कस्तूरिका वारिणा, स्फूर्जत्सौरभ यक्ष कर्दम जलैः काश्मीर नीलैरपि पुष्पांभोभिरशेष तीर्थ सलिलैः कर्पूरवासोभरैः।
स्नानं ते परिकल्पयामि कमले भक्त्या तदंगीकुरु।

वस्त्रं- बालार्कद्युति दाडिमीय कुसुम प्रस्पर्धि सर्वोत्तमम्, मातस्तवं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्या मया कल्पितम्। मुक्ताभिर्ग्रथितं सुकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभम् तप्तस्वर्ण समान वर्णमतुलं प्रावर्णमङ्गी कुरु॥

आचमनीयं- भूपाल दिक्पाल किरीट रत्नमरीचिनी राजित पाद पीठे।
देवैः समाराधित पादपद्मे श्रीचंडिके स्वाचमनं गृहाण॥

पादुका समर्पणं- नवरत्न मये मयाऽर्पिते, कमनीये तपनीय पादुके।
सविलासमिदं पद द्वयम्, कृपया देवि! तयोर्निधीयताम्॥

केश प्रसाधनं- बहुभिरगुरु धूपैः सादरं धूपयित्वा, भगवति! तवकेशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा। सुरभिभिर विन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा, झटिति कनक सूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि॥

सुरमा कज्जलं- सौवीराञ्जनमिदमम्ब चक्षुषोस्ते, विन्यस्तं कनकशलाकया मयायत्। तन्न्यूनं मलिनमपि त्वदक्षि सङ्गात् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयता मुपेयात्॥

कज्जलं सं- चांपये कर्पूरक चन्दनादिकै, र्नानाविधै गंध चयैः सुवासितम्। नैत्रांजनार्थाय हरिन्मणिप्रभं श्रीचंडिके स्वीकुरु कज्जलं शुभम्॥

गंध सं.- प्रत्यंगं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोञ्छनं कुर्वे केशकलाप मायततरं धूपोत्तमैर्धूपितम्। काश्मीरेगरु द्रवर्मलयजैः संघर्ष्य संपादितं, भक्त त्राणपरे श्रीकृष्ण गृहिणि श्री चंदनं गृह्यताम्।

अनुलेपनं (कुमकुम) मातः भालतले तवाति विमले काश्मीर कस्तूरिका, कर्पूरागरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः। वक्षोजादिषु यक्षकर्दम रसं सिक्त्वा च पुष्प द्रवम्, पादौ चंदन लेपनादिभरहं सम्पूजयामि क्रमात्॥

अक्षतम्- रत्नाक्षतैस्त्वांपरि पूजयामि, मुक्ता फलैर्वारुचिरार विन्दैः। अखण्डितैर्देवि यवादिभिर्वा काश्मीर पङ्काङ्कित तण्डुलैर्वा॥

आभूषणं सं- मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरां विन्यस्यकाञ्ची कटौ, मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्र मालां गले। केयूराणि भुजेषु रत्नवलय श्रेणीं करेषु क्रमात् ताटंके तव कर्णयो र्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम्॥ धम्मिले तवदेवि हेमकुसुमान्याधाय भाल स्थले, मुक्ता राजि विराजमान तिलकं नासापुटे मौक्तिकम्॥ मातः मौक्तिक जालिकां च कुचयोः सर्वांगुलीषूर्मिकाः, कट्यां काञ्चन किङ्किणी र्विनिदधे रत्नावतंसं श्रुतौ॥

परिमल द्रव्यं- जननि चम्पक तैलमिदं पुरो मृगमदोप युतं पटवासकम्। सुरभि गंधमिदं च चतुः समम्, सपदि सर्वमिद प्रतिगृह्यताम्।

सिन्दूरं- सीमन्ते ते भगवति मयासादरं यस्तमेतत्, सिन्दूरं मे हृदय कमले हर्ष वर्ष तनोतु। बालादित्य द्युतिरिव सदालोहिता यस्य कान्तिः, अन्तर्ध्वान्तं हरति सकलं चेतसा चिन्तयैव॥

पुष्पं स.- मंदारकुन्द करवीर लवङ्गपुष्पैः त्वांदेवि सन्ततमहं परिपूजयामि जाती जपा वकुल चम्पक केतकादि, नाना विधानि कुसुमानि चतेऽर्पयामि। मालती वकुलहेम पुष्पिका, कोविदार करवीरकैतकैः। कर्णिकार गिरि कर्णिकादिभिः पूजयामि जगदंब ते वपुः।

परिजात- शतपत्र पाटलै, मल्लिका वकुल चम्पकादिभिः। अम्बुजैः सुकमलैश्च सादरम्, पूजयामि जगदंब ते वपुः॥

पुष्प माला सं. पुष्पौघैर्द्योतयन्तैः सततपरिचलत्कान्ति कल्लोल जालैः। कुर्वाणा मज्जदन्तः करण विमलतां शोभितेव त्रिवेणी॥ मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणि निर्मिता दीप्यमानैर्नित्यं। हारत्रयीत्वं भगवति कमले गृह्यतां कंठमध्ये॥

॥ अथांग पूजा ॥

गंध, अक्षत, पुष्प चर्चितकर एकीकृत करे एवं अंग पूजा करे- **ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि। ह्रीं मंगलायै नमः गुल्फौ पूजयामि। ह्रीं भगवत्यै नमः जंघे पूज.। ह्रीं कौमार्यै नमः जानुनी पू.। ह्रीं वागीश्वर्यै नमः उरौ पूज.। ह्रीं वरदायै नमः कटीम् पूज.। ह्रीं पद्माकरवासिन्यै नमः स्तनौ पूज.। ह्रीं महिषार्दिन्यै नमः कंठं पूज.। ह्रीं उमासुतायै नमः स्कंधौ पूज.। ह्रीं इन्द्राण्यै नमः भुजौ पूज.। ह्रीं गौर्यै नमः हस्तौ पूज.। ह्रीं मौहवत्यै नमः मुखं पूजयामि। ह्रीं शिवायै नमः कर्णौ पूज.। ह्रीं अन्न पूर्णायै नमः नेत्रे पूज.। ह्रीं कमलायै नमः ललाटं पूज.। ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः सर्वागं पूजयामि॥**

॥ अथ आवरण पूजा पश्चादग्रे पूजा विधानम् ॥

(यंत्र पर पूजन तर्पण किया हो तो यंत्र को शुद्ध कर, पञ्चोपचार पूजन करें मण्डल पर रखें) तदग्रे -

श्वेतचूर्णम् - **मंदार मल्ली करवीर संभवं, कर्पूरपाटीर सुवासितं सितम्।**
श्री श्वेत चूर्णं विधिना समर्पितं, प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे॥

रक्तचूर्णम् - **प्रत्युष कालार्क मयूख सन्निभं, जातिफलैलागरुणा सुवासितम्।**
श्री रक्तचूर्णं मनसा मयाऽर्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे॥

हरिद्रा समर्पयामि - **हरिद्रुमोत्थामति पीतवर्णां सुवासितां चन्दन पारिजातैः।**
अनन्यभावेन समर्पितांते मातर्हरिद्रामुररी कुरुष्व॥

धूपं दर्शयामि - **लाक्षा सम्मिलितैः सिताभ्रसहितैः, श्रीवास सम्मिश्रितै कर्पूरा कलितैः सितामधुयुतैर्गो सर्पिषाऽऽलोडितैः॥ श्री खण्डागरु गुग्गुल प्रभृतिर्नाना विधैर्वस्तुभिः।**
धूपं ते परिकल्पयामि, जननि स्नेहात् त्वमङ्गी कुरु॥

नीराजनं दर्शयामि- **रत्नालंकृत हेमपात्र निहितैर्गो सर्पिषाऽऽलोडितैः। दीपै दीर्ध तरान्धकार - भिदुरैर्बालार्क कोटिप्रभैः॥ आताम्र ज्वलदुज्ज्वल प्रविलसद् रत्नप्रदीपैस्तथा।**
मातः त्वामहमादरादनु - [illegible]नं नीराजयाम्युच्चकैः॥

॥ अथ नैवेद्य निवेदन विधि ॥

अपने दक्षिण व देवी के अग्रभाग में जल या गंध से चतुरस्त्र बनायें उस पर नैवेद्य पात्र रखें। **'ह्रीं नमः'** कहकर सामान्यर्घ जल से प्रोक्षण करे। मूलमंत्र पढ़कर देखिये, दाहिने हाथ को अधोमुख करें उसके पृष्ठ पर बाँया हाथ रखकर नैवेद्य को आच्छादित करें और वायु बीज **'यं'** सोलह बार जपे एवं अग्नि बीज **'रं'** सोलह बार जपे इससे शुद्धि-अशुद्धि दोष नष्ट होता है। तदन्तर बाँये हाथ को अधोमुख करें उसके पृष्ठ पर दक्षिण हाथ रखें नैवेद्य की ओर हाथ रखें अमृत बीज **'वं'** का सोलह बार जप कर नैवेद्य के अमृतमय होने की भावना करें। धेनुमुद्रा दिखावें आठ बार मूल मंत्र जाप करके गंध पुष्प चढ़ावें, बाँये अँगुठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करें। दाहिने हाथ में जल पात्र लेवें।

मंत्र -

चतुर्विधानं सघृत सुवर्णपात्रे मया देविसमर्पितं तत्।
संवीज्यमाना ऽमरवृन्दकैस्त्वं जुषस्व मातर्दयया ऽवलोकम्॥

श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि (यह पढ़कर देवी के दक्षिण भाग में जल

छोड़ें)बाँयें हाथ की अनामिका मूल और अंगुष्ठ से नैवेद्य मुद्रा दिखायें, पात्र में पुष्प, तुलसी मञ्जरी या शमीपत्र छोड़ें।

॥भगवति! निवेदितानि हवींषि जुषाण॥

ग्रासमुद्रा दिखावें। बाँयें हाथ को पद्माकार करें एवं दाहिने हाथ से मुद्रा दिखायें।

(कनिष्ठिका, अनामिका व अँगुष्ठ के संयोग से) - '**ह्रीं प्राणाय स्वाहाः**' (तर्जनी, मध्यमा व अँगुष्ठ के संयोग से) - '**ह्रीं अपानाय स्वाहाः**' (तर्जनी, अनामिका, मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से) - '**ह्रीं व्यानाय स्वाहाः**' (अनामिका, मध्यमा व अंगुष्ठ के संयोग से) - '**ह्रीं उदानाय स्वाहाः**' (सर्वांगुलिभिः) - **ह्रीं समानाय स्वाहाः**

भावना करे देवी प्रसाद ग्रहण कर रही है। ततो '**जलं दद्यात्**'। प्रार्थना -

नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्ति करं परम् । अखण्डानन्द सम्पूर्णे गृहाण जलमुत्तमम् ॥

श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः जलं समर्पयामि। अन्तः पट करें। **ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्तात् सिंजद्वाल, व्यञ्जन निकरैर्वीज्यमाना सखीभिः। नर्मक्रीड़ा प्रहसन परान् पंक्ति भोक्तृन् हसन्ती, भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान देव देवी ॥१॥ शाली भक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं, सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्यम्॥ आज्यं प्राज्यं सुभोज्यं नयन रुचि करं राजिकैलामरीचैः। स्वादीय शाकराजी परिकर ममृताहारजोषं जुषस्व ॥२॥**

अन्तर्पट करें, तदन्तर आचमनीय पात्र से आचमन करायें। सात बार मूल मन्त्र जपे, **श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो मध्ये पानीयं समर्पयामि।** (भावना करें देवी अपने परिवार मण्डल सहित नैवेद्य ग्रहण कर रही है। मूल मंत्र का जाप करें।)

प्रार्थना - **सापूप सूप दधिदुग्धसिता घृतानि, सुस्वादु भक्ष्य परमान्न पुरः सराणि । शाकोल्लसन्मरि च जीरक वाल्हिकानि, भक्ष्याणि भक्ष्य जगदम्ब मयाऽर्पितानि ॥**

दुग्धं निवेदनम् - **क्षीर मेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुत्तमम मधु । मातरेतदमृतोपमं पयः, सम्भ्रमेण परिपीयतां मुहुः ॥**

आचमनीयम् - **गङ्गोत्तरी वेग समुद्भवेन सुशीतलेनाति मनोहरेण । त्वं पद्म पत्राक्षि मयाऽर्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्वं ॥**

पाणिमुखप्रक्षालनं- **उष्णोदकैः पाणि युगं मुखं च, प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे । कर्पूर मिश्रेण स कुंकुमेन, हस्तौ समुद्र्तय चन्दनेन ॥**

फलानि सम- **जम्बाम्र रंम्भाफल संयुतानि, द्राक्षाफल क्षौद्रसमन्वितानि । सनारिकेलानि सदाडिमानि, फलानि ते देवि समर्पयामि ॥ कूष्माण्ड कोशातकि संयुतानि, जम्बीर नारिङ्ग समन्वितानि । स बीजपूराणि स बादराणि, फलानि ते देवि समर्पयामि ॥**

ताम्बूलं सम.- **कर्पूरेण युतैर्लवङ्ग सहितैस्तकंकोल चूर्णान्वितैः, सुस्वादु क्रमुकैः सगौर खदिरैः सुस्निग्ध जाती फलैः। मातः कैत कपत्र पाण्डुरुचिभिस्ताम्बूल वल्लीदलैः, सानन्दं मुख मण्डनार्थमतुलं ताम्बूलमङ्गीकुरु॥ एलालवङ्गादि समन्वितानि कंकोल कर्पूर विमिश्रितानि। ताम्बूलं वल्लीदल संयुतानि पूगानि ते देवि समर्पयामि ॥**

दक्षिणा सम.- अथ बहुमणिमिश्रैमौक्तिकैस्त्वां विकीर्य्, त्रिभुवन कमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः।
मिलित विविध मुक्तै र्दिव्य लावण्य युक्ताम्, जननि कनक वृष्टिं दक्षिणां ते ऽर्पयामि॥

आरार्तिकं- महतिकनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान् डमरु सदृशरूपान् पक्व गोधूम् दीपान् ।
बहुधृतमय तेषुन्यस्त दीपान् प्रकृष्टान्, भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्तिकं ते॥
सविनयमथ दत्वा जानुयुग्मं धरण्याम्, सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारार्तिकस्य ।
मुखकमल समीपे तेऽम्ब सार्थ त्रिवारम्, भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः ॥

प्रदक्षिणा - पदे पदे या परिपूजकेभ्यः, भू सद्योऽश्व मेधादिफलं ददाति ।
तां सर्व पाप क्षय हेतु भूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

विशेषार्घ - कलिङ्गकोशातक संयुतानि, जंबीर नारिंग समन्वितानि ।
सुनारिकेलानि सदाडिमानि, फलानि ते देवि समर्पयामि ॥

छत्रं समर्पयामि - मातः काञ्चन दण्ड मण्डित मिदं पूर्णेन्दु बिम्ब प्रभं नानारत्न विशोभि हेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम् । भास्वन मौक्तिक जालिका परिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतम्, छत्रं ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम् ॥

चामरंसमर्पयामि- शरदिन्दु मरीचि गौरवर्णैः, मणिमुक्ता विलसत् सुवर्ण दण्डैः ।
जगदम्ब विचित्र चामरैस्त्वाम्, अहमानन्दभरेण वीजयामि॥

दर्पणं समर्पयामि- मार्तण्डमण्डल निभो जगदंब योऽयम् भक्त्यामया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते ।
पूर्णेन्दु बिम्ब रुचिरं वदनं स्वकीयम् अस्मिन् विलोक्य विलोल विलोचने त्वम् ॥

अश्व समर्पयामि - प्रियगतिरति तुङ्गो रत्न पल्याण युक्तः, कनकमय विभूषः स्निग्ध गंभीर घोषः ।
भगवति कलितोय वाहनार्थं मयाते, तुरङ्ग शतसमेतो वायु वेगस्तुरङ्गः ॥

गज समर्पयामि - मधुकर वृत्तकुंभो न्यस्त सिन्दूर रेणुः, कनक कलित घण्टा किङ्किणी शोभि कण्ठः।
श्रवण युगल चञ्चच्चामरो मेघतुल्यो, जननि तव मुदे स्यान्मत्त मातङ्ग एषः ॥

रथ समर्पयामि - द्रुतम तुरगैर्विराजमानम्, मणिमय चक्र चतुष्टयेन युक्तमू ।
कनकमयममुं वितानवन्तम्, भगवति तेहि रथं समर्पयामिं ।

सैन्य नमः - हयगज रथपत्ति शोभमानं दिशिदिशि दुन्दुभि मेघनाद युक्तम् ।
अभिनव चतुरङ्ग सैन्यमेतत्, भगवति भक्ति - भरेण तेऽर्पयामि ॥

दुर्ग समर्पयामि - परिखी कृत सप्तसागरम्, बहु सम्पत् सहितं मयाम्ब ते विपुलम् ।
प्रबलं धरणी तलाभिधम् दृढ दुर्गमिदं निखिलं समर्पयामि ।

व्यञ्जन समर्पयामि -शतपत्र युतैः स्वभावशीतैः, अति सौरम्य युतैः परागपीतैः ।
भ्रमरी मुखरी कृतैरनन्तैः, व्यञ्जनैस्त्वां जगदंब वीजयामि ॥

नृत्यं समर्पयामि - भ्रमर विलुलित लोलकुन्तलाली, विगलतिमाल्य विकीर्ण रङ्गभूमिः ।
इयमति रुचिरा नटीनटन्ती, तव हृदये मुदमातनोतु मातः ॥१॥

रुचिर कुच तटीनां नाद्यकाले नटीनां प्रतिगृहमथ ते च प्रत्यहं प्रादुरासीत् ।
धिमिकि धिमिकि धिद्धि धिद्धि धिद्धीति धिद्धि, थिमिकि
थिमिकि तत्तत् थैपी थैपीति शब्द ॥२॥
डमरु डिण्डिम जर्झर झल्लरी, मृदुरवार्द्र घटार्द्र घटादय ।
झटिति झांकृत झांकृत झांकृतैः, बहुदयं हृदयं सुखयन्तु ते ॥३॥

इसके बाद ताम्रपात्र में दधि, लवण, सर्षप, दूर्वा, अक्षत् छोडें, देवी पर दृष्टिदोष का उत्तारन करें।

दृष्ट्या प्रदृष्ट्या खलुदृष्ट दोषान् संहर्तुमारात्मप्रथित प्रकाशा ।
जनो भवेदिन्द्रपदाय यौग्यस्तस्यै तवेदं लवणाक्षिदोषम् ॥

स्तुति- तव देवि गुणानुवर्णने चतुरानो चतुराननादयः ।
तदि हैक मुखेष जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्तुमीश्वरः ॥

प्रदक्षिणा- पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्व मेधादिफलं ददाति ।
तां सर्व पापं क्षय हेतुभृताम्, प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

प्रणाम सम. - रक्तोत्पला रक्ततल प्रभाभ्याम्, ध्वजोर्ध्व रेखा कुलिशाङ्किताभ्याम् ।
अशेष वृन्दारक वन्दिताभ्याम्, नमोभवानी पदपङ्कजाभ्याम् ॥

पुष्पाञ्जलि - चरण नलिन युग्मं पङ्कजैपूजयित्वा कनक कमल मालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते हृदयकमले मध्ये देवि हर्ष तनोतु ॥

भवन समर्पयामि - अथ मणिमय मञ्चकाभिरामे कनकमय वितान राजमाने ।
प्रसरदगरु धूपधूपितेऽस्मिन् भगवति भवने अस्तु ते निवासः ॥

पर्यङ्क समर्पयामि - एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे, त्रैलाक्याभय वरदो निधाय पादौ ।
विस्तीर्णे मृदुल तरोत्तरच्छदेऽस्मिन् पर्यङ्के कनकमये निषीद मातः ॥

अलक्तकं - तवदेवि सरोज चिह्नयोः पदयोर्निर्जित पद्मरागयोः ।
अति रक्त तरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्ताम् ॥

गण्डूष - अथमातरुशीरवासितं निजताम्बूल रसेन रंजितम् ।
तपनीय मये हि पट्टके, मुख गण्डूष जलं विधीयताम् ॥

सायंकालीन शयन प्रार्थना करें।

शयन प्रार्थना - क्षणमथ जगदम्ब जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् मृदुत्तर तूलिकया विराजमाने ।
अति रहसि मुदा शिवेन सार्द्धम् सुख शयनं कुरु मां हृदिस्मरन्ती ॥

॥ ध्यानम् ॥

मुक्ताकुन्देन्दु गौरां मणिमय मुकुटां रत्नताटङ्क युक्ताम् ।
अक्षस्त्रक् पुष्प हस्तामभय वर करां चन्द्र चूडां त्रिनेत्राम् ।
नानालङ्कार युक्तां सुर मुकुटमणि मणिद्योतित स्वर्ण पीठाम् ।
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवन जननीं चेतसा चिन्तयामि ।

॥ क्षमाप्रार्थना ॥

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा स्वीकृत्यैना सपदि सकलान् मेऽपराधान क्षमस्व ।
न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः सानन्दं मे हृदय पटले तेऽस्तु नित्यं निवासः ॥

॥ इति देवि राजोपचार पूजनम् ॥

॥ अथ दुर्गा दीपदान प्रयोगः॥

(नागोजीभट्ट मतेन्) चार अंगुल ऊंची एवं सौलह अंगुल चौड़ी चतुरस्त्र वेदी बनायें। विशेष प्रयोग हेतु सोलहमाषे की देवी की मूर्ति बनाये उसे कलश पर स्थापित करे। देवी के आगे चतुरस्त्र वेदी पर घटार्गल यंत्र या षट्कोण यंत्र पर दीप पात्र रखे। तेरह पात्रों में तेरहमुख वाले १३ दीप रखे यह उत्तम पक्ष है। एक पात्र में १३ दीपक रखें यह मध्यम पक्ष है। एक ही पात्र, एक ही में दीप में १३ वर्तिका से पूजन करे यह अधः पक्ष हैं। एक-एक दीप पात्र में ११-११ वर्त्तिका रखे तो १३ दीपपात्रों में कुल १४३ वर्तिका हुई। सर्वारिष्ट निवारण हेतु एवं दुर्गादेवता की प्रसन्नता हेतु दीपदान का संकल्प करे। प्रधान देवता की पूजन पश्चात् दुर्गासप्तशती का पाठ प्रारंभ करे। १३ दीपक एक साथ जलावे यह उत्तम पक्ष हैं। एक -एक अध्याय पर एक एक दीप जलाकर दीप पूजा करे यह मध्यम पक्ष है। प्रथम दीप में दुर्गासप्तशती के प्रथम अध्याय के देवता का आवाहन पूजन करे। दुर्गा के नव मंत्रों से पुष्पाक्षत समर्पण करे।

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् । निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥१॥
एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा । विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥२॥
स्तुतासुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रयात्तथासुरेन्द्रेणदिनेषु सेविता
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरीशुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥३॥
या साम्प्रतंचौद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशाच सुरैर्नमस्यते ।
याचस्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥४॥
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥५॥
सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥६॥
सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते ॥७॥
शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे । सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥८॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥९॥

शत्रुनाश हेतु- **सर्वाबाधाप्रशमनं अथवा एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्॥** मंत्र भी पढ़े।

विशेष अनुग्रह हेतु, धनप्राप्ति हेतु बिल्वदल, वश्यकाम हेतु करवीर पुष्प, पुत्रप्राप्ति हेतु जपाकुसुम, पुष्टि के लिये तुलसीदल (परन्तु दुर्गा के तुलसी अर्पण नहीं होती हैं तुलसीदल का अर्थ मंजरीदल समझना चाहियें) महाकार्य हेतु कमल का पुष्प अर्पण करते हुये नवश्लोक पढ़े प्रति श्लोक एक पुष्प अर्पण करे। नवश्लोकों से पुष्पार्चन करने के पश्चात् प्रथम अध्याय का पाठ प्रारम्भ करे। अध्याय समाप्ति पर पुष्प, धूप, दीप पायस नैवेद्य ताम्बूल अर्पण कर नीराजन करे।

एक ब्राह्मण, कुमारी व सुवासिनी को भोजन कराये या समयान्तरेण भोजयिष्ये का संकल्प करे। इस तरह प्रति अध्याय एक एक दीपक की नौ श्लोकों से पुष्पार्चन कर उस अध्याय के देवता का (अध्याय पहले जो ध्यान मंत्र हैं उसका ध्यान मंत्र से) पूजन करे। अध्याय समाप्ति पश्चात् पुनः दीपक का गंधाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य अर्पण कर नीराजन करे पश्चात् ब्राह्मण, कुमारी, सुवासिनी भोजन का संकल्प करे। इस तरह प्रति अध्याय करे। अंत में महाप्रसादादि अर्पण कर प्रधान देवता की पूजा पूर्वाह्न में समाप्त कर अपराह्न में विसर्जन करे। यह प्रयोग ११, २४ या ५० दिन करे। प्रयोग करते समय तदंग देवता का प्रति अध्याय तर्पण करते रहे तो श्रेष्ठ हैं।

॥ इति दुर्गादीपदान प्रयोगः ॥

॥ कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद ॥

दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है, इनको अलग-अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं- (तंत्र ग्रंथ एवं निर्णय सिन्धु)

१. **महाविद्या क्रम** - प्रथम, मध्यम, उत्तर चरित्र - सर्वकामना हेतु।

२. **महातंत्री** - उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र - शत्रुनाश, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु।

३. **चण्डी** - उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र - शत्रुनाश।

४. **महाचण्डी** - उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र - शत्रुनाश, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु।

५. **सप्तशती** - मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र - लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उत्कीलन।

६. **मृतसंजीवनी** - मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र - आरोग्य लाभ।

७. **रूप दीपिका** - प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र - विजय व आरोग्य । (**रूपं देहि जयं देहि** से संपुटित)

८. **निकुंभला** - मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र - रक्षा हेतुः, विजय हेतु। (**शूलेन पाहि नो देवि** से संपुटित)

९. **योगिनी** - बालोपद्रव शमन। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बधित योगनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को व शं. षं. से सम्पुट)

१०. **विलोम (संहार क्रम)** - ७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से।

११. **अक्षरशः विलोम पाठ** - १३ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है व १०० - १२० वर्ष पहिले के छापी हुई है।

इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहिले भैरव नामावलि पाठ का विधान भी मिलता है। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामावलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है।

कई विद्वान कहते है कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लग सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते हैं।

स्वयं दतिया के स्वामीजी ने चीन के आक्रमण के समय बगलामुखी के संपुट से सहस्त्र चण्डी पाठ का आयोजन किया था।

दुर्गा सप्तशती के सभी दशमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मंत्र, मृत्युञ्जय मंत्र, भागवत के मंत्रों का, वैदिक मंत्रों का व

अन्य कई मंत्रो का संपुट लगाया जा सकता है। दुर्गार्चनसृतिः, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मंत्रों के संपुट के विषय में लिखा हैं।

मेरे व्यक्तिगत अनुभव में सप्तशती क्रम (२, १, ३ चरित्रों के पाठ) से अधिक सफलता मिलती है। क्योंकि इस क्रम में पाठ का उत्कीलन भी हो जाता है।

स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठ "शूलेन पाहिनो पाहि" का संपुट लगाता था।

॥ १२. अथ सार्द्ध नवचण्डी प्रयोगः॥

नवसार्धं जपेद्यस्तु मुच्येत्प्राणान्तकाद्भयात् । राज्यं श्रीः सर्वसम्पत्तिः सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥१॥
प्रयोगोऽयं महागुह्यो देवानामपि दुर्लभः । तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि सावधानाऽवधारय ॥२॥
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् । शक्रादिस्तुतिरेवातोदेवीसूक्तं पुनस्तथा ॥३॥
नारायणी स्तुतिश्चैव फलानुकीर्तनं तथा । ततो वरप्रदानं तु ह्यर्ध पाठोऽय मुच्यते ॥४॥
अर्ध पाठस्त्वयं प्राक्तः सर्वकामफलप्रदः । अर्ध पाठेन रहितं नवपाठ फलं नहि ॥५॥

अत्रार्ध पाठे पंचमाध्याये देवा ऊचुः नमो देव्यै इत्यारभ्य ऋषिरुवाचेति पर्यन्तमिति। ब्राह्मणास्त्वत्रैकादश। तेषुनव ब्राह्मणाः पूर्ण त्रयोदशाध्याय पाठ कर्त्तारः एकोर्ध पाठ कर्ता। एकोयजुर्वेदीय षडंगाध्याय पाठकः एवमेकादश ब्राह्मणाः प्रयोग कर्त्तारः इति॥

अर्थात् दुर्गा अनुष्ठान में एकादश ब्राह्मणों का वरण करें तो नव ब्राह्मण दुर्गासप्तशती के सभी तेरह अध्यायों का पठन कर रहस्यादि पाठ करें एक ब्राह्मण यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी का पाठ करें, एक ब्राह्मण दुर्गासप्तशती का अर्द्ध पाठ करें। अर्द्ध पाठ हेतु **कवच, अर्गला, कीलक, नवार्ण जप प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र के बाद पञ्चम अध्याय के देवाउचुः से प्रारंभ कर नमस्तस्यै स्तुति - या साम्प्रतम् चोद्धत्........** । तक करने के बाद **एकादश अध्याय** पूर्ण, **त्रयोदश अध्याय** से -**देव्युवाच .... सावर्णि भविता मनुः**। पर्यन्त (वर प्रदान स्तोत्र) पढ़ें। पुनः नवार्णमंत्र जप रहस्यादि कर पठन करें।

॥ दुर्गापाठे पाठवृद्धिक्रम विचार॥

वृद्धि पाठ क्रम ५ दिन का प्रयोग होता हैं। यह क्रम बिना संपुट क्रम के ही सुलभ हैं। पहले दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार पाठ करने से १० पाठ चार दिन में प्रति ब्राह्मण द्वारा करने पर १० ब्राह्मणों द्वारा शतचण्डी विधान हुआ। एक मूल पाठ के साथ में १० माला नवार्ण की अलग से जपने का विधान हैं। ५ वें दिन दशांश होम करके कुमारी ब्राह्मणभोजन करायें।

॥ दुर्गा पाठे संपुट पाठ विधिः॥

पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने को संपुटीकरण कहते हैं। संपुट पाठ ३ प्रकार के होते हैं। **१. उदय संपुट २. अस्त संपुट ३. अर्द्धसंपुट।**

१. "**उदय संपुट**" में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता हैं।

२. "**अस्तसंपुट**" बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढे फिर दुर्गापाठ मंत्र पढे पश्चात् अंत में कामना मंत्र विलोम

रूप से उच्चारण करे। यथा- **हौं जूंसः 'ऐं मार्कण्डेय उवाच' सः जूं हौं। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरेवण्यम्......प्रचोदयात् ''ऐं मार्कण्डेय उवाच'' द्यादचोप्र नः यो योधि...... स्वः भुवःभूः ॐ।**

३. ''**अर्द्ध संपुट**'' कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अंत में केवल एक बार पढें। इसका फल न्यून हैं परन्तु विपरीत प्रभाव नहीं होता हैं।

४. तंत्र मार्ग के अनुसार व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोम तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है।

५. भिन्नपाद प्रयोग - मंत्र के चरण भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मंत्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना कि जा सकती है। इस पद्धति से प्रयोग विधि स्वतंत्र पुस्तक में प्रकाशित की जायेगी।

॥ संपुटित पाठ होमे आहुति संख्या विचारः॥

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं ''**संपुटे हवनं नास्ति**'' के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। आचार्य मतों का अवलोकन करने के पश्चात मेरे स्वमत का अवलोकन अवश्य करे। मूल पाठ के साथ अलग से १० माला नवार्ण की पृथक् करे।

मार्कण्डेय पुराणोक्तं दशकृत्वः सुचेतसः। नवार्ण चण्डिका मंत्रं जपेयुश्चायुत पृथक्॥

अथ दुर्गा के १० पाठ के साथ पाठ का दशांश व मंत्र जाप का दशांश होम पृथक् पृथक् करे।

संपुट होम विषये दुर्गाकल्पद्रुमे प्रयोगसंग्रहोक्त कदाचित् संपुटैयुरक्त पठेत् सप्तशती स्तवम्। ससंपुटं पठेद्धोमे हुनेत् सप्तशताहुतीः॥ अथ संपुटित पाठ होमेऽपि आहुती संख्यां सप्तशतवत्याह।

कर्मठगुरु (प्र.सा.)- **सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्पे होमन्तु विपुलं चरेत्।।**

अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु ऐसा बहुधा करते तो हैं। परन्तु **दुर्गाकल्पतरु** एवं **अनुष्ठान प्रकाश** में आहुति संख्या **२१००** स्पष्ट लिखी गई हैं। यथा-

होमकाले बीजसंयोगो दुर्गा मंत्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगो दुर्गामंत्रेण संहुनेत् ॥१॥
दुर्गास्तवन मंत्राणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मंत्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश ॥२॥
मध्ये मंत्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मंत्रं पुटं वाच्यं होम मंत्राः पृथक् पृथक् ॥३॥
होमसंख्या च मंत्राणां शतं वै चैकविंशतिः। पाठे बीज पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत् ॥४॥

स्वमतानुसारेणः- दुर्गापाठ मंत्र को अगर किसी **ऐं ह्रीं, श्रीं,** या किसी बीज मंत्र से पुटित किया जाता हैं तो पुटित कामना मंत्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं हैं। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या ५-७ बीजाक्षर होवे तो एक ही आहुति होगी। अत: ७०० आहुति देवे। **अस्त संपुट** में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में **कामना मंत्र** या **बीजाक्षर** विलोम होगा। व्याहृति व बीजाक्षरों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगता है अत: विलोमाक्षर पृथक् होम नहीं करने पर केवल ७०० आहुति देवे। मारणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मंत्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे।

प्राय: **उदय संपुट** पाठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मंत्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अत: २१०० आहुति देवे।

॥ कामना सिद्धि परत्वेन संपुटा मंत्राः॥

कामनासिद्धि सप्तशती के श्लोक, गायत्री, दशमहाविद्या, बटुक, मृत्युञ्जय, दधिवामन, नृसिंह व पंचओंकार देवताओं के मंत्र तथा पुराणोक्त मंत्रों के संपुट से तत्कामना सिद्धि प्राप्त होती है।

सप्तव्याहृतिपूर्वकं श्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥१॥ अन्यच्च : **सव्याहृतिकां गायत्रीमादावन्ते वा कृत्वा श्लोकं जपेत् तदा महाफलम्** ॥२॥ अन्यच्च : **प्रतिश्लोकं व्याहृतित्रययुतां गायत्रीं जपेत् तदा महाफलम्** ॥३॥ अनयच्च : **प्रतिश्लोकमादावन्ते ''जातवेदसे सुनवास सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितान्यग्निः'' इति ऋचं जपेत्। सर्वकामसिद्धि** ॥४॥

अन्यच्च : **ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। जातवेदसे सुनवास सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। इति शताक्षरत्र्यम्बकमन्त्रेण सम्पुटीकृत्य मन्त्रं पठेत्। रोगारिक्षयमृत्यून्मूलनं सर्वापद्विनिवारणमभीप्सितप्राप्तिः** ॥५॥

अन्यच्च : प्रतिश्लोकं **शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।** इति श्लोकं पठेत्। सर्वकार्यसिद्धिः ॥६॥ अन्यच्च : प्रतिश्लोकं **करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः। इत्यर्धं पठेत् सर्वकामाप्तिः** ॥७॥ अन्यच्च : प्रतिश्लोकम्। **एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः। सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।** इत्याद्यन्तं पठेत् स्वाभीष्टवरप्राप्तिः ॥८॥ अन्यच्च : **दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचिता।** इति श्लोकं प्रति श्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सर्वापत्तिनिवारणं स्यात्** ॥९॥ अन्यच्च : **ॐ कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।** इति ऋचं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **लक्ष्मीप्राप्तिः** ॥१०॥

अन्यच्च : **ॐ मनृणा इत्यादि ऋचं** प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **ऋणपरिहारः** ॥११॥ अन्यच्च : **ॐ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्य पदपाठवतां च साम्नाम्। देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सुखप्राप्तौ दारिद्रदुःखभयमोचने च** ॥१२॥ अन्यच्च : **सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **धनधान्यसुखप्राप्तिः** ॥१३॥ अन्यच्च : **या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **मनउत्सवप्राप्तिः** ॥१४॥

अन्यच्च : **ॐ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति। स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेपि फलदा ननु देवि तेन।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सकलकर्मसुकृतप्राप्तिः** ॥१५॥ अनयच्च : **ॐ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सर्वकार्यसिद्धिः**॥१६॥ अन्यच्च : **ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सर्वापन्निवृत्तिः। सर्वकामाप्तिश्च। एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं। दीपाग्रे नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः** ॥१७॥ अन्यच्च : **ॐ रोगानशेषानपहन्सि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सकलरोगनाशः स्यात्** ॥१८॥ अन्यच्च : **उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **सर्वबाधानाशः स्यात्** ॥१९॥ अन्यच्च : **मेधासि देवि**

विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। **वाक्सिद्धिः** ॥२०॥

अन्यच्च **स्तवने : ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२१॥ अन्यच्च : **(भयमोचने) ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु ते।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२२॥

अन्यच्च : **दुः स्वप्नपीडापरिहारे शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने। ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२३॥ अन्यच्च : **(परप्रयोगशमने) ततो निशुंभं सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः। आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२४॥

अन्यच्च : **(अपद्वेषनाशने) तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः। भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२५॥ अन्यच्च : **(मारणार्थे) ॐ एवमुक्त्वा समुत्पत्त्य सारूढा तं महाऽसुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२६॥ अन्यच्च : **(शत्रुपरिहारे) त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेपि हत्वा। नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२७॥ अन्यच्च : **(शत्रुपराभवार्थे) ॐ या देवीसर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः** ॥२८॥ अन्यच्च : **सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपिवा (सर्वबाधानाशने) स्मरन्ममेतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥२९॥

अन्यच्च : **(विषमचित्तशमने) पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले। अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यान्तं पठेत् ॥३०॥ अन्यच्च : **ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्त्ववश्यं मोहनं च इत्यनुभवसिद्धम् ॥३१॥ अन्यच्च : **ॐ रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा। अनेन प्रत्यध्यायमाद्यन्तयोः पूजा सर्वान्ते अयुतं जपाः अयुतमन्त्रैश्च होमयेत् कटुतैलेन रक्तचन्दनराजिकासहस्राहुतिमन्त्रेण राजानं वशमानयेत्। मधुनाशोक पुष्पैश्च रात्रौ हुत्वा तु पूर्ववत्। चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चण्डीमन्त्रप्रभावतः। अन्ते शतं ब्राह्मणाः कुमार्यश्च भोजनीयाः** ॥३२॥ अन्यच्च : **(राजवश्ये) तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि। ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥३३॥

अन्यच्च : **(दुर्जनमोहने) ॐ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता। मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥३४॥ अन्यच्च : **(वैरिमोहने)ॐ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये। सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।** इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥३५॥ अन्यच्च : **ॐ मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते। ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।** इति श्लोक प्रतिश्लोकंसम्पुटिते श्लोकोक्तं फलम् ॥३६॥ अन्यच्च : **ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ। दुर्गा भगवती भद्रा ययेदंधार्यते जगत्। इति प्रतिश्लोकपाठे विद्याप्राप्तिः वाग्वैकृतनाशश्च** ॥३७॥ अन्यच्च : **(मनोप्सितप्राप्त्यै गतप्रयोगप्राप्त्यै च।) परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका। इत्यर्धं पठेत्** ॥३८॥ अन्यच्च : **(देवीसन्तोषप्राप्त्यै) स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्। तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।** इति पठेत् ॥३९॥

अन्यच्च : **प्रतिमन्त्रं प्रणवम् (ॐ) पुटितं जपेत् शीघ्रतर कार्यसिद्धिः अत्र त्रिमध्वाक्तकमलैर्होमः। अत्र विप्रतीर्थतोयैर्वा ब्राह्मणभोजनान्ते मार्जनं कुर्यात्** ॥४०॥ अन्यच्च : **माया (ह्रीं) श्री (श्रीं) (क्लीं) पुटिते**

सर्वेष्ट सिद्धिः ॥४१॥ अन्यच्च : प्रतिश्लोकं कामबीज (क्लीं) सम्पुटितस्यैकचत्वारिंशद्दिनानि त्रिरावृतौ पुत्रप्राप्तिः एकविंशतिदिनपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहं पञ्चावृत्त्या वशीकरणम्। आकर्षणार्थे द्विचत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं कामपुटितस्य दशावृत्तिः ॥४२॥ अन्यच्च : माया बीज (ह्रीं) पुटितस्य फट् पल्लवसहिस्य त्रिसप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तौ उच्चाटनसिद्धिः तादृशस्यैव चतुश्चत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं सर्वोपद्रवनाशः स्यात् ॥४३॥ अन्यदेकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकम् (श्रीं) इति श्रीबीजसम्पुटितस्य पञ्चदशावृतौ लक्ष्मीप्राप्तिः सद्यो मोहनसिद्धिश्च ॥४४॥ अन्यत् प्रतिश्लोकम् (मैं) बीजसम्पुटितस्यशतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः ॥४५॥

अन्यच्च : मायादौ कूर्चबीजेन सम्पुटितस्य एकादशवृत्तौ। सर्वोपद्रवनाशः स्यात् ॥४६॥ कार्यपरत्वेन सप्तशतीस्तोत्रान्तर्गतप्रति श्लोकप्रयोगेणाहः ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता। अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्त्रं शतं वा जपाः सर्वापत्तिनिवारणं स्यात् ॥१॥ अन्यच्च : ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि। अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्। इति मन्त्रस्य लक्षजपे पुनः स्वराज्यप्राप्तिः ॥२॥

अन्यच्च : ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह। पवमानवितज्जहि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता। इति कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्त्रं शतं वा जपः सर्वापत्तिनिवारणः त्यात् ॥३॥ अन्यच्च : ॐ भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते। यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः। यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि। संस्मृतासंस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः। यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने। तस्य वित्तर्धिविभवैर्धन दारादिसम्पदाम्। वृद्धयेस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके। इति द्वादशोत्तरशताक्षरो मन्त्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च ॥४॥

अन्यच्च : ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य। इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्त्रशतान्यतमे जपे सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च। इति श्लोकेन दीपाग्रे केवलमेव नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः ॥५॥ अन्यच्च : ॐ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ। इति श्लोकं त्रिंशत्सहस्त्रं जपेत्। सम्पत्समृद्धिर्भवति ॥६॥ अन्यच्च : ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्। इति मन्त्रेण मासं जपः दशांशेन क्षीरसंयुतैः कमलैर्होमो वा लक्ष्मीप्राप्तिः ॥७॥ अन्यच्च : ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नरणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति। इति लक्षं जपेत् रोगनाशः स्यात् ॥८॥

अन्यच्च : इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ। दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्। इति लक्षं जपेत् विद्याप्राप्तिः वाग्वैकृतनाशश्च ॥९॥ अन्यच्च : ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव। इत्यनेन सदीपबलिदानं घण्टाबन्धनेन बालग्रहशान्तिः ॥१०॥ अन्यच्च : ॐ इत्थं यदायदा बाधा दानवोत्था भविष्यति। तदातदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्। इति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशान्तिः ॥११॥ अन्यच्च : ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्। इत्यस्य लक्षजपे श्लोकोक्तं फलं सर्वबाधाशमनं च ॥१२॥ अन्यच्च : ॐ एवमुक्त्वा समुपात्य सा रूढा तं महासुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलनैनमताडयत्। इति लक्षं जपेत् मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥१३॥ अन्यच्च : ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। इति श्लोक जपमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभव सिद्धम् ॥१४॥ इति। बालग्रह शांति एवं शत्रु से मैत्री हेतु – बालग्रहाभिभूतानां बालानां शांतिकारकम्।

संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१५॥ प्रेतदोषनाशार्थे – **दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्। रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१६॥** मारण प्रयोग – **तीसरे अध्याय का चालीसवाँ श्लोक (एवमुक्त्वा ... ताडयत्)**

कामना सिद्धि हेतु दुर्गासप्तशती के कुछ मुख्य मंत्रों का संपुट हेतु उल्लेख हैं। दुर्गास्तोत्र के अलावा बाह्य मंत्रों को भी प्रयोग में लाया जा सकता हैं। गायत्री मंत्र, मृत्युंजय मंत्र, दशमहाविद्याओं के मंत्र, भैरवादि के मंत्रों का श्रीसूक्त की ऋचाओं का, श्रीमद्भागवत के कुछ श्लोक का भी संपुट लगाया जा सकता हैं कुछ प्रयोग मेरे स्वयं के अनुभूत हैं।

१. शत्रुस्तंभनेः– ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

२. लक्ष्मीप्राप्तिः– श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।

३. रोगशत्रु एवं अभिचार दमन तथा लक्ष्मी प्राप्ति हेतुः– **श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्री बगलानने ममरिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्रीं श्रीं स्वाहा।** इस मंत्र का प्रयोग जहां कहीं राजकीय बाधा, ग्रहबाधा या प्रेतबाधा के कारण कोई व्यापार बंद की स्थिति में भी पहुँच गया हो वहां मैंने किया है लाभप्राप्त हुआ है सफलता मिली है।

४. सद्यलक्ष्मीप्राप्ति :– ततश्चाऽविरभूत् साक्षच्छ्री (साक्षात् श्री) रमा भगवत् परा। रञ्जयंती दिशः कान्त्याः विद्युत् सौदामिनी यथा ॥ इस मंत्र को बगलामुखी भक्तमंदार मंत्र से पुटित करने से जो मंत्र बनता हैं उससे संपुटित कर पाठ करने पर दयनीय स्थिति व असंभव स्थिति में भी द्रव्य लाभ होता हैं। ऐसा मेरा प्रयोगिक अनुभव हैं। मंत्रो यथा–

५. सर्वसिद्धि एवं लक्ष्मीप्राप्तिः– श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले ततश्चाविरभूत् साक्षाच्छ्री रमा भगवत् परा। रञ्जयन्ती दिशः कान्त्याः विद्युत् सौदामिनी यथा मे श्रियं देहि देहि स्वाहा ॥ इस मंत्र से शत्रु, विघ्न, उपद्रव नष्ट होकर धन प्राप्ति होती हैं, ऐसा मेरा अनुभव हैं।

६. लक्ष्मीप्राप्ति व स्वर्णलाभ हेतुः– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिल बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्यं विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।

॥ नित्यचण्डी विधानम् ॥

स्नान शुद्धि कर पूजागृह में प्रवेश करे। द्वार देहली का पूजन करे। स्थान की पूजा करे। चंदनादि से युक्त हो पवित्रीकरण कर गुरु का ध्यान करे। आसन पूजा कर गणपति स्मरण कर संकल्प करे। दिग्रक्षण करे। वरुण, दीप, गणेश, मातृका नवग्रहों का यथोपचार पूजन कर प्रधान देवता की पूजा कर दुर्गापाठ करे। दुर्गासप्तशति पाठ का संकल्प करे। कवच, अर्गला, कीलक कर रात्रि सूक्त का पाठ करे। नवार्ण जप के पहले कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करे। क्योंकि यह मंत्र जाग्रति हेतु हैं।

पश्चात् तीनों चरित्रों का पाठ कर नवार्ण मंत्र का जप करे, फिर देवी सूक्त व रहस्य त्रय का पाठकर क्षमा प्रार्थना कर जप पाठ फल भगवती के वाम हस्त में समर्पण करे। मासान्त में होमादि विधान करें। आर्षविधि में तो तीनों चरित्रों के पाठ के पहिले कवच, अर्गला, कीलक तथा तीनों रहस्य ये छः अंग कहे हैं। दुर्गापाठ के आदि अंत में नवार्ण जप करना चाहिये रात्रि सूक्त देवी सूक्त बाद के आचार्यों ने जोड़ा हैं। देव्यथर्वशीर्ष से देवी का स्नान अभिषेक करे, अथर्वशीर्ष का पाठ नूतन प्रतिमा की प्रतिष्ठा समय करे, प्रातःकाल उठते समय व शाम को करे। आजकल दुर्गापुस्तक में कई स्तोत्र जोड़ दिये हैं सो साधक उनको भी जरुरी समझ कर करते हैं। सप्तश्लोकी दुर्गा, १०८, ३० नामावलि व अन्यस्तोत्र तो

अधिकस्य अधिक फलं के आधार पर हैं। **बलिकर्म** वार, तिथि, पक्ष आधार पर करें। १०० पाठ होने के बाद हवन कर्म, कुमारी पूजन, बटुक पूजन करें।

॥ शतचण्डी, सहस्रचण्डीश्चलक्षचण्डी विधानम् ॥

शतचण्डी विधान व सहस्रचण्डी व लक्षचण्डी विधान हेतु पहले यजमान से हेमाद्रि संकल्प व पापघट दान तथा दशविध स्नान कराये। कुऐ या तीर्थ से वरुण योगिनी पूजन कर जल कलश यात्रा कराये मार्ग में भैरव बलि देवे। यज्ञहवन वेदी व पूजास्थल पर यज्ञमण्डप की द्वारशाखा के पास तथा १० दिशाओं में एवं देवतओं के भद्रमण्डलों के पास तथा प्रत्येक कुण्डों के पास कुंभ रखे। गणेशमातृका, वास्तु, योगिनीक्षेत्रपाल, नवग्रह एवं प्रधानवेदी अवश्य बनाये। यज्ञमण्डप एक-पांच व नवकुण्डों के परिमाप का बनाये। १०००० से अधिक मंत्र होम में वास्तु पूजन अवश्य करे। दुर्गापाठ पठन हेतु अन्य मण्डप बनाये, नित्य दशांश होम की व्यवस्था करे। पठन के ब्राह्मण एवं होम के लिये ऋत्वकों का वरण कर आचार्य ब्रह्मा का वरण करे। यज्ञीय विधान से द्वारपाल बलि देकर अग्निस्थापन कर होमकार्य प्रारंभ कराये। पूर्णाहुति पश्चात् कुमारी, वटुक, सुहासिनी व ब्राह्मण भोजन कराये यथा यथा विभाग दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करे। ब्राह्मण यजमान का अभिषेक करे, आशीर्वचन कहे व रक्षासूत्र बांधे आशिका प्रदान करें।

॥ अथ शतचण्डी विधानम् ॥

उक्तं च क्रोडतन्त्रे।

यदा यदा सतां हानिरात्मनो ग्लानिरेव च। तदा कार्या शतावृत्ती रिपुघ्ना भूतिवर्धना ॥१॥
दुःस्वप्न दर्शने घोरे महामारीसमुद्भवे। पुष्टिप्रदा शतावृत्तिः कार्या चायुःक्षये तथा ॥२॥
महाभये छेदयोगे दुर्भिक्षे मरणेऽपि च। कुर्यात्तत्र शतावृत्तिं देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥३॥
अद्भुते च समुत्पन्ने बान्धवानां महोत्सवे। कुर्याच्चण्डीशतावृत्तिं सर्वसंपत्तिकारणम् ॥४॥
शतावृत्त्या भवेदायुः शतावृत्त्या समागमः। वश्या भवन्ति राजानः श्रियमाप्नोति संपदाम् ॥५॥
धनार्थी प्राप्नुयादर्थं पुत्रकामो लभेत्सुतम्। विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां रोगी रोगात्प्रमुच्यते। ॥६॥
चतुर्वर्गफलावाप्तिकारणं रिपुनाशनम्। चण्डी शतावृत्तिफलं नास्ति यज्ञे वरानने ॥७॥
विधिमत्र प्रवक्ष्यामि शृणुष्व वरवर्णिनि। निमन्त्रयेत पूर्वेद्युर्विप्रान्विद्या समन्वितान् ॥८॥
अलोलुपानृजून् शान्तान् देव्या भक्तिसमन्वितान्। मंत्रोपतन्त्रतन्त्रज्ञान् शतावृत्तौ नियोजयेत् ॥९॥
उत्तराशास्थिते हंसे शुक्लपक्षे तथा शुभे। ज्ञार्केन्दुभृगुजीवेषु सुयोगे सुतिथौ तथा ॥१०॥
पातक्रक च घण्टादिदोषहीने स्थिरोदये। स्थापयेदव्रणं कुम्भमुत्तराभिमुखं स्वयम् ॥११॥
न विदध्याद्धरौ सुप्ते भूकम्पाकालवर्षणे। वज्रपाते महोत्पाते गुर्वादित्यादिके तथा ॥१२॥
महागुरौ विपन्ने च संवेशे कार्य वस्तुनः। शतावृत्त्यादियागं तु न विदध्यात्कदाचन ॥१३॥
त्रिपञ्चसप्तभिर्वाऽपि नवैकादशभि स्तथा। अदीर्घदिवसैः क्षिप्रं विदध्याच्चण्डिकामखम् ॥१४॥

अयुग्मब्राह्मणैः कार्या शतावृत्ति सुसिद्धये । त्रिपञ्चसप्तनवभिर्दिनैः पक्षेण वा पुनः ॥१५॥
देवीमाहात्म्यपठनं युग्मविप्र कृतं तु यत् । निष्फलं च भवेत्सर्वं भूतिनाशः प्रजायते ॥१६॥
अष्टमी नवमी वाऽपि यदि स्याद्वा चतुर्दशी । शतावृत्तिर्नवावृत्तिः पक्षावृत्तिः क्रमेण च ॥१७॥
शताश्वमेघगोमेघ वाजपेयफल प्रदा । अतः किं बहुनोक्तेन चण्डीपाठफलं प्रिये ॥१८॥
प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन संमितम् । त्रिरावृत्त्या लभेत्कामान्पञ्चावृत्या रिपूञ्जयेत् ॥१९॥

अथ मन्त्रमहोदधौ।

शतचण्डीविधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम् । नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने ॥२०॥

॥ अथ प्रयोगः ॥

शास्त्रोक्तावधिना शंकरालये भवान्यालये वा मण्डपं वेदिमध्यं निर्माय प्रतीच्यां कुण्डं मध्ये कृत्वा कृतनित्यक्रियोऽमुककामः शतचण्डीविधानमहं करिष्य इति संकल्पं विधाय। मातृस्थापननान्दीश्राद्धे विधाय स्वस्तिवाचनं कृत्वा। अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये। सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविद्यौ कृते ॥२१॥
रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः । शंकरस्य भवान्या वा प्रासादनिकटे शुभम् ॥२२॥
मण्डपद्वारवेद्याढ्य कुर्यात्सध्वजतोरणम् । तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा ॥२३॥
स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वा वृणुयाद्दश वाडवान् । जितेन्द्रयान्सदाचारान्कुलीनान्सत्यवादिनः ॥२४॥
व्युत्पन्नांश्चण्डिका पाठरताँल्लज्जादयावतः । मधुपर्कविधानेन वस्त्रस्वर्णादिदानतः ॥२५॥
जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम् । ते हविष्यान्न मश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसाः ॥२६॥
भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम् । मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सुचेतसः ॥२७॥

॥ अथ कुमारिका पूजने मन्त्रादिकं कुमारीपूजनाध्याये द्रष्टव्यम् ॥

नवार्णं चण्डिकामन्त्रं जपेयुश्चायुक्तं पृथक् । यजमानः पूजयेच्च कन्यानां दशकं शुभम् ॥२८॥
वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले । घटं संस्थाप्य विधिवत्तत्रावाह्यर्चयेच्छिवम् ॥२९॥
तदग्रे कन्यकश्चापि पूजयेद्ब्राह्मणानपि । उपचारैस्तु विविधैः पूर्वोक्तावरणान्यपि ॥३०॥
एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमे होममाचरेत् । पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षा - रम्भाफलैरपि ॥३१॥
मातुलिङ्गै - रिक्षुखण्डैर्नारिकेलैः पुरैस्तिलैः । जातीफलैराम्रफलै र्वन्यैर्मधुर वस्तुभिः ॥३२॥
सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोके हुतं चरेत् । अयुतं च नवार्णेन स्थापिताग्नौ विधानतः ॥३३॥
कृत्वाऽऽवरण देवानां होमं तन्नाममन्त्रतः । कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसृज्य च ॥३४॥
अभिषिञ्चेच्च यष्टार विप्रौघः कलशौदकैः । निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत् ॥३५॥
भोजयेच्च शतं विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः । तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्त्वा गृह्णीयादाशिषस्ततः ॥३६॥
एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः । राज्यं धनं यशः पुत्रानिष्टमन्यल्लभेत सः ॥३७॥

॥ अथ गोविन्दकृतकल्पवल्ल्युक्त शतचण्डीप्रयोगः॥

तत्र अनावृष्ट्याद्यखिल दुरितशान्त्यर्थं राज्यावाप्त्यादि सकलकामना सिद्ध्यर्थं यजमानः शिवालयसमीपे सुसमे भूप्रदेशे मण्डपं चिकीर्षुर्गणेश कूर्मशेषवसुधानां पूजनं कृत्वा शतचण्ड्यां षोडशहस्तं सहस्र चण्ड्यां विंशतिहस्तं मण्डपं प्रसाध्य तदाग्नेयस्तम्भे वडवागणेश कूर्मशेषवसुधानां पूजां कृत्वा ताम्रपात्रेऽर्घ्यमादाय जानुभ्यामवनीं गत्वा "आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारीणि। उद्धृताऽसि वराहेण सशैलवनकानना"। मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भवेति। भूम्यै अर्घ्यं दत्त्वा मण्डपं विधाय तन्मध्ये ईशान्यां हस्तमात्रां द्व्यङ्गुलवप्रां ग्रहवेदीं कृत्वा तत्पश्चिमे शतचण्ड्यां द्विहस्तं सहस्रचण्ड्यां चतुर्हस्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा चतुरस्रं पद्मकुण्डं वा कुर्यात्।

कुण्डं कुण्डग्रन्थोक्तविधिना कृत्वा शतचण्ड्यां पलेन सहस्रचण्ड्यां पलपञ्चकेन मूर्त्यध्यायोक्तध्यानप्रतिपादितां महिषमर्दिनीप्रतिमां कारयित्वा प्रारम्भदिने कर्ता सपत्नीकस्तिलतैलेन कृताभ्यङ्गो भूषिताङ्गः संपूर्णकलशहस्तो भद्रं कर्णेभिरिति मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य देशकालौ स्मृत्वा ममामुककामनासिद्ध्यर्थं सनवग्रहमखां शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। तदङ्गतया विहितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं चाहं करिष्ये इति संकल्प्य।

तानि यथावत्कृत्वा आचार्यं वृत्वा प्रार्थयेत्- आचार्यः सर्वदेवानां० ततो ब्रह्माणं सदस्यमृत्विजश्च वृत्वा प्रार्थयेत्। अत्र शतचण्डिजपे ऋत्विजो नव आचार्यो दशमः सहस्रचण्ड्यां शतमृत्विजः अष्टौ लोकपालाः सर्वेषां मधुपर्कादिना पूजां कृत्वा वृत्वा वस्त्रद्वयम्। आसनम्। अर्घ्यपात्रजल पात्रांगुलीयककर्णभूषणादि दद्यात्। आचार्याय तु द्विगुणम्।

ततः आचार्यः यदत्र संस्थितं भूतं०। इत्युक्त्वा सर्षपान्विकीर्य पञ्चगव्यैः कुशैः आपो हिष्ठेति ऋचेन मण्डपं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनम्। इति मन्त्रद्वयं पठेत्।

ततः पूर्वस्याम्- ॐ कादम्बरि गजारूढे वज्रहस्ते एह्येहि गन्धपुष्पसहितमिमं क्षीरान्नं बलिं गृहाण गृहाण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहेति बलिं दत्त्वा।

द्वारशाखयोः - ब्राह्मयै नमः। माहेश्वर्यै नमः। चिच्छक्त्यै नमः। मायाशक्त्यै नमः। धात्रे नमः। विधात्रे नमः। शङ्खनिधये नमः। पद्मनिधये नमः। द्वारश्रियै नमः। इति संपूज्य।

अधः वास्तुपुरुषमसिताङ्गभैरवं च संपूज्य। आग्नेय्याम्- उल्के अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येहि गन्धपुष्पसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृहाण गृहाण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा। तत्र रुरुभैरवं च संपूज्य। दक्षिण स्याम्। करालि महिषारूढे दण्डहस्ते एह्येहि० स्वाहा। इति बलिं दत्त्वा

द्वारशाखयोः- कौमार्यै नमः। वैष्णव्यै नमः। चिच्छक्त्यै नमः। मायाशक्त्यै नमः। धात्रे नमः। विधात्रे नमः। शङ्खनिधये नमः। पद्मनिधये नमः। चण्डभैरवाय नमः। इत्यधः पूजयेत्। नैर्ऋत्यै - रक्ताक्षि प्रेतवाहने खड्गहस्ते एह्येहि० स्वाहा। इति बलिं दत्त्वा क्रोधभैरवाय नमः इति संपूज्य। पश्चिमायाम् - कौबेरि अश्वारूढे पाशहस्ते एह्येहि० स्वाहा। इति बलिं दत्त्वा द्वारशाखयोः। वाराह्यै नमः। ऐन्द्र्यै नमः। चिच्छक्त्यै नमः। मायाशक्त्यै नमः। धात्रै नमः। विधात्रे नमः। शङ्खनिधये नमः। पद्मनिधये नमः। इति संपूज्य। उन्मत्तभैरवं च संपूज्य। ततो वायव्यां हरिते मृगवाहने अङ्कुशहस्ते एह्येहि० स्वाहा इति बलिं दत्त्वा कपाल भैरवाय नमः। इति सम्पूज्य। उत्तरस्यां यक्षिणि सिंहवाहने गदाहस्ते एह्येहि. स्वाहा। इति बलिं दत्वा। द्वारशाखयोः चामुण्डायै नमः। महालक्ष्म्यै नमः। चिच्छक्त्यै नमः। मायाशक्त्यै नमः। धात्रे नमः। विधात्रे नमः। शङ्खनिधये नमः। पद्मनिधये नमः भीषणभैरवाय नमः। इति संपूज्य।

ईशान्यां - **कालि वृषारूढे शूलहस्ते एह्येहि० स्वाहा** इति बलिं दत्त्वा **संहारभैरवं च संपूज्य।** ईशानपूर्वयोर्मध्ये **वैष्णवि गरुडारूढ़े चक्रहस्ते एह्यहि० स्वाहा** इति बलिं दत्वा **भूमिं संपूज्य।** ततः पूजावेद्यामाग्नेय्यां **हंसवाहने अक्षसूत्रकमण्डलु हस्ते एह्येहि स्वाहा** इति बलिं दत्वा **अन्तरिक्षाय नमः। इति संपूज्य।** ततः पूजाविद्यामाग्नेय्यां **विष्णवे नमः। पूर्वस्यामिन्द्राय नमः। ईशान्यां ब्रह्मणे नमः। पश्चिमायां गणेशाय नमः। मध्ये महाकाल्यै महालक्ष्म्यै महासरस्वत्यै नमः** इति संपूज्य **बृहद्ध्वजो रक्तः सिंहाङ्कितः। ध्वजपताकोच्छ्रयणं कृत्वा। आचार्यो ग्रहवेद्यां ग्रहान् संस्थाप्य संपूज्य मध्यवेद्यां पीठे सुखासने उपविश्य।**

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः। ॐ गं गणपतये नमः। द्वारश्रियै नमः। दुं दुर्गायै नमः। क्षं क्षेत्रपालाय नमः। ह्रः अस्त्राय फट्। वास्तुपुरुषाय नमः। श्रीमहालक्ष्म्यै नमः। इति नत्वा **पूर्वोक्तनित्यपूजापद्धतिप्रकारेण आसनादिभूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकादि मूल विद्यान्यासान् पूर्वोक्तान्सर्वान्कृत्वा श्री महालक्ष्मीध्यानं कृत्वा किंचित् जपं कृत्वां देव्यै निवेद्यान्तर्यागं कृत्वा वेद्यां सर्वतोभद्रं कृत्वा तत्र देवताः स्थापयेत्।** सर्वत्तोभद्र मण्डल की पूजा करें।

मध्ये - **ब्रह्माणमुत्तरादिषु सोमादीन् वायुसोममध्यादिक्रमेण अपः वसून् रुद्रान् द्वादशादित्यान् यक्षान् सर्पान् अप्सरसः गन्धर्वान्, ब्रह्मसोममध्ये कुमारमृषभमदितिं , ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गा विष्णुं ब्रह्माग्निमध्ये स्वधां, ब्रह्मयममध्ये मृत्युं रोगं, ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिं, ब्रह्मवरुणमध्ये अपः, ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः, ब्रह्मपादमूले भूमिं तत्रैव गङ्गादिनदीः धाम्नोधाम्न इति सप्त सागरान्, बहिः सोमादिसंनिधौ क्रमेण गदां त्रिशूलं वज्रं शक्तिं दण्डं खड्गं पाशमङ्कुशं, पुनरुत्तरादिषु गौतमं भरद्वाजं विश्वामित्रं कश्यपं जमदग्निं वासिष्ठमत्रिमरुन्धतीं च पूर्वादिषु ऐन्द्रीं कौमारीं ब्राह्मीं वाराहीं चामुण्डां वैष्णवीं माहेश्वरीं वैनायकीम् इत्यावाह्य संपूज्य बलिं दत्त्वा।**

कलश स्थापन- **तन्मध्ये मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा धान्य मसीति सप्त धान्यानि क्षिप्त्वा तदुपरि आकलशेष्विति हैमराजतताम्रमृन्मयान्यतमं वा कलशं संस्थाप्य इमं मे वरुण इति जलेनापूर्य, गन्धद्वारामिति, गन्धं या ओषधीरिति सर्वौषधीः, काण्डात्काण्डादिति दूर्वाः, अश्वत्थे वो इति पञ्चपल्लवान्, स्योना पृथिवीति सप्त मृदः याः फलिनीरिति फलं, परिवाजपतिरिति पञ्चरत्नानि, हिरण्यगर्भ इति हिरण्यं, युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेण संवेष्ट्य, पूर्णा दर्वीति पात्रं निधाय तत्र रक्तवस्त्रे यन्त्रं लिखेत्।**

देवी पूजा- **तद्यथा चतुर्द्वारं चतुरस्त्रं यन्त्रं कृत्वा मध्ये त्रिकोणं कृत्वा तत्पश्चिमार्धे त्रिकोणं व्यस्तं कृत्वा पूर्वस्य पश्चिमरेखासंलग्नमन्यत्रिकोणं कृत्वा तत्कोणसंलग्नान्यन्यानि त्रिकोणानि कृत्वा तेन बहिः षट्कोणाः मध्ये षट्काश्च संपद्यन्ते। तन्मध्ये चान्यत्रिकोणमिति यन्त्रं विलिख्य शतचण्ड्यां पलेन सहस्त्रचंड्यां पञ्चपलेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा प्रतिमां पूर्वोक्तध्यानयुतां कारयित्वा अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठापूर्वकं तस्मिन्कलशे यन्त्रं स्थापयित्वा। नित्यपूजाप्रकारेण पात्रासादनपूर्वकं पीठपूजनावरणदेवता पूजनयुतं श्री महालक्ष्मीपूजनं कृत्वा राजोपचारान् निवेद्य नीराजनं कृत्वा प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा चतुःषष्टियोगिनीपूजामारभेत। तत्र देव्यग्रे रक्तवस्त्रे अष्टौ पत्राणि कृत्वा तस्योपरि उपरि एवमष्टौ पत्रपंक्तीः विधाय**

६४ योगिनी पूजा- **तत्र शुक्लवर्णे शूलडमरुपाशासिधरे सवालंकारभूषिते ससैन्यजये इहागच्छागच्छेमं पायसबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा** इत्यावाह्य संपूज्य पायसबलिं दत्वा **१ एवं विजये २ जयन्ति ३ अपराजिते ४ दिव्ययोगिनि ५ महायोगिनि ६ सिद्धयोगिनि ७ गणेश्वरि ८** इति प्रथमाष्टकम् ॥१॥

ततो गौरवर्णे अक्षमालांकुश पुस्तकवीणाधरे प्रेतासने एह्येहि इमं पायसबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा १ एवं डाकिनि २ कालि ३ कालरात्रि ४ निशाचरि ५ टंकारिणि ६ रुद्रवेतालिनि ७ हुंकारिणि ८ इति द्वितीयाष्टकम् ॥२॥

ततो रक्तवर्णे ज्वालाशक्त्यभयवरदे ऊर्ध्वकेशि एह्येहीत्यादि प्राग्वत्स्वाहान्तमुच्चार्य इति बलिं निवेद्य १ एवं विरूपाक्षि २ शुक्लाङ्गि ३ नरभोजिनि ४ फट्कारिणि ५ वीरभद्रे ६ धूमाङ्गि ७ कलहप्रिये ८ इति तृतीयाष्टकम् ॥३ ॥

ततो विद्युत्सन्निभे ध्वजबाणधनुष्पाशहस्ते राक्षसि एह्येहि० स्वाहान्तमुच्चार्य इति बलिं निवेद्य १ एवं रक्ताक्षि २ विश्वरूपे ३ भयंकरि ४ वीरकौमारि ५ चण्डिके ६ वाराहि ७ मुण्डधारिणि ८ इति चतुर्थाष्टकम् ॥४॥

तत आदित्यवर्णे कमलाक्षमालाभयवरदकरे भैरवि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं ध्वाङ्क्षिणि २ धूम्राङ्गि ३ प्रेतवाराहि ४ खड्गिनि ५ दीर्घलम्बोष्ठि ६ मालिनि ७ मन्त्रयोगिनि ८ इति पञ्चमाष्टकम् ॥५॥

ततः सुनीले शङ्खचक्रगदाभयकरे कालिनि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं चक्रिणि २ कङ्कालि ३ भुवनेश्वरि ४ शटकि ५ महामारि ६ यमदूति ७ करालिनि ८ इति षष्ठाष्टकम् ॥६॥

ततोऽञ्जननिभे खड्गखेटपट्टिशपरशुहस्ते केशिनि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं मर्दिनि २ रोमजङ्घे ३ निवारिणि ४ विशालिनि ५ कार्मुकि ६ लोलि ७ अधोमुखि ८ इति सप्तमाष्टकम् ॥७॥

ततो धूम्रवर्णे कुन्तखेटभिण्डिपालमाला करे मुण्डाग्रधारिणि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं व्याघ्रि २ कांक्षिणि ३ प्रेतरूपिणि ४ धूर्जटि ५ घोरि ६ करालि ७ विषलम्बिनि ८ इति अष्टमाष्टकम् ॥८॥

इति चतुः षष्टियोगिनीबलिक्रमः।

एवं चतुः षष्टियोगिनीपूजां विधाय बलिं दत्त्वा गणपतये नमः बं बटुकाय पिंगल भासुरनेत्राय बलिं गृहाण २ भक्ष २ कन्दन २ ह्रीं हूं स्वाहा। इति बटुकाय क्षेत्रपालाय च बलिं दत्त्वा भूतबलिं दद्यात्।

तत्र मन्त्रः। सर्वपीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेऽपि च। क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंदोहः सर्वे दिग्भागसंस्थिताः ॥१॥ योगिनीयोगवीरेन्द्राः सर्वे यन्त्रसमागताः। नगरे त्वथवा ग्रामे अटव्यां सरितस्तटे ॥२॥ वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे। नानारूपधरा ये च बटुरूपधराश्च ये ॥३॥ सर्वे तत्रैव संतुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा। शरणागतोऽस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे सुखप्रदाः ॥४॥ बलिदानेन संतुष्टाः प्रयच्छन्तु ममेप्सितम्। सर्वकार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च घ्नन्तु मे सदा ॥५॥ इति सर्वेभ्यो बलिं दद्यात्।

ततः कुमार्यः प्रत्यहं शतं नव वा पूज्याः। तल्लक्षणादीनि कुमारीपूजनाध्याये द्रष्टव्यानि। एवं कुमारीपूजनं सुवासिनीपूजनं च विधाय। द्वितीयदिने द्विगुणं तृतीये त्रिगुणं चतुर्थे चतुर्गुणम् इति शतचण्ड्यां सहस्रचण्ड्यां दशोत्तरा वृद्धिः कार्या। पूजां देव्यै समर्प्य सर्वे विप्राः कृताङ्गन्यासाः शतं नवार्णमन्त्रं कवचार्गलाकीलकानि सकृज्जपित्वा सप्तशतीं जपित्वाऽन्ते रहस्यानि नवार्णं शतं जपेयुः। कवचादीनां प्रत्यावृत्तौ नावृत्तिः। एवं प्रथमे एकाऽऽवृत्तिः १ द्वितीये २ तृतीये ३ चतुर्थे ४ एवं शतसहस्रावृत्तयः संपद्यन्ते। नित्यं क्षीरान्न भोजनमशक्तौ हविष्यान्नं सर्वेषां प्रत्यहं शतं सहस्रं वा ब्राह्मणान् भोजयेत्। पञ्चमेऽह्नि होमः कार्यः। नवरात्रे तु नवम्यामेव होमः। होमस्तु नवचण्डीविद्यानोक्तप्रकारेण कार्यः। पूजास्विष्टकृदादि सर्वं तद्वत्कुर्यात्।

॥ अथ शतचण्डीसहस्रचण्ड्यादौ पूजासामग्री ॥

अशीतिगुञ्जाप्रमाणा कस्तूरी तावन्मानं केशरं तावज्जातीफलं तावान् कर्पूरः एतच्चतुष्टयं पलमात्रं चन्दनेन घर्षयेत् तेन पलद्वयमनुलेपनं भवति पलं तु विंशत्युत्तरत्रिंशद्गुञ्जामितं वस्त्रस्य तु मानानुक्तेः स्त्रीजनपरिधानयोग्यं ग्राह्यं गद्याणत्रयहेम निर्मितालंकाराः स्त्रीजनोचिताः गद्याणमानं तु लौकिकतौलस्यार्धं पुष्पाणि २५००० पलद्वयमितः

गुग्गुलुः दीपा विंशतिर्घृत पूरिताः कुम्भप्रमाणं घृतं कुम्भस्तु विंशतिद्रोणः द्रोणस्तु खार्याः खलु षोडशांशः कुडवद्वयमात्रं हविष्यान्नभोजनं नैवेद्यं पल चतुष्कं कुडवः शतद्वयं नागवल्लीदलं तदनुरूपं पूगीफलादिकं कर्पूरादि च ग्राह्यम्। इति पूजासामग्री। अन्यापि ग्राह्या। इति गोविन्दकृतकल्पवल्ल्युक्त शतचण्डीसहस्त्रचंडीप्रयोगः।

शान्तिसारे रुद्रयामले विशेषः।

शतचण्डीविधानं च प्रोच्यमानं शृणुष्व तत् । सर्वोपद्रवनाशार्थं शतचण्डीं समारभेत् ॥१॥
षोडशस्तम्भ संयुक्तं मण्डपं पल्लवोज्ज्वलम् । वसुकोणयुतां वेदीं मध्ये कुर्या त्रिभागतः ॥२॥
पक्वेष्टकचितां रम्यामुच्छ्राये हस्तसंमिताम् । पञ्चवर्णरजोभिश्च कुर्यान्मण्डलकं शुभम् ॥३॥
आचार्येण समं विप्रान्वरयेद्दश सुव्रतान् । ईशान्यां स्थापयेत्कुम्भं पूर्वोक्तविधिनाऽऽहरेत् ॥४॥
वारुण्यां च प्रकर्तव्यं कुण्डं लक्षणसम्मितम् । मूर्तिं देव्याः प्रकुर्वीत सुवर्णस्य पलेन वै ॥५॥
तदर्धेन तदर्धेन तदर्धेन महामते । अष्टादशभुजां देवीं कुर्याद्वाऽष्टकरामपि ॥६॥
पट्ट कूलयुगच्छन्नां वेदीमध्ये निधापयेत् । देवीं संपूज्य विधिवज्जपं कुर्युर्दश - द्विजाः ॥७॥
शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् । चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुदाहृतः ॥८॥
एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जपेद्दिनचतुष्टयम् । रूपाणि क्रमशस्तद्वत्पूजनादिकमाचरेत् ॥९॥
पञ्चमे दिवसे प्रातर्होमं कुर्याद्विधानतः । गुडूचीं पायसं दूर्वास्तिलाञ्छुक्लान्यवानपि ॥१०॥
चण्डी पाठस्य होमे तु प्रतिश्लोकं दशांशतः। होमं कुर्याद्ग्रहादिभ्यश्चर्वाज्यसमिधैः क्रमात् ॥११॥
हुत्वा पूर्णाहुतिं दद्याद्विप्रेभ्यो दक्षिणां क्रमात्। कपिलां गां नीलमणिं श्वेताश्वं छत्रचामरम् ॥१२॥
अभिषेकं ततः कुर्युर्यजमानस्य ऋत्विजः । एवं कृतेऽमरेशान सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥१३॥

॥ इति श्रीह० बृ०ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये शतचण्डीविधानप्रयोगकथनं ॥

॥ अथ सहस्त्रचण्डी विधानम् ॥

एतद्दशगुणं कुर्याच्चण्डीसाहस्त्रजं विधिम् । विद्यावतः सदाचारान्ब्राह्मणान्वृणुयाच्छतम् ॥१॥
प्रत्येकं चण्डिकापाठम् विदध्युस्ते दिशामितान् । अयुतं प्रजपेयुस्ते प्रत्येकं नववर्णकम् ॥२॥
पूर्वोक्ताः कन्यकाः पूज्याः पूर्वमन्त्रैः शतं शुभाः। एवं दशाहं संपाद्य होमं कुर्युः प्रयत्नतः ॥३॥
सप्तशत्याः शतावृत्या प्रतिश्लोकं विधानतः । लक्षसंख्यं नवार्णेन पूर्वोक्तैर्द्रव्यसंचयैः ॥४॥
होतृभ्यो दक्षिणां दत्त्वा पूर्वोक्तान्भोजयेद्द्विजान् । सहस्त्रसंमितान्साधून् देव्याराधनतत्परान् ॥५॥
एवं सहस्त्रसंख्याके कृते चण्डीविधौ नृणाम् । सिद्ध्यत्यभीप्सितं सर्वं दुःखौघश्च विनश्यति ॥६॥
मारीदुर्भिक्षरोगाद्या नश्यन्ति व्यसनोच्चयाः । नेमं विधिं वदेदुष्टे खले चौर गुरुद्रुहि ॥७॥
साधौ जितेन्द्रिये दान्ते वदेद्विधिमिमं परम् । एवं सा चण्डिका तुष्टा वक्तृञ्छ्रोतृंश्च रक्षति ॥८॥

शान्तिसार रुद्रयामले।

सहस्त्रचण्डीं विधिवच्छृणु विष्णो महामते । राज्यभ्रंशो ह्यकस्माच्चेज्जनमारे महाभये ॥९॥

गजमारेऽश्वमारे च परचक्रभये तथा । इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादिजे भये ॥१०॥
सहस्त्रं चण्डिकापाठं कुर्याद्वा कारयेत्तथा । जापकास्तु शतं प्रोक्ता विंशद्धस्तस्तु मण्डपः ॥११॥
भोज्याः सहस्त्रं विप्रेन्द्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत् । गुरवे द्विगुणं देयं शय्यादानं तथैव च ॥१२॥
सप्तधान्यं च भूदानं श्वेताश्वं च मनोहरम् । पञ्चनिष्कमिता मूर्तिः कर्तव्या वर्धमानतः ॥१३॥
अष्टादशभुजां देवी सर्वायुधविभूषिताम् । अन्नं वारि च दातव्यं सहस्त्रं प्रत्यहं विभो ॥१४॥
शतं वा नियताहारः पयोमानेन वर्तयेत् । एवं यश्चण्डिका पाठं सहस्त्रं तु समाचरेत् ॥१५॥
तस्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु नात्र कार्या विचारणा ॥१६॥
अन्येऽपि विशेषाः योगिनीभैरवीवाराही तन्त्रेषु देवीकालिका पुराणयोश्चानुसंधेयाः । ते च प्रयोगे स्पष्टाः। वयं तु यामलाद्युक्तं नानुतिष्ठामहे यामलस्य मोहनशास्त्रत्वेनाप्रामाण्यात् ॥१७॥

इति शान्तिसारोक्ता सहस्त्रचण्डी।

अन्यत्र **एतद्दशगुणो विधिरयुतचण्ड्यां एतद्दशगुणो विधिर्लक्षचण्ड्यां शतब्राह्मणैरेव वा चत्वारिंशति दिनैरयुतचंडी कार्या। तत्र प्रथमदशके एकैवावृत्तिः द्वितीयदशके द्वे तृतीय तिस्त्रः चतुर्थे चतस्त्रः तैरेव तल्लक्षसंख्यं चतुःशतदिनैर्वा लक्षचण्डीत्यादि बोध्यम् ॥१८॥**

शेषं शतचण्डीवत्।

॥ दुर्गापाठे निषेध सप्ताहुतियाँ ॥

चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते। रक्षा कवचगैमन्त्रै तत्र न कारयेत्॥ अर्थात् कवच मंत्र एवं अस्त्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होता हैं। सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नहीं होता है मारण कर्म में अवश्य होता हैं उसमें तो अग्नि का १६वां मृतक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारंभ होता हैं। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुग्गल व घृत से होम करे। क्यों कि घृत से अग्नि का आचमन होता है। अतः चतुर्थ अध्याय के **शूलेन पाहि नो देवि** इत्यादि चार मंत्रों का हवन होगा। यह मंत्र मनसा पढ़ें, मंडल पर प्रत्येक मंत्र से रक्षा व अस्त्र शक्ति का गंधोपचार से पूजन कर आहुति देते समय **नवार्ण मंत्र या श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा** से हवन करे। इसी तरह प्रथम चरित्र में **खड्गिनी शूलिनी** मंत्र मनसापढे **श्री महाकाल्यै अस्त्र शस्त्र शक्त्यै नमः** से देवी का गंधोपचार से पूजन कर नवार्ण या **क्रीं महाकाल्यै स्वाहा** से हवन करे। अन्य दो आहुतियाँ जिनके बारे में मतभेद हो सकता हैं पांचवे अध्याय में ''**दूत उवाच**'' दो बार आया हैं इस मंत्र से आहुति देने पर फल का भाग दूत को जाता हैं अतः कर्मफल में न्यूनता आती हैं। अतः मनसा पढकर ''**ऐं सरस्वत्यै नमः**'' से आहुति प्रदान करे।

असुरों के नाम से आहुति नहीं हो इसी कारण प्रचलित सप्तशती में मधुकैटभ उवाच, महिषासुर उवाच शुंभ उवाच नहीं आया है जबकि हमने ऐसी दुर्गासप्तशती देखी है जिसमें महिष उवाच, शुंभ उवाच, इत्यादि है तथा अध्यायों की श्लोक संख्या में भी भिन्नता हैं।

॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यादि पाठ होम विधानम् ॥

पंचम अध्याय में ये श्लोक आये हैं । कुब्जिका तंत्र के अनुसार प्रथम खण्ड २० अक्षर, दूसरा ४ अक्षर, तीसरा खण्ड अष्टाक्षरात्मक है। सात्विक, राजस एवं तामस भेद से तीन बार नमस्कार हैं। तथा **नमः** हर्ष व दैन्य भाव, विस्मय

आदि में प्रयुक्त होता है जो बार बार प्रयोग में आने से दोष नहीं आता। अतः ३ बार **नमस्तस्यै नमस्तस्यै** युक्त पाठ करे।

स्वमतानुसारेणः- मूलपाठ में तो पूरा श्लोक अनुष्टुप् छंद है तीन विभाग करके अलग अलग मंत्र संज्ञा बनादी है परन्तु संपुट पाठ में भेद हो जायेगा। एक मंत्र २० अक्षर का, दूसरा चार अक्षर का तीसरा आठ अक्षर का होगा। यह ठीक नहीं लगता। **कामना मंत्र** किस तरह लगाये इस पर विचार करना चाहिये ताकि दूसरे, तीसरे नमस्कार का भी पूर्वा से संबंध बना रहे। अतः सम्पुट पाठ समये प्रयोग विधिः-

(१) (क) या देवी सर्व भूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै (ख) या देवी सर्व भूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै (ग) या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमो नमः। इस तरह से मंत्र विभाग मानकर संपुट लगावें तब नमस्तस्यै का संबंध पूर्वा से रहेगा, इसी तरह से संपुट होम करें।

(२) स्वमत एवं गुप्तवती टीकानुसारेण- गुप्तवती टीकानुसार देविस्तुति के ये श्लोक त्रिपदागायत्री छन्द (२४ अक्षर) हैं। अतः २४ अक्षर युक्त मंत्र ३ बार पढ़े। यथा- **या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमो नमः।** होम समय भी प्रचलित पुस्तक के आधार पर होम करे तो एक विभाग २०, दूसरा ४, तीसरा ८ अक्षरात्मक होता हैं। तथा विभाग के अनुसार आहुति लगने से दूसरे तीसरे नमस्कार का पूर्वशक्ति से संबोधन हट जाता है। तीन नमस्कार महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती हेतु हैं। अतः ***मेरे अनुमान से गुप्तवती टीकानुसार पढ़कर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, हेतु ''इदं'' से अलग अलग त्याग करे।*** इससे मंत्राक्षर समान रहेंगे। अथवा जो पहली विधि लिखि हैं जिसमें नमस्तस्यै का पूर्वा से संबंध रहते हुये २०,२०,२४ अक्षरात्मक मंत्र बनते हैं उनसे होम कर **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हेतु इदं** से अलग अलग त्याग करे। २०, ४, ८ अक्षरात्मक होम में तीनों देवियों के विभाग समान नहीं है तथा मंत्र की पूर्व शक्ति से संबंध नहीं रहता है।

॥ प्रति अध्यायान्ते महाहुति विधानम् ॥

प्रति अध्याय के अन्त में आहुति समय स्रुक पर आहुति द्रव्य रखकर मंत्र से आहुति देवे। पश्चात् घी की आहुति इन मंत्रों से देवे। घृताहुति के मंत्र तो एक ही है, महाहुति क्रम अलग अलग हैं।

घृताहुति मंत्रः- ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्य स्वाहा॥ अथवाः- **ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ पानाय स्वाहा। ॐ व्यानायस्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अंबे अंबिके.....स्वाहा॥**

प्रथमोऽध्यायः- एक पान पर कपित्थफल, मधु, कमलगट्टा, गुगल, शाकल्य, गंधाक्षत, पुष्प, लौंग, इलायची सब युग्म लेवे। सुपारी रखे घी से भिगाये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे। **ॐ नमो देव्यै महादेव्यै....।(या) जयन्ती मंगला.....। साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

द्वितीयोऽध्यायः- हवनीय द्रव्य पान, कमलगट्टा, गुग्गल, नारिकेलखण्ड, पुष्प, लौंग, इलायची, सुपारी शाकल्य। **ॐ नमो देव्यै....या जयन्ती मंगला....मंत्र पढ़े। सांगायै सप. सवा. सायुधाय. सशक्त्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्री महालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

तृतीयोऽध्यायः- पान, बिजोरा, चंदन, नीमगिलोय, दधि, माष, मधु, भैंसागुग्गल, कमलगट्टा, लौंग २, इलायची २ सुपारी, शाकल्य पत्र, पुष्प, फल लेकर महाहुति देवे। **मंत्रः- ॐ नमोदेव्यै....। जयन्ती मंगला......। सांगा सप.**

सवा. सश. सायु. अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

चतुर्थाऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, पायस, कमल गट्टा, बिल्वफल, लौंग, इलायची गुग्गल फल पुष्प। मंत्र **नमोदेव्यै....। जयन्ती मंगला....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. श्री लक्ष्मीबीज अधिष्ठात्र्यै। त्रिवर्णात्मिकायै श्री महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

पञ्चमोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, गुगल, कमलगट्टा, कपूर, श्वेतचंदन, पुष्प, फल, बिल्वफल, बिजौरा। मंत्रः- **नमो देव्यै.....। जयन्ती मंगला.....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. श्रीविष्णुमायेति चतुर्विंशति देवतायै कामबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

षष्ठमोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, कमलगट्टा, गुग्गल, भोजपत्र, कुष्माण्डखण्ड, नारंगी, नारिकेलफलखण्ड, फल, पुष्प। मंत्रः- **ॐ नमो देव्यै। जयन्ती मंगला......। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

सप्तमोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, चिरौंजी. लाजवन्ती पुष्प, कमलगट्टा, जायफल, कुष्माण्डफलखण्ड, कर्पूर। मंत्र **ॐ नमो देव्यै...। जयन्ती मंगला.....। सांगा, सप. सवा. श्रीकर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै श्री धूम्राक्षी काली चामुण्डा देवता महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

अष्टमोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, फल, गुग्गल, कुष्माण्डफलखण्ड, लाल चंदन, मधु, पुष्प। **मंत्रः- ॐ नमो देव्यै.....। जयन्ती मंगला.....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

नवमोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाक्ल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, कमलगट्टा, बिजौरा नींबू, कुष्माण्डखण्ड, इक्षुखण्ड, फल, बिल्वफल, मेनफल। **मंत्रः- ॐ नमो देव्यै.....। जयन्ती मंगला......। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. श्री वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै भगवति महाकाल्यै तारादेव्यै नमः महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

दशमोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, बिजौरा, कस्तूरी, कमलगट्टा, गुग्गल, बिल्वफल, कुष्माण्डखण्ड, फल,पुष्प, मेनसिल। मंत्रः- **ॐ नमो देव्यै.....। जयन्ती मंगला....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. सिंहवाहनायै शूलपाशधारिण्यै अंबिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

एकदशोऽध्यायः- द्रव्य-पान, पुष्प, फल, शाकल्य, लौंग, इलायची, कर्पूर, शर्करा, कमलगट्टा, सुपारी, मिश्री, पायसान्न, गुग्गल इक्षुखण्ड, दाडिमफल। मंत्रः- **नमो देव्यै....। जयन्ती मंगला.....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. सर्वनारायण्यै शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

द्वादशोऽध्यायः- द्रव्य - पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, अगर, केसर, कस्तूरी, कमलगट्टा, पत्र, पुष्प, फल, जायफल, बिल्वफल, मिश्री, पायसान्न। मंत्रः- **ॐ नमो देव्यै.....। जयन्ती....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. श्री बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

त्रयोदशोऽध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, बिल्वफल, गूग्गल, कमलगट्टा, फल, शमीपत्र, कदलीफल, श्वेताऽर्कपुष्प केसर, कर्पूर, श्वेतपुष्प, नारिकेलखण्ड, पुष्प। मंत्रः- **ॐ नमो देव्यै......। जयन्ती मंगला.....। सांगा. सप. सवा. सश. सायु. श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

॥ दुर्गा होमे स्विष्टकृद हवन विधानम् ॥

दुर्गा होम के समापन पर स्विष्टकृद् हवन से पहले ९ आहुति विशेष देवे। नन्दा, रक्तदंतिका, शाकंभरी, दुर्गा, भीमा, भ्रामरी, कालिका, शिवदूती प्रजापति इत्यादि हेतु हवन कर स्विष्टकृद् होम करे।

॥ अथ दुर्गा आवरण देवता होम ॥

स्तंभतोरणादिप्रतिष्ठापूजनं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा तेनैवाग्निं संस्थाप्य प्रधानहोमं समाप्य चरुतिलाज्येन पुनर्होमं कुर्यात्। तत्र क्रमः -

ॐ गणपतये नमः स्वाहा इदं गणपतये न मम इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ दुर्गायै० ॥२॥ ॐ सरस्वत्यै० ॥३॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा० ॥४॥ ॐ कादंबर्य्यै० ॥५॥ ॐ उल्कायै० ॥६॥ ॐ करात्यै० ॥७॥ ॐ रक्तायै० ॥८॥ ॐ श्वेतकौबेर्य्यै० ॥९॥ ॐ यक्षिण्यै० ॥१०॥ ॐ काल्यै० ॥११॥ ॐ सुरश्रेष्ठायै० ॥१२॥ ॐ जं जयायै० ॥१३॥ ॐ विं विजयायै नमः स्वाहा इदं० ॥१४॥ ॐ जं जयंत्यै० ॥१५॥ ॐ अं अपराजितायै० ॥१६॥ ॐ निं नित्यायै० ॥१७॥ ॐ विं विलासिन्यै० ॥१८॥ ॐ दों दोग्घ्र्यै० ॥१९॥ ॐ अं अघोरायै० ॥२०॥ ॐ मं मंगलायै नमः ॥२१॥ ॐ धात्रे नमः ॥२२॥ ॐ विधात्रे० ॥२३॥ ॐ शंखनिधये० ॥२४॥ ॐ पद्मनिधये० ॥२५॥ ॐ द्वारश्रियै० ॥२६॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० ॥२७॥ ॐ ऐरावताय० ॥२८॥ ॐ पुंडरीकाय० ॥२९॥ ॐ वामनाय० ॥३०॥ ॐ कुमुदाय० ॥३१॥ ॐ अंजनाय० ॥३२॥ ॐ पुष्पदंताय० ॥३३॥ ॐ सार्वभौमाय० ॥३४॥ ॐ सुप्रतीकाय० ॥३५॥ ॐ दमनकाय० ॥३६॥ ॐ पुंडरीकाय० ॥३७॥ ॐ गुग्गुलाय० ॥३८॥ ॐ कुरंटकाय० ॥३९॥ ॐ ऋग्वेदाय० ॥४०॥ ॐ यजुर्वेदाय० ॥४१॥ ॐ सामवेदाय० ॥४२॥ ॐ अथर्ववेदाय० ॥४३॥ इति होमं कृत्वा ग्रहमखं कुर्यात्। ॐ आदित्याय० ॥४४॥ ॐ सोमाय० ॥४५॥ ॐ भौमाय० ॥४६॥ ॐ बुधाय० ॥४७॥ ॐ बृहस्पतये० ॥४८॥ ॐ शुक्राय० ॥४९॥ ॐ शनैश्चराय० ॥५०॥ ॐ राहवे० ॥५१॥ ॐ केतवे० ॥५२॥ ततः ॐ रुद्राय० ॥५३॥ ॐ गौर्यै० ॥५४॥ ॐ स्कंदाय० ॥५५॥ ॐ विष्णवे० ॥५६॥ ॐ ब्रह्मणे० ॥५७॥ ॐ इंद्राय० ॥५८॥ ॐ यमाय० ॥५९॥ ॐ कालाय० ॥६०॥ ॐ चित्रगुप्ताय० ॥६१॥ ॐ अग्नये० ॥६२॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा इदमद्भ्यो न मम ० ॥६३॥ ॐ महाभार० ॥६४॥ ॐ इंद्राय० ॥६५॥ ॐ इन्द्राण्यै० ॥६६॥ ॐ वरुणाय० ॥६७॥ ॐ सर्पाय० ॥६८॥ ॐ ब्रह्मणे० ॥६९॥ ॐ अनंताय० ॥७०॥ ॐ वासुकये० ॥७१॥ ॐ तक्षकाय० ॥७२॥ ॐ कर्कोटकाय० ॥७३॥ ॐ पद्माय० ॥७४॥ ॐ महापद्माय० ॥७५॥ ॐ शंखपालाय नमः ॥७६॥ ॐ कंबलाय नमः० ॥७७॥ ॐ कुलिकाय० ॥७८॥ ॐ गणपतये० ॥७९॥ ॐ दुर्गायै० ॥८०॥ ॐ वायवे० ॥८१॥ ॐ आकाशाय० ॥८२॥ ॐ अश्विदेवाभ्यां० ॥८३॥ इति होमं कृत्वा पीठदेवताहोमं कुर्यात्।

ॐ ओंकारपीठादिकामरूपपीठांतेभ्योनमः स्वाहा इति पीठेभ्यो नमः ॥८४॥ ततः **ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांत पीठदेवताभ्यो नमः स्वाहा० ॥८५॥** इति होमं कृत्वा मंडूकादिपृथक्पृथङ्नाम्ना वा होमयेत्। तत्पश्चादावरणदेवताहोमं कुर्यात्।

तद्यथा - **ॐ गं गणपतये० ॥८६॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय० ॥८७॥ ॐ पं पादुकाभ्यो० ॥८८॥ ॐ वं वटुकत्रयाय० ॥८९॥ ॐ अं अग्निमुखवेतालाय० ॥९०॥ ॐ प्रं प्रेतवाहनवेतालाय० ॥९१॥ ॐ जं ज्वालामुखवेतालाय० ॥९२॥ ॐ धूं धूम्राक्षवेतालाय० ॥९३॥ ॐ जं जयायै० ॥९४॥ ॐ विं विजयायै० ॥९५॥**

ॐ जं जयंत्यै० ॥९६॥ ॐ अं अपराजितायै० ॥९७॥ ॐ निं नित्यायै नमः स्वाहा० ॥९८॥ ॐ विं विलासिन्यै० ॥९९॥ ॐ दं दोग्घ्र्यै० ॥१००॥ ॐ अं अघोरायै० ॥१०१॥ ॐ मं मंगलायै० ॥१०२॥ ॐ हं हंसवाहिन्यै ब्राह्मयै विच्चे नमः स्वाहा इदं ब्राह्मयै नमः० ॥१०३॥ॐ ह्सौं वृषभवाहिन्यै माहेश्वर्य्यै विच्चे नमः स्वाहा० ॥१०४॥ ॐ क्लीं मयूरवाहिन्यै कौमार्यै विच्चे नमः स्वाहा० ॥१०४॥ ॐ श्रीं गरुडवाहिन्यै वैशाख्यै विच्चे नमः स्वाहा० ॥१०६॥ ॐ दं दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै वाराह्यै नमः स्वाहा० ॥१०७॥ ॐ क्ष्म्रौं स्तंभोद्भवायै नारसिंह्यै विच्चे नमः स्वाहा० ॥१०८॥ ॐ लौं गजवाहिन्यै ऐन्द्र्यै विच्चे नमः स्वाहा० ॥१०९॥ ॐ ख्रें गणनाथपरिवारायै सदा रुद्रेण संयुक्तायै चंडमुण्डमंडितायै सिंहारूढायै चामुंडायै विच्चे नमः स्वाहा० ॥११०॥ ॐ ह्रीं हेमगर्भायै नंदायै विच्चे नमः स्वाहा० ॥१११॥

ॐ ह्रीं सुरक्तायै रक्तदंतिकायै विच्चे नमः स्वाहा ॥११२॥ ॐ ह्रीं नीलायै शाकंभर्यै विच्चे नमः स्वाहा ॥११३॥ ॐ ह्रीं सर्वरूपार्तिहारिण्यै दुर्गायै विच्चे नमः स्वाहा ॥११४॥ ॐ ह्रीं दंष्ट्राञ्चितमुखायै नीलपात्रशिरोधरायै भीमायै विच्चे नमः स्वाहा ॥११५॥ ॐ ह्रीं तेजोमंडलदुर्धर्षायै वरदायै भ्रामर्यै विच्चे नमः स्वाहा ॥११६॥ ॐ यं यक्षिण्यै ॥११७॥ ॐ कं कालिकायै ॥११८॥ ॐ सं सुरश्रेष्ठायै० ॥११९॥ ॐ दं दशाननायै० ॥१२०॥ ॐ रं रत्यै० ॥१२१॥ ॐ प्रं प्रीत्यै० ॥१२२॥ ॐ वं विश्वेश्वर्यै० ॥१२३॥ ॐ अं अष्टादशभुजायै मनोभवायै० ॥१२४॥ ॐ अणिम्ने० ॥१२५॥ ॐ महिम्ने० ॥१२६॥ ॐ लघिम्ने० ॥१२७॥ ॐ गरिम्णे० ॥१२८॥ ॐ प्राप्त्यै० ॥१२९॥ ॐ प्राकाम्यै० ॥१३०॥ ॐ ईशितायै० ॥१३१॥ ॐ वशितायै० ॥१३२॥ ॐ असितांगभैरवाय० ॥१३३॥ ॐ रुरुभै० ॥१३४॥ ॐ चंडभै० ॥१३५॥ ॐ क्रोधभै० ॥१३६॥ ॐ उन्मत्तभै० ॥१३७॥ ॐ कपालभै० ॥१३८॥ ॐ भीषणभै० ॥१३९॥ ॐ संहारभै० ॥१४०॥ इति होमं कृत्वा लोकपालेभ्यो जुहुयात्।

तद्यथा-लँ वज्रहस्ताय सुराधिपतये इंद्राय० ॥१४१॥ ॐ रं शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अग्नये० ॥१४२॥ ॐ मं दंडहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय० ॥१४३॥ ॐ क्षं खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये निर्ऋतये० ॥१४४॥ ॐ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वरुणाय० ॥१४५॥ ॐ यं अंकुशहस्ताय प्राणाधिपतये वायवे० ॥१४६॥ ॐ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये० ॥१४७॥ ॐ हँ त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय० ॥१४८॥ इति होमं कृत्वा ततः ॐ गुं गुरुभ्योनमः ० ॥१४९॥ ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः स्वाहा० ॥१५०॥ ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो० ॥१५१॥ ॐ गं गणेशाय० ॥१५२॥ ॐ हं हरये० ॥१५३॥ ॐ हँ हराय० ॥१५४॥ एताभ्यो देवताभ्य एकैकाश्चरुतिलाज्याहुतयः।

ततः पूर्वोक्तसर्व न्यासं कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा हुताशने देवीमावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य अग्निमध्यभागे ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे नमः स्वाहा इदं महालक्ष्म्यै न मम ॥१॥ इति सर्वत्र तद्दक्षिणभागे। ॐ ऐं महाकाल्यै विच्चे नमः स्वाहा ॥२॥ देव्या वामभागे। ॐ क्लीं महासरस्वत्यै विच्चे नमः स्वाहा ॥३॥ इति त्रिराहुतिं हुत्वा पुनस्तत्रैव देव्या दक्षिणभागे।

ॐ क्ष्म्रौं सिंहाय नमः स्वाहा० ॥१॥ ॐ हूं महिषाय नमः स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्सौं ह्सैं गौरीरुद्राभ्याम्० ॥३॥ देव्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये। ॐ लक्ष्मीहृषीकेशाभ्यां ॥४॥ देव्याः पृष्ठभागे। ॐ ऐं विरंचये० ॥५॥ इति हुत्वा पुनः ॐ हूं कं कालाय नमः ॥१॥ ॐ रुं रूद्राय नमः ॥२॥ ॐ सं सिंहाय नमः ॥३॥ ॐ मं मृत्यवे नमः ॥४॥ ॐ विं विजयाय नमः स्वाहा ॥५॥ ॐ गं गणेशाय० ॥६॥ ॐ मं महिषाय० ॥७॥ ॐ भं भैरवाय० ॥८॥ इति हुत्वा विष्णुमायादिहोमं कुर्यात्। ॐ विष्णुमायायै० ॥१॥ ॐ चेतनायै० ॥२॥ ॐ बुद्ध्यै० ॥३॥ ॐ निद्रायै० ॥४॥ ॐ क्षुधायै० ॥५॥ ॐ छायायै० ॥६॥ ॐ शक्त्यै० ॥७॥ ॐ तृष्णायै० ॥८॥ ॐ क्षांत्यै० ॥९॥ ॐ जात्यै० ॥१०॥ ॐ लज्जायै० ॥११॥ ॐ शांत्यै० ॥१२॥ ॐ श्रद्धायै० ॥१३॥ कांत्यै० ॥१४॥ ॐ लक्ष्म्यै० ॥१५॥ ॐ

धृत्यै० ॥१६॥ ॐ वृत्त्यै० ॥१७॥ ॐ श्रुत्यै० ॥१८॥ ॐ ॐ स्मृत्यै० ॥१९॥ ॐ दयायै० ॥२०॥ ॐ तुष्ट्यै० ॥२१॥ ॐ पुष्ट्यै० ॥२२॥ ॐ मात्रे० ॥२३॥ ॐ भ्रांत्यै० ॥२४॥ इति होमं कृत्वारंगहोमं कुर्यात्। अंग होम घृताहुति करें।

तद्यथा- ॐ ह्रां हृदयायै० ॥१॥ ॐ ह्रीं शिरसे० ॥२॥ ॐ ह्रूं शिखायै० ॥३॥ ॐ ह्रैं कवचाय ०॥४॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय० ॥५॥ ॐ ह्रः अस्त्राय० ॥६॥ इति हुत्वा। ॐ नालाय० ॥१॥ ॐ मूलाय० ॥२॥ ॐ पद्माय० ॥३॥ ॐ महापद्माय० ॥४॥ ॐ आधारशक्तये० ॥५॥ ॐ कूर्माय० ॥६॥ ॐ शेषाय० ॥७॥ ॐ पृथिव्यै० ॥८॥ इति जुहुयात्।

ततो मूलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्हुत्वा पायसतिलपलाश पुष्पसर्षपपूगीफल लाजदूर्वांकुर यव बिल्वफल रक्तचंदन गुग्गुलद्रव्याणि मितमिश्रपायसमेव वा प्रयोगोक्तद्रव्येण वा अर्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा कृतस्य जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमंत्रेणोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जुहुयात्। कवचाहुतिनिषेधः। अध्यायसमाप्तौ महाहुतिं मंत्रेण हुत्वा उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैर्होमः। यद्वा ''नमो देव्यै०'' इत्यनेन नवार्णेन वा जपदशांशहोमः। एवं होमं कृत्वा पुष्पाजलिं च दत्त्वा जयजयशब्दान्कारयेत्। ततः पुनः प्रधानहोमं कृत्वा ततोऽग्निपूजनं ग्रहपूजनं पीठे वरुणदेवतापूजनं च कृत्वा इंद्रादिदशदिक्पालेभ्यो बलिं निवेद्य मेखलोपरि अद्भिः परिषिच्यात्मनि पावकं योजयित्वा छागाद्यपशुमाषभक्तकूष्मांडानां नारिकेलस्य वा बलिं दत्त्वा पूर्णाहुतिं दद्यात्।

॥ इति आवरण देवता होमः॥

॥ अथ बलि प्रकरणम् ॥

समयाचार तंत्र में कहा है कि साधक पहले बलि प्रदान करे पश्चात् भोजन करे। उत्तराम्नाय में मातंगी उपासना अंतर्गत पहले भोजन करे पश्चात् बलि प्रदान करे। अष्टमी नवमी की संधि में बलि का फल उत्तम है। ब्राह्मण क्षीरान्न, शाल्यन्न पायस बलि देवे। **प्रदद्याच्च गवाक्षीरं दुग्धाम्राम्लान् निवेदयेत्। शाल्यन्नं वाथ समधु ससरं खण्डमोदकम्।** राजा पशु की, वैश्य ब्रीहिकी तथा शूद्र भी पशु बलि देवे।

वर्जनीय पशवः- काकोलं कलविङ्कं च राजहंसं च शारिकम्। शुकं गृध्रं च काकोलं मयूरं चित्रकं तथा। अश्वं च वेणुपृष्ठं च कृष्णपारावतं च यत्। वृहत् कपोतकं चैव खञ्जरीटं तथैव च। वकं चैव बलाकं च प्रयत्नेन विवर्जयेत्।

बल्यन्तरमाह तत्रैवः- रम्भा जातीबीजपूरं सुगन्ध परिमिश्रितं। मिश्रीकृत्य बलिं दद्यादष्टभ्यां च विशेषतः। रोग, कृत्या, पर सैन्य-ग्रहारिष्ट निवारण हेतु चतुष्पथ पर अर्द्धरात्रि में बलि प्रदान करें।

बलिमंत्रः- ॐ उग्रतारे विकटदंष्ट्रे परमोक्षं मोहय मोहय खादय खादय पचपच ये मां हिंसतुमुद्यता योगिनीचक्रे तान दारय हुं फट् स्वाहा। सर्वविद्यामाकर्षयाकार्षय छेदय छेदय हन हन कपाले गृहण् गृहण् स्वाहा।

अर्धरात्रे पंचाब्दं सर्वलक्षणोपेतं छागादिपशुमानीय। ''ॐ वाराही यमुना गंगा करतोया सरस्वती। कावेरी चंद्रभागा च सिन्धुभैरवसागराः ॥१॥ अजस्नाने महेशानि सान्निध्यमिह कल्पय। पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च ॥२॥ पराय परमेष्ठिने हुंकाराय च मूर्तये।'' इति पठित्वा मूलेन स्नापयित्वा सिंदूरमाल्यादिनालंकृत्य देव्यग्रे निधाय गंधमिश्रिताार्घ्योदकेन मूलेन त्रिःसंप्रोक्ष्य कृतांजलिः प्रार्थयेत् -

''छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः। प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम् ॥१॥ चंडिका प्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने। चंडिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः ॥२॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥३॥'' इति संप्रार्थ्य पार्श्वपूजां कुर्यात्।

तद्यथा-पार्श्वे ॐ जयंत्यै नमः ॥१॥ ॐ मंगलायै नमः ॥२॥ ॐ काल्यै नमः ॥३॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः ॥४॥ ॐ मानस्तोकायै नमः ॥५॥ ॐ विजयायै नमः ॥६॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥७॥ मध्ये - ॐ अनंतायै नमः ॥८॥ इति संपूज्य प्रत्यंतं पूजयेत्।

तद्यथा- ॐ रुधिरवदनायै नमः इति शिरसि॥१॥ ॐ चंडिकायै नमः इति कपोले ॥२॥ ॐ चन्द्रार्काभ्यां नमः इति चक्षुषोः ॥३॥ ॐ बृहस्पतये नमः इति कर्णयोः ॥४॥ ॐ सरस्वत्यै नमः इति नासायाम् ॥५॥ ॐ उग्रदंतिकायै नमः इति जिह्वायाम् ॥६॥ ॐ महादंतिकायै नमः इति ग्रीवायाम् ॥७॥ ॐ पृथिव्यै नमः इति उदरे ॥८॥ ॐ धर्माय नमः इति जंघाचतुष्टये ॥९॥ इति संपूज्य जलं गृहीत्वा च संकल्पं कुर्यात् -

संकल्प :- ''ह्रीं श्रीं वरुणमंडलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूप चंडिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा'' इति पशुं संप्रोक्ष्य। ततस्तिलकुशजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्री अमुक शर्माहं छाग समसंख्याकपंचवर्षावच्छिन्नश्रीमद्दुर्गादेव्याः प्रीतिकामोऽहमेताञ्छागान्वह्नि दैवतान्भगवति श्री दुर्गे देवि तुभ्यं घातयिष्ये। इति संकल्प्य खड्गपूजां कुर्यात्।

तद्यथा- खड्गं पुरतो निधाय ''ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्। उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम् ॥१॥ रक्तांबरधरं चैव पाशहस्तं कुटुंबिनम्। पीयमानं च रुधिरं भुंजानं क्रव्यसंहतिम्। रसना त्वं चंडिकायाः सुरलोकप्रसाधिका॥२॥'' इति खड्गं ध्यात्वा।

ॐ ह्रीं ह्रीं खड्ग आँ कालिकालि वज्रेश्वरी लोहदंडाय नमः इति गंधादिभिस्त्रिः संपूज्य खड्गोपरि सिंदूरादिना ह्रीं कारं विलिख्य। ॐ खड्गाय नमः इति संपूज्य बलिकर्णे पशुगायत्रीं श्रावयेत्।

तत्रमंत्रः- ॐ ह्रीं बलिरूपाय विद्महे देवीप्रियाय धीमहि। तन्नः पशु प्रचोदयात्। इति बलिकर्णे श्रावयित्वा खड्गं हस्तेनादाय प्रार्थयेत्। तद्यथा-

ॐ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः। श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते ॥१॥
इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा। नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः ॥२॥
रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्द्दनः। पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥३॥
नीलजीमूत संकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः। भावशुद्धो मर्षणश्च अतितेजास्तथैव च ॥४॥
इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः। तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नम ॥५॥
चंडिकारसनासि त्वमेकघातेन घातय ॥६॥''

इति खड्गं संप्रार्थ्य

हे वज्रासुरनाशाय देवकार्यार्थतत्पर। पशुं छिन्धि स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते ॥१॥
यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघातनम्। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥२॥

इति पठित्वा पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि। तन्नश्छागः प्रचोदयात्। मूलं पठित्वा श्रीदुर्गे देवि इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे। इति बलिस्कंधे खड्गं दत्त्वा सकलं रुधिरं मुंडं च देव्यग्रे कृत्वा समभागेन संपूर्णं परमं

कक्दिर्पियेन्मांससमीपजं दीपम्। क्रौं क्रौं नमो नमः अनेन प्रतिमुण्डं दद्यात्ततस्तर्पयेदेभिः।

रक्त से चामुण्डा का तर्पण करें।

ॐ चामुंडां तर्पयामि नमः इति पूर्वे ॥१॥ **ॐ योगिनीं तर्पयामि नमः** इति दक्षिणे ॥२॥ **ॐ डाकिनीं तर्पयामि नमः** इति पश्चिमे ॥३॥ **ॐ भैरवीं तर्पयामि नमः** इति उत्तरे ॥४॥ **ॐ विदारिकां तर्पयामि नमः** इति आग्नेय्याम् ॥५॥ **ॐ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः** इति नैर्ऋत्ये ॥६॥ **ॐ पूतनां तर्पयामि नमः** इति वायव्ये ॥७॥ **ॐ कालिकां तर्पयामि नमः** इत्यैशान्याम् ॥८॥ **इति मांसेन संतर्प्य। ॐ अद्य पंचवर्षावच्छिन्नश्रीदुर्गादेव्याः प्रीतिकाम इदं छागरुधिरं समुण्डं विष्णु दैवतं भगवति श्रीदुर्गे देवि तुभ्यमहं प्रददे** इति देवी समर्प्य ततः शेषेण –

ॐ बलिं गृह्णंत्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा। मरुतो येऽश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥१॥
असुरायातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः। डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥२॥
जृंभिकाः सिद्धगंधर्वा मल्ला विद्याधरा नगाः। दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनाशकाः ॥३॥
जगतां शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः। मा विघ्नो मा च मे पापं मा संतु परिपंथिनः ॥४॥
सौम्या भवंतु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥५॥

इति विनिवेद्य स्नात्वा तिलकं धृत्वा **खड्गिनी शूलिनीत्येकेन स्तुत्वा** नमस्कृत्य पुष्पांजलिं दत्त्वा **''रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति दहि मे। पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे।''** इति प्रार्थयेत्।

॥ इति पशुबलिः ॥

॥ भैरव बलि प्रयोगः॥

विनियोग :-(हस्ते जलमादाय) **अस्मिन् हवनाख्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थ दिक्पालदेवतानां, स्थापित देवतानां पूजन पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।**

(१) यज्ञ वेदी के पास दशों दिशाओं में, पात्र में दीपक में या ताम्बूलादिपत्र पर दधिमाष, चावल, पूप, बलि रखें, सिन्दूर से चर्चित करें, वर्ति रखें प्रज्वलित करें। इसी तरह सब मंडलों के आगे बलि रखें। ब्रह्मादि देवताओं के लिये प्रतिष्ठाभास्कर व रुद्रकल्पद्रुम, प्रतिष्ठामयूख में पायस बलि का विधान लिखा हैं। परन्तु आजकल बलि देते नहीं हैं।

(१) दिक्पाल देवता बलिदान–

सभी देवताओं के नाम मंत्र या वैदिक मंत्रों से पूजन करें। **अमुक अमुक देवताया बलिद्रव्याय नमः।** पूर्वादि क्रमेण कुण्ड की दशों दिशाओं में हाथ में जल ले लेवे और अनामिका व अंगुष्ठ के संयोग से जल छोड़ें। (प्रत्येक बलि पर)

पूर्वे – **ॐ इन्द्राय साङ्गायै सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष भक्त बलिं समर्पयामि।** (हाथ में गंधाक्षत पुष्प लेकर छोड़ें) **भो इन्द्र स अनुचरेभ्यो नमः। दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता, निर्विघ्नकर्ता वरदोभव।** (इस विधि से सर्वत्र करें।)

आग्नेयां – **अग्नि साङ्ग. सप. सवा. नमः.। भो अग्ने अग्नेरनुचरेभ्यो दिशं रक्ष.।**

दक्षिणस्यां - **यमाय नमः, यमानुरेभ्यो नमः.। भो यम दिशं रक्ष.।।**

नैऋत्यां - **नैर्ऋतये नमः, नैऋतेरनुचरेभ्यो नमः.। भो नैऋते दिशं रक्ष.॥**

पश्चिमायां - **वरुणाय नमः, वरुणस्यानुचरेभ्यो नमः.। भो वरुण दिशं रक्ष.॥**

वायव्यां - **वायवे नमः, वायोरनुचरेभ्यो नमः.। भो वायो दिशं रक्ष....॥**

उत्तरस्यां - **कुबेराय नमः, कुबेरानुचरेभ्यो नमः.। भो कुबेर दिशं रक्ष....॥**

ऐशान्यां - **ऐशान्यामीश्वराय नमः ईश्वरानुचरेभ्यो नमः। भो ईश्वर दिशं रक्ष....॥**

उर्ध्वं - **ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मणोनुचरेभ्यो नमः.। भो ब्रह्म दिशं रक्ष....॥** अधो - **विष्णवे नमः. विष्णोरनुचरेभ्यो नमः। भो विष्णो दिशं रक्ष....॥ गणेश बलिं** - **गणपतिं साङसप. नमः। भो गणपते दिशं रक्ष....॥ मातृका बलिं - वसोर्द्धारा सहित स गणेश गौर्याद्यावाहित मातृभ्यः साङ्गा. सप. सश. नमः। ऐतेभ्योसर्वेभ्योमातृभ्यो इमं बलिं= गृहीत मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु आयुकर्ता तुष्टि......॥**

ग्रह बलिं - **भो भो आदित्याद्यावाहित देवताः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्या.....॥**

ग्रह बलिम् - **सूर्याय गुडौदनम्। सोमायघृतपायसम्। कुजाय मसूरान्नम्। बुधाय क्षीरौदनम्। बृहस्पतये दध्योदनम् शुक्राय घृतौदनम्। शनैश्चराय तिला पिष्टं कृच्छान्ना वा। राहवे पायसम। केतवे चित्रौदनम्। अनेभ्य पायस बलीन्दद्यात्।**

वास्तु बलिं - **भो वास्तुपुरुषाद्यावाहित देवताः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सप. आयुकर्ता पुष्टि -।**

योगिनी बलिं - **भो चतुषष्टियोगिन्यै नमः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सप. आयुकर्ता पुष्टि. -।**

क्षेत्रपाल बलिं - **हस्ते जलमादाय-यद्याख्यहवन कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालाय पूजन पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।**

एक बड़े मृतिका पात्र को लेकर प्रोक्षण करें उसमें सिन्दूर से त्रिकोण षट्कोण बनायें बलिद्रव्य रखें। चौमुखा बनाये दीप प्रज्वलित करें। सुपारी रखें उस पर क्षेत्रपाल का आवाहन करें पूजन करें।

प्रार्थना करें- **ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप। पूजां बलिं गृहाणे मं सौम्यो भवतु सर्वदा। आयुरारोग्यम्मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा। मां विघ्न माऽस्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः। सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।**

यं यं यं यक्षरूपं दशशिव वदनं भूमिकम्पायमानं। सं सं सं संहार मूर्ति शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्रबिम्बम्। दं दं दं दीर्घकेशं विकृत नखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं। पं पं पं पापनाशो प्रणतपशुपतिं भैरवं क्षेत्रपालं। ॐ नमः क्षेत्रपाल चित्र तुरङ्गवाहन सर्वभूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी बेतालादि परिवृत दध्योदन प्रिय सकल शक्ति सहित इमां पूजां गृहाण।

कौलीरे चित्र कूटे हिमगिरिशिखरे कान्त जालन्धरे वा। सौराष्ट्रे सिन्धुदेशे मगधपुरवरे कौसले वा कलिंगे। कर्णाटे कौंकणे वा भृगुषु पुरवरे कान्य कुब्जे स्थिता वा। ते सर्वे यज्ञ रक्षां करण कृतधियः पान्तु वः क्षेत्रपालाः। ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ।

पुनः प्रार्थना करें- **ॐ क्षेत्रपालाय शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत वेताल पिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि।**

भोः क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव॥

अब पात्र को उठाकर यजमान की ओर ७ बार आवृत्त कर बिना पुछे मुड़े बाहर पात्र को चौराहे पर रखावें और उसके पीछे एक ब्राह्मण द्वार तक, जल के छींटे देवे, शांति पाठ करें। पात्र रखकर आनेवाला हाथ पैर धोकर आवे।

रुद्रकलश व ब्रह्मा बलि – इनके पायस बलि प्रदान करें। **भो रुद्रकलश देवेभ्यो दिशं रक्ष बलिं भक्ष सम कुटुम्बस्य आयुकर्त्ता तुष्टि.-। भो ब्रह्मादि देवेभ्यो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुकर्ता तुष्टि।**

प्रधान बलिं– रुद्र विष्णु दुर्गादि मंडलों पर पायस बलि देवे। दुर्गा होमे विशेष मुख्यतः कुष्माण्ड बलि देवें। शत्रु की माषपिष्ठी से आकृति बनायें। गेहूं वा मैदा के आटे से पशु आकृति तेल में पकाकर बनायें व उसको लाल रंग की शक्कर की चासनी में डूबोकर तैयार करें। या कुष्माण्ड पर सिन्दूर से मुख आदि आकृति बनाये। पात्र में ढककर लाये। वस्त्र हटा ले, स्मरण रहे, देवि के सामने रखते समय, बलि से पहिले अंग भंग नहीं होना चाहिये वर्ना अनिष्ट हो जायेगा।

खड्गपूजा– **ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः।** खड्ग के मूल, मध्य व अग्र भाग में **हुँ वागीश्वरी ब्रह्माभ्यां नमः, हुँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, हुँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। सर्वेषां देवानाम् गंधादिभिः संपूज्य।** प्रार्थना करें– **ॐ खड्गाय खड्गधाराय शक्तिकार्यार्थ तत्पर पशुं छिन्द्यर्ता शीघ्रं खड्नाथ नमोस्तुते।**

अब पशु व कुष्माण्ड का सामान्य जल से मूल मंत्र से ३ बार प्रोक्षण करें, "हुँ" से अवगुण्ठन कर धेनुमुद्रा दिखावें। **एतत् पाद्य छागपशवे नमः** से पाद्यादि से पशु की पूजा करें।

मंत्र पढ़े– **"ॐ पशुपाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।"**

विनियोग : – **अद्येत्यादि श्रीमहादुर्गा देव्याः प्रीतिकामः इमं कुष्माण्ड, छागपशुं श्री महादुर्गादेव्यै अहम् सम्प्रददे।** फिर हाथ जोड़े। **ॐ बलिं ग्रह्ण महादेवि पशुं कुष्माण्ड सर्वगुणान्वितम्। यथोक्तेन विधानेन तुभ्यमस्तु समर्पितम्॥ अं हं फट्॥** से पशु के कंधे पर धीरे से खड्ग छुआवें। निम्न मंत्र से शिरच्छेदन करें। **ॐ स्फुर स्फुर कुंभ कुभं सुनु सुनु, गुलु गलु, धुनु धुनु मारय मारय विद्रावय विद्रावय विदारय विदारय कंपय कंपय कंपातय कंपातय पूरय पूरय ॐ ह्रीं ॐ हुँ फट् फट् हुँ मर्दय मर्दय हूँ।**

शिर को एक थाली में रखें देवी के सामने रखें। छाग के शिर चार वर्तिका का दीप रखकर भी आरती करते हैं। शेष भाग को बाहर दे देवे। स्नान करके शुद्ध होवें।

॥ अथ महिषमर्दिनी मंत्र प्रयोगः॥

अष्टाक्षर मंत्रः– महिषमर्दिनि स्वाहा।

नवाक्षर मंत्राः – ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ॥१॥ ह्रीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥२॥ स्त्रीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥३॥ हुं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥४॥ हुं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥५॥ क्लीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥६॥ ऐं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥७॥

दशाक्षर मंत्रः – ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ह्रीं (हिन्दी तंत्र सारे) ॥१॥ ॐ ह्रीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥२॥ क्लीं ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ॥३॥ क्लीं महिषमर्दिनि स्वाहा (हिन्दी तंत्र सारे) ॥४॥ इनके ऋषि अष्टाक्षर के समान हैं।

मेरुतंत्र में मंत्रोद्धार:- **महिषमर्दिनीत्युक्त्वा स्वाहान्तोऽष्टक्षरो मनुः। ऋषि मार्कण्डेय, छन्द गायत्री, देवतासुरासुरनुता देवी महिषमर्दिनी कहा हैं।** मंत्र महार्णव व शारदातिलक के अनुसार अष्टाक्षरी मंत्र विधान इस प्रकार हैं।

॥ महिषमर्द्दिनी मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रो यथा शारदातिलके - **महिषमर्द्दिनि स्वाहा** ॥ इत्यष्टाक्षरमंत्रः।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्री महिषमर्द्दिनीमंत्रस्य नारद ऋषिः। गायत्री छंदः। महिषमर्द्दिनी देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ नारदऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीच्छंदसे नमोः मुखे ॥२॥ महिषमर्द्दिनीदेवतायै नमो हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥४॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- **महिषहिंसिके हुं फट् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ महिषश (त्रो) त्रीशाङ्गि हुंफट् तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ महिषं भीषय भीषय हुंफट् मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ महिषं हन हन देवि हुंफट् अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ महिषसूदिनि हुंफट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥** इति करन्यास॥

हृदयादिन्यास :- **महिषहिंसिके हुं फट् हृदयाय नमः ॥१॥ महिषश (त्रो) त्रीशाङ्गि हुं फट् शिरसे स्वाहा ॥२॥ महिषं भीषय भीषय हुंफट् शिखायै वषट् ॥३॥ महिषं हन हन देवि हुं फट् कवचाय हुम् ॥४॥ महिषसूदिनि हुं फट् अस्त्राय फट् ॥५॥** इति पचांगन्यासः।

इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम्॥

गारुडोपलसन्निभां मणिमौलिकुंडलमंडितां नौमि भालविलोचनां महिषोत्तमांगनिषेदुषीम् ।
चक्रशंखकृपाणखेटकबाण कार्मुकशूलकांस्तर्ज्जनीमपि बिभ्रतीं निजबाहुभिः शशिशेखराम् ॥१॥

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले **'मं मंडूकादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः'** इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा पूर्वादिक्रमेण - **ॐ जयायै नमः ॥१॥ ॐ विजयायै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥४॥ ॐ नित्यायै नमः ॥५॥ ॐ विलासिन्यै नमः ॥६॥ ॐ दोग्ध्यै नमः ॥७॥ अघोरायै नमः ॥८॥** मध्ये **ॐ मंगलायै नमः ॥९॥**

इति पीठशक्तीः संपूज्य स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपर्वकं **'ह्रीं आधारशक्तये नमः'** इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य तत्र प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वामूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।

॥ श्री महिषमर्दिनी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् :- तत्र क्रमःषट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे **महिषहिंसिके हुं फट् हृदयाय नमः ॥१॥** निर्ऋतिकोणे **महिषश (त्रो) त्रीशाङ्गि हुं फट् शिरसे स्वाहा ॥२॥** वायुकोणे **महिषं भीषय भीषय हुं फट् शिखायै वषट् ॥३॥** ईशानकोणे **महिषं हन हन देवि हुंफट् कवचाय हुं ॥४॥** देवीपश्चिमे **महिषसूदिनि हुंफट् अस्त्राय फट् ॥५॥** इति पंचांगानि पूजयेत्।

द्वितीयावरणम् :- ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण- **ॐ आं दुर्गायै नमः। दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**
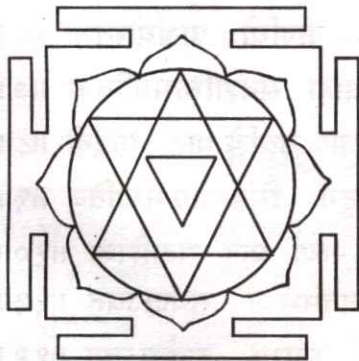
॥१॥ इति सर्वत्र। **ॐ ईं वरवर्णिन्यै नमः। वरर्णिनीश्रीपा० ॥२॥ ॐ ऊं आर्य्यायै नमः। आर्य्याश्रीपा० ॥३॥ ॐ ॠं कनकप्रभायै नमः। कनकप्रभाश्रीपा० ॥४॥ ॐ लृं कृत्तिकायै नमः। कृत्तिकाश्रीपादु० ॥५॥ ॐ ऐं अभयप्रदायै नमः। अभयप्रदाश्रीपा० ॥६॥ ॐ औं कन्यायै नमः। कन्याश्रीपा० ॥७॥ ॐ अः सरूपायै नमः। सुरूपाश्रीपा० ॥८॥** इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत्।

तृतीयावरणम् :- पत्राग्रेषु पूर्वादिक्रमेण। **यं चक्राय नमः ॥१॥ रं शंखाय नमः ॥२॥ लं खड्गाय नमः ॥३॥ वं खेटकाय नमः ॥४॥ शं बाणाय नमः ॥५॥ षं धनुषे नमः ॥६॥ सं शूलाय नमः ॥७॥ हं कपालाय नमः ॥८॥** इत्यस्त्राणि पूजयेत्।

ततो भूपुरे इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यारवणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः। तत्सहस्रं होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाचअष्टलक्षं जपेन्मंत्रं तत्सहस्रं तिलैः शुभैः। वशयेत्तिलहोमेन नरान्नरपतीनपि ॥१॥ सिद्धार्थैर्जुहुयान्मंत्री रोगान्मुच्येत तत्क्षणात्। पद्मैर्हुत्वा जयेच्छत्रून्दूर्वाभिः शांतिमाप्नुयात् ॥२॥ पलाशकुसुमैर्वृष्टिर्धान्यैर्धान्यश्रियं व्रजेत्। काकपक्षैः कृतो होमो द्वेषं वितनुते नृणाम् ॥३॥ मरीचहोमान्मरणं रिपुराप्नोति सर्वथा। क्षुद्रादिचोरभूताद्यान्ध्यात्वा देवी विनाशयेत् ॥४॥

॥ इति महिषमर्दिनीमंत्रप्रयोग ॥

॥ अथ महिषमर्दिनी कवचम् ॥

अथ वक्ष्ये महादेवी कवचं सर्वकामदम् । यस्य प्रसादमासाद्य भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥१॥
ॐकारं पूर्वमुच्चार्य मन्त्री मन्त्रस्य सिद्धये । प्रपठेत्कवचं नित्यं मन्त्रवर्णस्य सिद्धये ॥२॥

विनियोगः- **ॐ महिषर्दिन्याः कवचस्य भगवान्महाकाल ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, आद्या शक्तिः, महिषमर्दिनी देवता चतुर्वर्गफल प्राप्तये जपे विनियोगः।**

क्लीं पातु मस्तके देवी कामिनी कामदायिनी । मकारे पातु मां देवी चक्षुर्युग्मं महेश्वरी ॥३॥
हिकारे पातु वदने हिंगुलासुर नायिका । षकारे पातु मां श्वेता जिह्वायां त्वपराजिता ॥४॥
मकारे पातु मां देवी मर्दिनी सुरनायिका । र्दिकारे पातु मां देवी सावित्री कालनाशिनी ॥५॥
निकारे पातु मां नित्या हृदये वासपार्श्वयोः । नाभौ लिङ्गे गुदे कण्ठे कर्णयोः पार्श्वयोस्तथा ॥६॥
शिखायां कवचे पादे मुखजङ्घायुगे तथा । सर्वाङ्गे पातु मां स्वाहा सर्वशक्तिसमन्विता ॥७॥
कामाद्या पातु मां स्वाहा सर्वाङ्गे पातु मर्द्दिनी । दशाक्षरी महाविद्या सर्वाङ्गे पातु मर्दिनी ॥८॥
मर्दिनी पातु सततं मर्दिनी रक्षयेत्सदा । राजस्थाने तथा दुर्गे सिंहव्याघ्रभयादिषु ॥९॥
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे नौकायां वह्निमध्यतः । दुर्गा पातु सदा देवी आर्या पातु सदाशिवा ॥१०॥
प्रभा पातु महेशानी गगने पातु सर्वदा । कृत्तिका पातु सततमभया सर्वदाऽवतु ॥११॥
प्रभा पातु महामाया माया पातु सदा मम । नन्दिनी पातु सततं सुप्रभा सर्वदाऽवतु ॥१२॥
विजया पातु सर्वत्र देव्यङ्गे नवशक्तयः । शक्तयः पातु सततं मुद्राः पातु सदा मम ॥१३॥

जया पातु सदा सूक्ष्मा विशुद्धा पातु सर्वदा । डाकिन्यः पातु सततं सिद्धाः पातु सदा मम ॥१४॥
सर्वत्र सर्वदा पातु देवी महिषमर्दिनी । इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ॥१५॥
यत्र तत्र न वक्तव्यं गोपितव्यं प्रयत्नतः । गोपितं सर्वतन्त्रेषु विश्वसारे प्रकाशितम् ॥१६॥
सर्वत्र सुलभा विद्या कवचं दुर्लभं महत् । शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि ॥१७॥
न्यूनाङ्गे ह्यतिरिक्ताङ्गे क्रूरे मिथ्यातिभाषिणि । न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं कवचं सुरदुर्लभम् ॥१८॥
यत्र तत्र न वक्तव्यं शंकरेण च भाषितम् । दत्त्वा तेभ्यो महेशानि नश्यन्ति सिद्धयः क्रमात् ॥१९॥
मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् । अशुभं च भवेत्तस्य तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥२०॥
गोरोचना कुकुमेन भूर्जपत्रे महेश्वरि । लिखित्वा शुभयोगेन ब्राह्मैन्द्रे वैधृतौ तथा ॥२१॥
आयुष्मत्सिद्धियोगे च बालवे कौलवेपि वा । वाणिजे श्रवणायां च रेवत्यां वा पुनर्वसौ ॥२२॥
उत्तरात्रययोगेषु तथा पूर्वात्रयेषु च । अश्विन्यां वाऽथ रोहिण्यां तृतीया - नवमीतिथौ ॥२३॥
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां षष्ठ्यां वा पंचमीतिथौ । अमायां वा पूर्णिमायां निशायां प्रान्तरे तथा ॥२४॥
एकलिङ्गे श्मशाने च शून्यागारे शिवालये । गुरुणावैष्णवैर्वापि स्वयम्भू कुसुमैस्तथा ॥२५॥
शुक्लैर्वा रक्तकुसुमैश्चन्दनै रक्तसंयुतैः । शवाङ्गारचितावस्त्रे लिखित्वा धारयेत्पुनः ॥२६॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेणैव भाषितम् । कुमारीं पूजयित्वा च देवीसूक्तं निवेद्य च ॥२७॥
पठित्वा पूजयेद्विप्रान्धनवान्वेद पारगान् । आखेटकमुपाख्यानं कुमार्यैव दिनत्रयम् ॥२८॥
तदा धरेन्महारक्षां कवचं सर्वकामदम् । नाधयो व्याधयस्तस्य दुःखशोकैर्भयं क्वचित् ॥२९॥
वादी मूको भवेद्दृष्ट्वा राजा च सेवकायते । मासमेकं पठेद्यस्तु प्रत्यहं नियतः शुचिः ॥३०॥
दिवा भवेद्धविष्याशी रात्रौ शक्ति परायणः । षट्सहस्त्र प्रमाणेन प्रत्यहं प्रजपेत्सदा ॥३१॥
षणमासैर्वा त्रिभिर्मासैर्विद्वरो भवति ध्रुवम् । अपुत्रो लभते पत्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥३२॥
अरोगी वलवान्श्चैव राजा च दासतामियात् ।
रजस्वलाभगे नित्यं जपेद्विद्यां समाहितः ।
एवं यः कुरुते धीमान्स एव श्रीसदाशिवः ॥३३॥

॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे महिषमर्द्दिन्यां कवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ शत्रु संहारणी आर्द्रपटी दुर्गा प्रयोगः॥

शत्रुसंहार क्रम में आर्द्रपटी दुर्गा का प्रयोग भीषण हैं। गीले वस्त्र पर शत्रुनाम से प्रयोग किया जाता हैं। जब तक वस्त्र सूखता हैं उतनी देर में शत्रु का प्राणान्त हो जाता हैं। पूजा आवरण चण्डिका अथवा श्मशान कालीवत् करे।

मंत्रो यथा -(विद्यार्णवतंत्रे) **ॐ नमो भगवति चामुण्डे रक्तवाससी अप्रतिहतरूप पराक्रमे अमुकं वधाय विचेतसे स्वाहा।**

शत्रु की प्रतिमा बनाये नीलवस्त्र को छाग रक्त से भिगोकर प्रतिमा के लपेटे समुद्र वा नदीतीर पर उषरभूमि पर दक्षिणाभिमुख होकर ऊपर हाथ करके जप करे जब तक वस्त्र सूखेगा तब तक शत्रु के प्राण शुष्य हो जायेगें। परन्तु पहले मंत्र सिद्ध करना चाहिये बलिकर्म तथा स्वरक्षा कर्म पूर्ण करना चाहिये।

(रावणोड्डीश तंत्रेऽपि)- क्रीं नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्व चांडालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्त्रनयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि तज्जीवितापहारिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवसाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुं फट् स्वाहा। (इत्येक विंशोत्तर शताक्षरो मंत्रः)

१०८ मंत्र नित्य एक महिने तक करने पर शत्रु का मारण हो जाता हैं। अथवा कृष्णपक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्णा चतुर्दशी पर्यन्त शत्रु के नाम सहित प्रतिदिन १०८ मंत्र जप करे। अंतिम दिन शत्रु के पाँव तले की मृत्तिका लाकर शत्रु की पुतली बनावे नीले वस्त्र से लपेटे, मंत्रपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करे, काली का पूजन करे, बकरे का बलिदान देकर उसके रक्त में वस्त्र को भिगोकर उस वस्त्र को पुतली के ऊपर उढ़ा देवे और मंत्र का जप करे और मंत्र का जप करे तो कृष्ण के समान बलि शत्रु भी यमपुर चला जावेगा।

॥ अथ विद्वेषण कारिणी घर्मटिका दुर्गा ॥

इसे भद्रकाली का ही रूप मानते हैं, अतः भद्रकाली पूजन कर मंत्र जप करें।

मंत्रो यथा-**घ्रीं घर्मटिके घर्मटिके मर्कटिके मर्कटिके घोरे (घोराघोरयोः) विद्वेषकारिणि अमुकामुकयोः विद्वेषय विद्वेषय हुं फट् स्वाहा।** जिनमें विद्वेषण करना हो उनके पुत्तल बनाकर एक दूसरे की विपरीत दिशा में रखे जप करे पश्चात् उनको निर्जन स्थान में अधोमुख विपरीत दिशा में गाड़ देवे तो उनमें विद्वेषण होवें।

॥ वज्रप्रस्तारिणी महाविद्या ॥

इस विद्या का प्रयोग शत्रुसंघ को विदीर्ण कर अपनी ओर आकर्षित करने का हैं। यह वश्यप्रयोग कठिन कार्यों को सरल कर देता है।

द्वादशाक्षरी मंत्रः- ऐं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। इस मंत्र की साधना से मेघनाद ने इन्द्र को बांध लिया था। इसकी साधना वाममार्गी हैं। महानिर्वाण तंत्र में कहा हैं कि शून्यशिवालय में रजोधर्म युक्त पद्मिनी जाति की युवति के वराङ्ग (त्रिकोण) की पूजा करे।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य अङ्गिरस ऋषि, त्रिष्टुपछन्दः वज्रप्रस्तारिणी देवता अमुक कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

॥ ध्यानम् ॥

रक्ताब्धौ रक्तपोते रविदल कमलाभ्यन्तरे संनिषण्णाम् ।
रक्ताक्षीं रक्तमौलिस्फुरित शशिकलां स्मेरवक्त्रां त्रिनेत्राम् ॥
बीजापूरेषु पाशांकुश मदनधनुः सत्कपालानि ।
हस्तैर्बिभ्राणामानताङ्गीं स्तनभरन मितामम्बिकामाश्रयामः ॥

आवाहनादि कर पञ्च पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। आवरण पूजा करे यथा–
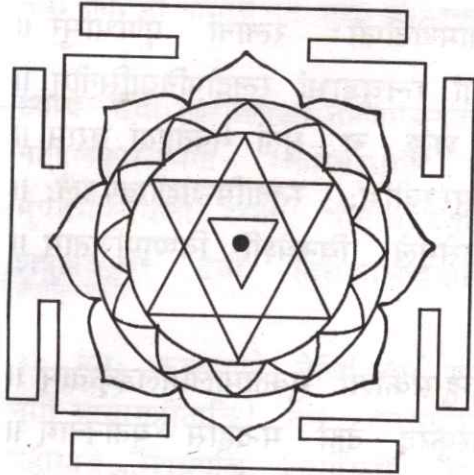
॥ श्री वज्रप्रस्तारिणी यन्त्रम् ॥

१. मूल बिन्दु में प्रधान देवता की पूजा करे।

२. (षट्कोण में) प्रथम चारों कोणों में बाद में मध्य व दिक्षु दिशा में **ॐ हृदयाय नमः** इत्यादि षडङ्गपूजन करे।

३. (षट् कोण के बाहर) द्वादश दल में–**ॐ हृल्लेखायै नमः; ॐ क्लेदिन्यै नमः, ॐ क्लिन्नायै नमः, ॐ क्षोभिण्यै नमः, ॐ मदनावत्यै नमः, ॐ मैखलायै नमः, ॐ द्राविण्यै नमः, ॐ वेगवत्यै नमः, ॐ स्मरायै नमः, ॐ मोहिन्यै नमः, ॐ नित्यक्लिन्नयै नमः, ॐ मदद्रवे नमः**। इन बारह शक्तियों का पूजन करे। सभी शक्तियां **कपोलोत्पलधारिण्यः शक्तयो रक्तविग्रहाः** के अनुरूप ध्यान वाली हैं।

४. (दलों के बाहर अष्टदल में) **ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, कमला एवं चामुण्डा** का पूजन करे। अगर अष्टदल नहीं बनाया हो तो भूपूर तीन रेखाओं का बनावें। एक रेखा में आठों दिशाओं में ब्राह्मयादि का पूजन करे।

५. भूपूर की दूसरी रेखा में इन्द्रादिलोकपालों का एवं तीसरी रेखा में उनके आयुधों का पूजन करे। एक लाख जप करके घृतासिक्त राजवृक्ष की समिधा से होम करे।

विशेष प्रयोगः– तृतीय भाग 'देवी खण्ड उत्तरार्द्ध' में अवलोकन करें।

॥ श्री विध्यवासिनी विधानम् ॥

शास्त्रों में श्री विन्ध्यवासिनी के अनेक व्रिगहों का उल्लेख मिलता है। महाकाली, महलक्ष्मी, महासरस्वती रूप में आप पूज्या है। (विष्णुयामलोक्त)–

॥ महाकाली ॥

(शारदा तिलके)

हेमाचले तटे रम्ये कल्पवृक्षोपशोभिते। दिव्योद्यनं चिन्तयेच्च विशालं हेम भूतलम् ॥
कृशानुरूपं वप्रेण करालेन समावृताम्। तन्मध्ये चिन्तयेद् दिव्यं विचित्रं मणिमण्डपम् ॥
तस्मिन् सिंहासनेऽम्भोजकर्णिकायां विचिन्तयेत्। दंष्ट्रां करालाट्टहासं कृष्णवर्णं भयानकम् ॥
अतितीव्रमुखं सिंहं ज्वलदग्निशिखोपमम्। तस्योपरिष्टात् तां देवी कोटि-बालार्क - सन्निभाम् ॥
चक्रासिवाण - शूलाख्यान् दधतीं दक्षिणैर्भुजैः। शङ्खचक्रधनुर्वाण - तर्जनीर्वामबाहुभिः ॥
चन्द्रखण्ड - समायुक्तामिति भीमत्रिलोचनाम्। ऊर्ध्वं ज्वलत्केश पाशामशेषाहरणोन्मुखीम् ॥
अङ्गाद्यावृत्ति -संयुक्तामस्त्र शस्त्रपरीवृताम्। इन्द्रादिलोकपालैश्च सेवितां विन्ध्यवासिनीम् ॥

॥ महालक्ष्मी ॥

रत्नकौस्तुभ - प्राकारे रत्नसिंहासनस्थिताम् । रत्नचिन्तामणेर्दीप्तौ रत्नानां पूर्णभासुरे ॥
रत्नाङ्गीं रत्नवक्त्राभां रत्नज्योत्सना - प्रसारिणीम् । रत्नगां रत्नचूडाभां रत्नद्वीपनिवासिनीम् ॥
नवयौवनसम्पन्नां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम् । वराभयासि - शङ्खं च धृतां भक्तेष्टदां वराम् ॥
कलाकोटिपरिभ्रान्तां रत्नहारावली - युताम् । सेव्यमानां सुर स्त्रीभिः स्तुतामिन्द्राद्याखण्डलैः ॥
सदाऽऽर्द्रचित्तां विश्वेशीं पराम्बां लोकपालिकाम् । ध्याये कल्पतरोर्मूले विन्ध्येशीं विष्णुपूजिताम् ॥

॥ महासरस्वती ॥

शुक्लाङ्गीं शुक्लकूटभां, शुक्लपुष्पप्रियां वराम् । कोटिशुभ्रेन्दु संकाशां मुक्तामालामलङ्कृताम् ॥
पीठे चिन्तामणेर्दीप्तौ करचूडाप्रभाभराम् । ज्योत्स्ना रत्नस्फुरद् - देहां मन्दहास - युताननाम् ॥
महासरस्वतीं देवीं मणिद्वीपेश्वरीं पराम् । सर्वाद्यां बालिकां नित्यां मणिदोलन - संस्थिताम् ॥
वक्त्राब्जेऽङ्गुष्ठधृत् मूलं कराब्जाभ्यां पदाब्जयोः । पिबन्तीं शोभितां शुभ्रां ब्रह्मानन्दस्वरूपिणीम् ॥
सेवितां देव - देवैश्च संस्तुतां सर्वसिद्धिदाम् । आदिरूपां महामायां ध्याये विन्ध्यवासिनीम् ॥

हरिवंशपुरण एवं श्रीदुर्गोपासनाकल्पद्रुम में धृति, मेधा, श्री, सिद्धि, विद्या, सन्ध्या, नारायणी, रात्रि, कालरात्रि, आर्या, कात्यायनी, त्रिलोक जननी, कौशिकी, नीलकौशेय वासिनी, आदि कई नाम देवी स्तुति में दिए है तथा इन्हे घण्टानिनाद बहुला भी कहा गया है।

महाभारत (विराट् पर्व, २३) के अन्तर्गत श्रीविन्ध्यवासिनी के स्वरूप का अतिसुन्दर वर्णन किया गया है, वे चार भुजाए, चार वक्त्रों वाली एवं उदयमान सूर्य के समान आकार वाली, पूर्णचन्द्र निभानना, मयूर पिच्छिल का जिसका वलय है, केयूर, आङ्गद, कुण्डल, श्रोणि सूत्रादि आभूषणों को धारण करने वाली एवं पाश, धनु, महाचक्र को धारण करने वाली है जो त्रैलोक्य की रक्षार्थ विन्ध्यगिरि पर शाश्वत रूप से निवास करती है। वह देवी सभी का कल्याण करती है।

विन्ध्यवासिनी को कहीं **सिंहस्था** कहा गया है तो कहीं **सौवर्णाम्बुज मध्यस्था** कहा गया है कहीं **गजारूढ़ा** कहा है। यथा देवी नाम विलास में -

गजारूढा निजबन्ध - स्वाच्छन्द्यानन्द - सुन्दरी ।
अवन्धुरं सुदुर्बन्धं छिन्धि त्वं विन्ध्यवासिनी ॥

॥ अथ विंध्यवासिनी मंत्र प्रयोगः ॥

श्री विंध्यवासिनी पीठ में त्रिशक्तिरूप महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती का पूजन होता है।

अष्टाक्षर मन्त्र :- ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

विनियोग :- ॐ **अस्य श्रीविन्ध्यवासिनी विशालाक्षी महालक्ष्मी अष्टाक्षरमन्त्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, ह्रीं बीजं, ॐ शक्तिः, चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास – श्रीसदाशिवऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, विशालाक्षी श्रीमहालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ शक्तये नमः पादयोः, चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय: नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

ध्याये देवीं विशालाक्षीं तप्तजाम्बूनदप्रभाम् । द्विभुजामम्बिकां चण्डीं खड्गखर्परधारिणीम् ॥
नानालङ्कारसुभगां रक्ताम्बरधरां शुभाम् । सदा षोडशवर्षीयां प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम् ॥१॥
मुण्डमालावली रम्यां पीनोन्नतपयोधराम् । वरदातां महादेवीं जटामुकुटमण्डिताम् ॥
शत्रुक्षयङ्करीं देवीं साधकाभीष्टदायिकाम् । सर्वसौभाग्यजननीं महासम्पत्प्रदां स्मरे ॥२॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमः कल्याणदे देवि! नमः शङ्करवल्लभे! नमस्ते विन्ध्यवासिन्यै, महालक्ष्म्यै, नमो नमः ॥
नमो मायागृहीताङ्गि! नमः कारुण्यरूपिणि! माहेश्वरि! नमस्तुभ्यं, महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
महामाये, शिवपत्नि, दुर्गारूपे, हरप्रिये! वाञ्छादात्रि, सुरेशानि! महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
प्रोद्यत्भानुसहस्राभे, नयनत्रयभूषिते! चन्द्रचूड़े , महादेवि! महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
विचित्रवसने, देवि! अन्नदानरतेऽनघे! शिवनृत्यकृता मोहे! महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
साधकाभीष्टदे, देवि! भवदुःखविनाशिनि! कुचभारनते देवि! महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
षट्कोणयन्त्रमध्यस्थे, षडङ्गयुवतीमये! ब्रह्माण्यादि स्वरूपायै, महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
इन्द्रार्चितपादाम्बुजे, रुद्राणीरूपधारिणि! सर्वसम्पत्प्रदे, देवि! महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥

॥ फलश्रुति ॥

पूजाकाले पठेद्यस्तु, स्तोत्रमेतत् समाहितः । तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मी, जायते नात्र संशयः ॥
प्रातःकाले पठेद्यस्तु मन्त्रराजपुरश्चरम् । तस्य सर्व समृद्धिर्वर्धमाना दिने दिने ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन। प्रकाशात् कार्यहानिः स्यात्, तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥
विन्ध्यक्षेत्रे महाक्षेत्रे, स्थित्वा यः शुचिमानसः। नित्यं तु प्रजपेद्भक्त्या, सिद्धयस्तस्य दासिकाः ॥

॥ अथ श्रीविन्ध्यवासिनी भद्रकाली प्रयोगः॥

पञ्चदशाक्षर मन्त्र :- ॐ हौं कालि महाकालि किले किले फट् स्वाहा

विनियोग- ॐ अस्य श्रीविन्ध्यवासिनी भद्रकाली पञ्चदशाक्षरमन्त्रस्य श्रीभैरवः ऋषिः। उष्णिक् छन्दः, श्रीभद्रकाली देवता, क्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकम्, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ श्रीभैरवऋषये नमः शिरसि, उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे, श्रीभद्रकाली देवतायै नमः हृदि, क्रीं वीजाय नमः गुह्ये, हूं शक्तये नमः पादयोः, क्रीं कीलकाय नमः नाभौ, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रूदन्ती। नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलं ग्रासमेकं करोमि ॥
हस्ताभ्यांधारयन्ती ज्वलदनलशिखासन्निभं पाशमुग्रं। दन्तैर्जम्बूफलाभैः परिहरतु भयं पातुमां भद्रकाली ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ महाकालि, महारूपे, गरुडासनसंस्थिते! शंखचक्रगदापद्मपाणे, ह्रींकारि च नमोऽस्तु ते ॥
सहस्राक्षि, महादेवि, वज्रप्रहरणायुधे! ऐरावतसमारूढ़े, इन्द्राणि! च नमोऽस्तु ते ।।
अनेकदैत्यसैन्यानां, मधुकैटभनाशिनि! ज्वालामुखि! नमस्तुभ्यं, विन्ध्ये कृतनिकेतने ॥
महाभीमे महादंष्ट्रे, ललज्जिह्वे, महाभये! महारूपे, महासत्त्वे, भद्रकालि! नमोऽस्तु ते ॥
त्रिपुरा भैरवी विद्या, हंसी वागीश्वरी शिवा। महाघोरा महारात्रि, कालरात्रि त्रिलोचना ॥
भद्रकाली करालाक्षी महाकाली तिलोत्तमा। काली कराल-वक्त्रान्ता कामाक्षी च महाशुभा ॥
महिषासुरसेनानी चिक्षुरादिमहासुरा । निशुम्भशुम्भ दैत्यानां, नाशिनी त्वं नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते विन्ध्यवासिन्यै, यन्त्रस्थायै नमो नमः। नमस्ते चोर्ध्व वक्त्रायै, सर्वेष्टं देहि मे सदा ॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं स्तोत्रं महापुण्यं, कालिकाया सुमङ्गलम्। योऽधीते शुद्धमनसा, लप्स्यति स परां गतिम् ॥
पुत्रपौत्रा सर्वधनाः, आयुवर्धनमेव च । सर्वान् कामान्लभेन्मर्त्यो, नात्र कार्या विचारणा ॥
यः स्थित्वा विन्ध्यक्षेत्रेऽस्मिन्, स्तोत्रमेतज्जपेद्रहः। तस्मै सा कालिका देवी, मन ईप्सितदायिनी ॥

॥ विंध्यवासिनी सरस्वती मन्त्र प्रयोगः॥

एकादशाक्षर मंत्र - ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः

विनियोग- ॐ अस्य श्रीविन्ध्यवासिनीवाक्स्वरूपा महासरस्वती एकादशाक्षर मन्त्रस्य श्रीनारायण ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, वाक्स्वरूपा महासरस्वती देवता, ऐं बीजं, चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीनारायणऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, वाक्स्वरूपामहासरस्वतीदेवतायै नमः हृदि, ऐं वीजाय नमः गुह्ये, चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि, सरस्वत्या सुमङ्गलम्। एवं ध्यायति यो मर्त्यः, सर्ववाञ्छितमाप्नुयात् ।
श्वेताब्जे श्वेतयोने रविदल कमलाभ्यन्तरे सन्निषण्णाम्। श्वेताङ्गीं श्वेतमौलिस्फुरच्छशि कलामष्टबाहुं भजामि ॥१॥
श्वेताभ्राभां कटाक्षैररिकुल भयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां। शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्, वहन्तीं त्रिनेत्रां ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं। ध्याये नित्यं भवानीं त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धसङ्घैः ॥२॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमस्ते वाक्प्रदे देवि! नमो विन्ध्याधिवासिनि। नमो निर्वाणदायिनि! भोगदायै नमो नमः ॥
कामदा त्वं महादेवी, सर्वाभीष्टफलप्रदा। सर्वेषां मंगलानां त्वमाश्रया परमा शिवा ॥
अम्बिका त्वं महादानी, सोमसूर्याग्निलोचना । आदित्यरूपाष्टभुजा, महातत्त्वप्रकाशिनी ॥
श्वेतपङ्कजवर्णाभां, श्वेताभरणभूषिताम् । श्वेतमाल्याम्बरधरां, भजे तां जगदम्बिकाम् ॥
महासिंहगता देवि! बीजरूपा सनातनी । अकारादि क्षकारान्ता, सर्वविद्या विशारदा ॥

सृष्टिकर्त्री त्वमेवादौ, स्थितिकर्त्री तथैव च । संहारकर्त्री त्वं माया, चादिरूपा सनातनी ॥
जगत्सर्वं त्वयि प्रोतं, सूत्रे मणिगणा इव। त्वत्तत्त्वं न विदुः साक्षाद्, देवा इन्द्रपुरोगमाः ॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं स्तोत्रं तु यो मर्त्यो, पठेद्भक्त्या समाहितः । विद्यां श्रियं परां कीर्तिं, लभते नात्र संशयः ॥
कुले न जायते तस्य, दरिद्री कलहोऽपि वा । महापातकजान् दोषान्मुच्यते पुण्यभाक् भवेत् ॥
बहुलां श्रियमाप्नोति, सात्विको पुण्यहेतुकी । गुरुवक्त्राद् लभेद्यस्तु, नान्यथा मुनिपुङ्गव! ॥

॥ श्रीविन्ध्यवासिनी यन्त्रार्चनम् ॥

विन्दुस्त्रिकोणं षट्कोणं वृत्तमष्टदलं तथा, षोडशारं ततः पश्चात् चतुर्विंशदलं ततः ।
भूपुरद्वारसहितं महायन्त्रं प्रकीर्तितम्, विन्दौ तु संस्थिता देवी ब्रह्मरूपेण सर्वदा ॥
पूर्वकोणे त्रिकोणेऽस्य महालक्ष्मीर्व्यवस्थिता, प्रत्यग्दिशि मुखं कृत्वा भक्तानां भयहारिणी ।
नानाऽम्बरधरा देवी नानाभूषणभूषिता, तत्कोणे संस्थितां महालक्ष्मीं तु सर्वे स्तुवन्ति ॥
प्रत्यक् कोणेमुखंकृत्वाउत्तरस्य दिशि स्थिता, सा मायाऽष्टभुजा शक्तिरीश्वरी सर्वमोहिनी ।
साधयत्यखिलान् कामान् स्वभुजैरष्ट संज्ञकैः, दिग्भिरष्टाभिरवती स्वभक्तान् बाहुरष्टभिः ॥
यन्त्रस्य दक्षिणे कोणे मुखमूर्ध्वं विधाय सा, महाकाली महारूपा संस्थिता परमेश्वरी ।
तां स्तुवन्ति महासिद्धाः योगीशाः निर्मलात्मनः, सर्वैस्त्रिविष्टपैः सार्द्धं शाम्भवीं कालिकां शिवाम् ॥
पूर्वकोणे रतिदेवी संस्थिता परमेश्वरी, याम्यकोणे महाकाल्याः निकटे प्रीतिनामिका ।
संस्थिता सा महाशक्तिः कोणे तु पश्चिमे तथा, विजयानामिका शक्तिः स्थिता वाण्याः समीपके ॥
तदग्रे कोणषट्के तु शक्तयः संस्थितास्त्विमाः, ज्ञातव्याः संक्रमेणैव सर्वाघौघनिवारकाः ।
डाकिनी शाकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा, शाकिनी हाकिनी चैव शक्तयः षड्डुदाहृताः ॥
वृत्ताष्टदले च ब्राह्मीत्याद्यास्ताः लोकमातरः । संस्थितास्तत्र वसतां हिताय जगतां तथा ॥

॥ विंध्यवासिनी प्रयोगः ॥

सप्तशती के मंत्र "**नंदगोपगृहे...........विंध्याचल निवासिनी**" के अनुसार आप ही "**नन्दजा**" हैं। स्कंद पुराणान्तर्गत "**विंध्य पुराणखण्ड**" में विंध्यवासिनी महालक्ष्मी का "**विशालाक्षी**" रूप में यंत्रार्चन स्तोत्र दिये है। अन्य ग्रंथो के अनुसार आप ही "**शूलिनी देवी**" है। **आपही कात्यायनी है**। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती रूप में आपका अर्चन विंध्यक्षेत्र में होता है।

॥ विंध्यवासिनी यंत्रार्चनम् ॥

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल, षोडशदल, चौबीस दल एवं चार द्वार युक्त भूपुर बनायें। चतुर्थी युक्त नाम मंत्रों से आवाहन, तथा प्रथमा से पादुका पूजन करें।

प्रथमावरणम्- बिन्दु मध्य में देवी का आवाहन करें। "**त्रिकोण**" में अग्रभाग में पश्चिमाभिमुखी "**महालक्ष्मी**" तथा देवी के दक्षिण भाग में पश्चिमाभिमुखी अष्टभुजा "**ईश्वरी माया शक्ति**" तथा वाम भाग में उर्ध्वमुखी "**महाकाली**" का पूजन करें। महालक्ष्मी के पास "**रति देवी**" महाकाली के पास "**प्रीतिदेवी**" तथा माया शक्ति महासरस्वती
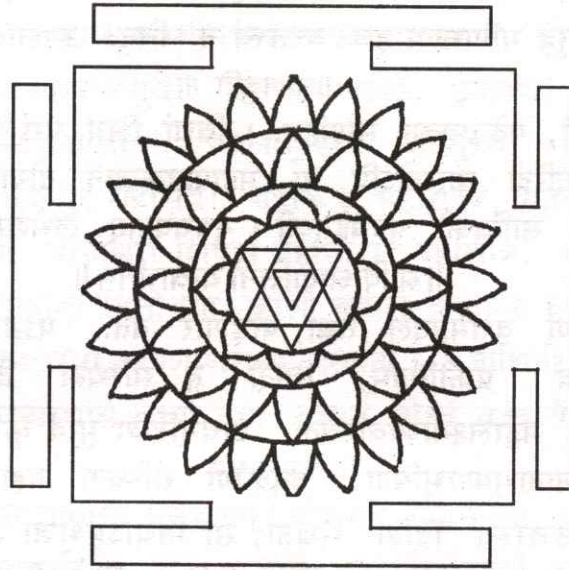
॥ श्री विंध्यवासिनी यन्त्रम् ॥

के पास "**विजया देवी** " की पूजा करें।

द्वितीयावरणम्- (षट्कोणे)- देवी के चारों ओर हृदयादि षडङ्गपूजा करें। षट्कोण में - डाकिनी, शाकिनी, लाकिनी, काकिनी, राकिनी, और हाकिनी की पूजा करें।

तृतीयावरणम्-(अष्टदले)- ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री एवं चामुण्डा का पूजन करें।

चतुर्थावरणम्- (अष्टदलाग्रे)- अष्टभैरव का पूजन करें। असिताङ्गभैरवाय नमः। रुद्र चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण, संहार भैरवाय नमः।

पंचमावरणम्- (षोडशदले)- पाशिनी, कामिनी, मोदिनी, विमला। अरुणा, जयिनी, सर्वा, ईश्वरी। अनङ्ग कुसुमा, अनङ्ग मेखला, अनङ्गमदना, अनङ्गरेखा। अनङ्गवेगिनी, अनङ्गाकुला, अनङ्गमालिनी, एवं अंकुशा का पूजन करें।

षष्ठमावरणम्- (चतुर्विंशति दले)- विष्णुमाया, चेतना, बुद्धि, निद्रा, क्षुधा, छाया। शक्ति, तृष्णा। क्षांति, जाति, लज्जा, शान्ति। श्रद्धा, कान्ति, लक्ष्मी, वृत्ति,। धृति, स्मृति। दया, पुष्टि, माता, भ्रान्ति, व्याप्ति एवं चिति की पूजा करें।

सप्तमावरणम्- (भूपुरे)- पूर्वादि क्रम से चारों द्वारों में- **गणेश, कार्तिकेय, पुष्पदन्त**, एवं "**कार्तन** " का पूजन करें। दशों दिशाओं में **इन्द्रादि लोकपालों** का उनके आयुधों सहित पूजन करें।

भूपुर में देवी के चारों ओर- आनन्द भैरव, कपाल भैरव,, सिद्धनाथ, एवं रुरु भैरव का पूजन करें।

सिद्धिदायिनी ६४ योगिनीयों की स्तोत्र नामावलि, ५२ भैरवनामावलि (अन्यत्र वर्णित है) से पूजन करें।

॥ श्री महाविद्यास्तोत्रम् ॥

सङ्कल्प-ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तदेशे अमुकपुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसम्वत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकनामत्रिविधदोषोपशमनार्थं सकलारिष्टग्रह जन्मदुःखध्वंसनपूर्वक भूतप्रेत पिशाच राक्षसब्रह्म राक्षस वेताल तथा कुलदेवतायाः शान्त्यर्थं कष्ट निवारणार्थं ज्वराधिजन्म दुःख व्याधि कृमि ध्वंसन पूर्वकं महाशान्तिकामः श्रीमहाविद्यायाः सकलरसानुकूल महाशान्तिक नाम स्तोत्रपाठमहं करिष्ये। तेनैव स्तोत्रेण दशदिनपर्यन्तम् अहोरात्र हवनमहं करिष्ये।

मंत्र - ॐ नमो भगवते महाविद्यायै नमः।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीमहाविद्यामन्त्रस्य श्रीअघोरार्यमा ऋषिः। गायत्रीत्रिष्टुप् जगतीछन्दांसि। परमात्मा श्री कालिका देवता। श्री महामाहेश्वरी विद्या। माया वीजं। त्रिशक्तित्रिमुद्रा शक्तिः। श्री महाविद्याप्रीत्यर्थे (मम सकलदुरितक्षयार्थे, सकलजनवश्यार्थे, सकलकार्य सिद्धयर्थे, मोहनार्थे, मनोऽर्पितकामना सिद्धयर्थे, सकलफलप्राप्त्यर्थे प्राप्तसंरक्षणार्थे, शीघ्रसकलकामना सिद्धयर्थे सर्वाशापरिपूरणार्थे, धनधान्यान्न वस्त्रालङ्कारादिसमृद्धयर्थे) जपे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्री अघोरार्यमाऋषये नमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुप्जगती छन्दोभ्यः नमः मुखे। परमात्मा श्रीकालिकादेवतायै नमः हृदि। श्री महामाहेश्वरीविद्यायै नमः कण्ठे। मायावीजाय नमः लिङ्गे। त्रिशक्तित्रिमुद्राशक्तये नमः नाभौ। श्री महाविद्याप्रीत्यर्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

करन्यासः- अं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऐं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। महाविद्यायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः- अं हृदयाय नमः। ऐं शिरसे स्वाहा। ह्रीं शिखायै वषट्। श्रीं क्वचयोः हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। महाविद्यायै अस्त्राय फट्।

उत्कीलनमन्त्रः- ॐ ऐं ह्रीं वाग्वादिनी सर्वमन्त्राणां सर्वयन्त्राणामुत्कीलनकरी सर्वसुख मुखनकरीस्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

पञ्चवक्त्रां च लम्बोष्ठीं, नयनत्रयशोभिताम् । रक्तदंष्ट्रां करालास्यां, कृष्णाजिन्मृगरूपिणीम् ॥
रक्तवस्त्रां दशभुजामायुधैः परिशोभिताम् । खड्गं च मुशलं शूलं, भल्लं वाणं च दक्षिणे ॥
धनुः पाशं च डमरुं शक्तिं खेटं तथोत्तरे । बिभ्राणां सिंहपृष्ठस्थां, ध्यायेत् तां हृत् शिरोरुहे ॥
आरुणीं वारुणीं चैव, सर्वोपद्रवनाशिनीम् । उल्कामुखीं रुद्रजटीं नागपृष्ठशिरोधरीम् ॥

पूजामन्त्रः- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कुलकुण्डस्वामिनि! स्वाहा। ॐ आत्मरक्षां कुरुकुरु , परविद्यां छिन्धिछिन्धि परयन्त्रं स्फोटयस्फोटय, ॐ कुण्डस्वामिनि! स्वाहा॥

मूलमन्त्रः- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महाविद्यायै स्वाहा। उक्त 'मूल मन्त्र' का १०८ जप करने के बाद 'माला मन्त्र' का जप करना चाहिए।

यथा- ॐ ह्रौं हंसक्षमल्वयवरा हंसक्षमल्वयवरीं श्रीं श्रीं ह्रीं याचकः सर्वाराध्य सर्वशुद्धनार्थं सर्वगुरु स्वयं

गुरुनाथ हंसक्षमल्वय सं हंसक्षमल्वपरि हंसक्षमल्वयपरां श्रीशम्भु गुरु श्रीं ह्रीं हसौं ऐं क्लीं सोऽहं सौं श्रीं ह्रीं मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं विषतनीयसीमुद्यदादित्यरुचिरां स्मरेत् शुभशान्तये। ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि, महादेवेन निर्मितां। चिन्तितां किन्तरूपेण, मात्रा हृदयनन्दिनीं॥ उत्तमां सर्वविद्यां, सर्वभूतवशकरीं। सर्वपापक्षयकरीं, सर्वशत्रुनिवारिणीम्॥

॥ होममन्त्र ॥

ॐ ह्रां हंसः कुलकार्यकरीं, कुलकरीं, गोत्रकरीं, पुत्रकरीं, पुष्टिकरीं, तुष्टिकरीं, धनकरीं, धान्यकरीं, वृद्धिकरीं, उत्साहबलवर्धिनीं, भूतानां प्रभञ्जिनीं, शोषिणीं, मोहिनीं, द्राविणीं, दुष्टयन्त्रप्रभञ्जिनीं, पुत्रपौत्रादिवर्द्धिनीं, आयुरारोग्यैश्वर्याभिवर्धिनीं, सर्वभूतस्तम्भिनीं, सर्वाकर्षिणीं, सर्वलोकवशकरीं, सर्वजनवशकरीं, सर्वयन्त्रप्रमोदिनीं, एकाहिकं, द्व्याहिकं, त्र्याहिकं, चातुर्थिकं, पञ्चाहिकं, षष्ठ्याहिकं, सप्ताहिकं, अष्टाहिकं, अर्धमासिकं, षाण्मासिकं, साम्वत्सारिकं, वातिकं, पैत्तिकं, श्लैष्मिकं, सान्निपातिकम्, कुष्ठरोगजठररोगमुख रोगप्रमेहरोगशुक्रविशिभयं विस्फोटकादिविनाशनाय स्वाहा। ॐ वेतालादिज्वर, मुहूर्त्तज्वरादि वसज्वर रात्रीज्वर, सन्ध्याज्वर, सन्ततज्वर, राक्षसज्वर, अग्निज्वर, प्रस्वेदज्वर, विषमज्वर, तीव्रज्वर, मायाप्रयोगाभिचारिकज्वर, दृष्टिज्वर, पाण्डुज्वर, अस्मादादिज्वरप्रयोगाद्धि विनाशनाय स्वाहा। ॐ ब्रह्माण्डशूल, शिरशूल, शिरऽर्धशूल, अक्षिशूल, घ्राणशूल, कर्णशूल, दन्तशूल, गलशूल, गण्डशूल, हृदयशूल, कुक्षिशूल, पृष्ठशूल, कटिशूल, नाभिशूल, उदरशूल, हस्तशूल, उरूशूल, पादशूल, पादार्धशूल, सर्वशूलविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधि विनाशनाय स्वाहा, सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। सर्वविस्फोटकविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा, परमात्मरक्षा, मित्ररक्षा, अग्निरक्षा, प्रत्यग्निरक्षा पराग्निवातोरक्षा, चौररक्षातेषां सकलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ हरदेहिनीं नमः स्वाहा। ॐ इन्द्रदेहिनीं नमः स्वाहा। ॐ स्वस्व ब्रह्माण्डदण्डं विश्रामय, विश्रामय, विष्णुदण्डम्। ॐ ज्वरज्वर, ईश्वरकुमारदण्डम्, ॐ प्रहरप्रहरानुदण्डम्, हिलिमिलि मायादण्डम्, नित्यं नित्यं विश्रामय। विश्रामवारुणी, शूलिनी, गारुडी रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ नदीनां पुलिने जाता, पर्वते वा वनान्तरे। रुद्रस्य हृदये जाता, विद्याऽहं कामरूपिणी स्वाहा। ॐ ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकललोहपिङ्गली कठिनप्रेरिका, किलि, किलि, किलिकं महादण्डम् कुमारदण्डम्, नृत्य नृत्य विष्णुवन्दितम्, हंसिनीं शङ्खिनीं, चक्रिणीं, गदिनीं, शूलिनीं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रां स्वाहा, ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा। ॐ ह्रीं स्वाहा, ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रूं स्वाहा, ॐ ह्रूं ह्रूं स्वाहा। ॐ ह्रें स्वाहा, ॐ ह्रें ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रैं स्वाहा, ॐ ह्रैं ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रों स्वाहा, ॐ ह्रों ह्रों स्वाहा, ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रौं स्वाहा, ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रं स्वाहा, ॐ ह्रं ह्रं स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा, ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां स्वाहा, ॐ क्रां क्रां स्वाहा। ॐ क्रीं स्वाहा, ॐ क्रीं क्रीं स्वाहा। ॐ क्रूं स्वाहा, ॐ क्रूं क्रूं स्वाहा। ॐ क्रें स्वाहा, ॐ क्रें क्रें स्वाहा। ॐ क्रैं स्वाहा, ॐ क्रैं स्वाहा। ॐ क्रों स्वाहा, ॐ क्रों क्रों स्वाहा। ॐ क्रौं स्वाहा, ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा। ॐ क्रं स्वाहा, ॐ क्रं क्रं स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा, ॐ क्रः क्रः स्वाहा। ॐ कं स्वाहा, ॐ कं कं स्वाहा। ॐ खं स्वाहा, ॐ खं खं स्वाहा। ॐ गं स्वाहा, ॐ गं गं स्वाहा। ॐ घं स्वाहा, ॐ घं घं स्वाहा। ॐ ङं स्वाहा, ॐ ङं ङं स्वाहा। ॐ चं स्वाहा, ॐ चं चं स्वाहा। ॐ छं स्वाहा, ॐ छं छं स्वाहा। ॐ जं स्वाहा, ॐ जं जं स्वाहा। ॐ झं स्वाहा, ॐ झं झं स्वाहा। ॐ ञं स्वाहा, ॐ ञं ञं स्वाहा। ॐ टं स्वाहा, ॐ टं टं स्वाहा। ॐ ठं स्वाहा, ॐ ठं ठं स्वाहा। ॐ डं स्वाहा, ॐ डं डं स्वाहा। ॐ ढं स्वाहा, ॐ ढं ढं स्वाहा। ॐ णं स्वाहा, ॐ णं णं स्वाहा। ॐ तं स्वाहा, ॐ तं तं स्वाहा। ॐ थं स्वाहा, ॐ थं थं स्वाहा। ॐ दं स्वाहा, ॐ दं दं स्वाहा। ॐ धं स्वाहा, ॐ धं धं स्वाहा। ॐ नं स्वाहा, ॐ नं नं स्वाहा। ॐ पं स्वाहा, ॐ पं पं स्वाहा। ॐ फं स्वाहा, ॐ फं फं स्वाहा। ॐ बं स्वाहा, ॐ बं बं स्वाहा। ॐ भं स्वाहा,

ॐ भं भं स्वाहा। ॐ मं स्वाहा, ॐ मं मं स्वाहा। ॐ यं स्वाहा, ॐ यं यं स्वाहा। ॐ रं स्वाहा, ॐ रं रं स्वाहा। ॐ लं स्वाहा, ॐ लं लं स्वाहा। ॐ वं स्वाहा, ॐ वं वं स्वाहा। ॐ शं स्वाहा, ॐ शं शं स्वाहा। ॐ षं स्वाहा, ॐ षं षं स्वाहा। ॐ सं स्वाहा, ॐ सं सं स्वाहा। ॐ हं स्वाहा, ॐ हं हं स्वाहा। ॐ क्षं स्वाहा, ॐ क्षं क्षं स्वाहा। ॐ त्रं स्वाहा, ॐ त्रं त्रं स्वाहा। ॐ ज्ञं स्वाहा, ॐ ज्ञं ज्ञं स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः स्वाहा। ॐ रुं रुद्राय नमः स्वाहा। ॐ रुद्रादित्याय नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वभूतानां सर्वविषाणां सर्व दुष्टानां निग्रहं कुरुकुरु स्वाहा। ॐ आदित्याय नमः स्वाहा। ॐ सोमाय नमः स्वाहा। ॐ अङ्गारकाय नमः स्वाहा। ॐ बुधाय नमः स्वाहा। ॐ वृहस्पतये नमः स्वाहा। ॐ शुक्राय नमः स्वाहा। ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा। ॐ राहवे नमः स्वाहा। ॐ केतवे नमः स्वाहा। ॐ श्लेषाय नमः स्वाहा।

ॐ दुर्गे महाशान्तिकपतङ्ग भूतप्रेतपिशाचराक्षस ब्रह्मराक्षससर्ववेतालसर्ववृश्चिक भयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ शिं शिवाय नमः स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय नमः स्वाहा। ॐ सों सोमाय नमः स्वाहा। ॐ मं मङ्गलाय नमः स्वाहा। ॐ बुं बुधाय नमः स्वाहा। ॐ वृं वृहस्पतये नमः स्वाहा। ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा। ॐ शं शनैश्चराय नमः स्वाहा। ॐ रां राहवे नमः स्वाहा। ॐ कें केतवे नमः स्वाहा। ॐ महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाच राक्षसब्रह्मराक्षससर्ववेतालसर्व वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेशाय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ सिं सिंह शार्दूल गजेन्द्रग्रहसर्व व्याघ्रादि मृगादि बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ बां बाहुं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ नें नेत्रं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ श्रों श्रोत्रं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ पां पादं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ आं आंसां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ सं सर्वं नमः स्वाहा। ॐ बं बन्धनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ शतयोजन विस्तीर्णं रुद्रो वदति मण्डलम्। तद् बन्धनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ भूतपिशाचान्, असुरग्रहान्, डाकिनीग्रहान्, अपस्मारग्रहान्, कामलकग्रहान्, भूतग्रहान्, प्रेतग्रहान्, कस्मलग्रहान्, अतिविश्वासग्रहान्,नाशय नाशय स्वाहा। ॐ ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लें ग्लैं ग्लों ग्लौं ग्लं ग्लः गणपतये स्वाहा। ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्षेत्रपालाय स्वाहा। ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रें स्त्रैं स्त्रों स्त्रौं स्त्रं स्त्रः सूर्याय स्वाहा। ॐ गं गन्धर्वाय स्वाहा। ॐ यं यक्षाय स्वाहा। ॐ ह्रीं तक्षकआस्तीक कर्कोटक द्रावलिक शङ्खपद्मक कुलिक महाशङ्खचूड़ वासुकिनागकुले श्रीं श्रीं ल्वौं ह्रौं हूं फट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लङ्काविध्वंसनाय अञ्जनीगभंसम्भूताय त्रीन्त्रिंशत्शाकिनीसायशाकिनी डाकिनीयक्षिणीविध्वंसनाय भूतप्रेतपिशाचमर्दनाय, किलि किलि, वुवुकारेण विभीषणे, रक्षेशाय, ह्रीं श्रीं ग्लौं ह्रौं हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो हनुमते महाबलपराक्रमाय, मम परस्य च चतुर्वर्णभूतप्रेतपिशाचशाकिनी डाकिनीयक्षिणीपूतनामारिकामहामारी कृत्यायक्षराक्षसभैरवीं, वेतालग्रहब्रह्मग्रहराक्षसआदित्यान् कुवा वीक्षणेन हन हन, जृम्भय जृम्भय, निराशय निराशय, वारय वारय, बन्धय बन्धय, नुद नुद, धुन धुन, मां रक्ष रक्ष, महामाहेश्वर, रुद्रावताराय हां हां हां, घें घें घें हूं फट् स्वाहा। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हूं स्फ्रें, स्त्रौं हस्फ्रें ह्सों द्रों ॐ हनुमते मम क्षयकुष्ठगण्डमालास्फोटक क्षतज्वरएकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं सम्भवज्वर, सान्निपातिकज्वर, भूतज्वर, मन्त्रज्वर, शूलभगन्दरमूत्र कृच्छ्रकपालकर्णशूल, अक्षिशूलउदरशूल, हस्तशूल, पादशूलार्दितसर्वान् व्याधीन् क्षणेन भिन्धि भिन्धि, छिन्धि छिन्धि, नाशय नाशय, निष्कृन्तय निष्कृन्तय, छेदय छेदय, भेदय भेदय वीर हनुमान! ह्रां ह्रां हूं हूं घें घें ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्रां क्रौं सुग्रीवाय वानरराजाधिराजाय किलि वुवुकारेण, हिलिहिलि, मिलिमिलि, शाकिनी

डाकिनी यक्षिणी भूतप्रेतपिशाचान् प्रणाशय प्रणाशय, सुग्रीव वीर! छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि, सिन्धि सिन्धि, त्रोटय त्रोटय, त्राटय त्राटय, सर्वग्रहान् हन हन, पच पच, आग्रय आग्रय। ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं क्रीं हों भूं स्भूं हूं हूं फट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं सकलेश्वरि, सुरासुरवन्दिते, श्रीत्रिपुरे! ऐं ह्रों क्रूं क्रूं हूं फट् स्वाहा। ॐ रक्तचामुण्डे, नरकपाले उल्कोपरि परिवारे श्मशानप्रिये! सर्वसकलभक्षरुधिरमांसभोजनप्रिये! सिद्धविद्याधरवन्दितचरणे! असुरासुरगणसेविते! दहनपुरन्दरे! विष्णुस्तुते! विश्वेश्वरि, पूजिते, त्रैलोक्यादिआधारमूले! विश्वजननि, आनन्दस्वरूपिणि, विश्वसृष्टिस्वरूपे, महाविद्ये! भैरवरूपिणि, स्वर्गमृत्युपातालविनाशिनि, कल्पे, रुद्रकुक्षि, विनिर्गतशरीरे, षोडशकलापरिपूर्णे, दानवस्वरूपेण दशदिशि इन्द्रउच्छिन्दे। ऐं ह्रीं अस्मिन् मण्डले प्रवेशय प्रवेशय, शत्रुमुखं स्तम्भय स्तम्भय, अन्य भूतं भक्षय भक्षय, अरिसैन्यं विध्वंसय विध्वंसय, ब्रह्म राक्षसान् उत्सादय उत्सादय, परविद्यां निवारय निवारय, कुयन्त्रं भञ्जय भञ्जय, ज्वरं नाशय नाशय, विषं निर्विषं कुरु कुरु, परसङ्कटं दह दह, पच पच, मथ मथ, मर्दय मर्दय, सर्वदुष्टजनं भक्षय भक्षय, मम मनोरथान् पूरय पूरय, अतीतानां गतवार्त्तां वर्तमानं कथय कथय, ऐं ह्रीं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, सिन्धि सिन्धि, त्रोटय त्रोटय, सर्वग्रहान् शक्तिशत्रून् भस्मी कुरु कुरु, इन्द्रवज्रेण, ब्रह्मपातेन, बन्ध बन्ध, रुद्रशालेन छेदय छेदय, ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रों ह्रौं क्रों क्रौं ग्लौं स्वौं श्रीं हूं फट् स्वाहा। ॐ हरिभ्यां नमः स्वाहा। !

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रीं ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ गन्धाय नमः स्वाहा । ॐ गन्धपादाय नमः स्वाहा। ॐ पञ्चोत्तर शतकोटिसहस्त्रगजान् बन्ध बन्ध, शान्तिं कुरु कुरु, भूतप्रेतपिशाचशाकिनीडाकिनी यक्षिणी कूष्माण्डवासिनी चातुर्थिकचौरराजा दुष्टपुरुषादीन् तेषां दिशां बध्नामि, पातालं बध्नामि, अन्तरिक्षं बध्नामि, घ्राणं बध्नामि, भ्रू बध्नामि, श्रोत्रं बध्नामि, मुखं बध्नामि, वाचं बध्नामि, जिह्वां बध्नामि, शब्दं बध्नामि, हृदयं बध्नामि, पञ्चाशत्कोटि सहस्त्रानन्तयोजनविस्तीर्णो रुद्रो वदति मण्डलं। तस्य श्रीरुद्रमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।ॐ ऐन्द्रदिशायां ऐरावतारूढं वज्रहस्तं परिवार सहितं, दिग्देवाधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। इन्द्रमण्डलं बन्ध-बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्राय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ अग्निदिशायां अजारूढं शक्तिसहितं परिवारसहितं दिग्देवाधिपते अग्निमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दक्षिणदिशायां महिषारूढं दण्डहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं यममण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यदिशायां

प्रेतारूढं खड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधि पतिं निर्ऋतिमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ निर्ऋतिमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मन्त्रारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ वरुणमण्डल बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ वायुदिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं वायुमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ वायुमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ उत्तरदिशायां नरारूढं गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं कुबेरमण्डलं बन्ध बंन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रु द्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ ईशानदिशायां वृषभारूढं त्रिशूलहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं ईशान मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ अन्तरिक्षदिशायां लोष्ठनागारूढं शूलहस्तं परिवारसहितं, दिग्देवाधिपतिं कालाग्निरुद्रमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ कालाग्निरुद्रमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ विष्णुदिशायां गरुडारूढं शङ्खचक्रगदापद्महस्तं परिवारसहितं, दिग्देवाधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ ब्रह्मणो दिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं ब्रह्ममण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ ब्रह्ममण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ अधोदिशायां कूनारूढं लोष्ठभागं कूंपरिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध

बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाच राक्षसब्रह्मराक्षससर्प वेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ पूर्वदिशायां वज्रको नाम राक्षस सदारस्य वज्रकस्याष्टादशकोटि सहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशो बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ अग्निदिशायां अग्निज्वालको नाम राक्षसस्याग्निज्वालस्याष्टाष्टक दशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दक्षिणदिशायां पिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्य पिङ्गलि कस्याष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ निऋतिदिशायां मारीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्याष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्याष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो वायव्यदिशायां कूष्माण्डको नाम राक्षसस्तस्य कूष्माण्डकस्याष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ हिमवन्तोत्तरस्य दिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्याष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्याष्टादश कोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ अन्तरिक्षदिशायां मन्त्ररूपो नाम राक्षसस्तस्यान्तरूपस्याष्टादश कोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ ब्रह्मणो दिशायां ब्रह्मस्वरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मस्वरूपस्याष्टादश कोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ ऊर्ध्वदिशायां खेचरिको नाम राक्षसस्तस्य खेचरिकस्याष्टादश कोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ सर्वतोदिशायां गरुडारूढं शङ्खचक्रगदा पद्महस्तेन श्रीनृसिंहवन्दित बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य कुरु कुरु फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा।

(ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा।) ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ

महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाच राक्षसब्रह्मराक्षससर्ववेताल सर्ववृश्चिकभयविनाशाय स्वाहा। ॐ शिखां मे रक्षतु ब्रह्माणी

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ शिरोरोगे रक्षतु मातेश्वरी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूँ हूं फट् स्वाहा। ॐ कण्ठं मे रक्षतु वैष्णवी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ भुजौ मे रक्षतु योगेश्वरी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ कुक्षौ मे रक्षतु नवदुर्गा ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ नाभौ मे रक्षतु वाराही ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ गुदं मे रक्षतु चामुण्डा ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे मे रक्षतु भैरवी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ पादौ मे रक्षतु विनायकी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ सर्वतो रक्षतु नारसिंही ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाच राक्षसब्रह्मराक्षससर्ववेताल सर्पवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ परिणामे महाविद्या महा देवस्य सन्निधौ। एकविंशतिरात्रेण जपित्वा सिद्धिमाप्नुयात्। यदि न सिद्ध्यते वापि रुद्रो वै ब्रह्महा भवेत्। पठित्वा यस्तु न पठेत् एतदा ब्रह्महा भवेत्। स्त्रियो वा पुरुषो वापि पापं भस्म समाचरेत्। पठेत् वा पाठयेत् वापि सर्वकार्येषु सर्वदा। दुष्टानां मारणं चैव साधकानां सुखावहम्। सर्वकार्येषु सिद्धि स्यात्, शान्तिकर्मे विशेषतः। माहेश्वरी महाविद्या महादेवेन निर्मिता। चकेश्वरी शिवा शान्ता शान्तिदा भवति ध्रुवम्। जपेन हरते शत्रून् जपेन सिद्धिभाग् भवेत्। द्रावणे स्तम्भने चैव, मारणे मोहने तथा। सर्वकार्येषु सिद्धि स्यात्, शान्तिकर्मे विशेषतः।

॥ इति महाविद्या सम्पूर्ण शुभम् नमः ॥

॥ अथ चण्डिका दल स्तोत्र पाठ ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चण्डिकादलमुत्तमम्। मन्त्रं विना तु जप्त्वा वैतत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥१॥ ॐ नमो भगवति जय जय चामुण्डे, चण्डि, चण्डेश्वरि, चण्डायुधे। चण्डरूपधारिणि ताण्डव प्रिये। कुण्डलीभूतदिङ् नागमण्डली कृतगण्डस्थले, समस्त जगदण्डसंहार कारिणि, परे, अनन्तानन्तरूपे,। शिवे, नरशिरोमालालंकृत वक्षस्थले, महाकपाल भालोज्वलन्मणि मुकुट चूड़ावतंस चन्द्र खण्डे, महाभीषणे, देवि। महामायेषोडशकलापरिकृतोल्लासिते महादेवासुरसमर निहतरूधिरार्द्रीकृतालम्बिततनु 'कमलोद्धरिक्त करे' सम्पूर्णरूधिरशोमितमहाकपोलवक्त्रहासिनी, दृढ़तरनिवद्धासिमान। रोमराजी सहित हेमकाञ्ची दामोज्वलित वसनारुणीभूतनूपुर प्रज्वलित महीमण्डले। महाशम्भुरूपे, महाव्याघ्र चर्माम्बरधरे। महासर्प यज्ञोपवीतिनि। महाश्मशान भस्मोद्धूलित सर्वगात्रे। काली कंकालि महाकालि, कालाग्निरुद्रकालि। काल संकर्षिणि। कालनाशिनि, कालरात्रि नमो दुष्टभक्षिणि। नानाभूतप्रेत पिशाचगण सहस्त्र संचारिणि, नाना व्याधि प्रशमनि।

सर्वदुष्ट प्रमथिनि सर्व- दारिद्र्य नाशिनि, धग धगेत्या स्वादित मांसखण्डे। गात्र विक्षेप कल, कलायमान कंकालधारिणि, मधु मांस रुधिरावसिक्त विलासिनि, सकल सुरासुर गन्धर्व, यक्ष विद्याधर किन्नर किम्पुरुषादिभिः स्तूयमान चरिते, सर्वमन्त्राधिकारिणि सर्वशक्ति प्रधाने। सकललोक पावनि। सकल दुरित प्रक्षालिनि। सकललोकैकजननि। ब्राह्मि। माहेश्वरि। कौमारि। वैष्णवि। शंखिनि। वाराहि। नारसिंहीन्द्राणि। चामुण्डे, महालक्ष्मी स्वरूपे। महाविद्ये। योगेश्वरि, योगिनि। चण्डिके। महामाये। विश्वरूपिणि। सर्वाभरणभूषिते। अतल वितल सुतल रसातल तलातल महातल पातालादि भूर्भुवः स्वर्महर्जनस्तपः सत्याख्य चतुर्दशभुवनैकनाथे महाक्रूरे

प्रसन्नरूपधारिणि। ॐ नमः पितामहाय। ॐ नमोनारायणाय। ॐ नमः शिवाय। इतिसकललोकैकजायमान।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर रूपिणि, दण्ड कमंडलु धारिणि। सावित्रि। सर्वमङ्गला सरस्वति पद्मालये। पार्वति सकल जगत्स्वरूपिणि। शंखचक्रगदापद्म धारिणि। परशु शूल पिनाक टंक धारिणि। शर चाप शूल करवाल खड्ग डमरुकांकुश गदा परशु तोमर भिन्दिपाल भुशुण्डी मुद्गर मुसल परिघायुध दोर्दण्ड सहस्त्रे, चन्द्रार्क वह्नि नयने। इन्द्राग्नि यम नैर्ऋति वरुण वायु सोमेशान प्रधान शक्ति हेतु भूते, सप्तद्वीप समुद्रो पर्युपरि व्याप्तेईश्वरि महा प्रपंच मालालंकृत मेदिनीनाथे, महाप्रधाने महाकैलासपर्वतोद्यान वन विहारिणि, क्षेत्र नदी तीर्थ देवतायतनालंकृते। वसिष्ठ वामदेवादि महामुनिगण वन्द्यमान चरणारविन्दे। द्विचत्वारिंशद्वर्ण माहात्म्ये। पर्याप्त वेदवेदाङ्गाद्य नेकशास्त्राधारभूते। शब्द ब्रह्ममयि। लिपि देवते। मातृकादेवि चिरं मां रक्ष रक्ष। मम शत्रूनहुँकारेणनाशय नाशय। भूत प्रेत पिशाचानुच्चाटयोच्चाटय। समस्त ग्रहान् वशीकुरु वशीकुरु, मोहय मोहय, स्तंभय स्तंभय, मोदय मोदय, उन्मादयोन्मादय, विध्वंसय विध्वंसय, द्रावय द्रावय, श्रावय श्रावय, स्तोभय स्तोभय, संक्रामय संक्रामय, सकलारातीन् मूर्दि्ध्न स्फोटय स्फोटय, ममशत्रून् जलवात शीघ्रं मारय मारय, जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यवस्था स्वस्मान् राजचौराग्नि जलवात विषभूत शत्रु मृत्यु ज्वरादि नाना रोगेभ्यो नानाभिचारेभ्यो नानापवादेभ्यः परकर्म मन्त्र तन्त्र यन्त्रौषध शल्य शून्यक्षुद्रेभ्यः सम्यङ्मां रक्ष रक्ष। ॐ श्रों ह्रीं क्ष्मौं ममशत्रुस्य सर्वप्राणसंहारकारिणि हुं फट् स्वाहा।

॥ इति रुद्रयामलेतंत्रे चण्डिकादलम् ॥

॥ अथ नवदुर्गोपनिषत् ॥

उक्तं चाथर्वणरहस्ये।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीनवदुर्गामहामन्त्रस्य किरातरूपधर ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामी नारायणः किरातरूप धरेश्वरो नवदुर्गागायत्री देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः ,क्लीं कीलकं, मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

करन्यास :- हंसनी ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। शङ्खिनी ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। चक्रिणी ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। गदिनी ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। शरिणी ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। त्रिशूलधारिणी ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :- हंसिनी ह्रां हृदयादि नमः। शङ्खिनी ह्रीं शिरसे स्वाहा। चक्रिणी ह्रूं शिखायै वषट्। गदिनी ह्रैं कवचाय हुम्। शरिणी ह्रौं नेत्रत्रयाय य वौषट्। त्रिशूलधारिणी ह्रःअस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

॥ अथ ध्यानम् ॥

अरिशङ्ख कृपाण खेट बाणान्सुधनुष्क शूलमथ कर्तरीं दधाना ।
भजतां महिषोत्तमाङ्गसंस्था नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥१॥
हेमप्रख्यामिन्दु खण्डान्तमौलिं शङ्खारिष्टाभीति हस्तां त्रिनेत्राम् ।
हेमाब्जस्थां पीतवर्णां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥२॥

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। ॐ हरिः ॐ।

॥ अथ पञ्चपूजा ॥

ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्ध समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपंसमर्पयामि। ॐ: रं अग्न्यात्मने दीपं समर्पयायि। ॐ वं अमृतात्मने अमृतनैवेद्यंसमर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उत्तिष्ठ पुरुष किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितम्। यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा। ॐ नमश्चण्डिकायै नमः। हेतुकं पूर्वपीठे तु आग्नेय्यां त्रिपुरान्तकम्। दक्षिणे चाग्निवैतालं नैर्ऋत्यां यमजिह्वकम् ॥४॥ कालाख्यं वारुणे पीठे वायव्यां तु करालिनम्। उत्तरे एकपादं तु ईशान्यां भीमरूपिणम् ॥५॥ आकाशे तु निरालम्बं पाताले वडवानलम्। यथा ग्रामे तथाऽरण्ये रक्ष मां बटुकस्तथा ॥६॥ सर्वमंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥७॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः। प्रयोगविषये ब्राह्मण्यै नमः। वारुणि खल्वि माहेश्वर्यै नमः। कुल्यवासिन्यै कुमारिण्यै नमः। जयन्तीपुरलाहिवाराहिण्यै नमः। अष्टमहाकालि माहेश्वर्यै नमः। चित्रकूट इन्द्राण्यै नमः त्रिपुरब्रह्मचारिण्यै नमः। एक वृक्षशुभिण्यै महालक्ष्म्यै नमः। त्रिपुरब्रह्माण्डनायक्यै नमः। एतानि क्ष क्षं त्रैलोक्यवशंकराणि। बीजाक्षराणि ॐ ह्रीं कुरु कुरु हुंफट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलनरमुखभ्रमरीम्। ॐ क्लीं ह्रीं सकलराजमुखभ्रमरीम्। ॐ क्रौं सौं सकलदेवतामुख भ्रमरीम्। ॐ क्लीं क्लीं सकलकामिनीमुखभ्रमरीम्। ॐ ईं सौः सकलदेशमुखभ्रमरीम्। हसखफ्रें त्रैलोक्यचित्तभ्रमरीम्। ॐ क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः। उग्रभैरवादिभूतप्रेत पिशाचचित्तभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं राजमन्त्रयन्त्रभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं सिद्धमन्त्र यन्त्रतन्त्रभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं साध्यमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं सकलसुरासुर सर्वमन्त्रयन्त्रतंत्रभ्रमरीं सर्वक्षोभिणी सर्वक्लेदिनी सकलमनोन्मादकरी आं ह्रीं क्रौं परमकल्याणी महायोगिनी।

ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्। चिन्तितां किरातरूपेण मारणां हृदयनन्दिनीम् ॥८॥ उत्तमा सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरी। सर्वपापक्षयकरी सर्वशत्रुनिवारिणी। ॐ कुलकरी गोत्रकरी धनकरी धान्यकरी बलकरी यशस्करी विद्याकरी उत्साहबलवर्धिनी भूतानां विजृम्भिणी स्तम्भिनी मोहिनी द्राविणी सर्वमन्त्रप्रभञ्जिनी सर्व विद्याप्रभेदिनी सर्वज्वरोत्सादकरी ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकमर्द्धमासिकं मासिकं द्विमासिकं त्रिमासिकं षाणमासिकं सांवत्सरिकं वातिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं सन्ततज्वरं शीतज्वरम् उष्णाज्वरं विषमज्वरं तापज्वरं च गण्डमालालूततालु वर्णानां त्रासिनी सर्पाणां त्रासिनी सर्वान् त्रासिनी शिरःशूलाक्षिशूलकर्णशूलदन्तशूल बाहुशूल हृदयशूलकुक्षिशूलपक्षशूलगुदशूल गुल्मशूल लिङ्गशूल योनि[illegible] पादशूल सर्वाङ्गशूल विस्फोटकादि इति आत्मरक्षा परोक्षरक्षा प्रत्यक्षरक्षा अग्निरक्षा अघोररक्षा वायु रक्षा उदकरक्षा महान्धकारोल्का विद्युदनिलचरोशस्त्रास्त्रे मां रक्ष रक्ष स्वाहा। महादेवस्य तेजसां भयंकराविष्टदेवता बन्धयामि पन्थानुगतचौराद्रक्षते बन्धकस्य कण्टकं बन्धयामि महादेवस्य पञ्चशीर्षेण पाणिना महादेवस्य तेजसा सर्वशूलान् कहपिङ्गलेन कण्टक मयरुद्राङ्गी ॐ अं आं मातङ्गी इं ईं मातङ्गी उं ऊं मातङ्गी ऋं ॠं मातङ्गी लृं लॄं मातङ्गी एं ऐं मातङ्गी ओं औं मातङ्गी अं अः मातङ्गी स्वर स्वर ब्रह्मदण्ड विश्वर विश्वर रुद्रदण्ड प्रज्वल प्रज्वल वायुदण्ड प्रहर प्रहर इन्द्रदण्ड भक्ष भक्ष निर्ऋतिदण्ड हिलि हिलि यमदण्ड नित्योपवादिनि हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी त्रिशूलधारिणी हुं फट् स्वाहा। आयुर्विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धनमेव च। सदा शिवं पुत्रवृद्धिं देहि मे चण्डिके शुभे ॥९॥

अथातो मन्त्रपादा भवन्ति। ॐ छायायै स्वाहा। चतुरायै स्वाहा। हलि स्वाहा। पीलि स्वाहा। पिलि स्वाहा। हरं स्वाहा। हरहरं स्वाहा। गन्धर्वाय स्वाहा। गन्धर्वाधिपतये स्वाहा। यक्षाय स्वाहा। यक्षाधिपतये स्वाहा। रक्षसे स्वाहा। रक्षोऽधिपतये स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। उल्कामुखी स्वाहा। रुद्रमुखी स्वाहा। रुद्रजटी स्वाहा। ब्रह्मविष्णुरुद्रतेजसे स्वाहा। या इमा भूतप्रेतपिशाचराक्षस नवग्रहभूतवेतालशाकिनीडाकिन्यः कूष्माण्डवासश्चत्वारो राजपुरुषः कलहपुरुषो वा तेषां दिशं बन्धयामि। दुर्दिशो

बन्धयामि। हस्तौ बन्धयामि। चक्षुषी बन्धयामि। श्रोत्रे बन्धयामि। जिह्वां बन्धयामि। घ्राणं बन्धयामि। बुद्धिं बन्धयामि। गतिं बन्धयामि। मतिं बन्धयामि। अन्तरिक्षं बन्धयामि। आकाशं बन्धयामि। पातालं बन्धयामि। यममुखेन पञ्चयोजनविस्तीर्णं बन्धयामि। रुद्रो बध्नातु। रुद्रमण्डलं रुद्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं रुद्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष। अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥१०॥

वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥११॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। प्राच्यां दिशि इन्द्रो देवता ऐरावतारूढो हेमवर्णो वज्रहस्त इन्द्रो बध्नातु। इन्द्रमण्डलमिन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता सहितमिन्द्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥१॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय आग्नेय्यां दिशि अग्निर्देवता मेषारूढो रक्तवर्णो ज्वालाहस्तोऽग्निर्बध्नातु। अग्निमण्डलमग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचल मचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्निं दूत वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय । याम्यां दिशि यमो देवता महिषारूढो नीलवर्णो दण्डहस्तो यमो बध्नातु यममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥३॥ ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय। नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिमण्डलं निर्ऋतिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधि देवतासहितं निर्ऋतिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥४॥ ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्ट तृष्णया सह ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। वारुण्यां दिशि वरुणो देवता मकरारूढः श्वेतवर्णः पाशहस्तो वरुणो बध्नातु वरुणमण्डलं वरुणः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं वरुण मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं ह्रूं फट् स्वाहा ॥५॥ ॐ इमं मे० ॥१॥ तत्त्वा यामि० ॥२॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युत रोहन्तु

सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्माद्विषोजहि ॥३॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। वायव्यां दिशि वायुर्देवता मृगारूढो धूम्रवर्णो ध्वजहस्तो वायुर्बध्नातु वायु मण्डलं वायुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं वायुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचल मचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥६॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। आवाँस्या वृणीमहे ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। कौबेर्यां दिशि कुबेरो देवता अश्वारूढः पीतवर्णो गदाङ्कुशहस्तः कुबेरो बध्नातु कुबेरमण्डलं कुबेरः सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं कुबेरमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥७॥ ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो देदाशदस्मै ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ईशान्यां दिशि ईशानो देवता वृषारूढः स्फटिकवर्णस्त्रिशूलहस्त ईशानो बध्नातु ईशान मण्डलमीशानः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमीशानमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥८॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय । ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा देवता हंसारूढो रक्तवर्णः कमण्डलुहस्तो ब्रह्मा बध्नातु ब्रह्ममण्डलं ब्रह्मा सपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवता सहितं ब्रह्ममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवार कस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥९॥ ॐ ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। अधस्ताद्दिशि वासुकिर्देवता कूमारूढः पद्महस्तो वास्तुकिः बध्नातु वासुकिमण्डलं वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता सहितं वासुकिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह० याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो० ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। अवान्तरस्यां दिशि विष्णुर्देवता गरुडारूढः श्यामवर्ण

श्चक्रहस्तो विष्णुर्बध्नातु विष्णुमण्डलं विष्णुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं विष्णुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवार कस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्निमम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥११॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे० ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः। रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रूद्राय। प्राच्यां दिशि इन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु त्रिशूलको नाम राक्षसः शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी याकिनी राकिनी वैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निमम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते० बीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। आग्नेय्यां दिशि अग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु मारीचको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि भूतप्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥२॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। याम्यां दिशि यमः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु एकपिङ्गलको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते० बीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिःसह परिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु सत्यको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥४॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। प्रतीच्यां दिशि वरुणः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु लम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥५॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। वायव्यां दिशि वायुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु प्रलम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं

क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥६॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। कौबेर्यां दिशि कुबेरः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु अश्वालको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निमम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥७॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ईशान्यां दिशि ईशानः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु उन्मत्तको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥८॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु आकाशवासी नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥९॥ ॐ वर्षन्तु ते० अवब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। अधस्ताद्दिशि वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता स्तुद्दिक्षु पातालवासीनाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ वर्षन्तु ते०अवबह्म द्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। आवान्तरस्यां दिशि विष्णुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधि देवतास्तुद्दिक्षुको महाभीमको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥११॥ ॐ वर्षन्तु ते० अवब्रह्माद्विषो जहि ॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। प्राच्यां दिशि । ॐ नमो भगवते इन्द्राणिवज्रहस्ताभ्यां सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। आग्नेय्यां दिशि। ॐ नमो भगवते अग्निज्वालहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। याम्यां दिशि। ॐ नमो भगवते यमकालदण्डहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ नमो भगवते निर्ऋति खड्गकंकाल हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। वारुण्यां दिशि। ॐ नमो भगवते वारु णिपाश हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां

रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। वायव्यां दिशि। ॐ नमो भगवते वायविवेधहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। कौबेर्यां दिशि। ॐ नमो भगवते कौबेरीगदांकुशहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ईशान्यां दिशि। ॐ नमो भगवते ईशानित्रिशूलडमरुहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वायां दिशि। ॐ नमो भगवते ब्रह्माणि स्त्रुक्स्त्रुवक मण्डल्वक्षसूत्रांकुशहस्तैः मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रूद्राय। ॐ नमो भगवते पातालवासिनि विषगलहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। अवान्तरस्यां दिशि। ॐ नमो भगवते श्रीमहालक्ष्मी पद्मारूढा पद्महस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। शिरो रक्षतु ब्रह्माणी मुखं माहेश्वरी तथा। कण्ठं रक्षतु वाराही ऐन्द्री चैव भुजद्वयम् ॥१॥ चामुण्डा हृदयं रक्षेत्कुक्षिं रक्षेच्च वारुणी। वैष्णवी रक्ष पादौ मे पृष्ठदेशे धनुर्धरी ॥२॥ यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे रक्षस्व मां पदे पदे। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्येत्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥

ॐ ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे सिद्धचामुण्डेश्वरि गणेश्वरि क्षेत्रपाल नारसिंहि महालक्ष्मि सर्वतो दुर्गे हुंफट् स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुंफट्। कनकवज्रवैडुर्यमुक्तालंकृतभूषणे एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमानकालज्ञान दूरदृष्टिदूरश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि अग्निस्तम्भनशत्रुस्तम्भन शत्रुमुखस्तम्भन शत्रुगतिस्तम्भन शत्रुमतिस्तम्भन परेषांगति सर्वमतिशत्रूणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुरु कुरु शत्रुकार्यहानिकरि मम कार्यसिद्धिकरि शत्रूणामुद्योगविध्वंसकरि वीरचामुण्डि निहाटकहाटकधारिणी नगरीपुरीपट्टणआस्थान संमोहिनी असाध्यसाधिनी। ॐ ह्रीं श्रीं देवि हन हुंफट् स्वाहा॥१॥

ॐ आं ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं श्रीं क्रौं एहि एहि भ्रमराम्बा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलाण्डजपिण्डजान् भ्रामय भ्रामय जरा प्रजावशंकरि संमोहय संमोहय महामाये अष्टादशपीठरूपिणि अमलवरयूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभाभासुरि चन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भस्मीकुरु भस्मीकुरु विश्वमोहिनी हुं क्लीं हुं हुंफट् स्वाहा॥२॥

ॐ नमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसाबाणाय इन्द्र संदीपबाणाय क्लीं क्लीं संमोहनबाणाय ब्लूं ब्लूं संतापनबाणाय सःसः वशीकरणबाणाय कम्पित कम्पित हुंफट् स्वाहा। क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हन हन वद वद तप तप संमोहय संमोहय सर्व जनं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रां श्रीं ष्णीं क्ष्म्रैं हूस्त्रौं सहस्त्राराय हुंफट् स्वाहा। ॐ नमो विष्णवे। ॐ नमो नारायणाय। ॐ जय जय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। सहस्त्रार ज्वालावर्त क्ष्म्रौं हन हन हुंफट् स्वाहा। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य

धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। श्रीमन्नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये। श्रीमते नारायणाय नमः। उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥४॥

भगवन् सर्वविजय सहस्त्राराय राजित। शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं श्रीसुदर्शनम् ॥५॥

अरुणी वारुणी चैव सविग्रहनिवारिणी। सर्वकर्मकरि। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयित्वा। ततो महाविद्या सिध्यति। अशिक्षितं नोपयुञ्जीत। अहं न जाने न च पार्वतीश एकविंशतिवाराणि परिजाप्य शुचिर्भवेत् ॥६॥

पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा। अवश्यं वशमित्याहुरात्मना च परेण वा ॥७॥ महाविद्यावतां पुंसां मनः क्षेत्रं करोति यः। सप्तरात्रौ व्यतीतायां शत्रूणां तद्विनश्यति ॥८॥ ॐ कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिमानन्दिमावह। ज्वरं मृत्युभयं घोरं विषं नाशय मे ज्वर ॥९॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय हृदये अमृताभिवर्षाय मम ज्वररोगशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ कालकाल महाकाल कालदण्ड नमोऽस्तु ते। कालदण्डनिपातेन भूम्यामन्तर्हितं ज्वरं हन्ति। लिखित्वा यस्तु पश्यति समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम राक्षसस्तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुताशनं शमय शमय स्वाहा। हिमवत्युत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षिणी। तस्या नूपुरशब्देन विशल्या भव गर्भिणी। जातवेदसे सुन वाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ॥१०॥ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥१॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। प्रतिकूलकारिणी नश्येत्। अनुकूलकारिणी अस्तु। महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२॥

ॐ ब्रूं ह्रीं श्रींब्रह्मकोशजी मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा। पञ्चम्यां च नवम्यां च दशम्यां च विशेषतः। पठित्वा तु महाविद्यां श्रीकामः सर्वदा पठेत् ॥११॥

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्। श्रीर्मे भजतु। अलक्ष्मीर्मे नश्यतु॥१॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह। पवमानवितज्जहि। यदुत्थितं दुःखं भवति तत्सर्वं शमय शमय स्वाहा॥२॥ ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। तत्पुरुषाय विद्महे सहस्त्राक्षाय धीमहि। तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥३॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रःप्रचोदयात् ॥४॥ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥५॥ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥६॥ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नो षण्मुखः प्रचोदयात् ॥७॥ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥८॥ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥९॥ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥१०॥ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि। तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥११॥ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥१२॥

भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् ॥१३॥ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥१४॥ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि। तन्नो दुर्गेः प्रचोदयात् ॥१५॥ सहस्त्रपरमा देवी शतमूला शतांकुरा। सर्वं हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी ॥१२॥ काण्डात्काण्डात्प्ररो हन्ती०। अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुंधरे। शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पद ॥१३॥ अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मिकण्वेन जमदग्निना। विश्वावसोर्ब्रह्मणा हतः कृमीणाञ्छ राजा अप्येषाः ञ्छ स्थपतिर्हतः। अथो माताऽथो पिता अथो स्थूरा अथो क्षुद्राः अथो कृष्णाः अथो श्वेताः अथो आशातिका हताः श्वेताभिः सह सर्वे हताः आहरावद्य

श्रुतस्य हविषो यथा तत्सत्यं यदमुं यमस्य जम्भयोः आदधामि तथा हि तत्। खणफणम्रसि ब्रह्मणा त्वा शपामि। ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि। घोरेण त्वा भृगूणां चक्षुषा प्रेक्षे। रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसा मनसा ध्यायामि। अघस्य त्वा धारया विध्यामि। अधरो मत्पद्यस्वासौ उत्तुद शिमिजा वरि तल्पेजे तल्प उत्तुद गिरीϑ रनुप्रवेशय मरीचीरुपसंनुद यावदितः पुरस्तादुदयाति सूर्यः तावदितोऽमुं नाशय योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः खट् फट् जहि छिन्धि भिन्धि हन्धि कट् इति वाचः क्रूराणि परिबाहिणीदं नमस्ते अस्तु मा मा हिϑ सीः द्विषन्तं मेऽभिनाशय तं मृत्यो मृत्यवे नय अरिष्टं रक्ष अरिष्टं भञ्ज भञ्ज स्वाहा।

ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदे महाभैरवि ज्वल ज्वल विद्युज्ज्वलज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रीं क्ष्म्यैं नमो नारायणाय घ्रिणुः सूर्यादित्यों सहस्त्रा हुंफट्। अव ब्रह्मद्विषोजहि। सर्पोलूक काक कङ्क कपोतादि वृश्चिकोग्रदंष्ट्राकरोग्रविषान्मे महाभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस सकलकिल्विषादि महारोगविषान्निरोगविषं कुरु कुरु स्वाहा। अक्षिस्पन्दं च दुःस्वप्नं भुजस्पन्दं च दुर्मतिम्। दुश्चिह्नं दुर्गतिं रोगं भयं नाशय शांकरि ॥१४॥ महाविद्यां कृतवतो योस्माकं द्वेष्टि योऽरिष्टं स्मरति यावदेकविंशतिं कृत्वा तावदधिकं नाशय। ब्रह्मविद्यामिमां देवि नित्यं सेवेत यः सुधीः। ऐहिकामुष्मिकं सौख्यं सिद्ध्यत्येव न संशयः ॥१५॥ एनां विद्यां महाविद्यां यो दूषयति मानवः। सो ऽवश्यं नाशमाप्नोति षण्मासादचिरेण वै ॥१६॥ अग्रतः पृष्ठतः पार्श्वे ऊर्ध्वतो रक्ष मे सदा। चण्डघण्टा विरूपाक्षी त्वां भजे जगदीश्वरीम् ॥१७॥ एवंविधां महाविद्यां त्रिसन्ध्यं स्तौति मानवः। दृष्ट्वा जनैर्दुष्टजनाः सर्वमोहवशं गताः ॥१८॥ तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां दुःशमनायै नमः ॥१९॥ मातर्मे मधु कैटभघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि। निःशेषीकृतरक्तबीजदनुजे नित्ये निशुम्भापहे शुम्भध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥२०॥ कालदण्डपरं मृत्युविजया बन्धयाम्यत्हम्। पञ्चयोजनविस्तीर्णं मृत्योश्च मुख मण्डलम्। तस्माद्रक्ष महाविद्ये भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२१॥

अव ब्रह्मद्विषो जहि। वारिजलोचनसहपारीगतिं वारयासुरकरनिकरैः पूरितमेघद्रुगानां दापितागोपकन्यके सहोदरवतु। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धलक्ष्मी स्वाहा। ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मनः। वासाϑ सि मम गावश्च अन्नपाने च सर्वदा। ततो मे श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति। श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट्कृत्यं संतत्यै संधीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लूं प्रों हुंफट् स्वाहा। अव ब्रह्मद्विषो जहि ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

॥ श्रीनवदुर्गा स्तव ॥

कार्येण याऽनेकविधां श्रयन्ती, निवारयन्ती स्मरतां विपत्तीः।
अपूर्वकारुण्य रसार्द्र चित्ता, सा शैलपुत्री भवतु प्रसन्ना ॥१॥
स्वर्गोऽपवर्गो नरकोऽपि यत्र, विभाव्यते दृक्कलया विविक्तम्।
या चाऽद्वितीयाऽपि शिवद्वितीया, सा ब्रह्मचारिण्यवताद् भवेभ्यः ॥२॥
पादौ धरित्री कटिरन्तरिक्षं, यस्याः शिरो द्यौरुदिताऽऽगमेषु।

अन्यद्यथा योगमयोग दूरा, सा चन्द्रघण्टा घटयत्वभीष्टम् ॥३॥
स्वराड् विराड् संसृतिराड् अखण्डब्रह्माण्डभाण्डाकलनैकवीरा ।
सा पापविध्वंसनसद्म कूष्माण्डाऽव्याद् अपायादयदानशौण्डा ॥४॥
द्वैमातुरत्वे द्विरदाननस्य, षाणमातुरत्वे च कुमारकस्य ।
एकैव माता परमा मता या, सा स्कन्दमाता मुदमादधातु ॥५॥
कतस्य गोत्रादथवाऽपरस्मात्, किं वेतरस्मात् कथमेकिकैव ।
जातेति माताह्वयतां इता या, कात्यायनी सा ममतां हिनस्तु ॥६॥
कालोऽपि विश्रान्तिमुपैति यस्यां, काऽन्या कथा भौतिकविग्रहाणाम् ।
प्रपञ्च पञ्चीकरणैकधात्री, सा कालरात्री निहताद् भयानि ॥७॥
कालीकुलं श्रीकुलमप्यपारं, कृष्णाद्युपासा प्रवणं यतश्च ।
साऽनन्तविद्या विततावदाना, गौरी विदध्यादखिलान् पुमर्थान् ॥८॥
गृणन्ति यां वेदपुराणसांख्य, योगागमादेव महर्षयश्च ।
पुत्रान् प्रपौत्रान् सुधियः श्रियश्च, सा सिद्धिदा सिद्धिकरी ददातु ॥९॥

या चण्डी मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षेणचण्डमुण्ड दलिनी या रक्तबीजाशिनी ।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धि लक्ष्मीः परा,
सा दुर्गा नवकोटि मूर्तिसहिताऽस्मान् पातु सर्वेश्वरी ॥१०॥

॥ अथ ब्रह्मांडमोहनाख्यं दुर्गाकवचम् ॥

ब्रह्मवैवर्तपुराणे ॥

॥ नारद उवाच ॥

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानविशारद । ब्रह्मांडमोहनं नाम प्रकृतेः कवचं वद ॥ १ ॥

॥ नारायण उवाच ॥

शृणु वक्ष्यामि! हे वत्स कवचं च सुदुर्लभम् । श्रीकृष्णेनैव कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥२॥
ब्रह्मणा कथितं पूर्वं धर्माय जाह्नवीतटे । धर्मेण दत्तं मह्यं च कृपया पुष्करे पुरा ॥३॥
त्रिपुरारिश्च यद्धृत्वा जघान त्रिपुरं पुरा । ममोच ब्रह्मा यद्धृत्वा मधुकैटभयोर्भयात् ॥४॥
संजहार रक्तबीजं यद्धृत्वा भद्रकालिका । यद्धृत्वा हि महेंद्रश्च संप्राप कमलालयाम् ॥५॥
यद्धृत्वा च महायोद्धा बाणः शत्रुभयंकरः । यद्धृत्वा शिवतुल्यश्च दुर्वासा ज्ञानिनां वरः ॥६॥
ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यंतः स्वाहांतो मे शिरोऽवतु। मंत्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपादपः ॥७॥
विचारो नास्ति वेदे च ग्रहणेऽस्य मनोर्मुने । मंत्रग्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेन्नरः ॥८॥

मम वक्रं सदा पातु ॐ दुर्गायै नमोऽन्तकः । ॐ दुर्गे इति कंठं तु मंत्रः पातु सदा मम ॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोऽयं स्कंधं पातु निरंतरम् । ह्रीं श्रीं क्लीमिति पृष्ठं च पातु मे सर्वतः सदा ॥१०॥
ह्रीं मे वक्षस्थले पातु हं सं श्रीमिति संततम् । ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वांगं स्वप्ने जागरणे सदा ॥११॥
प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चंडिका । दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी ॥१२॥
वारुण्यां पातु वाराही वायव्यां सर्वमंगला । उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया ॥१३॥
जले स्थले चांतरिक्षे पातु मां जगदंबिका । इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥१४॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् । गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः ॥१५॥
कवचं धारयेद्यस्तु सोऽपि विष्णुर्न संशयः । स्नाने च सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे ॥१६॥
यत्फलं लभते लोकस्तदेतद्धारणे मुने । पंचलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद्ध्रुवम् ॥१७॥
लोके च सिद्धकवचो नावसीदति संकटे । न तस्य मृत्युर्भवति जले वह्नौ विषे ज्वरे ॥१८॥
जीवन्मुक्तो भवेत्सोऽपि सर्वसिद्धीश्वरीश्वरि । यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुतुल्यो भवेद्ध्रुवम् ॥१९॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्ते प्रकृतिखंडांतर्गत दुर्गाकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ दुर्गाकवचम् ॥

कुब्जिकातंत्रे । ॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् । पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात् ॥१॥
अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामंत्रं च यो जपेत् । स नाप्नोति फलं तस्य परत्र नरकं व्रजेत् ॥२॥
उमा देवी शिरः पातु ललाटं शूलधारिणी । चक्षुषी खेचरी पातु कर्णौ चत्वरवासिनी ॥३॥
सुगंधा नासिके पातु वदनं सर्वधारिणी । जिह्वां च चंडिकादेवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा ॥४॥
अशोकवासिनी चेतो द्वौबाहू वज्रधारिणी । हृदयं ललितादेवी उदरं सिंहवाहिनी ॥५॥
कटिं भगवती देवी द्वावूरू विंध्यवासिनी । महाबला च जंघे द्वे पादौ भूतलवासिनी ॥६॥
एवं स्थितासि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके । रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥७॥

॥ इति कुब्जिकातंत्रोक्त दुर्गाकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीदुर्गा कवचम् ॥

(उक्तं च तत्रैवाष्टचत्वारिंशत्पटले) ॥ श्री भैरव उवाच ॥

अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मन्त्रगर्भकम् । दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥१॥
परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम् । योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥२॥
विना दानेन मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत् । धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः ॥३॥
भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली। ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः ॥४॥

सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये । सूर्यस्तमोपहो लोके चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा ॥५॥
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् । मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः ॥६॥
कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः । छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताऽष्टाक्षरा स्मृता ॥७॥
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्माया शक्तिरितीरिता ॥८॥
ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्। दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम ॥९॥
मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्त कुण्डला । वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी ॥१०॥
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी। भेकीबीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका ॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्कवासिनी। ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी ॥१२॥
ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी। ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी ॥१३॥
सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातङ्गिनी परा ॥१४॥
श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वौ हिमाचलनिवासिनी। ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी ॥१५॥
ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा। ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम ॥१६॥
ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे देवी श्रीबगलामुखी । ऐं सोः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥१७॥
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हसौः पायादूरू मम मनोन्मना। ॐ जूं सः सौः पातु जानु जगदीश्वरपूजिता ॥१८॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे जङ्घे मेरुपर्वतवासिनी। ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥१९॥
ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी। पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ च वैष्णवी तथा ॥२०॥
दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका। पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता ॥२१॥
उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा। ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा ॥२२॥
प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका। निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका ॥२३॥
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्भां जगदम्बिका। वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद्वनजलोचना ॥२४॥
सिंहात्सिंहासना पातु सर्पात्सर्पान्तकासना। रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद्भूतेशवल्लभा ॥२५॥
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षेभ्यो राक्षसान्तका। भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ॥२६॥
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा। इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ॥२७॥
मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम् । वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ ॥२८॥
वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम् । श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम् ॥२९॥
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम् । अश्वमेघसहस्त्रस्य फलदं परमार्थदम् ॥३०॥
अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवच मन्त्रसिद्धिदम्। पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ॥३१॥
रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये। श्रीचक्राग्रेऽष्ट गन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये ॥३२॥
लिखित्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम्। किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचि रात् ॥३३॥
गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानां वशमानयेत्। धनार्थी धारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले ॥३४॥
तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके। श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥३५॥

सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद्रक्तरज्जुना । गुटिका कामदादेवि देवानामपि दुर्लभा ॥३६॥
कवचस्यास्य गुटिकां धृत्वा मुक्तिप्रदायिनीम् । कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते ॥३७॥
महिमानं महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि । अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भं रहस्यकम् ॥३८॥
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्व सारस्वतप्रदम् । अदीक्षिताय नो दद्यात्कुचैलाय दुरात्मने ॥३९॥
अन्यशिष्टाय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम् । दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ॥४०॥
शान्ताय कुलसक्ताय शान्ताय कुलवासिने । इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः ॥४१॥
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम् । गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४२॥

॥ इति श्रीदुर्गाकवचम् समाप्तम् ।

॥ श्रीदुर्गा पञ्जर स्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीदुर्गा पञ्जर स्तोत्रस्य सूर्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, छाया देवता, श्रीदुर्गा पञ्जर स्तोत्र पाठे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ हेम प्रख्यामिन्दु खण्डात्तमौलिं शंखाभीष्टा भीति हस्तां त्रिनेत्राम् ।
हेमाब्जस्थां पीन वस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ।
अपराध शतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति नतां ब्रह्मादयः सुराः ।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ॥१॥

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

दुर्गे दुर्ग प्रदेशेषु दुर्वार रिपुमर्दिनी । मर्दयित्री रिपुश्रीणां रक्षां कुरु नमोऽस्तुते ॥१॥
पथि देवालये दुर्गे अरण्ये पर्वते जले । सर्वत्रोऽपगते दुर्गे दुर्गे रक्ष नमोऽस्तुते ॥२॥
दुःस्वप्ने दर्शने घोरे घोरे निष्पन्न बन्धने । महोत्पाते च नरके दुर्गेरक्ष नमोऽस्तुते ॥३॥
व्याघ्रोरग वराहानि निर्हादिजन संकटे । ब्र[illegible] विष्णु स्तुते दुर्गे दुर्गे रक्ष नमोऽस्तुते ॥४॥
खेचरा मातरः सर्वं भूचराश्चा तिरोहिताः । ये त्वां समाश्रिता स्तांस्त्वं दुर्गे रक्ष नमोऽस्तुते ॥५॥
कंसासुर पुरे घोरे कृष्ण रक्षण कारिणी । रक्ष रक्ष सदा दुर्गे दुर्गे रक्ष नमोऽस्तुते ॥६॥
अनिरुद्धस्य रुद्धस्य दुर्गे बाणपुरे पुरा । वरदे त्वं महाघोरे दुर्गे रक्ष नमोऽस्तुते ॥७॥
देव द्वारे नदी तीरे राजद्वारे च संकटे । पर्वता रोहणे दुर्गे दुर्गे रक्ष नमोऽस्तुते ॥८॥
दुर्गा पञ्जर मेतत्तु दुर्गा सार समाहितम् । पठनस्तारयेद् दुर्गा नात्र कार्या विचारण ॥९॥
रुद्रबाला महादेवी क्षमा च परमेश्वरी । अनन्ता विजया नित्या मातस्त्वम पराजिता ॥१०॥

॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे देवी महात्म्ये रुद्रयामले देव्याः पञ्जर स्तोत्रम् ॥

॥ श्री चंडी हृदय स्तोत्रम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री चण्डी हृदयमालामन्त्रस्य त्रिगुणात्मा ऋषिः। विराट् छंदः। श्री महाचण्डी देवता। ऐं बींजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

हृदयादि न्यासः - ॐ ऐं नमः हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं नमः शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै नमः कवचाय हुं। ॐ विच्चे नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमोऽस्त्राय फट्।

॥ ब्रह्मोवाच ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथातथम्। चण्डिका हृदयं गुह्यं शृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ऐं स्त्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति जयजय ज्वाला मालिनि। ॥ इति मंत्रः॥

॥ चामुण्डे चण्डिके ॥

त्रिदश मणि मुकुट कोटि निघृष्ट चरणारविन्दे। गायत्रि सावित्रि सरस्वति महासन्ध्ये महाबाण कृताभरणे॥ भैरव रूप धारिणि। प्रकट सुदंष्ट्रोग्रवदने। घोरे घोरासने नयनोज्वल ज्वाल सहस्त्र परिवृत्ते। महाट्टहास धवलीकृत दिगन्तरे। दिवाकर सहस्त्र परिवृत्ते। कामरूप धारिणि। महामणिद्योतित शशिप्रभा भासित सकलदिगन्तरे। सर्वायुध परिपूर्णे। कपाल हस्ते । गजगामिन्यौतरिण्ये। भूत वेताल परिवृत्ते प्रकम्पित चराचरे। मधुकैटभ महिषासुर धूम्रलोचन चण्ड मुण्ड रक्तबीज निशुम्भ शुम्भादि दैत्यनिष्कण्टिके कालरात्रि महामाये। शिवे नित्ये। त्रिभुवन धराधरे। वाम ज्येष्ठे वरदे रौद्र्यम्बिके। कालिकल विकारिणि। बल प्रमथिनि सर्वभूतदमनि। मनोन्मय्या धारिणि। ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि। वाराहि नारसिंहीन्द्राणि। चामुण्डे। माहेन्द्रि शिवदूति महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीतित्रिस्थिते। ॥ नाद मध्ये स्थिते। महोग्रविषो रगफणा मणि मुकुट रत्न ज्वालावलिते महाहिहार भूषित पाद बाहु कण्ठोत्तमांगे। माला कुले। नवरत्ननिधि कोशे। शब्द स्पर्श रूप रस गन्धाकाशवाक् पाणि पाद पायूपस्थ श्रोत्रत्वक् चक्षु जिह्वा। घ्राण मध्यस्थिते। चक्षुष्मति। महाविषोपविघ्ने। महाज्वालानले। महाभैरवस्तुते। सर्व सिद्धिप्रदे। निर्मले निष्कले नाभ्या धारादि संस्थिते। पर ज्योतिः स्वरूपे॥ सोम सूर्याग्नि मण्डल परिवृत्ते ऊद्ध्र्व विशुद्धान्तक प्रभे विनिगर्त ब्रह्म विष्णु रुद्र दैवते। परे अपरे। प्रभाभासित चराचरे। पंचविंशति तत्वावबोधिनि महाशून्यागमे। पतिबन्धु संस्थिते अधऊद्ध्र्व संस्थिते। भुक्ति मुक्तिप्रदे। निर्गुणे। ऋग्यजुः सामाथर्वणि पठिते। एह्येहि भगवति। स्थूल सूक्ष्मपरे हुँकार निरुपिते। परमकारुणिके। महाज्वालामणे महिषोपरिस्थिते गन्धर्व विद्या-धरार्च्यिते। भुजङ्गमहिमे। जृम्भिणि क्षौभिणि। वशीकरणि। जृम्भे। मोहे। क्षोभे। बीजपञ्चक मध्यस्थिते। महायोगिनि। महाज्वर क्षेत्र नायिके। यक्ष राक्षस महाज्वर क्षेत्र विषोप विघ्ने। गन्धर्व विद्याधराराधिते। ओंकार श्रीङ्कारहस्ते आंक्रींमग्नि पात्रे। द्रां शोषय शोषय। प्लुं प्लावय प्लावय। क्लीं ब्रीं सुकुमारय सुकुमारय। प्लुं शांतय शांतय। सीमुन्मादयोन्मादय ग्लौं मोहय मोहय। ह्रीं मां ह्रीं मावेशयावेशय। श्रीं प्रवेशय प्रवेशय। स्त्रीं कर्षय कर्षय। हुं हुं हुं फट् अतीतानागत वर्तमानान्दिशं विदिशम्। ऐं ह्रीं श्रीं श्रावय श्रावय। सर्वं प्रवेशय प्रवेशय। त्रैलोक्यंवशवर्ति। ऐं कांरवशीकुरुष्व। ऐं ह्रीं स्त्रीं द्रावय द्राबय। सर्वं प्रवेशय प्रवेशय। ऐंकारचित्तांवशं कुरु कुरु । ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं हूं हैं हौं हः। ऐं ह्रीं श्रीं स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रैं स्त्रौं स्त्रः। मम सर्वकार्य्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा। एक विंशति वारन्तु पठेदेवं जपेतु वा राजद्वारे स्मशाने च विदेशे शुत्रु मण्डले ॥१॥ भूताग्नि रणमध्ये च सर्वकार्याणि साधयेत्। चण्डिका हृदयं गुह्यं त्रिसन्ध्ये कीर्तयेद् द्विजः ॥२॥ सर्वकामप्रदं नृणां भुक्तिं मुक्तिं च विन्दन्ति।

॥ इति श्रीरुद्रयामले सप्तशती हृदयं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ दुर्गास्तवः ॥

उक्तं च हरिवंशे ।

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

आर्यास्तवं प्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभिः पुरा । नारायणीं नमस्यामि देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ॥१॥
त्वं हि सिद्धिर्धृतिर्मेधा श्रीर्विद्या सन्नतिर्मतिः । संध्या रात्रिः प्रभा निद्रा कालरात्रिस्तथैव च ॥२॥
आर्या कात्यायनी देवी कौशिकी ब्रह्मचारिणी । जननी सिद्धसेनानीरुग्रचारिमहातपाः ॥३॥
जया च विजया चैव पुष्टिश्च त्वं क्षमा दया । ज्येष्ठा यमस्य भगिनी नीलकौशेयवासिनी ॥४॥
बहुरूपा विरूपा च अनेकविधचारिणी । विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥५॥
पर्वताग्रेषु घोरेषु नदीषु च गृहेषु च । वासस्तव महादेवि वनेषूपवनेषु च ॥६॥
शबरैर्बर्बरैश्चैव पुलिंदैरभिपूजिता । मयूरपक्षध्वजिनी लोकान्क्रमसि सर्वशः ॥७॥
कुक्कुटैश्छागलैर्मेषैः सिंहैर्व्याघ्रैः समाकुला । घंटानिनादबहुला विश्रुता विंध्यवासिनी ॥८॥
शूलिनी पट्टिशयुता सूर्यचन्द्रपताकिनी । नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्लस्यैकादशी तथा ॥९॥
भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहप्रिया । आवासः सर्वभूतानां निष्ठा च परमा गतिः ॥१०॥
नंदगोपसुता चैव देवानां विजयावहा । चीरवासा सुवासाश्च रात्रिः संध्या त्वमेव च ॥११॥
प्रकीर्णकेशी मृत्युश्च तथा मांसौदनप्रिया । लक्ष्मीरलक्ष्मरूपेण दानवानां वधाय च ॥१२॥
सावित्री चैव वेदानां माता मंत्रगणस्य च । अंतर्वेदी च यज्ञानामृत्विजश्चैव दक्षिणा ॥१३॥
सिद्धिः सांयात्रिकाणां तु वेला त्वं सागरस्य च । यक्षाणां प्रथमा यक्षी नागानां सुरसेति च ॥१४॥
कन्यानां ब्रह्मचर्या त्वं सौभाग्यं प्रमदासु च । ब्रह्मचारिण्यथो दीक्षा शोभा च परमा तथा ॥१५॥
ज्योतिषां त्वं प्रभा देवि नक्षत्राणां च रोहिणी । राजद्वारेषु तीर्थेषु नदीनां संगमेषु च ॥१६॥
पूर्णा च पूर्णिमा चंद्रे कृत्तिवासा इति स्मृता । सरस्वती च वाल्मीकेः स्मृतिर्द्वैपायनस्य च ॥१७॥
कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणिस्तथा । ऋषीणां धर्मबुद्धिस्तु देवानां मानसी तथा ॥१८॥
सुरादेवीति भूतेषु स्तूयसे त्वं स्वकर्मभिः । इन्द्रस्य चारुदृष्टिस्त्वं सहस्रनयनेति च ॥१९॥
तापसानां च देवि त्वमरणिश्चाग्निहोत्रिणाम् । क्षुधा च सर्वभूतानां तृप्तिस्त्वं दैवतेषु च ॥२०॥
स्वाहा तृप्तिर्धृतिर्मेधा वसूनां त्वं वसूमती । आशा च मानुषाणां तु तुष्टिश्च कृतकर्मणाम् ॥२१॥
दिशश्च विदिशश्चैव तथा ह्यग्निशिखा प्रभा । शकुनी पूतना च त्वं रेवती वसुदारुणा ॥२२॥
निद्रा च सर्वभूतानां मोहिनी क्षत्रिया तथा । विद्यानां ब्रह्मविद्या च त्वमोंकारो वषट् तथा ॥२३॥
नारीणां पार्वती च त्वं पौराणीमृषयो विदुः । अरुंधत्येकभर्त्रीणां प्रजापतिवचो यथा ॥२४॥
पर्यायनामभिर्दिव्यैरिंद्राणी चेति विश्रुता । त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ॥२५॥
संग्रामेषु च सर्वेषु अग्निप्रज्वलितेषु च । नदीतीरेषु चोरेषु कांतारेषु भयेषु च ।
प्रवासे राजबंधे च शत्रूणां च प्रदर्शने ॥२६॥

प्रयाणाद्येषु सर्वेषु त्वं हि रक्षा न संशयः । त्वयि मे हृदयं देवि त्वयि चित्तं मनस्त्वयि ॥२७॥
रक्ष मां सर्वपापेभ्यः प्रसादं कर्तुमर्हसि । इमं तव स्तवं दिव्यमिति व्यासप्रकल्पितम् ॥२८॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः । त्रिभिर्मासैः कांक्षितं च फलं वै संप्रयच्छसि ॥२९॥
षड्भिर्मासैर्वरिष्ठं तु वरमेकं प्रयच्छसि । अर्चिता नवभिर्मासैर्दिव्यं चक्षुः प्रयच्छसि ॥३०॥
संवत्सरेण सिद्धिं तु यथाकामं प्रयच्छसि । सत्यं ब्रह्म च दैवं च द्वैपायनवचो यथा ॥३१॥
नृणां बंधं वधं घोरं पुत्रनाशं धनक्षयम् । व्याधिं मृत्युभयं चैव पुजिता शमयिष्यसि ॥३२॥
भविष्यसि महाभागे वरदा कामरूपिणी । मोहयित्वा च तं कंसमेका त्वं भोक्ष्यसे जगत् ॥३३॥
अहमप्यात्मनो वृतिं विधास्ये गोषु गोपवत् । स्ववृद्ध्यर्थमहं चैव करिष्ये कंसगोपनम् ॥३४॥
एवं तु स समादिश्य गतोंऽतर्धानमीश्वरः । सा चापि तं नमस्कृत्य तथास्त्विवति विनिश्चिता ॥३५॥

॥ इति श्रीहरिवंशोक्तः श्रीआर्य्यास्तवः समाप्तः ॥

॥ श्री दुर्गास्तोत्रम् ॥

उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखंडे अंतिमेऽध्याये ।

पुरा स्तुता सा गोलोके कृष्णेन परमात्मना । संपूज्य मधुमांसेन प्रीतेन रासमंडले ॥१॥
मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना पुरा । तत्रैव काले सा दुर्गा ब्रह्मणः प्राणसंकटे ॥२॥
चतुर्थे संस्तुता देवी भक्ता च त्रिपुरारिणा । पुरा त्रिपुरयुद्धे च महाघोरतरे रणे ॥३॥
पंचमे संस्तुता देवी वृत्रासुरवधे तथा । शक्रेण सर्वैर्देवैश्च घोरे च प्राणसंकटे ॥४॥
तदा मुनींद्रैर्मुनिभिर्मानवैः सुरथादिभिः । संस्तुता पूजिता सा च कल्पे कल्पे परात्परा ॥५॥
स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन्सर्वविघ्नविनाशनम् । सुखदं मोक्षदं सारं भवाब्धेः पारकारकम् ॥६॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी । त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥७॥
कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् । परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्यस्वरूपिणी ॥८॥
निजस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा । सर्वस्वरूपा शर्वाणी सर्वाधारा परात्परा ॥९॥
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला । सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी ॥१०॥
त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् । दक्षिणा सर्वदाने च सर्वकर्मणि संततम् ॥११॥
निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मनश्च मे । तत्क्षांतिः शांतिरीशा च कांतिस्तुष्टिश्च शाश्वती ॥१२॥
श्रद्धा पुष्टिश्च तंद्रा च लज्जा शोभा प्रभा सदा । सतां संपत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह ॥१३॥
प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा । शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥१४॥
देवेभ्यः संपदां दात्री धातुर्धात्री कृपामयी । कुलायः सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ॥१५॥
योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् । माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी ॥१६॥

भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयंकरी । ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे ॥१७॥
महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी । रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी ॥१८॥
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् । विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सती ॥१९॥
मेधा स्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् । राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वा विट्स्वरूपिणी ॥२०॥
इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गायाः स्वर्गकारणम् । पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धं तद्वाञ्छितं भवेत् ॥२१॥
वंध्या वा काकवंध्या वा मृतवत्सा च दुर्भगा । श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥२२॥
कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबंधने । श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ॥२३॥
यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूली महाज्वरी । श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥२४॥
राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले । हिंस्रजंतुसमीपे तु श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥२५॥
महादरिद्रो मूर्खश्च वर्षं स्तोत्रं पठेत्तु यः । विद्यावान्धनवांश्चैव स भवेन्नात्र संशयः ॥२६॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तांतर्गतप्रकृतिखंडोक्तं दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ।

॥ श्रीदुर्गाष्टाक्षर स्तोत्रम् ॥

उक्तं च देवीरहस्यतन्त्रे पंचाशत्तमे पटले ।

॥ भैरव उवाच ॥

अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम् । मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥१॥
दुर्गार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम् । दुर्गाया अंगभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम् ॥२॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य महेश्वर ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता । दुं बीजम् । पराशक्तिः । नमः कीलकम् । धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गास्तोत्रपाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास :– ॐ महेश्वर ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवतायै नम हृदि । दुं बीजाय नमो नाभौ । ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये । नमः कीलकाय नमः पादयोः । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे । इति ऋष्यादिन्यासः ।

ध्यानं कुर्यात्–

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शंखाब्जखड्गशर खेटकशूलचापान् ।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥३॥

तारं हारं मंत्रमालां सुबीजं ध्यायेदंतर्यो बलं बालकांतः ।
तस्य स्मारंस्मारमंघ्रिद्वयीं द्राग्रंभा याति स्वर्गतः कामवश्या ॥४॥

मायां जपेद्यस्तव मंत्रमध्येदुर्गे सदादुर्गतिखेदखिन्नः ॥
भवेत्स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्य निर्घृष्ट पदारविंदः ॥५॥

चाक्रिकं यदि जपेत्तवांबिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि ।

साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयविलासकोविदः ॥६॥
चक्रिबीजमपरं स्मरेच्छिवे योऽरिवर्गविहिताहितव्यथः ।
आजिमंडलगतो जयेद्रिपून्वाजिवारणरथाश्रितो नरः ॥७॥
दूर्वाबीजं यो जपेत्प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मनालिप्तकायः ।
गीर्वाणानां नायको देव मंत्री मुक्त्वा राज्यं प्राज्यमाद्यं करोति ॥८॥
वायव्यबीजं यदि साधको जपेत्प्रियाकुचद्वंद्वविमर्द्दनक्षमः ।
समस्तकांताजननेत्रवागुरा विलासहंसो भविता स पार्वति ॥९॥
विश्वं विश्वेश्वरि यदि जपेत्कामवेलाकलार्तो रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानि मातः ।
तस्य स्मेराननसरसिजभ्राजमानांग लक्ष्मीर्वश्याऽवश्यं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी स्यात् ॥१०॥
भूगेहांचितसत्रिवृत्तविलसन्नागारवृत्तां चितव्यग्रारोल्लासिता -
ऽग्निकोणविलसच्छ्री बिंदुपीठस्थिताम् ।
ध्यायेच्चेतसि शर्वपत्नि भवतीं
माध्वीरसाघूर्णितां यो मंत्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां धरण्यां दिवि ॥११॥
दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलिमाणिक्यमुत्तमशिवांगरहस्यभूतम् ।
प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां भूमौ भवेत्स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥१२॥
इति स्तोत्रं महापुण्यं पंचांगैकशिरोमणिम् । यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ॥१३॥

॥ इति श्रीदेवीरहस्यतंत्रोक्तं श्रीदुर्गाष्टाक्षरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री गर्भचण्डी ॥

(गौड मतेन लघुचण्डी पाठक्रमः)

तंत्रसाधना के अनुसार बीजाक्षरों का संपुट लोम- विलोम लगता है

॥ गर्भकवचम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्या निःस्वनेन च । मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामेणनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि । मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् । मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके । करपल्लव सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः । मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥४॥

॥ गर्भऽर्गला ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ॐ एतत् ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम् ।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोस्तुते । मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥१॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः। ज्वालाकराल मृत्युग्रमशेषासुर सूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तुते । मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः असुरास्रग् वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्। मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥४॥

॥ गर्भशाप विमोचनमुत्कीलनं च ॥

मूलमन्त्र से विन्यास, ध्यान व मानसोपचार से पूजन करें। मूल मन्त्र - **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे क्लीं ह्रीं ऐं ॐ नमः स्वाहा** का यथाशक्ति जाप करें समर्पण पश्चात् उत्कीलन करें यथा -

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चण्डि सकलमन्त्राणां शापविमोचनं कुरु कुरु स्वाहा। तीन बार जपें। **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं चण्डि सप्तशतिके सर्वमन्त्राणां उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।** तीन बार जपें।

॥ गर्भरात्रि सूक्तम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ब्रह्मोवाच मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका। सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अर्द्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः। त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥३॥

॥ अथ गर्भचण्डी ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्री गर्भचण्डीमाला मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा विष्णु महेश्वरादि ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छंदांसि। श्रीशक्तिस्वरूपिणी महाचण्डी देवता। ऐं बीजं। ह्रीं कीलकं। क्लीं शक्तिः। मम चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ अस्य श्री गर्भचण्डीमाला मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा विष्णु महेश्वरादि ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छंदोभ्यो नमः मुखे। श्रीशक्तिस्वरूपिणी महाचण्डी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। मम चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

शुद्ध स्फटिक सङ्काशां रवि विम्बाननां शिवाम् । अनेक शक्तिसंयुक्तां सिंहपृष्ठे निषेदुषीम् ॥ अङ्कुशं चाक्षसूत्रं च पाशपुस्तक धारिणीम् । मुक्ताहार समायुक्तां चण्डीं ध्याये चतुर्भुजाम् ॥ सितेन दर्पणाब्जेन वस्त्रालंकार भूषितम् । जटाकलाप संयुक्तां सुस्तनीं चन्द्रशेखराम् ॥ कटकैः स्वर्ण रत्नाढ्यैर्महावलय शोभिताम् । कम्बुकण्ठीं सु ताम्रोष्ठीं सर्पनूपुरधारिणीम् ॥ केयूर मेखलाद्यैश्च द्योतयंतीं जगत्त्रयम् । एवं ध्याये महाचण्डीं सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् ।

चतुष्टयमुद्रा प्रदर्शनम् :- १ पाश, २ अङ्कुश, ३ अक्षसूत्र, ४ पुस्तक मुद्राणि प्रदर्शयेत्।

॥ अथ पाठ:॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ब्रह्मोवाच मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु सदसद् वाखिलात्मिके। तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा। मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥२॥ ॐ श्रीं नमः सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः। तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नमः। मः न श्रीं ॐ ॥३॥ ॐ श्रीं नमः अर्द्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महाऽसुरः तया महाऽसिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः॥ मः न श्रीं ॐ ॥४॥ ॐ श्रीं नमः दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता। मः न श्रीं ॐ ॥५॥ ॐ क्लीं नमः इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः। मः न क्लीं ॐ ॥६॥ ॐ क्लीं नमः इत्युक्तः सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्रलोचनः। हुङ्कारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः। मः न क्लीं ॐ ॥७॥ ॐ क्लीं नमः भृकुटी कुटिलात् तस्याः ललाटफलकाद् द्रुतम्। काली कराल वदना विनिष्क्रान्ताऽसि पाशिनी। मः न क्लीं ॐ ॥८॥ ॐ क्लीं नमः ब्रह्मेश गुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः। शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः। मः न क्लीं ॐ ॥९॥ ॐ क्लीं नमः अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह। तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ। मः न क्लीं ॐ ॥१०॥ ॐ क्लीं नमः एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा? पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः। मः न क्लीं ॐ ॥११॥ ॐ क्लीं नमः सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते। मः न क्लीं ॐ ॥१२॥

ॐ क्लीं नमः देव्युवाच मः न क्लीं ॐ ॥१३॥ ॐ क्लीं नमः सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः। मनुष्योमत् प्रसादेन भविष्यति न संशयः। मः न क्लींॐ ॥१४॥ ॐ क्लीं नमः यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन। मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्। मः न क्लीं ॐ ॥१५॥

॥ जय जय श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु मनसः कामाः॥

॥ श्रीगर्भदेवी सूक्तम् ॥

ॐ क्लीं नमः नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतः स्मताम्। मः न क्लीं ॐ ॥१॥ ॐ क्लीं नमः रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्य्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः। मः न क्लीं ॐ ॥२॥ ॐ क्लीं नमः कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः। नैर्ऋते भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः। मः न क्लीं ॐ ॥३॥ ॐ क्लीं नमः दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः। मः न क्लीं ॐ ॥४॥ ॐ क्लीं नमः अति सौम्याति रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत् प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः। मः न क्लीं ॐ ॥५॥

॥ गर्भरहस्य त्रयम् ॥

ॐ ह्रीं नमः गुरूपदेशविधिना पूजनीया प्रयत्नतः। मन्त्रोद्धार प्रयत्नेन ज्ञातव्या सा नृपात्मजः। मः न ह्रीं ॐ ॥१॥ ॐ श्रीं नमः प्रदक्षिणां नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः। क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः। मः न श्रीं ॐ ॥२॥ ॐ क्लीं नमः जगन्मातुश्चण्डिकाया कीर्तिता कामधेनवः। मेधां प्रज्ञां तथा श्रद्धां धारणां कान्तिमेव च। मः न क्लीं ॐ ॥३॥

॥ गर्भ सूत्र त्रयम् ॥

ॐ ऐं नमः ब्रह्म सरस्वती सूक्तं लक्ष्मीसूक्तं जनार्दनम् ह्रीं ॐ ॥ इस मन्त्र के एक लाख जप करें तथा सिद्ध करें। श्रीं श्रीं श्रीं ॐ नमः।

॥ इति श्रीगर्भचण्डी सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ रुद्रचंडी पाठः ॥

उक्तं च रुद्रयामले।

॥ श्रीशंकर उवाच ॥

चंडिकाहृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि।
अनंतफलमाप्नोति देवीचंडीप्रसादतः।
घोरचंडी महाचण्डी चंडमुडविखंडिनी ॥१॥
चतुर्वक्त्रा महावीर्य्या महादेवविभूषिता।
रक्तदंता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी।
तारिणी जननी दुर्गा चंडिका चंडविक्रमा ॥२॥
गुह्यकाली जगद्धात्री चंडी च यामलोद्भवा। श्मशानवासिनी देवी घोरचंडी भयानका ॥३॥
शिवा घोरा रुद्रचंडी महेशी गणभूषिता। जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुंदरी ॥४॥
श्रीविद्या परमाविद्या चंडिका वैरिमर्दिनी। दुर्गा दुर्गशिवा घोरा चंडहस्ता प्रचंडिका ॥५॥
माहेशी बगला देवी भैरवी चंडविक्रमा। प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुंडा मुंडमर्दिनी ॥६॥
रणखंडा चंद्रघंटा रणे रामवरप्रदा। मारणी भद्रकाली च शिवा घोरा भयानका ॥७॥
विष्णुप्रिया महामाया नंदगोपगृहोद्भवा। मंगला जननी चंडी महाक्रुद्धा भयंकरी ॥८॥
विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा। तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्मायामनोहरा ॥९॥
तस्यै देव्यै नमो या वै सर्वरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥
इमां चंडीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत्। नान्यस्तु संपठेद्देवि पठने ब्रह्महा भवेत् ॥११॥
यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः। ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम् ॥१२॥
श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम्। तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातुर्गमनपातकम् ॥१३॥

सुतस्त्रीगमनं चैव यद्यत्पापं प्रजायते । परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥१४॥
जन्मजन्मांतरात्पापाद्गुरुहत्यादिपातकात् । मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीसुसंगमात् ॥१५॥
मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने । मिथ्याजन्यं च यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥१६॥
श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले । स धन्यश्च कृतार्थश्च राजा राजाधिपो भवेत् ॥१७॥
रविवारे यदा चंडीं पठेदागमसंमताम् । नवावृत्तिफलं तस्य जायते नात्र संशयः ॥१८॥
सोमवारे यदा चंडीं पठेद्यस्तु समाहितः । सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रत ॥१९॥
कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम् । शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं ध्रुवम् ॥२०॥
गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रवम् । शुक्रे देवि जगद्धात्रि चंडीपाठेन शांकरी ॥२१॥
ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चंडीसमाहितः । शनिवारे जगद्धात्रि कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥२२॥
अत एव महेशानि यो वै चंडीं समभ्यसेत् । स सद्यश्च कृतार्थः स्याद्राजराजाधिपो भवेत् ॥२३॥
आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम् । पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ॥२४॥
धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्नविभूषणम् । चंडीश्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्वं महेश्वरी ॥२५॥
यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचंडिकाम् । पापैरेतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ॥२६॥
अश्रद्धया च कुर्वंति ते च पातकिनो नराः । रौरवं नरकं कुंडं कृमिकुंडं मलस्य वै ॥२७॥
शुक्रस्य कुडं स्त्रीकुंडं यांति ते ह्यचिरेण वै । ततः पितृगणैः सार्धं विष्ठायां जायते कृमिः ॥२८॥
शृणु देवि महामाये चंडीपाठं करोति यः । गंगायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥२९॥
प्रयागे मुंडने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे । तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥३०॥
त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम् । तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः ॥३१॥
भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः । भकारस्तु भकारस्तु भकारः केवलः शिवः ॥३२॥
वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः । प्रेतवद्देवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥३३॥
आरोग्यं च जयं पुण्यं नातः सुखविवर्धनम् । धनं पुत्रजरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम् ॥३४॥
अर्धांगरोगान्मुच्येत दद्रुरोगाच्च पार्वति । सत्यं सत्यं जगद्धात्रि महामाये शिवे शिवे ॥३५॥
चण्डे-चण्डि महारावे चण्डिका व्याधिनाशिनी । मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी ॥३६॥
सर्वदुःखाद्विमुच्येत भक्तया चण्डीं शृणोति यः । ब्राह्मणो हितकारी च पठेन्नियतमानसः ॥३७॥
मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं मङ्गलं जयमङ्गलम् । भवेद्धि पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥३८॥
तत्त्वज्ञानेन निधन काले निर्वाणमाप्नुयात् । मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा ॥३९॥
चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद्ब्राह्मणोऽपि च । निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः ॥४०॥
सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद्ग्रहदोषतः । मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत् ॥४१॥

अन्यच्च-

महाचंडी शिवा घोरा महाभीमा भयानका । कांचनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥४२॥

गुह्यचंडी घोरचंडी चंडी त्रैलोक्यदुर्लभा । देवानां दुर्लभा चंडी रुद्रयामलसंमता ॥४३॥
अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी । मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥४४॥
मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसंगता । महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥४५॥
वस्त्रदा मणिराज्यादिसदाविषयवर्धिनी । मुक्तिदा सर्वदा चंडी महाविपद्विनाशिनी ॥४६॥
इमां हि चंडीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य ।
चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां स वै न गच्छेत्परमंदिरं किम् ॥४७॥
जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणीतले । रुद्रचंडीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले ॥४८॥

मंत्र महार्णव पेज ३७१ से अन्यच्च –

रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा । रुद्रशक्ती रुद्ररूपा रुद्राननसमन्विता ॥१॥
शिवचंडी महाचंडी शिवप्रेतगणान्विता । भैरवी परमाविद्या महाविद्या च षोडशी ॥२॥
सुंदरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुंदरी । गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी ॥३॥
कृष्णा तृष्णास्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी अतिमात्रा महालज्जा सर्वमंगलदायिनी ॥४॥
घोरतंद्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा । मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥५॥
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगीन्द्रैरपि सेविता । भयानका महादेवी भयदुःखविनाशिनी ॥६॥
चंडिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा । वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता ॥७॥
माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभूषिता । चामुंडा नारसिंही च नृसिंहरिपुमर्दिनी ॥८॥
सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी । इति सत्यं महादेविसत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥९॥
नैवशोको नैवरोगो नैवदुःखं भयं तथा । आरोग्यं मंगलं नित्यं करोति शुभमंगलम् ॥१०॥
महेशानि वरारोहेब्रवीमि सदिदं वचः । अभक्ताय न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥११॥
तव भक्त्या प्रशांताय शिवविष्णुप्रियाय च । दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥१२॥
अनंतफलमाप्नोति शिवचंडीप्रसादतः । अश्वमेघं वाजपेयं राजसूयशतानि च ॥१३॥
तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः । दुर्गेयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥१४॥
मन्त्रमक्षरसंज्ञानां करोत्यपि नराधमः । अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥१५॥
लंबोदराधिकश्चंडीपठनाच्छ्रवणात्तु यः । तत्त्वमस्यादिवाक्येन मुक्तिमाप्नोतिदुर्लभाम् ॥१६॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसंवादे रुद्रचंडी समाप्ता ।

॥ अथ परशुरामकृत श्रीदुर्गा स्तोत्रम् ॥

॥ परशुराम उवाच ॥

श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च । आविर्भूता विग्रहतः परा सृष्ट्युन्मुखस्य च ॥१॥
सूर्यकोटिप्रभायुक्ता रत्नालंकारभूषिता । वह्निशुद्धांशुकाधाना सस्मिता सुमनोहरा ॥२॥
नवयौवनसंपन्ना सिंदूरबिंदुशोभिना । ललिता कवरीभारमालतीमाल्यमंडिता ॥३॥
अहोऽनिर्वचनीया त्वं चार्वीं मूर्तिं च बिभ्रती । मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां जगत्कर्ता विधिः स्वयम् ॥४॥
मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम् । रासे संभूय सहसा सस्मिता राधिता पुरा ॥५॥
सद्भिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी । कृष्णस्त्वां सहसाज्ञाय वीर्याधानं चकार ह ॥६॥
ततोऽडमंभसो जज्ञे यतो भूतो महाविराट् । यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्मांडान्यखिलानि च ॥७॥
तच्छृंगारश्रमेणैव त्वन्निश्वासो बभूव ह । ततस्त्वं पंचधाभूय पंचमूर्तीश्च बिभ्रती ॥८॥
प्राणाधिष्ठात्री या मूर्तिः कृष्णस्य परमात्मनः । कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदंति पुराविदः ॥९॥
वेदाधिष्ठात्री या मूर्तिर्वेदशास्त्रप्रसूरपि । तां सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदंति मनीषिणः ॥१०॥
ऐश्वर्याधिष्ठात्री मूर्तिर्या शांतिः शांतिस्वरूपिणी । लक्ष्मीं वदंति संतस्तां शुद्धसत्त्वस्वरूपिणीम् ॥११॥
रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः । सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञाः प्रवदंति बुधा भुवि ॥१२॥
बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मुक्तिरधिदेवता । सर्वमंगलरूपा त्वं सर्वमंगलकारिणी ॥१३॥
सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य मंदिरेऽधुना । शिवे शिवस्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणांतिके ॥१४॥
सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया । राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च ॥१५॥
परमानंदरूपासि छाया चंद्रस्य रोहिणी । शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी ॥१६॥
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा । वह्नेः प्रिया या स्वाहा च कुबेरस्य च सुंदरी ॥१७॥
यमस्य च सुशीला वै नैर्ऋतस्य च कोटवी । ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोःप्रिया ॥१८॥
देवहूतिः कर्दमस्य वशिष्ठस्याप्यरुंधती । अदितिर्देवमाता या मुद्रागस्त्यमुनेः प्रिया ॥१९॥
अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुंधरा । गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद्वराः ॥२०॥
एताः सर्वाश्च या अन्याः सर्वास्त्वत्कलयांबिके । गृहलक्ष्मीर्गृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु ॥२१॥
तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च । सतां सत्यस्वरूपा त्वं ह्यसतां कलहांकुरा ॥२२॥
ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च । सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने ॥२३॥
जले सत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे । त्वं भूमौ गंधरूपा च गगने शब्दरूपिणी ॥२४॥
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वाग्ज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम् । कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा ॥२५॥
शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युंजयः शिवः । सृष्टिपालनसंहारशक्तयस्त्रिविधाश्च याः ॥२६॥
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते ॥२७॥
मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकंपितः । स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम् ॥२८॥

मधुकैटभयोर्युद्धे प्राप्तोऽसौ विष्णुरीश्वरीम् । बभूव शक्तिमान्स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥२९॥
त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे । यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥३०॥
विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शंभुः समुत्थितः । जघान त्रिपुरं स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥३१॥
कालचक्रं च जगति शश्वद् भ्रमति वेगतः । मृत्युश्चरति जंत्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥३२॥
स्त्रष्टा सृजति सृष्टं च पाता पाति यदाज्ञया । संहर्ता हरते काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥३३॥
ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम् । यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम् ॥३४॥
रक्ष रक्ष जगन्मातस्त्वपराधान्क्षमस्व मे । शिशूनामपराधेन जातु माता न कुप्यति ॥३५॥
इत्युक्त्वा पर्शुरामश्च प्रणम्य तां रुरोद च । तुष्टा दुर्गा संभ्रमेण चाभयं सा वरं ददौ ॥३६॥
अमरो भव रे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज । मम प्रसादात्सर्वत्र जयोऽस्तु तव संततम् ॥३७॥
सर्वांतरात्मा भगवांस्तुष्टोऽस्तु सततं हरिः । भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ ॥३८॥
इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती । तं हंतुं नहि शक्ता वै रुष्टाश्च सर्वदेवताः ॥३९॥
श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यस्त्वं शंकरस्य च । गुरुपत्न्याश्च भक्तो हि कस्त्वां हंतुं महेश्वरः ॥४०॥
अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् । अन्यदेवेषु भक्ता वा न भक्ता वा निरंकुशाः ॥४१॥
चंद्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो । तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वंति च दुर्बलाः ॥४२॥
यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान्सखा । तस्य किं वा करिष्यंति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः ॥४३॥
इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामाय चाशिषम् । जगन्मातुः पुरस्तूर्णं जयशब्दो बभूव ह ॥४४॥
कण्वशाखोक्तस्तोत्रं च पूजाकाले हि यः पठेत् । यात्राकाले च प्रातर्वा वांछितार्थं लभेत सः ॥४५॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी लभते सुताम् । विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी लभते प्रजाम् ॥४६॥
भ्रष्टराज्यो व्रजेद्राज्यं धनं भ्रष्टधनो व्रजेत् । यस्य तुष्टो गुरुर्देवो राजानो बांधवास्तथा ॥४७॥
तस्य तुष्टाश्च वरदाः स्तोत्रराजप्रसादतः । दस्युग्रस्तोऽहिसंग्रस्तः शत्रुग्रस्तो भयानकः ॥४८॥
व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः । राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बंधने ॥४९॥
जलराशौ निमग्नश्च मुक्तो भवति मानवः । स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदेऽतिदारुणे ॥५०॥
स्तोत्रस्मरणमात्रेण वांछितार्थं लभेत सः । कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं श्रृणोति यः ॥५१॥
भक्त्या दुर्गां च संपूज्य महावंध्या प्रसूयते । लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ॥५२॥
असौभाग्या च सौभाग्यं षणमासश्रवणाद् व्रजेत् । नवमासं काकवंध्या मृतवत्सा च भक्तितः ॥५३॥
स्तोत्रराजं या श्रृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् । कन्यामाता पुत्रहीना पंचमासं श्रृणोति या ॥५४॥
घटे संपूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥५५॥

॥ इति श्रीपरशुरामप्रोक्तं दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ॥

(१) ॥ श्री मार्कंडेयप्रोक्त लघुदुर्गासप्तशती ॥

ॐ वींवींवीं वेणुहस्ते स्तुतिविधवटुके हां तथा तानमाता स्वानंदेनंदरूपे अविहतनिरुते भक्तिदे मुक्तिदे त्वम्।
हंसः सोहं विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे, ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोके कष कष विपुले वीरभद्रे नमस्ते ॥१॥
ॐ ह्रींकारं चोच्चरंती ममहरतु भयं चर्ममुंडे प्रचंडे खां खां खां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे।
हुंहुंहुंकारनादे गगनभुवि तथा व्यापिनी व्योमरूपे, हंहंहंकारनादे सुरगणनमिते राक्षसानां निहंत्रि ॥२॥
ऐं लोके कीर्तयंती मम हरतु भयं चंडरूपे नमस्ते, घ्रां घ्रां घ्रां घोररूपे घघघघघटिते घर्घरे घोररावे।
निर्मांसे काकजंघे घसितनखनखाधूम्रनेत्रे त्रिनेत्रे, हस्ताब्जे शूलमुंडे कलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते ॥३॥
क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले, मानुरागे मुद्रासंज्ञत्रिरेखां कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये।
तेजोंगे सिद्धिनाथे मनुपवनचले नैव आज्ञा निधाने, ऐंकारे रात्रिमध्ये शयितपशुजने तंत्रकांते नमस्ते ॥४॥
ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मरूपेण चक्रे त्रिः शक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्णवर्णे।
ह्रींस्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तुपत्रे स्वच्छंदं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यमुंडे नमस्ते ॥५॥
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुंडे घघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे, ह्रीं क्री द्रं द्रौं च चक्र र र र र र रमिते सर्वबोधप्रधाने।
द्रीं तीर्थे द्रीं तज्येष्ठ जुगजुगजजुगे म्लेच्छदे कालमुंडे, सर्वांगे रक्तघोरामथनकरवरे वज्रदंडे नमस्ते ॥६॥
ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुंडे, वज्रांगे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातंगरूढे।
सूतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले, कुंडल्याकाररूपे वृषवृषभहरे ऐंद्रि मातर्नमस्ते ॥७॥
ॐ हुंहुंहुंकारनादे कषकषवसिनी मांसि वैतालहस्ते, सुंसिद्धर्षैः सुसिद्धिर्ढढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचंडी।
जूं सः सौं शांतिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रे, देवि त्वं साधकानां भवभयहरणे भद्रकाली नमस्ते ॥८॥
ॐ देवि त्वं तुर्यहस्ते करधृतपरिघे त्वं वराहस्वरूपे, त्वं चेंद्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पुराणी महेंद्री।
ऐं ह्रीं ह्रीं कारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे, पाताले शैलभृंगे हरिहरभुवने सिद्धिचंडी नमस्ते ॥९॥
हंसि त्वं शौंडदुःखं शमितभवभये सर्वविघ्नांतकार्ये, गांगींगूंगैंषडंगे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये।
क्रूंक्रूंमुद्रागजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले, ॐ हीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते'' ॥१०॥

॥ इति मार्कण्डेयकृतलघुसप्तशतीदुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ॥

अन्यच्च – (२) लघु सप्तशती (गुप्त सप्तशती)

सर्वप्रथम कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करें पश्चात् इस स्तोत्र को पढ़ें :-

ॐ ब्रीं ब्रीं ब्रीं वेणु हस्ते स्तुत सुर बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्दरूपे अनहतनिरते मुक्तिदे मुक्तिमार्गे ॥
हंसः सोहं विशाले वलयगति हसे सिद्ध देवी समस्ता।
हीं हीं हीं सिद्ध लोके कच रुचि विपुले वीरभद्रे नमस्ते ॥१॥
ॐ ह्रींङ्कारोच्चारयन्ती मम हरति भयं चण्डमुण्डौ प्रचण्डे।
खां खां खां खड्ग पाणे ध्रक ध्रक ध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे ॥

हुँ हुँ हुङ्कार नादे गगन भुवि तले व्यापिनी व्योमरूपे ।
हं हं हङ्कार नादे सुरगण नमिते चण्डरूपे नमस्ते ॥२॥
ऐं लोके कीर्तयन्ती मम हरतु भयं राक्षसान् हन्यमाने ।
घ्रां घ्रां घ्रां घोर रूपे घघ घघ घटिते घर्घरे घोर रावे ॥
निर्मांसे काकजङ्घे घसित नख नखा धूम्रनेत्रे त्रिनेत्रे ।
हस्ताब्जे शूलमुण्डे कुल कुल कुकुले सिद्धहस्ते नमस्ते ॥३॥
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुह कुह - मखिले कोकिलेमानुरागे ।
मुद्रासंज्ञ त्रिरेखा कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये ॥
तेजोङ्गे सिद्धिनाथे मनुपवन चले नैव आज्ञा निधाने ।
ऐङ्कारे रात्रिमध्ये स्वपित पशुजने तंत्रकान्ते नमस्ते ॥४॥
ॐ व्रां व्रीं व्रूं व्रैं कवित्वे दहनपुर - गते रुक्मिरूपेण चक्रे ।
त्रिः शक्त्या युक्तवर्णादिक करनमिते दादिवं - पूर्व - वर्णे ॥
ह्रीं स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशिनि - कोशपत्रे ।
स्वच्छन्दे कष्टनाशे सुरवर - वपुषे गुह्यमुण्डे नमस्ते ॥५॥
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुण्डे घघ-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रिघोषे ।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च चक्रे रर - रर रमिते सर्वज्ञाने प्रधाने ॥
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे जुग-जुग जजुगे म्लीं पदे कालमुण्डे ।
सर्वाङ्गे रक्तधोरा - मथन - करवरे वज्रदण्डे नमस्ते ॥६॥
ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामनमिते गगन गडगडे गुह्य योनिस्वरूपे ।
वज्राङ्गे वज्रहस्ते सुरपति वरदे मत्त मातङ्गरूढे ॥
स्वस्तेजे शुद्धदेहे ललल्लल ललिते छेदिते पाशजाले ।
कुण्डल्याकाररूपे .वृष वृषभ ध्वजे ऐन्द्रि मातर्नमस्ते ॥७॥
ॐ हुँ हुँ हुङ्कारनादे विषम त्रशकरे यक्ष वैताल नाथे ।
सुसिद्ध्यर्थे सुसिद्धेः ठठ ठठ ठठठः सर्वभक्षे प्रचण्डे ॥
जूं सः सौं शान्ति कर्मेऽमृत मृतहरे निःसमे सं समुद्रे ।
देवि त्वं साधकानां भव-भव वरदे भद्रकाली नमस्ते ॥८॥
ब्रह्माणी वैष्णावी त्वं त्वमसि बहुचरा त्वं वराहस्वरूपा ।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं कुमारी महेन्द्री ॥
ऐं ह्रीं क्लींङ्कार भूते वितलतल तले भूतले स्वर्गमार्गे ।
पाताले शैलशृङ्गे हरि हर भुवने सिद्धचण्डी नमस्ते ॥९॥
हं लं क्षं शौण्डिरूपे शमित भव भये सर्वविघ्नान्त विघ्ने ।

हं लं क्षं शौण्डिरूपे शमित भव भये सर्वविघ्नान्त विघ्ने ।
गां गीं गूं गैं षडङ्गे गगन गति-गते सिद्धिदे सिद्धसाध्ये ॥
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसतिवदने त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे ।
हां हूं गां गीं गणेशी गजमुखजननी त्वां महेशीं नमामि ॥१०॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेय पुराणोक्त लघुसप्तशती ॥

॥ दुर्गा खड्ग स्तवन ॥

मार्कण्डेयपुराणोक्त यह स्तोत्र पाठान्तर भेद के साथ कवच व स्तव के नाम से भी अन्यत्र उल्लिखित है।

चामुण्डाप्रेतगा विकृता चाऽहिभूषणा, दंष्ट्राली क्षीणदेहाचगर्ताक्षी कामरूपिणी ।
दिग्बाहुः क्षामकुक्षि मुसलं चक्रचामरे, अंकुशं बिभ्रती खड्गं दक्षिणे चाथ वामके ।
खेटं पाशं धनुर्दण्डं कुठारं चापि बिभ्रती ॥
या देवी खड्ग हस्ता सकलजनपदा व्यापिनी विश्वदुर्गा ।
श्यामाङ्गी शुक्लपाशाब्धिजगण गणिता ब्रह्मदेहार्ध वासा ॥
ज्ञानानां साधयन्ती तिमिर विरहिता ज्ञान दिव्य प्रबोधा ।
सा देवी दिव्यमूर्तिर्प्रदहतु दुरितं मुण्डचण्डे प्रचण्डे ॥१॥
ॐ हां हीं हूं वर्मयुक्ते शवगमन गतिर्भीषणे भीमवक्त्रे ।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृत स्तन मुखे रौद्र दंष्ट्राकराले ॥
कं कं कंकाल धारी भ्रमसि जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती ।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डे प्रचण्डे ॥२॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्ररूपे त्रिभुवन नमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे ।
रां रीं रूं रङ्ग रंगे किले किलित रवे शूल हस्ते प्रचण्डे ॥
लांलींलूं " " लम्बजिह्वे हसति कहकहा शुद्धघोराट्टहासैः ।
कंकाली कालरात्रिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डेप्रचण्डे ॥३॥
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घघ-घघ घटितैः घर्घराराव घोरे ।
निर्मांसे शुष्कजङ्घे पिबति नरवसा धूम्रधूम्रायमाने ॥
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती सकलभुवि तले यक्ष गन्धर्व नागान् ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डे प्रचण्डे ॥४॥
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्रकाली हरिहर नमिते रुद्रमूर्ते विकर्णे ।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ शशि मुकुट शिरो वेष्ठिता केतुमालाम् ॥
स्त्रक् सर्वौ चोरगेन्द्रौ शशिकरण - निभा तारकाः हारकण्ठे ।
सा देवी दिव्य मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डे प्रचण्डे ॥५॥
ॐ खं खं खं खड्गहस्ते वर कनकनिभे सूर्यकान्ति स्वतेजा ।

विद्युज्ज्वालावलीनां भव निशित महाकर्त्रिका दक्षिणेन ॥
वामेहस्ते कपालं वर विमल सुरापूरितं धारयन्ती ।
सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डे प्रचण्डे ॥६॥
ॐ हुँ हुँ फट् कालरात्रीं पुर-सुर मथनीं धूम्रमारी कुमारी ।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दष्टान् किलित किल किला - शब्दअट्टाट्टहासे ।
हा हा भूत-प्रभूते किल किलित मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती ।
हुंकारोच्चारयंती प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डे प्रचण्डे ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन सहिता चण्डि चामुण्ड नित्ये ।
रं रं रंकारशब्दे शशिकर धवले कालकूटे दुरन्ते ॥
हुँ हुँ हुंकार-कारि सुरगण नमिते कालकारी विकारी ।
त्र्यैलोक्यं वश्यकारी प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डे प्रचण्डे ॥८॥
वन्दे दण्ड प्रचण्डा डमरु डिमि डिमा घण्ट टंकारनादे ।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ थइ विभवैर्निर्मला मन्त्रमाला ।
सुक्षौ कुक्षौ वहन्ती खर खरिता खा चार्चिनि प्रेतमाला ।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासैः हह हसित रवा चर्ममुण्डा प्रचण्डे ॥९॥
ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखिगमना त्वं च देवी कुमारी ।
त्वं चक्री चक्रहासा घुर-घुरित रवा त्वं वराहस्वरूपा ॥
रौद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकल भुवितले संस्थिते स्वर्गमार्गे ।
पाताले शैलशृङ्गे हरि हर नमिते देवि चण्डी नमस्ते ॥१०॥
रक्ष त्वं मुण्डधारी गिरि गुह विवरे निर्झरि पर्वते वा ।
संग्रामे शत्रुमध्ये विश विषम विषे संकटे कुत्सिते वा ॥
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि भुवितले वह्निमध्ये च दुर्गे ।
रक्षेत् सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड चण्डे प्रचण्डे ॥११॥
इत्येवं बीजमन्त्रैः स्तवनमति शिवं पातक व्याधि नाशम् ।
प्रत्यक्षं दिव्यरूपं ग्रहगण मथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥
इत्येवं वेद वेद्यं सकलभयहरं मन्त्र शक्तिश्च नित्यम् ।
मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र सिद्धिम् ॥१२॥
चं चं चं चन्द्रहासा चचम चमचमा चातुरी चित्तकेशी ।
यं यं यं योगमाया जननि जगहिता योगिनी योगरूपा ॥
डं डं डं डाकिनीनां डमरुक सहिता डोल हिण्डोल डिम्भा ।
रं रं रं रक्तवस्त्रा सरसिज नयना पातु मां देवि दुर्गा ॥१३॥

॥ इति मार्कण्डेय विरचितं चण्डिका स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमार्कण्डेय पुराणोक्त चंडिका स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र कई जगह पाठान्तर भेद से चामुण्डा कवच के नाम से प्रकाशित हो चुका है **इसके ऋषि ब्रह्मा। छन्द अनुष्टुप्। देवता चामुण्डा। ऐं बीज। ह्रीं शक्ति। क्लीं कीलक कहा है।**

॥ ध्यानम् ॥

चामुण्डा प्रेतगा विकृता चाऽहि भूषणा ।
दंष्ट्राली क्षीण-देहा च गर्ताक्षी कामरूपिणी ॥
दिग्बाहुः क्षामकुक्षि मुसलं चक्र-चामरे ।
अङ्कुशं विभ्रती खड्गं दक्षिणे चाथ वामके ॥
खेटं-पाशं-धनुर्दण्डं कुठारं चापि बिभ्रती ॥

या देवी खड्गहस्ता सकलजनपदव्यापिनी विश्वदुर्गा, श्यामांगी शुक्लपाशा द्विजगणगणिता ब्रह्मदेहार्धवासा ।
ज्ञानानां साधयित्री यतिगिरिगमनज्ञानदिव्यप्रबोधा, सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥१॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं चर्ममुंडे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे, क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृतकुच मुखे रौद्रदंष्ट्राकराले ।
कं कं कंकालधारि भ्रमसि जगदिदं भक्षयंती ग्रसंती, हुंकारं चोच्चरंती प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥२॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्ररूपे त्रिभुवननमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे, रां रीं रूं रंगरंगे किलिकिलितरवे शूलहस्ते प्रचंडे ।
लां लीं लूं लंबजिह्वे हसति कहकहाशुद्धघोराट्टहासे, कंकाली कालरात्रिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥३॥
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घघघघघटितैर्घुर्घुरारावघोरे, निर्मांसी शुष्कजंघे पिबतु नरवसाधूम्रधूम्रायमाने ।
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयंती सकलभुवि तथा यक्षगंधर्वनागान्क्षां, क्षीं क्षूं क्षोभयंती प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥४॥
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं चंडगर्वे हरिहरनमिते रुद्रमूर्तिश्च कीर्तिश्चंद्रादित्यौ च कर्णौ जडमुकुटशिरोवेष्टिता केतुमाला ।
स्त्रक्सर्वौ चोरगेंद्रौ शशिकिरणनिभा तारकाहारकंठा, सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥५॥
ॐ खंखंखं खड्गहस्ते वरकनकनिभे सूर्यकांते स्वतेजोविद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशितमहाकृत्तिका दक्षिणे च ।
वामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयंती, सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥६॥
ॐ हुं हुं फट् कालरात्री रु रु सुरमथनी धूम्रमारी कुमारी, ह्रां ह्रीं ह्रूं हत्तिशोरौक्षपितुकिलकिलाशब्द अट्टाट्टहासे ।
हाहाभूतप्रसूते किलिकिलितमुखा कीलयंती ग्रसंती, हुंकारं चोच्चरंती प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥७॥
ॐ भृंगी काली कपालीपरिजनसहिते चंडि चामुंडनित्या, रों रो रोंकारनित्ये शशिकरधवले कालकूटे दुरंते ।
हुंहुंहुंकारकारी सुरगणनमिते कालकारी विकारी, वश्ये त्रैलोक्यकारी प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥८॥
ॐ वंदे दंडप्रचंडा डमरुरुणिमणिष्टोपटंकारघंटैर्नृत्यंती, याट्टपातैरटपटविभवैर्निर्मला मंत्रमाला ।
सुक्षौ कक्षौ वहंती खरखरितसखाचार्चिनि प्रेतमालामुच्चैस्तैश्चाट्टहासैर्घुरुघुरितरवा चर्ममुंडा प्रचंडा ॥९॥
ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री शवशिखिगमना त्वं च देवी कुमारी त्वं चक्री चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराहस्वरूपा ।
रौद्रे त्वं चर्ममुंडा सकलभुवि परे संस्थिते स्वर्गमार्गे, पाताले शैलभृंगे हरिहरनमिते देवि चंडे नमस्ते ॥१०॥
ॐ रक्ष त्वं मुंडधारी गिरिवरविवरे निर्झरे पर्वते वा संग्रामे, शत्रुमध्ये विश विश भविके संकटे कुत्सिते वा ।
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधिभुवि तथा वह्निमध्ये च दुर्गे, रक्षेत्सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥११॥

इत्येवं बीजमंत्रैः स्तवनमतिशिवं पातकव्याधिनाशं प्रत्यक्षं दिव्यरूपं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ।
इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मंत्रशक्तिश्च नित्यं मंत्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मंत्रसिद्धिम् ॥१२॥

॥ इति श्रीमार्कंडेयविरचितं चंडिकास्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीदुर्गा शतनामात्मक स्तोत्र प्रारंभः ॥

(उक्तं च विश्वसारतन्त्रे)

॥ ईश्वर उवाच ॥

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुश्व कमलानने । यस्य प्रसाद मात्रेण दुर्गा प्रीता सदा भवेत् ॥१॥
ॐ सती साध्वी भवा प्रिया भवानी भवमोचिनी । आर्य्या दुर्गा जया आद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चन्द्रघण्टा महातपा । मनोबुद्धिरहंकारश्चितरूपा चिता चितिः ॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्या सत्यानन्दस्वरूपिणी । अनन्ता भाविनी भाव्या भवा भव्या सदगतिः ॥४॥
शम्भुपत्नी देवमाता चिन्तारत्ना प्रिया सदा । सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥५॥
अर्पणा चैकपर्णा च पाटला पाटलावती । पट्टाम्बर परीधाना कलमञ्जीररंजिनी ॥६॥
अमेय विक्रमाक्रूरा सुन्दरी कुलसुन्दरी । वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनि पूजिता ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा । चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया सत्या च वाक्प्रदा । बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहन वाहना ॥९॥
निशुम्भशुम्भहनिनी महिषासुरमर्दिनी । मधुकैटभहन्त्रि च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥१०॥
सर्वाऽसुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी । सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रधारिणी ॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी । कुमारी चैव कन्या च कौमारी युवतीः यतिः ॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा । य इदं च पठेत्स्तोत्रं दुर्गानामशताष्टकम् ॥१३॥
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति । धनं धान्यं सुताज्जयां हयं हस्तिनमेव च ॥१४॥
चतुर्वर्ग तथा चान्ते विन्देन्मुक्तिं च शाश्वतीम् । कुमारीः पूजयित्वा च ध्यात्वा देवी सुरेश्वरीम् ॥१५॥
पूजयेत्परया भक्त्या पठेन्नाशताष्टकम् । तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि सर्वैः सुरवैरिरपि ॥१६॥
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् । गोरोचनालक्तक कुंकुमेन सिन्दूरकर्पूर मधुत्रयेण ॥
विलिख्यं यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत्सदाधारणतः पुरारिः । भौममायां निशाभागे चन्द्रेशतभिषां गते ।
विलिख्य पठन्स्तोत्रं स भवेत्संपदो पदम् ॥१८॥

(इति श्रीविश्वसार तन्त्रे दुगाऽष्टोत्तर शतनामात्मक स्तोत्रं सम्पूर्णम्)

॥ अथ दुर्गा सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

उक्तं च देवीरहस्यतंत्रे चैकोनपंचाशत्तमे पटले ।

॥ भैरव उवाच ॥

अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि । रहस्यं सर्वदेवानां दुर्लभं यमिनामपि ॥१॥
श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं सारं त्रैलोक्यकारणम् । मंत्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥२॥
यत्पठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम् । अश्वमेधायुतं पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥३॥
श्रेयस्करंविश्ववंद्यं सर्वदेवनमस्कृतम् । गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात्सिद्धिदायकम् ॥४॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रस्य श्रीमहेश्वर ऋषिरनुष्टुप्छंदः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥१॥ अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे ॥२॥ श्रीदुर्गादेवतायै नमो हृदि ॥३॥ हुं बीजाय नमो नाभौ ॥४॥ ह्रीं शक्तये नमो मुखे ॥५॥ ॐ कीलकाय नमः पादयोः ॥६॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥७॥

ॐ ह्रीं दुर्गा जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका । प्रचंडा चंडिका चंडी चंडमुंडनिषूदिनी ॥५॥
अनसूया त्रुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जकालया । प्रलयस्थितिसंभूतिविभूतिर्भयनाशिनी ॥६॥
महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी । मदालसा मदोत्तुगा मदिरा मदनप्रिया ॥७॥
अतिव्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी । आदिदेवी कला कांता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥८॥
मनोन्मनी महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मी सरस्वती । सरित्कादंबरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी ॥९॥
गणांबिका जया तापी तपना तापहारिणी । तपोमयी दुरालंभा दुष्टग्रहनिवारिणी ॥१०॥
दुःखघ्नी सुखदा माध्वी परमामृतसूः सुरा । सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा ॥११॥
समस्तसंपदंभोजविलया कलिकालया । विद्येश्वरी विश्वमयी विराट्छंदोगतिर्मतिः ॥१२॥
धृतिश्च दांभिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी । गरिष्ठारिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाकुला ॥१३॥
अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी । विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकांतापराजिता ॥१४॥
अजिता कुलिका लंपा लंपटा त्रिपुरेश्वरी । त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमतिर्भया ॥१५॥
अभया स्वर्मुखी देवी महौषधिरलंबुषा । चपला चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिषूदिनी ॥१६॥
चपलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना । पुरी त्रिपुरसूराद्या रमा रामा मनोरमा ॥१७॥
संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा । शशांकमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना ॥१८॥
विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिला । मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥१९॥
मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तभाषिणी । नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया ॥२०॥
पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया । चामुण्डा चोग्रमुण्डा च महाचण्डतमा उमा ॥२१॥
तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महाज्योतिःस्वरूपिणी । स्वरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥२२॥

सृष्टिस्थितिः क्षेमकरी क्षामा क्षामोन्नतस्तनी । क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शवस्था शिववल्लभा ॥२३॥
दंतुरा दाडिमप्रीतिर्दया दांभिकसूदिनी । राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥२४॥
कबंधा कंदरा कृत्या कृत्तिका कंटकांतका । कलंकरहिता काली कंपा काश्मीरवल्लभा ॥२५॥
काशी कीर्तिप्रदा कांची काश्मीरी कोकिलस्वना । प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥२६॥
रतिः स्तुतिस्तुरी तुर्या तोतुला तलवासिनी । तपःप्रिया सरिच्छ्रेष्ठा पंगुपुत्री यमस्वसा ॥२७॥
यामी यमांतका याम्या यमुना स्वर्णदी तडित् । नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥२८॥
विगता विगतप्रश्ना कृशा कृष्टासिधरिणी । वारी वराम्बरधरा वरदा वीरसूदिनी ॥२९॥
वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती । दरी धनप्रिया धात्री धात्री वल्ली महोदरी ॥३०॥
गणेश्वरी गणा कांची कांचीकिंकिणिघंटिका । माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी ॥३१॥
पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा । स्वाभाविकगुणा गुण्या गांभीर्यगुणभूषणा ॥३२॥
सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्ततिरूपिणी । तेजस्विनी सदानंदा सभासंतोषवर्धिनी ॥३३॥
तर्पणा कर्षणा होत्री संकल्पा शुभमंत्रिका । दर्भा द्रोणिकला शांता समिधा सुरवेदिका ॥३४॥
धूम्राहुतिश्चरमतिश्चामीकररुचिश्चिता । दिव्यानलेश्वरी नीला कालानलसरस्वती ॥३५॥
अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भयाभया । भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भाकरा विभा ॥३६॥
विभावरी नदी नंद्या नद्यावर्तप्रवर्तिनी । पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रवर्तिका ॥३७॥
विश्वमाया विश्वबाला विश्वंभरविलासिनी । उरगेशा पद्मनाभा पद्मनाभप्रसूः प्रजा ॥३८॥
तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः । संपुटा शयना शय्या शासना शमनांतका ॥३९॥
श्यामाकवर्णा शार्दूली शष्पनीतांशुवल्लभा । स्तुत्या प्रणीता नियतिः कंपना कंपहारिणी ॥४०॥
चंपका भूधरा चीना दीना दीनजनप्रिया । वसुंधरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥४१॥
समुद्रासंगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी । पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥४२॥
माधवी मधुपानस्था मंदिरा मंदुरा मृगी । ममर्षाभिरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥४३॥
ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता चान्नपूर्णा महेश्वरी । अणुरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥४४॥
गारुडी गगनालंबा लंबमानकचप्रिया । पीतांबरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा ॥४५॥
बलाका जगदंता च जरा जयवरप्रदा । प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रमा ॥४६॥
जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा । कीरी करालदेहा च शेमुषी मक्षिका मषी ॥४७॥
उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा । शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥४८॥
तथ्या पथ्यकरी रथ्या रथस्था विततस्वरा । महती रागिणी मार्गी शुचिहासा हरीश्वरी ॥४९॥
हरिद्रलांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुंदरी । अंबालिकांबा देवेशी ह्यनद्याग्निशिखा श्रुतिः ॥५०॥
अलसाल्पगतिश्चांत्यानंतानंतगुणाश्रया । आद्या चादित्यसंकाशा ह्यादित्यकुलसुंदरी ॥५१॥
आत्मरूपाधिशमिनी चादिमायादिदेवता । इंद्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥५२॥

उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुंगा चोक्षवाहजा । उत्तंका चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी ॥५३॥
ऊष्मा ऊर्णा च गुर्वंगी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका । ऋद्धिश्चर्वा ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री च वार्तकी ॥ ५४॥
ऋद्धिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा । लृकारा लृक्वुरा लीना लृकारवरधारिणी ॥५५॥
एणांकमुकुटा चेहा चारुचंद्रकला कला । ऐंकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरी गतिः ॥ ५६॥
ॐकारबीजरूपा च औत्रिकी बीजधारिणी । अंबिका लंपिकांबा च अस्वरोद्गाररूपिणी ॥५७॥
काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा । कदंबनिलया कंथा कांचीमंडनमंडिता ॥५८॥
कलंकरहिता कूर्पा कांचनाभा करीरगा । कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा ॥५९॥
कुलस्था कौलिनी कल्या कुरुकुल्ला कपालिनी । कपालकुलनिर्विण्णा क्रेंकरा कंजलोचना ॥६०॥
खंजनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा । खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥६१॥
खगायुधा खगगतिः खकाराशरभूषणा । गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥६२॥
गोधा गदाधरप्राज्या गगनेशी महीमला । घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी ॥६३॥
घनसारप्रिया साम्या घवर्णरुतभूषणा । चांद्री चंद्रस्तुता चार्वी चंद्रिका चंडनिःस्वना ॥६४॥
चंचरीकस्वना देवी चंचच्चामीकरांगदा । छत्रिकाच्छुरिका छच्छा छत्रचामरभूषणा ॥६५॥
ज्रींकारी जलजिह्वा च जृंभिका जलयोगिनी । जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना ॥६६॥
जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा । झंझाझरी झरत्कारी जरत्कांची त्वकिंकिणी ॥६७॥
झिटिका झंपकृज्झंपा झंपत्रासनिवारिणी । ञणुरूपा ञक्वहस्ता ञकाराक्षरसंमता ॥६८॥
टंकायुधा महातथ्या टंकारा करुणा सती । ठक्वुरा ठत्करा ठानी डिंडीरवसना डला ॥६९॥
ढंडानिलमयी ढंडा ढणत्कारकरा ढसा । णांतानणी णीलायुधा णवर्णाक्षरभूषणा ॥७०॥
तरुणी तुंदिला तोदा तामसी तामसप्रिया । ताम्रानना ताम्रकरा ताम्रांबरधरा तुला ॥ ७१॥
तापत्रयहरी तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा । स्थाणुपत्नी स्थली स्थ[illegible] स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला ॥७२॥
दंतिनी दंतुरा दावी देवकी देवनायिका । दामिनी दमिनी दंड्या दंडहस्ता दुरानतिः ॥७३॥
दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्रविडवासिनी । दूरस्था दुंदुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ॥७४॥
दुःखघ्नी च द्रुगा द्रष्ट्री दया दांभिकनाशिनी । धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा ॥७५॥
धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी । धूमाली धूम्रवदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना ॥७६॥
नलिनी नर्तकी नांतानंगा नलिनलोचना । निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा नमिः ॥७७॥
नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी । निरंजनजनिर्जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी ॥७८॥
नटिनी नाट्यनिरता नवनीतप्रियानिला । नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा ॥७९॥
पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला । परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोणिः पुलोमजा ॥८०॥
पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाटीरवाहना । पापघ्नी पद्मिनी पाली पली परमसुंदरी ॥८१॥
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा । पूर्णिमा पंचमी पौत्री पुरूरववरप्रदा ॥८२॥

पंचयज्ञा पंचशरी पंचाशन्मनुवल्लभा । पांचली पंचपुत्रा च पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥८३॥
फलिनी फलदात्री च फलहस्ता फणिप्रिया । फिरंगहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमती स्फुरा ॥८४॥
बलमाया बलस्तन्या बिल्वसेना बलाबला । बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी ॥८५॥
बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बंधनमोचिनी । भगिनी भगमाला च भगलिङ्गामृतस्त्रवा ॥८६॥
भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगमर्षिणी । भगलिंगस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी ॥८७॥
मत्ता मनोहरा मेना मैनाकजननी मुरी । मुरली मानवी मोक्री मनस्विजनमोदिता ॥८८॥
मत्तमातंगगा माद्री मरालगतिमंजुला । यज्ञेश्वरीश्वरीयज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्रिता ॥८९॥
यशोवती यतिस्था च यतिस्थायतिवल्लभा । यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया ॥९०॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्यूपमालिनी । रंजिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा ॥९१॥
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी । राज्ञी रात्रिंचरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी ॥९२॥
ललिता ललितालापा लोपा ललनलालसा । लाटीरद्रुममासा च लाटीरद्रुमवर्तिनी ॥९३॥
लंका ललज्जटाजूटा लंघिता सुरसुंदरी । लोकेशवरदा लीना लयकर्त्री महालया ॥९४॥
वेदिर्विनग्ना वाणी च वेणा वेणुर्वनेश्वरी । वंद्यमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका ॥९५॥
शंखिनो शंख वलया शंखायुधधरा शमा । शशिमंडलमध्यस्था शीतलांबुनिवासिनी ॥ ९६॥
श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी । सिंधुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी ॥९७॥
सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सूत्रस्थासुरसूदिनी । सुरेश्वरी संपदाद्या समस्ताचल चारिणी ॥ ९८॥
समदा संमसिः संमा सवना सवनेश्वरी । हंसी हरिप्रिया हास्या हरिनेत्रा हरांबिका ॥९९॥
हेषा हटीश्वरी हीरा हलिनी हलदायिनी । हे हाहा हारवा हाला हालाहलहताशया ॥१००॥
क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमांबरधराक्षया । क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्या क्षितिभृत्क्षणदा क्षुधा ॥१०१॥
क्षत्रिया ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षंबीजमंडिता । लक्ष्यबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका ॥१०२॥
दुर्गाद्यनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनो । दुर्गा दुर्गार्तिनाशनी ॐ ह्रीं दुं बीजमंडिता ॥१०३॥
इति नामसहस्त्रं तु मंत्रगर्भं महाफलम् । दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥१०४॥
सर्वमंत्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् । श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ॥१०५॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेत्तथा । स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ॥१०६॥
इहलोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् । दुर्गानामसहस्त्रं तु मूलमंत्रैकसाधनम् ॥१०७॥
अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरं भवसेवितम् । त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसन्निभः ॥१०८॥
यः पठेद्देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुंतलः । तस्य वैरिकुलं त्रस्येद्दर्शनादेव नश्यति ॥१०९॥
दहनादिव देवेशि पतंगकुलमद्रिजे । यः पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ॥११०॥
तस्यास्यकुहराद्वाणी निःसरेद्गद्यपद्यभाक् । यः पठेत्सततं देवि शयने स्त्रीरताकुलः ॥१११॥
स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः । वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ॥११२॥

तेजसा सूर्यसंकाशो यशसा सोमसन्निभः । बलेन वायुतुल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ॥११३॥
देवि किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः । स्तंभनाकर्षणोच्चाटवशीकरणकक्षमः ॥११४॥
रवौ भूर्जे लिखेद्देवि निशीथे चाष्टगन्धकैः । सस्तन्यरेतोराजस्कैः साधको मंत्रसाधकः ॥११५॥
लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्त्रमणिमीश्वरि । श्वेतवस्त्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥११६॥
सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः । संपूज्य गुटिकां देवि शुभाहे साधकोत्तमः ॥११७॥
धारयेन्मूर्ध्नि व बाहौ गुटिकां कामदायिनीम् । रणे रिपून्विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ॥११८॥
वंध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् । लभते तनयान्देवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान् ॥११९॥
गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा । साधकैः सततं पूज्या साक्षाद्-दुर्गास्वरूपिणी ॥१२०॥
योऽर्चयेत्साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत्प्रिये । पठेद्धर्म शिवे मंत्रं नामसाहस्त्रिकं परम् ॥१२१॥
अंगस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना शृणु । वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे ॥१२२॥
ग्रहयक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा । वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१२३॥
स्तंभयेद्वायुसूर्यौ च चेन्द्रादीन्साधकोत्तमः । मोहयेत्रिजगत्सद्यः कांताश्चाकर्षयेद्ध्रुवम् ॥१२४॥
मारयेदखिलाञ्छत्रून्रिपूनुच्चाटयेत्तथा । वशयेद्देवताः सद्यः किं पुनर्मानवाञ्छिवे ॥१२५॥
शमयेदखिलान्रोगान्महोत्पातानुपद्रवान् । किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चांगपूजनात् ॥१२६॥
इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि । सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥१२७॥
महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् । पठेत्संपूजयेद्देव्या मन्त्रनामसहस्त्रकम् ॥१२८॥
इदं सारो हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् । दुर्गानामसहस्त्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥१२९॥
अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे । अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात् ॥१३०॥
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च । शांताय भक्तियुक्ताय देयं नाम सहस्त्रकम् ॥१३१॥
विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद्दक्षिणां विना । दत्त्वा गृहीत्वाप्यु ोः सिद्धिहानिर्भवेद्ध्रुवम् ॥१३२॥
इदं नामसहस्त्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे । तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१३३॥

॥ इदं श्रीदेवीरहस्यतन्त्रोक्तं दुर्गा सहस्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बीजमन्त्रात्मक दुर्गासप्तशती ॥

बीज मन्त्रात्मक दुर्गासप्तशती के पाठ में कवच, अर्गला, कीलक, सूक्तद्वय (प्रारंभ में रात्रिसूक्त और अन्त में देवीसूक्त), रहस्यत्रय आदि का पाठ तथा शापोद्धार, उत्कीलन व मृतसंजीवनीविद्या के जपादि की आवश्यकता नहीं है। केवल आदि में तथा अन्त में नवार्णमन्त्र एवं बीजगायत्री का १०८ बार जप परमावश्यक है।

नवार्णमन्त्र :- ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

नवार्णमन्त्राक्षर ध्यानम् -

'वाग्' बीजं हि दीपसमान दीप्तम्। 'माया'ऽतितेजो द्वितीयार्क बिम्बम्॥
'कामं' च वैश्वानरतुल्यरूपम्। प्रतीयमानं तु सुखाय चिन्त्यम्॥
'चा' शुद्धजाम्बूनदतुल्य कान्तिम्। 'मुं' पञ्चमं रक्ततरं प्रकल्पम्॥
'डा' षष्ठमुग्रार्तिहरे सुनीलम्। 'यै' सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम्॥
'वि' पाण्डुरं चाष्टममादि सिद्धिम्। 'च्चे' धूम्रवर्णं नवमं विशालम्॥
एतानि बीजानि नवात्मकस्य। जपात् प्रदध्युः सकलार्थ सिद्धिम्॥

॥ बीज गायत्री ॥

मंत्र- **बीजाक्षरायै विद्महे तत् प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।**

करन्यास :- **बीजक्षरायै अंगुष्ठाभ्यां नमः। विद्महे तर्जनीभ्यां नमः। तत्प्रधानायै मध्यमाभ्यां नमः। धीमहि अनामिकाभ्यां नमः। तन्नः शक्तिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यास :- **बीजक्षरायै हृदयाय नमः। विद्महे शिरसे स्वाहा। तत्प्रधानायै शिखायै वषट्। धीमहि कवचाय हुं। तन्नः शक्तिः नेत्रत्रयाय वौषट्। प्रचोदयात् अस्त्राय फट्।**

॥ बीजमन्त्रात्मक दुर्गासप्तशती ॥ (रहस्य तंत्रोक्त)

विनियोगः - **ॐ अस्य श्रीचण्डीसप्तशत्याः प्रथममध्यमोत्तर चरिताणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभ्छन्दांसि। श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं ह्रीं क्लीं बीजानि। नन्दाशाकम्भरी भीमाः शक्तयः। अग्निवायु सूर्याः तत्त्वानि। ऋग्यजुःसामवेदाः ध्यानानि। सकलकामना सिद्धये श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः, मुखे। श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं ह्रीं क्लीं बीजेभ्यो नमः, गुह्ये। नन्दाशाकम्भरी भीमा शक्तिभ्यो नमः, पादयोः। अग्निवायु सूर्य तत्त्वेभ्यो नमः, नाभौ। ऋग्यजुर्सामवेद ध्यानेभ्यो नमः, हृदि। सकलकामना सिद्धये श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास :- **स्लूं अंगुष्ठाभ्यां नमः। फ्रें तर्जनीभ्यां नमः। क्रीं मध्यमाभ्यां नमः। म्लूं अनामिकाभ्यां नमः। घ्रें कनिष्ठिकाभ्यां नमः। श्रूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यास :- **स्लूं हृदयाय नमः। फ्रें शिरसे स्वाहा। क्रीं शिखायै वषट्। म्लूं कवचाय हुं। घ्रें नेत्रत्रयाय**

वौषट्। श्रूं अस्त्राय फट्।

या चण्डी मधुकैटभादि दैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्ड मथनी या रक्तबीजाशिनी।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धि लक्ष्मीः परा,
सा दुर्गा नवकोटि मूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

॥ प्रथम चरित्र ॥

॥ प्रथमोऽध्यायः ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीप्रथमचरितस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्रीच्छन्दः। श्रीमहाकाली देवताः। ऐं बीजं। नन्दा शक्तिः। अग्निः तत्त्वम्। ऋग्वेदः ध्यानं। धर्मार्थे श्रीमहाकाली देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ब्रह्मा ऋषये नमः, शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीमहाकाली देवतायै नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। नन्दा शक्त्यै नमः, पादयोः। अग्नि तत्त्वाय नमः, नाभौ। ऋग्वेद ध्यानाय नमः, हृदि। धर्मार्थे श्रीमहाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास :- ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऐं तर्जनीभ्यां नमः। ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :- ऐं हृदयाय नमः। ऐं शिरसे स्वाहा। ऐं शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

खड्गं चक्रगदेषुचाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकाम्,
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

ॐ ऐं श्रीं १, ह्रीं २, क्लीं ३, श्रीं ४, प्रीं ५, ह्रां ६, ह्रीं ७, सौं ८, प्रें ९, म्रीं १०, ह्ल्रीं ११, म्लीं १२, स्त्रीं १३, क्रां १४, हस्लीं १५, क्रीं १६, चां १७, भें १८, क्रीं १९, वैं २०, ह्रौं २१, युं २२, जुं २३, हं २४, शं २५, रौं २६, यं २७, विं २८, वैं २९, चें ३०, ह्रीं ३१, क्रूं ३२, सं ३३, कं ३४, श्रां ३५, त्रों ३६, स्त्रां ३७, ज्यैं ३८, रौं ३९, द्रां ४०, द्रों ४१, ह्राँ ४२, द्रूं ४३, शां ४४, म्रीं ४५, श्रौं ४६, जुं ४७, हल्रूं ४८, श्रूं ४९, प्रीं ५०, रं ५१, वं ५२, व्रीं ५३, ब्लूं ५४, स्त्रौं ५५, ब्लां ५६, लूं ५७, सां ५८, रौं ५९, हसौं ६०, क्रूं ६१, शौं ६२, श्रौं ६३, वं ६४, त्रूं ६५, क्रौं ६६, क्लूं ६७, क्लीं ६८, श्रीं ६९, ब्लूं ७०, ठां ७१, ठ्रीं ७२, स्त्रां ७३, स्लूं ७४, क्रैं ७५, च्रां ७६, फ्रां ७७, ज्रीं ७८, लूं ७९, स्लूं ८०, नों ८१, स्त्रीं ८२, प्रूं ८३, स्त्रूं ८४, ज्रां ८५, वौं ८६, ओं ८७, श्रौं ८८, ऋं ८९, रूं ९०, क्लीं ९१, दुं ९२, ह्रीं ९३, गूं ९४, लां ९५, ह्रां ९६, गूं ९७, ऐं ९८, श्रौं ९९, जूं १००, डें १०१, श्रौं १०२, छ्रां १०३, क्लीं १०४, ऐं ॐ। ॐ नमश्चण्डिकायै प्रथमः ॐ तत्सत्॥

॥ मध्यम चरित्र ॥

॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीमध्यमचरितस्य विष्णु ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। श्रीमहालक्ष्मी देवता। ह्रीं बीजम्। शाकम्भरी शक्तिः। वायुः तत्त्वम्। यजुर्वेदः ध्यानं। अर्थप्राप्त्यै श्रीमहालक्ष्मी देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- विष्णु ऋषये नमः, शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः, मुखे। श्रीमहालक्ष्मी देवतायै नमः, हृदि। ह्रीं बीजाय नमः, गुह्ये। शाकम्भरी शक्तये नमः, पादयोः। वायु तत्त्वाय नमः, नाभौ। यजुर्वेद ध्यानाय नमः, हृदि। अर्थप्राप्त्यै श्रीमहालक्ष्मी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास :- ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :- ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :-

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरभिमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

ॐ ह्रीं-श्रौं १, श्रीं २, ह्सूं ३, हौं ४, ह्रीं ५, अं ६, क्लीं ७, चां ८, मुं ९, डां १०, यैं ११, विं १२, च्वें १३, ईं १४, सौं १५, व्रां १६, त्रौं १७, लूं १८, वं १९वं, २० ह्रां २१, क्रीं २२, सौं २३, यं २४, ऐं २५, मूं २६, सः २७, हं २८, सों २९, शं ३०, हं ३१, ह्रौं ३२, म्लीं ३३, यूं ३४, त्रूं ३५, स्त्रीं ३६, आं ३७, प्रें ३८, शं ३९, ह्रां ४०, स्मूं ४१, ऊं ४२, गूं ४३, व्र्यूं ४४, ह्रं ४५, भैं ४६, ह्रां ४७, क्रूं ४८, मूं ४९, ल्ह्रीं ५०, श्रां ५१, द्रूं ५२, द्व्रूं ५३, ह्सौं ५४, क्रां ५५, स्हौं ५६, म्लूं ५७, श्रीं ५८, गैं ५९, क्रूं ६०, त्रीं ६१, क्स्त्रीं ६२, कं ६३, फ्रों ६४, ह्रीं ६५, शां ६६, क्ष्म्रीं ६७, रों ६८, डुं ६९। ॐ नमश्चण्डिकायै द्वितीयः ॐ तत्सत्॥

॥ तृतीयोऽध्यायः ॥

ध्यानम् :-

उद्यद्भानुसहस्त्र कान्तिमरुणक्षौमां शिरो मालिकां,
रक्तालिप्त पयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद् वक्त्रारविन्दश्रियम्,
देवीं बद्ध हिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्द स्थिताम् ॥

श्रौं १, क्लीं २, सां ३, त्रों ४, प्रूं ५, ग्लौं ६, क्रौं ७, व्रीं ८, स्लीं ९, ह्रीं १०, ह्रौं ११, श्रां १२, ग्रीं १३, क्रूं १४, क्रीं १५, यां १६, द्लूं १७, द्रूं १८, क्षं १९, ओं २०, क्रौं २१, क्ष्म्क्लीं २२, वां २३, श्रूं २४, ग्लूं २५, ल्रीं २६, प्रें २७, हूं २८, हौं २९, दें ३०, नूं ३१, आं ३२, फ्रां ३३, प्रीं ३४, दं ३५, फ्रीं ३६, ह्रीं ३७, गूं ३८, श्रौं ३९, सां ४०, श्रीं ४१, जुं ४२, हं ४३, सं ४४। ॐ नमश्चण्डिकायै तृतीयः ॐ तत्सत्॥

॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कंधाधिरूढ़ां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

श्रौं १, सौं २, दीं ३, प्रें ४, यां ५, रूं ६, भं ७, सूं ८, श्रां ९, औं १०, लूं ११, डूं १२, जूं १३, धूं १४, त्रें १५, ह्रीं १६, श्रीं १७, ईं १८, ह्रां १९, ह्ल्रूं २०, क्लूं २१, क्रां २२, ल्हूं २३, फ्रें २४, क्रीं २५, म्लूं २६, घ्रें २७, श्रौं २८, ह्रौं २९, व्रीं ३०, ह्रीं ३१, त्रौं ३२, हल्लौं ३३, गीं ३४, यूं ३५, ह्रीं ३६, ह्रूं ३७, श्रौं ३८, औं ३९, अं ४०, म्हौं ४१, प्रीं ४२, ह्रीं ॐ नमश्चण्डिकायै चतुर्थः ॐ तत्सत् ॥

॥ उत्तर चरित्र ॥

॥ पञ्चमोऽध्यायः॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीउत्तमचरितस्य रुद्र ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीमहासरस्वती देंवता। क्लीं बीजं। भीमा शक्तिः। सूर्यः तत्त्वम्। सामवेदः ध्यानं। कामाप्त्यै श्रीमहासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- रुद्र ऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। श्रीमहासरस्वती देंवतायै नमः, हृदि। क्लीं बीजाय नमः, गुह्ये। भीमा शक्त्यै नमः, पादयोः। सूर्य तत्त्वाय नमः, नाभौ। सामवेद ध्यानाय नमः, हृदि। कामाप्त्यै श्रीमहासरस्वती देंवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे।

करन्यास :- क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। क्लूं मध्यमाभ्यां नमः। क्लैं अनामिकाभ्यां नमः। क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :- क्लां हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा । क्लूं शिखायै वषट्। क्लैं कवचाय हुं। क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्। क्लः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

घण्टाशूल हलानि शङ्ख मुसले चक्रं धनुः सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलच्छीतांशु तुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेह समुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥

ॐ क्लीं श्रौं १, प्रीं २, ओं ३, ह्रीं ४, ल्रीं ५, त्रों ६, क्रीं ७, ह्सौं ८, ह्रीं ९, श्रीं १०, हूं ११, क्लीं १२, रौं १३, स्त्रीं १४, म्लीं १५, प्लूं १६, स्हौं १७, स्त्रीं १८, ग्लूं १९, व्रीं २०, सौं २१, लूं २२, ल्हूं २३, द्रां २४, क्सां २५, क्ष्म्रीं २६, ग्लौं २७, स्कं २८, त्रूं २९, स्क्लूं ३०, क्रौं ३१, च्छ्रीं ३२, म्लूं ३३, क्लूं ३४, शां ३५, ह्रीं ३६, स्रूं ३७, ल्स्रीं ३८, लीं ३९, सं ४०, लूं ४१, ह्स्रूं ४२, श्रूं ४३, जूं ४४, हस्ल्रीं ४५, स्कीं ४६, क्लां ४७, श्रूं ४८, हं ४९, ह्लीं ५०, क्स्रूं ५१, द्रौं ५२, क्लूं ५३, गां ५४, सं ५५, ल्स्रां ५६, फ्रीं ५७, स्लां ५८, ल्हूं ५९, फ्रें ६०,

ओं ६१, स्म्लीं ६२, ह्रां ६३, ऊं ६४, ह्रूं ६५, हूं ६६, नं ६७, स्त्रां ६८, वं ६९, मं ७०, म्क्लीं ७१, शां ७२, लं ७३, भैं ७४, ह्लूं ७५, हौं ७६, ईं ७७, चें ७८, क्लीं ७९, ह्लीं ८०, क्ष्म्लीं ८१, पूं ८२, श्रौं ८३, ह्रौं ८४, भ्रूं ८५, क्स्त्रीं ८६, आं ८७, क्रूं ८८, त्रूं ८९, डूं ९०, जां ९१, ह्ल्रूं ९२, फ्रौं ९३, क्रौं ९४, किं ९५, ग्लूं ९६, छक्लीं ९७, रं ९८, क्सैं ९९, स्हुं १००, श्रौं १०१, श्रीं १०२, ओं १०३, लूं १०४, ह्रूं १०५, ह्लूं १०६, स्क्रीं १०७, स्त्रौं १०८, स्भ्रूं १०९, क्ष्म्क्लीं ११०, व्रीं १११, सीं ११२, भूं ११३, लां ११४, श्रौं ११५, स्हैं ११६, ह्रीं ११७, श्रीं ११८, फ्रें ११९, रूं १२०, च्छूं१२१, ह्रूं १२२, कं १२३, द्रें १२४, श्रीं १२५, सां १२६, ह्रीं १२७, ऐं १२८, स्कीं १२९। ॐ नमश्चण्डिकायै पंचमः ॐ तत्सत्॥

॥ षष्ठमोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

नागाधीश्वर विष्टरां फणिफणोत्तंसोरु रत्नावलीं,
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपाल नीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां,
सर्वज्ञेश्वर भैरवाङ्क निलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥

श्रौं १, ओं २, त्रूं ३, ह्रौं ४, क्रौं ५, श्रौं ६, त्रीं ७, क्लीं ८, प्रीं ९, ह्रीं १०, ह्रौं ११, श्रौं १२, ऐं १३, ओं १४, श्रीं १५, क्रां १६, हूं १७, छ्रां १८, क्ष्म्क्लीं १९, लुं २०, सौं २१, ह्लौं २२, क्रूं २३, सौं २४। ॐ नमश्चण्डिकायै षष्ठः ॐ तत्सत्॥

॥ सप्तमोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककल पठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रि सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कह्लाराबद्धमालां नियमित विलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां,
मातङ्गीं शङ्खं पात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासि भालाम् ॥

श्रौं १, कुं २, ह्रीं ३, हूं ४, मूं ५, त्रौं ६, ह्रौं ७, ओं ८, ह्सूं ९, क्लूं १०, क्रें ११, नें १२, लूं १३, ह्स्लीं १४, प्लूं १५, शां १६, स्लूं १७, प्लीं १८, प्रें १९, अं २०, औं २१, म्ल्रीं २२, श्रां २३, सौं २४, श्रौं २५, प्रीं २६, हस्व्रीं २७। ॐ नमश्चण्डिकायै सप्तमः ॐ तत्सत्॥

॥ अष्टमोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

अरुणां करुणा तरंगिताक्षीं धृतपाशांकुश - बाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

श्रौं १, म्ह्लीं २, प्रूं ३, एं ४, क्रों ५, ईं ६, एं ७, ल्रीं ८, फ्रौं ९, म्लूं १०, नों ११, हूं १२, फ्रौं १३, ग्लौं १४, स्मौं १५, सौं १६, श्रीं १७, स्हौं १८, ख्सें १९, क्ष्म्लीं २०, ह्रौं २१, वीं २२, लूं २३, ल्सीं २४, ब्लीं २५, त्स्त्रों

२६, ब्रुं २७, श्क्लीं २८, श्रूं २९, ह्रीं ३०, शीं ३१, क्लीं ३२, क्लौं ३३, फ्रूं ३४, ह्रूं ३५, क्लूं ३६, तां ३७, म्लूं ३८, हं ३९, स्लूं ४०, औं ४१, ह्लौं ४२, श्लूरीं ४३, यां ४४, क्ष्लीं ४५, ह्लीं ४६, ग्लौं ४७, ह्रौं ४८, प्रां ४९, क्रीं ५०, क्लीं ५१, न्स्लुं ५२, ह्रीं ५३, ह्लौं ५४, ह्रैं ५५, भ्रं ५६, सौं ५७, श्रीं ५८, प्सूं ५९, द्रौं ६०, स्स्रां ६१, ह्स्लीं ६२, स्ल्ल्रीं ६३। ॐ नमश्चण्डिकायै अष्टमः ॐ तत्सत्॥

॥ नवमोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

बन्धूक काञ्चननिभं रुचिराक्षमालां पाशांकुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणामिन्दु शकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

रौं १, क्लीं २, म्लौं ३, श्रौं ४, ग्लीं ५, ह्रौं ६, ह्सौं ७, ईं ८, ब्रूं ९, श्रां १०, लूं ११, आं १२, श्रीं १३, क्रौं १४, प्रूं १५, क्लीं १६, भ्रूं १७, ह्रौं १८, क्रीं १९, म्लीं २०, ग्लौं २१, ह्सूं २२, प्लीं २३, ह्रौं २४, ह्स्रां २५, स्हौं २६, ल्हूं २७, क्स्लीं २८, श्रीं २९, स्तूं ३०, चें ३१, वीं ३२, क्ष्लूं ३३, श्लूं ३४, क्रूं ३५, क्रां ३६, ह्रौं ३७, क्रां ३८, स्क्ष्लीं ३९, म्रूं ४०, फ्रूं ४१। ॐ नमश्चण्डिकायै नवमः ॐ तत्सत्॥

॥ दशमोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुतांकुश पाशशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दु लेखाम् ॥

श्रौं १, ह्रीं २, ब्लूं ३, ह्रीं ४, म्लूं ५, श्रौं ६, ह्रीं ७, ग्लौं ८, श्रौं ९, धूं १०, हूं ११, द्रौं १२, श्रीं १३, त्रूं १४, ब्रूं १५, फ्रें १६, ह्रां १७, जुं १८, सौः १९, स्लूं २०, प्रें २१, ह्स्वां २२, प्रीं २३, फ्रां २४, क्रीं २५, श्रीं २६, क्रां २७, सः २८, क्लीं २९, व्रें ३०, इं ३१, ज्स्हल्रीं ३२। ॐ नमश्चण्डिकायै दशमः ॐ तत्सत्॥

॥ एकादशोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

बालरविद्युतिमिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांऽकुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

श्रौं १, क्रूं २, श्रीं ३, ल्लीं ४, प्रें ५, सौः ६, स्हौं ७, श्रूं ८, क्लीं ९, स्क्लीं १०, प्रीं ११, ग्लौं १२, ह्स्ह्रीं १३, स्तौं १४, लीं १५, म्लीं १६, स्तूं १७, ज्स्ह्रीं १८, फ्रूं १९, क्रूं २०, ह्रीं २१, ल्हूं २२, क्ष्म्रीं २३, श्रूं २४, इं २५, जुं २६, त्रैं २७, द्रूं २८, ह्रौं २९, क्लीं ३०, सूं ३१, हौं ३२, श्व्रं ३३, ब्रूं ३४, स्फ्रूं ३५, ह्रीं ३६, लं ३७, ह्सौं ३८, सें ३९, ह्रीं ४०, ह्रीं ४१, विं ४२, प्लीं ४३, क्ष्म्क्लीं ४४, त्स्रां ४५, प्रं ४६, म्लीं ४७, स्त्रूं ४८, क्ष्मां ४९, स्तूं ५०, स्ह्रीं ५१, थ्प्रीं ५२, क्रौं ५३, श्रां ५४, म्लीं ५५। ॐ नमश्चण्डिकायै एकादशः ॐ तत्सत्॥

॥ द्वादशोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासि खेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम् ,
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

ह्रीं १, ओं २, श्रीं ३, ईं ४, क्लीं ५, क्रूं ६, श्रूं ७, प्रां ८, क्रूं ९, दिं १०, फ्रें ११, हं १२, सः १३, चें १४, सूं १५, प्रीं १६, ब्लूं १७, आं १८, औं १९, ह्रीं २०, क्रीं २१, द्रां २२, श्रीं २३, स्लीं २४, क्लीं २५, स्लूं २६, ह्रीं २७, ब्लीं २८, त्रों २९, ओं ३०, श्रौं ३१, ऐं ३२, प्रें ३३, द्रूं ३४, क्लूं ३५, औं ३६, सूं ३७, चें ३८, हूं ३९, प्लीं ४०, क्षां ४१। ॐ नमश्चण्डिकायै द्वादशः ॐ तत्सत्॥

॥ त्रयोदशोऽध्यायः ॥

ध्यानम् -

बालार्क - मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥

श्रौं १, व्रीं २, ओं ३, औं ४, ह्रां ५, श्रीं ६, श्रां ७, ओं ८, प्लीं ९, सौं १०, ह्रीं ११, क्रीं १२, ह्लूं १३, क्लीं १४, ह्रीं १५, प्लीं १६, श्रीं १७, ह्लीं १८, श्रूं १९, ह्रीं २०, त्रूं २१, हूं २२, ह्रां २३, प्रीं २४, ऊं २५, सूं २६, ह्रौं २७, षौं २८, आं २९, ॐ ३०, क्लीं , ॐ। ॐ नमश्चण्डिकायै त्रयोदशः ॐ तत्सत्॥

॥ बीजत्रयात्मक दुर्गासप्तशती ॥

पूर्व में निम्न गायत्री का जप १०८ बार कर नवार्ण मूल मन्त्र का जप करें। तब सप्तशती का रहस्य पाठ करें -

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

ध्यान, न्यास विधान पूर्ववत् करें-

॥ तंत्रोक्त रहस्य पाठ ॥

॥ प्रथमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रीं नमः १, ॐ ऐं ह्रीं नमः २, ॐ ऐं क्लीं नमः ३, ॐ ऐं श्रीं नमः ४, ॐ ऐं प्रीं नमः ५, ॐ ऐं ह्रां नमः ६, ॐ ऐं ह्रीं नमः ७, ॐ ऐं सौं नमः ८, ॐ ऐं प्रें नमः ९, ॐ ऐं म्रीं नमः १०, ॐ ऐं ह्लीं नमः ११, ॐ ऐं म्लीं नमः १२, ॐ ऐं स्त्रीं नमः १३, ॐ ऐं क्रां नमः १४, ॐ ऐं ह्स्लीं नमः १५, ॐ ऐं क्रीं नमः १६, ॐ ऐं चां नमः १७, ॐ ऐं भें नमः १८, ॐ ऐं क्रीं नमः १९, ॐ ऐं वैं नमः २०, ॐ ऐं ह्रौं नमः २१, ॐ ऐं युं नमः २२, ॐ ऐं जुं नमः २३, ॐ ऐं हं नमः २४, ॐ ऐं शं नमः २५, ॐ ऐं रों नमः २६, ॐ ऐं यं नमः २७, ॐ ऐं विं नमः २८, ॐ ऐं वैं नमः २९, ॐ ऐं चें नमः ३०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ३१, ॐ ऐं क्रुं नमः ३२, ॐ ऐं सं नमः

३३, ॐ ऐं कं नमः ३४, ॐ ऐं श्रीं नमः ३५, ॐ ऐं त्रों नमः ३६, ॐ ऐं स्त्रां नमः ३७, ॐ ऐं ज्यैं नमः ३८, ॐ ऐं रौं नमः ३९, ॐ ऐं द्रां नमः ४०, ॐ ऐं द्रों नमः ४१, ॐ ऐं ह्रां नमः ४२, ॐ ऐं द्रूं नमः ४३, ॐ ऐं शां नमः ४४, ॐ ऐं मीं नमः ४५, ॐ ऐं श्रौं नमः ४६, ॐ ऐं जूं नमः ४७, ॐ ऐं हल्रूं नमः ४८, ॐ ऐं श्रूं नमः ४९, ॐ ऐं प्रीं नमः ५०,ॐ ऐं रं नमः ५१, ॐ ऐं वं नमः ५२, ॐ ऐं व्रीं नमः ५३, ॐ ऐं ब्लूं नमः ५४, ॐ ऐं स्त्रौं नमः ५५, ॐ ऐं ब्लां नमः ५६, ॐ ऐं लूं नमः ५७, ॐ ऐं सां नमः ५८, ॐ ऐं रौं नमः ५९, ॐ ऐं ह्सौं नमः ६०, ॐ ऐं क्रूं नमः ६१, ॐ ऐं शौं नमः ६२, ॐ ऐं श्रौं नमः ६३, ॐ ऐं वं नमः ६४, ॐ ऐं त्रूं नमः ६५, ॐ ऐं क्रौं नमः ६६, ॐ ऐं क्लूं नमः ६७, ॐ ऐं क्लीं नमः ६८, ॐ ऐं श्रीं नमः ६९, ॐ ऐं ब्लूं नमः ७०, ॐ ऐं ठां नमः ७१, ॐ ऐं ह्रीं नमः ७२, ॐ ऐं स्त्रां नमः ७३, ॐ ऐं स्लूं नमः ७४, ॐ ऐं क्रैं नमः ७५, ॐ ऐं च्रां नमः ७६, ॐ ऐं फ्रां नमः ७७, ॐ ऐं जीं नमः ७८, ॐ ऐं लूं नमः ७९, ॐ ऐं स्लूं नमः ८०, ॐ ऐं नों नमः ८१, ॐ ऐं स्त्रीं नमः ८२, ॐ ऐं प्रूं नमः ८३, ॐ ऐं स्त्रं नमः ८४, ॐ ऐं ज्रां नमः ८५, ॐ ऐं वां नमः ८६, ॐ ऐं ॐ नमः ८७, ॐ ऐं श्रौं नमः ८८, ॐ ऐं ऋं नमः ८९, ॐ ऐं रूं नमः ९०, ॐ ऐं क्लीं नमः ९१, ॐ ऐं दुं नमः ९२, ॐ ऐं ह्रीं नमः ९३, ॐ ऐं गूं नमः ९४, ॐ ऐं लां नमः ९५, ॐ ऐं ह्रीं नमः ९६, ॐ ऐं गं नमः ९७, ॐ ऐं ऐं नमः ९८, ॐ ऐं श्रौं नमः ९९, ॐ ऐं जूं नमः १००, ॐ ऐं डें नमः १०१, ॐ ऐं श्रौं नमः १०२, ॐ ऐं छ्रां नमः १०३, ॐ ऐं क्लीं नमः १०४, । ॐ नमश्चण्डिकायै प्रथमः ॐ तत्सत्॥

॥ द्वितीयोऽध्याय:॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं श्रीं नमः २, ॐ ऐं ह्सूं नमः ३, ॐ ऐं ह्रौं नमः ४, ॐ ऐं ह्रीं नमः ५, ॐ ऐं अं नमः ६, ॐ ऐं क्लीं नमः ७, ॐ ऐं चां नमः ८, ॐ ऐं मुं नमः ९, ॐ ऐं डां नमः १०, ॐ ऐं यैं नमः ११, ॐ ऐं विं नमः १२, ॐ ऐं च्चें नमः १३, ॐ ऐं ईं नमः १४, ॐ ऐं सौः नमः १५, ॐ ऐं व्रां नमः १६, ॐ ऐं त्रौं नमः १७, ॐ ऐं लूं नमः १८, ॐ ऐं वं नमः १९, ॐ ऐं ह्रां नमः २०, ॐ ऐं क्रीं नमः २१, ॐ ऐं सौं नमः २२, ॐ ऐं यं नमः २३, ॐ ऐं ऐं नमः २४, ॐ ऐं मूं नमः २५, ॐ ऐं सः नमः २६, ॐ ऐं हं नमः २७, ॐ ऐं सं नमः २८, ॐ ऐं सों नमः २९, ॐ ऐं शं नमः ३०, ॐ ऐं हं नमः ३१, ॐ ऐं ह्रौं नमः ३२, ॐ ऐं म्लीं नमः ३३, ॐ ऐं यूं नमः ३४, ॐ ऐं त्रूं नमः ३५, ॐ ऐं स्त्रीं नमः ३६, ॐ ऐं आं नमः ३७, ॐ ऐं प्रें नमः ३८, ॐ ऐं शं नमः ३९, ॐ ऐं ह्रां नमः ४०, ॐ ऐं स्मूं नमः ४१, ॐ ऐं ऊं नमः ४२, ॐ ऐं गूं नमः ४३, ॐ ऐं ब्र्यूं नमः ४४, ॐ ऐं हूं नमः ४५, ॐ ऐं भैं नमः ४६, ॐ ऐं ह्रां नमः ४७, ॐ ऐं क्रं नमः ४८, ॐ ऐं सूं नमः ४९, ॐ ऐं ल्रीं नमः ५०, ॐ ऐं श्रीं नमः ५१, ॐ ऐं द्रुं नमः ५२, ॐ ऐं ह्व्रूं नमः ५३, ॐ ऐं ह्सौं नमः ५४, ॐ ऐं क्रां नमः ५५, ॐ ऐं स्हौं नमः ५६, ॐ ऐं म्लूं नमः ५७, ॐ ऐं श्रीं नमः ५८, ॐ ऐं गैं नमः ५९, ॐ ऐं क्रूं नमः ६०, ॐ ऐं त्रीं नमः ६१, ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः ६२, ॐ ऐं कं नमः ६३, ॐ ऐं फ्रौं नमः ६४, ॐ ऐं ह्रीं नमः ६५, ॐ ऐं शां नमः ६६, ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः ६७, ॐ ऐं रों नमः ६८, ॐ ऐं ङं नमः ६९। ॐ नमश्चण्डिकायै द्वितीयः ॐ तत्सत्॥

॥ तृतीयोऽध्याय: ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं क्लीं नमः २, ॐ ऐं सां नमः ३, ॐ ऐं त्रों नमः ४, ॐ ऐं प्रूं नमः ५, ॐ ऐं ग्लौं नमः ६, ॐ ऐं क्रौं नमः ७, ॐ ऐं व्रीं नमः ८, ॐ ऐं स्लीं नमः ९, ॐ ऐं ह्रीं नमः १०, ॐ ऐं ह्रौं नमः ११, ॐ ऐं श्रां नमः १२, ॐ ऐं ग्रीं नमः १३, ॐ ऐं क्रूं नमः १४, ॐ ऐं क्रौं नमः १५, ॐ ऐं ॐ नमः १६, ॐ ऐं द्लूं नमः १७, ॐ ऐं दूं नमः १८, ॐ ऐं क्षं नमः १९, ॐ ऐं ॐ नमः २०, ॐ ऐं क्रौं नमः २१, ॐ ऐं क्ष्क्लीं नमः

२२, ॐ ऐं वां नमः २३, ॐ ऐं श्रूं नमः २४, ॐ ऐं ग्लूं नमः २५, ॐ ऐं र्ल्रीं नमः २६, ॐ ऐं प्रें नमः २७, ॐ ऐं हूं नमः २८, ॐ ऐं ह्रौं नमः २९, ॐ ऐं दें नमः ३०, ॐ ऐं नूं नमः ३१, ॐ ऐं आं नमः ३२, ॐ ऐं फ्रां नमः ३३, ॐ ऐं प्रीं नमः ३४, ॐ ऐं दं नमः ३५, ॐ ऐं फ्रीं नमः ३६, ॐ ऐं द्वीं नमः ३७, ॐ ऐं गूं नमः ८, ॐ ऐं श्रौं नमः ३९, ॐ ऐं सां नमः ४०, ॐ ऐं श्रीं नमः ४१, ॐ ऐं जुं नमः ४२, ॐ ऐं हं नमः ४३, ॐ ऐं सां नमः ४४। ॐ नमश्चण्डिकायै तृतीयः ॐ तत्सत्॥

॥ चतुर्थोध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं सौं नमः २, ॐ ऐं दीं नमः ३, ॐ ऐं प्रें नमः ४, ॐ ऐं प्रां नमः ५, ॐ ऐं रूं नमः ६, ॐ ऐं भें नमः ७, ॐ ऐं सं नमः ८, ॐ ऐं श्रां नमः ९, ॐ ऐं ॐ नमः १०, ॐ ऐं लूं नमः ११, ॐ ऐं डूं नमः १२, ॐ ऐं जूं नमः १३, ॐ ऐं धूं नमः १४, ॐ ऐं त्रैं नमः १५, ॐ ऐं ह्लीं नमः १६, ॐ ऐं श्रीं नमः १७, ॐ ऐं ईं नमः १८, ॐ ऐं ह्रां नमः १९, ॐ ऐं ह्ल्रूं नमः २०, ॐ ऐं क्लूं नमः २१, ॐ ऐं क्रां नमः २२, ॐ ऐं ल्लूं नमः २३, ॐ ऐं फ्रें नमः २४, ॐ ऐं क्रीं नमः २५, ॐ ऐं म्लूं नमः २६, ॐ ऐं घ्रें नमः २७, ॐ ऐं श्रौं नमः २८, ॐ ऐं ह्रौं नमः २९, ॐ ऐं व्रीं नमः ३०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ३१, ॐ ऐं त्रौं नमः ३२, ॐ ऐं हल्लौं नमः ३३, ॐ ऐं गीं नमः ३४, ॐ ऐं यूं नमः ३५, ॐ ऐं ह्लीं नमः ३६, ॐ ऐं ह्लूं नमः ३७, ॐ ऐं भौं नमः ३८, ॐ ऐं ॐ नमः ३९, ॐ ऐं अं नमः ४०, ॐ ऐं म्हौं नमः ४१, ॐ ऐं प्रीं नमः ४२, ॐ ऐं ह्रीं ॐ नमश्चण्डिकायै चतुर्थः ॐ तत्सत्॥

॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं प्रीं नमः २, ॐ ऐं ॐ नमः ३, ॐ ऐं निं नमः ४, ॐ ऐं र्ल्रीं नमः ५, ॐ ऐं त्रों नमः ६, ॐ ऐं क्रीं नमः ७, ॐ ऐं हसौं नमः ८, ॐ ऐं ह्रीं नमः ९, ॐ ऐं श्रीं नमः १०, ॐ ऐं हूं नमः ११, ॐ ऐं क्लीं नमः १२, ॐ ऐं रौं नमः १३, ॐ ऐं स्त्रीं नमः १४, ॐ ऐं म्लीं नमः १५, ॐ ऐं प्लुं नमः १६, ॐ ऐं स्हौं नमः १७, ॐ ऐं स्त्रीं नमः १८, ॐ ऐं ग्लूं नमः १९, ॐ ऐं व्रीं नमः २०, ॐ ऐं सौं नमः २१, ॐ ऐं लूं नमः २२, ॐ ऐं ल्लूं नमः २३, ॐ ऐं द्रां नमः २४, ॐ ऐं क्सां नमः २५, ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः २६, ॐ ऐं म्लां नमः २७, ॐ ऐं स्कं नमः २८, ॐ ऐं त्रूं नमः २९, ॐ ऐं स्वलूं नमः ३०, ॐ ऐं क्रौं नमः ३१, ॐ ऐं छीं नमः ३२, ॐ ऐं म्लूं नमः ३३, ॐ ऐं क्लूं नमः ३४, ॐ ऐं शां नमः ३५, ॐ ऐं ल्हीं नमः ३६, ॐ ऐं स्त्रूं नमः ३७, ॐ ऐं ल्लीं नमः ३८, ॐ ऐं लीं नमः ३९, ॐ ऐं सं नमः ४०, ॐ ऐं लूं नमः ४१, ॐ ऐं हसूं नमः ४२, ॐ ऐं श्रूं नमः ४३, ॐ ऐं जूं नमः ४४, ॐ ऐं हस्ल्रीं नमः ४५, ॐ ऐं स्कीं नमः ४६, ॐ ऐं क्लां नमः ४७, ॐ ऐं श्रूं नमः ४८, ॐ ऐं हं नमः ४९, ॐ ऐं ह्लीं नमः ५०, ॐ ऐं कस्त्रूं नमः ५१, ॐ ऐं द्रौं नमः ५२, ॐ ऐं क्लूं नमः ५३, ॐ ऐं गां नमः ५४, ॐ ऐं सं नमः ५५, ॐ ऐं ल्स्त्रां नमः ५६, ॐ ऐं फ्रीं नमः ५७, ॐ ऐं स्लां नमः ५८, ॐ ऐं ल्लूं नमः ५९, ॐ ऐं फ्रें नमः ६०, ॐ ऐं ॐ नमः ६१, ॐ ऐं स्म्लीं नमः ६२, ॐ ऐं ह्रां नमः ६३, ॐ ऐं ऊं नमः ६४, ॐ ऐं ह्लूं नमः ६५, ॐ ऐं हूं नमः ६६, ॐ ऐं नं नमः ६७, ॐ ऐं श्रां नमः ६८, ॐ ऐं वं नमः ६९, ॐ ऐं मं नमः ७०, ॐ ऐं म्क्लीं नमः ७१, ॐ ऐं शां नमः ७२, ॐ ऐं लं नमः ७३, ॐ ऐं भें नमः ७४, ॐ ऐं ल्लूं नमः ७५, ॐ ऐं हौं नमः ७६, ॐ ऐं ईं नमः ७७, ॐ ऐं चें नमः ७८, ॐ ऐं ल्क्रीं नमः ७९, ॐ ऐं ह्ल्रीं नमः ८०, ॐ ऐं क्ष्म्ल्रीं नमः ८१, ॐ ऐं पूं नमः ८२, ॐ ऐं श्रौं नमः ८३, ॐ ऐं ह्रौं नमः ८४, ॐ ऐं भ्रूं नमः ८५, ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः ८६, ॐ ऐं आं नमः ८७, ॐ ऐं क्रूं नमः ८८, ॐ ऐं त्रूं नमः ८९, ॐ ऐं डुं नमः ९०, ॐ ऐं जां नमः ९१, ॐ ऐं ह्ल्रूं नमः

९२, ॐ ऐं फ्रौं नमः ९३, ॐ ऐं क्रौं नमः ९४, ॐ ऐं किं नमः ९५, ॐ ऐं ग्लूं नमः ९६, ॐ ऐं छक्लीं नमः ९७, ॐ ऐं रं नमः ९८, ॐ ऐं क्सैं नमः ९९, ॐ ऐं स्हुं नमः १००, ॐ ऐं श्रौं नमः १०१, ॐ ऐं श्श्रीं नमः १०२, ॐ ऐं ॐ नमः १०३, ॐ ऐं लूं नमः १०४, ॐ ऐं ल्हूं नमः १०५, ॐ ऐं ल्लुं नमः १०६, ॐ ऐं स्क्रीं नमः १०७, ॐ ऐं स्त्रौं नमः १०८, ॐ ऐं स्भुं नमः १०९, ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः ११०, ॐ ऐं व्रीं नमः १११, ॐ ऐं सीं नमः ११२, ॐ ऐं भूं नमः ११३, ॐ ऐं लां नमः ११४, ॐ ऐं श्रौं नमः ११५, ॐ ऐं स्हैं नमः ११६, ॐ ऐं ह्रीं नमः ११७, ॐ ऐं श्रीं नमः ११८, ॐ ऐं फ्रें नमः ११९, ॐ ऐं रूं नमः १२०, ॐ ऐं च्छूं नमः १२१, ॐ ऐं ल्हूं नमः १२२, ॐ ऐं कं नमः १२३, ॐ ऐं द्रें नमः १२४, ॐ ऐं श्रीं नमः १२५, ॐ ऐं सां नमः १२६, ॐ ऐं ह्रीं नमः १२७, ॐ ऐं ऐं नमः १२८, ॐ ऐं स्क्लीं नमः १२९। ॐ नमश्चण्डिकायै पंचमः ॐ तत्सत्॥

॥ षष्ठमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं ऐं नमः २, ॐ ऐं ह्रूं नमः ३, ॐ ऐं ह्रौं नमः ४, ॐ ऐं क्रौं नमः ५, ॐ ऐं श्रौं नमः ६, ॐ ऐं त्रीं नमः ७, ॐ ऐं क्लीं नमः ८, ॐ ऐं प्रीं नमः ९, ॐ ऐं ह्रीं नमः १०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ११, ॐ ऐं श्रौं नमः १२, ॐ ऐं ऐं नमः १३, ॐ ऐं ॐ नमः १४, ॐ ऐं श्रीं नमः १५, ॐ ऐं क्रां नमः १६, ॐ ऐं हूं नमः १७, ॐ ऐं छ्रां नमः १८, ॐ ऐं क्ष्म्क्रीं नमः १९, ॐ ऐं ल्लुं नमः २०, ॐ ऐं सौं नमः २१, ॐ ऐं ह्लौं नमः २२, ॐ ऐं क्रूं नमः २३, ॐ ऐं सौं नमः २४। ॐ नमश्चण्डिकायै षष्ठः ॐ तत्सत्॥

॥ सप्तमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं कुं नमः २, ॐ ऐं ह्रीं नमः ३, ॐ ऐं ह्रं नमः ४, ॐ ऐं मूं नमः ५, ॐ ऐं त्रौं नमः ६, ॐ ऐं ह्रौं नमः ७, ॐ ऐं ॐ नमः ८, ॐ ऐं सूं नमः ९, ॐ ऐं क्लूं नमः १०, ॐ ऐं कें नमः ११, ॐ ऐं नें नमः १२, ॐ ऐं लूं नमः १३, ॐ ऐं ह्स्लीं नमः १४, ॐ ऐं प्लूं नमः १५, ॐ ऐं शां नमः १६, ॐ ऐं स्लूं नमः १७, ॐ ऐं प्लीं नमः १८, ॐ ऐं प्रें नमः १९, ॐ ऐं अं नमः २०, ॐ ऐं औं नमः २१, ॐ ऐं म्लीं नमः २२, ॐ ऐं श्रां नमः २३, ॐ ऐं सौं नमः २४, ॐ ऐं श्रौं नमः २५, ॐ ऐं प्रीं नमः २६, ॐ ऐं हस्रीं नमः २७। ॐ नमश्चण्डिकायै सप्तमः ॐ तत्सत्॥

॥ अष्टमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं म्ह्लीं नमः २, ॐ ऐं प्रूं नमः ३, ॐ ऐं एं नमः ४, ॐ ऐं क्रों नमः ५, ॐ ऐं ईं नमः ६, ॐ ऐं ऐं नमः ७, ॐ ऐं लीं नमः ८, ॐ ऐं फ्रौं नमः ९, ॐ ऐं म्लूं नमः १०, ॐ ऐं नों नमः ११, ॐ ऐं हूं नमः १२, ॐ ऐं फ्रौं नमः १३, ॐ ऐं म्लौं नमः १४, ॐ ऐं स्मौं नमः १५, ॐ ऐं सौं नमः १६, ॐ ऐं श्रीं नमः १७, ॐ ऐं स्हौं नमः १८, ॐ ऐं ख्सैं नमः १९, ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः २०, ॐ ऐं ह्रां नमः २१, ॐ ऐं वीं नमः २२, ॐ ऐं लूं नमः २३, ॐ ऐं ल्सीं नमः २४, ॐ ऐं ब्लीं नमः २५, ॐ ऐं त्स्त्रौं नमः २६, ॐ ऐं ब्रूं नमः २७, ॐ ऐं श्क्लां नमः २८, ॐ ऐं श्रूं नमः २९, ॐ ऐं ह्रीं नमः ३०, ॐ ऐं शौं नमः ३१, ॐ ऐं क्लीं नमः ३२, ॐ ऐं क्लौं नमः ३३, ॐ ऐं फ्रेंनमः ३४, ॐ ऐं हूं नमः ३५, ॐ ऐं क्लूं नमः ३६, ॐ ऐं तीं नमः ३७, ॐ ऐं म्लूं नमः ३८, ॐ ऐं हं नमः ३९, ॐ ऐं स्लूं नमः ४०, ॐ ऐं औं नमः ४१, ॐ ऐं ल्हौं नमः ४२, ॐ ऐं श्लूरीं नमः ४३, ॐ ऐं यां नमः ४४, ॐ ऐं क्ष्लीं नमः ४५, ॐ ऐं ल्हीं नमः ४६, ॐ ऐं ग्लौं नमः ४७, ॐ ऐं ह्रौं नमः ४८, ॐ ऐं प्रां नमः ४९, ॐ ऐं क्रीं नमः ५०, ॐ ऐं क्लीं नमः ५१, ॐ ऐं न्स्लूं

नमः ५२, ॐ ऐं ह्रीं नमः ५३, ॐ ऐं ह्लौं नमः ५४, ॐ ऐं ह्रैं नमः ५५, ॐ ऐं म्रूं नमः ५६, ॐ ऐं सौं नमः ५७, ॐ ऐं श्रीं नमः ५८, ॐ ऐं प्सूं नमः ५९, ॐ ऐं द्रौं नमः ६०, ॐ ऐं स्स्रां नमः ६१, ॐ ऐं ह्स्लीं नमः ६२, ॐ ऐं स्ल्रीं नमः ६३। ॐ नमश्चण्डिकायै अष्टमः ॐ तत्सत्॥

॥ नवमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं रौं नमः १, ॐ ऐं क्लीं नमः २, ॐ ऐं म्लौं नमः ३, ॐ ऐं श्रौं नमः ४, ॐ ऐं ग्लीं नमः ५, ॐ ऐं ह्रौं नमः ६, ॐ ऐं ह्सौं नमः ७, ॐ ऐं ईं नमः ८, ॐ ऐं ब्रूं नमः ९, ॐ ऐं श्रां नमः १०, ॐ ऐं लूं नमः ११, ॐ ऐं आं नमः १२, ॐ ऐं श्रीं नमः १३, ॐ ऐं क्रौं नमः १४, ॐ ऐं प्रूं नमः १५, ॐ ऐं क्लीं नमः १६, ॐ ऐं भ्रूं नमः १७, ॐ ऐं ह्रौं नमः १८, ॐ ऐं क्रीं नमः १९, ॐ ऐं म्लीं नमः २०, ॐ ऐं ग्लौं नमः २१, ॐ ऐं ह्सूं नमः २२, ॐ ऐं प्लीं नमः २३, ॐ ऐं हौं नमः २४, ॐ ऐं ह्स्रां नमः २५, ॐ ऐं स्हौं नमः २६, ॐ ऐं ल्लूं नमः २७, ॐ ऐं क्स्लीं नमः २८, ॐ ऐं श्रीं नमः २९, ॐ ऐं स्तूं नमः ३०, ॐ ऐं च्वें नमः ३१, ॐ ऐं वीं नमः ३२, ॐ ऐं क्ष्लूं नमः ३३, ॐ ऐं श्लूं नमः ३४, ॐ ऐं क्रूं नमः ३५, ॐ ऐं क्रां नमः ३६, ॐ ऐं हौं नमः ३७, ॐ ऐं क्रां नमः ३८, ॐ ऐं स्क्ष्लीं नमः ३९, ॐ ऐं सूं नमः ४०, ॐ ऐं फ्रूं नमः ४१। ॐ नमश्चण्डिकायै नवमः ॐ तत्सत्॥

॥ दशमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं ह्रीं नमः २, ॐ ऐं ब्लूं नमः ३, ॐ ऐं ह्रीं नमः ४, ॐ ऐं म्लूं नमः ५, ॐ ऐं श्रौं नमः ६, ॐ ऐं ह्रीं नमः ७, ॐ ऐं ग्लीं नमः ८, ॐ ऐं ह्रं नमः ९, ॐ ऐं ध्रूं नमः १०, ॐ ऐं हुं नमः ११, ॐ ऐं द्रौं नमः १२, ॐ ऐं श्रीं नमः १३, ॐ ऐं त्रूं नमः १४, ॐ ऐं ब्रूं नमः १५, ॐ ऐं फ्रें नमः १६, ॐ ऐं ह्रीं नमः १७, ॐ ऐं जुं नमः १८, ॐ ऐं सौं नमः १९, ॐ ऐं स्लूं नमः २०, ॐ ऐं प्रें नमः २१, ॐ ऐं ह्स्वां नमः २२, ॐ ऐं प्रीं नमः २३, ॐ ऐं फ्रां नमः २४, ॐ ऐं क्रीं नमः २५, ॐ ऐं श्रीं नमः २६, ॐ ऐं क्रां नमः २७, ॐ ऐं सः नमः २८, ॐ ऐं क्लीं नमः २९, ॐ ऐं ब्रें नमः ३०, ॐ ऐं इं नमः ३१, ॐ ऐं ज्स्हल्रीं नमः ३२। ॐ नमश्चण्डिकायै दशमः ॐ तत्सत्॥

॥ एकादशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं क्रूं नमः २, ॐ ऐं श्रीं नमः ३, ॐ ऐं ल्लीं नमः ४, ॐ ऐं प्रें नमः ५, ॐ ऐं सौं नमः ६, ॐ ऐं स्हौं नमः ७, ॐ ऐं श्रूं नमः ८, ॐ ऐं क्लीं नमः ९, ॐ ऐं स्क्लीं नमः १०, ॐ ऐं प्रीं नमः ११, ॐ ऐं ग्लौं नमः १२, ॐ ऐं ह्स्ह्रीं नमः १३, ॐ ऐं स्तौं नमः १४, ॐ ऐं लीं नमः १५, ॐ ऐं म्लीं नमः १६, ॐ ऐं स्तूं नमः १७, ॐ ऐं ज्स्हां नमः १८, ॐ ऐं फ्रूं नमः १९, ॐ ऐं क्रं नमः २०, ॐ ऐं ह्रीं नमः २१, ॐ ऐं ल्लूं नमः २२, ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः २३, ॐ ऐं श्रूं नमः २४, ॐ ऐं इं नमः २५, ॐ ऐं लुं नमः २६, ॐ ऐं त्रैं नमः २७; ॐ ऐं द्रूं नमः २८, ॐ ऐं ह्रौं नमः २९, ॐ ऐं क्लीं नमः ३०, ॐ ऐं सूं नमः ३१, ॐ ऐं ह्रौं नमः ३२, ॐ ऐं श्व्रं नमः ३३, ॐ ऐं ब्रुं नमः ३४, ॐ ऐं फ्रुं नमः ३५, ॐ ऐं ह्रीं नमः ३६, ॐ ऐं लं नमः ३७, ॐ ऐं ह्सौं नमः ३८, ॐ ऐं सें नमः ३९, ॐ ऐं ह्रीं नमः ४०, ॐ ऐं ल्हीं नमः ४१, ॐ ऐं विं नमः ४२, ॐ ऐं प्लीं नमः ४३, ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः ४४, ॐ ऐं त्स्रां नमः ४५, ॐ ऐं प्रं नमः ४६, ॐ ऐं म्लीं नमः ४७, ॐ ऐं स्नुं नमः ४८, ॐ ऐं क्ष्मां नमः ४९, ॐ ऐं स्तूं नमः ५०, ॐ ऐं स्ह्रीं नमः ५१, ॐ ऐं थ्प्रीं नमः ५२, ॐ ऐं क्रीं नमः ५३, ॐ ऐं श्रां नमः ५४, ॐ ऐं म्लीं नमः ५५। ॐ नमश्चण्डिकायै एकादशः ॐ तत्सत्॥

॥ द्वादशोऽध्याय: ॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः १, ॐ ऐं ॐ नमः २, ॐ ऐं श्रीं नमः ३, ॐ ऐं ईं नमः ४, ॐ ऐं क्लीं नमः ५, ॐ ऐं क्रूं नमः ६, ॐ ऐं श्रूं नमः ७, ॐ ऐं प्रां नमः ८, ॐ ऐं क्रूं नमः ९, ॐ ऐं दिं नमः १०, ॐ ऐं फ्रें नमः ११, ॐ ऐं हं नमः १२, ॐ ऐं सः नमः १३, ॐ ऐं चें नमः १४, ॐ ऐं सूं नमः १५, ॐ ऐं प्रीं नमः १६, ॐ ऐं ब्लूं नमः १७, ॐ ऐं आं नमः १८, ॐ ऐं औं नमः १९, ॐ ऐं ह्रीं नमः २०, ॐ ऐं क्रीं नमः २१, ॐ ऐं द्रां नमः २२, ॐ ऐं श्रीं नमः २३, ॐ ऐं स्लीं नमः २४, ॐ ऐं क्लीं नमः २५, ॐ ऐं स्लूं नमः २६, ॐ ऐं ह्रीं नमः २७, ॐ ऐं ब्लीं नमः २८, ॐ ऐं त्रौं नमः २९, ॐ ऐं ॐ नमः ३०, ॐ ऐं श्रौं नमः ३१, ॐ ऐं ऐं नमः ३२, ॐ ऐं प्रें नमः ३३, ॐ ऐं द्रूं नमः ३४, ॐ ऐं क्लूं नमः ३५, ॐ ऐं औं नमः ३६, ॐ ऐं सूं नमः ३७, ॐ ऐं चें नमः ३८, ॐ ऐं ह्रूं नमः ३९, ॐ ऐं प्लीं नमः ४०, ॐ ऐं क्षां नमः ४१। ॐ नमश्चण्डिकायै द्वादशः ॐ तत्सत्॥

॥ त्रयोदशोऽध्याय: ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं ब्रीं नमः २, ॐ ऐं ॐ नमः ३, ॐ ऐं औं नमः ४, ॐ ऐं ह्रां नमः ५, ॐ ऐं श्रीं नमः ६, ॐ ऐं श्रां नमः ७, ॐ ऐं ॐ नमः ८, ॐ ऐं प्लीं नमः ९, ॐ ऐं सौं नमः १०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ११, ॐ ऐं क्रीं नमः १२, ॐ ऐं ह्लूं नमः १३, ॐ ऐं क्लीं नमः १४, ॐ ऐं ह्रीं नमः १५, ॐ ऐं प्लीं नमः १६, ॐ ऐं श्रीं नमः १७, ॐ ऐं ह्लीं नमः १८, ॐ ऐं श्रूं नमः १९, ॐ ऐं ह्रीं नमः २०, ॐ ऐं त्रूं नमः २१, ॐ ऐं हूं नमः २२, ॐ ऐं ह्रां नमः २३, ॐ ऐं प्रीं नमः २४, ॐ ऐं ऊं नमः २५, ॐ ऐं सूं नमः २६, ॐ ऐं ल्हौं नमः २७, ॐ ऐं वौं नमः २८, ॐ ऐं आं नमः २९, ॐ ऐं ॐ नमः ३०। ॐ नमश्चण्डिकायै त्रयोदशः ॐ तत्सत्॥

ॐ बीज त्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्न शक्तिः प्रचोदयात्। नवार्ण मन्त्र का १०८ बार जप करें।

॥ ॐ रहस्यतन्त्रे बीजत्रयात्मक सप्तशती सम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्री दुर्गा तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ काली तंत्रम् ॥

॥ कालिका के भेद ॥

काली संबंध में तंत्रशास्त्र के २५०-३०० ग्रंथ हैं जिनमें बहुत से ग्रंथ लुप्त हैं कुछ पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। अंश मात्र ग्रंथ ही अवलोकन हेतु उपलब्ध हैं। कामधेनु तन्त्र में लिखा हैं कि- **"काल सङ्कलनात् काली कालग्रासं करोत्यतः"**। तंत्रों में स्थान स्थान पर शिव ने **श्यामा काली** (दक्षिणाकाली) और **सिद्धिकाली** (गुह्यकाली) को केवल **"काली"** संज्ञा से पुकारा हैं। दशमहाविद्या के मत से तथा **लघुक्रम** और **ह्याद्याम्ताय क्रम** के मत से **श्यामाकाली** (दक्षिणाकाली) को **आद्या, नीलकाली** (तारा) को **द्वितीया** और **प्रपञ्चेश्वरी रक्तकाली** (महात्रिपुर सुंदरी) को तृतीया कहते हैं परन्तु श्यामाकाली आद्या काली नहीं आद्यविद्या हैं। **पीताम्बरा बगलामुखी को पीतकाली भी कहा हैं।**

कालिका द्विविधा प्रोक्ता कृष्णा - रक्ता प्रभेदतः। कृष्णा तु दक्षिणा प्रोक्ता रक्ता तु सुन्दरीमता॥

काली के अनेक भेद हैं-

पुरश्चर्याणवेः- १. दक्षिणाकाली २. भद्रकाली ३. श्मशानकाली ४. कामकलाकाली ५. गुह्यकाली ६. कामकला काली ७. धनकाली ८. सिद्धिकाली ९. चण्डीकाली

जयद्रथयामलेः- १. डम्बरकाली २. गह्नेश्वरी काली ३. एकतारा ४. चण्डशाबरी ५. वज्रवती ६. रक्षाकाली ७. इन्दीवरीकाली ८. धनदा ९. रमण्या १०. ईशानकाली ११. मन्त्रमाता।

सम्मोहने तंत्रेः- १. स्पर्शमणि काली २. चिंतामणि ३. सिद्धकाली ४. विज्ञाराज्ञी ५. कामकला ६. हंसकाली ७. गुह्यकाली

तंत्रान्तरेऽपिः-१ १. चिंतामणि काली २. स्पर्शमणिकाली ३. सन्ततिप्रदाकाली ४. सिद्धिकाली ५. दक्षिणा काली ६. कामकला काली ७. हंसकाली ८. गुह्यकाली उक्त सभी भेदों में से **दक्षिणा** और **भद्रकाली** 'दक्षिणाम्नाय' के अंतर्गत हैं तथा गुह्यकाली, कामकला काली, महाकाली और महाश्मशान काली उत्तराम्नाय से संबंधित हैं। काली की उपासना **तीन आम्नायों** से होती हैं। तंत्रों में कहा हैं **"दक्षिणोपासकः कालः"** अर्थात दक्षिणोपासक महाकाल के समान हो जाता हैं। **उत्तराम्नायोपासक** ज्ञान योग से ज्ञानी बन जाते हैं। **उर्ध्वाम्नायोपासक** पूर्णक्रम उपलब्ध करने से निर्वाणमुक्ति को प्राप्त करते हैं। दक्षिणाम्नाय में कामकाला काली को कामकलादक्षिणाकाली कहते हैं। उत्तराम्नाय के उपासक भाषाकाली में कामकला गुह्यकाली की उपासना करते हैं। विस्तृत वर्णन पुरुश्चर्यार्णव में दिया गया हैं। गुह्यकाली की उपासना नेपाल में विशेष प्रचलित हैं। इसके मुख्य उपासक ब्रह्मा, वशिष्ठ, राम, कुबेर, यम, भरत, रावण, बालि, वासव, बलि, इन्द्र हुये हैं। श्रीरामचन्द्र ने इसके १७ अक्षर के मंत्र की उपासना की थी।

कामकलाकाली के मुख्य उपासक इन्द्र, वरुण, कुबेर, ब्रह्मा, महाकाल, राम, रावण, यम, विवस्वान, चन्द्र, विष्णु एवं ऋषिगण हुये हैं। इसका १८ अक्षर का मंत्र मुख्य मंत्र माना गया हैं। **रुद्ररूप** मिश्र बिन्दु से भगवती भद्रकाली विचरण करती रहती हैं, नृत्य करती हैं। तंत्रों में इस प्रकार **ध्यान** लिखा हैं-

डिम्भं डिम्भं सुडिम्भं पच मन दुहसां झ प्रकम्पं प्रझम्पं, विल्लं त्रिल्लं त्रि-त्रिल्लं त्रिखलमख-मखा खं खमं खं खमं खम्। गूहं गूहं तु गुह्यं गुडलुगड गुदा दाडिया डिम्बुदेति, नृत्यन्ती शब्दवाद्यैः प्रलयपितृवने श्रेयसे वोऽस्तु काली॥

भद्रकाली के भी दो भेद हैं(१) **विपरीत प्रत्यंगिरा भद्रकाली** (२) **षोडश भुजा दुर्गाभद्रकाली। मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गासप्तशती** में जो काली अंबिका के ललाट से उत्पन्न हुई वह कालीपुराण से भिन्न हैं। उसका ध्यान इस प्रकार है :-

नीलोत्पलदलश्यामा चतुर्बाहु समन्विता। खट्वागं चन्द्रहासञ्च विभ्रती दक्षिणकरे ॥
वामे चर्मं च पाशञ्च उर्ध्वाधो - भावतः पुनः। दधती मुण्डमालाञ्च व्याघ्रचर्म वराम्बरा ॥
कृशांगी दीर्घदंष्ट्रा च अतिदीर्घाऽति भीषणा। लोलजिह्वा निम्नरक्तनयना नादभैरवा ॥
कबन्धवाहना पीनविस्तार श्रवणानना ॥

'दक्षिणकाली' मन्त्र विग्रह हृदय में ''**प्रलय कालीन ध्यान** '' इस प्रकार हैं-

क्षुच्छ्यामां कोटराक्षीं प्रलय घनघटां घोररूपां प्रचण्डां,
दिग्वस्त्रां पिङ्गकेशीं डमरु सृणिधृतां खड्गपाशाऽभयानि ।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैः कालिकां कृष्णवर्णां
ध्यायामि ध्येयमानां सकलसुखकरीं कालिकां तां नमामि ॥

'महाकालसंहिता' के शकारादि विश्वसाम्राज्य **श्यामासहस्रनाम** में ''**निर्गुणध्यान**'' इस प्रकार हैं।

ब्रह्माविष्णु शिवास्थिमुण्डरसनां ताम्बूल रक्ताषांबराम् । वर्षामेघनिभां त्रिशूल-मुशले पद्माऽसि पाशांकुशाम् ॥
शङ्खं साहिसुगंधृतां दशभुजां प्रेतासने संस्थिताम् । देवीं दक्षिण[illegible]लिकां भगवतीं रक्ताम्बरां तां स्मरे ॥
विद्याऽविद्यादियुक्तां हरविधिनमितांनिष्कलां कालहन्त्रीं, भक्ताभीष्टप्रदात्रीं कनकनिधिकलांचिन्मयानन्दरूपाम् ॥
दोर्दण्ड चाप चक्रे परिघमथ शरा धारयन्तीं शिवास्थाम् । पद्मासीनां त्रिनेत्रामरुण रुचिमयीमिन्दुचूडां भजेऽहम् ।

''**कालीविलास तंत्र**'' में कृष्णमाता काली का ध्यान इस प्रकार दिया हैं-

जटाजूट समायुक्तां चन्द्रार्द्धकृत शेखराम्। पूर्णचन्द्रमुखीं देवीं त्रिलोचन समन्विताम् ॥
दलिताञ्जन सङ्काशां दशबाहु समन्विताम्। नवयौवन सम्पन्नां दिव्याभरण भूषिताम् ॥
सुचारु दशनां नित्यां सुधापुञ्ज समन्विताम्। शृङ्गाररस संयुक्तां सदाशिवोपरि स्थिताम् ॥
दिङ्मण्डलोज्ज्वलकरीं ब्रह्मादि परिपूजिताम्। वामे शूलं तथा खड्गंचक्रंवाणं तथैव च ॥
शक्तिं च धारयन्तीं तां परमानन्द रूपिणीम्। खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कुशमेव च ॥
घण्टां वा परशुं वापि दक्षहस्ते च भूषिताम्। उग्रां भयानकां भीमां भेरूण्डां भीमनादिनीम् ॥
कालिकाजटिलां चैव भैरवीं पुत्रवेष्टिताम्। आभिः शक्तिरष्टाभिश्च सहितां कालिकां पराम् ॥
सुप्रसन्नां महादेवीं कृष्णक्रीडां परात् पराम्। चिन्तयेत् सततं देवीं धर्मकामार्थ मोक्षदाम् ॥

कादि हादि सादि इत्यादि क्रम से कालिका के कई प्रकार के ध्यान हैं। जिस मंत्र के आदि में "**क**" हैं वह "**कादि विद्या**", जिस मंत्र के आदि में "**ह**" है वह "**हादि विद्या**", मंत्र में वाग् बीज हो वह "**वागादि विद्या**" तथा जिस मंत्र के प्रारम्भ में "**हूं**" बीज हो वह "**क्रोधादि विद्या**" कहलाती हैं। "**नादिक्रम**" में आदि में "**नमः**" का प्रयोग होता हैं एवं "**दादिक्रम**" में मंत्र के आदि में "**द**" होता हैं जैसे "**दक्षिणे कालिके स्वाहा**"। "**प्रणवादि क्रम**" में मंत्र के प्रारंभ में "**ॐ**" का प्रयोग होता हैं।

१. **कादिक्रमोक्त** ध्यानम्:-

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्। कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम् ॥
सद्यश्छिन्नशिरः खडगं वामोर्ध्व कराम्बुजाम्। अभयं वरदं चैव दक्षिणोर्ध्वाधः पाणिकाम् ॥
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम्। कण्ठावसक्तमुण्डालीं गलद्रुधिरं चर्चिताम् ॥
कृर्णावतंसतानीत शवयुग्म भयानकाम्। घोरदंष्ट्रां करालास्यां पीनोन्नत - पयोधराम् ॥
शवानां करसङ्घातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम्। सृक्कद्वयगलद् रक्तधारा विस्फुरिताननाम् ॥
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय - वासिनीम्। बालार्क - मण्डालाकार - लोचन - त्रितयान्विताम् ॥
दन्तुरां दक्षिणव्यापि मुक्तालम्बि कचोच्चयाम्। शवरूपं महादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ॥
शिवामिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम्। महाकालेन च समं विपरीत-रतातुराम् ॥
सुखप्रसन्नवदनां स्मेरानन सरोरुहाम् । एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् ॥

२. "**क्रोधक्रम**" का ध्यान इस प्रकार हैं-

दीपं त्रिकोण विपुलं सर्वतः सुमनोहरम्। कूजत् कोकिला नादाढ्यं मन्दमारुत सेवितम् ॥
भृङ्गपुष्पलताकीर्ण मुद्यच्चन्द्र दिवाकरम्। स्मृत्वा सुधाब्धिमध्यस्थं तस्मिन् माणिक्यमण्डपे ॥
रत्नसिंहासने पद्मे त्रिकोणेज्ज्वल कर्णिके। पीठे सञ्चिन्तयेत् देवीं साक्षात् त्रैलोक्यसुन्दरीम् ॥
नीलनीरज सङ्काशां प्रत्यालीढ पदास्थिताम् । चतुर्भुजां त्रिनयनां खण्डेन्दुकृत शेखराम् ॥
लम्बोदरीं विशालाक्षीं श्वेतप्रेतासन - स्थिताम् । दक्षिणोर्ध्वेन निस्त्रृंशं वामोर्ध्वनीलनीरजम् ॥
कपालं दधतीं चैव दक्षिणाधश्च कर्तृकाम् । नागाष्टकेन सम्बद्ध जटाजूटां सुरार्चिताम् ॥
रक्तवर्तुल - नेत्राश्च प्रव्यक्त दशनोज्ज्वलाम् । व्याघ्रचर्म - परीधानां गन्धाष्टक प्रलेपिताम् ॥
ताम्बूलपूर्णवदनां सुरासुर नमस्कृताम् । एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वाभीष्टाप्रदां शिवाम् ॥

३. **हादिक्रम** का ध्यान इस प्रकार हैं:-

देव्याध्यानमहं वक्ष्ये सर्वदेवोऽप शोभितम्। अञ्जनाद्रिनिभां देवीं करालवदनां शिवाम् ॥
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम् । महाकाल हृदम्भोजस्थितां पीनपयोधराम् ॥
विपरीतरतासक्तां घोरदंष्ट्रां शिवेन वै । नागयज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्धकृत शेखराम् ॥
सर्वालङ्कार संयुक्तां मुक्तामणि विभूषिताम् । मृतहस्तसहस्त्रैस्तु बद्धकाञ्ची दिगम्बराम् ॥
शिवाकोटि ससहस्त्रैस्तु योगिनीभिर्विराजजिताम् । रक्तपूर्ण मुखाम्भोजां सद्यः पानप्रमत्तिकाम् ॥

सद्यश्छिन्नशिरः खड्ग वामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम् । अभीवरदं दक्षोर्ध्वाधः करां परमेश्वरीम् ॥
वह्न्यर्क - शशिनेत्रां च रण - विस्फुरिताननाम् । विगतासु किशोराभ्यां कृतवर्णावतंसिनीम् ॥

४. **वागादिक्रम** का ध्यान इस प्रकार हैं:-

चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमाला विभूषिताम्। खड्गं च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीं सशरं धनुः ॥
मुण्डं च खर्परं चैव क्रमाद वामे च विभ्रतीम् । द्यां लिखन्ती जटामेकां विभ्रतीं शिरसा स्वयम् ॥
मुण्डमालाधरां शीर्षे ग्रीवायामपिं सर्वदा। वक्षसा नागहारं तु विभ्रतीं रक्तलोचनाम् ॥
कृष्णवर्णधरां दिव्यां व्याघ्राजिन समन्विताम् । वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम् ॥
विन्यस्य सिंहपृष्ठे च लेलिहानां शवं स्वयम् । सट्टहासां महाशवयुक्तां महाविभीषिणा ॥
एवं विचिन्त्या भक्तैस्तु कालिका परमेश्वरी। सततं भक्तियुक्तैस्तु भोगेश्वर्यामभीप्सुभिः ॥

५. **नादिक्रम** का ध्यानः-

खड्गं च दक्षिणे पादौ विभ्रतीन्दीवरद्वयम् । कर्तृकां खर्परं चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतीम् ॥

६. **दादिक्रम** का ध्यानः-

सद्यः कृन्तशिरः खड्गमूर्ध्वद्वय कराम्बुजाम् । अभयं वरदंतु भुजयोद्वयं करान्विताम् ॥

७. **प्रणवादि** क्रमः-

मंत्र के प्रारम्भ में **''ॐ''** प्रयुक्त होता हैं उनका ध्यान **''कादिक्रम''** के अनुसार करे।

॥ अथ दीक्षा क्रम ॥

सर्वप्रथम **१. चिंतामणि काली** के एकाक्षर मंत्र **''क्रीं''** की दीक्षा लेवे। **''क्रीं''** को कालीप्रणव भी कहते हैं। आगे क्रम इस प्रकार हैं- **२. स्पर्शमणि काली** के **''हूं हूं''** बीज मंत्र की दीक्षा ग्रहण करे। **३. संततिप्रदाकाली - ''हूं क्रीं ह्रीं''** मंत्र की दीक्षा लेवे। **४. सिद्धिकाली- ''ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा''** की दीक्षा लेवे। **५. दक्षिणा काली** की उपासना करें। पश्चात् **६. कामकलाकाली ७. हंसकाली ८. गुह्यकाला** के मंत्रों की क्रमशः दीक्षा ग्रहण करें। **''महाविद्या क्रम''** में दक्षिणाकाली के बाद माँ **''तारा''** के सार्द्धपञ्चाक्षर मंत्र की दीक्षा लेवे पश्चात् **महाविद्या षोडशी** के षोडशाक्षरी मंत्र की दीक्षा तथा त्र्यक्षरी विद्या मंत्र ग्रहण करे। इसके बाद **छिन्नमस्ता** मंत्र की दीक्षा ग्रहण कर **महाकाल** एवं **वटुक** मंत्र की आराधना क्रम पूर्वक करे।

क्रमदीक्षा विषय में 'महाकाल संहिता' में कहा हैं **क्रमदीक्षा विहीनस्य सिद्धिहानिः पदे पदे**। क्रमदीक्षा के बिना **''पूर्णाभिषेक दीक्षा''** लेना उचित नहीं हैं।

॥ काली के विभिन्न भेद ॥

काली के अलग अलग तंत्रों में अनेक भेद हैं। कुछ पूर्व में कहे जा चुके हैं। अन्यच्च आठ भेद इस प्रकार हैं।

१. संहारकाली २. दक्षिणकाली ३. भद्रकाली ४. गुह्यकालीं ५. महाकाली ६. वीरकाली ७. उग्रकाली ८. चण्डकाली।

'कालिका पुराण' में उल्लेख हैं कि आदिसृष्टि में भगवती ने महिषासुर को **''उग्रचण्डी''** रूप से मारा एवं द्वितीय

सृष्टि में 'उग्रचण्डी' ही "**महाकाली**" अथवा महामाया कहलाई।

योगनिद्रा महामाया जगद्धात्री जगन्मयी। भुजैः षोडशभिर्युक्ताः इसी का नाम "**भद्रकाली**" भी हैं। भगवती कात्यायनी 'दशभुजा' वाली दुर्गा हैं उसी को "**उग्रकाली**" कहा हैं। कालिकापुराणे- **कात्यायनीमुग्रकालीं दुर्गामिति तु तांविदुः।** "**संहारकाली**" की चार भुजाए हैं यही 'धूम्रलोचन' का वध करने वाली हैं। "**वीरकाली**" अष्टभुजा हैं इन्होने ही चण्ड का विनाश किया "**भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं वमौ नमः**" इसी 'वीर काली' विषय में दुर्गासप्तशती में कहा हैं। "**चण्डकाली**" की बत्तीस भुजाएँ हैं एवं शुंभ का वध किया था। यथा - **चण्डकाली तु या प्रोक्ता द्वात्रिंशद् भुज शोभिता।**

समयाचार रहस्य में उपरोक्त स्वरूपों से संबधित अन्य स्वरूप भेदों का वर्णन किया हैं।

संहारकालिका- १. प्रत्यंगिरा २. भवानी ३. वाग्वादिनी ४. शिवा ५. भेदों से युक्त भैरवी ६. योगिनी ७. शाकिनी ८. चण्डिका ९. रक्तचामुण्डा से सभी संहारकालिका के भेद स्वरूप हैं। संहार कालिका का महामंत्र १२५ वर्ण का 'मुण्डमाला तंत्र' में लिखा हैं जो प्रबल शत्रुनाशक हैं।

दक्षिणकालिकाः- कराली, विकराली, उमा, मुञ्जुघोषा, चन्द्ररेखा, चित्ररेखा, त्रिजटा, द्विजा, एकजटा, नीलपताका, बत्तीस प्रकार की यक्षिणी, तारा और छिन्नमस्ता ये सभी दक्षिण कालिका के स्वरूप हैं।

भद्रकाली- वारुणी, वामनी, राक्षसी, रावणी, आग्नेयी, महामारी, घुर्घुरी, सिंहवक्त्रा, भुजङ्गी, गारुडी, आसुरीदुर्गा ये सभी भद्रकाली के विभिन्न रूप हैं।

श्मशान कालिका- भेदों से युक्त मातङ्गी, सिद्धकाली, धूमावती, आर्द्रपटी चामुण्डा, नीला, नीलसरस्वती, घर्मटी, भर्कटी, उन्मुखी तथा हंसी ये सभी श्मशान कालिका के भेद रूप हैं।

महाकाली- महामाया, वैष्णवी, नारसिंही, वाराही, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी इत्यादि अष्टशक्तियाँ, भेदों से युक्तधारा, गङ्गा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा इत्यादि सब नदियां महाकाली का स्वरूप हैं।

उग्रकाली- शूलिनी, जयदुर्गा, महिषमर्दिनी दुर्गा, शैलपुत्री इत्यादि नवदुर्गायें, भ्रामरी, शाकंभरी बंध मोक्षणिका ये सब उग्रकाली के विभिन्न नाम रूप हैं।

वीरकाली- श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, पद्मावती, अन्नपूर्णा, रक्तदंतिका, बालात्रिपुर सुंदरी, षोडशी की एवं काली की षोडश नित्यायें, कालरात्रि, वशिनी, बगलामुखी ये सभी वीरकाली के नाम भेद रूप हैं।

॥ सिद्धि प्राप्ति हेतु काली के कुल्लुकादि मंत्र ॥

इष्टसिद्धि हेतु इष्टदेवता के 'कुल्लुकादि मंत्रों' का जप अत्यंत्य आवश्यक हैं।

अज्ञात्वा कुल्लुकामेतां जपते योऽधमः प्रिये। पञ्चत्वमाशु लभते सिद्धिहानिश्च जायते॥

दश महाविद्याओं के कुल्लुकादि अलग - अलग हैं। काली के कुल्लुकादि इस प्रकार हैं-

कुल्लुका मंत्रः- **क्रीं, हूं, स्त्रीं, ह्रीं, फट्** यह पञ्चाक्षरी मंत्र हैं। मूलमंत्र से षडङ्गन्यास करके शिर में १२ बार कुल्लुका मंत्र का जप करे।

सेतुः- "ॐ" इस मंत्र को १२ बार हृदय में जपे। ब्राह्मण एवं क्षत्रियों का सेतु मंत्र "**ॐ**" हैं। वैश्यों के लिये "**फट्**" तथा शूद्रों के लिये "**ह्रीं**" सेतु मंत्र हैं। इसका १२ बार हृदय में जप करे।

महासेतुः- "**क्रीं**" इस महासेतु मंत्र को कण्ठस्थान में १२ बार जप करें।

निर्वाण जपः- मणिपूरचक्र (नाभि) में- **ॐ अं** पश्चात् मूलमंत्र के बाद **ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङ चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ॐ**। का जप करे। पश्चात् "**क्लीं**" बीज को **स्वाधिष्ठान चक्र** में १२ बार जप करें। इसके बाद "**ॐ**" **ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रमल वरयूं राकिनी मां रक्ष रक्ष मम सर्वधातून् रक्ष रक्ष सर्वसत्व वशङ्करि देवि! आगच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण गृह्ण ऐं घोरे देवि! घोरे देवि! ह्रीं सः परम घोरे घोर स्वरूपे एहि एहि नमश्चामुण्डे डरलकसहै श्री दक्षिण कालिके देवि वरदे विद्ये!** इस मंत्र का 'शिर' में द्वादश बार जप करे। इसके बाद 'महाकुण्डालिनी' का ध्यान कर इष्टमंत्र का जप करना चाहिये। मंत्र सिद्धि के लिये मंत्र के दश संस्कार भी आवश्यक हैं।

जननं जीवनं पश्चात् ताडनं बोधनं तथा। अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायनं पुनः। तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैताः मंत्र संस्क्रियाः॥

॥ भगवती काली के विभिन्न मंत्र ॥

१. एकाक्षरी मंत्र :- "**क्रीं**" इसे 'चिंतामणि काली' भी कहते हैं। तंत्रसार के अनुसार ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्र के समान हैं। **ॐ क्रां, ॐ क्रीं, ॐ क्रूं, ॐ क्रैं, ॐ क्रौं, ॐ कंः** से 'करन्यास' एवं 'हृदयादि न्यास' करे। इस मंत्र से सभी अभिलाषाऐं पूरी होती हैं इसी एकाक्षर मंत्र की साधना से राजा विश्वामित्र को "**ब्राह्मणत्व**" की प्राप्ति हुई। **शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां वरप्रदाम्**। से ध्यान कर १ लाख जप कर दशांश होम करें। "**मंत्रमहोदधि**" में विराट् छन्द एवं देवता दक्षिणा कालिका बताया हैं। जबकि "**गुह्यकाली तंत्र**" में भैरव ऋषि, गायत्री छंद, दक्षिणाकालिका, कं बीज, ईं शक्तिः, रं कीलकं बताया हैं।

२. द्वयक्षर मंत्रः- (१) "**हूं हूं**"। इसे स्पर्शमणि काली भी कहा हैं। (२) **क्रीं क्रीं** (३) **क्रीं हूं**। इन दोनों मंत्र के "**गुह्यकाली तंत्र**" में ऋषि भैरव, छन्द गायत्री, बीज क्रीं, शक्ति स्वाहा, कीलक हूं बताया हैं।

३. त्र्यक्षरमंत्रः - (१) "**हूं क्रीं ह्रीं**"। इसे 'संततिप्रदा काली' कहा हैं। (२) **क्रीं क्रीं क्रीं**। ऋष्यादि न्यास एकाक्षरी मंत्रवत्। (३) **क्रीं ह्रीं क्लीं** (काली कल्पतरू) (४) **क्रीं क्रीं हूं** (हिन्दी तंत्रसारे)। इसका देवता "**चामुण्डाकालिका**" बताया हैं। (५) **ह्रीं श्रीं क्रीं**। (६) "**ह्रीं श्रीं क्ली**" (हिन्दी महानिर्वाण तंत्रे)।

(७) "**क्रीं हूं ह्रीं**"। (हिन्दी तंत्रसारे)। **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषि, पंक्ति छंदः, ह्रीं शक्तिः कालिका देवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

चतुर्भुजा कृष्णा मुण्डमाला विभूषिता। खड्गं च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीन्दीवर द्वयम् ॥
कर्त्रीं च खर्परं चैव क्रमाद वामेन विभ्रती। द्यां लिखन्ती जटामेकां विभ्रती शिरसा स्वयं ॥
मुण्डमालाधरा शीर्षे ग्रीवायामथ चापराम्। वक्षसा नागहारं च विभ्रती रक्तलोचना ॥
कृष्णवस्त्रधरा कट्यां व्याघ्राजिन समन्विता। वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम् ॥
विलाप्य सिंह पृष्ठे तु लेलिहानाऽऽसवै स्वयम्। साट्टहासा महाघोरराव - युक्ता सुभीषणा ॥

८. **क्रीं स्वाहा**। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। ९. **ऐं क्लीं ह्रीं**। १०. **क्लीं हूं ह्रीं** ११. **ॐ ह्रीं ह्रीं**। १२. **ह्रीं क्रीं ह्रीं**। १३. **हूं क्रीं हूं** १४. **हूं ह्रीं हूं** १५. **ह्रीं हूं ह्रीं** १६. **ह्रीं स्वाहा** १७. **हूं स्वाहा**। उपरोक्त मंत्रों के भैरवऋषि गायत्रीं छंद सभी

द्वयक्षर मंत्रवत् हैं। १८. **ह्रीं ह्रीं ह्रीं** १९. **क्लीं क्लीं क्लीं**

४. चतुराक्षर – १. **ॐ क्रीं हूं ह्रीं** २. **क्रीं क्रीं हूं हूं ३. क्रीं हूं** स्वाहा।

५. पञ्चाक्षरः– १. **क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा**। ऋष्यादि त्र्यक्षर मंत्रवत्। २. **क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा**। इसके ऋषि पंचवक्त्र हैं छंदादि सभी २२ अक्षर मंत्रवत् हैं। ३. **क्रीं हूं ह्रीं हुं फट्**। मंत्रमहोदधि में छन्द विराट बताया हैं तथा अन्य ऋष्यादि सब २२ अक्षर मंत्रवत् हैं।

६. षडक्षर - १. (सिद्धिकाली) **ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा**।

विनियोग :- **अस्य मंत्रस्य भैरवऋषिः विराट् छन्दः, सिद्धिकाली ब्रह्मरूपा भुवनेश्वरी देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

खड्गोद् - भिन्नेन्दुखण्ड स्त्रवदमृतरसाप्लाविताङ्गी त्रिनेत्रा
सव्येपाणौ कपालाद् गलदसृजथो मुक्तकेशी पिवन्ती।
दिग्वस्त्रा बद्धकाञ्ची मणिमय मुकुटाद्यैर्यता दीप्तजिह्वा
पायान्नीलोत्पलाभा रविशशि विलसत् कुण्डलालीढ पादा॥

२१ हजार जप कर शिरीष पुष्पों से होम करे।

२. **क्रीं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा**। ऋष्यादि त्र्यक्षर मंत्रवत्। यह त्रैलोक्यमोहन मंत्र हैं। **३. क्रीं कालिके स्वाहा**। छंद विराट् शेष २२ अक्षर मंत्रवत्।

७. सप्ताक्षर- १. क्रीं हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा। इसका छंद विराट् हैं शेष ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। २. **परमेश्वरी स्वाहा**। (हिन्दी मंत्रमहार्णवे) **शवरूपशिवस्थितां महाकाल रतासक्तां शिवाभिर्दिक्षु वेष्टिताम्।**

८. अष्टाक्षर - १. **क्रीं, क्रीं, हूं, हूं, ह्रीं, ह्रीं स्वाहा**। २. **क्रीं हूं ह्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा**। ३. **क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा**। ४. **दक्षिणे कालिके स्वाहा**। ५. **ॐ (क्लीं) (ऐं) परमेश्वरि स्वाहा**। सभी ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। ध्यान- सप्ताक्षर मंत्रवत्। ६. **क्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा**। ७. **क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**।

९. नवाक्षर - १. क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। २. **क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा** ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्।

१०. दशाक्षर - क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके फट्। २. **क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके फट्**। लेकिन इसके मंत्रोद्धार में कवचं (हुं) मूलविद्याद्यं (क्रीं) तदन्ते भुवनेश्वरी (ह्रीं) लिखा हैं। अतः कूर्च बीज (हूं) नहीं होने से मंत्र इस प्रकार होना चाहिये। **क्रीं, हुं, ह्रीं दक्षिणे कालिके फट्**। हिन्दी तंत्रसार में इसके ऋषि दक्षिणामूर्ति तथा पंक्तिछंद बताया हैं। ३. **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। ४. **ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा**।

मेघाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां रक्ताबरं विभ्रतीं, पाणिभ्यामभयं वरं च
विलसद् रक्तारविन्द-स्थिताम्। नृत्यन्तं पुरतो निपीय मधुरं माध्वीक
मद्यं महाकाल वीक्ष्य विकासितानन वरामाद्यां भजे कालिकाम्॥

११. एकादशाक्षर- १. **ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा**। इसके ऋषि दक्षिणामूर्ति। पंक्तिछंद, ह्रीं शक्ति हैं। २. **क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा**। ३. **क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। ऋष्यादि उपरोक्त मंत्रवत्। ४. नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा**। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्।

१२. द्वादशाक्षर – क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं स्वाहा।

१३. चतुर्दशाक्षर – १. क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। **२. क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।** ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। **३. कालि कालि महाकालि चण्डयोगेश्वरि** (परातंत्रे)

नीलवर्णा महाकाली त्रिमुखा नवलोचना। पीतं तु दक्षिणं वक्त्रमुत्तरं पावकोपमम् ॥
बद्धपद्मासना देवी पीनोन्नत - पयोधरा। वामहस्ते कपालं च रक्तपूर्णं तु शोभने ॥
धारयन्ती त्रिशूलं च स शवं दक्षिणे करे। चक्रं च दक्षिणे हस्ते अंकुशमुद्गरं तथा ॥
वामे पाशं च खट्वाङ्गं मृतबालं च धारिणी।

इसके प्रभाव से व्यक्ति महाभय से छूट जाता हैं।

४. नमः आं क्रों आं फट् स्वाहा कालि कालिके हूं। हिन्दी तंत्रसार में ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत् बताया गया हैं।

१४. पञ्चदशाक्षर – १. नमः नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालिके हूं। २. नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। **३. नमः हूं हूं हूं हूं फट् स्वाहा कालि कालिके फट्।** इस मंत्र के दक्षिणामूर्ति ऋषि, छंद पंक्ति हैं।

४. ग्रहेश्वरी काली – ॐ क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं क्रीं स्वाहा। इस मंत्र के ब्रह्माऋषि, गायत्री छन्द, देवता दक्षिणकालिका क्रीं बीजं, ह्रीं शक्ति हूं कीलक हैं।

करालवदनां शिवां करकदम्ब - काञ्चीयुताम्। धनप्रचय सुप्रभां करधृतांकुश छिन्नकाम् ॥
सुरासुर नमस्कृतां गुरुकचां शवाधिष्ठिताम्। वरामययुतां शिवां भजे कालिकां सन्तम् ॥
कलाधर-कलाधरां कलितकाल हृच्छंस्थिताम्। दिगम्बर विनोदिनीं धृतिकपालस्त्रिषकाम् ॥
वरामय करान्वितां वर नृमुण्डमालान्विताम्। भजामिभयहारिणीं कचवृतालिंकां कालिकाम् ॥
घोरां घोराट्टहासां शवकररसनां व्याप्त वक्त्रां त्रिनेत्राम्। सर्वां शर्वादि सेव्यामरूण सुवसनां कालवर्णां करालाम्।
मुण्डस्त्रग्भूषिताङ्गी परिघ शर धनुश्चक्र खड्गास्त्रवृन्दम्। दोर्वल्लीभिर्दधानां शवकरमपि सिंहाधिरूढां भजेऽहम् ॥

५. हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्।

६. विद्याराज्ञीकाली – क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। निरुत्तर तंत्र में इसके ऋष्यादि एवं ध्यान हैं। हिन्दी मन्त्र महार्णव में दक्षिणे की जगह दक्षिणकालिके लिखा हैं।

भैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्तः उष्णिक् छन्दः प्रकीर्तितम्। देवता दक्षिणाकाली अनिरूद्धसरस्वती ॥
ह्रां बीजं हूं शक्तिश्च क्रीं चैव कीलकं स्मृतम्। धमार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेत् करालास्यां पीनोन्नत - पयोधाराम्। महामेंघप्रभां श्यामां घोररावां चतुर्भुजाम् ॥
सद्यश्छिन्नशिरः खड्गं वामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम्। अभयवरदं चैव दक्षिणोर्ध्वाधः पाणिकाम् ॥
पञ्चाशदवर्णमुण्डाली गलदरुधिरचर्चिताम्। सृक्कद्वय गलद् रक्तधरा विस्फुरिताननाम् ॥

शिवाभिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् । शवानां करसङ्घातै कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ॥
दिगम्बरीं मुक्तकेशीं चन्द्रार्धकृतशेखराम् । शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ॥
महाकालेन च समं विपरीत रतातुराम् । मदिरापूर्णनयनां स्मेरानन सरोरुहाम् ॥
अट्टहासां महारौद्रीं सर्वदाऽऽनन्दकारिणीम् । एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशमानालय वसिनीम् ॥

१५. षोडशाक्षर – १. **क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।** हिन्दी तंत्रसार में इसके ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत् कहे हैं। २. भैरवेश्वरी षोडशीकाली– **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** 'कालीकल्पतरु' के अनुसार इसके **ब्रह्म ऋषि, गायत्री छंद, दक्षिणकालिकादेवता क्रीं बीजं, हूं शक्ति, ह्रीं कीलकं कहा है।** ध्यान १५ अक्षर मंत्रवत् **''करालवदनां शिवां.....''। ३. क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं हुं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा।** मेरूतंत्र के अनुसार ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। **४. ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा।** (हिन्दी मंत्र महार्णव) ॥ **५. क्रीं ह्रीं क्लीं परमेश्वरिकालिके क्रीं ह्रीं क्लीं।** (महा निर्वाण तंत्रे)। ध्यान– दशाक्षर मंत्रवत्– **''मेघङ्गीं शशिशेखरां...''**

१६. सप्तदशाक्षर – १. स्त्रीं ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा। २. **ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरिकालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा।** ध्यानादि दशाक्षर मंत्रवत्।

१७. अष्टादशाक्षर – क्रीं क्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इस मंत्र के दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिछन्दं, देवता दक्षिण कालिका हैं।

१८. विशंत्यक्षर – १. **ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं।** २. **क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। हिन्दी तंत्रसार में छंद **''विराट्''''क्रीं''** बीज, शक्ति **''ह्रीं''** बताया हैं।

१९. एकविंशत्यक्षर – १. **ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं।** ऋष्यादि सभी २२ अक्षर मंत्रवत्। २. **ॐ ह्रीं ह्रीं हुं हुं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्री।** (मेरुतंत्रे)

२०. द्वाविशंत्यक्षर – १. क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणेकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

विनियोगः– **अस्य मंत्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, दक्षिणकालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं, पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।** ध्यान पुस्तक में कादि क्रम में **''करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्.....**दिया गया है। २ लाख जप कर घृताक्त दशांश होम करें।''

षड्ङ्न्यास– **क्रां, क्रीं, क्रूं, क्रैं, क्रौं, क्रः** से न्यास करे। अन्यत्र ध्यान इस प्रकार हैं–

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीं । घोरास्यां शिरसां स्त्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त केशावलिम् ।
सृक्क्य सृक् प्रवहां श्मशाननिलियां श्रुत्या शवालंकृतिं, श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम्॥

हिन्दी तंत्रसारे–**योगिनीचक्र सहितां कालिकां भावयेत् सदा।** इत्यादि ध्यान हैं।''

२. **ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** ऋष्यादि पूर्व मंत्रवत्। **३. हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** ऋष्यादि पूर्व मंत्रवत्। **४. क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।** ऋष्यादि पूर्व मंत्रवत्। हिन्दी तंत्रसार में बीज भिन्न हैं। **''क्रीं''** बताया हैं।

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीं, चतुर्भुजां खड्गमुण्ड - वराभयकरां शिवाम् । मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बरां, एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालय वासिनीम् ॥

५. (हूं हूं के स्थानपर हुं हुं) **क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** मेरुतंत्र के अनुसार **ऋषि भैरव, त्रिष्टुप् छन्द, कालिका देवी देवता, बीज ''ह्रीं'' शक्ति ''हुं'' हैं।**

२१. त्रयोविंशत्यक्षर- १. ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ऋष्यादि २२ अक्षर मंत्रवत्। २. **ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।** हिन्दी मंत्रमहार्णव तथा मंत्र महार्णव में मंत्रमहोदाधि का प्रमाण देते हुये यह मंत्र लिखा हैं। परन्तु मंत्रमहोदधि में ''**हूं हूं**'' लिखा हैं ''**हूं हूं**'' नहीं हैं। हिन्दी मंत्रमहार्णव में ऋष्यादि न्यास में ''**क्रीं**'' बीजं एवं ''**हूं**'' शक्ति लिखा हैं।

॥ अथ श्री काली सहस्त्राक्षरी ॥

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा शुचिजाया महापिशाचिनी दुष्टचित्तनिवारिणी क्रीं कामेश्वरी वीं हं वाराहिके ह्रीं महामाये खं खः क्रोधाधिपे श्रीमहालक्ष्यै सर्वहृदय रञ्जनी वाग्वादिनीविधे त्रिपुरे हंस्त्रिं हसकहलह्रीं हस्त्रैं ॐ ह्रीं क्लीं मे स्वाहा ॐ ॐ ह्रीं ईं स्वाहा दक्षिण कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा खड्गमुण्डधरे कुरुकुल्ले तारे ॐ ह्रीं नमः भयोन्मादिनी भयं मम हन हन पच पच मथ मथ फ्रें विमोहिनी सर्वदुष्टान् मोहय मोहय हयग्रीवे सिंहवाहिनी सिंहस्थे अश्वारूढ़े अश्वमुरिप विद्राविणी विद्रावय मम शत्रून् मां हिंसितुमुद्यतास्तान् ग्रस ग्रस महानीले वलाकिनी नीलपताके क्रें क्रीं क्रें कामे संक्षोभिणी उच्छिष्टचाण्डालिके सर्वजगद्वशमानय वशमानय मातङ्गिनी उच्छिष्टचाण्डालिनी मातङ्गिनी सर्वशङ्करी नमः स्वाहा विस्फारिणी कपालधरे घोरे घोरनादिनी भूर शत्रून् विनाशिनी उन्मादिनी रों रों रों रीं ह्रीं श्रीं हसौः सौं वद वद क्लीं क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं क्रीं कति कति स्वाहा काहि काहि कालिके शम्वरघातिनि कामेश्वरी कामिके हं हं क्रीं स्वाहा हृदयाहये ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा ठः ठः ठः क्रीं हं ह्रीं चामुण्डे हृदयजनाभि असूनवग्रस ग्रस दुष्टजनान् अमून शंखिनी क्षतजचर्चितस्तने उन्नतस्तने विष्टंभकारिणि विद्याधिके श्मशानवासिनी कलय कलय विकलय विकलय कालग्राहिके सिंहे दक्षिणकालिके अनिरुद्धये ब्रूहि ब्रूहि जगच्चित्रिरे चमत्कारिणि हं कालिके करालिके घोरे कह कह तडागे तोये गहने कानने शत्रुपक्षे शरीरे मर्दिनि पाहि पाहि अम्बिके तुभ्यं कल विकलायै बलप्रमथनायै योगमार्ग गच्छ गच्छ निदर्शिके देहिनि दर्शनं देहि देहि मर्दिनि महिषमर्दिन्यै स्वाहा रिपून्दर्शने दर्शय दर्शय सिंहपूरप्रवेशिनि वीरकारिणि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा शक्तिरूपायै रों वा गणपायै रों रों रों व्यामोहिनि यन्त्रनिकेमहाकायायै प्रकटवदनायै लोलजिह्वायै मुण्डमालिनि महाकालरसिकायै नमो नमः ब्रह्मरन्ध्रमेदिन्यै नमो नमः शत्रुविग्रहकलहान् त्रिपुरभोगिन्यै विषज्वालामालिनी तन्त्रनिके मेघप्रभे शवावतंसे हंसिके कालि कपालिनि कुल्ले कुरुकुल्ले चैतन्यप्रभेप्रज्ञे तु साम्राज्ञि ज्ञान ह्रीं ह्रीं रक्ष रक्ष ज्वाला प्रचण्ड चण्डिकेयं शक्तिमार्तण्डभैरवि विप्रचित्तिके विरोधिनि आकर्णय आकर्णय पिशिते पिशितप्रिये नमो नमः खः खः खः मर्दय मर्दय शत्रून् ठः ठः ठः कालिकायै नमो नमः ब्राह्मयै नमो नमः माहेश्वर्यै नमो नमः कौमार्यै नमो नमः वैष्णव्यै नमो नमः वाराह्यै नमो नमः इन्द्राण्यै नमो नमः चामुण्डायै नमो नमः अपराजितायै नमो नमः नारसिंहिकायै नमो नमः कालि महाकालिके अनिरुद्धके सरस्वति फट् स्वाहा पाहि पाहि ललाटं भल्लाटनी अस्त्रीकले जीववहे वाचं रक्ष रक्ष परविद्या

क्षोभय क्षोभय आकृष्य आकृष्य कट कट महामोहिनिके चीरसिद्धके कृष्णरूपिणी अंजनसिद्धिके स्तम्भिनि मोहिनि मोक्षमार्गानि दर्शय दर्शय स्वाहा ॥

॥ इति श्री काली सहस्राक्षरी समाप्तम् ॥

॥ अथ काली पूजा प्रयोगः॥

काली पूजा के सभी मंत्रों के प्रयोगों में २२ अक्षर मंत्र देवता का पूजा विधान व यंत्रार्चन किया जाता हैं।

॥ १. दक्षिण काली ॥

मंत्रः- क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

यामलग्रंथों में ''दक्षिणकालिके'' भी लिखा हैं। प्रातः काल उठकर ''**क्रीं**'' मंत्र से तीन बार आचमन करे। **ॐ काल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः** से ओष्ठों का मार्जन करे। **ॐ कुल्लायै नमः** से हस्त प्रक्षालन करे।

निम्न मंत्र पढते हुये अङ्गों का स्पर्श करे- **ॐ कुरूकुल्लायै नमः मुखे। ॐ विरोधिन्यै नमः दक्षिण नासिकायां। ॐ विप्रचित्तायै नमः वाम नासिकायां। ॐ उग्रायैनमः दक्षिणनेत्रे। ॐ उग्रप्रभायै नमः वाम नेत्रे। ॐ दीप्तायै नमः दक्षिण कर्णे। ॐ नीलायै नमः वाम कर्णे। ॐ घनायै नमः नाभौ। ॐ बलाकायै नमः हृदये। ॐ मात्रायै नमः ललाटे। ॐ मुद्रायै नमः दक्षिण स्कंधे। ॐ मितायै नमः वाम स्कंधे।** इसके बाद भूतशूद्धि इत्यादि कर्म करें। ''**ह्रीं**'' बीज से प्राणायाम करे।

मंत्र विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- भैरव ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः हृदि। दक्षिणकालिकायै नमः हृदये। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हूं शक्तये नमः पादयोः। क्रीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः- **ॐ ह्रां अगुंष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यासः- **ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हुं। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यासः- **अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः हृदये। एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः दक्षिण बाहौ। ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः वाम बाहौ। णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः दक्षिण पादे। मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः वाम पादे।**

॥ अथ षोढान्यासः॥

षोढान्यासः हेतु पहले अंतर्मातृका न्यास हेतु जिन अंगों का स्पर्श लिखा हैं उन्हीं उन्हीं स्थानों में नीचे लिखें एक एक मंत्र से न्यास करते जाएं।

१. यथा- **ॐ अं ॐ नमः** ललाटे। **ॐ आं ॐ नमः** मुखवृत्ते। **ॐ इं ॐ नमः** दक्षिण नेत्रे। **ॐ ईं ॐ नमः** वामनेत्रे। **ॐ उं ॐ नमः** दक्षकर्णे। **ॐ ऊं ॐ नमः** वामकर्णे। **ॐ ऋं ॐ नमः** दक्ष नासायाम्। **ॐ ॠं ॐ नमः** वाम नासायाम्। **ॐ लं ॐ नमः** दक्षगण्डे। **ॐ लॄं ॐ नमः** वामगण्डे। **ॐ एं ॐ नमः** उर्ध्व ओष्ठे। **ॐ ऐं ॐ नमः** आधो ओष्ठे। **ॐ ओं ॐ नमः** उर्ध्वदंतपंक्तौ। **ॐ औं ॐ नमः** अधोदंतपंक्तौं। **ॐ अं ॐ नमः** शिरसि। **ॐ अः ॐ नमः** मुखे। **ॐ कं ॐ नमः** दक्षबाहुमूले। **ॐ खं ॐ नमः** दक्षकर्पूरे। **ॐ गं ॐ नमः** दक्षिण मणिबंधे। **ॐ घं ॐ नमः** दक्ष करतले। **ॐ ङं ॐ नमः** दक्ष कराग्रे। **ॐ चं ॐ नमः** वामबाहुमूले। **ॐ छं ॐ नमः** वामकपूरे। **ॐ जं ॐ नमः** वाममणिबंधे। **ॐ झं ॐ नमः** वाम करतले। **ॐ ञं ॐ नमः** वामकराग्रे। **ॐ टं ॐ नमः** दक्षोरुमूले। **ॐ ठं ॐ नमः** दक्ष जानुनि। **ॐ डं ॐ नमः** दक्ष गुल्फे। **ॐ ढं ॐ नमः** दक्षपादतले। **ॐ णं ॐ नमः** दक्षपादाग्रे। **ॐ तं ॐ नमः** वामोरुमूले। **ॐ थं ॐ नमः** वामजानुनि। **ॐ दं ॐ नमः** वामगुल्फे। **ॐ धं ॐ नमः** वामपादतले। **ॐ नं ॐ नमः** वामपादाग्रे। **ॐ पं ॐ नमः** दक्ष पार्श्वे। **ॐ फं ॐ नमः** वामपार्श्वे। **ॐ बं ॐ नमः** पृष्ठे। **ॐ भं ॐ नमः** नाभौ। **ॐ मं ॐ नमः** जठरे। **ॐ यं ॐ त्वगात्मने नमः** हृदि। **ॐ रं ॐ असृगात्मनें नमः** दक्षांशे **ॐ लं ॐ मांसात्मने नमः** कुकुदि। **ॐ वं ॐ मेदात्मने नमः** वामांशे। **ॐ शं ॐ अस्थ्यात्मने नमः** हृदयादि दक्ष करांगुल्यन्तम्। **ॐ षं ॐ मज्जात्मने नमः** हृदयादि वाम करांगुल्यन्तम्। **ॐ सं ॐ शुक्रात्मने नमः** नाभ्यादि दक्षपादान्तम्। **ॐ हं ॐ जीवात्मने नमः**। नाभ्यादि वामपादान्तम्। **ॐ लं ॐ परमात्मने नमः** हृदयादि कुक्षौ। **ॐ क्षं ॐ ज्ञानात्मने नमः** हृदयादि मुखे।

२. ॐ को एक एक मातृकावर्ण से पुटित करके उपरोक्त प्रत्येक अंगों में न्यास करे। यथा- **अं ॐ अं ललाटे। आं ॐ आं मुखवृत्ते......।**

३. मातृका वर्णो को **''श्रीं''** से पुटित कर पूर्वादि क्रम से ललाटादि से संपूर्ण न्यास करे। यथा- **श्रीं अं श्रीं ललाटे। श्री आं श्रीं मुखवृत्ते।** इत्यादि क्रम से करें।

४. **''श्रीं''** बीज को प्रत्येक मातृका वर्णे से संपुटित करके न्यास करे। यथा- **अं श्रीं अं ललाटे। आं श्रीं आं मुखवृत्ते।** इत्यादि क्रम से आगे के न्यास करे।

५. **''क्लीं''** बीज से मातृका वर्णो को संपुटित कर न्यास करें। यथा- **क्लीं अं क्लीं ललाटे। क्लीं आं क्लीं मुखवृत्ते।** इत्यादि क्रम से आगे के न्यास करे।

६. **''क्लीं''** बीज को प्रत्येक मातृका वर्ण से संपुटित करके न्यास करे। यथा- **अं क्लीं अं ललाटे। आं क्लीं आं मुखवृत्ते। इं क्लीं इं दक्षिण नेत्रे** इत्यादि क्रम से आगे के न्यास करें।

७. **''ह्रीं''** बीज से मातृका वर्णों को संपुटित कर न्यास करें। यथा- **ह्रीं अं ह्रीं ललाटे। ह्रीं आं ह्रीं मुखवृत्ते।** इत्यादि क्रम से आगे के न्यास करे।

८. **''ह्रीं''** बीज को प्रत्येक मातृका वर्ण से संपुटित कर न्यास करें। यथा- **अं ह्रीं अं ललाटे। आं ह्रीं आं मुखवृत्ते।** इत्यादि क्रम से आगे के न्यास करें।

९. **क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृ लॄं क्रीं क्रीं** बीजाक्षरों से प्रत्येक मातृका वर्ण को संपुटित कर न्यास करें। यथा- **क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृ लॄं क्रीं क्रीं ''अं'' क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृ लॄं क्रीं क्रीं नमः ललाटे। क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं लॄं क्रीं क्रीं ''आं'' क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृ लॄं क्रीं क्रीं नमः मुखवृत्ते।** इत्यादि क्रम से आगे के न्यास करे।

१०. प्रत्येक मातृकावर्ण से **''क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं लॄं''** क्रीं क्रीं को संपुटित कर न्यास करें। यथा अं **''क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं लॄं'' अं नमः ललाटे। आं ''क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं लॄं'' आं नमः मुखवृत्ते।**

११. "क्रीं" बीज से प्रत्येक मातृका वर्ण को संपुटित करे। यथा- **क्रीं अं क्रीं ललाटे। क्रीं आं क्रीं मुखवृत्ते।** इस तरह सभी न्यास करें।

१२. "**क्रीं**" बीज से प्रत्येक मातृका वर्ण से संपुटित कर न्यास करे। यथा- **अं क्रीं अं ललाटे। आं क्रीं आं मुखवृत्ते।** इस तरह आगे के सभी न्यास करें।

१३. विलोम मातृका- क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं इं ईं आं अं के प्रत्येक वर्णो को "**क्रीं**" बीज से संपुटित करे विलोम क्रम से अंगों में न्यास करें। यथा- **क्रीं हं क्रीं नाभ्यादि वाम पादान्तम्। क्रीं सं क्रीं नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्।** इस तरह पूरी विलोम मातृका से न्यास करें।

१४. उपरोक्त विधि से विलोम न्यास प्रत्येक मातृका वर्ण से "**क्रीं**" बीज को पुटित कर उपरोक्त विधि से विलोम न्यास करे। यथा- **हं क्रीं हं नाभ्यादि वाम पादान्तम्..... अं क्रीं अं** ललाटे तक न्यास करें। १५. १०८ बार मूलमंत्र से 'व्यापक न्यास' करें।

तत्व न्यासः- **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा पादादि नाभ्यान्तम्। दक्षिणे कालिके ॐ विद्या तत्त्वाय स्वाहा नाभ्यादि हृदयपर्यन्तम्। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॐ शिव तत्त्वाय स्वाहा हृदयादि मस्तकान्तम्।**

बीजन्यास- **क्रीं नमः ब्रह्मरंध्रे। क्रीं नमः भ्रूमध्ये। क्रीं नमः ललाटे। हूं नमः नाभौः हूं नमः गुह्ये। ह्रीं नमः मुखे। ह्रीं नमः सर्वाङ्गे।**

॥ गुह्य षोढान्यासः॥

श्यामा पूजा में **षोढान्यास** विधि दी गई है। उस विधि के अनुसार मंत्रों से मातृकान्यास की तरह प्रत्येक अंगों मं न्यास करें।

१. क्रीं क्रीं क्रीं मंत्र से न्यास करें।

२. प्रत्येक मातृकावर्ण को **हूं हूं** से पुटित करें। यथा - **हूं हूं अं हूं हूं, हूं हूं आं हूं हूं।**

३. **अं हूं हूं अं, आं हूं हूं आं** इस तरह से **हूं हूं** को प्रत्येक मातृकावर्ण से पुटित कर न्यास करें।

४. **ह्रीं ह्रीं अं ह्रीं ह्रीं, ह्रीं ह्रीं आं ह्रीं ह्रीं** इस तरह से प्रत्येक मातृकावर्ण को पुटित कर न्यास करें।

५. **अं ह्रीं ह्रीं अं, आं ह्रीं ह्रीं आं** इस तरह से प्रत्येक मातृकावर्ण से **ह्रीं ह्रीं** को पुटित कर न्यास करें।

६. **दक्षिणे कालिके अं दक्षिणे कालिके ....** इस तरह से प्रत्येक मातृकावर्णों को **दक्षिणे कालिके** से पुटित कर न्यास करें।

७. **अं दक्षिणे कालिके अं ....** इस तरह से दक्षिणे कालिके को प्रत्येक मातृकावर्ण से पुटित कर न्यास करें।

८. **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा "अं" क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** इस तरह प्रत्येक मातृकावर्ण को पुष्टित कर न्यास करें।

९. **अं "क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा" अं।** इस तरह मध्य के नवाक्षरों को प्रत्येक प्रत्येक मातृकावर्ण से पुटित कर न्यास करें।

॥ हंस षोढान्यास: ॥

हंस षोढान्यास को **देहरक्षा न्यास** भी कहते है। इसका विनियोग काली देहार्थ होता है। **''हंस:''** से षडङ्गन्यास करके **कण्ठ, हृदय, नाभि, लिङ्ग, गुह्य और सर्वाङ्ग** (व्यापक) क्रमश: छ: स्थानों में न्यास करके अंत में **५० बार ''हंस:'' मंत्र** से **व्यापक न्यास** करें।

उपरोक्त न्यासों के करने से पूजा की अङ्गहानि नहीं होती। न्यासों के करने से अधिक फल की प्राप्ति होती हैं। पश्चात् पुन: सातबार 'व्यापक न्यास' करे। हृदय कमल में देवीं का ध्यान करे। कादि क्रम के अनुसार (पुस्तक में कालीतंत्र के प्रारम्भ में)-**''करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्''** ......का ध्यान करे।

पात्रा सादन- पात्रा सादन की विशेष विधि अलग से दी गई हैं। उसके अनुसार शंख स्थापन, अर्ध्यपात्र, पंचमकार शोधन, श्रीपात्र, गुरु पात्र, वीरपात्र, भोगपात्र, शक्ति पात्रादि का स्थापन करे। पुन: साधारणत: इस प्रकार करें-

शंख स्थापन- अपने वाम भाग में त्रिकोण बनाये। मध्य में **''हुं''** बीज लिखे। उस पर शङ्खादि अर्ध्यपात्र स्थापित कर मूल मंत्र से जलपूरित करे। जल में गंधादि छोड़ कर गंगादि तीर्थो का आवाहन करें।

अग्नि, सूर्य व चन्द्र की कलाओं का पूजन करे। **''रं वह्नि मण्डलाय दशकलात्मने नम:''** से आधार का पूजन करें। **''अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने नम:''** से पात्र का, **''ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नम:''** से पात्रस्थ जल का पूजन करें। अर्ध्यपात्र के अग्निकोणे में **''ॐ ह्रां हृदयाय नम:''** ईशानकोण में **''ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा''**। नैऋत्यकोण में **''ॐ ह्रूं शिखायै वौषट्''**। वायव्य कोण में **''ॐ ह्रैं कवचाय हुं''**। अग्रभाग में- **''ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्''**। चारों दिशाओं- **''ॐ ह्र: अस्त्राय फट्''**। अर्ध्यपात्र के ऊपर 'मत्स्यमुद्रा' बनाकर दस बार मूलमंत्र का जप करें। 'धेनुमुद्रा' दिखाकर अमृतीकरण करे। **अस्त्राय फट्** से अवगुण्ठन का रक्षा करे। तब भूतिनी व योनि मुद्राएं दिखावे। अर्ध्यपात्र का कुल ज़ल प्रोक्षणी पात्र में छोड़े। फिर उस जल को अपने शरीर व पूजन उपकरणों पर छिड़क कर उनका शोधन करें।

॥ काली यंत्र पूजनम् ॥

सर्वप्रथम ''०'' बिन्दु का निर्माण करे। पश्चात् **''क्रीं''** एवं **''ह्रीं''** दो बीज मंत्र लिखे। तव पाँच अधोमुखी त्रिकोण बनाये। कहीं पर चार त्रिकोण व अन्यत्र तीन त्रिकोण का भी लेख हैं। परन्तु उनमें कुल १५ देवियों की विधान सर्वत्र संकलित किया हैं। त्रिकोणों पर वृत्त बनाये, उसके बाद अष्टदल बनाये। पुन: वृत्त बनाकर बाहर् चतुर्द्वार युक्त भूपूर बनाये। इस पूजा यंत्र का निर्माण शनि या मंगल के दिन स्वर्ण पात्र, रोप्यपात्र अथवा ताम्रपात्र पर या महाशङ्ख, श्मशान की लकड़ी या शव पर बनाये।

पीठ पूजा- उक्त पूजा यंत्र में पीठ पूजा करें।

यथा- **ॐ आधार शक्तये नम:, ॐ प्रकृत्यै नम:, ॐ कमठाय नम:, ॐ शेषाय नम:, ॐ पृथिव्यै नम:, ॐ सुधाम्बुधये नम:, ॐ मणिद्वीपाय नम:, ॐ चिंतामणि गृहाय नम:, ॐ श्मशानाय नम:, ॐ परिजात तरवे नम:, तन्मूले ॐ रत्नवेदिकायै नम:**, तस्योपरि- **ॐ मणिपीठाय नम:**, चतुर्दिक्षु- **ॐ मुनिभ्यो नम:, ॐ देवेभ्यो नम:, ॐ शिवेभ्यो नम:, ॐ शवमुण्डेभ्योनम:**। पूर्वे- **धं धर्माय नम:**, दक्षिणे- **ॐ ज्ञां ज्ञानाय नम:**, पश्चिमे- **ॐ ऐं ऐश्वर्याय नम:**, उत्तरे- **ॐ वैं वैरारग्याय नम:**। अग्निकोणे- **अं अधर्माय नम:**, नैऋते- **अं अज्ञानाय नम:**। वायवे- **अं अनैश्वर्याय नम:**। ईशाने- **अं अवैराग्याय नम:**। मध्ये **ह्रीं ज्ञानात्मने नम:**। केशरों में पूर्वादि क्रम से- **ॐ इच्छायै नम:, ॐ ज्ञानायै नम:, ॐ क्रियायै नम:, ॐ कामिन्यै नम:, ॐ कामदायिन्यै नम:, ॐ रत्यै नम:, ॐ**

रतिप्रियायै नमः, ॐ नन्दायै नमः, मध्ये- **ॐ मनोन्मन्यै नमः।** तदुपरि- **ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मसनाय नमः।** पश्चात् इष्ट देवता का ध्यान पूर्वक आवाहन करें।
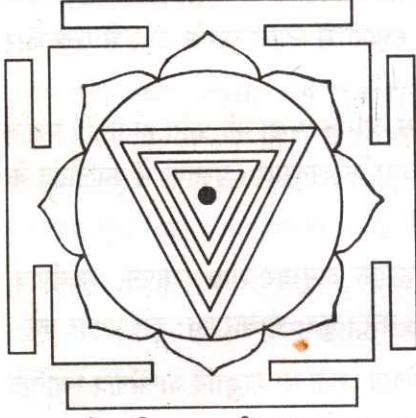
॥ श्री दक्षिण काली यन्त्रम् ॥

यंत्रार्चन- प्रस्तुत प्रकरण में पांच त्रिकोण की पूजा दी गई हैं। यदि "चार त्रिकोण" बनाये हैं तो पूजा इस प्रकार करें- प्रथम त्रिकोण में ६ देवियाँ हैं अतः प्रत्येक कोण में दो दो देवियों का पूजन करे।

ॐ काल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नम। ॐ कुल्वायै नमः, ॐ कुरुकुल्वायै नमः। ॐ विरोधिन्यै नमः। ॐ विप्रचित्तायै नमः। अन्यत्र कुल्ला एवं कुरुकुल्ला नाम भी प्रयोग में आता हैं। द्वितीय त्रिकोण में- **ॐ उग्रायै नमः, ॐ उग्रप्रभायै नमः, ॐ दीप्तायै नमः,।** तृतीय त्रिकोण में- **ॐ नीलायै नमः, ॐ घनायै नमः, ॐ बालाकायै नमः।** चतुर्थ त्रिकोण में- **ॐ मात्रायै नमः, ॐ मितायै नमः, ॐ मुद्रायै नमः।** जहां तीन त्रिकोण बनाये हैं उनमें ऊपर जो पहले त्रिकोण वाली पूजा लिखी हैं वह मध्यबिन्दु के चारों ओर ६ कोणों में करे जैसाकि हृदयादि षडङ्ग देवताओं का पूजन देवी के पास होता है। शेष तीन त्रिकोण के देवताओं का पूजन ऊपर जो दूसरे, तीसरे, चौथे त्रिकोण में कहा हैं उनका पूजन करे।

॥ पंचत्रिकोणात्मक यंत्र पूजा विधानम् ॥

पीठ पर भगवती काली का आवाहन, पूजन गंधादि द्वारा करे, पुष्पांजलि लेकर आवाहन करें।

ध्यानम् :- अलग-अलग तंत्रों में क्रिया भेद से विविध ध्यान है।

चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमाला विभूषिताम्।
खड्ग च दक्षिणो पाणौ विभ्रतीन्दीवर - द्वयम्।
द्यां लिखन्ती जटायेकां विभ्रति शिरसाद्वयीम्॥
मुण्डमालाधरां शीर्षे ग्रीवायामय चापराम्।
वक्षसा नागहारं च विभ्रतीं रक्तलोचनां॥
कृष्ण वस्त्रधरां कट्यां व्याघ्राजिन समन्विताम्।
वामपदं शव हृदि संस्थाप्य दक्षिण पदम्॥
विलसद् सिंह पृष्ठे तु लेलिहानासव पिबम्॥
सट्टहासा महाघोर रावै मुक्ता सुभीषणा॥

अथ द्वाविंशक्षर मन्त्रः - क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

कालिका यन्त्र ३-४ तरह के होते है। बिन्दु त्रिकोण, षट्कोण पुनः त्रिकोण **(कहीं ३ त्रिभुज तो कहीं ५ त्रिभुज हैं)** उन पर अष्टदल एवं भूपूर है। इनमें **खड्गमाला यन्त्र** अधिक प्रभावी है उसी का यंत्रार्चन निम्न प्रकार से है -

विनियोग - **ॐ अस्य श्री दक्षिण कालिका खड्गमाला यंत्र मन्त्रस्य श्री भगवान महाकालभैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, शुद्धककार त्रिपञ्च भट्टारक पीठ स्थित महाकालेश्वराङ्कनिलया महाकालेश्वरी त्रिगुणात्मिका श्रीमद्दक्षिणकालिका महाभय हरिका देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्ति, हूं कीलकं, मम सर्वारिष्ट शमनार्थं द्वारा**

सर्वकामना सिद्धयर्थे अर्चने विनियोगः।

अथ प्रथमावरणम् – (बिन्दु में) निम्नलिखित आवरण देवताओं के नाम मंत्रों के आरंभ में **'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं तथा अंत में श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा'** युक्त पुष्प गंधाक्षत् से पूजन दाहिने हाथ से ज्ञानमुद्रा से तथा कारण पात्र अर्घजल से पञ्चामृत मिश्रित कर तर्पण पात्र से तर्पण स्वयं ही करे तो बाँयें हाथ से तत्वमुद्रा से करें। या अलग-अलग पात्रों से करे तो पात्रा सादन करें। पूजन यन्त्र पर करें या सामने कोई पात्र रख लें उसमें करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्रीमद्दक्षिणकालिका खड्गमुण्डवराभयकरा महाकाल भैरव सहिता श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

बिन्दु में ही भगवती के षडाङ्गों में – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री क्री हूं ह्रीं श्री हृदय देवी सिद्धि कालिकामयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री शिरोदेवी महाकालिकामयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री शिखादेवी गुह्य कालिकामयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री कवचदेवी श्मशानकालिकामयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री नेत्रदेवी भद्रकालीकामयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री अस्त्रदेवी श्रीमद्दक्षिणकालिकामयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.॥**

सर्व सम्पत्प्रदायक चक्रस्वामिने नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्चेन संतृप्त।

अथ द्वितीयावरणम् – (बिन्दु के चारों ओर) **ॐ सर्वमङ्गलमयि चक्रस्वामिनि द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः।** पुष्प छोड़ें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं जया सिद्धिमयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं नित्या सिद्धिमयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं अपराजिता सिद्धिमयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं अघोरा सिद्धिमयी श्री पा. पू. न. त. स्वा.।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितियावरणार्चनम्॥

पुष्पांजलि अर्पण करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** से अर्चेन संतृप्त।

तृतीयावरणम् – सर्वसम्पत्प्रदायक चक्र स्वामिनि तृतीयावरण देवताभ्यो नमः। पुष्प समर्पण करें। बिन्दु के बाँयीं ओर –

दिव्यौघगुरु – **ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो नमः।** पुष्पाञ्जलि देवें। नाममंत्रों से पूर्व **''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं'' महादेव्यम्बामयी ''श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।''** का उच्चारण करें। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं नहादेवानन्दनाथमयी श्रीपादु. पूज. त. स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं त्रिपुराम्बामयी श्रीपादु. पूज. नमः त. स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं त्रिपुरभैरवानन्दनाथमयी श्रीपादु. पूज. नमः त. स्वाहा।**

सिद्धौघगुरु :- **ॐ सिद्धौघ गुरुभ्यो नमः।** पुष्पांजलि देवें। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं ब्रह्मानन्दनाथमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। पूर्वदेवानन्दनाथमयी.। चलच्चितानन्दनाथमयी.। लोचनानन्दनाथमयी.। कुमारानन्दनाथमयी.। क्रोधानन्दनाथमयी.। वरदानन्दनाथमयी.। स्मरद्वीयानन्दनाथमयी.। मायाम्बामयी.।**

मायावत्यम्बामयी.।

मानवौघगुरु – **ॐ मानवौघ गुरुभ्यो नमः।** पुष्पाञ्जलि देवें। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं विमलानन्दनाथमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। कुशलानन्दनाथमयी.। भीमसुरानन्दनाथमयी.। सुधाकरानन्दनाथमयी.। मीनानन्दनाथमयी.। गोरक्षकानन्दनाथमयी.। भोजदेवानन्दनाथमयी.। प्रजापत्यानन्दनाथमयी.। मूलदेवानन्दनाथमयी.। रन्तिदेवानन्दनाथमयी.। विघ्नेश्वरानन्दनाथमयी.। हुताशनानन्दनाथमयी.। समरानन्दनाथमयी.। संतोषानन्दनाथमयी.।**

चतुर्थावरणम् – बिन्दु से बाँयीं ओर –

स्वगुरुक्रम – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं अमुक स्वगुरु सशक्तिं श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। परमगुरु सशक्तिं.। परात्परगुरु सशक्तिं.। परमेष्ठिगुरु सशक्तिं.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** से अर्घेन संतृप्त।

अथ पञ्चमावरणम् – **ॐ सर्वोप्सित फलप्रदायक चक्र स्वामिनि पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः** कहकर पुष्पाञ्जिलि अर्पण करें। पाँचों त्रिकोणों में प्रत्येक के कोणों का अर्चन करें।

प्रथम त्रिकोणे – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्रीकालीदेवी नित्यमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। श्रीकपालिनीदेवी नित्यमयी.। कुल्ला देवी नित्यमयी.।** द्वितीय त्रिकोणे – **कुरुकुल्लादेवी नित्यमयी.। विरोधिनीदेवी नित्यमयी.। विप्रचित्तादेवी नित्यमयी.।** तृतीय त्रिकोणे – **उग्रादेवी नित्यमयी.। उग्रप्रभादेवी नित्यमयी.। दीप्तादेवी नित्यमयी.।** चतुर्थ त्रिकोणे – **नीलादेवी नित्यमयी.। घनादेवी नित्यमयी.। बलाकादेवी नित्यमयी.।** पञ्चम त्रिकोणे – **मात्रादेवी नित्यमयी.। मुद्रादेवी नित्यमयी.। मितादेवी नित्यमयी.।**

ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** से अर्घेन संतृप्त।

अथ षष्ठमावरणम् – अष्टदल के मूल में – **ॐ त्रैलोक्यमोहन चक्रस्वामिनि षष्ठमावरण देवताभ्यो नमः। पुष्पं समर्पयामि** प्रत्येक नामाक्षर के पहिले **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं (सात बीजाक्षर)** लगावें तथा **श्रीपा. पू. नमः तर्प. स्वाहा** बोलकर तर्पण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं ब्राह्मीदेवी मयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। नारायणीदेवी.। माहेश्वरीदेवी.। चामुण्डादेवी.। कौमारीदेवी.। अपराजितादेवी.। वाराहीदेवी.। नारसिंहीदेवी.।

ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्टमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** से अर्घेन संतृप्त।

अथ सप्तमावरणम् – (अष्टदल के मध्य में) –

ॐ सर्व संक्षोभण चक्र स्वामिनि सप्तमावरण देवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जली समर्पयामि। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं असिताङ्ग भैरवमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। रुरुव भैरवमयी.। चण्ड भैरवमयी.। क्रोध भैरवमयी.। उन्मत्त भैरवमयी.। कपालि भैरवमयी.। भीषण भैरवमयी.। संहार भैरवमयी.।**

ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** से अर्धेन संतृप्त।

अथ अष्टमावरणम् – (अष्टदल के अग्रभाग में) – **ॐ सर्व सौभाग्य दायक चक्र स्वामिनि अष्टमावरण देवताभ्यो नमः।** इस प्रकार कहकर पुष्पाञ्जली प्रदान करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं हेतु वटुकानन्दनाथमयी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। त्रिपुरान्तकानन्दनाथवटुकमयी.। वेतालवटुकानन्दनाथमयी.। वह्निजिह्वानन्दनाथवटुकमयी.। कालानन्दनाथ वटुकमयी.। करालानन्दनाथवटुकमयी.। एकपादानन्दनाथवटुकमयी.। भीमानन्दनाथवटुकमयी.।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** से अर्धेन संतृप्त।

अथ नवमावरणम् – अष्टदल के बाहर – **ॐ सर्वार्थदायक चक्र स्वामिनि नवमावरण देवताभ्यो नमः।** पुष्पाञ्जिली प्रदान करें। नाम मंत्रों के आरंभ में **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा, अमुक योगिनि देवीमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा'** जोड़ें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा सिंह व्याघ्रमुखी योगिनि देवीमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। सर्पमुखी योगिनी देवीमयी.। मृगमेषमुखी योगिनी देवीमयी.। गजवाजिमुखी योगिनी देवीमयी.। विडालमुखी योगिनी देवीमयी.। क्रोष्टामुखी योगिनी देवीमयी.। लंबोदरीमुखी योगिनी देवीमयी.। ह्रस्वजंघा तालजंघा प्रलम्बोणी.।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्धेन संतृप्त।

अथ दशमावरणम् – भूपूर में पूर्वादिक्रमेण (**सर्व संक्षोभण चक्र स्वामिनि दशमावरणम् देवताभ्यो नमः** पुष्पांजलि देवें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं वज्र सहिताय इन्द्रमयी देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। शक्तिसहिताय अग्निमयी देवी.। दण्डसहिताय यममयी देवी.। खड्गसहिताय निर्ऋतिमयी देवी.। पाशसहिताय वरुणमयी देवी.। अङ्कुशसहिताय वायुमयी देवी.। गदासहिताय कुबेरमयी देवी.। त्रिशूलसहिताय ईशानमयी देवी.। पद्मसहिताय ब्रह्ममयी देवी.। चक्रसहिताय अनन्तमयी देवी पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **ॐ सर्वरक्षाकर चक्रस्वामिने दशमावरण देवताभ्यो नमस्ते नमस्ते स्वाहा।** पूजिताः तर्पिताः **सन्तु** से जल छोड़ें।

सब देवताओं का पूजन तर्पण करने के बाद तीन पुष्पाञ्जलियाँ देवे।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥

एकादशावरणम् – देवी के दाहिने भाग में धूम्रवर्ण महाकाल का ध्यान करे।

बिभ्रतं दण्ड खट्वाङ्गौ दंष्ट्रा भीममुखे शिशुम्। व्याघ्रचर्मावृत कटिं तुन्दिलं रक्तवाससम् ॥
त्रिनेत्रमूर्ध्वकेशं च मुण्डमाला विभूषितम्। जटाभार लसच्चन्द्रं खड्गमुग्र ज्वलन्निभम् ॥

निम्न मंत्र से पाद्यादि उपचारों से उनका पूजन करें। **हुं क्ष्रौं यां रां लां वां क्रों महाकाल भैरव सर्वविघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।**

तदनन्तर देवी के अस्त्रों का पूजन करें- देवी के वामभाग में ऊपर के हाथ में **''ॐ खड्गाय नमः''** और नीचे के हाथ में **''ॐ मुण्डाय नमः''**। देवी के दाहिने भाग के ऊपर के हाथ में **''ॐ अभयाय नमः''** और नीचे के हाथ में **''ॐ वराय नमः''** से पूजन करें।

द्वादशावरणम् - भूपुर के चारों द्वारों एवं ईशान में पूजन करें। यथा - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं बटुकानन्दनाथमयी श्री पा. पू.। योगिनी.। क्षेत्रपालानन्दनाथ.। गणनाथानन्दनाथ.। सर्वभूतानन्दनाथ.।**

पश्चात् धूप दीपादि से नैवेद्यादि पर्यन्त पूजन करे। आरती करे। पुष्पांजलि देवे। मूलमंत्र का जप कर देवि के अर्पण करें-

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् महेश्वरि॥ वीराचार कर्म वाले पंचमकारों का पूजन कर रात्रि में शिवाबलि कर्म करें। जप के बाद स्तव एवं कवच का पुनः पाठ करें। तब देवी के अङ्ग में आवरण देवताओं को विलीन कर संहार मुद्रा से **''श्री दक्षिण कालिके देवि! क्षमस्व**। इस मंत्र से हृदय में देवी का विर्सजन करता हुआ और पुष्प के सहित देवी का तेज अपने हृदय में स्थापित करें।

ईशान कोण में उच्छिष्ट चाण्डालिनी को नैवद्य प्रदान करें।

मंत्र- ॐ उत्तरे शिखरे देवि! भूम्यां पर्वतवासिनी। '' ब्रह्मयोनि समुत्पन्ने गच्छ देवि ममान्तरम्॥ अवशिष्ट प्रसाद ग्रहण करे। पादोदक पान कर निर्माल्य मस्तक पर धारण करे। यंत्र का चंदनादि वाम हस्त में लेकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा से **''ह्रीं''** बीज लिखकर उसी अंगुलि से अपने लगावे।

मंत्र- ॐ यं यं स्पृशामि पादाभ्यां यो मां पश्यति चक्षुषा। स एव दासतां यातु राजानो दुष्ट दस्यवः॥ कहीं कहीं दासतां यातु के बाद **''स एव शक्र समोभवेत्''** भी पढा जाता हैं। दो लाख जप का पुरश्चरण कहा हैं।

जप का दशांश होम कनेर के फूलों से करे। जो साधक स्त्री के मदनावास (योनि)को देखते हुये १० हजार जप करता हैं वह बृहस्पति के समान होकर आयु एवं धनवृद्धि को प्राप्त करता हैं। नग्न होकर बालों को खुलाकर श्मशान में दश हजार जप करने से सभी कामनायें सिद्ध होती हैं। श्मशान में मुर्दे के हृदय पर बैठकर अपने वीर्य से युक्त एक हजार मदार (अर्क) के पुष्पों से देवी का पूजन भक्ति पूर्वक एक एक पुष्प अर्पण करते हुये करें तो पृथ्वीपति हो जाता हैं। रजस्वला स्त्री के भग को देखता हुआ दश हजार जप करे कवि होंवे। हविष्यान्न का सेवन करता हुआ जप करे तो विद्या, लक्ष्मी एवं यश को प्राप्त करें। यदि भैंसे एवं पशुओं के रक्त से कालिका का तर्पण करता है उसको शीघ्र सिद्धि प्राप्त होंवे। यदि मंत्रवित् शव पर बैठकर एक लाख जप करे तो समस्त अभीष्ट को प्राप्त करें। जो सदा काली की पूजा करता हैं ऐसा मानों कि उसने पूर्वभव में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गौरी, लक्ष्मी, गणपति और सूर्य की उपासना करली हैं।

॥ २. भद्रकाली ॥

इस विद्या की उपासना पश्चिमाम्नाय मत से की जाती हैं। यह वैरिभय-निवारण के लिये प्रशस्त हैं। इसके चतुर्दशाक्षरी मंत्र के आदि में संहारसूचक रौद्र बीज **(हौं)** है। इसके दों रूप मुख हैं। **१. विपरीतप्रत्यंगिरा**

२. षोडशभुजी दुर्गाभद्रकाली।

१. विपरीतप्रत्यंगिरा- यह संहारात्मिका है, शत्रुकृत अभिचार को वापस लौटाती हैं एवं शत्रु का नाश करती है।

इसका विस्तृत विधान पुस्तक में पृथक से दिया गया हैं। विपरितप्रत्यंगिरा भद्रकाली का दूसरा ध्यान १४ अक्षर मंत्र में दिया गया हैं।

२. षोडशभुजी दुर्गाभद्रकाली– इसका कालिका पुराण में ''**योगनिद्रा महामाया...**'' ध्यान दिया गया हैं। यह दुर्गा स्वारूपा विद्या हैं। अतः जयदुर्गा के मंत्र और विधान से छहों आम्नायों द्वारा इसकी उपासना होती हैं। **यही महिषासुर मर्दिनी** हैं। इसकी उपासना से षट् ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। इसीको **चण्डी काली** भी कहते हैं। चामुण्डा को भी चण्डी काली कहते हैं। कोई कोई **चण्डिका** को भी **चण्डीकाली** कहते हैं। परन्तु चण्डिका व चामुण्डा में भेद हैं। चण्डिका ''**स्वाहा**'' स्वरूप हैं तथा चामुण्डा– ''**विच्चे**'' स्वरूप हैं।

षोडशभुजा दुर्गाभद्रकाली– (कालिका पुराणे) का ध्यान–

**योगनिद्रा महामाया जगद्धात्री जगन्मयी । भुजैः षोडशभिर्युक्ता भद्रकालीति विश्रुता ॥
क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम् । अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्-काञ्चन - कुण्डला ॥
जटाजूटमखण्डेन्दु मुकुटत्रय-भूषिता । नागहारेण सहिता स्वर्णहार विभूषिता ॥
शूलं खड्गं च शंङ्खं च चक्रं वाणं तथैव च । शक्तिं वज्रञ्च दण्डं च नित्यं दक्षिण बाहुभिः ॥
विभ्रतीं सततं देवी विकाशि नयनोज्ज्वला । खेटकं चर्मचापं च पाशं चांकुशमेव च ॥
घण्टां च परशुञ्चैव मुशलं वाणपाणिभिः । सिंहस्था नयनैः रक्तवर्णैस्त्रिभिरभिज्ज्वला ॥
शूलेन महिषं भित्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी । वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी ॥**

१. अष्टाक्षर– क्रीं भद्रकाली क्रीं स्वाहा। पुरश्चरण २२ अक्षरात्मक दक्षिण कालिका मंत्रवत्।

२. दशाक्षर– ॐ फ्रें स्त्रीं हुं ह्रीं क्रों आं ह्स्ख्फ्रे क्लीं ह्रीं। विधान दक्षिणकालिकावत्।

**सिंहोपरिसमासीनं मसीपुञ्ज समप्रभां । भ्रुकुट्यराल वदनां त्रीक्षणं घोरदर्शनाम् ।
शार्दूलत्वक् परीधानां विष्वग् विस्तारिताननां, अत्यन्तशुष्क सर्वाङ्गीं ललज्जिह्वा करालिनीम् ॥
त्रेतागर्तस्थिता त्र्यग्रसमान - नयनां शिवां, नरमुण्डावलीहारां नादापूरित पुष्कराम् ।
ज्वलद्धुतवहाकार विस्त्रस्त - कचसञ्चयां, नरास्थिकृत सर्वाङ्गभूषणां जगदम्बिकाम् ॥
कोटि कोटि महाघोरयोगिनीगण मध्यगां, कालीं दशभुजां सृक्क गलदरुधिरचर्चिताम् ।
खड्गं त्रिशूलं विशिखं शक्तिं दक्षिणतः स्मरेत्, फलकं डमरुं चापं कपालं वामतोऽपि च ॥
व्यादाय वदनं घोरं दंष्ट्राभिः पूरितान्तरं, लेलिहान चलद् विद्युत् समान रसनं महत् ।
दानवासुर दैत्यानां कोटिमर्बुदमेव च । धारयित्वा च धृत्वा च सार्द्धं कट -कटा खैः ॥
प्रक्षिप्य तत्र बाहुभ्यां चर्वयन्तीं हसन्मुखीं । गिलन्तीं पूरयन्तीं च पाताल तुलितोदराम् ॥**

चतुर्दशाक्षर – (१) हौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा। कुछ विद्वानों का मत हैं कि इसकी पूजा पद्धति दक्षिण कालिका की पद्धति से करे।

**क्षुत्क्षामा कोटराक्षि मसिमलिनमुखी मुक्तकेशीं रुदन्ती, नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनलशिखा सन्निभं पाशयुग्मम्, दन्तैर्जम्बूफलाभैः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥**

यह प्रबल संहारिणी शत्रु निग्रह कारिणी हैं। हिन्दी तंत्रसार में इसकी महिमा बताते हुये पुरश्चरण मात्र एक हजार जप का बताया हैं।

(२) हौं कालि महाकालि कालि कालि फट् स्वाहा। फेत्कारिणी तंत्रम् में उपरोक्त ध्यान में कुछ पाठान्तर हैं। यथा- ''**पाशयुग्मम्**'' की जगह ''**पाशमुग्रं**'' बताया हैं।(**३) ह्रौं कालि महाकालि किलि किले फट् स्वाहा।** (मंत्र महार्णवे)। (४) इसी मंत्र के आगे ''ॐ'' लगाने से पंद्रह अक्षर का मंत्र बनता हैं। परन्तु मंत्र महार्णव में इसे ही १४ अक्षर का लिख दिया हैं। फेत्कारिणी तंत्र में एक अन्य ध्यान दिया गया हैं जो **विपरीत प्रत्यंगिरा** प्रयोग में भी काम आता हैं।

टङ्कं कपालं डमरुं त्रिशूलं संबिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशीऽसित धूमनेत्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

पाठान्तर भेद से- ''**धूमनेत्रा**'' की जगह ''**भीमदंष्ट्रा**'' भी हैं।

विंशाक्षर - क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। उक्त मंत्रों की पूजा दक्षिण काली के समान ही बताई है।

॥ ३. गुह्यकाली ॥

अनाख्यारूपा गुह्यकाली के विषय में महाकाल संहिता के गुह्यकाली खण्ड में गुह्यकाली के मंत्रों के १८ भेद बताये हैं। ब्रह्मा, वशिष्ठ, राम, कुबेर, यम, भरत, रावण, बालि, वासव, विष्णु तथा अन्य देव दानवों ने इसकी उपासना की हैं। गुह्यकाली के कई भेद हैं। यथा- **एकमुखी, तीनमुखी, पंचमुखी, दशमुखी, बीसमुखी, तीसमुखी, छत्तीसमुखी, साठमुखवाली, अस्सीमुखवाली, शतमुखी** इत्यादि कई भेद हैं। ***इनमें भरत व राम द्वारा उपासित दशमुखी देवी का षोडशाक्षरी मंत्र श्रेष्ठ हैं।*** उनके ५४ भुजायें हैं। दशवक्त्रा गुह्यकाली को **सिद्धि कराली** भी कहते हैं। महाकाल संहिता में इसका **ध्यान** दिया हैं।

यथा- उत्तुङ्ग तरङ्गोवाले रक्तवारिधि के बीच रक्तमांस से पूरित रक्त बालुका मय द्वीप हैं। जिसमें नौ करोड़ चामुण्डाएँ एवं एक करोड़ भैरव क्रीड़ा कर रहे हैं। उसमें १० हजार योजन विस्तृत मण्डल हैं। इसके बीच सौ योजन लम्बा चौड़ा श्मशान हैं उसमें नक्षत्रमण्डल तक पहुंचाने वाली आग की ज्वालाऐं उठ रही हैं। असँख्य योगनियाँ ताली बजा रही हैं। उसके ऊपर रत्नजड़ित सिंहासन हैं, उसके ऊपर भारी सिंहासन हैं। जिसे इन्द्रादि दिक्पालों ने धारण कर रखा है। इसके ऊपर तीसरा सिंहासन है इसको ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, ईश्वर एवं सदाशिवादि पञ्चमहाप्रेतों ने धारण कर रखा हैं। इस सिंहासन के ऊपर भयानक भैरव पीठ है। भैरव का शरीर कृष्णवर्ण एवं स्थूल है, पञ्चवक्त्र एवं चतुर्भुज रूप हैं। त्रिनेत्र हैं, खट्वाङ्ग, कर्तृका, कपाल एवं डमरु धारण किये हुये हैं। उनके दंष्ट्राग्र बड़े भीषण हैं, मुण्डमाला लटक रही हैं। इसके ऊपर शिवासन है जो पीलीजटा वाले हैं। उनके ऊपर अष्टदल कमल में भगवती विराजमान हैं। यह दशमुखी देवी २७ नेत्रवाली हैं। वाम, दक्षिण और सम्मुख वाले मुखों में दो-दो नेत्र हैं और शेष सातमुखों में ३-३ नेत्र हैं। उर्ध्वमुख का नाम दीपक है जिसके ''**सिंह का मुख**'' हैं जो श्वेतवर्ण और भयंकर है। इसके नीचे ''**शृगालमुख**'' है जो कृष्णवर्ण हैं एवं त्रिलोक को डराने वाला हैं। इसके वामभाग में ''**वानरमुख**'' हैं। इसके नीचे ''**मदोत्कट मनुष्य का मुख**'' हैं। दक्ष में ''**ऋक्षमुख**'' इसके वामभाग में ''**गरुड़ मुख**'' हैं। दक्षिण में ''**मकरमुख**'' इसके वाम भाग में ''**गजमुख**'' हैं जिससे मद निकल रहा हैं। दक्षिण में ''**हयमुख**'' है जो श्याम वर्ण हैं। इन मुखों की दंष्ट्राएं भीषण हैं और मुखों से दारुण शब्द और अटटाहास निकल रहे हैं। रुधिर का निस्सरण हो रहा हैं जिह्वाएं बाहर निकल रही हैं। भयङ्कर शब्द करने वाली, भ्रूभङ्गयुक्तमुखी पीलीजटा धारण किये भाल में अर्धचन्द्र भूषित २७ नरमुण्डों की नक्षत्रमाला तथा गले से गुल्फ

पर्यन्त लटकने वाली मुण्डमाला से सुशोभित कठोर पिङ्गलोत्तुङ्ग कुचयुगा, विशाल जघनाभोगा, अस्त्रों में गुंथे हुये अनेक शिरों की किङ्किणी से मण्डित ५४ भुजाओं वाली भुशुण्डी, धनुष, चक्र, घण्टा, बालप्रेत, शैल, नरक, काल, नकुल, सर्प, उन्मादवशिका, मुद्गर, अग्निकुण्ड, डमरु, डिण्डिम, भिन्दिपाल, मुशल, पाश, पट्टिश, माला, कर्त्री, असि, तर्जनी, अंकुश, दण्ड रत्नकुंभ, त्रिशूल, पञ्चपाशुपतवाण (१. शोषक २. मूर्द्दक ३. उन्माद ४. संहारक ५. मृत्युकारक) पुष्पमाला, गृध्र, कमण्डलु, मांसखण्ड, स्रुवा, वीजापुर, स्रुच, परशु, गदा, यष्टि, मुष्टि, कुणपशव इत्यादि आयुधों को अपने करों में धारण किये हुये हैं। आदि अनादि अनाख्या स्वरूपा नवयौवना पञ्चवक्त्र के मध्य में विराजमान परमेश्वरी का ध्यान करना चाहियें।

१. नवाक्षर - (१) क्रीं गुह्ये कालिके क्रीं स्वाहा। २. क्रीं गुह्य कालिके क्रीं स्वाहा।

२. दशाक्षर - क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा।

३. चतुर्दशाक्षर - (१) क्रौं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। (२) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके स्वाहा।

४. पञ्चदशाक्षर - (१) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। (२) हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। दशवक्त्रा गुह्यकाली का साधारण ध्यान इस प्रकार हैं।

ध्यायेन्नीलोत्पल श्यामामिन्द्र नील समद्युतिम्। धनाधनतनु द्योतां स्निग्ध दूर्वादलद्युतिम् ॥
ज्ञानरश्मिच्छटा - टोप ज्योतिमण्डल मध्यगाम्। दशवक्त्रां गुह्यकालीं सप्तविंशति लोचनाम् ॥

५. षोडशाक्षर - यह राम एवं भरतोपासिता विद्या भी कहीं गई हैं। इसका ध्यान पञ्चदशाक्षर मंत्रवत् हैं। प्रधान ध्यान गुह्यकाली का पूर्व में भाषा टीका में दिया गया हैं। **१. क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। (विश्वसार तंत्रे) २. क्लीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** हिन्दी तंत्रसार में ''**क्रीं**'' की जगह ''**क्लीं**'' प्रयोग में लिया हैं। कामबीज को ''**क्लीं**'' कहते हैं परन्तु कोष के अनुसार ''**क्रीं**'' को भी काम बीज कहते हैं अतः मंत्रों में **क्रीं** की जगह **क्लीं** भी प्रयोग में आया हैं।

६. अष्टदशाक्षर :- ह्रीं क्रीं फ्रें हूं क्रों गुह्यकालि क्रीं छ्रीं ह्स्ख्फ्रे फ्रों छ्रीं क्रीं स्वाहा। महाकाल संहिता में ध्यान इस प्रकार हैं-

आपाद पद्मादारभ्याकण्ठं पाटल सन्निभा, मुखे दूर्वादलश्यामा जटाभार विराजिता ।
शवोपरि समासीना किञ्चिद् विस्तारिताननना, दशभिर्वदनैर्युक्ता त्रि त्रिचक्षुर्विराजितैः ॥
मुण्डकुण्डल संवीता सर्वेषु वदनेष्वपि, नरास्थि विहिनकल्पा कल्प कल्पक्षयङ्करा ।
सर्वत्र लंबित जटा सर्वत्रापदितारिणी, किञ्चिच्छुष्क गलोद्देशा किञ्चिदाकुञ्चिताननना ॥
पिचिण्डिला निम्ननाभिर्नाति पीनपयोधरा, स्थूलोरु जङ्घा विकटा सर्वाभरण भूषिता ।
अदीर्घ षोडशापीन दोर्मण्डल विराजिता, नीलाम्बर परीधाना नीलस्त्रग गन्धलेपना ॥
शिवापोतं च खट्वाङ्गं गदामंकुशमेव च, घण्टां नृमुण्डं वामेन दधती खर्पराभये ।
खड्गं त्रिशूलं चक्रं च नागपाशं ततः परं, जपमालां च डमरुं कर्त्रिकां वरमेव च ॥
धारयन्ती दक्षिणेनोपविष्टा कुणपोपरि, योगपट्ट समुन्नब्द्ध जानुमध्य कराम्बुजा ।
समस्त विग्रह व्यापि मुण्डमाला विराजिता, सर्वकामप्रदा देवी सर्वसिद्धि विधायिनी ॥

७. एक विंशाक्षर- क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ध्यान उपरोक्त तथा पूजा दक्षिण काली के समान। (महाकाली २० अक्षर मंत्र में गुह्यकाली ध्यान है)

८. द्वाविंशाक्षर - क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। यहां दक्षिण काली व गुह्यकाली अभिन्न हैं अत: ध्यान गुह्यकाली का कर पूजा दक्षिणकालिका के २२ अक्षर मंत्रवत् करें। अथवा महाकाली यंत्रवत् करें।

॥ ४. महाकाली ॥

गुह्यकाली, भद्रकाली, श्मशान काली, महाकाली की पूजा एक ही प्रकार के यन्त्र से होती हैं। दक्षिण कालिका के यंत्र के समान पहले पाँच त्रिकोण, उसके बाहर तीन वृत्त फिर केशरयुक्त अष्टदल योनि मण्डल के मध्य में अंकित करें। इसके बाहर तीन रेखावाला भूपूर बनावे।

१. एकाक्षर- क्रीं

२. त्र्यक्षर - (१) ऐं क्रीं ह्रीं (२) क्रीं हूं ह्रीं (३) ॐ ह्रीं ह्रीं। उपासकों को यहां तृतीय मंत्र से समझना चाहिये कि भुवनेश्वरी बीज के साथ यदि कालिका का ध्यान किया जायेगा तो यह काली भुवनेश्वरी के समान फल देगी।

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य भैरवऋषिः, उष्णिक् छन्दः, महाकाली देवता, पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। क्रां, क्रीं, क्रूं, क्रैं, क्रौं, क्रः से षडङ्गन्यास करे।** कङ्काल मालिनी तंत्र के अनुसार ध्यान इस प्रकार है।

हिमालयगिरेर्मध्ये नगरे भैरवस्य च, दिव्यस्थाने महापीठे मणिमण्डप - राजिते।
नारदाद्यैर्मुनि श्रेष्ठैः संसेवित पदाम्बुजां, नीलेन्दीवर वर्णिनी युग्मापीन तुङ्गस्तनीम् ॥
सुप्त श्रीहरिपीठ राजितवतीं भीमां त्रिनेत्रां शिवां, मुद्रा खड्गकरां वराभययुतां
चित्राम्बरीद्दीपिनीम्। वन्दे चञ्चल चन्द्रकान्त मणिभिर्मालां दधानां पराम्॥

३. त्रयोदशाक्षर - फ्रें फ्रें क्रों क्रों पशून् गृहाण हुं फट् स्वाहा। तंत्र में अज्ञानी दुराचारी को भी पशु संज्ञा से संबोधित किया जाता हैं।

४. चतुर्दशाक्षर - (१) ॐ क्षें क्षें क्रें क्रें पशुं गृहाण हुं फट् स्वाहा। "मेरुतंत्र" के अनुसार इसमें ऋषि न्यासादि की आवश्यकता नहीं हैं।

अस्य विधानम् - कालेघट को कृष्णजल से भरे उसमें कालिका का आवाहन कर ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं एवं दूतियों का पूजन कर ध्यान करें-

पञ्चवक्त्रां महारौद्रीं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनां,
शक्ति शूल धनुर्बाण खेट खड्ग वराभयान्।
वाम दक्षभुजैर्देवी बिभ्राणां भोगि भूषणाम्॥

१४ लाख जप कर कुलाचार से पूजन करे पिचुमन्द समिधा से घृताक्त होम करे।

(२) ॐ फ्रें फ्रें हूं हूं पशुं गृहाण हुं फट् स्वाहा। फेंत्कारिणी तंत्र में उपरोक्त ध्यान के अलावा ४ चरण अधिक है। यथा -

अर्द्धचन्द्रां जटायुक्तां जिह्वाललन भीषणां, निर्मांस मेदुरामस्थिपञ्जरां मुण्डमालिनीम् । मत्तव्यालोपवीताङ्गी भूतवेतालवेष्टितां, मेदो - वसावलिप्ताङ्गी महाप्रेताधिरूढाम् ॥

होम पिचुमर्द, विभीतक एवं चित्रकाष्ठ की समिधा से करे।

(३) कालि कालि महाकालि चण्डयोगेश्वरि। यह मंत्र महाभय से मुक्ति देता हैं।

नीलवर्णा महाकालि त्रिमुख नवलोचना । पीतं तु दक्षिणं वक्त्रमुत्तरं पावकोपमम् ॥ बद्धपद्मासना देवी पनोन्नत पयोधरा । वामहस्तेकपालं च रक्तपूर्णं तु शोभने ॥ धारयन्ती त्रिशूलं च स शवं दक्षिणे करे । चक्रं च दक्षिणे हस्ते अंकुश मुद्गरं तथा ॥ वामे पाशं च खट्वाङ्गं मृतबालं च धारिणी ।

विंशाक्षरः- (१) क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा । हिन्दी तंत्रसार में ''**क्रीं**'' के बजाय यहां ''**क्लीं**'' बीज कहा हैं। भद्रकाली आदि देवताओं का पूजन ध्यान कर जप विधान दक्षिण कालिकावत् करे।

महामेघप्रभां देवीं कृष्णवस्त्रपिधायिनीम् । लोलजिह्वां घोरदंष्ट्रां कोटराक्षीं हसन्मुखीम् ॥ नागहार लतोपेतां चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्। द्यां लिखन्तीं जटामेकां लेलिहाना शलं स्वयम् ॥ नाग यज्ञोपवीताङ्गीं नागशय्या निषेदुषीम् । पञ्चाशन्मुण्ड संयुक्तं - मालां महोदरीम् । सहस्त्रफण संयुक्तमनन्तं शिरसोपरि । चतुर्दिक्षु नागफण वेष्टितां गुह्यकालिकाम् ॥ तक्षक सर्पराजेन वामकङ्कणभूषिताम् । अनन्त नागराजेन कृत दक्षिण कङ्कणाम् ॥ नागेन रशनाहार कल्पितां रत्ननूपुराम् । वामे शिवस्वरूपं तत् कल्पितं वत्सरूपकम् ॥ द्विभुजां चिन्तयेद् देवी नाग यज्ञोपवीतिनीम् । नरदेह समाबद्ध कुण्डल श्रुति मण्डिताम् ॥ प्रसन्नवदनां सौम्यां नवरत्न विभूषिताम् । नारदाद्यैर्मुनि गणैः सेवितां शिवमोहिनीम् । अट्टाटहासां महाभीमां साधकाभीष्ट दायिनीम् ॥

(२) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इसका जप पूजन दक्षिण कालीवत् ही हैं। विशेष बात यह हैं कि भूपूर में इन्द्रादिदेवों एवं उनके आयुधों के पूजन पश्चात् **पूर्वादि चार द्वारों विष्णु, शिव, सूर्य और गणेश की पूजा करे।** 'श्री विद्यार्णवतंत्र' में यन्त्रोद्धार इस प्रकार दिया हैं।

त्रिकोणं चैव षट्कोणं नवकोणं मनोहरम् । त्रिवृत्तं चाष्टपत्रं च सुकिञ्जल्क समन्वितम् ॥ भूपूर त्रितयारूढं योनिमण्डल मण्डितम् । त्रिपञ्चारमिदं चक्रं सर्वतंत्रेषु कीलितम् ॥

॥ ५. श्मशान काली ॥

१. सप्ताक्षर - क्लीं कालिकायै नमः ॥

२. दशाक्षर - क्रीं श्मशान कालिके क्रीं स्वाहा ॥

३. एकादशाक्षर - (१) ऐं श्रीं ह्रीं क्रीं कालिके ऐं श्रीं ह्रीं क्रीं ॥ (का. कल्पतरू) **(२) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं**

कालिके क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं॥ (हि. तंत्र.)

विनियोगः– अस्य मंत्रस्य भृगुः ऋषिः, निवृतिश्छंदः, श्मशानकालिका देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं चतुर्वर्ग सिद्धये जपे विनियोगः।

अंजनाद्रिनिभां देवीं श्मशानालय - वासिनीम् । रक्तेनेत्रां मुक्तकेशीं शुष्कमांसति भैरवाम् ॥
पिङ्गाक्षीं वामहस्तेन मद्यपूर्णं स मांसकम् । सद्यः कृत्त शिरो दक्षहस्तेन दधतीं शिवाम् ॥
स्मितवक्त्रां सदा चाममांसचर्वण तत्पराम् । नानाऽलङ्कार भूषाङ्गीं नग्नां मत्तां सदाऽऽसवैः ॥

४. चतुर्दशाक्षर - (१) ॐ हूं ह्रीं क्लीं श्मशान कालिके ॐ हूं ह्रीं क्लीं। (२) ॐ हूं ह्रीं क्लीं श्मशान कालिके क्लीं ह्रीं हूं ॐ फेत्कारिणी तंत्र के अनुसार मंत्र के ऋषि भैरव, छन्द त्रिष्टुप्, देवता श्मशान कालिका, क्रीं बीज, हूं शक्तिः, सकलसिद्धये विनियोग हैं। ३. क्रीं क्रीं क्रीं श्मशान कालिके क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

४. एक विंशत्यक्षर - (१) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशान काल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। (२) क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशान कालि क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

'हिन्दी तंत्रसार' में मंत्र के ऋष्यादि व ध्यान ११ अक्षर मंत्रवत् बताये हैं। पूजा यंत्र बनाने के लिये पहले अष्टदलपद्म बनाये उसके बाहर वृत्त एवं चारद्वार युक्त भूपूर बनाये। **अष्टदल** के प्रत्येक दल में, **क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, य वर्ग, श वर्ग, लं क्षं** लिखे। भूपूर के चारों कोणों में **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं** ये चार बीज लिखे। (११ अक्षर मंत्र में विशेष)। **अष्टदल** में ब्राह्मी आदि अष्टमातृका एवं असितांगादि अष्टभैरवों का पूजन करे। इसके बाद 'भूपुर' में इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा उनके आयुधों का पूजन कर जप करे। इसकी पूजा बलिकर्म श्मशान में अधिक फलदायी है। गृहस्थ घर में पंच मकारों के साथ पूजन कर नग्न हो शान्त चित्त से मंत्र जप करें।

॥ ६. कामकला काली ॥

१. षोडशाक्षर - ह्रीं फ्रें क्रों वं छ्रीं स्त्रीं हूं स्फ्रों खफ्रें हस्खफ्रें क्ष्रौं स्हौं फट् स्वाहा।

विनियोगः– अस्य मंत्रस्य सनक ऋषिः, प्रतिष्ठा छंदः, कामकलाकाली देवता, ह्रीं शक्तिः, ग्लूं कीलकं सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

२. सप्तदशाक्षर - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें क्रों हौं क्षौं आं स्फ्रों स्वाहा।

विनियोगः– अस्य मंत्रस्य कर्दम ऋषिः, वृहती छंदः, कामकलाकाली देवता, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

३. अष्टादशाक्षर - क्लीं क्रीं हूं क्रों स्फ्रों कामकला कालि स्फ्रों क्रों हूं क्रीं क्लीं स्वाहा।

विनियोगः– अस्य मंत्रस्य महाकाल ऋषिः, वृहती छन्दः, त्रैलोक्याकर्षिणी कामकला काली देवता, क्लीं बीजं, हूं शक्तिः, सर्वत्र सर्वदा सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

महाकाल ने काली उपासना में इस काली की साधना को मुख्य माना हैं।

षडङ्गन्यास– क्लां, क्लीं, क्लूं, क्लैं, क्लः से षडङ्गन्यास करे। 'महाकाल संहिता' में भगवती का ध्यान २७ श्लोकों में वृहतरूप से दिया हैं।

यथा – कामकला काली काशी शरीर कोयल एवं पके हुये जामुन के समान श्याम वर्ण का हैं। केश घने हैं, रक्तवर्ण के प्रज्वलित त्रिनेत्र हैं। शारदीय पूर्ण चन्द्र के समान मुखमण्डल की कांति है। दीर्घदंष्ट्रा एवं लंबी जिह्वा से वे विकराल लगती है। कंधों पर पड़े नरमुण्ड की बहती रक्त धारा का पान कर रही हैं। गले में अस्थिमाला हैं तथा शवों की लंबी अंगुलियों से वक्ष ढँका हुआ हैं। क्षीण कटिप्रदेश तथा जंघाएँ विशाल हैं। १६ भुजायें है। दाहिने हाथों में क्रमशः खड्ग, त्रिशूल, चक्र, वाण, अंकुश, जिह्वा, कैंची, अक्षमाला तथा बाँयें हाथों में पाश, फरसा, नाग, धनुष, मुद्गर, शिवापीत, वसारक्त मेदपूर्ण खप्पर, नरमुण्ड लिये हुये है। शवपञ्जर के नुपूर हैं। श्मशान भूमि में प्रज्वलित अग्नि के मध्य अधोमुख लेटे हुये विशाल शव के ऊपर वे प्रत्यालीढ पद से विराजमान है। बाएं और दाँए भयङ्कर शिवाएँ है। जिनके मुख से अग्निज्वाला निकल रही है वे दिगम्बर एवं मुक्तकेशी हैं।

॥ अथ यंत्रार्चनम् ॥

वज्रदल में पद्म उल्टा बनताहै। अर्थात् पद्म के पत्रों का मुंह अन्दर की ओर करके बनता है। पूजा यंत्र हेतु एक के ऊपर एक करके ३ त्रिकोण बनाये, उनके ऊपर अष्टदल बनाये उसके बाद अष्टवज्रदल पश्चात् चार द्वार युक्त भूपूर बनाये। यंत्रोद्धार इस प्रकार है –

भूपुरे वसुवज्राढ्ये पद्ममष्ट दलान्वितम् । केसरणि प्रकल्प्यानि तत्रान्तश्चापि कर्णिका ॥
कर्णिकान्तस्त्रिकोणस्य त्रितयं पृथगेव हि । वहिस्त्रिकोण कोणेषु लिखेद् बीजत्रयं शुभम् ॥
मायाबीजं तु वामे स्यात् क्रोधबीजं च दक्षिणे । अधः पाशं विनिर्दिश्य कन्दर्पाणं तु मध्यतः ॥
तदन्तः स्थापिनी देवी तत्र सर्वं प्रतिष्ठितम् । एतद् यंत्रं महादेवि सर्वकाम फलप्रदम् ॥

अर्थात् बाहरी त्रिकोण के वामभाग में "**ह्रीं**" दक्षिण कोण में "**हूं**" नीचे के कोण में "**आं**" एवं मध्य में "**क्लीं**" लिखे। यंत्र को शुद्धकर दक्षिण कालिका २२ अक्षर वत् नव पीठ देवियों का पूजन कर। मूलमंत्र व ध्यान युक्त देवी का आवाहन करे।

कल्पान्तकारिणीं कालीं महारौरव रूपिणीम् । महाभीमां दुर्निरीक्ष्यां सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥
शत्रुपक्ष क्षयकरीं दैत्यदानव सूदनीम् । चिन्तये दीदृशीं देवीं कालीं कामकलाऽभिधाम् ॥
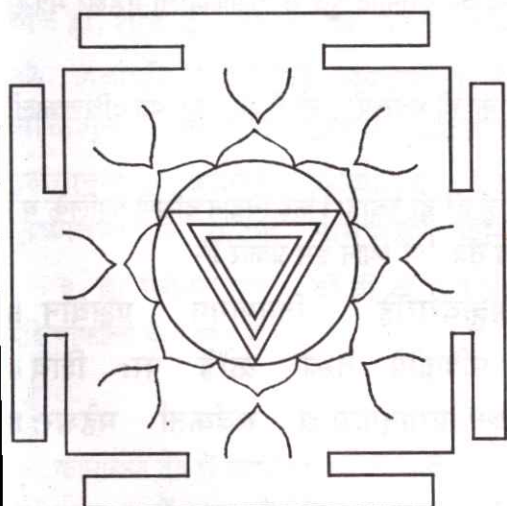
॥ श्री कामकला काली यन्त्रम्

प्रथममावरणम् – गुरु मण्डल का पूजन करे। पश्चात् **क्लां, क्लीं, क्लूं, क्लैं, क्लौं, क्लः से हृदय, शिर, शिखा, कवच एवं अस्त्रशक्ति** का पूजन यंत्र में मध्यभाग में करे।

द्वितीयवरणम् – (बाहर के त्रिकोण के तीन कोनों में) **ॐ संहारिण्यै नमः। ॐ भीषणायै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः।** (कोनों के सामने मध्य में) **ॐ कुरुकुल्लायै नमः। ॐ कपालिन्यै नमः। ॐ विप्रचित्तायै नमः।**

तृतीयावरणम् – (मध्य त्रिकोण के तीन कोनों में) **ॐ उग्रायै नमः। ॐ उग्रप्रभायै नमः। ॐ दीप्तायै नमः।** (कोनों के सामने मध्य में) **ॐ नीलायै नमः। ॐ घनायै नमः ॐ बलाकायै नमः।**

चतुर्थावरणम् – (अंतः त्रिकोण के वामपार्श्व में) **ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ नारायण्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः।** (दक्षिण पार्श्वे) **ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ अपराजितायै नमः।** (अधोभाग में) **ॐ वराह्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः।** ये सभी देवता खड्ग कपाल लिये मुण्डमाला धारण किये हुये जिनका वर्ण श्याम है।

पंचमावरणम् – (अष्टदले)– **ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः। ॐ रूरु भैरवाय नमः। ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ कपालि भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ सम्मोहन भैरवाय नमः।** ये सभी द्विभुज और कैंची तथा खर्पर लिये हुये हैं।

षष्ठमावरणम् – (अष्टदल के दो दलों के मध्य में) **ॐ एकपदाय नमः। ॐ विरूपाक्षाय नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ चण्डघण्टाय नमः। ॐ मेघनादाय नमः। ॐ वेगमालाय नमः। ॐ प्रकम्पनाय नमः।** इन क्षेत्रपालों का पूजन तर्पण करें।

सप्तमावरणम् – (अष्टदलों के अग्रभाग में) **ॐ उल्कामुख्यै नमः। ॐ कोटराक्ष्यै नमः। ॐ विद्युज्जिह्वायै नमः। ॐ करालिन्यै नमः। ॐ वज्रोदर्यै नमः। ॐ तापिन्यै नमः। ॐ ज्वालायै नमः। ॐ जालन्धर्यै नमः।** इन योगनियों का पूजन करें।

(यंत्रोद्धार में अष्टवज्र दल का लेख है परन्तु पूजा नहीं दी गई है अतः कहीं कहीं इसे यंत्र में नहीं बनाया जाता है।)

अष्टमावरणम् – अष्टम आवरण में इन्द्रादि दश दिक्पालों का तथा नवमावरण में उनके आयुधों का पूजन करें पश्चात् मंत्र पुष्पांजलि प्रदान करें।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणगत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम्॥

कामकला काली के षोढान्यास, कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम संपूर्णविधि "**महाकाल संहिता**" में दी गई हैं।

॥७. सिद्धिकाली (हंसकाली)॥

१. षडक्षर – "**ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा**" सिद्धि काली के इस मंत्र का ध्यानादि पूर्व में दक्षिणकाली षडक्षर मंत्र में दिया जा चुका है।

२. त्रयोविंशाक्षर – हंसकाली, सिद्धिकाली को दक्षिणकालिका का ही भेदरूप मानते हैं अतः मूलमंत्र दक्षिणकाली का ग्रहण कर ध्यान भिन्न दे दिया है।

१. ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। कई विद्वान दक्षिणे कालिके की जगह "**हंस काली**" या "**हंसकालिके**" प्रयुक्त करते हैं। "**तोडल तंत्र**" में ध्यान इस प्रकार हैं–

हंसः परब्रह्मरूपः साकारः हंसरूपकः। तारश्चक्रुर्वरारोहे निगमागम पक्षवान्॥ शिवशक्तिपदद्वंद्व विन्दुत्रय - विलोचनम्। एवं हंसो मणिद्वीपे तस्य क्रोड़े परः शिव॥ वामभागे सिद्धिकाली सदानन्द - स्वरूपिणी। तस्याः प्रसादमासाद्य सर्वकर्ता महेश्वरः॥

॥ ८. कङ्काली काली ॥

१. द्वादशाक्षर - ॐ काली कङ्काली किल किले स्वाहा।

२. त्रयोदशाक्षर - ॐ ह्रीं काली कङ्काली किल किल स्वाहा।

३. चतुर्दशाक्षर - (१) ॐ काली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा। (२) ॐ ह्रीं काली कङ्काली किल किल फट् स्वाहा।

४. पञ्चदशाक्षर - (१) क्लीं कालि कालि महाकालि कोले किन्या स्वाहा। (२) ॐ कां काली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा। उड्डामहेश्वर तंत्र व काली कल्पतरु में १० हजार जप का पुरश्चरण कहा है। दिन में १० हजार जप कर शाम को हवन करें। इसके होम में न्यासादि की आवश्यकता नहीं बतायी। यह विद्या शीघ्र सिद्धिप्रदा हैं। कहा है - **संध्याकाले सहस्त्रैकं होमयेत् ततः कङ्काली वरदा भवति, सुवर्ण चतुष्टयं प्रत्यहं ददाति॥**

॥ ९. रक्षा काली (निशाकाली) ॥

हिमाचल अरण्य में इत्यादि व अन्यत्र ग्रामों में देशग्राम की रक्षा हेतु पर्व मनाया जाता हैं। रात्रि पर्यन्त देवी का पूजन कर सूर्योदय पूर्व ही विसर्जन किया जाता हैं।

१. त्र्यक्षर - क्रीं ह्रीं ह्रीं। पूजन की विधि दक्षिणा काली के समान हैं।

चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमाला विभूषितां, खड्गं च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीन्दीवर द्वयम् ।
कर्त्रीं च खर्परं चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतीं, द्यां लिह्लतीं जटामेकां विभ्रतीं शिरसा द्वयम् ॥
मुण्डमालाधरां शीर्षे ग्रीवायामथ चापरां, वक्षाग्रे नागहारं च बिभ्रतीं रक्तलोचनाम् ।
कृष्णवस्त्रधरां कट्यां व्याघ्राजिन समन्वितां, वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम् ॥
विलप्य सिंहपृष्ठे तु लेलिहानासवं स्वयम् । साट्टाहासां महाघोरराव युक्तां सुभीषणाम् ॥

२. चतुरक्षर - ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं उक्त दोनों मंत्रों के **ऋषि दक्षिणमूर्ति, छंद पंक्ति, देवता "श्री निशाकाली" बीज ह्रीं, शक्ति ह्रीं, कीलक ॐ, राष्ट्ररक्षार्थे विनियोग** बताया हैं। इस मंत्र का ध्यान-

ॐ शवोपरि समासीनां मुण्डमाला विभूषितां, ध्यायेष्टभुजैर्युक्तां करपद्मे विराजिताम् ।
शक्तिशूल धनुर्वाण खड्ग खेटवराभयां, पञ्चवक्त्रां महारौद्रीं प्रतिवक्त्र त्रिलोचनम् ॥
प्रलयानल धूम्रामां कृष्णवर्ण विधायिनीं जटाजूट समायुक्त केशजालविराजिताम् ।
कृष्णवस्त्रधरां कट्यां नागपाशेन वेष्टितां, हास्य युक्तां निशाकालीं सदाघूर्णितलोचनाम् ॥

३. द्वा विंशत्यक्षर - त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। पूजनविधि दक्षिणाकाली के समान हैं।

॥ १०. कामाख्या काली ॥

कामाख्या तंत्र में कामाख्या को ही कालिका का भेदरूप माना है। इसे त्रिशक्ति रूपमाना है। इसके दक्ष भाग में लक्ष्मी एवं वामभाग में सरस्वती की पूजा करनी चाहिये। यह प्रत्यक्ष सिद्ध विद्या है। अभिचार एवं आकर्षण में शीघ्र फलदायिनी है।

१. त्र्यक्षरी मंत्र - त्रीं त्रीं त्रीं।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप् छंद, श्री कामाख्या देवता, सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- **त्रां, त्रीं, त्रूं, त्रैं, त्रौं, त्रः** से हृदयादि न्यास करे।

रक्तवस्त्रां वरोद्युक्तां सिंदूर तिलकान्वितां, निष्कलङ्कां सुधाधाम वदन कमलोज्ज्वलाम्।
स्वर्णादिमणि माणिक्य भूषणैर्भूषितां परां, नानारत्नादि निर्माण सिंहासनोपरि स्थिताम् ॥
हास्यवक्त्रां पद्मरागमणि कांतिमनुत्मां, पीनोत्तुङ्गकुचां कृष्णां श्रुतिमूल गतेक्षणाम्।
कटाक्षैश्च महासम्पद्दायिनीं हरमोहिनीं, सर्वाङ्गसुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्।
डाकिनी योगिनी विद्याधरीभिः परिशोभितां, कामिनीभिर्युतां नानागन्धाढ्यैः परिगन्धिताम्।
ताम्बूलादि कराभिश्च नायिकाभिर्विराजितां, समस्तसिद्ध वर्गाणां प्रणतां च प्रतीक्षणाम् ॥
त्रिनेत्रां मोहनकरीं पुष्प चापेषु विभ्रतीं, भगलिङ्ग समाख्यानां किन्नरीभ्योऽपि नृत्यताम्।
वाणी लक्ष्मी सुधावाक्य प्रतिवाक्य समुत्सकाम्, अशेषगुण सम्पन्नां करुणासागरां शिवाम् ॥

१ लाख जप कर घृत शर्करा, मधु पायस द्वारा दशांश होम करे। चंदनमिश्रित जल से १ हजार बार तर्पण करे। उत्कृष्ट गन्धद्रव्यादि द्वारा सौ बार मार्जन अभिषेक कर ब्राह्मण भोजन कराये।

२. द्वविंशत्यक्षर - त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं त्रीं स्वाहा। इस मंत्र में तारण बीज **''त्रीं''** एवं वधू बीज **''स्त्रीं''** होने से शीघ्र सिद्धिप्रदा हैं। ''ॐ'' आदि में लगाने से विद्या चतुर्वर्गफल देती है। (कामाख्या तंत्रे)

अतिसुललितवेशां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां, जित जलदसुकान्तिं पट्टवस्त्रां प्रकाशाम्।
अभयवर कराढ्यां रत्नभूषामि भव्यां, सुरतरुतलपीठे रत्नसिंहासनस्थाम् ॥
हरिहरविधि वंद्यां शुद्धबुद्धि स्वरूपाम्, मदनशर संयुक्तां कामिनीं कामदात्रीम्।
निखिलजन विलासां कामरूपां भवानीं कत्रिकलुषा निहन्त्रीं योनिरूपां स्मरामि ॥

ऋष्यादि सब त्र्यक्षर मंत्र के समान हैं। यंत्रार्चन मेरे अनुमान से **''कामकलाकालि''** के मंत्रवत् करना चाहिये। **''विशेष''** त्रिकोण के मध्य में **''त्रीं त्रीं त्रीं''** लिखें। यंत्र मध्य देवी समीप में में षोडशदल की परिकल्पना कर अथवा षोडशदल में १६ देवियों का पूजन करे। यथा-

ॐ अन्नदायै नमः, ॐ धनदायै नमः, ॐ सुखदायै नमः, ॐ जयदायै नमः, ॐ रसदायै नमः, ॐ मोहदायै नमः, ॐ ऋद्धिदायै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः, ॐ वृद्धिदायै नमः, ॐ शुद्धिदायै नमः। ॐ भुक्तिदायै नमः। ॐ मुक्तिदायै नमः। ॐ मोक्षदायै नमः, ॐ शुभ्रायै नमः, ॐ ज्ञानदायै नमः। ॐ कान्तिदायै नमः। पाठान्तर **''शुभ्रायै''** की जगह **''सुखदायै''** पुनः प्रयुक्त हुआ हैं।

दक्षिण भाग में **लक्ष्मी** एवं वामभाग में **सरस्वती** की पूजा करें। देवी के षडदिक्षु में अथवा षट्कोण में यत्न पूर्वक- **डाकिनी, शाकिनी, काकिनी, राकिनी, हाथिनी, लाकिनी** इत्यादि योगिनियों का पूजन करें। शेष देवताओं का मंत्रार्चन कामकलाकाली यंत्रवत् करे। कामाख्या में योनिपूजा विशेष हैं। पंचमकार साधनामुख्य मानी हैं।

महाप्रीतिकरी पूजा योनिचक्रे कुलेश्वरि। योनिपूजा महापूजा तत्समा न हि सिद्धिदा ॥

योनि साधना में शक्ति पूजन विषय में कामाख्या तंत्र में बताया है।

स्वयम्भू कुसुमेनैव तिलकं परिकलय च। तूलिकायां महादेवि कुलशक्तिं समाविशेत् ॥
कर्पूरितमुखः स्वादु साधकश्चुम्बयन्मुदा। तस्याधरो यथा भृङ्गो नीरज व्याकुलः प्रिये ॥
दन्तक्षति वितानां च परमं तत्र कारयेत्। आलिङ्गयेन्मदोन्मत्तः सुदृढं कुचमर्दनम् ॥
नखाघातैर्नितम्बे च रमयेद् र तिपण्डितः। पुनः पुनश्चुम्बनं च योनौ कुर्यात् कुलेश्वरि ॥
शुक्रं तु स्तंभयेद् वीरो योनौ लिङ्गं प्रवेशयेत्। आघातैस्तोषयेत् तां सन्धान भेदतः प्रिये ॥
ततो लिङ्गे स्थिते यौनौ आज्ञां तस्याः प्रगृह्य च। अष्टोत्तरशतं मन्त्रं जपेद् होमादि कांक्षया ॥

॥ अथ प्रयोगः॥
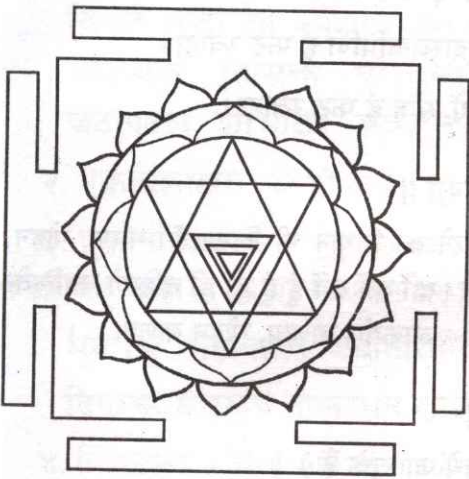
॥ कामाख्या काली यन्त्रम् ॥

१. अपने मूत्र को "हूं" बीज से शुद्ध करे। 'घोरस्वरूपा भैरवी' का उससे तर्पण करे और शत्रु का नाम लेकर (**अमुकं दहदह**) उसे स्वयं पी जाये। दश दिशाओं में, महापीठ पर और अपने अपने मुख पर छिड़ककर नग्न होकर यहां वहां भ्रमण करता हुआ जप करे तो शत्रु का नाश होगा। रक्त, वीर्य, मूत्र से साधक घृणा करे तो स्वयं का नाश होवे।

२. मिट्टी का पात्र लेकर "**साध्य**" का नाम लिखे। "**यं**" बीज से पुटित कर उस पर अपना मूत्र छिड़के। "**ह्रीं**" एवं मूल मंत्र का १०८ बार जप करे तो शत्रु उन्माद से पीड़ित होवे।

३. बाँए हाथ से अपने मूत्र को लेकर 'भैरवी' का तर्पण करे तो शत्रु का उच्चाटन एवं मारण होता हैं। ४. भैरव मंत्र "**हस्त्रैं**" से शोधित स्वमूत्र को श्रेष्ठसाधक (सिद्धपुरुष) फेंके तो शत्रु को उन्माद होता हैं।

॥ ११. काली की नित्यायें ॥

चन्द्रमा की षोडश कलाओं की तरह काली की भी अपनी कलायें हैं। ५ त्रिकोणों में इनका पूजन होता है अमाकला तो स्वयं ही हैं अतः शेष १५ कलाओं की नित्याओं के मंत्र इस प्रकार है।

१. काली- **ॐ ह्रीं कालि कालि महाकालि कौमारि मह्यं देहि स्वाहा।**

२. कपालिनी- **ॐ ह्रीं क्रीं कपालिनि महाकपालप्रियमानसे कपालसिद्धिं मे देहि हूं फट् स्वाहा।**

३. कुल्ला- **ॐ क्रीं कुल्लायै नमः** ४. कुरुकुल्ला- **क्रीं ॐ कुरुकुल्ले क्रीं ह्रीं मम सर्वजन वशमानय क्रीं कुरुकुल्ले ह्रीं स्वाहा।**

५. विरोधिनी- **ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं हूं विरोधिनि शत्रूनुच्चाट्य विरोधय विरोधय शत्रुक्षयंकरि हूं फट् स्वाहा।**

६. विप्रचित्ता- **ॐ श्रीं क्लीं चामुण्डे विप्रचित्ते दुष्टघातिनि शत्रून् नाशय एतद् दिनावधिप्रिये सिद्धिं मे हूं फट् स्वाहा।**

७. उग्रा- **ॐ स्त्रीं हूं ह्रीं ॐ हूं फट्।**

८. उग्रप्रभा- **ॐ हूं हूं उग्रप्रभे देवि कालि महादेवि स्वरूपं दर्शय हूं फट् स्वाहा।**

९. दीप्ता- **ॐ क्रीं ह्रीं हूं दीप्तायै सर्वमन्त्र फलदायै हूं फट् स्वाहा।**

१०. नीला- **हूं हूं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हसबलमरीं नीलपताके हूं फट् स्वाहा।**

११. घना- **ॐ क्रीं ॐ घनालये घनाघने ह्रीं हूं फट्।**

१२. बलाका- **ॐ क्रीं हूं ह्रीं बलाकाकालि अत्यद्भुतपराक्रमे अभीष्ट सिद्धिं मे देहि हूं फट् स्वाहा।**

१३. मात्रा- **(१) ॐ क्रीं ह्रीं हूं अं आं इं ईं ....हं लं क्षं ॐ क्रीं ह्रीं हूं। (२) ॐ क्रीं हूं महामात्रे सिद्धिं मे देहि सत्वरं हूं फट् स्वाहा। (३) ॐ क्रीं हूं ह्रीं शिवेमात्रे ॐ क्रीं हूं ह्रीं हूं फट् स्वाहा।**

१४. मुद्रा- **ॐ क्रीं ह्रीं हूं प्रीं फ्रें मुद्राम्बे मुद्रासिद्धिं मे देहि भो जगन्मुद्रास्वरूपिणि हूं फट् स्वाहा।**

१५. मिता- **ॐ क्रीं हूं ह्रीं ऐं मिते परिमिते पराक्रमाय ॐ क्रीं हूं ह्रीं ऐं सोहं हूं फट् स्वाहा।**

॥ १२. काली पञ्चवाण विद्या ॥

काली के मुख्य अस्त्रों में उनके वाण मंत्रों का अलग से प्रयोग करने का विधान भी लिखा हैं। मारण, मोहन, उच्चाटन क्षोभण, द्रावण इत्यादि का नाम अमुक शब्द के साथ लगाकर करे। **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके "अमुकवाण" क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।** (रुद्रयामल तंत्रे) यथा - आकर्षण बाणाय, मोहन बाणाय....।

॥ १३. कालरात्रि ॥

(कालरात्रि के मंत्र प्रयोग दुर्गा तंत्र में दिये जा चुके हैं)

॥ १४. काली गायत्री ॥

१. **ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो प्रचोदयात्।** २. **ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्।** ३. **ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्।**

॥ १५. महाकाल ॥

कालिका पुराण में प्रसंग है कि देवताओं ने अग्नि को शङ्कर का वीर्य धारण करने की आज्ञा दी। अग्नि में जब शिववीर्य डाला गया तो वीर्य के विन्दु अग्नि के बाहर आकर पर्वत पर गिरे जिनसे दो पुत्रों का अविर्भाव हुआ। ब्रह्म ने एक का नाम **महाकाल** रखा तथा दूसरे का **भृङ्गी**। ये दोनों हीं कृष्णवर्ण के हैं। काली की पूजा करने बाद देवी के दाहिनी ओर महाकाल की पूजा का विधान है। परन्तु काली तंत्र में कहा है- **"महाकालं यजेद् यत्नात् पश्चाद् देवीं प्रपूजयेत्।"**

॥ ध्यानम् ॥

महाकालं यजेद् देव्या दक्षिणे धूम्रवर्णकम् ।
विभ्रतं दण्ड खट्वाङ्गौ दंष्ट्राभिमुखं शिशुम् ॥

व्याघ्रचर्मावृतकटिं तुन्दिलं रक्तवाससम् ।
त्रिनेत्रमूर्ध्वकेशं च मुण्डमाला विभूषितम् ॥
जटाभार लसच्चन्द्रखण्डमुग्रं ज्वलन्निभम् ॥

१. षोडशाक्षर – हूं हूं महाकाल प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

विनियोग– अस्यमंत्रस्य कालिका ऋषिः, विराट् छंदः महाकाल देवता, हूं बीजं, ह्रीं शक्तिः स्वाहा कीलकं सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः। (शक्ति सङ्गम तन्त्र सुन्दरीखण्ड)

षडङ्गन्यास– ह्रां, ह्रीं, ह्रूं इत्यादि से न्यास करे।

कोटिकालानलाभासं चतुर्भुजं त्रिलोचनम्। श्मशानाष्टक मध्यस्थं मुण्डाष्टक विभूषितम् ॥
पञ्चप्रेतस्थितं देवं त्रिशूलं डमरुं तथा। खड्गं च खर्परं चैव वाम दक्षिण योगन ॥
विभ्रतं सुन्दरं देहं श्मशानभस्म भूषितम्। नानाशवः क्रोडकानं कालिकां हृदयस्थितम् ॥
लालयन्तं रतासक्तं घोरचुम्बन तत्पर। गृध्रगोमायुसंयुक्तं फेरवीगण संयुतम् ॥
जटापटल शोभाढ्यं सर्वशून्यालय स्थितम्। सर्वशून्यं मुण्डभूषं प्रसन्नवदनं शिवम् ॥

२. एकविंशाक्षर– ॐ ह्रीं क्लीं हूं महाकालाय ह्रौं महादेवाय क्रीं कालिकायै ह्रौं।

३. एकोनत्रिंशदक्षर – (कुमारी कल्पे) हुं क्ष्रों यां रां लां वां क्रों महाकाल भैरव सर्वविघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा। (इस मंत्र का ध्यान प्रारम्भ में दे दिया गया है) 'निरुत्तर तंत्र' में अन्य ध्यान दिया है।

धूम्रवर्णं महाकालं जटातारान्वितं प्रिये। त्रिनेत्रं शवरूपं च शक्तियुक्तं निरामयम् ॥
दिगम्बरं घोररूपं नीलाञ्जन समप्रमम्। निगुर्णं च गुणाधारं कालीस्थानं पुनः पुनः ॥

४. त्रिंशदक्षर – ॐ हूं स्फ्रौं यां रां लां वां क्रों महाकालभैरव सर्व विघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा। (श्यामा पूजा पद्धति) 'योगीनी तंत्र' में भी शिव का ध्यान इस तरह दिया गया है–

रजताद्रिभिव देवं स्फाटिकाचल विग्रहम्। दिगम्बरं महाघोरं चन्द्रार्क परिमण्डितम् ॥
नानालङ्कार भूषाढ्यं भास्वत्स्वर्णतनुरुहम्। योगनिद्राधरं शंभु स्मेरानन सरोरुहम् ।
विपरीत रतासक्तां महाकालेन सन्ततम् ॥

॥ १६. चतुःषठी योगिनी नामावलि ॥

भगवती काली अनेकों भैरवगणादि से तथा योगनियों से घिरी रहती हैं, उनका वर्णन इस प्रकार है।

अशेष ब्रह्माण्ड भाण्डप्रकाशितमहोज्ज्वलम्। शिवाभिर्घोररावाभिर्वेष्टितां प्रलयोदिताम् ॥
कोटि कोटि शरच्चन्द्रन्यक्कतानख मण्डलाम्। क्षुधापूर्णशीर्षहस्त योगिनीभिर्विराजिताम् ॥
आरक्तमुखमदाभिर्मत्ताभिरन्वगान् नरैः। घोररूपैर्महानादैश्चण्डतापैश्च भैरवैः ॥
गृहीतशरकङ्काल जयशब्द परायणै। नृत्यद्भिर्वदन पैररनिशं च दिगंबरैः ।
श्मशानालय मध्यस्थां ब्रह्माद्युप निषेविताम् ॥

॥ ६४ योगिनी नामावलि ॥

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता। दिव्ययोगी महायोगी सिद्धयोगी महेश्वरी ॥
प्रेताक्षी डाकिनी काली कालरात्रिस्तथैव च। टंकाक्षी रौद्री बेताली हुंकारी चोर्ध्वकेशिनी ॥
विरूपाक्षी च शुष्कांगी नरभोजनिका तथा। फट्कारी वीरभद्रा च धूम्रांगी कलहप्रिया ॥
राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपा भयंकरी। चण्डमारी च चण्डी च वाराही मुण्डधारिणी ॥
भैरवी च तथोर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी। खट्वांगी चैव लंबोष्ठी मालिनी मत्त योगिनी ॥
काली रक्ता च कंकाली तथा च भुवनेश्वरी त्रोटकी च महामारी यमदूती करालिनी ॥
केशिनी दमिनी चैव रोमगंगा प्रवाहिनी। बिडाली कामुकालाक्षी जया चाधोमुखी तथा ॥
मुण्डाग्रधारिणी व्याघ्री कांक्षिणी प्रेतभक्षिणी। धूर्जटी निकटी घोरी कपाली विषलंबिनी ॥
चतुः षष्ठीस्तु योगिन्यः पूजनीयाः प्रयत्नतः ॥

॥ १७. अथ शिवाबलि प्रयोगः ॥

शिवाबलि से साधक का सर्वतोमुखी कल्याण होता है। शिवाबलि श्मशान में या चतुष्पथ में या जहाँ शिवाओं के आने की संभावना हो वहां दी जाती हैं। बलि के लिये चार प्रकार के अन्न प्रस्तुत करे। **१. खीर (पायस) २. अपूप (पुआ) ३. यावश ४. मोदक युक्त शष्कुली।** मस्त्य मांस के व्यञ्जन भी भिन्न भिन्न पात्रों में रखें। बलिद्रव्य एवं "**आसव**" लेकर बलि स्थान पर जाये। श्मशान के वस्त्र का आसन ग्रहण कर उत्तराभिमुख होकर बैठे।

देवीं श्री दक्षिणेकालि सृष्टि स्थित्यन्तकारिणि। अनुज्ञां देहि मे देवि करिष्येऽहं शिवाबलिम्॥

से हाथ जोड़कर "**उल्कामुखी**" घोररूपा शिवा देवी का आवाहन करे।

"**ॐ ऐं ह्रीं हूं हौं क्लीं लं आं ईं औं औं कामकलाकालि घोररावे महाकपालि विकटदंष्ट्रे संमोहिनि शोषणि करालवदने मदनोन्मादिनि ज्वालामालिनि शिवारूपिणि भगवति आगच्छ आगच्छ मम सिद्धि देहि देहि मां रक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं हूं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं हूं हूं फट् फट् स्वाहा।** पश्चात् शिवा के आने की प्रतिक्षा करे। शिवा आ जावे तो पूजन पूर्वक "**शिवारूपी काली**" की स्तुति करे।

शिवारूप धरे देवि कालि कालि नमोस्तु ते। उल्कामुखी ललज्जिह्वे घोररूपे शृगालिनि ॥
श्मशानवासिनि प्रेते शवमांसप्रियेऽनद्ये । अरण्यचारिणि शिवे फेरोजम्बुक रूपिणि ॥
नमोऽस्तु ते महामाये जगत् तारिणि कालिके। मातंगी कुक्कुटे रौद्रे कालि कालि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वसिद्धि प्रदे देवि भयङ्करि भयापहे। प्रसन्ना भव देवेशि मम भक्तस्य कालिके ॥
संसारतारिणि जये जय सर्वशुभङ्करि । विस्रस्तचिकुरे चण्डे चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥
संसारकारिणि जये सर्वसिद्धि प्रयच्छ मे । दुर्गे किराति शबरि प्रेतासनगते शिवे ॥
अनुग्रहं कुरु सदा कृपया मां विलोकय। राज्यं प्रदेहि विकटे वित्तमायुस्सुतान् स्त्रियम् ॥
शिवाबलि विधानेन प्रसन्ना भव शाङ्करि। नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमो नमः ॥

इस प्रकार शिव देवी की स्तुति कर साधक आसवपात्र से आसव बलिद्रव्यों पर गिराता हुआ मंत्र पढ़ें।

ॐ ह्लीं शिवे सर्वदानन्दे सर्वकामार्थ सिद्धिदे इश्मां बलिं प्रदास्यामि कार्यसिद्धिप्रदा भव गृहण देवि महाभागे शिवे कालाग्निरूपिणि शुभाशुभफलं ब्रूहि गृहण गृहण बलिं तव॥

यदि शुभाशुभ फल न जानने की इच्छा हो तो अन्य मंत्र से बलि प्रदान करें।

१. ॐ ह्लीं हूं कामकलाकाल्यै महाघोररावायै भगमालिन्यै शिवारूपिण्यै ज्वालामालिन्यै इमं बलि प्रयच्छामि गृहण गृहण खाद खाद मम सिद्धिं कुरु कुरु मम शत्रून् नाशय नाशय मारय मारय स्तंभय स्तंभय उच्चाटय २ हन २ विध्वंसय २ विद्रावय २ पच २ छिन्धि २ शोषय २ त्रासय २ त्रुट २ मोहय २ उन्मूलय २ भस्मीकुरु २ जृंभय २ स्फोटय २ मथ २ विद्रावय २ हर २ विक्षोभय २ तुरु तुरु दम २ मर्दय २ पातय पातय ह्लीं ॐ।

२. सर्वभूतभयङ्करि सर्वजनमनोहारिणि सर्वशत्रुक्षयङ्करि ज्वल ज्वल प्रज्वल शिवारूपधरे कालि कपालि महाकपालि ह्लीं ह्लीं ह्लं ह्लं हौं हौं राज्यं मे देहि देहि किलि किलि चामुण्डे मम सर्वाभीष्टं साधय साधय संहारिणि संमोहिनि कुरुकुल्ले किरि किरि हूं हूं फट् फट् ओं।

शिवाबलिग्रहण करे तो अभीष्टसिद्धि प्राप्त होवे। बलिग्रहण न करे तो फलशून्य। गर्जना करे तो शुभ, रोदन करे तो अशुभ। दक्षिण में मुंहकर शब्द करे तो अशुभ, पूर्वोत्तरदिशाशुभ हैं। यदि पहले नैवेद्य ग्रहण करे तो अन्न से धन प्राप्ति, खीर खाये तो वाक्सिद्धि मिले, घी ग्रहण करे तो आयुवृद्धि, पुआ खाने से पुण्य, मोदक खाने से यश लाभ। मत्स्य खाये तो पत्नि लाभ। मांस खाये तो धन व विजय प्राप्त होवे।

॥ अथ दीक्षा विधानम् ॥

कालिका एवं कामाख्यादि विद्या प्रयोग हेतु साधक को दीक्षा अभिषेक विधिवत् गृहण करना चाहिये।

नानालङ्कारवस्त्राणि, नानाद्रव्याणि भूरिशः। कस्तूरीकुंकुमादीनि, नानागन्धानि चाहरेत् ॥१॥
नानापुष्पाणि माल्यानि, पञ्चतत्त्वानि यत्नतः। विहितान् धूपदीपांश्च, घृतेन यत्नतः ॥२॥
ततः शिष्यं समानीय, गुरुः शुद्धालये प्रिये! वेश्याभिः साधकैः सार्द्धं, पूजनं च समाचरेत् ॥३॥
पटलोक्तविधानेन, भक्तितः परिपूजयेत्। पूजां समाप्य देव्यास्तु, स्तवैस्तु प्रणमेन् मुदा ॥४॥
ततो हि शिवशक्तिभ्यो, गन्धमाल्यानि दापयेत्। आसनं वस्त्रभूषाश्च, प्रत्येकेन कुलेश्वरि! ॥५॥
ततः शङ्खादिवाद्यैश्च, मङ्गलाचरणैः परैः। घटस्थापनकं कुर्यात्, क्रमं तत्र शृणु प्रिये! ॥६॥
कामवीजेन सम्प्रोक्ष्य, वाग्भवेनैव शोधयेत्। शक्त्या कलशमारोप्य, मायया पूरयेज्जलैः ॥७॥
प्रवालादीन् पञ्चरत्नान्, विन्यसेत् तत्र यत्नतः। आवाहयेच्च तीर्थानि, मन्त्रेणानेन देशिकः ॥८॥
ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः, समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः, सरांसि जलदा नदाः ॥९॥
ह्रदाः प्रस्रवणाः पुण्याः, स्वर्गपातालभूगताः। सर्वतीर्थानि पुण्यानि, घटे कुर्वन्तु सन्निधिम् ॥१०॥
रमावीजेन जप्तेन, पल्लवं प्रतिपादयेत्। कूर्चेन फलदानं स्याद्, गन्धवस्त्रे ह्रदात्मना ॥११॥
ललनयैव सिन्दूरं, पुष्पं दद्यात् तु कामतः। मूलेन दूर्वां प्रणवैः, कुर्यादभ्युक्षणं ततः ॥१२॥

हूं फट् स्वाहेति मन्त्रेण, कुर्याद् दर्भैश्च ताड़नम्। विचिन्त्य मूलपीठं तु, तत्र संयोज्यपूजयेत ॥१३॥
स्वतन्त्रोक्तविधानेन, प्रार्थयेदमुना बुधः। तद्घटे हस्तमारोप्य, शिष्यं पश्यन् गुरश्च सः ॥१४॥
उत्तिष्ठ ब्रह्मकलश! देवताऽभीष्टदायक! सर्वतीर्थाम्बुसम्पूर्ण! पूरयास्मन्मनोरथम् ॥१५॥
अभिषिञ्चेत् गुरुः शिष्यं, ततो मन्त्रैश्च पार्वति! मङ्गलैर्निखिलैर्द्रव्यैः, साधकैः शक्तिभिः सह ॥१६॥
पल्लवैराम्रकाद्यैश्च, नतिमत् शिष्यमेव च। आनन्दैः परमेशानि! भक्तानां हितकारिणी ॥१७॥
ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषिरनुष्टुप् छन्दः, शक्तिर्देवता, सर्वसङ्कल्पसिद्धये अभिषेके च विनियोगः ॥१८॥

॥ अभिषेक मन्त्राः॥

ॐ राजराजेश्वरी शक्तिर्भैरवी कालभैरवी। श्मशानभैरवी देवी, त्रिपुरानन्दभैरवी ॥
त्रिकूटा त्रिपुटा देवी, तथा त्रिपुरसुन्दरी। त्रिपुरेशी महादेवी, तथा त्रिपुरमालिका ॥
त्रिपुरानन्दिनी देवी, तथैव त्रिपुरातनी। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१॥
ॐ छिन्नमस्ता महादेवी, तथवैकजटेश्वरी। परा तारा जयदुर्गा, शूलिनी भुवनेश्वरी ॥
त्वरिताख्या महादेवी तथैव च त्रिखण्डिका। नित्याऽनित्यस्वरूपा च, वज्रप्रस्तारिणी तथा ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२॥
ॐ अश्वारूढा महादेवी, तथा महिषमर्दिनी। दुर्गा च नवदुर्गा च, श्रीदुर्गा भगमालिनी ॥
तथा भगन्दरी देवी, भगक्लिन्ना तथा परा। सर्वचक्रेश्वरी देवी, तथा नीलसरस्वती ॥
सर्वसिद्धिकरी देवी, सिद्धगन्धर्वसेविता। उग्रतारा महादेवी, तथा च भद्रकालिका ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥३॥
ॐ क्षेमङ्करी महामाया, चानिरुद्धसरस्वती। मातङ्गिनी चान्नपूर्णा, च राजराजेश्वरी तथा ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥४॥
ॐ उग्रचण्डा प्रचण्डा च, चण्डोग्रा चण्डनायिका। चण्डा चण्डवती चैव, चण्डरूपातिचण्डिका ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥५॥
ॐ उग्रदंष्ट्रा महादंष्ट्रा, शुभदंष्ट्रा कपालिनी। भीमनेत्रा विशालाक्षी, मङ्गला विजया जया ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥६॥
ॐ मङ्गला नन्दिनी भद्रा, लक्ष्मीः कीर्तिर्यशस्विनी। पुष्टिर्मेधा शिवाधात्री, यशा शोभा जया धृतिः ॥
श्रीनन्दा च सुनन्दा च, नन्दिनी नन्दपूजिता। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥७॥
ॐ विजया मङ्गला भद्रा, धृतिः शान्तिः शिवा क्षमा। सिद्धिस्तुष्टि रमा पुष्टिः, श्रद्धा चैव रतिस्तथा ॥
दीप्ता कान्तिर्यशोलक्ष्मीरोश्वरी बुद्धिरेव च। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥८॥
ॐ चक्री जयावती ब्राह्मी, जयन्ती चापराजिता। आजिता मानवी श्वेता, दितिश्चादितिरेव च ॥
माया चैव महामाया, मोहिनी क्षोभिणी तथा। कमला विमला गौरी, शरण्यम्बुधिसुन्दरी ॥
दुर्गा क्रियाऽरुन्धती च, घण्टकर्णा कपालिनी। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥९॥
ॐ रौद्री काली च कौमारी, त्रिनेत्रा चापराजिता। सुरूपा बहुरूपा च, तथैव विग्रहात्मिका ॥

चर्चिका चापरा ज्ञेया, तथैव सुरपूजिता। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१०॥

ॐ वैवस्वती च कौमारी, तथा माहेश्वरी परा। वैष्णवी च महालक्ष्मीः, कार्तिकी कौशिकी तथा ॥

शिवदूती च चामुण्डा, मुण्डलमालाविभूषिता। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥११॥

ॐ इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव, निर्ऋतिर्वरुणस्तथा। पवनो धनदेशानौ, ब्रह्माऽनन्तौ दिगीश्वराः ॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१२॥

ॐ सम्वत्सराश्चायनौ च मासाः पक्षौ दिनानि च। तिथयश्चाभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१३॥

ॐ रविः सोमः कुजः सौम्यो, गुरुः शुक्रः शनैश्चरः। राहुः केतुश्च सततमभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः ॥१४॥

ॐ नक्षत्रं करणं योगोऽमृतं सिद्धिस्ततः परम्। दग्धं पापं तथा भद्रा, योगा वाराः क्षणास्तथा ॥

वारवेला, कालवेला, दण्डराश्यादयस्तथा। अभिषिञ्चन्तु सततं, मन्त्र पूतेन वारिणा ॥१५॥

ॐ असिताङ्गो रुरुश्चण्डः, क्रोध उन्मत्तसंज्ञकः। कपाली भीषणाख्यश्च, संहारोऽष्टौ च भैरवाः ॥

अभिषिञ्चन्तु सततं, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१६॥

ॐ डाकिनीपुत्रकाश्चैव, राकिनीपुत्रकास्तथा। लाकिनीपुत्रकाश्चान्ये, काकिनीपुत्रकाः परे ॥

शाकिनीपुत्रका भूयो, हाकिनीपुत्रकास्तथा। ततश्च यक्षिणीपुत्राः, देवीपुत्रास्ततः परम् ॥

मातृणां च तथा पुत्रा, उर्ध्वमुख्याः सुताश्च वै। अधोमुख्याः सुताश्चैव, उन्मुख्याश्च सुताः परे ॥

अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१७॥

ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, ईश्वरश्च सदाशिवः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१८॥

ॐ पुरुषः प्रकृतिश्चैव, विकाराश्चैव षोडशः। आत्माऽन्तरात्मा परमज्ञानात्मानः प्रकीर्तिताः ॥

आत्मनश्च गुणाश्चैव, स्थूलाः सूक्ष्माश्च येऽपरे। एते त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१९॥

ॐ वेदादिवीजं हुंवीजं, स्त्रीवीजं मीनकेतनम्। शक्तिवीजं रमावीजं, मायावीजं,सुधाकरम् ॥

चिन्तामणिमहावीजं, नारसिंहं च शाङ्करम्। मार्तण्डभैरवं गौर्गं, वीजं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥

गाणपत्यं च वाराहं, कालीवीजं भयापहम्। एतानि चाभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२०॥

ॐ गङ्गा गोदावरी रेवा, यमुना च सरस्वती। आत्रेयी भारती चैव, सरयू गण्डकी तथा ॥

करतोया चन्द्रभागा, श्वेतगङ्गा च कौशिकी । भोगवती च पाताले, स्वर्गे मन्दाकिनी तथा ॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२१॥

ॐ भैरवो भीमरूपश्च, शोणो घर्घर एव च। सिन्धुश्चैव ह्रदश्चैव, तथा पातालसम्भवाः ॥

एते त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२२॥

ॐ यानि कानि च तीर्थानि, पुण्यान्यायतनानि च। तानि त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२३॥

ॐ जम्बुद्वीपादयो द्वीपाः, सागराः लवणादयः। अनन्ताद्यास्तथा नागाः, सर्पा ते तक्षकादयः ॥

एते त्वामभिषिञ्चन्तु, मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२४॥

ॐ रतिश्च वल्लभा वह्नेर्वषट् कूर्चमतः परम्। वौषट्कारं तु फट्कारमभिषिञ्चन्तु सर्वदा ॥२५॥

ऊपर लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते समय जहाँ '**अभिषिञ्चन्तु**' शब्द आए, उसे कहते हुए आम्रपल्लव द्वारा घटस्थ

जल से शिष्य के शिर पर अभिषेक करना चाहिए। जहां नश्यन्तु एवं ताडिता शब्द आवे उस समय जल शिष्य पर घुमाकर भूमि पर या त्याज्य पात्र में छोड़ें पश्चात् उस त्याज्य पात्र को फेंक देवें। 'अभिषेक' कर्म के पूर्ण होने पर गन्धाक्षत पुष्प हाथ में लेकर निम्न आशीर्वचनों का उच्चारण करें-

॥ आशीर्वचना:॥

नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा, राक्षसा दानवाश्च ये। पिशाचा गुह्यका भूता अभिषेकेण ताड़िताः ॥१॥
अलक्ष्मीः कालकर्णी च पापानि च महान्ति च। नश्यन्तु चाभिषेकेण, तारावीजेन ताड़िताः ॥२॥
रोगाः शोकाश्च दारिद्र्यं, दौर्बल्यं चित्तविक्रिया। नश्यन्तु चाभिषेकेण, वाग्वीजेनैव ताड़िताः ॥३॥
लोकानुरागस्त्यागश्च, दौर्भाग्यमपि दुर्यशः। नश्यन्तु चाभिषेकेण, मन्मथेनैव ताड़िताः ॥४॥
तेजोह्रासो, बलह्रासो बुद्धिह्रासस्तथैव च। नश्यन्तु चाभिषेकेण, शक्तिवीजेन ताड़िता ॥५॥
विषापमृत्युरोगश्च, डाकिन्यादिभयं तथा। घोराभिचाराः क्रूराश्च, ग्रहा नागास्तथा परे ॥६॥
नश्यन्तु चाभिषेकेण कालीवीजेन ताड़िताः ॥७॥
नश्यन्तु विपदः सर्वाः, सम्पदः सन्तु सुस्थिराः।
अभिषेकेण शाक्तेन, पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥८॥

'पूर्णा सन्तु मनोरथा' कहने के साथ ही हाथ में लिए हुए गन्धाक्षतपुष्प को शिष्य के शिर पर छोड़कर हृदय से शुभाशीर्वाद देना चाहिए।

॥ अथ श्री काली कीलक स्तोत्रम्॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री कालिका कीलकस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्री दक्षिण कालिका देवता सर्वसिद्धि साधने कीलकन्यासे जपे विनियोगः।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कीलकं सर्वकामदम्। कालिकायाः परं तत्वं सत्यं सत्यं त्रिभिर्मम ॥
दुर्वासाश्च वशिष्ठश्च दत्तात्रेयो बृहस्पतिः। सुरेशो धनदश्चैव अङ्गिराश्च भृगूद्वहः ॥

॥ अथ कीलक स्तोत्रम्॥

च्यवनः कार्तवीर्यश्च कश्यपोऽथ प्रजापतिः। कीलकस्य प्रसादेन सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥
ॐकारं तु शिखाप्रान्ते लम्बिका स्थान उत्तमे। सहस्त्रारे पङ्कजे तु क्रीं क्रीं क्रीं वाग्विलासिनी ॥
कूर्चवीजयुगं भाले नाभौ लज्जायुगं प्रिये। दक्षिणे कालिके पातु स्वनासापुटयुग्मके ॥
हूँकारद्वन्द्वं गण्डे द्वे द्वे माये श्रवणद्वये। आद्यातृतीयं विन्यस्य उत्तराधर सम्पुटे ॥
स्वाहा दशनमध्ये तु सर्ववर्णन्यसेत् क्रमात्। मुण्डमाला असिकरा काली सर्वार्थसिद्धिदा ॥
चतुरक्षरी महाविद्या क्रीं क्रीं हृदय पङ्कजे। ॐ हूँ ह्रीं क्रीं ततो हूं फट् स्वाहा च कंठकूपके ॥
अष्टाक्षरी कालिका या नाभौ विन्यस्य पार्वति। क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहान्ते च दशाक्षरी ॥
मम बाहुयुग्मे तिष्ठ मम कुण्डलिकुण्डले। हूं ह्रीं मे वह्निजाया च हूं विद्या तिष्ठ पृष्ठके ॥

क्रीं हूं ह्रीं वक्षोदेशे च दक्षिणे कालिके सदा । क्रीं हूं ह्रीं वह्निजायाऽन्ते चतुर्दशाक्षरेश्वरी ॥
क्रीं तिष्ठ गुह्यदेशे मे एकाक्षरी च कालिका । ह्रीं हूं फट् च महाकाली मूलाधार निवासिनी ॥
सर्वरोमाणि मे काली करांगुल्यङ्कपालिनी । कुल्ला कटिं कुरुकुल्ला तिष्ठ तिष्ठ सकली मम ॥
विरोधिनी जनुयुग्मे विप्रचित्ता पदद्वये । तिष्ठमे च तथा चोग्रा पादमूले न्यसेत्क्रमात् ॥
प्रभा तिष्ठतु पादाग्रे दीप्ता पादांगुलीनपि । नीली न्यसेद्विन्दुदेशे घना नादे च तिष्ठ मे ॥
वलाका विन्दुमार्गे च न्यसेत्सर्वाङ्ग सुन्दरी । मम पातालके मात्रा तिष्ठ स्वकुल कायिके ॥
मुद्रा तिष्ठ स्वमर्त्येमां मितास्वङ्गाकुलेषु च । एता नृमुण्डमालास्त्रग्धारिण्यः खड्गपाणयः ॥
तिष्ठन्तु मम गात्राणि सन्धिकूपानि सर्वशः । ब्राह्मी च ब्रह्मरंध्रे तु तिष्ठस्व घटिका परा ॥
नारायणी नेत्रयुगे मुखे माहेश्वरी तथा । चामुण्डा श्रवणद्वन्द्वे कौमारी चिबुके शुभे ॥
तथा सुन्दरमध्ये तु तिष्ठ मे चापराजिता । वाराही चास्थिसन्धौ च नारसिंही नृसिंहके ॥
आयुधानि गृहीतानि तिष्ठस्वेतानि मे सदा । इति ते कीलकं दिव्यं नित्यं यः कीलयेत्स्वकम् ॥
कवचादौ महेशानि तस्य सिद्धिर्न संशयः । श्मशाने प्रेतयोर्वापि प्रेतदर्शनतत्परः ॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् । सवाग्मी धनवान्दक्षः सर्वाध्यक्षः कुलेश्वरः ॥
पुत्र बान्धव सम्पन्नः समीर सदृशो बले । न रोगवान् सदा धीरस्तापत्रय निषूदनः ॥
मुच्यते कालिका पायात् तृणराशिमिवानल । न शत्रुभ्यो भयं तस्य दुर्गमेभ्यो न बाध्यते ॥
यस्य देशे कीलकं तु धारणं सर्वदाम्बिके । तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने ॥
मन्त्राच्छतगुणं देवि कवचं यन्मयोदितम् । तस्माच्छतगुणं चैव कीलकं सर्वकामदम् ॥
तथा चाप्यसिता मन्त्रं नीलसारस्वते मनौ । न सिध्यति वरारोहे कीलकार्गलके विना ॥
विहीने कीलकार्गलके काली कवचं यः पठेत् । तस्य सर्वाणि मन्त्राणि स्तोत्राण्य सिद्धये प्रिये ॥

॥ इति श्री कालिका कीलकम् समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीकाली अर्गला स्तोत्रम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री कालिकार्गलस्तोत्रस्य भैरव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्री कालिका देवता मम सर्वसिद्धिसाधने विनियोगः।

ॐ नमस्ते कालिके देवि आद्यवीजत्रय प्रिये । वशमानय मे नित्यं सर्वेषां प्राणिनां सदा ॥
कूर्च्चयुग्मं ललाटे च स्यातु मे शववाहिना । सर्वसौभाग्यसिद्धि च देहि दक्षिण कालिके ॥
भुवनेश्वरि बीजयुग्मं भ्रूयुगे मुण्डमालिनी । कन्दर्परूपं मे देहि महाकालस्य गेहिनि ॥
दक्षिणे कालिके नित्ये पितृकाननवासिनि । नेत्रयुग्मं च मे देहि ज्योतिरालेकनं महत् ॥
श्रवणे च पुनर्लज्जाबीजयुग्मं मनोहरम् । महाश्रुतिधरत्वं च मे देहि मुक्त कुन्तले ॥

ह्रीं ह्रीं बीजद्वयं देवि पातु नासापुटे मम । देहि नाना विधिमह्यं सुगन्धिं त्वं दिगम्बरे ॥
पुनस्त्रिवीजप्रथमं दन्तोष्ठरसनादिकम् । गद्यपद्यमयीं वाणीं काव्यशास्त्राद्यलंकृताम् ॥
अष्टादशपुराणानां स्मृतीनां घोरचण्डिके । कविता सिद्धिलहरीं मम जिह्वां निवेशय ॥
वह्निजाया महादेवि घण्टिकायां स्थिराभव । देहि मे परमेशानि बुद्धिसिद्धिरसायकम् ॥
तुर्याक्षरी चित्स्वरूपा या कालिका मन्त्रसिद्धिदा । सा च तिष्ठतु हृत्पद्मे हृदयानन्दरूपिणी ॥
षडक्षरी महाकाली चण्डकाली शुचिस्मिता । रक्तासिनी घोरदंष्ट्रा भुजयुग्मे सदाऽवतु ॥
सप्ताक्षरी महाकाली महाकालरतोद्यता । स्तनयुग्मे सूर्यकर्णो नरमुण्डसुकुन्तला ॥
तिष्ठ स्वजठरे देवि अष्टाक्षरी शुभप्रदा । पुत्रपौत्रकलत्रादि सुहृन्मित्राणि देहि मे ॥
दशाक्षरी महाकाली महाकालप्रिया सदा । नाभौ तिष्ठतु कल्याणी श्मशानालयवासिनी ॥
चतुर्दशार्णवा या च जयकाली सुलोचना । लिङ्गमध्ये च तिष्ठस्व रेतस्विनी मामाङ्गके ॥
गुह्यमध्ये हर्षकाला मम तिष्ठ कुलाङ्गने । सर्वाङ्गे भद्रकाली च तिष्ठ मे परमात्मिके ॥
कालि पादयुगे तिष्ठ मम सर्वमुखे शिवे । कपालिनी च या शक्तिः खड्गमुण्डधरा शिवा ।
पादद्वयांगुलिष्वङ्गे तिष्ठ स्वपापनाशिनी । कुल्लादेवी मुक्तकेशी रोमकूपेषु वै मम ॥
तिष्ठतु उत्तमाङ्गे च कुरुकुल्ला महेश्वरी । विरोधिनी विराधे च मम तिष्ठतु शंकरी ॥
विप्रचित्तै महेशानि मुण्डधारिणी तिष्ठमाम् । मार्गे दुर्मार्गगमने मुण्डधारिणी तिष्ठतु सर्वदा ॥
प्रभादिक्षु विदिक्षुमाम् दीप्ता दीप्तं करोतुमाम् । नीला शक्तिश्च पातालेघना चाकाशमण्डले ॥
पातु शक्तिर्वलाका मे भुवं मे भुवनेश्वरी । मात्रा मम कुले पातु मुद्रा तिष्ठतु मन्दिरे ॥
मिता मे योगिनी या च तथा मित्रकुलप्रदा । सा मे तिष्ठतु देवेशि पृथिव्यां दैत्यदारिणी ॥
ब्राह्मी ब्रह्मकुले तिष्ठ मम सर्वार्थदायिनी । नारायणी विष्णुमाया मोक्षद्वारे च तिष्ठ मे ॥
माहेश्वरी वृषारूढा काशिका पुरवासिनी । शिवतां देहि चामुण्डे पुत्रपौत्रादि चानघे ॥
कौमारी च कुमाराणां रक्षार्थं तिष्ठ मे सदा । अपराजिता विश्वरूपा जये तिष्ठ स्वभाविनी ॥
वाराही वेदरूपां च सामवेद परायणा । नारसिंही नृसिंहस्य वक्षःस्थल निवासिनी ॥
सा मे तिष्ठतु देवेशि पृथिव्यां दैत्यदारिणी । सर्वेषां स्थावरादीनां जङ्गमानां सुरेश्वरी ॥
स्वेदजोद्भिजण्डजानां चराणां च भयादिकम् । विनाश्याप्यभिमतिं देहि दक्षिण कालिके ॥
य इदं चार्गलं देवि यः पठेत्कालिकार्चने । सर्वसिद्धिमवाप्नोति खेचरो जायते तु सः ॥

॥ इति श्रीकालिकार्गल स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

॥ श्री महाकाली सूक्तम् ॥

विनियोग: :- ॐ अस्य श्री महाकाली सूक्तस्य ॐ सदा शिव ऋषि: । ॐ जगति छन्द: । ॐ श्री महाकाली देवता । ॐ ॐ बाजं । ॐ ह्रीं शक्ति: । ॐ कीलकं । ॐ श्री महाकाली प्रीत्यर्थं महाकालीसूक्त परायणे विनियोग: ।

ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रै ॐ ह्रौ ॐ ह्र: से षडंग न्यास करें ॥

अथ करन्यास:- ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हूं । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ह्र: करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

अथ हृदयादि न्यास:- ॐ ह्रां हृदयाय नम: । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुं ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्र: अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् :- ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ घोरां भीम पराक्रमां दशकरै: खड्गेषु शूलंगदाम्, चक्रं पाशभुशुंडिके च परशुं चापं शिरो विभ्रतीम् । वागीषां मधुकैटभ प्रमथिनीं ब्रह्मार्ति हंत्री पराम्:, त्रिंशल्लोचन मंडितां दशमुखीं वंदे महाकालिकाम् ॥ ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ ॥१॥

॥ ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ सदा शिव उवाच ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ ॥२॥

(प्रत्येक श्लोक के पूर्व में ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ तथा अंत में ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ का संपुट लगावें)

सुंदरी त्रिपुरा कामाकामिनी साधक प्रिया अमोघ सत्यं वचना विमोहा मोहरूपिणी ॥३॥
अमृतेशी च कल्याणी कारुण्या करुणालया । कलातीता कोमलांत: करणा विश्वनायिका ॥४॥
विघ्नकर्त्री विघ्नहर्त्री विघ्नेशी विघ्न यक्षिणी । कामाख्या कामनिलया कामेशी भगमालिनी ॥५॥
त्रिखंडाा योनिमुद्रा च धेनुमुद्रा च खेचरी । पाशांकुश द्राविणी च मोहिनी मद भंजिनी ॥६॥
मदप्रिया दुराराध्या काला काल विनाशिनी । काष्ठा कुलेशी कल्याणी सुकन्या कल्पकारिणी ॥७॥
कोमलांगी विश्वमाता युगेशानी युगंधरा । ब्रह्मा विष्णु महेशान मोहिनी स्तंभिनी परा ॥८॥
अमोघा सत्यसंकल्पा सत्याऽसत्य विनाशिनी । सत्यग्रामा सत्यवहा सत्यवश्या जनप्रिया ॥९॥
शरीर वासिनी वासा निर्मदा वामदक्षिणा । कपाल कुंडला काली कालिका कालनाशिनी ॥१०॥
गानप्रिया च गीतांगी सुगीता धर्मशालिनी । विश्वयोनि र्विश्वमाता विश्ववंधा क्रियामयी ॥११॥
तुष्टा व वाग्भिर्दिव्याभि महाकालीं महेश्वर: । वेदवाणी सु तत्त्वामि लोंकानां हितकाम्यया ॥१२॥

॥ ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ सदा शिव उवाच ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ ॥१३॥

ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ शिवा मनन्यां विविध प्रभावां कालीं कलामालिनी विश्ववंद्या ।
कपाल खट्वांग धरां नृमुंडमाला विभीषां मृगचर्म शोभाम् ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ ॥१४॥
ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ सु शुष्क मांसा च शवासनस्थां विभीषणां भीषयन्तीं सुराऽसुरीन् ।
रक्त प्रियां माँसम दावि पूर्णां कालीं शरण्यां शरणं व्रजामि ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ ॥१५॥
ॐ ह्रीं ॐ नम: ओं ह्रीं ॐ सुघोर बीजं च कपीश्वरश्च चिंतामणि: कुब्जिक कामरूपे ।
विद्या सुविद्यासु च कामराजं काम: कलामालिनी कालराजम् ॐ ह्रीं ॐ म: न ह्रीं ॐ ॥१६॥

ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ वह्नेवधु मंत्रराजो यमीशे विश्वं पुनातीश्वरि देवि बंद्ये ।
मंत्रेण चानेन सिध्यंति सर्वा सुसिद्धयः सर्व जगन्निवासे ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥१७॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ पंचार युग्मंच त्रिकोण युग्मं पुनश्च पंचार युगेन बद्धम ।
कला प्रकोष्ठं किल भू गृहंच यंत्रेश्वरं ते च पदाब्ज व्रासम् ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥१८॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ संपूज्य यंत्रं तव विश्वनायिके निष्पापिनस्ते सहसा भवंति ।
ये साधकास्तव मार्गानुसारिणः कुलान्नुवृत्या परमापवित्रा ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥१९॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ ते सिद्धि ऋद्धिं च यशोनुगम्यां नृणां वशीकृत्य भवंती भूपाः ।
समस्त मंत्रेण विधायचांगं न्यासादिकं भक्ति सुभाव मुक्ताः ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२०॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ ते किंकरी कृत्य गृणंति देवा नित्ये जगत्येक विभूति युक्ते ।
नवदामि चान्यं न शृणोमि चान्यं न गृणामि चान्यंन विचिंतयामि ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२१॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ नस्मरामि चान्यंन भजामि चान्यंन ध्यायामि चान्यंन वितर्कयामि ।
नगायामि चान्यं तव पादमंत्रात्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२२॥

॥ ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ ऋषि रुवाच ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२३॥

ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ इति वाक्यं समाकर्ण्य परमामृत सन्निभम् ।
प्रसन्नाभून्महाकाली वियताऽभीप्सितो वरः ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२४॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ इत्युक्त्वा च विशालाक्षी शंभोरानन्ददायिनी ।
प्रसन्ना परमाहलाद संयुता शिव भाषणात् ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२५॥

॥ ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ श्री देव्युवाच ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥

ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ व्रियतां मन सोभीष्टो वरो जगति दुर्लभ ।
दास्याम्यद्यामि दातव्यं तव स्तुत्या वशीकृता ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२६॥

॥ ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ सदा शिव उवाच ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥

ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ कुला चारेण ते देवि मतिस्तु कदाचन ।
शिथिला देव देवेशि सूक्तं च सफलं तव ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२७॥

॥ श्री देव्युवाच ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥

ॐ ह्रीं ॐ नमः ओं ह्रीं ॐ शृणुध्वं प्रीति संयुक्ता ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ।
देवीसूक्तं परं ध्यान् भविष्यति वरार्थदम् ॐ ह्रीं ॐ मः न ह्रीं ॐ ॥२८॥
ॐ ह्रीं हूं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं क्लीं स्वाहा। बिना त्रिसूक्तं च पठेद्यस्तु सप्तशतीं नरः ।
मातृगामी स विज्ञेयो नरका वास तत्परः । ममाऽवज्ञाऽपराधेन ब्रह्मा ध्यानां गतिं ब्रजेत् ।

॥ इति श्री महाकाली सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीमद् दक्षिणकालिका कवचम् ॥

इस कवच स्तोत्र में सभी आवरण देवताओं से रक्षा प्रार्थना की गई है। अतः इसके पाठ से यंत्र पूजा का फल भी प्राप्त होता है।

कैलास शिखरारूढं भैरवं चन्द्रशेखरम्। वक्षः स्थले समासीना भैरवी परिपृच्छति ॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

देवेश परमेशान लोकानुग्रहकारकः। कवचं सूचितं पूर्वं किमर्थं न प्रकाशितम् ॥
यदि मे महती प्रीतिस्तवास्ति कुलभैरव। कवचं कालिका देव्याः कथयस्वानुकम्पया ॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

अप्रकाश्य मिदं देवि नरलोके विशेषतः। लक्षवारं वारितासि स्त्री स्वभावाद्धि पृच्छसि ॥

॥ देव्युवाच ॥

सेवका बहवो नाथ कुलधर्म परायणाः। यतस्ते त्यक्तजीवाशा शवोपरि चितोपरि ॥
तेषां प्रयोग सिद्ध्यर्थं स्वरक्षार्थं विशेषतः। पृच्छामि बहुशो देव कथयस्व दयानिधे ॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

कथयामि शृणु प्राज्ञे कालिका कवचं परम्। गोपनीयं पशोरग्रे स्वयोनिमपरे यथा ॥

विनियोग :- ॐ **अस्य श्री कालिका कवचस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, अद्वैतरूपिणी श्रीदक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं सर्वार्थ साधन पुरः सरमन्त्र सिद्धौ विनियोगः।**

॥ कवचम् ॥

सहस्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो गुरुः। वामोरुस्थिततच्छक्तिः सदा सर्वत्र रक्षतु ॥
परमेशः गुरः पातु परापरगुरुस्तथा। परमेष्ठी गुरुः पातु दिव्य सिद्धिश्च मानवः ॥
महादेवी सदापातु महादेवः सदावतु। त्रिपुरो भैरवः पातु दिव्यरूपधरः सदा ॥
ब्रह्मानन्दः सदापातु पूर्णदेवः सदावतु। चलश्चित्तः सदापातु चेलाञ्चलश्च पातु माम् ॥
कुमारः क्रोधनश्चैव वरदः स्मरदीपनः। मायामायावती चैव सिद्धौधाः पातु सर्वदा ॥
विमलो कुशलश्चैव भीमसेनः सुधाकरः। मीनो गोरक्षकश्चैव भोजदेवः प्रजापतिः।
मूलदेवो रन्तिदेवो विघ्नेश्वर हुताशनः। सन्तोषः समयानन्दः पातु मां मनवा सदा ॥
सर्वेऽप्यानन्दनाथान्तः अम्बान्तां मातरः क्रमात्। गणनाथः सदा पातु भैरवः पातु मां सदा ॥
वटुको नः सदा पातु दुर्गा मां परिरक्षतु। शिरसः पादपर्यन्तं पातु मां घोर दक्षिणा ॥
तथा शिरसि मां काली हृदि मूले च रक्षतु। सम्पूर्ण विद्यया देवी सदा सर्वत्र रक्षतु ॥
क्रीं क्रीं क्रीं वदने पातु हृदि हूं हूं सदावतु। ह्रीं ह्रीं पातु सदाधारे दक्षिणे कलिके हृदि ॥
क्रीं क्रीं क्रीं पातु मे पूर्वे हूं हूं दक्षे सदावतु। ह्रीं ह्रीं मां पश्चिमे पातु हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥
पृष्ठे पातु सदा स्वाहा मूला सर्वत्र रक्षतु। षडङ्गे युवती पातु षडङ्गेषु सदैव माम्।

मन्त्रराजः सदापातु ऊर्ध्वाधो दिग्विदिक् स्थितः । चक्रराजे स्थिताश्चापि देवताः परिपान्तु माम् ॥
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता पातु पूर्वे त्रिकोणके । नीला घना वलाका च तथापर त्रिकोणके ॥
मात्रा मुद्रा मिता चैव तथा मध्यत्रिकोणके । काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥
बहिः षट्कोणके पान्तु विप्रचित्ता तथा प्रिये । सर्वाः श्यामाः खड्गधरा वामहस्तेन तर्जनीः ॥
ब्राह्मी पूर्वदले पातु नारायणी तथाग्निके । माहेश्वरी दक्षदले चामुण्डा राक्षसेऽवतु ॥
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता । वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ॥
ऐं ह्रीं असिताङ्गः पूर्वे भैरवः परिरक्षतु । ऐं ह्रीं रु रुश्चाजिन कोणे ऐं ह्रीं चंडस्तु दक्षिणे ॥
ऐं ह्रीं क्रोधो नैर्ऋत्येऽव्यात् ऐं ह्रीं उन्मत्तकस्तथा । पश्चिमे पातु ऐं ह्रीं मां कपाली वायुकोणके ॥
ऐं ह्रीं भीषणाख्यश्च उत्तरेऽवतु भैरवः । ऐं ह्रीं संहार ऐशान्यां मातृणामङ्कगा शिवाः ॥
ऐं हेतुको वटुकः पूर्वदले पातु सदैव माम् । ऐं त्रिपुरांतको बटुक आग्नेय्यां सर्वदावतु ॥
ऐं वह्नि वेतालो वटुको दक्षिणे मां सदाऽवतु । ऐं अग्नि जिह्ववटुकोऽव्यात् नैर्ऋत्यांपश्चिमे तथा ॥
ऐं कालवटुकः पातु ऐं करालवटुकस्तथा । वायव्यां ऐं एकः पातु उत्तरे वटकोऽवतु ॥
ऐं भीम वटुकः पातु ऐशान्यां दिशि मां सदा । ऐं ह्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहान्ताश्चतुः षष्टिमातरः ॥
ऊर्ध्वाधो दक्षवामार्गे पृष्ठदेशे तु पातु माम् । ऐं हूं सिंह व्याघ्रमुखी पूर्वे मां परिरक्षतु ॥
ऐं कां कीं सर्पमुखी अग्निकोणे सदाऽवतु । ऐं मां मां मृगमेषमुखी दक्षिणे मां सदाऽवतु ॥
ऐं चौं चौं गजराजमुखी नैर्ऋत्यां मां सदाऽवतु । ऐं में में विडालमुखी पश्चिमे पातु मां सदा ॥
ऐं खौं खौं क्रोष्टुमुखी वायुकोणे सदाऽवतु । ऐं हां हां ह्रस्वदीर्घमुखी लम्बोदर महोदरी ॥
पातुमामुत्तरे कोण ऐं ह्रीं ह्रीं शिवकोणके । ह्रस्वजङ्घतालजङ्घ प्रलम्बौष्ठी सदाऽवतु ॥
एताः श्मशानवासिन्यो भीषणा विकृताननाः । पान्तु मां सर्वदा देव्यः साधकाभीष्ट पूरिकाः ॥
इन्द्रो मां पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्या मग्निदेवता । दक्षे यमः सदापातु नैर्ऋत्यां नैर्ऋतिश्च माम् ॥
वरुणोऽवतु मां पश्चात् वायुर्मां वायवेऽवतु । कुवेरश्चोत्तरे पायात् ऐशान्यां तु सदाशिवः ॥
ऊर्ध्व ब्रह्मा सदापातु अधश्चानन्तदेवता । पूर्वान्दिक् स्थिताः पान्तु वज्राद्याश्चायुधाश्चमाम् ॥
कालिकाऽवतु शिरसि हृदये कालिकाऽवतु । आधारे कालिका पातु पादयोः कालिकाऽवतु ॥
दिक्षु मां कालिका पातु विदिक्षु कालिका ऽवतु । ऊर्ध्व मे कालिका पातु अधश्च कालिकाऽवतु ।
चर्मासृङ्मांस मेदाऽस्थि मज्जा शुक्राणिमेऽवतु । इन्द्रयाणि मनश्चैव देहं सिद्धिं च मेऽवतु ।
अकेशात् पादपर्य्यन्तं कालिका मे सदाऽवतु । वियति कालिका पातु पथि मां कालिकाऽवतु ।
शयने कालिका पातु सर्वकार्येषु कालिका । पुत्रान् मे कालिका पातु धनं में पातु कालिका ॥
यत्र मे संशयाविष्टास्ता नश्यन्तु शिवाज्ञया ।

॥ श्री त्रैलोक्य विजय कवच ॥

॥ श्री सदाशिव उवाच ॥

त्रैलोक्य विजयस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः । छन्दोऽनुष्टुं देवता च आद्याकाली प्रकीर्तिता ॥
माया बीजं बीजमिति रमा शक्तिरुदाहृता । क्रीं कीलकं काम्य सिद्धौ विनियोगः प्रकीर्तितः ॥
ह्रीमाद्या मे शिरः पातु श्रीं काली वदनं मम । हृदयं क्रीं परा शक्तिः पयात्कण्ठं परात्परा ॥
नेत्रे पातु जगद्धात्री कर्णौं रक्षतु शङ्करी । घ्राणं पातु महामाया रसनां सर्वमङ्गला ॥
दन्तान्रक्षतु कौमारी कपोलौ कमलालया । ओष्ठाधरौ क्षमा रक्षेच्चिबुकं चारुहासिनी ॥
ग्रीवां पायात्कुलेशानी ककुत्पातु कृपाभयी । द्वौ बाहू बाहुदा रक्षेत्करौ कैवल्यदायिनी ॥
स्कन्धौ कपर्द्दिनी पातु पृष्ठं त्रैलोक्यतारिणी । पार्श्वे पायादपर्णा मे कटिं मे कमठासना ॥
नाभौ पातु विशालाक्षी प्रजास्थानं प्रभावतीं । उरू रक्षतु कल्याणी पादौ मे पार्वती सदा ॥
जय दुर्गाऽवतु प्राणान्सर्वाङ्गं सर्वसिद्धिदा । रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन च ॥
तत्सर्वं मे सदा रक्षेदाद्याकाली सनातनी ॥
इति ते कथितं दिव्यं त्रैलोक्य विजयाभिधम् । कवचं कालिकादेव्या आद्यायाः परमाद्भुतम् ॥
पूजाकाले पठेद्यस्तु आद्याधिकृत मानसः । सर्वान्कामानवाप्नोति तस्याद्याशु प्रसीदति ॥
मंत्रसिद्धि र्भवेदाशु किङ्कराः क्षुद्र सिद्धयः । अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी प्राप्नुयाद्धनम् ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां कामी कामानवाप्नुयात् । सहस्रावृत्त पाठेन वर्म्मणेऽस्य पुरस्क्रिया ॥
पुरश्चरणसम्पन्नं यथोक्तफलदं भवेत् । चन्दनागुरुकस्तूरी कुङ्कुमै रक्त चन्दनैः ॥
भूर्जेविलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि । शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा साधकः कटौ ॥
तस्याद्या कालिका वश्या वाञ्छितार्थ प्रयच्छति । न कुत्रापि भयं तस्य सर्वत्र विजयी कविः ॥
अरोगी चिरंजीवी स्याद् बलवान्धारणक्षमः । सर्वविद्यासु निपुणः सर्वशास्त्रार्थ तत्ववित् ॥
वशे तस्य महीपाला भोग मोक्षौ करस्थितौ । कलिकल्मष युक्तान्तं निःश्रयेसकरं परम् ॥

॥ श्री जगन्मङ्गल कवच ॥

॥ भैरव्युवाच ॥

काली पूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो । इदानीं श्रोतु मिच्छामि कवचं पूर्व सूचितम् ॥
त्वमेव शरणं नाथ त्राहि मां दुःख संकटात् । सर्वदुःख प्रशमनं सर्वपाप प्रणाशनम् ॥
सर्व सिद्धिप्रदं पुण्यं कवचं परमाद्भुतम् । अतो वै श्रोतुमिच्छामि वद मे करुणानिधे ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरव प्राणवल्लभे । श्री जगन्मङ्गलं नाम कवचं मंत्र विग्रहम् ॥

पठयित्वा धारयित्वा त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् । नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥
योगिनं क्षोभमनयत् यद्धृत्वा च रघूद्वहः । वरदीप्तां जघानैव रावणादिनिशाचरान् ॥
यस्य प्रसादादीशोऽपि त्रैलोक्य विजयी प्रभुः । धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः ।
एवं च सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ॥

॥ विनियोगः ॥

ॐ श्री जगन्मङ्गलस्याय कवचाय ऋषिः शिवः । छन्दोऽनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिता ॥
जगतां मोहने दुष्ट विजये भुक्तिमुक्तिषु । योविदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकोर्तितः ॥

॥ कवच ॥

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा । क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी ॥
हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुति द्वयम् । दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरि ॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम् । वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी ॥
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्याऽखिलप्रदा । खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥
क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम । ऐं हूं ऊं ऐं स्तन द्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका । क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं पातु करौ षडक्षरी मम ॥
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु । क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी ॥
क्रीं मे गुह्यं सदापातु कालिकायै नमस्ततः । सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम् । काली दशाक्षरीविद्या स्वाहान्ता चोरुयुग्मकम् ॥
ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु जानुनी कालिका सदा । काली हृन्नामविधेयं चतुवर्गफलप्रदा ॥
क्रीं हूं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु । क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरीमम ॥
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभयधारिणी । विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥
कालि कपालिनो कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी । विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषः ॥
नीला घना वलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम् । एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः ॥
रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा : माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता ॥
वाराही नारसिंही च सर्वाश्रयामित भूषणाः । रक्षन्तु स्वायुर्धैर्दिक्षु मां यथा तथा ॥
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् । श्री जगन्मङ्गलं नाम महामंत्रौध विग्रहम् ॥
त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् । गुरु पूजां विधायाथ विधिवत्प्रपठेत्ततः ॥
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्ज्ञानं च वा पुनः । एतच्छतार्धमावृत्य त्रैलोक्य विजयी भवेत् ॥
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः । महाकविर्भवेन्मासात् सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
पुष्पाञ्जलीन् कालिका यै मूलेनैव पठेत्सकृत् । शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥
भूर्जेज विलिखितं चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि । शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारणाद्बुद्ध ॥

त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात् । पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्र स्पर्शवात्ततः । नाशमायान्ति सर्वत्र कवचस्यास्य कीर्तनात् ॥
मृतवत्सा च या नारी वन्ध्या वा मृतपुत्रिणी । कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्यास्य धारणात् ॥
वह्वपत्या जीववत्साभवत्येव न संशयः । न देय परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ॥
शिष्योभ्यो भक्ति युक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात् । स्पर्धामुद्धूय कमला वाग्देवी-मन्दिरे मुखे ॥
पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् । इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्दक्षकालिकाम् ॥
शतलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य विद्या न सिद्धयति । सहस्त्रधातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥
जपेदादौ जपेदन्ते सप्तवाराण्यनुक्रमात् । नोधृत्य यत्र कुत्रापि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
लिखित्वा स्वर्णपात्रे वै पूजाकाले तु साधकः । मूर्ध्नि धार्यं प्रयत्नेन विद्यारत्नं प्रपूजयेत् ॥

॥ अथ काली महाकौतुहल हृदय स्तोत्रम् ॥

॥ श्री महाकाल उवाच ॥

महाकौतुहल स्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम् । शृणु प्रिये! महागोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम् ॥१॥
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम् । अन्येभ्यः कुरु गोप्यं च सत्यं सत्यं च शैलजे ॥२॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा । तत्सर्वं कथ्यतां शंभो दयानिधे महेश्वर ॥३॥

॥ श्रीमहाकाल उवाच ॥

पुरा प्रजापतेः शीर्षच्छेदनं कृतवानहम् । ब्रह्महत्याकृतैः पापैर्भैरवत्वं ममागतम् ।
ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये । कृत्याविनाशकं स्तोत्रंब्रह्महत्याऽपहारकम् ॥५॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीदक्षिणकाल्या हृदय स्तोत्र मंत्रस्य श्रीमहाकाल ऋषिरुष्णिक्छंदः, श्रीदक्षिण कालिका देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकं, सर्वत्र सर्वदा जपे विनियोगः।

हृदयादिन्यास :- ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हुं। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्। इति हृदयादि न्यासः।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेत्कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् । चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥१॥
नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् । नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥२॥
बिभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् । अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगंम्बराम् ॥३॥
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम् । इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत् ॥४॥
ॐ कालिका घोररूपाढ्या सर्वकामफलप्रदा । सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥५॥
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा । तव स्नेहान्मया ख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ॥६॥

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशा मय परात्मिके । यस्य विज्ञान मात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥७॥
नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृत शेखराम् । जटाजूटाञ्च संचिंत्य महाकालसमीपगाम् ॥८॥
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वंति मानवाः । प्राप्नुवंति च ते मोक्षं सत्यं सत्यं वरानने ॥९॥
यन्त्रं शृणु परं देव्याः सर्वार्थसिद्धिदायकम् । गोप्यं गोप्यतरं गोप्यं गोप्यं गोप्यतरं महत् ॥१०॥
त्रिकोणं पञ्चकं चाष्टकमलं भूपुरान्वितम् । मुण्डपंक्तिं च ज्वालां च कालीयंत्रं सुसिद्धिदम् ॥११॥
मन्त्रं तु पूर्वकथितं धारयस्व सदा प्रिये । देव्या दक्षिणकाल्यास्तु नाममालां निशामय ॥१२॥
काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका । मुण्डमाला विशालाक्षी सृष्टिसंहारकारिका ॥१३॥
स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका । भगसर्पि : पानरता भगोद्योता भगांगजा ॥१४॥
आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका । प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥१५॥
एतानि नाममाल्यानि ये पठंति दिने दिने । तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥१६॥
ॐ कालीं कालहरां देवीं कंकालबीजरूपिणीम् । कालरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥१७॥
कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयंभूकुसुमे रताम् । रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम् ॥१८॥
दूतीप्रियां महादूतीं दूतीयोगेश्वरीं पराम् । दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम् ॥१९॥
क्रीं मंत्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु । सर्वे रोगा विनश्यंति नात्र कार्या विचारणा ॥२०॥
क्रीं स्वाहांतैर्महामंत्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः । तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत्सदा ॥२१॥
क्रीं हूं ह्रीं मंत्रजप्तैश्च ह्यक्षतैः सप्तभिः प्रिये । महाभयविनाशश्च जायते नात्र संशयः ॥२२॥
क्रीं ह्रीं हूँ स्वाहामंत्रेण श्मशानाग्निं च मंत्रयेत् । शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥२३॥
हूँ ह्रीं क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा । रिपूणां चैव चोच्चाटं नयत्येव न संशयः ॥२४॥
आकर्षणे च क्रीं क्रीं क्रीं जप्त्वाक्षतान् प्रतिक्षिपेत् । सहस्त्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये ॥२५॥
क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं च कज्जलं शोधितं तथा । तिलकेन जगन्मोहः सप्तधा मंत्रमाचरेत् ॥२६॥
हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम् । अश्वमेघादियज्ञानां कोटिकोटि गुणोत्तरम् ॥२७॥
कन्यादानादिदानानां कोटिकोटिगुणं फलम् । दूतीयागादियागानां कोटिकोटि फलं स्मृतम् ॥२८॥
गङ्गादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणं स्मृतम् । एकधा पाठमात्रेण सत्यं सत्यं मयोदितम् ॥२९॥
कौमारी स्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः । पठेत्स्तोत्रं महेशानि जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥३०॥
रजस्वलाभगंदृष्ट्वा पठेदेकाग्रमानसः । लभते परमं स्थानं देवीलोके वरानने ॥३१॥
महादुःखे महारोगे महासंकटके दिने । महाभये महाघोरे पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं गोपायेन्मातृजारवत् ॥३२॥

॥ इति काली हृदयं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीकाली हृदय स्तोत्रम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विनियोग: :- ॐ अस्य श्री दक्षिणकालिका हृदयमन्त्रस्य महाकाल ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीदक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं, श्री महाषोढारूपिणी महाकाल महिषा दक्षिण कालिका प्रसन्नार्थे पाठे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

चुच्छयामां कोटराक्षीं प्रलयघन घटां घोररूपां प्रचण्डां ।
दिग्वस्त्रां पिंगकेशीं डमरुसृणिधृतां खड्गपाशाभयानि ॥
नागं घंटां कपालं करसरसीरुहै कालिकां कृष्णवर्णां ।
ध्यायामि ध्येयमानां सकलसुखकरीं कालिकां तां नमामि ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं अं आं ब्रह्मग्रंथिं भेदय भेदय इं ईं विष्णुग्रन्थिं भेदय भेदय उं ऊं रुद्रग्रन्थिं भेदय भेदय अं क्रीं आं क्रीं इं क्रीं ईं हूं उं हूं ऊं ह्रीं ऋं ह्रीं ॠं दं लृं क्षिं लॄं णें एं कां ऐं लिं ओं कें औं क्रीं अं क्रीं अः क्रीं अं हूं आं हूं इं ह्रीं ईं ह्रीं उं स्वां ऊं हां यं हूं रं हूं लं मं वं हां सं कां षं लं सं प्रं हं सीं लं दं क्षं प्रं यं सीं रं दं लं ह्रीं वं ह्रीं शं स्वां षं हां शं हं लं क्षं महाकालभैरवि महाकालरूपिणि क्रीं अनिरुद्धसरस्वति हूं हूं ब्रह्मग्रहबन्धिनि विष्णुग्रहबन्धिनि रुद्रग्रहबन्धिनि गोचरग्रहबन्धिनि अधिव्याधि ग्रहबन्धिनि सर्वदुष्टग्रहबन्धिनि सर्वदानवग्रहबन्धिनि सर्वदेवताग्रहबन्धिनि सर्वगोत्र देवताग्रहबन्धिनि सर्वग्रहोपग्रहबन्धिनि क्रीं कालि क्रीं कपालिनि क्रीं कुल्ले हूं कुरुकुल्ले हूं विरोधिनी ह्रीं विप्रचित्ते ह्रीं उग्रे क्रीं उग्रप्रभे क्रीं दीप्ते क्रीं नीले हूं घने हूं बलाके ह्रीं मात्रे ह्रीं मुद्रे।

ॐ मिते असिते असितकुसुमोपमे हूं हुंकारि कां कां काकिनि लां लां लाकिनि हां हां हाकिनि क्षिस क्षिस भ्रम भ्रम उत्तरतत्त्वविग्रह स्वरूपे अमले विमले अजिते अपाराजिते क्रीं क्रीं स्त्रीं हूं हूं फ्रें फ्रें दुष्टविद्राविणि आं ब्राह्मि ईं वैष्णवि ऊं माहेशि ॠं चामुण्डे लृं कौमारि ऐं अपराजिते औं वाराहि अं नारसिंहि ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीं महालक्ष्मि हूं हूं पञ्चप्रेतोपरिस्थितायै शवालङ्कारायै चिन्तान्तस्थायै भैं भद्रकालिके दुष्टान विदारय विदारय मम दारिद्र्यं हन हन पापं मथमथ आरोग्यं कुरु कुरु विरूपाक्षि विरूपाक्षवरदायिनि अष्टभैरवरूपे ह्रीं नवनाथात्मिके

ॐ ह्रीं ह्रीं शक्ति रां रां राकिनि लां लां लाकिनि ह्रां ह्रां हाकिनि कां कां काकिनि क्षिस क्षिस वद वद उत्तरतत्त्वविग्रहे कराल स्वरूपे आदिविद्ये महाकालमहिषि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ क्रीं हूं ह्रीं मम पुत्रान् रक्ष रक्ष ममोपरि दुष्टबुद्धिम् दुष्ट प्रयोगान् कुर्व्वन्ति कारयन्ति करिष्यन्ति तान् हन हन मम मन्त्रसिद्धिं कुरु कुरु मम दुष्टं विदारय विदारय मम दारिद्रयं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु आत्मतत्वं देहि देहि हंसः सोहम् क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा नवकोटिस्वरूपे आद्ये आदिविद्ये अनिरुद्धसरस्वति स्वात्मचैतन्यं देहि देहि मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ मम मनोरथं कुरु कुरु स्वाहा।

॥ अथ श्रीकाली कर्पूर स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र में कई मंत्रों का मंत्रोद्धार है एवं इस पर कई भाष्य व टीकाएं हो चुकी है। यह स्तोत्र कर्पूर की तरह सुगंधित अर्थात् आनंददायी स्तोत्र है एवं भगवती ''कर-पूर'' कर तरह साधक को शीघ्र सद्य हो दक्षिणा फल प्रदान करती है।

कर्पूरंमध्यमान्त्यस्वरपरिरहितं सेन्दुवामाक्षि युक्तं । वीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहर वधु त्रिः कृतं ये जपन्ति ॥
तेषांगद्यानिपद्यानिचमुखकुहरा दुल्लसन्त्येव वाचः । स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचि रुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम् ॥१॥
ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो वीजमन्यन्महेशि । द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जना वार मेकं कदाचित् ॥
जित्वा वाचामधीशं धनदमपिचिरं मोह यन्नम्बुजाक्षी । वृन्दं चन्द्रार्द्ध चूडे प्रभवति स महाघोर वाणावतंसे ॥२॥
ईशोवैश्वानरस्थः शशधर विलसद् वाम नेत्रेण युक्तो । वीजं ते द्वन्द्वमन्यद्विगलित चिकुरे कालिके ये जपन्ति ॥
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति । सृक्कद्वन्द्वास्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिके ति ॥३॥
ऊर्ध्वे वामे कृपाणं करकमलतले छिन्नमुण्डं तथाधः । सव्ये चाभीर्वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च ॥
जप्त्वैतन्नाम ये वा तव मनुविभवं भावयन्त्येतदम्ब । तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितरदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ॥४॥
वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरति वलितं तत्त्रयं कूर्च युग्मं । लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात् स्मितमुखितदधष्ठ द्वयं योजयित्वा ॥
मातर्ये ये जपन्ति स्मरहरमहिलेभावयन्तःवरूपं । ते लक्ष्मी लास्य लीला कमल दलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥५॥
प्रत्येकं वा त्रयं वा द्वयमपि च परं वीजमत्यन्त गुह्यं । त्वन्नामना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति ॥
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे । वाग्देवी देवमुण्डस्त्रगतिशयलसत् कण्ठिपीनस्तनाढये ॥६॥
गतासूनां बाहु प्रकरकृतकाञ्ची परिलसन्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवन विधात्रीं त्रिनयनाम् ।
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि मकालसुरत प्रसक्तांत्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि कविः ॥७॥
शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थिनिकरैः, परं सङ्कीर्णायां प्रकटित चितापां हरवधूम् ।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरतेनाति युवति, सदात्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥८॥
वदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्जडधियो न धीता नापीशो हरिरपि नतेवेत्ति परयम् ।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते, तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः ॥९॥
समन्तादापीनस्तनजघनधृग् यौवनवती, रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलित चिकुरस्तस्त वशगाः, समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ॥१०॥
समाः सुस्थीभूतां जपति विपरीतां यदि सदा, विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकाल सुरताम् ।
तदा तस्य क्षौणीतल विहारभाणस्य विदुषः, कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धि निवहाः ॥११॥
प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति च, समस्तं क्षित्यादि प्रलय समये संहरति च ।
अतस्त्वं धातापिं त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरहो, महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीं ॥१२॥
अनेके सेवन्ते भवदधिक गीर्वाणनिवहान्, विमूढास्ते मातः किमपिं नहि जानन्ति परमम् ।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरिञ्च्यादि विबुधैः, प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्द निरताम् ॥१३॥
धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं, त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ।
स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं, प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥१४॥

॥ अथ श्रीकाली कर्पूर स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र में कई मंत्रों का मंत्रोद्धार है एवं इस पर कई भाष्य व टीकाएं हो चुकी है। यह स्तोत्र कर्पूर की तरह सुगंधित अर्थात् आनंददायी स्तोत्र है एवं भगवती ''कर-पूर'' कर तरह साधक को शीघ्र सद्य हो दक्षिणा फल प्रदान करती है।

कर्पूरंमध्यमान्त्यस्वरपरिरहितं सेन्दुवामाक्षि युक्तं । वीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहर वधु त्रिः कृतं ये जपन्ति ॥
तेषांगद्यानिपद्यानिचमुखकुहरा दुल्लसन्त्येव वाचः । स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचि रुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम् ॥१॥

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो वीजमन्यन्महेशि । द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जना वार मेकं कदाचित् ॥
जित्वा वाचामधीशं धनदमपिचिरं मोह यन्नम्बुजाक्षी । वृन्दं चन्द्रार्द्ध चूडे प्रभवति स महाघोर वाणावतंसे ॥२॥

ईशोषैश्वानरस्थः शशधर विलसद् वाम नेत्रेण युक्तो । वीजं ते द्वन्द्वमन्यद्विगलित चिकुरे कालिके ये जपन्ति ॥
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति । सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिके ति ॥३॥

ऊर्ध्वे वामे कृपाणं करकमलतले छिन्नमुण्डं तथाधः । सव्ये चाभीर्वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च ॥
जप्त्वैतन्नाम ये वा तव मनुविभवं भावयन्त्येतदम्ब । तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितरदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ॥४॥

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरति वलितं तत्त्रयं कूर्च युग्मं । लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात् स्मितमुखितदधष्ठ द्वयं योजयित्वा ॥
मातर्ये ये जपन्ति स्मरहरमहिलेभावयन्तःवरूपं । ते लक्ष्मी लास्य लीला कमल दलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥५॥

प्रत्येकं वा त्रयं वा द्वयमपि च परं वीजमत्यन्त गुह्यं । त्वन्नामना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति ॥
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे । वाग्देवी देवमुण्डस्त्रगतिशयलसत् कण्ठिपीनस्तनाढये ॥६॥

गतासूनां बाहु प्रकरकृतकाञ्ची परिलसन्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवन विधात्रीं त्रिनयनाम् ।
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि मकालसुरत प्रसक्तांत्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि कविः ॥७॥

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थिनिकरैः, परं सङ्कीर्णायां प्रकटित चितापां हरवधूम् ।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरतेनाति युवति, सदात्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥८॥

वदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्जडधियो न धीता नापीशो हरिरपि नतेवेत्ति परयम् ।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते, तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः ॥९॥

समन्तादापीनस्तनजघनधृग् यौवनवती, रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलित चिकुरस्तस्त वशगाः, समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ॥१०॥

समाः सुस्थीभूतां जपति विपरीतां यदि सदा, विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकाल सुरताम् ।
तदा तस्य क्षौणीतल विहारभाणस्य विदुषः, कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धि निवहाः ॥११॥

प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति-च, समस्तं क्षित्यादि प्रलय समये संहरति च ।
अतस्त्वं धातापिं त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरहो, महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीं ॥१२॥

अनेके सेवन्ते भवदधिक गीर्वाणनिवहान्, विमूढास्ते मातः किमपिं नहि जानन्ति परमम् ।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरिञ्च्यादि विबुधैः, प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्द निरताम् ॥१३॥

धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं, त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ।
स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं, प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥१४॥

श्मशानस्थः सुस्थो गलित चिकुरो दिक्पटधरः, सहस्त्रस्त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम् ।
जपंस्त्वप्रत्येकं मनुमपि तव ध्यान निरतो, महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः ॥१५॥
गृहे सम्मार्जन्या परिगलित वीर्यं हि चिकुरं, समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने ।
समुच्चार्य प्रेम्ना मनुमपि सकृत् कालि सततं, गजारूढो याति क्षिति परिवृढः सत्कविवरः ॥१६॥
सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिर महो, पुरोध्यायं ध्यायं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ।
स गंधर्व श्रेणीपतिरपि कवित्वामृतनदी, नदीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवतिं ॥१७॥
त्रिपञ्चारे पीठ शवशिवहृदि स्मेरवदनां, महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्य नियताम् ।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो, जनो यो ध्यायेत्त्वामयि जननि स स्यात् स्मरहरः ॥१८॥
सलोमस्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमसिते, परञ्चौष्ट्रं मैषं नरमहिष योश्छारमपि वा ।
बलिं ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां, सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वं प्रभवति ॥१९॥
वशी लक्षं मन्त्रं प्रजापति हविष्याशनरतो, दिवा मातर्युष्मच्चरण युगलध्यान निपुणः ।
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं, छवेल्लक्षं स स्यात् स्मरहर समानः क्षितितले ॥२०॥
इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारण जनुः, स्वरूपाख्यं पादाम्बुजयुगल प्जाविधियुतम् ।
निशार्द्धं वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति, प्रलापस्तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥२१॥
कुरङ्गारक्षीवृकं तमनुसरसि प्रेमतरलं, वशस्तस्य क्षौणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ।
रिपुः कारागारं कलयति च तं केलिकलया, चिरं जीवन्मुक्तः स भवति च भक्तः प्रतिजनुः ॥२२॥

॥ इति श्रीमहाकाल विरचितं स्वरूपाख्यं श्रीकाली कर्पूर स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री काली क-कारादि शतनाम् स्तोत्र ॥

श्रृणु देवि जगद्वन्धे स्तोत्रमेतदनुमत्तमम् । पठनाच्छ्रवणादस्य सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
असौभाग्य प्रशमनं सुखसम्पद्विवर्धनम् । अकालमृत्यु हरणं सर्वापद्विनिवारणम् ॥
श्रीमदाद्या कालिकायाः सुखसान्निध्यकारणम् । स्तवस्यास्य प्रसीदेन त्रिपुरारिरहं प्रिये ॥
स्तोत्रस्याय ऋषिर्देवि सदाशिव उदाहृतः । छन्दो ऽनुष्टुप्देवताद्या कालिका परिकीर्तिता ॥
धर्मकामार्थमोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥

इस स्तोत्र के ऋषि सदाशिव है छन्द अनुष्टुप है देवता आद्याकाली है तथा धर्म काम अर्थ और माक्ष की प्राप्ति में इसका विनियोग है।

॥ स्तोत्रम् ॥

ह्रीं काली श्रीं कराली च क्रीं कल्याणी कलावती । कमला कलिदर्पघ्नी कपर्दीश कृपान्विता ॥
कालिका कालमाता च कालानल समद्युतिः । कपर्दिनी करालास्या करुणामृतसागरा ॥
कृपामयी कृपाधारा कृपापारा कृपागमा । कृशानुः कपिला कृष्णा कृष्णानन्दविवर्द्धिनी ॥

कालरात्रिः कामरूपा कामपाश विमोचिनी । कादम्बिनी कलाधारा कलिकल्मषनाशिनी ॥
कुमारी पूजन प्रीता कुमारी पूजकाल्या । कुमारी भोजनानन्दा कुमारीरूपधारिणी ॥
कदम्बवनसञ्चारा कदम्बवनवासिनी । कदम्बपुष्पसन्तोषा कदम्बपुष्पमालिनी ॥
किशोरी कलकण्ठा च कलनादनिनादिनी । कादम्बरी पानरता तथा कादम्बरीप्रिया ॥
कपालपात्र निरता कंकालमाल्य धारिणी । कमलासन सन्तुष्टा कमलासन वासिनी ॥
कमलालय - मध्यस्था कमलामोद - मोदिनी । कलहंसगतिः क्लैव्यनाशिनी कामरूपिणी ॥
कामरूपकृतावासा कामपीठ विलासिनी । कमनीया कल्पलता कमनीय विभूषणा ॥
कमनीय गुणाराध्या कोमलाङ्गी कृशोदरी । कारणामृत सन्तोषा कारणानन्द सिद्धिदा ॥
कारणानन्दजापेष्टा कारणार्चन हर्षिता । कारणार्णव सम्मग्ना कारणव्रत पालिनी ॥
कस्तूरीसौरभा मोदा, कस्तूरी तिलकोज्ज्वला । कस्तूरी पूजनरता कस्तूरी पूजनप्रिया ॥
कस्तूरी दाहजननी, कस्तूरी मृगतोषिणी । कस्तूरीभोजन प्रीता, कर्पूरामोद मोदिता ॥
कर्पूरमालाभरणा कर्पूरचदनोक्षिता । कर्पूरकारणाह्लादा कर्पूरामृत - पायिनी ॥
कर्पूरसागर - स्नाता कर्पूरसागरालया । कूर्चबीजजपप्रीता कूर्चजाप परायणा ॥
कुलीना कौलिकाराध्या कौलिक प्रियकारिणी । कुलाचारा कौतुकिनी कुलमार्ग प्रदर्शिनी ॥
काशीश्वरी कष्टहर्त्री काशीश्वर दायिनी । काशीश्वरी कृतामोदा काशीवर मनोरमा ॥
कमलञ्जीरचरणा क्वणत्काञ्चीविभूषणा । काञ्चनाद्रिकृतागारा काञ्चनाचल कौमुदी ॥
कामबीज जपानन्दा कामबीज स्वरूपिणी । कुमतिघ्नी कुलीनार्तिनाशिनी कुल कामिनी ॥
क्रीं ह्रीं श्रीं मंत्रवर्णेन कालकण्टक घातिनी ॥
इत्याद्याकालिका देव्याः शतनाम प्रकीर्तितम् । ककारकूटघटितं कालीरूप स्वरूपकम् ॥
पूजाकाले पठेद्यस्तु कालिकाकृतमानसः । मंत्रसिद्धि र्भवेदाशु तस्य काली प्रसीददति ॥
बुद्धि विद्या च लभते गुरोरादेशमात्रतः । धनवान् कीर्तिमान् भूयाद्दानशीलो दयान्वितः ॥
पुत्रपौत्र सुखैश्वर्यैर्मोदते साधको भुवि । भौमावास्या निशाभागेमपञ्चक समन्वितः ॥
पूजयित्वा महाकालीमाद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् । पठित्वा शतनामानि साक्षात्कालीमयो भवेत् ॥
नासाध्यं विद्यते तस्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन । विद्यायां वाक्पतिः साक्षात् धने धनपतिर्भवेत् ॥
समुद्र इव गाम्भीर्ये बले च पवनोपमः । तिग्मांशुरिव दुष्प्रेक्ष्यः शशिवच्छुभदर्शनः ॥
रूपे मूर्तिधारः कामो योषितां हृदयङ्गमः । सर्वत्र जयमाप्नोति स्तवस्यायः प्रसादतः ॥
यं यं कामं पुरस्कृत्य स्तोत्रमेतदुदीरयेत् । तं तं काममवाप्नोति श्रीमदाद्याप्रसादतः ॥
रणे राजकुले द्यूते विवादे प्राणसंकटे । दस्युग्रस्ते ग्रामदाहे सिंहव्याघ्रावृते तथा ॥
अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे ग्रहराज भयेऽपि वा । ज्वरदाहे चिरव्याधौ महारोगादि संकुले ॥

बालग्रहादि रोगे च तथा दुःस्वप्नदर्शने । दुस्तरे सलिले वापि पोते वातविपद्गते ॥
विचिन्त्य परमां मायामाद्यां कालीं परात्पराम् । यः पठेच्छतनामानि दृढ़भक्ति समन्वितः ॥
सर्वापद्भ्यो विमुच्येत देवि सत्यं नं संशयः । न पापेभ्यो भयं तस्य न रोगोभ्यो भयं क्वचित् ॥
सर्वत्र विजयस्तस्य न कुत्रापि पराभवः । तस्यदर्शन मात्रेण पलायन्ते विपदगणाः ॥
स वक्ता सर्वशास्त्राणां स भोक्ता सर्वसम्पदाम् । स कर्ता जाति धर्माणं ज्ञातीनां प्रभुरेव सः ॥
वाणी तस्य वसेद्वक्त्रे कमला निश्चला गृहे । तन्नाम्ना मानवाः सर्वे प्रणमन्ति ससम्भ्रमा ॥
दृष्ट्या तस्य तृणायन्ते ह्यणिमाद्यष्ट सिद्धयः । आद्याकाली स्वरूपाख्यं शतनाम प्रकीर्तितम् ॥
अष्टोत्तरशतावृत्या पुरश्चर्यास्य गीयते । पुरस्क्रियान्वितं स्तोत्रं सर्वाभीष्टफलप्रदम ॥
शतनामस्तुति मिमामाद्याकाली स्वरूपिणीम् । पठेद्वा पाठयेद्वापि श्रृणुयाच्छ्रावयेदपि ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो ब्रह्मसायुज्य माप्नुयात् ॥

॥ अथ काली ककारादि सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र में कई मंत्रों का मंत्रोद्धार है। यथा - १. ॐ मधुमती स्थावर जंगमाकर्षिणी ठं ठं स्वाहा। २. ॐ ह्रीं पद्मावति त्रैलोक्य वार्ता कथय कथय स्वाहा। ३. ॐ मतसंजीवनी मृतमुथापयोत्थाय स्वाहा। ४. ह्रीं स्वप्न वाराहि कालि स्वप्ने अमुकस्यामुकमं देहि क्रीं स्वाहा। ५. ऐं घोरे आसापघोरे हूं घोररूपे महाघोरे भीममुखी भीषणयमुष्य ऐं ऐं शिवे फट् फट् स्वाहा।

कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणावृते । नानावृक्षलताकीर्णे नानापुष्पैरलंकृते ॥१॥
चतुर्मण्डलसंयुक्ते श्रृंगारमण्डपे स्थितम् । समाधौ संस्थितं शांतं क्रीडन्तं योगिनी प्रियम् ॥२॥
तत्र मौनधरं दृष्ट्वा देवी पृच्छति शंकरम् ।

॥ देव्युवाच ॥

किं त्वया जप्यते देव किं त्वया स्मर्य्यते सदा ॥३॥
सृष्टिः कुत्र विलीनास्ति पुनः कुत्र प्रजायते । ब्रह्माण्डकारणं यत्तत् किमाद्यं कारणं महत् ॥४॥
मनोरथमयी सिद्धिस्तथा वांछामयी शिव । तृतीया कल्पनासिद्धिः कोटिसिद्धीश्वरत्वकम् ॥५॥
शक्तिपाताष्टदशकं चराचरपुरीगतिः । महेन्द्रजालमिन्द्रादिजालानां रचना तथा ॥६॥
अणिमाद्यष्टकं देव पराकायप्रवेशनम् । नवीनसृष्टिकरणं समुद्रशोषणं तथा ॥७॥
अमायां चन्द्रसंदर्शोदिवा चन्द्रप्रकाशनम् । चन्द्राष्टकं चाष्टदिक्षु तथा सूर्याष्टकं शिव ॥८॥
जले जलमयत्वं च वह्नौ वह्निमयत्वकम् । ब्रह्मविष्णवादिनिर्माणमिन्द्राणां कारणं करे ॥९॥
पातालगुटिका यक्षवेतालपंचकं तथा । रसायनं तथा गुप्तिस्तथैव चाखिलांजनम् ॥१०॥
महामधुमती सिद्धिस्तथा पद्मावती शिव । तथा भोगवती सिद्धिर्यावत्यः संति सिद्धयः ॥११॥
केन मंत्रेण तपसा कलौ पापसमाकुले । आयुष्यं पुण्यरहिते कथं भवति तद्वद ॥१२॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

विना मंत्रं विना स्तोत्रं विनैव तपसा प्रिये । विना बलिं विना न्यासं भूतशुद्धिं विना प्रिये ॥१३॥
विना ध्यानं विना यंत्रं विना पूजादिना प्रिये । विना क्लेशादिभिर्देवि देहदुःखादिभिर्विना ॥१४॥
सिद्धिराशु भवेद्येन तदेव कथ्यते मया । शून्ये ब्रह्माण्डगोले तु पंचाशच्छून्यमध्यके ॥१५॥
पंचशून्यस्थिता तारा सर्वान्ते कालिका स्मृता । अनन्तकोटिब्रह्माण्ड राजदन्ताग्रके शिवे ॥१६॥
स्थाप्य शून्यालयं कृत्वा कृष्णवर्णं विधाय च । महानिर्गुणरूपा च वाचातीता परा कला ॥१७॥
क्रीडायां संस्थिता देवी शून्यरूपा प्रकल्पयेत् । सृष्टेरारंभकार्ये तु दृष्ट्वा छाया तया यदा ॥१८॥
इच्छाशक्तिस्तु सा जाता तया कालो विनिर्मितः । प्रतिबिम्बं तत्र दृष्टं जाता ज्ञानाभिधा तु सा ॥१९॥
इदमेतत्किं विशिष्टं जातं विज्ञानकं मुदा। तदा क्रियाभिधा जाता तदीक्षातो महेश्वरि ॥२०॥
ब्रह्माण्डगोले देवेशि राजदंतस्थितं च यत् । सा क्रिया स्थापयामास स्वस्वस्थानक्रमेण च ॥२१॥
तत्रैव स्वेच्छया देवि सामरस्यपरायणा । तदिच्छा कथ्यते देवि यथावदवधारय ॥२२॥
युगादिसमये देवि शिवं परगुणोत्तमम् । तदिच्छानिर्गुणं शांतं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥२३॥
शाश्वतं सुन्दरं शुक्लं सर्वदेवयुतं वरम् । आदिनाथं गुणातीतं काल्यां संयुतमीश्वरम् ॥२४॥
विपरीतरतं देवं सामरस्य परायणम् । पूजार्थमागतं देवगंधर्वाप्सरसाङ्गणम् ॥२५॥
यक्षिणीं किन्नरीमन्यामुर्वश्याद्यां तिलोत्तमाम् । वीक्ष्य तं मायया प्राह सुन्दरी प्राणवल्लभा ॥२६॥
त्रैलोक्य सुन्दरी प्राणस्वामिनी प्राणरंजिनी । किमागतं भवत्याऽद्य मम भाग्यार्णवो महान् ॥२७॥
उक्त्वा मौनधरं शंभुं पूजयंत्यप्सरोगणाः ।

॥ अप्सरस ऊचुः ॥

संसारात्तारितं देव त्वया विश्वजनप्रिय ॥२८॥
सृष्टेरारंभकार्यार्थमुद्युक्तोऽसि महाप्रभो । वेश्याकृत्यमिदं देव मंगलार्थप्रगायनम् ॥२९॥
प्रयाणोत्सवकाले तु समारंभे प्रगायनम् । गुणाद्यारंभकालो हि वर्त्तते शिवशङ्कर ॥३०॥
इन्द्राणीकोटयः संति तस्याः प्रसवबिंदुतः । ब्रह्माणी वैष्णवी चैव माहेशी कोटिकोटयः ॥३१॥
तव सामर सानन्द दर्शनार्थं समुद्भवाः । संजाताश्चाग्रतो देव चास्माकं सौख्य सागर ॥३२॥
रतिं हित्वा कामिनीनां नान्यत्सौख्यं महेश्वर । सा रतिर्दृश्यतेऽस्माभिर्महत्सौख्यार्थ कारिका ॥३३॥
एवमेतत्तु चास्माभिः कर्त्तव्यं भर्तृणा सह । एवं श्रुत्वा महादेवो ध्यानावस्थितमानसः ॥३४॥
ध्यानं हित्त्वा मायया तु प्रोवाच कालिकां प्रति । कालि कालि प्रिये रुण्डमाले भैरववादिनि ॥३५॥
शिवारूपधरे क्रूरे घोरदंष्ट्रे भयानके । त्रैलोक्यसुन्दरकरी सुन्दर्य्यः संति मेऽग्रतः ॥३६॥
सुन्दरीवीक्षणं कर्म कुरु कालि प्रिये शिवे । ध्यानं मुञ्च महादेवि ता गच्छंति गृहं प्रति ॥३७॥
तव रूपं महाकालि महाकालप्रियंकरम् । एतासां सुन्दरं रूपं त्रैलोक्यप्रियकारकम् ॥३८॥
एवं मायाप्रभाविष्टो महाकालो वदन्निति । ततः कालवचः श्रुत्वा कालं प्राह च कालिका ॥३९॥

मायायाच्छाद्य चात्मानं निजस्त्रीरूपधारिणी । इतः प्रभृति स्त्रीमात्रंभविष्यति युगे युगे ॥४०॥
वल्याद्यौषधयो देव दिवा वल्लीस्वरूपताम् । रात्रौ स्त्रीरूपमासाद्य रतिकेलिं परस्परम् ॥४१॥
अज्ञानं चैव सर्वेषां भविष्यति युगे युगे । एवं शापं च दत्त्वा तु पुनः प्रोवाच कालिका ॥४२॥
विपरीतरतिं कृत्वा चिंतयंति भजंति ये । तेषां वरं प्रदास्यामि नित्यं तत्र वसाम्यहम् ॥४३॥
इत्युक्त्वा कालिका विद्या तत्रैवांतरधीयत् । त्रिंशत्त्रिखर्वषड्वृन्दन वत्यर्बुदकोटयः ॥४४॥
दर्शनार्थं तपस्तेपे सा वै कुत्र गता प्रिया । मम प्राणप्रिया देवी हाहा प्राणप्रिये शिवे ॥४५॥
किं करोमि क्वगच्छामि चेत्येवं भ्रमसंकुलः । तस्याः काल्या दया जाता मम चिंतापरः शिवः ॥४६॥
यंत्रप्रस्तारबुद्धिस्तु काल्यादत्तातिसत्वरम् । यंत्रयागं तदारभ्य पूर्वं बिन्दुत्वगोचरम् ॥४७॥
श्रीचक्रयंत्रप्रस्तार रचनाभ्यासतत्परः । इतस्ततो भ्राम्यमाणस्त्रैलोक्यं चक्रमध्यकम् ॥४८॥
चक्रपारदर्शनार्थं कोट्यर्बुदयुगं गतम् । भक्तप्राणप्रिया देवी महाश्रीचक्रनायिका ॥४९॥
तत्र बिन्दौ परं रूपं सुन्दरं सुमनोहरम् । रूपं जातं महेशानि जाग्रत् त्रिपुरसुन्दरि ॥५०॥
रूपं दृष्ट्वा महादेवो राजराजेश्वरोऽभवत् । तस्याः कटाक्षमात्रेण तस्या रूपधरः शिवः ॥५१॥
विनाशृंगारसंयुक्ता तदा जाता महेश्वरी । विना कल्यंशतो देवि जगत्स्थावरजंगमम् ॥५२॥
न शृङ्गारो न शक्तित्वं क्वापि नास्ति महेश्वरी । सुन्दर्या प्रार्थिता काली तुष्टा प्रोवाच कालिका ॥५३॥
सर्वासां नेत्रकेशे च ममांशोऽत्र भविष्यति । पूर्वावस्थासु देवेशि ममांशस्तिष्ठति प्रिये ॥५४॥
सावस्था तरुणाख्या तु तदंतेनैव तिष्ठति । मद्भक्तानां महेशानि सदातिष्ठति निश्चितम् ॥५५॥
शक्तिस्तु कुण्ठिता जाता तथा रूपं न सुन्दरम् । चिंताविष्टा तु मलिना जाता तत्र च सुन्दरी ॥५६॥
क्षणं स्थित्वा ध्यानपरा कालीचिंतनतत्परा । तदा काली प्रसन्नाऽभूत्क्षणार्द्धेन महेश्वरि ॥५७॥
वरं ब्रूहि वरं ब्रूहि वरं ब्रूहीति सादरम् ।

॥ सुन्दर्य्युवाच ॥

ममसिद्धिवरं देहि वरोऽयं प्रार्थ्यते मया ॥५८॥
तादृगुपायं कथय येन शक्तिर्भविष्यति ।

॥ श्रीकाल्युवाच ॥

मम नामसहस्त्रं च मया पूर्वं विनिर्मितम् ॥५९॥
मत्स्वरूपं ककाराख्यं महासाम्राज्यनामकम् । वरदानाभिधं नामक्षणार्द्धाद्वरदायकम् ॥६०॥
तत्पठस्व महामाये तव शक्तिर्भविष्यति । ततः प्रभृति श्रीविद्या तन्नामपाठतत्परा ॥६१॥
तदेव नामसाहस्त्रं सुन्दरीशक्तिदायकम् । कथ्यते नामसाहस्त्रं सांवधानमनाः शृणु ॥६२॥
सर्वसाम्राज्यमेधाख्यनाम साहस्त्रकस्य च । महाकाल ऋषिः प्रोक्त उष्णिक् छन्दः प्रकीर्तितम् ॥६३॥
देवतादक्षिणा काली मायाबीजं प्रकीर्तितम् । हूँ शक्तिः कालिकाबीजं (क्रीं)कीलकं परिकीर्तितम् ॥६४॥
ध्यानं च पूर्ववत्कृत्वा साधय स्वेष्टसाधनम् ।

कालिकावरदानादिस्वेष्टार्थे विनियोगतः ॥
कीलकेन षडङ्गानि षड्दीर्घाब्जेन कारयेत् ॥६५॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीसर्वसाम्राज्य मेधानामकालीरूपककारात्मक सहस्रनामस्तोत्र मंत्रस्य महाकाल ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्रीदक्षिणमहाकाली देवता, ह्रीं बीजं, हूँ शक्तिः, क्रीं कीलकं, कालीवरदानाद्यऽखिलेष्टार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ महाकालऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे, श्रीदक्षिणमहाकालीदेवतायै नमः हृदये, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, हूँ शक्तये नमः पादयोः, क्रीं कीलकाय नमो नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करांगन्यास :- ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्रैं: अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करांगन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास :- ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हुम्। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्। कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम्।
सद्यश्छिन्नशिरः खड्गवामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम्। अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम्।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगंबराम्। कण्ठावसक्त मुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिताम्।
कर्णावतंसतानीत शवयुग्मभयानकाम्। घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम्।
शवानां करसंघातैः कृतकांचीं हसन्मुखीम्। सृक्काद्वयगलद्रक्त धाराविस्फुरिताननाम्।
घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम्। दंतुरां दक्षिणव्यापिमुक्तलम्बकचोच्चयाम्।
शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम्। शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम्।
महाकालेन सार्द्धोर्द्धमुपविष्टरतातुराम्। सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम्॥
एवं संचिंतयेद्देवीं श्मशानालयवासिनीम्॥६६॥

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

ॐ क्रोंकाली क्रूँकराली चकल्याणी कमला कला।कलावती कालढ्या च कलापूज्या कलात्मिका ॥६७॥
कलाहृष्टा कलापुष्टा कलामस्ता कलाकरा। कलाकोटिसमाभासा कलाकोटिप्रपूजिता ॥६८॥
कलाकर्म कलाधारा कलापारा कलागमा। कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः ॥६९॥
ककारवर्णसर्वांगी कलाकोटिप्रभूषिता। ककारकोटिगुणिता ककारकोटिभूषणा ॥७०॥
ककारवर्णहृदया ककारमनुमण्डिता। ककारवर्णनिलया काकशब्दपरायणा ॥७१॥
कवीरास्फालनरता कमलाकरपूजिता। कमलाकरनाथा च कमलाकररूपधृक् ॥७२॥
कमलाकरसिद्धिस्था कमलाकरपारदा। कमलाकरमध्यस्था कमलाकरतोषिता ॥७३॥

कथंकारपरालापा कथंकारपरायणा । कथंकारपदांतस्था कथंकारपदार्थभूः ॥७४॥
कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षप्रपूजिता । कमलाक्षवरोद्युक्ता ककारा कर्बुराक्षरा ॥७५॥
करतारा करच्छिन्ना करश्यामा करार्णवा । करपूज्या कररता करदा करपूजिता ॥७६॥
करतोया करामर्षा कर्मनाशा करप्रिया । करप्राणा करकजा करका करकांतरा ॥७७॥
करकाचलरूपा च करकाचलशोभिनी । करकाचलपुत्री च करकाचलतोषिता ॥७८॥
करकाचलगेहस्था करकाचलरक्षिणी । करकाचलसम्मान्या करकाचलकारिणी ॥७९॥
करकाचलवर्षाढ्या करकाचलरंजिता । करकाचलकांतारा करकाचलमालिनी ॥८०॥
करकाचलभोज्या च करकाचलरूपिणी । करामलकसंस्था च करामलकसिद्धिदा ॥८१॥
करामलकसंपूज्या करामलकतारिणी । करामलककाली च करामलकरोचिनी ॥८२॥
करामलकमाता च करामलकसेविनी । करामलकबद्ध्येया करामलकदायिनी ॥८३॥
कञ्जनेत्रा कञ्जगतिः कञ्जस्था कञ्जधारिणी । कञ्जमालाप्रियकरी कञ्जरूपा च कञ्जजा ॥८४॥
कञ्जजातिः कञ्जगतिः कञ्जहोमपरायणा । कञ्जमण्डलमध्यस्था कञ्जाभरणभूषिता ॥८५॥
कञ्जसंमाननिरता कञ्जोत्पत्तिपरायणा । कञ्जराशिसमाकारा कञ्जारण्यनिवासिनी ॥८६॥
करञ्जवृक्षमध्यस्था करञ्जवृक्षवासिनी । करञ्जफलभूषाढ्या करञ्जवनवासिनी ॥८७॥
करञ्जमालाभरणा करवालपरायणा । करवालप्रत्दृष्टात्मा करवालप्रिया गतिः ॥८८॥
करवालप्रिया कंथा करवालविहारिणी । करवालमयी कर्म्मा करवालप्रियंकरी ॥८९॥
कबन्धमालाभरणा कबन्धराशिमध्यगा । कबन्धकूटसंस्थाना कबन्धानंतभूषणा ॥९०॥
कबन्धनादसंतुष्टा कबंधासनधारिणी । कबंधगृहमध्यस्था कबन्धवनवासिनी ॥९१॥
कबंधकाञ्चीकरणी कबंधराशिभूषणा । कबंधमाला जयदा कबंधदेहवासिनी ॥९२॥
कबंधासनमान्या च कपालाकल्पधारिणी । कपालमालामध्यस्था कपालव्रततोषिता ॥९३॥
कपालदीपसंतुष्टा कपालदीपरूपिणी । कपालदीपवरदा कपालकज्जलस्थिता ॥९४॥
कपालमाला जयदा कपालजपतोषिणी । कपालसिद्धिसंहृष्टा कपालभोजनोद्यता ॥९५॥
कपालव्रतसंस्थाना कपालकमलालया । कवित्वामृतसारा च कवित्वामृतसागरा ॥९६॥
कवित्वसिद्धिसंहृष्टा कवित्वादानकारिणी । कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया ॥९७॥
कविब्रह्मानन्दरूपा कवित्वव्रततोषिता । कविमानससंस्थाना कविवाञ्छाप्रपूरिणी ॥९८॥
कविकण्ठस्थिता कं ह्रीं कं कं कं कविपूर्तिदा । कज्जला कज्जलादानमानसा कज्जलप्रिया ॥९९॥
कपालकज्जलसमा कज्जलेशप्रपूजिता । कज्जलार्णवमध्यस्था कज्जलानन्दरूपिणी ॥१००॥
कज्जलप्रियसंतुष्टा कज्जलप्रियतोषिणी । कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा ॥१०१॥
कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमण्डिता । कपालकोटिनिलया कपालदुर्गकारिणी ॥१०२॥

कपालगिरिसंस्थाना कपालचक्रवासिनी । कपालपात्र संतुष्टा कपालार्घ्यपरायणा ॥१०३॥
कपालार्घ्यप्रियप्राणा कपालार्घ्यवरप्रदा । कपालचक्ररूपा च कपालरूपमात्रगा ॥१०४॥
कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी । कदलीपुष्प संप्रीता कदलीफलमानसा ॥१०५॥
कदलीहोम संतुष्टा कदलीदर्शनोद्यता । कदलीगर्भमध्यस्था कदलीवनसुन्दरी ॥१०६॥
कदम्बपुष्पनिलया कदंबवनमध्यगा । कदंबकुसुमामोदा कदंबवन तोषिणी ॥१०७॥
कदंबपुष्पसंपूज्या कदंबपुष्पहोमदा । कदंबपुष्पमध्यस्था कदंबफलभोजिनी ॥१०८॥
कदंबकाननांतःस्था कदंबाचलवासिनी । कक्षपा कक्षपाराध्या कक्षपासनसंस्थिता ॥१०९॥
कर्णपूरा कर्णनासा कर्णाढ्या कालभैरवी । कलप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा ॥११०॥
कर्णयक्षी कर्णवार्ता कथिनी कर्णसुन्दरी । कर्णपिशाचिनी कर्णमञ्जरी कपिकक्षदा ॥१११॥
कविकक्षविरूपाढ्या कविकक्षस्वरूपिणी । कस्तूरीमृगसंस्थाना कस्तूरीमृगरूपिणी ॥११२॥
कस्तूरीमृगसंतोषा कस्तूरीमृगमध्यगा । कस्तूरीरसनीलांगी कस्तूरीगंधतोषिता ॥११३॥
कस्तूरीपूजकप्राणा कस्तूरीपूजकप्रिया । कस्तूरीप्रेमसंतुष्टा कस्तूरीप्राणधारिणी ॥११४॥
कस्तूरीपूजकानन्दा कस्तूरीगंधरूपिणी । कस्तूरीमालिकारूपा कस्तूरीभोजनप्रिया ॥११५॥
कस्तूरीतिलकानन्दा कस्तूरीतिलकप्रिया । कस्तूरीहोमसंतुष्टा कस्तूरीतर्पणोद्यता ॥११६॥
कस्तूरीमार्जनोद्युक्ता कस्तूरीचक्रपूजिता । कस्तूरीपुष्पसंपूज्या कस्तूरीचर्वणोद्यता ॥११७॥
कस्तूरीगर्भमध्यस्था कस्तूरीवस्त्रधारिणी । कस्तूरिकामोदरता कस्तूरीवनवासिनी ॥११८॥
कस्तूरीवनसंरक्षा कस्तूरीप्रेमधारिणी । कस्तूरीशक्तिनिलया कस्तूरीशक्तिकुण्डगा ॥११९॥
कस्तूरीकुण्डसंस्नाता कस्तूरीकुण्डमज्जना । कस्तूरीजीवसंतुष्टा कस्तूरीजीवधारिणी ॥१२०॥
कस्तूरीपरमामोदा कस्तूरीजीवनक्षमा । कस्तूरीजातिभावस्था कस्तूरीगंधचुम्बना ॥१२१॥
कस्तूरीगंधसंशोभाविराजित कपालभूः । कस्तूरीमदनांतःस्था कस्तूरीमदहर्षदा ॥१२२॥
कस्तूरीकवितानाढ्या कस्तूरीगृहमध्यगा । कस्तूरीस्पर्शकप्राणा कस्तूरीविन्दकांतका ॥१२३॥
कस्तूर्य्यामोदरसिका कस्तूरीक्रीडनोद्यता । कस्तूरीदाननिरता कस्तूरीवरदायिनी ॥१२४॥
कस्तूरीस्थापनासक्ता कस्तूरीस्थानरंजिनी । कस्तूरीकुशलप्रश्ना कस्तूरीस्तुतिवन्दिता ॥१२५॥
कस्तूरीवंदकाराध्या कस्तूरीस्थानवासिनी । कहरूपा कहाढ्या च कहानन्दा कहात्मभूः ॥१२६॥
कहपूज्या कहात्याख्या कहहेया कहात्मिका । कहमालाकण्ठभूषा कहमंत्रजपोद्यता ॥१२७॥
कहनामस्मृतिपरा कहनामपरायणा । कहपरायणरता कहदेवी कहेश्वरी ॥१२८॥
कहहेतुकहानन्दा कहनादपरायणा । कहमाता कहांतःस्था कहमंत्रकहेश्वरा ॥१२९॥
कहज्ञेया कहाराध्या कहध्यानपरायणा । कहतंत्रा कहकहा कहचर्यापरायणा ॥१३०॥
कहाचारा कहगतिः कहताण्डवकारिणी । कहारण्या कहगतिः कहशक्तिपरायणा ॥१३१॥

कहराज्यनता कर्म्मसाक्षिणी कर्मसुन्दरी । कर्मविद्या कर्मगतिः कर्मतंत्रपरायणा ॥१३२॥
कर्ममात्रा कर्मगात्रा कर्मधर्मपरायणा । कर्मरेखानाशकर्त्री कर्मरेखाविनोदिनी ॥१३३॥
कर्मरेखामोहकरी कर्मकीर्तिपरायणा । कर्मविद्या कर्मसारा कर्माधारा च कर्मभूः ॥१३४॥
कर्मकारी कर्महारी कर्मकौतुकसुन्दरी । कर्मकाली कर्मतारा कर्मच्छिन्ना च कर्मदा ॥१३५॥
कर्मचाण्डालिनी कर्मवेदमाता च कर्मभूः । कर्मकाण्डरतानंता कर्मकाण्डानुमानिता ॥१३६॥
कर्मकाण्डपरीणाहा कमठी कमठाकृतिः । कमठाराध्यहृदया कमठाकण्ठसुन्दरी ॥१३७॥
कमठासनसंसेव्या कमठी कर्मतत्परा। करुणाकरकांता च करुणाकरवन्दिता ॥१३८॥
कठोराकरमाला च कठोरकुचधारिणी । कपर्दिनी कपटिनी कठिना कंकभूषणा ॥१३९॥
करभोरूः कठिनदा करभा करभालया । कलभाषामयी कल्पा कल्पनाकल्पदायिनी ॥१४०॥
कमलस्था कलामाला कमलास्या क्वणत्प्रभा । ककुद्मिनी कष्टवती करणीयकथार्चिता ॥१४१॥
कचार्चिता कचतनुः कचसुन्दरधारिणी । कठोरकुचसंलग्ना कटिसूत्रविराजिता ॥१४२॥
कर्णभक्षप्रिया कन्दा कथाकन्दगतिः कलिः । कलिघ्नी कलिदूती च कविनायकपूजिता ॥१४३॥
कणकक्षानियंत्री च सदा कविवरार्चिता । कर्त्री च कर्तृका भूषाकारिणी कर्णशत्रुपा ॥१४४॥
करणेशी करणपा कलवाचा कलानिधिः । कलना कलनाधारा कलनाकारिकाकरा ॥१४५॥
कलज्ञेया कर्कराशिः कर्कराशिप्रपूजिता । कन्याराशिः कन्यका च कन्यकाप्रियभाषिणी ॥१४६॥
कन्यकादानसंतुष्टा कन्यकादानतोषिणी । कन्यादानकरानन्दा कन्यादातृगृहेष्टदा ॥१४७॥
कर्षणा कक्षदहना कामिता कमलासना । करमालानंदकर्त्री करमालाप्रभूषिता ॥१४८॥
करमालाशयानन्दा करमालासमागमा । करमालासिद्धिदात्री करमालाकरप्रिया ॥१४९॥
करप्रिया कररता करदानपरायणा । कलानन्दा कलिगतिः कलिपूज्या कलिप्रसूः ॥१५०॥
कलनादनिनादस्था कलनादवरप्रदा । कलनादसमाजस्था कहोला च कहोलदा ॥१५१॥
कहोलगेहमध्यस्था कहोलवरदायिनी । कहोलकविताधारा कहोलऋषिमानिता ॥१५२॥
कहोलमानसाराध्या कहोलवाक्यकारिणी । कर्तृरूपा कर्तृमयी कर्तृमाता च कर्तरी ॥१५३॥
कनीया कनकाराध्या कनीनकमयी तथा । कनीयानन्दनिलया कनकानन्दतोषिता ॥१५४॥
कनीयक करा काष्ठा कथार्णवकरीकरी । करिगम्या करिगतिः करिध्वजपरायणा ॥१५५॥
करिनाथप्रिया कण्ठा कथानकप्रतोषिता । कमनीया कमनका कमनीयविभूषणा ॥१५६॥
कमनीयसमाजस्था कमनीयव्रतप्रिया । कमनीयगुणाराध्या कपिला कपिलेश्वरी ॥१५७॥
कपिलाराध्यहृदया कपिलाप्रियवादिनी । कहचक्रमंत्रवर्णा कहचक्रप्रसूनका ॥१५८॥
कएईल् ह्रीं स्वरूपा च कएईल्ह्रींवरप्रदा । कएईल् ह्रीं सिद्धिरात्री कएईल्ह्रींस्वरूपिणी ॥१५९॥
कएईल्ह्रीं मंत्रवर्णा कएईल् ह्रीं प्रसूकला । कवर्गा च कपाटस्था कपाटोद्घाटनक्षमा ॥१६०॥

कंकाली च कपाली च कंकालप्रियभाषिणी । कंकालभैरवाराध्या कंकालमानसंस्थिता ॥१६१॥
कंकालमोहनिरता कंकालमोहदायिनी । कलुषघ्नी कलुषहा कलुषार्तिविनाशिनी ॥१६२॥
कलिपुष्पा कलादाना कशिपुः कश्यपार्चिता । कश्यपा कश्यपाराध्या कलिपूर्णकलेवरा ॥१६३॥
कलेवरकरी कांची कवर्गा च करालका । करालभैरवाराध्या करालभैरवेश्वरी ॥१६४॥
कराला कलनाधारा कपर्दीशवरप्रदा । कपर्दीशप्रेमलता कपर्दिमालिकायुता ॥१६५॥
कपर्दिजपमालाढ्या करवीरप्रसूनदा । करवीरप्रियप्राणा करवीरप्रपूजिता ॥१६६॥
कर्णिकारसमाकारा कर्णिकारप्रपूजिता । करीषाग्निस्थिता कर्षा कर्षमात्रसुवर्णदा ॥१६७॥
कलशा कलशाराध्या कषाया करिगानदा । कपिला कलकण्ठी च कलिकल्पलता मता ॥१६८॥
कल्पमाता कल्पलता कल्पकारी च कल्पभूः । कर्पूरामोदरुचिरा कर्पूरामोदधारिणी ॥१६९॥
कर्पूरमालाभरणा कर्पूरवासपूर्तिदा । कर्पूरमालाजयदा कर्पूरार्णवमध्यगा ॥१७०॥
कर्पूरतर्पणरता कटकाम्बरधारिणी । कपटेश्वरसंपूज्या कपटेश्वररूपिणी ॥१७१॥
कटुः कपिध्वजाराध्या कलापपुष्पधारिणी । कलापपुष्परुचिरा कलापपुष्पपूजिता ॥१७२॥
क्रकचा क्रकचाराध्या कथंब्रूमाकरालता । कथंकारविनिर्मुक्ता काली कालक्रिया क्रतुः ॥१७३॥
कामिनी कामिनीपूज्या कामिनी पुष्पधारिणी । कामिनीपुष्पनिलया कामिनीपुष्पपूर्णिमा ॥१७४॥
कामिनीपुष्पपूजार्हा कामिनीपुष्पभूषणा । कामिनीपुष्पतिलका कामिनीकुण्डचुम्बना ॥१७५॥
कामिनीयोगसंतुष्टा कामिनीयोगभोगदा । कामिनीकुण्डसम्मग्ना कामिनीकुण्डमध्यगा ॥१७६॥
कामिनीमानसाराध्या कामिनीमानतोषिता । कामिनीमानसंचारा कालिका कालकालिका ॥१७७॥
कामा च कामदेवी च कामेशी कामसंभवा । कामभावा कामरता कामार्ता काममञ्जरी ॥१७८॥
काममञ्जीररणिता कामदेवप्रियांतरा । कामकाली कामकला कालिका कमलार्चिता ॥१७९॥
कादिका कमला काली कालानलसमप्रभा । कल्पांतदहना कांता कांतारप्रियवासिनी ॥१८०॥
कालपूज्या कालरता कालमाता च कालिनी । कालवीरा कालघोरा कालसिद्धा च कालदा ॥१८१॥
कालाञ्जनसमाकारा कालञ्जरनिवासिनी । का[illegible]ऋद्धिः कालवृद्धिः कारागृहविमोचिनी ॥१८२॥
कादिविद्या कादिमाता कादिस्था कादिसुन्दर[illegible] । का[illegible]णी काञ्ची च काञ्चीशा काशीशवरदायिनी ॥१८३॥
क्रांबीजा चैव क्रीं बीजा हृदयाय नमस्स्मृता । काम्या काम्यगतिः काम्यसिद्धिदात्री च कामभूः ॥१८४॥
कामाख्या कामरूपा च कामचापविमोचिनी । कामदेवकलारामा कामदेवकलालया ॥१८५॥
कामरात्रिः कामदात्री कांताराचलवासिनी । कामरूपाकामगतिः कामयोगपरायणा ॥१८६॥
कामसम्मर्ईनरता कामगेहविकासिनी । कालभैरवभार्या च कालभैरवकामिनी ॥१८७॥
कालभैरवयोगस्था कालभैरवभोगदा । कामधेनुः कामदोग्ध्री काममाता च कांतिदा ॥१८८॥
कामुका कामुकाराध्या कामुकानन्दवर्द्धिनी । कार्तवीर्य्या कार्त्तिकेया कार्त्तिकेयप्रपूजिता ॥१८९॥

कार्या कारणदा कार्य्यकारिणी कारणांतरा । कांतिगम्या कांतिमयी कात्या कात्यायनी च का ॥१९०॥
कामसारा च काश्मीरा काश्मीराचारतत्परा । कामरूपाचाररता कामरूपप्रियंवदा ॥१९१॥
कामरूपाचारसिद्धिः कामरूपमनोमयी । कार्तिकी कार्तिकाराध्या कांचनारप्रसूनभूः ॥१९२॥
कांचनारप्रसूनाभा कांचनारप्रपूजिता । कांचरूपा कांचभूमिः कांस्यपात्रप्रभोजिनी ॥१९३॥
कांस्यध्वनिमयी कामसुन्दरी कामचुंबना । काशपुष्पप्रतीकाशा कामद्रुमसमागमा ॥१९४॥
कामपुष्पा कामभूमिः कामपूज्या च कामदा । कामदेहा कामगेहा कामबीजपरायणा ॥१९५॥
कामध्वजसमारूढा कामध्वजसमास्थिता । काश्यपी काश्यपाराध्या काश्यपानन्ददायिनी ॥१९६॥
कालिन्दी जलसंकाशा कालिन्दीजलपूजिता । कामदेवपूजानिरता कामदेवपरमार्थदा ॥१९७॥
कर्म्मणा कर्म्मणाकारा कामकर्मणकारिणी । कार्म्मणत्रोटनकरी काकिनी कारणाह्वया ॥१९८॥
काव्यामृता च कालिङ्गा कालिङ्गमर्दनोद्यता । कालागरुविभूषाढ्या कालागरुविभूतिदा ॥१९९॥
कालागरुसुगंधा च कालागरुप्रतर्पणा । कावेरीनीरसंप्रीता कावेरीतीरवासिनी ॥२००॥
कालचक्रभ्रमाकारा कालचक्रनिवासिनी । कानना काननाधारा कारुः कारुणिकामयी ॥२०१॥
काम्पिल्यवासिनी काष्ठा कामपत्नी च कामभूः । कादम्बरीपानरता तथा कादम्बरीकला ॥२०२॥
कामवंद्या च कामेशी कामराजप्रपूजिता । कामराजेश्वरी विद्या कामकौतुकसुन्दरी ॥२०३॥
काम्बोजजा काञ्छिनदा कांस्यकाञ्चनकारिणी । काञ्चनाद्रिसमाकारा काञ्चनाद्रिप्रदानदा ॥२०४॥
कामकीर्तिः कामकेशी कारिकाकांतराश्रया । कामभेदी च कामार्तिनाशिनी कामभूमिका ॥२०५॥
कालनिर्णाशिनी काव्यवनिता कामरूपिणी । कायस्था कामसंदीप्तिः काव्यदा कालसुन्दरी ॥२०६॥
कामेशी कारणवरा कामेशीपूजनोद्यता । काञ्चीनूपुरभूषाढ्या कुंकुमाभरणान्विता ॥२०७॥
कालचक्रा कालगतिः कालचक्रमनोभवा । कुन्दमध्या कुन्दपुष्पा कुन्दपुष्पप्रिया कुजा ॥२०८॥
कुजमाता कुजाराध्या कुठारवरधारिणी । कुञ्जरस्था कुशरता कुशेशयविलोचना ॥२०९॥
कुनठी कुररी कुद्रा कुरंगी कुटजाश्रया । कुंभीनसविभूषा च कुंभीनसवधोद्यता ॥२१०॥
कुंभकर्णमनोल्लासा कुलचूडामणिः कुला । कुलालगृहकन्या च कुलचूडामणिप्रिया ॥२११॥
कुलपूज्या कुलाराध्या कुलपूजापरायणा । कुलभूषा तथा कुक्षिः कुररीगणसेविता ॥२१२॥
कुलपुष्पा कुलरता कुलपुष्पपरायणा । कुलवस्त्रा कुलाराध्या कुलकुण्डसमप्रभा ॥२१३॥
कुलकुण्डसमोल्लासा कुलपूजापरायणा । कुण्डपुष्पप्रसन्नास्या कुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥२१४॥
कुण्डगोलोद्भवाधारा कुण्डगोलमयी कूहूः । कुण्डगोलप्रियप्राणा कुण्डगोलप्रपूजिता ॥२१५॥
कुण्डगोलमनोल्लासा कुण्डगोलवरप्रदा । कुण्डदेवरता क्रुद्धा कुलसिद्धिकरा परा ॥२१६॥
कुलकुण्डसमाकारा कुलकुण्डसमानभूः । कुण्डसिद्धिः कुण्डऋद्धिः कुमारीपूजनोद्यता ॥२१७॥
कुमारीपूजकप्राणा कुमारीपूजकालया । कुमारीकामसंतुष्टा कुमारीपूजनोत्सुका ॥२१८॥

कुमारीव्रतसंतुष्टा कुमारीरूपधारिणी । कुमारीभोजनप्रीता कुमारी च कुमारदा ॥२१९॥
कुमारमाता कुलदा कुलयोनिः कुलेश्वरी । कुललिंगा कुलानन्दा कुलरम्या कुतर्कधृक् ॥२२०॥
कुंती च कुलकांता च कुलमार्गपरायणा । कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा ॥२२१॥
कुलिशांगी कुब्जिका च कुब्जिकानन्दवर्द्धिनी । कुलीना कुञ्जरगतिः कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥२२२॥
कुलपाली कुलवती तथैव कुलदीपिका । कुलयोगेश्वरी कुण्डा कुंकुमारुणविग्रहा ॥२२३॥
कुंकुमानन्दसंतोषा कुंकुमार्णववासिनी। कुंकुमा कुसुमप्रीता कुलभूः कुलसुन्दरी ॥२२४॥
कुमुद्वती कुमुदिनी कुशला कुलटालया । कुलटालयमध्यस्था कुलटासंगतोषिता ॥२२५॥
कुलटाभवनो द्युक्ता कुशावर्ता कुलार्णवा । कुलार्णवाचाररता कुण्डली कुण्डलाकृतिः ॥२२६॥
कुमतिश्च कुलश्रेष्ठा कुलचक्रपरायणा । कूटस्था कूटदृष्टिश्च कुंतला कुंतलाकृतिः ॥२२७॥
कुशलाकृतिरूपा च कूर्चबीजधरा च कूः । कुं कुं कुं कुं शब्दरता क्रुं क्रुं क्रुं क्रुं परायणा ॥२२८॥
कुं कुं कुं शब्दनिलया कुक्कुरासंगवासिनी। कुकुरासङ्गसंयुक्ता कुकरानंतविग्रहा ॥२२९॥
कूर्चारंभा कूर्चबीजा कूर्चजापपरायणा । कुचस्पर्शनसंतुष्टा कुचालिंगमहर्षदा ॥२३०॥
कुमतिघ्नी कुबेरार्चा कुचभूः कुलनायिका । कुगायना कुचधरा कुमाता कुन्ददंतिनी ॥२३१॥
कुगेया कुहराभासा कुगेया कुघ्नदारिका । कीर्तिः किरातिनी क्लिन्ना किन्नरा किन्नरीक्रिया ॥२३२॥
क्रींकारा क्रींजपासक्ता क्रीं हूँ स्त्रीं मंत्ररूपिणी । किर्मीरितदृशापांगी किशोरी च किरीटिनी ॥२३३॥
कीटभाषा कीटयोनिः कीटमाता च कीटदा । किंशुका कीरभाषा च क्रियासाराक्रियावती ॥२३४॥
कींकीं शब्दपरा क्लांक्लींक्लूँक्लैंक्लौं मंत्ररूपिणी । कांकींकूंकैं स्वरूपाच कः फट् मंत्रस्वरूपिणी ॥२३५॥
केतकी भूषणानन्दा केतकीभरणान्विता । कैकदा केशिनी केशीकेशिसूदनतत्परा ॥२३६॥
केशरूपा केशमुक्ता कैकेयी कौशिकी तथा । कैरवा कैरवाह्लादा केशरा केतुरूपिणी ॥२३७॥
केशवाराध्यहृदया केशवासक्तमानसा । क्लैब्यविनाशिनी क्लैं च क्लैं बीजजपतोषिता ॥२३८॥
कौशल्या कोशलाक्षी च कोशा च कोमला तथा । कोलापुरनिवासा च कोलासुरविनाशिनी ॥२३९॥
कोटिरूपा कोटिरता क्रोधिनी क्रोधरूपिणी । केका च कोकिला कोटिः कोटिमंत्रपरायणा ॥२४०॥
कोट्यानंत मंत्रयुक्ता कैरूपा केरलाश्रया । केरलाचारनिपुणा केरलेन्द्रगृहस्थिता ॥२४१॥
केदाराश्रमसंस्था च केदारेश्वरपूजिता । क्रोधरूपा क्रोधपदा क्रोधमाता च कौशिकी ॥२४२॥
कोदण्डधारिणी क्रौंचा कौशल्या कौलमार्गगा । कौलिनी कौलिकाराध्या कौलिकागारवासिनी ॥२४३॥
कौतुकी कौमुदी कौला कुमारी कौरवार्चिता । कौण्डिन्या कौशिकी क्रोधा ज्वालाभासुररूपिणी ॥२४४॥
कोटिकालानलज्वाला कोटिमार्तण्डविग्रहा । कृत्तिका कृष्णवर्णा च कृष्णा कृत्या क्रियातुरा ॥२४५॥
कृशाङ्गी कृतकृत्या च क्रः फट्स्वाहास्वरूपिणी । क्रौंक्रौंहूंफट् मंत्रवर्णा क्रीं ह्रीं हूं फट्नमः स्वधा ॥२४६॥
क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं तथा हूँ हूँ फट्स्वाहा मंत्ररूपिणी । इतिश्रीसर्वसाम्राज्य मेधानामसहस्त्रकम् ॥२४७॥

॥फलश्रुति ॥

सुन्दरीशक्तिदानाख्यस्वरूपाभिधमेव च । कथितं दक्षिणाकाल्याः सुंदर्य्यै प्रीतियोगतः ॥२४८॥
वरदान प्रसङ्गेन रहस्यमपि दर्शितम् । गोपनीयं सदा भक्त्या पाठनीयं परात्परम् ॥२४९॥
प्रातर्मध्याह्नकाले च मध्यार्द्धरात्रयोरपि । यज्ञकाले जपांते च पठनीयं विशेषतः ॥२५०॥
यः पठेत्साधको धीरः कालीरूपो हि वर्षतः । पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥२५१॥
वाचकं तोषयेद्वापि स भवेत्कालिकातनुः । सहेलं वा सलीलं वा यश्चैनं मानवः पठेत् ॥२५२॥
सर्वदुःखविनिर्मुक्तस्त्रैलोक्यविजयी कविः । मृतवंध्या काकवंध्या कन्यावंध्या च वंध्यका ॥२५३॥
पुष्पवंध्या शूलवंध्या शृणुयात्स्तोत्रमुत्तमम् । सर्वसिद्धिप्रदातारं सत्कविं चिरजीविनम् ॥२५४॥
पाण्डित्यकीर्तिसंयुक्तं लभते नात्र संशयः । यं यं काममुपस्कृत्य कालीं ध्यात्व । जपेत्स्तवम् ॥२५५॥
तं तं कामंकरे कृत्वा मंत्री भवति नान्यथा । योनिपुष्पैर्लिंगपुष्पैः कुण्डगोलोद्भवैरपि ॥२५६॥
संयोगामृतपुष्पैश्च वस्त्रदेवीप्रसूनकैः । कालीपुष्पैः पीठतोयैर्य्योनिक्षालनतोयकैः ॥२५७॥
कस्तूरी कुंकुमैर्देवीं नखकालागरुक्रमात् । अष्टगंधैर्धूपदीपै र्यवयावकसंयुतैः ॥२५८॥
रक्तचंदनसिन्दूरै र्मत्स्यमांसादिभूषणैः । मधुभिः पायसैः क्षीरैः शोधितैः शोणितैरपि ॥२५९॥
महोपचारै रक्तैश्च नैवेद्यैः सुरसान्वितैः । पूजयित्वा महाकालीं महाकालेन लालिताम् ॥२६०॥
विद्याराज्ञीं कुल्लुकाञ्च जप्त्वा स्तोत्रं जपेच्छिवे । कालीभक्तस्त्वेकचित्तः सिन्दूरतिलकान्वितः ॥२६१॥
ताम्बूलपूरितमुखो मुक्तकेशो दिगम्बरः । शवयोनिस्थितो वीरः श्मशाने सुरतान्वितः ॥२६२॥
शून्यालये बिन्दुपीठे पुष्पाकीर्णे शिवावने । शयानोत्थः प्रभुंजानः कालीदर्शनमाप्नुयात् ॥२६३॥
तत्र यद्यत्कृतं कर्म तदनंतफलं भवेत् । ऐश्वर्ये कमला साक्षात् सिद्धौ श्रीकालिकाम्बिका ॥२६४॥
कवित्वे तारिणीतुल्यः सौन्दर्य्ये सुन्दरीसमः । सिंधोर्द्धारासमः कार्ये श्रुतौ श्रुतिधरस्तथा ॥२६५॥
वज्रास्त्रमिव दुर्द्धर्षस्त्रैलोक्यविजयास्त्रभृत् । शत्रुहंता काव्यकर्ता भवेच्छिवसमः कलौ ॥२६६॥
दिग्विदिक् चन्द्रकर्त्ता च दिवारात्रिविपर्य्ययी । महादेवसमो योगी त्रैलोक्यस्तंभकः क्षणात् ॥२६७॥
गाने तु तुंबुरुः साक्षाद्दाने कर्णसमो भवेत् । गजाश्वरथपत्तीनामस्त्राणामधिपः कृती ॥२६८॥
आयुष्येषु भुशुण्डी च जरापलितनाशकः । वर्षषोडशवांभूयात् सर्वकाले महेश्वरि ॥२६९॥
ब्रह्माण्डगोले देवेशि न तस्य दुर्लभं क्वचित् । सर्वं हस्तगतं भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥२७०॥
कुलपुष्पयुतं दृष्ट्वा तत्र कालीं विचिंत्य च । विद्याराज्ञीं तु संपूज्य पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥२७१॥
मनोरथमयी सिद्धिस्तस्य हस्ते सदा भवेत् । परदारान्समालिंग्य सम्पूज्य परमेश्वरीम् ॥२७२॥
हस्ताहस्तकया योगं कृत्वा जप्त्वा स्तवं पठेत् । योनिं वीक्ष्य जपेत्स्तोत्रं कुबेरादधिको भवेत् ॥२७३॥
कुण्डगोलोद्भवं गृह्य वर्णाक्तं होमयेन्निशि । पितृभूमौ महेशानि विधिरेखां प्रमार्जयेत् ॥२७४॥
तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चंचलां कामगर्विताम् । समानीय प्रयत्नेन संशोध्य न्यासयोगतः ॥२७५॥

प्रसूनमंचे संस्थाप्य पृथिवीं वशमानयेत् । मूलचक्रं तु संभाव्य देव्याश्चरणसंयुतम् ॥२७६॥
सम्पूज्य परमेशानीं संकल्प्य तु महेश्वरि । जप्त्वा स्तुत्वा महेशानीं प्रणवं संस्मरेच्छिवे ॥२७७॥
अष्टोत्तरशतैर्योनिं प्रमंत्र्याचुंब्य यत्नतः । संयोगीभूय जप्तव्यं सर्वविद्याधिपो भवेत् ॥२७८॥
शून्यागारे शिवारण्ये शिवदेवालये तथा । शून्यदेशे तडागे च गङ्गागर्भे चतुष्पथे ॥२७९॥
श्मशाने पर्वतप्रांते एकलिंगे शिवामुखे । मुण्डयोनौ ऋतौस्नात्वा गेहे वेश्यागृहे तथा ॥२८०॥
कुट्टिनीगृहमध्ये च कदलीमण्डपे तथा । पठेत्सहस्त्रनामाख्यं स्तोत्रं सर्वार्थसिद्धये ॥२८१॥
अरण्ये शून्यगर्ते च रणे शत्रुसमागमे । प्रजपेच्च ततो नामकाल्याश्चैव सहस्त्रकम् ॥२८२॥
बालानन्दपरो भूत्वा पठित्वा कालिकास्तवम् । कालीं संचिंत्य प्रजपेत्पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥२८३॥
सर्वसिद्धीश्वरो भूयाद्वाञ्छासिद्धीश्वरो भवेत् । मुण्डचूडकयो र्योनित्वचि वा कोमले शिवे ॥२८४॥
विष्टरे शववस्त्रे वा पुष्पवस्त्रासनेऽपि वा । मुक्तकेशो दिगावासो मैथुनी शयने स्थितः ॥२८५॥
जप्त्वा कालीं पठेत्स्तोत्रं खेचरीसिद्धिभाग्भवेत् । चिकुरं योगमासाद्य शुक्रोत्सारणमेव च ॥२८६॥
जप्त्वा श्रीदक्षिणां कालीं शक्तिपातशतंभवेत् । लतां स्पृशञ्जपित्वा च रमित्वा त्वर्चयन्नपि ॥२८७॥
आह्लादयन्दिगावासः परशक्तिं विशेषतः । स्तुत्वा श्रीदक्षिणां कालीं योनिं स्वकरगाञ्चरेत् ॥२८८॥
पठेन्नाम सहस्त्रं यः स शिवादधिको भवेत् । लतांतरेषु जप्तव्यं स्तुत्वा कालीं निराकुलः ॥२८९॥
दशावधानो भवति मासमात्रेण साधकः । कालरात्र्यां महारात्र्यां वीररात्र्यामपि प्रिये ॥२९०॥
महारात्र्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां संक्रमेऽपि वा । कुहूपूर्णेन्दुशुक्रेषु भौमा मायां निशामुखे ॥२९१॥
नवम्यां मंगलदिने तथा कुलतिथौ शिवे । कुलक्षेत्रे प्रयत्नेन पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥२९२॥
सौदर्शनो भवेदाशु किन्नरीसिद्धिभाग्भवेत् । पश्चिमाभिमुखं लिंगं वृषशून्यं पुरातनम् ॥२९३॥
तत्र स्थित्वा जपेत्स्तोत्रं सर्वकामाप्तये शिवे । भौमवारे निशीथे वा अमावस्यादिने शुभे ॥२९४॥
माषभक्तबलिं छागं कृसरान्नं च पायसम् । दग्धमीनं शोणितं च दधिदुग्धगुडार्द्रकम् ॥२९५॥
बलिं दत्त्वा जपेत्तत्र त्वष्टोत्तरसहस्त्रकम् । देवगंधर्वसिद्धौघैः सेवितां सुरसुन्दरीम् ॥२९६॥
लभेद्देवेशि मासेन तस्य चासन संहतिः । हस्तत्रयं भवेदूर्ध्वं नात्र कार्या विचारणा ॥२९७॥
हेलया लीलया भक्त्या कालीं स्तौति नरस्तु यः । ब्रह्मादीन्स्तंभयेद्देवि माहेशीं मोहयेत्क्षणात् ॥२९८॥
आकर्षयेन्महाविद्या दश पूर्वास्त्रियामतः । कुर्वीत विष्णुनिर्माणं यमादीनां तु मारणम् ॥२९९॥
ध्रुवमुच्चाटयेन्नूनं सृष्टिनूतनतां नरः । मेषमाहिषमार्जार खरच्छागनरादिकैः ॥३००॥
खड्गिसूकरकापोतैष्टिट्टिभैः शशकैः पलैः । शोणितैः सास्थिमांसैश्च कारण्डैर्दुग्धपायसैः ॥३०१॥
कादम्बरीसिंधुमद्यैस्सुरारिष्टैश्च सासवैः । योनिक्षालिततोयैश्च योनिलिंगामृतैरपि ॥३०२॥
स्वजातकुसुमैः पूज्य जपांते तर्पयेच्छिवाम् । सर्वसाम्राज्यनाम्ना तु स्तुत्वा नत्वा स्वशक्तितः ॥३०३॥
शक्त्या लभन् पठेत्स्तोत्रं कालीरूपो दिनत्रयात् । दक्षिणा कालिका तस्य गेहे तिष्ठति नान्यथा ॥३०४॥

वेश्यालतागृहे गत्वा तस्याश्चुम्बनतत्परः । तस्या योनौ मुखं दत्त्वा तद्रसं विलिहञ्जपेत् ॥३०५॥
तदंते नामसाहस्त्रं पठेद्भक्तिपरायणः । कालिकादर्शनं तस्य भवेद्देवि त्रियामतः ॥३०६॥
नृत्यपात्रगृहे गत्वा मकारपञ्चकान्वितः । प्रसूनमंचे संस्थाप्य शक्तिन्यासपरायणः ॥३०७॥
पात्राणां साधनं कृत्वा दिग्वस्त्रां तां समाचरेत् । संभाव्य चक्रं तन्मूले तत्र सावरणां जपेत् ॥३०८॥
शतं भाले शतं केशे शतं सिन्दूरमण्डले । शतत्रयं कुचद्वंद्वे शतं नाभौ महेश्वरि ॥३०९॥
शतं योनौ महेशानि संयोगे च शतत्रयम् । जपेत्तत्र महेशानि तदंते प्रपठेत्स्तवम् ॥३१०॥
शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः । मातङ्गिनीं समानीय किं वा कापालिनीं शिवे ॥३११॥
दंतमाला जपे कार्य्या गले धार्य्या नृमुण्डजा । नेत्रपद्मे योनिचक्रं शक्तिचक्रं स्ववक्त्रके ॥३१२॥
कृत्वा जपेन्महेशानि मुण्डयंत्रं प्रपूजयेत् । मुण्डासनस्थितो वीरो मकारपञ्चकान्वितः ॥३१३॥
अन्यामालिङ्ग्य प्रजपेदन्यां संचुम्ब्य वै पठेत् । अन्यां संपूजयेत्तत्र त्वन्यां सम्मर्द्दयन् जपेत् ॥३१४॥
अन्ययोनौ शिवं दत्त्वा पुनः पूर्ववदाचरेत् । अवधानसहस्त्रेषु शक्तिपातशतेषु च ॥३१५॥
राजा भवति देवेशि मासपंचकयोगतः । यवनीशक्तिमानीय गानशक्तिपरायणाम् ॥३१६॥
कुलाचारमतेनैव तस्या योनिं विकासयेत् । तत्र प्रदायजिह्वां तु जपेन्नामसहस्त्रकम् ॥३१७॥
नृकपाले तत्र दीपं जपेत्प्रज्वाल्य यत्नतः । महाकविवरो भूयान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥३१८॥
कामार्तां शक्तिमानीय योनौ तु मूलचक्रकम् । विलिख्य परमेशानि तत्र मंत्रं लिखेच्छिवे ॥३१९॥
तल्लिहन् प्रजपेद्देवि सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् । अश्रुतानि च शास्त्राणि वेदादीन् पाठयेद् ध्रुवम् ॥३२०॥
विना न्यासैर्विना पाठैर्विना ध्यानादिभिः प्रिये । चतुर्वेदाधिपो भूत्वा त्रिकालज्ञस्त्रिवर्षतः ॥३२१॥
चतुर्विधं च पाण्डित्यं तस्य हस्तगतं क्षणात् । शिवाबलिः प्रदातव्यः सर्वदा शून्यमण्डले ॥३२२॥
कालीध्यानं मंत्रचिंता नीलसाधनमेव च । सहस्त्रनामपाठश्च कालीनामप्रकीर्तनम् ॥३२३॥
भक्तस्य कार्य्यमेतावदन्यदभ्युदयं विदुः । वीरसाधनकं कर्म्म शिवा पूजा बलिस्तथा ॥३२४॥
सिंदूरतिलको देवि वेश्यालापो निरंतरम् । वेश्यागृहे निशाचारो रात्रौ पर्य्यटनं तथा ॥३२५॥
शक्तिपूजा योनिदृष्टिः खड्गहस्तो दिगम्बरः । मुक्तकेशो वीरवेषः कुलमूर्तिधरो नरः ॥३२६॥
कालीभक्तो भवेद्देवि नान्यथा क्षेममाप्नुयात् । दुग्धास्वादी योनिलेही संविदासवघूर्णितः ॥३२७॥
वेश्यालता समायोगान्मासात्कल्पलता स्वयम् । वेश्याचक्र समायोगात्कालीचक्रसमः स्वयम् ॥३२८॥
वेश्यादेहसमायोगात् कालीदेहसमः स्वयम् । वेश्यामध्यगतं वीरं कदा पश्यामि साधकम् ॥३२९॥
एवं वदति सा काली तस्माद्वेश्या वरा मता । वेश्या कन्या तथा पीठजाति भेदकुलक्रमात् ॥३३०॥
अकुलक्रमभेदेन ज्ञात्वा चापि कुमारिकाम् । कुमारीं पूजयेद्भक्त्या जपांते भवने प्रिये ॥३३१॥
पठेन्नामसहस्त्रं यः कालीदर्शनभाग्भवेत् । भक्त्या कुमारीं सम्पूज्य वेश्याकुलसमुद्भवाम् ॥३३२॥
वस्त्रहेमादिभिस्तोष्या यत्नात्स्तोत्रं पठेच्छिवे । त्रैलोक्यविजयी भूयाद्दिवा चन्द्रप्रकाशकः ॥३३३॥

यद्यद्दत्तं कुमार्य्यै तु तदनंतफलं भवेत् । कुमारी पूजनफलं मया वक्तं न शक्यते ॥३३४॥
चांचल्याद्दुरितं किंचित्क्षम्यतामय मंजलिः । एकाचेत्पूजिता बाला द्वितीया पूजिता भवेत् ॥३३५॥
कुमार्यः शक्तयश्चैव सर्वमेतच्चराचरम् । शक्तिमानीय तद्गात्रे न्यासजालं प्रविन्यसेत् ॥३३६॥
वामभागे च संस्थाप्य जपेन्नाम सहस्त्रकम् । सर्वसिद्धीश्वरो भूयान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥३३७॥
श्मशानस्थो भवेत्स्वस्थो गलितं चिकुरं चरेत् । दिगम्बरः सहस्त्रं च सूर्य्यपुष्पं समानयेत् ॥३३८॥
स्ववीर्य्येण प्लुतं कृत्वा प्रत्येकं प्रजपन् हुनेत् । पूज्य ध्यात्वा महाभक्त्या क्षमापालो नरः पठेत् ॥३३९॥
नखं केशं स्ववीर्य्यं च यद्यत्सम्मार्जनीगतम् । मुक्तकेशो दिशावासो मूलमंत्रपुरःसरः ॥३४०॥
कुजवारे मध्यरात्रे होमं कृत्वा श्मशानके । पठेन्नामसहस्त्रं यः पृथ्वीशाकर्षको भवेत् ॥३४१॥
पुष्पयुक्ते भगे देवि संयोगानन्दतत्परः । पुनश्चिकुरमासाद्य मूलमंत्रं जपन् शिवे ॥३४२॥
चितावह्नौ मध्यरात्रे वीर्य्य मुत्सार्य्ययत्नतः । कालिकां पूजयेत्तत्र पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥३४३॥
पृथ्वीशाकर्षणं कुर्य्यान्नात्र कार्याविचारणा । कदलीवनमासाद्य लक्षमंत्रं जपेन्नरः ॥३४४॥
मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमानः स्मरोपमः । श्रीमधुमतींत्युक्त्वा तथा स्थावरजङ्गमान् ॥३४५॥
आकर्षिणीं समुच्चार्य्य ठं ठं स्वाहा समुच्चरेत् । त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या तस्य हस्ते सदा भवेत् ॥३४६॥
नदीं पुरीं च रत्नानि हेमस्त्रीशैलभूरुहान् । आकर्षयत्यम्बुनिधिं सुमेरुं च दिगंततः ॥३४७॥
अलभ्यानि च वस्तूनि दूराद्भूमितलादपि । वृत्तांतं च सुरस्थानाद्रहस्ये विदुषामपि ॥३४८॥
राज्ञां च कथयत्येषा सत्यं सत्वरमादिशेत् । द्वितीयवर्षपाठेन भवेत्पद्मावति शुभा ॥३४९॥
ॐ ह्रीं पद्मावतिपदं ततस्त्रैलोक्यनाम च । वार्तां च कथयंद्वंद्वं स्वाहांतो मंत्र ईरितः ॥३५०॥
ब्रह्मविष्णवादिकानां च त्रैलोक्ये यादृशी भवेत् । सर्वं वदति देवेशि त्रिकालज्ञः कविः शुभः ॥३५१॥
त्रिवर्षं संपठन्देवि लभेद्भोगवतीं कलाम् । महाकालेन दृष्टोऽपि चितामध्यगतोऽपि वा ॥३५२॥
तस्या दर्शनमात्रेण चिरंजीवी नरो भवेत् । मृतसंजीविनीत्युक्त्वा मृतमुत्थापयद्वयम् ॥३५३॥
स्वाहांतो मनुराख्यातो मृतसंजीवनात्मकः । चतुर्वर्षं पठेद्यस्तु स्वप्नसिद्धिस्ततो भवेत् ॥३५४॥
ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कालि स्वप्ने कथयोच्चरेत् । अमुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहांतो मनुर्मतः ॥३५५॥
स्वप्नसिद्धा चतुर्वर्षात्तस्य स्वप्ने सदा स्थिता । चतुर्वर्षस्य पाठेन चतुर्वेदाधिपो भवेत् ॥३५६॥
तद्धस्तजलसंयोगान्मूर्खः काव्यं करोति च । तस्य वाक्यपरिचयान्मूर्तिर्विन्दति काव्यताम् ॥३५७॥
मस्तके तु करं धृत्वा वदवाणीमिति ब्रुवन् । साधको वांछया कुर्य्यात्तत्तथैव भविष्यति ॥३५८॥
ब्रह्माण्डगोलके याश्च याः काश्चिज्जगतीतले । समस्ताः सिद्धयो देवि करामलकवत्सदा ॥३५९॥
साधकस्मृतिमात्रेण यावंत्यः संति सिद्धयः । स्वयमायांति पुरतो जपादीनां तु का कथा ॥३६०॥
विदेशवर्तिनो भूत्वा वर्तंते चेटका इव । अमायां चन्द्रसंदर्शश्चन्द्रग्रहणमेव च ॥३६१॥
अष्टम्यां पूर्णचन्द्रत्वं चन्द्रसूर्याष्टकं तथा । अष्टदिक्षु तथाष्टौ च करोत्येव महेश्वरि ॥३६२॥

अणिमा खेचरत्वं च चराचरपुरीगतम् । पादुकाखड्गवेताल यक्षिणीगुह्यकादयः ॥३६३॥
तिलको गुप्ततादृश्यं चराचरकथानकम् । मृतसंजीविनी सिद्धिर्गुटिका च रसायनम् ॥३६४॥
उड्डीनसिद्धिर्देवेशि षष्ठिसिद्धीश्वरत्वकम् । तस्य हस्ते वसेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥३६५॥
केतौ वा दुन्दुभौ वस्त्रे विताने वेष्टने गृहे । भित्तौ च फलके देवि लेख्यं पूज्यं च यत्नतः ॥३६६॥
मध्ये चक्रं दशांगोक्तं परितो नामलेखनम् । तद्धारणान्महेशानि त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥३६७॥
एको हि शतसाहस्त्रं निर्जित्य च रणांगणे । पुनरायाति च सुखं स्वगृहं प्रति पार्वति ॥३६८॥
एको हि शतसंदर्शी लोकानां भवति ध्रुवम् । कलशं संस्थाप्य यत्नेन नामसाहस्त्रकं पठेत् ॥३६९॥
सेकः कार्य्यो महेशानि सर्वापत्तिनिवारणे । भूतप्रेतग्रहादीनां रक्षसां ब्रह्मरक्षसाम् ॥३७०॥
वेतालानां भैरवाणां स्कंदवैनायकादिकान् । नाशयेत् क्षणमात्रेण नात्रकार्या विचारणा ॥३७१॥
भस्मभिर्मंत्रितं कृत्वा ग्रहग्रस्तं विलेपयेत् । भस्मसंक्षेपणादेव सर्वग्रहविनाशनम् ॥३७२॥
नवनीतं चाभिमंत्र्य स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि । वन्ध्या पुत्रप्रदा देवि नात्र कार्या विचारणा ॥३७३॥
कण्ठे वा वामबाहौ वा योनौ वा धारणाच्छिवे । बहुपुत्रवती नारी सुभगा जायते ध्रुवम् ॥३७४॥
पुरुषो दक्षिणांगे तु धारयेत्सर्व सिद्धये । बलवान् कीर्तिमान् धन्यो धार्मिकः साधकः कृती ॥३७५॥
बहुपुत्रो रथानां च गजानामधिपः सुधीः । कामिनीकर्षणोद्युक्तः क्रीं च दक्षिणकालिके ॥३७६॥
क्रीं स्वाहा प्रजपेन्मंत्रमयुतं नामपाठकः । आकर्षणं चरेद्देवि जलखेचरभूगतान् ॥३७७॥
वशीकरणकामो हि हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं च दक्षिणे । कालिके पूर्वबीजानि पूर्ववत्प्रजपन् पठेत् ॥३७८॥
उर्वशीमपि वशयेन्नात्र कार्याविचारणा । क्रीं च दक्षिणकालिके स्वाहा युक्तं जपेन्नरः ॥३७९॥
पठेन्नाम सहस्त्रं तु त्रैलोक्यं मारयेद्ध्रुवम् । सद्भक्ताय प्रदातव्या विद्याराज्ञि शुभे दिने ॥३८०॥
सद्विनीताय शांताय दांतायायातिगुणाय च । भक्ताय ज्येष्ठपुत्राय गुरुभक्तिपराय च ॥३८१॥
वैष्णवाय प्रशुद्धाय शिवाबलिरताय च । वेश्यापूजनयुक्ताय कुमारीपूजकाय च ॥३८२॥
दुर्गाभक्ताय रौद्राय महाकालप्रजापिने । अद्वैतभावयुक्ताय कालीभक्तिपराय च ॥३८३॥
देयं सहस्त्रनामाख्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम् । गुरुदैवतमंत्राणां महेशस्यापि पार्वति ॥३८४॥
अभेदेन स्मरेन्मंत्रं स शिवः स गणाधिपः । यो मंत्रं भावयेन्मंत्री स शिवो नात्र संशयः ॥३८५॥
स शाक्तो वैष्णवः सौरः स एव पूर्णदीक्षितः । अयोग्याय न दातव्यं सिद्धिरोधः प्रजायते ॥३८६॥
वेश्या स्त्रीनिन्दकायाथ सुरासंवित्प्रनिन्दके । सुरामुखो मनुं स्मृत्वा सुराचार्यो भविष्यति ॥३८७॥
वाग्देवता घोरे आसापरघोरे च हूँ वदेत् । घोररूपे महाघोरे मुखीभीमपदं वदेत् ॥३८८॥
भीषणयमुष्य षष्ठ्यंतं हेतुर्वामयुगे शिवे । शिववह्नियुगास्त्रं हूँ हूँ कवचमनुर्भवेत् ॥३८९॥
एतस्य स्मरणादेव दुष्टानां च मुखे सुरा । अवतीर्णा भवेद्देवि दुष्टानां भद्रनाशिनी ॥३९०॥
खलाय परतंत्राय परनिंदापराय च । दुष्टाय दुष्टसत्त्वाय परवादरताय च ॥३९१॥

शिवाभक्ताय दुष्टाय परदाररताय च । न स्तोत्रं दर्शयेद्देवि शिवहत्याकरो भवेत् ॥३९२॥
कालिकानन्दहृदयः कालिकाभक्तिमानसः । कालीभक्तो भवेत्सोऽयं धन्यरूपः स एव तु ॥३९३॥
कलौकाली कलौकाली कलौकाली वरप्रदा । कलौकाली कलौकाली कलौकाली तु केवला ॥३९४॥
बिल्वपत्रसहस्राणि करवीराणि वै तथा । प्रतिनाम्ना पूजयेद्धि तेन काली वरप्रदा ॥३९५॥
कमलानां सहस्रं तु प्रतिनाम्ना समर्पयेत् । चक्रं संपूज्य देवेशि कालिकावरमाप्नुयात् ॥३९६॥
मंत्रक्षोभयुतो नैव कलशस्थ जलेन च । नाम्ना प्रसेचयेद्देवि सर्वक्षोभविनाशकृत् ॥३९७॥
तथा दमनकं देविसहस्रमाहरेद्व्रती । सहस्रनाम्ना संपूज्य कालीवरमवाप्नुयात् ॥३९८॥
चक्रं विलिख्य देहस्थं धारयेत्कालिकातनुः । काल्यै निवेदितं यद्यत्तदंशं भक्षयेच्छिवे ॥३९९॥
दिव्यदेहधरो भूत्वा कालीदेहे स्थितो भवेत् । नैवेद्यनिन्दकान् दुष्टान् दृष्ट्वा नृत्यंति भैरवाः ॥४००॥
योगिन्यश्च महावीरा रक्तपानोद्यताः प्रिये । मांसास्थिचर्मणोद्युक्ता भक्षयंति न संशयः ॥४०१॥
तस्मान्न निन्दयेद्देवि मनसा कर्मणा गिरा । अन्यथा कुरुते यस्तु तस्य नाशो भविष्यति ॥४०२॥
क्रमदीक्षायुतानां च सिद्धिर्भवति नान्यथा । मंत्रक्षोभश्च वा भूयात् क्षीणायुर्वा भवेद्ध्रुवम् ॥४०३॥
पुत्रहारी स्त्रियोहारी राज्यहारी भवेद्ध्रुवम् । क्रमदीक्षायुतो देवि क्रमाद्राज्यमवाप्नुयात् ॥४०४॥
एकवारं पठेद्देवि सर्वपापविनाशनम् । द्विवारं च पठेद्यो हि वाञ्छां विंदति नित्यशः ॥४०५॥
त्रिवारं च पठेद्यस्तु वागीशसमतां व्रजेत् । चतुर्वारं पठेद्देवि चतुर्वर्णाधिपो भवेत् ॥४०६॥
पंचवारं पठेद्देवि पंचकामाधिपो भवेत् । षड्वारं च पठेद्देवि षडैश्वर्य्याधिपो भवेत् ॥४०७॥
सप्तवारं पठेत्सप्तकाम्रानां चिंतितं लभेत् । वसुवारं पठेद्देवि दिगीशो भवति ध्रुवम् ॥४०८॥
नववारं पठेद्देवि नवनाथसमो भवेत् । दशवारं कीर्त्तयेद्यो दशार्हः खेचरेश्वरः ॥४०९॥
विंशतिवारं कीर्तयेद्यः सर्वैश्वर्यमयो भवेत् । पंचविंशतिवारैस्तु सर्वचिंताविनाशकः ॥४१०॥
पञ्चाशद्वारमावर्त्य पंचभूतेश्वरो भवेत् । शतवारं कीर्त्तयेद्यः शताननसमान धीः ॥४११॥
शतपंचकमावर्त्य राजराजेश्वरो भवेत् । सहस्रावर्त्तनाद्देवि लक्ष्मीरावृणुते स्वयम् ॥४१२॥
त्रिसहस्रं समावर्त्त्य त्रिनेत्रसदृशो भवेत् । पंचसाहस्रमावर्त्त्य कामकोटिविमोहनः ॥४१३॥
दशसाहस्रमावर्त्य भवेद्दशमुखेश्वरः । पंचविंशतिसाहस्रैश्चतु र्विंशतिसिद्धिधृक् ॥४१४॥
लक्षावर्त्तनमात्रेण लक्ष्मीपतिसमो भवेत् । लक्षत्रयावर्त्तनात्तु महादेवं विजेष्यति ॥४१५॥
लक्षपंचकमावर्त्त्य कलापंचकसंयुतः । दशलक्षावर्त्तनात्तु दशविद्यासिरुत्तमा ॥४१६॥
पंचविंशतिलक्षैस्तु दशविद्येश्वरो भवेत् । पंचाशल्लक्षमावृत्य महाकालसमो भवेत् ॥४१७॥
कोटिमावर्त्तयेद्यस्तु कालीं पश्यति चक्षुषा । वरदानोद्युक्तकरां महाकालसमन्विताम् ॥४१८॥
प्रत्यक्षं पश्यति शिवे तस्या देहो भवेद्ध्रुवम् । श्रीविद्याकालिका तारात्रिशक्तिविजयी भवेत् ॥४१९॥
विधेर्लिपिं च सम्मार्ज्य किंकरत्वं विसृज्य च । माहाराज्यमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥४२०॥

त्रिशक्ति विषये देवि क्रमदीक्षा प्रकीर्तिता । क्रमदीक्षा युतो देवि राजा भवति निश्चितम् ॥४२१॥
क्रमदीक्षा विहीनस्य फलं पूर्वमिहेरितम् । क्रमदीक्षा युतो देवि शिव एव न चापरः ॥४२२॥
क्रमदीक्षासमायुक्तः काल्युक्तसिद्धिभाग्भवेत् । क्रमदीक्षाविहीनस्य सिद्धिहानिः पदे पदे ॥४२३॥
अहो जन्मवतां मध्ये धन्यः क्रमयुतः कलौ । तत्रापि धन्यो देवेशि नामसाहस्त्रपाठकः ॥४२४॥
दशकालीविधौ देवि स्तोत्रमेतत्सदा पठेत् । सिद्धिं विंदति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥४२५॥
कालौ कालीमहाविद्या कलौकाली च सिद्धिदा । कलौकाली च सिद्धा च कलौकाली वरप्रदा ॥४२६॥
कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता । कलौ काली केवला स्यान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥४२७॥
नान्यविद्या नान्यविद्या नान्यविद्या कलौ भवेत् । कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चित्सिद्धिकामुकः ॥४२८॥
स तु शक्तिं विना देवि रतिसम्भोगमिच्छति । कलौ कालीं विना देवि यः कश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥४२९॥
स नीलसाधनं त्यक्त्वा परिभ्रमति सर्वतः । कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चिन्मोक्षमिच्छति ॥४३०॥
गुरुध्यानं परित्यज्य सिद्धिमिच्छति साधकः । कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चिद्राज्यमिच्छति ॥४३१॥
स भोजनं परित्यज्य भिक्षुवृत्तिमभीप्सति । स धन्यः स च विज्ञानी स एव सुरपूजितः ॥४३२॥
स दीक्षितः सुखी साधुः सत्यवादी जितेन्द्रियः । स वेदवक्ता स्वाध्यायी नात्र कार्या विचारणा ॥४३३॥
शिवरूपं गुरुं ध्यात्वा शिवरूपं गुरुं स्मरेत् । सदाशिवः स एव स्यान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥४३४॥
स्वस्मिन् कालीं तु संभाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम् । त्रैलोक्यविजयी भूयान्नात्र कार्यां विचारणा ॥४३५॥
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः । रहस्यातिरहस्यं च रहस्यातिरहस्यकम् ॥४३६॥
श्लोकार्द्धंपादमात्रं वा पादार्द्धं च तदर्द्धकम् । नामार्द्धं यः पठेद्देवि न वंध्यदिवसं नयेत् ॥४३७॥
पुस्तकं पूजयेद्भक्त्या त्वरितं फलसिद्धये । न च मारीभयं तत्र न चाग्निवायुसंभवम् ॥४३८॥
न भूतादिभयं तत्र सर्वत्र सुखमेधते । कुंकुमालक्तकेनैव रोचनागरुयोगतः ॥४३९॥
भूर्जपत्रे लिखेत्पुस्तकं सर्वकामार्थसिद्धये । इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥४४०॥
इति गदितमशेषं कालिकावर्णरूपं प्रपठति, यदि भक्त्या सर्वसिद्धीश्वरः स्यात् ।
अभिनवसुखकामः सर्वविद्याभिरामो भवति, सकलसिद्धिः सर्ववीरा समृद्धिः ॥४४१॥

॥ इति श्रीकालीतंत्रे रुद्रयामले च कालीसहस्त्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री कालिका सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र को भगवान शिव ने परशुरामजी को दिया था अतः इसकी विशेष महिमा है एवं स्वयं भगवती काली ने इसे प्रकाशित किया है।

॥ श्री शिव उवाच ॥

कथितोऽयं महामंत्रः सर्वमंत्रोत्तमोत्तमः। यामासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्य पदमुत्तमम् ॥
संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्त विधिना भवान्। कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्य विजिगीषया ॥

॥ श्री राम उवाच ॥

प्रसन्नो यदि मे देव परमेश पुरातन। रहस्यं परमं देव्याः कृपया कथय प्रभो ॥
विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना बलिं। विना गंधं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियां ॥
प्राणयामं विनाध्यानं विना भूतविशोधनम्। विनादानं विना जापं येन काली प्रसीददति ॥

॥ श्री शिव उवाच ॥

पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ भृगुवंश समुद्भव। भक्तानामपि भक्तोसि त्वमेव साधयिष्यसि ॥
देवीं दानव कोटिघ्नीं लीलया रुधिरप्रियाम्। सदा स्तोत्र प्रियामुग्रां कामकौतुक लालसां ॥
सर्वदानन्द हृदयामासवोत्सव मानसाम्। माध्वी कमत्स्यमांसानुरागिणीं वैष्णवीं पराम् ॥
श्मशान वासिनीं प्रेतगण नृत्य महोत्सवाम्। योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्र हृदयस्थिताम् ॥
तामुग्रकालिकां राम प्रसीदयितुमर्हसि। तस्याः स्तोत्र परं पुण्यं स्वयं 'काल्या प्रकाशितम्' ॥
तव तत् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय। गोपनीयं प्रयत्नेत पठनीयं परात्परम् ॥
यस्यैक कालपठनात् सर्वेविघ्नाः समाकुलाः। नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वतः ॥
गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गङ्गाप्रवाहवत्। तस्यदर्शन मात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः ॥
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः। राजानोऽपि च दासत्वं भजंते किं परे जनाः ॥
निशाथे मुक्त केशस्तुः नग्नः शक्ति समाहितः। मनसा चिन्तयेत् कालीं महाकालेन चालितां ॥
पठेत् सहस्त्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम्। प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते ॥
यथा ब्रह्ममृतै र्ब्रह्मकुसुमैः पूजिता परा। प्रसीददति तथानेन स्तुता काली प्रसीददति ॥

विनियोगः- अस्य श्री दक्षिण कालिका सहस्त्रनाम स्तोत्रस्य महाकालभैरव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्मशानकाली देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः।

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

श्मशान कालिका काली भद्रकाली कपालिनी। गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥
कालिका कालरात्रिश्च महाकाल नितम्बिनी। कालभैरव भार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥
कामदा कामिनी कन्या कमनीयस्वरूपिणी। कस्तूरीरस लिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वर गामिनी ॥
ककारवर्ण सर्वाङ्गी कामिनी कामसुन्दरी। कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती ॥

कांता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलकामिनी । कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गति नाशिनी ॥
कौमारी कलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी । कृशाङ्गी कुलिशांगीजा क्रीङ्कारी कमला कला ॥
करालास्या कराली च कुलकांता - पराजिता । उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला ॥
नीला घना मेघनादा मात्रा मुद्रा मितामिता । ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला ॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका । वज्राङ्गी वज्राकङ्काला नृमुण्डस्त्रग्विणी शिवा ॥
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्त विभूषणा । रक्तचन्दन सिक्ताङ्गी सिंदुरारुण मस्तका ॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा । महादंष्ट्रा महामाया सुदन्ती युगदन्तुरा ॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना । शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेताम्बुजेक्षणा ॥
अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी । प्रफुल्लपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी ॥
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी । समुतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी ॥
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकुचा । प्रेतदेहाकर्णपूरा प्रेतपाणिसुमेखला ॥
प्रेतासना प्रियप्रेता पुण्यदा कुलपण्डिता । पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी ॥
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य - विभूषणा । पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाशिनी ॥
नृमुण्डहस्ता शान्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका । दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नतस्तनी ॥
दिगम्बरी घोररावा सृक्कान्तरक्त - वाहिनी । घोररावा शिवासंगा निःसंगा मदनातुरा ॥
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधासिन्धु निवासिनी । अभिमत्तामहामत्ता सर्वाकर्षण कारिणी ॥
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्य परायणा । चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा ॥
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी । जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्द कारिणी ॥
जगज्जीववती हेमवती माया महालया । नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी ॥
नागकन्या देवकन्या गान्धारी किन्नरी सुरी । मोहरात्रि महारात्रि दारुणामा - सुरासुरी ॥
विद्याधरी वसुमति यक्षिणी योगिनीजरा । राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ॥
श्रुतिस्मृति महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी । चिंताचिंता स्वधा स्वाहा निद्रातंद्रा च पार्वती ॥
अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्या तपस्विनी । गङ्गा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा ॥
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा । वाणी बुद्धि मंहालक्ष्मी लक्ष्मीर्नीलसरस्वती ॥
स्त्रोतस्वती स्त्रोतवती मातंगी विजया जया । नदी सिन्धुः सर्वमयी तारा शून्य - निवासिनी ॥
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी । सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्द स्वरूपिणी ॥
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी । रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी ॥
पद्मा पद्मालया पद्मसुखी पद्मविभूषणा । शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया ॥
भ्रान्तिर्भव रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी । उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चेन्द्रस्वरूपिणी ॥

सूर्य्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान । शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता ॥
सर्वेश्वरी सर्वमता सर्वाणी हरवल्लभा । सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा ॥
कर्त्रीं हर्त्रीं पालयित्री शर्वरी तामसी दया । तमिस्रा यामिनीस्था च स्थिरा धीरा तपस्विनी ॥
चार्वङ्गी चंचला लोलजिह्वा चारु चरित्रिणी । त्रपा त्रपावती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती ॥
सत्ववती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी । गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसीघृणा ॥
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती । वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्रीं यजुःप्रिया ॥
ऋक्सामाथर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा । कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेगुवीणापरायणा ॥
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी । मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता ॥
रम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती रमा । शङ्खिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा ॥
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपाणिनी । पिनाकधारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी ॥
वज्रिणी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता । जटिनी विम्बिनी नीला लावण्याम्बुधिचन्द्रिका ॥
बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्र माथिनी । महिषासुरसंहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका ॥
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्पर हस्तिनी । रक्तप्रिया मांसरुचिरा सवासरक्त मानसा ॥
गलच्छोणित मुण्डालिकण्ठमाला विभूषणा । शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी ॥
व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचेलिनी सिंहवाहिनी । वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभाविनी ॥
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा । सुभ्रुर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ॥
स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी । अरुन्धती तीक्ष्णा च भोगवायनुवादिनी ॥
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालमुख्य सुरान्तका । मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता ॥
मदिरा मदिरान्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी । सुमध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ॥
जयदा जित्वरा जेत्री जय श्रीर्जयशालिनी । सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभ कारिणी ॥
शिवदूती भूतिमती विभूतिर्भीषणानना । कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका ॥
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपति प्रिया । सगुणा निर्गुणा धृष्टा निष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता ॥
धनिष्ठा धनदा धन्यावसुधा स्वप्रकाशिनी । उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका ॥
महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीवना । कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी ॥
चिन्तामणि कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला । कार्त्तिकी कार्त्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा ॥
सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी । त्रैलोक्य जननी हृष्टा निर्मांसा मनोरूपिणी ॥
तडाग निम्नजठरा शुष्कमांसास्थि मालिनी । अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्य पावनीश्वरी ॥
व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्त्तिः शर्वरी भीमनादिनी । क्षेमङ्करी शंकरी च सर्वसम्मोह कारिणी ॥
अर्द्ध तेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा । अद्वैता भोगिनी पूज्या युवती सर्वमङ्गला ॥

महाभैरव पत्नी च परमानन्दभैरवी । सुधानन्दभैरवी च उन्मादानन्दभैरवी ॥
मुक्तानन्दभैरवी च तथा तरुणभैरवी । ज्ञाननन्दभैरवी च अमृतानन्दभैरवी ॥
महाभयङ्करी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी । त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ॥
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पञ्चमी पुरवासिनी । महासप्तदशी चैव षौडशी त्रिपुरेश्वरी ॥
महांकुश स्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा । नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥
राजराजेश्वरी धीरा महात्रिपुर सुन्दरी । सिन्दूर पूर रुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥
सर्वाङ्गसुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयिणी । जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दन धारिणी ॥
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दन - रूपधृक् । चामरी बालकुटिलनिर्मल श्यामकेशिनी ॥
वज्रमौक्तिक रत्नाढ्य किरीट मुकुटोज्ज्वला । रत्नकुण्डल संसक्त स्फुरद्गण्ड मनोरमा ॥
कुंजरेश्वर कुम्भोत्थ मुक्तारञ्जित नासिका । मुक्ताविद्रुम माणिक्यहाराढ्य स्तनमण्डला ॥
सूर्यकान्तेन्दु कान्ताढय स्पर्शाश्मकंठभूषणा । बीजपूरस्फुरद्बीज दन्तपंक्तिरनुत्तमा ॥
कामकोदण्डका भुग्नभ्रूकाटाक्ष प्रवर्षिणी । मातङ्गकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा ॥
मनोज्ञ शष्कुलीकर्णा हंसीगति विडम्बिनी । पद्मरागांगद ज्योतिर्दोश्चतुष्कप्रकाशिनी ॥
नानामणि परिस्फूर्जच्छुद्ध कांचनकंकना । नागेन्द्रदन्त निर्माणवलयांकित पाणिनी ॥
अंगुरीयक चित्रांगी विचित्र क्षुद्रघण्टिका । पट्टाम्बर परीधाना कलमञ्जीर शिंजिनी ॥
कर्पूरागरुकस्तूरी कुंकुमद्रव लेपिता । विचित्र रत्न पृथिवी कल्प शाखि तलस्थिता ॥
रत्नद्वीप स्फुरद्रक्त सिंहासन विलासिनी । षट्चक्रभेदनकरी परमानन्द रूपिणी ॥
सहस्त्रदलपद्मान्त श्चन्द्रमण्डलवर्त्तिनी ॥
ब्रह्मरूपशिव क्रोडनानासुख विलासिनी । हर विष्णु विरिंचीन्द्र ग्रहनायक सेविता ॥
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी । मातङ्गिनी श्रीमती च तथैवानन्द मेखला ॥
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता । माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी ॥
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपा सुमेरवला । गान्धारी हस्तजिह्वा च इडा चैव शुभङ्करी ॥
पिङ्गला ब्रह्मदूती च सुषुम्ना चैव गन्धिनी । आत्मयोनि र्ब्रह्मयोनिर्जगद् योनिरयोनिजा ॥
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगरूपिणी । भगात्मिका भगाधाररूपिणी भगमालिनी ॥
लिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुरा भैरवी तथा । लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरूपधृक् ॥
लिंगमाना लिंगभवा लिंगलिंगा च पार्वती । भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा ॥
गृध्ररूपा शिवारूपा चक्रिणी चक्ररूपधृक । लिंगाभिधायिनी लिंगप्रिया लिंगनिवासिनी ॥
लिंगस्था लिंगनी लिंगरूपिणी लिंगसुन्दरी । लिंगगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा ॥
लिंगनामसदानन्दा भगनामसदागतिः । लिंगमालाकण्ठभूषा भगमाला विभूषणा ॥

भगलिंगामृतप्रीता भगलिंग स्वरूपिणी । भगलिंगस्य रूपा च भगलिंग सुखावहा ॥
स्वयम्भू कुसुमप्रीता स्वयम्भू कुसुमार्चिता । स्वयम्भू कुसुमप्राणा स्वयम्भू पुष्पतर्पिता ॥
स्वयम्भू पुष्प घटिता स्वयम्भू पुष्पधारिणी । स्वयम्भू पुष्पतिलका स्वयम्भू पुष्पचर्चिता ॥
स्वयम्भू पुष्पनिरता स्वयम्भू कुसुमग्रहा । स्वयम्भू पुष्पयज्ञांशा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ॥
स्वयम्भू पुष्पनिचिता स्वयम्भू कुसुमप्रिया । स्वयम्भू कुसुमादान लालसोन्मत्तमानसा ॥
स्वयम्भू कुसुमानन्दलहरी स्निग्धदेहिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमाधारा स्वयम्भू कुसुमाकुला । स्वयम्भू पुष्पनिलया स्वयम्भू पुष्पवासिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमस्निग्धा स्वयम्भू कुसुमात्मिका। स्वयम्भू पुष्पकरिणी स्वयम्भू पुष्पवाणिका ॥
स्वयम्भू कुसुमध्याना स्वयम्भू कुसुमप्रभा । स्वयम्भू कुसुमज्ञाना स्वयम्भू पुष्पभागिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमोल्लसा स्वयम्भू पुष्पवर्षिणी । स्वयम्भू कुसुमोत्साहा स्वयम्भू पुष्परूपिणी ॥
स्वयम्भू कुसुमोन्मादा स्वयम्भू पुष्पसुन्दरी । स्वयम्भू कुसुमाराध्या स्वयम्भू कुसुमोद्भवा ॥
स्वयम्भू कुसुमव्याग्रा स्वयम्भू पुष्पपूर्णिता । स्वयम्भू पूजक प्रज्ञा स्वयम्भू होतृमातृका ॥
स्वयम्भू दातृरक्षित्री स्वयम्भू रक्ततारिका । स्वयम्भू पूजकग्रस्ता स्वयम्भूं पूजक प्रिया ॥
स्वयम्भू वन्दकाधारा स्वयम्भू निन्दकान्तका । स्वयम्भू प्रदसर्वस्वा स्वयम्भू प्रदपुत्रिणी ॥
स्वयम्भू प्रदसस्मेरा स्वयम्भू प्रदशरीरिणी ॥
सर्वकालोद्भव प्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका । सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवोदभवा ॥
कुण्डपुष्प सदा प्रीतिगेलि पुष्पसदारतिः । कुण्डगोलोद्भव प्राणा कुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥
स्वयम्भूवा शिवाधात्री पावनी लोकपावनी । कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्रसुन्दरी ॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्का चन्द्रमण्डला । सूक्ष्मा सूक्ष्मा वलाका च वरदा भयनाशिनी ॥
वरदाभयदा चैव मुक्तिबन्ध विनाशिनी । कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी ॥
दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थ प्रकाशिनी । दुष्टा दुष्टमतिश्चैव सर्वकार्य विनाशिनी ॥
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धु निवासिनी । शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजा सदारतिः ॥
शुक्रपूज्या शुक्रहोम सन्तुष्टा शुक्रवत्सला । शुक्रमूर्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजक पुत्रिणी ॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्र संस्पृहा शुक्रसुन्दरी । शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्याति शुक्रिणी ॥
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टि विधायिनी । शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दक वन्दिता ॥
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दाभिधायिका । शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा ॥
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्र निन्दक नाशिनी। शुक्रात्मिका शुक्रसम्वत् शुक्राकर्षण कारिणी ॥
शारदा साधक प्राणा साधका सक्तमानसा । साधकोत्तम सर्वस्वा साधकाभक्तरक्तता ॥
साधकानन्द सन्तोषा साधकानन्द कारिणी । आत्मविद्या ब्राह्मविद्या परब्रह्म स्वरूपिणी ॥

॥फलश्रुति॥

त्रिकूटस्था पञ्चकूटा सर्वकूटशरीरिणी । सर्ववर्णमयी वर्णजपमाला विधायिनी ॥
इति श्री कालिका नामे सहस्त्रं शिवभाषितम् । गुह्याद्‌गुह्यतरं साक्षात् महापातक नाशनम् ॥
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्योयौरुभयोरपि । लभते गाणपत्यं स यः पठेत साधकोत्तमः ॥
यः पठेत पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदथ । सर्वपाप विनिर्मुक्तः स याति कालिकापुरम् ॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिम्मानवः स्मरेत् । दुर्ग दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम् ॥
बंध्या वा काकबंध्या वा मृतवत्सा च यांगना । श्रुत्वा स्तोत्रमिदं पुत्रान् लभते चिरजीविनः ॥
यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम् । देवीपाद प्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम् ॥

॥ इति श्रीकालिका कुल सर्वस्वे कालिका सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ इतिकाली तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ प्रत्यंगिरा तन्त्रम् ॥

प्रत्यंगिरा महाशक्ति भद्रकाली का ही स्वरूप है। काली कल्पतरु में इसे कालिका के भेद स्वरूपों में माना है। महाशक्ति प्रत्यंगिरा शत्रु द्वारा किये अभिचार कर्म तथा कृत्या प्रयोगों को नष्ट करती है। विपरीत प्रत्यंगिरा नाम से विख्यात देवी शत्रु के द्वारा किये गये दुष्प्रयोग के दुष्फल को वापस शत्रु पक्ष की ओर भेजकर शत्रु को दण्ड देती है। यह देवी शत्रु के अधिकार में गयी हुई वस्तु को वापस दिलाती है। बगलामुखी से अधिक प्रभावी प्रयोग इस विद्या के हैं। दक्षिणमार्ग एवं वाममार्ग दोनों ही क्रम से फलप्रदा है। पूर्णाभिषिक्त एवं विशिष्ट साधक इस विद्या के मूलमंत्रों में कामना भेद से बीजाक्षरों के परिवर्तन अथवा कामना मंत्र कामनानाम जोड़कर मंत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

यह देवि शवारूढा भी है और सिंहवाहनारूढा भी। अंगिरा, प्रत्यंगिरा, कौशिकी, रक्ता, देशिका, भद्रकाली इत्यादि नाम हैं। महाप्रत्यंगिरा सहस्त्रवदना है, उनकी जिह्वा से ज्वाला निकल रही है, ऐसा ध्यान साधक (माला मंत्र) में करें।

मेरू तंत्र के अनुसार अरिमंत्र के त्याग के विधान हेतु अरिमंत्र के जल में विसर्जन व शांति हवन के पश्चात् प्रत्यंगिरा मंत्र का जाप करना चाहिये ताकि अरिमंत्र का दुष्प्रभाव साधक पर नहीं पड़ सके।

जैन व प्राकृत ग्रंथों में भी प्रत्यंगिरा मंत्रों का वर्णन मिलता है।

एक विशिष्ट साधक ने राजा के द्वारा जब्त की गई संपत्ति व अधिकार को पुनः दिलाने के लिये प्रथम पुष्पणि कन्या के साथ देवी भाव से षोडशोपचार पूजन किया। तीसरे दिन कन्या ने पंचम कर्म का आदेश दिया। साधक ने प्रार्थना की कि आप शक्ति स्वरूपा है मैं शिव स्वरूप के योग्य नहीं हुं यदि आप प्रसन्न है तो मेरे यजमान के कार्य सिद्धि का आशिर्वाद दीजिये। चौथे दिन वह कार्य सिद्ध हो गया।

कामना भेद व कार्य भेद के कारण हमने भी मूल मंत्र के साथ कुछ अन्य मंत्रों द्वारा संपुटिकरण करके तथा कामना संयोग के द्वारा मंत्र जप अनुष्ठान कराये है। कुछ स्वयं के अनुभवी प्रयोगों का वर्णन भी आगे किया जायेगा। यह विद्या खोये हुये मान सम्मान धन को वापस दिलाती है।

प्रारंभ में परकृत्या, पीड़ा निवारक मंत्रों का वर्णन किया गया है पश्चात् शत्रुनाशक, पर पीड़ा कारक कृत्या ऋचाओं का वर्णन इस तंत्र खण्ड में दिया है।

॥ सावधानी विशेष ॥

कई बार ऐसा होता है। कि आप किसी यजमान के हित में प्रयोग कर रहे हैं तो कृत्या शक्ति वापस जाकर कृत्या प्रयोग करने वाले को संकेत देती है कि अब मुझे वहां से हटना पड़ेगा, इस कारण कृत्या भेजने वाला व्यक्ति पुनः शाबर मंत्रोक्त मूंठ चलाता है या अन्य कोई प्रयोग करता है।

आप पर देवी कृपा है, रक्षा कर्म मजबूत है तो शत्रु द्वारा छोड़ी गई मूंठ स्वतः जलकर नष्ट हो जायेगी उस समय

फटाके या धमाके की आवाज होगी। कपड़ा, प्लास्टिक, केश इत्यादि के जलने जैसी बदबू घर में फैल जायेगी। देवी कृपा से वह मूंठ पानी के पात्र मटकी में समा जायेगी तो मटकी फूट जायेगी और उसमें से धुये निकलेगी। कृत्या किसी वृक्ष उतरेगी तो वृक्ष सूख जायेगा।

एक व्यक्ति के ऊपर कृत्या प्रयोग किया हुआ था उससे **प्रत्यंगिरा स्तोत्र** के विशेष संख्या में जप करने को कहा गया आखिरी दिनों में पीड़ित व्यक्ति को एक बार सीने में जलन होकर खांसी आई और उसके साथ ही मुंह से धुआं निकला अर्थात् उसके खिलाफ कोई पुत्तल प्रयोग किया हुआ था जा जलकर नष्ट हो गया।

इस तरह अलग अलग घटनाओं में अलग अलग लक्षण हो सकते है।

॥ अथ प्रत्यंगिरा मंत्राः॥

(१) षोडशाक्षर मंत्रः- (पुरुश्चर्याणवे) **ॐ अं कं चं टं तं पं ह्मं (ह्मां) भों ह्रीं हुं स हुं फट् स्वाहा।**

(२) सप्तदशाक्षर मंत्रः- (मेरु तंत्रे)- **ॐ अं कं चं टं पं यं शं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः हुं फट् स्वाहा।**

विनियोग :- **अस्य मंत्रस्य विधाता ऋषि, उष्णिक छंदः, महावायु-महापृथ्वी-महाऽऽकाश- महासमुद्र-महापर्वत-महाग्नि इत्यादि षट् देवता, हुं बीजं, ह्रीं शक्तिं सर्वशत्रु क्षयार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौ, ह्रः से क्रमशः** षडङ्गन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ताररत्नादिर्चिराक्रांतमम्भः प्रस्त्रवणैर्युतं ।व्याघ्रादि पशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिं स्मरेत् ॥
मत्स्यकूर्मादि बीजाढ्यं नवरत्न समर्चितं ।घनतोयं स कल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ॥
ज्वालावली समाक्रतं जगत्-त्रितयमद्भूतं ।पीतवर्णं महावह्निं संस्मरेच्छत्रु शांतये ॥
स्वरात् समुत्थरेण्वौघ-मलिनमूर्ध्व भूविदं ।पवनं संस्मरेद् विश्वजीवनं प्राणस्वरूपतः ॥
नदी पर्वत वृक्षादि-कलिता ग्रामसंकुला ।आधारभूता जगतोध्येया पृथ्वीह मंत्रिणा ॥
सूर्यादिग्रह नक्षत्र कालचक्र समन्वितं । निर्मल गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रय प्रदम् ॥

सोलह हजार जप करके व्रीहि, तण्डुल, आज्य, सर्षप, यव, तिलादि षड्द्रव्यों से दशांश होम करें।

(३) षट् विशंत्यक्षर मंत्रः- ॐ हुं स्फारय स्फाराय मारय मारय शत्रुवर्गान् नाशय नाशय स्वाहा।

प्रत्यंगिरा स्तोत्र के अंतर्गत यह मंत्र है। सर्षप हवन करने से शत्रु नाश होवे।

(४) अष्टाविंशत्यक्षर मंत्रः- (क) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भंजय भंजय फे हुं फट् स्वाहा।(ख) मंत्रोद्धर- प्रणवं वाग्भवं माया लक्ष्मीः प्रत्यंगिरेति च। मम रक्ष द्वयं देवि मम शत्रून् पदंमयि। भक्षं द्वयं प्रणवं च स्वाहांतो मंत्र उत्तमः।

मंत्र यथा- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मम रक्ष रक्ष देवि मम शत्रून् भक्ष भक्ष ॐ स्वाहा।**

(हमारे अनुमान में **मां रक्ष रक्ष** अधिक उपयुक्त है।)

विनियोग – दोनों मंत्रों के **ऋषि भैरव है तथा छंदः अनुष्टुप् है। प्रथम मंत्र के देवता दैशिका, रक्ता, और प्रत्यंगिरा देवी है। दूसरे मंत्र का देवता प्रत्यंगिरा है तथा बीज परा शक्ति स्वाहा एवं ॐ कीलक है।** भोग अपवर्ग सिद्धि हेतु विनियोग कहा गया है।

षडङ्गन्यास – **ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट्। ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुम्। मा रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय अस्त्राय फट्।** दूसरे मंत्र के न्यासादि भी इसी प्रकार करें।

यथा- **ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट्। ॐ प्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष देवी कवचाय हुम्। ॐ मम शत्रून् भक्ष भक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।**

(१) प्रथम मंत्र हेतु ध्यान इस प्रकार है-

टङ्क कपालं डमरुं त्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशोऽसित भीमदंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

(२) दूसरे मंत्र हेतु ध्यान इस प्रकार है-

आशाम्बरा मुक्तकचा घनच्छाविर्ध्येया स-चर्मासि कराऽहि भूषणा।
दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहितात्वया प्रत्यंगिरा शङ्कर-तेजसेरिता॥

(पाठान्तर भेद से **"ग्रसिताहितान्वय"** है)

(५) अन्य मंत्र- कामना भेद तथा मूलइष्टदेव के भेद से बीजाक्षरों का परिवर्तन कर हमने अन्य प्रयोग भी करायें है।

यथा- **बालायुक्त उपरोक्त मंत्र ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः प्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय ममैश्वर्याणि देहि देहि स्वाहा।**

(६) चतुस्त्रिशंदक्षर मंत्रः- (सिद्धान्त संग्रह से उद्धृत पुरश्चर्यार्णव में मंत्र इस प्रकार है तथा इसके ऋष्यादि ३७ अक्षर मंत्र के समान है)

ॐ यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव। तां ब्रह्मणाऽप निर्णुद्म प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ह्रों॥

यह मंत्र विपरीत प्रत्यंगिरा मंत्र भी कहलाता है जो शत्रु की क्रिया को वापस उसी पर लौटाता है।

पाठान्तर- मंत्र के आदि एवं अंत में **ॐ** तथा **ह्रों** के स्थान पर **ह्रीं** बीज लगावें।

॥ ध्यानम् ॥

खड्ग चर्म धरां कृष्णां मुक्तकेशी विवाससं।
दंष्ट्रा - कराल - वदना - भीषाभां सर्वभूषणाम्।
ग्रसन्तीं वैरिणं ध्यायेत् प्रेरितां शिव - तेजसा॥

मंत्र जाप का दशांश होम अपामार्ग समिध व सर्षप, तिलादि से करें।

(७) सप्तत्रिशंदक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव। तां ब्रह्मणा अप निर्णुद्मः प्रत्यक्-कर्तारमृच्छतु ह्रीं ॐ (मेरु तंत्र में **अप निर्णुघ्न** लिखा है)

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप् छंदः प्रत्यंगिरा देवी देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः कृत्यानाशने ((अखिलाप्तये) विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- ॐ यां कल्पयंति नोऽरयः ह्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रूरां कृत्यां ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ वधूमिव ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ तां ब्रह्मणा ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ अपनिर्णुद्म ह्रौं। नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ह्रः अस्त्राय फट्। मेरुमंत्र में न्यास मंत्रों में अंत में सभी जगज ह्रीं बीज कहा है। तथा अश्विनौ ऋषि कहा है। मंत्र महोदधि में ऋषि ब्रह्मा कहा है।

ध्यान- (पूर्वोक्त) आशाम्बरा मुक्तकचा- शंकर तेजसेरिता ॥

(८) लोमविलोम गायत्री मंत्र पुटित प्रयोग मंत्र - ॐ भू र्भुवः स्वः तत्सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ती नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव तां ब्रह्मणा अपनिर्णुद्मः प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ह्रीं ॐ।
द्यादचोप्र नः यो योधि हिमधी स्यवदे। र्गोभ ण्यंरेव र्तुविसत्त् स्वः भुवः भूः ॐ ॥

यह प्रयोग विशेष संहारक तथा शीघ्रफलप्रदा है इस प्रयोग को कई बार मैने प्रयोग में लिया है।

ध्यान-(मेरु तंत्रोपि)

ततो ध्यायेत् सिंहमुखीं मुक्तकेशां दिगम्बरां।
असिचर्म करां श्यामां दंष्ट्राग्रां सर्व भीषणाम्।
ग्रसन्तीमहितान्नुद्र तेजसा ध्यानमीरितम् ॥

(९) पञ्चविशंत्योत्तर शताक्षर माला मंत्र (मेरुतंत्रे) ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे स्तुते विश्वसहस्त्र हिंसिनि सहस्त्रावने महाबलेऽपराजिते प्रत्यंगिरे परसैन्य परकर्म विध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्व देवान् बंध बंध सर्वविद्यां छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय पर यंत्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वश्रृंखलां त्रोटय त्रोटय ज्वलज्वाला जिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः ॥

(१०) अन्य मंत्र- उपरोक्त मंत्र विशेष प्रभावी है तथा प्रयोग समय में प्रारंभ काल में मनोद्वेग, उच्चाटन स्वयं का आधार या रक्षा विधान कमजोर होने से हो सकता है परन्तु बाद में यह मंत्र शान्ति देता है। यह मंत्र उर्ध्वरेता भी है अच्छा ध्यान ऊपर के केन्द्रो में लगने लगता है।

मैंने समय की परिस्थिति अनुसार ग्रहों की मारक दशा, ऋणबंधन, राजबंधन, शत्रुबंधन व कृत्या पीड़ित व्यक्तियों हेतु उपरोक्त मंत्र में कुछ कामना मंत्र जोड़कर प्रयोग कराये हैं।

यथा- ॐ ह्रीं नमः.......सर्वभूत दमनि दुष्टग्रहबंधनि सर्वदेवान् बंध बंध सर्वविद्या (परविद्यां, परकृत्यां) छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयंत्राणि स्फोटय स्फोटय बंदी श्रृंखलां स्त्रोटय स्त्रोटय मम शत्रून भंञ्जय भंञ्जय ज्वलज्वाला जिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः।

विनियोगः- अस्य मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, प्रत्यंगिरा देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, कृत्यानाशने विनियोगः।

षडङ्गन्यास- ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौ, ह्रः से षडङ्गन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

सिंहारूढाऽति कृष्णाङ्गी ज्वालावक्त्रा भयङ्करा। शूल खड्ग करा वस्त्रे दधती या तु तां भजे ॥

मंत्रमहार्णव में अन्य ध्यान इस प्रकार है-

सिंहारूढाऽति कृष्णं त्रिभुवनभयकृद् रूपमुग्रं वहन्ती, ज्वालावक्त्रा वसाना नववसन युगं नीलमण्याभ कांतिः । शूलं खड्गं वहन्ती निजकरयुगले भक्तरक्षैक रक्षा, सेयं प्रत्यंगिरा संक्षपयतु रिपुभिर्निर्मितं वोऽभिचाराम् ॥

पाठान्तर भेद- **कृष्णं- कृष्णा। निर्मितं- निर्मितान्। वोभिचारं- नोऽभिचारान्।**

कार्यसिद्धि हेतु दस हजार जप करके तिल एवं राजिका से होम करें।

(११) जैन प्राकृत ग्रंथोऽपि- शाक्त मंत्रों के प्रयोग जैन ग्रंथों व प्राकृत ग्रंथों में भी संग्रहीत है आवश्यकता वश धर्म रक्षार्थ प्रयोग किये जाते थे।

मंत्रार्थ के अनुसार मंत्र प्रयोग **घटचालन सिद्धि** द्वारा शुभाशुभ ज्ञान तथा वस्तु को (कृत्या को) पुनः पलट देने हेतु प्रयोग किया जाता है।

मंत्रो यथा- **ॐ ह्रीं कृष्णवाससे सुध्म सिंहवाहने सहस्त्रवदने महाबले प्रत्यंगिरे सर्वसैन्यकर्म विध्वंसिनि परमंत्र छेदनि सर्वदेवाणाणी सर्वदेवाणाणी बंधि बांधि निकृंतय निकृंतय ज्वालाजिह्वे करालचक्रे ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे स्वाहा स्वाहा स्वाहा शेषाणंद देवकेरी आज्ञा फुरई आज्ञाफुरई आज्ञा फुरई आज्ञा फुरई।**

इस मंत्र के साथ ही लिखा है, **घट फेरण** मंत्र अर्थात् इस मंत्र द्वारा कृत्या निवारण एवं घट चालन द्वारा मंत्र की सिद्धि असिद्धि प्रश्नोत्तर प्रयोग किये जाने का उल्लेख बनता है।

॥ अन्यऽपि प्रयोगिक सिद्ध मंत्राः ॥ (मेरुतंत्रे)

(१) रिपुनिग्रह - (प्रत्यंगिराऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

शीर्षण्वतीं कर्णवतीं विष्णुरूपां भयङ्करीम् । यः प्राहिणोदिहाद्य त्वं नित्यं योजय स्वस्तिभिः ॥

(२) वैरनिवृत्ति हेतु - (वामदेव ऋषि, गायत्री छंद, कृत्या देवता)

येन दिष्ट्येह वरसि प्रतिपूरमधापिनि । तमेवातो निवर्त्तस्व मा स्याम्यत्सो अनागसः ॥

(३) वैरनाश - (वृद्धवशिष्ठ ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कालाग्नि रुद्र देवता)

अभिवर्त्तस्य कर्त्तारि निरस्तां ताभिरोजसा । आयुरस्य निकृन्तस्य प्रजाश्च पुरुषादिन्रि ॥

(४) अभिचार नाशक मंत्र - (उर्ध्वऋषि, अनुष्टुप् छंद, यातुधान्य देवता)

यस्त्वा कृत्ये चकारेह त्वं तं गच्छ पुनर्नवे । आसतीः कृत्यानाशय सर्वास्तु यातुधान्यः ॥

उक्त मंत्रों के प्रयोग शुक्ला अष्टमी से पूर्णिमा तक करे अथवा प्रतिप्रदा से प्रारंभ करे। पुरुष के प्रमाण या ८ प्रादेश प्रमाण का उदुम्बर का दण्ड लाये १०० बार अभिमंत्रित कर अग्नि में जला देने से शत्रु को व्याधि होगी। अर्कसमिध व तिल सर्षपादि के होम से शत्रु नाश होवे। श्मशान काष्ठ या ताल पर शत्रुनाम लिखकर गाड़ देवें। पश्चात् मंत्र प्रयोग करे रिपु नाश होवे।

(५) रिपु निग्रह - (महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

क्षिप्रं कृत्ये निवर्त्तस्व कर्त्तुरेव गृहं प्रति । पशूंश्चैवास्य नाशय वीर्य चास्य निबर्हय ॥

(६) रिपु निग्रह - (अगस्त्य ऋषिः, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

यस्त्वां कृत्ये चकारेह विद्वानपि उपग्रहान् । तस्यैवातः परावृत्य तनुं कृन्धि यथा तरुम् ॥

(७) अरिनिग्रह - (वशिष्ठ मुनि, अनुष्टुप् छंद, रुद्र देवता)

प्रतिचित्वावसे धातु ब्रह्मणे विष्णुमित्रहम् । अग्निश्च कृत्यं रक्षोहा चोज एकपात् ॥

(८) शत्रुनिग्रह - (ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप छंद, कृत्या देवता)

यथा त्वांगिरसः पूर्वे भृगवश्चायसेधिरे । अत्रयश्च वशिष्ठश्च तथैव नायसेधि माम् ॥

(९) अरिनाश - (अग्नि ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

यस्ते परुंषि स दधौ रथस्यैवं विभूर्धिया । तंत्रच्छतगते जननज्ञास्तेजनो यतः ॥

उपरोक्त पांचों मंत्रों के शांति प्रयोग एवं बाधा निवारण हेतु कपिला गाय के दूध को क्षीर मधुमंत्र एवं पलाश समिध से होम करे तो ग्रह पीड़ा प्रेतोपद्रव दूर होवे। आठ हजार आहुति देवें। नदी तीर, श्मशान या भद्रकाली मंदिर में पीपल समिध से होम करें। उस भस्म को गोशाला में डाले तो पशुधन की वृद्धि होवे।

(१०) संग्राम विजय- (भृगु ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

यो नः कृत्ये रणस्थो वा जनो वान्यो हि हिंसति । तस्य त्वं देवि विद्धवाग्निं तनुमृच्छ स्वहेतिना ॥

(११) विवादे जयप्रद मंत्र- (अगस्त्य ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

मनाः शर्यादेन हविमस्य क्षियन्त या कृत्वने । सरस्वतीत्यव कृत्य मच्छिषस्तस्य किञ्चन ॥

(१२) वाद विवादे जयप्रद मंत्र- (महादेव ऋषि अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

मनः कश्चिदुहाराति र्मनसा प्रतिभूरिति । दूरस्थो वान्तिकस्थो वा तस्य हृद्यमसृक् पिब ॥

(१३) दुस्साध्यकार्य सिद्धि-(अग्नि ऋषि, अनुष्टुप छंद, कृत्या देवता)

येनासि कृत्ये प्रहिता छद्मनास्मज्जिघांसया । तस्य व्यनेच्चा व्यनहीनस्त हरसाशनिः ॥

(१४) मार्गरक्षा- (गोतम ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

यो नोसि वासः प्रस्थानः परा यति पराचतम् । तैर्देविरात्र्याः कृत्ये नो गमयेमान्निकृन्तय ॥

नित्य १०८ आहुति तिल माष चरु होम करे तो सर्व व्याधि नाश होवे। पलाश पुष्प व तिलादि से होम करे सब दुःखों का नाश होवे। उपरोक्त मंत्रो के प्रयोग प्रतिपदा से प्रारंभ करे। कपिला क्षीर होम कर शेषांश का भक्षण करें तो दुःख दूर होवे।

(१५) शत्रु पीड़ा- ज्वरदाह (ज्वर ऋषि, अनुष्टुप छंद, मृत्यु देवता)

यन्द्विष्मो यश्च द्वेष्टयघायुर्यस्य न संशयः । शुनेः पिपृमि वक्ष्यामि तं प्रत्यस्मत्व मृत्यवे ॥

(१६) शत्रु निग्रह- (अंगिरा ऋषि, गायत्री छंद, अग्नि देवता)

यद्युवेश द्विपदेस्मानर्दिवेष चतुष्पदी । निरेस्था नो वज्रास्माभिः कर्तु त्वष्टपदीगृहान् ॥

(१७) विद्वेषण मंत्र- (ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप छंद, अग्नि देवता)

यश्च यायज्ञः शपथो यश्च मामीश याति नः । ब्रह्माचपकुद्धशया शर्वतत्कन्ध धस्पतिम् ॥

(१८) शत्रु पलायन- (कश्यप ऋषि, अनुष्टुप छंद, भौम देवता)

सबन्धुश्चाप्यवन्धुश्च यो अस्म अभिदा मति । तस्य त्वसिन्धयिष्टाय दावित्सर्प ताक्षिरः ।

बहते जल में खड़े होकर उपरोक्त मंत्रों के १०८ बार जप करें। २८ बार जलांजलि प्रदान करें। कार्य सिद्धि होवे।

(१९) अरिनाशक मंत्र- (उपमन्यु ऋषि, बृहतीछंद, कालाग्निरुद्र देवता)

अभिप्रेहि शुभप्राक्षं युक्ताशु शपथं रथे । शत्रुर्न तिष्ठति कृत्ये वृको वा विमतो गृहात् ॥

(२०) अरिपलायन- (सभ्यंतपा ऋषि, बृहती छंद, ज्वलनो देवता)

परिणो वृद्धिशपथा दहन्नग्निरिव ह्रदे । शत्रूनेवाभिनोज्ञेहि दिव्यावृक्षमिवा शनिः ॥

(२१) गजाऽजतुरगादीनां नियोगे- तथा रिपु मोहने (अंगिरा ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

असपत्नं पुरस्तान्नः शिवं दक्षिणतस्कृधि । अभयं सततं पश्चाद्भर उत्तरतो गृहे ॥

(२२) रिपुत्रास कारक मंत्र- (कश्यप ऋषि, बृहती छंद, कृत्या देवता)

परे हि कृत्ये मातिष्ठ वृद्धसेवपदं नय । मृगास्यहि मृगोरिः प्रांतत्वानि कर्तुमर्हति ॥

उपरोक्त मंत्रों का शिव लिंग या काली के सम्मुख २१ दिन जप करें या कृष्णाष्टमी से शुक्लाष्टमी तक जप करें तो हस्ति पीड़ा, गजपीड़ा दूर होवे। दक्षिणा में कंबल का दान करें तो कलत्र का नाश होवे।

(२३) पुरदहनार्थ- (शर्व ऋषि, अनुष्टुप् छंद, सर्वसुर देवता)

अग्न्यास्य घोर रूपेपि पुरुषेपि विनाशनी । जृंभिता प्रतिगृह्णस्व प्रमादाय हि चाद्भुतम् ॥

(२४) राजकोप शांति- (अर्क ऋषि, अनुष्टप् छंद, कृत्या देवता)

त्वमिन्द्रो यमो वरुणस्त्वमापोपि च रथोनिलः । त्वं ब्रह्मा चैव रुद्रश्च त्वष्टा चैव प्रजापतिः ॥

(२५) रोगनाश- (इन्द्र ऋषि, गायत्री छंद, अश्विनौ देवता)

आवर्तध्वं निवर्त्तध्व मृतवः परिवत्सराः । अहोरात्रास्तथाब्दाश्च दिशः प्रतिदिशश्च मे ॥

(२६) असाध्यकार्य हेतु- (गालव ऋषि, त्रिष्टुप् छंद, मित्रो देवता)

त्व यमं वरुणं सोमं त्वमापोग्निमथानिलम् । अत्राहत्य पशूश्चैव चोत्पादयसि चाद्भुतम् ॥

उपरोक्त पंच अनुवाक का नित्य जप करने से शत्रुभय दूर होता है तथा पूर्व जन्म दोष से जनित रोग का नाश होता है।

(२७) सर्वरक्षाकर मंत्र- (विष्णु ऋषि, अनुष्टुप् छंद, विष्णु देवता)

यो मेरुगर्भशयानं विश्वस्य हितं पुरुषं विजहुः । कुंभीवपाकं नरकं जनाग्रीय पंचवर्षाश्च एवं पुरुषो सोमपस्य ॥

(२८) स्त्रीवश्य मोहनाश- (शुक्र ऋषि, अनुष्टप् छंद, ब्रह्म देंवता)

अत्यक्ता रक्तास्वलंकृतः सर्वतो दुरितं वह । जातीयाश्चैव कृत्यानां शत्रुहन्याय चेतसः ॥

(२९) दुर्वध्यारिविनाशने- (वसवो ऋषि, अनुष्टुप् छंद, परमात्मा देवता)

यथा हतिपुरासीनं तथैवस्वत्सकृन्नरः । तथा त्वया युजा वयं तस्य निकुमः स्थातुजङ्गमम् ॥

(३०) शत्रुनाश- (इन्दु ऋषि, अनुष्टुप् छंद, अग्नि देवता)

उत्तिष्ठेवमरहीनो जातेह्निभिहेच्छसि । या वास्ते कृत्ययादौ तु प्रतिकृत्स्यामिविद्रवः ॥

(३१) तपोविघ्ननाशकारक मंत्र- (शान्तायन ऋषि, अनुष्टुप् छंद परमा देवता)

लोभालस्यादयो वाथ दृश्यन्ते ये तपोपहा। तपोविघ्नकराः पाठे स्वायुधाश्शमिदं पठेत् ॥
स्वायुधाः सन्ति नोऽरयो विघ्नं चैवं परुंषि ते। तैस्तैर्निकपला पापिनोजीवयस्यरीन् ॥

(३२) पापनाश- (भागीरथ ऋषि, अनुष्टुप् छंद, ब्रह्मा देवता)

मास्याच्छिषो द्विपदं तनोचकि चतुष्पदम्। माज्ञातीतन्तु जानस्यान्मनवे क्षिप्रवेशिनौ ॥

उपरोक्त पांचों अनुवाक का नित्य १०८ बार पाठ करे तो शत्रु नाश होवे। सब प्रकार की कृत्या नाश होकर लोक का वशीकरण होवे। शिव मंदिर में जपने से व्यधिनाश होवे। सूर्य के संमुख २८ बार कार्पास बीज, लवण घृतादि से होम करे तो शत्रु का स्तंभन होवे, समुद्र का शोषण करने की शक्ति प्राप्त होवे॥

(३३) दुर्लभ कर्मसाधन- (अंगिरा ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कालमृत्यु देवता)

शत्रूयता प्रहितासि मां ये ताभिमधर्वतः। ततस्तथा त्वदनु यो मततु र्यायश्रितः ॥

(३४) पापनाश- (अंगिरा ऋषि, नियोग छंद, महादेव देवता)

एवं त्वनिकृतास्माभि र्ब्रह्मण देवि सर्वशः। वधेत माष्विनो गत्वा पापधीनेव नो न हि ॥

(३५) शत्रूणां शोषणार्थे- (अंगिरा ऋषि, अनुष्टुप् छंद, कृत्या देवता)

यथा विद्युद्धतो वृक्ष आमूलादनुशुष्यति। एवं प्रतिशुष्यति स यो मे पापं चिकीर्षति ॥

(३६) स्त्रिया कृताभिचार नाशन- (कठो ऋषि, अनुष्टुप् छंद, महादेव देवता)

यथा प्रतिशुको भूत्वा तमेव प्रतिधावति। पापन्तमेव धावतु यो मे पापं चिकीर्षति ॥

(३७) दुर्गस्थाने रक्षा- (भृगु ऋषि, अनुष्टुप् छंद, विश्वेदेवा देवता)

या नश्चेक्षरणे यश्च निष्ण्यौ निघनार्ठसति। देवास्ते सर्व धुन्वन्तु ब्रह्मवर्म ममाचरम् ॥

उपरोक्त अनुवाकों का १०८ बार नित्य होम करें तो सब पापों की शांति होकर आयुवृद्धि होवे। पलाश पुष्पों के होम से ब्रह्म तेज की वृद्धि होवे, बकुल पुष्प एवं ब्रह्म वृक्ष की समिध होम से पाप नाश होव।

(३८) प्रत्यंगिरा ऋचा-

कृणुष्वपाजः प्रजासितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवां इभेन।
त्रिष्वीमन प्रसितिं गृणानो स्तासिविध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥

(३९) ग्रामनाशक, शत्रुनाश-

उदग्नेतिष्ठ प्रत्वा तनुष्वन्यामित्राँ ओषधात्तिग्म हेते। यो नो अरातिं समिधा न चक्रेनीचा तं धक्ष्यत सं न शुष्कम्॥

विषचूर्ण, रक्तकंटक, राजिका होम से शत्रु नाश होवे।

(४०) ग्रामनाशक-

काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषपरि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥
या शतेन प्रतनोषि सहस्त्रेण विरोहसि। तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयम् ॥

मंत्र जप पश्चात् दूर्वा से दश हजार होम करें। ग्राम नगर के लिये बीस हजार, देश के लिये साठ हजार तथा राष्ट्र की

रक्षा हेतु १ लाख बार होम करें॥

(४१) कामना सिद्धि मंत्र-

मधुमान्नो वनसपतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

त्रिमधु एवं उदुम्बर समिध होम से कामना सिद्धि होवें॥

॥ प्रत्यंगिरा यंत्रार्चनम् ॥

काली की पीठशक्तियों का अर्चन कर ध्यान पूर्वक देवी का आवाहन करें। पुष्प में हाथ में लेकर यंत्रार्चन की आज्ञा मांगे।

ॐ सचिन्मये परा देवि परामृत रसप्रिये । अनुज्ञां मे देहि परिवारार्चनाय ते ॥

विन्दु त्रिकोण षट्कोण, अष्टदल बनाकर उनके ऊपर ३ वृत्त बनाये पश्चात् चार द्वार युक्त भूपुर बनाये।

प्रथमावरणम् - (भूपुरे) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ इन्द्रसशक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** - इति सर्वत्र। **ॐ अग्नि सशक्ति पा.। ॐ यमसशक्तिं पा.। निर्ऋति सशक्तिं पा.। ॐ वरुण सशक्तिं पा.। ॐ वायु सशक्तिं पा.। ॐ कुबेर सशक्तिं पा.। ॐ ईशान सशक्ति पा.। ॐ ब्रह्म सशक्तिं पा.। ॐ विष्णु सशक्तिं पा.।**
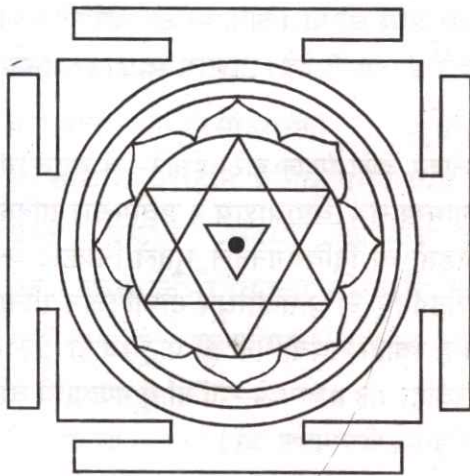
द्वितीयावरणम् - (भूपुरे लोकपालसमीपे) **वज्र श्री पा.। शक्ति श्री. पा.। दण्ड श्री. पा.। खड्ग श्री पा.। पाश श्री पा.। अंकुश श्री पा.। गदा श्री पा.। त्रिशूल श्री पा.। पद्म श्री पां। चक्र श्री पा.।**

तृतीयावरणम् - (त्रिवृत्ते) प्रथम वीथिकायाम् - **ॐ कोलानंद श्री पा.। ॐ परमगुरवे श्री पा.। ॐ परमेष्ठी गुरवे श्री पा.॥ १॥** द्वितीय वीथिकायाम् - **ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो श्री. पा.। ॐ सिद्धौघ श्री पा.। पुनः स्वगुरु अ[illegible]नंद नाथ सशक्तिं श्री पा.॥२॥**

॥ प्रत्यंगिरा यन्त्रम् ॥

चतुर्थावरणम् - (अष्टदलाग्रे) पूर्वादिक्रमेण- **अं असितांग भैरवाय पा.। इं रुरुभैरवाय पा.। उं चण्डभैरवाय पा.। ऋं क्रोध भैरव पा.। लृं उन्मत्त भैरव श्री पा.। एं कपालि भैरव पा.। ओं भीषण भैरव श्री पा.। अं संहारभैरव श्री पा.।**

पंचमावरणम् - (अष्टदलमध्ये) पूर्वादिक्रमेण- **आं ब्राह्मी श्री पा.। ईं माहेश्वरी श्री पा.। ॐ कौमारी श्री पा.। ॠं वैष्णवी श्री पा.। लॄं वाराही श्री पा.। ऐं माहेन्द्री श्री पा.। औं चामुण्डा श्री पा.। अः नारसिंह श्री पा.।**

षष्ठमावरणम् - (अष्टदले ग्रंथिस्थानेषु) पश्चिम से नैर्ऋति पर्यन्त **ॐ कामरूपपीठ श्री पा.। ॐ मलयगिरिपीठ पा.। ॐ कोलगिरिपीठ श्री पा.। ॐ कालांतपीठ श्री पा.। ॐ चौहारपीठ श्री पा.। ॐ जालंधरपीठ श्री पा.। ॐ उड्डीयानपीठ पा.। ॐ देवकूट पीठ श्री पा.।**

सप्तमावरणम् - (वृत्त मंडले) पश्चिम से निर्ऋति तक- **हेरुक भैरव पा.। बेताल भैरव पा.। त्रिपुरांतक भैरव पा.। अग्निजिह्व भैरव पा.। कालांत भैरव श्री पा.। कपालिभैरव श्री पा.। एकपाद भैरव श्री पा.। भीमरूप भैरव श्री पा.। उर्ध्वं मलयभैरव श्री पा.। अधः हाटकेश्वर भैरव श्री पा.।**

अष्टमावरणम् – (अष्टदल केशरेषु वा अष्टयोनिषु) पूर्वादि क्रमेण– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तंभिनी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षोभिणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्राविणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भ्रामणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रौद्री श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मोहिनी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जिभृणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संहारिणी श्री पा.।**

नवमावरणम् – (षट्कोणे) आग्नेये **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हृदय श्री पा.।** ईशाने– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिरः श्री पा.।** निर्ऋत– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिखा श्री पा.।** वायव्ये– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कवच श्री पा.।** आमध्ये– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नेत्र श्री पा.।** दिक्षु– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्र श्रीं पा.।**

दशमावरणम् – (त्रिकोणे) आग्नेये– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काली श्री पा.।** ईशाने– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भद्रकाली श्री पा.।** अधः कोणे– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्याकाली श्री पा.।** ततौ मध्ये बिन्दु समीपे– मूल मंत्र उच्चारण करे **श्री भैरवसहितां श्रीमच्छ्री प्रत्यंगिरा श्री पा.।**

एकादशावरणम् – (भूपुरे) पश्चिमे– **बं बटुक श्री पा.।** उत्तरे **यां योगिनीभ्यो श्री पा.।** पूर्वे **क्षां क्षेत्रपालाय नमः श्री पा.।** दक्षिणे– **गं गणपतये नमः श्री पा.।** वायव्ये– **सुधाभ्यो नमः श्री पा.।** ईशानें **द्वादशादित्ये श्री पा.।** अग्निये **एकादश रुद्रेभ्यो नमः।** नैर्ऋते **सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः।**

पश्चात् देवी के अस्त्रों की देवी के समीप पूजन करे। देवी दक्षहस्ते **ॐ असि श्री पा.।** वामहस्ते **ॐ चर्म श्री पा.।** इसके बाद देवी की पूजा अर्चाकर बलिप्रयोग करे होम करे। अग्नि या जलं में आहुति देवे। **प्राणाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा।**

ईशानादि चारों कोणों त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र बनाकर बलिमण्डल बनाकर बलि प्रदान करे। ईशाने– **बं बटुकाय नमः। एह्येहिं देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय २ सर्वोपचार सहितं बलिं गृहण २ स्वाहा ॥१॥ आग्नेयां योगिनीभ्यो नमः। उर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिविगगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वातले वा पवनसलिलयो र्यत्रकुत्र स्थिता वा क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदाधूप दीपादिकेन प्रीता देव्यः सदानः सुभबलि विधिना पांतु वीरेन्द्र वंद्याः। यां योगिनीभ्यो नमः स्वाहा सर्वयोगिनी ह्रीं फट् स्वाहा ॥२॥** नैर्ऋते– **क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल अतिबलि सहितं बलिं गृहण २ स्वाहा ॥३॥** वायव्ये– **गां गीं गूं गणपतये वर वरद सर्वजनं में वशमानय बलिं गृहण २ स्वाहा ॥४॥** यथा शक्ति जप कर देवी समर्पण करें।

॥ अथ कृत्यानिवारक सूक्तम् ॥

भगवति प्रत्यंगिरा का प्रयोग शत्रु द्वारा किये गये अभिचार को नष्ट करने हेतु किया जाता है। शत्रु के प्रहार को उसी पर वापस लौटाने से इसे विपरीत प्रत्यंगिरा भी कहते हैं। जैन एवं प्राकृत ग्रंथों में पाठान्तर भेद से इसके प्रयोग मिलते हैं। मेरे अनुभव में यह आया है कि आप पर कोई कृत्या, मूठ भेजी गई है, भगवति की कृपा से स्वतः नष्ट हो जायेगी तो धमाके की या फटाके की आवाज आयेगी। आपके किसी पानी के पात्र में मूठ उतरेगी तो पात्र टूट जायेगा। और छमं की आवाज के साथ मूठ निष्क्रिय हो जायेगी। यदि पेड़ या शिला पर गिरेगी तो पेड़ जल जायेगा, शिलाखण्ड टूट जायेगा। अगर मूठ अन्यत्र नहीं जावे तो स्वयं पर आघात होगा। अगर मूठ या कृत्या अभिचार प्रयोग भारी है तो विशेष प्रयोग करें। यदि प्रयोग में विघ्न आवें, लाभ नहीं हो रहा हो तो साथ में **कालरात्री का प्रयोग अवश्य करें।** कालरात्रि शत्रु की क्रिया को संम्मोहित करके शिथिल करेगी। अन्य विशेष अनुभवी साधकों से ज्ञात करें।

किसी व्यक्ति पर किसी ने जादू टोना प्रेतादि उपद्रव किया हो उसके निवारण हेतु इस सूक्त के विशेष संख्या में जप करके तिल, समिध, सरसों, काली मिर्च, राई, नमक आदि से हवन करें।

सावधानी जब कोई कृत्या प्रयोग किसी पर आता है बड़े पक्षी के गुजरने जैसी ''शर्र'' की आवाज सुनाई देती है। लौ जलती हुई दिखाई देती है। धम् की आवाज होती है। अगर आपका इष्ट प्रबल है तो उसकी कृत्या स्वत: नष्ट हो जायेगी उस समय जोरदार फटाखे की आवाज होगी, आपके घर में पानी की जगह में समा जायेगी तो पात्र फूट जायेगा और वहां से धुयें निकलेगी। सामने कोई वृक्ष हो तो जल जायेगा अगर कोई प्रेतोपद्रव दमन हेतु १०-११ दिन का कोई प्रयोग है तो शुरु के ५-७ दिन तकलीफ बाधा रह सकती है बाद में ठीक रहे। अगर प्रेत बलवान है तो जाते उस व्यक्ति के कार्य व्यापार को ३-४ महिने के लिये बड़े संकट में डाल सकता है अन्य नुकसान दे सकता है बाद में ठीक हो जायेगा अत: धेर्य रखें इसके अलावा बगलामुखी व प्रत्यंगिरा देवी के मंत्रों का प्रयोग करें।

(ऋषि-प्रत्यङ्गिरसः। देवता-मन्त्रोक्ता॥ छन्द-बृहती, गायत्री, अनुष्टुपः, पंक्तिः, जगतीः, त्रिष्टुप्ः, उष्णिक, गायत्री)

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः। सारादेत्वप नुदाम एनाम् ॥ १ ॥
शीर्षण्वती नस्वती कर्णिनी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा । सारादेत्वप नुदाम एनाम् ॥ २ ॥
शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्माभिः कृता। जाया पत्या नुत व कर्तारं बन्ध्वृच्छतु ॥ ३ ॥
अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम् । यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु ॥ ४ ॥
अधमस्त्वधकुते शपथःशपथीयते। प्रत्यक्कर्तारमिच्छतु ह्रीं ॐ प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत् ॥ ५ ॥
प्रतीचीन आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः । प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि ॥ ६ ॥
यस्त्वोवाच परेहिति प्रतिकूलमुदाय्यम्। तं कृत्येऽभिनिवतस्व मास्मोनिच्छो अनागसः ॥ ७ ॥
यस्ते परूषिं संदधौ रथस्येव ऋभुर्धिया। तं गच्छ तत्र तेऽयनमज्ञातस्तेऽय जनः ॥ ८ ॥
येत्वा कृत्त्वालेभिरे विद्रलाअभिचारिणः। शभ्वीदं कृत्यादूषणंप्रतिवर्त्म पुनासरं तेनत्वास्नपयामसि ॥ ९ ॥
यद् दुर्भगां प्रस्नपितां मृत्वत्सामुपेयिम । अपतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोप तिष्ठतु॥ १० ॥

जिस कृत्या को निर्माता लोग दहेज में प्राप्त वधू के समान सजाते हैं, उस कृत्या को हम भगाते हैं, वह हमारे पास से चली जाय ॥ १ ॥ सिर, नाक, कान से युक्त निर्मित कृत्या अनेक आपत्ति वाली है, उसे हम भगाते है, वह हमारे पास से चली जाय ॥ २ ॥ शूद्र द्वारा की गई, राजा व स्त्रियो द्वारा की गई और मंत्रो द्वारा की गई और मंत्रों द्वारा प्रेरित कृत्या पति द्वारा उसके भाईयों के पास भेजी गई स्त्री के समान कृत्याकारी के पास लौट जाय ॥ ३ ॥ क्षेत्र में, गौओं में और पुरुषों में की गई कृत्या को मैं इस औषधि द्वारा निवीर्य कर चुका हूँ॥ ४ ॥ शपथ, शपथ देने वाले को ही प्राप्त हो, हिंसा रूप पा उसी हिंसक के पास पहुंचे। हम कृत्या को इस प्रकार लौटाते हैं, जिससे वह कृत्याकारी की ही हिंसा कर डाले ॥ ५ ॥ हमारा पुरोहित पश्चिम का है, अंगिरा वंश का है। हे पुरोहित। तुम सामने आती हुई कृत्याओं को खण्डित करते हुए कृत्याकारियों को ही नष्ट कर डालो ॥ ६ ॥ हे कृत्ये! जिसने तुझे मेरे पास आने को कहा है, तू उसी के पास लौट जा। हम निरपराध है, हमारी कामना न कर ॥ ७ ॥ हे कृत्ये! ऋभु जैसे रथ को जोड़ता है, वैसे जिसने तेरी हड्डियो को जोडा है, तू उसी के पास लौट जा। यह मनुष्य तो तुझसे परिचित भी नहीं हैं ॥ ८ ॥ हे कृत्ये! जिन अभिचार करने वालों ने तुझे पाया है, यह मंगलमय पुन:सर कृत्या को दूषित कर उसके मार्ग को उल्टा करने में समर्थ है, हम उसी से तुझे स्नान कराते हैं ॥ ९ ॥ हम जिस कृत्या को प्राप्त होकर मृतवत्सा रूप दुर्भाग्य को प्राप्त हो गये हैं, हमारा वह पाप दूर हो और हमारे पास धनादि स्थित रहे ॥ १० ॥

॥ अथ प्रेतबाधा निवारण प्रयोग ॥

अथ संपुट मंत्राः – निम्न मंत्रो के संपुट दुर्गापाठ के या किसी भी देवता के कवच मंत्रो के संपुट लगाने से **प्रेत बाधा दूर होवे।**

तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव। श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दतं न्यञ्चनम् ॥

अ०वै०का०४ अ ८ सू ३६

जैसे सिंह गौ के स्वामियो के चिंता का कारण होता है। वैसे मैं अपने मंत्र बल से राक्षसों को भय देने वाला होऊँ। जैसे सिंह के सामने श्वान छिप जाते है वैसे ही मेरे मंत्र बल से पिशाचादि पतित व लुप्त हो जावे।

न पिशाचै सं शक्नोमिन स्तेनैर्न वनर्गुभिः। पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्रामबाविशे ॥

अ०वे०म० ४ अ ८ सू ३६

डाकू मेरे पास नही आते, पिशाच मुझमें प्रविष्ट नही हो सकता। मै जिस गांव में जाता हूँ उस गांव के पिशाच नाश को प्राप्त होते है।

॥ श्रीप्रत्यंङ्गिरा कवचम् ॥

॥ देव्युवाच ॥

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ पारग।
देव्याः प्रत्यंगिरायाश्चकवचं यत्प्रकाशितम् ॥१॥
सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्वमयि प्रभो।

॥ भैरवउवाच ॥

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामिकवचं परमाद्भुतम् ॥२॥
सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभं। सर्वसिद्धिमयं देविसर्वैश्वर्य प्रदायकं ॥३॥
पठनाच्छ्रवणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्य भाग्भवेत् ॥ सर्वार्थ-साधकस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥४॥
छंदोविराट् पराशक्ति - र्जगद्धात्री च देवता। धर्मार्थकाम मोक्षेषुविनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥५॥
प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवं च ललाटकम्। ह्रींपातु दक्षनेत्रं मे लक्ष्मीर्वामं सुरेश्वरी ॥६॥
प्रत्यंगिरादक्षकर्णं वामेकामेश्वरी तथा। लक्ष्मीः प्राणं सदापातु बंधनं पातु केशवः ॥७॥
गौरी तु रसनां पातु कंठं पातु महेश्वरः। स्कंधदेशं रतिः पातुभुजौ तु मकरध्वजः ॥८॥
शंखनिधिकरः पातुवक्षः पद्मनिधिस्तथा। ब्राह्मी मध्यं सदापातु नाभिं पातु महेश्वरी ॥९॥
कौमारी पृष्ठदेशं तु गुह्यं रक्षतु वैष्णवी। वाराही च कटिं पातु चैन्द्री पातु पदद्वयम् ॥१०॥
भार्यां रक्षतु चामुण्डा लक्ष्मीरक्षतु पुत्रकान्। इन्द्रः पूर्वेसदापातु आग्नेय्यामग्निदेवता ॥११॥
याम्ये यमः सदापातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिस्तथा। पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता ॥१२॥
सौम्यां सोमः सदापातु चैशान्यामीश्वरो विभुः। ऊर्ध्वं प्रजापतिः पातु ह्यधश्चानं त देवता ॥१३॥

राजद्वारे श्मशाने च अरण्येप्रान्तरे तथा । जलेस्थलेचांतरिक्षे शत्रूणां निवहेतथा ॥१४॥
एताभिः सहिता देवी चतुर्बीजामहेश्वरी । प्रत्यंगिरा महाशक्तिः सर्वत्र मांसदावतु ॥१५॥
इति ते कथितं देवि सारात्सारं परात्परम् । सवार्थ - साधनं नामकवचं परमाद्भुतम् ॥१६॥
अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपिधनेश्वरः । इन्द्राद्याः सकलादेवाः धारणात्पठनाद्यतः ॥१७॥
सर्वसिद्धिश्वराः संतः सर्वैश्वर्यमवाप्नयुः । पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैवकृत्पठेत् ॥१८॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् । प्रीतिमन्येन्यतः कृत्वा कमलानिश्चलागृहे ॥१९॥
वाणी च निवसेद्वक्रेसत्यं न संशयः । यो धारयतिपुण्यात्मा सर्वार्थ साधनाभिधम् ॥२०॥
कवचं परमं पुण्यं सोपिपुण्यवतां वरः । सर्वेश्वर्य युतौभृत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत् ॥२१॥
पुरुषो दक्षिणेबाहौ नारी वामभुजे तथा । बहुपुत्रवतीभृत्वा धन्यापि लभतेसुतम् ॥२२॥
ब्रह्मास्त्रादीनि-शस्त्राणि नैव कृन्तंतितत्तनुम् । एतत्कवचमज्ञात्वा योजपेत्परमेश्वरीम् ॥२३॥
दारिद्र्यं परमं प्राप्यसेचिरान्मृत्युभाप्नुयात् ।

॥ इतिश्रीरुद्रयामले तन्त्रपञ्चांगखण्डेप्रत्यंगिरायाः सर्वार्थसाधनंनाम कवचं समाप्तम् ॥

॥ प्रत्यंगिरा पञ्जर स्तोत्रम् ॥

सिद्धिविद्या महाकाली यत्रेवेह च मोदते । सप्तलक्षमहाविद्या गोपिता परमेश्वरी ॥१॥
महाकाली महादेवि शङ्करश्रेष्ठ देवताः । यस्याः प्रसादमात्रेण परब्रह्म महेश्वरः ॥२॥
कृत्तिमादि विषघ्नीशा प्रलयादि निवर्त्तिका ॥३॥
त्वदङ्घ्रिदर्शनादेव कम्पानो महेश्वरः । यस्य निग्रह मात्रेण पृथिवी प्रलयं गता ॥४॥
दशविद्या यदा ज्ञाता दशद्वार-समाश्रिता । प्राचीद्वारे भुवनेशी दक्षिणे कालिका तथा ॥५॥
नाक्षत्री पश्चिमे च उत्तरे भैरवी तथा । ऐशान्यां सततं देवि प्रचण्डचण्डिका ॥६॥
आग्नेयां बगलादेवि रक्षः कोणे मतङ्गिनि । धूमावती च वायव्ये अध उर्ध्वे च सुन्दरि ॥७॥
सम्मुखे षोडशी देवी जाग्रत स्वप्न-स्वरूपिणी । वामभागे च देवेशी महात्रिपुर सुन्दरी ॥८॥
अंशरूपेण देवेशी सर्वा देव्यः प्रतिष्ठिताः । महाप्रत्यंगिरा चैव प्रत्यङ्गिरा तथोदिता ॥९॥
पठनाद्-धारणाद् देवि सृष्टिसंहारको भवेत् । अभिचारादिकाः सर्वा या या साध्यतमाः क्रियाः ।
स्मरणेन महाकाल्या नाशं जग्मुः सुरेश्वरि ॥११॥
विपरीता प्रत्यङ्गिरा तत्र काली प्रतिष्ठिता । साधकस्मरण मात्रेण शत्रूणां निगमागमाः ॥१२॥
नाशं जग्मुः नशीं जग्मुः सत्यं सत्यं वदामिते । परब्रह्म महादेवी पूजनैरीश्वरो भवेत् ॥१३॥

॥ इति श्री प्रत्यङ्गिरा पञ्जर स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीविपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्रम् ॥

मंत्र :- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून भञ्जय भञ्जय फे हुं फट् स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

टङ्कं कपालं डमरुं त्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा ।
पिङ्गोर्ध्वकेशोऽसितभीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली ॥

विनियोगः :- ॐ अस्य श्रीमहाविपरीत प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र मन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीमहाविपरीत प्रत्यंङ्गिरा देवता, हं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम सर्वार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास :- ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नम। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ प्रत्यंङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मां रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मम शत्रून भञ्जय भञ्जय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यासः :- ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट्। ॐ प्रत्यंङ्गिरे कवचाय हुम्। ॐ मां रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ मम शत्रून भञ्जय भञ्जय अस्त्राय फट्।

॥ लघु स्तोत्रम् ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां चां लां क्षां ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं वां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ सः हुं ॐ क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ॐ हुं प्लुं रक्षां कुरु।

ॐ नमो विपरीतप्रत्यंगिरायै विद्याराज्ञि त्रैलोक्यवशङ्करि तुष्टि पुष्टिकरि सर्वपीडापहारिणि सर्वापन्नाशिनि सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिनि मोदिनि सर्वशास्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि। तथा परमन्त्र तन्त्र यन्त्र विष चूर्ण सर्वप्रयोगादीनन्येषां निर्वर्तयित्वा यत्कृतं तन्मेऽस्तु कलिपातिनि सर्वहिंसा मा कारयति अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवाऽसुर राक्षसास्तिर्यग्योनि सर्वहिंसका विरूपकं कुर्वन्ति मम मन्त्र तन्त्र यन्त्र विष चूर्ण सर्वप्रयोगा--दीनात्महस्तेन यः करोति करिष्यति कारयिष्यति तान् सर्वानन्येषां निर्वर्तयित्वा पातय कारय मस्तके स्वाहा।

अन्य मंत्राः :- ॐ हुँ स्फारय स्फारय मारय मारय शत्रुवर्गान् नाशय नाशय स्वाहा। (इति विंशाक्षरी)

॥स्तोत्रम्॥

विनियोगः :- ॐ अस्य श्रीमहाविपरीत प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र मन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः, स्त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीमहावीपरीत प्रत्यंङ्गिरा देवता, हं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, परमंत्र, परयंत्र परकृत्या छेदनार्थे, सर्वशत्रु क्षयार्थे विनियोगः।

यह स्तोत्र प्रभावी है कहीं भी कोई कृत्या प्रयोग किया हुआ हो उसे नष्ट करता है। दूसरे के हाथ में गई संपदा को वापस दिलाता है।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो विपरीतप्रत्यङ्गिरायै सहस्त्रानेककार्यलोचनायै कोटि विद्युज्जिह्वायै महाव्यापिन्यै संहाररूपायै जन्मशान्ति कारिण्यै मम सपरिवारकस्य भावि भूत भवच्छत्रुदारा प्रत्यान् संहारय संहारय महाप्रभावं दर्शय दर्शय हिलि हिलि किलि किलि मिलि मिलि चिलि चिलि भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ध्वंसय ध्वंसय प्रध्वंसय प्रध्वंसय ग्रासय ग्रासय पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय वित्रासय वित्रासय मारय मारय विमारय विमारय भ्रामय भ्रामय विभ्रामय विभ्रामय द्रावय द्रावय विद्रावय विद्रावय हुँ हुँ फट् स्वाहा हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत प्रत्यङ्गिरे हूँ लँ ह्रीं फट् क्लीं लँ ॐ

लँ फट् फट् लँ स्वाहा।

हूँ लँ ह्रीं क्लीं ॐ विपरीत प्रत्यङ्गिरे मम सपरिवारकस्य यावच्छत्रून् देवता पितृ पिशाच नाग गरुड किन्नर विद्याधर गन्धर्व यक्ष राक्षस लोकपालान् ग्रह भूत नरलोकान् समन्त्रान् सौषधान् सायुधान् ससहायान् पाणौ छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय तेषां साहंकारादि धर्मान् कीलय कीलय घातय घातय नाशय नाशय विपरीतप्रत्यङ्गिरे स्फ्रें स्फ्रेत्कारिणी ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः मम सपरिवारकस्य शत्रूणां सर्वा विद्याः स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय हस्तौ स्तंभय स्तंभय मुखं स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय नेत्राणि स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय दन्तान् स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय जिह्वां स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय पादौ स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय गुह्यं स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय सकुटुम्बानां स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय स्थानं स्तंभय स्तंभय नाशय नाशय सँ प्राणान् कीलय कीलय नाशय नाशय हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

मम सपरिवारकस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं हूँ ह्रीं क्लीं हूँ सों विपरीत प्रत्यङ्गिरे! मम सपरिवारकस्य भूतभविष्यच्छत्रूणामुच्चाटनं कुरु कुरु हूँ हूँ फट् स्वाहा। ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, वँ वँ वँ वँ वँ, लँ लँ लँ लँ लँ, रँ रँ रँ रँ रँ, यँ यँ यँ यँ यँ, ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो भगवति विपरीत प्रत्यङ्गिरे दुष्टचाण्डालिनी त्रिशूल वज्राङ्कुश शक्ति शूल धनुः शर पाशधारिणी शत्रुरुधिर चर्म मेदो मांसाऽस्थि मज्जा शुक्र मेहन वसा वाक् प्राण मस्तक हेत्वादिभक्षिणी परब्रह्मशिवे ज्वालादायिनी मालिनी शत्रूच्चाटन मारण क्षोभन स्तम्भन मोहन द्रावण जृम्भण भ्रामण रौद्रण सन्तापन यन्त्र मन्त्र तन्त्रान्तर्याग पुरश्चरण भूतशुद्धि पूजाफल परमनिर्वाण-हारण - कारिणि कपालखट्वाङ्ग परशुधारिणि मम सपरिवारकस्य भूतभविष्यच्छत्रून् ससहायान् सवाहनान् हन हन रण रण दह दह दम दम धम धम पच पच मथ मथ लंघय लंघय खादय खादय चर्वय चर्वय व्यथय व्यंथय ज्वरय ज्वरय मूकान् कुरु कुरु ज्ञानं हर हर हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ, क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत प्रत्यङ्गिरे ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् स्वाहा।

मम सपरिवारकस्य कृत मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र हवनकृतौषधविषचूर्ण शस्त्राद्यभिचार सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते करिष्यति वा तान् सर्वान् हन हन स्फारय स्फारय सर्वतो रक्षां कुरु कुरु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ, ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं, ओं ओं ओं ओं ओं ओं ओं, ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

ॐ हूँ ह्रीं क्लीं ॐ अं विपरीतप्रत्यङ्गिरे मम सपरिवारकस्य शत्रवः कुर्वन्ति करिष्यन्ति शत्रुश्चकारयामास कारयन्ति कारयिष्यन्ति याऽन्यां कृत्यान्तैः सार्धं तांस्तां विपरीतां कुरु कुरु नाशय नाशय मारय मारय श्मशानस्थानं कुरु कुरु कृत्यादिकां क्रियां भावि भूत भवच्छत्रूणां यावत्कृत्यादिकां क्रियां विपरीतां कुरु कुरु तान् डाकिनी-मुखे हारय हारय भीषय भीषय त्रासय त्रासय परमशमनरूपेण हन हन धर्मावच्छिन्न निर्वाणं हर हर तेषाम् इष्टदेवानां शासय शासय क्षोभय क्षोभय प्राणादि मनोबुद्ध्यहङ्कार क्षुत्तृष्णाकर्षणलयन आवागमन मरणादिकं नाशय नाशय हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एँ लृं लॄं ॠं ऋं ऊं उँ ईं इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीतप्रत्यंगिरे हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् स्वाहा।

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एँ लृँ लॄं ॠं ऋं ऊं उँ ईं इँ आँ अँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा।

अः अं औं ओं ऐं एं लृं लॄं ॠं ऋं ऊं उँ ईं इँ आँ अँ ङं घं गं खं कं ञं झं जं छं चं णं ढं डं ठं टं नं धं दं थं तं मं भं बं फं पं क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मम सपरिवारकस्य स्थाने शत्रूणां कृत्यान सर्वान् विपरीतान् कुरु कुरु तेषां तन्त्र-मन्त्र-तन्त्रार्चन श्मशानारोहण भूमिस्थापन भस्मप्रक्षेपण पुरश्चरण होमा भिषेकादिकान् कृत्यान् दूरी कुरु कुरु हूँ विपरीत प्रत्यङ्गिरे मां सपरिवारकं सर्वतः सर्वेभ्यो रक्ष रक्ष हूँ ह्रीं फट् स्वाहा।

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ हूँ ह्रीं क्लीं ॐ विपरीतप्रत्यङ्गिरे हूं ह्रीं क्लीं ॐ फट् स्वाहा।

ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृँ लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं विपरीतप्रत्यङ्गिरे मम सपरिवारकस्य शत्रूणां विपरीतक्रियां नाशय नाशय त्रुटिं कुरु कुरु तेषामिष्टदेवतादिविनाशं कुरु कुरु सिद्धिम् अपनय अपनय विपरीतप्रत्यङ्गिरे शत्रुमर्दिनि भयंकरि नानाकृत्यामर्दिनि ज्वालिनि महाघोरतरे त्रिभुवनभयङ्करि शत्रूणां मम सपरिवारकस्य चक्षुः श्रोत्राणि पादौ सर्वतः सर्वेभ्यः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वसुन्धरे मम सपरिवारकस्य स्थानं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ महालक्ष्मि मम सपरिवारकस्य पादौ रक्ष रक्ष फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ चण्डिके मम सपरिवारकस्य जंघे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ चामुण्डे मम सपरिवारकस्य गुह्यं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इन्द्राणि मम सपरिवारकस्य नाभिं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नारसिंहि मम सपरिवारकस्य बाहू रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वाराहि मम सपरिवारकस्य हृदयं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वैष्णवि मम सपरिवारकस्य कण्ठं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ कौमारि मम सपरिवारकस्य वक्त्रं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ माहेश्वरि मम सपरिवारकस्य नेत्रे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ब्रह्माणि मम सपरिवारकस्य शिरो रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। हूं ह्रीं क्लीं ॐ विपरीतप्रत्यङ्गिरे मम सपरिवारकस्य छिद्रं सर्वगात्राणि रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ संतापिनी स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून रौद्रय रौद्रय हूँ फट् स्वाहा। ॐ संहारिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून संहारय संहारय हूँ फट् स्वाहा। ॐ रौद्रि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून रौद्रय रौद्रय हूँ फट् स्वाहा। ॐ भ्रामिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून भ्रामय भ्रामय हूँ फट् स्वाहा। ॐ जृम्भिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् जृम्भय जृम्भय हूँ फट् स्वाहा। ॐ द्राविणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून द्रावय द्रावय हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्षोभिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून क्षोभय क्षोभय हूँ फट् स्वाहा। ॐ मोहिनि

स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून मोहय मोहय हूँ फट् स्वाहा। ॐ स्तम्भिनि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून स्तंभय स्तंभय हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐं ओं औं अं अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत परब्रह्म महाप्रत्यङ्गिरे ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐं ओं औं अं अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ मम सपरिवारकस्य सर्वेभ्य सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु मरण भयापन पापनय त्रिजगतां पररूपवित्तायुर्मे सपरिवारकाय देहि देहि दापय साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि देहि विश्वरूपे धनं पुत्रान् देहि देहि मां सपरिवारकस्य मां पश्येत्तु देहिनः सर्वे हिसकाः प्रलयं यान्तु मम सपरिवारकस्य शत्रूणां बलबुद्धिहानि कुरु कुरु तान् ससहायान् स्वेष्टदेवतान् संहारय संहारय स्वाचारमपनयाऽपनय ब्रह्मास्त्रादीनि व्यर्थीकुरु हूं हूं स्फ्रें स्फ्रें ठः ठः फट् फट् ॐ।

॥ इति श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्रीप्रत्यंगिरा स्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री प्रत्यंगिरास्तोत्र मंत्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, प्रत्यंगिरा देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, स्फें कीलकम्, ममाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

मंदरस्थं सुखासीनं भगवन्तं महेश्वरम् ।
समुपागम्य चरणौ पार्वति परिपृच्छति ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

धारिणीपरमाविद्या प्रत्यंगिरा महोदया । नरनारीहितार्थाय बालानां रक्षणाय च ॥१॥
राज्ञां मांडलिकानां च दीनानां च महेश्वर। विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणार्थ साधिनी ॥२॥
उत्कृष्टा परमादेवी प्रत्यंगिरा महोत्तमा । महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्निभयेषु च ॥३॥
व्याघ्रादंष्ट्राकराघाते नदी नद समुद्रके । अभिचारेषु सर्वेषु संग्रामे राजपीडीते ॥४॥
सौभाग्यजननी नित्यं नृणांवश्यकरी तथा । तां विद्यां भोसुर श्रेष्ठकथयस्व मम प्रभो ॥५॥
पठितापाठिता देवी सर्वसिद्धिकरी सदा । यस्यांगस्था महाविद्या प्रत्यंगिरा शिवोदिता ॥६॥
तां विद्यांभोः सुरेशान कथय स्वमयि प्रभो ।

॥ श्री भैरव उवाच ॥

साधु साधु महाभागे जंतूनां हितकारिणी । वचनांते सुरासिद्धिं कथयामि न संशयः ॥७॥
देवीप्रत्यंगिरा विद्या दुष्टग्रहविनाशिनी । मर्दिनी स्रर्वदुष्टानां सर्वपापप्रमोचिनी ॥८॥
स्त्रीबालप्रभृतीनां च जनानां हितकाम्यया । सौभाग्यजननी देवी बलपुष्टिकरी तथा ॥९॥
चतुष्पथेषु गोष्ठेषु तथा गोष्ठवनेषु च । श्मशाने दुर्गमे घोरे संग्रामेशुत्रुसंकटे ॥१०॥
गुह्येप्य शुचिस्थानेषु संग्रामेशत्रु संकटे । राजद्वारे चतुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते ॥१॥

पठिता पाठिता देवी सर्वसिद्धिकरी स्मृता ॥१२॥
यस्यात्मस्था महाविद्या प्रत्यंगिरा सुभाषिता । सिद्धा सुसिद्धा सानित्या विधेया परमास्मृता ॥१३॥
श्रीमताघोररूपेण भाषिता घोररूपिणी । यस्यांगस्थ महाविद्या विचिंत्याधारिते तरैः ॥१५॥
लिखितां च करे कंठे बाहौ शिरसि धारयेत् । विमुच्यते महाघोरे मृत्युरूपे दुरासदे ॥१५॥
दुष्टसत्त्वग्रहादेव यक्षरक्षादयस्तथा । पीडां तस्य न कुर्वंति ये चान्ये पीडकाग्रहाः ॥१६॥
मंत्राबाह्याभिचाण प्रवर्तंते कदापि न । नित्यं धारय माणस्य अमृतत्वं च कल्पयेत् ॥१७॥
यो धारये द्योगयुक्तस्तस्य रक्षाभवेत्सदा । सिद्धार्थासिद्धिदानित्यं विद्येयं परमास्मृता ॥१८॥
प्रत्यंगिराक्षराप्रोक्ता रिपुंहन्यान्नसंशयः । हरिचंदन मिश्रेण रोचना कुंकमेन च ॥१९॥
लिखित्वा भूर्जपत्रे तु धारणी या सदानृभिः । पुष्पैर्धूपैविचित्रैश्च बल्युपाहारपूजनैः ॥२०॥
पूजयित्वा यथान्यायंशीत कुंभेन वेष्टयेत् । धारयेद्य इमान्मंत्राँ ल्लिखितान् रिपुनाशकान् ॥२१॥
विलियं याति रिपवः प्रत्यंगिरा विधारणात् । पूजयित्वा यथान्यायं सितसूत्रेण वेष्टयेत् ॥२२॥
धारयेद्य इमां विद्यां निश्चितं रिपुनाशनीम् । रिपवोविलयं यांति प्रत्यंगिरा प्रधारणात् ॥२३॥
यं यं स्पृशतिहस्तेन यं यं स्वादति जिह्वाया । अमृतत्वं भवेत्तस्य मृत्युनास्ति कदाचन ॥२४॥
कर्मणो योजपेद्वास्तु कृत्रिमं दारुणं सदा । भक्षितं जरयत्याशुतरसातस्य सुव्रते ॥२५॥
तथास्यो व्यग्रमानायां जीर्यती नात्रसंशयः । मंत्रराजो ह्ययं देवि सर्वसिद्धिकरः स्मृतः ॥२६॥
सर्वमंत्रविनाशी च गोलगुह्यंतरं मया । सर्वविद्या हराविद्या प्रत्यंगिरा महेश्वरी ॥२७॥
गोलकस्य प्रभावेन प्रत्यंगिरा प्रभावतः । त्रिपुरश्च मयादग्ध इमां विद्यां च बिभ्रता ॥२८॥
निर्जिताश्चासुराः सर्वदेवैर्विद्याभिमानतः । गोलकं संप्रवक्ष्योमि भैषज्यानि च सुव्रते ॥२९॥
कांता मदन कंचैव रोचना कुंकुमं तथा । अरुक्करं शिखारिष्टं सिद्धार्थामालती तथा ॥३०॥
एतद्द्रव्यगणं भद्रेगोलगर्भेति धापयेत् । धारयेत्सततं मंत्रं साधको मंत्र वित्सदा ॥३१॥
गोलकं केलिकं कृत्वा भेषजाय च सुव्रतः । आयुष्करं सुखकरं सिद्धार्थो मालती तथा ॥३२॥
संभृतं धारयेन्मंत्रं साधको मंत्रवित्सदा । अभिधां संप्रवक्ष्यामि प्रत्यंगिरा सुभाषिताम् ॥३३॥
दिव्यैर्मंत्रपदैश्चिंत्रैः सुखापायैः सुखप्रदैः । पाठेरक्षा विधानेन मंत्रराजः प्रकीर्त्तितः ॥३४॥
अथातो मंत्रपादानि संप्रवक्ष्यामि यत्नतः ॥३५॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री प्रत्यंगिरास्तोत्र मंत्रस्य श्रीभगवान् भैरव शंकर ऋषिः, अनुष्टुबादि नानाछन्दांसि, श्रीजगन्माता प्रत्यंगिरा देवता, ॐ बीजम्, जूं शक्तिः, सः कीलकम्, ममसर्वार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ नमः सहस्त्रसूर्येक्षणाय महासुखाय अनादिरूपाय पुरुहस्ताय महामखाय महाव्याघ्रायिने महाघोरातिघोराय महाप्रभावं दर्शय ॐ हिलिहिलि ॐ मिलिमिलि ॐ हरिहरि ॐ विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल बंध बंध मथमथ प्रमथ प्रमथ प्रध्वंसय शमय शमय पिब पिब ग्रस ग्रस नाशय नाशय वद वद द्रावय द्रावय विद्रावय विद्रावय छिंधि छिंधि कृंतय कृंतय भक्षय भक्षय त्रासय त्रासय ताडय ताडय विदारय विदारय भ्रामय भ्रामय कुलं कुलं भुंजं

भुंज भंज भंज चुंब चुंब दह दह गर्ज गर्ज स्फोटयास्फोटय चुरय चुरय उत्सादय उत्सादय मोहय मोहय उन्मूलय उन्मूलय संकोचय संकोचय आवेशय आवेशय मम विपदं नाशय नाशय विषं नाशय नाशय शत्रूं स्त्रासय त्रासय विदारय विदारय मां रक्षत्वम्। (अतः परंस्वशरीर नामोच्चर्य॥)

ॐ आद्याक्षर महायोग पुरुषरसत्यां मां धारकं सपरिवारकं रक्ष रक्ष महामेघौघ घातिके महामेघौघ घातिके महामेघौघादि संवर्त्तक संवर्त्तके विद्युद्धांत विद्युत्क्रांते विद्युद्दंतक कपर्दिनी दिव्यकनकांभोरुहे कपर्द्दिनि दिव्यकनकांभोरुह विकचमुण्डमालाधारिणी शितकंठव्याघ्राजिनि कुक्कुटि परमेश्वरप्रिये छिंधि छिंधि विद्रावय विद्रावय विदारय विदारय देव पिशाच नागारुण्ड किन्नरविद्याधर गणगंधर्व यक्षराक्षसलोकपालान् ग्रहान् स्तंभय नागलोकपालांश्च हन हन (अत्रस्थले शत्रुनामोच्चारणं कृत्वा) ये मम शत्रवस्तान् हनय हनय मम शत्रवस्तान्निकृंतय निकृंतय ये च सदा मम विद्यायामविद्यायामविद्याकर्म कुर्वन्ति तेषां विद्यां स्तंभय स्तंभय कीलय कीलय घातय घातय ॐ विश्वमूर्त्तये महातेजसे महातेजसे ॐ जूं सः। मम शत्रूणां मुखं स्तंभय स्तंभय॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां गुह्यं स्तंभय स्तंभय ॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां विद्यां स्तंभय स्तंभय ॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां हस्तौ स्तंभय स्तंभय॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां पादौ गुह्य खगध्वनि मर्माणि स्तंभय स्तंभय॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां पादौ स्तंभय स्तंभय॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां विश्वस्य स्तंभय स्तंभय॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां नेत्रे स्तंभय स्तंभय॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां श्रोत्रं स्तंभय स्तंभय ॥ ॐ जूं सः॥ मम शत्रूणां गृहांत्र कुटुम्बं स्तंभय स्तंभय स्थानं कीलय कीलय मुंडं कीलय कीलय देहं कीलय कीलय नाभिं कीलय कीलय मंडलं कीलय कीलय सर्वदेहं कीलय कीलय ॐ सर्वसिद्धिभागे महाभागस्य (स्वशरीर नामोच्चारणं कृत्वा) मम धारकस्य सपरिवारकस्य शांतिं कुरु कुरु सपरिवारस्य रक्षां कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ॐ ॐ रं रं रं हूं हूं हूं फट् स्वाहा। ॐ ॐ ॐ ॐॐ यं यं यं यं यं रं रं रं रं रं रं लं लं लं लं लं वं फट् स्वाहा। ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः ॐ फट् ॐ प्रत्यंगिरे मम धारकं सपरिवारकं रक्ष रक्ष ॐ ययः ॐ ॐ ॐ ह्रीं फट् स्वाहा। ॐ मम धारकस्य शत्रून् हन हन धम धम सर्वदुष्टांस्त्रासय त्रासय ॐ ॐ ॐ ह्रां ह्रां ह्रां ह्रष्टाकराली मम तन्त्रविषशस्त्राभिघातं सर्वोपद्रवादियेन कृतं कारितं कारयति कारयिष्यति वा तान्सर्वान् हन हन पच पच प्रत्यंगिरे रक्ष रक्ष त्वं मां धारकं सपरिवारकं रक्ष रक्ष स्वाहा

विद्यानामुत्तमाविद्या पठिता पाठिता नरैः। लिखिता च करेकंठेबाहै शिरसि धारयेत् ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्योनाल्पमृत्युः कदाचन। ग्रहायक्षास्तथा सिद्धादेवराक्षस पन्नगाः ॥
तस्य पीडां न कुर्वन्ति देवि भूम्यंतरिक्षगाः। प्राप्नोति वसुधां सर्वारिपुहस्तगा श्रियम् ॥
वशेस्तिष्ठंति तत्रैव शत्रवः प्राणहारकाः। भवंति वशगास्तस्य सौन्दर्यप्रियदर्शनात् ॥
अभ्यास्यतां यांति विद्याः सिद्धिदेवव्याः प्रभावतः। चराचरमिदं सर्वं सशैलवन काननम् ॥
नरनारी समाकीर्णं साधकस्य न संशयः। सर्वं च वशतां यति जपमानस्य नित्यशः ॥
अथ नवशक्ती स्मृत्वा शत्रून्मारयते क्षणात्। इदं सत्यं मयाप्रोक्तं नान्यथा गिरिनंदिनी।

॥ इति श्रीरुद्रयामल तंत्रे ईश्वर पार्वती संवादे प्रत्यंगिरा स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ वैष्णवी अपराजिता प्रत्यंगिरा स्तोत्रम् ॥

इस विद्या का प्रयोग कृत्या अभिचार दोष दमन व शत्रुनाश हेतु करें।

मन्त्र :- श्रीं ह्रीं ॐ नमः कृष्णवाससे, विश्वसहस्त्रहिंसिनि, सहस्त्रवदने, महाबले, अपराजिते, प्रत्यङ्गिरे, परसैन्यपरकर्म विध्वंसिनि, परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूत दमनि! सर्वान् देवान् बन्ध, सर्व विद्यां छिन्धि छिन्धि, क्षोभय क्षोभय, परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय, सर्वशृंखलां त्रोटय त्रोटय ज्वल ज्वल। ज्वाला जिह्वे कराल वदने प्रत्यङ्गिरे! क्रीं (श्रीं ह्रीं) नमः।

ॐ ततः सिद्धाम्बिकां नत्वा, जप्तव्यमपराजिताम् । महाविद्यां वैष्णवीं तु साधनेन समन्वितः ॥ यस्याः स्मरण मात्रेण सर्वदुःख क्षयो भवेत् तां विद्यां कीर्त्तयिष्यामि, शृणुध्व विप्र पुङ्गवाः ॥

विनियोग: :- ॐ अस्य महाविद्यायाः महावैष्णव्या श्रीअपराजितायाः श्रीमहादेवऋषिः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् वृहती छन्दांसि। श्रीलक्ष्मी नृसिंहो देवता। सर्वरक्षार्थे जपे विनियोगः।

॥ स्तुति ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो नारायणाय नमः। ॐ नमो अनन्ताय सहस्त्रशीर्षाय क्षीरोदार्णवशायिने शेषनाग पर्यङ्काय गरुडवाहनाय अजयाय अपराजिताय पीत निर्मल वाससे वासुदेव प्रद्युम्नानिरुद्ध हयःशिर वाराह दामोदर नृसिंह वामनत्रिविक्रम राम परशुराम वरप्रद! नमोऽस्तु ते स्वाहा।

ॐ असुर दैत्य दानव यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच कूष्माण्ड गन्धर्व सिद्ध योगिनी शाकिनी डाकिनी लाकिनी स्कन्द प्रोगमान् ग्रहान् सनक्षत्र ग्रहांश्चान्यान् हन हन, पच पच, मथ मथ, विध्वंसय विध्वंसय, विद्रावय विद्रावय विजय विजय। अपराजित अमतिहत सहस्त्रनेत्र! ज्वल ज्वल मज्वल मज्वल वय वय। शङ्खेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुशलेन हलेन चापेन भस्मीकुरु स्वाहा। सहस्त्रबाहवे सहस्त्र प्रहरणायुध। जय जय विश्वरूप नित्यरूप बहुरूप माधव मधुसूदन महावराह महापुरुष वैकुण्ठनारायण पद्मनाभ गोविन्द दामोदर हृषीकेश केशव सर्वाशुभोत्सादन सर्वभूत वशयङ्कर सर्वदुःस्वप्न प्रभेदन सर्वयन्त्रप्रभञ्जन सर्वनागप्रबन्धन सर्वदेव महेश्वर सर्वबन्धविमोक्षण सर्वाहितप्रमर्दन सर्वज्वर प्रणाशन सर्वग्रहनिवारण, सर्वपाप प्रणाशन, जनार्दन जनानन्दक नमोऽस्तुते स्वाहा।

॥ फलश्रुति ॥

इमामपराजितां परमवैष्णवीं महाविद्यां पठति सिद्धां। स्मरति विद्यां जपति पठति शृणोति स्मरति धारयति कीर्त्तयति वा। न तस्य वाटवग्नि वातोपलाशनि भयं न विषभयं न समुद्रभयं न ग्रहभयं न चौरभयं नश्वापदभयं वा भवेत्। न क्वचिद्रात्र्यन्धकार स्त्री विषय राजकुल विबन्धसागर विषौषध गद वशीकरण विद्वेषोच्चाटन बन्धनवध भयं वा न भवेत्। रात्रैर्मन्त्रैरुदाहृतैः सिद्धयै सिद्धयः पूजितैः। तद् यथा नमस्तेऽस्तु विष्णोरयं मनुः प्रोक्तं सर्वकामफल प्रदः। सर्वसौभाग्य जननः सर्वभीति विनाशनः। सर्वेषां पठतः सिद्धो विष्णोः परम वल्लभः। नानेन सदृशः किञ्चित् दुष्टानां नाशनः परः। विद्या रहस्या कथितं वैष्णव्येषाऽपराजिता। न्यसनीया शिरस्येषा साक्षात् सत्त्व गुणाश्रुपात्।

॥ इति वैष्णवी अपराजिता प्रत्यंगिरा स्तोत्रम् ॥

॥ प्रत्यंगिरा सहस्रनाम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि सांप्रतंत्वत्पुरः सरम् । सहस्रनाम परमं प्रत्यंगिरायाः सिद्धये ॥ सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत् । पराभवो न चास्यास्ति सभायां वासने रणे । तथा तुष्टा भवेद्देवी प्रत्यंगिरास्य पाठतः ॥ तथा भवति देवेशि साधकः शिव एवहि । अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेयस्यकोटयः । सकृत्पाठेन जायंते प्रसन्नायत्पराभवेत् । भैरवोस्य ऋषिश्छंदोऽनुष्टुप् देवी समीरिता । प्रत्यंगिराविनियोगः । स्यात्सर्वसंपत्ति हेतवे । सर्वकार्येषु संसिद्धिः सर्वसंपत्तिदाभवेत् । एवं ध्यात्वा पठेद्देवीं यदी छेदात्मनोहितं ।

॥ अथ ध्यानम् ॥

आशांवरामुक्त कचाघनच्छविर्ध्येया स चर्मासिकरा विभूषणा ।
दंष्ट्रोग्र वक्रा ग्रसिताहि ता त्वया प्रत्यंगिरा शंकर तेजसेरिता ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीप्रत्यंगिरा सहस्रनाम महामन्त्रस्य भैरवऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीप्रत्यंगिरादेवता । ह्रीं बीजं । श्रीं शक्तिः । स्वाहा कीलकं । सर्व विद्यासिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः ॥

ॐ देवी प्रत्यंगिरा सेव्या शिरसा शशिशेखरा । स ममा सा धर्मिणी च समस्तसुरशेमुषी ॥१॥
सर्वसंपत्तिजननी समधीः सिंधुसेविनी । शंभुसीमंतिनी सोमाराध्या च वसुधा रसा ॥२॥
रसा रसवती वेला वन्या च वनमालिनी । वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी ॥३॥
वेगिनी वेगदा वेगबला स्थानबलाधिका । कला कलाप्रिया कोलि कोमला कालकामिनी ॥४॥
कमला कमलास्या च मलस्या कमलावती । कुलीना कुटिला कांता कोकिला कुलभाषिणी ॥५॥
कीरकेलिः कला काली कपालिन्यपिकालिका । केशिनी च कुशावर्त्ता कौशांबी केशवप्रिया ॥६॥
काशिकाशापहाकाशी शंकाशाकेश दायिनी । कुण्डली कुंडलीस्था च कुंडलांगदमण्डिता ॥७॥
कुशापाशी कुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्धिनी । कुंदप्रिया कुंदरुचिः कुरंगमदमोदिनी ॥८॥
कुरङ्गनयनाकुन्दाकुरु वृन्दाभिनन्दिनी । कुसुम्भकुसुमा किंचित्क्वणत्किंकिणिका कटुः ॥९॥
कठोरा करणा कण्ठा कौमुदी कंबुक कण्ठिनी । कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कालकण्ठिका ॥१०॥
किबृहस्ता कुमारी च कुरुन्दाकुसुमप्रिया । कुञ्जरस्था कुंजरताकुंभि कुम्भस्तनद्वया ॥११॥
कुम्भिगाकरभोरुश्च कदलीदल शालिनी । कुपिता कोटरस्था च कंकाली कन्दशेदरा ॥१२॥
एकान्तवासिनी किंचित्कंपमान शिरोरुहा । कादंबरी कदम्बस्था कुंकुमीप्रेमधारिणी ॥१३॥
कुटुंबिनी प्रियायुक्ता क्रतुः क्रतुकरीक्रिया । कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकीयप्रवर्त्तिनी ॥१४॥
कामपत्नी कामधात्री कामेशी कामवंदिता । कामरूपा कामगतिः कामाक्षी काममोहिता ॥१५॥
खड्गिनी खेचरी खंजा खञ्जरीटेक्षणा खला । खरगा खरनासा च खरास्या खेलनप्रिया ॥१६॥

खरांशुः खेटिनी खट्वांगधारिणी । खलखंडिनि विख्यातिः खडिता खंडवीस्थिरा ॥१७॥
खंडप्रिया खंडखाद्यासेन्दुखंडा च खंजनी । गंगा गोदावरी गौरी गोमत्यपिच गौतमी ॥१८॥
गया गौगजी गगना गारुडी गरुडध्वजा । गीता गीतप्रिया गोत्र गोत्रक्षयकरी गदा ॥१९॥
गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवर्धिनी । घनस्तनी घनरुचि र्घनोरुर्घननिःस्वना ॥२०॥
घूत्कारिणी घूतकरी घुघूकपरिवारिता । घंटानादप्रिया घंटा घनाघोट प्रवाहिनी ॥२१॥
घोररूपा च घोरा च घूनीप्रिति र्घनांजनी । घृताची घनमुष्टिश्च घटाघंटा घटामृता ॥२२॥
घटास्या घटनाद्यैश्च घातपातनिवारिणी । चंचरीका चकोरी च चामुंडा चीरधारिणी ॥२३॥
चातुरी चपला चारुश्चला चेला चलाचला । चतुश्चिरंतना चाका चिया चामी करच्छविः ॥२४॥
चापिनी चपला चंपूश्चिंता चिंतामणिश्चिता । चार्तुवर्ण्यमयी चंचञ्च्चौरा चापा चमत्कृतिः ॥२५॥
चक्रवर्ति वधूश्चक्रा चकांगा चक्रमोदिनी । चेतश्चरी चित्तवृत्ति रचेता चेतनप्रदा ॥२६॥
चांपेयी चंपक प्रीतिश्चण्डी चंडालवासिनी । चिरंजीवि तदाचित्ता तरुमूलवासिनी ॥२७॥
छरिकां छत्रमध्यस्था छिद्रा छेदकरीछिदा । छुच्छुंदरी पालयित्री छुंदरीभ निभस्वना ॥२८॥
छलिनी छलवच्छिन्ना छिटिका छेककृत्तथा । छद्मिनी छांदसी छाया छायाकृच्छदिरित्यपि ॥२९॥
जया च जयदा जातिजृंभिनी जामलायुता । जयापुष्पप्रिया जाया जाप्य जाप्यजगज्जनिः ॥३०॥
जम्बूप्रिया जयस्था च जंगमा जंगमप्रिया । जंतु जंतुप्रधाना च जरत्कर्णाजरद्गवा ॥३१॥
जाताप्रिया जीतनस्था जीमूतसदृशच्छविः । जन्याजनहिता जाया जंभ जंभिलशालिनी ॥३२॥
जवदा जवद्वाहा जमानी ज्वरहा ज्वरा । झंझानीलमयी झंझाझणत्कार कराचला ॥३३॥
झिंटीशा झस्यकृत् झंपायमत्रासनिवारिणी । टंकारस्था टंकधरा टंकारा कारणाटसी ॥३४॥
ठकुराठीत्कुतिश्चैव ठिंठीरवसनावृत्ता । ठंठानीलमयी ठंठाठणत्कार कराठसा ॥३५॥
डाकिनी डामरा चैव डिंडिमध्वनिनंदिनी । ढक्काप्रियस्वना ढक्कातपिनी तापिनी तथा ॥३६॥
तरुणी तुंदिला तुंदातामसी च तपः प्रिया । ताम्राताम्रांबरा ताली तालीदलविभूषणी ॥३७॥
तुरंगात्वरिता तोता तोतलाता दिनीतुला । तापत्रयहरा तारा तालकेशीत - मालिनी ॥३८॥
तमादलवच्छया मातालस्बनवतीतमी । तामसीचतमिस्त्रा च तीव्रातीव्रपराक्रमा ॥३९॥
तटस्यागिल तैलाक्तातारिणी तपनद्युतिः । तिलोत्तमा तिलक कृत्तारका देशशेखरा ॥४०॥
तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशकुटुंबिनी । स्थाणुपत्नी स्थितिकरी स्थलस्थास्थलवर्धिनी ॥४१॥
स्थितिस्थै - र्यास्थविष्ठा च स्थावतिः स्थूलविग्रहा । दंतिनी दंडिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला ॥४२॥
देवी देववधू दैत्यदमिनी दंतभूषणा । दयावती दमवती दमदा दाडिमस्तनी ॥४३॥
दंदशूकनिभा दैत्यदारिणी देवतानना । दोलाक्रीडा दयायुश्च दंपती देवतामयी ॥४४॥
दशा दीपस्थिता दोषाहादोषकारिणी । दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गमा दुर्गवासिनी ॥४५॥

दुर्गंधनाशिनी दुःस्था दुःस्वप्नशमकारिणी । दुर्वारा दुंदुभिध्वाना दूरगा दूरवासिनी ॥४६॥
दरदा दरहा दात्री दया दादुहितादशा । धुरंधरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी ॥४७॥
धीरा धीरा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा । धनुर्धरा च धमिनी धूर्त्ता धूर्त्तपरिग्रहा ॥४८॥
धूमवर्णा धूमपानां धूमला धूममोदिनी । नलिनीनंदनीरंदा नंदिनी नंदबालिका ॥४९॥
नवीना नर्मदा नर्मीनेमिर्नियमनिश्चया । निर्मला निगमाचारा निम्नगा नग्निका निमिः ॥५०॥
नाला निरंतरानिघ्नी निर्लेपा निर्गुणा नतिः । नीलग्रीवा निरीहा च निरंजन जनीनवी ॥५१॥
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी । नारायणी निराकारा निपुणा निपुणाप्रिया ॥५२॥
निशा निद्रा नरेन्द्रस्थानमिता नमितापि च । निर्गुंडिका च निर्गुंडानिर्मांसा नासिकाभिधा ॥५[illegible]॥
पताकिनी पताका चपल प्रीतिर्यशश्विनी । पीना पीनस्ता पत्नी पवना शनशायिनी ॥५४॥
परा पराकला पाका पाककृत्य रतिप्रिया । पवनस्था सुपवना तपसिप्रीतिवर्द्धिनी ॥५५॥
पशुवृद्धिंकरी पुष्टिः पोषणी पुष्पवर्द्धिनी । पुष्पिणी पुस्तक करापुन्नागतलवासिनी ॥५६॥
पुरंदरप्रिया प्रीतिः पुरमार्ग निवासिनी । पेशा पाशकरा पाशबंधहा पांशुलापशुः ॥५७॥
पटः पटाशा परशुधारिणी पाशिनी तथा । पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापि च ॥५८॥
पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिता । पानदा पानपात्रा च पानदानकरोद्यता ॥५९॥
पेषा प्रसिद्धिः पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा । पतदुर्भापतद्गात्रापौनः पुण्यपिवासुरा ॥६०॥
पंकिला पंकमग्ना च पामी पापंजरस्थिता । पंचमी पंचयामा च पंचता पंचमप्रिया ॥६१॥
पंचमुद्रा पुंडरीका पिंगला पिंगलोचना । प्रियंगुमञ्जरी पिंडी पंडिता पांडुरप्रभा ॥६२॥
प्रेतासना प्रियालुस्थापांडुघ्नी पीतसापहा । फलिनी फलदात्री च फलश्रीफणिभूषणा ॥६३॥
फूत्कारकारिणी स्फारा फुल्लफुल्लांबुजासना । फिरंगहास्फीतम[illegible] स्फितिः स्फीतिकरीतथा ॥६४॥
वनमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी । वेणुवाद्या वनचरी वीरा विजयिनीअपि ॥६५॥
विद्या विद्याप्रदा विद्याबोधिनी वेददायिनी । बुधमाता च बुद्धा च वनमाला वती वरा ॥६६॥
वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा । विनोदिनी विनोदस्थावैष्णवी विष्णुवल्लभा ॥६७॥
विद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता । वितंद्रा विह्वला वेला विरावा विरतिज्वरा ॥६८॥
विविधार्क करावीरा बिंबोष्ठि बिंबवत्सला । विंध्यस्था वीरवन्द्या च वरीयानपरावित् ॥६९॥
वेदांत वेद्य वैद्या च वेदस्य विजयप्रदा । विरोधवर्द्धिनी वन्ध्या वंधनिवारिणी ॥७०॥
भयिनी भगमाला च भवानी भयभाविनी । भीमा भीमानना भैमी भंगुरा भीमदर्शना ॥७१॥
भिल्ली भल्लधरा भीरु भेरुंड्यभि भयापहा । भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया ॥७२॥
भगासना भगामोदाभेरी भंकाररंजिनी । भीषणा भीषणारावा भगवत्यपिभूषणा ॥७३॥

भारद्वाजी भोगदात्री भवघ्नी भूतिभूषणा । भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥७४॥
भ्रमरी भ्रामरी नीलाभूपालमुकुटस्थिता । मता मनोहर मना मानिनी मोहिनी मही ॥७५॥
महालक्ष्मीर्मदक्षीवामदीय मदिगालया । मदोद्धता मदंगस्था माधवी मधुमादिनी ॥७६॥
मेधा मेधाकरी मेध्या मध्या मध्यवयस्थिता । मद्यपा मांसला मत्स्यमोदिनी मैथुनोद्धता ॥७७॥
मुद्रामुद्रावती माता माया महिम मंदिरा । महामाया महाविद्या महामारी महेश्वरी ॥७८॥
महादेववधूर्मान्या मधुरा वीरमण्डला । मेदस्विनी मीलद श्रीर्महिषासुरमर्दिनी ॥७९॥
मण्डपस्था मठस्था च मदिरागमगर्विता । मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी ॥८०॥
मातंगिनी च मातंगी मतंग तनयापि च । मधुस्त्रवा मधुरसामधूक - कुसुमप्रिया ॥८१॥
यामिनी यामिनीनाथभूषाया व करंजिता । यवांकुरप्रिया माया यवनी यवनाधिपा ॥८२॥
यमघ्नी यमकन्या च यजमानस्वरूपिणी । यज्ञायज्वायजुर्यज्वा यशोनिकरकारिणी ॥८३॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मकरी तथा । यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी ॥८४॥
रंजिता राजपत्नी च रमारेखा रवेरणी । रजोवती रजश्चित्रा रजनी रजनीपतिः ॥८५॥
रागिणी राज्य नीराज्या राज्यदा राज्यवर्धिनी । राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥८६॥
रमणी रमणीया च रामा रामावती रती । रेतोवती रतोत्साहा रोगहृद्रोगकारिणी ॥८७॥
रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्रणा । रंजिका रंजिका रंजा रंजिनी रक्तलोचना ॥८८॥
रक्तचर्मधरा रंजा रक्तास्या रक्तवादिनी । रंभा रंभाफलप्रीति रंभोरू राघवप्रिया ॥८९॥
रंगभृद्रंग मधुर रोदसी रोदसीग्रहा । रोधकृद्रोध हंत्री च रोगभृद्रोगशायिनी ॥९०॥
वंदी वंदिस्तुता बंध बंधूक कुसुमाधरा । वंदिता वंदितामाता विंदुरा वैंदवी विधा ॥९१॥
विंकी विंकपला विंका विंकस्था विंकवत्सला । वदि विलग्नाविप्रा च विधि विंधिकरी विधा ॥९२॥
शंखिनी शंखवलया शंखमालावती शमी । शंखपात्राशिनी शंखा शंखाशंखगलाशशी ॥९३॥
शंवीशरावती श्यामाश्यामांगी श्यामलोचना । श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थलभूषणा ॥९४॥
शमदा शमहंत्री च शाकिनी शंकुशेखरा । शांतिः शांतिप्रदा शेषा शेषस्था शेषदायिनी ॥९५॥
शेमुखी शोषिणी शीरी शौरिः शौर्याशराशिरिः । शापहा शापहानीश शंपा शपथदायिनी ॥९६॥
शृंगिणी शृंगपल भुकूशंकरी शंकरीचया । शंका शंकापहाशंस्था शाश्वती शीतला शिवा ॥९७॥
शिवस्था शवभुक्ता वाशाववर्णा शिवोदरी । शायिनी शावशयना शिंशपा शिंशपायना ॥९८॥
शकुंडलिनी शैवा शंकरां शिशिराशिरा । शवकांची शवश्रीकाशवमाला शवाकृतिः ॥९९॥
शयनीशंकु वा शक्तिः शंतनुः शीलदायिनी । सिंधुः सरस्वतीसिंधुः सुन्दरी सुंदरानना ॥१००॥
साधुः सिद्धिः सिद्धिदात्री सिद्धासिद्धसरस्वती । संततिः संपदा संपत्संवित्सुरतिदायिनी ॥१०१॥
सपत्नी सरसारा सरस्वतिकरी स्वधा । सरः समा समाना च समाराध्या समस्तदा ॥१०२॥

समिद्धा समदा संमा संमोहा समदर्शना । समितिः समिधासीमा सावित्री सविधा सती ॥१०३॥
सवनी सवनादारा सावना समरासमी । सिमिरा सतता साध्वी सघ्रींचिंत्यसहायिनी ॥१०४॥
हंसी हंसगतिर्हंसा हंसोज्ज्वल निचोलुयुक् । हलिनी हलदा हाला हरश्री हरवल्लभा ॥१०५॥
हेला हेलावती हेषा ह्लेषस्था ह्लेषवर्द्धिनी । हंता हंतिर्हता हत्याहा हंत तपहारिणी ॥१०६॥
हंकारी हंतकृद्धंकाहीहा हाता हताहता । हेमप्रदा हंसवती हारी हातरिसंमता ॥१०७॥
होरी होत्री होलिका च होमा होमो हविर्हरिः । हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी ॥१०८॥
लंबोदरी लंबकर्णा लंबिका लंबविग्रहा । लीला लोलावती लोला ललनी लालिता लता ॥१०९॥
ललाम लोचना लोच्य लोलाक्षी लक्षणा लला । लंपती लुंपती लंपा लोपामुद्रा ललंतिनी ॥११०॥
लंतिका लंबिका लंबा लघिमा लघुमध्यमा । लघीयसी लघुदयी लूता लूतनिवारिणी ॥१११॥
लोमभृल्लोम कोप्ता च लुलुती लुलुसंयती । लुलायस्था च लहरी लंकापुर पुरंदरी ॥११२॥
लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदा लक्ष्म्या लक्ष्याबलमतिप्रदा। क्षुण्णाक्षुपाक्षणाक्षीणा क्षमः क्षांतिः क्षणावती ॥११३॥
क्षामाक्षमोदरी क्षीमाक्षौमभृत्क्षत्रियांगना । क्षया क्षयाकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा ॥११४॥
क्षेमंकरी क्षयकरी क्षयतत्क्षणदाक्षवि्रः । क्षुरंती क्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामाक्षर पातका ॥११५॥

॥ फलश्रुति ॥

मातुः सहस्त्रनामेदं प्रत्यंगिर्याः प्रदायकम् ॥१॥
यः पठेत्प्रयतोनित्यं स एवस्यान्महेश्वरः । अनाचांतः पठेन्नित्यं दरिद्रा धनदोभवेत् ॥२॥
मूकस्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी निरोगतां भजेत् । अपुत्रः पुत्रमाप्नोति त्रिषुलोकेषु विश्रुतम् ॥३॥
वंध्यापिसूते तनयान् गावश्चबहुदुग्धदाः । राजानः पादनम्राः स्युस्तस्यदासा इवस्फुटाः ॥४॥
अरयः संक्षयं यांति मनसा संस्मृता अपि । दर्शना देवजायंते नरानार्योपितद्वशाः ॥५॥
कर्ता हर्ता स्वयंवीरोजायते नात्रसंशयः । यं यं कामयते कामं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥६॥
दुरितनं च तस्यास्तेनास्ति शोकाः कदाचन । चतुष्पथेर्द्धरात्रयः पठेत्साधकोत्तमः ॥७॥
एकाकी निर्भयो धीरोदशावर्तं स्तवोत्तमम् । मनसा चिंतितं कार्यं तस्य सिध्येन्नसंशयः ॥८॥
विनासहस्त्रनाम्ना यो जपेन्मंत्रं कदाचन । न सिद्धो जायते तस्यमंत्रः कल्पशतैरपि ॥९॥
कुजवारे श्मशाने च मध्याह्ने योजपेदथ । शतावृत्त्या संजायेत कर्ताहर्ता नृणामिह ॥१०॥
रोगार्त्तोऽर्द्धनिशायां तु पठित्वा भसिसंस्थितः । सद्योनी रोगतां यातियदिस्यान्निर्भयस्तदा ॥११॥
अर्द्धरात्रे श्मशाने वै शनिवारे जपेन्मनुम् । अष्टोत्तरसहस्त्रं तद्दशवारं जपेत्ततः ॥१२॥
सहस्त्रनाम चेत्तद्धितदायाति स्वयंशिवा । महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी ॥१३॥
तदायदि न भीतिस्यात्ततोद्रव्धीतिवा भवेत् । तदापशुवलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चंडिका ॥१४॥
यथेष्टं च वरदं दत्त्वा याति प्रत्यंगिरा शिवा । रोचना गुरु कस्तूरी कर्पूर मदचंदनैः ॥१५॥
कुंकुम प्रथमाभ्यां तु लिखितं भूर्जपत्रके । शुभनक्षत्रयोगे तु कृत्रिमाकृत सक्रियः ॥१६॥
कृत संतापनां सिद्धिं धारयेद्दक्षिणेकरे । सहस्त्रानामस्वर्णस्थं कण्ठेवापी जितेन्द्रियः ॥१७॥

तदायंत्रं नमेन्मंत्रीं क्रुद्धध्वेसंम्रियते नरः । यस्मै ददाति सस्वस्ति सभवेद्धनदोपमः ॥१८॥
दुष्टश्वापद जंतूनांनभीः कुत्रापि जायते । बालकानामिमां रक्षां गर्भिणीनामपि ध्रुवम् ॥१९॥
मोहनस्तंभनाकर्षण मारणोच्चाटनानि च । यंत्रधारणतो नूनं जायते साधकस्य तु ॥२०॥
नीलवस्त्रे विलिखितं ध्वजायां यदितिष्ठति । तदानष्टा भवत्येव प्रचण्डा परवाहिनी ॥२१॥
एतज्जप्तं महाभस्मललाटे यदि धारयेत् । तद्दशनत एवस्युः प्राणिनस्तस्यकिंकराः ॥२२॥
राजपत्न्योपि वशगाः किमन्याः परयोषितः । एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासैकेन महाकविः ॥२३॥
पंडितश्च महादक्षौ जायते नात्रसंशयः । शक्तिं सम्पूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रं वरंशुभम् ॥२४॥
इहलोके सुखंभुक्त्वा परत्र त्रिदिवंजयेत् । इतिनामसहस्त्रं तु प्रत्यंगिरा मनोहरम् ॥२५॥
गोप्यं गुप्ततमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥२६॥

॥ इति श्रीरुद्रयामल तंत्रे दशविद्यारहस्ये प्रत्यंगिरा सहस्रनाम सम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्री प्रत्यंगिरा तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री तारा तन्त्रम् ॥

दश महाविद्याओं में आपका स्थान दूसरा हैं। अतः इसे द्वितीया भी कहते हैं। श्रीतारानित्यार्चन, मंत्र महोदधि, तारास्तवमञ्जरी, तारास्वरूप तत्व इत्यादि में इसके विस्तृत विधान हैं। वसिष्ठ ऋषि ने इस विद्या की साधना चीन में बुद्ध से सीखी थी। बहुत कालतक साधना करने भी आपको अभीष्ट प्राप्ति नहीं हुई तो इस विद्या को उन्होनें शापित कर दिया। शांत होंने पर देवी ने इसके प्रधान बीज (त्रीं) में **स कार** लगाने से इसका **बीज मंत्र ''स्त्रीं''** रूप से जपने को कहा। कृष्णावतार के बाद इस विद्या का स्वयं शापोद्धार होना कहा गया है (ताराभक्ति सुधार्णवे)। वधू के समान यशस्विनी फलदायिनी होने से इसे **''वधू बीज''** भी कहा जाने लगा। यह बीज मंत्र कामाख्या के समान हैं क्योंकि इसका बीज व कामाख्या बीज मंत्र समान हैं। इसके प्रभाव से साधक को ज्ञानवृद्धि एवं कवित्वशक्ति प्राप्त होती हैं।

इस मंत्र की तरंगे उर्ध्वरेता एवं शीतल हैं ऐसा मेरा अनुभव हैं। राजस तामस भेद उपासना के अनुसार साधक को फल प्रदान करती हैं। तारा शीघ्रफलप्रदा हैं अतः इसे **तारिणी विद्या** भी कहते हैं। **इसके आठ स्वरूप हैं** जिनमें तीन स्वरूपों (**१. उग्रतारा २. नीलसरस्वती ३. एकजटा**) का विधान सुलभ उपलब्ध हैं।

तारा चोग्रा महोग्रा च वज्रा नीला सरस्वती। कामेश्वरी भद्रकाली इत्यष्टौ तारिणी स्मृता ॥

॥ षोढान्यासः ॥

तारा उपासना में षोढान्यास की विशेष महत्ता हैं। **१. रुद्रन्यास २. ग्रहन्यास ३. लोकपालन्यास ४. शिवशक्तिन्यास ५. तारादि न्यास ६. पीठन्यास।** इनसे षोढान्यास करे।

१. रुद्रन्यासः- (ध्यानम्)

नीलवर्णां त्रिनयनां शवासन समायुताम् ।
बिभ्रतीं विविधां भूषामर्धेन्दुशेखरां वराम् ॥

प्रत्येक नाम मंत्र के पहले **''ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं** उच्चारण करे।'' यथा **ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं अं श्रीकंठेशाय नमः** ललाटे। आं अनंतेशाय नमः मुखवृत्ते। इं सूक्ष्मेशाय नमः दक्षनेत्रे। ईं त्रिमूर्तीशाय नमः वामनेत्रे। उं अमरेशाय नमः दक्षकर्णे। ऊं अर्घीशाय नमः वामकर्णे। ऋं भारभूतीशाय नमः दक्षनासायां। ॠं तिथीशाय नमः वामनासायां। लृं स्थाणवीशाय नमः दक्षगण्डे। लॄं हरेशाय नमः वामगण्डे। एं झिण्टीशाय नमः उर्ध्वौष्ठे। ऐं भौतिकेशाय नमः अधरोष्ठे। ओं सद्योजाताय नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं अनुग्रहेशाय नमः अधोदन्त पंक्तौ। अं अक्रूरेशाय नमः ब्रह्मरंध्रे। अः महासेनेशाय नमः मुखे। कं क्रोधीशाय नमः दक्षबाहुमूले। खं चण्डेशाय नमः दक्षकर्पूर। गं पञ्चान्तकेशाय नमः दक्षमणिबन्धे। घं शिवोत्तमेशाय नमः दक्षकरांगुलिमूले। ङ एकरुद्राय नमः दक्षकरांगुल्यग्रे। चं कूर्मेशाय नमः वामबाहुमूले। छं एकनेत्रेशाय नमः वामकर्पूरे। जं चतुराननेशाय नमः वाममणि बंधे। झं अजेशाय नमः

वामकरांगुलि मूले। ञं सर्वेशाय नमः वामकरांगुल्यग्रे। टं सोमेशाय नमः दक्षोरूमूले। ठं लाङ्गलीशाय नमः दक्षजानुमूले। डं दारुकेशाय नमः दक्षपादमूलसंधौ। ढं अर्धनारीश्वराय नमः दक्षपादांगुलिमूले। णं उमाकांतेशाय नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। तं आषाढीश नमः वामोरुमूले। थं दण्डीशाय नमः वामजंघामूले। दं अंत्रीशाय नमः वामपाद मूलसन्धौ। धं मीनेशाय नमः वामापादांगुलिमूले। नं मेषेशाय नमः वामपादांगुल्यग्रे। पं लोहितेशाय नमः दक्षपार्श्वे। फं शिखीशाय नमः वामपार्श्वे। बं छगलण्डेशाय नमः पृष्ठे। भं द्विरंडेशाय नाभौ। मं महाकालेशाय नमः जठरे। यं बालीशाय नमः वक्षे। रं भुजेङ्गेशाय नमः दक्षस्कंधौ। लं पिनाकीशाय नमः ककुदि। वं खड्गीशाय नमः वामस्कंधे। शं बकेशाय नमः हृदयादि दक्ष हस्ते। षं श्वेतेशाय नमः हृदयाय वामहस्ते। सं भृग्वीशाय नमः हृदयादि वाम पादे। हं लकुंलीशाय नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। लं शिवेशाय नमः हृदयादि उदरे। क्षं संवर्तकाय नमः हृदयादि मुखे।

२. ग्रहन्यासः- प्रत्येक नाम मंत्र के पहले "ॐ ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं" का उच्चारण करे। यथा- ॐ ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं अं आं...अं अः रक्तवर्णं सूर्यं हृदि न्यसामि। यं रं लं वं शुक्लवर्णं सोमं भ्रुवद्वये न्यसामि। कं... ङं रक्तवर्णं मंगलं लोचनत्रये न्यसामि। चं....ञं श्यामवर्णं बुधं वक्षस्थले न्यसामि। टं...णं पीतवर्णं बृहस्पतिं कण्ठकूपे न्यसामि। तं...नं श्वेतवर्णं भार्गवं घण्टिकां न्यसामि। पं....मं नीलवर्णं शनैश्चरं नाभिदेशे न्यसामि। शं...हं धूम्रवर्णं राहुं मुखे न्यासामि। लं क्षं धूम्रवर्णं केतुं नाभौ न्यसामि।

३.लोकपालन्यासः- प्रत्येक नाम मंत्र के पहले ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं जोड़े। यथा ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं अं इं उं ऋं लृं एं ओं अं ललाटपूर्वे इन्द्राय नमः। आं ईं ऊं ॠं ॡं ऐं औं अः ललाटाग्नेय्यां अग्नये नमः। कं....ङं ललाटदक्षिणे यमाय नमः। चं....ञं ललाटनैर्ऋत्यां निर्ऋतये नमः। टं....णं ललाटपश्चिमायां वरुणाय नमः। तं....नं ललाट वायव्यां वायवे नमः। पं....मं ललाटोत्तरस्यां सोमाय नमः। यं रं लं वं ललाटैशान्यां ईशानाय नमः। शं षं सं हं ललाटोर्ध्वायां ब्रह्मणे नमः। लं क्षं ललाटाधोदिशि अनंताय नमः।

४. शिवशक्तिन्यासः- प्रत्येक नाम मंत्र के पहले ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं जोड़े। वं शं षं सं डाकिनी सहित ब्रह्मणे नमः मूलाधारे। बं भं मं यं रं लं राकिनी सहित विष्णवे नमः स्वाधिष्ठाने। डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं लाकिनी सहित रुद्राय नमः मणिपूरे। कं खं ....टं ठं काकिनीसहिताय ईश्वराय नमः अनाहते। अं आं....अं अः शाकिनी सहित सदाशिवाय नमः विशुद्धाख्ये। लं (हं) क्षं हाकिनी सहित पर शिवाय नमः आज्ञाचक्रे।

५. तारादिन्यासः- प्रत्येक नाम मंत्र के पहले ॐ ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं जोड़े। अं आं कं खं गं घं ङं तारायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। इं ईं चं छं जं झं ञं उग्रायै नमः ललाटे। उ ऊं टं ठं डं ढं णं महोग्रायै नमः भ्रूमध्ये। ऋं ॠं तं थं दं धं नं वज्रायै नमः कण्ठदेशे। लृं ॡं पं फं बं भं मं महाकाल्यै नमः हृदि। एं ऐं यं रं लं वं सरस्वत्यै नमः नाभौ। ओं औं शं षं सं हं कामेश्वर्यै नमः लिङ्गमूले। अं अः लं क्षं चामुण्डायै नमः मूलाधारे।

६. पीठन्यासः- ५१ पीठों की जगह यहां १० पीठ नाम ही दिये हैं। प्रत्येक नाम मंत्र के पहले ॐ ह्रीं त्रीं (स्त्रीं) हुं जोड़े। अं इं उं ऋं लृं एं ओं अं कामरूपपीठाय नमः आधारे। आं ईं ऊं ॠं ल्टृं ऐं औं अः जालंधरपीठाय नमः हृदि। कं...ङं पूर्णगिरिपीठाय नमः ललाटे। चं....ञं उड्डीयान पीठाय नमः केशसंधौ। टं....णं वाराणसीपीठाय नमः भ्रुवोः। तं....नं अवन्तिपीठाय नमः नेत्रयोः। पं...मं मायापुरी पीठाय नमः मुखे यं....वं मथुरापीठाय नमः नाभौ। लं क्षं कांचीपुरीपीठाय नमः कट्यां।

७. वीरतंत्र के अनुसार काली एवं तारा का स्वरूप एक होने से तारा मंत्र के जप में कालीन्यास में कहे गये वर्णन्यास

का प्रयोग करना चाहिये।

॥ तारा उपासनायां आदौ जलग्रहणादि मंत्राः॥

जलग्रहण मंत्रः- ॐ वज्रोदके हुं फट्। पादप्रक्षालन मंत्र -ॐ ह्रीं स्वाहा।

आचमन मंत्रः- ॐ ह्रीं सुविशुद्ध धर्म सर्वपाप निशाम्याशेष विकल्पानपनय स्वाहा।

शिखाबंधन मंत्रः- ॐ मणिधरि वज्रिणि शिखरिणि सर्ववशंकरिणि कं हुं फट् स्वाहा।

भूमिशोधनमंत्रः - ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

विघ्ननिवारण मंत्र - ॐ सर्वविघ्नानुत्सारय हुं फट् स्वाहा।

भूमिनिमंत्रण मंत्रः- ॐ पवित्रवज्रभूमे हुं स्वाहा। मंडलरचना मंत्र-ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हुं स्वाहा।

पुष्पादिशोधन मंत्रः- ॐ यथागताभिषेक समाग्नि मे हुं फट्। चित्तशोधन मंत्रः- ॐ आं ह्रीं स्वाहा।

विशेषार्घ्य (महाशंख) पूजन मंत्र- (१) ह्रां ह्रीं ह्रूं काली कपालाय नमः (२) स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं तारिणीकपालाय नमः (३) ह्रां ह्रीं ह्रूं नीलाकपालाय नमः। (४) ह्रीं स्त्रीं हूं स्वर्गकपालाय सर्वाधाराय सर्वाय सर्वोद्भवाय सर्वशुद्धिमयाय सर्वासुर - रुधिरारुणाय शुभ्राय सुराभाजनाय देवी कपालाय नमः।

॥ अथ तारा (उग्रतारा) मंत्र प्रयोगः॥

उग्रतारा एकाक्षर मंत्रः- त्रीं (महीधर मतानुसारेण) तोडलतंत्र, एक तारा कल्प, विश्वसारतंत्र तथा नीलतंत्र में तास बीज (त्रीं) के स्थान पर वधूबीज (स्त्रीं) का निर्देश किया गया हैं।

त्र्यक्षर मंत्र- हूं स्त्रीं हूं।

चतुरक्षर मंत्रः- ह्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं।

पंचाक्षर तारा मंत्रः- ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्।

विनियोगः- अस्य श्री तारामंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, वृहती छन्दः, तारा देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, स्त्रीं कीलकं, आत्मनोऽभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि। ॐ वृहतीछन्दसे नमः मुखे। ॐ तारादेवतायै नमः हृदि। ॐ ह्रीं (हूँ) बीजाय नमः गुह्ये। ॐ हूं (फट्) शक्तये नमः पादयोः। ॐ स्त्रीं कीलकं नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः- ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से क्रमश हृदयादिन्यास एवं करन्यास करना चाहिये। पश्चात् षोढान्यास करे।

एक जटादि षडङ्गन्यासः- ॐ ह्रीं त्रां हां एक जटायै हृदयाय नमः। ह्रीं त्रीं ह्रीं तारिण्यै शिरसे स्वाहा। हूं त्रूं हूं वज्रोदकायै शिखायै वषट्। हैं, त्रैं, हैं उग्रतारायै कवचाय हुं। ह्रौं त्रौं ह्रौं महापरिसरायै नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः त्रः ह्रः पिङ्गोग्रैकजटायै अस्त्राय फट्। इसी तरह से करन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

विश्वव्यापक वारिमध्य विलसच्छ्वेताम्बु जन्मस्थिताम्, कर्त्री खड्ग कपाल नीलनलिनै राजत्करां नीलभाम्। काञ्ची कुण्डल हार कङ्कण लसत् केयूर मञ्जीरतामाप्तैर्नाग-वरैर्भूषित तनूमारक्त नेत्रत्रयाम्॥ पिङ्गोग्रैकजटां लसत् सु-रसनां दंष्ट्रा करालाननाम्, चर्मद्वैपि वरंकटौ विदधतं श्वेताऽस्थि पट्टालिकाम्। अक्षोभ्येण विराजमान शिरसं स्मेराननाम्भोरुह ताराम्, शावहच्दासनां दृढ कुचामम्बां त्रिलोक्याः स्मरेत्॥

तारार्णव में हूं बीज, फट् शक्ति तथा स्त्रीं कीलक कहा हैं मेरुतंत्र में ''हुं'' शक्ति कही गयी है।

(तारार्णवे)

प्रत्यालीढ पदार्पितांघ्रि शवहृत् घोराट्टहासांपराम्, खड्गेन्दीवर कर्तृ खर्पर भुजां हूंकार बीजोद्भवाम्। खर्वां नीलविशाल पिङ्गलजटा जूटैक नागैर्युताम्, जाड्यं न्यस्य कपालके त्रिजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

(मेरुतंत्रे)- **महाप्रलयपानीये लसच्छ्वेताम्बुजस्थितां, कर्त्रीं खड्गं नीलपद्मं कपालं दधतीं करैः। सर्पकाञ्ची सर्पकरां सर्पकङ्कण कुण्डलां, सर्पकेयूर मञ्जीरां नीलाभां रक्तलोचनाम्॥ पिङ्गोग्रैकजटां त्र्यक्षां व्याघ्रत्वक् परिधायिनीं, दंष्ट्रा करालवदनां ललज्जिह्वां स्मिताननाम्। नरास्थिपट्टं बध्नतीं भालेऽक्षोभ्य मुनीश्वरां, स्थापयन्तीं च तदधो ध्यायेच्छव हृदयासनाम्॥**

द्वितीय पंचाक्षर उग्रतारा मंत्रः- (तारारहस्ये)-**ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।**

ताराभक्ति सुधार्णव में लिखा हैं कि कृष्णावतार बाद विद्या वसिष्ठ ऋषि के शाप से विमुक्त हो जायेगी। ऋष्यादि पूर्ववत् हैं बीज ''हूं'' तथा शक्ति ''फट्'' स्त्रीं कीलक हैं। मतान्तर में ऋष्यादि सब पूर्ववत् हैं।

प्रत्यालीढ पदां घोरां मुण्डमाला - विभूषितां, खर्वां लंबोदरीं भीमां व्याघ्रचर्मावृतां कटौ। नवयौवन सम्पन्नां पञ्चमुद्रा - विभूषितां, चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्। खड्गकर्त्रीं धरां सव्ये वामे मुण्डोत्पलान्वितां, पिङ्गोग्रैकजटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्य - भूषिताम्। बालार्क मण्डलाकार लोचनत्रय - भूषितां, प्रज्वलत् पितृ भूमध्यगतां घोरदंष्ट्रा करालिनीम्। सावेश स्मेर वदनामस्थ्यलङ्कार - भूषितां, विश्वव्यापक तोयान्ते श्वेतपद्मोपरि - स्थिताम्॥

तृतीय पंचाक्षर मंत्रः- **''ॐ त्रीं ह्रीं हुं फट्** (मंत्र महोदधौ)**''**

विनियोगः- अस्य **मंत्रस्य वसिष्ठज (वसिष्ठ पुत्र) शक्ति ऋषिः गायत्री छंद, तारका देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्तिः, स्त्रीं कीलकं, अभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

**श्वेताम्बरां शारदचन्द्र कांतिं सदभूषणां चन्द्रकलावतंसाम्।
कर्त्री - कपालान्वित - पाणिपद्मां तारां त्रिनेत्रां प्रभजेऽखिलर्द्धयैं॥**

हिन्दी मंत्र महार्णव में ऋषि वसिष्ठ कहा हैं। (यह ब्रह्मोपासिता विद्या है)

चतुर्थ पंचाक्षर मंत्रः- त्रीं हुं फट् क्लीं ऐं। ऋष्यादि पूर्ववत्। तारा भक्ति सुधार्णव में इसे नारायणोपास्य विद्या कहा हैं। देवता परातारा कहा हैं।

कर्पूरेन्दुनिभां सितां वर युगां रत्नोल्लसद् भूषणाम्, चन्द्रार्धङ्कित भालकां त्रिनयनां हारावली भूषिताम्।

बिभ्राणां नृकपाल कर्तृकलते संशोभिवक्त्राम्बुजाम्, चेटीभिः परिवारितां भगवतीं तारां परामाश्रये ॥

वश्य कर्म में भगवती तारा का रक्तवर्णा, स्तंभन में पीत वर्णा, उच्चाटन में धूम्रवर्णा, मारण में कृष्णवर्णा रूप में ध्यान करना चाहिये।

पंचम् पंचाक्षर मंत्र - श्रीं ह्रीं त्रीं हूं फट्। षष्ठम् पंचाक्षर मंत्र **ह्रीं ह्रीं त्रीं हूं फट्।**

सप्तम् पंचाक्षर मंत्र - ऐं ह्रीं त्रीं हूं फट्। ये तीनों मंत्र नीलतंत्र से है, मूलमंत्रकोष में ''त्रीं'' की जगह ''स्त्रीं'' हैं।

अष्टम् पंचाक्षर मंत्र - ह्रीं स्त्रीं हूं फट् फट्। नवम् पंचाक्षर मंत्र- **ॐ तारे स्वाहा।** (नीलतंत्र सप्तदशपटले)

श्यामवर्णां त्रिनयनां द्विभुजां वरपङ्कजे, दधानां बहुवर्णाभि र्बहुरूपाभिरावृताम् । शक्तिभिः स्मेरवदनां स्मेरमौक्तिक - भूषणां, रत्नपादुकयोर्न्यस्त पादाम्बुजयुगां स्मरेत् ॥

दशम् पंचाक्षर मंत्र- त्रीं हुं ह्रीं हुं फट्। मेरुतंत्र के अनुसार जालन्धर वध के समय शिव ने उपासना की थी एवं रामचन्द्र को उपदेश दिया।

॥ अथ आवरण पूजा प्रयोगः॥

सर्वतोभद्र मण्डल पीठ पर - '' **ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः**'' से पूजा कर नवपीठ शक्तियों का पूजन करे। **ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ बुद्धयै नमः।** मध्ये- **ॐ विद्येश्वर्यै नमः।**

देवी यंत्र को शोधन कर पीठ पर रखकर पुष्पासन देकर ध्यानपूर्वक आवाहन करे। पुष्पांजलि लेकर देवि से आज्ञा मांगे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि ताराख्ये परिवारार्चनाय मे।

प्रथमावरणम्:- (भूपूर एवं अष्टदल अंतराले) पूर्वे - **पाशांकुशौ कपालं च त्रिशूलं दधतं करैः। अलङ्कार चयोपेतं गणेशं प्राक् समर्चयेत्। ॐ गं गणेशाय नमः। वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा।**
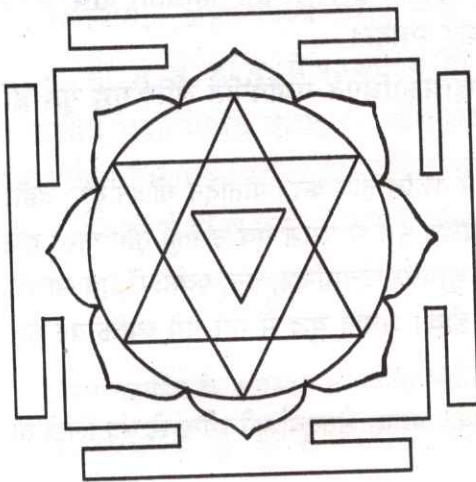
दक्षिणे- **कपालशूले हस्ताभ्यां दधतं सर्पभूषणम्। श्वयूथ वेष्ठितं रम्यं बटुकं दक्षिणेऽर्चयेत्॥ बं बटुकाय नमः। बं बटुक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा।** पश्चिमे - **असिशूल कपालानि डमरुं दधतं करैः। कृष्णं दिगम्बरं क्रूरं क्षेत्रपश्चिमे यजेत्। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपाल वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा॥** उत्तरे - **कपालं डमरुं पाशं लिङ्गं संबिभ्रतीः करैः। अन्त्रावल्या रक्तवस्त्रा योगिनीस्तरे यजेत्॥ ॐ यं योगिनीभ्यो नमः। ॐ यं योगिन्यो वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा** इससे पुष्प देवे। देवी के मस्तक पर अक्षोभ्य का पूजन करे। **ॐ अक्षोभ्य इहागच्छ इहातिष्ठ। ॐ अक्षोभ्यं वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा॥**

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

विशेषार्घ से बिन्दु छोड़कर कहे "**पूजितास्तर्पिताः सन्तु**"। इस प्रकार प्रत्येक आवरण बाद कहे।

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) आग्नेये- **ॐ एक जटायै हृदयाय नमः**। ईशाने- **ॐ तारिण्यै शिरसे स्वाहा**। वायवे- **ॐ वज्रोदके शिखायै वषट्**। नैऋते-**ॐ उग्रतारायै कवचाय हुं**। मध्ये-**ॐ महापरिसरायै नेत्रत्रयाय वौषट्**। दिक्षु – **ॐ पिङ्गोग्रैक जटायै अस्त्राय फट्**। पुष्पांजलि लेकर प्रार्थना करे।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

विशेषार्घ से बिन्दु छोड़कर कहे "**पूजितास्तर्पिताः सन्तु**"।

तृतीयावरणम् – (अष्टदले) **ॐ वं वैरोचन वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। अं अभिताभ वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। पं पद्मनाभ वज्रपुष्पं०। शं शंखनाभ वज्रपुष्पं०। लां लामिके वज्रपुष्पं०। मां मामिके वज्रपुष्पं०। ॐ पां पाण्डुरे वज्रपुष्पं०। ॐ तां तारिके वज्रपुष्पं०।**

चतुर्थावरणम्- (भूपूर के चारों द्वारों में) पूर्वादि क्रम से- **ॐ पं पद्मान्तक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। ॐ यं यमान्तकं(जं जन्मान्तक) वज्रपुष्पं०। ॐ विं विघ्नात्मक वज्रपुष्पं०। ॐ नां नारान्तक (नं नरकांतक) वज्रपुष्पं०।**

पंचमावरणम् – (भूपूरे) पूर्वे- **ॐ लां इन्द्राय देवाधिपतये नमः**। आग्नेये – **ॐ रां अग्नये तेजाधिपतये नमः**। दक्षिणे –**ॐ यां यमाय प्रेताधिपतये नमः। ॐ क्षां निऋतये रक्षोधिपतये नमः नैऋत्ये**। पश्चिमे – **ॐ वां वरुणाय जलाधिपतये नमः**। वायवे – **ॐ यां वायवे प्राणाधिपतये नमः**। उत्तरे – **ॐ सां सोमाय ताराधिपतये नमः**। ईशाने – **ॐ हां ईशानाय गणाधिपतये नमः**। पूर्वेशानयोर्मध्ये – **ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये नमः**। निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये – **ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये नमः।**

षष्ठमावरणम् – (भूपूरे) – इन्द्रादि दिक्पालों के पास उनके आयुधों का पूजन करें। **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः।ॐ चक्राय नमः।**

धूपदीप नैवेद्यादि अर्पण करे। पश्चात् बलि प्रदान करे। **ॐ ह्रीं श्रीमदकेजटे नीलसरस्वति महोग्रतारे देवि ख ख सर्वभूतपिशाच राक्षसान् ग्रस ग्रस मम जाड्यं छेदय छेदय श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।**

पुनः अर्द्धरात्रि को चौराहे पर बलिप्रदान करे। **ॐ ह्रीं एकजटे महायक्षाधिपते मयोपनीतं बलिं गृह्ण गृह्ण ह्रीं स्वाहा।**

मंत्र के चार लक्ष से पुरश्चरण कर दूध तथा घी मिश्रित ~लकमलों से दशांश होम करे। प्रतिदिन भोजन दूध, दही, मधु मांस ताम्बूलादि का सेवन करते हुये चार लाख जप करे। नारी को देखते हुये भगस्पर्श एवं उसकी तृप्ति करते हुये रात में बलि देवे। मूल मन्त्र से नारीकी एवं योनि पूजन करें। निर्जन स्थान, शून्यघर, देवमन्दिर, वन, पर्वत, में शव साधना करें। शव छः मास के शिशु का, अथवा युद्ध में मारे हुये अपने शत्रु का होवे। अर्थात् युद्ध में मारे गये व्यक्ति का शव अधिक उपयुक्त रहता हैं।

१. बच्चा पैदा होने के बाद उसकी जीभ पर शहद एवं घी से सुवर्ण शलाका अथवा श्वेतदूर्वा की सींख से मंत्र लिखे तो आठ वर्ष बाद वह कविराट् हो जायेगा। शत्रुओं से अजेय होगा।

२. ग्रहण के दिन नदी तीर पर जाये, बहती हुयी लकड़ी को अपने दांतों से पकड़ कर लाये उसकी कील (शंकु) बनाये तेल, मधु, अमृत (सुरा) से कमलनी अभाव में कमल के पत्र पर मंत्र लिखकर उसे **अं आं....हं लं क्षं मातृका**

वर्णों से वेष्टित करे, समतल भूमि में गड्ढा खोदकर पत्र को उसमें गाड़ देवे वहां वेदी बनाकर अग्निस्थापन करे। जल तथा गोदुग्ध से सिंचन कर एक हजार कमलों से होम करे नाना प्रकार के पक्वान्नों व फलों से बलि देवे।

मंत्र - **ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावत्यै स्वाहा।**

पश्चात रात्रि में पूर्व में कहे एकजटा मंत्र से बलि देवे तो कविराज होवे।

३. गोरोचन को सौ बार मूल मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक लगावे तो उसके सभी जन दास होवे। लक्ष्मी व सरस्वती दोनों का उसके यहां निवास होवे।

४. मंगलवार को श्मशान का कोयला लाकर कालेवस्त्र में लपेटे और लाल धागे से बांधे तथा सौ बार मूल मंत्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में फेंक देवे तो समस्त कुटुम्बियों से विरोध होवे तथा उसका उच्चाटन होवे।

५. पुरुष की हड्डी पर नमक व हल्दी से मंत्र लिखे रविवार की रात उसे एक हजार बार अभिमंत्रित कर शत्रुदल में फेंक देवें तो १२ दिन में उनका विनाश होवे। खेत में फेंके तो अन्न की हानि तथा अश्वशाला में फेंके तो घोड़ों की शक्ति क्षीण होने लगे।

६. रक्षाकर्म हेतु यंत्र धारण करे उसके लिये भोजपत्र पर लाक्षारस से षट्कोण, अष्टदल, भूपूर युक्त यंत्र बनाये। षट्कोण में **अमुकं रक्ष रक्ष** युक्त मूल मंत्र लिखे। अष्टदल के नीचे के भाग में (केसरों में) **अं आं, इं ईं, उं ऊं, दो-दो** करके १६ स्वर लिखे। अष्टदल मध में **क वर्ग (कं....ङं), च वर्ग (चं....ञं) इत्यादि हं लं क्षं** तक आठों वर्ग लिखे। यंत्र को पीले वस्त्र में लपेटे तथा पीले सूत्र से बांधे। बालक के बांधे तो भूत प्रेतों से रक्षा होवे। स्त्रियों को पुत्रदायक तथा सौभाग्यदायक है। पुरुष को धन व ज्ञान की वृद्धि करे। प्राचीनकाल में गौतमादि ऋषियों ने मोक्षसिद्धिको तथा राजाओं ने साम्राज्य प्राप्त किया था। यह विद्या प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदा है। इस विद्या को गुप्त रखें अर्थात् किसी न कहे कि में तारा की उपासना करता हुं।

॥ षडक्षर मंत्राः ॥

१. ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हूं फट्।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषि, अनुष्टुप् छंदः,** तारा देवता, **सर्वाभीष्ट सिद्धये** जपे **विनियोगः।**

ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं ह्रः से षडङ्गन्यास करे।

प्रत्यालीढ पदार्पितांघ्रि शवहृद्- घोराट्टहासा परा, खड्गेन्दीवर कर्त्रि खर्परभुजा हुंकार बीजाद्भवा।
खर्वा नील विशाल पिङ्गलजटा जूटैकनागैर्युता, जाड्यं न्यस्य कपालकृर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

२. ॐ ह्रीं हुं ह्रीं हुं फट्। मेरुतंत्र के अनुसार इसके ऋषि शिव हैं तथा यह **शिवोपासिता विद्या** हैं।

३. ऐं ह्रीं ॐ फट् स्वाहा।

॥ सप्ताक्षर मंत्राः ॥

(मंत्र महार्णव के अनुसार अधिकतर मंत्रों के वसिष्ठ ऋषि, गायत्री छंद, तारका देवता हैं)

१. ॐ त्रीं ह्रीं, ह्रूं, ह्रीं, हुं फट् (मेरुतंत्रे)

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य ब्रह्माः ऋषिः, गायत्रीश्छंदः,** तारा देवता, **सर्वाभीष्टसिद्धये** जपे **विनियोगः।** यह विद्या **बलराम व ब्रह्माद्वारा उपासित** हैं।

श्वेताम्बरां चन्द्रकांति चन्द्रार्धकृतशेखरां कर्तरीं च
कपालं च कराभ्यां दधतीं भजे।
नानालङ्कार शोभाढ्यां त्रीक्षणः (त्रीक्षणां) पद्मसंस्थितां ॥

२. **ॐ त्रीं ह्रीं हुं ह्रीं हुं फट्।** (ताराभक्ति सुधार्णवे)

३. **ॐ हुं ह्रीं क्लीं सौः हुं फट्।** यह विद्या विष्णु, लक्ष्मी, राम, बलराम व गोपियों द्वारा उपासित रही हैं। मेरु तंत्र में विष्णु ऋषि कहा गया है।

४. मंत्र महोदधि में ब्रह्मोपासिता विद्या के अन्य मन्त्र दिये हैं। १. **ॐ हुं ह्रीं क्लीं ह्सौः हुं फट्।** २. **ॐ हुं ह्रीं क्लीं ह्सौः हुं फट्।**

५. मेरुतंत्र में ब्रह्मोपासिता विद्या हिरण्यकश्यप के वर देते समय का मंत्र दिया हैं। **ॐ हुं ह्रीं क्लीं ह्सौं हुं फट्।**

६. (मंत्रकोषे)- **ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा।**

७. (मंत्रकोष एवं तंत्र दीपिनीयायां)- **खं हूं ह्रौं ॐ ऐं श्रीं ह्रीं ।**

॥ अष्टाक्षर मंत्राः॥

१. **हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं हंसः** (तारा हृदय में हूं है)। २. **हंसः ह्रीं स्त्रीं हूं फट् हंसः।** (मंत्र कोष)

३. **ऐं स्त्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा** (मातृकार्णवे) उपरोक्त मंत्रों व १२ अक्षर मंत्रों का ध्यान इस प्रकार करे।

श्वेताम्बरां शारदा चन्द्रकांतिं सद्भूषणां चन्द्रकलावतंसाम्।
कर्त्रीं कपालान्वित पादपद्मां तारां त्रिनेत्रां प्रभजेऽखिलर्द्ध्यै॥

(अन्य टीकाकार के अनुसार **पाणिपद्मां** ही शुद्ध है)

॥ दशाक्षर मंत्राः॥

१. **ॐ तारे तारे तत्- तारे स्वाहा।** (मंत्रकोष)

२. **ॐ तारे तत्तारे तुरे स्वाहा।** (ताराभक्ति सुधार्णवे) गंधर्व तंत्र के अनुसार ध्यान इस प्रकार हैं।

श्यामवर्णां द्विनयनां द्विभुजां वरपङ्कजे। दधानां बहुवर्णाभि र्बहुरूपाभिरावृताम् ॥१॥
शक्तिभिः स्मेरवदनां स्फुरन्मौक्तिकभूषणां। रत्नपादुकयो र्न्यस्त पादाम्बुजां स्मरेत् ॥२॥

दस लाख जप कर घृताक्त रक्तपुष्पों से दशांश होम करने से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

३. (ब्रह्मसंहिता) **ॐ तारे तुतारे तुरे स्वाहा।**

॥ द्वादशाक्षर मंत्राः॥

१. (मेरुतंत्रे ब्रह्मोपासिता) **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः हुं उग्रतारे हुं फट्।** तारकासुर को वर देते समय ब्रह्माने उपासना की थी।

२. (मेरुतंत्रे नारायणोपासिता) **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः हुं उग्रतारे हुं फट्।** इसके ऋषि विष्णु है। बौद्धधर्म प्रचार हेतु उपासिता रही है।

३. (ताराभक्ति सुधार्णवे) **त्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः हुं उग्रतारे हुं फट्।**

यह विद्या भी विष्णु द्वारा उपासित हैं। सभी मंत्रों के वसिष्ठ ऋषि, गायत्री छंद, देवता तारका हैं।

चतुर्दशाक्षर मंत्रः- ॐ उग्रतारे मां तारय तारय स्वाहा। ताराभक्ति सुधार्णव में ब्रह्मसंहिता से संग्रहीत मंत्र के विषय में कहा हैं कि यह मंत्र शत्रुओं व हिंसक जीवों से रक्षा करता हैं।

षोडशाक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं ईं उग्रतारे ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रौं क्रों। (भैरव तंत्रे)

सप्तदशाक्षर मंत्रः- ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावति माये स्वाहा। मत्स्यसूक्त में भी यही मंत्रोद्धार हैं। पंचाक्षर मंत्र प्रयोग में इसका प्रयोग वर्णन किया जा चुका हैं।

पंचविंशाक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं ह्रां हूं नमस्तारायै सकलदुस्तरं तारय तारय ॐ ॐ स्वाहा। ताराभक्ति सुधार्णव के अनुसार सकलदुस्तरं के स्थान पर सकलदुस्तरान् का उल्लेख है जो अधिक उपयुक्त लगता हैं।

स्वप्रयोगिकः- नील सरस्वती के त्र्यक्षर बीज मंत्र तथा २५-३२ अक्षरात्मक मंत्र के संयोग से तारा का एक मंत्र बनाकर मैने प्रयोग कराये जो लाभकारक रहे। मंत्र - **ह्रीं स्त्रीं हूं नमस्तारायै सकलदुस्तरांस्तारय तारय तर तर स्वाहा।** बीजाक्षरों व तारा के संबोधन पर आपका ध्यान उर्ध्वमुखी रहेगी, तारय तारय शब्द के साथ कानों के पास से खिंचाव बनेगा तथा तर तर शब्द के साथ ऐसा लगेगा कि जीभ पतली हो रही हैं। व उच्चारण में सरलता महसूस होगी। अतः यह मंत्र वाक्सिद्धि प्रद हैं। दोनों मंत्रों का विस्तृत विधान ३२ अक्षरात्मक मंत्र में अवलोकन करे।

द्वात्रिंशत्यक्षर मंत्राः- इन मंत्रों के ऋषि यंत्रादि पूजन पंचाक्षर मंत्र प्रयोगवत् जपना चाहिये।

(१) त्रीं ह्रीं ह्रां हुं नमस्तारायै महातारायै सकल दुस्तरात् तारय तारय तर तर स्वाहा। (मेरुतंत्रे)

(२) ॐ त्रीं ह्रां हुं नमस्तारायै महातारायै सकल दुस्तरांस्तारय तारय तर तर स्वाहा। (मंत्र. महो.) इस मंत्र से साधक को गद्य पद्य मयी वाणी और अष्टसिद्धियां प्राप्त होती हैं। साधक को संकटों से मुक्ति हेतु यह मंत्र अच्छा हैं, ध्यान अवस्था में आप देखेंगे कि तारय तारय शब्द के साथ कानों में स्पंदन व खिंचाव व तर तर शब्द के साथ जिह्वा पर स्पंदन होता हैं अतः वाक्शुद्धि हेतु यह मंत्र उत्तम हैं।

॥ एकजटा तारा ॥

त्र्यक्षर मंत्रः- त्रीं हुं फट्। (ताराभक्ति सुधार्णवे)

चतुरक्षर मंत्रः- (१) ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। (२) श्रीं स्त्रीं हूं फट् (३) ऐं स्त्रीं हू फट्

लक्ष्मीकामना हेतु "**श्रीं**" तथा वाक्सिद्धि हेतु प्रारंभ में "**ऐं**" वाले मंत्र का प्रयोग करे। (तारातन्त्र एवं तारा रहस्ये)

(४) ह्रीं त्रीं हूं फट्। (नीलतन्त्र, तारार्ण०)

प्रत्यालीढ पदां घोरां मुण्डमाला - विभूषितां, खर्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्रचर्मावृता कटौ। नवयौवन संपन्ना पंचमुद्रा - विभूषितां, चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्॥ खड्गकर्तृ समायुक्तां सव्येतरभुजद्वयां, कपालोल्पल संयुक्तां सव्यपाणि युगान्विताम्। पिङ्गोग्रैकजटां ध्यायेन् मौलावक्षोभ्य भूषितां, बालार्कमण्डलाकारां लोचनत्रय भूषिताम्॥ ज्वलच्चिता मध्यगतां घोरदंष्ट्रां करालिनीं, सुवेश स्मेरवरदां स्त्र्यलङ्कार विभूषिताम्। चन्द्रसूर्याग्निनयनां मद्यपान प्रमत्तिकां, विश्वव्यापक तोयान्तः श्वेतपद्मोपरि स्थिताम्॥

पञ्चाक्षर मंत्रः- त्रीं हुं ह्रीं हुं फट्।

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य वसिष्ठ पुत्र शक्ति ऋषिः, गायत्री छंद, एकजटातारा देवता, ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं हुं ह्रीं हुं फट्। ऋष्यादि सब पूर्ववत्।

द्वाविंशाक्षर मंत्राः- (१) ॐ ह्रीं नमः भगवत्येकजटे मम वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। (२) (मंत्रमहोदधौ) ॐ ह्रीं नमो भगवत्येकजटे मम वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा।

विनियोगः- **अस्य श्रीमदेकजटामंत्रस्य पतञ्जलि ऋषिः, गायत्री छंदः, एकजटा देवता, ह्रीं बीजं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ॐ पतञ्जलि ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। एकजटादेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

हृदयादिन्यासः- **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से करे।** ध्यानादि सर्व प्रयोग पूर्ववत् जाने।

॥ अथ अष्टतारिणीविद्या मंत्राः॥

१. पञ्चाक्षर तारा- **ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।** २. चतुरक्षर उग्रा- **स्त्रीं ह्रीं हूं फट्।** ३. चतुरक्षर महोग्रा- **हूं स्त्रीं ह्रीं फट्।** ४. चतुरक्षर वज्रा- **हूं ह्रीं स्त्रीं फट्।** ५. चतुरक्षर नीला- **ह्रीं स्त्रीं फट् हूं।** ६. चतुरक्षर सरस्वती- **स्त्रीं ह्रीं हूं फट् हूं।** ७. चतुरक्षर कामेश्वरी- **ह्रीं हूं स्त्रीं फट्।** ८. चतुरक्षर भद्रकाली- **स्त्रीं हूं ह्रीं फट्।** (तंत्र दीपिनी में हूं के स्थान पर हुं ही है)

नीलतंत्र के अनुसार आठों मंत्रों के अष्टक ऋषि, अनुष्टुप्छन्द तथा नाम मंत्रानुसार देवता है

॥ तारामंत्र पञ्चक ॥

(१) ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं नमः (२) हूं ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। (३) क्लीं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् (४) ॐ ह्रीं हूं हूं नमः। (५) ऐं सौः ॐ ऐं क्लीं स्वाहा क्लीं। भैरवतंत्र के अनुसार सभी मंत्र कांति, विद्या, सौभाग्य एवं मोक्षदायक हैं।

॥ हंसः तारा मंत्राः॥

(१) ह्रौं सौं ॐ ह्रीं त्रीं हुं हंसः। (२) ऐं स्त्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा। स्वच्छन्द संग्रह के अनुसार यह मंत्र त्रैलोक्य वशंकर एवं आज्ञासिद्धिकारक हैं। **षडङ्गन्यास हेतु-** एक एक बीजाक्षर से एक एक न्यास तथा शेष अक्षरों से अस्त्रन्यास करे।

॥ कृष्णादेवी (तारणी) महाकल्प॥

नवाक्षर मंत्रः- (१) क्रीं क्लीं कृष्णदेवि ह्रीं क्रीं ऐं।

विनियोग- (तारिणी तंत्रे) **अस्य मंत्रस्य शक्ति ऋषिः, वृहती छंदः, तारिणी देवता सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।** षडङ्गन्यास **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः** से करे।

(२) मंत्रः- **क्रीं क्लीं कृष्णादेवि ह्रीं क्रीं ऐं।** मंत्रमहार्णव में कृष्णा देवी महाकल्प में कृष्णादेवी लिखा हैं।

विनियोग:- **ॐ अस्य श्री तारिणीमंत्रस्य शक्ति ऋषिः, वृहती छंदः, तारिणी देवता, ह्रीं बीजं, ऐं शक्तिं, मम श्रीतारणीप्रसादतो विद्या प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास पूर्व की तरह **ह्रां, ह्रीं ह्रूं** की तरह करे। हिन्दी तंत्रसार में "**कृष्णदेवि**" लिखा हैं। षडङ्गन्यास **क्रीं, क्लीं, कृष्णदेवि, ह्रीं, क्रीं, ऐं** इत्यादि से क्रमशः करे।

कृष्णां लंबोदरीं भीमां नागकुण्डल शोभितां, रक्तमुखीं ललज्जिह्वां रक्तांबरधरां कटौ ।
पीनोन्नतस्तनीमुग्रां महानागेन वेष्टितां, शवस्योपरि देवेशि तस्योपरि कपालिके ॥१॥
नासाग्रध्याननिरतां महाघोरां वरप्रदां, चतुर्भुजां दीर्घकेशीं दक्षिणस्योर्ध्व बाहुना ।
विभ्रतीं नलिनीमेकां वामोर्द्धे पानपात्रकं, वराभयधरां देवीमधस्ताद् दक्षवामयोः ॥२॥
पिवन्तीं रौधिरीं धारां पानपात्रे सदाशिवे, सर्वसिद्धिप्रदां देवीं नित्यां गिरिनिवासिनीम् ।
लोचनत्रय संयुक्तां नागयज्ञोपवीतिनीं, दीर्घनासां दीर्घजङ्घां दीर्घाङ्गीं दीर्घजिह्विकाम् ॥३॥
चन्द्रसूर्याग्निभेदेन त्रिलोचन समन्वितां, शत्रुनाशकरीं देवीं महाभीमां वरप्रदाम् ।
व्याघ्रचर्म शिरोबद्धां जगतत्रय विभावितां, साधकानां सुखकर्त्रीं सर्वलोक भयङ्करीम् ॥
एवं भूता महादेवीं तारिणीं प्रणमाम्यहम्॥

मंत्र महार्णव में ८-९ जगह पाठान्तर भेद हैं। एक लक्ष जप का विधान हैं। यह मंत्र जाड्यनाशक, अष्टसिद्धिदायक हैं।

॥ यंत्रार्चनम् ॥

भद्रमण्डल पर "**ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः**" से पूजा कर पूर्वादि क्रम से ९ पीठ शक्तियों का पूजन करे। **ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ धियै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। मध्ये विश्वेश्वर्यै नमः।** "**ह्रीं तारणी योगपीठात्मने नमः**" से पुष्पासन देकर देवी यंत्र को स्थापित कर ध्यान पूर्वक मूर्ति की कल्पना करे। पुष्पांजलि लेकर देवी से परिवार पूजन की आज्ञा मांगे।

संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये। अनुज्ञां तारणी देहि परिवारार्चनाय मे।
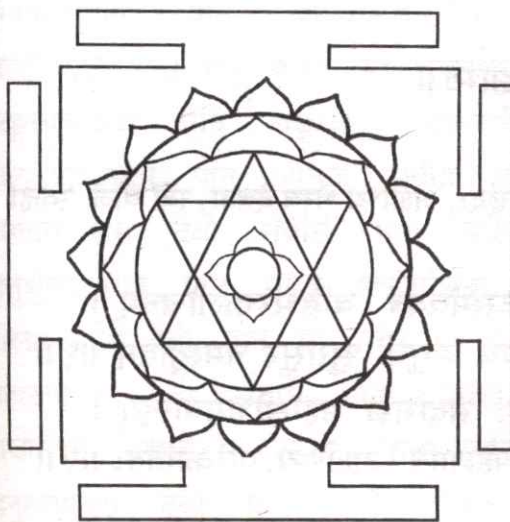
॥ कृष्णदेवी (तारणी) पूजन यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् - (चतुर्दले) पूर्वादि क्रमेण- **ऐं नमः। ऐं श्री पादुकां तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥ क्रीं नमः। ह्रीं नमः। क्रीं क्लीं कृष्णादेव्यै नमः।**

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इसे पढ़कर पुष्पांजलि देवे तथा "**पूजितास्तर्पिताः सन्तु**" कहकर अर्घ्यपात्र से जल छोड़े। ऐसा प्रत्येक आवरण पूजा बाद करे।

द्वितीयावरणम् - (षट्कोणे) आग्नेयी आदि चारों दिशाओं में - **ह्रीं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रीं शिखायै वषट्। ह्रीं कवचाय हुं।** अग्रे- **ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।** देवी पश्चिमे **ह्रीं अस्त्राय फट्।**

तृतीयावरणम् – (चतुर्दलाग्रे) **ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ गणपतयै नमः। ॐ सहाम्बिकायै नमः।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **ॐ अणिमायै नमः। ॐ अनङ्गायै नमः। ॐ मदनायै नमः। ॐ लघिमायै नमः। ॐ मदनातुरायै नमः। ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः। ॐ अष्टकर्णिकायै नमः। ॐ कपालिकायै नमः।**

पंचमावरणम्– (षोडशदले) **ॐ सुतदायै नमः। सुतदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** इति सर्वत्र। **ॐ मोक्षदायै नमः। ॐ भक्तिदायै नमः। ॐ भोगदायै नमः। ॐ मुक्तिदायै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः। ॐ कामदायै नमः। ॐ धनदायै नमः। ॐ क्षेमदायै नमः। ॐ शिवदायै नमः। ॐ परदायै नमः। ॐ आत्मदायै नमः। ॐ योगदायै नमः। ॐ भाग्यदायै नमः। ॐ मोक्षदायै नमः। ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।**

षष्ठमावरणम् – (भूपुर के अंदर पूर्वादि चारों दिशाओं में) **ॐ अणिमाद्यष्टसिद्धिभ्यो नमः। ॐ अग्निदशकलायै नमः। ॐ षोडशचन्द्रकलायै नमः। ॐ द्वादशसूर्यकलायै नमः।**

सप्तमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वे **ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः।** पूर्वईशानयोर्मध्ये – **ॐ ब्रह्मणे नमः।** निर्ऋतिपश्चिमोर्मध्ये – **ॐ अनंताय नमः।**

अष्टमावरणम् – (भूपुर में इन्द्रादि देवों के पास आयुध पूजा करे) **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

पश्चात् धूपादि नैवेद्य, नमस्कार पर्यन्त पूजन करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप का हैं। लाल चंदन से चर्चित नाना प्रकार के फूलों व बेलपत्रों से, विशेष गंधों से पूजन करे। जपा (अढ़उल) पुष्प, रक्तकनेर, श्वेत कनेर, बेलपुष्प, कुन्द, लवंग, अपराजिता, चम्पा, केसर के पुष्पों से देवि का अर्चन करे। मालती, बकपुष्पों व दूर्वादलों से पूजन करे। कदम्बपुष्प, श्वेत पुष्प व नाना द्रव्यों से देवी का पूजन करे। इसके समान अन्य कोई विद्या नहीं हैं। साधक शास्त्रों में पारंगत तथा आशुकवि बन जाता हैं।

॥ तारा के शिव– अक्षोभ्य ॥

अष्टाक्षर मंत्रः– **ॐ स्त्रीं आं अक्षोभ्य स्वाहा।**

विनियोगः– **अस्य मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वर ऋषिः, विराट् छंदः, अक्षोभ्य भैरव देवता, स्त्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

सहस्त्रादित्यसङ्काशं नागरूपधरं शुभं, विद्युत्कोटिसमंवक्त्रं वह्निभंरक्तलोचनम् ।
सार्द्ध त्रिवलयोपेतं जटाकोटिरसंस्थितं, महालावण्य संयुक्तं सुरासुर नमस्कृतम् ॥१॥
समुद्रमध्ये देवि! कालकूटं समुत्थितं, सर्वेदेवाः सदाराश्च महाक्षोभमवाप्नुयु ।
क्षोभादिरहितं यस्मात् पीतं हालाहलं विषं, अतएव महेशानि ! अक्षोभ्यः परिकीर्तितः ॥२॥

॥ तारा गायत्री ॥

(१) उग्रतारा- (१) तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी धियो यो नः प्रचोदयात्। (२) ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि देवि प्रचोदयात्। (तोडल तंत्रे) (३) ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्। (तारा नित्यार्चन)

(२) एकजटा- ॐ भगवत्येकजटे विद्महे घोरदंष्ट्रे धीमहि तन्नस्तारे प्रचोदयात्।

(३) नील सरस्वती- ॐ नीलसरस्वत्यै धीमहि शारदायै विद्महे तन्नः शिवे प्रचोदयात्।

॥ श्री तारा कवचम् ॥

इस कवच स्तोत्र में भगवती तारा के कई मंत्रों का वर्णन है, साधक उन मंत्रों का अलग से प्रयोग कर सकते हैं।

॥ ईश्वर उवाच ॥

कोटितन्त्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी । दिव्यं हि कवचं तस्याः शृणुष्व सर्वकामदम् ॥१॥

विनियोगः- अस्य श्री ताराकवचस्य अक्षोभ्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, भगवती तारा देवता। सर्वमंत्रसिद्धि समृद्धये जपे विनियोगः।

प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी । ललाटे पातु ह्रींकारो बीजरूपा महेश्वरी ॥२॥
स्त्रींकारो वदने नित्यं लज्जारूपा महेश्वरी । हूँकारः पातु हृदये भवानीरूपशक्तिधृक् ॥३॥
फट्कारः पातु सर्वाङ्गे सर्वसिद्धिफलप्रदा । खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ॥४॥
निम्नोदरी सदा स्कंधयुग्मे पातु महेश्वरी । व्याघ्रचर्मावृता कट्यां पातु देवी शिवप्रिया ॥५॥
पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी । रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु ॥६॥
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी । करालास्या सदा पातु लिङ्गेदेवी हरप्रिया ॥७॥
पिङ्गोग्रैकजटा पातु जङ्घायां विघ्ननाशिनी । प्रेतखर्परभृद्देवी जानुवक्रे महेश्वरी ॥८॥
नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम । नागकुण्डलधर्त्री च पातु पादयुगेः ततः ॥९॥
नागहार धरा देवी सर्वाङ्गं पातु सर्वदा । नागकङ्कधरा देवी पातु प्रान्तरदेशतः ॥१०॥
चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी । खड्गहस्ता महादेवीं श्रवणे पातु सर्वदा ॥११॥
नीलाम्बरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी । कर्त्रिहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः ॥१२॥
ब्रह्मरूपधरा देवी संग्रामे पातु सर्वदा । नागकङ्कणधर्त्री च भोजने पातु सर्वदा ॥१३॥
शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा । वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्वदा ॥१४॥
धनुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसंकुले । नागाञ्चितकटी पातु देवी मां सर्वकर्मसु ॥१५॥
छिन्नमुण्डधरा देवी कानने पातु सर्वदा । चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा ॥१६॥

द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु । अलङ्कारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा ॥१७॥
रक्ष रक्ष नदीकुञ्जे हूं हूं फट् सुसमन्विते । बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा ॥१८॥
मणिभृद्वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा । रक्ष रक्ष सदा हूं हूं ॐ ह्रीं स्वाहा महेश्वरी ॥१९॥
पुष्पकेतुरजार्हेति कानने पातु सर्वदा । ॐ ह्रीं वज्रपुष्पं हुं फट् प्रान्तरे सर्वकामदा ॥२०॥
ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी । हूं स्वाहा शक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा ॥२१॥
ॐ आं हूं स्वाहा महेशानी पातु द्यूते हरप्रिया । ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोत्सारिणी देवी विघ्नान्मां सदाऽवतु ॥२२॥
ॐ पवित्रवज्रभूमे हुं फट् स्वाहा समन्विता । पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥२३॥
ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हुं फट् स्वाहा समन्विता । पाताले पातु सा देवी लाकिनी नामसंज्ञिका ॥२४॥
ह्रींकारी पातु मां पूर्वे शक्तिरूपा महेश्वरी । स्त्रींकारी पातु देवेशी वधूरूपा महेश्वरी ॥२५॥
हूंस्वरूपा महादेवी पातु मां क्रोधरूपिणी । फट्स्वरूपा महामाया उत्तरे पातु सर्वदा ॥२६॥
पश्चिमे पातु मां देवी फट्स्वरूपा हरप्रिया । मध्ये मां पातु देवेशी हूंस्वरूपा नगात्मजा ॥२७॥
नीलवर्णा सदा पातु सर्वतो वाग्भवा सदा । भवानी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ॥२८॥
विद्यादानरता देवी वक्त्रे नीलसरस्वती । शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ ॥२९॥
भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी । भूतप्रेतालये घोरे दुर्गमा श्रीघनाऽवतु ॥३०॥
पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका । कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ॥३१॥
शक्नोमि गदितुं देवि भवेत्तस्य फलं च यत् । पुत्रदारेषु बन्धूनां सर्वदेशे च सर्वदा ॥३२॥
न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः । शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वापि कवचं सर्वकामदम् ॥३३॥
प्रपठन् वा स्मरन्मर्त्यो दुःखशोक-विवर्जितः । सर्वशास्त्रे महेशानि कविराड् भवति ध्रुवम् ॥३४॥
सर्ववागीश्वरो मर्त्योलोकवश्यो धनेश्वरः । रणे द्यूते विवादे च जयस्तत्र भवेद्ध्रुवम् ॥३५॥
पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम् । शत्रवो दासतां यान्ति सर्वेषां वल्लभः सदा ॥३६॥
गर्वी खर्वी भवत्येव वादी स्खलति दर्शनात् । मृत्युश्च वश्यतां याति दासास्तस्यावनीभुजः ॥३७॥
प्रसङ्गात्कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम् । प्रपठन्वा स्मरन्मर्त्यः शापानुग्रहणे क्षमः ॥३८॥
आनन्दवृन्द सिन्धूनामधिपः कविराड् भवेत् । सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यः सदा सुखी ॥३९॥
गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् । तत्रापि कवचं देवि दुर्ल्लभं भुवनत्रये ॥४०॥
गुरुर्देवो हरः साक्षात्तत्पत्नी तु हरप्रिया । अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥४१॥
मंत्राचारा महेशानि कथिताः पूर्ववत्प्रिये । नाभौ ज्योतिस्तथा रक्तं हृदयोपरि चिन्तयेत् ॥४२॥
ऐश्वर्यं सुकवित्वं च महावागीश्वरो नृपः । नित्यं तस्य महेशानि महिलासङ्गमं चरेत् ॥४३॥
पंचाचाररतो मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा । शक्तियुक्तो भवेन्मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा ॥४४॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवासुरमानुषाः । तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते ॥४५॥

स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सिद्धिदायकाः । प्रशंसन्ति सदा देवि तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥४६॥
विघ्नात्मकाश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले । प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥४७॥
इति ते कथितं देवि मया सम्यक्प्रकीर्तितम् । भुक्तिमुक्तिकरं साक्षात्कल्पवृक्षस्वरूपकम् ॥४८॥
आसाद्याद्यगुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालम्बनं, मोहेनापि मदेन चापि रहितो जाड्येन वा युज्यते ॥
सिद्धोऽसौ भुवि सर्वदुःखविपदां पारं प्रयात्यन्तके, मित्रंतस्यनृपाश्च देवि विपदोनश्यन्ति तस्याशु च ॥४९॥
तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि । तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम् ॥५०॥
इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो भजते नरः । अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥५१॥
लिखित्वा धारयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे । तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते ॥५२॥
गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा । यावकैर्वा महेशानि लिखेन्मन्त्रं समाहितः ॥५३॥
अष्टम्यां मङ्गलदिने चतुर्दश्यामथापि वा । संध्यायां देवदेवेशि लिखेद्यन्त्रं समाहितः ॥५४॥
मघायां श्रवणे वापि रेवत्यां वा विशेषतः । सिंहराशौगते चन्द्रे कर्कटस्थे दिवाकरे ॥५५॥
मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे । लिखित्वा धारयेद्यस्तु उत्तराभिमुखो भवेत् ॥५६॥
श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे विशेषतः । निशायां वा लिखेन्मंत्रं तस्य सिद्धिरचञ्चला ॥५७॥
भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गुरुणा च महेश्वरि । ध्यानधारणयोगेन धारयेद्यस्तु भक्तितः ॥५८॥
अचिरात्तस्य सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे उग्रताराकवचं समाप्तम् ॥

॥ श्री तारा हृदय स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु पार्वति! भद्रं ते लोकानां हितकारकम् । कथ्यते सर्वदा गोप्यं ताराहृदयमुत्तमम् ॥१॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

स्तोत्रं कथं समुत्पन्नं कृतं केन पुरा प्रभो । कथ्यतां सर्वसद्वृत्तं कृपां कृत्वा ममोपरि ॥२॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

रणे देवासुरे पूर्वं कृतमिन्द्रेण सुप्रिये । दुष्टशत्रुविनाशार्थं बलवृद्धियशस्करम् ॥३॥

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीमदुग्रताराहृदयस्तोत्र मंत्रस्य श्रीभैरवऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमदुग्रतारा देवता, स्त्रीं बीजं, हूं शक्तिः, नमः कीलकं सकल शत्रुविनाशार्थे पाठे विनियोगः।

हृदयादि षडंगन्यास:- ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ हूं शिखायै वषट्। ॐ त्रीं कवचाय हुं। ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हंसः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेत्कोटिदिवाकर - द्युतिनिभां बालेन्दुयुक्छेखरां
रक्तांगीं रसनां सुरक्तवसनां पूर्णेन्दुबिंबाननाम् ।
पाशं कर्त्रिमहांकुशादि दधतीं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां
नानाभूषणभूषितां भगवतीं तारां जगत्तारिणीम् ॥४॥

एवं ध्यात्वा शुभां तारां ततस्तु हृदयं पठेत् । तारिणी तत्त्वनिष्ठानां सर्वतत्त्वप्रकाशिका ॥५॥
रामाभिन्ना पराशक्तिः शत्रुनाशं करोतु मे । सर्वदा शत्रुसंरम्भे तारा मे कुरुतां जयम् ॥६॥
स्त्रीं त्रीं स्वरूपिणी देवि त्रिषु लोकेषु विश्रुता । तव स्नेहान्मयाख्यातं न पैशुन्यं प्रकाश्यताम् ॥७॥
शृणु देवि! तव स्नेहात्तारानामानि तत्त्वतः । वर्णयिष्यामि गुप्तानि दुर्लभानि जगत्त्रये ॥८॥
तारिणी तरला तारा त्रिरूपा तरणिप्रभा । सत्त्वरूपा महासाध्वी सर्वसज्जनपालिका ॥९॥
रमणीया रजोरूपा जगत्सृष्टिकरी परा । तमोरूपा महामाया घोररावा भयानका ॥१०॥
कालरूपा कालिकाख्या जगद्विध्वंसकारिका । तत्त्वज्ञानपरानन्दा तत्त्वज्ञानप्रदाऽनघा ॥११॥
रक्तांगी रक्तवस्त्रा च रक्तमालाप्रशोभिता । सिद्धिलक्ष्मीश्च ब्रह्माणी महाकाली महालया ॥१२॥
नामान्येतानि ये मर्त्त्याःसर्वदैकाग्रमानसाः । प्रपठन्ति प्रिये तेषां किंकरत्वं करोम्यहम् ॥१३॥
तारां तारपरां देवीं तारकेश्वर पूजिताम् । तारिणीं भवपाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम् ॥१४॥
स्त्रीं ह्रीं हूं त्रीं फणमंत्रेण जलं जप्त्वाऽभिषेचयेत् । सर्वेरोगाः प्रणश्यन्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१५॥
त्रीं स्वाहान्तैर्महामंत्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः । तिलकं कुरुते प्राज्ञो लोको वश्यो भवेत्प्रिये ॥१६॥
स्त्रीं ह्रीं त्रीं स्वाहा मंत्रेण श्मशानं भस्ममंत्रयेत् । शत्रोर्गृहे तत्प्रक्षेपाच्छत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥१७॥
ह्रीं हूं स्त्रीं फडंत मन्त्रैः पुष्पं संशोध्य सप्तधा । उच्चाटनं नयत्याशु रिपूणां नैव संशयः ॥१८॥
स्त्रीं त्रीं ह्रीं मन्त्रवर्येन अक्षताश्चाभिमंत्रिताः । तत्प्रतिक्षेपमात्रेण शीघ्रमायाति मानिनी ॥१९॥

(हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हंसः) इति मंत्रेण जप्तेन शोधितं कज्जलं प्रिये । तस्यैव तिलकं कृत्वा जगन्मोहं समाचरेत् ॥२०॥

ताराया हृदयं देवि सर्वपापप्रणाशनम् । वाजपेयादियज्ञानां कोटिकोटिगुणोत्तरम् ॥२१॥
गंगादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणात्स्मृतम् । महादुःखे महारोगे सङ्कटे प्राणसंशये ॥२२॥

महाभये महाघोरे - पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम् ।
सत्यं सत्यं मयोक्तं ते पार्वति प्राणवल्लभे ॥२३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यमिदं क्वचित् ॥२४॥

॥ इति श्रीभैरवीतंत्रे शिवपार्वती संवादे श्रीमदुग्रताराहृदयं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ तारा स्तोत्रम् ॥

मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे, प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मेराननांभोरुहे ।
फुल्लेन्दीवर लोचने त्रिनयने कर्त्रीकपालोत्पले, खड्गंचादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ॥१॥
वाचामीश्वरि भक्तिकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धीश्वरि, गद्यप्राकृतपद्यजातरचना सर्वार्थसिद्धिप्रदे ।
नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारान्निधे सौभाग्यामृतवर्द्धनेन कृपया सिञ्च त्वमस्मादृशम् ॥२॥
खर्वे गर्वसमूहपूरिततनो सर्पादिवेषोज्वले व्याघ्रत्वक् परिवीतसुन्दरकटिव्याधूत घण्टाङ्किते ।
सद्यः कृत्तगलद्रजः परिमिलन्मुण्डद्वयीमूर्द्धजग्रन्थिश्रेणि नृमुण्डदामललिते भीमे भयंनाशय ॥३॥
मायानङ्गविकाररूपललनाबिन्द्वर्द्धचन्द्राम्बिके हुं फट्कारमयि त्वमेव शरणं मंत्रात्मिके मादृशः ।
मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मा परा वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये ॥४॥
त्वत्पादाम्बुजसेवया सुकृतिनो गच्छन्ति सायुज्यतां तस्याः श्रीपरमेश्वर त्रिनयन ब्रह्मादिसाम्यात्मनः ।
संसाराम्बुधिमज्जने पटुतनुर्देवेन्द्रमुख्यान्सुरान् मातस्ते पदसेवने हि विमुखान् किं मन्दधीःसेवते ॥५॥
मातस्त्वत्पद पंकजद्वय रजोमुद्रांक कोटीरिणस्ते देवा जयसङ्गरे विजयिनो निःशङ्कमङ्के गताः ।
देवोऽहं भुवने न मे सम इति, स्पर्द्धां वहन्तः परे तत्तुल्यां नियतं यथा शशिरवी नाशं व्रजन्ति स्वयम् ॥६॥
त्वन्नामस्मरणात्पलायन परान्द्रष्टुं च शक्ता न ते भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणा यक्षाश्च नागाधिपाः ।
दैत्यादानव पुङ्गवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जन्तवो डाकिन्यः कुपितान्तकश्च मनुजान् मातः क्षणं भूतले ॥७॥
लक्ष्मीः सिद्धिगणश्च पादुकमुखाः सिद्धास्तथा वैरिणां स्तंभश्चापि वराङ्गने गजघटा स्तंभस्तथा मोहनम् ।
मातस्त्वत्पदसेवया खलुनृणां सिध्यन्ति ते ते गुणाः क्लान्तः कान्त मनोभवोऽत्र भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥८॥
ताराष्टकमिदं पुण्यं भक्तिमान् यः पठेन्नरः । प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः ॥९॥
लभते कवितां विद्यां सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत्, लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ।
कीर्तिं कान्तिं च नैरुज्यं प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥१०॥

॥ इति नीलतंत्रे तारास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ तारा शतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्री शिव उवाच ॥

तारिणी तरला तन्वी तारा तरुणवल्लरी । तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा ॥१॥
तुरीया तरला तीव्रगमना नीलवाहिनी । उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेकजटाशिराः ॥२॥
तरुणी शाम्भवी च्छिन्नभाला च भद्रतारिणी । उग्रा चोग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती ॥३॥
द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना । चण्डिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी ॥४॥
अट्टहास्या करालास्या चरास्या दितिपूजिता । सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता ॥५॥
रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्यविभूषिता । बलिप्रिया बलिरता दुर्गा बलवती बला ॥६॥

बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता । अर्द्धकेशेश्वरी केशा केशवासविभूषिता ॥७॥
पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनंदिनी । दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणे रता ॥८॥
वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता । माहेश्वरी महादेवप्रिया पञ्चविभूषिता ॥९॥
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना प्राणरूपिणी । गान्धारी पञ्चमी पञ्चाननादि परिपूजिता ॥१०॥
तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी । तत्त्वप्रिया तत्त्वरूपा तत्त्वज्ञानात्मिकानघा ॥११॥
ताण्डवाचारसन्तुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी । तालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा ॥१२॥
त्रयीयुक्ता त्रयीमुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी । तारुण्यभावसंतुष्टा शक्तिर्भक्तानुरागिणी ॥१३॥
शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा । ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥१४॥
बलभद्रप्रेमरता बलिभुग्बलिकल्पिनी । रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुरागिणी ॥१५॥
इत्येतत्कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम् । श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः ॥१६॥
य इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुति रहस्यकम् । सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विहरेत् क्षितिमण्डले ॥१७॥
तस्यैव मंत्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा । भवत्येव महामाये सत्यं सत्यं न संशयः ॥१८॥
मन्दे मंगलवारे च यः पठेन्निशि संयतः । तस्यैव मंत्रसिद्धिः स्याद्गाणपत्यं लभेत सः ॥१९॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि पठेत्ताररहस्यकम् । सोऽचिरणैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत् ॥२०॥
सहस्रावर्त्तनाद्देवि पुरश्चर्याफलं लभेत् ।
एवं सततयुक्ता ये ध्यायं तस्त्वामुपासते ।
ते कृतार्था महेशानि मृत्युसंसारवर्त्मनः ॥२१॥

॥ इति श्रीस्वर्णमालातंत्रे तारिणी शतनामस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री तकारादि तारा सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीवशिष्ठ उवाच ॥

नाम्नां सहस्रं ताराया मुखाम्भोजाद्विनिर्गतम् । मंत्रसिद्धिकरं प्रोक्तं तन्मे वद पितामह ॥१॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

शृणु वत्स! प्रवक्ष्यामि रहस्यं सर्वसिद्धिदम् । यस्योपदेशमात्रेण तव सिद्धिर्भविष्यति ॥२॥
महाप्रलयकालादौ नष्टे स्थावरजङ्गमे । महाकारं समाकर्ण्य कृपया संहृतं तनौ ॥३॥
नाम्ना तेन महातारा ख्याता सा ब्रह्मरूपिणी । महाशूलत्रयं कृत्वा तत्र चैकाकिनी स्थिता ॥४॥
पुनः सृष्टेश्चिकीर्षा -ऽभूद्दिव्यसाम्राज्यसंज्ञकम् । नाम्नां सहस्रमस्यास्तु तकाराद्यं मया स्मृतम् ॥५॥
तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं निर्मितं सुदृढं महत् । आविर्भूता वयं तन्त्रयन्त्रैस्तस्याः पुरा द्विजः ॥६॥
स्व-स्व-कार्यार्थिनस्तत्र भ्रान्ता भ्रम्यां यथा वयम् । तयोपदिष्टाः कृपया भवामःसृष्टिकारकाः ॥७॥
तस्याः प्रसादाद्विप्रेन्द्र त्रयो ब्रह्माण्डनायकाः । अन्ये सुरगणाः सर्वे तस्याः पादप्रसेवकाः ॥८॥

पठनाद्धारणात्सृष्टेः कर्ताऽहं पालको हरिः । तत्त्वाक्षरोपदेशेन संहर्ता शंकरः स्वयम् ॥९॥
ऋषिच्छन्दादिकं ध्यानं मूलवत्परिकीर्तितम् । नियोगमात्रसिद्धौ च पुरुषार्थचतुष्टयम् ॥१०॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीतारातकारादिसहस्त्रनाम स्तोत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, तारा देवता, सर्वेष्ट सिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। तारादेवतायै नमो हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादि न्यासः।

हृदयादि षडंगन्यासः- ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः- ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ ध्यानम् ॥

प्रत्यालींढपदार्पितांघ्रि शवहृद्-घोराट्टहासा परा खड्गेन्दीवर कर्त्रिखर्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा ।
खर्वा नीलविशालपिङ्गल जटाजूटैकनागैर्युता जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ॥

इति ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत् -

तारा तारादिपंचार्णा तारान्यावेदवीर्यजा । तारा तारहितावर्णा ताराद्याताररूपिणी ॥११॥
तारारात्रि समुत्पन्ना तारारात्रिवरोद्यता । ताराराात्रिजपासक्ता ताराराात्रिस्वरूपिणी ॥१२॥
ताराराज्ञीस्वसंतुष्टा ताराराज्ञीवरप्रदा । ताराराज्ञीस्वरूपा च ताराराज्ञीप्रसिद्धिदा ॥१३॥
ताराहृत्पंकजागारा ताराहृत्पंकजापरा । ताराहृत्पंकजाधारा ताराहृत्पंकजा तथा ॥१४॥
तारेश्वरी च ताराभा तारागणस्वरूपिणी । तारागणसमाकीर्णा तारागणनिषेविता ॥१५॥
तारा तारान्विता तारारत्नान्वितविभूषणा । तारागणरणासन्ना ताराकृत्यप्रपूजिता ॥१६॥
तारागणकृताहारा तारागणकृताश्रया । तारागणकृतागारा तारागणनतत्परा ॥१७॥
तारागुणगुणाकीर्णा तारागुणगणप्रदा । तारागुणगणासक्ता तारागुणगणालया ॥१८॥
तारेश्वरी तारापूज्या ताराजप्या तु तारणा । तारमुख्या तु ताराख्या तारदक्षा तु तारिणी ॥१९॥
तारागम्या तु तारस्था तारामृत तरङ्गिणी । तारभव्या तु तारार्णा तारहव्या तु तारिणी ॥२०॥
तारका तारकांतस्था तारकाराशिभूषणा । तारकाहारशोभाढ्या तारकावेष्टिताङ्गणा ॥२१॥
तारकाहंसकाकीर्णा तारकाकृतभूषणा । तारकाङ्गदशोभाङ्गी तारकाश्रितकङ्कणा ॥२२॥
तारकाञ्चितकाञ्ची च तारकान्वितभक्षणा । तारकाचित्रवसना तारकासनमण्डला ॥२३॥
तारकाकीर्णमुकुटा तारकाश्रितकुण्डला । तारकान्वित ताटङ्कयुग्मगण्डस्थलोज्ज्वला ॥२४॥
तारकाश्रितपादाब्जा तारकावरदायिका । तारकादत्तहृदया तारकाञ्चितसायका ॥२५॥
तारकान्यासकुशला तारकान्यासविग्रहा । तारकान्याससन्तुष्टा तारकान्याससिद्धिदा ॥२६॥

तारकान्यासनिलया तारकान्यासपूजिता । तारकान्याससंहृष्टा तारकान्याससिद्धिदा ॥२७॥
तारकान्याससंमग्ना तारकान्यासवासिनी । तारकान्याससम्पूर्णा मंत्रसिद्धिविधायिनी ॥२८॥
तारकोपासकप्राणा तारकोपासकप्रिया । तारकोपासकासाध्या तारकोपासकेष्टदा ॥२९॥
तारकोपासकासक्ता तारकोपासकार्थिनी । तारकोपासकाराध्या तारकोपासकाश्रया ॥३०॥
तारकासुरसन्तुष्टा तारकासुरपूजिता । तारकासुरनिर्माणकर्त्री तारकवन्दिता ॥३१॥
तारकासुरसम्मान्या तारकासुरमानदा । तारकासुरसंसिद्धा तारकासुरदेवता ॥३२॥
तारकासुरदेहस्था तारकासुरस्वर्गदा । तारकासुरसंसृष्टा तारकासुरगर्वदा ॥३३॥
तारकासुरसंहंत्री तारकासुरमर्दिनी । तारकासुरसंग्रामनर्तकी तारकापरा ॥३४॥
तारकासुरसंग्रामतारिणी तारकारिभृत् । तारकासुरसंग्राम - कबंधवृन्दवन्दिता ॥३५॥
तारकारिप्रसूस्तारकारिमाता तुकारिका । तारकारिमनोहारि वस्त्रभूषानुशासिका ॥३६॥
तारकारिविधात्री च तारकारिनिषेविता । तारकारिवचस्तुष्टा तारकारिसुशिक्षिता ॥३७॥
तारकारिसुसन्तुष्टा तारकारिविभूषिता । तारकारिकृतोत्सङ्गा तारकारिप्रहर्षदा ॥३८॥
तमः सम्पूर्णसर्वाङ्गी तमोलिप्तकलेवरा । तमोव्याप्तस्थलासङ्गा तमः - पटलसन्निभा ॥३९॥
तमोहन्त्री तमःकर्त्री तमः संचारकारिणी। तमोगात्री तमोदात्री तमः पात्री तमोऽपहा ॥४०॥
तमोराशिस्तमोनाशा तमोराशि विनाशिनी । तमोराशिकृतध्वंसी तमोराशिभयंकरी ॥४१॥
तमोगुणप्रसन्नास्या तमोगुणसुसिद्धिदा । तमोगुणोक्तमार्गस्था तमोगुणविराजिता ॥४२॥
तमोगुणस्तुतिपरा तमोगुणविवर्द्धिनी । तमोगुणाश्रितपरा तमोगुणविनाशिनी ॥४३॥
तमोगुणक्षयकरी तमोगुणकलेवरा । तमोगुणध्वंसतुष्टा तमः पारे प्रतिष्ठिता ॥४४॥
तमोभवभवप्रीता तमोभवभवप्रिया । तमोभवभवश्रद्धा तमोभवभवाश्रया ॥४५॥
तमोभवभवप्राणा तमोभवभवार्चिता । तमोभवभवप्रीत्यालीढ - कुम्भस्थलस्थिता ॥४६॥
तपस्विवृन्दसन्तुष्टा तपस्विवृन्दपुष्टिदा । तपस्विवृन्दसंस्तुत्या तपस्विवृन्दवंदिता ॥४७॥
तपस्विवृन्दसम्पन्ना तपस्विवृन्दहर्षदा । तपस्विवृन्दसम्पूज्या तपस्विवृन्दभूषिता ॥४८॥
तपस्विचित्ततल्पस्था तपस्विचित्तमध्यगा । तपस्विचित्तचित्तार्हा तपस्विचित्तहारिणी ॥४९॥
तपस्विकल्पवल्ल्याभा तपस्विकल्पपादपा । तपस्विकामधेनुश्च तपस्विकामपूर्तिदा ॥५०॥
तपस्वित्राणनिरता तपस्विगृहसंस्थिता । तपस्विगृहराज्य श्रीस्तपस्विराज्यदायिका ॥५१॥
तपस्विमानसाराध्या तपस्विमानदायिका । तपस्वितापसंहर्त्री तपस्वितापशान्तिकृत् ॥५२॥
तपस्विसिद्धिविद्या च तपस्विमंत्रसिद्धिकृत् । तपस्विमंत्रतन्त्रेशी तपस्विमंत्ररूपिणी ॥५३॥
तपस्विमंत्रनिपुणा तपस्विकर्मकारिणी । तपस्विकर्मसम्भूता तपस्विकर्मसाक्षिणी ॥५४॥
तपस्सेव्या तपोभव्या तपोभाव्या तपस्विनी । तपोवश्या तपोगम्या तपोगेहनिवासिनी ॥५५॥

तपोधन्या तपोमान्या तपःकन्या तपोवृता । तपस्तथ्या तपोगोप्या तपोजप्या तपोनृता ॥५६॥
तपःसाध्या तपोराध्या तपोवन्द्या तपोमयी । तपस्संध्या तपोवन्ध्या तपस्सान्निध्यकारिणी ॥५७॥
तपोध्येया तपोज्ञेया तपस्तप्ता तपोबला । तपोलेया तपोदेया तपस्तत्त्वफलप्रदा ॥५८॥
तपोविघ्नवरघ्नी च तपोविघ्नविनाशिनी । तपोविघ्नचयध्वंशी तपोविघ्नभयंकरी ॥५९॥
तपोभूमिवरप्राणा तपोभूमिपतिस्तुता । तपोभूमिपतिध्येया तपोभूमिपतीष्टदा ॥६०॥
तपोवनकुरङ्गस्था तपोवनविनाशिनी । तपोवनगतिप्रीता तपोवनविहारिणी ॥६१॥
तपोवनफलासक्ता तपोवनफलप्रदा । तपोवनसुसाध्या च तपोवनसुसिद्धिदा ॥६२॥
तपोवनसुसेव्या च तपोवननिवासिनी । तपोधनसुसंसेव्या तपोधनसुसाधिता ॥६३॥
तपोधनसुसंलीना तपोधन मनोमयी । तपोधननमस्कारा तपोधनविमुक्तिदा ॥६४॥
तपोधनधनासाध्या तपोधनधनात्मिका । तपोधनधनाराध्या तपोधनफलप्रदा ॥६५॥
तपोधनधनाढ्या च तपोधनधनेश्वरी । तपोधनधनप्रीता तपोधनधनालया ॥६६॥
तपोधनजनाकीर्णा तपोधनजनाश्रया । तपोधनजनाराध्या तपोधनजनप्रसूः ॥६७॥
तपोधनजनप्राणा तपोधनजनेष्टदा । तपोधनजनासाध्या तपोधनजनेश्वरी ॥६८॥
तरुणासृक्प्रपानार्ता तरुणासृक्प्रतर्पिता । तरुणासृक्समुद्रस्था तरुणासृक्प्रहर्षदा ॥६९॥
तरुणासृक्सुसन्तुष्टा तरुणासृग्विलेपिता । तरुणासृङ्नदीप्राणा तरुणासृग्विभूषणा ॥७०॥
तरुणैणबलिप्रीता तरुणैणबलिप्रिया । तरुणैणबलिप्राणा तरुणैणबलीष्टदा ॥७१॥
तरुणाजबलिप्रीता तरुणाजबलिप्रिया । तरुणाजबलिघ्राणा तरुणाजबलिप्रभुक् ॥७२॥
तरुणादित्य सङ्काशा तरुणादित्यविग्रहा । तरुणादित्यरुचिरा तरुणादित्यनिर्मला ॥७३॥
तरुणादित्यनिलया तरुणादित्यमण्डला । तरुणादित्यललिता तरुणादित्यकुण्डला ॥७४॥
तरुणार्कसमज्योत्स्ना तरुणार्कसमप्रभा । तरुणार्कप्रतीकाशा तरुणार्कप्रवर्द्धिता ॥७५॥
तरुणारुणनेत्रा च तरुणारुण लोचना । तरुणारुणगात्रा च तरुणारुणभूषणा ॥७६॥
तरुणीदत्तसंकेता तरुणीदत्तभूषणा । तरुणीगणसन्तुष्टा तरुणी तरुणीमणिः ॥७७॥
तरुणीमणिसंसेव्या तरुणीमणिवंदिता । तरुणीमणिसंतुष्टा तरुणीमणिपूजिता ॥७८॥
तरुणीवृन्दसंवन्द्या तरुणीवृन्दवन्दिता । तरुणीवृन्दसंस्तुत्या तरुणीवृन्दमानदा ॥७९॥
तरुणीवृन्दमध्यस्था तरुणीवृन्दवेष्टिता । तरुणीवृन्दसम्प्रीता तरुणीवृन्दभूषिता ॥८०॥
तरुणीजयसंसिद्धा तरुणीजयमोक्षदा । तरुणीपूजकासक्ता तरुणीपूजकार्थिनी ॥८१॥
तरुणीपूजकश्रीदा तरुणीपूजकार्तिहा । तरुणीपूजकप्राणा तरुणीनिन्दकार्त्तिदा ॥८२॥
तरुणीकोटिनिलया तरुणीकोटिविग्रहा । तरुणीकोटिमध्यस्था तरुणीकोटिवेष्टिता ॥८३॥
तरुणीकोटिदुःसाध्या तरुणीकोटिविग्रहा । तरुणीकोटिरुचिरा तरुणी तरुणीश्वरी ॥८४॥

तरुणीमणिहाराढ्या तरुणीमणिकुण्डला । तरुणीमणिसन्हृष्टा तरुणीमणिमण्डिता ॥८५॥
तरुणीसरणिप्रीता तरुणीसरणीरता । तरुणीसरणिस्थाना तरुणीसरणीमता ॥८६॥
तरणीमण्डलश्रीदा तरणीमण्डलेश्वरी । तरणीमण्डलश्रद्धा तरणीमण्डलस्थिता ॥८७॥
तरणीमण्डलार्घ्याढ्या तरणीमण्डलार्चिता । तरणीमण्डलध्येया तरणीभवसागरा ॥८८॥
तरणीकरणासक्ता तरणीतक्षकार्चिता । तरणीतक्षकश्रीदा तरणीतक्षकार्थिनी ॥८९॥
तरीतरणशीला च तरीतरणतारिणी । तरीतरणसम्वेद्या तरीतरणकारिणी ॥९०॥
तरुरूपा तरूपस्था तरुस्तरुलतामयी । तरुयूपा तरुस्था च तरुमध्यनिवासिनी ॥९१॥
तप्तकाञ्चन गेहस्था तप्तकाञ्चन भूमिका । तप्तकाञ्चनप्राकारा तप्तकाञ्चनपादुका ॥९२॥
तप्तकाञ्चनदीप्तांगी तप्तकाञ्चनसन्निभा । तप्तकाञ्चन गौराङ्गी तप्तकाञ्चनमञ्चगा ॥९३॥
तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्या तप्तकाञ्चनरूपिणी । तप्तकाञ्चन मध्यस्था तप्तकाञ्चन कारिणी ॥९४॥
तप्तकाञ्चन मासार्च्या तप्तकाञ्चन पात्रभुक् । तप्तकाञ्चन शैलस्था तप्तकाञ्चनकुण्डला ॥९५॥
तप्तकाञ्चन क्षेत्राढ्या तप्तकाञ्चन दण्डधृक् । तप्तकाञ्चन भूषाढ्या तप्तकाञ्चन दानदा ॥९६॥
तप्तकाञ्चन देशेशी तप्तकाञ्चन चापधृक् । तप्तकाञ्चनतूणाढ्या तप्तकाञ्चन बाणभृत् ॥९७॥
तलातलविधात्री च तलातल विधायिनी । तलातलस्वरूपेशी तलातल विहारिणी ॥९८॥
तलातल जनासाध्या तलातल जनेश्वरी । तलातल जनाराध्या तलातल जनार्थदा ॥९९॥
तलातलजयाभाक्षी तलातलजचञ्चला । तलातलजरत्नाढ्या तलातलजदेवता ॥१००॥
तटिनीस्थानरसिका तटिनी तटवासिनी । तटिनी तटिनीतीरगामिनी तटिनीप्रिया ॥१०१॥
तटिनीप्लवनप्रीता तटिनीप्लवनोद्यता । तटिनीप्लवनश्लाघ्या तटिनीप्लवनार्थदा ॥१०२॥
तटलास्या तटस्थाना तटेशी तटवासिनी । तटपूज्या तटाराध्या तटरोममुखार्थिनी ॥१०३॥
तटजा तटरूपा च तटस्था तटचञ्चला । तटसन्निधिगेहस्था सहितातटशायिनी ॥१०४॥
तरङ्गिणी तरङ्गाभा तरङ्गायतलोचना । तरङ्गसमदुर्द्धर्षा तरङ्गसमचञ्चला ॥१०५॥
तरङ्गसमदीर्घाङ्गी तरङ्गसमवर्द्धिता । तरङ्गसम-सम्वृद्धिस्तरङ्गसमनिर्मला ॥१०६॥
तडागमध्यनिलया तडागमध्यसम्भवा । तडागरचनश्लाघ्या तडागरचनोद्यता ॥१०७॥
तडागकुमुदामोदी तडागेशी तडागिनी । तडागनीरसंस्नाता तडागनीरनिर्मला ॥१०८॥
तडागकमलागारा तडागकमलालया । तडागकमलान्तस्था तडागकमलोद्यता ॥१०९॥
तडागकमलाङ्गी च तडागकमलानना । तडागकमलप्राणा तडागकमलेक्षणा ॥११०॥
तडागरक्तपद्मस्था तडागश्वेतपद्मगा । तडागनीलपद्माभा तडागनीलपद्मभृत् ॥१११॥
तनुस्तनुगता तन्वी तन्वङ्गी तनुधारिणी । तनुरूपा तनुगता तनुधृक्तनुरूपिणी ॥११२॥
तनुस्था तनुमध्याङ्गी तनुकृत्तनुमंगला । तनुसेव्या तु तनुजा तनुजा तनुसम्भवा ॥११३॥

तनुभृत्तनु सम्भूता तनुदा तनुकारिणी । तनुभृत्तनु - संहन्त्री तनुसंचारकारिणी ॥११४॥
तथ्यवाक् तथ्यवचना तनुकृत्तथ्यवादिनी । तथ्यभृत्तथ्यचरिता तथ्यधर्मानुवर्तिनी ॥११५॥
तथ्यभुक्तथ्यगमना तथ्यभक्तिवरप्रदा । तथ्यनीचेश्वरी तथ्यचित्ताचाराशुसिद्धिदा ॥११६॥
तर्क्यातर्क्यस्वभावा च तर्कदा या तु तर्ककृत् । तर्काध्यापन मध्यस्था तर्काध्यापनकारिणी ॥११७॥
तर्काध्यापन सन्तुष्टा तर्काध्यापन रूपिणी । तर्काध्यापनसंशीला तर्कार्थप्रतिपादिता ॥११८॥
तर्काध्यापनसंतृप्ता तर्कार्थप्रतिपादिका । तर्कवादाश्रितपदा तर्कवादविवर्द्धिनी ॥११९॥
तर्कवादैकनिपुणा तर्कवादप्रचारिणी । तमालदलश्यामाङ्गी तमालदलमालिनी ॥१२०॥
तमालवनसंकेता तमालपुष्पपूजिता । तगरीतंगराराद्धया तगरार्चितपादुका ॥१२१॥
तगरस्त्रक्सुसन्तुष्टा तगरस्त्रग्विराजिता । तगराहुतिसन्तुष्टा तगराहतिकीर्तिदा ॥१२२॥
तगराहुतिसंसिद्धा तगराहुतिमानदा । तडित्तडिल्लताकारा तडिच्चंचललोचना ॥१२३॥
तडिल्लता तडित्तन्वी तडिद्दीप्ता तडित्प्रभा । तद्रूपा तत्स्वरूपेशी तन्मयी तत्त्वरूपिणी ॥१२४॥
तत्स्थानदाननिरता तत्कर्मफलदायिनी । तत्त्वकृत्तत्त्वदा तत्त्वातत्त्ववित्तत्त्व तर्पिता ॥१२५॥
तत्त्वार्च्या तत्त्वपूज्या च तत्त्वार्घ्या तत्त्वरूपिणी । तत्त्वज्ञानप्रदानेशी तत्त्वज्ञानसुमोक्षदा ॥१२६॥
त्वरितात्वीरतप्रीता त्वरितार्त्तिविनाशिनी । त्वरितासवसन्तुष्टा त्वरितासवतर्पिता ॥१२७॥
त्वग्वस्त्रा त्वक्परीधाना तरलातरलेक्षणा । तरक्षुचर्मवसना तरक्षुत्वग्निभूषणा ॥१२८॥
तरक्षुस्तरक्षुप्राणा तरक्षुपृष्ठगामिनी । तरक्षुपृष्ठसंस्थाना तरक्षुपृष्ठवासिनी ॥१२९॥
तर्पितोदैस्तर्पणाशा तर्पणासक्तमानसा । तर्पणानन्दहृदया तर्पणाधिपतिस्तति: ॥१३०॥
त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्रयीपूज्या त्रयीकथा । त्रयीभव्या त्रयीभाव्या त्रयीहव्या त्रयीयुता ॥१३१॥
त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेशानी त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा । त्र्यक्षरेशी त्र्यक्षरीस्था त्र्यक्षरीपुरुषास्पदा ॥१३२॥
तपता तपनेष्टा च तपस्तपनकन्यका । तपनांशु समासह्या तपनकोटिकांतिकृत् ॥१३३॥
तपनीया तल्पगता तल्पातल्पविधायिनी । तल्पकृत्तल्पगा तल्पदात्री तल्पतलाश्रया ॥१३४॥
तपनीय तलारात्री तपनीयांशुप्रार्थिनी । तपनीयप्रदा तप्ता तपनीयाद्रिसंस्थिता ॥१३५॥
तल्पेशी तल्पदा तल्पसंस्थिता तल्पवल्लभा । तल्पप्रिया तल्परता तल्पनिर्माणकारिणी ॥१३६॥
तरसापूजनासक्ता तरसावरदायिनी । तरसासिद्धिसंधात्री तरसामोक्षदायिनी ॥१३७॥
तापसी तापसाराध्या तापसार्तिविनाशिनी । तापसार्ता तापसश्रीस्तापसप्रियवादिनी ॥१३८॥
तापसानन्दहृदया तापसानन्ददायिनी । तापसाश्रितपदाब्जा तापसासक्तमानसा ॥१३९॥
तामसी तामसी पूज्या तामसीप्रणयोत्सुका । तामसी तामसीप्रीता तामसीशीघ्रसिद्धिदा ॥१४०॥
तालेशी तालभुक्तालदात्री तालोपमस्तनी । तालवृक्षस्थिता तालवृक्षजा तालरूपिणी ॥१४१॥
ताक्ष्या ताक्ष्यसमारूढा ताक्ष्येशी ताक्ष्यपूजिता । ताक्ष्येश्वरी ताक्ष्यमाता ताक्ष्येशीवरदायिनी ॥१४२॥

तापी तु तापिनी तापसंहंत्री तापनाशिनी । तापदात्री तापकर्त्री तापविध्वंसकारिणी ॥१४३॥
त्रासकर्त्री त्रासदात्री त्रासहर्त्री च त्रासहा । त्रासिता त्रासरहिता त्रासनिर्मूलकारिणी ॥१४४॥
त्राणकृत् त्राणसंशीला तानेशी तानदायिनी । तानगानरता तानकारिणी तानगायिनी ॥१४५॥
तारुण्यामृतसम्पूर्णा तारुण्यामृतवारिधिः । तारुण्यामृतसन्तुष्टा तारुण्यामृततर्पिता ॥१४६॥
तारुण्यामृतपूर्णाङ्गी तारुण्यामृतविग्रहा । तारुण्यगुणसम्पन्ना तारुण्योक्ति विशारदा ॥१४७॥
ताम्बूली ताम्बुलेशानी ताम्बूलचर्वणोद्यता । ताम्बूल पूरितास्या च ताम्बूलारुणिताधरा ॥१४८॥
ताटङ्करत्नविख्याति स्ताटङ्करत्नभूषिणी । ताटङ्करत्नमध्यस्था ताटङ्कद्वयभूषिता ॥१४९॥
तिथीशा तिथि - सम्पूज्या तिथिस्था तिथिरूपिणी । तिथित्रितयवास्तव्या तिथिशवरदायिनी ॥१५०॥
तिलोत्तमादिकाराध्या तिलोत्तमादिकप्रभा । तिलोत्तमा तिलप्रेक्ष्या तिलाराध्या तिलार्चिता ॥१५१॥
तिलभुक् तिलसन्दात्री तिलतुष्टा तिलालया । तिलदा तिलसंकाशा तिलतैलविधायिनी ॥१५२॥
तिलतैलोपलिप्तांगी तिलतैलसुगन्धिनी । तिलाज्यहोमसन्तुष्टा तिलाज्यहोमसिद्धिदा ॥१५३॥
तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता तिलपुष्पांजलिप्रिया । तिलपुष्पांजलिश्रेष्ठा तिलपुष्पाघनाशिनी ॥१५४॥
तिलकाश्रित - सिन्दूरा तिलकाङ्कित - चन्दना । तिलकाहृतकस्तूरी तिलकामोद - मोहिनी ॥१५५॥
त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिगुणान्वित - विग्रहा । त्रिगुणाकार विख्याता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मिका ॥१५६॥
त्रिशिरा स्त्रिपुरेशानी त्रिपुरा त्रिपुरेश्वरी । त्रिपुरेशी त्रिलोकस्था त्रिपुरी त्रिपुराम्बिका ॥१५७॥
त्रिपुरारि - समाराध्या त्रिपुरारिवरप्रदा । त्रिपुरारि - शिरोभूषा त्रिपुरारिसुखप्रदा ॥१५८॥
त्रिपुरारीष्ट सन्दात्री त्रिपुरारीष्टदेवता । त्रिपुरारिकृतार्द्धाङ्गी त्रिपुरारि - विलासिनी ॥१५९॥
त्रिपुरासुरसंहर्त्री त्रिपुरासुर - मर्द्दिनी । त्रिपुरासुर - संसेव्या त्रिपुरासुर - वर्य्यपा ॥१६०॥
त्रिकूटा त्रिकूटाराध्या त्रिकूटार्चित विग्रहा । त्रिकूटाचल - मध्यस्था त्रिकूटाचल वासिनी ॥१६१॥
त्रिकूटाचल सञ्जाता त्रिकूटाचल निर्गता । त्रिकूटा त्रिजटेशानी त्रिजटावरदायिनी ॥१६२॥
त्रिनेत्रेशी त्रिनेत्रा च त्रिनेत्र वरवर्णिनी । त्रिवली त्रिवलीयुक्ता त्रिशूलवरधारिणी ॥१६३॥
त्रिशूलेशी त्रिशूलीशी त्रिशूलभृत्त्रिशूलिनी । त्रिमनुस्त्रिमनूपास्या त्रिमनूपासकेश्वरी ॥१६४॥
त्रिमनुजपसन्तुष्टा त्रिमनोस्तूर्णसिद्धिदा । त्रिमनुपूजन - प्रीता त्रिमनुध्यानमोक्षदा ॥१६५॥
त्रिविधा त्रिविधाभक्तिस्त्रिमता त्रिमतेश्वरी । त्रिभावस्था त्रिभावेशी त्रिभावपरिपूरिता ॥१६६॥
त्रितत्त्वात्मा त्रितत्त्वेशी त्रितत्त्वज्ञा त्रितत्त्वधृक् । त्रितत्त्वा च मनप्रीता त्रितत्त्वाचमनेष्टदा ॥१६७॥
त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणचक्रवासिनी । त्रिकोणचक्रमध्यस्था त्रिकोणबिन्दुरूपिणी ॥१६८॥
त्रिकोणयंत्रसंस्थाना त्रिकोणयंत्ररूपिणी । त्रिकोणयंत्र सम्पूज्या त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा ॥१६९॥
त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णेशी त्रिवर्णोपास्यरूपिणी । त्रिवर्णस्था त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णावरदायिनी ॥१७०॥
त्रिवर्णाद्या त्रिवर्णार्च्या त्रिवर्गफलदायिनी । त्रिवर्गाढ्या त्रिवर्गेशी त्रिवर्गाद्यफलप्रदा ॥१७१॥

त्रिसंध्यार्च्या त्रिसन्ध्येशी त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा । त्रिसन्ध्यार्चन सन्तुष्टा त्रिसंध्याजपमोक्षदा ॥१७२॥

त्रिपदाराधितपदा त्रिपदा त्रिपदेश्वरी । त्रिपदाप्रदिपाद्येशी त्रिपदाप्रतिपादिका ॥१७३॥

त्रिशक्तिश्च त्रिशक्तीशी त्रिशक्तेष्टफलप्रदा । त्रिशक्तेष्टा त्रिशक्तीष्टा त्रिशक्ति परिवेष्टिता ॥१७४॥

त्रिवेणी व त्रिवेणीस्त्री त्रिवेणीमाधवार्चिता । त्रिवेणीजल सन्तुष्टा त्रिवेणी स्नान पुण्यदा ॥१७५॥

त्रिवेणीजल संस्नाता त्रिवेणी जलरूपिणी । त्रिवेणीजलपूताङ्गी त्रिवेणीजल पूजिता ॥१७६॥

त्रिनाडीस्था त्रिनाडीशी त्रिनाडीमध्यगामिनी । त्रिनाडीसन्ध्य संछेद्यो त्रिनाडी च त्रिकोटिनी ॥१७७॥

त्रिपञ्चाशत्त्रिरेखा च त्रिशक्तिपथ गामिनी । त्रिपथस्था त्रिलोकेशी त्रिकोटिकुलमोक्षदा ॥१७८॥

त्रिरामेशी त्रिरामार्च्या त्रिरामवरदायिनी । त्रिदशाश्रित पादाब्जा त्रिदशालप - चञ्चला ॥१७९॥

त्रिदशा त्रिदशप्रार्थ्या त्रिदशाशुवरप्रदा । त्रिदशैश्वर्य - सम्पन्ना त्रिदशेश्वर - सेविता ॥१८०॥

त्रियामार्च्या त्रियामेशी त्रियामानन्त सिद्धिदा । त्रियामेशाधिक ज्योत्स्ना त्रियामेशाधिकानना ॥१८१॥

त्रियामानाथ वत्सौम्या त्रियामानाथ भूषणा । त्रियामानाथ लावण्या रत्नकोटियुतानना ॥१८२॥

त्रिकालस्था त्रिकालज्ञा त्रिकालज्ञत्वकारिणी । त्रिकालेशी त्रिकालार्च्या त्रिकालज्ञत्व दायिनी ॥१८३॥

तीरभुक्तीरगा तीरसरिता तारवासिनी । तीरभुग्देश - संजाता तीरभुग्देशेसंस्थिता ॥१८४॥

तिग्मा तिग्मांशुसंकाशा तिग्मांशुक्रोड संस्थिता । तिग्मांशुकोटि दीप्ताङ्गी तिग्मांशुकोटि विग्रहा ॥१८५॥

तीक्ष्णा तीक्ष्णतरा तीक्ष्णमहिषासुरमर्दिनी । तीक्ष्णकर्त्री लसत्पाणिस्तीक्ष्णासि वरधारिणी ॥१८६॥

तीव्रा तीव्रगतिस्तीव्रासुर सङ्घविनाशिनी । तीव्राष्टनागाभरणा तीव्रमुण्डविभूषणा ॥१८७॥

तीर्थात्मिका तीर्थमयी तीर्थेशी तीर्थपूजिता । तीर्थराजेश्वरी तीर्थफलदा तीर्थदानदा ॥१८८॥

तुमुली तुमुलप्राज्ञी तुमुलासुरघातिनी । तुमुलक्षतजप्रीता तुमुलांगणनर्तकी ॥१८९॥

तुरगी तुरगारूढा तुरंगपृष्ठगामिनी । तुरङ्गगमनाह्लादा तुरंगवेगगामिनी ॥१९०॥

तुरीया तुलना तुल्या तुल्यवृत्तिस्तु तुल्यकृत् । तुलनेशी तुलाराज्ञी तुलाराज्ञीत्व सूक्ष्मवित् ॥१९१॥

तुम्बिका तुम्बिकापात्रभोजना तुम्बिकार्थिनी । तुलसी तुलसीवर्य्या तुलजा तुलजेश्वरी ॥१९२॥

तुषाग्निव्रतसन्तुष्टा तुषाग्निस्तुषराशिकृत् । तुषारकर - शीतांगी तुषारकरपूर्तिकृत् ॥१९३॥

तुषाराद्रिस्तुषाराद्रिसुता तुहिनदीधितिः । तुहिनाचलकन्या च तुहिनाचलवासिनी ॥१९४॥

तुर्यवर्गेश्वरी तुर्यवर्गदा तुर्य्यवेददा । तुर्यवर्यात्मिका तुर्यतुर्यश्चेरस्वरूपिणी ॥१९५॥

तुष्टिदा तुष्टिकृत्तुष्टिस्तूणीरद्वयपृष्ठधृक् । तुम्बुराज्ञान - सन्तुष्टा तुष्टसंसिद्धिदायिनी ॥१९६॥

तूर्णराज्यप्रदा तूर्णगद्गदा तूर्णपद्यदा । तूर्णपाण्डित्य - सन्दात्री तूर्णपूर्णबलप्रदा ॥१९७॥

तृतीया च तृतीयेशी तृतीयातिथि पूजिता । तृतीया चन्द्रचूडेशी तृतीया - चन्द्रभूषणा ॥१९८॥

तृप्तिस्तृप्तिकरी तृप्ता तृष्णा तृष्णाविवर्द्धिनी । तृष्णापूर्णकरी तृष्णा नाशिनी तृषिता तृषा ॥१९९॥

त्रेतासंसाधिता त्रेता त्रेतायुग - फलप्रदा । त्रैलोक्यपूज्या त्रैलोक्यदात्री त्रैलोक्यसिद्धिदा ॥२००॥

त्रैलोक्येश्वरतादात्री त्रैलोक्य परमेश्वरी । त्रैलोक्य मोहनेशानी त्रैलोक्यराज्य - दायिनी ॥२०१॥
तैत्रिशाखेश्वरी तैत्रिशाखा तैत्रविवेकदा । तोरणान्वित - गेहस्था तोरणासक्त - मानसा ॥२०२॥
तोलकास्वर्ण संदात्री तोलकास्वर्ण - कंकणा । तोमरायुधरूपा च तोमरायुधधारिणी ॥२०३॥
तौर्य्यत्रिकेश्वरी तौर्यत्रिकी तौर्य्यत्रिकोत्सुकी । तन्त्रकृत्तंत्रवत्सूक्ष्मा तन्त्रमन्त्र स्वरूपिणी ॥२०४॥
तन्त्रकृत्तन्त्र सम्पूज्या तन्त्रेशी तन्त्रसम्मता । तन्त्रज्ञा तन्त्रवित्तन्त्र साध्या तन्त्रस्वरूपिणी ॥२०५॥
तन्त्रस्था तन्त्रजा तन्त्री तन्त्रभृत्तंत्रमन्त्रदा । तन्त्राद्या तन्त्रगा तन्त्रा तन्त्रार्च्या तन्त्रसिद्धिदा ॥२०६॥
इति ते कथितं दिव्यं क्रतुकोटिफलप्रदम् । नाम्नां सहस्त्रं तारायास्तकाराद्यं सुगोपितम् ॥२०७॥
दानं यज्ञस्तपस्तीर्थं व्रतं चानशनादिकम् । एकैक नाम सम्पुण्यं सन्ध्यासुगदितं मया ॥२०८॥
गुरौ देवे तथा मन्त्रे यस्य स्यान्निश्चला मतिः । तस्यैव स्तोत्रपाठेऽस्मिन् सम्भवेदधिकारिता ॥२०९॥
महाचीन क्रमाभिन्नषोढान्यस्त कलेवरः । क्रमदीक्षान्वितो मंत्री पठेदेतन्न चान्यथा ॥२१०॥
गंधपुष्पादिभिर्द्रव्यैर्मकारैः पंचभिर्द्विजः । सम्पूज्य तारां विधिवत्पठेदेतदनन्यधीः ॥२११॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां संक्रान्तौ रविवासरे । शनिभौमदिने रात्रौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥२१२॥
तारारात्रौ कालरात्रौ मोहरात्रौ विशेषतः । पठनान्मंत्रसिद्धिः स्यात्सर्वज्ञत्वं प्रजायते ॥२१३॥
श्मशाने प्रान्तरै रम्ये शून्यागारे विशेषतः । देवागारे गिरौ वापि स्तवपारायणं चरेत् ॥२१४॥
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं स्त्रीगमनादिकम् । गुरुतल्पे तथा चान्यत्पातकंनश्यति ध्रुवम् ॥२१५॥
लतामध्यगतो मंत्री श्रद्धया चार्चयेद्यदि । आकर्षयेत्तदा रम्भां मेनामपि तथोर्वशीम् ॥२१६॥
संग्रामसमये वीरस्तारा साम्राज्य कीर्त्तनात् । चतुरंगचयं जित्वा सर्वसाम्राज्य भाग्भवेत् ॥२१७॥
निशार्द्धे पूजनान्ते च प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् । एकैकं करवीराद्यै मंदारैर्नील वारिजैः ॥२१८॥
गद्यपद्यमयी वाणी भूभोज्या च प्रवर्तते । पाण्डित्यं सर्वशास्त्रेषु वादी त्रस्यति दर्शनात् ॥२१९॥
वह्नि जायान्तकैरेतैस्ताराद्यैः प्रतिनामभिः । राजन्यं सर्वराजेषु परकाय प्रवेशनम् ॥२२०॥
अन्तर्धानं खेचरत्वं बहुकायप्रकाशनम् । गुटिका पादुका पद्मावती मधुमती तथा ॥२२१॥
रसं रसायनाः सर्वाः सिद्धयः समुपस्थिताः । कर्पूरागरु कस्तूरीचन्दनैः संयुतैर्जलैः ॥२२२॥
मूलसम्पुटिते नैव प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् । यक्षराक्षस गन्धर्व विद्याधर महोरगाः ॥२२३॥
भूतप्रेत पिशाचाद्या डाकिनी शाकिनीगणाः । दुष्टभैरववेतालाः कूष्माण्डाः किन्नरीगणाः ॥२२४॥
भयभीताः पलायन्ते तेजसा साधकस्य च । मंत्रज्ञाने समुत्पन्ने प्रतिनाम्ना विचारयेत् ॥२२५॥
मंत्रसम्पुटिते नैव तस्य शांतिर्भवेद् ध्रुवम् । ललना वशमायान्ति दासतां यान्ति पार्थिवाः ॥२२६॥
अग्नयः शीततां यान्ति जापकस्य च भाषणात् । एकावर्तन मात्रेण राजभीति निवारणम् ॥२२७॥
वेलावर्तन मात्रेण पशुवृद्धिः प्रजायते । दशावृत्त्या धनप्राप्तिर्विंशत्या राज्यमाप्नुयात् ॥२२८॥
शतावृत्त्या गृहे तस्य चंचला निश्चला भवेत् । गङ्गाप्रवाहवद्वाणी प्रलापादपि जायते ॥२२९॥

पुत्र पौत्रान्वितो मंत्री चिरञ्जीवी तु देववत् । शतद्वया वर्त्तनेन देववत्पूज्यते जनैः ॥२३०॥
शतपंचकमावर्त्य स भवेद् भैरवोपमः । सहस्त्रावर्तने नैव मंत्रस्तस्य स्वसिद्धिदः ॥२३१॥
तस्मिन्प्रवर्त्तते सर्वसिद्धिः सर्वार्थ साधिनी । पादुकाञ्जन वेताल पाताल गमनादिकम् ॥२३२॥
विविधा यक्षिणीसिद्धिर्वाक्सिद्धि स्तस्य जायते । शोषणं सागराणां च धरायां भ्रमणं तथा ॥२३३॥
नवीनसृष्टि निर्माणं सर्वं कर्तुं क्षमो भवेत् । अयुतावर्तने नैव तारां पश्यति चक्षुषा ॥२३४॥
लक्षावर्तन मात्रेण तारापति समो भवेत् । न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य जीवन्मुक्तो हि भूतले ॥२३५॥
कल्पान्ते न तु तत्पश्चात्तारा सायुज्यमाप्नुयात् । यद्धि तारा समा विद्या नास्ति तारुण्यरूपिणी ॥२३६॥
न चैतत्सदृशं स्तोत्रं भवेद् ब्रह्माण्ड मण्डले । वक्त्रकोटि सहस्त्रैस्तु जिह्वाकोटि शतैरपि ॥२३७॥
न शक्यते फलं वक्तुं मया कल्पशतैरपि । चुम्बके निन्दके दुष्टे पिशुने जीवहिंसके ॥२३८॥
सगोप्यं स्तोत्र मे तत्तद्दर्शनेनैव कुत्रचित् । राज्यं देयं धनं देयं शिरो देयमथापिवा ॥२३९॥
न देयं स्तोत्र वर्य्यं तु मन्त्रादपि महोद्यतम् । अनुलोम विलोमाम्यां मूल सम्पुटितं त्विदम् ॥२४०॥
लिखित्वा भूर्जपत्रादौ गंधाष्टक पुरस्सरैः । धारयेद्दक्षिणे बाहौ कण्ठे वामभुजे तथा ॥२४१॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्वह्निना नैव दह्यते । तद्गात्रं शस्त्र सघैश्च भिद्यते न कदाचन ॥२४२॥
स भूमि वलये पुत्र विचरेद्भैरवोपमः । वन्ध्यापि लभते पुत्रं निर्द्धनो धनमाप्नुयात् ॥२४३॥
निर्विघ्नो लभते विद्यां तर्कव्याकरणादिकाम् ॥२४४॥
इति निगदितमस्यास्तादि नाम्नां सहस्त्रं वरदमनु निधानं दिव्यसाम्राज्य संज्ञम् ।
विधिहरि गिरिशादौ शक्तिदानैकदक्षं समविधि पठनीयं कालितारा समज्ञैः ॥२४५॥

॥ इति श्रीब्रह्मयामले तारायास्तकारादि सहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ नील सरस्वती ॥

नीलसरस्वती की उपासना बौद्धों में अधिक प्रचलित हैं। यह वाम मार्ग प्रधान हैं। पंच तत्वों से पूजन करते हैं। नीलयान एवं वज्रयान इत्यादि संप्रदाय भेद भी हैं। इस विद्या की उपासना से शास्त्रीय ज्ञान कर्मठता तथा वाक्सिद्धि प्राप्त होती हैं। मंत्रकोष में कहा हैं **कुल्लुका नाम देवी सा महानील सरस्वती।**

त्र्यक्षर मंत्रः- (१) ह्रीं त्रीं हूं। (२) ह्रीं स्त्रीं हूं। (नील तंत्र एवं तारा नित्यार्चने)

लंबोदरीं महादेवीं व्याघ्रचर्म - नितम्बिनीं, पीनोन्नत - पयोधरां रक्तवर्तुल लोचनाम् ।
श्वेतास्थि पट्टिका युक्तां कपालपञ्च - शोभितां ललाटे रक्तनागेन कृतकर्णावतंसिनीम् ॥
चतुर्भुजां रक्तमांस मुण्डमण्डित मण्डिनीं, जटा - जूटाक्ष - सूत्रेण शोभितां तीक्ष्ण धारया ।
खड्गेन दक्षिणस्योर्ध्वे शोभिनीं भीमनादिनीं, तदधस्ताद् वीजवृन्त कर्तृकालंकृतां पराम् ॥
वामोर्ध्वे रक्तनालेषद् विकाशित मनोहरम्। दधतीं नीलपद्मं च तदधस्तात् कपालकम् ॥

(अन्यच्च तंत्रदीपिनी ग्रंथे)

नीलवर्णां त्रिनयनां शवासन समायुताम् । बिभ्रतीं विविधां भूषां मौलावक्षोभ्य भूषिताम् ॥

चतुरक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं।

पंचाक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्।

सप्ताक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा।

अष्टाक्षर मंत्रः- (१) ॐ ह्रीं हूं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा। (२) ऐं ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा। नीलतंत्र के अनुसार प्रारंभ के **५ बीजाक्षरों से पंचन्यास** एवं **फट् स्वाहा से अस्त्रन्यास** करें। **नीलतंत्रे**

चतुर्दशाक्षर मंत्र :- (१) ॐ श्रीं ह्रीं ह्सौः हूं फट् नीलसरस्वत्यै स्वाहा। (ताराभक्ति सुधार्णवे)। (२) मंत्रमहोदधि में पांचवे बीज हेतु मंत्रोद्धार में कूर्च **(हूं)** नहीं हैं **''वर्मास्त्र''** लिखा हैं अतः **''हुं फट्''** हैं। **ॐ श्रीं ह्रीं ह्सौः हुं फट् नीलसरस्वत्यै स्वाहा।** प्रथम मंत्र का ध्यान इस प्रकार हैं।

(१) खड्गं त्रिशूलं करपल्लवैः स्वैर्घण्टाधृतं छिन्नशिरो दधाना ।
पशुं पदाधः परिमर्दयन्ती तनोतु भव्यानि सरस्वती नः ॥

दोनों मंत्रों के विनियोगादि इस प्रकार हैं।

विनियोगः- **अस्य श्रीनीलसरस्वती मंत्रस्य ब्रह्मार्त्रऋषिः, गायत्रीश्छंदः, नीलसरस्वती देवता, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्री छंद से नमः मुखे। नीलसरस्वती देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः- **ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्सौः शिखायै वषट्। हुं फट् कवचाय हुं। नीलसरस्वत्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।** इसी तरह से करन्यास करे।

(२) घण्टां शिरः शूलमसिं कराग्रैः संबिभ्रतीं चन्द्रकला वतंसाम् ।
प्रमथ्नतीं पादतले पशुं तां भजे मुदा नीलसरस्वतीं ताम् ॥

इस मंत्र का पूजा प्रयोग पूर्ववत् प्रयोगों की तरह हैं।

॥ विद्याराज्ञी प्रयोगः॥

यह विद्याराज्ञी प्रयोग इन्द्रादि देवताओं को दुर्लभ हैं। यह महाविद्या सेवित होने से भोग एवं मोक्ष को देने वाली हैं। इस महाविद्या के दो प्रयोग मंत्र दिये जा रहे हैं। विस्तृत पूजाक्रम दूसरे मंत्र के साथ दिया गया हैं। दोनों मंत्र ३२ अक्षरात्मक हैं।

१. ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नीलतारे सरस्वति द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सौः ह्रीं स्वाहा।

मंत्रकोष में ऋष्यादि पूर्ववत् कहने से **ऋषि ब्रह्मा तथा गायत्री छन्दः** है जबकि दूसरा मंत्र समान हैं उसके भी ऋषि ब्रह्मा परन्तु छंद अनुष्टुप् उल्लेखित हैं।

नौकारूढां त्रिनेत्रामहि लसिततनु संविदानन्दरूपां,
हस्तैः स्वीयै कपालं त्रिशिख, क्रकचके कर्तृकां सन्दधाना ।
अट्टाट्टहास्य युक्ता मनवरत लसन्मुण्डमालाभि रम्याम्,
चीरोदञ्चित्, कटीर स्थल ललित लसत् किङ्किणीं भासमानाम् ॥

चार लाख जप कर मधुत्रय से युक्त किंशुकपुष्पों से दशांश होम करे। कामनानुसार सात्विक, राजस, तामस ध्यान दिये जा रहे है।

चतुर्वक्त्रमष्टभुजां मुक्ताभरण भूषितां, श्वेताम्बरामक्ष मुद्रां शक्तिं पाशं कमण्डलुम् ।
पंकजं पुष्पमालां च वराभीती भुजेषु च, शब्दाम्भोनिधिमध्यस्थां हंसयाने विचिन्तयेत् ॥१॥
रक्ताम्बरां हेमरत्न नानालङ्कार भूषितां, रत्नदीपे महानीलां परिवारैः समावृताम् ।
रत्नसिंहासनारूढां वराभीत्यक्षमालिकां, दधतीं रत्नचषकं स्थितिरूपे विचिन्तयेत् ॥२॥
रक्ताम्भोनिधिमध्ये तु नौकारूढां विचिन्तयेत्, नववक्त्रां भालनेत्रां कृष्णाम्बर भयानकाम् ।
वराभये च दधतीं परशुं दर्विकां तथा, संहारास्त्रं वामहस्ते दक्षे पाशुपतं तथा ॥
त्रिशीर्षं वामहस्तेन त्रिशूलं खड्ग कर्तृके, पद्मं पाशं हलं शक्तिं त्रिमूर्तिं डिण्डिमं तथा ।
खट्वाङ्गं मुशलं दोर्भिः शत्रुभक्षण मानसां, भक्तानां वरदात्रीं च रक्षयन्तीं च साधकम् ॥३॥

२. ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नीलतारे सरस्वति द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः सौः ह्रीं स्वाहा।

विनियोगः- अस्य श्रीमहाविद्या मंत्रस्य ब्रह्माः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सरस्वती देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। सरस्वती देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः- ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं हृदयाय नमः। क्लीं ह्रीं ए ब्लूं स्त्रीं शिरसे स्वाहा। नीलतारे सरस्वति शिखायै वषट्। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः कवचाय हुं। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट्। इसी तरह कराङ्गन्यास करे।

॥ ध्यान ॥

शवासनां सर्पविभूषणाढ्यां कर्त्री कपालं चषकं त्रिशूलम् ।
कैरदधानां नरमुण्डमालां त्र्यक्षां भजे नीलसरस्वतीं ताम् ॥

उक्त सरस्वती महाविद्या मंत्र का चार लाख जप करे पश्चात् मधुमिश्रित पलाश पुष्पों का श्रद्धा पूर्वक दशांश होम करे।

॥ यंत्रावरणपूजन प्रयोगः ॥

सर्वप्रथम त्रिकोण फिर षट्कोण उसके बाद अष्टदल फिर षोडशदल तदनन्तर बत्तीसदल फिर चौंसठदल वाला कमल बनाये उनके बाहर तीन रेखाओं वाला भूपुर बनाये। पूर्व में कही गई विधि के अनुसार भूतशुद्धि षोढान्यास दिग्बन्धन कर अर्घ्यस्थापन कर पात्रा सादन करे। सरस्वती यंत्रार्चन में वर्णित मेघादि नवपीठ शक्तियों का पूजन करें। देवी का षोडशोपचार पूजन कर योनिमुद्रा दिखायें। पुष्पांजलि लेकर आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।
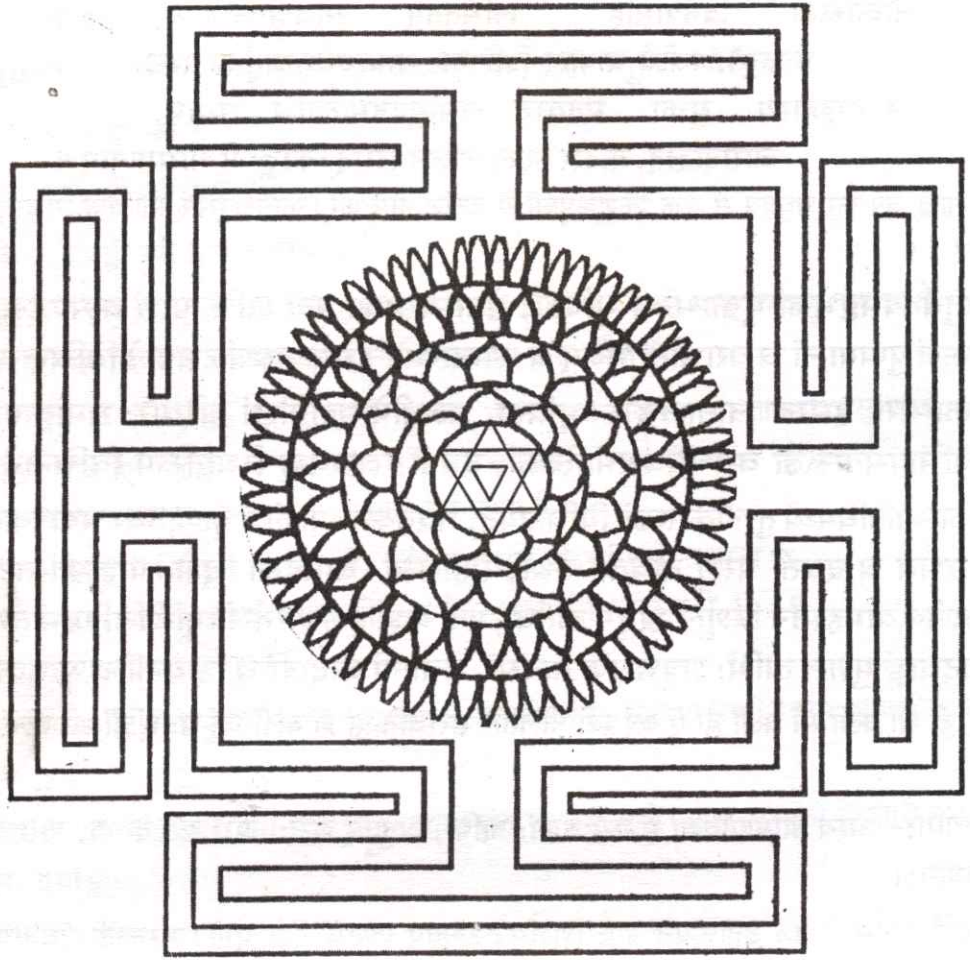
॥ विद्याराज्ञी यन्त्रम् ॥

ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये । अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् :- (भूपुरे) प्रथमरेखायां पूर्वादिक्रमेण सभी विद्याओं का चतुर्थी से आवाहन करे तथा प्रथमा से स्थापन कर **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कह कर गंध पुष्पाक्षत छोड़कर तर्पण करे। **ॐ अणिमायै नमः। अणिमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।** इति सर्वत्र॥

ॐ लघिमायै नमः। ॐ महिमायै नमः। ॐ ईशित्वै नमः। ॐ वशितायै नमः। ॐ कामपूरण्यै नमः। ॐ गरिमायै नमः। ॐ प्राप्त्यै नमः। ततो भूपूरे द्वितीयरेखायाम्:- **ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरुभैरवाय नमः। ॐ चण्डभैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ कपाली भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहारभैरवाय नमः।** ततो भूपूरे तृतीयरेखायाम्- **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।** पश्चात् पुष्पांजलि लेकर मूलमंत्र का उच्चारण प्रार्थना करे।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

योनि मुद्रा दिखावें। **पूजितास्तर्पिताः सन्तु** कह कर अर्घपात्र से जल छोड़े। ऐसा प्रत्येक आवरण पूजा बाद करे।

द्वितीयावरणम् – (चतुः षष्टिदले) पूर्वादि क्रमेण:– **ॐ कुलेश्यै नमः। ॐ कुलनन्दायै नमः। ॐ वागीश्वर्यै नमः। ॐ भैरव्यै नमः। ॐ उमायै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ शान्तायै नमः। ॐ चण्डायै नमः। ॐ धूम्रायै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ करालिन्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ कङ्काल्यै नमः। ॐ रुद्रकाल्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ वाग्वादिन्यै नमः। ॐ नकुल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ शशिप्रभायै नमः। ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नमः। ॐ अमृतेश्यै नमः। ॐ चण्डिकायै नमः। ॐ खेचर्यै नमः। ॐ भूचर्यै नमः। ॐ सिद्धायै नमः। ॐ कामाख्यै नमः। ॐ हिंगुलायै नमः। ॐ बलायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ अपराजितायै नम :। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ घोरायै नमः। ॐ चित्रायै नमः। ॐ मुग्धायै नमः। ॐ धनेश्वर्यै नमः। ॐ सोमश्वर्यै नमः। ॐ महाचण्डायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ हंस्यै नमः। ॐ विनायकायै नमः। ॐ वेदगर्भायै नमः। ॐ भोमायै नमः। ॐ उग्रायै नमः। ॐ वैद्यायै नमः। ॐ सद्‌गत्यै नमः। ॐ उग्रश्वर्यै नमः। ॐ चन्द्रगर्भायै नमः। ॐ ज्योत्स्नायै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ यशोवत्यै नमः। ॐ कुलिकायै नमः। ॐ कामिन्यै नमः। ॐ काभ्यायै नमः। ॐ ज्ञानवत्यै नमः। ॐ डाकिन्यै नमः। ॐ राकिन्यै नमः। ॐ लाकिन्यै नमः। ॐ काकिन्यै नमः। ॐ शाकिन्यै नमः। ॐ हाकिन्यै नमः।**

पूजा कर खेचरीमुद्रा प्रदर्शित पुष्पांजलि देवे। **खेचरीमुद्रा**–बांये हाथ को दायें हाथ में, दाँएं हाथ को बाएं हाथ में बाहुओं को उलट कर उसीक्रम से कनिष्ठा तथा अनामिका उसक्रम से युक्त करके सबसे ऊपर दोनों तर्जनियों से दोनों मध्यमाओं को समाक्रान्त करके दोनों अँगूठों को सीधा कर देवे।

तृतीयावरणम् – (द्वात्रिंशद्‌दले) **ॐ किरातायै नमः। ॐ योगिन्यै नमः। ॐ वीरायै नमः। ॐ वेतालायै नमः। ॐ यक्षिण्यै नमः। ॐ हरायै नमः। ॐ उध्वकेश्यै नमः। ॐ मातंग्यै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ वंशवर्द्धिन्यै नमः। ॐ मालिन्यै नमः। ॐ ललितायै नमः। ॐ दूत्यै नमः। ॐ मनोजयायै नमः। ॐ पद्मिन्यै नमः। ॐ धरायै नमः। ॐ बर्वर्यै नमः। ॐ छत्रहस्तायै नमः। ॐ रक्तनेत्राय्रै नमः। ॐ विचार्चिकायै नमः। ॐ मातृकायै नमः। ॐ दूरदर्श्यैनमः। ॐ क्षेत्रेश्यै नमः। ॐ रङ्गिन्यै नमः। ॐ नट्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ दीप्तायै नमः। ॐ वज्रहस्तायै नमः। ॐ धूम्रायै नमः। ॐ श्वेतायै नमः। ॐ सुमङ्गलायै नमः। ॐ सर्वेश्वर्यै नमः।** पूजन कर बीजमुद्रा दिखावें।

चतुर्थावरणम् – (षोडशदले)- **ॐ मुग्धायै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ कुरुकुल्लायै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ तोतलायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। ॐ बालायै नमः। ॐ सुमुख्यै नमः। ॐ श्यामलाविलायै नमः। ॐ पिशाच्यै नमः। ॐ विदार्यै नमः। ॐ शीतलायै नमः। ॐ वज्रयोगिन्यै नमः। ॐ सर्वेश्वर्यै नमः।** पूजन कर अंकुश व सृष्टिमुद्रा दिखावें।

पंचमावरणम्- अष्टदल में अष्ट सरस्वतियों का पूजन करे। **ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा। क्लीं वद वद चित्रेश्वरी ऐं स्वाहा। ऐं कुलिजे ऐं सरस्वति स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं वद वद कीर्तीश्वरी स्वाहा। ऐं ह्रीं अन्तरिक्ष सरस्वति स्वाहा। ह्स्फ्रं ह्स्त्रौं ह्स्फ्रौं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः घ्रीं घटसरस्वति घटे वद वद तर तर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु कुरु स्वाहा।** नील सरस्वती – **ब्लूं वें वद वद त्रीं हुं फट्। ऐं हैं ह्रीं किणि किणि विच्चे।** अष्ट सरस्वतियों पूजन कर क्षोभमुद्रा दिखावें। पुष्पांजलि देवे।

क्षोभमुद्रा– कनिष्ठा और अंगुष्ठ से रोकी गयी मध्यमा पर मध्यमा को करके दोनों तर्जनियों को सीधी करके मध्यमा

के ऊपर दोनों अनामिकाओं को रखें।

विद्राविणी मुद्रा- क्षोभमुद्रा की मध्यमा अंगुलियां जब सीधी होती है तब वह विद्राविणी मुद्रा बन जाती हैं। इसे द्राविणी मुद्रा भी कहते हैं।

बीज मुद्रा- हाथों को उलटकर आपस में जुड़े हुये अर्द्धचन्द्र की आकृति के समान दोनों तर्जनी और अंगूठों को एक साथ करे। नीचे कनिष्ठा से लगी दोनों मध्यमा अंगुलियों को विनियोजित करे। उसी प्रकार सबसे नीचे अनामिकाओं को टेढी करके मुद्रा बनावें।

अंकुश मुद्राः- दोनों मध्यमाओं को सीधा रखते हुये दोनों तर्जनियों को मध्यपोर के पास परस्पर बांधे। अब तर्जनियों को थोड़ा झुकाकर एक दूसरे को खींचे।

षष्ठमावरणम्ः- (षट्कोणे) केसरेषु च- **ॐ डाकिन्यै नमः** अग्निकोणे। **ॐ राकिन्यै नमः** ईशान कोणे। **ॐ लाकिन्यै नमः** नैऋत्य कोणे। **ॐ काकिन्यै नमः** वायवे। **ॐ शाकिन्यै नमः** मध्ये। **ॐ हाकिन्यै नमः** दिक्षु। पुष्पांजलि देकर द्राविणी मुद्रा दिखावे।

सप्तमावरणम् - (त्रिकोणे) **ह्रीं परायै नमः। ऐं क्लीं सौः बालायै नमः। ह्सैं ह्क्लीं ह्सौः भैरव्यै नमः।** पुष्पांजलि देवे- **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥**

अर्घपात्र से जल छोड़कर कहे **पूजिता स्तर्पिताः सन्तु**। आकर्षिणी मुद्रा दिखावे।

आकर्षण मुद्रा- अंकुशाकाररूप मध्यमा और तर्जनी अंगुलियों के साथ कनिष्ठा और अनामिका अंगुलिया समान रहे।

प्रतिदिन चौराहे पर गणेश, क्षेत्रपाल, योगिनी, भैरवी एवं तारा देवी को बलिप्रदान करे। मांस व उड़द से बनी हुई वस्तु, शाक, घी, खीर, मालपुआ आदि बलिद्रव्यों से बलि प्रदान करे।

॥ काम्य प्रयोग ॥

(१) श्वेत दूर्वा की लेखनी से गोरोचन के रस से नालच्छेदन होने से पहले बालक की जीभ पर लिखे तो ८ वर्ष का होते होते संपूर्ण शास्त्रों में पारंगत हो जाता हैं।

(२) १० हजार जप करके "वचा" को अभिमंत्रित कर यह औषधि बालक के गले में बांधे। १२ वर्ष बीतने पर यह औषधी उसे खिला देवे तो उत्तम कवि होवे।

(३) ४ तोला ज्योतिष्मती का तेल ग्रहण के समय जल में खड़े होकर मंत्र से अभिमंत्रित कर उसे पीवे तो वह व्यक्ति वाचस्पति हो जाता हैं।

(४) चौराहे वा श्मशान में निर्भय होकर शव पर बैठकर मंत्र साधना करे। साधक को यदि ऐसा सुनाई पड़े कि विद्याओं में पारङ्गत हो जाओं और समस्त सिद्धियां प्राप्त करो तो मंत्र सिद्धि जाने।

(५) विद्वत्कुल में उत्पन्न आठ वर्ष के दो शिशुओं को बैठा कर उनके शिर पर हाथ रखकर यह मंत्र जपे तो विचक्षण तर्क युक्त शास्त्रार्थ करने लगे।

(६) किसी निर्जन केले के वन में १२ लाख जप करे।

दासीचालित दोलायामारूढां सुस्मितानननाम् । पुन्नाग चम्पकाशोक रंभाविपिन संस्थिताम्॥

ऐसा भगवति का ध्यान करे। जपान्त में नित्य बलि देवे। इससे मनुष्य शीघ्र ही सभी अभीष्ट को प्राप्त करे।

(७) नग्न तथा मुक्तकेशी होकर कृष्ण चतुर्दशी को श्मशान में दस हजार जप करे तो वाणी सिद्धि को प्राप्त करता हैं। विद्या, सौख्य, धन, पुष्टि आयु, कान्ति, बल रूप एवं स्त्री की कामना रखने वाले साधकों को निरन्तर भगवती तारा की आराधना करनी चाहिये।

॥ वाग्वादिनि नीलसरस्वती मंत्र: ॥

मंत्रः- ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं ह्रीं स्हौः वद वद वाग्वादिनि त्रीं त्रीं त्रीं नीलसरस्वति ऐं ऐं ऐं कह कह कलरीं स्वाहा।
(सिद्ध सारस्वते)

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य गंगाप्रवाह मत्स्यरूपी जनार्दन ऋषिः, अतिशय वाक्कविता छन्दः, सर्ववागैश्वर्यमयी समस्ताभीष्टदायिनी नीलसरस्वती देवताः, ह्रीं बीजं, हूं कीलकं, ह्सौः शक्तिं सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से न्यास करे।

नीलांशुकां मणिमयीं च करेषु वीणामुद्रां च पात्रमथ पूर्णसुधां दधानाम्।
उद्यच्चतुर्मुख वहत् कविताप्रवाहां नीलां भजामि हृदयेन सरस्वतीं ताम् ॥

एक लाख जप करके श्वेत उत्पलों से दशांश होम करे।

॥ अष्ट सरस्वती मंत्रा: ॥

१. वाग्वादिनी सरस्वती - ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।
२. चित्रेश्वरी सरस्वती - क्लीं वद वद चित्रेश्वरी ऐं स्वाहा।
३. कुलजा सरस्वती - ऐं कुलिजे ऐं सरस्वति स्वाहा।
४. कीर्तीश्वरी सरस्वती - ऐं ह्रीं श्रीं वद वद कीर्तीश्वरी स्वाहा।
५. अंतरिक्ष सरस्वती - ऐं ह्रीं अन्तरिक्ष सरस्वति स्वाहा।
६. घटसरस्वती - ह्स्फ्रं ह्स्त्रौं ह्स्फ्रौं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः घ्रीं घटसरस्वति घटे वद वद तर तर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु कुरु स्वाहा।
७. नील सरस्वती - ब्लूं वें वद वद त्रीं हुं फट्।
८. किणिसरस्वती - ऐं हैं ह्रीं किणि किणि विच्चे।

॥ घट सरस्वती मंत्र प्रयोग: ॥

मंत्र - ह्सफ्रें ह्सौः ष्फ्रीं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः घटसरस्वति घटे वद वद तरं तर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु कुरु स्वाहा।

साधक घट में देवि सरस्वति का आवाहन करकं। सरस्वति यंत्रार्चन से एवं षोडशोपचार द्वारा पूजन कर मंत्र जप करें। देवि साधक को स्वप्न में वार्ता कहती है। विशेष उपासना द्वारा देवी कर्णपिशाचिनी की तरह वार्ता कहती है तथा

शास्त्रार्थ में सहायता करती है। **योनिमुद्रा प्रदर्शन करने पर देवि का विसर्जन हो जाता है।**

मंडन मिश्र ने इसी देवि की सहायता से शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया था। शंकराचार्य को परदे के पीछे रखे घट का भान हो गया तो उन्होनें उसे योनिमुद्रा दिखाकर विसर्जित कर दिया तब मंडन मिश्र परास्त होने लगे।

॥ सरस्वती मंत्र प्रयोगः॥

एकाक्षर मंत्र- "ऐं"।

इस मंत्र के १२ लाख मंत्र जपे। वाक्‌सिद्धि होवे। सूर्यग्रहण के दिन कुश जी जड़ से मधुद्वारा जीभ पर लिखता जावे एवं चाट जाय तथा ग्रहण पर्यन्त जप करे। तथा सालभर प्रतिदिन ११ माला नित्य करे तो जड़ता का नाश होवें। ***विशेष विधान आगे सारस्वत कल्प प्रयोग में देखें।***

द्वयक्षरो मंत्रः - आं लृं तंत्रान्तरे- **ऐं लृं॥**

इसके पुरश्चरण से तीन दिन पहले क्षौरादि करके पायश्चित् रूप में विष्णु पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णुश्राद्ध, होम चान्द्रायणादि व्रत सर्वदेवोपयोगि पद्धति मार्ग से करे। व्रत में असमर्थ हो तो गोदान व द्रव्यदान करे। असर्मथता में पञ्चगव्य प्राशन करे। अधिकार प्राप्ति हेतु दशहजार गायत्री का जप करे। पुरश्चरण संकल्प कर अन्तर्मातृका वहिर्मातृका न्यासादि करे।

करन्यासः- **आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। आं तर्जनीभ्यां नमः। आं मध्यमाभ्यां नमः। आं अनामिकाभ्यां नमः। आं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। आं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यासः- **आं हृदयाय नमः। आं शिरसे स्वाहा। आं शिखायै वषट्। आं कवचाय हुं। आं नेत्रत्रयाय वौषट्। आं अस्त्राय फट्। आं भ्रुवोः। आं नाभौ। आं गुह्ये। आं बस्तौ।**

रत्नकांतिनिभां देवी ज्योत्स्नाजाल विकाशिनीम्। मुक्ताहारयुतां शुभ्रां शशिखण्ड विभूषिताम् ॥१॥
बिभ्रतीं दशहस्तैश्च व्याख्यां वर्णस्य मालिकाम्। अमृतेन तथा पूर्णघटं च दिव्यपुस्तकम् ॥२॥
दधतीं वामहस्तेन पीनस्तनभरान्विताम्। मध्ये क्षीणां तथा स्वच्छां नानारत्न विभूषिताम् ॥३॥

सर्वतोभद्रमण्डल पर पीठ शक्तियों का पूर्वादिक्रम से पूजन करे। **ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। मध्ये ॐ विद्येश्वर्यै नमः।** पीठ शक्तियों का पूजन कर देवी यंत्र का अग्न्युत्तारण करे। "**ॐ वर्णाब्ज पद्मासनाय नमः**" से पुष्पों से आसन देकर यंत्र स्थापित करे। यंत्र मध्य में ध्यानपूर्वक देवी की कल्पना करे। पुष्पांजलि देकर देवि से आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ आं हृदयाय नमः** अग्निकोणे। **ॐ आं शिरसे स्वाहा** निर्ऋतिकोणे। **ॐ आं शिखायै वषट्** वायव्ये। **ॐ आं कवचाय हुं** ईशान्ये। पूज्यपूजकयोर्मध्ये- **ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट्** देवी पश्चिमे **ॐ आं अस्त्राय फट्।**

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

मंत्र से पुष्पांजलि देकर अर्धपात्र से बिन्दु छोड़ कर कहे **पूजितास्तर्पिताः सन्तु**। इति सर्वत्र वदेत्।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ**

वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

तृतीयावरणम् – (भूपुरे) **ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ भं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ कुं कुबेराय नमः। ॐ हं ईशानाय नमः। ईशानपूर्वयोर्मध्ये-ॐ आं ब्रह्मणे नमः। निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।**

चतुर्थावरणम् – (भूपुरे) **ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पां पाशाय नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः।**

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कार पर्यन्त पूजा करकें स्तोत्रादि पढ़े। १२ लाख का पुरश्चरण करे। खीर द्वारा दशांश होम करे तो गूंगा भी वाक्पति हो जाता हैं। मंत्र सिद्धि होने पर काम्य प्रयोग करे।

॥काम्य प्रयोगः॥

(१) प्रातः एक हजार जप करके वचा से युक्त ब्राह्मी को पीने से मेघावी साधक सुने हुये आगम शास्त्रों को नहीं भूलता।

(२) छः मास तक जितेन्द्रिय होकर नित्य एक हजार जप करे तो कवियों में अग्रणी होवे।

(३) जड़ता नाश हेतु ब्राह्ममुहुर्त में शुद्धभाव से स्वयं तथा द्रव्य की परिकल्पना करे। नित्य हजार जप वर्षभर करे तो वाचस्पति के समान हो जाता हैं।

(४) नाभिचक्र में देवी का ध्यान करे।

**नाभिचक्रे स्थितां सौम्यां रक्ताकरां विचिन्तयेत्। क्षौभाबद्ध नितम्बां च रक्ताभरणभूषिताम् ॥
पाशांकुशधरां दिव्यां वराभययुतां पुनः। दृष्ट्या चामृतवर्षिण्या पूरयन्तीं मनोरथान् ॥**

इस प्रकार ध्यान कर एक लाख मंत्र जपे। घृत, मधु, शक्कर से युक्त कमलों से होम करे। दुग्धयुक्त घी से देवी का तर्पण करे। दही, आटा, मधुयुक्त खीर की बलि प्रदान करे तो साक्षात् कुबेर समान होवे। सफेद सरसों का मधुत्रय युक्त होम करने से मनुष्य संसार में सभी को अपने वश में कर लेवे।

॥ त्र्यक्षर सरस्वती मंत्र ॥

मंत्र – **ऐं रूं स्वों**। इसके ऋष्यादि दशाक्षर मंत्रवत् हैं।

**मुक्ताहारावदातां शिरसि शशिकलालंकृतां बाहुभिः
स्वैर्व्याख्यां वर्णाख्यमालां मणिमयकलशं पुस्तकं चौद्वहन्तीम्
आपीनोत्तुङ्ग वक्षोरुहभर विलसन्मध्य देशामधीशां
वाचामीडे चिराय त्रिभुवन नमितां पुण्डरीके निषण्णाम्॥**

मंत्र के ३ लाख जप करके घृतयुक्त पायस होम करे।

॥ दशाक्षर मंत्र प्रयोग ॥

मंत्रः- **वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य कण्व ऋषिः, विराट् छंदः वाग्वादिनी देवता, मम सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ कण्व ऋषये नमः शिरसि। विराट् छंदसे नमः मुखे। वागीश्वर्यै देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय**

नमः सर्वाङ्गे।

मंत्रवर्णन्यासः- **ॐ वं नमः शिरसि। ॐ दं नमः दक्ष कर्णे। ॐ वं नमः वाम कर्णे। ॐ दं नमः दक्षनेत्रे। ॐ वागं् नमः वामनेत्रे। ॐ वां नमः दक्षिणनासा पुटे। ॐ दिं नमः वामनासापुटे। ॐ निं नमः वदने। ॐ स्वां नमः लिङ्गे। ॐ हां नमः गुदे।**

षडङ्गन्यास- **ॐ आं हृदयाय नमः। ॐ आं शिरसे स्वाहा। ॐ आं शिखायै वषट्। ॐ आं कवचाय हुं। ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ आं अस्त्राय फट्।** इसी तरह करन्यास करे।

तरुणशकलमिन्दो बिंभ्रती शुभ्रकान्तिः, कुचभारनमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे। निजकर कमलोद्यल्लेखनी पुस्तक, श्रीः सकलविभवसिध्यै पातु वाग्देवता नः।

॥ यंत्र पूजनम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर **मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः** से पूजन करे। पूर्व वर्णित मेधादि नव पीठशक्तियों का पूजन कर। यंत्र का अग्न्युत्तारण कर पुष्पों से आसन देकर भद्रपीठ पर रख कर देवी का आवाहन करे। यंत्र पूजा की देवि से पुष्पांजलि लेकर आज्ञा मांगे।

संविन्मय परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे देवि परिवारार्चनाय मे॥

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे)- **ॐ आं हृदयाय नमः। ॐ आं शिरसे स्वाहा। ॐ आं शिखायै वषट्। ॐ आं कवचाय हुं। ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ आं अस्त्राय फट्।**

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥
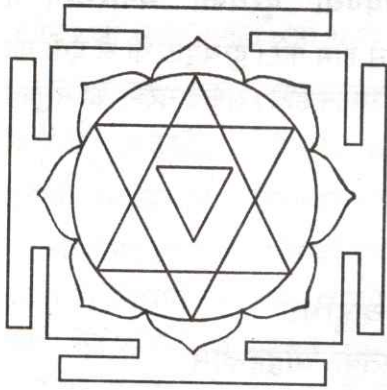
मंत्र से पुष्पांजलि देवि तथा विशेष अर्घपात्र से जल छोड़कर कहे **पूजितास्तर्पिताः, सन्तु।** इति सर्वत्र वदेत्॥

द्वितीयावरणम् :- (अष्टदले)- **ॐ योगायै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः।**

तृतीयावरणम् - (अष्टदलाग्रे)- **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

चतुर्थावरण एवं पंचमावरण इन्द्रादि लोकपालों एवं उनके आयुधों का पूर्व की तरह अर्चन करे।

प्रयोगविधिः- दशलाख जप का पुरश्चरण करे। दशांश होम कमल या दूधभात अथवा तिल एवं मधुत्रय से करे। स्त्रियों में देवबुद्धि रखें तथा नख, दांत को शुद्ध रखते हुये १२ मास जप करे साधक बुद्धिमान एवं कवि होवे। प्रतिदिन एक हजार मंत्र जप से अभिमंत्रित जल पीने से एक वर्ष में साधक महाकवि हो जाता हैं। वक्ष पर्यन्त में जल में खड़े होकर सूर्यमण्डल में देवी का ध्यान करते हुये तीन हजार मंत्र जप करे तो १२ दिनों में वाणी की अप्रतिम सिद्धि प्राप्त होवे। पलाश तथा बेल के पुष्पों व उनकी समिद् से मधुत्रय युक्त होम करे तो वृहस्पति के समान यश प्राप्त होवे। सौभाग्य तथा लक्ष्मी को देने वाला तथा वशीकरण करने वाला यह उत्तम होम है। राजवृक्ष के फूलों को मधु, घी, शक्कर के साथ उसकी समिधाओं से होम करे तो अत्यधिक कवित्त्व शक्ति प्राप्त होती हैं।

॥ चिन्तामणि सरस्वती मंत्रः ॥

मंत्र – **ॐ ह्रीं ह्स्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।**

विनियोगः– **अस्य श्रीचिन्तामणि सरस्वती मंत्रस्य कण्व ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः, चिंतामणि सरस्वती देवता, ह्स्रैं बीज, ह्रीं शक्तिः, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।** न्यास व आवरण पूजा दशाक्षर मंत्रवत् जाने।

हंसारूढां मौक्तिकाभां मन्दहासेन्दु शेखराम्। वीणाऽमृतघटाक्षस्त्रग् दीप्तहस्तां कजस्थिताम्।

१२ लाख जप कर श्वेत कमल या चम्पक पुष्पों से होम करें।

द्वादशाक्षर वाग्वादिनि मंत्रः– ह्रीं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ह्रीं। न्यास ध्यान पूजा दशाक्षर मंत्रवत् जाने।

॥ अंतरिक्ष सरस्वती मंत्रः॥

ऐं ह्रीं अंतरिक्ष सरस्वति स्वाहा। मेरुतंत्र के अनुसार १२ लाख जप करे तो दूर की वार्ता सुन सके।

॥ वाग्देवी सरस्वती॥

षोडशाक्षर मंत्रः– **ऐं नमः भगवति वद वद वाग्देवि स्वाहा।** न्यासादि पूजाक्रम सब दशाक्षर मंत्रवत्।

शुभ्रां स्वच्छ विलेप माल्यवसनां शीतांशु खण्डोज्ज्वलाम्।
व्याख्यामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैः।
बिभ्राणां कमलासनां कुचलतां वाग्देवतां सस्मिताम्
वन्दे वाग्विभवप्रदां त्रिनयनां सौभाग्य संपतकरीम्॥

॥ महासरस्वती मंत्रः॥

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नीलतारे सरस्वति द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः सौः ह्रीं स्वाहा। यह मंत्र पूर्व में विज्ञाराज्ञी मंत्र में दिया चुका हैं।

यहां इसमें सरस्वति के बाद ''**द्रां ह्रीं**'' है जबकि पूर्व मंत्र में ''**द्रां द्रीं**'' हैं। विनियोगादि सब पूर्ववत् जाने।

एकोन चत्वारिंशाक्षर वाग्वादिनी मंत्रः– (प्राकृतग्रंथे) **ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवति अर्हन्मुखनिवासिनी सरस्वति ममाऽऽस्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः।**

दीवाली की रात को स्नान करके सफेद वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुख करके सरस्वती की श्वेतमूर्ति को चावल के ऊपर रखकर सफेद स्फटिक की माला पर १२ हजार जप करे तो देवी प्रसन्न होकर विद्या प्रदान करती हैं जड़ता का नाश करती हैं।

॥ सारस्वत कल्प॥

इस प्रयोग को विष्णु ने ब्रह्मा को वेदान्त का रहस्य जानने हेतु दिया था। इस मंत्र के प्रभाव से बृहस्पति वागीश और द्वैपायन वेदव्यास हुये।

एकाक्षरी मंत्र :– ऐं।

षडङ्गन्यासः– **आं हृदयाय नमः। ईं शिरसे स्वाहा। ऊं शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। औं नेत्रत्रयाय वौषट्।**

अः अस्त्राय फट्। इसी तरह करन्यास करे। पुनः- **ऐं नमः भ्रूमध्ये। ऐं नमः नाभौ। ऐं नमः गुह्ये। ऐं नमः वस्तिप्रदेशे।** ऐं नमः से व्यापक न्यास करे। पुनः मातृका अंतर्मातृकान्यास, वहिर्मातृका न्यास करे। भद्रमण्डल पर ''**ॐ वर्ण पद्मासनाय नमः**'' से पुष्पादि से आसन देकर देवी यंत्र को स्थापित करे।

मुक्ताकांतिनिभां देवीं ज्योत्सनाजाल विकासिनीम्। मुक्ताहारयुतां शुभ्रां शशिखण्ड विमण्डिताम् ॥
बिभ्रतीं दक्षहस्ताभ्यां व्याख्यां वर्णस्य मालिकाम्। अमृतेन तथा पूर्ण घटदिव्यं च पुस्तकम् ॥
दधतीं वामहस्ताभ्यां पीनस्तनभरान्विताम्। मध्येक्षीणां तथा स्वच्छां ज्ञानारत्न विभूषिताम् ॥

यंत्रार्चन दशाक्षर मंत्रवत्। करे। यथा- **षट्कोण** में आं हृदयादि मंत्रों से पूजन करे। **अष्टदल** में पूर्वमंत्रवत् प्रज्ञादि .... मेधादि तक पूजन करे। **अष्टदलग्रों** में पूर्वमंत्रवत् ब्राह्मयादि अष्टशक्तियों का पूजन करे। **भूपूर** में इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करे। मंत्र का १२ लाख जप करे। नित्य एक हजार जप कर ब्राह्मीरस एवं वच का पान करने से मेधा शक्ति बढती है। गले तक के जल में स्थित होकर छः मास तक जितेन्द्रिय होकर सूर्यमण्डल में देवी का ध्यान करते हुये एक हजार जप नित्य करे तो वाक्सिद्धि प्राप्त होवे।

ज्योतिः पुञ्जनिभां देवीं परिवार समन्विताम् । वराभययुतां हस्तेमुद्रा पुस्तकधारिणीम् ॥

प्रातः काल उठकर पवित्र भाव से जप करे। मूलाधार से कुण्डलिनी शक्ति को उठाकर षट्चक्रों को वेधते हुये परमशिव के पास लाकर उसे सहस्त्रार स्थित सुधापान कराये और देवी की प्रभा से अपने शरीर को प्रभावान बनाये। ऐसा निरंतर करने से साधक वाक्पति हो जाता हैं। नाभिचक्र में जप करने से भी शब्द ब्रह्म की जागृति होती हैं।

नाभिचक्रे स्थितां सौम्यां रक्ताकरां विचिन्तयेत् । क्षौमाबद्ध नितम्बां च रक्ताभरण भूषिताम् ॥
पाशांकुशधरां दिव्यां वराभययुतां पुनः । दृष्ट्या चामृतवर्षिण्या पूरयन्तीं मनोरथान् ॥

इस प्रकार ध्यान कर एक लाख जप करे। रक्तोत्पल को मधुत्रय से मिश्रित कर होम करे दुग्ध घृत युक्त घृत से तर्पण करे, मधुमिश्रित दही पिष्टक एवं पायस बलि प्रदान करे तो साधक कुबेर समान धनी होवे। पद्म होम से अपार संपदा प्राप्त करे। त्रिमधु मिश्रित श्वेत सरसों के होम से समस्त जगत को वशीभूत करे। जप करके नित्य प्रार्थना करे-

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणा वरधारिणी भगवती या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्कर प्रभृतिभि र्देवैः सदा वन्दिता, सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥

॥ पारिजात सरस्वती ॥

नवाक्षर सरस्वती मंत्रः- ॐ ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः।

दशाक्षर सरस्वती मंत्राः- (१) ॐ ह्रीं ह्सौः ॐ सरस्वत्यै नमः। (२) ह्रीं ॐ ह्सौः ॐ सरस्वत्यै नमः।

दशाक्षर मंत्र विनियोगः- **अस्य श्रीपारिजात सरस्वती दशाक्षर मंत्रस्य कण्व ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, पारिजात सरस्वती देवता, ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।** पहले मातृका वर्णों से षडङ्गन्यास करें।

कराङ्गन्यासः- **अं कं....ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं। ओं पं....मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं.....हं लं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।** इसी तरह से हृदयादि षडङ्गन्यास करें।

एकादशाक्षर सरस्वती मंत्राः- **(१) ॐ ऐं हस्त्रैं ह्रीं सरस्वत्यै नमः। (२) ॐ ह्रीं हसौ ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।** नवाक्षर मंत्र प्रपञ्चसार तथा एकादशाक्षर मंत्र दक्षिणामूर्ति संहिता में दिया गया हैं। दोनों के ऋष्यादि समान हैं।

विनियोगः- **अस्य श्री पारिजात सरस्वती नवाक्षर वा एकादशाक्षर मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, पारिजातेश्वरी वाणी देवता, ह्रीं बीजं, ऐं शक्तिं, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

हंसारूढां हरहसित हारेन्दु कुन्दावदाता। वाणी मन्दस्मिततरमुखी मौलिबद्धेन्दुलेखा ॥
विद्यावीणाऽमृतमय घटाक्षस्त्रजा दीप्तहस्ता। श्वेताब्जस्था भवदभिमत प्राप्तये भारती स्यात् ॥

सभी मंत्रों की आवरण पूजा आगे दिये जाने एकादशाक्षर मंत्रवत् जाने। १२ लाख जप से मंत्र का पुरश्चरण करें। नागकेसर, चंपक तथा पुष्पों से हवन करें।

एकादशाक्षर मंत्र :- (१) हिन्दी तंत्रसार जो वर्णन्यास दिये हैं उनके अनुसार जो मंत्र बनता हैं वह इस प्रकार हैं। **ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।**

वर्णन्यासः- **ॐ नमः ब्रह्मरंध्रे। ह्रीं नमः भ्रूमध्ये। ऐं नमः दक्षिण नेत्रे। ह्रीं नमः वाम नेत्रे। ॐ नमः दक्षिण कर्णे। सं नमः वामकर्णे। रं नमः दक्षिणनासायां। स्वं नमः वामनासिकायां। त्यैं नमः मुखे। नं नमः गुह्ये। मं नमः पादे।**

(२) (शारदातिलके) **ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।** ऋष्यादि न्यास ध्यान पूर्ववत् दशाक्षर मंत्र के ही हैं।

वर्णन्यासः- **ॐ ॐ नमः ब्रह्मरंध्रे। ॐ ह्रीं नमः भ्रूमध्ये। ऐं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ह्रीं नमः वामनेत्रे। ॐ ॐ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ सं नमः वामनासापुटे। ॐ रं नमः दक्षिण कर्णे। ॐ स्वं नमः वामकर्णे। ॐ त्यैं नमः मुखे। ॐ नं नमः लिङ्गे। ॐ मं नमः गुदे।**

मातृका वर्ण से पूर्वमंत्रवत् कराङ्गन्यास करे। पश्चात् **ह्सां, ह्सीं, ह्सूं, ह्सैं, ह्सौं, ह्सः** से क्रमश कराङ्ग एवं हृदयादि न्यास करें। दूसरे मंत्र विषय में शारदा तिलक में कहा हैं कि **''ऐं''** बीज से षडङ्गादिन्यास करे।

वाणीं पूर्णनिशाकरोज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकां निजकरै संबिभ्रतीमादरात् । वीणामक्षगुणां सुधाढ्यकलशं विद्यां च तुङ्गस्तनीं दिव्यैराभरणैर्विभूषित तनुं हंसाधिरूढां भजे ॥

॥ यंत्रार्चन प्रयोगः ॥

आवरण पूजा हेतु भद्रमण्डल पर **मेधादि पीठ शक्तियों** का पूजन करे। यथा- **ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः।** मध्ये **विद्येश्वर्यै नमः।** पुष्पासन देकर देवी यंत्र रखे मूर्ति की कल्पना करे। देव्यादक्षिणे-**ॐ संस्कृतायै नमः। ॐ वाङ्मय्यै नमः।** देव्या वामे- **ॐ प्राकृतायै नमः। ॐ वाग्मिन्यै नमः।**

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे)- अग्निकोणे- **ॐ ऐं हृदयाय नमः।** नैर्ऋते **ॐ ऐं शिरसे स्वाहा।** वायव्ये **ॐ ऐं शिखायै वषट्।** ईशान्ये **ॐ ऐं कवचाय हुं।** पूज्यपूजाकयोर्मध्ये **ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।** देवीपश्चिमे **ॐ ऐं अस्त्राय फट्।**

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इस मंत्र से पुष्पांजलिं देवे, अर्घ्यपात्र से बिन्दु छोड़कर कहे **पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** ऐसा प्रत्येक आवरण में करे।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले)- **ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ श्रुत्यै नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ**

स्मृत्यै नमः। ॐ वागीश्वर्यै नमः। ॐ मत्यै नमः। ॐ स्वस्त्यै नमः।

तृतीयावरणम् - (अष्टदलाग्रे)- **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

चतुर्थावरण में इन्द्रादि लोकपालों की **पंचमावरण** में उनके आयुधों की पूजा पूर्व मंत्रों की तरह करे। धूप दीप नैवेद्यादि अर्पण कर जप करे। १२ लाख जप का पुरश्चरण हैं। दशांश होम श्वेतकमलो या नाग और चम्पा के फूलों से करे। इससे व्यक्ति वाग्वल्लभ हो जाता हैं।

॥ इति यंत्रार्चनम् ॥

अन्य एकादशाक्षर मंत्रः- (१) ऐं वाचस्पते अमृते प्लुवः प्लूः। (हिन्दी तंत्रसारे) (२) ऐं वाचस्पतेऽमृते प्लवः प्लवः। (मंत्र महार्णवे) इसके ऋष्यादि दशाक्षर मंत्रवत् हैं।

करन्यासः- **ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वाचस्पते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अमृते मध्यमाभ्यां नमः। ॐ प्लव अनामिकाभ्यां नमः। ॐ प्लव कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**

पञ्चाङ्गन्यासः- **ॐ ऐं हृदयायनमः। ॐ वाचस्पते शिरसे स्वाहा। ॐ अमृते शिखायै वषट्। ॐ प्लव कवचाय हुं। ॐ प्लव अस्त्राय फट्।**

आसीना कमले करैर्जपवटीं पद्मद्वयं पुस्तकं, विभ्राणा तरुणेन्दुबद्धमुकुटा मुक्तेन्दु कुन्दप्रभा।
भालोन्मीलित लोचना कुचभराक्रान्ता भवद्भूतये, भूयाद्वागधिदेवता मुनिगणैरासेव्यमाना ऽनिशम् ॥

इसकी पूजा विधि सब पूर्ववत् जानें। ११ लाख का पुरश्चरण हैं। पलाश पुष्पों व घृत से दशांश होम करें तो परमसिद्धि प्राप्त करें। कदम्ब के फूलों एवं बेल के फलों द्वारा होम करने से वाणी की समृद्धि प्राप्त होवे। कुन्द तथा नन्द्यावर्त के फूलों से होम करके साधक वाग्वल्लभ हो जाता हैं। ब्राह्मी तथा वचा को पीसकर कल्क बनाये। उसमें कपिलागाय का घी मिलाकर जप करते हुये प्रातः काल जो पीता हैं वह समस्त शास्त्रों के अर्थ का ज्ञाता हो जाता हैं। इस विद्या के द्वारा अभिमंत्रित ब्राह्मीपत्र को खाने से मेघावी मनुष्य वेद और आगमों के सुनकर नहीं भूलता।

॥ श्रीसरस्वती कवचम् ॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, वाणी कवचमुत्तमम्। त्रैलोक्य - मोहनं नाम दिव्यं भोगापवर्गदम् ॥१॥
मूल मन्त्रमयं साध्यमष्ट सिद्धि प्रदायकम्। सर्वैश्वर्यप्रदं लोके सर्वाङ्गमविनिश्चितम् ॥२॥
पठनाच्छ्रुवणात् देवि! महापातकनाशनम्। महोत्पात - प्रशमनं मूलविद्या मनोहरम् ॥३॥
यद्धृत्वा कवचं ब्रह्मा विष्णुरीशः शचीपतिः। यमोऽपि वरुणश्चैव कुबेरोऽपि दिगीश्वराः ॥४॥
ब्रह्मा सृजति विश्वं च विष्णुर्दैत्य निसूदनः। शिवः संहरते विश्वं जिष्णुः सुमनसां पतिः ॥५॥
दिगीश्वराश्च दिक्पाला यथावदनुभूतये। त्रैलोक्यमोहनं वक्ष्ये भोग मोक्षैकसाधनम् ॥६॥
सर्वविद्यामयं ब्रह्मविद्यानिधिमनुत्तमम्। त्रैलोक्य मोहनस्यास्य कवचस्य प्रकीर्तितः ॥७॥

॥ मूलपाठ ॥

विनियोग :- अस्य श्रीसरस्वती कवचस्य कण्वो ऋषिः, विराट् छन्दः, सरस्वती देवी शुभा। सरस्वती देवताः ह्रीं बीजं, ॐ शक्तिः, ऐं कीलकं, त्रिवर्ग फल साधने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- कण्वऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। देवी सरस्वत्यै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः नाभौ। ऐं कीलकाय नमः पादयोः। त्रिवर्ग फल साधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं पातु वाणी शिरो मे सर्वदा सती । ॐ ह्रीं सरस्वती देवी भालं पातु सदा मम ॥१॥
ॐ ह्रीं भ्रुवौ पातु दुर्गा दैत्यानां भयदायिनी । ॐ ऐं ह्रीं पातु नेत्रे सर्वमङ्गल मङ्गला ॥२॥
ॐ ह्रीं पातु श्रोत्रयुग्मं जगद् - भयकारिणी । ॐ ऐं नासां पातु नित्यं विद्या विद्यावरप्रदा ॥३॥
ॐ ह्रीं ऐं पातु वक्त्रं वाग्देवी भयनाशिनी । अं आं इं ईं पातु दन्तान् त्रिदन्तेश्वर पूजिता ॥४॥
उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं पातु ओष्ठौ च भारती । ओं औं अं अः पातु कण्ठं नीलकण्ठाङ्क वासिनी ॥५॥
कं खं गं घं ङं पायान्मे चांसौ देवेश पूजिता । चं छं जं झं ञं मे पातु वक्षो वक्षः - स्थलाश्रया ॥६॥
टं ठं डं ढं णं पायान्मे पार्श्वौ पार्श्व - निवासिनी । तं थं दं धं नं मे पातु मध्ये लोकेश पूजिता ॥७॥
पं फं बं भं मं पायान्मे नाभिं ब्रह्मेश सेविता । यं रं लं वं पातु गुह्यं नितम्बप्रिय वादिनी ॥८॥
शं षं सं हं कटिं पातु देवी श्रीबगलामुखी । ऊरू ळं क्षं सदा पातु सर्वा विद्याप्रदा शिवा ॥९॥
सरस्वती पातु जङ्घे रमेश्वर प्रपूजिता । ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं पातु पादौ पादपीठ निवासिनी ॥१०॥
विस्मारितं च यत् स्थानं यद्देशो नामवर्जितः । तत्सर्वं पातु वागेशी मूल - विद्यामयी परा ॥११॥
पूर्वे मां पातु वाग्देवी वागेशी वह्निके च माम् । सरस्वती दक्षिणे च नैर्ऋत्ये चानल प्रिया ॥१२॥
पश्चिमे पातु वागीशी वायौ वेणामुखी तथा । उत्तरे पातुविद्या चैशान्यां विद्याधरी तथा ॥१३॥
असिताङ्गो जलात् पातु पयसो रुरु भैरवः । चण्डश्च पातु वातान्मे क्रोधेशः पातु धावतः ॥१४॥
उन्मत्तस्तिष्ठतः पातु भीषणश्चाग्रतोऽवतु । कपाली मार्ग - मध्ये च संहारश्च प्रवेशतः ॥१५॥
पादादि - मूर्ध पर्यन्तं वपुः सर्वत्र मेऽवतु । शिरसः पाद पर्यन्तं देवी सरस्वती मम ॥१६॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं कवचं वाणी मन्त्र - गर्भं जयावहम् । त्रैलोक्य मोहनं नाम, दारिद्र्य भय नाशनम् ॥१॥
सर्वरोग - हरं साक्षात् सिद्धिदं पापनाशनम् । विद्याप्रदं साधकानां मूलविद्यामयं परम् ॥२॥
परमार्थप्रदं नित्यंभोग मोक्षैक - कारणम् । यः पठेत् कवचं देवि! विवादे शत्रुसङ्कटे ॥३॥
वादिमुखं स्तम्भयित्वा विजयी गृहमेष्यति । पठनात् कवचस्यास्य राज्यकोपः प्रशाम्यति ॥४॥
त्रिवारं यः पठेद् रात्रौ श्मशाने सिद्धिमाप्नुयात् । रसैर्भूर्जे लिखेद् वर्म रविवारे महेश्वरि ॥५॥
अष्टगन्धैर्लाक्षया च धूप दीपादि तर्पणैः । सुवर्णगुटिकां तत्स्थां पूजयेत् यन्त्रराजवत् ॥६॥
गुटिकैषा महारूपा शुभासरस्वती प्रदा । सर्वार्थ - साधनी लोके यथाऽभीष्टफलप्रदा ॥७॥
गुटिकेयं शुभा देव्या न देया यस्य कस्यचित् । इदं कवचमीशानि मूलविद्यामयं ध्रुवम् ॥८॥

विद्याप्रदं श्रीपदं च पुत्रपौत्र विवर्द्धनम् । आयुष्करं पुष्टिकरं, श्रीकरं च यशःप्रदम् ॥९॥
इतीदं कवचं देवि! त्रैलोक्य मोहनाभिधम् । कवचं मन्त्रगर्भं तु गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१०॥

॥श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्या रहस्ये सरस्वती कवचम्॥

॥ श्रीसरस्वती स्तोत्रम् ॥

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली - भासैव दासीकृतदुग्ध - सिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दित - शारदेन्दुं वन्देऽरविन्दासन सुन्दरि! त्वाम् ॥१॥
वीणाधरे विपुल मङ्गलदानशीले! भक्तार्तिनाशिनि! विरञ्चिहरीशवन्द्ये! ।
कीर्त्तिप्रदेऽखिल मनोरथदे! महार्हे! विद्याप्रदायिनि! सरस्वति! नौमि नित्यम् ॥२॥
श्वेताब्जपूर्ण विमलासन संस्थिते, हे! श्वेताम्बरावृत मनोहरमञ्जु गात्रे !
उद्यन्मनोज्ञसित - पङ्कज - मञ्जुलास्ये! विद्या प्रदायिनि! सरस्वति! नौमि नित्यम् ॥३॥
मातस्त्वदीय पदपङ्कज भक्तियुक्ता, ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान् विहाय ।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण भू वह्निवायु गगनाम्बु - विनिर्मितेन ॥४॥
मोहान्धकार - भरिते हृदये मदीये मातः! सदैव कुरु वासमुदारभावे ।
स्वीयाखिलावयव निर्मल सुप्रभाभि, शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ॥५॥
ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः, शम्भुर्विनाशयति देवि! तव प्रभावैः ।
न स्यात् कृपा यदि तव प्रकट प्रभावे! न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्य दक्षाः ॥६॥
सरस्वतिमहाभागे! विद्येकमललोचने! विद्यारूपे! विशालाक्षि! विद्यांदेहि नमोऽस्तु ते ॥७॥

॥इति सरस्वति स्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

॥ श्री महासरस्वती सूक्तम् ॥

ॐ हसौं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ह्रीं तत्सवितुः ह्रीं वरेण्यं ह्रीं भर्गो देवस्य क्लीं धीमहि क्लीं धियो यो नः क्लीं प्रचोदयादात्मिके ह्रीं प्रणव शिरसात्मिके हूँ फट् स्वाहा ॐ हसौं ॐ नमः। ॐ क्लां ॐ क्लीं ॐ क्लूं ॐ क्लैं ॐ क्लौं ॐ क्लः। एभि वींजैः षट् करन्यासाः। षट् हृदयादि न्यासाश्च। ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता। मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमा वाराधीर्म एधि वेदस्यम आणिस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीरनेनाधीहोरात्रात् संदधाम्यृतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि तन्माम वतुत द्वक्तारमवतु अवतुमाम अवतुवक्तारं अवतुवक्तारं ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री महासरस्वती सूक्तस्य ॐ ब्रह्मा ऋषिः। ॐ त्रिष्टुप् छन्दः। ॐ महा सरस्वती देवता। ॐ ॐ बीजम्। ॐ क्लीं महा सरस्वती शक्तिः। ॐ क्लीं स्वाहा कीलकम्। ॐ श्रीं सप्तशती दुर्गा पाठादौ महासरस्वती सूक्त परायणे विनियोगः ॥

यह स्तोत्र ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ से लोम विलोम संपुटित है।

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॥

गौरी देह समुद्भवां शशिधरां क्लीं सात्विकीं सत्प्रियाम्,
बाणं मूशल छत्र शूल वरदान् शंखं च घंटां करैः ।
विभ्राणां हलकार्मुके सुविलसत्सौंदर्य रूपां - पराम्,
पद्मामां हि निशुंभशुंभ मथिनीं वंदे महाशारदाम् ॥

ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥१॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॥ कारुण्य कोमल कटाक्ष विराजमाने संसार तारिणि शिवे सकलोघ हंत्रि। त्वां देवि वंदित पदाममरादि भूतां वागीश्वरी महमनन्त गुणां श्रयामि। ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥२॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॥ ॐ कलातीतां कलामालां सारा सार निषेविताम्। अमोघां सहमोघां च ब्रजामि शरणं गिराम् ॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥३॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॥ धात्रीं विधात्रीं कल्याणीं धरां धारण सूक्षमाम्। अवियोनिमनिघ्नां च वाचं त्वां शरणं ब्रजे॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥ ॥४॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॥ अजां पुराणीं ममृताम द्वितीयां सनातनीम्। वरां वरेण्यां वरदां वर श्रेष्ठां वर प्रियाम्। ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥ ॥५॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ॥ शुभां सरस्वतीं देवीं सच्चिदानंद रूपिणीम्। शरणागत वात्सल्ये त्वाम हं शरणं ब्रजे॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥६॥

॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ऋषिरुवाच ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥७॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॥ भूयः श्रृणु महाभाग देवी माहात्म्य मुत्तमम्। बिना येन स्त वश्यायं निर्जीवो नृप नंदनः ॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥॥८॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ दृष्ट्वा शुंभं विनिहतं दारु णं देव कंटकम्। आजग्मुः परमानंदाद ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥॥९॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ देव्याः स्तुतिं समाधातुं गतास्त ल्लक्ष्य संयुताः। आज्ञा मादाय देवेश्याः कर्तुं दर्शन मादरात् ॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥१०॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ बद्धांजलि पुटाः साक्षातुष्टुवुः क्रमशः शिवाम्। लोकानां च हितार्थाय देवी सूक्तानि पार्थिव ॥ ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥११॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ब्रह्मोवाच ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥१२॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ

अजां पुराणी ममरां सनातनीं, चतुर्भुजां पुस्तकिकाक्ष धारिणीम्।
वराभयाभ्यां मनु शोभिहस्तां, नमामितां जाड्य जटा विनाशिनीम् ॥

ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥ १३॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ

सरस्वतीं त्वामनु नौमि वाचो, वरप्रदां हंस वराधिरूढाम् ।
मुक्तामणि - द्योतित - कंठ - हारां, भाग्यै कलभ्यां परमां पवित्राम् ॥

ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥१४॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ श्री कंठ शक्ति त्रय शोभ मानां दशारतुर्येणकृतानु रूपाम्। पंचार वासां धृत भू प्रहारां सरस्वतीं त्वां प्रणमामि देवीम् ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥१५॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ कलाद्य मंत्रामधि कोटि वासां विहार यंत्रां विमलैक शोभाम्। स्वच्छाव दातां स्फटिकानु रूपां सरस्वतीं त्वां प्रणमामि

मातः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥१६॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ वाक्कामकामैः परमैः पवित्रैः रमा रमा ह्रीं वरदान दक्षैः। बीजै रमीभिः कपि बीज युक्तैः क्लीं युग्ममिश्रै रिति मंत्र राजः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥१७॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ एकेन चैकेन च युग्मकेन द्वाभ्यामथैके न तथैव शेषैः। करांगलिसैः परमोत्तमोयं निहंति पापानि च साधकानाम् ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥१८॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ हठेन वै शृंखलया च श्रेण्या विधातृ पत्न्या च तथैव वाचा। श्री कीर्तिब्रह्मयादिभिः शोभया चन्या सैरमीभिः पतितो पिशंभुः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥१९॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ द्रव्येण होमात्सकलार्थ सिद्धिः सुकिंशुकैवगिपि सिद्धिमृच्छेत। तैः साकमा ज्येन रमा निवासः सुपाय सेनापि च वेद सिद्धिः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२०॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ न चाम्ब ते महिमानं वदामि सरस्वति प्रथिते लोक मध्ये। जानंति किं बुद बुदा भूमि तोयं जडावयं ब्रह्म हरीश मुख्याः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२१॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ त्वयैव वाचा वयं संवदामो जिघ्राम शतया च तथैव जीवाः। पश्याम हेत्वां हिमातमं हेशि स्पृशाम सांक्षात् त्वयि संयुताः स्मः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२२॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ स्वादं विदाम स्तवशक्तियोगाद् गृह्णीम हेतव शक्तया मृडानि। गच्छा महे तव शक्तेः प्रभावादानंद युक्ता स्तव संनिवेशात् ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२३॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ आत्मा मनस्त्वं त्वमेवा सिदंह स्त्वमेव वैचेन्द्रिय पंचतत्वम्। त्वमेव वै विषयाः शब्द मुख्यांः परावरेषां परमा त्वमेव ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२४॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ ॐ क्लीं रविश्चते। क्लीं चन्द्रमाश्चते। क्लीं ताराश्चते। क्लीं भूमिश्चते। क्लीं जलंचते। क्लीं तेजश्चते। क्लीं वायुः श्चते। क्लीं व्योमश्चते। क्लीं शब्दश्चते। क्लीं स्पर्शश्चते। क्लीं सोमश्चते। क्लीं रसश्चते। क्लीं गंधश्चते। क्लीं प्राणश्चते। क्लीं अपानश्चते। क्लीं व्यानश्चते। क्लीं उदानश्चते। क्लीं समानश्चते। क्लीं नागश्चते। क्लीं कूर्मश्चते। क्लीं कृकलश्चते। क्लीं देवदत्तश्चते। क्लीं धनंजयश्चते। क्लीं आत्माश्चते। क्लीं अन्तरात्मा च ते। क्लीं परमात्मा च ते। क्लीं भूतात्मा च ते। क्लीं ज्ञानात्मा च ते। क्लीं मम चितं त्वय्येव विनिवेश्यतां ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२५॥

ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ यदा न चाण्डं भुवनानि जीवानाहं न विष्णु र्नं च पार्वतीशः। न चेश्वरो नापि सदाशिवश्च त्वमेव चासी रिति वाभ विष्याः ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२६॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ आदि स्त्वमे वासि जगत् त्रयाण्याँ स्वभाव वीर्यादिकं च त्वमेव। त्वमेव विश्वं परमात्म शक्तिर्नमामि ते पाद पीठं सरस्वति ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२७॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ त्वं वेदवाणी निखिलाश्च वेदास्त्वं शब्द शक्तिश्चतथार्थ शक्तिः। त्वं ब्रह्म विद्यापि परावरेशी त्वां ब्रह्मशक्तिं शरणं पपद्ये ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥२८॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ सूक्तं न वेदं सुभगं सरस्वती प्रातश्च मध्यान्ह काले च सायम्। पठन्ति ये श्रद्धया युक्तचितास्ते भोग मोक्षौ सहसा लभन्ते ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥ २९॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ इदं पुराणं विरजं सुधामयं सुत त्वभूत जगतांत्रयाणाम् ते प्राप्नुवंति प्रकट प्रभावारुवां सर्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥३०॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ चतुर्मुखमुखाम्भोज वनहंस वधूर्मम। मानसे रमताँ नित्यं सर्व शुक्ला-सरस्वती ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥३१॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुर वासिनी। त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहिमे ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥३२॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ अक्ष सूत्रांऽकुशधरा पाश पुस्तक धारिणी। मुक्ताहार समायुक्ता वाचि निष्ठतु मे सदा ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥३३॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता। महासरस्वती देवीं जिह्वां मे सन्निवेश्यताम् ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ॥३४॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ या श्रद्धा धारणा मेधा

वाग्देवी विधि वत्सला। भक्त जिह्वाग्र सदना शमादिगुण दायिनी ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥३५॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ नमामि यामिनीनाथ लेखालंकृतकुंडला। भवानी भव संताप निर्वारण सुधा नदी ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥३६॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ यः कवित्वं निरातंकं भुक्ति मुक्तिं च वाञ्छति। सेऽभ्यर्च्यैनां सर्वश्लोक्यां भक्तया स्तौति सरस्वतीम् ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥३७॥ ॐ क्लीं नमः ॐ क्लीं ॐ तस्यैवं स्तुवतो नित्यं समभ्यर्च्य सरस्वतीम्। भक्ति श्रद्धाभि युक्तस्य षणमासात्प्रत्ययौ भवेत् ॐ क्लीं ॐ मः न क्लीं ॐ ॥३८॥ ॥ॐ वाङ्मे मनसि0॥

॥ इति श्री महा सरस्वती सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीसरस्वती सहस्त्र नामावलि ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रीमच्चन्दन - चर्चितोज्ज्वल - वपुः शुक्लाम्बरा मल्लिका-
माला - लालित - कुन्तला प्रविलसन्मुक्तावली - शोभना ।
सर्वज्ञान - निधान - पुस्तकधरा रुद्राक्ष - मालाङ्किता
वाग्देवी वदनाम्बुजे वसतु मे त्रैलोक्यमाता शुभा ॥

ॐ वाचे नमः ॐ वाण्यै नमः ॐ वरदायै नमः ॐ वन्द्यायै नमः ॐ वरारोहायै नमः ॐ वरप्रदायै नमः ॐ वृत्त्यै नमः ॐ वागीश्वर्यै नमः ॐ वार्त्तायै नमः ॐ वरायै नमः ॥१०॥ ॐ वागीश वल्लभायै नमः ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ॐ विश्ववन्द्यायै नमः ॐ विश्वेश प्रिय कारिण्यै नमः, ॐ वाग्-वादिन्यै नमः, ॐ वाग्देव्यै नमः, ॐ वृद्धिदायै नमः, ॐ वृद्धिकारिण्यै नमः, ॐ वृद्ध्यै नमः, ॐ वृद्धायै नमः ॥२०॥ ॐ विषघ्न्यै नमः, ॐ वृष्ट्यै नमः, ॐ वृष्टिप्रदायिन्यै नमः, ॐ विश्वाराध्यायै नमः, ॐ विश्व मात्रे नमः, ॐ विश्वधात्र्यै नमः, ॐ विनायकायै नमः, ॐ विश्वशक्त्यै नमः, ॐ विश्व सारायै नमः, ॐ विश्वायै नमः ॥३०॥ ॐ विश्वविभावर्यै नमः, ॐ वेदान्तवेदिन्यै नमः, ॐ वेद्यायै नमः, ॐ वित्तायै नमः, ॐ वेदत्रयात्मिकायै नमः, ॐ वेदज्ञायै नमः, ॐ वेदजनन्यै नमः, ॐ विश्वायै नमः, ॐ विश्वविभावर्यै नमः, ॐ वरेण्यायै नमः ॥४०॥ ॐ वाङ्मयै नमः, ॐ वृद्धायै नमः, ॐ विशिष्टप्रिय कारिण्यै नमः, ॐ विश्वतो वदनायै नमः, ॐ व्याप्तायै नमः, ॐ व्यापिन्यै नमः, ॐ व्यापकात्मिकायै नमः, ॐ व्यालघ्न्यै नमः, ॐ व्यालभूषांग्यै नमः, ॐ विरजायै नमः ॥५०॥ ॐ वेद नायिकायै नमः, ॐ वेदवेदान्त सम्वेद्यायै नमः, ॐ वेदान्त ज्ञानरूपिण्यै नमः, ॐ विभावर्यै नमः, ॐ विक्रान्तायै नमः, ॐ विश्वमित्रायै नमः, ॐ विधिप्रियायै नमः, ॐ वरिष्ठायै नमः, ॐ विप्रकृष्टायै नमः, ॐ विप्रवर्यप्रपूजितायै नमः ॥६०॥ ॐ वेदरूपायै नमः, ॐ वेदमय्यै नमः, ॐ वेदमूर्त्यै नमः, ॐ वल्लभायै नमः, ॐ गौर्यै नमः, ॐ गुणवत्यै नमः, ॐ गोप्यायै नमः, ॐ गन्धर्वनगरप्रियायै नमः, ॐ गुणमात्रे नमः, ॐ गुहान्तस्थायै नमः ॥७०॥ ॐ गुरु रूपायै नमः, ॐ गुरुप्रियायै नमः, ॐ गिरिविद्यायै नमः, ॐ गानतुष्टायै नमः, ॐ गायकप्रिय कारिण्यै नमः, ॐ गायत्र्यै नमः, ॐ गिरिशाराध्यायै नमः, ॐ गिरे नमः, ॐ गिरीशप्रियङ्कर्यै नमः, ॐ गिरिज्ञायै नमः ॥८०॥ ॐ ज्ञान विद्यायै नमः, ॐ गिरिरूपायै नमः, ॐ गिरीश्वर्यै नमः, ॐ गीर्मात्रे नमः, ॐ गणसंस्तुत्यायै नमः, ॐ गणनीय गुणान्वितायै नमः, ॐ गूढरूपायै नमः, ॐ गुहायै नमः, ॐ गोप्यायै नमः, ॐ गोरूपायै नमः ॥९०॥ ॐ गवे नमः, ॐ गुणात्मिकायै नमः, ॐ गुर्व्यै नमः, ॐ गुर्वम्बिकायै नमः, ॐ गुह्यायै नमः, ॐ गेयजायै नमः,

ॐ ग्रहनाशिन्यै नमः, ॐ गृहिण्यै नमः, ॐ गृहदोषघ्न्यै नमः, ॐ गवघ्न्यै नमः ॥१००॥ ॐ गुरु वत्सलायै नमः, ॐ गृहात्मिकायै नमः, ॐ गृहाराध्यायै नमः, ॐ गृहबाधाविनाशिन्यै नमः, ॐ गङ्गायै नमः, ॐ गिरिसुतायै नमः, ॐ गम्यायै नमः, ॐ गजयानायै नमः, ॐ गुहस्तुतायै नमः, ॐ गरुडासन संसेव्यायै नमः ॥११०॥ ॐ गोमत्यै नमः, ॐ गुणशालिन्यै नमः, ॐ शारदायै नमः, ॐ शाश्वत्यै नमः, ॐ शैव्यै नमः, ॐ शाङ्कर्यै नमः, ॐ शङ्करात्मिकायै नमः, ॐ श्रियै नमः, ॐ शर्वाण्यै नमः, ॐ शतघ्न्यै नमः, ॥१२०॥ ॐ शरच्चन्द्र निभाननायै नमः, ॐ शर्मिष्ठायै नमः, ॐ शमनघ्न्यै नमः, ॐ शतसाहस्त्ररूपिण्यै नमः, ॐ शिवायै नमः, ॐ शम्भुप्रियायै नमः, ॐ श्रद्धायैनमः, ॐ श्रुतिरूपायै नमः, ॐ श्रुतिप्रियायै नमः, ॐ शुचिष्मत्यै नमः ॥१३०॥ ॐ शर्मकर्यै नमः, ॐ शुद्धिदायै नमः, ॐ शुद्धिरूपिण्यै नमः, ॐ शिवायै नमः, ॐ शिवङ्कर्यै नमः, ॐ शुद्धायै नमः, ॐ शिवाराध्यायै नमः, ॐ शिवात्मिकायै नमः, ॐ श्रीमत्यै नमः, ॐ श्रीमय्यै नमः ॥१४०॥ ॐ श्राव्यायै नमः, ॐ श्रुत्यै नमः, ॐ श्रवणगोचरायै नमः, ॐ शान्त्यै नमः, ॐ शान्तिकर्यै नमः, ॐ शान्तायै नमः, ॐ शान्ताचार प्रियङ्कर्यै नमः, ॐ शीललभ्यायै नमः, ॐ शीलवत्यै नमः, ॐ श्रीमात्रे नमः ॥१५०॥ ॐ शुभकारिण्यै नमः, ॐ शुभवाण्यै नमः, ॐ शुद्धविद्यायै नमः, ॐ शुद्धचित्तप्रपूजितायै नमः, ॐ श्रीकर्यै नमः, ॐ श्रुतपापघ्न्यै नमः, ॐ शुभाक्ष्यै नमः, ॐ शुचिवल्लभायै नमः, ॐ शिवेतरघ्न्यै नमः, ॐ शर्वर्यै नमः ॥१६०॥ ॐ श्रवणीयगुणान्वितायै नमः, ॐ शार्यै नमः, ॐ शिरीषपुष्पाभायै नमः, ॐ शमनिष्ठायै नमः, ॐ शमात्मिकायै नमः, ॐ शमान्वितायै नमः, ॐ शमाराध्यायै नमः, ॐ शितिकण्ठप्रपूजितायै नमः, ॐ शुद्ध्यै नमः, ॐ शुद्धिकर्यै नमः ॥१७०॥ ॐ श्रेष्ठायै नमः, ॐ श्रुतानन्तायै नमः, ॐ शुभावहायै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ सर्वज्ञायै नमः, ॐ सर्वसिद्धिप्रदायिन्यै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ सावित्र्यैनमः, ॐ सन्ध्यायै नमः, ॐ सर्वेप्सितप्रदायै नमः ॥१८०॥ ॐ सर्वार्तिघ्न्यै नमः, ॐ सर्वमय्यै नमः, ॐ सर्वविद्या प्रदायिन्यै नमः, ॐ सर्वेश्वर्यै नमः, ॐ सर्वपुण्यायै नमः, ॐ सर्गस्थित्यन्त कारिण्यै नमः, ॐ सर्वाराध्यायै नमः, ॐ सर्वमात्रे नमः, ॐ सर्वदेवनिषेवितायै नमः, ॐ सर्वैश्वर्य प्रदायै नमः ॥१९०॥ ॐ सत्यायै नमः, ॐ सत्यै नमः, ॐ सत्वगुणाश्रयायै नमः, ॐ स्वरक्रमपदाकारायै नमः, ॐ सर्वदोष निषूदिन्यै नमः, ॐ सहस्त्राक्ष्यै नमः, ॐ सहस्त्रास्यायै नमः, ॐ सहस्त्रपदसंयुतायै नमः, ॐ सहस्त्रहस्तायै नमः, ॐ सहस्त्र गुणालंकृत विग्रहायै नमः ॥२००॥ ॐ सहस्त्रशीर्षायै नमः, ॐ सद्रूपायै नमः, ॐ स्वधायै नमः, ॐ स्वाहायै नमः, ॐ सुधामय्यै नमः, ॐ षड्ग्रन्थिभेदिन्यै नमः, ॐ सेव्यायै नमः, ॐ सर्वलोकैक पूजितायै नमः, ॐ स्तुत्यायै नमः, ॐ स्तुतिमयायै नमः ॥२१०॥ ॐ साध्यायै नमः, ॐ सवितृप्रिय कारिण्यै नमः, ॐ संशयच्छेदिन्यै नमः, ॐ सांख्यवेद्यायै नमः, ॐ संख्यायै नमः, ॐ नदीश्वर्यै नमः, ॐ सिद्धिदायै नमः, ॐ सिद्धिसम्पूज्यायै नमः, ॐ सर्वसिद्धि प्रदायिन्यै नमः, ॐ सर्वज्ञायै नमः, ॥२२०॥ ॐ सर्वशक्त्यै नमः, ॐ सर्वसम्पत् प्रदायिन्यै नमः, ॐ सर्वाशुभघ्न्यै नमः, ॐ सुखदायै नमः, ॐ सुखायै नमः, ॐ संवित्स्वरूपिण्यै नमः, ॐ सर्वसम्भीषण्यै नमः, ॐ सर्वजगत्सम्मोहिन्यै नमः, ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः, ॐ सर्वशुभदायै नमः, ॥२३०॥ ॐ सर्वमङ्गलायै नमः, ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः, ॐ सर्वतीर्थपुण्य फलप्रदायै नमः ॐ सर्वपुण्यमय्यै नमः, ॐ सर्वव्याधिघ्न्यै नमः, ॐ सर्वकामदायै नमः, ॐ सर्वविघ्नहर्यैनमः, ॐ सर्ववन्दितायै नमः, ॐ सर्वमङ्गलायै नमः, ॐ सर्वमन्त्रकर्यै नमः, ॥२४०॥ ॐ सर्वलक्ष्म्यै नमः, ॐ सर्वगुणान्वितायै नमः, ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः, ॐ सर्व ज्ञानदायै नमः, ॐ सत्यनायिकायै नमः, ॐ सर्वज्ञानमय्यै नमः, ॐ सर्वराज्यदायै नमः, ॐ सर्वमुक्तिदायै नमः, ॐ सुप्रभायै नमः, ॐ सर्वदायै नमः ॥२५०॥, ॐ सर्वायै नमः, ॐ सर्वलोकवशङ्कर्यै नमः, ॐ सुभगायै नमः, ॐ सुन्दर्यै नमः, ॐ सिद्धायै नमः, ॐ सिद्धाम्बायै नमः, ॐ सिद्धमातृकायै नमः, ॐ सिद्धमात्रे नमः, ॐ सिद्धविद्यायै नमः, ॐ

सिद्धेश्यै नमः ॥२६०॥ ॐ सिद्धरूपिण्यै नमः, ॐ सुरूपिण्यै नमः, ॐ सुखमय्यै नमः, ॐ सेवकप्रिय कारिण्यै नमः, ॐ स्वामिन्यै नमः, ॐ सर्वदायै नमः, ॐ सेव्यायै नमः, ॐ स्थूलसूक्ष्मापराम्बिकायै नमः, ॐ साररूपायै नमः, ॐ सरोरूपायै नमः ॥२७०॥ ॐ सत्यभूतायै नमः, ॐ समाश्रयायै नमः, ॐ सितासितायै नमः, ॐ सरोजाक्ष्यै नमः, ॐ सरोजासनवल्लभायै नमः, ॐ सरोरुहाभायै नमः, ॐ सर्वांग्यै नमः, ॐ सुरेन्द्रादि प्रपूजितायै नमः, ॐ महादेव्यै नमः, ॐ महेशान्यै नमः ॥२८०॥ ॐ महासारस्वत प्रदायै नमः, ॐ महासरस्वत्यै नमः, ॐ मुक्तायै नमः, ॐ मुक्तिदायै नमः, ॐ मलनाशिन्यै नमः, ॐ महेश्वर्यै नमः, ॐ महानन्दायै नमः, ॐ महामन्त्रमय्यै नमः, ॐ मह्यै नमः, ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥२९०॥ ॐ महाविद्यायै नमः, ॐ मात्रे नमः, ॐ मन्दारवासिन्यै नमः, ॐ मन्त्रगम्यायै नमः, ॐ मन्त्रमात्रे नमः, ॐ महामन्त्र फलप्रदायै नमः, ॐ महामुक्त्यै नमः, ॐ महानित्यायै नमः, ॐ महासिद्धिप्रदायिन्यै नमः, ॐ महासिद्धायै नमः ॥३००॥ ॐ महामात्रे नमः, ॐ महदाकारसंयुतायै नमः, ॐ महायै नमः, ॐ महेश्वर्यै नमः, ॐ मूर्त्यै नमः, ॐ मोक्षदायै नमः, ॐ मणिभूषणायै नमः, ॐ मेनकायै नमः, ॐ मानिन्यै नमः, ॐ मान्यायै नमः ॥३१०॥ ॐ मृत्युघ्न्यै नमः, ॐ मेरुरूपिण्यै नमः, ॐ मदिराक्ष्यै नमः, ॐ मदावासायै नमः, ॐ मखरूपायै नमः, ॐ मखेश्वर्यै नमः, ॐ महामोहायै नमः, ॐ महामायायै नमः, ॐ मातृणां मूर्ध्नि संस्थितायै नमः, ॐ महापुण्यायै नमः ॥३२०॥ ॐ मुदावासायै नमः, ॐ महासम्पत् प्रदायिन्यै नमः, ॐ मणिपूरैक निलयायै नमः, ॐ मधुरूपायै नमः, ॐ महोत्कटायै नमः, ॐ महासूक्ष्मायै नमः, ॐ महाशान्तायै नमः, ॐ महाशान्ति प्रदायिन्यै नमः, ॐ मुनिस्तुतायै नमः, ॐ मोह हन्त्र्यै नमः ॥३३०॥ ॐ माधव्यै नमः, ॐ माधवप्रियायै नमः, ॐ मायायै नमः, ॐ महादेव संस्तुत्यायै नमः, ॐ महिषीगण पूजितायै नमः, ॐ मृष्टान्नदायै नमः, ॐ महेन्द्र्यै नमः, ॐ महेन्द्रपद दायिन्यै नमः, ॐ मत्यै नमः, ॐ मतिप्रदायै नमः ॥३४०॥ ॐ मेधायैनमः, ॐ मर्त्यलोक निवासिन्यै नमः, ॐ मुख्यायै नमः, ॐ महानिवासिन्यै नमः, ॐ महाभाग्य जनाश्रितायै नमः, ॐ महिलायै नमः, ॐ महिमायै नमः, ॐ मृत्युहार्यै नमः, ॐ मेधाप्रदायिन्यै नमः, ॐ मेध्यायै नमः ॥३५०॥ ॐ महावेगवत्यै नमः, ॐ महामोक्ष फलप्रदायै नमः, ॐ महाप्रभाभायै नमः, ॐ महत्यै नमः, ॐ महादेवप्रियङ्कर्यै नमः, ॐ महापोषायै नमः, ॐ महर्ध्यै नमः, ॐ मुक्ता हार विभूषणायै नमः, ॐ माणिक्यभूषणायै नमः, ॐ मन्त्रायै नमः ॥३६०॥ ॐ मुख्यचन्द्रार्धशेखरायै नमः, ॐ मनोरूपायै नमः, ॐ मनश्शुद्ध्यै नमः ॐ मनश्शुद्धिप्रदायिन्यै नमः, ॐ महाकारुण्य सम्पूर्णायै नमः, ॐ मनोनमनवन्दितायै नमः, ॐ महापातक जालघ्न्यै नमः, ॐ मुक्तिदायै नमः, ॐ मुक्तभूषणायै नमः, ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥३७०॥ ॐ महास्थूलायै नमः, ॐ महाक्रतु फलप्रदायै नमः, ॐ महापुण्यफल प्राप्यायै नमः, ॐ माया त्रिपुरनाशिन्यै नमः, ॐ महानसायै नमः, ॐ महामेधायै नमः, ॐ महामोदायै नमः, ॐ महामहेश्वर्यै नमः, ॐ मालाधर्यै नमः, ॐ महोपायायै नमः ॥३८०॥ ॐ महातीर्थफलप्रदायै नमः, ॐ महामङ्गलसर्म्पूणायै नमः, ॐ महादारिद्र्यनाशिन्यै नमः, ॐ महामखायै नमः, ॐ महामेधायै नमः, ॐ महाकाल्यै नमः, ॐ महाप्रियायै नमः, ॐ महाभूषायै नमः, ॐ महादेहायै नमः, ॐ महाराज्ञ्यै नमः ॥३९०॥ ॐ मुदालयायै नमः, ॐ भूरिदायै नमः, ॐ भाग्यदायै नमः, ॐ भोग्यायै नमः, ॐ भोग्यदायै नमः, ॐ भोगदायिन्यै नमः, ॐ भवान्यै नमः, ॐ भूतिदायै नमः, ॐ भूत्यै नमः, ॐ भूम्यै नमः ॥४००॥ ॐ भूमिसुनायिकायै नमः, ॐ भूतधात्र्यै नमः, ॐ भयहर्यै नमः, ॐ भक्तसारस्वत प्रदायै नमः, ॐ भुक्त्यै नमः, ॐ भुक्तिप्रदायै नमः, ॐ भेक्यै नमः, ॐ भक्त्यै नमः, ॐ भक्ति प्रदायिन्यै नमः, ॐ भक्तसायुज्यदायै नमः ॥४१०॥ ॐ भक्तस्वर्गदायै नमः, ॐ भक्तराज्यदायै नमः, ॐ भागीरथ्यै नमः, ॐ भवाराध्यायै नमः, ॐ भाग्यसज्जन पूजितायै नमः, ॐ भवस्तुत्यायै नमः, ॐ भानुमत्यै नमः, ॐ भवसागरतारण्यै नमः, ॐ भूत्यै नमः, ॐ भूषायै नमः ॥४२०॥ ॐ भूतेश्यै नमः, ॐ भाललोचन पूजितायै नमः, ॐ भूतायै

नमः, ॐ भव्यायै नमः, ॐ भविष्यायै नमः, ॐ भवविद्यायै नमः, ॐ भवात्मिकायै नमः, ॐ बाधापहारिण्यै नमः, ॐ बन्धुरूपायै नमः, ॐ भुवनपूजितायै नमः ॥४३०॥ ॐ भवघ्न्यै नमः, ॐ भक्तिलभ्यायै नमः, ॐ भक्तरक्षण तत्परायै नमः, ॐ भक्तार्तिशमन्यै नमः, ॐ भाग्यायै नमः, ॐ भोगदानकृतोद्यमायै नमः, ॐ भुजङ्गभूषणायै नमः, ॐ भीमायै नमः, ॐ भीमाक्ष्यै नमः, ॐ भीमरूपिण्यै नमः ॥४४०॥ ॐ भाविन्यै नमः, ॐ भ्रातृरूपायै नमः, ॐ भारत्यै नमः, ॐ भवनायिकायै नमः, ॐ भाषायै नमः, ॐ भाषावत्यै नमः, ॐ भीष्मायै नमः, ॐ भैरव्यै नमः, ॐ भैरवप्रियायै नमः, ॐ भूत्यै नमः ॥४५०॥ ॐ भासितसर्वाङ्ग्यै नमः, ॐ भूतिदायै नमः, ॐ भूतिनायिकायै नमः, ॐ भास्वत्यै नमः, ॐ भगमालायै नमः, ॐ भिक्षादानकृतोद्यमायै नमः, ॐ भिक्षुरूपायै नमः, ॐ भक्तिकर्यै नमः, ॐ भक्तलक्ष्मी प्रदायिन्यै नमः, ॐ भ्रान्तिघ्नायै नमः ॥४६०॥ ॐ भ्रान्तिरूपायै नमः, ॐ भूतिदायै नमः, ॐ भूतिकारिण्यै नमः, ॐ भिक्षणीयायै नमः, ॐ भिक्षुमात्रे नमः, ॐ भाग्यवद्दृष्टिगोचरायै नमः, ॐ भोगवत्यै नमः, ॐ भोगरूपायै नमः, ॐ भोगमोक्ष फलप्रदायै नमः, ॐ भोगश्रान्तायै नमः ॥४७०॥ ॐ भाग्यवत्यै नमः, ॐ भक्ताघौघ विनाशिन्यै नमः, ॐ ब्राह्म्यै नमः, ॐ ब्रह्मस्वरूपायै नमः, ॐ बृहत्यै नमः, ॐ ब्रह्मवल्लभायै नमः, ॐ ब्रह्मदायै नमः, ॐ ब्रह्ममात्रे नमः, ॐ ब्रह्माण्यै नमः, ॐ ब्रह्मदायिन्यै नमः ॥४८०॥ ॐ ब्रह्मेश्यै नमः, ॐ ब्रह्मसंस्तुत्यायै नमः, ॐ ब्रह्मवेद्यायै नमः, ॐ बुधप्रियायै नमः, ॐ बालेन्दु शेखरायै नमः, ॐ बालायै नमः, ॐ बलिपूजाकर प्रियायै नमः, ॐ बलदायै नमः, ॐ बिन्दुरूपायै नमः, ॐ बालसूर्यसमप्रभायै नमः ॥४९०॥ ॐ ब्रह्म रूपायै नमः, ॐ ब्रह्ममय्यै नमः, ॐ ब्रध्नमण्डल मध्यगायै नमः, ॐ ब्रह्माण्यै नमः, ॐ बुद्धिदायै नमः, ॐ बुद्धये नमः, ॐ बुद्धिरूपायै नमः, ॐ बुधेश्वर्यै नमः, ॐ बन्धक्षय कर्यै नमः, ॐ बन्धनाशिन्यै नमः ॥५००॥ ॐ बन्धुरूपिण्यै नमः, ॐ बिन्द्वालयायै नमः, ॐ बिन्दुभूषायै नमः, बिन्दुनाद समन्वितायै नमः, ॐ बीजरूपायै नमः, ॐ बीजमात्रे नमः, ॐ ब्रह्मण्यायै नमः, ॐ ब्रह्मकारिण्यै नमः, ॐ बहुरूपायै नमः, ॐ बलवत्यै नमः ॥५१०॥ ॐ ब्रह्मजायै नमः, ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः, ॐ ब्रह्मस्तुत्यायै नमः, ॐ ब्रह्मविद्यायै नमः, ॐ ब्रह्माण्डाधिप वल्लभायै नमः, ॐ ब्रह्मेश विष्णुरूपायै नमः, ॐ ब्रह्मविष्ण्वीश संस्थितायै नमः, ॐ बुद्धिरूपायै नमः, ॐ बुधेशान्यै नमः, ॐ बन्ध्यै नमः ॥५२०॥ ॐ बन्धविमोचन्यै नमः, ॐ अक्षमालायै नमः, ॐ अक्षराकारायै नमः, ॐ अक्षरायै नमः, ॐ अक्षरफलदायै नमः, ॐ अनन्तायै नमः, ॐ आनन्दसुखदायै नमः, ॐ अनन्त चन्द्रनिभाननायै नमः, ॐ अनन्त महिमायै नमः, ॐ अघोरायै नमः ॥५३०॥ ॐ अनन्तगम्भीर सम्मितायै नमः, ॐ अदृष्टायै नमः, ॐ अदृष्टदायै नमः, ॐ अनन्तायै नमः, ॐ अदृष्टभाग्यफल प्रदायै नमः, ॐ अरुन्धत्यै नमः, ॐ अव्ययी नाथायै नमः, ॐ अनेक सद्गुणसंयुतायै नमः, ॐ अनेक भूषणायै नमः, ॐ अदृश्यायै नमः ॥५४०॥ ॐ अनेक लेख निषेवितायै नमः, ॐ अनन्तायै नमः, ॐ अनन्तसुखदायै नमः, ॐ अघोरायै नमः, ॐ अघोरस्वरूपिण्यै नमः, ॐ अशेष देवता रूपायै नमः, ॐ अमृतरूपायै नमः, ॐ अमृतेश्वर्यै नमः, ॐ अनवद्यायै नमः, ॐ अनेक हस्तायै नमः ॥५५०॥ ॐ अनेकमाणिक्य भूषणायै नमः, ॐ अनेक विघ्नसंहर्त्र्यै नमः, ॐ अनेकाभरणान्वितायै नमः, ॐ अविद्यायै नमः, ॐ अज्ञान संहर्त्र्यै नमः, ॐ अविद्याजाल नाशिन्यै नमः, ॐ अभिरूपायै नमः, ॐ अनवद्याङ्ग्यै नमः, ॐ अप्रतर्क्य गतिप्रदायै नमः, ॐ अकलङ्कारूपिण्यै नमः ॥५६०॥ ॐ अनुग्रहपरायणायै नमः, ॐ अम्बरस्थायै नमः, ॐ अम्बरमयायै नमः, ॐ अम्बरमालायै नमः, ॐ अम्बुजेक्षणायै नमः, ॐ अम्बिकायै नमः, ॐ अब्जकरायै नमः, ॐ अब्जस्थायै नमः, ॐ अंशुमत्यै नमः, ॐ अंशुशतान्वितायै नमः ॥५७०॥ ॐ अम्बुजायै नमः, ॐ अनवरायै नमः, ॐ अखण्डायै नमः, ॐ अम्बुजासन महाप्रियायै नमः, ॐ अजरामरसंसेव्यायै नमः, ॐ अजरसेवितपद युगायै नमः, ॐ अतुलार्थ प्रदायै नमः, ॐ अर्थैक्यायै नमः, ॐ

अत्युदारायै नमः, ॐ अभयान्वितायै नमः ॥५८०॥ ॐ अनाथवत्सलायै नमः, ॐ अनन्तप्रियायै नमः, ॐ अनन्तेप्सितप्रदायै नमः, ॐ अम्बुजाक्ष्यै नमः, ॐ अम्बुरूपायै नमः, ॐ अम्बुजातोद्भव महाप्रियायै नमः, ॐ अखण्डायै नमः, ॐ अमरस्तुत्यायै नमः, ॐ अमर नायकपूजितायै नमः, ॐ अजेयायै नमः ॥५९०॥ ॐ अजसङ्काशायै नमः, ॐ अज्ञान नाशिन्यै नमः, ॐ अभीष्टदायै नमः, ॐ अक्तायै नमः, ॐ अघनेनायै नमः, ॐ अस्त्रेश्यै नमः, ॐ अलक्ष्मी नाशिन्यै नमः, ॐ अनन्तसारायै नमः, ॐ अनन्तश्रिये नमः, ॐ अनन्तविधि पूजितायै नमः ॥६००॥ ॐ अभीष्टायै नमः, ॐ अमर्त्यसम्पूज्यायै नमः, ॐ अस्तोदय विवर्जितायै नमः, ॐ आस्तिकस्वान्त निलयायै नमः, ॐ अस्त्ररूपायै नमः, ॐ अस्त्रवत्यै नमः, ॐ अस्खलत्यै नमः, ॐ अस्खलद्रूपायै नमः, ॐ अस्खलद्विद्या प्रदायिन्यै नमः, ॐ अस्खलत्सिद्धिदायै नमः ॥६१०॥ ॐ आनन्दायै नमः, ॐ अम्बुजायै नमः, ॐ अमरनायिकायै नमः, ॐ अमेयायै नमः, ॐ अशेषपापघ्न्यै नमः, ॐ अक्षय सारस्वतप्रदायै नमः, ॐ जयायै नमः, ॐ जयन्त्यै नमः, ॐ जयदायै नमः, ॐ जन्मकर्म विवर्जितायै नमः ॥६२०॥ ॐ जगत्प्रियायै नमः, ॐ जगन्मात्रे नमः, ॐ जगदीश्वर वल्लभायै नमः, ॐ जात्यै नमः, ॐ जयायै नमः, ॐ जितामित्रायै नमः, ॐ जप्यायै नमः, ॐ जपनकारिण्यै नमः, ॐ जीवन्यै नमः, ॐ जीवनिलयायै नमः ॥६३०॥ ॐ जीवाख्यायै नमः, ॐ जीवधारिण्यै नमः, ॐ जाह्नव्यै नमः, ॐ ज्यायै नमः, ॐ जपवत्यै नमः, ॐ जातिरूपायै नमः, ॐ जयप्रदायै नमः, ॐ जनार्दन प्रियकर्यै नमः, ॐ जोषनीयायै नमः, ॐ जगत्स्थितायै नमः ॥६४०॥ नमः, ॐ जगज्ज्येष्ठायैनमः, ॐ जगन्मायायै नमः, ॐ जीवनत्राणकारिण्यै नमः, ॐ जीवातुलतिकायै नमः, ॐ जीवजन्म्यै नमः, ॐ जन्मनिबर्हण्यै नमः, ॐ जाड्य विध्वंसनकर्यै नमः, ॐ जगद्योनये नमः, ॐ जयात्मिकायै नमः, ॐ जगदानन्द जनन्यै नमः ॥६५०॥ ॐ जम्ब्वै नमः, ॐ जलजेक्षणायै नमः, ॐ जयन्त्यै नमः, ॐ जङ्गपूगघ्न्यै नमः, ॐ जनितज्ञान विग्रहायै नमः, ॐ जटायै नमः, ॐ जटावत्यै नमः, ॐ जप्यायै नमः, ॐ जपकर्तृप्रियङ्कर्यै नमः, ॐ जपकृत्पापसंहर्त्र्यै नमः ॥६६०॥ ॐ जपकृत्फल दायिन्यै नमः, ॐ जपापुष्पसम प्रख्यायै नमः, ॐ जपाकुसुम धारिण्यै नमः, ॐ जनन्यै नमः, ॐ जन्मरहितायै नमः, ॐ ज्योतिर्वृत्यभि दायिन्यै नमः, ॐ जटाजूटन चन्द्रार्धायै नमः, ॐ जगत् सृष्टिकर्यै नमः, ॐ जगत्त्राणकर्यै नमः, ॐ जाड्यध्वंसनकर्त्र्यै नमः ॥६७०॥ ॐ जयेश्वर्यै नमः, ॐ जगद्बीजायै नमः, ॐ जयावासायै नमः, ॐ जन्मभुवे नमः, ॐ जन्मनाशिन्यै नमः, ॐ जन्मान्त्य रहितायै नमः, ॐ जैत्र्यै नमः, ॐ जगद्योनये नमः, ॐ जपात्मिकायै नमः, ॐ जयलक्षण सम्पूर्णायै नमः ॥६८०॥ ॐ जयदानकृतोद्यमायै नमः, ॐ जम्भराद्यादि संस्तुत्यायै नमः, ॐ जम्भारिफल दायिन्यै नमः, ॐ जगत्- त्रय हितायै नमः, ॐ ज्येष्ठायै नमः, ॐ जगत्त्रयवशङ्कर्यै नमः, ॐ जगत्त्रयाम्बायै नमः, ॐ जगत्यै नमः, ॐ ज्वालायै नमः, ॐ ज्वालित लोचनायै नमः ॥६९०॥ ॐ ज्वालिन्यै नमः, ॐ ज्वलनाभासायै नमः, ॐ ज्वलन्त्यै नमः, ॐ ज्वलनात्मिकायै नमः, ॐ जितारातिसुर स्तुत्यायै नमः, ॐ जितक्रोधायै नमः, ॐ जितेन्द्रियायै नमः, ॐ जरामरणशून्यायै नमः, ॐ जनित्र्यै नमः, ॐ जन्मनाशिन्यै नमः ॥७००॥ ॐ जलजाभायै नमः, ॐ जलमय्यै नमः, ॐ जलजासन वल्लभायै नमः, ॐ जलजस्थायै नमः, ॐ जपाराध्यायै नमः, ॐ जनमङ्गल कारिण्यै नमः, ॐ कामिन्यै नमः, ॐ कामरूपायै नमः, ॐ काम्यायै नमः, ॐ कामप्रदायिन्यै नमः ॥७१०॥ ॐ कमाल्यै नमः, ॐ कामदायै नमः, ॐ कर्त्र्यै नमः, ॐ ऋतुकर्म फलप्रदायै नमः, ॐ कृतघ्नघ्न्यै नमः, ॐ क्रियारूपायै नमः, ॐ कार्य कारणरूपिण्यै नमः, ॐ कञ्जाक्ष्यै नमः, ॐ करुणारूपायै नमः, ॐ केवलामर सेवितायै नमः ॥७२०॥ ॐ कल्याण कारिण्यै नमः, ॐ कान्तायै नमः, ॐ कान्तिदायै नमः, ॐ कान्तिरूपिण्यै नमः, ॐ कमलायै नमः, ॐ कमलावासायै नमः, ॐ कमलोत्पल मालिन्यै नमः, ॐ कुमुद्वत्यै नमः, ॐ कल्याण्यै नमः, ॐ कान्त्यै नमः ॥७३०॥ ॐ कामेश वल्लभायै नमः, ॐ कामेश्वर्यै नमः, ॐ कमलिन्यै नमः, ॐ कामदायै नमः, ॐ कामबन्धिन्यै नमः, ॐ कामधेन्वे नमः, ॐ काञ्चनाक्ष्यै नमः,

ॐ काञ्चनाभायै नमः,ॐ कलानिधये नमः, ॐ क्रियायै नमः ॥७४०॥ ॐ कीर्तिकर्यै नमः, ॐ कीर्त्यै नमः, ॐ क्रतुश्रेष्ठायै नमः, ॐ कृतेश्वर्यै नमः, ॐ क्रतुसर्वक्रिया स्तुत्यायै नमः, ॐ क्रतुकृत्प्रिय कारिण्यै नमः, ॐ क्लेशनाश कर्यै नमः, ॐ कर्त्र्यै नमः, ॐ कर्मदायै नमः, ॐ कर्मबन्धिन्यै नमः ॥७५०॥ ॐ कर्मबन्धहर्यै नमः ॐ कृष्टायै नमः, ॐ क्लमघ्न्यै नमः, ॐ कञ्जलोचनायै नमः, ॐ कन्दर्पजनन्यै नमः, ॐ कान्तायै नमः, ॐ करुणायै नमः, ॐ करुणावत्यै नमः, ॐ क्लींकारिण्यै नमः, ॐ कृपाकारायै नमः ॥७६०॥ ॐ कृपासिंधवे नमः, ॐ कृपावत्यै नमः, ॐ करुणार्द्रायै नमः, ॐ कीर्तिकर्यै नमः, ॐ कल्मषघ्न्यै नमः, ॐ क्रियाकर्यै नमः, ॐ क्रियाशक्त्यै नमः, ॐ कामरूपायै नमः, ॐ कमलोत्पल गन्धिन्यै नमः, ॐ कलायै नमः ॥७७०॥ ॐ कलावत्यै नमः, ॐ कूर्म्यै नमः, ॐ कूटस्थायै नमः, ॐ कञ्जसंस्थितायै नमः, ॐ कालिकायै नमः, ॐ कल्मषघ्न्यै नमः, ॐ कमनीय जटान्वितायै नमः, ॐ करपद्मायै नमः, ॐ कराभीष्टप्रदायै नमः, ॐ क्रतुफलप्रदायै नमः ॥७८०॥ ॐ कौशिक्यै नमः, ॐ कोशदायै नमः, ॐ काव्यायै नमः, ॐ कर्त्र्यै नमः, ॐ कोशेश्वर्यै नमः, ॐ कृशायै नमः, ॐ कूर्मयानायै नमः, ॐ कल्पलतायै नमः, ॐ कालकूट विनाशिन्यै नमः, ॐ कल्पोद्यान वत्यै नमः ॥७९०॥ ॐ कल्पवनस्थायै नमः, ॐ कल्पकारिण्यै नमः, ॐ कदम्बकुसुमाभासायै नमः, ॐ कदम्बकुसुम प्रियायै नमः, ॐ कदम्बोद्यान मध्यस्थायै नमः, ॐ कीर्तिदायै नमः, ॐ कीर्तिभूषणायै नमः, ॐ कुलमात्रे नमः, ॐ कुलावासायै नमः, ॐ कुलाचार प्रियङ्कर्यै नमः ॥८००॥ ॐ कुलला नाथायै नमः, ॐ कामकलायै नमः, ॐ कला नाथायै नमः, ॐ कलेश्वर्यै नमः, ॐ कुन्द मन्दार पुष्पाभायै नमः, ॐ कपर्दस्थित चन्द्रिकायै नमः, ॐ कवित्वदायै नमः, ॐ काम्यमात्रे नमः, ॐ कविमात्रे नमः, ॐ कलाप्रदायै नमः ॥८१०॥ ॐ तरुण्यै नमः, ॐ तरुणीतातायै नमः, ॐ ताराधिप समाननायै नमः, ॐ तृप्तये नमः, ॐ तृप्ति प्रदायै नमः, ॐ तर्क्यायै नमः, ॐ तपन्यै नमः, ॐ तापिन्यै नमः, ॐ तर्पण्यै नमः, ॐ तीर्थरूपायै नमः ॥८२०॥ ॐ त्रिदशायै नमः, ॐ त्रिदशेश्वर्यै नमः, ॐ त्रिदिवेश्यै नमः, ॐ त्रिजनन्यै नमः, ॐ त्रिमात्रे नमः, ॐ त्र्यम्बकेश्वर्यै नमः, ॐ त्रिपुरायै नमः, ॐ त्रिपुरेशान्यै नमः, ॐ त्र्यम्बकायै नमः, ॐ त्रिपुराम्बिकायै नमः ॥८३०॥ ॐ त्रिपुरश्रियै नमः, ॐ त्रयीरूपायै नमः, ॐ त्रयीवेद्यायै नमः, ॐ त्रयीश्वर्यै नमः, ॐ त्रय्यन्तवेदिन्यै नमः, ॐ ताम्रायै नमः, ॐ तापत्रितय हारिण्यै नमः, ॐ तमाल सदृश्यै नमः, ॐ त्रात्रे नमः, ॐ तरुणादित्य सन्निभायै नमः ॥८४०॥ ॐ त्रैलोक्य व्यापिन्यै नमः, ॐ तृप्तायै नमः, ॐ तृप्तिकृते नमः, ॐ तत्त्व रूपिण्यै नमः, ॐ तुर्यायै नमः, ॐ त्रैलोक्य संस्तुत्यायै नमः, ॐ त्रिगुणायै नमः, ॐ त्रिगुणेश्वर्यै नमः, ॐ त्रिपुरघ्न्यै नमः, ॐ त्रिमात्रे नमः ॥८५०॥ ॐ त्र्यम्बकायै नमः, ॐ त्रिगुणान्वितायै नमः, ॐ तृष्णाच्छेदकर्यै नमः, ॐ तृप्तायै नमः, ॐ तीक्ष्णायै नमः, ॐ तीक्ष्णस्वरूपिण्यै नमः, ॐ तुलायै नमः, ॐ तुलादि रहितायै नमः, ॐ तत्तद् ब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः, ॐ त्राणकर्त्र्यै नमः ॥८६०॥ ॐ त्रिपापघ्न्यै नमः, ॐ त्रिपदायै नमः, ॐ त्रिदशान्वितायै नमः, ॐ तथ्यायै नमः, ॐ त्रिशक्त्यै नमः, ॐ त्रिपदायै नमः, ॐ तुर्यायै नमः, ॐ त्रैलोक्य सुन्दर्यै नमः, ॐ तेजस्कर्यै नमः, ॐ त्रिमूर्त्याद्यायै नमः ॥८७०॥ ॐ तेजोरूपायै नमः, ॐ त्रिधामतायै नमः, ॐ त्रिचक्र कर्त्र्यै नमः, ॐ त्रिभगायै नमः, ॐ तुर्यातीतफलप्रदायै नमः, ॐ तेजस्विन्यै नमः, ॐ तापहर्यै नमः, ॐ तापोपप्लव नाशिन्यै नमः, ॐ तेजोगर्भायै नमः, ॐ तपस्सारायै नमः ॥८८०॥ ॐ त्रिपुरारि प्रियङ्कर्यै नमः, ॐ तन्व्यै नमः, ॐ तापससन्तुष्टायै नमः, ॐ तपताङ्गज भीतिनुदे नमः, ॐ त्रिलोचनायै नमः, ॐ त्रिमार्गायै नमः, ॐ तृतीयायै नमः, ॐ त्रिदशस्तुतायै नमः, ॐ त्रिसुन्दर्यै नमः, ॐ त्रिपथगायै नमः ॥८९०॥ ॐ तुरीयपद दायिन्यै नमः, ॐ शुभायै नमः, ॐ शुभावत्यै नमः, ॐ शान्तायै नमः, ॐ शन्तिदायै नमः, ॐ शुभदायिन्यै नमः, ॐ शीतलायै नमः, ॐ शूलिन्यै नमः, ॐ शीतायै नमः, ॐ श्रीमत्यै नमः ॥९००॥ ॐ शुभान्वितायै नमः, ॐ योगसिद्धि प्रदायै नमः,

ॐ योग्यायै नमः, ॐ यज्ञेन परिपूरितायै नमः, ॐ यज्यायै नमः, ॐ यज्ञमय्यै नमः, ॐ यक्ष्यै नमः, ॐ यक्षिण्यै नमः, ॐ यक्षिवल्लभायै नमः, ॐ यज्ञप्रियायै नमः ॥९१०॥ ॐ यज्ञपूज्यायै नमः, ॐ यज्ञतुष्टायै नमः, ॐ यमस्तुतायै नमः, ॐ यामिनीय प्रभायै नमः, ॐ याम्यायै नमः, ॐ यजनीयायै नमः, ॐ यशस्कर्यै नमः, ॐ यज्ञकर्त्र्यै नमः, ॐ यज्ञरूपायै नमः, ॐ यशोदायै नमः ॥९२०॥ ॐ यज्ञसंस्तुत्यायै नमः, ॐ यज्ञेश्यै नमः, ॐ यज्ञफलदायै नमः, ॐ योगयोनये नमः, ॐ यजुस्तुतायै नमः, ॐ यमिसेव्यायै नमः, ॐ यमाराध्यायै नमः, ॐ यमिपूज्यायै नमः, ॐ यमीश्वर्यै नमः, ॐ योगिन्यै नमः ॥९३०॥ ॐ योगरूपायै नमः, ॐ योगकर्तृ प्रियङ्कर्यै नमः, ॐ योगयुक्तायै नमः, ॐ योगमय्यै नमः, ॐ योगयोगीश्वराम्बिकायै नमः, ॐ योगज्ञानमय्यै नमः, ॐ योनये नमः, ॐ यमाद्यष्टाङ्गयोग युतायै नमः, ॐ यन्त्रिताघौघ संहारायै नमः, ॐ यमलोक निवारिण्यै नमः ॥९४०॥ ॐ यष्टिव्यष्टीश संस्तुत्यायै नमः, ॐ यमाद्यष्टाङ्ग योगयुजे नमः, ॐ योगीश्वर्यै नमः, ॐ योगमात्रे नमः, ॐ योगसिद्धायै नमः, ॐ योगदायै नमः, ॐ योगारूढायै नमः, ॐ योगमय्यै नमः, ॐ योगरूपायै नमः, ॐ यवीयस्यै नमः ॥९५०॥ ॐ यन्त्ररूपायै नमः, ॐ यन्त्रस्थायै नमः, ॐ यन्त्रपूज्यायै नमः, ॐ यन्त्रितायै नमः, ॐ युगकर्त्र्यै नमः, ॐ युगमयै नमः, युगधर्मविवर्जितायै नमः, ॐ यमुनायै नमः, ॐ यमिन्यै नमः, ॐ याम्यायै नमः ॥९६०॥ ॐ यमुना जल मध्यगायै नमः, ॐ यातायात प्रशमन्यै नमः, ॐ यातनानान्त्रिकृन्तन्यै नमः, ॐ योगावासायै नमः, ॐ योगिवन्द्यायै नमः, ॐ यत्तच्छब्द स्वरूपिण्यै नमः, ॐ योगक्षेममय्यै नमः, ॐ यन्त्रायै नमः, ॐ यावदक्षर मातृकायै नमः, ॐ यावत्पदमय्यै नमः ॥९७०॥ ॐ यावच्छब्द रूपायै नमः, ॐ यथेश्वर्यै नमः, ॐ यत्तदीयायै नमः, ॐ यक्षवन्द्यायै नमः, ॐ यतिविद्यायै नमः, ॐ यति संस्तुतायै नमः, ॐ यावद्विद्यामय्यै नमः, ॐ यावद्विद्या बृन्द सुवन्दितायै नमः, ॐ योगिहृत्पद्म निलयायै नमः, ॐ योगिवर्य प्रियङ्कर्यै नमः ॥९८०॥ ॐ योगिवन्द्यायै नमः, ॐ योगिमात्रे नमः, ॐ योगीशफल दायिन्यै नमः, ॐ यक्षवन्द्यायै नमः, ॐ यक्षपूज्यायै नमः, ॐ यक्षराज सुपूजितायै नमः, ॐ यज्ञरूपायै नमः, ॐ यज्ञतुष्टायै नमः, ॐ यायजूक स्वरूपिण्यै नमः, ॐ यन्त्राराध्यायै नमः ॥९९०॥ ॐ यन्त्रमध्यायै नमः, ॐ यन्त्रकर्तृ प्रियङ्कर्यै नमः, ॐ यन्त्रारूढायै नमः, ॐ यन्त्रपूज्यायै नमः, ॐ योगिध्यान परायणायै नमः, ॐ यजनीयायै नमः, ॐ यमस्तुत्यायै नमः, ॐ योगयुक्तायै नमः, ॐ यशस्कर्यै नमः, ॐ योगबद्धायै नमः ॥१०००॥ ॐ यति स्तुत्यायै नमः, ॐ योगज्ञायै नमः, ॐ योगनायक्यै नमः, ॐ योगिज्ञान प्रदायै नमः, ॐ यक्ष्यै नमः, ॐ यमबाधा विनाशिन्यै नमः, ॐ योगिकाम्य प्रदात्र्यै नमः, ॐ योगिमोक्ष प्रदायिन्यै नमः ॥१००८॥

॥ इति श्रीसरस्वती सहस्रनामावलि ॥

॥ इति श्री तारा तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीविद्या तंत्रम् ॥

श्रीविद्या की प्रधान देवि ललितात्रिपुर सुन्दरी है। यह धन, ऐश्वर्य भोग एवं मोक्ष की अधिष्ठाता देवी है । अन्य विद्यायें कोई मोक्ष की विशेष फलदा है तो कोई भोग की विशेष फलदा है परन्तु श्रीविद्या की उपासना में दोनों ही करतलगत है।

इसकी उपासना तंत्रों में अति रहस्यमय व गुप्त है तथा पूर्व जन्म के विशेष संस्कारों के बलवान होने पर ही इस विद्या की दीक्षा का योग माना है। इस विद्या के तीन स्वरूपों की उपासना मुख्य है। आठ वर्षीया स्वरूप बाला त्रिपुर सुन्दरी तथा षोडशवर्षीय स्वरूप षोडशी स्वरूप तथा ललिता त्रिपुर सुन्दरी स्वरूप युवा अवस्था को माना है।

साधक को क्रम पूर्वक दीक्षा लेनी चाहिये तभी उत्तम रहें। कहीं-कहीं ऐसा देखा गया है कि जिन्होने क्रम दीक्षा के बिना ललिता त्रिपुर सुन्दरी की उपासना सीधे की है उन्हे पहले आर्थिक कठिनाईयाँ प्राप्त हुई है एवं बाद में उसका विकास हुआ।

वृहन्नील तंत्र में काली को **कृष्ण** व **रक्तवर्ण** भेद से दो रूपों के विषय में कहा गया है। **कृष्णवर्णा-दक्षिणकालिका एवं रक्तवर्णा-त्रिपुरसुन्दरी है।** अर्थात् ये रक्तकाली है अतः भोग व मोक्ष दोनों की अधिष्ठाता है।

॥ बाला त्रिपुरा मंत्र-यंत्र विधानम् ॥

मंत्र- ऐं क्लीं सौः

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीत्रिपुराबाला मंत्रस्य दक्षिणामूर्त्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, त्रिपुराबाला देवता, सौः बीजं, क्लीं शक्तिः, ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

मंत्रमहार्णव व मंत्र-महोदधि में यही विनियोग है परन्तु अन्य कामना मंत्रो के मंत्रमहोदधि के अनुसार छन्द गायत्री, ऐं बीज, ह्सौः शक्ति, क्लीं कीलक बताया गया है।

ऋषिन्यासः- **श्रीदक्षिणामूर्त्तये नमो मूर्ध्नि, पंक्तिछन्दसे नमो मुखे, त्रिपुराबालादेवतायै नमो हृदि, सौः बीजाय नमो गुह्ये, क्लीं शक्तये नमः पादयोः, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

॥ विविध न्यासः ॥

(१) ॐ ऐं नमः नाभेः पादान्तम्। ॐ क्लीं नमः हृदयान्नाभि पर्यन्तम्। ॐ सौः नमः मूर्ध्नि हृदयान्तम्।

(२) ॐ ऐं नमः वामकरे। ॐ क्लीं नमः दक्षिणकरे। ॐ सौः नमः उभयोः करयोः।

(३) ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि। ॐ क्लीं नमः गुह्ये। ॐ सौः नमः वक्षसि।

(४) नवयोनि संज्ञक न्यासः-

ॐ ऐं नमः वामकर्णे	ॐ क्लीं नमः दक्षिणकर्णे,	ॐ सौः नमः चिबुके।
ॐ ऐं नमः वाम चिबुके	ॐ क्लीं नमः दक्षिण चिबुके	ॐ सौः नमः मुखे।
ॐ ऐं नमः वामनेत्रे	ॐ क्लीं नमः दक्षिण नेत्रे	ॐ सौः नमः नासिकायाम्।
ॐ ऐं नमः वामस्कंधे	ॐ क्लीं नमः दक्षिण स्कंधे	ॐ सौः नमः उदरे।
ॐ ऐं नमः वामकर्पूरे	ॐ क्लीं नमः दक्षिण कर्पूरे	ॐ सौः नमः नाभौ।
ॐ ऐं नमः वाम जानौ	ॐ क्लीं नमः दक्षिण जानौ	ॐ सौः नमः लिङ्गे।
ॐ ऐं नमः वाम पादे	ॐ क्लीं नमः दक्षिण पादे	ॐ सौः नमः गुह्ये।
ॐ ऐं नमः वाम पार्श्वे	ॐ क्लीं नमः दक्षिण पार्श्वे	ॐ सौः नमः हृदि।
ॐ ऐं नमः वाम स्तने	ॐ क्लीं नमः दक्षिण स्तने	ॐ सौः नमः कण्ठे।

(५) रतिन्यासः- ॐ ऐं रत्यै नमः गुह्ये। ॐ क्लीं मनोभवायै नमः भ्रूमध्ये। ॐ सौः प्रीत्यै नमः हृदि। ऐं अमृतेश्यै नमः गुह्ये। ॐ क्लीं योगेश्यै नमः हृदि। ॐ सौः विश्वयोन्यै नमः भ्रूमध्ये।

(६) मूर्तिन्यासः- ॐ ह्रीं मनोभवाय नमः शिरसि। ॐ क्लीं मकरध्वजाय नमः गुह्ये। ऐं कन्दर्पाय नमः हृदि। ॐ ब्लूं मन्मथाय नमः गुह्ये। ॐ स्त्रीं कामदेवाय नमः चरणायोः।

(७) कामन्यासः- (कामेशी का ध्यान करें) - ह्रीं कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कन्दर्पाय नमः। ब्लूं मकरध्वजाय नमः। स्त्रीं मीनकेतवे नमः।

(८) वाणेशी न्यासः- द्रां द्राविण्यै नमः शिरसि। द्रीं क्षोभिण्यै नमः पादयोः। क्लीं वशीकरिण्यै नमः मुखे। ब्लूं आकर्षण्यै नमः गुह्ये। सः सम्मोहन्यै नमः हृदि।

(९) कराङ्ग एवं षडङ्गन्यासः-

आं सौः क्लीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ईं सौः क्लीं ऐं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ऊं सौः क्लीं ऐं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ऐं सौः क्लीं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुं।
औं सौः क्लीं ऐं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
अः सौः क्लीं ऐं	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतंसा समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम्।
विद्याक्षमालाऽभयदानहस्तां ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥
पाशांकुशौ पुस्तकमक्षसूत्रं करैर्दधाना सकलाऽमराचर्या।
रक्तात्रिनेत्रा शशिशेखरेयं ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुराऽत्रबाला ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

नवत्रिकोण का निर्माण दो अधोमुख एवं एक उर्ध्वमुखी त्रिकोण को मिलाकर करें। यह शक्ति प्रधान यंत्र हुआ। दो उर्ध्वमुख एवं एक अधोमुख त्रिकोण से नवयोनि त्रिकोण का निर्माण होता है जो पुरुषशक्ति का प्रधान होता है। नवयोनि के बाहर अष्टदल एवं पश्चात् भूपूर बनायें।

मंत्रमहार्णव में मध्ययोनि में **''ऐं''** लिखा है जबकि मंत्रमहोदधि हिन्दी टीका में **उर्ध्वमुख दो त्रिकोण** है एवं एक अधोमुख त्रिकोण है। मंत्रमहोदधि में मध्ययोनि में तृतीयकूट अर्थात् **सौः** लिखा है यथा-

मध्ययोनौ तु तार्तीयमष्टयोनिषु मन्मथम्। केसरेषु स्वरान्यस्येद्वर्गानष्टौ दलेष्वपि ॥
दलाग्रेषु विशूलानि पद्मं मातृकयावृतम्। एवं विलिखिते यन्त्रे पीठशक्तीः प्रपूजयेत् ॥

अर्थात् मध्ययोनि में **सौः** तृतीय बीज लिखें तथा शेष आठ योनियों में कामबीज **क्लीं**, अष्टदल के केसर (निम्न भाग) में स्वर एवं दलों के मध्य में मातृका के आठ वर्ग (क वर्गादि) लिखें। दलों के अग्रभाग में त्रिशूलादि पद्मादि लिखकर चारों ओर मातृका (वर्णमाला) से घेर देना चाहियें।
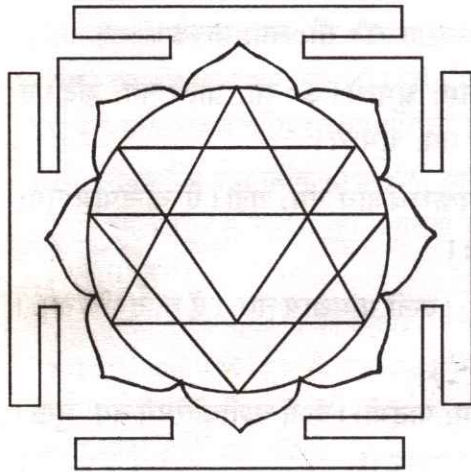
॥ श्री बाला त्रिपुरा पूजन यन्त्रम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर पीठ पूजा करें। **ॐ मंडूकादिपर तत्त्वांत पीठदेवताभ्यो नमः। पूर्वादिक्रमेण- ॐ इच्छायै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ कामिन्यै नमः, ॐ कामदायिन्यै नमः, ॐ रत्यै नमः, ॐ रतिप्रियायै नमः, ॐ नन्दायै नमः, मध्ये- ॐ मनोन्मन्यै नमः।**

भद्रपीठपर यंत्र को शोधन करके रखें। प्रधान देव का आवाहन कर पूजा करें पश्चात् यंत्र के आवरण देवताओं का पूजन करें। पुष्पांजलि लेकर आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि बालायाः परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम्- (मध्य योनि मध्ये) मूल मंत्र से प्रधान देव का पूजन करें।

ऐं रत्यै नमः वामकोणे। क्लीं प्रीत्यै नमः दक्षिणकोणे। सौः मनोभवाये नमः अग्रे। प्रत्येक नामावलि में चतुर्थी से आवाहन, प्रथमा से स्थापन के बाद **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहें। गंधाक्षत पुष्प छोड़कर तर्पण करें तथा प्रत्येक आवरण पूजा के बाद पुष्पाञ्जलि देवें यथा-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहिं शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥

(दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुओं का पूजन श्रीयंत्र षोडशी पूजावत् करें) षोडशी यंत्रार्चन में बाला व षोडशी दोनों त्रिविध गुरुओं का पूजन दिया है।

द्वितीयावरणम्- ''षडङ्गपूजन'' हेतु मध्ययोनि के बाहर आग्नेयादि चारों दिशाओं की कल्पना करें।

आं सौः क्लीं ऐं हृदयाय नमः। ईं सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा। ऊं सौः क्लीं ऐं शिखायै वषट्। ऐं सौः क्लीं ऐं कवचाय हुं। मध्ये- औं सौः क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। दिक्षु- **अः सौः क्लीं ऐं अस्त्राय फट्।**

तृतीयावरणम्- मध्य योनि के बाहर पूर्वादि चारों दिशाओं तथा अग्रभाग में पूजन करें। यहाँ कामेशी पूजन में मंत्रमहोदधि व मंत्रमहार्णव दोनों के में भेदान्तर है। दोनों ही क्रम इस प्रकार है-

(मंत्रमहार्णवे)- **ह्रीं मनोभवाय नमः, श्री मनोभव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। क्लीं मकरध्वजाय नमः। ऐं कंदर्पाय नमः। ब्लूं मन्मथाय नमः। मध्ये- स्त्रीं कामदेवाय नमः।**

(मंत्रमहोदधौ)- **ह्रीं कामाया नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कंदर्पाय नमः। ब्लूं मकरध्वजाय नमः। स्त्रीं मीनकेतवे नमः।**

चतुर्थावरणम्- मध्ययोनि के बाहर उपरोक्त देवताओं के समीप में- **द्रां द्राविण्यै नमः। द्रीं क्षोभिण्यै नमः। क्लीं वशीकरिण्यै नमः। ब्लूं आकर्षिण्यै नमः। सः सम्मोहन्यै नमः।**

पंचमावरणम्- मध्ययोनि के बाहर पूर्वादि **अष्टयोनियों में** क्रमशः (प्रत्येक नाम के पहले- **ॐ ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः बीज मंत्र या ॐ नमः** पश्चात् प्रथमा से स्थापन कर **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** बोलकर पूजन तर्पण करें)

ॐ सुभगायै नमः। ॐ भगायै नमः। ॐ भगसर्पिण्यै नमः। ॐ भगमालिन्यै नमः। ॐ अनङ्गायै नमः। ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः। ॐ अनङ्गमेखलायै नमः। ॐ अनङ्गमदनायै नमः।

षष्ठमावरणम्- (अष्टदलमूले)- पूर्वादिक्रमेण- **ॐ आं ब्राह्म्यै नमः। ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः। ॐ ऊं कौमार्यै नमः। ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः। ॐ लृं वाराह्यै नमः। ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः। ॐ औं चामुण्डायै नमः। ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः।**

सप्तमावरणम्-(अष्टदल मध्ये)- **ॐ अं असिताङ्ग भैरवाय नमः। ॐ इं रुरुभैरवाय नमः। ॐ उं चण्डभैरवाय नमः। ॐ ॠं क्रोधभैरवाय नमः। ॐ लृं उन्मत्तभैरवाय नमः। ॐ ऐं कपालभैरवाय नमः। ॐ औं भीषणभैरवाय नमः। ॐ अः संहारभैरवाय नमः।**

अष्टमावरणम्- (अष्टदले अग्रभागे)- **ॐ कामरूपपीठाय नमः। ॐ मलयगिरिपीठाय नमः। ॐ कोल्लागिरिपीठाय नमः। ॐ चौहारपीठाय नमः। ॐकुलान्तक पीठाय नमः। ॐ जालन्धर पीठाय नमः। ॐ उड्डयान पीठाय नमः। ॐ कोट्टपीठाय नमः।**

नवमावरणम्-(भूपूर में पूर्वादि दश दिशाओं में)- **ॐ हेतुकाय नमः। ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः। ॐ वेतालाय नमः। ॐ अग्निजिह्वाय नमः। ॐ कालान्तकाय नमः। ॐ कपालिने नमः। ॐ एकपादाय नमः। ॐ भीमरूपाय नमः। ॐ मलयाय नमः। ॐ हाटकेश्वराय नमः।**

दशमावरणम्-(भूपूरे पूर्वादि दश दिक्षु)- **ॐ वज्रसहिताय इन्द्राय नमः पूर्वे। ॐ शक्तिसहिताय अग्नये नमः आग्नये। ॐ दण्डसहिताय यमाय नमः दक्षिणे। ॐ खड्गसहिताय निर्ऋतये नमः नैर्ऋत्ये। ॐ पाशसहिताय वरुण्यै नमः वरुणाय नमः पश्चिमे। ॐ अंकुशसहिताय वायवे नमः वायव्ये। ॐ गदासहिताय सोमाय नमः उत्तरे। ॐ शूलसहिताय ईशानाय नमः ऐशान्ये। ॐ पद्म सहिताय ब्रह्मणे नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये। ॐ चक्रसहिताय अनन्ताय नमः निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये।**

एकादशावरणम्- भूपूरे- **ॐ बं बटुकाय नमः पूर्वे। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः दक्षिणे। ॐ यं योगिनीभ्यो नमः पश्चिमे। ॐ गं गणपतये नमः उत्तरे। ॐ वसुभ्यो नमः आग्नेये। ॐ शिवेभ्यो नमः नैर्ऋत्ये। ॐ आदितेभ्यो नमः वायव्ये। ॐ भूतेभ्यो नमः ऐशान्ये।**

तंत्रान्तर- नैर्ऋत्य में आदित्य, वायव्य में शिव का आवाहन है। तदनन्तर देवी का षोडशोपचार पूजन करें। मूल मंत्र का जप करें।

॥ अथ काम्य प्रयोगः॥

तगर, राजवृक्ष, कुन्द, गुलाब या चम्पा के फूलो से एवं बिल्वफलों के होम से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होवें। लाल कमलों के होम से स्त्रियाँ वशीभूत होवें। सरसों के होम से शत्रुनाश होवें तथा राजा भी वश में होवें।

दूधवाली गुडूची के होम से अपमृत्यु निवारण एवं दूध में डूबी हुई दुर्वा के होम से दीर्घायु प्राप्त होवें।

चन्दन, अगर, एवं गूगल के होम से कवित्व शक्ति प्राप्त होवें। अपराजिता लता के पुष्पों के होम से श्रेष्ठ ब्राह्मण का वशीकरण होवें, कल्हार पुष्प के हवन से क्षत्रिय, तथा कर्णिकार के होम से राजस्त्रियाँ, कुरण्ट पुष्पों के होम से वैश्य तथा गुलाब के होम से शुद्र वश में हो जाते है।

पलाश के पुष्पों के होम से वाक्‌सिद्धि, भात के होम से अन्न की प्राप्ति होवे तथा दूध, दही, मधुमिश्रित लाजा होम से समस्त रोग दूर हो जाते है।

१भाग लाल चन्दन, १भाग कर्पूर, १भाग कर्चूर, ९भाग अगर, ४भाग गोरोचन, १०भाग चन्दन, ७ भाग केशर, तथा ४भाग जटामांसी एक साथ मिला लेवें। तदुपरान्त कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को श्मशान या चौराहे पर ओस के जल से कुमारी कन्या द्वारा पिसवाकर, उसको मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक लगावें तो भूत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी तथा हिंसक पशु भी व्यवहार बदलकर वशीभूत हो जाते है।

॥ श्री कामना हेतु ध्यानम्॥

मातुलिङ्ग-पयोजन्महस्तां कनकसन्निभाम् । पद्मासनगतां बालां लक्ष्मीप्राप्तौ विचिन्तयेत् ॥

॥ ज्ञान प्राप्ति हेतु ध्यानम्॥

वरपीयूष कलशपुस्तकाभीति-धारिणीम् । सुधां स्रवन्तीं ज्ञानाप्तौ ब्रह्मरन्ध्रे विचिन्तयेत् ॥

॥ रोगनाश हेतु ध्यानम्॥

शुक्लाम्बरां शशांकाभां रोगनाशे स्मरेच्छिवाम् । अकारादिक्षकारान्त वर्णावयव-रूपिणीम् ॥

॥ वशीकरण हेतु ध्यानम्॥

सृणिपाशधरां देवीं रत्नालङ्कारभूषिताम् । प्रसन्नामरुणां ध्यायेद् वशीकरण सिद्धये ॥

॥ प्रति बीजरूपं ध्यानम्॥

वाग्बीज- "ऐं"। ध्यानम्-

विद्याक्षमालासु कपालमुद्रा राजत्करां कुंदसमान कान्तिम् ।
मुक्ताफलालङ्कृति शोभिताङ्गीं बालां स्मरेद् वाङ्मयसिद्धिहेतोः ॥

श्वेत वस्त्र पहनकर, श्वेत चन्दन लगाकर, मुक्तानिर्मित आभूषण धारण कर बाला के वाग्बीज "ऐं" का ३ लाख जप कर मधुमिश्रित नवीन पलाश पुष्पों से होम करें तो श्रेष्ठ कवि होवे एवं स्त्रियों का प्रिय होवें।

कामबीज- ''क्लीं'' । ध्यानम्-

भजेत् कल्पवृक्षाध उद्दीप्तिरत्नासने सन्निषण्णां मदाधूर्णिताक्षीम् ।
करैर्बीजपूरं कपालेषु चापं सपाशांकुशां रक्तवर्णं दधानम् ॥

लाल वस्त्र पहने, रक्त चन्दन लगाकर एवं लाल आभूषण धारण करके ३ लाख जप करें पश्चात् कर्पूर एवं लाल चन्दन मिश्रित मालती के पुष्पों से दशांश होम करे तो समस्त जीवों को वश मे करें।

तृतीय बीज- ''सौः'' । ध्यानम्-

व्याख्यानमुद्राऽमृत कुम्भविद्यामक्षस्त्रजं संदधतीं कराग्रैः ।
चिद्रूपिणीं शरदचन्द्रकान्तिं बालां स्मरेन् मौक्तिकभूषिताङ्गीम् ॥

श्वेत वस्त्र पहनकर, श्वेतचन्दन लगावें एवं अपने को स्वयं देवतामय मानते हुए मंत्र बीज का ३लाख जप करें तथा श्वेत चन्दन मिश्रित मालती पुष्पों से दशांश होम करे तो लक्ष्मीवान, विद्यापति एवं कीर्तिवान होवें।

॥ शापोद्धार ॥

यह मंत्र शापित एवं कीलित है अतः इस विद्या की प्रसन्नता के लिये शापोद्धार मंत्र का जप करना चाहिये।

(१) **''ह्स्त्रौ हस्कलरीम ह्स्त्रौ''**- मंत्र का १०० बार जप करें।
(२) **''ह्सौ हस्कलरीम ह्सौ ''** - मंत्र का १०० बार जप करें।
(३) **''ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं''** इस नवार्ण मंत्र का १०० बार जप करने से बाला का शाप दूर होवें।
(४) **''हस्त्रौ हस्क्लरीं हस्त्रौः''** या **हस्त्रैं हस्क्लरीं हस्त्रौः**- इस त्रिपुर भैरवी मंत्र का १०० बार जप करें।
(५) **''हसौं हस्क्लरीं ह्सौं''** - इस मंत्र का १०० बार जप करने से शाप दूर होवें।

॥ उत्कीलनम् ॥

चेतनी मंत्र एवं आह्लादिनी मंत्र के जप करने से मंत्र का उत्कीलन हो जाता है।

(१) चेतनी मंत्र- ''ॐ ऐं ई औं''
(२) आह्लादिनी मंत्र- '' ॐ क्लीं नमः''

॥ उद्दीपनम् ॥

शापोद्धार एवं उत्कीलन के बाद उद्दीपन मंत्र का जप करने से विद्या जागृत होती है। **ऐं क्लीं सौः** के साथ निम्नलिखित मंत्रों को ७-७ बार करने से विद्या का उद्दीपन होता है।

(१) **''वद वद वाग्वादिनी ऐं ''**।
(२) **''क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु ''**।
(३) **''ॐ मोक्षं कुरु''**।

॥ अथ विविध कामना मंत्राः ॥

(१)''ऐं सौः क्लीं'' - मंत्र जप से शत्रुनाश होवें।
(२)''क्लीं ऐं सौः'' - मंत्र जप से जगत का वशीकरण होवें।
(३)''क्लीं सौः ऐं'' - मुक्ति प्राप्ति हेतु जप करना चाहियें।

(४) "ह्रीं क्लीं ह्सौः " - सर्वसिद्धि हेतु।

इन सभी मंत्रों के **दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, त्रिपुरा बाला देवता, ऐं बीज, ह्सौः शक्ति, तथा क्लीं कीलक है।**

(५) पंचाक्षर मंत्र- **(१) "ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं।" (२) हंसः ऐं क्लीं सौः।। (३) ऐं क्लीं सौः हंसः।**

(६) षडक्षर मंत्र- **(१) "ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं"। (२) ह्रीं क्लीं ह्सौः ह्सौः क्लीं ह्रीं। (३) ह्रीं क्लीं ह्सौः सौः क्लीं ह्रीं।**

(७) नवार्ण मंत्र- **"श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं क्लीं श्रीं"**। पाठान्तर- **(सौं)**

(८) दशाक्षर मंत्र- **"ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे स्वाहा"।**

(९) चतुर्दशार्ण मंत्र- **"ऐं क्लीं सौः बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः"।** २. पाठान्तर- **ऐं क्लीं ह्सौः।** ३. **क्लीं ह्रीं ऐं बाले त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।**

(१०) षोडशार्ण मंत्र- **"ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुराभारती कवित्वं देहि स्वाहा"।** पाठान्तर- **त्रिपुरे भारति।**

(११) सप्तदशार्ण मंत्र- **"श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरामालिनि मह्यं सुखं देहि स्वाहा"।**

(१२) ससदशार्ण मंत्र- **"स्कल्रीं क्ष्म्यूरौं ऐं त्रिपुरे सर्ववाञ्छितं देहि नमः स्वाहा"।** पाठान्तर- **स्क्लीं क्ष्म्यौं।**

(१३) अष्टादशार्ण मंत्र- **"ह्रीं ह्री ह्रीं प्रोढत्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं देहि स्वाहा"।**

(१४) अष्टादशाक्षर मंत्र- **"ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरामदने सर्वशुभं साधय स्वाहा"।** पाठान्तर- **त्रिपुरमर्दने।**

(१५) विंशत्यर्ण मंत्र- **"ह्रीं श्रीं क्लीं बालात्रिपुरे मदायत्तां विद्यां कुरु नमः स्वाहा"।**

(१६) विंशत्यक्षर मंत्र- **"ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा"।**

(१७) अष्टविंशत्यक्षर मंत्रः- **"क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा"।**

(१८) पंचत्रिंशदक्षर मंत्रः- **"क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर सुन्दरि सर्वजगन्मम वशं कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा"।** पाठान्तर- **वशे।**

(१९) त्रिपुरागायत्री मंत्रः- **"क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि धीमहि। तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्"॥**

॥विनियोग॥

गायत्री मंत्र के अलावा अन्य सभी (४ से १८) मंत्रों हेतु विनियोग इस प्रकार है-

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीबालामंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्रीश्छन्दः, त्रिपुराबाला देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

॥ध्यानम्॥

पाशांकुशौ पुस्तकमक्षसूत्रं करैर्दधाना सकलाऽमरार्च्या।
रक्ता त्रिनेत्रा शशिशेखरेयं ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुराऽत्र बाला॥

उपरोक्त मंत्रों के एक लाख जप करें पश्चात् कनेर पुष्पों से होम करे तो अभीष्ट की प्राप्ति होवें।

॥ बाला यंत्र धारण विधि ॥
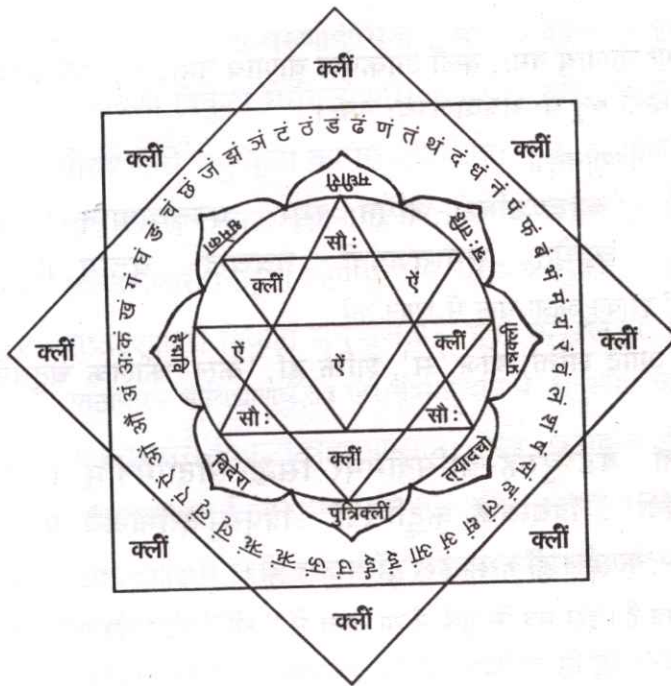
॥ श्री बालाधारण पूजन यन्त्रम् ॥

नवयोन्यात्मक अष्टदल युक्त यंत्र बनाकर उसके बाहर दो चतुरस्र चित्रानुसार बनायें। इस यंत्र को त्रिपुरा मंत्रों के होम समय के आहुति शेष (प्रोक्षणी पात्र) घृत द्वारा संयोजित कर भुजा में धारण करे तो धन, कीर्ति, सुख एवं पुत्रादि की प्राप्ति होवें।

॥ श्रीविद्या ललिता त्रिपुर सुन्दरी ॥

(श्री श्रीविद्या, राजराजेश्वरी)

ललिता त्रिपुर सुन्दरी के प्रयोगों का वर्णन अधिकत्तर मेरुतंत्र, यामल ग्रंथों में, हिन्दी तंत्रसार, मंत्रकोष, विद्यार्णवतंत्र, इत्यादि ग्रंथों में है। श्रीत्रिपुरसुन्दरी की कई देवताओं व ऋषियों ने उपासना की है। उनके अनेक उपासस्य मंत्रों का वर्णन इस तरह है। अधिकांशतया कामराजपूजिता व लोपामुद्रा पूजिता मंत्र प्रचलित हैं।

(१) नवार्ण मेरु- ल स ह ई ए र कँ।

(२) कामेशी बीज- कल ह्रीं । विद्यार्णव तंत्र में **"सकल ह्रीं"** कहा है।

(३) पञ्चाक्षर वाग्भव कूट- "कएईलह्रीं" । इसके **ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द तथा वाग्धीश्वरी देवता, क बीज, ह्रीं शक्ति, एईल कीलक, तथा वाक्सिद्ध्यै विनियोग** कहा है। मूलाधार में ध्यान करें-

शुक्लां स्वच्छ विलेपमाल्यवसनां शीतांशु खण्डोज्ज्वलाम्
व्याख्यामक्षगुणं सुधाढ्य कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैः ।
विभ्राणां कमलासनां कुचनतां वाग्देवतां सस्मिताम्
वन्दे वाग्विभवप्रदां त्रिनयनां सौभाग्यसम्पत्करीम् ॥

(४) षडक्षर कामराजकूट- "हसकहल ह्रीं"। इसका हृदय में ध्यान करें। **इसके सम्मोहन ऋषि, गायत्री**

छन्द, देवता कामेशी, बीज ''ह'', शक्ति ''ह्रीं'', कीलक सकहल है तथा वशीकरण सिद्धि हेतु विनियोग है। बाणमंत्रों से षडङ्गन्यास करें।

यथा- **द्रां संक्षोभण वाणाय नमः, द्रीं द्रावण वाणाय नमः, क्लीं आकर्षण वाणाय नमः, ब्लूं वशीकरण वाणाय नमः, सः उन्मादन वाणाय नमः, द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्ववाणेभ्यः नमः।**

॥ ध्यानम् ॥

बालार्ककोटिरुचिरां स्फटिकाक्षमालां कोदण्डमिक्षु-जनितं स्मर पञ्चवाणान् ।
विद्यां च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्रां ध्यायेत् समस्तजननीं नवचन्द्र चूडाम् ॥

(५) चतुरक्षर शक्तिकूट- ''सकल ह्रीं'' इसका आज्ञा चक्र में ध्यान करें-

इस मंत्र के **शिव ऋषि, छन्द पंक्ति, देवता आदि शक्ति, बीज 'स', शक्ति ह्रीं, 'कल' कीलक चतुर्वर्ग फलप्राप्ति हेतु** विनियोग है।

कदम्बवनमध्यगां कनकमण्डपान्तः-स्थितां षडम्बुरुह-वासिनीममर-सिद्ध-सौदामिनीम् ।
विजृम्भित जपारुचिं विमलचन्द्र-चूडामणिं त्रियम्बक-कुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये ॥

(६) पंचदशी त्रिकूटा कामराज विद्या- कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

श्री श्रीविद्या नित्यार्चन के अनुसार यही मुख्य मंत्र है। इस मंत्र के पूर्व में या अन्त में **''श्रीं''** बीज मंत्र लगाने से **षोडशीक्षरी** मंत्र हो जाता है।

विनियोग- **अस्य मंस्य दक्षिणामूर्ति शिव ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्रीललितामहात्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं कएईल ह्रीं बीजं, सौः सकल ह्रीं शक्ति, क्लीं हसकहल ह्रीं कीलकं सर्वाभिष्ट सिद्ध्यर्थे विनियोगः।**

षडंगन्यासः- तंत्रों में कई जगह एक बीजाक्षर लिखकर आगे ५-७-६ कुछ लिख देते हैं इसका अर्थ है उस बीज के ५-७-६ अक्षर सहित मंत्र है।

ऐं कएईल ह्रीं हृदयाय नमः। क्लीं हसकहल ह्रीं शिरसे स्वाहा। सौः सकल ह्रीं शिखायै वषट्। ऐं कएईल ह्रीं कवचाय हुं। क्लीं हसकहल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः सकल ह्रीं अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुमरागशोणे ।
पुण्ड्रेक्षु पाशांकुश पुष्पवाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥१॥
अरुणां करुणा-तरङ्गिताक्षीं धृतपाशांकुश-पुष्पवाणचापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥२॥

जिस मंत्र के आदि में **''क''** है वह **''कादि विद्या''** जिस मंत्र के आदि में **''ह''** होवें वह **''हादि विद्या''** तथा जिस मंत्र के आदि में **''स''** है वह **''सादि विद्या''** कहलाती है।

(७) पञ्चदशी त्रिकूटा अगस्त्योपासिता लोपामुद्रा पूजिताः- **मंत्र- हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।**

(८) पञ्चदशी त्रिकूटा नंदि पूजिताः- **मंत्र- स एईल ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

(९) पञ्चदशी त्रिकूटा इन्द्रोपासिताः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सलक ह्रीं।**

(१०) पञ्चदशी त्रिकूटा उन्मनी विद्याः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हकहल ह्रीं, हसकल ह्रीं।**

(११) पञ्चदशी त्रिकूटा वरुणोपासिताः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सहकल ह्रीं।**

(१२) पञ्चदशी त्रिकूटा धर्मराजोपासिताः- **मंत्र- कएकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सहकल ह्रीं।**

(१३) षोडशाक्षरी चतुष्कूटा कामराजोपासिताः-**मंत्र- कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं श्रीं।**

(१४) षोडशाक्षरी त्रिकूटा ईशानोपासिताः- **मंत्र- कहल ह्रीं, हकलहललर ह्रीं, सकल ह्रीं।**

(१५) सप्तदशाक्षरी त्रिकूटा लोपामुद्रा च अगस्त्य पूजिताः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहसकल ह्रीं।**

(१६) सप्तदशाक्षरी त्रिकूटा सूर्यपूजिताः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सहकसकल ह्रीं।**

पाठान्तर- श्रीविद्यार्णव तंत्र एवं मंत्रमहोदधि के अनुसार- **कएईल ह्रीं, सहकल ह्रीं, सहकह ह्रीं।**

(१७) सप्तदशाक्षरी त्रिकूटा वह्न्युपासिताः- **मंत्र- कसकल ह्रीं, हसलकल ह्रीं, सकलरल ह्रीं।**

(१८) अष्टादशाक्षरी त्रिकूटा मनुपूजिताः- **मंत्र- कहएईल ह्रीं, हकएईल ह्रीं, सकएईल ह्रीं।**

(१९) अष्टादशाक्षरी त्रिकूटा दुर्वासा पूजिताः- **मंत्र- कएईल ह्री, हसकहल ह्री, सकलह्री।** (यहाँ पर **ह्री** पर अनुस्वार नहीं है)

श्रीविद्यार्णव तंत्र के अनुसार ह्री के स्थान पर **ह्री ह्री** होना चाहिए, "**भुवनेशानी द्विधा कुरु**" (**बिन्दुहीना नादहीना दुर्वासा पूजिता भवेत्**) लिखा है अतः इस प्रकार से मंत्र- **कएईल ह्री ह्री हसकहल ह्री ह्री सकल ह्री ह्री।**

(२०) अष्टादशाक्षरी त्रिकूटा बुधोपासिताः- **मंत्र- कएईरल ह्रीं, हकहलर ह्रीं, सहकलर ह्रीं।**

(२१) एकोनविंशदक्षरी त्रिकूटा वायूपासिताः- **मंत्र- कएरलर ह्रीं, हकलरहल ह्रीं, सरकलर ह्रीं।**

(२२) द्वाविंशत्यक्षरी त्रिकूटा चन्द्रपूजिताः- **मंत्र- सहकएईल ह्रीं, सहकहएईल ह्रीं, सहकएईल ह्रीं।**

श्रीविद्यार्णव तंत्रोक्त- **सहकएईल ह्रीं, सहकहएईल ह्रीं, हसकएईल ह्रीं।**

(२३) द्वात्रिंशत्यक्षरी त्रिकूटा कुबेर पूजिताः- **मंत्र- हसकएईल ह्रीं, हसकहएईल ह्रीं, हसकएईल ह्रीं।**

(२४) त्रिंशदक्षरी षट्कूटा नारायणोपासिताः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कएईल ह्रीं।**

(२५) एकात्रिंशदक्षरी चतुष्कूटा शिवोपासिताः- **मंत्र- कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहसकल ह्रीं, कएईलहसकहलसहसकल ह्रीं।**

(२६) नागराजोपासिता श्रीविद्याः- **मंत्र- हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकलरल ह्रीं।**

(२७) ईशानोपासिता श्रीविद्याः- **मंत्र- कहल ह्रीं, हकलहललर ह्रीं, सकल ह्रीं।**

(२८) द्वात्रिंशदक्षरी षट्कूटा विष्णु पूजिताः- मंत्र- **कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहसकल ह्रीं, सएईल ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

२९. धर्मराजोपासिता विद्याः- (१) कएकल ह्रीं हकलह्रीं सहकल ह्रीं। (२) क ए क ल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (मं. महो.)

३०. ब्रह्मोपासिता विद्याः- कएईल ह्रीं, हकहसर ह्रीं, हसकल ह्रीं।

३१. जीवोपासिता विद्याः- (१) हसकल ह्रीं हकहसर ह्रीं हसकल ह्रीं। (२) हसकल ह्रीं, कहसर ह्रीं, सकल ह्रीं। (३) हसकल ह्रीं, कहसर ह्रीं, हसकल ह्रीं। (मं. महो.)

॥ अन्य मंत्राः ॥

१. कामराज रत्युपासिता - (१) कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (२) कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं श्रीं। (३) ऐं क ए ई ल ह्रीं, ह्रीं हसकहल ह्रीं, श्रीं सकल ह्रीं। (४) ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (५) ऐं क्लीं सौः ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं। (६) ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (७) ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं।

२. लोपामुद्रा - (१) हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (२) हसकलह ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकलह ह्रीं। (३) क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, हसकल ह्रीं -(मं० महो.)। (४) ह स क ए ई ल ह्रीं, स ह क ए ई ल ह्रीं, ह स क ए ई ल ह्रीं - (मं. महो.)। (५) हसकएईल ह्रीं, सहकएईल ह्रीं हसकएईल ह्रीं- (मं. महो.)।

३. चन्द्र - (१) (मं. महो.)- स क ल ह्रीं, सकलहल ह्रीं, हसकलह ह्रीं। (२) क ए ई ल, हसकहल ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, लसकहल ह्रीं। (३) ए क ई र ल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सहकलर ह्रीं।

४. अगस्त्य - (१) कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, हससकल ह्रीं (विद्या. तंत्रे)। (उक्तं च मं. महो.) - (२) क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, हसकल ह्रीं। (३) क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहसकल ह्रीं। (४) हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।

५. कुबेर - (मं. महो.)-(१) सहकल एईल ह्रीं, हसकल एईल ह्रीं, सहकएईल ह्रीं। (२) हसकहईल ह्रीं, सहकहएईल ह्रीं, कहसहएईल ह्रीं।

६. नन्दी पूजिता - (१) सएईल ह्रीं, हकहकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (मं. महो.)। (२) सहसकल ह्रीं, हकहकहल ह्रीं, सहसकल कहल ह्रीं,। (मं. महो.)

७. इन्द्र पूजिता - (१) कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहकल ह्रीं। (मं. महो.)

८. सूर्य पूजिता - (१) हसकल ह्रीं, सहकल ह्रीं, कल ह्रीं सकलहल ह्रीं। (मं. महो.) (२) क ए ई ल ह्रीं, सहकल ह्रीं, सहसकह ह्रीं। (३) कएईल ह्रीं, सहकल ह्रीं, सहकसकल ह्रीं।

९. षट्कूटा विष्णु पूजिता - (लोपा द्वितीय+ नन्दिविद्या)- कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहसकल ह्रीं, सएईल ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।

१०. दुर्वासा पूजिता - (१) क ए ई ल ह्री ह्री, हसकहल ह्री ह्री, सकल ह्री ह्री। (श्रीविद्या तंत्र में ह्री के लिये स्पष्ट लिखा है- भुवनेशानी द्विधा कुरु विन्दुहीना नादहीना......)। (२) कएईल हरी, हसकहल हरी,

सहलहरी।- (मं. महो. एवं संहितायाम्)। यथा - **माया स्थाने ह-री वर्णयुगलं च क्रमाल्लिखेत्।**

१०. उन्मनी विद्योपासिता - क ए ई ल ह्रीं, हकहलर ह्रीं, हलकल ह्री। (मं. महो.)

११. वरुणोपासिता - क ए ई ल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (मं. महो.)

१२. वह्न्युपासिता - कसकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, सकलर ह्रीं। (मं. महो.)

१३. नागराजोपासिता - हसकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं। (मं. महो.)

१४. स्कन्दोपासिता - (मं. महो.)- (१) हसकहल ह्रीं, सकहसकल ह्रीं, सहकहल ह्रीं। (२) हसएकल ह्रीं ह्रीं, सकहसकल ह्रीं ह्रीं, सहकहल ह्रीं ह्रीं।

१५. शाक्तीयविद्या - क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कएकल ह्रीं। (मं. महो.)

॥ श्री महात्रिपुर सुन्दरी (श्रीषोडशी महाविद्या)॥

श्री सुन्दरी के मुख्य २५ उपासक है उनमें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, मनु, कुबेर, कामराज, वरुण, वायु, अग्नि, सूर्य, सोम, अगस्त्य, लोपामुद्रा दुर्वासा, स्कंद, नन्दी, धर्मराज, नागराज, बुध ईशानादि है। ज्ञानार्णव तंत्र, सिद्धयामल, रुद्रयामल, योगिनी तंत्र, श्रीविद्यार्णव तंत्र तथा प्राचीन मंत्रमहोदधि में विविध मंत्र व उपासना क्रम उपलब्ध है। महाविद्या के त्रिकूट मंत्रों में बीजाक्षरों के संयोजन से विविध मंत्र बनते है। प्रत्येक **''बीजाक्षर को एक कूट''** समझना चाहियें।

१. बीजावली षोडशी मंत्रः- **(नवरत्नेश्वरे)- श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः, श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं।**
(ब्रह्मयामले)- श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः, श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं।
तंत्र दीपिनी, रुद्रयामल, ब्रह्मयामल, में बीजाक्षरों के क्रम परिवर्तन से मंत्रोद्धार लिखा है।

२. पारिभाषिका षोडशी मंत्रः- ललिता त्रिपुर सुन्दरी के पूर्व वर्णित कामराज विद्या, अगत्स्य एवं लोपामुद्रा पूजिता, चन्द्र, मनु, कुबेर, द्वितीय लोपामुद्रा, नन्दि, इन्द्र, सूर्य, शंकर, विष्णु, तथा दुर्वासा पूजिताः मंत्रों के प्रारम्भ में **''ह्रीं श्रीं''** या **''ॐ ह्रीं श्रीं'' ह्रीं ॐ श्रीं, श्रीं ॐ ह्रीं** लगाने से पारिभाषका षोडशी मंत्र बनते है। (त्रिकूट) इत्यादि भेद व बीजाक्षरों के लोम विलोम भेद से १२ विद्याओं के १४४ विद्या मंत्र बन जाते हैं। कूट भेद विषय में लिखा है-

वेदादिमण्डिता देवि शिवशक्तिमयी सदा। तदाभेदास्तु सकलाः षट्कूटा परमेश्वरि॥
वैष्णवी नवकूटा स्यात् सप्तकूटा तु शाङ्करी। अस्याः स्मरणमात्रेण जगदानंदितं भवेत्॥

३. कामराजोपासिता (षोडशाक्षरी) विद्याः- **(१) कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकलह्रीं श्रीं (२) श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।**

४. महाषोडशी मंत्रः- श्रीकल्पद्रुम के अनुसार मंत्र इस प्रकार है- **श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।**
विनियोग - **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, महात्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्ग सिद्धये विनियोगः।**
हृदयादिन्यास हेतु ६ विभाग इस तरह हैं - **१. श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः। २. ॐ ह्रीं श्रीं। ३. कएईल ह्रीं। ४.**

हसकहल ह्रीं। ५. सकल ह्रीं। ६. सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।

॥ ध्यानम् ॥

बालार्कयुत तेजसं त्रिनयनां रक्तांबरोल्लासिनीम्, नानालंकृति राजमान वपुषं बालोडुराट् शेखराम्। हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सु-मशरं पाशं मुदा बिभ्रतीम्, श्रीचक्र स्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधार - भूतां स्मरेत्॥

५. सिद्धयामलोक्त महाषोडशी मंत्रः- **ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं ईं हूं।**

६. त्रिपुर मालिनी मंत्र - **ऐं कएईल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं सौः, सकल ह्रीं। (योगिनी जालंधरे) (३) ऐं कएईलह्रीं, ह्रीं हसकहलह्रीं, श्रीं सकलह्रीं।**

७. परमा विद्या महाषोडशी मंत्रः- **ॐ ऐं क्लीं सौः कएलह ह्रीं सौः क्लीं ऐं ओंः ऐं क्लीं सौः हसकल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ओः, ऐं क्लीं सौः सकहल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ओंः** मंत्रोद्धार में प्रणवं सविसर्गः औंः लिखा है। अन्य मंत्र - **ऐं क्लीं सौः, कएलह ह्रीं, सौः क्लीं ऐं सौः, ऐं क्लीं सौः, हसकल ह्रीं, सौः क्लीं ऐं, औः ऐं क्लीं सौः, सकलहल ह्रीं ह्सौः क्लीं ऐं औः।** (हिन्दीतंत्रसारे नवकुटा परमा मोक्षदाविद्या)

८. ब्रह्मविद्याः- **ऐं क्लीं सौः कलई सौः क्लीं ऐं।** (उड्डीश तंत्रे)

९. भुवनेश षोडशी मंत्रः-(दारिद्र्य नाशार्थे)- **श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं संः।**

श्रीं बीज मंत्र के उत्तरार्ध में भी लगा सकते है। अतः **श्रीं** से मंत्र को पुटित कर सकते हैं।

१०. मृत्युञ्जया महाषोडशी- (सिद्धयामले) **ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, स्त्रीं ऐं क्रों ईं हूं।** इसके प्रयोग से मृत्यु भी पराजित होती है।

११. रुद्रयामलोक्त लोपामुद्रा- **हसकलह ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

१२. चिद्ब्रह्मैकमयी विद्या (१६ अक्षर)- **१. क अ ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

२. १७ अक्षर ज्ञानमयी विद्या- **हसकलह ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सकलह ह्रीं।**

३. १७ अक्षर सर्वसिद्धिप्रद- **हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हंसः।**

१३. नवकूटा मोक्षदा विद्या- **ऐं क्लीं सौः, कएलह ह्रीं, सौः क्लीं ऐं सौः, ऐं क्लीं सौः, हसकल ह्रीं, सौः क्लीं ऐं, औः ऐं क्लीं सौः, सकलहल ह्रीं, हसौः क्लीं ऐं औः।**

१४. ११ कूटा मंत्र- कामराज विद्या के त्रिकूट, सुभगा विद्या के त्रिकूट, पंचमी विद्या के पंचकूट इस तरह से ११ कूटों से त्रिपुरा महाविद्या होती है। यथा-

कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, क ए ई ल ह्रीं हसकल ह्रीं, हस हल ह्रीं, कहसल ह्रीं हकलस ह्रीं।

१५. सप्तदशी विद्या (लोपामुद्रा) महाषोडशी मंत्रः-(ज्ञानार्थे) **हसकल ह्रीं सहकहल ह्रीं सकल ह्रीं हंसः।**

१६. लोपामुद्राया षोडशीद्वयम्- **(१) हसकलह ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। (२) हसकल ह्रीं, सहसकहल ह्रीं सकल ह्रीं। (३) हसक आ ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।** (चिद्ब्रह्मक्यमयी विद्या)

१७. लोपामुद्राया सप्तदशाक्षरी षोडशी मंत्र:- **हसकलह ह्रीं हसकहल ह्रीं सकलह ह्रीं।**

१८. अष्टादशाक्षरी लोपामुद्रा षोडशी मंत्र:- **ऐं हसकल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं।**

१९. अष्टादशाक्षरी कामराज पूजिता षोडशी मंत्र:- **(१) ऐं कएईलह्रीं, ह्रीं हसकहल ह्रीं, सौः श्रीं सकल ह्रीं।**

२०. १८ अक्षर विभिन्न मंत्रा:- **क्लीं ह्रीं श्रीं। ह्रीं श्रीं क्लीं । श्रीं ह्रीं क्लीं।** इन तीन प्रकार से बीजाक्षर कूटों को कामराज या लोपामुद्रा पंचदशी के साथ संयोग करने से १८ अक्षरों के विभिन्न मंत्र प्राप्त होगें। (कुलोड्डीश तंत्रे)

२१. षट्सुन्दरी मंत्रा:- कुलोड्डीश तंत्र में लिखा है कि **श्रीं, सौः, ऐं, ह्रीं, ॐ, क्लीं** इन छ:बीजों में से एक -एक का सुन्दरी मंत्र के साथ संयोग करने से छः प्रकार के सुन्दरी मंत्र प्राप्त होगें।

२२. शक्ति कामराज मंत्र- (श्री- क्रमे) **१. ई ए क ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। २. ए ई क ल ह्रीं, हसकल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

उपर्युक्त मंत्रों को "**श्रीं, सौः, ऐं, ह्रीं, ॐ क्लीं**" इन छः बीजों के पृथक- पृथक योग से ६-६ मंत्र बनेगें तथा **क्लीं ह्रीं श्रीं। ह्रीं श्रीं क्लीं। श्रीं ह्रीं क्लीं।** इनसे प्रत्येक मंत्र का योग करने से ३-३ मंत्र बनेगें।

२३. सुन्दरी, ब्रह्मसुन्दरी, अनन्त सुन्दरी मंत्र भेद- कूटत्रय के प्रथम कूट में ब्रह्मबीज "**ॐ**" लगाने से सुन्दरी, द्वितीय कूट के पहले "**ॐ**" लगाने से ब्रह्मसुन्दरी, तृतीय शक्तिकूट के पहले "**ॐ**" लगाने से अनन्तसुन्दरी मंत्र होता है।

२४. द्रारिद्र्य नाशक सुन्दरी मंत्र- त्रिकूट के अंत में "**हंसः**" लगावें। यथा- **क ए ई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं हंसः।**

२५. भुवनसुन्दरी महाषोडशी मंत्र:- **ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं।**

कुब्जिका तंत्र के अनुसार इस मंत्र के आदि में अन्य बीजाक्षर लगाने से विविध महाषोडशी मंत्र बनते है।

२६. कमल सुन्दरी महाषोडशी मंत्र:- **श्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं श्रीं।**

२७. कामसुन्दरी महाषोडशी मंत्र:- **क्लीं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं क्लीं।**

२८. वाक्सुन्दरी महाषोडशी मंत्र:- **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं।**

२९. शक्ति सुन्दरी महाषोडशी मंत्र:- **सौः ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः।**

३०. तारसुन्दरी महाषोडशी मंत्र:- **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।**

३१. **ब्रह्मबीज (ओं) के त्रिकूटाक्षरों में संयोजन भेद से अलग-अलग मंत्र षोडशी के बनते है।**

ब्रह्मबीजं यदा दद्यात् त्रिकूटेषु वरानने । प्रथमा सुन्दरी देवी द्वितीया ब्रह्मसुन्दरी ॥१॥
शक्तिकूटे महेशानि अनंतसुन्दरी मता । एषा तु षोडशी विद्या मतभेदेन दर्शिता ॥२॥

३२. पञ्च-सुन्दरी विद्याः- (१) भाषा- **हकलस ह्रीं, कहलस ह्रीं, कलसह ह्रीं।**

(२) सृष्टि - **हसकल ह्रीं, हलकहस ह्रीं, सकल ह्रीं।**

(३) स्थिति- **हलकस ह्रीं, कसहलस ह्रीं, कहसल ह्रीं।**

(४) संहृति - **(क) हलकस ह्रीं, हसकल ह्रीं, हहकल ह्रीं। (ख) हलकस ह्रीं, हसकलहर ह्रीं, हसकलहर ह्रीं**

(५) निराख्या- **(क) लकस ह्रीं, सहकल ह्रीं, हससहक ह्रीं। (ख) लकस ह्रीं ऐं सहकल ह्रीं हस सहक ह्रीं।**

३३. शक्तिलोपामुद्रा मंत्र-पश्चिमाम्नायोक्त- **स ह क ल ह्रीं, हसकल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

३४. इस मंत्र में **श्रीं, सौः, ऐं, ह्रीं, ॐ, क्लीं** इन छः बीजों से तथा **क्लीं ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं क्लीं, श्रीं ह्रीं क्लीं** बीज मंत्रों से ९ प्रकार के अन्य मंत्र प्राप्त होते है।

३५. लोपामुद्रा का अन्य मंत्र- **हस सकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

३६. शिव पूर्वमुखात् उद्भूत मंत्र- **हस ह्रीं, कह ह्रीं, सह ह्रीं।**

३७. अभीष्ट सिद्धिप्रद एकादशाक्षरी मंत्र- **कल ह्रीं, कहल ह्रीं, सकल ह्रीं।** प्रथम कूट उद्धार- मादन "**क**" इन्द्र "**ल**" सान्त "**ह**" वामाक्षि "**ई**" चन्द्र (अनुस्वार) है इसमें "**र कार**" का उल्लेख नहीं है। अतः "**ह्री**" न होकर "**ह्रीं**" है

३८. कहक्षमल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।

३९. स ह क्ष म ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।

४०. हक्षमल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। परन्तु प्रथम कूट के विषय में "**तंत्रसार**" में मंत्रोद्धार दिया है। विष्णु "**अ**" उससे युक्त ईश "**ह**" हान्त "**क्ष**" कालेश "**म**" पृथ्वी "**ल**" एवं माया "**ह्रीं**" । अर्थात् यहाँ **अ ह** अलग-अलग न करके (अ+ह= ह) मानकर मंत्र लिखा है।

४१. सुभगोदया मंत्र- **सकहल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहकल ह्रीं।** यह मंत्र सर्वसौभाग्य को देने वाला है।

४२. उपरोक्त मंत्र के अन्त में "**हंसः**" लगाने से १७ अक्षर का मंत्र होता है

४३. महात्रिपुरसुन्दरी अष्टादशाक्षर मंत्र- (हिन्दीतंत्रसार)- **१. ऐं ए ई क ल ह्रीं, क्लीं ह स क ह ल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं। २. ऐं ई ए कल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं।**

४४. महात्रिपुरसुन्दरी विंशत्यक्षर मंत्रः- उपरोक्त मंत्र के अन्त में "**हंसः**" जोडने से २० अक्षर मंत्र बन जाता है।

४५. षोडशी मंत्रः- **(शाक्त प्रमोदे)- ह्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिं, क्लीं कीलकं धमार्थ-काम-मोक्षार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।** इसी तरह से करन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

बालाऽर्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहां त्रिलोचनाम् । पाशांकुश-शरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥

४६. सप्तदशाक्षरी षोडशी मंत्राः-(हिन्दीतंत्रसारे)- **(१) कअएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं श्रीं। (२) हसकलह ह्रीं हसकहल ह्रीं सकलह ह्रीं। (३) हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हंसः।**

४७. गुह्य षोडशी मंत्रः- **ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं सौः क्लीं ऐं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं।**

४८. गुप्त षोडशी मंत्रः- **श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः, श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं।**

४९. स्वप्नावती षोडशी मंत्रः- **(विद्यार्णवतन्त्रे) हकलस ह्रीं हकहस ह्रीं हसकल ह्रीं। (हिन्दी तंत्रसारे) हकलस ह्रीं, हकहल ह्रीं हसकल ह्रीं।**

द्वितीय कूट में विद्यार्णव तंत्र में उपरोक्त मंत्र है वहीं मंत्रोद्धार में लिखा है- **महेशो (ह) ब्रह्म (क) हंसश्च (ह) इन्द्रो (ल) ऽपि भुवनेश्वरी।** अतः द्वितीय कूट ''**हकहल ह्रीं** '' होना चाहियें।

५०. मधुमती षोडशी मंत्रः- **कहलस ह्रीं कहयल ह्रीं कससल ह्रीं।**

॥ अन्य मंत्राः ॥

१. नवाक्षरी रत्नेश्वरी विद्या- श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं प्लूं म्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं।

इसके **प्रद्योतन ऋषि है, छन्द त्रिष्टुप्, देवता रत्नेश्वरी, ह्रीं बीज, श्रीं शक्ति, ग्लूं कीलकं तथा स्वप्रकाशे विनियोग है।**

॥ ध्यानम् ॥

रत्नेश्वरीं रत्नभूषिताङ्गीं माणिक्य मौलिं तरुणार्ककान्तिम् ।
करैर्वहन्तीं नवरत्नदीपान् प्रकाशमानां मनसा स्मरामि ॥

२. चक्रेश्वरी गायत्री- चक्रेश्वरी के नव नाम है। प्रत्येक नाम के आगे ''**विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्**'' जोड़ने से उनका गायत्री मंत्र बन जाता है। यथा-

(१) त्रिपुरा देव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्। (२) त्रिपुरेश्वर्यै० (३) त्रिपुरसुन्दर्यै० (४) त्रिपुराश्रियैः० (५) त्रिपुरमालिन्यै० (६) त्रिपुरवासिन्यै० (७) त्रिपुरासिद्धायै० (८) त्रिपुराम्बायै० (९) महात्रिपुरसुन्दर्यै०।

३. त्रिपुरसुन्दरी गायत्री- ऐं त्रिपुरा देव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

षोडशी गायत्री- **ऐं त्रिपुरायै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नो क्लिन्ने प्रचोदयात्।**

४. प्रासादपरा-पराप्रासाद मंत्रः- (१) ह्सौं स्हौं (२) हसौंः स्हौंः।

इस मंत्र के **ऋषि परशंभु, छन्दगायत्री, देवता अर्धनारीश्वर** तथा बीज **ह्सां स्हीं है। ह्सां ह्सीं ह्सूं स्हां स्हीं स्हूं** इत्यादि से षडङ्गन्यास करें।

अमृतार्णवमध्यस्थ स्वर्णद्वीपे मनोरमे कल्पवृक्ष-वनान्तःस्थे नवमाणिक्य मण्डपे । नवरत्नमये श्रीमत् सिंहासन गताम्बुजे त्रिकोणान्तः समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम् ॥

अर्धाम्बिका समायुक्तं प्रविभक्त विभूषणं कोटिकंदर्प लावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ॥
मदनस्मित् मुखाम्बोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरं, दिव्याम्बर स्त्रगालेपं दिव्याभरण भूषितम् ॥
पानपात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः विद्या संसिद्धिं विभ्राणं सदानन्द - मुखेक्षणम् ॥
महाषोढोदिताशेष-देवतागण सेवितम् । एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम् ॥
पुं रूपं वा स्मरेद् देवि! स्त्रीरूपं विचिन्तयेत् । अथवा निष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानन्द लक्षणम् ॥

बीजावलि षोडशी मंत्रः- (१) श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं (२) श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं।

कामेश्वर मंत्रः- आं श्रीं ह्रीं क्लीं कामेश्वराय नमः।

इस मंत्र के **ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता श्रीकामेश्वर, बीज श्रीं, शक्ति ह्रीं, कीलक क्लीं** है। **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः** से अंगन्यास करें।

चन्द्रकोटि-समानाभं चन्द्रमौलि त्रिलोचनम् । त्रिशूलासि वराभीतिकरं कामेश्वरं भजे ॥

॥ त्रिपुर सुन्दरी पञ्चमीविद्या मंत्राः॥

पंचमी विद्या के पाँच अंग है (हिन्दीतंत्रसार)

१. वाग्भव कूट - क ए ई ल ह्रीं। २. कामराज प्रथमकूट- हसकल ह्रीं। ३. ''हकहल ह्रीं'' इसे द्वितीय कामराज कूट एवं स्वप्नावती मंत्र कहा है। **४. कामराज तृतीयकूट- ''कहयल ह्रीं''** इसे मधुमती मंत्र का मध्यकूट कहा है। **५. शक्तिकूटः- हकलस ह्रीं।**

॥ पञ्चमी मंत्रः॥

उपर्युक्त कूटों के आधार से -

(१) **कएईल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, हकलस ह्रीं।**

परन्तु हिन्दीतंत्रसार में मंत्र- **क ए ई ल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकयल ह्रीं, कहसल ह्रीं, हकलस ह्रीं।** कुलोड्डीश तंत्रानुसार बताया गया है। जो भिन्न मंत्र है

(२) **क ए ई ल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, सहकल ह्रीं।**

(३) उपर्युक्त दानों के प्रथम वाग्भवकूट **''क ए ईल ह्रीं''** की जगह लोपामुद्रा के वाग्भवकूट **''हसकल ह्रीं''** को प्रयुक्त करने पर दो मंत्र और प्राप्त होगें।

(४) उपर्युक्त प्रथम दोनों पंचमी मंत्र में प्रथमकूट की जगह **ई ए क ल ह्रीं** (ई कूट) अथवा **ए ईकल ह्रीं** (ए कूट) रखें तो चार मंत्र और बन जायेगें। इस तरह आपको पंचमी के आठ रूप प्राप्त होगें।

(५) **पंचविंशत्याक्षर मंत्र-** वैसे तो पंचमी विद्या के पाँचो कूट, ५-५ अक्षर के है। यह २५ अक्षर मंत्र है। परन्तु ''यामल'' के अनुसार तृतीय कूट में स्वप्नावती नामक षडक्षरकूट **(हसकहल ह्रीं)** की योजना करने से एवं शक्तिकूट कामराज होने से २५ अक्षर मंत्र इस प्रकार होगा-

क ए ईल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, सकल ह्रीं।

(६) यदि इसके प्रथम वाग्भव कूट (**क ए ई ल ह्रीं**) के स्थान पर लोपामुद्रा का वाग्भव कूट (**हसकल ह्रीं**) अथवा ''ई कूट'' (**ई ए कल ह्रीं**) या ''ए कूट'' (**ए ई कल ह्रीं**) योग करने से कुल पंचमी के चार स्वरूप होगें। उपरोक्त मंत्र के अलावा अन्य ३ मंत्र इस प्रकार है।

१. हसकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, सकल ह्रीं।

२. ई ए कल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, सकल ह्रीं।

३. ए ई कल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, सकल ह्रीं।

(७) उपर्युक्त चार एवं पूर्वोक्त आठ रूपों के त्रिकूटात्मक कामराज कूट के तृतीय कूट में अर्थात् मूल पंचमी विद्या के चौथे कूट में ''**कहहल ह्रीं**'' की योजना करने से आठों रूपों के आठ तथा उपर्युक्त ४ मंत्रो के ४ मंत्र और होकर विद्या के २४ मंत्ररूप हो जायेगें।

पूर्वोक्त आठ रूपों में यथा- **क ए ई ल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहहल ह्रीं सहकल ह्रीं**। दूसरे चार रूपों में यथा- **हसकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कहहल ह्रीं सकल ह्रीं**। इस तरह प्रत्येक रूपों में प्रयोजन करें।

(८) तत्त्व बोध के अनुसार ''**कहसल ह्रीं**'' इस कूट का प्रयोजन पूर्वविधि में ''**कहहल ह्रीं**'' की जगह करें तो आठ रूप, पूर्व आठ विद्याओं तथा ४ रूप (सकल ह्रीं) वाले मंत्र से प्राप्त होकर १२ विद्यारूप प्राप्त होगें। इस तरह पंचमी विद्या के ''**३६ रूप**'' होते है

॥ मंत्र जागृति – दीपनी विद्या ॥

१. मंत्र के आदि में ''**ह्रीं श्रीं** '' का योजन करने से मंत्र का जाग्रत व बोधन हो जाता है।

२. ''श्री क्रमे''- मंत्र के आदि में ''**श्रीं ह्रीं हंसः**'' एवं शक्तिकूट अर्थात् मंत्र क अन्त में '' **हंसः ह्रीं श्रीं**'' लगाकर सात बार जप करें।

३. ''**ह्री श्रीं ह्रीं हंसः**'' के जप कर ''**क ए ई ल**'' (पंचमी विद्या का प्रथम कूट) सात बार जप करें। ''**क्लीं**'' का जप कर ''**हसकल ह्रीं**'' (पंचमी विद्या में कामराज प्रथम कूट) का ७ बार जप करें। ''**श्रीं**'' का जपकर कामराज के द्वितीय कूट ''**हक हल** '' का जप करें। ''**ह्रीं**'' का जप करे पंचमी विद्या के कामराज तृतीय कूट का जप करें यथा- ''**क ह य ल ह्रीं**'' फिर शक्तिकूट ''**हकलस ह्रीं**'' का जप कर अन्त में ''**हंसः ह्रीं श्रीं**'' का जप करें।

४. ''**ह्रीं**'' लगाकर मधुमती मंत्र ''**कहलस ह्रीं, कहयल ह्रीं, कससल ह्रीं**'' का जप करें। अथवा ''**कहयल ह्रीं**'' पंचमी के इस मधुमती मंत्र का जप करें।

५. ''**ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं**'' का जपकर पंचमी विद्या के प्रथमकूट का जप करें। ''**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं** का जपकर पंचमी विद्या के द्वितीय कूट का जप करें। ''**ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं**'' का जप करे पंचमी विद्या के तृतीय कूट का जप करें। **ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं** का जपकर पंचमी मंत्र के चतुर्थ कूट का जप करें। ''**हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हूं हंसः**'' इस मंत्र का जप कर पंचमी मंत्र के पंचमकूट का जप करें। सभी मंत्र ७-७ बार करें।

६. ''**ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं, ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं, ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं, हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हूं हंसः।**'' इन सबका योग करके मंत्र जप करें।

७. ''**ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं, ॐ' ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं, हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हूं हंसः**'' इन सबका योग करके मंत्र जप करें।

८. योगिनी हृदय के अनुसार स्वर व्यंजन भेद से दीपिनी विद्या का सैंतीस प्रकार का विद्या भेद है।

॥ षोडशी की नित्यायें ॥

जिस तरह चन्द्रमा की षोडश कलायें है उसी तरह भगवती श्रीमहाषोडशी की १६ नित्यायें है। स्त्री स्वभावतः उन्हीं नित्याओं की कलाओं के अनुरूप क्रियाओं से सृष्टि का नित्य संचालन करती है।

नित्याओं के विषय में उनकी यंत्रार्चन पद्धति आदि पूर्ण विषय ग्रंथ के दूसरे भाग उत्तरार्द्धखण्ड में देखिये।

श्रीयंत्रार्चन के समय उनके नाम मंत्रों से ही पूजा करें या उनके मूल मंत्रों से पूजन करें।

कामेश्वरी महाभेदा वहवः सन्ति पार्वति । तत्र कामेश्वरी नित्या कथ्यते भुवि दुर्लभा ॥

जिन साधकों को सविधि नित्याओं का यंत्रार्चन करना होवें, श्रीविद्यार्णव तंत्र के **''चतुर्दश श्वास''** में अवलोकन करें। अन्य ग्रंथ जैसे ''नित्याषोडशिकार्णव'' त्रिपुरार्णव, श्रीतंत्रराज में व इस ग्रन्थ के दूसरे भाग उत्तरार्द्ध खण्ड में विधान वर्णित है।

॥१. कामेश्वरी॥

(१) ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरीच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वजगत्क्षोभकरे हूं हूं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं।

(२) ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्वशङ्करि सर्वजगत् क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लू सः सौः क्लीं ऐं।

(३) अं ऐं क्लीं सौं आं ईं ऊं यां रां लां वां सां कामेश्वरीच्छा-कामफलप्रदे सर्वसत्त्व-वशङ्करि जगद् विक्षोभकरे हुं हुं हुं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः हृसौः क्लीं ऐं कामेश्वरी नित्या श्री पादुकां पूजयामि।

॥२.भगमालिनी॥

(१) ऐं भगभुगे ऐं भगिनि ऐं भगक्लिन्ने ऐं भगावहे ऐं भगगुह्ये ऐं भगयोने ऐं भगनिपातनि ऐं भगसर्ववदि ऐं भगवशङ्करि ऐं भगरूपे ऐं भगनित्ये, ऐं भगक्लिन्ने ऐं भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय ऐं भगक्लिन्नद्रवे भगं क्लेदयभगं द्रावय भगामोघे भगविच्चे भगं क्षोभय सर्वतत्त्वान् भगेश्वरि ऐं भगब्लूं ऐं भगजं ऐं भगब्लूं ऐं भगमें ऐं भगब्लूं ऐं भगमों भगक्लिन्ने सर्वाणि भगानि में भगब्लूं ऐं भगहें ऐं भगब्लूं ऐं भगहें भगक्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय भग ऐं भगब्लूं ऐं भगहें ऐं भगब्लूं ऐं भगहें ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः भगहरब्लें भगमालिन्यै।

(२) ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय व२८ रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं।

॥३. नित्यक्लिन्ना ॥

मंत्र – **ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।**

रक्तां रक्ताङ्गवसना चन्द्रचूडां त्रिलोचनां स्विद्यत्वक्त्रां महाघूर्णलोचनां रत्नभूषिताम् ।
पाशांकुशौ कपालं च महाभीतिहरं तथा दधतीं संस्मरेन्नित्यां पद्मासनविराजिताम् ॥

॥ ४. भेरुण्डा ॥

मंत्र - (१) ॐ क्रों भेः क्रों च्रौः छ्रीं ज्रौं झ्रौं स्वाहा।

चन्द्रकोटिप्रतीकाशां स्त्रवन्तीममृतद्रवै नीलकण्ठां त्रिनेत्रां च नानाभरण भूषिताम् । इन्द्रनीलस्फुरत्कान्ति शिखिवाहनशोभितां पाशांकुशौ कपालं च छुरिकां वरदाभये । विभ्रतीं हेमसम्बद्ध-गारुडाङ्गद भूषिताम् ॥

॥ ५. वह्निवासिनी ॥

मंत्र - ॐ ह्रीं वह्नि वासिन्यै नमः।

ध्याये वह्निवासिनीं सुवर्णाभां नानालङ्कारम् । पाशांकुशौ स्वस्तिकं च शक्तिं च वरदाभये । दधतीं रत्नमुकुटां त्रैलोक्य-तिमिरापहाम् ॥

॥ ६. महावज्रेश्वरी ॥

मंत्र - (१) ॐ ह्रीं क्रों सः नित्य क्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। (२) ह्रीं नित्यक्लिन्ने ऐं क्रों मदद्रवे ह्रीं।

जपाकुसुमसङ्काशां रक्तांशुक विराजिताम्, माणिक्य भूषणां नित्यां नानाभूषाविभूषिताम् । पाशांकुशौ कपालस्थ-सुधापान विघूर्णितां, अभयं दधतीं मुद्रां ध्याये महावज्रेश्वरीम् ॥

॥ ७. शिवदूती ॥

मंत्र - ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

दूर्वानिभां त्रिनेत्रां च महासिंहसमासानां ।
शङ्खारि बाणचापांश्च सृणिपाशौ वराभये ।
दधतीं चिन्तये नित्यां शिवदूतीं भगवतीम् ॥

॥ ८. त्वरिता ॥

मंत्र - १. ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट्। २. ऐं क्लीं सौः ह्स्त्रौं ह्स्क्लीं हस्त्रौः सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।

श्यामाङ्गीं रक्तसत्पाणि चरणाम्बुज शोभिताम् । वृषलाहि सुमंजीरां फटारत्न विभूषिताम् ॥ स्वर्णांशुका स्वर्णभूषां वैश्याहि द्वंद्वमेखलाम् । तनुमध्यां पीनवृत्तकुचयुग्मां वराभये ॥ दधतीं शिखिपिच्छानां वलयाङ्गद शोभिताम् । गुञ्जारुणां नृपाहीन्द्रकेयूरां रक्तभूषणाम् ॥ द्विजनागस्फुरत् कर्णभूषां मत्तारुणेक्षणाम् । नीलकुञ्चित वम्मिल्ल वनपुष्प कलापिनीम् ॥ कैरातीं शिखिपत्राढ्य निकेतन विराजिताम् । स्फुरत् सिंहासन प्रोढां स्मरेद् भयविनाशिनीम् ॥

॥ ९. कुलसुन्दरी ॥

मंत्र - ऐं क्लीं सौः।

॥ १०. नित्या ॥

मंत्र -१. ऐं क्लीं सौः हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः। (हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः)। २. ऐं क्लीं सौः

ह्स्त्रौं ह्स्क्लीं हस्त्रौं: सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।

॥ ११. नीलपताका ॥

मंत्र – ॐ हृत् कामेश्वरि कामांकुशे कामपताकिके भगवति नीलपताके भगवति! नमोऽस्तु मे परमगुह्ये ह्रीं ह्रीं ह्रीं मदने मदनदेहे त्रैलोक्यमावेशय हुं फट् स्वाहा।

रक्तां रक्तांशुकप्रौढां नानारत्न विभूषिताम्, इन्द्रनील स्फुरन्नील पताकां कमलेस्थिताम् ।
कामग्रैवेय संलग्न सृणो च वरदाभये, दधतीं परमेशानीं त्रैलोक्याकर्षण क्षमाम् ॥

॥ १२. विजया ॥

मंत्र – हसखफ्रें विजयायै नमः।

एक वक्त्रां दशभुजां सर्पयज्ञोपवीतिनीं, दंष्ट्राकरालवदनां नरमालाविभूषिताम् ।
अस्थिचर्मावशेषां तां वह्निकूट समप्रभां, व्याघ्राम्बरां महाप्रौढ शवासन विराजिताम् ॥१॥
रणेस्मरणमात्रेण भक्तेभ्यो विजयप्रदां । शूलं सर्पं च टङ्कासि-सृणि घण्टाशनिद्वयम् ।
पाशमग्निमभीतिं च दधानां विजयां स्मरेत् ॥२॥

॥ १३. सर्वमङ्गला ॥

मंत्र – स्वों सर्वमङ्गलायै नमः।

शुभ्रपद्मासने रम्यां चन्द्रकुन्द-समद्युतिं, सुप्रसन्नं शशिमुखीं नानारत्न विभूषिताम् ।
अनंतमुक्ताभरणां स्त्रवन्तीममृतद्रवं वरदाभय शोभाढ्यं स्मरेत् सौभाग्यवर्द्धिनीम् ।

॥ १४. ज्वालामालिनी ॥

मंत्र – ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूत-संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हूं हूं रं रं हुं फट् स्वाहा।

उद्यद् विद्युल्लताकान्ति स्वर्णाभरण भूषिताम् । महासिंहासन प्रोढां ज्वालामालां करालिनीम् ॥
अरि-शङ्खौ खड्ग खेटे त्रिशूलं डमरूं तथा । पानपात्रं च वरदं दधतीं संस्मरेद् यजेत् ॥

॥ १५. विचित्रा मंत्रः ॥

मंत्र – चक्रौं

शुभ्राङ्गी ज्ञानदा नित्यं विचित्र वसना सदा ।
विचित्रतिलका नित्यं विचित्र कुसुमोज्ज्वला ।
वरदाभय शोभाढ्यां नानारत्नधरा क्वचित् ॥

१६. महात्रिपुर सुन्दरी

पूर्व वर्णित नानादेवताओं द्वारा उपास्य मंत्रों में से अपने इष्ट मंत्र से भगवति का आवाहन व पादुका पूजन करना चाहियें।

॥ अथ षोडशी मंत्र प्रयोग विधानम् ॥

साधक प्रातः उठकर तांत्रिक संध्याविधि जो पूर्व में कहीं गयी है उनके अनुसार कार्य करें। भूतशुद्धि कर अंतर्मातृकान्यास, बहिर्मातृकान्यास करें।

आसनन्यास :- **ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः पादयो। ह्रीं श्रीं हैं क्लीं सौः चक्रासनाय नमः जंघयो। ह्रीं श्रीं हैं क्लीं सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः जान्वो। ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें साध्य सिद्धासनाय नमः लिङ्गे।**

आत्मरक्षान्यास:- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष-** यह मंत्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें।

कुल्लकादि न्यासः - कुल्लुका, सेतु, महासेतु मंत्र के १०-१० बार जप करने से मंत्रसिद्धि शीघ्र होवें।

१. ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (कुल्लुकां शिरसि)। २. ॐ (सेतुं हृदि) ३. ॐ ह्रीं श्रीं-(महासेतुं कण्ठे) ४. ह्रीं श्रीं क्लीं (परासेतुं सहस्त्रारे) ५. ह्रीं श्रीं आं ऐं क्लीं सौः अं आं इं ईं ......हं लं क्षं- (निवार्ण विद्यां नाभौ) ६. क्लीं नमः- लिङ्गे ७. ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं ऐं- जिह्वायां।

॥ रहस्य न्यासः ॥

विनियोगः- **अस्य श्री रहस्य न्यास मंत्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दासि, चिच्छक्ति, महात्रिपुरसुन्दरी देवता, कृताकृत न्यास पूर्णतासिद्धये विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ब्रह्मविष्णु महेश्वर ऋषिभ्यो नमः शिरसि, ऋग्यजुसाम छन्देभ्यो नमः मुखे, चेतन्या शक्तये नमः नाभौ, श्रीमहात्रिपुर देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

सभी न्यास मंत्रों के पहिले **ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं ये १२ बीजाक्षर पढे पश्चात् न्यास करें। १२ अंक का अर्थ १२ बीजाक्षर संकेत से हैं।**

१२ सदाशिवासनायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	मूलाधारे।
१२ रतिप्रियायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	स्वाधिष्ठाने।
१२ ज्ञानस्वरूपायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	मणिपूरे।
१२ ध्यानस्वरूपायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	अनाहते।
१२ विशुद्धस्वरूपायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	विशुद्धे।
१२ स्वतंत्रस्वरूपायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	आज्ञाचक्रे।
१२ आनन्दस्वरूपायै	महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः	सहस्त्रारे।

कामन्यासः- **ह्री कामाय नमः हृदये। क्लीं मन्मथाय नमः शिरसे स्वाहा। ऐं कन्दर्पाय नमः शिखायै वषट्। ब्लूं मकरध्वजाय नमः कवचाय हुं। स्त्रीं मीनकेतवे नमः अस्त्राय फट्।**

रत्यादि न्यासः- **ऐं रत्यै नमः लिङ्गे। क्लीं प्रीत्यै नमः हृदि। सौः मनोभवाय नमः भ्रूमध्ये। सौः अमृतेश्यै नमः भ्रूमध्ये। क्लीं योगिन्यै नमः हृदि। ऐं विश्वयोन्यै नमः लिङ्गे।**

मनोभव न्यासः- **ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौं ईशानाय मनोभवाय नमः शिरसि। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः मुखे। ह्रीं श्रीं हस्त्रें अघोरकुमाराय कंदर्पाय नमः हृदि। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रीं वामदेवाय मन्मथाय नमः लिङ्गे। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रूं**

सद्योजाताय कामदेवाय नमः सर्वाङ्गे। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौं ईशानाय मनोभवाय नमः मस्तके। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः भाले। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रें अघोरकुमाराय कंदर्पाय नमः दक्षकर्णे। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रीं वामदेवाय मन्मथाय नमः वामकर्णे। ह्रीं श्रीं ह्स्त्रूं सद्योजाताय कामदेवाय नमः चूडाधः।

वाणन्यासः- ह्रीं श्रीं द्रां क्षोभवाणाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं द्रीं द्रावणवाणाय नमः तर्जनीभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं आकर्षण वाणाय नमः मध्यमाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं ब्लूं मोहनवाणाय नमः अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं सः उन्मादन बाणाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

चतुर्दशाक्षर चक्रन्यासः- ऐं नमो शिरसि। क्लीं सौः भ्रुवोः। ऐं ललाटे। क्लीं सौः श्रोत्रयोः। ऐं भ्रूमध्ये। क्लीं सौः नेत्रयोः। ऐं शिरसि। क्लीं सौः नासिकयोः। ऐं चिबुके। क्लीं सौः ओष्ठयोः। ऐं नासिकायां। क्लीं सौः गण्डयोः। ऐं गले। क्लीं सौः बाहुमूलयोः। ऐं कण्ठे। क्लीं सौः बाह्वोः। ऐं चिबुके। क्लीं सौः स्तनयोः। ऐं हृदये। क्लीं सौः पार्श्वयोः। ऐं नाभौ। क्लीं सौः स्तनयोः। ऐं हृदये। क्लीं सौः करयोः। ऐं लिङ्गे। क्लीं सौः त्रिकयोः। ऐं पृष्ठे। क्लीं सौः नितम्बयोः। ऐं क्लीं सौः कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सर्वाधाराय नमः मूलाधारे।

वाग्देवता देवता अङ्गन्यासः- अं आं ...... अः क्लीं (ब्लूं) रसिनी (वर्शिनी) वाग्देवतायै नमः शिरसि। कं ......ङं क्लीं (कण ह्रीं) कामेश्वरि वाग्देवतायै नमः ललाटे। चं......ञं श्रीं (ब्लीं) मोहिनी वाग्देवतायै नमः मुखे। टं......णं कुं (प्लूं) विमलानना वाग्देवतायै नमः कण्ठे। तं......नं श्रीं (ज्म्रीं) अव्यया (अरुणा) वाग्देवतायै नमः हृदि। पं......मं श्रीं (ह्स्ल्व्यूं) जयिनी वाग्देवतायै नमः नाभौ। यं......वं क्ष्मीं (झमूयूँ) विश्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः मूलाधारे। शं......हं लं क्षं सोहं हंसः क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै नमः सर्वाङ्गे।

॥ अथ श्रीषोडशी मंत्राः॥

१. कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं श्रीं (कामराज पूजिता)

२. श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं (मंत्रमहोदधौ महाषोडशी मंत्र)

३. श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं (श्रीकल्पद्रुमे महाषोडशी मंत्र)

विनियोगः- अस्य श्री महाषोडशी मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिं, क्लीं कीलम्, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। (तृतीय मंत्र से)

ऋषिन्यासः- दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवता नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। सौः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अन्य मंत्र- ह्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं। इस मंत्र के आनन्दभैरव ऋषिः, गायत्रीछन्द है शेष पूर्ववत् है।

षडङ्गन्यासः- मंत्र में वर्ण संकेत भाषा है। जैसे ''क'' के आगे ५ लिखे है। तो ''कएईल ह्रीं'' पाँच बीज। ''ह'' के आगे ६ लिखें हैं तो ''हसकहल ह्रीं'' छः बीज। ''स'' के आगे ४ लिखने का अर्थ है- ''स'' सहित ४ बीज सकल ह्रीं। इस तरह मंत्र प्रयोग समझें।

ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। कएईल ह्रीं शिखायै वषट्। हसकहल ह्रीं

कवचाय हुं। सकल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्।

करन्यासः- ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। कएईल ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। हसकहल ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। सकल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

॥ ध्यानम् ॥

बालाऽर्कयुत तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम् , नानालंकृति राजमानवपुषं बालोडुराट् शेखराम् । हस्तैरिक्षुधनुः सृणिंसुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीम् श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

वर्णन्यासः- ॐ श्रीं नमः पादयोः। ॐ ह्रीं नमः जंघयोः। ॐ क्लीं नमः जानुनोः। ॐ ऐं नमः कटयोः। ॐ सौः नमः लिङ्गे। ॐ ॐ नमः पृष्ठे। ॐ ह्रीं नमः नाभौ। ॐ श्रीं नमः पार्श्वे। ॐ क ५ नमः स्तनयोः। ॐ ह ६ नमः अंसयोः। ॐ स ४ नमः कर्णयोः। ॐ सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ऐं नमः वक्त्रे। ॐ क्लीं नमः नेत्रत्रयोः। ॐ ह्रीं नमः कर्णयोः। ॐ श्रीं नमः कर्णशष्कुल्योः।

सृष्टि न्यासः- ॐ श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीं नमः ललाटे। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः। ऐं नमः कर्णयोः। सौः नमः अंसयोः। ॐ नमः गण्डयोः। ह्रीं नमः दंतयोः। श्रीं नमः ओष्ठयोः। कएईल ह्रीं नमः जिह्वायाम्। हसकहल ह्रीं नमः मुखे। सकल ह्रीं नमः पृष्ठे। सौः नमः सर्वाङ्गे। ऐं नमः हृदि। क्लीं नमः स्तनयोः। ह्रीं नमः कुक्षौ। श्रीं नमः लिङ्गे।

स्थिति न्यासः- ॐ श्रीं नमः अंगुष्ठयोः। ह्रीं नमः तर्जन्योः। क्लीं नमः मध्यमयोः। ऐं नमः अनामिकयोः। सौः नमः कनिष्ठिकयौः। ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रीं नमः मुखे। श्रीं नमः हृदि। कएईल ह्रीं नमः नाभ्यादिपादान्तं। हसकहल ह्रीं कण्ठादि नाभ्यंन्तम्। सकल ह्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रात्कण्ठान्तम्। सौः नमः पादांगुष्ठयोः।ऐं नमः पादतर्जन्यो। क्लीं नमः पाद मध्यमयो। ह्रीं नमः पदानामिकयोः। श्रीं नमः पदकनिष्ठयोः।

संहारन्यास :- ॐ श्री नमः पादयोः। ह्रीं नमः जंघयो। क्लीं नमः जान्वो। ऐं नमः कटिभागयोः। सौः नमः लिङ्गे। ॐ नमः पृष्ठे। ॐ ह्रीं नमः नाभिदेशे। श्रीं नमः पार्श्वयोः। कएईलह्रीं नमः स्तनयोः। हसकहल ह्रीं नमः अंसयोः। सकलह्रीं नमः कर्णयोः। सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ऐं नमः मुखे। क्लीं नमः नेत्रयोः। ह्रीं नमः कर्णयोः। श्रीं नमः कर्णशुष्कुल्योः।

॥ अथ पञ्चन्यासादि ॥

(सभी मंत्रों के पूर्व में - ॐ का उच्चारण करें)

प्रथम न्यास :- ॐ श्रीं नमः मूर्ध्नि। ह्रीं नमः वक्त्रे। क्लीं नमः दक्षनेत्रे। ऐं नमः वामनेत्रे। सौः नमः दक्षकर्णे। ॐ नमः वामकर्णे। ह्रीं नमः दक्षिणांसे। श्रीं नमः वामांसे। कएईल ह्रीं दक्षिणगंडे। हसकहल ह्रीं नमः वामगण्डे। सकल ह्रीं नमः उर्ध्वोष्ठे। सौः नमः अधरोष्ठे। ऐं नमः वक्त्रमध्ये। क्लीं नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। ह्रीं नमः अधोदंत पंक्तौ। ॐ श्रीं नमः वदने।

द्वितीय न्यासः- ॐ श्रीं नमः शिखायाम्। ह्रीं नमः शिरसि। क्लीं नमः ललाटे। ऐं नमः भ्रुवोः। सौः नमः नासिकयोः। ॐ नमः वक्त्रे। ह्रीं नमः दक्षिणहस्तमूले। श्रीं नमः दक्षिणकर्पूरे। कएईल ह्रीं नमः दक्षिणमणिबंधे।

हसकहल ह्रीं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले। सकल ह्रीं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। सौः नमः वामहस्तमूले। ऐं नमः वामकर्पूरे। क्लीं नमः वाममणिबंधे। ह्रीं नमः वामहस्तांगुलिमूले। श्रीं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे।

तृतीय न्यासः- ॐ श्रीं नमः शिरसि। ह्रीं नमः ललाटे। क्लीं नमः दक्षनेत्रे। ऐं नमः वामनेत्रे। सौः नमः मुखे। ॐ नमः जिह्वायाम्। ह्रीं नमः दक्षिणपादमूले। श्रीं नमः दक्षिणजानुनि। कएईल ह्रीं नमः दक्षिणगुल्फे। हसकहल ह्रीं नमः दक्षपादांगुलिमूले। सकल ह्रीं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। सौः नमः वामपादमूले। ऐं नमः वामजानुनि। क्लीं नमः वामगुल्फे। ह्रीं नमः वामापादांगुलिमूले। श्रीं नमः वामपादांगुल्यग्रे।

चतुर्थ न्यासः- ॐ श्रीं नमः शिरसि। ह्रीं नमः मुखे। क्लीं नमः दक्षनेत्रे। ऐं नमः वामनेत्रे। सौः नमः दक्षिणकर्णे। ॐ नमः वामकर्णे। ह्रीं नमः दक्षनासापुटे। श्रीं नमः वामनासापुटे। कएईल ह्रीं नमः दक्षकपोले। हसकहल ह्रीं नमः वामकपोले। सकल ह्रीं नमः उर्ध्वोष्ठे। सौः नमः अधरोष्ठे। ऐं नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। क्लीं नमः अधोदन्तपंक्तौ। ह्रीं नमः मूर्ध्नि। श्रीं नमः मुखे।

पंचम न्यासः- ॐ श्रीं नमः ललाटे। ह्रीं नमः गले। क्लीं नमः हृदि। ऐं नमः नाभौ। सौः नमः मूलाधारे। ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रीं नमः मुखे। श्रीं नमः गुदे। कएईल ह्रीं नमः मूलाधारे। हसकहल ह्रीं नमः हृदि। सकल ह्रीं नमः ब्रह्मरंध्रे। सौः नमः दक्षिणहस्ते। ऐं नमः वामहस्ते। क्लीं नमः दक्षपादे। ह्रीं नमः वामपादे। श्रीं नमः हृदि।

स्वतंत्र न्यासः-

विनियोगः- अस्य श्री महात्रिपुरसुन्दरी स्वतंत्रन्यासस्य आनंदभैरव ऋषिः, देवीगायत्री छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवताः, ऐं बीजं, सौः शक्ति, क्लीं कीलकं, पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धयर्थे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास करके करन्यास करें।

करन्यासः- ऐं ह्रीं क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः। सौः ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ऐं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं नमः अनामिकाभ्यां नमः। सकल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

वर्ण संकेत- क ५= कएईल ह्रीं। ह ६= हसकहल ह्रीं। स ४= सकल ह्रीं।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ५ सर्वज्ञायै महात्रिपुर सुन्दर्यै हृदयाय नमः। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह ६ नित्यतृप्तायै महात्रिपुर सुन्दर्यै शिरसे स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं सौः स ४ अनादिबोधायै महात्रिपुर सुन्दर्यै शिखायै वषट्। ऐं ह्रीं श्रीं सौः स ४ स्वतंत्रायै महात्रिपुर सुन्दर्यै कवचाय हुं। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह ६ नित्यमलुप्तशक्तये महात्रिपुर सुन्दर्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ५ अनन्तायै महात्रिपुर सुन्दर्यै अस्त्राय फट्।

॥ अथ षोढान्यासः॥

शक्ति उपासना में षोढान्यास, महाषोढा, गुह्य षोढा, कामकला न्यास, प्रपंचन्यास, हंसमातृकादि न्यासों का बहुत महत्व है। यह न्यास पूर्वषोढा, सर्वाम्नाय षोढा, उत्तरषोढा, उर्ध्वम्नायषोढा विषय तथा संहार सृष्टि, स्थिति भेद से कई तरह से है। यहाँ पर केवल पूर्व षोढान्यास, महाषोढान्यास दे रहे है।

विभिन्न षोढान्यासों के प्रभाव मात्रसे साधक देववत् हो जाता है। ग्रहोपद्रव प्रेतोपद्रव नष्ट हो जाते है। दश योजन की

दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। जिस व्यक्ति को साधक नमस्कार करे वह व्यक्ति ६ मास में अपमृत्यु को प्राप्त होवे। सामान्य मूर्ति को नमस्कार करने से उसकी प्रतिष्ठा खंडित हो जाती है।

षोढान्यास में ६ प्रकार के न्यास आते है। **१. गणेश २. ग्रह ३. नक्षत्र ४. योगिनी ५. राशि ६.पीठन्यास।**

(१) गणेश मातृका न्यास

विनियोगः- **श्री गणेश मांतृका न्यास मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातृका सुन्दरी देवता ममोपास्य श्री विद्याङ्गत्वेन षोढान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्री मातृका [illegible] देवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।**

षडङ्गन्यासः- **अं कं ५ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः आं ऐं हृदयाय नमः।** (५ से अर्थ उस वर्ग के ५ अ[illegible] है)

इं चं ५ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ईं क्लीं शिरसे स्वाहा। उं टं ५ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ऊं सौः शिखा[illegible] व[illegible]ट्। एं तं ५ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ऐं सौः कवचाय हुं। ओं पं ५ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः औं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् [illegible] क्षं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः अः ऐं अस्त्राय फट्। अं कं खं.......ङंआं ऐं हृदयाय नमः। इं चं ....ञं ईं क्लीं [illegible]से स्वाहा। उं टं ....णं ऊँ सौः शिखायै वषट्। एं तं .....नं ऐं सौः कवचाय हुं। ओं पं......मं औं क्लीं नेत्रत्रया[illegible] वौषट् । अं यं रं ...... हं क्षं लं अः ऐं अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यत्सूर्य सहस्त्राभां पीनोन्नतपयोधराम् । रक्तमालाम्बरालेप रक्तभूषण भूषिताम् ॥
पाशांकुश धनुर्वाण-भास्वत्पाणि चतुष्टयाम् । रक्तत्रिनेत्र त्रयां स्वर्ण मुकुटोद्भासि [illegible]न्द्रिकाम् ॥

इसके बाद निम्न मंत्रों से न्यास करते समय प्रारंभ में **गँ** और अन्त में **नमः** जोड़ देवें।

गं अं विघ्नेशह्रींभ्यां नमः ललाटे। गं आं विघ्नराज श्रीभ्यां मुखवृत्ते। इं विनायक पुष्टिभ्यां दक्षनेत्रे। ईं शिवोत्तम शांतिभ्यां वामनेत्रे। उं विघ्नकृत्स्वस्तिभ्यां दक्षकर्णे। ऊं विघ्[illegible]र्ता सरस्वतीभ्यां वामकर्णे। ऋंगण स्वाहाभ्यां दक्षनासापुटे। ॠं एकदन्त सुमेधाभ्यां वामनासापुटे। लृंद्विदन्त कान्तिभ्यां दक्षगण्डे। लॄं गजवक्त्र कामिनीभ्यां वामगण्डे।

एं निरञ्जन मोहिनीभ्यां ओष्ठे। ऐं कपर्दीनटीभ्यां अधरे। ओं दीर्घजिह्वपार्वतीभ्यां उर्ध्व दन्तपंक्तौ। औं शंकुकर्ण ज्वालिनीभ्यां अधोदन्तपंक्तौ। अं वृषभध्वजनन्दाभ्यां शिरसि। अः सुरेशगणः नायिकाभ्यां मुखे। कं गजेन्द्र कामरूपाभ्यां दक्षबाहुमूले। खं सूर्प कर्णो उमाभ्यां दक्षकर्पूरे। गं त्रिलोचन तेजवतीभ्यां दक्षमणिबन्धे। घं लंबोदर सत्याभ्यां दक्ष अंगुलिमूले। ङंमहानन्द विघ्नेशीभ्यां दक्षअङ्गुल्यग्रे।

चं चतुर्मूर्ति सुरूपिणीभ्यां वामबाहुमूले। छं सदाशिव कामदाभ्यां वामकर्पूरे। जं आमोद मदजिह्वभ्यां वाममणिबन्धे। झं दुर्मुख भूतिभ्यां वाम अंगुलीमूले। ञं सुमुख भौतिकाभ्यां वाम अङ्गुल्यग्रे। टं प्रमोद सिताभ्यां दक्षोरुमूले। ठं एकपादरमाभ्यां जानुनि। डं द्विजिह्वमहिषीभ्यां दक्षगुल्फे। ढं शूरभाञ्जिनीभ्यां दक्षपादाङ्गुलिमूले। णं वीरविकर्णाभ्यां दक्षपादाङ्गुल्यग्रे। तं षणमुख भृकुटीभ्यां वामोरूमूले। थं वरद लज्जाभ्यां वाम जानुनि। दं वामदेव दीर्घ घोणाभ्यां वामगुल्फे।

धं वक्रतुण्डधनुर्धराभ्यां वामपादाङ्गुलिमूले। नं द्विरदयामिनीभ्यां वाम पादाङ्गुल्यग्रे। पं सेनानी रात्रिभ्यां दक्षपार्श्वे। फं कामान्धग्रामणीभ्यां वामपार्श्वे। बं मत्तराशि प्रभाभ्यां पृष्ठे। भं विमललोल लोचनाभ्यां नाभौ। मं मत्तवाहनभ्यां चञ्चलाभ्यां उदरे। यं त्वमात्मभ्यां जटीदीप्तिभ्यां हृदि। रं असृगात्मभ्यां मुण्डी सुभगाभ्यां दक्षांसे। लं मांसात्मभ्यां खड्गी दुर्भगाभ्यां ककुदि। वं मेदोत्मभ्यां वरेण्य शिवाभ्यां वामांसे। शं अस्थ्यात्मभ्यां वृषकेतन भगाभ्यां हृदयादि दक्षहस्ते। षं भज्जात्मभ्यां भक्तप्रिय भगिनीभ्यां हृदयादि वामहस्ते। सं शुक्रात्मभ्यां गणेश भोगिनीभ्यां हृदयादि दक्षपादे। हं प्राणात्मभ्यां मेघनाद सुभगाभ्यां हृदयादि वामपादे। लं शक्त्यात्मभ्यां व्यासी कालरात्रिभ्यां हृदयादि उदरे। क्षं क्रोधात्मभ्यां गणेश्वर कालिकाभ्यां हृदयादि मुखे।

(२) ग्रहमातृका

विनियोगः - अथ ग्रहमातृकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीमातृका ग्रहरूपिणी सुन्दरी देवता ममोपास्य श्रीविद्याङ्गत्वेन् षोढान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - दक्षिणामूर्तयेनमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे श्रीमातृका सुन्दर्यै देवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः - अं कं....ङ आं ऐं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं क्लीं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं सौः शिखायै वषट्। ए तं....नं ऐं सौः कवचाय हुं। ओं पं....मं औं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं रं....हं लं क्षं अः ऐं अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरं । धूम्रकृष्णं च धूम्रं च धूमधूम्रं विचिन्तयेत् ॥
रवि मुख्यान कामरूपान् सर्वाभरण भूषितान् । वामोरून्यस्त हस्तांश्च दक्षिणेन वरप्रदान् ॥

अं आं इं....अं अः सूर्याय रेणुकाम्बायै नमः हृदि। यं रं....वं चन्द्रायामृताम्बायै नमः भ्रूमध्ये। कं खं....ङं मङ्गलाय धामाम्बायै नमो नेत्रयोः। चं....ञं बुधाय ज्ञानरूपाम्बायै नमो कर्णयोः। टं....णं बृहस्पतये यशस्विन्यम्बायै नमो हृदयोपरिभागे। तं.....नं शुक्राय शाङ्कर्यम्बायै नमः कण्ठे। पं....मं शनैश्चराय शक्त्यम्बायै नमो नाभौ। शं....सं राहवे कृष्णाम्बायै नमो पादयो। हं केतवे धूम्राम्बायै नमो गुदे। लं वाराह शान्ति रूपाम्बायै नमो लिङ्गे। क्षं कूर्माय क्षेमाम्बायै नमो पृष्ठे।

(३) नक्षत्रमातृका

विनियोगः - अथ नक्षत्रमातृकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः गायत्रीछन्दः नक्षत्ररूपिणी सुन्दरी देवता श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, श्री नक्षत्र रूपिणी सुन्दरी देवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

ज्वलत्कालाग्निसङ्काशाः सर्वाभरणभूषिताः । नतिपाण्योऽश्विनामुख्या वरदाभयपाणयः ॥

निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र के अंत में **नमः** जोड़कर न्यास करें। **यथा - अं आं अश्विन्यै नमः ललाटे। इं भरिण्यै**

दक्षनेत्रे। ईं उं ऊं कृत्तिकायै वामनेत्रे। ऋं.....लृं रोहिण्यै दक्षकर्णे। एं मृगशिरसे वामकर्णे। ऐं आर्द्रायै दक्षनसि ओ....अः पुनर्वसवे वामनसि। कं पुष्याय कंठे। खं गं आश्लेषायै दक्षस्कंधे। घं ङं मघायै वामस्कंधे। चं छं पूर्वा फाल्गुन्यै दक्षकर्पूरे। जं उत्तराफाल्गुन्यै वामकर्पूरे। झं ञं हस्ताय दक्षमणिबन्धे। टं ठं चित्रायै वाममणिबन्धे। डं स्वात्यै दक्षहस्ते। ढं णं विशाखायै वामहस्ते। तं थं दं अनुराधायै नाभौ। धं ज्येष्ठायै दक्षकटौ। नं पं फं मूलाय वामकटौ। बं पूर्वाषाढायै दक्षोरौ। भं उत्तराषाढायै वामोरौ। मं अभिजिताय लिङ्गे। यं श्रवणाय दक्षजानुनि। रं घनिष्ठायै वामजानुनि। लं शतभिषायै दक्षगुल्फे। वं शं पूर्वभाद्रपदायै वामगुल्फे। षं सं हं उत्तराभाद्रपदायै दक्ष पादे। लं क्षं रेवत्यै वामपादे।

(४) योगिनी मातृका

विनियोगः- योगिनी मातृका मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, योगिनी रूपा श्री सुन्दरी देवता, श्री विद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास पूर्ववत् है।

॥ ध्यानम् ॥

सितासितारुणा वभ्रू चित्रा पीताश्च चिन्तयेत्। चतुर्भुजाः समैवक्त्रैः सर्वाभरण भूषिताः ॥

निम्नलिखित मंत्रों में से प्रत्येक के आदि में ह्रीं श्रीं जोड़कर न्यास करें।

ह्रीं श्रीं डां डीं डं क्षमलवरयूं पूं डाकिन्यै नमः अं आं....अः मम त्वचं रक्ष रक्ष त्वगात्मने नमः कण्ठदेशे (विशुद्धचक्रे)। रां रीं रं क्षमलवरयूं पूं राकिन्यै नमः कं....ठं मम रक्तं रक्ष रक्ष असृगात्मने हृदि (अनाहते)। लां लीं लं क्षमलवरयूं पूं लाकिन्यै नमः डं....फं मम मांस रक्ष रक्ष मांसात्मने नाभौ (मणिपूरे)। कां कीं कूं क्षमलवरयूं पूं काकिन्यै नमः बं....लं मम मेदो रक्ष रक्ष मेदात्मने लिङ्गमूले (स्वाधिष्ठाने)।

शां शीं शं क्षमलवरयूं पूं शाकिन्यै नमः वं...सं ममास्थि रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मने गुदे (मूलाधारे।) हां हीं हं क्षमलवरयूं पूं हाकिन्यै नमः हं क्षं मम मज्जां रक्ष रक्ष मज्जात्मने भ्रूमध्ये (आज्ञाचक्रे)। यां यीं यूं क्षमलवरयूं पूं याकिन्यैः नमः अं मम शुक्रं रक्ष रक्ष शुक्रात्मने (ब्रह्मरंध्रे)।

(५) राशिमातृका

विनियोगः - अस्य श्री राशिमातृका न्यास मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, राशि रूपा श्री सुन्दरी देवता, श्री विद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः। ऋष्यादि न्यास पूर्ववत् है।

॥ ध्यानम् ॥

रक्त श्वेत हरिद्वर्ण पाण्डु चित्रा सितान्स्मरेत्। पिशङ्ग पिङ्गलौ बभ्रु कर्बुराशितधूम्रभान् ॥

अं....ईं मेषाय नमः दक्ष पादगुल्फे। उं....ऋं वृषाय दक्षजानुनि ॠं....लृं मिथुनाय दक्ष वृषणे। एं ऐं कर्काय दक्षकुक्षौ। ओं औं सिंहाय दक्षस्कंधे। अं अः शं षं सं हं लं कन्यायै दक्षशिरोभागे। कं....ङं तुलायै वामशिरो भागे। चं....ञं वृश्चिकाय नमः वामस्कंधे। टं....णं धनुषे नमः वामकुक्षौ। तं....नं मकराय नमः वामवृषणे। पं....मं कुंभाय नमः वाम जानुनि। यं....वं मीनाय वाम पादगुल्फे।

(६) पीठमातृका

विनियोगः – **अस्य श्री पीठमातृका मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, पीठरूपिणी सुन्दरी देवता, श्री विद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।** ऋष्यादि न्यास पूर्ववत् है।

॥ ध्यानम् ॥

सिता सितारूण श्यामहरित् पीतान्यनुक्रमात् ।
पुनरेतत्क्रमाद्देवि पञ्चाशतस्थान सञ्चये ॥
पीठानीह स्मरेद्विद्वान् सर्वकामार्थ सिद्धये ।

निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र के आदि में **'ह्रीं श्रीं'** और अंत में **पीठाय नमः** जोड़कर न्यास करें।

ह्रीं श्रीं अं कामरूपपीठाय नमः ललाटे। आं वाराणसी. मुखवृत्ते। इं नेपाल. दक्षनेत्रे। ईं पौण्ड. (पौण्डवर्द्धन) वामनेत्रे। उं काश्मीर. दक्षकर्णे। ऊं कान्यकुब्ज. वामकर्णे। ऋं पूर्णगिरि. दक्षनासापुटे। ॠं अर्बुलाचल. वामनासापुटे। लृं आम्रातकेश्वर. दक्षगण्डे। लॄं एकाम्र. वामगण्डे। एं त्रिस्त्रोत. ओष्ठे। ऐं कामकोटि. अधरे। ओं कैलास. उर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं भृगु. अधोदन्तपंक्तौ। अं केदार. शिरसि। अः चन्द्रपुर. मुखे।

कं श्रीपीठाय नमः दक्षबाहुमूले। खं ॐकार पीठाय नमः दक्ष कर्पूरे। गं जालन्धर दक्षिणमणिबन्धे। घं मालव. दक्षकराङ्गुलिमूले। ङं कुलान्त. दक्षकराङ्गुल्यग्रे। चं देवीकोट्टक. वामबाहुमूले। छं गोकर्ण. वामकर्पूरे। जं मारूतेश्वर. वाममणिबन्धे। झं अट्टाहास. वामकराङ्गुलिमूले। ञं विरज. वाम कराङ्गुल्यग्रे। टं राजगृह. दक्षौरूमूले। ठं महापथ. दक्षजानुनि। डं कोल्लगिरि. दक्षगुल्फे। ढं एलापुर. दक्षपादाङ्गुलिमूले। णं कालेश्वर. दक्षपादाङ्गुल्यग्रे। तं जयन्ती. वामोरूमूले। थं उज्जयिनी. वामजानुनि। दं चरित्र. वामगुल्फे। धं क्षीरिका. वामपादांगुलिमूले। नं हस्तिनापुर. वामपादांगुलिमूले।

पं उड्डीश. दक्षपार्श्वे। फं प्रयाग वामपार्श्वे। बं षष्टीश. पृष्ठे। भं मायापुरी. पीठाय नमः नाभौ। मं मलयगिरि. उदरे। यं श्री शैल. हृदि। रं मेरू. दक्षांसे। लं गिरि. ककुदि। वं माहेन्द्र. वामांसे। शं वामान. हृदयादिदक्षहस्ते। षं हिरण्यपुर. हृदयादि वामहस्ते। सं महालक्ष्मी. हृदयादि दक्षपादे। हं उड्डियान कामाक्षा. हृदयादि वामपादे। लं छाया. हृदयादि उदरे। क्षं क्षत्रपुर. हृदयादि मुखे।

॥ अथ महाषोढा न्यासः॥

विनियोगः- **अस्य श्री महाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, श्रीमदर्धनारीश्वरो देवता, श्रीमहात्रिपुरषोडशी विद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।**

अङ्गन्यासः- न्यास करते समय प्रत्येक नाम के पहिले **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः** उच्चारण करे यथा-

ॐ ६ के संकेत का अर्थ उपरोक्त ६ बीज मंत्रों से है। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः हौं ईशानाय नमः अंगुष्ठयोः। ॐ ६ हैं तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः। ॐ ६ हुं अघोराय नमः मध्यमयोः। ॐ ६ हिं वामदेवाय नमः अनामिकयोः। ॐ ६ सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः। ॐ ६ हौं ईशानाय नमः मूर्ध्नि। ॐ ६ हैं तत्पुरुषाय नमः मुखे। ॐ ६ हुं अघोराय नमः हृदये। ॐ ६ हिं वामदेवाय नमः गुह्ये। ॐ ६ हं सद्योजाताय नमः पादयोः। ॐ ६ हौं ईशानायोर्ध्व वक्त्राय नमः मूर्ध्नि। ॐ ६ हैं तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे। ॐ ६ हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः दक्षकर्णे।

ॐ ६ हिं वामदेवायोत्तर-वक्त्राय नमः वामकर्णे। ॐ ६ हं सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः चोरकूपे।

ह्सां ह्सीं से षडङ्गन्यास कर ध्यान करें-

पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्। चन्द्रसूर्य सहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे ॥

॥ प्रपञ्चन्यासः ॥

ॐ ६ का संकेत है ''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः'' इसे प्रत्येक न्यास के पहिले उच्चारण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः अं प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः शिरसि। ॐ ६ आं द्वीपरूपायै मायायै नमः मुखे। ॐ ६ इं जलधिरूपायै कमलायै नमः दक्षनेत्रे। ॐ ६ ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः वामनेत्रे। ॐ ६ उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः दक्षकर्णे। ॐ ६ ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः वामकर्णे। ॐ ६ ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः दक्षनासायाम्। ॐ ६ ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः वामनासायाम्। ॐ ६ लृं आश्मरूपायै इन्दिरायै नमः दक्षगण्डे। ॐ ६ लॄं गुहारूपायै मायायै नमः वामगण्डे। ॐ ६ एं नदीरूपायै रमायै नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ ६ ऐं चत्वाररूपायै पद्मायै नमः अधो ओष्ठे। ॐ ६ ओं उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः उर्ध्वदंतपंक्तौ। ॐ ६ औं स्वदेशरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः अधोदंतपंक्तौ। ॐ ६ अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः ललाटे। ॐ ६ अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः मुखवृत्ते।

ॐ ६ कं लवरूपायै आर्यायै नमः दक्षबाहुमूले। ॐ ६ खं त्रुटिरूपायै उभायै नमः दक्षकर्पूरे। ॐ ६ गं कलारूपायै चण्डिकायै नमः दक्षमणिबंधे। ॐ ६ घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः दक्षकरतले। ॐ ६ ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः दक्षकराग्रे। ॐ ६ चं श्वासरूपायै अर्पणायै नमः वामबाहुमूले। ॐ ६ छं घटिकारूपायै अंबिकायै नमः वामकर्पूरे। ॐ ६ जं मुहुर्तरूपायै सत्यै नमः वाममणिबंधे। ॐ ६ झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः वामकरतले। ॐ ६ ञं दिवसरूपायै शांभव्यै नमः वामकराग्रे।

ॐ ६ टं संध्यारूपायै ईशान्यै नमः दक्षोरुमूले। ॐ ६ ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः दक्षजानुनि। ॐ ६ डं तिथिरूपायै सर्वमंगलायै नमः दक्षगुल्फे। ॐ ६ ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः दक्षपादतले। ॐ ६ णं नक्षत्ररूपायै हेमवत्यै नमः दक्षपादाग्रे। ॐ ६ तं योगरूपायै महामायायै नमः वामोरुमूले। ॐ ६ थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः वामजानुनि। ॐ ६ दं पक्षरूपायै मृडान्यै नमः वामगुल्फे। ॐ ६ धं मासरूपायै इन्द्राण्यै नमः वामपादतले। ॐ ६ नं शशिरूपायै सर्वाण्यै नमः वामपादाग्रे। ॐ ६ पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ६ फं अयनरूपायै काल्यै नमः वामपार्श्वे। ॐ ६ बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः पृष्ठे। ॐ ६ भं युगरूपायै गोर्यै नमः नाभौ। ॐ ६ मं प्रलयरूपायै भवान्यै नमः जठरे। ॐ ६ यं पंचभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः त्वगात्मने हृदि।

ॐ ६ रं पंचतन्मात्ररूपायै वागीश्वर्यै नमः असृगात्मने दक्षांसे। ॐ ६ लं पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः मासात्मने ककुदि। ॐ ६ वं पंचज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः मेदात्मने वामांशे। ॐ ६ शं पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः अस्थ्यात्मने हृदादि दक्षकरांगुल्यन्तम्। ॐ ६ षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः मज्जात्मने हृदादि वामकरांगुल्यन्तम्। ॐ ६ सं अन्तःकरण चतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः शुक्रात्मने नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्।

ॐ ६ हं अवस्था चतुष्टयरूपायै शारदायै नमः जीवात्मने नाभ्यादि वाम पादांतम्। ॐ ६ लं सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः परमात्मने हृदयादि कुक्षौ। ॐ ६ क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः ज्ञानात्मने हृदयादि मुखे। ॐ ६ अं आं..... लं क्षं मूल मंत्र पुनः ॐ ६ से व्यापक न्यास करें।

॥ भुवनन्यासः ॥

प्रत्येक न्यास के पहिले "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः" उच्चारण करें जिसका संकेत ॐ ६ है।

(पादयोः) - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः अं आं इं अतललोकनिलय शतकोटि गुह्याद्ययोगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(गुल्फयोः)-ॐ ६ ईं उं ऊं वितललोकनिलय गुह्यतरानन्तयोगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(जंघयोः) - ॐ ६ ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलय शतकोट्यतिगुह्या चिन्त्ययोगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(जान्वोः) - ॐ ६ लॄं एं ऐं महातललोकनिलय शतकोटि महागुह्येच्छायोगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(ऊर्वो) - ॐ ६ ओं औं तलातललोकनिलय शतकोटि परमगुह्येच्छा योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(स्फियो) - ॐ ६ अं अः रसातललोकनिलय शतकोटि रहस्यज्ञानयोगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(मूलाधारे) - ॐ ६ कं खं गं .....ञं पाताललोक भूर्लोकनिलय रहस्यतर क्रिया डाकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(स्वाधिष्ठाने) - ॐ ६ टं ठं......णं भुवर्लोकनिलय शतकोटि अतिरहस्य राकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(मणिपूरे) - ॐ ६ तं थं......नं स्वलोकनिलय शतकोटि परमरहस्य लाकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(अनाहते) - ॐ ६ पं......मं महर्लोक निलय शतकोटि गुप्त काकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(विशुद्धौ) - ॐ ६ यं....वं जनः लोकनिलय शतकोटि गुप्ततर साकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(आज्ञायां) - ॐ ६ शं षं सं हं तपोलोक निलय शतकोटि अतिगुप्त हाकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(ब्रह्मरन्ध्रे) - ॐ ६ लं क्षं सत्यलोकनिलय शतकोटि महागुप्त याकिनी योगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(व्यापक न्यासः) - ॐ ६ अं आं ....हं लं क्षं सकलभुवनाधिपायै श्रीषोडशी देव्याम्बायै नमः स्हौः हसौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

॥ मूर्तिन्यास ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौ अं केशवायाक्षर शक्त्यै नमः शिरसि। ॐ ६ आं नारायणायाद्य शक्त्यै नमः मुखे। ॐ ६ इं माधवायेष्टदायै नमः दक्षांसे। ॐ ६ ईं गोविन्दायेशान्यै नमः वामांसे। ॐ ६ उं विष्णवे उग्रायै नमः दक्षपार्श्वे।

ॐ ६ ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः वामपार्श्वे। ॐ ६ ऋं त्रिविक्रमाय ऋध्यै नमः दक्षकट्यां। ॐ ६ ॠं वामनायै रूपिण्यै नमः वामकट्यां। ॐ ६ लृं श्रीधराय लुप्तायै नमः दक्षोरौ। ॐ ६ लॄं हृषीकेशाय लूनदोषायै नमः वामोरौ। ॐ ६ एं पद्मनाभायैक नायिकायै नमः दक्षजानुनि। ॐ ६ ऐं दामोदरायकारिण्यै नमः वामजानुनि। ॐ ६ ओं वासुदेवायोघ शक्त्यै नमः दक्षजंघायां। ॐ ६ औं सङ्कर्षणायैर्व कामायै नमः वामजंघायां। ॐ ६ अं प्रद्युम्नायाञ्जन प्रभायै नमः दक्षपादे। ॐ ६ अः अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः वामपादे। ॐ ६ कं भं भवाय कराभायै नमः दक्षपादाग्रादूरु मूलपर्यन्तम्। ॐ ६ खं बं शर्वाय खगबलायै नमः वामपादाग्रादूरु मूलपर्यन्तम्। ॐ ६ गं फं हराय गरिमफल प्रदायै नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ६ घं पं पशुपतये घोरपादायै नमः वामपार्श्वे। ॐ ६ ङंमं उग्राय पंक्तिवासायै नमः दक्षोरुमूले। ॐ ६ चं धं महादेवाय चन्द्रार्ध धारिण्यै नमः वामरुमूले। ॐ ६ छं दं भीमायछन्दोमय्यै नमः कण्ठे। ॐ ६ जं थं ईशानाय जगत्स्थानायै नमः वदने। ॐ ६ झं तं तत्पुरुषाय झंकृत्यै नमः दक्षकर्णे। ॐ ६ ञं नं अघोराय ज्ञानदायै नमः वामकर्णे। ॐ ६ टं ढं सद्योजाताय टंकढक्क धरायै नमः भाले। ॐ ६ ठं डं वामदेवाय टंकृतिडामर्यै नमः शिरसि।

ॐ ६ यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः मूलाधारे। ॐ ६ रं प्रजापतये रंजिण्यै नमः स्वाधिष्ठाने। ॐ ६ लं वेधसे लक्ष्म्यै नमः मणिपूरे। ॐ ६ वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः अनाहते। ॐ ६ शं पितामहाय शशिधरायै नमः विशुद्ध चक्रे। ॐ ६ षं विधात्रे षडाधारालयायै नमः आज्ञा चक्रे। ॐ ६ सं विरञ्चये सर्वनायिकायै नमः अर्धेन्दो। ॐ ६ हं स्त्रष्ट्रे हसिताननायै नमः रोधिन्यां। ॐ ६ लं चतुराननाय ललितायै नमः नादे। ॐ ६ क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः नादान्ते।

इसके बाद पूर्व में दिये गये मंत्र से व्यापक न्यास मंत्र से करें।

॥ मंत्रन्यासः॥

(मूलाधारे) - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः हौः अं आं इं एकलक्ष कोटि भेद प्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफल प्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(स्वाधिष्ठाने) - ॐ ६ ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेद हंसादि द्व्यक्षराकत्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(मणिपूरके) - ॐ ६ ऋं ॠं लृं त्रिलक्षकोटिभेद वह्न्यादि त्र्यक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(अनाहते) - ॐ ६ लॄं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेद चन्द्रादि चतुरक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(विशुद्धे) - ॐ ६ ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेद सूर्यादि पञ्चाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(आज्ञायां) - ॐ ६ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेद सूर्यमण्डलादि पञ्चाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षट्कूटेश्वर्यम्बा देव्यै नमः।

(विन्दौ) - ॐ ६ घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेद गणपत्यादि सप्ताक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बा देव्यै नमः।

(अर्धेन्दौ) - ॐ ६ छं जं झं अष्टलक्षकोटि भेद वटुकाद्यष्टाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै

अष्टकूटेश्वर्यम्बा देव्यै नमः।

(रोधिन्यां) - ॐ ६ जं टं ठं नवलक्षकोटि भेद ब्रह्मादि नवाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(नादे) - ॐ ६ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेद विष्णवादि दशाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(नादान्ते) - ॐ ६ तं थं दं एकादशलक्ष कोटिभेद रुद्राद्यकादशाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(शक्तौ) - ॐ ६ धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेद वाण्यादि द्वादशाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(व्यापिकायां) - ॐ ६ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेद लक्ष्यादि त्रयोदशाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(समनास्थाने) - ॐ ६ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेद गौर्यादि चतुर्दशाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(उन्मान्यां) - ॐ ६ लं वं शं पञ्चदशलक्षकोटिभेद दुर्गादि पंचदशाक्षरात्मिकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पंचदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(ध्रुवमण्डले) - ॐ ६ षं सं हं लं क्षं षोडशलक्षकोटिभेद त्रिपुरादि षोडशाक्षरात्मकाखिल मंत्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

इसके बाद व्यापक न्यास मंत्र से व्यापक न्यास करें।

॥ देवता न्यासः ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः स्हौः अं आं सहस्रकोटि ऋषिकुल सेवितायै निवृत्यम्बा देव्यै नमः दक्षपादे। ॐ ६ इं ईं सहस्रकोटि योगिनीकुल सेवितायै प्रतिष्ठाम्बा देव्यै नमः वामपादे। ॐ ६ उं ऊं सहस्रकोटि तपस्विकुल सेवितायै विद्याम्बा देव्यै नमः दक्षगुल्फे। ॐ ६ ऋं ॠं सहस्रकोटि शान्तकुल सेवितायै शांताम्बा देव्यै नमः वामगुल्फे। ॐ ६ ऌं ॡं सहस्रकोटि मुनिकुलसेवितायै शान्त्यत्यतीताम्बा देव्यै नमः दक्षजंघायां। ॐ ६ एं ऐं सहस्रकोटि दैवतकुल सेवितायै हल्लेखाम्बा देव्यै नमः वामजंघायां। ॐ ६ ओं औं सहस्रकोटि राक्षसकुल सेवितायै गगनाम्बा देव्यै नमः दक्षजानुनि। ॐ ६ अं अः सहस्रकोटि विद्याधरकुल सेवितायै रक्ताम्बा देव्यै नमः वामजानुनि। ॐ ६ कं खं सहस्रकोटि सिद्धकुल सेवितायै महोच्छुष्माम्बा देव्यै नमः दक्षोरो। ॐ ६ गं घं सहस्रकोटि साध्यकुल सेवितायै करालिकाम्बा देव्यै नमः वामोरो। ॐ ६ ङं चं सहस्रकोट्यप्सरः कुल सेवितायै जयाम्बा देव्यै नमः दक्षोरुमूले। ॐ ६ छं जं सहस्रकोटि गंधर्वकुल सेवितायै विजयाम्बा देव्यै नमः वामौरुमूले। ॐ ६ झं ञं सहस्रकोटि गुह्यकुल सेवितायै अजिताम्बा देव्यै नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ६ टं ठं सहस्रकोटि यक्षकुल सेवितायै अपराजिताम्बा देव्यै नमः वामपार्श्वे। ॐ ६ डं ढं सहस्रकोटि किन्नरकुल सेवितायै वामाम्बा देव्यै नमः दक्षस्तने। ॐ ६ णं तं सहस्रकोटि पन्नगकुल सेवितायै ज्येष्ठाम्बा देव्यै नमः वामस्तने। ॐ ६ थं दं सहस्रकोटि पितृकुल सेवितायै रौद्रम्बा देव्यै नमः दक्षदोर्मूले। ॐ ६ धं नं सहस्रकोटि गणेश्वरकुल सेवितायै छायाम्बा देव्यै नमः

वामदोर्मूले। ॐ ६ पं फं सहस्त्रकोटि भैरवकुल सेवितायै कुण्डलिन्यम्बा देव्यै नमः दक्षभुजे। ॐ ६ बं भं सहस्त्रकोटि वटुककुल सेवितायै काल्यम्बा देव्यै नमः वामभुजे। ॐ ६ मं यं सहस्त्रकोटि क्षेत्रेशकुल सेवितायै कालरात्र्यम्बा देव्यै नमः दक्षांसे। ॐ ६ रं लं सहस्त्रकोटि प्रथमकुल सेवितायै भगवत्यम्बा देव्यै नमः वामांसे। ॐ ६ वं शं सहस्त्रकोटि ब्रह्मकुल सेवितायै सर्वश्वर्यम्बा देव्यै नमः दक्षकर्णे। ॐ ६ षं सं सहस्त्रकोटि विष्णुकुल सेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बा देव्यै नमः वामकर्णे। ॐ ६ हं लं सहस्त्रकोटि रुद्रकुल सेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बा देव्यै नमः भाले। ॐ ६ क्षं सहस्त्रकोटि चराचरकुल सेवितायै कुलशक्लाम्बा देव्यै नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

इसके पश्चात् व्यापक न्यास मंत्र से व्यापक न्यास करें।

॥ अथ समया विद्याः ॥

उर्ध्वाम्नाय मंत्र भेदों के अंतर्गत पांच समया विद्या है जिनकी उपासना से श्रीविद्या की सर्वाङ्गीण सिद्धि प्राप्त होती है। यथा- **(१) श्री विद्या (२) बगलामुखी (३) कालरात्री (४) जयदुर्गा (५) छिन्नमस्ता।**

उक्त विद्याओं के प्रयोग पुस्तक में उन विद्याओं के प्रकरण में देखें।

श्री विद्यार्णव तंत्र में चार अन्य समया विद्याओं के प्रयोग "**अष्टम श्वास**" में दिये है।

यथा- **ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरी इच्छाकाम फलप्रदे सर्वसत्व वशङ्करि सर्वजगत्क्षोभकरि हूं हूं हूं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं (१) ऐं ह्रीं सर्व कामार्थ साधिनि वज्रेश्वरि वज्रपदे वज्रपंजरमध्यगते ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं वज्रनित्यायै नमः (२) ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभग वशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय वरदे रे ते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं में ब्लूं मों ब्लूं हे ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं (३) क्लीं भगवति ब्लूं नित्ये कामेश्वरि ह्रीं सर्वसत्त्ववशङ्करि सः त्रिपुर भैरवी ऐं विच्चे क्लीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।**

॥ अथ श्री त्रिपुर सुन्दरी पूजा विधानम् ॥

॥ पंच सिंहासन देवता ॥

(श्री विद्यार्णव तन्त्रे) (विस्तार भय से मंत्र के विनियोग एवं न्यास नहीं दिये हैं)

॥ध्यानम्॥

बालार्कयुत तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं। नानालंकृत राजमान वपुषं बालोडुराट् शेखराम् ॥
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशंमुदा विभ्रतीम्। श्री चक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

हाथ में अक्षत् पुष्प लेकरं हृदय में ध्यान करें फिर बाँयी नासिका से श्वास छोड़कर भावना करें कि भगवति हृदय कमल से बाहर आकर श्रीयंत्र पर स्थापित होकर सगुण, साकार पूजा ग्रहण करेगी।

विशेष पूजा में भगवति की अन्य शक्तियों का तथा चारों दिशाओं में एवं उर्ध्व में सिंहासन स्थित देवताओं का भी आवाहन पूजन करें।

॥ पूर्वसिंहासन देवता ॥

१. ऐं क्लीं सौः बाला सुन्दरी देवतायै नमः। २. हस्त्रैं हसकलरीं हस्त्रौं- सम्प्रदाय भैरवी देवतायै नमः। ३. स्हैं सकल ह्रीं स्हौः चैतन्य भैरवी देवतायै नमः। ४. स्हैं सकल ह्रीं नित्यक्लिन्नेमदद्रवे स्हौः श्रीद्वितीय चैतन्य भैरवी देवतायै नमः। ५.हसखफ्रें हसकलरीं हसौं- कामेश्वरी भैरवी देवतायै नमः।

॥ दक्षिण सिंहासन देवता ॥

१. ३ॐ अघोरे ऐं घोरे ह्रीं सर्वतः शर्व सर्वेभ्यो घोर-घोरतरे श्रीं नमस्तेऽतु रुद्ररूपेभ्यः क्लीं सौः अघोर भैरवी देवतायै नमः। २. हस्त्रैं हसकल ह्रीं हस्त्रौं महाभैरवी देवतायै नमः। ३. ह्रीं क्लीं हस्त्रौं ललिता भैरवी देवतायै नमः।४. क्लीं कामेश्वरी भैरवी देवतायै नमः। ५. सैं सकलरीं सौः रक्तनेत्रा भैरवी देवतायै नमः।

॥ पश्चिम सिंहासन देवता ॥

१. हसकलर डैं हसकलरडीं हसकलरडौः षटकूटा भैरवी देवतायै नमः। २. डरलकसहैं डरलकहीं डरलकसहौः नित्या भैरवी देवतायै नमः। ३. ह्रीं हंसः संजीवनी जूं जीवं प्राण ग्रंथि कुरु कुरु स्वाहा। ह्रीं हंसः संजीवनी जूं हंसः कुरु ३ सौः सौः स्वाहा। श्रीमृतसंजीवनी देवतायै नमः। ४. ३ॐ वदवद वाग्वादिनी हसैं क्लिन्ने क्लेदिनी महाक्षोभं कुरु कुरु हस्त्रीं ३ॐ मोक्षं कुरु कुरु हसौः। श्रीमृत्युंजय परा देवतायै नमः॥ ५. ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं श्री वज्रप्रस्तारिणी देवतायै नमः।

॥ उत्तर सिंहासन देवता ॥

१. हस्त्रैं हसकल ह्रीं ह्सौंः श्री भुवनेश्वरी भैरवी देवतायै नमः। २. सहैं सहकलह्रीं सहौं श्री कमलेश्वरी भैरवी देवतायै नमः। ३. हस्त्रें हस्त्रीं हस्त्रौंः सिद्ध कौलेश भैरवी देवतायै नमः । ४. हसैं हक्लीं हसौः श्री डामर भैरवी देवतायै नमः । ५. हसैं हसक्लीं हसौं श्री कामिनी भैरवी देवतायै नमः ।

॥ उर्ध्व सिंहासन देवता ॥

१. हैं हकल ह्रीं हसौः श्री प्रथम सुन्दरी देवतायै नमः। २. अहसें अहसीं असहसौः श्री द्वितीय सुन्दरी देवतायै नमः। ३. ऐं हस एहसहस्त्रै हहहकल ह्रीं हहहहरौः श्री तृतीय सुन्दरी देवतायै नमः। ४. कलहह ससस हैं (ह्रीं) कलहहससस ह्रीं कलहहससससस ह्रौं (ह्रीं) श्री चतुर्थ सुन्दरी देवतायै नमः। ५. सहहसलक्ष हसैं हसहसलक्ष हसीं हसलक्षसहस हौः श्री पंचम सुन्दरी देवतायै नमः।

(इस तरह समस्त सिंहासन देवताओं का आवाहन करें एवं पूजा करें)

॥ श्रीविद्या पंच–पंचिका ॥

(श्रीविद्यार्णव तंत्रे) (विस्तार भय से मंत्र के विनियोग एवं न्यास नहीं दिये हैं)

श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी की **पंच पंचिका** नाम से पंच विद्यायें है इनकी फिर पाँच-पाँच विद्यायें होने से पंच पंचिका कहा है ये लक्ष्मी वृद्धि में सहायक है। इनका श्री यंत्र के मध्य में व चारों दिशाओं मध्य बिन्दु के पास ही पादुका पूजन किया जाता है।

(१) लक्ष्मी पंचक

(१) श्री यंत्र मध्ये- लक्ष्मी पंचक- **१. ३ॐ आद्यालक्ष्मी देवतायै नमः मध्ये (कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं**

सकल ह्रीं श्रीं) मंत्र से। २. श्रीं लक्ष्मी देवतायै नमः पूर्वादिदिक्षु। ३. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं। ॐश्री महालक्ष्मी देवतायै नमः। दक्षिणे॥ ४. श्री ह्रीं क्लीं- श्री त्रिशक्ति लक्ष्मी देवतायै नमः। पश्चिमे॥ ५. श्रीं सहकल ह्रीं श्रीं- श्री सर्व साम्राज्या लक्ष्मी देवतायै नमः। उत्तरे॥

(२) पंचकोश विद्या

१. ऐं ह्री श्रीं- (मूल मंत्र)- श्रीविद्याकोशेश्वरी देवतायै नमः मध्ये। २. ॐ ह्रीं हंस सोऽहं स्वाहा श्री परं ज्योति कोशेश्वरी देवतायै नमः पूर्वे। ३. ॐ पर निष्कल शांभवी कोशेश्वरी देवतायै नमः दक्षिणे ।४. ''हंस'' ॐ अजपा कोशेश्वरी देवतायै नमः पश्चिमे। ५. अं आं....... हं लं क्षं श्री मातृका कोशेश्वरी देवतायै नमः उत्तरे।

(३) पंचकल्पलता

१. ॐ (मूल मंत्र)- श्रीविद्या देवतायै नमः मध्ये। २. ॐ ह्रीं हुं खेच छेक्षः स्त्रीं हुंक्षें ह्रीं फट् श्री त्वरिता कल्पलता देवतायै नमः पूर्वे। ३. ॐ ह्रीं हं सं कं लं हैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः श्री पारिजातेश्वरी देवतायै नमः दक्षिणे। (या) ॐ ह्रीं हस्त्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः मंत्रेण। ४. श्रीं ह्रीं क्लीं (या) क्लीं ऐं सौः श्री त्रिपुटा देवतायै नमः पश्चिमे। ५. द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः पंच वाणेशी देवतायै नमः उत्तरे।

(४) पंचकामधेनु

१. ऐं ह्रीं श्रीं- (मूल मंत्र) श्री विद्या देवतायै नमः मध्ये। २. ह्रीं हंसः संजीवनी जूं जीवं प्राण ग्रंथिस्थं कुरु कुरु सः स्वाहा श्री अमृत पीठेशी देवतायै नमः पूर्वे। ३. हस्त्रौं स्ह्रीं श्रीं क्लीं श्री सुधा देवतायै नमः दक्षिणे। ४. ऐं ब्लूं ॐ जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरी अमृतवर्षिणीं अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा- पश्चिमे। ५. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा- उत्तरे। (मतान्तरे- श्रीविद्या, पारिजातेश्वरी, पंचवाणेश्वरी, पंचकामेश्वरी एवं कुमारी इति पंचकल्पलता)

(५) रत्न पंचक

१. ऐं ह्रीं श्रीं (मूल मंत्र)- श्री ललिता त्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः मध्ये। २. ऐं क्लिन्ने क्लीं मदद्रवे कुले हस्त्रौः श्री सिद्ध लक्ष्मी देवतायै नमः पूर्वे। ३. ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मातङ्गीश्वरि सर्वजन मनोहरि सर्वराज वशङ्करि सर्वमुख रंजनी सर्वस्त्री पुरुष वशङ्करि सर्वदुष्ट मृग वशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि ह्रीं श्रीं क्लें ऐं- श्री मातंगी देवतायै नमः दक्षिणे। ४. ह्रीं भुवनेश्वरि देवतायै नमः पश्चिमे। ५. ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधे अंधिनि नमः रुन्धे रुंधिनि नमः जंभे जंभिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि ऐंग्लों ऐं सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व वाक्चित्त चक्षुर्मुखगति जिह्वां स्तंभन कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः एं हः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हुँ फट् स्वाहा।

॥ अथ श्री यंत्रस्थ देवतानां आवरण पूजा प्रयोगः॥

प्रथम पात्रासादनादि प्रयोग कर पात्रों की स्थापना करें। यह प्रयोग पूर्व में बताया गया है।

श्री यंत्र का पूजन स्वशरीर में भी होता है वह विधि भी दे रहें है। एक थाली में खुले पुष्प, अक्षत व गंध से चर्चित कर शामिल करें। तर्पण आदि पंच मकार में काम में लेवें या सात्विक पूजा हेतु एक पात्र में विशेषार्घ का जल व पंचामृत डालकर तर्पण हेतु पात्र बना ले, सामान्यार्घ पास में रख लेवें।

जहाँ-जहाँ देवता का नाम आवें वहाँ उस नाम के आगे नमः **पादुकां पूजयामि, तर्पयामि स्वाहा** बोलें एवं स्वयं
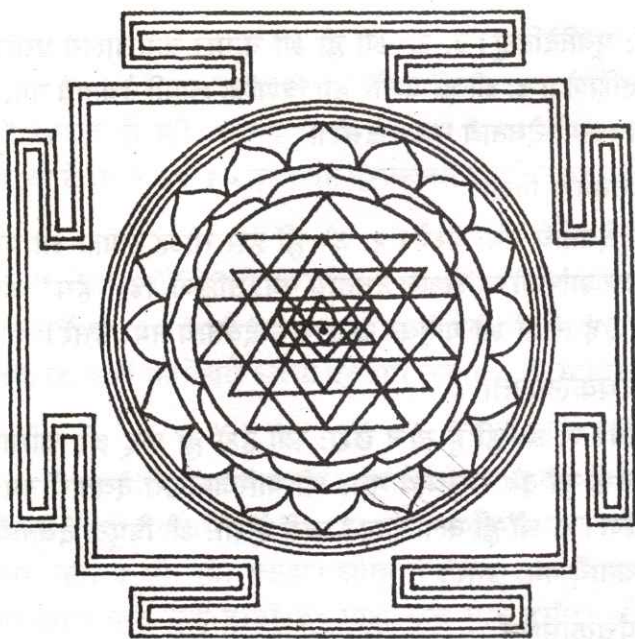
तर्पण करें तो दाहिने हाथ से गंध, पुष्पाक्षत ज्ञानमुद्रा से व वामहस्त से तत्त्वमुद्रा (अनामिका, अंगुष्ठ के संयोग) से तर्पण करें। दो व्यक्ति करें तो अलग-अलग करें।

पीठ देवताओं का पूजन करे- **ॐ मं मंडूकादि परतत्त्वांत पीठ देवताभ्यो नमः। ॐ बं ब्रह्मप्रेताय नमः। ॐ विं विष्णुप्रेताय नमः। ॐ रुं रुद्रप्रेताय नमः। ॐ ईं ईश्वरप्रेताय नमः। ॐ सं सदाशिवप्रेताय नमः। ॐ सुं सुधार्णवासनाय नमः। ॐ पें प्रेताम्बुजासनाय नमः। ॐ दिं दिव्यासनाय नमः। ॐ चं चक्रासनाय नमः। ॐ सं सर्वमंत्रासनाय नमः। ॐ सं साध्यसिद्धासनाय नमः।**

पीठ शक्तियों का पूजन करें। **यथा- ॐ इच्छायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ कामिन्यै नमः। ॐ कामदामिन्यै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ रतिप्रियायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। इति अष्टदिक्षु तथा च मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः।**

मंत्र महार्णव में चक्र षोडशी यंत्र दलात्मक दिया है तथा प्रस्तुत पूजा में श्रीयंत्र योन्यात्मक रूप है। मंत्र महार्णव में यंत्रोद्धार में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टदल, दो दशदल, चतुर्दशदल, अष्टदल, षोडशदल, पश्चात् तीन रेखाओं का भूपूर है। यंत्र पूजा भी प्रथम बिन्दु त्रिकोण में त्रिपुरसुन्दरी व उनकी नित्याओं की पूजन पश्चात् भूपूर से त्रिकोण तक विलोम क्रम की पूजन दी गई है, जो शत्रु संहार रूप में खड्गमाला के अनुसार है। जब कि श्रीवृद्धि हेतु मूल से बाहर तक पूजा करनी चाहियें।

हमने श्रीवृद्धि हेतु **योन्यात्मक श्रीयंत्र** का अर्चन (सर्वानन्द चक्र परापर रहस्य योगिनी) दिया है।

(सहस्रारे) मध्य बिन्दु में प्रधान देव का आवाहन करें-

बालाऽर्कयुत तेजसं त्रिनयनां रक्तांबरोल्लासिनीं नानालंकृतिराजमान वपुषं बालोडुराट् शेखराम्। हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

पुष्पांजलि लेकर आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे ॥

१. अथ प्रथमावरणम्- (सहस्रारे)प्रथमावरण में बिन्दु समीप मध्य त्रिकोण में गुरुमंडल दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघगुरु व गुरु चतुष्टय का पूजन बिन्दु मध्य में त्रिपुर सुन्दरी व उसके चारों ओर भगवती की १६ नित्याओं का पूजन तर्पण करें।

॥ ध्यानम् ॥

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्। सिद्धौघं वटुक त्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ॥ वीरानष्ट चतुष्कषष्टि नवकम् वीरावलि पंचकम्। श्रीमन्मालिनि मंत्रराज सहिते वंदे श्री गुरुमण्डलम् ॥

(कहीं-कहीं वीरावलि सप्तम है)

ते रक्तमालाम्बरभूषणाद्यैः स्वलंकृता पङ्कज विष्टरस्थाः ।
सर्वे च सालंबनयोगनिष्ठाः प्राप्ताखिलैश्वर्य गुणाष्टकार्याः ॥

श्री गुरुमण्डलाय नमः।

दिव्यौघ गुरु- **ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो नमः**, पुष्पाञ्जलि चढावें। फिर नीचे लिखें नाम मंत्रों के साथ **सशक्तिं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि** बोलते हुये गंधाक्षत् पुष्प छोड़े व तर्पण करें।

ॐ प्रकाशानंदनाथाय नमः स शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामिः श्रीपा. पू. त.। ॐ श्री परमेशानन्दनाथाय नमः श्रीपा. पू. त.। ॐ परिशिवानंदनाथाय नमः श्रीपा. पू. त.। ॐ कामेश्वरानंदनाथाय नमः श्रीपा. पू. त.। ॐ मोक्षानंदनाथाय नमः श्रीपा. पू. त.। ॐ कामानन्दनाथाय नमः श्रीपा. पू. त.। ॐ अमृतानन्दनाथाय नमः श्रीपा. पू. त.।

सिद्धौघ गुरु- **ॐ सिद्धौघ गुरुभ्यो नमः** से पुष्पाञ्जलि छोड़े। एवं प्रत्येक नाम के आगे ''**नमः स शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि**'' बोलकर **ॐ ईशानानन्दनाथाय नमः। ॐ तत्पुरुषानन्दनाथाय नमः। ॐ अघोरानन्दनाथाय नमः। ॐ वामदेवानन्दनाथाय नमः। ॐ सद्योजातानन्दनाथाय नमः स शक्तिं। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

मानवौघगुरु- **ॐ मानवौघाख्य गुरुभ्यो नमः पढकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।**

निम्न नामों के बाद प्रत्येक के आगे **नमः स शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्प.** बोलकर पुष्पगंधाक्षत छोड़े तर्पण करें।

ॐ गगनानन्दनाथाय नमः। ॐ विश्वानन्दनाथाय नमः। ॐ विमलानन्दनाथाय नमः। ॐ मदनानन्दनाथाय नमः। ॐ आत्मानन्दनाथाय नमः। ॐ प्रियानन्दनाथाय नमः स शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

मंत्र महो. के अनुसार ये बालासुंदरी के त्रिविध गुरु है। षोडशी के त्रिविध गुरु इस प्रकार है - (दिव्यौघ) परप्रकाश, परशिव, परशक्ति, कौलेश, शुक्लादेवी, कुलेश्वर, कामेश्वरी। (सिद्धौघ) भोग, क्रीड, समय, सहज। (मानवौघ) गगन, विश्व, विमल, मदन, भुवन, लीला, स्वात्मा और प्रिया। पुरुष गुरुनाम के साथ **अमुकानन्द** व स्त्री नाम के साथ **अमुकाम्बा** का प्रयोग करें।

स्वगुरुक्रम- अपनी परम्परा के चार गुरुओं का उनके नाम सहित तर्पण करें।

१. अमुक- स्वगुरुनाथ सशक्त्यां श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्प.। २. अमुक- परमगुरुनाथ सशक्त्यां श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्प.। ३. अमुक- परात्परगुरुनाथ सशक्त्यां श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्प.। ४. अमुक- परमेष्ठि गुरुनाथ सशक्त्यां श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्प.। ॐ प्रथमावरण देवताभ्योः नमः से पुष्पांजलि देवें।

श्री यंत्र के मध्य त्रिकोण के बिन्दु में ''**सर्वकामप्रद सर्वानंदमय चक्र**'' में श्री पात्र से तीन बार पूजन तर्पण करें। यदि अलग- अलग पात्रा साधन नहीं कियें हैं तो जो तर्पण पात्र स्थापित किया है उसी से करें।

यहाँ **मूलं** शब्द लिखा है उसका अर्थ है मूल मंत्र बोले। यथा- **मूलं श्री महात्रिपुर सुन्दरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

तदन्तर वहीं बिन्दु के चारों ओर योगिनी पात्र से १६ नित्याओं का तर्पण करें। प्रत्येक नाम मंत्र के पहिले नित्याओं के मंत्र या श्रीविद्या का मूलमंत्र पढ़े **श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** बोलकर पुष्प गंधाक्षत् छोड़कर तर्पण करें।

(चतुर्थी से आवाहन प्रथमा से स्थापन, पूजन करें)

॥१॥ श्री कामेश्वर शिव सहिता ''मूलं'' श्रीकामेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ''मूलं'' श्री भगमालिनी ॥३॥ ''मूलं'' श्री नित्याक्लिन्ना ॥४॥ ''मूलं'' श्री भेरुण्डा. ॥५॥ ''मूलं'' श्री वह्निवासिनी ॥६॥ ''मूलं'' श्री महाविद्येश्वरी ॥७॥ ''मूलं'' श्री शिवदूती ॥८॥ ''मूलं'' श्री त्वरिता ॥९॥ ''मूलं'' श्री कुलसुन्दरी ॥१०॥ ''मूलं'' श्री नित्या. ॥११॥ ''मूलं'' श्री नीलपताकिनी ॥१२॥ ''मूलं'' श्री विजया. ॥१३॥ ''मूलं'' श्रीसर्वमंगला ॥१४॥ ''मूलं'' श्री ज्वालामालिनी. ॥१५॥ ''मूलं'' श्री विचित्रा. ॥१६॥ ''मूलं'' श्री त्रिपुर सुन्दरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। योनि मुद्रा दिखावें।

यहीं मध्य बिन्दु में भगवती के षडङ्गों का पूजन व तर्पण श्री पात्र से करें। **ॐ ऐं कएईल ह्रीं हृच्छशक्ति श्री पा. पू. त. नमः आग्नेये।**

ॐ क्लीं हसकहल ह्रीं, शिरः शक्ति श्री पा. पू. त. नमः वायव्ये। ॐ सौः सकल ह्रीं, शिखा शक्ति श्री पा. पू. त. नमः नैर्ऋत्ये। ॐ ऐं कएईल ह्रीं, कवचशक्ति श्री पा. पू. तर्प. नमः ईशाने। ॐ क्लीं हसकहल ह्रीं, नेत्रशक्ति श्री पा. पूज. तर्प. नमः पूर्वे। ॐ सौः सकल ह्रीं, अस्त्रशक्ति श्री पा. पू. त. नमः सर्वदिक्षुसु। निम्न मंत्र से पुष्पांजलि छोड़े।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

विशेषार्घ या सामान्यर्घ से द्रव्य जल छोड़कर तृसकरें कहें- **पूजिताः तर्पिताः सन्तु।** महायोनि मुद्रा दिखावें।

२. द्वितीयावरणम्- (सहस्त्रारे) ''ॐ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः'' से पुष्पांजलि देवें। त्रिकोण की तीनों रेखा में पूर्व दक्षिण व वाम भाग रेखाओं में (सर्वसिद्धिप्रद चक्र) योगिनी पात्र से (अतिरहस्य योगिनियों) का पूजन तर्पण करें। यथा

मूलं श्री रुद्रसहित श्री कामेश्वरी श्री पा. पू. त. नमः। मूलं श्री विष्णुसहित श्री वज्रेश्वरी (चक्रिणि) श्री पा. पू. त. नमः। मूलं श्री ब्रह्मासहित श्री भगमालिनी श्री पा. पू. त. नमः।

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितियावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें एवं विशेषार्घ पात्र से **''पूजिताः तर्पिताः सन्तु''** कहकर जल छोड़कर तप्त करें। बीजमुद्रा दिखावें।

तृतीयावरणम्- (आज्ञाचक्रे) ॐ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः से पुष्पाञ्जलि देवें। अष्टकोणे-(सर्वरोगहर चक्र) के दलों में आठ(रहस्य योगिनियों) का पूजन, तर्पण योगिनी पात्र से करें। प्रत्येक नाम मंत्र के पहिले **ह्रीं श्रीं** युक्त मूल मंत्र बोले तथा बाद में **पा. पू. त. नमः** से पूजन तर्पण करें। यथा- (इति सर्वत्र)

ह्रीं श्रीं मूलं, ॐ वशिनी श्री पादुकां पू. त. नमः। ॐ कौमारी। ॐ मोहिनी। ॐ विमला। ॐ अरुणा। ॐ जयिनी। ॐ सर्वेशी। ॐ कोलिनी। (अ क च ट त प य स वर्ग युक्त भी पूजन आवाहन कर सकते हैं)

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें और **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। खेचरी मुद्रा दिखावें।

अथ चतुर्थावरणम्- (विशुद्धचक्रे) - ॐ चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः से पुष्पाञ्जलि देवें। अन्तर्दशार (दश त्रिकोण) ''सर्वरक्षाकर चक्र'' के ककोणों में (निगर्भ योगिनियों) आदि दश शक्तियों का पूजन योगिनी

पात्र से तर्पण करें। प्रत्येक नाम मंत्र के पहिले **ह्रीं श्रीं** सहित मूलमंत्र तथा बाद में **श्री पा. पू. त. नमः (१) ॐ सर्वज्ञा। (२) ॐ सर्वशक्ति.। (३) ॐ सर्वैश्वर्य-फलप्रदा। (४) ॐ सर्वज्ञान मयी। (५) ॐ सर्व व्याधिनाशिनी। (६) ॐ सर्वाधार स्वरूपा। (७) ॐ सर्वपापहरा। (८) ॐ सर्वानन्दमयी। (९) ॐ सर्वरक्षाकरा। (१०) ॐ सर्वेप्सितार्थ फलदा ॥**

मूलं ॐ अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। **''पूजिताः तर्पिताःसन्तु'' से** अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। महाङ्कुश मुद्रा दिखावें।

अथ पंचमावरणम्- (अनाहत् चक्रे)- ''ॐ पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः'' से पुष्पांजलि देकर वहिर्दशार (दश त्रिकोण) **''सर्वार्थ साधक चक्र''** के दश कोणों में **''कुलयोगिनियों''** का पूर्ववत् पूजन, योगिनी पात्र से तर्पण करें। प्रत्येक नाम मंत्र के पहिले मूल मंत्र व बाद में **श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** से तर्पण करें।

(१) मूलं, ॐ सर्वसिद्धिप्रदा श्री पा. पू. त. नमः। (२) ॐ सर्वसम्पतप्रदा.। (३) ॐ सर्वप्रियङ्करी। (४) ॐ सर्वमंगल कारिणी। (५) ॐ सर्वकामप्रदा.। (६) ॐ सर्वदुःखविमोचिनी। (७) ॐ सर्वमृत्यु प्रशमनी। (८) ॐ सर्वविघ्न निवारिणी। (९) ॐ सर्वाङ्ग सुन्दरी। (१०) ॐ सर्वसौभाग्य प्रदा.।

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। **''पूजिताः तर्पिताः सन्तु''** से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। उन्माद मुद्रा दिखावें।

अथः षष्टमावरणम्- (मणिपूरचक्रे) - ॐ षष्टमावरण देवताभ्यो नमः। से पुष्पाञ्जलि देवें। चतुर्दशार (चौदह त्रिकोण) **''सर्वसौभाग्यप्रद चक्र''** की **१४ सम्प्रदाय योगनियों** का पूजन तर्पण पूर्ववत् करें।

मूलं, ॐ सर्वसंक्षोभिणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सर्वद्राविणी.। ॐ सर्वाकार्षिणी.। ॐ सर्वाह्लादकरी.। ॐ सर्वसम्मोहिनी.। ॐ सर्वस्तंभिनी.। ॐ सर्व जृम्भिणी.। ॐ सर्ववशङ्करी.। ॐ सर्व रञ्जिनी.। ॐ सर्वोन्मादिनी.। सर्वार्थ- साधिनी.। ॐ सर्व सम्पत्ति पूरिणी.। ॐ सर्व मन्त्रमयी.। ॐ सर्वद्वन्दक्षयङ्करी.।

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ।

पुष्पांजलि देवें। **''पूजिताः तर्पिताः सन्तु''** से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। वश्य मुद्रा दिखावें।

अथ सप्तमावरणम्- (स्वाधिष्ठानचक्रे) ॐ सप्तमावरण देवताभ्यो नमः से पुष्पांजलि देकर(अष्टदल) **''सर्वसंक्षोभण चक्र ''** के दलों में आठ **''गुप्ततर योगिनियो''** की शक्तियों का पूजन तर्पण पूर्ववत् करें। (नेपाल की १७०० ई. की एक कपड़े की पेंटिंग में चौदह त्रिकोण के बाद षोडश दल है)

ॐ मूलं, अनङ्गकुसुमा श्री पादुकां पुजयामि तर्पयामि नमः। ॐ अनङ्ग मेखला.। ॐ अनङ्गमदना.। ॐ अनङ्गमदनातुरा.। ॐ अनङ्गरेखा.। ॐ अनङ्गवेगा.। ॐ अनङ्गांकुशा.। ॐ अनङ्ग मालिनी.।

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धिं देहि मे शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। **''पूजिताः तर्पिताः सन्तु''** से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। आकर्षीणी मुद्रा दिखावें।

अथ अष्टमावरणम्-(मूलाधारे)- ॐ अष्टमावरण देवताभ्यो नमः से पुष्पांजलि देवें।

षोडशदल (सर्वाशापरिपूर चक्र) के षोडशदलों में षोडश **''गुप्तयोगनियों''** का पूजन तर्पण पूर्ववत् योगिनी पात्र से करें।

मूलं, ॐ कामाकर्षिणी.। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ बुद्ध्याकर्षिणी.। ॐ अहंङ्काराकर्षिणी.। ॐ शब्दाकर्षिणी.। ॐ स्पर्शाकर्षिणी.। ॐ रूपाकर्षिणी.। ॐ रसाकर्षिणी.। ॐ गंधाकर्षिणी.। ॐ चित्ताकर्षिणी.। ॐ धैर्याकर्षिणी.। ॐ नामाकर्षिणी.। ॐ बीजाकर्षिणी.। ॐ शरीराकर्षिणी.। ॐ अमृताकर्षिणी.। ॐ स्मृत्याकर्षिणी.। ॐ आत्माकर्षिणी.।

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। द्राविणी मुद्रा दिखावें।

अथ नवमावरणम्- (शरीर के बाह्यांतर प्रदेश में) ॐ नवमावरण देवताभ्यो नमः से पुष्पांजलि देवें भूपूर(त्रैलोक्य मोहन चक्र प्रकट योगिनी) की बाह्य, मध्य और भीतरी रेखाओं में क्रमशः अणिमादि अष्ट सिद्धियों, ब्राह्मी आदि अष्टमहाशक्तियों और क्षोभणादि गुप्तास्त्रों का पूजन, तर्पण पूर्ववत् योगिनी पात्र से करें। नाम के अंत में सिद्धि बोलकर तर्पण करें।

बाह्य रेखा में- **ॐ मूलं, अणिमा सिद्धि श्री पा. पू. त. नमः। ॐ लघिमा सिद्धि.। ॐ महिमा सिद्धि.। ॐ ईशित्व सिद्धि.। ॐ वशित्व सिद्धि.। ॐ प्राकाम्य सिद्धि.। ॐ भुक्ति सिद्धि.। ॐ इच्छा सिद्धि.। ॐ प्राप्ति सिद्धि.। ॐ सर्वकामसिद्ध्यै.।** मध्य रेखा में- **ॐ मूलं, ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ माहेश्वरी.। ॐ कौमारी.। ॐ वैष्णवी.। ॐ वाराही.। ॐ चामुण्डा.। ॐ माहेन्द्री.। ॐ महालक्ष्मी.।** भीतरी रेखा में- **ॐ सर्व संक्षोभिण्यै.। ॐ सर्व विद्राविण्यै नमः। ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः॥ श्री पा. पू. त.॥ ॐ सर्व वशङ्कर्यै नमः। ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः। ॐ सर्वमहांकुशायै नमः। ॐ सर्वखेचर्यै नमः। ॐ सर्वबीजायै नमः। ॐ सर्व यौन्यै नमः। ॐ सर्व त्रिखण्डायै नमः श्री पा. पू. त.।**

मूलं, ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें। क्षोभ मुद्रा दिखावें।

१०. अथ दशमावरणम्- (बाह्यांतर प्रदेशे) भूपूर की मध्य रेखा में वीर पात्र से पूर्वादि क्रमेण इन्द्रादि दिक्पालों का तर्पण करें।

ॐ इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयमि नमः। ॐ अग्नि.। ॐ यम.। ॐ निर्ऋत्य.। ॐ वरुण.। ॐ वायु.। ॐ कुबेर.। ॐ ईशान.। ॐ ब्रह्मा.। ॐ अनन्त.।

मूलं ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें।

११. अथ एकादशमावरणम्- (बाह्यांतर प्रदेशे)ॐ एकादशमावरण देवताभ्यो नमः से पुष्पांजलि देकर भूपूर की बाहिरी तीसरी रेखा में वीरपात्र से तर्पण करें। ॐ वज्र श्री पादु. पू. त. नमः। ॐ शक्ति.। ॐ दण्ड.। ॐ खड्ग.। ॐ पाश.। ॐ अङ्कुश.। ॐ गदा.। ॐ त्रिशूल.। ॐ पद्म.। ॐ चक्र.।

मूलं ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देवें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें।

११. अथ द्वादशावरणम्- ॐ द्वादशावरणदेवताभ्यो नमः से पुष्पाञ्जलि देकर बलिपात्र से भूपूर के बाहर तर्पण करें।

ॐ वं वटुक श्री पा. पू. त. नमः पूर्वे। ॐ यां योगिनी श्री पा. पू. त. नमः दक्षिणे। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय श्री पा. पू. त. नमः पश्चिमे । ॐ गं गणेश श्री पा. पू. त. नमः उत्तरे। ॐ वसु श्री पा. पू. त. नमः आग्नेये । ॐ सूर्य श्री पा. पू. त. नमः नैऋत्ये। ॐ शिव श्री पा. पू. त. नमः वायव्ये। ॐ भूत श्री पा. पू. त. नमः ईशाने।

मूलं ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशमावरणार्चनम् ॥ पुष्पांजलि देवें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" से अर्घ पात्र के जल से तृप्त करें।

ह्रीं श्रीं मूलं, श्री यंत्र स्थित सर्वेभ्यो, देवेभ्यो पूजिताः तर्पिताः सन्तु । जल छोड़े फिर सब देवताओं को भगवती को, धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पण करें।

अगर, गंधार्चन, तर्पण यंत्र के सामने दूसरे पात्र में किया हो तो ठीक श्री यंत्र पर अर्चन किया होतो निर्माल्य उतार कर शुद्ध जल से धोकर पुनः गंधाक्षत कर धूप दीप नैवेद्यादि अर्पण करें। नीराजन करें।

यंत्र पूजा के अंतर्गत पंचसिंहासन देवताओं तथा पंचपंचिका विद्याओं का भी पूजन करना चाहियें। भगवती की नित्याओं का पूजन उनके नाम मंत्रों से अथवा मूल मंत्र जो नित्याओं के पूर्व में बताये गयें है उनके अनुसार पूजन करें।

पूजा अनन्तर पात्रासादन कर तर्पणादि कर सुधा ग्रहण कर चक्रार्चन करें। शक्ति पूजा कर चक्रार्चन कर मंत्र जप करें।

पात्रासादन प्रयोग तथा सुधाग्रहण पात्र वंदना विधि अलग प्रकरण में दिये गयें है। मंत्र का पुरश्चरण कर दशांश होम कर तर्पण, मार्जन, कुमारी पूजन करें।

॥ पञ्च आम्नाय देवता ॥

पंच आम्नाय देवताओं के स्मरण से **मूल मंत्र विद्या** सभी दिशाओं में तथा सर्वकार्यों में गति देकर साधक की उन्नति करती है तथा साधक सभी तरह से सुरक्षित रहता है। एक तरह से इष्ट देवता के उक्त आम्नाय का निष्किलन हो जाता है।

पञ्चवक्त्रैः शिवप्रोक्ताः पंच चाम्नाय देवताः। पंचसिंहासन प्रोढाः सर्वकाम फलप्रदा ॥

(१) पूर्वाम्नाय विद्या-(उन्मनी) मंत्र- **हस्त्रों स्ह्रीं श्रीं कल ह्रीं।**

विनियोगः- **ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पङ्क्तिश्छंदः, श्री उन्मनी देवता, हस्त्रीं बीजं, कलह्रीं शक्तिः, स्ह्रीं कलीकं, श्रीविद्याङ्गत्वेन विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- **हस्त्रीं, कलह्रीं, स्ह्रीं, हस्त्रीं, कलह्रीं, स्ह्रीं** से हृदयादि न्यास करें। **संपत्प्रदा भैरवी** का ध्यान करें।

(२) दक्षिणाम्नायविद्या (भोगिनी) मंत्र - **ऐं क्लिन्ने क्लीं मदद्रवे कुले हसौः।**

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, भोगिनी देवता, ऐं बीजं, स्त्रं शक्तिः, क्लीं कीलकं श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- मंत्र के एक एक पद से न्यास करें। तथा **अघोर भैरवी** का ध्यान करें।

(३) पश्चिमाम्नाय विद्या (कुब्जिका) मंत्र - **ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसौः, ॐ नमो भगवति हसखफ्रें कुब्जिका, हस्त्रां हस्त्रूं अघोरे घोरे अघोरमुखि, छ्रां छ्रीं किणिकिणि विच्चे, हसौः हसखफ्रें, श्री ह्रीं ऐं।**

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य रुद्र ऋषिः, गायत्री छंदः कुब्जिका देवता, हसौः बीजं, हसखफ्रें शक्तिः, हसूं कीलकंकं श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः। ध्यान षट्कूटा भैरवी का करे।**

षडङ्गन्यास - मंत्र मे दिखाये गये पद भेदों से न्यास करे।

(४) उत्तराम्नाय विद्या (कालिका) मंत्र -**खफ्रें महाचण्डयोगेश्वरि।**

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छंदः, श्री कालिका देवता, खफ्रें बीजं, ईश्वरि शक्तिः महाचण्डयोग कीलकं श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- **खफ्रां, खफ्रीं, खफ्रूं, खफ्रें, खफ्रौं, खफ्रः क्रमात्।** ध्यान **भुवनेश्वरी भैरवी** का करे।

(५) उर्ध्वाम्नाय विद्या-(पराप्रसाद मंत्र) मंत्र - **हसौः स्हौः।**

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य परशंभुऋषिः, गायत्री छंदः अर्धनारीश्वर देवता, हसां स्हीं बीजं श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः।**

षडङ्गन्यास - **हसां, हसीं, हसूं, हसैं, हसौं हसः इति क्रमात् ॥**

॥ अथ षट्दर्शन प्रयोगः॥

मंत्र महोदधि में **पंच पञ्चिका** पूजन पश्चात् तथा "**श्रीविद्यार्णव तंत्र**" के "**अष्टम श्वास**" में श्रीविद्या पूजनान्तर्गत षटदर्शन पूजन प्रयोग देकर इस विद्या को "**सर्वदेव देवीमयी**" प्रतिपादित किया है।

(१) **ब्रह्मदर्शन** (पूर्वायतनमयी ब्रह्मगायत्री)

मंत्रो यथा- **ॐ भूर्भुवः स्वः स्वर्महर्जनः तपः सत्यं तत्सवितु र्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् परो रजसे सावदोम्॥ ॐ ब्राह्मदर्शन श्री पादुका पूजयामि नमः।**

(२) **वैष्णव दर्शन** (दक्षिणा यतन विद्या)

मंत्रो यथा- **ॐ नमो नारायणाय।**

विनियोग- **अस्य मंत्रस्य साध्यनारायण ऋषिः गायत्रीच्छंदः श्रीमहाविष्णु दैवता, ॐ बीजं, नम शक्तिः नारायणेति कीलकं, श्रीविद्याङ्गत्वेन विनियोगः।**

षडङ्गन्यास- **ॐ क्रुद्धोल्काय नमः, ॐ महोल्काय नमः, ॐ वीरोल्काय नमः, ॐ द्युल्काय नमः, ॐ चण्डोल्काय नमः, ॐ ॐ सहस्त्रोल्काय नमः,** से क्रमशः षडङ्गन्यास करें।

॥ध्यानम्॥

उद्यत्कोटि- दिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पंकजम्, चक्रं विभ्रतमिन्दिरा वसुमती संशोभि पार्श्वद्वयम् । कोटीराङ्गद हारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभोद्दीप्तम्, विश्वधरं स्व- वक्षसि लसच्छ्रीवत्स चिह्नं भजे ॥

ॐ वैष्णव दर्शन श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

(३) सौरदर्शन (पश्चिमायतन विद्या)

मंत्रो यथा- ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्॥

विनियोगः- अस्य मंत्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्रीच्छंदः श्री आदित्यो देवता, ॐ बीजं, आदित्य शक्तिः घृणिकीलकं, श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः।

षडङ्गन्यास- ॐ सत्यतेजो ज्वाला मालिने हुं फट् स्वाहा। ॐ ब्रह्मतेजोज्वालामालिने हुं फट् स्वाहा। ॐ विष्णुतेजो ज्वाला मालिने हुं फट् स्वाहा। ॐ रुद्रतेजो ज्वाला मालिने हुं फट् स्वाहा। ॐ अग्नितेजो ज्वाला मालिने हुं फट् स्वाहा। ॐ सर्वतेजो ज्वाला मालिने हुं फट् स्वाहा। इत्यादि से हृदयादि न्यास करे।

रक्ताब्ज युग्माभयदान हस्तं केयूरहाराङ्गद कुण्डलाढ्यम्।
माणिक्यमौलिं दिनानाथमीडे बन्धूककांतिं विलसत् त्रिनेत्रम् ॥

ॐ श्री सौरदर्शन श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

(४) बौद्धदर्शन (उत्तरायतन विद्या)

मंत्रो यथा- ॐ ह्रीं तारय तारय स्वाहा।

विनियोगः - ॐ अस्य श्री बौद्ध मंत्रस्य बुद्ध ऋषिः, त्रिष्टुप्छंदः, श्री बौद्धो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः, ह्रीं कीलकं श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः।

षडङ्गन्यास- ॐ, ह्रीं, तारय, तारय, स्वाहा से क्रमशः हृदयादि, नेत्र न्यास कर मूल मंत्र से अस्त्र न्यास करें।

पुरा पुराणानसुरान् विजेतुं संभावयन् पीठरचिह्नवेषम्।
चकार यः शास्त्रममोघकल्पं तं मूलभूतं प्रणमामि बुद्धम् ॥

ॐ श्री बौद्ध दर्शन श्री पादुकां पूजयामि नमः।

(५) शैव दर्शन (उर्ध्वायतन विद्या)

मंत्रो यथा- ॐ नमः शिवाय।

विनियोगः - ॐ अस्य श्री शिव मंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, परमशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः शिवाय कीलकं श्री विद्याङ्गत्वेन विनियोगः।

षडङ्गन्यास- ॐ सर्वज्ञाय नमः। ॐ नित्यतृप्ताय नमः। ॐ अनादि बोधाय नमः। ॐ स्वतंत्राय नमः। ॐ नित्यमलुप्त शक्तये नमः। ॐ नित्यमनन्त शक्तये नमः। से हृदयादि न्यास करें।

नमोस्तु स्थाणुभूताय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने । चतुर्मूर्ति - वपुष्काय भासिताङ्गाय शंभवे।

ॐ शैव दर्शन श्री पादुकां पूजयामि नमः।

(६) शाक्त दर्शन (सर्वोर्ध्वायतन विद्या)

मंत्रो यथा- श्री विद्या कहीं कहीं भुवनेश्वरी विद्या कहा है। तद् मंत्र के न्यास ध्यान करें। ॐ श्री शाक्त दर्शन श्री पादुकां पूजयामि नमः।

॥ मंत्रस्य जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त्यादि अवस्था भेदः॥

त्रिपुर सुन्दरी के मंत्रों के पहले **ह्रीं श्रीं, ॐ, क्लीं, ऐं, ह्रीं, श्रीं, ॐ ह्रीं श्रीं** इत्यादि लगाने से मंत्र की अलग-अलग अवस्थायें होती है अतः मंत्र सिद्धि के लियें उन उन मंत्रो का जप करना चाहिए।

१. जाग्रत रूपा - पंचदशाक्षर मंत्र के पहले ''**ह्रीं**'' लगावें। यथा- **जाग्रतरूपा मायादिः पंचदश्युदितात्र तु।**

२. बोध रूपा - पंचदशाक्षर मंत्र के पहले ''**श्रीं**'' लगावें। यथा - **श्री बीज योगेन बोधन्यावृत्तिरूपका।**

अन्यत्र भेद से **ॐ, ह्रीं, क्लीं, श्रीं, ऐं** के योग से त्रिकूट मंत्र चतुष्कूट हो जायेगें। वैष्णवी मंत्र सप्तकूट एवं शिवपूजिता मंत्र पंचकूट हो जायेगें।

३. स्वप्नरूपा - मंत्र के पहले ''**ह्रीं श्रीं**'' अभिलाषा पूरक मंत्र होता है एवं ''**श्रीं ह्रीं**'' चिन्तामणि मंत्र होता है। इस तरह त्रिकूट मंत्र, पंचकूट हो जाते है। विष्णुमंत्र आठकूट एवं शिवपूजिता मंत्र छः कूट का बन जाता है।

४. सुषुप्ति रूपा - **तारमायादिः स्यात् सा सुषुप्तिरूपिणी।** मंत्र के पूर्व ''**ॐ ह्रीं श्रीं**'' का योजन करने से त्रिकूट मंत्र षट्कूट हो जाते है। विष्णु मंत्र नवकूट तथा शिव मंत्र सप्तकूट मंत्र होगा। फल- **सुषुप्तिरूपा जायन्ते सुषुप्तिः शिवरूपिणी।**

५. सुषुप्ति कलाभेद - ''**ॐ ह्रीं श्रीं, ह्रीं ॐ श्रीं, ॐ श्रीं ह्रीं, श्रीं ॐ ह्रीं**'' इन चार प्रकार से योजन करने पर सुषुप्ति के चार भेद हो जाते है। यथा - **मरणं विस्मृतिर्मूर्च्छा निद्रा च तमसावृता।** १२ विद्याओं को इस तरह पुटित करने पर १४४ मंत्र बन जाते है।

६. तुरीयारूपा - विद्यार्णव तंत्र में लिखा है कि - ''**श्री महोषोडशार्णा तु तुरीया संप्रकीर्तिता**''। अर्थात् ''महाषोडशी मंत्र'' तुरीयरूपा है।

७. तुर्यातीता - पराषोडशी मंत्र तुर्यातीत मंत्र है।

८. बीज योजन फलम्- ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐं को मंत्र के आदि में लगाने से अलग-अलग फल प्राप्त होता है।

**वैराग्यरूपा तारादिः षोडशी प्रकीर्तिता। मायादिः षोडशार्णा तु मुमुक्षुत्व स्वरूपिणी॥
कामादिः षोडशार्णा स्यात् सा समाधिरूपिणी। रमादिः षोडशी चित्तवैमल्यस्य रूपिणी॥
सदसद्वस्तुनिर्धारस्वरूपा वाग्भवादिका। पंचधा षोडशार्णा तु दुर्लभा भुवन त्रये॥**

॥ होम द्रव्याणि ॥

**मल्लिकामालतीपुष्पै र्होमाद्वागीशतामियात्। करवीरर्जपापुष्पै र्होमान्मोहयते जगत्॥१॥
चन्द्र (कर्पूर) कुंकुम कस्तूरी होमात् कामाधिको भवेत्। चंपकै पाटलैर्विश्वं वशमानयतेऽचिरात्॥२॥
लाजाहोमे राज्यदायी मधुनोपद्रवक्षयः। निशिच्छागपलै र्होमो रिपुसैन्य विनाशकृत्॥३॥
दध्याज्य दुग्धमधुभिः क्रमाद्धोमादवाप्नुयात्। आरोग्यं संपद ग्रामं धनं शर्करया सुखम्॥४॥
कमलैर्धनसम्पत्तिर्दाडिमै राजवश्यता। क्षत्रिया मातुलिङ्गैस्तु वैश्या नारंगजै फलैः॥५॥**

शूद्रा कूष्माण्ड संभूतैर्वश्याः स्युरचिराद्धुतैः । पनसानां लक्षहोमाद्वश्याः स्युश्चक्रवर्तिनः ॥६॥
द्राक्षाफलैरिष्टसिद्धी रंभाभिर्मन्त्रिणो वशाः । नारिकेलैस्तु संपत्तिस्तिलै सर्वेष्टसिद्धय ॥७॥
गुग्गुलैर्दुःखनाशः स्यात् सर्वेष्टं शर्करागुडैः । पायसैर्धनधान्याप्तिर्बन्धूकैः प्राणिनो वशाः ॥८॥
पक्वैश्चूतफलै र्होमाल्लक्षमात्राद्धरा वशा । लवणै राजिकायुक्तै र्होमाद्दुष्ट-विनाशनम् ॥९॥
कर्पूरहोमाल्लभते वाक्पतित्वं नरोऽचिरात् । करंजफलहोमेन भूतप्रेतादयो वशाः ॥१०॥
बिल्वैः स्यादतुला लक्ष्मीरिक्षुदंडैः सुखाप्तयः । घृतहोमादीप्सिताप्तिः शांतिः स्यात्तिलतंडुलैः ॥११॥

॥ विद्या के शुद्धाशुद्धादि भेदः ॥

(१) शुद्ध विद्या - अनुलोम मंत्र।

(२) अशुद्ध विद्या - विलोम मंत्र।

(३) शुद्धाशुद्ध उभयात्मक - अनुलोम विलोम मंत्र।

(४) शवला विद्या - अनुलोम विलोम अनुलोम मंत्रः।

अनुलोमाश्च या विद्याः शुद्धाः स्यु प्रतिलोमजा, अशुद्धा इति ज्ञेया उभयात्मन एव च । शुद्धाशुद्धाश्च शवला व्यत्यस्त व्याकुलक्रमात् । एवं चतुर्विद्या विद्या विज्ञेया देशिकोत्तमै ॥

॥ अथ गोपाल सुन्दरी मंत्र प्रयोगः ॥

वैष्णव संप्रदाय में गोपाल सुन्दरी की उपासना शाक्त मत के त्रिपुरसुंदरी की साधना के समान हैं। मंत्रमहोदधि में २० अक्षर मंत्र कहा हैं। यंत्र पूजा में गोपाल यंत्र पर त्रिपुरसुन्दरी के यंत्र की पूजा करने मात्र से समिष्टि मानकर गोपाल सुन्दरी क्रम मान लिया गया है।

जब कि श्रीकल्पद्रुम के अनुसार षोडशी विद्या के तीनों कूटों को मिलाने से ही गोपाल सुन्दरी मंत्र पूर्ण होगा।

(१) ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। मंत्र महोदधि की टीका में यही मंत्र दिया है परन्तु मंत्रोद्धार के अनुसार त्रिपुरसुंदरी के मंत्र के त्रिकूटों का प्रयोग नहीं किया है।

(२) मंत्रोद्धार- गोपालसुन्दरी वक्ष्ये भोगमोक्षप्रदायिनीं। माया (ह्रीं) रमा (श्रीं) चितजन्मा (क्लीं) कृष्णायेति पदं ततः॥ आद्यं वाक्कूटमुच्चार्य गोविन्दाय पदं वदेत । द्वितीय तु ततः कूटं गोपीजन पदं ततः॥ वल्लभायपदान्तं तु तृतीयं कूटमुच्चरेत् । स्वाहान्ता वह्नियुग्मार्णा स्मृता गोपालसुंदरी ॥

अतः दूसरा मंत्र यथार्थ इस प्रकार है- **ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय कएईल ह्रीं गोविन्दाय हसकहल ह्रीं गोपीजनवल्लभाय सकल ह्रीं स्वाहा।** (विद्यार्णव तंत्रे)

विनियोगः- **अस्य श्रीगोपालसुन्दरी मंत्रस्य विधात्रानन्दभैरवो ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीगोपालसुंदरी देवता, क्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः - **ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः। कृष्णाय कएईल ह्रीं शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय हसकल ह्रीं शिखायै वषट्। गोपीजन कवचाय हुं। वल्लभाय सकल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यासः– प्रत्येक वर्ण का न्यास करें। स्थिति क्रम में मूल मंत्र के प्रत्येक वर्ण का न्यास स्थान सृष्टिक्रम में जो क्रम बताया गया है उसमें हृदय, उदर, नाभौ, से आरंभ कर **स्वां नमः कण्ठे तथा हां नमः बाहुमूले** तक होगा। अथवा **गौं नमः** हृदि से प्रारंभ कर **यं नमः** बाहुमूल तक करें।

सृष्टिन्यास– सभी मंत्र वर्णो के साथ **नमः** युक्त कर न्यास करे। **ह्रीं नमः मूर्ध्नि। श्रीं ललाटे। क्लीं भ्रुवोः। कृं नेत्रयोः। ष्णां कर्णयो। यं नासिकयौ। गों मुखे। विं चिबुके। न्दां कंठे। यं बाहुमूले। गों हृदि। पीं उदरे। जं नाभौ। नं लिङ्गे। वं गुदे। ल्लं कट्यां। भां जान्वो। यं जंघयोः। स्वां गुल्फयोः। हां पादयोः।**

स्थिति न्यास– **ह्रीं हृदि। श्रीं उदरे। क्लीं नाभौ। कृं लिङ्गे। ष्णां मूलाधारे। यं कट्यां। गों जान्वो। विं जंघयोः। न्दां गुल्फयोः। यं पादयोः। गों मूर्ध्नि। पीं ललाटे। जं भ्रुवो। नं नेत्रयोः। वं कर्णयोः। ल्लं नसोः। भां मुखे। यं चिबुके। स्वां कण्ठे। हां बाहुमूले।**

संहारन्यास– **ह्रीं नमः पादयोः। श्री गुल्फयोः। क्लीं जंघयोः। कृं जान्वो। ष्णां कट्यां। यं गुदे। गो लिङ्गे। विं नाभौ। न्दां उदरे। यं हृदि। गों बाहुमूले। पी कण्ठे। जं चिबुके। नं मुखे। वं नसौः। ल्लं कर्णयोः। भां नेत्रयोः। यं भ्रुवोः। स्वां ललाटे। हां मूर्ध्नि।**

वाग्देवता न्यास– **१. अं.....अः रब्लूं वशनिवाग्देवतायै नमः शिरसि। २. कं......ङं कलह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ३. चं.....ञं ब्लूं मोहिनी वाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ४. टं.....णं म्लूं विमला वाग्देवतायै नमः कंठे। ५. तं.....नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः हृदि। ६. पं.....मं ह्स्ल्व्यूं जपिनी वाग्देवतायै नमः नाभौ। ७. यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वागदेवतायै नमः मूलाधारे। ८. शं.....लं क्षं क्ष्म्री कोलिनी वाग्देवतायै नमः उर्ध्वादिपादन्तम्। मंत्रमहोदधि में कएईल ह्रीं** इत्यादि कूटों से न्यास की जगह त्रिकूट न्यास इस प्रकार कहे हैं।

षडङ्गन्यासः– **१. कृष्णाय हृदयाय नमः। गोविन्दाय शिरसे स्वाहा। गोपीजनवल्लभाय शिखायै वषट्। कृष्णाय कवचाय हुं। गोविन्दाय नेत्रत्रयाय वषौट्। गोपीजनवल्लभाय अस्त्राय फट्।**

२. ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः। कृष्णाय शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय शिखायै वषट्। गोपीजन वल्लभाय कवचाय हुं। स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

क्षीराम्भोधिस्थ कल्पद्रुमवन विलसद्रत्नयुङ् मण्डपान्तः ।
प्रोद्यच्छ्रीपीठसंस्थं करधृत जलजारीक्षु चापांकुशेषुम् ॥
पाशं वीणां सुवेणुं दधतमवनिमाशोभितं रक्तकान्तिम् ।
ध्यायेद् गोपालमीश विधिमुख विबुधैरीड्यमानं समन्तात् ॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

षट्कोण, अष्टदल बनाकर चारद्वार युक्त भूपूर बनाये। विमलादि पीठशक्तियों का पूजन कर प्रधान देवता का आवाहन कर पूजा करे पश्चात् यंत्रार्चन करे। देव के पास में ही उनके शस्त्रों का पूजन करे –

ॐ कीरीटाय नमः, कुण्डलाभ्यां नमः, शङ्खाय नमः, चक्राय नमः, गदायै नमः, पद्माय नमः, वनमालायै नमः, श्रीवत्साय नमः, कौस्तुभाय नमः।

प्रथमावरण – (षट्कोणे) **ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः** अग्निकोणे। **कृष्णाय शिरसे स्वाहा** (ईशाने)। **गोविन्दाय**
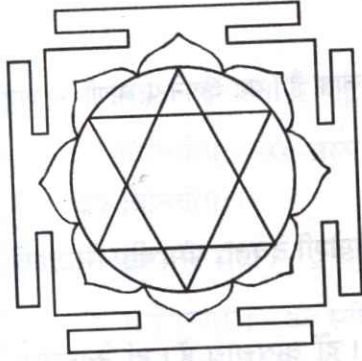
॥ गोपाल सुन्दरी यन्त्रम् ॥

शिखायै वषट्। नैऋते। **गोपीजन कवचाय हुं।** (वायव्ये)। **वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्** देव्याग्रे। **स्वाहा अस्त्राय फट्** दिक्षु।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वे **ॐ वासुदेवाय नमः।** दक्षिणे **ॐ सङ्कर्षणाय नमः।** पश्चिमे **ॐ पद्युम्नाय नमः।** उत्तरे **अनिरुद्धाय नमः।** आग्नेयादि कोणे **ॐ शान्त्यै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ रत्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - (अष्टदलमध्ये) पूर्वादिक्रमेण पूर्व **ॐ रुक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यमामायै नमः। ॐ कालिंद्यै नमः। ॐ नाग्नजित्यै (जाम्बवत्यै) नमः। मित्रविन्दाय नमः। ॐ चारुहासिन्यै (सुनन्दायै) नमः। ॐ रोहिण्ये (सुलक्षणायै) नमः। ॐ जाम्बवत्य (नाग्नजित्यै) नमः।**

चतुर्थावरणम् - अष्टदलाग्रे- **ॐ षोडशसहस्त्र महिषीभ्यो नमः।**

पंचमावरणम् - (भूपूर अष्टदलान्तरे)-(पूर्वादिक्रमेण) **ॐ इन्द्रनिधियै नमः। ॐ नीलनिधियै नमः। ॐ मुकुन्दनिधियै नमः। ॐ मकरनिधियै नमः। ॐ आनंदनिधियै नमः। ॐ कच्छपनिधियै नमः। ॐ पद्मनिधियै नमः। ॐ शङ्खनिधियै नमः।** मध्ये - **ॐ खर्वनिधियै नमः।**

पाठान्तरे - (भूपूर अष्टदलान्तरे)- **ॐ महापद्माय नमः पूर्वे। ॐ पद्माय नमः आग्नेये। ॐ शंखाय नमः दक्षिणे। ॐ मकराय नमः नैर्ऋत्ये। ॐ कच्छपाय नमः पश्चिमे। ॐ मुकुन्दाय नमः वायव्ये। ॐ कुन्दाय नमः उत्तरे। ॐ नीलाय नमः ऐशान्ये। ॐ खर्वाय नमः मध्ये।**

षष्ठमावरणम् - भूपुर में इन्द्रादि दशदिक्पालों का एवं उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करे। पश्चात् देव की सर्वविध पूजा करे।

इसके पश्चात् त्रिपुरसुन्दरी के श्रीयंत्र का जो अर्चन है उन सभी आवरण देवताओं का अर्चन करें।

आरतीकर पुष्पांजलि देवे।

॥ संमोहन हेतु अन्यकामना मंत्र ॥

(१) ॐ गल्यौं ॐ (२) ह्रीं गल्यौं ह्री (३) ऐं गल्यौं ऐं (४) क्लीं गल्यौं क्लीं (५) ब्लूं गल्यौं ब्लूं (६) स्त्रीं गल्यौं स्त्रीं (७) द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः गल्यौं सः ब्लूं क्लीं द्रां द्रीं ॥

अरुणं षड्भुजं वंशवादिनं पाशमंकुशम्। पुण्ड्रेक्षुचापपुष्पेबून् दधानं शक्तिभिः स्मरेत्॥ मंत्र के बीजों से षडङ्गन्यास करे।

अष्टदल के सात पत्रों में एक मंत्र से पूजा करे। रविवार से क्रमश एक मंत्र से पूजा करे। प्रतिदिन अलग नैवेद्य देवे।

सकलेष्टप्रदा नित्यं दुग्धक्षोद्र घृतान्नकैः। पायसैर्नारिकेलैश्च ससितैः कदलीफलैः ॥

मूल मंत्र सुवर्णपुष्पो का लेपन कंठ पर करे तो देव दर्शन होवे।

॥ अथ बाणेशी मंत्र प्रयोगः॥

बाणेशी मंत्र का प्रयोग आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण, इत्यादि कार्यों हेतु किया जाता है। यह अपने ५ बाणों से शत्रु को द्रवित कर साधक का मनोरथ सफल करती है।

मंत्र- द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री वाणेशीमंत्रस्य सम्मोहन ऋषिः, गायत्री छन्दः, वाणेशी देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

षडंगन्यासः- **सः हृदयाय नमः। ब्लूं शिरसे स्वाहा। क्लीं शिखायै वषट्। द्रीं कवचाय हुँ। द्रां नेत्रत्रयाय वौषट्। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट्।**

सर्वाङ्ग न्यासः- **द्रां द्राविण्यै नमः मूर्ध्नि। द्रीं क्षोभिण्यै नमः पादयोः। क्लीं वशीकरिण्यै नमः मुखे। ब्लूं आकर्षिण्यै नमः गुह्ये। सः संमोहिन्यै नमः हृदि।**

उद्यद्भास्वत्सन्निभा रक्तवस्त्रा, नानारत्नालंकृताङ्गी वहन्ती।
हस्तैः चापंचांकुशं चापवाणौ, वाणेशी नः कामपूर्तिं विधत्ताम्॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यंत्र मध्य में दो वृत्त बनाये। उनके बाहर अष्टदल के पश्चात् भूपूर बनायें। पीठ शक्तियों का पूजन यंत्र के मध्य में पूर्वादि क्रम से करें। **ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ क्षोभिण्यै नमः। ॐ त्रास्यै नमः। ॐ स्तंभिन्यै नमः। ॐ आकर्षिण्यै नमः। ॐ द्राविण्यै नमः। ॐ आह्लादिन्यै नमः। ॐ क्लिन्नायै नमः। मध्ये- ॐ क्लेदिन्यै नमः।**
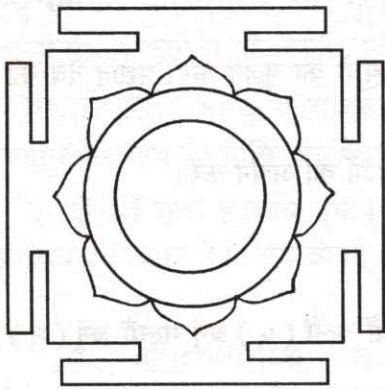
॥ बाणेशी यंत्रम् ॥

प्रथमावरणम्- दो वृत्तों के बीच में जो कर्णिका बनी है आग्नेयादि चारों कोणों में अंगन्यास शक्ति से पूजन तर्पण करें- **ॐ सः हृदयाय नमः। ॐ ब्लूं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ द्रां कवचाय हुँ। ॐ द्रां नेत्रत्रयाय वौषट् अग्रे। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् दिक्षु।**

द्वितीयावरणम् - (वृत्त कर्णिका से पूजन करें) **द्रां द्राविण्यै नमः** पूर्वे। **द्रीं क्षोभिण्यै नमः** दक्षिणे। **क्लीं वशीकरणे नमः** पश्चिमे। **ब्लूं आकर्षिण्यै नमः** उत्तरे। **सः संमोहिन्यै नमः** अग्रे।

तृतीयावरणम् -(अष्टदल मध्ये पूर्वादि क्रमेण)- **ॐ अनङ्गरूपायै नमः। ॐ अनङ्गमदनायै नमः। ॐ अनङ्ग मन्मथाय नमः। ॐ अनङ्ग कुसुमायै नमः। ॐ अनङ्गमदनायै नमः। ॐ अनङ्ग शिशिरायै नमः। ॐ अनङ्ग मेखलायै नमः। ॐ अनङ्गदीपिकायै नमः।**

चतुर्थावरणम् में भूपूर में इन्द्रादि दशदिक्पालों का एवं **पंचमावरणम्** में उन्हीं के पास भूपूर में उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

॥ काम्यप्रयोगः ॥

३ दिन तक दधिमिश्रित अशोक पुष्पों से प्रतिदिन १००० आहुतियाँ देवे तो जगत का वशीकरण होवें। इतनी ही संख्या में साधक दही सहित लाजा होम करें तो पत्नी की प्राप्ति होवें, कन्या करे तो उसें उत्तम वर की प्राप्ति होवें।

॥ अथ कामेशी मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रः- ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीकामेशी मंत्रस्य संमोहन ऋषिः, गायत्री छन्दः, कामेशी देवता, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

त्र्यक्षरी मंत्र :- ऐं क्लीं सौः। (विधान बालासुन्दरीवत्)

षडंगन्यासः- ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः। ॐ ब्लूं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ क्लीं कवचाय हुं। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

पाशांकुशाविक्षुशरासवाणौ कैरर्वहन्तीमरुणांशुकाढ्यम्।
उद्यत्पतङ्गाभिरुचिं मनोज्ञां कामेश्वरीं रत्नचितां प्रणौमि ॥

यंत्रोद्धार- सर्वप्रथम वृत्ताकार कर्णिका के ऊपर चतुर्दल बनाये, फिर अष्टदल पश्चात् भूपूर बनाये।
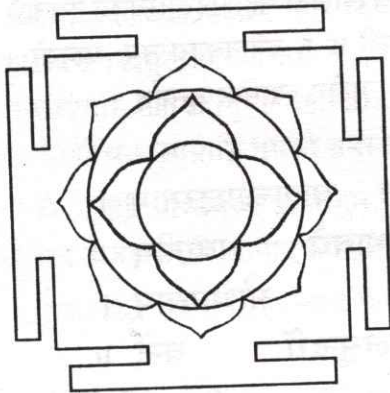
॥ कामेशी यंत्रम् ॥

प्रथमावरणम् - (वृत्ताकार कर्णिका मध्ये)- ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः। ॐ ब्लूं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ क्लीं कवचाय हुं। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम् - (चतुर्दले)- ॐ मनोभवाय नमः पूर्वे। ॐ मकरध्वजाय नमः दक्षिणे। ॐ कंपर्दाय नमः पश्चिमे। ॐ मन्मथाय नमः उत्तरे। ॐ कामदेवाय नमः मध्ये।

तृतीयावरणम्- तृतीय से पंचमावरण तक के देवता अष्टदल व भूपूर में वाणेशी पूजन के ही देवता है।

प्रयोगः- साधक ५ लाख जप करें एवं पलाश के फूलों से ५० हजार संख्या में आहुति देवें तो जगत वशीकरण होवें।

॥ श्रीविद्यायाः शुद्ध शक्ति खड्गमाला स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र के पाठ से श्रीयंत्र की पूजा का फल प्राप्त होता है। विशेष पूजा विधि स्तोत्र के बाद दी गई है।

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

भगवन्! देव देवेश! सर्वज्ञ! करुणानिधे! शुद्धशक्ति महामन्त्रं ब्रूहि मे सकलेष्टदम् ॥१॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि यन्मा त्वं परिपृच्छसि। यस्य स्मरण मात्रेण चक्रपूजा फलं लभेत् ॥२॥
शुद्ध नमोऽन्ताः स्वाहान्तास्तर्पणान्ता जयान्तकाः। प्रवृत्तयः पञ्चधा स्युर्मालासु निखिलास्वपि ॥३॥
शुद्धायाः शक्तिमालाया जपस्तेन विधीयते। पञ्चधा जायते नित्यं पुरश्चर्या फलं लभेत् ॥४॥
एषा विद्या महाविद्या समयाचार वर्त्तिनी। अतिवीर्यतरा विद्या सूर्यकोटि समप्रभा ॥५॥

कुलाङ्गना कुलं सर्वं मदीयं परमेश्वरि । देवी रक्षतु सर्वाङ्गं दिव्याङ्गं भोगदायिनी ॥६॥
निरालम्बे महातल्पे लीयमाना सुरेश्वरी । हुङ्कारं च ततः कृत्वा पूजयेद् भुवि मण्डले ॥७॥
पूजान्ते वामहस्तेन ह्लींकारं त्रिविधं जपेत् । पश्चात् त्रिपुर मन्त्रेण मूलमन्त्रेण शङ्करि ॥८॥
नवावरण देवीनां ललितायाः महौजसः । एकत्रः गणनारूपो मन्त्रो मन्त्रार्थ गोचरः ॥
मालामन्त्र विधानेन क्रमणोच्चारणं भवेत् ॥९॥

सङ्कल्प- अद्येत्यादि मम श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी देवता वरप्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वाभीष्ट प्राप्त्यर्थं शुद्ध शक्ति खड्गमाला मन्त्र पाठाख्यं कर्म करिष्ये।

विनियोग:-ॐ नमोऽस्य श्रीशुद्धशक्तिखड्गमाला मन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायी श्रीवरुणादित्य ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, सात्विक ककार-भट्टारक पीठस्थित शिव श्रीकामेश्वराङ्कनिलया श्रीकामेश्वरी ललिता महाभट्टारिका देवता, ऐं क-५बीजं, सौः स-४ शक्तिः, क्लीं ह-६ कीलकं, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी वरप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास:- उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिने श्रीतरुणादित्य ऋषये नमः शिरसि। देवी गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सात्विक ककार भट्टारक पीठस्थित शिवश्रीकामश्वराङ्क निलयायै श्रीकामेश्वरी ललिता महाभट्टारिकायै देवतायै नमः हृदये। ऐं क-५ बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-४ शक्तये नमः नाभौ। क्लीं ह-६ कीलकाय नमः पादयोः। श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी वरप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। मूलेन व्यापकं कुर्यात्

॥ ध्यानम् ॥

अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं धृतपाशांकुश वाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥
अतिमधुरचापहस्तामपरिमित मोदमान सौभाग्याम् ।
अरुणामतिशय करुणामभि नवकुलसुन्दरीं वन्दे ॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्क्लें हस्क्रीं हस्क्रौं श्रीं ह्रीं ऐं समयिनि मदिरानन्द सुन्दरि समस्त सुरासुर वन्दिते भुजङ्ग भूपाल मौलि मालार्चित चरणकमले विकटदन्त खटाटोप निवारिणि! मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु दुर्जनं हन हन दुष्ट महीपालान् क्षोभय क्षोभय परचक्रं भंजय भंजय। जयंकरि, गगन गायिनि त्रैलोक्य स्वामिनि! समल वरयूं रमल वरयूं यमल वरयूं समल वरयूं श्रीभैरवि! प्रसीद प्रसीद स्वाहा।

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै । अष्टादश महाद्वीप सम्राट् भोक्ता भविष्यति ॥

ह्रां ह्रीं इत्यादिना षडंगन्यासं कृत्वा खड्गमाला मन्त्रं जपेत् यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमस्त्रिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्र देवि कामेश्वरि भगमालिनि नित्य क्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये परमेश्वर परमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीश -मयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकर देवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि श्रीरामानन्दमयी अणिकाम सिद्धे

लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे, ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि, सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहांकुशे सर्वखेचरि सर्ववीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे ''त्रैलोक्य मोहनचक्र स्वामिनि'' प्रकटयोगिनि कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिणि अहङ्काराकर्षिणि गंधाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशा परिपूरकचक्र स्वामिनि गुप्तयोगिअनङ्गन्यङ्गकुसुमेऽनङ्ग मेखलेऽनङ्ग मदनेऽनङ्ग मदनातुरेऽनङ्ग-रेखेऽनङ्ग वेगिन्यनऽनङ्गां कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि गुप्ततरयोगिनि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरंजिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरिणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि ''सर्वसौभाग्य दायक चक्रस्वामिनि सम्प्रदाय योगिनि'' सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पतप्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्य दायिनि ''सर्वार्थ साधक चक्रस्वामिनि'' कुलोत्तीर्ण योगिनिसर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधार स्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे ''सर्वरक्षाकर चक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि'' वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्र स्वामिनि रहस्ययोगिनि वाणिनि चापिनि पाशिन्यंकुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि ''सर्वसिद्धिप्रदचक्र स्वामिन्यति रहस्ययोगिनि'' श्री श्री महाभट्टारिके सर्वानन्दमय चक्रस्वामिनि परापर रहस्ययोगिनि त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुर वासिनि त्रिपुरा श्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि महामाहेश्वरि महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहा नन्दे महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्र साम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्त प्रकटगुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय कुल कौल निगर्भ रहस्याति रहस्य परापर रहस्य योगिनि श्रीविद्या राजराजेश्वरि श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

पुष्पाञ्जलिं निवेद्य मूलेन न्यासं विधाय मानसोपचारैः पूजयेत्।

॥ फलश्रुति ॥

माला मन्त्रो महादेव्याः सर्वसिद्धि प्रदायकः । एकत्रिंशत् सहस्त्राणैं स्त्रिलोकी मोहन क्षमः ॥१॥
एषा विद्या महासिद्धि दायिनी स्मृति मात्रतः । अग्निवातमहाक्षोभे राज राष्ट्रस्य विप्लवे ॥२॥
लुण्ठने तस्कर भये संग्रामे सलिलप्लवे । समुद्रयान विक्षोभे भूतप्रेतादिजे भये ॥३॥
अपस्मार ज्वर व्याधि मृत्यून्मादादिजे भये । डाकिनी पूतना यक्ष रक्षः कूष्माण्डजे भये ॥४॥
मित्रभेदे ग्रहभये व्यसने चाभिचारके । अन्येष्वपि च दोषेषु मालामन्त्रं स्मरेद् बुधः ॥५॥
सर्वोपद्रव निर्मुक्तः सर्वव्याधि विवर्जितः । सर्वदा पूर्णहृदयः साक्षाच्छिव मयो भवेत् ॥६॥
आपत्काले नित्यपूजां विस्तरात् कर्तुमक्षमः । एकावर्तन मात्रेण चक्रपूजा फलं लभेत् ॥७॥
नवावरण देवीनां ललिताया महौजसः । एकत्र गणना रूपो यन्त्र मन्त्रार्थ गोचरः ॥८॥
सर्वागम रहस्यार्थः स्मरणात् पापनाशिनी । नरेन्द्राणां नारीणां सर्वदेव वशङ्करी ॥९॥
ललिताया महेशान्या मालाविद्या महीयसी । अणिमादि गणैश्वर्यैः रञ्जनी पापभञ्जनी ॥१०॥
तत् तथावरण स्थायिदेवतावृन्द मन्त्रजम् । मालामन्त्रो महादेव्याः सर्वकार्यार्थ सिद्धिदः ॥११॥

इदं स्तोत्रं महादेव्याः सर्वलोक विमोहनम् । सर्वसौख्यप्रदं नृणां सर्वसौभाग्य दायकम् ॥१२॥
अनेनशुद्धशक्ति माला मन्त्र जपाख्येन कर्मणा भगवती राजराजेश्वरी श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी प्रीयताम् ।

॥ ॐ तत्सत् श्रीललिता परिशिष्टे उमामहेश्वर संवादे शुद्धशक्तिमाला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ खड्गमाला स्तोत्र प्रयोग विधिः॥

खड्गमाला स्तोत्र में सभी आवरण देवताओं की नामावलि है अतः इस स्तोत्र के पाठ से ''श्री यंत्र के यंत्रार्चन का फल प्राप्त होता है''। स्तोत्र में पहले भगवती की १५ नित्याओं का स्मरण कर पश्चात भूपुर से त्रिकोण तक विलोम क्रम से आवरण पूजा दी गई हैं। अर्थात् नित्या पूजन के बाद संहार क्रम का पूजन दिया गया है अतः शत्रुनाश व विघ्ननाश के लिये यह प्रयोग ठीक है परन्तु मेरे अनुभव से अर्थप्राप्ति में यह प्रयोग अधिक उपयुक्त नहीं है। खड्गमाला के अलग अलग प्रयोग साधकों में साधना भेद व प्रांतभेद से अलग अलग प्रचलित है।

(१) स्वशरीर में दिव्य शक्ति हेतु ध्यान एवं न्यास

स्तोत्र के प्रारंभ से रामानंदमयि तक ''**सहस्त्रार**'' में तथा अणिमा सिद्धि से सर्वत्रिखण्डे ''**त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वमिनि प्रकटयोगिनी**'' तक शरीर के ''**ब्राह्यान्तर प्रदेश**'' मे आठों दशाओं में ध्यान करें। ''**कामाकर्षिणि**'' से सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वमिनि गुप्तयोगिनी का ''**मूलाधारचक्र**'' में तथा ''**अनङ्गकुसुमे**''...... ''**सर्वसंक्षोभण चक्रस्वामिनी गुप्ततरयोगिनि**'' तक ''**स्वाधिष्ठान चक्र**'' में यजन करें। ''**सर्वसंक्षोमिणि चक्रस्वमिनि संप्रदाय योगिनि**'' तक ''**मणिपूर चक्र**'' में एवं सर्वसिद्धिप्रदे सर्वार्थसाधकचक्र स्वामिनि कुलोत्तीर्ण योगिनी तक अनाहत् चक्र में ध्यान करें। ''**सर्वज्ञे सर्वरक्षाकर चक्रस्वमिनि निगर्भयोगिनि**'' का ''**विशुद्धचक्र**'' में वशिनि सर्वरोगहर चक्रस्वातिनि रहस्य योगिनी तक ''**आज्ञा चक्र**'' में पूजन करें पश्चात् अन्यशक्तियों का ''**सहस्त्रार**'' में ध्यान कर मानस पूजा करें।

(२) अथ मासान्त पुरश्चरण प्रयोग विधिः।

यह प्रयोग महिने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से मासांत तक ''खड्गमाला प्रयोग'' अधिक प्रचलित है। यदि साधक के पास अधिक समय नहीं है तो इसक्रम से दैनिक पूजन करने से साधना का पूर्ण फल प्राप्त होगा।

''खड्गमाला'' अर्चन प्रयोग के मुख्य ५ अङ्ग है। **(१)आवाहन संबोधन (संबुद्धयन्त) (२) नमोऽन्त (३) स्वाहान्त (४) तर्पणान्त (५) जयान्त**। १५ दिन के ऋषि न्यास सहित प्रयोग विस्तृत है। साधरण प्रयोग इस प्रकार है-

प्रतिदिन एक एक विधिसे प्रयोग करे तो ५ दिन में एकक्रम होता है। प्रथम ५ दिन(प्रतिप्रदा से पंचमी) ''**शक्तिप्रधान**'' होने से ''संकल्प'' में अलग अलग दिन अलग अलग क्रम का उल्लेख करे।

यथा प्रथम दिन-**श्री शक्ति संबुद्धयन्त खड्गमाला प्रयोग महं करिष्ये**। दूसरे दिन- **श्री शक्ति नमोऽन्त खड्गमाला प्रयोग करिष्ये**। तीसरे दिन- **श्री शक्ति स्वाहान्त खड्गमाला प्रयोग महं करिष्ये**। चौथे दिन- **श्री शक्ति जयान्त खड्गमाला प्रयोग महं करिष्ये**। पंचम दिन- **श्री शक्ति जयान्त खड्गमाला प्रयोग महं करिष्ये**।

॥ प्रयोग विधानम्॥

प्रतिप्रदा प्रतिनाम के साथ ''**ह्रीं श्रीं** '' या **ऐं ह्रीं श्रीं** प्रथम उच्चारण कर नाम के बाद आवाहयामि ध्यायामि कह कर हाथ जोड़े।

यथा- **ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुंदरि आवाहयामि ध्यायामि।** द्वितीया- **ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुंदर्यै नमः पादुकां पूजयामि।** गंधार्चन पुष्पार्चन युक्त पुष्पांजलि देवें। तृतीया- **ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दर्यै स्वाहा।** प्रतिनाम हवनकुण्ड में घृत की आहुति देवें। चतुर्थी- ऐं **ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरी तर्पयामि।** प्रतिनाम देवता से तर्पण करे। वीराचार से पूजन करं तो जिह्वाग्र स्थित कुलकुण्डालिनी का ध्यान कर उसको अमृत से तर्पण करें। पंचमी- **ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपु सुन्दरि जय जय।** प्रतिनाम पुष्पांजलि देवे।

"**छष्ठी से दशमी**" शिव तत्व प्रधान पूजा है अतः संकल्प में शक्ति की जगह "**शिव**" का उच्चारण करें। पांच दिनों मे पूर्वोक्त विधि से क्रम करें।

"**एकादशी से पूर्णिमा**" शक्ति शिव उभयात्मक अमुक खड्गमाला प्रयोग महं करिष्ये का उल्लेख करें।

पुनः कृष्ण प्रयोग में ५ दिन का यही क्रम प्रतिप्रदा से पंचमी शिव शक्ति उभयात्मक। षष्ठी से दशमी तक **शिव प्रधान** का संकल्प का उल्लेख कर प्रयोग करें। ५ दिनों की प्रयोग विधि पूर्ववत् ही रहेगी केवल मात्र पाठ के संकल्प का भेद है।

एकादशी से अमावस्या तक **शक्ति प्रधान** का संकल्प करें। शुक्लपक्ष की प्रतिप्रदा से पंचमी तक विधान तरह पांचों दिन का प्रयोग करें।

ललिता देवी पंद्रह दिनों में अपने भिन्न-भिन्न स्वरूपों से अपने अपने कामेश्वर शिव के साथ विग्रह स्वरूप में इस प्रकार है- उनका यजन भी करें यथा-

(१) कामेश्वरीललिता- शिव कामेश्वर। (२) एकला ललिता- एकवीरकामेश्वर। (३) ईश्वरीललिता-ईश्वर कामेश्वर (४) ललितालिलिता- ललितकामेश्वर (५) हृल्लेखाललिता- हृदय कामेश्वर। (६) हलिनीललिता- हलिककामेश्वर। (७) सरस्वतीललिता- सर्वज्ञकामेश्वर (८) कमलाललिता -कालमर्दनकामेश्वर (९) हरिवल्लभा ललिता- हरनाथकामेश्वर (१०) लक्ष्मीललिता- ललज्जिह्वकामेश्वर। (११) हिरण्याललिता- हृदयेश्वर कामेश्वर (१२) सकलजननीललिता- सकलेश्वरकामेश्वर। (१३) कामकोटिललिता- करुणाकरकामेश्वर। (१४) लीलावतीललिता- लावण्यनायककामेश्वर। (१५) हरेश्वरीललिता- हिरण्यबाहुकामेश्वर।

॥ इति खड्गमाला प्रयोगः ॥

॥ श्री षोडशी मातृका ॥

इन मातृकाओं के न्यास वहिर्मातृका न्यास की तरह करें।

कामेशी भगमाला च नित्यक्लिन्ना ततः परम् । भेरुण्डा - वह्निवासिन्यौ वज्रेशी तदनन्तरम् ॥१॥
शिवदूती च त्वरिता ततश्च कुलसुन्दरी । नित्या नीलपताका च विजया सर्वमङ्गला ॥२॥
ज्वालामालिनि चित्रा च महात्रिपुरसुन्दरी । षोडशी मातृकांयाश्च सम्प्रोक्ताः स्वरशक्तयः ॥३॥
ग्रसिनी प्रियवादिन्यौ कराली च कपालिनी । शिवा घोषा च दंष्ट्रा च वीरोमा वाक् प्रदा तथा ॥४॥
नारायणी मोहिनी च प्रज्ञा च शिखिवाहिनी । भीषणा वायुवेगा च भीमा चैव विनायिका ॥५॥
पूर्णा शक्तिश्च कङ्काली कुर्दिनी कालिका तथा । दीपनी च जयन्तिन्या पावनी लम्बिनी तथा ॥६॥
संहारिणी छागली च पूतना मोदिका तथा । परशक्तिस्तथाम्बा च इच्छाशक्तिस्ततः परम ॥७॥
महाकाली च सम्प्रोक्ता व्यभ्जनानां च शक्तयः ।

॥ श्री बालात्रिपुरसुन्दरी कवचम् ॥

॥ श्री भैरवी उवाच ॥

देवदेव! महादेव! भक्तानां प्रीतिवर्द्धन! सूचितं यत् त्वया देव्याः कवचं कथयस्व मे ॥१॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम् । अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्ट सिद्धिदम् ॥२॥

विनियोगः – **अस्य श्री बालात्रिपुरसुन्दरी कवचस्य श्री दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः श्री बालात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्ति, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः – **श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे। श्री बालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि।, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौः शक्तये नमो नाभौ, क्लीं बीजाय नमः पादयोः, चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।**

षडङ्गन्यासः	करन्यास	अङ्गन्यासः
ऐं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
क्लीं	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
सौः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ऐं	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुँ**
क्लीं	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
सौः	**करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्**

॥ ध्यानम् ॥

मुक्ताशेखर – कुण्डलाङ्गद मणि – ग्रैवेय – हारोर्मिका
विद्योतद् वलयादि कङ्कणकटिसूत्रां स्फुरन् नूपुराम् ।
माणिक्योदर बन्धकम्बु कबरीमिन्दोः कलां विभ्रतीं
पाशं चांकुश पुस्तकाक्ष वलयं दक्षोर्ध्व बाह्वादितः ॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य कवचं पठेत् –

ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं क्लीं कामस्तु तथा हृदि । सौः शक्तिबीजं च पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥१॥
ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये । हसकलह्रीं सौः पातु भैरवी कण्ठदेशतः ॥२॥
सुन्दरी नाभि देशेऽव्याच्छीर्षिका सकला सदा । भ्रू नासयोरन्तराले महात्रिपुरसुन्दरी ॥३॥
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः । भगा देवी तु हृदये उदरे भगसर्पिणी ॥४॥
भगमाला नाभिदेशे लिङ्गे पातु मनोभवा । गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा ॥५॥
चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका । नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभङ्करी ॥६॥
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा । पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥७॥
आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीश्च नैर्ऋते । वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु चेशके ॥८॥

जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गला । आकाशे पातु वरदा सर्वतो भुवनेश्वरी ॥९॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं तु कवचं नाम देवानामपि दुर्लभम् । पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयत मानसः ॥१०॥
नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद् भवेत् । न च मारीभयं तस्य पातकानां भयं तथा ॥११॥
न दारिद्र्यवशं गच्छेत् तिष्ठन्मृत्यु वशे न च । गच्छेच्छिवपुरे देवि! सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१२॥
इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे । स माप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र घातनम् ॥१३॥

॥ इति श्रीरुद्रयामल तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी कवचम् ॥

॥ श्री बालात्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम् ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

अधुना देव! बालाया स्तोत्रं वक्ष्यामि पार्वति । पञ्चमाङ्गं रहस्यं मे श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नतः ॥

विनियोगः – **अस्य श्री बालात्रिपुरसुन्दरी स्तोत्र मन्त्रस्य श्री दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः श्री बालात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्ति, क्लीं कीलकं, श्री बालाप्रीतये पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः – **श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे। श्री बालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि।, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, सौः शक्तये नमः नाभौ, क्लीं कीलकाय नमः पादयोः, श्री बालाप्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः	करन्यास	अङ्गन्यासः
ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

अरुण – किरणजालै रञ्जिताशावकाशा । विधृतजप वटीका पुस्तकाभीतिहस्ता ।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था । निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणरूपा ॥

मानसोपचारैः संपूज्य स्तोत्रं पठेत् –

वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे भवान्या बीजं निशीथे जड़भावलीनः ।
भवेत् स गीर्वाण गुरोर्गरीयान् गिरीशपत्नि! प्रभुतादि तस्य ॥१॥

कामेश्वरि! त्र्यक्षरी कामराजं जपेद् दिनान्ते तव मन्त्रराजम् ।
रम्भाऽपि जृम्भारिसभां विहाय भूमौ भजेत् तं कुलदीक्षितं च ॥२॥

तार्तीयकं बीजमिदं जपेद् यस्त्रैलोक्य मातस्त्रिपुरे! पुरस्तात् ।
विधाय लीलां भुवने तथान्ते निरामयं ब्रह्मपदं प्रयाति ॥३॥
धरासद्म - त्रिवृत्ताष्ट - पत्र षट्कोण नागरे !
विन्दुपीठेऽर्चयेद् बालां योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत् ॥४॥
इति मन्त्रमयं स्तवं पठेद् यस्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने ।
स भवेद् भुवि सार्वभौम मौलिस्त्रिदिवे शक्र - समान - शौर्यलक्ष्मी ॥५॥
इतीदं देवि! बालाया स्तोत्रं मन्त्रमयं परम् ।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥६॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम् ॥

॥ श्री सौभाग्य कवच स्तोत्रम् ॥

कैलास शिखरे रम्ये सुखासीनं सुरार्चितम्, गिरीशं गिरिजा स्तुत्वा स्तोत्रैर्वेदान्त पारगैः ।
प्रणम्य परया भक्त्या तमपृच्छत् कृतांजलिः, रहस्यं रक्षणं किं वा सर्व सम्पत्करं वद ॥१॥

॥ श्रीशिवोवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि यस्मात् त्वं परिपृच्छसि, यस्य श्रवण मात्रेण भवभीतिर्न जायते ।
एतत् सौभाग्य कवचं रहस्याति रहस्यकम्, सौभाग्यकवचं देवि! शृणु सौभाग्यदायकम् ॥२॥

विनियोगः :- ॐ अस्य श्रीसौभाग्य कवच स्तोत्रस्य श्रीआनन्द भैरवो ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसौभाग्य सुन्दरी देवता। ॐ क्लीं सौः बीजं। ह्रीं क्लीं शक्तिः। आं ह्रीं क्रों कीलकं। सर्वसौभाग्य सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- शिरसि श्रीआनन्दभैरवाय ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः। हृदि श्री सौभाग्यसुन्दरी देवतायै नमः। गुह्ये ॐ क्लीं सौः बीजाय नमः। पादयो ह्रीं क्लीं शक्तये नमः। नाभौ आं ह्रीं क्रों कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे सर्व सौभाग्य सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

षडङ्गन्यासः	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

ऐहिक परफलदात्रीमैशानीं मानसी भावये मुद्राम् ।
ऐन्दव - कलावतंसामैश्वर्य स्फुरण परिणतिं जगताम् ॥१॥

क्लीवत्व - दैत्यहन्त्रीं क्लिन्न मनस्कां महेश्वराश्लिष्टाम् ।
क्लृप्त जनेष्टकर्त्रीं कल्पित लोकप्रभां नमामि कलाम् ॥२॥
सौभाग्यदिव्यक - निधिं सौरभ कचवृन्द विचलदलिमालाम् ।
सौशील्यशेष तल्पां सौन्दर्यविभा - मंजरीं कलये ॥३॥
पाशपाणि सृणि पाणि भावये चापपाणि शरपाणि दैवतम् ।
यत्प्रभा पटल - पाटलं जगत् - पद्मरागमणिमण्डपायते ॥४॥
हेमाद्रौ हेमपीठ - स्थितामखिल - सुरैरीड्यमानां विराजत् ।
पुष्पेष्विष्वास पाशांकुश करकमलां रक्तवेषाति - रक्ताम् ॥५॥
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणिमय - कलशैः पञ्च शक्त्याञ्चितैः ।
स्वभ्रष्टैः क्लृप्ताभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्य यामे ॥६॥

॥ कवच स्तोत्रम् ॥

शिखाग्रं सततं पातु ममत्रिपुर सुन्दरी । शिरः कामेश्वरी नित्या तत् पूर्वं भगमालिनी ॥१॥
नित्य क्लिन्नाऽवताद्दक्षं भेरुण्डा तस्य पश्चिमम् । वह्नि वासिन्यवेद् वामं मुखं विद्येश्वरी तथा ॥२॥
शिवदूती ललाटं मे त्वरिता तस्य दक्षिणम् । तद्वाम पार्श्वमवतात् तथैव कुलसुन्दरी ॥३॥
नित्या पातु भ्रुवोर्मध्यं भ्रुवं नीलपताकिनी । वामभ्रुवं तु विजया नयनं सर्वमङ्गला ॥४॥
ज्वालामालिन्यक्षि वामं चित्रा रक्षत् पक्ष्मणी । दक्ष श्रोत्रं महानित्या वामं पातु महोद्यमा ॥५॥
दक्षं वामं च वटुका कपोलौ क्षेत्रपालिका । दक्षनासा पुटं दुर्गा तदन्यं तु भारती ॥६॥
नासिकाग्रं सदा पातु महालक्ष्मीर्निरन्तरम् । अणिमा दक्षकटिं महिमा च तदन्यकम् ॥७॥
दक्ष गण्डं च गरिमा लघिमा चोत्तरं तथा । ऊर्ध्वोष्ठकं प्राप्तिसिद्धिः प्राकाम्यमधरोष्ठकम् ॥८॥
ईशित्वमूर्ध्व - दन्तांश्च ह्यधो दन्तान् वशित्वकम् । रस सिद्धिश्च रसनां मोक्ष सिद्धिश्च तालुकम् ॥९॥
तालुमूलद्वयं ब्राह्मी माहेश्वर्यौ च रक्षताम् । कौमारी चिबुकं पातु तदधः पातु वैष्णवी ॥१०॥
कण्ठं रक्षतु वाराही चैन्द्राणी रक्षतादधः । कृकाटिकां तु चामुण्डा महालक्ष्मीस्तु सर्वतः ॥११॥
सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा स्कन्धं रक्षतु दक्षिणम् । तदन्यं द्राविणीमुद्रा पायादंस द्वयं क्रमात् ॥१२॥
आकर्षणी वश्यमुद्रा चोन्मादिन्यथ दक्षिणम् । भुजं महांकुशा वामं खेचरी दक्ष - कक्षकम् ॥१३॥
वाम कक्षं बीजमुद्रा योनिमुद्रा तु दक्षिणम् । लसत् त्रिखण्डिनीमुद्रा वामभागं प्रपालयेत् ॥१४॥
श्रीकामाकर्षिणी नित्या रक्षताद् दक्षकूर्परम् । कूर्परं वाममवतात् सा बुद्ध्याकर्षिणी तथा ॥१५॥
अहङ्काराकर्षिणी तु प्रकाण्डं पातु दक्षिणम् । शब्दाकर्षिणिका वामं स्पर्शाकर्षिणिकाऽवतु ॥१६॥
प्रकोष्ठं दक्षिणं पातु रूपाकर्षिणिकेतरम् । रसाकर्षिणिका पातु मणिबन्धं च दक्षिणम् ॥१७॥
गन्धाकर्षिणिका वामं चित्ताकर्षिणिकाऽवतु । करभं दक्षिणं धैर्याकर्षिणी पातु वामकम् ॥१८॥

स्मृत्याकर्षिण्यसौ वामं नामाकर्षिणिकेतरम् । बीजाकर्षिणिका पायात् सततं दक्षिणांगुलीः ॥१९॥
आत्माकर्षिणिका त्वन्या अमृताकर्षिणी नखान् । शरीराकर्षिणी वाम नखान् रक्षतु सर्वदा ॥२०॥
अनङ्गकुसुमा शक्तिः पातु दक्षिण स्तनोपरि । अनङ्गमेखला चान्य स्तनोर्ध्वमभि रक्षतु ॥२१॥
अनङ्ग मदना दक्षस्तनं तच्चूचुकं पुनः । रक्षतादनिशं देवी ह्यनङ्ग मदनातुरा ॥२२॥
अनङ्गरेखा वामं तु वक्षोजं तस्य चूचुकम् । अनङ्गवेगिनी क्रोडमनङ्गास्यांकुशाऽवतु ॥२३॥
अनङ्गमालिनी पायाद् वक्षःस्थलमहर्निशम् । सर्वसंक्षोभिणी शक्तिहृत् सर्वद्राविणी परा ॥२४॥
कुक्षिं सर्वाकर्षिणी तु पातु पार्श्वं च दक्षिणम् । आह्लादिनी वाम पाशर्वं मध्यं सम्मोहिनी चिरम् ॥२५॥
सा सर्व स्तम्भिनी पृष्ठं नाभिं वै सर्वजृम्भिणी । वशङ्करी वस्तिदेशं सर्वरंजिनी मे कटिम् ॥२६॥
सा तु सर्वोन्मादिनी मे पायाज्जघन मण्डलम् । सर्वार्थसाधिनी शक्तिः नितम्बं रक्षतान्मम ॥२७॥
दक्ष स्फिचं सदा पांतु सर्वसम्पत्ति पूरिणी । सर्वमन्त्रमयी शक्तिः पातु वाम स्फिचं मम ॥२८॥
पायात् कुकुन्दर द्वन्दं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी । सर्वसिद्धिप्रदा देवी पातु दक्षिण वंक्षणम् ॥२९॥
सर्व सम्पत्प्रदा देवी पातु मे वाम वंक्षणम् । सर्वप्रियङ्करी देवी गुह्यं रक्षतु मे सदा ॥३०॥
मेढ्रं रक्षतु मे देवी सर्वमङ्गलकारिणी । सर्वकामप्रदा देवी पातु मुष्कं तु दक्षिणम् ॥३१॥
पायात् तदन्यमुष्कं तु सर्वदुःख - विमोचिनी । सर्वमृत्युप्रशमनी देवी पातु गुदं मम ॥३२॥
पातु देवी गुह्य मध्यं सर्वविघ्ननिवारिणी । सर्वाङ्गसुन्दरी देवी रक्षताद् दक्ष सक्थिकम् ॥३३॥
वाम सक्थि तलं पायात् सर्वसौभाग्य दायिनी । अष्ठीवं मम सर्वज्ञा देवी रक्षतु दक्षिणम् ॥३४॥
वामाष्ठीवं सर्वशक्तिः देवी पातु युगं मम । सर्वैश्वर्यप्रदा देवी दक्ष जानुं सदाऽवतु ॥३५॥
सर्वज्ञानमयी देवी जानुमन्यं ममावतात् । अव्याद् देवी दक्ष जङ्घां सर्वव्याधिविनाशिनी ॥३६॥
तदन्यां पातु देवी सा सर्वाधार स्वरूपिणी । सर्व पापहरा देवी गुल्फं रक्षतु दक्षिणम् ॥३७॥
सर्वानन्दमयी देवी वाम गुल्फं सदाऽवतु । पार्ष्णि मे दक्षिणं पायात् सर्व रक्षास्वरूपिणी ॥३८॥
अव्यात्सदा सदापार्ष्णि सर्वेप्सित फल प्रदा । दक्षांघ्रि पार्श्वं वशिनी पूर्व वाग् देवता मम ॥३९॥
सर्वं कामेश्वरी चोर्ध्वमधो वाग् देवता मम । मोदिनी प्रपदं पातु विमला दक्षिणेतरे ॥४०॥
अंगुलीररुणा पातु दक्षपाद नखोज्ज्वजा । तदन्या जयिनी पातु सदा सर्वेश्वरी मम ॥४१॥
दक्ष वामपादतलं कौलिनी देवता मम । कुर्वन्तु जृम्भणा बाणाः त्रैलोक्याकर्षणं मम ॥४२॥
मोहं संहरतादिक्षु कोदण्डं भृङ्गमौविक्रम् । करोतु सततं पाशो वशीकरणमद्भुतम् ॥४३॥
विदध्यादंकुशं नित्यं स्तम्भनं शत्रु सङ्कटे । पीठं मे कामरूपाख्यं पातु कामान्तिकं मनः ॥४४॥
पूर्णं पूर्णगिरेः पीठं कान्तिं मे जनयेत् सदा । जालन्धरमन्य जालन्धर पीठं मे रक्षतु ॥४५॥
सायुज्ये नियतां प्रज्ञां श्रीपीठं श्रीकरं मम । कामेश्वरी त्वात्मतत्त्वं रक्षेद् वज्रेश्वरी तथा ॥४६॥
विद्यातत्त्वं शैवतत्त्वं पायाच्छ्रीभगमालिनी । कामं विद्यान्महाशत्रूनमृतार्णव मानसम् ॥४७॥

क्रोधं क्रोधापहा हन्यान्मन्युं पैताम्बुजासनम् । लोभ चिदासनं हन्याद् देव्यात्मामृतरूप भाक् ॥४८।
मोहं संहरताच्चक्रं मदं मन्त्रासनं मम । मात्सर्यं नाशयेन्नित्यं मम सान्ध्यासनं तथा ॥४९॥
आधारं त्रिपुरा रक्षेत् स्वाधिष्ठानं पुरेश्वरी । मणिपूरं मणिद्योता पायात् त्रिपुरसुन्दरी ॥५०॥
अव्यादनाहतं भव्या नित्यं त्रिपुरवासिनी । विशुद्धिं त्रिपुरा श्रीश्च आज्ञां त्रिपुरमालिनी ॥५१॥
इडां मे त्रिपुरसिद्धा त्रिपुराचापि पिङ्गलाम् । सुषुम्नां पातु मे नित्या पायात् त्रिपुरभैरवी ॥५२॥
त्रैलोक्यमोहनं चक्रं रोम कूपांश्च रक्षतु । सर्वाशापूरकं चक्रं सप्तधातुँश्च रक्षतु ॥५३॥
सर्वसंक्षोभणं चक्र प्राणाद्यं वायु पञ्चकम् । सौभाग्यदायकं चक्रं नागाद्यनिल पञ्चकम् ॥५४॥
सर्वार्थसाधकं चक्रं कारणानां चतुष्टयम् । सर्वरक्षाकरं चक्रं रक्षतान्मे गुणत्रयम् ॥५५॥
सर्वरोगहरं चक्रं पायात् पुर्यष्टकं मम । सर्वसिद्धिप्रदं चक्रमव्यान्मे कोश पञ्चकम् ॥५६॥
सर्वानन्दमयं चक्रं यशः कीर्ति च रक्षतु । सौन्दर्यं मन्मथः पायाद् धृतिश्चापि रतिं मम ॥५७॥
प्रीतिं मे पातु या प्रीतिः रूपं पातु वसन्तकः । संकल्पं कल्पकोद्यानं महालक्ष्मी श्रियं मम ॥५८॥
कान्तिं कपालिनी रक्षेत् मन्दिरं मणिमण्डपः । पुत्रान् शङ्खनिधिः पायाद् भार्यां पद्मनिधिस्तथा ॥५९॥
मार्गे क्षेमङ्करी रक्षेत् मातङ्गी मुकुटं तथा । योगिनी प्रकटाद्यास्ता नव द्वाराणि पान्तु मे ॥६०॥
भोजने मामन्नपूर्णा मातङ्गी क्रीडनेऽवतात् । वने रक्षतु मां दुर्गा जाग्रती दुष्टनिग्रहे ॥६१॥
त्रिधाऽहङ्कार नैष्ठुर्य दोषत्रयं मलत्रयम् । डाकिन्यो योगिनी मुख्याः संहरन्तु ममानिशम् ॥६२॥
इच्छा शक्तिर्गुरोर्भक्तिं पातु मे ज्ञानमात्मनि । ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिर्वैराग्य विषयेष्वपि ॥६३॥
हृत्- पद्मकर्णिका मध्ये ह्रींकारी परिरक्षतु । वैखरी श्रवणं पातु मध्यमा मननं पुनः ॥६४॥
योगं रक्षतु पश्यन्ती साक्षात् ज्ञानपरा मम । ब्रह्माणी जागृतं पातु शयानं वैष्णवी तथा ॥६५॥
सुषुप्तौ चण्डिका पातु तुर्या मे मोहकारिणी । सदा मां भैरवी पातु जगद्- भरण- पण्डिता ॥६६॥
चरणाम्भोरुहानन्द परामृत - रसेरिता । प्लाविनी कुण्डली पूर्णा अन्तरान्तं सदाऽवतात् ॥६७॥
अष्टदिक्षु महेन्द्राद्या सायुधाः पान्तु सर्वदा । पायादूर्ध्वां दिशं ब्रह्मा विष्णुश्चक्रायुधोप्यधः ॥६८॥
अनावृत्तानि स्थानानि कवचेन तु यानि मे । तानि सर्वाणि रक्षन्तु शिवाद्या गुरुवः सदा ॥६९॥
एतत् सौभाग्य कवचं शाङ्करं यस्तु पाठयेत् । त्रिसन्ध्यं यः पठेद् भक्त्या शृणुयाद् वा समाहित : ॥१॥
तस्य शीघ्रेण सिध्यन्ति सिद्धयस्त्वणिमादयः । गुटिका पादुकाद्यष्ट सिद्धयः सम्भवन्ति च ॥२॥
वश्यादीन्यष्ट कर्माणि योगश्चाष्टाङ्ग संयुतः । ब्रह्मा विष्णु गिरीशेन्द्र कन्दर्प रतिभिः सह ॥३॥
विचरन्ते तदखिलान् सिद्ध गन्धर्व सेविताः । तस्य स्मरण मात्रेण ग्रह भूत पिशाचकाः ॥४॥
कीटवत् पलायन्ते कूष्माण्डा भैरवादयः । तस्यांघ्रि तोय पतनात् प्रशाम्यति महारुजाः ॥५॥

तत् पाद कमलासक्तरजो लेशाभिः मर्शनात् ।
वश्यं भवति शीघ्रेण त्रैलोक्यं स चराचरम् ।
आबाल महिला भूपाः किमू माया विमोहिताः ॥६॥

॥ श्रीललिता हृदय स्तोत्रम् ॥

॥ अगस्त्य उवाच ॥

हयग्रीव! दया सिन्धो! ललितायाः शुभं मम । हृदयं च महोत्कृष्टं कथयस्व महामुने ॥१॥

॥ हयग्रीव उवाच ॥

शृणु त्वं शिष्य! वाक्यं मे हृदयं कथयामि ते । महादेव्यास्तथा शक्तेः प्रीतिसम्पाद कारकम् ॥२॥
बीजात्मकं महामन्त्र रूपकं परमं निजम् । कामेश्वर्याः स्वाङ्गभूतं डामर्यादिभिरावृतम् ॥३॥
कामाकर्ष्यादि संयुक्तं पञ्चकाम- दुघान्वितम् । नववल्लि समायुक्तं कादि हादि मतान्वितम् ॥४॥
त्रिकूट दर्शितं गुप्तं हृदयोत्तममेव च । मूलप्रकृति व्यक्तादि कला शोधन कारकम् ॥५॥
विमर्श - रूपकं चैव विद्या शक्ति षडङ्गकम् । षडध्व मार्ग पीठस्थं सौर शाक्तादि संज्ञकम् ॥६॥
अभेद - भेदनाशं च सर्व वाग्वृत्ति दायकम् । तत्त्वचक्र मयं तत्त्व बिन्दु नाद कलान्वितम् ॥७॥
प्रभायन्त्र समायुक्तं मूलचक्र मयान्वितम् । कण्ठशक्ति मयोपेतं भ्रामरी शक्तिरूपकम् ॥८॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीललिता हृदयस्तोत्रमाला मन्त्रस्य श्रीआनन्द भैरव ऋषिः । अमृत विराट् छन्दः । श्रीललिता वाग्देवता प्रसाद सिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यासं कृत्वा कर सम्पुटे कूटत्रयं द्विरावृत्य षडङ्गद्वयम् कुर्यात् ।

॥ ध्यानम् ॥

द्रां द्रीं क्लीं बीजरूपे, हासित कह कहे, ब्रह्म देहान्तरङ्गे !
ब्लूं सः क्रों वर्णमाले, सुरगणनमिते, तत्त्व रूपे! हसखफ्रें ॥
ह्सां ह्सीं ह्सौं बीजरूपे, परमसुख करे, वीर मातः! स्वयम्भूः ।
ऐं हसखफ्रें बीजतत्त्वे, कलित कुल कले! ते नमः शुद्ध वीरे ॥

इति ध्यात्वा मनसा पञ्चधोपचर्य नवमुद्राः प्रदर्श्य, मूलं त्रिवारं जप्त्वा योनि मुद्रया प्रणमेत् ।

॥ स्तोत्रम् ॥

हृदयाम्बुज - मध्यस्था ब्रह्मात्मैक्य प्रदायिनी । त्रिपुराम्बा त्रिकोणस्था पातु मे हृदयं सदा ॥१॥
अवर्ण- मालिका शक्तिर्वर्णमाला स्वरूपिणी । नित्याऽनित्या तत्त्वगा सा निराकार मयान्विता ॥२॥
शब्द ब्रह्ममयी शब्द बोधाकार स्वरूपिणी । सांविदी वादि संसेव्या सर्व श्रुतिभिरीडिता ॥३॥
महावाक्योपदेशानी स्वर नाडी - गुणान्विता । ह्लींकारचक्र मध्यस्था ह्लीमुद्यान विहारिणी ॥४॥
ह्लीं मोक्षकारिणी ह्लीं ह्लीं, महाह्लींकार - धारिणी । कालकण्ठी महादेवी कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ॥५॥
ऐं ऐं प्रकाशरूपेण, ऐं बीजान्तर वासिनी । ईशस्था ईदृशी चेशी ईं ईं बीजकरी तथा ॥६॥
लक्ष्मीनारायणान्तःस्था लक्ष्यालक्ष्यकरी तथा । शिवस्था हेतिवर्णस्था सशक्तेवर्ण - रूपिणी ॥७॥
कमलस्था कलामाला ह्लां ह्लीं ह्लीं ह्लीं मुखी तथा । लावण्यसुन्दरी पातु लक्ष्यकोणाग्रमन्विता ॥८॥
लांलांलींलीं सुरैः स्तुत्या सांसींसूंसैं सुरार्चिता । कां कीं कूं काकिनी सेव्या लां लीं लूं काकिनीस्तुता ॥९॥

बिन्दुचक्रेश्वरी पातु द्वितीयावर्ण - देवता । वसु कोणेश्वरी देवी द्विदशारेश्वरी च माम् ॥१०॥
मन्वस्त्रचक्रमध्यस्था नागपत्रेश्वरी सदा । षोडशारेश्वरी नित्या मण्डलत्रयदेवता ॥११॥
भूपुरत्रयमध्यस्था द्वादशग्रन्थि भेदिनी । हंसी हसी सुबीजस्था हरिद्रादिभिरर्चिता ॥१२॥
अनन्तकोटि जन्मस्था जन्माजन्मत्ववर्जिता । अमृताम्भोधिमध्यस्था अमृतेशादिसेविता ॥१३॥
मृतामृतकरी मूलविराट् शक्तिः परात्मिका । आत्मनं प ातु मे नित्यं तथा सर्वाङ्गमेव च ॥१४॥
अष्टदिक्षु कराली सा ऊर्ध्वाधः प्रान्तके तथा । गुरुशक्तिमहाविद्या गुरुमण्डलगामिनी ॥१५॥
सर्वचक्रेश्वरी सर्वब्रह्मादिभिः सुवन्दिता । सत्त्वशक्तिः रजःशक्तिस्तमःशक्ति परात्मिका ॥१६॥
प्रपञ्चेशी सुकालस्था महावेदान्त गर्भिता । कूटस्था कूटमध्यस्था कूटाकूटविवर्जिता ॥१७॥
योगाङ्गी योगमध्यस्था अष्टयोग प्रदायिनी । नवशक्तिः कृती माता अष्टसिद्धि स्वरूपिणी ॥१८॥
नववीरावली रम्या मुक्तिकन्या मुकुन्दगा । उपदेशकरी विद्या महामुख्यविराजिता ॥१९॥
मुख्याऽमुख्या महामुख्या मूल बीज प्रवर्तिका । दिक्पालकाः सदापान्तु श्रीचक्राधि देवताः ॥२०॥
दिग्योगिन्यष्टकं पातु तथा भैरव चाष्टकम् । षडङ्गदेवताः पान्तु नित्या षोडशिकास्तथा ॥२१॥
नाथशक्तिः सदापातु नित्या त्रिकोणान्तर दीपिका । त्रिसारा त्रयकर्माणी नाशिनी त्रयं दर्शति ॥२२॥
त्रिकाला शोषणी शोषकारिणी शोषणेश्वरी । भुक्तिमुक्तिप्रदा बाला भुवनाम्बा बगलेश्वरी ॥२३॥
अतृप्तिस्तृप्ति सन्तुष्टा तृप्ता तृप्तकरी सदा । आम्नायशक्तयः पान्तु आदिशेष - सुतल्पिनी ॥२४॥
राज्यं त्वं देहि मे नित्यं आदिशम्भुस्वरूपिणी । सर्वरोगहरा सर्वकैवल्यपद दायिनी ॥२५॥

॥फलश्रुति॥

इदं तु हृदयं दिव्यं ललिता प्रीतिदायकम् । अनेन च समं नास्ति स्तोत्रं प्रख्यात वैभवम् ॥२६॥
शक्तिरूपं शक्तिगुप्तं प्रकटाङ्गं प्रभुं शुभम् । मूलविद्यात्मकं मूलब्रह्मसम्भव कारणम् ॥२७॥
नादादिशक्ति संयुक्तमभूतमद्भुतं महत् । रोगहं पापहं विघ्ननाशनं विघ्नहारिणम् ॥२८॥
चिरायुष्यप्रदं सर्वमृत्यु दारिद्र्यनाशनम् । क्रोधहं मुक्तिदं मुक्तिदायकं परं मे सुखम् ॥२९॥
रुद्रदं मृडपं विष्णुं दण्डकं ब्रह्मरूपकम् । विचित्रं च सुचित्रं च सुन्दरं च सुगोचरम् ॥३०॥
नाभक्ताय न दुष्टाय नाविश्वस्ताय देशिकः । न दापयेत् परंविद्याहृदयं मन्त्र गर्भितम् ॥३१॥
स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रं मन्त्राणामुत्तमं मनुम् । वीजानामुत्तमं बीजं शाक्तानामुत्तमं शिवम् ॥३२॥
पठेद् भक्त्या त्रिकालेषु अर्धरात्रे तथैव च । वाक् सिद्धि दायकं नित्यं परविद्याविमोहकम् ॥३३॥
स्वविद्यास्थापकं चान्यद् यन्त्रतन्त्रादिभेदनम् । कृत्तिका नक्षत्र कूर्माख्ये चक्र स्थित्वा जपेन्मनुम् ॥३४॥

॥ इति श्रीमहत्तरयोनि विद्याया महातन्त्रे श्रीललिता हृदयं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीललिता सौभाग्य प्रदाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीसौभाग्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रस्य श्रीभार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, क-५ कएईल ह्रीं बीजं, स-४ सकल ह्रीं शक्तिः, ह-६ हसकहल ह्रीं उत्कीलनं, श्रीललिताम्बा देवता प्रसाद सिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः :- श्रीभार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताम्बादेवतायै नमः हृदयाय। कएईल ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे। सकलह्रीं शक्तये नमः नाभौ। हसकहल ह्रीं उत्कीलनाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिताम्बा प्रसाद सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः अंजलौ।

मूल मंत्र से षडङ्ग न्यासादि कर ध्यान करे। यथा –

बालार्क - मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुश धनुर्वाणन् धारयन्तीं शिवां भजे ॥

ध्यान कर मानस पूजा करे। योनि मुद्रा से प्रणाम कर स्तोत्र पढ़ें। यथा –

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरीकामशक्तिः कामसौभाग्यदायिनी। कामरूपाकामकला कामिनी कमलासना ॥१॥
कमला कलना हीना कमनीया कलावती । पद्मपा भारती सेव्या कल्पिताऽशेष संस्थितिः ॥२॥
अनुत्तराऽनघाऽनन्ताऽद्भुत रूपाऽनलोद्भवा । अतिलोक चरित्राऽतिसुन्दर्यति - शुभप्रदा ॥३॥
विश्वाद्या चातिविस्ताराऽर्चन - तुष्टाऽमितप्रभा । एक - रूपैक वीरैक नाथैकान्तार्चन प्रिया ॥४॥
एकैक - भावतुष्टैक रसैकान्त जनप्रिया । एधमानप्रभा वैध भक्तपातकनाशिनी ॥५॥
एलामोद मुखैर्नोऽद्रि शक्तायुध समस्थितिः । ईहा शून्येप्सितेशादि सेव्येशानवराङ्गना ॥६॥
ईश्वराज्ञापिकेकार - भाव्येप्सित फलप्रदा । ईशानति हरेशैषा चारुणाक्षीश्वरेश्वरी ॥७॥
ललिता ललनारूपा लयहीना लसत्तनुः । लयसर्वा लयक्षोणिर्लय - कर्त्री लयात्मिका ॥८॥
लघिमा लघुमध्यामढ्या ललमाना लघुद्रुता । हयारूढा हताऽमित्रा हरकान्ता हरिस्तुता ॥९॥
हयग्रीवेष्टदा हालाप्रिया हर्षसमुद्भवा । हर्षणा हल्लकाभाङ्गी हस्त्यन्तैश्वर्य- दायिनी ॥१०॥
हलहस्तार्चितपदा हविर्दान प्रसादिनी । रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रवमयी रतिः ॥११॥
रक्षिणी रमणी राकाऽऽदित्यादिमण्डलप्रिया । रक्षिताऽखिल लोकेशी रक्षोगण निषूदिनी ॥१२॥
अन्तान्त कारिण्यम्भोज क्रियान्तक भयङ्करी । अम्बुरूपाम्बुज कराऽम्बुज - जातवरप्रदा ॥१३॥
अन्तः पूजा क्रियान्तःस्था अन्तर्ध्यान वचोमयी । अन्तकाऽराति वामाङ्ग स्थिताऽन्तःसुख रूपिणी ॥१४॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा समसुखा सती । सन्ततिः सन्तता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ॥१५॥

॥ फलश्रुति ॥

एतत् ते कथितं देवि! नाम्नामष्टोत्तरं शतम् । अति गोप्यमिदं स्तोत्रं सर्वतो सारमुद्धृतम् ॥१॥
एतच्छदृशं स्तोत्रं त्रिषुलोकेषु दुर्लभम् । अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवता द्विषम् ॥२॥

एतत् सदा शिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः । एतत् प्रभावात् कन्दर्पः त्रैलोक्यं जयति क्षणात् ॥३॥
सौभाग्याष्टोत्तर शतनामस्तोत्र मनोहरम् । यस्त्रिसन्ध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम् ॥४॥
श्रीविद्योपासन - वतौ एतदावश्यकं मतम् । सकृदेतत् प्रपठतां नान्यकर्म विलुप्यते ॥५॥
अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमितिकं कृतम् । व्यर्थी भवति तन्नर कृतं कर्म यथा-तथा ॥६॥
सहस्त्रनाम पाठादौ पठेत् स्तोत्रं शुभप्रदम् । सहस्त्रनाम पाठस्य फलं शतगुणं भवेत् ॥७॥
सहस्त्रपठनाद् ध्याता वीक्षणान्नाशयेद् रिपून् । करवीरैः रक्तपुष्पैर्हुत्वा लोकान् वशं नयेत् ॥८॥
स्तम्भयेत् पीत - कुसुमैर्नीलैरुच्चाटयेद् रिपून् । मरीचिर्विद्वेषणाय लवङ्गैर्व्याधिं नश्यते ॥९॥
पत्रपुष्पैः फलैर्वापि पूजयेत् प्रतिनामभिः । चक्रराजेऽथवाऽन्यत्र स वसेच्छ्री - पुरंचिरम् ॥१०॥
यः सदाऽऽवर्तयन् आस्ते नामाष्टशतमुत्तमम् । तस्य श्रीललिता माता प्रसन्ना वाञ्छितप्रदा ॥११॥

॥ लकारादि श्रीललिता शतनाम स्तोत्रम् ॥

कैलास शिखरासीनं देव देवं जगद-गुरुम्, पप्रच्छेशं परानन्दं भैरवी परमेश्वरम् ॥१॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

कौलेश! श्रोतुमिच्छामि सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमं, ललितायाशतनाम सर्वकामफल प्रदं ॥२॥

॥ श्रीभैरवोवाच ॥

शृणु देवि, महाभागे! स्तोत्रमेतदनुत्तमं, पठनाद् धारणादस्य सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥३॥
षट्कर्माणि सिद्ध्यन्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः, गोपनीयं पशोरग्रे स्वयोनिमपरे यथा ॥४॥

॥ विनियोग ॥

ललिताया लकारादि नामशतकस्य देवि, राजराजेश्वरो ऋषिः प्रोक्तो छंदोऽनुष्टुप् तथा ।
देवता ललितादेवी षट्कर्म सिद्ध्यर्थे तथा, धर्मार्थ काममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
वाक्काम शक्तिवीजेन करषडङ्गमाचरेत्, प्रयोगे बालात्र्यक्षरी योजयित्वा जपं चरेत् ।

॥ स्तोत्रम् ॥

ललिता लक्ष्मी लोलाक्षी लक्ष्मणा लक्ष्मणार्चिता । लक्ष्मणप्राणरक्षिणी लाकिनी लक्ष्मणप्रिया ॥१॥
लोला लकारा लोमशा लोलजिह्वा लज्जावती । लक्ष्या लाक्ष्या लक्षरता लकाराक्षर भूषिता ॥२॥
लोल लयात्मिका लीला लीलावती च लाङ्गली । लावण्यामृत सारा च लावण्यामृत दीर्घिका ॥३॥
लज्जा लज्जामती लज्जा ललना ललनप्रिया । लवणा लवली लसा लाक्षकी लुब्धा लालसा ॥४॥
लोकमाता लोकपूज्या लोकजननी लोलुपा । लोहिता लोहिताक्षी च लिङ्गाख्या चैव लिङ्गेशी ॥५॥
लिङ्गीतिः लिङ्गभवा लिङ्गमाला लिङ्गप्रिया । लिङ्गाभिधायिनी लिङ्गा लिङ्गनामसदानन्दा ॥६॥
लिङ्गामृतप्रीता लिङ्गार्चन-प्रीता लिङ्गपूज्या । लिङ्गरूपा लिङ्गस्था च लिङ्गालिङ्गन तत्परा ॥७॥
लतापूजन - रता च लतासाधक तुष्टिदा । लतापूजक- रक्षिणी लतासाधन सिद्धिदा ॥८॥

लतागृहनिवासिनी लता पूज्या लताराध्या । लतापुष्पा लतारता लताधारा लतामयी ॥९॥
लतास्पर्शन सन्तुष्टा लताऽऽलिङ्गन हर्षिता । लताविद्या लतासारा लताऽऽचारा लतानिधिः ॥१०॥
लवङ्गपुष्प - सन्तुष्टा लवङ्गलता मध्यस्था । लवङ्गलतिकारूपा लवङ्गहोम सन्तुष्टा ॥११॥
लकाराक्षर पूजिता च लकार वर्णोद्भवा । लकारवर्ण भूषिता लकार - वर्ण रुचिरा ॥१२॥
लकार बीजोद्भवा तथा लकाराक्षर स्थिता। लकार बीज निलया लकार बीज सर्वस्वा॥१३॥
लकारवर्ण सर्वाङ्गी लक्ष्यछेदन तत्परा । लक्ष्यधरा लक्ष्यघूर्णा लक्षजापेन सिद्धिदा ॥१४॥
लक्षकोटिरूपधरा लक्षलीला - कलालक्ष्या । लोकपालेनार्चिता च लाक्षाराग - विलेपना ॥१५॥
लोकातीता लोपामुद्रा लज्जाबीज स्वरूपिणी । लज्जाहीना लज्जामयी लोकयात्राविधायिनी ॥१६॥
लास्यप्रिया लयकरी लोकलया लम्बोदरी । लघिमादि सिद्धिदात्री लावण्यनिधि दायिनी ॥१७॥
लकार वर्ण ग्रथिता लंबीजा ललिताम्बिका । इति ते कथितं देवि! गुह्याद् गुह्यतरं परम् ॥१८॥

॥ श्री ललिताम्बा त्रिंशतीस्तवः ॥

भगवान हयग्रीव ने इस '**सर्वपूर्तिकरी स्तुति**' बहुत प्रयत्न के बाद अगस्त्य ऋषि को दिया था। इसकी महिमा सहस्रनाम से अधिक कही गई है। सहस्र वशिनी आदि वाग् देवियों ने बताया है। जबकी इस पंचदशीमयि स्तोत्र को स्वयं कामेश्वर एवं कामेश्वरी ने बनाया है। '**क**' '**ह**' शिववर्ण है उनके नाम मंत्रों को कामेश्वरी ने बनाया है तथा ए, ई ल, स, ये शक्ति वर्ण है इनके मंत्र कामेश्वर ने बनाये हैं। '**ह्रीं**' शिवशक्ति वर्ण है इसे दोनों ने कहा है। इसके पाठ मात्र से साधना के सभी अंगों की पूर्ति हो जाती है, अर्थात् भगवती अति प्रसन्न हो जाती है।

॥ श्री अगस्त्यउवाच ॥

हयग्रीव, दयासिन्धो! भगवन्, भक्तवत्सल!। त्वत्तः श्रुतमशेषेण, श्रोतव्यं यद्यदस्ति तत् ॥१॥
रहस्यनामसाहस्त्रमपि त्वत्तः श्रुतं मया । इतः परं च मे नास्ति, श्रोतव्यमिति निश्चयः ॥२॥
तथापि मम चित्तस्य, पर्याप्तिर्नैव जायते। कार्तार्थ्यमप्राप्त इव, शोचत्यात्माऽपि मे प्रभो ॥३॥
किमिदं कारणं ब्रूहि ज्ञातव्यांशोऽस्ति वा पुनः। अस्ति चेन्मामनुब्रूहि, ''ब्रूही'' त्युक्त्वा प्रणम्यतम् ॥४॥
समाललम्बे तत्पादयुगलं कलशोद्भवः। हयाननोऽपि भीतः सन्, किमिदं किमिदं मुने! ॥५॥
मुञ्चमुञ्चे ति तं चोक्त्वा, चिन्ताऽऽक्रान्तो बभूव सः। चिरं विचार्य निश्चिन्वन्, वक्तव्यं न मयेत्यसौ ॥६॥
तूष्णीं स्थितः स्मरन्नाज्ञां, ललिताम्बाकृतां पुरा। प्रणमन्नेव स मुनिस्तत्पादावत्यजन् स्थितः ॥७॥
वर्षत्रयमुपासीनौ, गुरुशिष्यौ तथा स्थितौ । श‍ृण्वन्तस्तौ च पश्यन्तः, सर्वे लोकास्तु विस्मिताः ॥८॥
ततः श्रीललिता देवी, कामेश्वरसमन्विता । प्रादुर्भूय हयग्रीवं, रहस्येवमवोचत ॥९॥

॥ श्रीदेवी ललिता उवाच ॥

अश्वाननाऽऽवयोः प्रीतिः, शास्त्रविश्वासतस्त्वयि। राज्यं देयं शिरो देयं, न देया षोडशाक्षरी ॥१०॥
स्वमातृयोनिवद् गोप्या, विद्यैषेत्यागमा जगुः। ततोऽपि गोपनीया मे, सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः ॥११॥
मया कामेश्वरेणाऽपि, कृता सा गोपिता भृशम्। मदाज्ञया वचो देव्यश्चक्रुर्नामसहस्त्रकम् ॥१२॥

आवाभ्यां कथिता मुख्या, सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः। सर्वक्रियाणां वैकल्ये, पूर्तिर्यज्जपतो भवेत् ॥१३॥
सर्वपूर्तिकरं तस्मादिति नाम कृतं मया। तद् ब्रूहि त्वमगस्त्याय, पात्रमेष न संशयः ॥१४॥
पत्न्यस्य लोपामुद्राख्या, मामुपास्तेऽतिभक्तितः। अयं च नितरां भक्तस्तस्मादस्य वदस्व तत् ॥१५॥
अमुञ्चमानस्त्वत्पादौ, वर्षत्रयमसौ स्थितः। एतज्ज्ञातुमतो भक्तेरिदमेव निदर्शनम् ॥१६॥
चित्तपर्याप्तिरेतस्य, नान्यथा सम्भविष्यति। सर्वपूर्त्तिकरं तस्मादनुज्ञातो मया वद ॥१७॥
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधावम्बा, कामेश्वरसमन्विता। अथोत्थाय हयग्रीवः,पाणिभ्यां कुम्भसम्भवम्।
संस्थाप्य निकटे वाचमुवाच भृशं विस्मितः ॥१८॥

॥ श्रीहयग्रीव उवाच ॥

कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि, कृतार्थोऽसि घटोद्भव! त्वत्समो ललिताभक्तो, नास्ति नास्ति जगत्त्रये ॥१९॥
येनागत्य स्वयं देवी, तव वक्तव्यमन्वशात् ॥२०॥
सच्छिष्येण त्वयाऽहं च, दृष्टवानस्मि तां शिवाम्। यतन्ते यद्दर्शनार्था, ब्रह्मविष्णवीशपूर्वकाः ॥२१॥
अतः परं ते वक्ष्यामि, सर्वपूर्तिकरं स्तवम्। यस्य स्मरणमात्रेण, पर्याप्तिस्ते भवेद् हृदि ॥२२॥
रहस्यनामसाहस्रादपि गुह्यमिदं मुने! आवश्यक ततोऽप्येतल्ललितां समुपासताम् ॥२३॥
तदहं ते प्रवक्ष्यामि, ललिताम्बाऽनुशासनात्। श्रीमत्पञ्चदशाक्षर्याः, कादिवर्णक्रमान्मुने! ॥२४॥
पृथग्विंशतिनामानि, कथितानि घटोद्भव! आहृत्य नाम्नां त्रिशती, सर्वसम्पूर्तिकारिणी ॥२५॥
रहस्याऽतिरहस्यैषा, गोपनीया प्रयत्नतः। तां श्रृणुष्व महाभाग! सावधानेन चेतसा ॥२६॥
केवलं नामबुद्धिस्ते, न कार्या तेषु कुम्भज! मन्त्रात्मकत्वमेतेषां, नाम्नां नामात्मताऽपि च ॥२७॥
तस्मादेकाग्रमनसा, श्रोतव्यं भवतः सदा। इत्युक्त्वा तं हयग्रीवो, प्रोच नाम्नां शतत्रयीम् ॥२८॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीललिताम्बात्रिशती नाममालामन्त्रस्य भगवान् हयग्रीव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीललितामहाभट्टारिका देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीललितामहाभट्टारिका प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :- भगवान्हयग्रीवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिता महाभट्टारिका देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। सौः शक्तये नमः नाभौ। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। श्रीललितामहाभट्टारिकाप्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मंत्र	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ऐं क-५	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं ह-६	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः स-४	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं क-५	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं ह-६	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः स-४	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

ॐ अतिमधुरचापहस्तामपरिमिताऽऽमोद बाणसौभाग्याम् ।
अरुणामतिशय करुणामभिनवकुल - सुन्दरीं वन्दे ॥१॥
ॐ पाशांकुशेक्षुसुमराजितपञ्चशाखाम् पाटल्यशालिसुषुमाञ्चितगात्रवल्लीम् ।
प्राचीनवाक्स्तुतपदां परदेवतां त्वाम्, पञ्चायुधार्चितपदां, प्रणमामि देवीम् ॥२॥

॥ त्रिशती स्तवः ॥

'क' कार रूपाकल्याणी, कल्याणगुणशालिनी । कल्याणशैलनिलया, कमनीया कलावती ॥१॥
कमलाक्षी कल्मषघ्नी, करुणामृतसागरा । कदम्बकाननावासा, कदम्बकुसुमप्रिया ॥२॥
कन्दर्पविद्या कन्दर्पजनकापाङ्ग वीक्षणा। कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलित कुकुत्परा ॥३॥
कलिदोषहरा कञ्जलोचना कम्रविग्रहा । कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥४॥
'ए' काररूपा चैकाक्षर्येकाऽनेकाक्षराकृतिः । एतत्तदित्यनिर्देश्या, चैकानन्दचिदाकृतिः ॥५॥
एवमित्यागमाबोध्या, चैकभक्तिमदार्चिता । एकाग्रचित्तनिध्यार्ता चैषणारहितादृता ॥६॥
एलासुगन्धिचिकुरा, चैनःकूटविनाशिनी । एकभोगा चैकरसा, चैकैश्वर्यप्रदायिनी ॥७॥
एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा चैकान्तपूजिता । एधमानप्रभा चैजदनेकजगदीश्वरी ॥८॥
एक वीरादिसंसेव्या, चैकप्राभवशालिनी । 'ई' काररूपा चेशित्री, चेप्सितार्थप्रदायिनी ॥९॥
ईदृगित्यविनिर्देश्या, चेश्वरत्वविधायिनी । ईशानादिब्रह्ममयी, चेशित्वाद्यष्टसिद्धिदा ॥१०॥
ईक्षित्री क्षणसृष्टाण्डकोटिरीश्वरवल्लभा । ईडिता चेश्वरार्द्धाङ्गशरीरेशाधिदेवता ॥११॥
ईश्वरप्रेरणकरी, चेशताण्डवसाक्षिणी । ईश्वरोत्सङ्गनिलया, चेतिबाधाविनाशिनी ॥१२॥
ईहाविरहिता चेशशक्तिरीषत्स्मितानना । 'ल' काररूपा ललिता, लक्ष्मीवाणीनिषेविता ॥१३॥
लाकिनी ललनारूपा, लसद्दाडिमपाटला । ललन्तिकालसत्फाला, ललाटनयनार्चिता ॥१४॥
लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्गी लक्षकोट्यण्डनायिका । लक्ष्यार्था लक्षणागम्या, लब्धकामा लतातनुः ॥१५॥
ललामराजदलिका, लम्बिमुक्तालताञ्चिता । लम्बोदरप्रसूर्लभ्या, लज्जाढ्या लयवर्जिता ॥१६॥
'ह्रीं' काररूपा ह्रीङ्कारनिलया ह्रींपदप्रिया। ह्रीङ्कार बीजा ह्रीङ्कार मन्त्रा ह्रीङ्कारलक्षणा ॥१७॥
ह्रीङ्कारजपसुप्रीता, ह्रींमती ह्रींविभूषणा। ह्रींशीला ह्रींपदाराध्या ह्रींगर्भा ह्रींपदाभिधा ॥१८॥
ह्रींकारवाच्या ह्रीङ्कारपूज्या ह्रीङ्कारपीठिका। ह्रीङ्कारवेद्या ह्रीङ्कारचिन्त्या ह्रीं ह्रीं शरीरिणी ॥१९॥
'ह' काररूपा हलधृक्पूजिता हरिणेक्षणा । हरिप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ॥२०॥
हयारूढासेविताङ्घ्रिर्हयमेधसमर्चिता । हर्यक्षवाहना हंसवाहना हतदानवा ॥२१॥
हत्यादिपापशमनी, हरिदश्वादिसेविता । हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा, हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना ॥२२॥
हरिद्राकुंकुमादिग्धा, हर्यश्वाद्यमरार्चिता । हरिकेशसखी हादिविद्या हालामदोल्लसा ॥२३॥
'स'काररूपा सर्वज्ञा, सर्वेशी सर्वमङ्गला । सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री, सर्वहन्त्री सनातना ॥२४॥

सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी । सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी ॥२५॥
सर्वाधारा सर्वगता, सर्वावगुणवर्जिता । सर्वारुणा सर्वमाता, सर्वभूषणभूषिता ॥२६॥
'क' कारार्था कालहन्त्री, कामेशी कामितार्थदा। कामसञ्जीवनी कल्या, कठिनस्तनमण्डला ॥२७॥
करभोरुः कलानाथमुखी कचजिताम्बुदा । कटाक्षस्यन्दिकरुणा, कपालिप्राणनायिका ॥२८॥
कारुण्यविग्रहा कान्ता, कान्तिधूतजपावलिः । कलाऽऽलापा कम्बुकण्ठी, करनिर्जितपल्लवा ॥२९॥
कल्पवल्लीसमभुजा, कस्तूरीतिलकाञ्चिता। 'ह' कारार्था हंसगतिर्हाटकाऽऽभरणोज्ज्वला ॥३०॥
हारहारिकुचाभोगा, हाकिनी हल्यवर्जिता । हरित्पतिसमाराध्या, हठात्कारहताऽसुरा ॥३१॥
हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री, हार्दसन्तमसापहा । हल्लीसलास्यसन्तुष्टा, हंसमन्त्रार्थरूपिणी ॥३२॥
हानोपादाननिर्मुक्ता, हर्षिणी हरिसोदरी। हा-हा-हू-हू-मुख-स्तुत्या, हानिवृद्धिविवर्जिता ॥३३॥
हय्यङ्गवीणहृदया, हरिगोपारुणांशुका। 'ल' कारारव्या लतापूज्या, लयस्थित्युद्भवेश्वरी ॥३४॥
लास्यदर्शनसन्तुष्टा, लाभालाभविवर्जिता । लंघ्येतराज्ञा लावण्यशालिनी लघुसिद्धदा ॥३५॥
लाक्षारससवर्णाभा लक्ष्मणाग्रजपूजिता। लभ्येतरा लभ्यभक्तिसुलभा लाङ्गलायुधा ॥३६॥
लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लज्जापदसमाराध्या, लम्पटा लकुलेश्वरी ॥३७॥
लब्धमाना लब्धरसा, लब्धसम्पत्समुन्नतिः। 'ह्रीं' कारिणी च ह्रीमाद्या, ह्रींमध्या ह्रींशिखामणिः ॥३८॥
ह्रींकारकुण्डाग्निशिखा, ह्रीङ्कारशशिचन्द्रिका । ह्रीङ्कारभास्कररुचिर्ह्रीङ्काराम्भोदचञ्चला ॥३९॥
ह्रींकारकन्दांकुरिका, ह्रींकारैकपरायणा । ह्रींकारदीर्घिकाहंसी, ह्रींकारोद्यानकेकिनी ॥४०॥
ह्रींकारारण्यहरिणी, ह्रींकाराबालवल्लरी । ह्रींकारपञ्जरशुकी, ह्रींकाराङ्गणदीपिका ॥४१॥
ह्रींकारकन्दरासिंही ह्रींकाराम्बुजभृङ्गिका । ह्रींकारसुमनोमाध्वी, ह्रींकारतरुमञ्जरी ॥४२॥
'स' काराख्या समरसा, सकलागमसंस्तुता । सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमिः, सदसदाश्रया ॥४३॥
सकलासच्चिदानन्दा, साध्या सद्गतिदायिनी । सनकादिमुनिध्येया, सदाशिवकुटुम्बिनी ॥४४॥
सकलाधिष्ठानरूपा, सत्यरूपा समाकृतिः । सर्वप्रपञ्चनिर्मात्री, समानाधिकवर्जिता ॥४५॥
सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना, सगुणा सकलेश्वरी ।'क' कारिणी काव्यलोला, कामेश्वरमनोहरा ॥४६॥
कामेश्वरप्राणनाडी, कामेशोत्सङ्गवासिनी । कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी, कामेश्वरसुखप्रदा ॥४७॥
कामेश्वरप्रणयिनी, कामेश्वरविलासिनी । कामेश्वरतपःसिद्धिः, कामेश्वरमनःप्रिया ॥४८॥
कामेश्वरप्राणनाथा, कामेश्वरविमोहिनी । कामेश्वरब्रह्मविद्या, कामेश्वरगृहेश्वरी ॥४९॥
कामेश्वराह्लादकरी, कामेश्वरमहेश्वरी । कामेश्वरी कामकोटिनिलया कांक्षितार्थदा ॥५०॥
'ल' कारिणी लब्धरूपा, लब्धधीर्लब्धवाञ्छिता। लब्धपापमनोदूरा, लब्धाऽहङ्कारदुर्गमा ॥५१॥
लब्धशक्तिर्लब्धदेहा, लब्धैश्वर्यसमुन्नतिः । लब्धवृद्धिर्लब्धलीला, लब्धयौवनशालिनी ॥५२॥
लब्धातिशयसर्वाङ्ग सौन्दर्या लब्धविभ्रमा । लब्धरागा लब्धपतिर्लब्धनानागमस्थितिः ॥५३॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपूजिता। 'ह्रीं' कारमूर्तिर्ह्रींकारसौध - शृङ्गकपोतिका ॥५४॥
ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा, ह्रींकारकमलेन्दिरा । ह्रींकारमणिदीपार्चिर्ह्रींकारतरुशारिका ॥५५॥
ह्रींकारपेटक मणिर्ह्रीङ्कारादर्शबिम्बिता । ह्रींकारकोशासिलता, ह्रींकारस्थाननर्त्तकी ॥५६॥
ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणिर्ह्रींकार बोधिता । ह्रींकारमयसौवर्ण स्तम्भविद्रुमपुत्रिका ॥५७॥
ह्रींकारवेदोपनिषद् ह्रींकाराध्वरदक्षिणा । ह्रींकारनन्दनाराम नवकल्पकवल्लरी ॥५८॥
ह्रींकारहिमवद्गङ्गा, ह्रींकारार्णवकौस्तुभा । ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा, ह्रींकारपरसौख्यदा ॐ ॥५९॥

॥फलश्रुति ॥

इत्येतत् ते समाख्यातं, दिव्यं नाम्नां शतत्रयम्। रहस्यातिरहस्यत्वाद् गोपनीयं त्वया मुने! ॥१॥
शिववर्णानि नामानि, श्रीदेव्या कथितानि तु। शक्त्यक्षरादिनामानि कामेशकथितानि हि ॥२॥
उभयाक्षरनामानि, उभाभ्यां कथितानि तु । तदन्यैर्ग्रथितं स्तोत्रमेतस्य सदृशंकिमु ॥३॥
नानेन सदृशं स्तोत्रं, श्रीदेवीप्रीतिदायकम् ॥४॥
इति हयमुखगीतं स्तोत्रराजं निशम्य, प्रगलितकलुषोऽभूच्चित्तपर्याप्तिमेत्य ।
निजगुरुमथ नत्वा कुम्भजन्मा तदुक्तेः, पुनरधिकरहस्यं ज्ञातुमेवं जगाद् ॥५॥
अश्वानन! महाभाग! रहस्यमपि मे वद। शिववर्णानि कान्यत्र, शक्तिवर्णानि कानि च ॥६॥
उभयोरपि नामानि, कानि वा वद देशिक! इति पृष्टः कुम्भजेन, हयग्रीवोऽववत् पुनः ॥७॥
तव गोप्यं किमस्तीह, साक्षादम्बाऽन्वशाद् यतः ॥८॥
इदं त्वतिरहस्यं ते, वक्ष्यामि शृणु कुम्भज! एतद्विज्ञानमात्रेण, श्रीविद्या सिद्धिदा भवेत् ॥९॥
कत्रयं हद्वयं चैव, शैवो भागः प्रकीर्त्तितः। शेषाणि शक्त्यक्षराणि, ह्रींकार उभयात्मकः ॥१०॥
एवं विभागमज्ञात्वा, ये विद्याजपशालिनः। न तेषां सिद्धिदा विद्या, कल्पकोटिशतैरपि ॥११॥
चतुर्भिः शिवचक्रैश्च, शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः । नवचक्रैश्च संसिद्धं, श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः ॥१२॥
त्रिकोणमष्टकोणं च, दशकोणद्वयं तथा। चतुर्दशारं चैतानि, शक्तिचक्राणि पञ्च च ॥१३॥
विन्तुश्चाष्टदलं पद्मं, पद्मं षोडश पत्रकम् । चतुरस्त्रं च चत्वारि, शिवचक्राण्यनुक्रमात् ॥१४॥
त्रिकोणे बैन्दवं श्लिष्टमष्टारेऽष्टदलाम्बुजम् । दशारयोः षोडशारं, भूगृहं भुवनास्त्रके ॥१५॥
शैवानामपि शाक्तानां, चक्राणां च परस्परम्। अविनाभावसम्बन्धं, यो जानाति स चक्रवित् ॥१६॥
त्रिकोणरूपिणी शक्तिर्बिन्दुरूपः परः शिवः। अविना भाव सम्बन्धं तस्माद् बिन्दुत्रिकोणयोः ॥१७॥
एवं विभागमज्ञात्वा, श्रीचक्रं यः समर्चयेत्। न तत्फलमवाप्नोति, ललिताम्बा न तुष्यति ॥१८॥
ये च जानन्ति लोकेऽस्मिन्, श्रीविद्याचक्रवेदिनः। सामान्यवेदिनः सर्वे, विशेषज्ञोऽतिदुर्लभः ॥१९॥
स्वयं विद्याविशेषज्ञो, विशेषज्ञं समर्चयेत् । तस्मै देयं ततो ग्राह्यमशक्तस्तस्य दापयेत् ॥२०॥
अन्धं तमः प्रविशन्ति, येऽविद्यां समुपासते। विद्याऽन्योपासकानेवं, निन्दत्यारुणकी श्रुतिः ॥२१॥
अश्रुता सश्रुतासश्च, यज्वानो येऽप्ययज्वनः । स्वर्यन्तो नापेक्ष्यन्ते इन्द्रमग्निं च ये विदुः ॥२२॥

सिकता इव संयन्ति, रश्मिभिः समुदीरिताः। अस्माल्लोकादमुष्माच्चेत्याह चारण्यकी श्रुतिः ॥२३॥
यस्य नो पश्चिमं जन्म, यदि वा शङ्करः स्वयम्। तेनैव लभ्यते विद्या, श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥२४॥
इति मन्त्रेषु बहुधा, विद्यायाः महिमोच्यते । मोक्षैकहेतुविद्या तु, श्रीविद्या नात्र संशयः ॥२५॥
न शिल्पादिज्ञानयुक्ते, विद्वच्छब्दः प्रयुज्यते। मोक्षैकहेतुविद्या सा, श्रीविद्यैव न संशयः ॥२६॥
तस्माद् विद्याविदेवात्र, विद्वान् विद्वानितीर्यते। स्वयं विद्याविदे दद्याद्, ख्यापयेत् तद्गुणान् सुधीः ॥२७॥
स्वयं विद्यारहस्यज्ञो, विद्यामाहात्म्यवेद्यपि। विद्याविदं नार्चयेच्चेत् को वा तं पूजयेज्जनः? ॥२८॥
प्रसङ्गादेतदप्युक्तं, प्रकृतं शृणु कुम्भज! यः कीर्तयेत् सकृद् भक्त्या, दिव्यं नाम्नां शतत्रयम् ॥२९॥
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये, दिङ्मात्रेण घटोद्भव! रहस्यनामसाहस्रपाठे, यत्फलमीरितम् ॥३०॥
तत्कोटिकोटिगुणितं, त्वेकनामजपाद् भवेत्। कामेश्वरीकामेशाभ्यां, कृतं नामशतत्रयम् ॥३१॥
नान्येन तुलयेदेतत् स्तोत्रेणान्यकृतेन तु । श्रेयः परम्परा यस्य, भाविनी चोत्तरोत्तरम् ॥३२॥
तेनैव लभ्यते चैतत् पश्चाच्छ्रेयः परीक्षयेत्। अस्या नाम्नां त्रिशत्यास्तु, महिमा केन वर्ण्यते ॥३॥
या स्वयं शिवयोर्वक्त्रपद्माभ्यां परिनिःसृता। महाषोडशिकारूपान्, विप्रानादौ तु भोजयेत् ॥३४॥
अभ्यक्तां तिलतैलेन, स्नाताऽनुष्णेन वारिणा। अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यैः, कामेश्वर्यादिनामभिः ॥३५॥
सूपापूपैः शर्कराद्यैः, पायसैः फलसंयुतैः ॥३६॥
विद्याविदो विशेषेण, भोजयेत् षोडशद्विजान्। एवं नित्यार्चन कुर्यादादौ ब्राह्मणभोजनम् ॥३७॥
त्रिशतीनामभिः पश्चाद्, ब्राह्मणान् क्रमशो यजेत्। तैलाभ्यङ्गादिकं दद्याद्, विभवे सति भक्तितः ॥३८॥
शुक्लप्रतिपदारभ्य, पौर्णमास्यवधि क्रमात्। दिवसेदिवसे विप्राः, भोज्या विंशतिसंख्यया ॥३९॥
दशभिः पञ्चभिर्वापि, त्रिभिरेकेन वा दिनैः। त्रिंशत् षष्टिशतं विप्राः, सम्भोज्यास्त्रिशतं क्रमात् ॥४०॥
एवं यः कुरुते भक्त्या, जन्ममध्ये सकृन्नरः। तस्यैव सफलं जन्म, मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ॥४१॥
रहस्यनामसाहस्र भोजनेऽप्येवमेव हि। आदौ नित्याबलिं कुर्यात्, पश्चाद् ब्राह्मणभोजनम् ॥४२॥
रहस्यनामसाहस्रमहिमा यो मयोदितः । स शीकराणुरत्रैकनाम्नो महिमवारिधेः ॥४३॥
वाग्देवीरचिते नामसहस्रे यद्यदीरितम् । तत्फलं समवाप्नोति, नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात् ॥४४॥
एतदन्यैर्जपैः स्तोत्रैरर्चनैयत् फलं लभेत्। तत्फलं कोटिगुणितं, भवेन्नामशतत्रयात् ॥४५॥
रहस्यनामसाहस्र कोट्यावृत्त्या तु यत्फलम्। तद्भवेत् कोटिगुणितं, नामत्रिशतकीर्तनात् ॥४६॥
वाग्देवीरचितस्तोत्रे, तादृशी महिमा यदि। साक्षात् कामेशकामेशी कृतेऽस्मिन् बुध्यतां त्वया ॥४७॥
सकृत् सङ्कीर्तिते दिव्यनाम्नामस्मिन् शतत्रये । भवच्चित्तस्य पर्याप्तिर्नूनमन्यानपेक्षिणी ॥४८॥
न ज्ञातव्यमितोऽस्त्यन्यत्र जप्तव्यं च कुम्भज! यदसाध्यतमं कार्यं, तत्तदर्थमिद जपेत् ॥४९॥
तत्तत् सिद्धिमवाप्नोति, पश्चात् कार्यं परीक्षयेत् ॥५०॥
ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु, न तैर्यत् साध्यते फलम्। तत्सर्वं सिद्धयति क्षिप्रं, नामत्रिशतकीर्तनात् ॥५१॥

आयुष्करं पुष्टिकरं, पुत्रदं वश्यकारकम्। विद्याप्रदं कीर्त्तिकरं, सुकर्मत्वप्रदायकम् ॥५२॥
सर्वसम्पत्प्रदं सर्वसिद्धिदं सर्वसौख्यदम् । सर्वाभीष्टप्रदं चैव, देवीनाम शतत्रयम् ॥५३॥
नाविद्याऽवेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन॥ न शठाय न दुष्टाय, नाविश्वासाय कर्हिचित् ॥५४॥
एतज्जपपरो भूयो, नान्यदिच्छेत् कदाचन ॥५५॥
एतत्कीर्त्तनसन्तुष्टा, श्रीदेवी ललिताऽम्बिका। भक्तस्य यद्यदिष्टं स्यात्, तत्तत्पूरयते ध्रुवम् ॥५६॥
तस्मात् कुम्भोद्भव मुने! कीर्तय त्वमिदं सदा। अपरं किञ्चिदपि ते, बोद्धव्यं नावशिष्यते ॥५७॥
एवमुक्त्वा हयग्रीवः, कुम्भजं तापसोत्तमम्। स्तोत्रेणानेन ललितां, स्तुत्वा त्रिपुरसुन्दरीम् ॥५८॥
आनन्द लहरीमग्नमानसः समवर्त्तत ॥५९॥

॥श्रीब्रह्माण्डपुराणे हयग्रीवागस्त्यसम्वादे श्रीललितानामत्रिशत्युपदेशनामा सर्वसम्पूर्त्तिस्तवः सम्पूर्णः॥

॥ श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्रमालामन्त्रस्य श्रीवशिन्यादि वाग्देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताऽम्बा देवता। कएईलह्रीं बीजम्॥ सकलह्रीं शक्तिः। हसकहलह्रीं कीलकम्। श्रीललिताऽम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः :- श्रीवशिन्यादि वाग्देवता ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताऽम्बा देवतायै नमः हृदि। कएईलह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सकलह्रीं शक्तये नमः पादयोः। हसकहलह्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिताऽम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग न्यासः	कर न्यासः	अङ्ग न्यासः
ऐं क-५ (क-५ = कएईल ह्रीं)	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं ह-६ (ह-६ = हसकहल ह्रीं)	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः स-४ (स-४ = सकल ह्रीं)	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं क-५	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं ह-६	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र त्रयाय वौषट्
सौः स-४	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि स्फुरत्
तारानायक शेखरां स्मितमुखीमापीन वक्षो रुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्नघटस्थ रक्तचरणां ध्याये परामम्बिकाम् ॥

मानस पूजनम् :- लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः, अधोमुखः कनिष्ठा अंगुष्ठ। हं आकाशात्मकं पुष्पं, समर्पयामि नमः, अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः ऊर्ध्वमुख तर्जनी अंगुष्ठ। रं वह्न्यात्मकं

दीपं दर्शयामि नमः, मध्यमा अंगुष्ठ। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः, अनामा अंगुष्ठ। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः, सर्वांगुलि।

॥ श्रीहयग्रीव उवाचः ॥

॥ अथ प्रथम शतकं नाम द्वितीया तापिनी कला ॥

श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी, श्रीमत् सिंहासनेश्वरी। चिदग्निकुण्ड-सम्भूता, देवकार्य समुद्यता ॥१॥
उद्यद्भानु सहस्राभा, चतुर्बाहु समन्विता। रागस्वरूप पाशाढ्या, क्रोधाकारांकुशोज्ज्वला ॥२॥
मनोरूपेक्षु-कोदण्डा, पञ्चतन्मात्र सायका। निजारुण-प्रभा पूर मज्जद् ब्रह्माण्डमण्डला ॥३॥
चम्पकाशोक पुन्नाग सौगन्धिक लसत्कचा। कुरुविन्दमणि श्रेणी कनत्कोटीर मण्डिता ॥४॥
अष्टमीचन्द्र विभ्राजदलिक स्थल शोभिता। मुखचन्द्र कलङ्काभ मृगनाभि विशेषका ॥५॥
वदनस्मर माङ्गल्य गृहतोरण चिल्लिका। वक्त्र लक्ष्मी परीवाह चलन्मीनाभ लोचना ॥६॥
नवचम्पक पुष्पाभ नासा दण्ड विराजिता। ताराकान्ति तिरस्कारि नासाऽऽभरण भासुरा ॥७॥
कदम्बमञ्जरी क्लृप्त कर्णपूर मनोहरा। ताटङ्क युगलीभूत तपनोडुप मण्डला ॥८॥
पद्मराग शिलाऽऽदर्श परिभावि कपोल भूः। नवविद्रुम बिम्ब श्रीन्यक्कारि दशनच्छदा ॥९॥
शुद्ध विद्यांकुराकार द्विजपंक्ति - द्वयोज्ज्वला। कर्पूरवीटिकामोद समाकर्षि दिगन्तरा ॥१०॥
निजसंल्लाप माधुर्य विनिर्भर्त्सित - कच्छपी। मन्दस्मित - प्रभापूर मज्जत्कामेश मानसा ॥११॥
अनाकलित सादृश्य चिबुक श्रीविराजिता। कामेशबद्ध - माङ्गल्यसूत्र शोभित कन्धरा ॥१२॥
कनकाङ्गद केयूर कमनीय भुजान्विता। रत्न ग्रैवेय चिन्ताकलोल - मुक्ताफलान्विता ॥१३॥
कामेश्वरप्रेम रत्नमणि प्रतिपण स्तनी। नाभ्यालवाल रोमालि-लताफल कुचद्वयी ॥१४॥
लक्ष्यरोम - लताधारता समुन्नेय मध्यमा। स्तनभार दलन्मध्य पट्टबन्ध - बलित्रया ॥१५॥
अरुणारुण कौसुम्भ वस्त्र भास्वत् कटी तटी। रत्न किङ्किणिका रम्य रशना दाम भूषिता ॥१६॥
कामेश ज्ञात सौभाग्यमार्दवोरु द्वयान्विता। माणिक्यमुकुटाकार जानुद्वय विराजिता ॥१७॥
इन्द्रगोप परिक्षिप्त स्मरतूणाभ जङ्घिका। गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ जयिष्णुप्रपदान्विता ॥१८॥
नख दीधिति सञ्छन्न नमज्जन तमोगुणा। पदद्वय प्रभाजाल पराकृत सरोरुहा ॥१९॥
शिञ्जानमणि - मञ्जीर मण्डित - श्रीपदाम्बुजा। मराली मन्दगमना महालावण्य - शेवधिः ॥२०॥
सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरणभूषिता। शिव - कामेश्वराङ्कस्था, शिवा स्वाधीन - वल्लभा ॥२१॥
सुमेरुशृङ्ग मध्यस्था श्रीमन्नगर नायिका। चिन्तामणि - गृहान्तस्था, पञ्चब्रह्मासनस्थिता ॥२२॥
महापद्माटवी - संस्था, कदम्बवन - वासिनी। सुधासागर - मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥२३॥
देवर्षिगणसङ्घात स्तूय मानात्मवैभवा। भण्डासुर - वधोद्युक्त शक्तिसेनासमन्विता ॥२४॥
सम्पत्करी समारूढ सिन्धुर - व्रजसेविता। अश्वारूढाऽधिष्ठिताश्व कोटिकोटभिरावृता ॥२५॥
चक्रराज - रथारूढ सर्वायुध परिष्कृता। गेयचक्र - रथारूढ मन्त्रिणी परिसेविता ॥२६॥

किरिचक्र - रथारूढ दण्डनाथा पुरस्कृता । ज्वालामालिनिका क्षिप्तवह्निप्राकार - मध्यगा ॥२७॥
भण्डसैन्य वधोद्युक्त शक्ति विक्रमहर्षिता । नित्यापराक्रमा टोप निरीक्षण समुत्सुका ॥२८॥
भण्डपुत्र वधोद्युक्त बाला विक्रमनन्दिता । मन्त्रिण्यम्बा विरचित विशुक्र - वध तोषिता ॥२९॥
विषङ्गप्राणहरण वाराहीवीर्यनन्दिता । कामेश्वर - मुखालोक कल्पितश्रीगणेश्वरा ॥३०॥
महागणेश - निर्भिन्न विघ्नयन्त्र - प्रहर्षिता । भण्डासुरेन्द्र निर्मुक्त शस्त्र प्रत्यस्त्रवर्षिणि ॥३१॥
करांगुलि नखोत्पन्न नारायण दशाकृतिः । महापाशुपतास्त्राग्नि - निर्दग्धासुर सैनिका ॥३२॥
कामेश्वरास्त्र निर्दग्ध स भण्डासुर शून्यका । ब्रह्मोपेन्द्र महेन्द्रादिदेव संस्तुत वैभवा ॥३३॥
हरनेत्राग्नि - सन्दग्ध कामसञ्जीवनौषधिः । श्रीमद् वाग्भवकूटैक - स्वरूप मुखपङ्कजा ॥३४॥
कण्ठाधः कटि पर्यन्त मध्यकूट स्वरूपिणी । शक्ति कूटैकतापन्न कट्यधोभागधारिणि ॥३५॥
मूलमन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय कलेवरा । कुलामृतैक - रसिका कुलसङ्केत पालिनी ॥३६॥
कुलाङ्गना कुलान्तस्थाः कौलिनी कुलयोगिनी । अकुला समयान्तस्था, समयाचार तत्परा ॥३७॥
मूलाधारैक निलया ब्रह्मग्रन्थिविभेदिनी । मणिपूरान्तरुदिता, विष्णुग्रन्थि विभेदिनी ॥३८॥

॥ आधेन शतकेनाभूद द्वितीयां तापिनी कला ॥

आज्ञा चक्रान्तरालस्था रुद्र ग्रन्थि विभेदिनी । सहस्राराम्बुजारूढा, सुधा साराभि वर्षिणी ॥३९॥
तटिल्लता समरुचिः षट्चक्रोपरि संस्थिता । महाऽऽसक्तिः कुण्डलिनी, बिसतन्तु - तनीयसी ॥४०॥
भवानी भावनागम्या भवारण्यकुठारिका । भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर्भक्त - सौभाग्यदायिनी ॥४१॥
भक्तप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा । शाम्भवी शारदाऽऽराध्या, शर्वाणी शर्मदायिनी ॥४२॥
शाङ्करी श्रीकरी साध्वी, शरच्चन्द्र निभानना । शातोदरी शान्तिमती, निराधारा निरञ्जना ॥४३॥
निर्लेपा निर्मला नित्या, निराकारा निराकुला । निर्गुणा निष्कला शान्ता, निष्कामा निरुपप्लवा ॥४४॥
नित्य मुक्ता निर्विकारा, निष्प्रपञ्चा निराश्रया । नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा, निरवद्या निरन्तरा ॥४५॥
निष्कारणा निष्कलङ्का, निरुपाधिर्निरीश्वरा । नीगा रागमथना, निर्मदा मदनाशिनी ॥४६॥
निश्चिन्ता निरहङ्कारा, निर्मोहा मोहनाशिनी । निर्ममा ममताहन्त्री, निष्पापा पापनाशिनी ॥४७॥
निष्क्रोधा क्रोधशमनी, निर्लोभा लोभनाशिनी । निःसंशया संशयघ्नी, निर्भवा भवनाशिनी ॥४८॥
निर्विकल्पा निराबाधा, निर्भेदा भेदनाशिनी । निर्नाशा मृत्यु मथिनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥४९॥
निस्तुला नीलचिकुरा, निरपाया निरत्यया । दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा, दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥५०॥
दुष्टदूरा दूराचार - शमनी दोषवर्जिता । सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा, समानाधिक - वर्जिता ॥५१॥
सर्वशक्तिमयी सर्वमङ्गला सद्गतिप्रदा । सर्वेश्वरी सर्वमयी, सर्वमन्त्र स्वरूपिणी ॥५२॥

॥ तृतीया धुम्रिका कला ॥

सर्वयन्त्रात्मिका सर्वतन्त्ररूपा मनोन्मनी । माहेश्वरी महादेवी, महालक्ष्मीर्मृडप्रिया ॥५३॥
महारूपा महापूज्या, महापातकनाशिनी । महामाया महासत्वा महाशक्तिर्महारतिः ॥५४॥

महाभोगा महैश्वर्या, महावीर्या महाबला । महाबुद्धिर्महासिद्धि, र्महायोगेश्वरेश्वरी ॥५५॥
महातन्त्रा महामन्त्रा, महायन्त्रा महाऽऽसना । महायाग - क्रमाराध्या, महाभैरव पूजिता ॥५६॥
महेश्वर महाकल्प महाताण्डवसाक्षिणी । महाकामेश - महिषी, महात्रिपुरसुन्दरी ॥५७॥
चतुःषष्ट्युपचाराढ्या, चतुःषष्टिकलामयी । महाचतुः षष्टिकोटि - योगिनीगणसेविता ॥५८॥
मनुविद्या चन्द्रविद्या, चन्द्रमण्डल मध्यगा । चारुरूपा चारुहासा, चारुचन्द्र - कलाधरा ॥५९॥
चराचर जगन्नाथा, चक्रराजनिकेतना । पार्वती पद्मनयना, पद्मराग समप्रभा ॥६०॥
पञ्चप्रेतासनासीना, पञ्चब्रह्मस्वरूपिणी । चिन्मयी परमानन्दा, विज्ञानघन-रूपिणी ॥६१॥
ध्यान ध्यातृ - ध्येयरूपा, धर्माधर्म विवर्जिता । विश्वरूपा जागरिणी, स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥६२॥
सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या, सर्वावस्था विवर्जिता । सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा, गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥६३॥
संहारिणी रुद्ररूपा, तिरोधान करीश्वरी । सदाशिवाऽनुग्रहदा, पञ्चकृत्य - परायणा ॥६४॥
भानुमण्डल - मध्यस्था, भैरवी भगमालिनी । पद्मासना भगवती, पद्मनाभ सहोदरी ॥६५॥
उन्मेष निमिषोत्पन्न विपन्न - भुवनावली । सहस्रशीर्षवदना, सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥६६॥
आब्रह्म - कीटजननी, वर्णाश्रमविधायिनी । निजाज्ञा रूप निगमा, पुण्यापुण्य फल प्रदा ॥६७॥
श्रुति सीमन्त सिन्दूरीकृत पादाब्ज धूलिका । सकलागम सन्दोह शुक्तिसम्पुट मौक्तिका ॥६८॥
पुरुषार्थप्रदा पूर्णा, भोगिनी भुवनेश्वरी । अम्बिकाऽनादि निधना, हरिब्रह्मेन्द्र सेविता ॥६९॥
नारायणी नादरूपा, नामरूप विवर्जिता । ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या, हेयोपादेय वर्जिता ॥७०॥

॥ मरीच्याख्या कला तुर्या जाता नाम्नाशतत्रयात् ॥

राज राजार्चिता राज्ञी, रम्या, राजीव लोचना । रञ्जनी रमणी रस्या, रणत् किङ्किणि मेखला ॥७१॥
रमाराकेन्दु वदना, रतिरूपा रतिप्रिया । रक्षाकरी राक्षसघ्नी, रामा रमण लम्पटा ॥७२॥
काम्या कामकलारूपा, कदम्बकुसुमप्रिया । कल्याणी जगतीकन्दा, करुणारससागरा ॥७३॥
कलावती कलाऽऽलापा, कान्ता कादम्बरीप्रिया । वरदा वामनयना, वारुणी - मदविह्वला ॥७४॥
विश्वाधिका वेद-वेद्या, विन्ध्याचलनिवासिनी । विधात्री वेदजननी, विष्णुमायाविलासिनी ॥७५॥
क्षेत्र-स्वरूपा क्षेत्रेशी, क्षेत्रक्षेत्रज्ञ-पालिनी । क्षयवृद्धि विनिर्मुक्ता, क्षेत्रपाल समर्चिता ॥७६॥
विजया विमला वन्द्या, वन्दारु-जनवत्सला । वाग् वादिनी वामकेशी, वह्निमण्डलवासिनी ॥७७॥
भक्तिमत् कल्प लतिका, पशुपाशविमोचिनी । संहृताशेष-पाखण्डा, सदाचार-प्रवर्तिका ॥७८॥
तापत्रयाग्नि-सन्तप्त समाह्लादन चन्द्रिका । तरुणी तापसाराध्या, तनुमध्या तमोऽपहा ॥७९॥
चितिस्तत् पदलक्ष्यार्था, चिदेक रसरूपिणी । स्वात्मानन्द-लवीभूत ब्रह्माद्यानन्द सन्ततिः ॥८०॥
परा प्रत्यक्-चितीरूपा, पश्यन्ती परदेवता । मध्यमा-वैखरीरूपा, भक्तमानस-हंसिका ॥८१॥
कामेश्वर प्राणनाडी, कृतज्ञा कामपूजिता । शृङ्गाररससम्पूर्णा, जया जालन्धर-स्थिता ॥८२॥
ओड्याण पीठनिलया, बिन्दु मण्डल वासिनी । रहोयाग क्रमाराध्या, रहस्तर्पण तर्पिता ॥८३॥

सद्यः प्रसादिनी विश्व साक्षिणी साक्षि वर्जिता । षडङ्ग - देवतायुक्ता, षाड्गुण्य परिपूरिता ॥८४॥
नित्य क्लिन्ना निरुपमा, निर्वाणसुखदायिनी । नित्या षोडशिकारूपा, श्रीकण्ठार्ध शरीरिणी ॥८५॥
प्रभावती प्रभारूपा, प्रसिद्धा परमेश्वरी । मूलप्रकृतिरव्यक्ता, व्यक्ताव्यक्त स्वरूपिणी ॥८६॥
॥ व्यापिनी विविधाकारा, विद्याऽविद्या स्वरूपिणी ॥
चतुर्थ शतकेनाभूत् पंचमी ज्वालिनी कला । महाकामेश-नयन कुमुदाह्लाद कौमुदी ॥८७॥
भक्तहार्द तमोभेद-भानु मद् भानुसन्ततिः । शिवदूती शिवाराध्या, शिवमूर्तिः शिवङ्करी ॥८८॥
शिवप्रिया शिवपरा, शिष्टेष्टा शिष्ट पूजिता । अप्रमेया स्वप्रकाशा, मनोवाचामगोचरा ॥८९॥
चिच्छक्तिश्चेतना रूपा, जडशक्तिर्जडात्मिका । गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या, द्विजवृन्द-निषेविता ॥९०॥
तत्त्वासना तत्त्वमयी, पञ्चकोशान्तर स्थिता । निःसीम महिमा नित्ययौवना मदशालिनी ॥९१॥
मदघूर्णित रक्ताक्षी, मदपाटल - गण्ड- भूः । चन्दन द्रव दिग्धाङ्गा , चाम्पेय कुसुमप्रिया ॥९२॥
कुशला कोमलाकारा, कुरुकुल्ला कुलेश्वरी । कुल कुण्डालया कौलमार्ग तत्पर सेविता ॥९३॥
कुमार- गणनाथाम्बा, तुष्टिः पुष्टिर्मतिर्धृतिः । शान्तिः स्वस्तिमती, कान्तिर्नन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥९४॥
तेजोवती त्रिनयना, लोलाक्षी कामरूपिणी । मालिनी हंसिनी माता, मलयाचलवासिनी ॥९५॥
सुमुखी नलिनी सुभ्रूः, शोभना सुरनायिका । कालकण्ठी कान्तिमती, क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥९६॥
वज्रेश्वरी वामदेवी, वयोऽवस्था विवर्जिता । सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या, सिद्धमाता यशस्विनी ॥९७॥
विशुद्धि चक्र निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना । खट्वाङ्गादि - प्रहरणा, वदनैक - समन्विता ॥९८॥
पायसान्नप्रिया त्वक्स्था, पशुलोक भयङ्करी । अमृतादि महाशक्ति संवृता डाकिनीश्वरी ॥९९॥
अनाहताब्जनिलया, श्यामाभा वदनद्वया । दंष्ट्रोज्ज्वलाक्ष मालादिधरा रुधिरसंस्थिता ॥१००॥
काल - रात्र्यादि शक्त्यौघवृता स्निग्धौदन प्रिया । महावीरेन्द्र - वरदा राकिण्यम्बा स्वरूपिणी ॥१०१॥
मणिपूराब्जनिलया, वदनत्रय - संयुता । वज्रादिकायुधोपेता, डामर्यादिभिरावृता ॥१०२॥
रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न - प्रीतमानसा । समस्तभक्त सुखदा, लाकिन्यम्बा स्वरूपिणी ॥१०३॥
स्वाधिष्ठानाम्बुजगता, चतुर्वक्त्र - मनोहरा । शूलाद्यायुध सम्पन्ना, पीतवर्णाऽति गर्विता ॥१०४॥
मेदो निष्ठा मधु प्रीता, बन्धिन्यादि समन्विता । दध्यन्नासक्त - हृदया, काकिनी - रूपधारिणी ॥१०५॥
मूलाधाराम्बुजारूढा, पञ्चवक्त्राऽस्थि संस्थिता । अंकुशादि प्रहरणा, वरदादि निषेविता ॥१०६॥
मुद्गौदनासक्त - चित्ता, साकिन्यम्बा स्वरूपिणी । आज्ञाचक्राब्ज-निलया, शुक्लवर्णा- षडानना ॥१०७॥
मज्जासंस्था हंसवती, मुख्यशक्ति - समन्विता । हरिद्रान्नैकरसिका, हाकिनीरूपधारिणी ॥१०८॥
सहस्त्रदल - पद्मस्था, सर्व वर्णोपशोभिता । सर्वायुधधरा शुक्लसंस्थिता सर्वतोमुखी ॥१०९॥
सर्वौदन-प्रीत चित्ता, याकिन्यम्बा स्वरूपिणी । स्वाहा स्वधा मतिर्मेधा, श्रुति स्मृतिरनुत्तमा ॥११०॥
पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या, पुण्यश्रवण कीर्तना । पुलोमजाऽर्चिता बन्धमोचिनी बन्धुरालका ॥१११॥
विमर्शरूपिणी विद्या, वियदादि जगत् प्रसूः । सर्वव्याधिप्रशमनी, सर्वमृत्युनिवारिणी ॥११२॥

अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा, कलिकल्मष नाशिनी । कात्यायनी कालहन्त्री, कमलाक्ष - निषेविता ॥११३॥

ताम्बूलपूरित - मुखी, दाडिमीकुसुम - प्रभा । मृगाक्षी मोहिनी मुख्या, मृडानी मित्ररूपिणी ॥११४॥

नित्यतृप्ता भक्तनिधिर्नियन्त्री निखिलेश्वरी । मैत्र्यादि - वासाना लभ्या, महाप्रलयसाक्षिणी ॥११५॥

पराशक्तिः परानिष्ठा, प्रज्ञान घनरूपिणी । माध्वी पानालसा मत्ता, मातृका - वर्णरूपिणी ॥११६॥

महाकैलास - निलया, मृणाल-मृदुदोर्लता । महनीया दयामूर्तिर्महा - साम्राज्यशालिनी ॥११७॥

आत्म विद्या महाविद्या, श्रीविद्याकामसेविता । श्रीषोडशाक्षरी विद्या, त्रिकूटा काम कोटिका ॥११८॥

कटाक्ष किङ्करीभूत कमलाकोटिसेविता । शिरः स्थिता चन्द्रनिभा, भालस्थेन्द्र धनुष्प्रभा ॥११९॥

हृदयस्था रविप्रख्या, त्रिकोणान्तर दीपिका । दाक्षायणी दैत्यहन्त्री, दक्षयज्ञविनाशिनी ॥१२०॥

॥ षष्ठेन शतकेनाभूद सुषुम्णा सप्तमी कला ॥

दरान्दोलित दीर्घाक्षी, दरहासोज्ज्वलन्मुखी । गुरुमूर्तिर्गुण - निधिर्गोमाता गुहजन्म भूः ॥१२१॥

देवेशी दण्डनितिस्था, दहराकाश- रूपिणी । प्रतिपन्मुख्य - राकान्त - तिथिमण्डल पूजिता ॥१२२॥

कलात्मिका कलानाथा, काव्यालाप विमोदिनी । स चामर रमा वाणी सव्य दक्षिणसेविता ॥१२३॥

आदि शक्तिरमेयात्मा, परमा पावनाकृतिः । अनेक कोटिब्रह्माण्ड - जननी दिव्यविग्रहा ॥१२४॥

क्लीङ्कारी केवला गुह्या, कैवल्यपद - दायिनी । त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या, त्रिमूर्तिस्त्रिदशेश्वरी ॥१२५॥

त्र्यक्षरी दिव्यगन्धाढ्या, सिन्दूरतिलकाञ्चिता । उमा शैलेन्द्रतनया, गौरी गन्धर्वसेविता ॥१२६॥

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा, वरदा वागधीश्वरी । ध्यान गम्याऽपरिच्छेद्या, ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥१२७॥

सर्व वेदान्त- सम्वेद्या, सत्यानन्दस्वरूपिणी । लोपामुद्रार्चिता लीला क्लृप्त ब्रह्माण्डमण्डला ॥१२८॥

अदृश्या दृश्यरहिता, विज्ञात्री वेद्य वर्जिता । योगिनी योगदा योग्या, योगानन्दा युगन्धरा ॥१२९॥

इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्तिस्वरूपिणी । सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा, सदसद्रूप धारिणी ॥१३०॥

अष्टमूर्तिरजा जैत्री, लोकयात्राविधायिनी । एकाकिनी भूमरूपा, निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥१३१॥

अन्नदा वसुदा वृद्धा, ब्रह्मात्मैक्य स्वरूपिणी । बृहती ब्रह्माणी ब्राह्मी, ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥१३२॥

भाषारूपा बृहत्सेना, भावाभाव विवर्जिता । सुखाराध्या शुभकरी, शोभना सुलभा गतिः ॥१३३॥

राजराजेश्वरी राज्यदायिनी राज्यवल्लभा । राजत् कृपा राजपीठ निवेशित निजाश्रिता ॥१३४॥

राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा, चतुरङ्ग - बलेश्वरी । साम्राज्यदायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥१३५॥

दीक्षिता दैत्य शमनी, सर्वलोकवशङ्करी । सर्वार्थदात्री सावित्री, सच्चिदानन्दरूपिणी ॥१३६॥

॥ सप्तमेन शतकेनाभूदष्टमो भोगदा कला ॥

देश कालापरिच्छिन्ना, सर्वगा सर्व मोहिनी । सरस्वती शास्त्रमयी, गुहाम्बा गुह्य रूपिणी ॥१३७॥

सर्वोपाधि विनिर्मुक्ता, सदाशिव - पतिव्रता । सम्प्रदायेश्वरी साध्वी, गुरुमण्डलरूपिणी ॥१३८॥

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या, माया मधु मती मही । गणाम्बा गुह्यकाराध्या, कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ॥१३९॥

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी, दक्षिणामूर्तिरूपिणी । सनकादि समाराध्या, शिवज्ञानप्रदायिनी ॥१४०॥

चित् - कलानन्दकलिका, प्रेमरूपा प्रियङ्करी । नामपारायण - प्रीता, नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥१४१॥
मिथ्या जगदधिष्ठाना, मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी । लास्यप्रिया लयकरी, लज्जा रम्भादि वन्दिता ॥१४२॥
भवदा वसुधा वृष्टिः, पापारण्य दवानला । दौर्भाग्य - तूल- वातूला, जराध्वान्त - रविप्रभा ॥१४३॥
भाग्याब्धिचन्द्रिका भक्तचित्त केकि घनाघना । रोग पर्वत दम्भोलिर्मृत्यु दारु कुठारिका ॥१४४॥
महेश्वरी महाकाली, महाग्रासा महाऽशना । अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर निषूदनी ॥१४५॥
क्षराक्षरात्मिका सर्वलोकेशी विश्वधारिणी । त्रिवर्गदात्री सुभगा, त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥१४६॥
स्वर्गापवर्गदा शुद्धा, जपापुष्प निभाऽऽकृतिः । ओजोवती द्युतिधरा, यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥१४७॥
दुराराध्या दुराधर्षा, पाटली - कुसुमप्रिया । महती मेरुनिलया, मन्दारकुसुमप्रिया ॥१४८॥
वीराराध्या विराड्रूपा, विरजा विश्वतोमुखी । प्रत्यग्रूपा पराकाशा, प्राणदा प्राणरूपिणी ॥१४९॥
मार्तण्ड भैरवाराध्या, मन्त्रिणी न्यस्तराज्य - धूः । त्रिपुरेशी जयत्सेना, निस्त्रैगुण्या परापरा ॥१५०॥
सत्यज्ञानानन्दरूपा, सामरस्य - परायणा । कपर्दिनी कलामाला, कामधुक् कामरूपिणी ॥१५१॥
कलानिधिः काव्यकला, रसज्ञा रस-शेवीधाः । पुष्टा पुरातना पूज्या, पुष्करा पुष्करेक्षण ॥१५२॥

॥ शतकेनाष्टमेनाभूद विश्वाख्या नवमीकला ॥

परंज्योतिः परंधाम, परमाणुः परात्परा । पाशहस्ता पाशहन्त्री, परमन्त्र विभेदिनी ॥१५३॥
मूर्ताऽमूर्ता नित्यतृप्ता, मुनिमानस - हंसिका । सत्यव्रता सत्यरूपा, सर्वान्तर्यामिणी सती ॥१५४॥
ब्रह्माणी ब्रह्मजननी, बहुरूपा बुधार्चिता । प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा, प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥१५५॥
प्राणेश्वरी प्राणदात्री, पञ्चाशत् पीठरूपिणी । विशृङ्खला विक्तिस्था, वीरमाता वियत् प्रसूः ॥१५६॥
मुकुन्दा मुक्तिनिलया, मूलविग्रहरूपिणी । भावज्ञा भावरोगघ्नी, भवचक्रप्रवर्तिनी ॥१५७॥
छन्दःसारा शास्त्रसारा, मन्त्रसारा तलोदरी । उदार कीर्तिरुद्दाम - वैभवा वर्णरूपिणी ॥१५८॥
जन्ममृत्यु जरा तप्तजन विश्रान्तिदायिनी । सर्वोपनिषदुद्घुष्टा, शान्त्यतीता कलात्मिका ॥१५९॥
गम्भीरा गगनान्तस्था, गर्विता गानलोलुपा । कल्पना रहिता काष्ठाऽकान्ताकान्तार्ध विग्रहा ॥१६०॥
कार्य कारण निर्मुक्ता, कामकेलि तरङ्गिता । कनत् कनकताटङ्का, लीलाविग्रहधारिणी ॥१६१॥
अजा क्षयविनिर्मुक्ता, मुग्धा क्षिप्रप्रसादिनी । अन्तर्मुख - समाराध्या, बहिर्मुख - सुदुर्लभा ॥१६२॥
त्रयी त्रिवर्गनिलया, त्रिस्था त्रिपुरमालिनी । निरामया निरालम्बा, स्वात्मारामा सुधा स्रुतिः ॥१६३॥
संसारपङ्क - निर्मग्न समुद्धरण - पण्डिता । यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री, यजमान - स्वरूपिणी ॥१६४॥
धर्माधारा धनाध्यक्षा, धनधान्यविवर्धिनी । विप्रप्रिया विप्ररूपा, विश्वभ्रमणकारिणी ॥१६५॥
विश्वग्रासा विद्रुमाभा, वैष्णवी विष्णुरूपिणी । अयोनिर्योनि - निलया, कूटस्था कुलरूपिणी ॥१६६॥
वीरगोष्ठी- प्रिया वीरा, नैष्कर्म्या नादरूपिणी । विज्ञान कलना कल्या, विदग्धा बैन्दवासनी ॥१६७॥

॥ नवमेन शतकेनाभूद दशमी बोधिनी कला ॥

तत्त्वाधिका तत्त्वमयी, तत्त्वमर्थ स्वरूपिणी । साम गान प्रिया सौम्या, सदाशिव कुटुम्बिनी ॥१६८॥

सव्यापसव्य - मार्गस्था, सर्वापद् - विनिवारिणी । स्वस्था स्वभाव - मधुरा, धीरा धीरसमर्चिता ॥१६९॥
चैतन्यार्घ्य - समाराध्या, चैतन्यकुसुमप्रिया । सदोदिता सदातुष्टा, तरुणादित्य - पाटला ॥१७०॥
दक्षिणाऽदक्षिणाराध्या, दरस्मेर - मुखाम्बुजा । कौलिनी केवलाऽनर्घ्य कैवल्यपददायिनी ॥१७१॥
स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती, श्रुतिसंस्तुतवैभवा । मनस्विनी मानवती, महेशी मङ्गलाकृतिः ॥१७२॥
विश्वमाता जगद्धात्री, विशालाक्षी विरागिणी । प्रगल्भा परमोदारा, पराऽऽमोदा मनोमयी ॥१७३॥
व्योमकेशी विमानस्था, वज्रिणी वामकेश्वरी । पञ्चयज्ञप्रिया पञ्चप्रेतमञ्चाधि - शायिनी ॥१७४॥
पञ्चमी पञ्च भूतेशी, पञ्च संख्योपचारिणी । शाश्वती शाश्वतैश्वर्या, शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥१७५॥
धराधरसुता धन्या, धर्मिणी धर्मवर्धिनी । लोकातीता गुणातीता, सर्वातीता शमात्मिका ॥१७६॥
बन्धूककुसुम - प्रख्या, बाला लीलाविनोदिनी । सुमङ्गली सुखकरी, सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥१७७॥
सुवासिन्यर्चन प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा । बिन्दुतर्पण - सन्तुष्टा, पूर्वजा त्रिपुराऽम्बिका ॥१७८॥
दशमुद्रा- समाराध्या, त्रिपुराश्रीवशङ्करी । ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या, ज्ञानज्ञेय - स्वरूपिणी ॥१७९॥
योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी, त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा । अनघाऽद्भुत चारित्रा, वाञ्छितार्थप्रदायिनी ॥१८०॥
अभ्यासातिशय ज्ञाता, षडध्वातीत रूपिणी । अव्याज - करुणा मूर्तिरज्ञान व्वान्तदीपिका ॥१८१॥
आबाल - गोपविदिता, सर्वानुल्लङ्घ्य शासना । श्रीचक्रराज - निलया, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥१८२॥
श्रीशिवाशिव शक्त्यैक्यरूपिणी ललिताऽम्बिका ॥
दशमेन दशतकेनाभूद् धारिण्ये कला ।

पुनः विनियोग, ऋष्यादि न्यास करषडङ्गन्यासादि पूर्वकं ध्यानं कृत्वा मानस पूजनं च कुर्यात्। ततः प्रार्थयेत् -अनेन श्रीललिता सहस्त्रनाम स्तोत्र पाठेन श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी देवता प्रीयताम्॥

॥ फलश्रुति ॥

॥ हयग्रीव उवाच ॥

इत्येव नाम साहस्त्रं, कथितं ते घटोद्भव । रहस्यानां रहस्यं च ललिताप्रीतिदायकम् ॥१॥
अनेन सदृशं स्तोत्रं, न भूतं न भविष्यति । सर्वरोग - प्रशमनं, सर्वसम्पत्प्रवर्धनम् ॥२॥
सर्वापमृत्यु - शमनं, कालमृत्यु निवारणम् । सर्व ज्वरार्ति शमनं, दीर्घायुष्य - प्रदायकम् ॥३॥
पुत्र- प्रदमपुत्राणां, पुरुषार्थ प्रदायकम् । इदं विशेषाच्छ्री देव्याः, स्तोत्रं प्रीति विधायकम् ॥४॥
जपेन्नित्यं प्रयत्नेन, ललितोपास्ति तत्परः । प्रातः स्नात्वा विधानेन, सन्ध्याकर्म समाप्य च ॥५॥
पूजागृहं ततो गत्वा चक्रराजं समर्चयेत् । विद्यां जपेत् सहस्त्रं वा त्रिशतं शतमेव वा ॥६॥
रहस्य नाम साहस्त्रमिदं पश्चात् पठेन्नरः । जन्ममध्ये सकृच्चापि य एवं पठते सुधीः ॥७॥
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये शृणु त्वं कुंभसम्भव । गङ्गादि सर्वतीर्थेषु यः स्नायात्कोटिजन्मसु ॥८॥
कोटिलिङ्ग प्रतिष्ठां तु यः कुर्यादविमुक्तके । कुरुक्षेत्रे च यो दद्यात्कोटिवारं रविग्रहे ॥९॥
कोटिं सौवर्णभाराणां श्रोत्रियेषु द्विजन्मसु । यः कोटि हयमेधानामाहरेद् गाङ्गरोधसि ॥१०॥

आचरेत् कूप कोटीर्यो, निर्जले मरुभूतले । दुर्भिक्षे यः प्रतिदिनं, कोटिब्राह्मणभोजनम् ॥११॥
श्रद्धया परया कुर्यात्, सहस्त्र परिवत्सरान् । तत् पुण्यं कोटि गुणितं, लभेत् पुण्यमनुत्तमम् ॥१२॥
रहस्य नाम सहस्त्रे, नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात् । रहस्य नाम साहस्त्रे, नामैकमपि यः पठेत् ॥१३॥
तस्य पापानि नश्यन्ति, महान्त्यपि न संशयः । नित्य कर्माननुष्ठानान्निषिद्ध करणादपि ॥१४॥
यत्पापं जायते पुंसां तत्सर्वं नश्यन्ति ध्रुवम् । बहुनाऽत्र किमुक्तेन शृणु त्वं कलशीसुत ॥१५॥
अत्रैकनाम्नो या शक्तिः पातकानां निवर्तने । तन्निवर्त्यमघं कर्तुं नालं लोकाश्चतुर्दश ॥१६॥
यस्त्यक्त्वा नामसहस्त्र पापहानिमभीप्सति । स हि शीतनिवृत्त्यर्थ हिमशैलं निषेवते ॥१७॥
भक्तो यः कीर्तयन्नित्यमिदं नाम सहस्त्रकम् । तस्मै श्रीललिता देवी, प्रीताऽभीष्टं प्रयच्छति ॥१८॥
नवम्यां वा चतुर्दश्यां, सितायां शुक्रवासरे । कीर्तयेन्नाम साहस्त्रं, पौर्णमास्यां विशेषतः ॥१९॥
पौर्णमास्यां चन्द्रबिम्बे, ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकां । पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, पठेन्नाम सहस्त्रकम् ॥२०॥
सर्वरोगाः प्रणश्यन्ति, दीर्घायुष्यं च विन्दति । अयमायुष्करो नाम, प्रयोगः कल्पनोदितः ॥२१॥
ज्वरार्तं शिरसि स्पृष्ट्वा, पठेन्नाम सहस्त्रकम् । तत् क्षणात् प्रशमं याति, शिरस्तोदो ज्वरोऽपि च ॥२२॥
सर्वव्याधि निवृत्त्यर्थ, स्पृष्ट्वा भस्म जपेदिदम् । तद् भस्म धारणादेव, नश्यन्ति व्याधयो क्षणात् ॥२३॥
जलं सम्मन्त्र्य कुम्भस्थं, नाम साहस्त्रतो मुने! । अभिषिञ्चेद् ग्रह ग्रहस्तान्, ग्रहा नश्यंति तत्क्षणात् ॥२४॥
सुधासागर- मध्यस्थां, ध्यात्वा श्रीललिताऽम्बिकाम् । यः पठेन्नाम साहस्त्रं, विषं तस्य विनश्यति ॥२५॥
वन्ध्यानां पुत्रलाभाय, नामसाहस्त्र मन्त्रितम् । नवनीतं प्रदद्यात्तु, पुत्रलाभो भवेद्-ध्रुवम् ॥२६॥
देव्याः पाशेन सम्बद्धामाकृष्टामंकुशेन च । ध्यात्वाऽभीष्टां स्त्रियं रात्रौ, पठेन्नाम सहस्त्रकम् ॥२७॥
आयाति स्वसमीपं, सा यद्यप्यन्तः पुरं गता । राजाऽऽकर्षण कामश्चेद्, राजाऽवसथ दिङ् मुखः ॥२८॥
त्रि रात्रं यः पठेदेतच्छ्री देवी ध्यानतत्परः । स राजा पार वश्येन मातङ्गं वा तमङ्गजम् ॥२९॥
आरुह्याऽऽयाति निकटं, दासवत् प्रणिपत्य च । तस्मै राज्यं च कोशं च, दद्यादेव वशं गतः ॥३०॥
रहस्य नाम साहस्त्रं, यः कीर्तयति नित्यशः । तन्मुखालोक मात्रेण, मुह्येल्लोकत्रयं मुने! ॥ ३१॥
यस्त्विदं नाम साहस्त्र, सकृत् पठति भक्तिमान् । तस्य ये शत्रवस्तेषां, निहन्ता शरभेश्वरः ॥३२॥
यो वाऽभिचारं कुरुते, नाम सहस्त्रपाठके । निवर्त्य तत् क्रियां हन्यात्, तं वै प्रत्यङ्गिरा स्वयम् ॥३३॥
ये क्रूर दृष्ट्या वीक्ष्यन्ते, नाम सहस्त्रपाठकम् । तानन्धान् कुरुते क्षिप्रं, स्वयं मार्तण्ड भैरवः ॥३४॥
धनं यो हरते चौरैनमि साहस जापिनः । यत्र कुत्र स्थितं वापि, क्षेत्रपालो निहन्ति तम् ॥३५॥
विद्यासु कुरुते वादं, यो विद्वान नाम जापिनः । तस्य वाक्स्तम्भनं सद्यः, करोति नकुलीश्वरी ॥३६॥
यो राजा कुरुते वैरं, नाम साहस जापिनः । चतुरङ्ग बलं तस्य, दण्डिनी संहरेत् स्वयम् ॥३७॥
यः पठेन्नाम साहस्त्रं, षणमासं भक्ति संयुतः । लक्ष्मीश्चाञ्चल्य रहिता, सदा तिष्ठति तद् गृहे ॥३८॥
मासमेकं प्रतिदिनं, त्रिवारं यः पठेन्नरः । भारती तस्य जिह्वाग्रे, रङ्गे नृत्यति नित्यशः ॥३९॥

यस्त्वेक वारं पठति, पक्षमेकमतन्द्रितः । मुह्यन्ति काम वशगा, मृगाक्ष्यस्तस्य वीक्षणात् ॥४०॥

यः पठेन्नाम साहसं, जंम मध्ये सकृन्नरः । तद् दृष्टि गोचराः सर्वे, मुच्यन्ते सर्व किल्विषैः ॥४१॥

यो वेत्ति नाम साहस्रं, तस्मै देयं द्विजन्मने । अन्नं वस्त्रं धनं धान्यं, नान्येभ्यस्तु कदाचन ॥४२॥

श्रीमंत्रराजं यो वेत्ति श्रीचक्रं यः समर्चति । यः कीर्तयति नामानि, तं सत् - पात्रं विदुर्बुधाः ॥४३॥

तस्मै देयं प्रयत्नेन, श्रीदेवी प्रीतिमिच्छता ॥४४॥

न कीर्तयति नामानि, मन्त्र राजं न वेत्ति यः । पशु तुल्यः स विज्ञेयस्तस्मै दत्तं निरर्थकम् ॥४५॥

परीक्ष्य विद्या विदुषस्तेभ्यो दद्याद् विचक्षणः ॥ श्रीमन्त्र राज सदृशो, यथा मन्त्रो न विद्यते । ॥४६॥

देवता ललिता तुल्या, यथा नास्ति घटोद्भव ! रहस्य नाम साहस्र तुल्या नास्ति तथा स्तुतिः ॥४७॥

लिखित्वा पुस्तके यस्तु, नाम साहस्रमुत्तमम् । समर्चयेत् सदाभक्त्या, तस्य तुष्यति सुन्दरी ॥४८॥

बहुनाऽत्र किमुक्तेन, शृणु त्वं कुम्भ सम्भव! नानेन सदृशं स्तोत्रं, सर्व तन्त्रेषु विद्यते ॥४९॥

तस्मादुपासको नित्यं, कीर्तयेदिदमादरात् । एभिर्नाम सहस्रैस्तु श्रीचक्रं योऽर्चयेत् सकृत् ॥५०॥

पद्मैर्वा तुलसीपुष्पैः, कह्लारैर्वा कदम्बकैः । चम्पकैर्जाति कुसुमैर्मल्लिका करवीरकैः ॥५१॥

उत्पलैर्विल्वपत्रैर्वा, कुन्द केसर पाटलैः । अन्यैः सुंगधिकुसुमै केतकी माधवीमुखैः ॥५२॥

तस्य पुण्य फलं वक्तुं, न शक्नोति महेश्वरः ॥५३॥

सा वेत्ति ललिता देवी, स्व चक्रार्चनजं फलम् । अन्ये कथं विजानीयुर्ब्रह्माद्याः स्वल्प मेधसः? ॥५४॥

प्रतिमासं पौर्णमास्यामेभिर्नाम सहस्रकैः । रात्रौः यश्चक्रराजस्थामर्चयेत् परदेवताम् ॥५४॥

स एव ललितारूपस्तद्- रूपा ललिता स्वयम् । न तयोर्विद्यते भेदो, भेदकृत् पापकृद- भवेत् ॥५५॥

महानवम्यां यो भक्तः, श्रीदेवीं चक्रमध्यगाम् । अर्चयेन्नाम साहस्रैस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता ॥५६॥

यस्तु नामसाहस्रेण, शुक्रवारे समर्चयेत् । चक्रराजे महादेवीं, तस्य पुण्य फलं शृणु ॥५७॥

सर्वान् कामानवाप्येह, सर्वसौभाग्य संयुतः । पुत्र पौत्रादि संयुक्तो, भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ॥५८॥

अन्ते श्रीललिता देव्याः, सायुज्यमति दुर्लभम् । प्रार्थनीयं शिवाद्यैश्च, प्राप्नोत्येव न संशयः ॥५९॥

यः सहस्त्रं ब्राह्मणानामेभिर्नाम सहस्रकैः । समर्च्य भोजयेद् भक्त्या पायसापूप षड्रसैः ॥६०॥

तस्मै प्रीणाति ललिता, स्वसाम्राज्यं प्रयच्छति । न तस्य दुर्लभं वस्तु, त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥६१॥

निष्कामः कीर्तयेद् यस्तु, नाम साहस्रमुत्तमम् । ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति, येन मुच्येत बन्धनात् ॥६२॥

धनार्थी धनमाप्नोति, यशोऽर्थी चाप्नुयाद् यशः । विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां, नाम साहस्र कीर्तनात् ॥६३॥

नानेन सदृशं स्तोत्रं, भोग मोक्ष प्रदं मुने ! कीर्तनीयमिदं तस्माद् भोग मोक्षार्थिभिर्नरैः ॥६४॥

चतुराश्रम निष्ठैश्च, कीर्तनीयमिदं सदा । स्वधर्म समनुष्ठान वैकल्प परिपूर्तये ॥६५॥

कलौ पापैक बहुले, धर्मानुष्ठान वर्जिते । नामानुकीर्तनं मुक्त्वा, नृणां नान्यत् परायणम् ॥६६॥

लौकिकाद् वचनान्मुख्यं, विष्णु नामानुकीर्तनम् । विष्णुनाम सहस्राच्च, शिव नामैकमुत्तमम् ॥६७॥

देवी नाम सहस्राणि, कोटिशः सन्ति कुम्भज ! तेषु मुख्यं दशविधं, नामसाहस्रमुच्यते ॥६८॥
रहस्य नाम साहस्रमिदं शस्तं दशस्वपि । तस्मात् सङ्कीर्तयेन्नित्यं, कलिदोष निवृत्तये ॥६९॥
मुख्यं श्रीमातृनामेति न जानन्ति विमोहिताः ॥७०॥
विष्णु नाम पराः केचिच्छिव नाम पराः परे। न कश्चिदपि लोकेषु, ललितानाम तत् परः ॥ ७१ ॥
येनान्य देवता नाम, कीर्तितं जन्म कोटिषु । तस्यैव भवति श्रद्धा, श्रीदेवी नाम कीर्तने ॥७२॥
चरमे जन्मनि यथा, श्रीविद्योपासको भवेत् । नाम साहस्र पाठश्च, तथा चरम जन्मनि ॥७३॥
यथैव विरला लोके, श्रीविद्याऽऽचार वेदिनः । तथैव विरलो गुह्यनाम साहस्र पाठकः ॥७४॥
मन्त्रराज जपश्चैव, चक्रराजार्चनं तथा । रहस्य नाम पाठश्च, नाल्पस्य तपसः फलम् ॥७५॥
अपठन् राम साहस्रं, प्रीणयेद् यो महेश्वरीम् । स चक्षुषा विना रूपं, पश्येदेव नरो परः ॥७६॥
रहस्य नाम साहस्रं, त्यक्त्वा यः सिद्धि कामुकः । स भोजनं विना नूनं, क्षुन्निवृत्तिमभीप्सति ॥७७॥
यो भक्तो ललिता देव्याः, स नित्यं कीर्तयेदिदं । नान्यथा प्रीयते देवी, कल्प कोटि शतैरपि ॥७८॥
तस्माद् रहस्य नामानि, श्रीमातुः प्रयतः पठेत् । इति ते कथितं स्तोत्रं, रहस्यं कुम्भ सम्भव ॥७९॥
नाविद्या वेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन । यथैव गोप्या श्रीविद्या, तथा गोप्यमिदं मुने ॥८०॥
स्वतन्त्रेण मया नोक्तं, तवापि कलशोद्भव ! ललिता प्रेरणादेव, मयोक्तं स्तोत्रमुत्तमम् ॥८१॥
कीर्तनीयमिदं भक्त्या, कुम्भयोने ! निरन्तरम् । तेन तुष्टा महादेवो, तवाभीष्टं प्रदास्यति ॥८२॥

॥ श्रीसूत उवाच ॥

इत्युक्त्वा श्रीहयग्रीवो, ध्यात्वा श्रीललिताऽम्बिकाम् । आनन्दमग्न हृदयः, सद्यः पुलकितोऽभवत् ॥८३॥

॥ श्रीत्रिपुरसुन्दरी मंत्रराज स्तोत्रम् ॥

''क'' कर्तुंदेवि जगद् विलास विधिना सृष्टेन ते मायया, सर्वानन्द मयेन मध्य विलसच्छ्री विन्दुनाऽलंकृतम् ।
श्रीमत् सद्गुरु पूज्यपाद करुणा सम्वेद्य तत्त्वात्मकम्, श्री चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१॥
''ए'' एकस्मिन्नणिमादिभिर्विलसितं भूमीगृहे सिद्धिभिः, बाह्याद्याभिरुपाश्रितं च दशभिर्मुद्राभिरुद्भासितम् ।
चक्रेश्या प्रकटेड्यया त्रिपुरया त्रैलोक्य सम्मोहनम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥२॥
''ई'' ईड्याभिर्नव विद्रुमच्छवि समाभिख्याभिरङ्गी कृतम्, कामाकर्षिणी कादिभिः स्वर दले गुप्ताभिधाभिः सदा ।
सर्वाशापरिपूरके परिलसद् देव्या पुरेश्या युतम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥३॥
''ल'' लब्ध प्रोज्जवल यौवनाभिरभितोऽनङ्ग प्रसूनादिभिः, सेव्यं गुप्ततराभिरष्ट कमले संक्षोभकाख्ये सदा ।
चक्रेश्या पुरसुन्दरीति जगति प्रख्यातयासङ्गतम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥४॥
''ह्रीं'' ह्रीङ्काराङ्कित मन्त्रराज- निलयं श्रीसर्वसंक्षोभिणी, मुख्याभिश्चल कुन्तलाभिरुषितं मन्वस्त्र चक्रे शुभे ।
यत्र श्रीपुरवासिनी विजयते श्रीसर्वसौभाग्यदे, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥५॥
''ह'' हस्ते पाश गदादि शस्त्र निचयं दीप्तं वहन्तीभिः, उत्तीर्णाख्याभिरुपायस्य पाति शुभदे सर्वार्थ सिद्धिप्रदे ।

चक्रे बाह्यदशारके विलसित देव्या पुरश्चयाख्यया, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥६॥
"स" सर्वज्ञादिभिरिन्दु कान्ति धवला कालाभिरारक्षिते, चक्रेऽन्तर्दश- कोणकेऽति विमले नाम्ना च रक्षा करे ।
यत्र श्रीत्रिपुरमालिनी विजयते नित्यं निगर्भा स्तुता, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥७॥
"क" कर्तुं मूकमनर्गल स्त्रवदति द्राक्षादि वाग् वैभवम्, दक्षाभिर्वशिनी मुखाभिरभितो वाग् देवताभिर्युताम् ।
अष्टारे पुरसिद्धया विलसितं रोगप्रणाशे शुभे, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥८॥
"ह" हन्तु दानव सङ्घमाहव भुवि स्वेच्छा समाकल्पितैः, शस्त्रैरस्त्र चयैश्च चापनिवहैरत्युग्र तेजोभरैः ।
आर्तत्राण परायणैररि कुल प्रध्वंसिभिः सम्वृतम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धिप्रदम् ॥९॥
"ल" लक्ष्मीवाग गजादिभिः करलसत् पाशासि घण्टादिभिः, कामेश्यादिभिरावृतं शुभकरं श्रीसर्व सिद्धि प्रदम् ।
चक्रेशी च पुराम्बिका विजयते यत्र त्रिकोणे मुदा, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१०॥
"ह्रीं" ह्रींकारं परमं जपद्भिरनिशं मित्रेश नाथादिभिः, दिव्यौघैर्मनुजौघ सिद्धनिवहैः सारूप्य मुक्तिं गतैः ।
नाना मन्त्र रहस्य विद्भिरखिलैरन्वासितं योगिभिः, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥११॥
"स" सर्वोत्कृष्ट वपुर्धराभिरभितो देवी समाभिर्जगत्, संरक्षार्थमुपगताऽऽभिरसकृन्नित्याभिधाभिर्मुदा।
कामेश्यादिभिराज्ञयैव ललिता देव्याः समुद्भासितम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१२॥
"क" कर्तुं श्रीललिताङ्ग रक्षण विधिं लावण्यपूर्णां तनूम्, आस्थायास्त्र वरोल्लसत् कर पयोजाताभिरध्यासितम् ।
देवीभिर्हृदयादिभिश्च परितो विन्दुं सदाऽऽनन्ददम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१३॥
"ल" लक्ष्मीशादि पदैर्युतेन महता मञ्चेन संशोभितम्, षट्त्रिंशद्भिरनर्घ रत्न खचितैः सोपानकैर्भूषितम् ।
चिन्ता रत्न विनिर्मितेन महता सिंहासनेनोज्ज्वलम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१४॥
"ह्रीं" ह्रीङ्कारैक महामनुं प्रजपता कामेश्वरेणोषितम्, तस्याङ्के च निषण्णया त्रिजगतां मात्रा चिदाकारया ।
कामेश्या करुणा-रसैक निधिना कल्याणदात्र्या युतम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१५॥
"श्रीं" श्रीमत् पञ्च दशाक्षरैक निलयं श्रीषोडशी मन्दिरम्, श्रीनाथादिभिरर्चितं व बहुधा देवैः समाराधितम् ।
श्रीकामेश रहस्सखी निलयनं श्रीमद्गुहाराधितम्, श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि प्रदम् ॥१६॥

॥ श्रीत्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम् ॥

श्वेत पद्मासनारूढ़ां शुद्धस्फटिक सन्निभां । वन्दे वाग्देवतां ध्यात्वा देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥१॥
शैलाधिराजतनयां शङ्करप्रिय वल्लभां । तरुणन्दुनिभां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥२॥
सर्वभूत मनोरम्यां सर्वभूतेषु संस्थितां । सर्वसम्पत्करीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥३॥
पद्मालयां पद्महस्तां पद्मसम्भव सेवितां । पद्मरागनिभां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥४॥
पञ्चवाण धनुर्बाण पाशाङ्कुशधरां शुभां । पञ्चब्रह्ममयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥५॥
षट् पुण्डरीक निलयां षडानन सुपूजितां । षट् कोणान्तः स्थितां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥६॥
हरार्धभाग - निलयामम्बामद्रिसुतां मृडां । हरिप्रियाऽनुजां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥६॥
अष्टैश्वर्य - प्रदामम्बामष्टदिक्पाल सेवितां । अष्टमूर्तिमयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥७॥

नवमणिक्य मुकुटां नवनाथ सुपूजितां । नवयौवन शोभाढ्यां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥९॥
काञ्चीवास मनोरम्यां काञ्चीदाम विभूषितां । काञ्ची पुरीश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥१०॥

॥फलश्रुति॥

इति ते कथितं देवि! सुन्दरी प्रीतिदायकं । महानिशाकाले पाठमात्रेण सिद्धिर्भवति ॥११॥
एकादश सहस्राणि संख्या चास्य पुरस्क्रिया । ततः काम्यार्थे प्रयोगान् साधयेत् साधकोत्तमः ॥१२॥
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकं । पाठमात्रेण सिद्ध्यन्ति सत्यं सत्यं न संशयः ॥१३॥
निष्कामो यः पठेन्नित्यं पञ्चतत्व समन्वितम् ।
धर्मार्थ काम मोक्षं च लभते नात्र संशयः ॥
इह लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते देवी लोके वसेत् ॥१४॥

॥ सिद्धि यामले श्रीत्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीललितोपनिषत् ॥

ॐ परम् कारणभूता शक्तिः केन नवचक्ररूपो देहः । नवचक्र शक्तिमयं श्रीचक्रं । वाराही पितृरूपा, कुरुकुल्ला चीलदेवता माता । पुरुषार्थाः सागराः । देहो नवरत्ने द्वीपः । आधार नवकमुद्राः शक्तयः । त्वगादि सप्तधातुभिरनेकैः संयुक्ताः सङ्कल्पाः कल्पतरवः । तेजः कल्पकोद्यानं ।

रसनया भासमाना मधुराम्लतिक्त कटुकषाय लवण रसाः षड्रसाः । क्रियाशक्ति पीठं, कुण्डलिनी ज्ञानशक्तिः, अहम् इच्छाशक्ति । महात्रिपुरसुन्दरी ज्ञाता, होता ज्ञानमर्घ्यं, ज्ञेयं हवि ज्ञातृज्ञान ज्ञेया । नमो भेदभावनं श्रीचक्रपूजनं ।

नियति सहित शृङ्गारादयो नवरसाः । अणिमादयः कामक्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य पुण्यपापमया ब्राह्मयादयोऽष्ट शक्तयः । आधार नवकमुद्रा शक्तयः । पृथ्व्यप् तेजोवाय्वाकाश श्रोत्रत्वक्चक्षु जिह्वा घ्राण वाक्पाणि पाद पायूपस्थ मनश्च विकाराः षोडश शक्तयः । वचनादान गमन विसर्गानन्दादानोपादानोपेक्षाबुद्ध्योऽनङ्ग- कुसुमादि शक्तयोऽष्टौ । अलम्बुषा-कुहू विश्वोदरी वरुणाहस्ति जिह्वा यशस्विनी गान्धारी पूषा सरस्वती इडा पिङ्गला सुषुम्ना चेति चतुर्दश नाड्यः सर्वसंक्षोभिण्यादि चतुर्दशार देवताः ।

प्राणापान व्यानोदान समान नागकूर्म कृकल देवदत्त धनञ्जया दश वायवः सर्वसिद्धि प्रदादि बहिर्दशार देवताः । एतद् वायु दशक संसर्गोपाधि भेदेन रेचक पूरक पोषक दाहकाल्पावकामृतमिति प्राण सख्यत्वेन पञ्चविधोऽस्ति । जठराग्निर्मनुष्याणां मोहको भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्यात्मकं चतुर्विधमन्नं पाचयति । तदा प्रकाशवान् सकलाः सर्वज्ञत्वाद्यन्तर्दशार देवताः ।

शीतोष्ण सुख दुःखेच्छा सत्व रजस्तमो गुणादि वशिन्यादि शक्तयोऽष्टौ । शब्दस्पर्श रूप रस गंधाः पञ्च तन्मात्राः पञ्चपुष्पबाणाः, मनेक्षुधनुर्वल्यो वाणो रागः पाशो द्वेषो अंकुशोऽव्यक्त महत् तत्वाहङ्कार कामेश्वरी वज्रेश्वरी भगमालिन्योऽन्त स्त्रिकोणाग्रदेवताः ।

पञ्चदश तिथि रूपेण कालस्य परिणामावलोकन पञ्चदश नित्या शुद्धानुरूपाधि देवता निरुपाधि सार्व देव कामेश्वरी सदाऽऽनन्दपूर्णाः स्वात्म्यैक्य रूप ललिता कामेश्वरी सदाऽऽनन्दघन पूर्णा स्वात्मैक्यरूपा देवता ललितामिति ।

साहित्य करणं सत्वं कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमिति भावना मुक्ता उपचारा। अहं त्वमस्ति नास्ति कर्त्तव्याकर्त्तव्य मुपासितव्यानु- पासितव्यमिति विकल्पना। मनो विलापनं होमः।

बाह्याभ्यन्तर करणानां रूप ग्रहण योग्यतास्तीत्यावाहनं। तस्य बाह्याभ्यन्तर करणानामेक रूप विषय ग्रहणमसनं। रक्त शुक्ल पदैकी करणं पाद्यं। उज्ज्वलदामोदाऽऽनन्दा सानन्दनमर्घ्यं। स्वच्छास्वतः शक्तिरित्याचमनं। चिच्चन्द्रमयी स्मरणं स्नानं। चिदग्निस्वरूप परमानन्दशक्ति स्मरणं वस्त्रं। प्रत्येकं सप्तविंशतिधा भिन्नत्वेन इच्छा क्रियात्मक ब्रह्मग्रन्थिमयी सतन्तु ब्रह्मनाडी ब्रह्मसूत्रं सव्यातिरिक्त वस्त्रं। सङ्गरहितं स्मरणं विभूषणम्। स्वच्छन्द परिपूर्ण स्मरणं गन्धः। समस्त विषयाणां मनःस्थैर्येणानु सन्धानं कुसुमं। तेषामेव सर्वदा स्वीकरणं धूपः। पवनाच्छिन्नोर्ध्व ज्वाला सच्चिदाह्लादाकाशदेहो दीपः। समस्त यातायात वर्जनं नैवेद्यं। अवस्था त्रयैकीकरणं ताम्बूलं। मूलाधारादाब्रह्मरन्ध्र पर्यन्तं ब्रह्मरन्ध्रादामूलाधार पर्यन्तं गतागतरूपेण प्रादक्षिण्यं। तुरीयावस्थानं संस्कार देहशून्यं प्रमादितावति मज्जनं बलि हरणं। सत्वमस्ति कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमौदासीन्यमात्म विलापनं होमः। भावना विषयाणामभेद भावना तर्पणं। स्वयं तत् पादुका निमज्जनं परिपूर्ण ध्यानं।

एवं मूर्तित्रयं भावनया युक्तो मुक्तो भवति। तस्य देवतात्मैक्य सिद्धिः चितिकार्याण्यप्रयत्नेन सिध्यन्ति स एव शिव योगीति कथ्यते।

॥ इति श्री ललितोपनिषत् ॥

॥ श्रीत्रिपुरोपनिषत् ॥

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि वेदस्य मे आणीस्थः, श्रुतं मे म प्रहासीरनेनाहोऽधीतेनाहोरात्रान्त्संदधामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तदवक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ तिस्रः पुरस्त्रिपथा विश्वचर्षणी। अत्राकथा अक्षराः सन्निविष्टाः ।
अधिष्ठायैनामजरा पुराणी। महत्तरा महिमा देवतानाम् ॥१॥
नवयोनीर्नवचक्राणि दीधिरे। नवैव योगा नवयोगिन्यश्च ।
नवानां चक्रे अधिनाथाः स्योना। नवमुद्रा नवभद्रा महीनाम् ॥२॥
एका सा आसीत् प्रथमा सा । नवासीदासोन विंशदासोनत्रिंशत् ।
चत्वारिंशदथ तिस्रः समिधा । उशतीरिव मातरो माऽऽविशन्तु ॥३॥
ऊर्ध्वज्वलज्ज्वलन-ज्योतिरग्रे। तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत् ।
आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दोरेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति ॥४॥
तिस्रश्च रेखाः सदनानि भूमेस्त्रि-विष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाशाः ।
एतत् पुरं पूरकं पूरकाणामत्र प्रथेते मदनो मदन्या ॥५॥
मदन्तिका मानिनी मङ्गला च । सुभगा च सा सुन्दरी शुद्धमत्ता ।
लज्जा मतिस्तुष्टिरिष्टा च पुष्टा लक्ष्मीरुमा ललिता लालपन्ती ॥६॥

इमां विज्ञाय सुधया मदन्ति । परिस्नुता तर्पयन्तः स्वपीठम् ।
नाकस्य पृष्ठे महतो वसन्ति । परंधाम त्रैपुरं चाविशन्ति ॥७॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाऽभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च । पुरूच्येषा विश्वमाताऽऽदि विद्या ॥८॥
षष्ठं सप्तममथ वह्नि सारथिमस्या । मूल त्रिकमावेशयन्तः ।
कथ्यं कविं कल्पकं काममीशं । तुष्टुवांसो अमृतत्वं भजन्ते ॥९॥
त्रिविष्टपं त्रिमुख विश्व मातुर्नव - रेखाः स्वर मध्यं तदीले ।
वृहत् तिथीर्दश - पञ्चादिनित्या । सा षोडशी पुरमध्यं विभर्त्ति ॥१०॥
द्वा मण्डला द्वा स्तना बिम्बमेकं । मुखं चाधस्त्रीणि गुहा सदनानि ।
कामीं कलां काम्यरूपा विदित्वा । नरो जायते कामरूपश्च काम्यः ॥११॥
परिस्नुतं झषमाद्यं पलं व । भक्तानि योनीः सुपरिष्कृतानि ।
निवेदयन् देवतायै महत्यै । स्वात्मीकृत्य सुकृती सिद्धिमेति ॥१२॥
सृण्येव सितया विश्वचर्षणिः । पाशेन प्रतिबध्नात्यभीकान् ।
इषुभिः पञ्चभिर्धनुषा च विध्यत्यादि-शक्तिररुणा विश्वजन्या ॥१३॥
भगः शक्तिर्भगवान् काम ईश उभा दाताराविह सौभगानाम् ।
समप्रधानौ समसत्त्वौ समोजौ तयोः शक्तिरजरा विश्वयोनिः ॥१४॥
परिस्नुतौ हविषा भावितेन प्रसंकोचे गलिते वै मनस्कः ।
शर्वः सर्वस्य जगतो विधाता धर्ता हर्ता विश्वरूपत्वमेति ॥१५॥
एषर्ग्यजुः परमेतच्च सामेवायमथर्वेयमन्या च विद्या ॐ ।
इयं महोपनिषत् त्रिपुरायाः यामक्षयं परमे गीर्भिरीट्टे ॥१६॥

॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीमिति त्रिपुरोपनिषत् ॥

॥ श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवचम् ॥

॥ श्री ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं सुन्दरी प्रियम् । रहस्यामि रहस्यं च मन्त्ररूपमिदं प्रिये ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

भगवन्! सर्वलोकेश! सर्वलोकैक वन्दित! गुह्याद् गुह्यतमं तत्त्वं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥

विनियोगः - अस्य श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवच स्तोत्र मंत्रस्य श्री दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप्छंदः, श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं-५ कएईल ह्रीं बीजं, क्लीं-६ हसकहल ह्रीं कीलकं, सौः स-४ सकल ह्रीं शक्तिः, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवच स्तोत्र पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा मूलमन्त्रेण षडङ्गन्यासं कुर्यात्।

॥ ध्यानम् ॥

स कुंकुम - विलेपनामलिक - चुम्बिकस्तूरिकाम्
स - मन्द - हसितेक्षणां स शरचाप पाशाङ्कुशाम् ।
अशेष जन मोहिनीमरुण - माल्य - भूषाम्बरां
जपाकुसुम भासुरां जप विधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥१॥
चतुर्भुजे! चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुम रागशोणे ।
पुण्ड्रेक्षु पाशांकुश पुष्पवाण हस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥२॥

मानसोपचारेण भगवती सम्पूज्य विधिना कवचं पठेत् -

ककारः पातु शीर्षं मे एकारः पातु फालके । ईकारः पातु वक्त्रं मे लकारः कूर्पयुग्मके ॥१ ।
ह्रींकारः पातु हृदयं वाग्भवश्च सदाऽवतु । हकारः पातु जठरं सकारो नाभि देशके ॥२॥
ककारः पार्श्वभागे च हकारः पातु पृष्ठके । लकारश्च नितम्बके मे ह्रींकारः पातु मूलके ॥३॥
कामराजः सदापातु जठरादि प्रदेशके । सकारः पातु कट्यां मे ककारः पातु लिङ्गके ॥४॥
लकारो जानुनी पातु ह्रींङ्कारो जङ्घ युग्मके । शक्तिबीजं सदा पातु मूलविद्या सदाऽवतु ॥५॥
त्रिपुरा मां सदा पातु त्रिपुरेशी च सर्वदा । त्रिपुरासुन्दरी पातु वसुपत्रस्य देवता ॥६॥
त्रिपुरावासिनी पातु त्रिपुराश्रीः सदाऽवतु । त्रिपुरामालिनी पातु त्रिपुरा सिद्धिसदाऽवतु ॥७॥
त्रिपुरा तथा पातु पातु त्रिपुराभैरवी । अणिमाद्यास्तथा पांतु ब्राह्मयाद्याः पातु मां सदा ॥८॥
नवमुद्रास्तथा पान्तु कामाकर्षणि पूर्विकाः । पान्तु मां षोडशारे तु अनङ्गकुसुमादिकाः ॥९॥
पान्तु मामष्टपत्रेषु सर्वसंक्षोभणादिकाः । पान्तु चक्रकोणेषु सर्वसिद्धि प्रदायिकाः ॥१०॥
पान्तु मां बाह्यकोणेषु मध्यादि कोणके तथा । सर्वज्ञाद्यास्तथा पान्तु सर्वाभीष्ट प्रपूरिकाः ॥११॥
वशिन्याद्यास्तथा पान्तुवसु पत्रस्य देवताः । त्रिकोणस्यान्तरालेषु पान्तु मामायुधानि च ॥१२॥
कामेश्वर्यादिकाः पांतु त्रिकोणे कोण संस्थिताः । विन्दुचक्रे तथा पातु श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी ॥१३॥
इदं श्रीकवचं नित्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः । सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वाभीष्ट फलप्रदम् ॥१४॥

॥ इति श्री महात्रिपुर-सुन्दरी कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीपरा महायोनि कवचम् ॥

ॐ नमः शिवाय गुरवे नाद विन्दुकलात्मने। श्रीगणेशाय नमः। श्रीमन्महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः।

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

क्रमदीक्षा विधानानि मयोक्तानि महेश्वरि!
त्वयात्मनः कुलागारे कवचं यत् सुगोपितं ॥१॥
अधुना कृपया त्वं च तत् सर्वं वक्तुमर्हसि।

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

शृणु! प्रवक्ष्यामि तन्त्रसारमिदं महत् ॥२॥

एतच्छ्री कवचस्यास्य परब्रह्म ऋषिः शिवः। महती जगतीच्छन्दश्चिच्छक्तिर्देवतोच्यते ॥३॥

ऐं बीजं ह्रीं तथा शक्तिः सकलह्रीं कीलकं तथा। परब्रह्म प्राप्ति हेतौ विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४॥

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा कवचं पठेत्। यथा -

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् उग्रतारा मूलाधारं ममावतु। ह्रीं भुवनेश्वरी पातु स्वाधिष्ठानं च मे सदा ॥५॥

क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणा पातु मणिपुरं तथा मम । नमो भगवत्यै हस्ख्फ्रें कुब्जिकायै

स्ह्रां स्ह्रीं स्ह्रूं ङञणन मे अघोरा मुखि छांछीं किणि किणि विच्चे ॥६॥

अनाहतं सदा पातु कुब्जिका परमेश्वरी। फ्रं ख्फ्रें गुह्यकाली सा विशुद्धं मे च रक्षतु ॥७॥

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं। आज्ञाचक्रं महादेवी षोडशी पातु मे सदा ॥८॥

हस्क्ष्म्लवरयूँ स्हक्ष्म्लवरयीं नादचक्रं । च मे पातु श्रीमदानन्दभैरवः ॥९॥

ह्सौः स्हौः अर्धनारीश्वरी बिन्दुश्च मेऽवतु। हंसः सोऽहं सदापातु सहस्त्रारं सदा मम ॥१०॥

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं । शिरो मे पातु सा देवी महात्रिपुरसुन्दरी ॥११॥

कएईलह्रीं कामेशी भ्रूमध्यं मे सदाऽवतु । हसकहलह्रीं वज्रेशी दक्षनेत्रं सदाऽवतु ॥१२॥

सकलह्रीं वामनेत्रं रक्षतु भगमालिनी । ह्स्त्रैं हसकलह्रीं ह्सौः त्रिनेत्रं पातु भैरवी ॥१३॥

ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा कर्णौ मे परिरक्षतु । ह्रीं क्लीं क्षुं मां सदा पातु मुखं त्रिपुरमालिनी ॥१४॥

हसैं हस्क्लीं हसौं कण्ठं पातु श्रीत्रिपुराश्रीर्मे हैं । हक्लीं हसौं पातु वक्षस्त्रिपुरवासिनी ॥१५॥

दौवारिजौ सदापातु ह्यणिमाद्यष्ट सिद्धयः। ह्रीं क्लीं सौः पातु मे नाभिं परा त्रिपुरसुन्दरी ॥१६॥

दशमुद्रायुता देवी ममोरू पातु सर्वदा । ऐं क्लीं सौः पातु मे जानू श्रीमहात्रिपुरेश्वरी ॥१७॥

षड्दर्शनं सदापातु जङ्घायुग्मं च सर्वदा। अं आं सौः त्रिपुरा पातु पादौ च सततं नमः ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीं पातु मां पूर्वे श्रीमहाभुवनेश्वरी। कएईलह्रीं दक्षिणे मां पराऽऽद्या परिरक्षतु ॥१९॥

सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीकुजापश्चिमे मांसदाऽवतु। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः चोत्तरे मां पातु योगेश्वरी परा ॥२०॥

हसकहलह्रीं पातु मामधो वज्रयोगिनी । सकलह्रीं सा ललिता ह्यूर्ध्वे मां परिरक्षतु ॥२१॥

श्रीं ५ ॐ ३ क ५ ह ६ स ४ सौः ५ सदाऽवतु। सर्वाङ्गं मे च चिद्रूपा महात्रिपुर सुन्दरी ॥२२॥

(टीका - ॐ३= ॐ ह्रीं श्रीं। स४= सकल ह्रीं। क५= कएईल ह्रीं। श्रीं५= श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः। सौः ५= सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं। ह ६= हसकहल ह्रीं।)

॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं देव! ब्रह्मानन्द मयं परं । श्रीमहायोनिराख्यातं कवचं देवदुर्लभम् ॥२३॥

मम तेजसा रचितं श्रीविद्या क्रम संयुतम् । तव स्नेहान्महादेव तवाग्रे तु मयोदितम् ॥२४॥

राज्यं देयं शिरो देयं न देयं कवचं परम् । देयं पूर्णाभिषिक्ताय स्वशिष्याय महेश्वर ॥२५॥

अन्यथा नारकी भूयात् कल्प कोटि शतैरपि । दिक्सहस्त्रेण पाठेन ह्यसाध्यं साध्यते क्षणात् ॥२६॥
लक्षं जप्त्वा महादेव तद्दशांशं हुनेद् यदि । ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति परब्रह्मणि लीयते ॥२७॥

भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ साक्षात् कामेश्वरो भवेत् ।
नारी वामभुजे धृत्वा भवेत् त्रिपुर सुन्दरी ॥२८॥

॥ ॐ तत्सत् श्रीमहानिर्वाणतन्त्रे श्रीमहायोनि नाम श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी कवचम् ॥॥

॥ १. श्रीषोडशी कवच स्तोत्रम् ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

देव देव महादेव भक्तानां प्रीतिवर्द्धनं सूचितं यन् महादेव्याः कवचं कथयस्व मे ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देव दुर्लभं । न प्रकाश्यं परंगुह्यं साधकाभीष्ट सिद्धिदं ॥
कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिररव्ययः । छन्दः पंक्ति समुद्दिष्टं देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥
धर्मार्थ काम मोक्षाणां विनियोगस्तु साधने । वाग्भवः कामराजश्च शक्ति बीजं सुरेश्वरि ॥

॥ कवच स्तोत्रम् ॥

वाग्भवः पातु शीर्षे मां कामराजस्तथा हृदि । शक्ति बीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥
ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये । ह्सौः सकलह्रीं पातु भैरवी कण्ठ देशतः ।
सुंदरी नाभिदेशे च शीर्षे कामकला सदा । भ्रू नासयोरन्तराले महात्रिपुरसुन्दरी ॥
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः । भगोदया च हृदये उदरे भग सर्पिणी ॥
भगमाला नाभिदेशे लिङ्गे पातु मनोभवा । गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा ॥
चैतन्य रूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका । नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभङ्करी ॥
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा । पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥
आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते । वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु ईशके ॥
जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गला । आकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी ॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं तु कवचं देव्या देवानामपि दुर्लभम् । पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिर्प्रयत मानसः ॥
नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च कश्चिद् भवेत् । न च मारीभयं तस्य पातकानां भयं तथा ॥
न दारिद्र्यवशं गच्छेत् तिष्ठेन्मृत्युवशे न च । गच्छेच्छिवपुरं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहं ॥
इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेत् सदा । स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र घातनं ॥

॥ इति सिद्ध यामले श्री षोडशी कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ २. श्रीषोडशी कवच स्तोत्रम् ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

भगवन् देव-देवेश लोकानुग्रह कारक त्वत्प्रसादान्महादेव श्रुता मन्त्रास्तवनेकधा ।
साधनं विविधं देव कीलकोद्धरणं तथा शापादि दूषणोद्धारः श्रुतस्त्वत्तो मया प्रभो ।
राजराजेश्वरी देव्याः कवचं सञ्चितं मया श्रोतुमिच्छामि त्वत्तस्तत्कथयस्व दयानिधे ॥

॥ श्री ईश्वरोवाच ॥

लक्षवारसहस्त्राणि वारिताऽसि पुनः पुनः स्त्रीस्वभावात् पुनर्देवि पृच्छसि त्वं मम प्रिये ।
अत्यन्तगुह्यं कवचं सर्वकामफलप्रदं प्रीतये तव देवेशि कथयामि शृणुष्व तत् ॥

विनियोगः :- **अस्य षोडशी कवचस्य श्रीमहादेव ऋषिः, प्रस्तार पंक्तिश्छन्दः, श्री राजराजेश्वरी महात्रिपुर - सुन्दरी देवता, धर्मार्थ काम मोक्ष साधने पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः :- **श्रीमहादेव ऋषये नमः शिरसि। प्रस्तार पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। श्री राजराजेश्वरी महात्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। सर्वार्थ काम मोक्ष साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

॥ कवच स्तोत्रम् ॥

पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे, मालिनी पश्चिमे पातु त्रासिनी तूत्तरेऽवतु ॥
ऊर्ध्वं पातु महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी, अधस्तात् पातु देवेशी पातालातल वासिनी ॥
आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि, डामरः पातु मां नित्यं मस्तके सर्व कामदः ॥
ब्रह्मरन्ध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा, महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी ॥
ऐं ह्रीं ललाटे मां पातु क्लीं क्लुं सश्च नेत्रयोः, नासायां मे कर्णयोश्च द्रीं द्रैं द्रां द्रीं चिबुके तथा ॥
सौः पातु गले हृदये स ह ह्रीं नाभिदेशके, क ल ह्रीं क्लीं स्त्रीं गुह्यदेशे सह्रीं पादयोस्तथा ॥
स ह्रीं मां सर्वतः पातु सकली पातु सन्धिषु, जले स्थले तथाकाशे दिक्षु राजगृहे तथा ॥
हूं क्षेमा त्वरिता पातु स ह्रीं स क्लीं मनोभवा हंसः पायान्महादेवि परं निष्कल देवता ॥
विजया मंगला दूती कल्याणी भगमालिनी, ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा ॥
इत्येवं कवचं देवि देवानामपि दुर्लभं, तव प्रीत्या मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
इदं रहस्यं परमं गुह्याद् गुह्यतरं प्रिये, धन्यं यशस्यमायुष्यं भोग मोक्षं प्रद शिवे ॥
दुःस्वप्न नाशनं पुण्यं नर-नारी वशङ्करम्, आकर्षणकरं देवि स्तम्भोच्चाटकं शिवे ॥
इदं कवचमज्ञात्वा राजराजेश्वरीं पराम्, योऽर्चयेद् योगिनी वृन्दैः स भक्ष्यो नात्र संशयः ॥
न तस्य मन्त्रसिद्धिः स्यात् कदाचिदपि शांकरि, इह लोके च दारिद्र्यं रोगदुःखाशुभानि च ॥
परत्र नरकं गत्वा पशु योनिमवाप्नुयात्, तस्मादेतत् सदाभ्यासादधिकारी भवेत् किल ॥
मद्वक्त्र निर्गतमिदं कवचं सुपुण्यं, पूजाविधेश्च पुरतो विधिना पठेद्यः ॥
सौभाग्य भाग ललितानि शुभानि भुक्त्वा, देव्याः पदं भजति तत् पुनरन्तकाले ॥

॥ कुलानन्द संहितायां षोडशीकवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ षोडशी हृदय स्तोत्रम् ॥

कैलासे करुणाक्रान्ता परोपकृतिमानसा, पप्रच्छ करुणासिन्धुं सुप्रसन्नं महेश्वरं ।

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

आगामिनि कलौ ब्रह्मन् धर्म-कर्मविवर्जिताः, भविष्यन्ति जनास्तेषां कथं श्रेयो भविष्यति ?

॥ शिव उवाच ॥

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामिं तव स्नेहान्महेश्वरि दुर्लभं यत् त्रिलोकेषुसुन्दरी हृदयस्तवं ।
ये नरा दुःख सन्तप्ता दारिद्र्य हत मानसाः अस्यैव पाठ मात्रेण तेषां श्रेयो भविष्यति ॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी हृदयस्तोत्र मन्त्रस्य श्रीआनन्दभैरवः ऋषिः। देवी गायत्रीश्छन्दः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। ऐं बीजं। सौः शक्तिः। क्लीं कीलकं। धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – श्रीआनन्दभैरवाय ऋषये नमः शिरसि। देवी गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदये। ऐं बीजाय नमः लिङ्गे। सौः शक्तये नमः नाभौ। क्लीं कीलकाय नमः मूलाधारे। धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः	करन्यास	अङ्गन्यासः
ऐं ह्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं श्रीं सौः ऐं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः ॐ ह्रीं श्रीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
क्लीं सकलह्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

बालव्यक्त विभाकरामितनिभां भव्यप्रदां भारतीम्, ईषत् फुल्लमुग्ब्राम्बुजस्मित् करैराशाभवान्धापहाम् ।
पाशं साभयमंकुशं च वरदं सम्बिभ्रतीं भूतिदाम्, भ्राजन्तीं चतुरम्बुजाकृति करैर्भक्त्या भजे सुन्दरीम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

सुन्दरी सकल कल्मषापहा कोटिकञ्जप्रिय काम्यकान्तिका ।
कोटिकल्पकृत पुण्य कर्मणा पूजनीय – पदपुण्यपुष्करा ॥१॥

शर्वरीश सम सुन्दरानना श्रीश-शक्ति सुकृताश्रय श्रिता ।
सज्जनानु शरणीय सत्पदा सङ्कटे सुरगणैः सुवन्दिता ॥२॥

या सुरासुर-रणे जयान्विता आजघान जगदम्बिकाऽजिता ।
तां भजामि जगतां जनिं जयां युद्धयुक्त दितिजान् सुदुर्जयान् ॥३॥

योगिनां हृदय सङ्गतां शिवां योगयुक्त मनसां यतात्मनाम् ।
जाग्रतीं जगति यत्नतो द्विजा यां जपन्ति हृदि तां भजाम्यहम् ॥४॥

कल्पकास्तु कलयन्ति कालिकां यत् कला कलि जनोपकारिकाम् ।
कौल कालि कलितांघ्रि कञ्जकां तां भजामि कलिकल्मषापहाम् ॥५॥

बालार्कानन्त शोचिर्निज तनु किरणैर्दीपयन्तीं दिगन्तान्
दीप्तैर्देदीप्यमानां दनुज दल वनानल्प दावानलाभाम् ।
दान्तो दन्तोग्रचित्तान् दलितदितिसुतान् दर्शनीयान् दुरन्तान्
देवीं दीनार्द्रचित्तान् हृदि मुदितमनाः सुन्दरीं संस्मरामि ॥६॥

धीरान् धन्यान् धरित्रीं धवविधृत शिरोधूत धूल्यब्ज पादान्
धृष्टान् धाराधराधो विनिधृत चपला चारु चन्द्रत् प्रभाभाम् ।
धर्मान् धूतोपहारान् धरणि सुरधवोद्धारिणीं ध्येय रूपाम्
धीमद्धन्याऽतिधन्यां धनद-धनवृतां सुन्दरीं चिन्तयामि ॥७॥

जयतु जयतु जल्पा योगिनी योगयुक्ता जयतु जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या ।
जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य जयतु जयतु काली कालिनी कालकान्ता ॥८॥

जयतु जयतु खर्वा षोडशी वेदहस्ता जयतु जयतु धात्री धर्मिणी धातृशक्तिः ।
जयतु जयतु वाणी ब्राह्मणा ब्रह्मवन्द्या जयतु जयतु दुर्गा दारिणी देवशत्रोः ॥

देवी त्वं सृष्टिकाले कमलभवभृता राजसी रक्तरूपा
रक्षाकाले त्वमम्बा हरिहृदय धृता सात्विकी श्वेतरूपा
भूरि क्रोधा भवान्ते भवभवन गता तामसी कृष्णरूपा
एताश्चान्यास्त्वमेव क्षितिमनुज मता सुन्दरी केवलाद्या ॥१०॥

सुमल सुमनमेतद् देवि गोप्यं गुणज्ञे ग्रहण मनन योग्यं षोडशीयं खलघ्नम् ।
सुरतरुसमशीलं सम्प्रदं पाठकानां प्रभवति हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यन्त मान्यम् ॥११॥
इदं त्रिपुरसुन्दर्याः षोडश्याः परमाद्भुतं यः शृणोति नरः स्तोत्रं स सदा सुखमश्नुते ॥१२॥

॥ श्रीत्रिपुरसुन्दरीतन्त्रे हृदयाख्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री षोडशी अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ भृगुरुवाच ॥

चतुर्वक्त्र जगन्नाथ स्तोत्रं वद मम प्रभो यस्यानुष्ठान मात्रेण नरो भक्तिमवाप्नुयात् ।
सहस्त्र नाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्याः परिकीर्तितं ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तर शतनामस्तोत्रस्य शम्भुः ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीषोडशी देवता। धर्मार्थ काम मोक्ष सिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा।

ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी । सुन्दरी सुमुखी सेव्या सामवेद परायणा ॥
शारदा शब्दनिलया सागरा सरिदम्बरा । शुद्धा शुद्ध तनुः साध्वी शिवध्यान परायणा ॥
स्वामिनी शंभुवनिता शांभवी च सरस्वती । समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥
साधुसेव्या साधुगम्या साधुसंतुष्ट मानसा । खट्वाङ्ग धारिणी खर्वा खड्ग खर्पर धारिणी ॥
षड्वर्ग भाव रहिता षड्वर्ग परिचारिका । षड्वर्गा च षडंगा च षोढा षोडश वार्षिकी ॥
ऋतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षक्रतु मण्डिता । कवर्गादि पवर्गान्ता अन्तःस्था अन्तरूपिणी ॥
अकाराकार रहिता कालमृत्यु जरापहा । तन्वी तत्त्वेश्वरो तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी ॥
काली कराली कामेशी च छाया संज्ञाप्यरुंधती । निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ॥
मेधा बलाका विमला विमल ज्ञानदायिनी । गौरी वसुन्धरा गोप्त्री गवांपति निषेविता ॥
भगाङ्गा भगरूपा च भक्तिभाव परायणा । छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा ॥
धर्मकर्मादि रहिता धर्मकर्म परायणा । सीता मातङ्गिनी मेधा मधुदैत्य विनाशिनी ॥
भैरवी भुवना माताऽभयदा भवसुन्दरी । भावुका बगला कृत्या बालात्रिपुरसुन्दरी ॥
रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावण वन्दिता । शतयज्ञमयी सत्वा शतक्रतुवरप्रदा ॥
शतचन्द्रानना देवी सहस्रादित्य सन्निभा । सोमसूर्याग्नि नयना व्याघ्रचर्माम्बरावृता ॥
अर्द्धेन्दु धारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा । इति ते कथितं गोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥
सुन्दर्याः सर्वदा सेव्यं महापातक नाशनं । गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौ युगे ॥
सहस्रनाम पाठस्य फलं यद् वै प्रकीर्तितम् । तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ॥
पठेत् सदा भक्तियुतो नरो तु यो निशीथ कालेऽप्यरुणोदये वा ।
प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथवा लभेत् भोगान् परमाद्भुतान् प्रियान् ॥

॥ ब्रह्मयामले षोडश्यष्टोत्तरशत नामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीषोडशी सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

कैलाश शिखरे रम्ये नानारत्नोप शोभिते । कल्पपादप मध्यस्थे नानापुष्पोप शोभिते ॥
मणिमण्डपमध्यस्थे मुनिगन्धर्वसेविते । कदाचित् सुखमासीनं भगवन्तं जगद्गुरुम् ॥
कपाल खट्वाङ्गधरं चन्द्रार्धकृत शेखरं । हस्तत्रिशूल डमरुं महावृषभवाहनम् ॥
जटाजूटधरं देवं कण्ठभूषण वासुकिं । विभूतिभूषणं देवं नीलकण्ठं त्रिलोचनम् ॥
द्वीपिचर्म परीधानं शुद्धस्फटिक सन्निभं । सहस्रादित्य सङ्काशं गिरिजार्द्धाङ्गभूषणम् ॥
प्रणम्य शिरसा नाथं कारणं विश्व रूपिणम् । कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्राहैनं शिखवाहनः ॥

॥ कार्तिकेय उवाच ॥

देव देव जगन्नाथ सृष्टिस्थिति लयात्मक । त्वमेव परमात्मा च त्वं गतिः सर्वदेहिनाम् ॥
त्वं गतिः सर्वलोकानां दीनानां च त्वमेव हि । त्वमेव जगदाधारस्त्वमेव विश्वकारणम् ॥
त्वमेव पूज्यः सर्वेषां त्वदन्यो नास्ति मे गतिः । किं गुह्यं परमं लोके किमेकं सर्वसिद्धिदं ॥
किमेकं परमं श्रेष्ठं को योगः स्वर्ग मोक्षदः । विना तीर्थेन तपसा विना दानैर्विना मखैः ॥
विना लयेन ध्यानेन नरः सिद्धिमवाप्नुयात् । कस्मादुत्पद्यते सृष्टिः कस्मिंश्च प्रलयो भवेत् ॥
कस्मादुत्तीर्यते देव संसारार्णव सङ्कटात् । तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महेश्वर ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

साधु साधु त्वया पृष्टं पार्वतीप्रिय नन्दन । अस्ति गुह्यतमं पुत्र कथयिष्याम्यसंशयम् ॥
सत्वं रजस्तमश्चैव ये चान्ये महदादयः । ये चान्ये बहवो भूताः सर्वे प्रकृति सम्भवाः ॥
सैव देवी परा शक्तिर्महात्रिपुर- सुन्दरी । सैव प्रसूयते विश्वं विश्वं सैव प्रपास्यति ॥
सैव संहरते विश्वं जगदेतच्चराचरं । आधारः सर्वभूतानां सैव रोगार्ति हारिणी ॥
इच्छाज्ञानक्रियाशक्ति र्ब्रह्माविष्णुशिवात्मिका । त्रिधा शक्तिस्वरूपेण सृष्टिस्थितिविनाशिनी ॥
सृज्यते ब्रह्मरूपेण विष्णुरूपेण पाल्यते । ह्रियते रुद्ररूपेण जयदेतच्चराचरम् ॥
यस्या योनौ जगत्सर्वमद्यापि परिवर्तते । यस्यां प्रलीयते चान्ते यस्यां च जायते पुनः ॥
यां समाराध्य त्रैलोक्ये सम्प्राप्यं पदमुत्तमम् । तस्या नाम सहस्त्रं तु कथयामि शृणुष्व तत् ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुर- सुन्दरी सहस्त्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य श्रीभगवान् दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः। **जगतीच्छन्दः। समस्त प्रकट गुप्त सम्प्रदाय कुलकौलोत्तीर्ण निगर्भ रहस्याचिन्त्यप्रभावती देवता। ॐ बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा। ध्यायेद् यथा-

॥ ध्यानम् ॥

ॐ आधारे तरुणार्कबिम्बरुचिरं हेमप्रभं वाग्भवं । बीजं मन्मथमिन्द्रगोप सदृशं हृत्- पङ्कजे संस्थितम् ॥
विष्णुब्रह्मपदस्थ शक्ति कलितं सोमप्रभा भासुरं । ये ध्यायन्ति पदत्रयं तवशिवे ते यांति सौख्यं तदम् ॥

मानसोपचार से देवी का पूजन करें पश्चात् सहस्त्रनाम पाठ करें।

कल्याणी कमला काली कराली कामरूपिणी । कामाख्या कामदा काम्या कामना कामचारिणी ॥
कालरात्रिर्महारात्रिः कपाली कालरूपिणी । कौमारी करुणा मुक्तिकल्मष - नाशिनी ॥
कात्यायनी कराधारा कौमुदी कमलप्रिया । कीर्तिदा बुद्धिदा मेधा नीतिज्ञा नीतिवत्सला ॥
माहेश्वरी महामाया महातेजा महेश्वरी । महाजिह्वा महाघोरा महादंष्ट्रा महाभुजा ॥
महामोहान्ध कारघ्नी महामोक्ष - प्रदायिनी । महादारिद्र्यनाशा च महाशत्रु विमर्दिनी ॥
महामाया महावीर्या महापातक - नाशिनी । महामखा मन्त्रमयी मणिपूरक वासिनी ॥

मानसी मानदा मान्या मनश्चक्षूरणे चरा । गणमाता च गायत्री गणगन्धर्व सेविता ।
गिरिजा गिरिशा साध्वी गिरिस्था गिरिवल्लभा । चण्डेश्वरी चण्डरूपा प्रचण्डा चण्डमालिनी ॥
चर्विका चर्चिकाकारा चण्डिका चारुरूपिणी । यज्ञेश्वरी यज्ञरूपा जपरूपा जपयज्ञपरायणा ॥
यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञसम्भवा । सिद्धयज्ञक्रिया सिद्धिर्यज्ञाङ्गी यक्षरक्षिका ॥
यज्ञक्रिया यज्ञरूपा यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका । यज्ञक्रिया च यज्ञा च यज्ञा यज्ञक्रियालया ॥
जालन्धरी जगन्माता जातवेदा जगत्प्रिया । जितेन्द्रिया जितक्रोधा जननी जन्मदायिनी ॥
गङ्गा गोदावरी चैव गोमती च शतद्रुका । घर्घरा वेदगर्भा च रेचिका समवासिनी ॥
सिन्धुर्मन्दाकिनी क्षिप्रा यमुना च सरस्वती । भद्रा रागविपाशा च गण्डकी विन्ध्यवासिनी ॥
नर्मदा सिन्धु कावेरी वेत्रवत्या सुकौशिकी । महेन्द्रतनया चैव अहल्या चर्मकावती ॥
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका । पुरी द्वारावती तीर्था महाकिल्विष नाशिनी ॥
पद्मिनी पद्ममध्यस्था पद्मकिञ्जल्क वासिनी । पद्मवक्त्रा चकोराक्षी पद्मस्था पद्मसम्भवा ॥
ह्रींकारी कुण्डलाधारा हृत्पद्मस्था सुलोचना । श्रींकारी भूषणा लक्ष्मीः क्लींकारी क्लेशनाशिनी ॥
हरिवक्त्रोद्भवा शान्ता हरिवक्त्रकृतालया । हरिवक्त्रोद्भवा शान्ता हरिवक्षःस्थल स्थिता ॥
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी । विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला ॥
विश्वेश्वरी च विश्वात्मा विश्वेशीविश्वरूपिणी । विश्वेश्वरी शिवाराध्या शिवनाथा शिवप्रिया ॥
शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी । भवेश्वरी भवाराध्या भवेशी भवनायिका ॥
भवमाता भवागम्या भवकण्टक नाशिनी । भवप्रिया भवनन्दा भवानी भवमोहिनी ॥
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी । ब्रह्मेशी ब्रह्मदा ब्रह्मा ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥
दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी । सुगमा दुर्गमा दान्ता दयादोग्ध्री दुरापहा ॥
दुरितघ्नी दुराध्यक्षा दुरा दुष्कृत - नाशिनी । पञ्चास्या पञ्चमी पूर्णा पूर्णपीठ निवासिनी ॥
सत्वस्था सत्वरूपा च सत्वस्था सत्वसम्भवा । रजस्था च रजोरूपा रजोगुण समुद्भवा ॥
तमस्था च तमोरूपा तामसी तामसप्रिया । तमोगुण समुद्भूता सात्विकी राजसी कला ॥
काष्ठा मुहूर्ता निमिषा अनिमेषा ततः परं । अर्द्धमासा च मासा च सम्वसर स्वरूपिणी ॥
योगस्था योगरूपा च कल्पस्था कल्परूपिणी । नानारत्नविचित्राङ्गी नानाऽऽभरणमण्डिता ॥
विश्वात्मिका विश्वमाता विश्वपाशविनाशिनी । विश्वासकारिणी विश्वाविश्वशक्तिर्विचक्षणा ॥
जपा कुसुम सङ्काशा दाडिमीकुसुमोपमा । चतुरङ्गी चतुर्बाहुश्चतुराचार वासिनी ॥
सर्वेशी सर्वदा सर्वा सर्वदायिनी । माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमङ्गला ॥
नलिनी नन्दिनी नन्दा आनन्दानन्द वर्द्धिनी । व्यापिनी सर्वभूतेषु भवभारविनाशिनी ॥
सर्वशृङ्गार वेषाढ्या पाशाङ्कुश करोद्यता । सूर्यकोटि सहस्राभा चन्द्रकोटि निभानना ॥

गणेशकोटिलावण्या विष्णुकोट्यरिमर्दिनी । दावाग्नि कोटि दलिनी रुद्रकोट्युग्ररूपिणी ॥
समुद्रकोटि गम्भीरा वायुकोटिमहाबला । आकाशकोटिविस्तारा यमकोटि भयङ्करी ॥
मेरुकोटि समुच्छ्राया गणकोटि समृद्धिदा । निष्कस्तोका निराधारा निर्गुणा गुणवर्जिता ॥
अशोका शोक रहिता तापत्रय विवर्जिता । वसिष्ठा विश्वजननी विश्वाख्या विश्ववर्द्धिनी ॥
चित्रा विचित्रचित्राङ्गी हेतुगर्भा कुलेश्वरी । इच्छाशक्तिर्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः शुचिस्मिता ॥
शुचिः स्मृतिमयी सत्या श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया । महासत्वमयी सत्वा पञ्चतत्त्वोपरिस्थिता ॥
पार्वती हिमवत्पुत्री पारस्था पाररूपिणी । जयन्ती भद्रकाली च अहल्या कुलनायिका ॥
भूतधात्री च भूतेशी भूतस्था भूतभाविनी । महाकुण्डलिनी शक्तिर्महाविभव वर्द्धिनी ॥
हंसाक्षी हंसरूपा च हंसस्था हंसरूपिणी । सोमसूर्याग्नि मध्यस्था मणिमण्डलवासिनी ॥
द्वादशार सरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी । अकलङ्का शशाङ्काभा षोडशार निवासिनी ॥
डाकिनी राकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा । शाकिनी हाकिनी चैव षट्चक्रेषु निवासिनी ॥
सृष्टिस्थितिविनाशिनी सृष्टिस्थित्यंतकारिणी । श्रीकण्ठप्रियहृत्कंठा नन्दाख्या विंदुमालिनी ॥
चतुष्षष्टि कलाधारा देहदण्ड समाश्रिता । माया काली धृतिर्मेधा क्षुधा तुष्टिर्महाद्युतिः ।
हिंगुला मंगला सीता सुषुम्ना मध्यगामिनी । परघोरा करालाक्षी विजया जयदायिनी ॥
हृत्पद्मनिलया भीमा महाभैरव नादिनी । आकाश लिङ्गसम्भूता भुवनोद्यान वासिनी ॥
महत् सूक्ष्मा च कङ्काली भीमरूपा महाबला । मेनकागर्भ सम्भूता तप्तकाञ्चन सन्निभा ॥
अन्तरस्था कूटबीजा त्रिकूटाचल वासिनी । वर्णाख्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्ण भेदिनी ॥
विद्याधरी लोकधात्री अप्सरा अप्सरःप्रिया । दीक्षा दाक्षायणी दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥
यशःपूर्णा यशोदा च यशोदागर्भसम्भवा । देवकी देवमाता च राधिका कृष्णवल्लभा ॥
अरुंधती शचीन्द्राणी गांधारी गंधमालिनी । ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी ॥
लम्बोदरी च लम्बोष्ठी जाम्बवन्ती जलोदरी । महोदरी मुक्तकेशी मुक्तकामार्थसिद्धिदा ॥
तपस्विनी तपोनिष्ठा सुपर्णा धर्मवासिनी । वाणचापधरा धीरा पाञ्चाली पञ्चमप्रिया ॥
गुह्याङ्गी च सुभीमा च गुह्यतत्त्वा निरंजना । अशरीरा शरीरस्था संसारार्णव तारिणी ॥
अमृता निष्कला भद्रा सकला कृष्णपिङ्गला । चक्रप्रिया च चक्राह्वा पञ्चचक्रादिदारिणी ॥
पद्मराग प्रतीकाशा निर्मलाकाश सन्निभा । अधःस्था ऊर्ध्वरूपा च ऊर्ध्वपद्मनिवासिनी ।
कार्यकारण कर्तृत्वे शश्वद्रूपेषु संस्थिता । रसज्ञा रसमध्यस्था गन्धस्था गन्धरूपिणी ॥
परब्रह्मस्वरूपा च परब्रह्मनिवासिनी । शब्दब्रह्मस्वरूपा च शब्दस्था शब्दवर्जिता ॥
सिद्धिःबुद्धिः पराबुद्धिः सन्दीप्तिर्मध्यसंस्थिता । स्वगुह्या शांभवी शक्तिस्तत्त्वस्था तत्त्वरूपिणी ॥
शाश्वती भूतमाता च महाभूताधिप प्रिया । शुचिप्रेता धर्मसिद्धिर्धर्मवृद्धिः पराजिता ॥

कामसन्दीपिनी कामा सदा कौतूहलप्रिया । जटाजूटधरा मुक्ता सूक्ष्मा शक्तिविभूषणा ॥
द्वीपिचर्मपरीधाना चीरवल्कल धारिणी । त्रिशूलडमरुधरा नरमाला विभूषणा ॥
अत्युग्ररूपिणी चोग्रा कल्पान्त दहनोपमा । त्रैलोक्यसाधिनी साध्या सिद्धिसाधकवत्सला ॥
सर्वविद्यामयी सारा चासुराणां विनाशिनी । दमनी दामिनी दान्ता दयादोग्ध्री दुरापहा ॥
अग्निजिह्वोपमा घोरा घोर घोर तराननना । नारायणी नारसिंही नृसिंहहृदये स्थिता ॥
योगेश्वरी योगरूपा योगमाता च योगिनी । खेचरी खचरी खेल । निर्वाणपद संश्रया ॥
नागिनी नागकन्या च सुवेशा नागनायिका । विषज्वालावती दीप्ता कलाशत विभूषणा ॥
तीव्रवक्त्रा महावक्त्रा नागकोटित्वधारिणी । महासत्वा च धर्मज्ञा धर्माति सुखदायिनी ॥
कृष्णमूर्द्धा महामूर्द्धा घोरमूर्द्धा वरानना । सर्वेन्द्रिय मनोन्मत्ता सर्वेन्द्रिय मनोमयी ॥
सर्वसंग्रामजयदा सर्वप्रहरणोद्यता । सर्वषोडोपशमनी सर्वारिष्टनिवारिणी ॥
सर्वैश्वर्य समुत्पन्ना सर्वग्रहविनाशिनी । मातङ्गी मत्तमातङ्गी मातङ्गीप्रिय मण्डला ॥
अमृतोदधि मध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता । अमृतोदधि मध्यस्था प्रवालवसनाम्बुजा ॥
मणिमण्डलमध्यस्था ईषत् प्रहसिताननना । कुमुदा ललिता लोला लाक्षालोहित लोचना ॥
दिग्वासा देवदूती च देवदेवाधि देवता । सिंहोपरि समारूढ़ा हिमाचलनिवासिनी ॥
अट्टाट्टहासिनी घोरा घोरदैत्य विनाशिनी । अत्युग्ररक्त वस्त्राभा नागकेयूर मण्डिता ॥
मुक्ताहार लतोपेता तुङ्गपीन पयोधरा । रक्तोत्पल - दलाकारा मदाघूर्णित - लोचना ॥
समस्त देवता मूर्तिः सुरारि - क्षयकारिणी । खड्गिनी शूलहस्ता च चक्रिणी चक्रमालिनी ॥
शंखिनी चापिनी वाणा वज्रिणी वज्रदण्डिनी । आनन्दोदधि मध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता ॥
नानाभरण दीप्ताङ्गी नानामणिविभूषिता । जगदानन्दसम्भूता चिन्तामणि गुणान्विता ॥
त्रैलोक्य नमिता तुर्या चिन्मयानन्द रूपिणी । त्रैलोक्य नन्दिनी देवी दुःखं दुस्स्वप्न नाशिनी ॥
घोराग्निदाह शमनी राज्यदेवार्थ साधिनी । महाऽपराध - राशिघ्नी महाचौर - भयापहा ॥
रागादिदोष रहिता जरामरण वर्जिता । चन्द्रमण्डल मध्यस्था पीयूषार्णव सम्भवा ॥
सर्वदेवैः स्तुता देवी सर्वसिद्धैर्नमस्कृता । अचिन्त्यशक्तिरूपा च मणिमन्त्रमहौषधी ॥
अस्तिस्वस्तिमयी बाला मलयाचल वासिनी । धात्री विधात्री संहारी रतिज्ञा रतिदायिनी ॥
रुद्राणी रुद्ररूपा च रुद्ररौद्रार्त्तिनाशिनी । सर्वज्ञा चैव धर्मज्ञा रसज्ञा दीनवत्सला ॥
अनाहता त्रिनयना निर्भारा निर्वृतिः परा । पराऽघोरा करालाक्षी सुमतीश्रेष्ठदायिनी ॥
मन्त्रालिका मन्त्रगम्या मन्त्रमाला सुमंत्रिणी । श्रद्धानन्दा महाभद्रा निर्द्वन्द्वा निर्गुणात्मिका ॥
धरिणी धारिणी पृथ्वी धरा धात्री व सुन्धरा । मेरुमन्दर मध्यस्था स्थितिः शङ्करवल्लभा ॥
श्रीमती श्रीमयी श्रेष्ठा श्रीकरीभावभाविनी । श्रीदा श्रीमा श्रीनिवासा श्रीमती श्रीमतांगतिः ॥

उमा सारंगिणी कृष्णा कुटिला कुटिलालका । त्रिलोचना त्रिलोकात्मा पुण्यपुण्या प्रकीर्तिता ।
अमृता सत्यसङ्कल्पा सा सत्या ग्रंथि भेदिनी । परेशी परमा साध्या पराविद्या परात्परा ॥
सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा सुरासुरनमस्कृता । प्रजा प्रजावती धन्या धनधान्य समृद्धिदा ॥
ईशानी भुवनेशानी भवानी भुवनेश्वरी । अनन्तानन्त महिता जगत्सारा जगद्भवा ॥
अचिंत्यात्मा चिंत्यशक्तिश्चिंत्याचिंत्यस्वरूपिणी । ज्ञानगम्या ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानिनी ज्ञानशालिनी ॥
असिता घोररूपा च सुधाधारा सुधावहा । भास्करी भास्वती भीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी ॥
अनसूया क्षमा लज्जादुर्लभा भरणात्मिका । विश्वघ्नी विश्ववीरा च विश्वघ्नी विश्वसंस्थिता ॥
शीलस्था शीलरूपा च शीला शीलप्रदायिनी । बोधनी बोधकुशला रोधनी बोधनी तथा ॥
विद्योतिनी विचित्रात्मा विद्युत्पटलसन्निभा । विश्वयोनिर्महायोनिः कर्मयोनिः प्रियात्मिका ॥
रोहिणी रोगशमनी महारोगज्वरापहा । रसदा पुष्टिदा पुष्टिर्मानदा मानवप्रिया ॥
कृष्णाङ्गवाहिनी कृष्णाकृष्णा कृष्णसहोदरी । शाम्भवी शम्भुरूपा च शंभुस्था शंभुसंभवा ॥
विश्वोदरी योगमाता योगमुद्राघ्न योगिनी । वागीश्वरी योगनिद्रा योगिनी - कोटिसेविता ॥
कौलिका मन्दकन्या च शृङ्गार पीठवासिनी । क्षेमङ्करी सर्वरूपा दिव्यरूपा दिगम्बरी ॥
धूम्रवक्त्रा धूम्रनेत्रा धूम्रकेशी च धूसरा । पिनाकी रुद्रवेताली महावेताल रूपिणी ॥
तपिनी तापिनी दीक्षा विष्णुविद्यात्मनाश्रिता । मंथरा जठरा तीव्रा अग्निजिह्वा भयापहा ॥
पशुघ्नी पशुरूपा च पशुहा पशुवाहिनी । पिता माता च धीरा च पशुपाश विनाशिनी ॥
चन्द्रप्रभा चन्द्ररेखा चन्द्रकांति विभूषिणी । कुङ्कमाङ्कित सर्वाङ्गी सुधा सद्गुरु लोचना ॥
शुक्लाम्बरधरा देवी वीणापुस्तक धारिणी । ऐरावत पद्मधरा श्वेतपद्मासन स्थिता ॥
रक्ताम्बरधरा देवी रक्तपद्मविलोचना । दुस्तरा तारिणी तारा तरुणी ताररूपिणी ॥
सुधाधारा च धर्मज्ञा धर्मसंगोपदेशिनी । भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥
भगबिम्बा भगक्लिन्ना भगयोनिर्भगप्रदा । भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥
भगेशी भगरूपा च भगगुह्या भगावहा । भगोदरी भगानन्दा भगस्था भगशालिनी ॥
सर्वसंक्षोभिणी शक्तिस्सर्वविद्राविणी तथा । मालिनी माधवी माध्वी मधुरूपा महोत्कटा ॥
भरुण्ड - चन्द्रिका ज्योत्स्ना विश्वचक्षुस्तमोपहा । सुप्रसन्ना महादूती यमदूती भयङ्करी ॥
उन्मादिनी महारूपा दिव्यरूपा सुरार्चिता । चैतन्यरूपिणी नित्या क्लिन्ना काममदोद्धता ॥
मदिरानन्दकैवल्या मदिराक्षी मदालसा । सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धाद्या सिद्धसंभवा ॥
सिद्धर्द्धिः सिद्धमाता च सिद्धिः सर्वार्थसिद्धिदा । मनोमयी गुणातीता परंज्योतिःस्वरूपिणी ॥
परमेशी परगा पारापरा सिद्धिः परागतिः । विमला मोहिनी आद्या मधुपानपरायणा ॥
वेदवेदाङ्ग जननी सर्वशास्त्रविशारदा । सर्वदेवमयी विद्या सर्वशास्त्रमयी तथा ॥

सर्वज्ञानमयी देवी सर्वधर्ममयीश्वरी । सर्वयज्ञमयी यज्ञा सर्वमन्त्राधिकारिणी ॥
सर्वसम्पत् प्रतिष्ठात्री सर्वविद्राविणी परा । सर्वसंक्षोभिणी देवी सर्वमङ्गलकारिणी ॥
त्रैलोक्याकर्षिणी देवी सर्वाह्लादन कारिणी । सर्वसंमोहिनी देवी सर्वस्तंभन कारिणी ॥
त्रैलोक्य - जृम्भिणी देवी तथा सर्ववशङ्करी । त्रैलोक्य रञ्जिनी देवी सर्वसंपत्तिदायिनी ॥
सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी । सर्वसिद्धिप्रदा देवी सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥
सर्वप्रियकरी देवी सर्वमङ्गलकारिणी । सर्वकामप्रदा देवी सर्वदुःखविमोचिनी ॥
सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी । सर्वाङ्गसुन्दरी माता सर्वसौभाग्य दायिनी ॥
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्य फलप्रदा । सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधि विनाशिनी ॥
सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा । सर्वानन्दमयी देवी सर्वेच्छायाः स्वरूपिणी ॥
सर्वलक्ष्मीमयी विद्या सर्वेप्सित फलप्रदा । सर्वारिष्ट प्रशमनी परमानन्द दायिनी ॥
त्रिकोणनिलया त्रिस्था त्रिमात्रा त्रितनुस्थिता । त्रिवेणी त्रिपथा त्रिस्था त्रिमूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी ॥
त्रिधाम्नी त्रिदशाध्यक्षा त्रिवित्रि पुरवासिनी । त्रयीविद्या च त्रिशिरा त्रैलोक्या च त्रिपुष्करा ॥
त्रिकोटरस्था त्रिविधा त्रिपुरा त्रिपुरात्मिका । त्रिपुरा श्री त्रिजननी त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी ॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं त्रिपुरसुन्दर्याः स्तोत्रं नाम साहस्त्रकं । गुह्याद् गुह्यतरं पुत्र तव प्रीत्यै प्रकीर्तितम् ॥१॥
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं प्रयत्नतः । नातः परतरं पुण्यं नातः परतरं तपः ॥२॥
नातः परतरं स्तोत्रं नातः परतरा गतिः । स्तोत्रं सहस्त्र नामाख्यं मम वक्त्राद् विनिर्गतम् ॥३॥
यः पठेत् प्रयतो भक्त्या शृणुयाद् वा समाहितः । मोक्षार्थी लभते मोक्षं स्वर्गार्थी स्वर्गमाप्नुयात् ॥४॥
कामांश्च प्राप्नुयात् कामी धनार्थी च लभेद् धनं । विद्यार्थी लभते विद्यां यशोऽर्थी लभते यशः ॥५॥
कन्यार्थी लभते कन्या सुतार्थी लभते सुतम् । गुर्विणी जनयेत् पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ॥६॥
मूर्खोऽपि लभते शास्त्रं हीनोऽपि लभते गतिम् । संक्रान्त्यां वार्कामावस्यामष्टम्यां च विशेषतः ॥७॥
पौर्णमास्यां चतुर्दश्या नवम्यां भौमवासरे । पठेद् वा पाठयेद् वापि शृणुयाद् वा समाहितः ॥८॥
स मुक्तो सर्वपापेभ्यः कामेश्वर समोभवेत् । लक्ष्मीवान् धर्मवाश्चैव वल्लभस्सर्व योषिताम् ॥९॥
तस्य वश्यं भवेदाशु त्रैलोक्यं सचराचरम् । रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा विष्णुं दृष्ट्वा च दानवाः ॥१०॥
यथाहिर्गरुडं दृष्ट्वा सिंहं दृष्टा यथा गजाः । कीटवत् प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रावलोकनात् ॥११॥
अग्निचौरभयं तस्य कदाचिन्नैव सम्भवेत् । पातका विविधाः शान्तिर्मेरु - पर्वत सन्निभाः ॥१२॥
यस्मात् तच्छृणुयाद् विघ्नांस्तृणं वह्निहुतं यथा । एकदा पठनादेव सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१३॥
दशधा पठनादेव वाचा सिद्धिः प्रजायते । शतधा पठनाद् वापि खेचरो जायते नरः ॥१४॥
सहस्त्रदशसंख्यातं यः पठेद् भक्तिमानसः । माताऽस्य जगतां धात्री प्रत्यक्षा भवति ध्रुवम् ॥१५॥
लक्षपूर्णे यथा पुत्र स्तोत्रराजं पठेत् सुधीः । भवपाश विनिर्मुक्तो मम तुल्यो न संशयः ॥१६॥

सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सकृज्जप्त्वा लभेन्नरः । सर्ववेदेषु यत् प्रोक्तं तत् फलं परिकीर्त्तितम् ॥१७॥
भूत्वा च बलवान्पुत्र धनवान् सर्वसम्पदः ।
देहान्ते परमं स्थानं यत् सुरैरपि दुर्लभम् ॥
स यास्यति न सन्देहः स्तवराजस्य कीर्त्तनात् ॥१८॥

॥ श्रीवामकेश्वरतन्त्रे षोडश्याः सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री तुरीया षोडशी त्रैलोक्य विजयं कवच स्तोत्रम् ॥

कैलास शिखरे रम्ये देव देवं जगद्गुरुम् । शङ्करं परिपप्रच्छ कुमारः शिखि वाहनः ॥

॥ श्रीस्कन्द उवाच ॥

जनक श्रीगुरो देव पुत्र वात्सल्य वर्धन । कवचं षोडशाक्षर्या वद मे परमेश्वर ॥

॥ श्रीईश्वर उवाच ॥

शृणु पुत्र महाभाग! कवचं मन्त्र विग्रह । गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गुह्याद् गुह्यतरं महत् ॥
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि नाख्यातं यस्य कस्यचित् । ब्रह्मेश विष्णु शक्रेभ्यो मया न कथितं पुरा ॥
देवाग्रे नैव दैत्याग्रे न शौनक गुणाग्रके । तव भक्त्या तु कवचं गोप्यं कर्तुं न शक्यते ॥
एकादश महाविद्या स वर्णा सद् गुणान्विता । सर्वशक्ति प्रधाना हि कवचं मन्मुखोदितं ॥
गणेशश्च रविर्विष्णुः शिव शक्तिश्च भैरवः । पञ्च तत्त्वादि सर्वेषां वर्मावर्तेन तुष्यताम् ॥
ऊर्ध्वाम्नायं महामन्त्रं कवचं निर्मितं मया । त्रैलोक्यविजयं दिव्यं तुरीयं कवचं शुभं ॥

॥ श्रीस्कन्द उवाच ॥

कवचं परमं देव्याः श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो । यत् सूचितं त्वया पूर्वं धर्म कामार्थ मोक्षदं ॥
तद् विनाऽऽराधनं नास्ति जपं ध्यानादि कर्मणि । तस्याश्च कवचं यस्मात् तस्मात् तद् वद मे प्रभो ॥

॥ श्रीईश्वर उवाच ॥

शृणु पुत्र महाप्राज्ञ! रहस्याति रहस्यकम् । तुरीयं कवचं दिव्यं सर्वमन्त्र मयं शुभं ॥

॥ विनियोगः ॥

पूजान्ते तु जपात् पूर्वं कवचं समुदीरयेत् । अस्य श्रीकवचस्यास्य ऋषिरानन्द भैरवः ॥
श्रीविद्या देवताश्छन्दो गायत्री रुचि वृत्तिकं । रमाबीजं परा शक्तिर्वाग्भवं कीलकं स्मृतं ॥

॥ करन्यासः ॥

मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे तु विनियोगतः । अङ्गुष्ठाग्रे वाग्भवं च हृल्लेखां तर्जनी न्यसेत् ॥
लक्ष्मी बीजं मध्यमायामङ्गिराऽनामिका तथा । पराबीजं कनिष्ठायां लक्ष्मीं करतले न्यसेत् ॥

॥ षडङ्गन्यास ॥

हृदये वाग्भवं न्यस्यात् परां शिरसि च न्यसेत् । लक्ष्मीबीजं शिखायां च कवचे वाग्भवं न्यसेत् ॥

॥दिग्बन्धन ॥

हृल्लेखां नेत्रयोर्न्य स्यादस्त्रं तु कमलां न्यसेत् । भूर्भुवः स्वरिति मनुना दिग्-बन्धनमाचरेत् ॥
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि धर्म कामार्थ मोक्षदं । न्यास ध्यानादिकं सर्वं कृत्त्वा तु कवचं पठेत् ॥

॥ ध्यानम् ॥

क्षीरसागर मध्यस्थे रत्नद्वीपे मनोहरे । रत्नसिंहासने दिव्ये तत्र देवीं विचिन्तयेत् ॥
कोटिसूर्य प्रतीकाशां चन्द्रकोटि निभाननां । दाडिमी पुष्प सङ्काशां कुकुंमोदर सन्निभां ॥
जपा कुंसुम सङ्काशां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजां । पाशांकुशधरां रम्यामिक्षु चापशरान्वितां ॥
कर्पूर शकलोन्मिश्र ताम्बूल पूरिताननाम् । सर्वशृंगार वेषाढ्यां सर्वावयव शोभिनीं ॥
सर्वायुध समायुक्तां प्रसन्नवदने क्षणाम् । सपरिवार सावरणां सर्वोपचारार्चिताम् ॥
एवं ध्यायेत् ततो वीर! कवचं सर्वकामदं । आवर्तयेत् स्वदेहे तु सर्वरक्षाकरं शुभम् ॥

॥ कवच स्तोत्रम् ॥

शिखायां मे ह्सौः पातु स्हौ मे ब्रह्मरन्ध्रके । सर्वदा ह्लौं च मां पातु वाम दक्षिण भागयोः ॥
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदा पातु षोडशी सुन्दरी परा । श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वदा पातु ऐं सौं ॐ पातु मे सदा ॥
ह्रीं श्रीं ऐं पातु सर्वत्र क्नौं रं लं ह्रीं सदा मम । क्लीं हसकहल ह्रीं मे पातु सदा सौः क्लीं मम ॥
सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रिया पातु सबीजा षोडशाक्षरी । आपाद मस्तकं पातु महात्रिपुरसुन्दरी ॥
श्रीजयन्ती मस्तके मां पातु नित्यं विभूतये । ह्रीं मङ्गलासदा नेत्रे पातु सर्वार्थ सिद्धये ॥
क्लीं कालिका कर्णयुग्मं पातु सर्वशुभावहा । ऐं भारती घ्राण युग्मं पातु सर्वजयाप्तये ॥
सौः कराली मुखं पातु सर्वलोक वशाप्तये । ऐं शारदा सदा वाचं पातु साहित्य सिद्धये ॥
ॐ कपालिनी मे कर्णौं पातु सद्गान सिद्धये । ह्रीं दुर्गासहिता पातु स्कन्ध देशौ सदा मम ॥
श्रीं क्षमसहिता पातु हृदयं मम सर्वदा । ककार सहिता धात्री पार्श्वयुग्मं सदाऽवतु ॥
एकार सहिता स्वाहा पातु मे जठरं सदा । ईकार सहिता नाभिं स्वधा मां सर्वदाऽवतु ॥
लकार सहिता ब्राह्मी पृष्ठदेशं सदाऽवतु । ह्रींकार सहमाहेशी कटिं पातु सदा मम ॥
हकार सहिता गुह्यं कौमारी पातु सर्वदा । सकार सहिता पातु वैष्णवी गुद देशकम् ॥
ककार युक्ता वाराही ह्यूरु युग्मं सदाऽवतु । हकार सहिता जानु युग्मं माहेन्द्री मेऽवतु ॥
लकार युक्ता चामुण्डा जङ्घा युग्मं सदाऽवतु । ह्रींकार सहिता गुल्फयुग्मं लक्ष्मीः सदाऽवतु ॥
सकार युक्ता मे पाद युग्मेऽव्यात् शिवदूतिका । ककार सहिता प्राच्यां चण्डा रक्षतु सर्वदा ॥
लकारसहिताऽऽग्नेयां प्रचण्डा सर्वदाऽवतु । ह्रींङ्कार सहिता पातु दक्षिणे चण्डनायिका ॥
सौःकार सहिता चण्डवेगिनी नैर्ऋतेऽवतु । ऐङ्कार संयुता चण्डप्रकाशा पातु पश्चिमे ॥
क्लींकार सहिता पातु चण्डिका वायु गोचरे । ह्रींकार सहिता पातु चामुण्डा चोत्तरे मम ॥

श्रीङ्कार सहिता रौद्री पायादैशान्यके मम । ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेत् षोडशी सह सर्वदा ॥
अधस्ताद् वैष्णवी रक्षेत् पुनः षोडशी संयुता । सर्वाङ्गं सर्वदा पातु सहिता भुवनेश्वरी ।
जले दावानलेऽरण्ये महोत्पाते च सागरे । दिवारात्रौ च मे रक्षेद् देवी तार त्रयी मम ।

॥फलश्रुति॥

इदं तुरीया सहितं षोडशाक्षरिकात्मकं । अभेद्यं कवचं त्वेदं मन्त्रबीज समन्वितम् ॥
योगिनी चक्रसहितं तवप्रीत्या प्रकाशितम् । धारयस्व मयादत्तं गोपनीयं सुपुत्रक ॥
न पुत्राय न शिष्याय बन्धुभ्यो न प्रकाशयेत् । इदं त्रिपुर सुन्दर्यास्तुरीयं कवचं शुभम् ॥
गोपनीयं प्रयत्नेन मन्त्रवर्णक्रमोदितम् । प्रातरारभ्य सायान्तं कर्म वेदान्तमोक्तिकम् ॥
तत्फलं समवाप्नोति तुरीय कवच व्रतम् । दशधा मातृकान्यासं लघुषोढा ततः परम् ॥
शक्तिन्यासं महाषोढां कृत्वा बाह्यान्तरं न्यसेत् । श्रीविद्यायां महान्यासं क्रमात् सावर्णतां व्रजेत् ॥
पूजान्ते यत्फलं प्राप्तं तत्फलं कवचव्रते । सवत्सां दुग्धसहितां साधकः कामधेनुवत् ॥
त्रैलोक्य विजयायेदं कवचं परमाद्भुतम् । यथा चिन्तामणौ पुत्र! मनसा परिकल्पिते ॥
तत्सर्वं लभते शीघ्रं मम वाक्यान्न संशयः । सायुरारोग्यमैश्वर्यं सदा सम्पत्प्रवर्धनम् ॥
कवचस्य प्रभावेण त्रैलोक्य विजयीभवेत् । अदीक्षिताय न देयं श्रद्धा विरहितात्मने ॥
नाख्येयं यस्य कस्यापि कृतघ्नायाततायिने । शान्ताय गुरुभक्ताय देयं शुद्धाय साधने ॥
अज्ञात्वा कवचं चेदं यो जपेत् पर देवताम् । सिद्धिर्न जायते वत्स! कल्पकोटि शतैरपि ॥
स एव च गुरु साक्षात् कवचं यस्तु पुत्रक । त्रिसन्ध्यं च पठेन्नित्यमिदं कवचमुत्तमम् ॥
निशार्धे जपकाले वा प्रत्यहं यन्त्रमग्रतः । जगद्वश्यं भवेच्छीघ्रं नात्र कार्याविचारणा ॥
सप्तकोटि महामन्त्राः सवर्णाः सगुणान्विताः । सर्वे प्रसन्नतां यान्ति सत्यं सत्यं न संशयः ॥
इति ते कथितं दिव्यं सगुणं भजन क्रमम् । निर्गुणं परमं वक्ष्ये तुरीयं कवचं शृणु ॥
कवचस्यास्य माहात्म्यं वर्णितुं नैव शक्यते । मूलादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं श्रीचक्रं समुदीरयेत् ॥
देहमध्ये च सर्वस्वं श्रीचक्रं चिन्तयेत् सुत । पञ्चविंशति तत्वं च अतलं वितलं तथा ॥
सुतलं च तलातलं महातलं च पञ्चमम् । रसातलं षष्ठं वक्ष्ये सप्तमं पाताललोकम् ॥
भूर्भुवः स्वर्लोकमतो महल्लोक जनस्तथा । तपश्च सत्यलोकश्च भुवनानि चतुर्दश ॥
सर्वं श्रीभुवनं चैव निराकारं विचिन्तयेत् । मानसे पूजयेत् ध्यायेज्ज्योति रूपं सुचिन्मयं ॥
कवचं प्रजपेद् वत्स! राजराजेश्वरो भवेत् । इति परमरहस्यं सर्वमन्त्रार्थ सारं ।
भजति परम भक्त्या निश्चलं निर्मलत्वम् ॥
विलसित भुवि मध्ये पुत्रपौत्राभिवृद्धिं ।
धनसकल समृद्धिं भोग-मोक्षप्रदं च ॥

॥इतिश्री चूड़ामणौ श्रीशिव-स्कन्द संवादे त्रैलोक्य विजयं नाम श्रीतुरीया षोडशी श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी कवचं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री श्रीविद्या वृहत्कर्पूर स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र में श्लोक २ से ८ एवं १०-११ के अन्तर्गत कई मंत्रों के मंत्रोद्धार दिये गये हैं, पश्चात् श्रीचक्रराज महिमा अभिव्यक्त की गई है।

सपूज्य शुक्लारुण चक्र चारिणीं मूलादि विन्द्वान्तर्गतां विभावयन् ।
स्थिति स्वरूपां हृदयारविन्दगामीडेश पाशांकुश वाण चापिनीम् ॥१॥

कर्पूरं पूर रेफैर्विरहितममलं योनियुक्तं महेशीकारोपेतं ललज्जा युतमपि वरदे देवि! वाक् कूटमाहुः। एतन्नित्यं जपन्ति स्मरहरमहिले! तर्क काव्याऽऽगमज्ञास्तान् मुञ्चत्यब्ज हस्ता कथमपि न च ते साधकाः सम्भवन्ति॥२॥

ईशानः सोम मारौ गिरिश शत मखौ भौवने शाख्य बीजमित्थं ते काम कूटं प्रजपति सुजनो वारमेकं कदाचित्। पार्श्वे नृत्यन्ति कामाकुलित मृग दृशाः प्राणदाः साधकस्य नित्यं निर्वाणविद्या विलसति हृदयाम्भोज मध्ये च तस्य ॥३॥

सोमः कामेन्द्र लज्जायुतमिदमनिशं शक्ति कूटं तृतीयं प्रातर्यश्चन्द्र चूडां विकसित वदनाम्भोज संशोभितां त्वाम्। ध्यायन् राजाधि राजेश्वरि! जपति जनः शान्तचित्तः प्रकामं स स्यात् त्रैलोक्यनाथः सुर मुनि दनुजैः सेव्य मानो महात्मा ॥४॥

सर्वं वागादि कूट त्रयमपि ललिते! दिश्य कौलावतंसं, कौलज्ञानैक गम्यां धृत कुसुम धनुर्वाण पाशांकुशां त्वाम्। त्रैलोक्याकर्षकः स्याद् यदि जपति सदा भावयन् रक्त वर्णां प्रातः स्वान्तोपचारै रतुल्ति विभवेऽभ्यर्च्य मूलाम्बुजस्थाम् ॥५॥

जपित्वा लक्ष त्रयं ते मनुमनल मुखे तद् दशांशं विधाय कुर्याद् यश्चक्रपूजां सुरगणनमिते श्रीयुतः स्यात् स एव। पृथ्वी पालोत्तमाङ्गासृत मणिमुकुट ज्वालिनी राजितांघ्रिर्वाचालः काव्यकर्त्ताऽमर पुरगणिका चित्तचौरश्चिरायुः ॥६॥

वाक्कूटं तदनु तव शिवे! शक्ति कूटं नियोज्य श्रीयुक्तं मन्त्रमेतज्जपति परशिवां षोडशीं षोडशार्णाम्। ध्यायेत् पाशांकुशां त्वामभय वर करां सोमसूर्याग्नि नेत्रां रक्तां चन्द्रावतंसां स भवति सकलैश्वर्य युक्तः कुलज्ञः ॥७॥

तारं मायां स पद्मां तदनु निगदितं देवि! कूट त्रयं च श्रीमाया काम वाणी स्मर हर दयिते! शक्ति युक्तैस्तदेतैः। इत्युक्तैः पञ्च बीजैः कृत पुटित महाबीज षट्कं विधाय श्रीविद्ये बीजरूपं भवति तव मनुं श्रीयुतं मोक्षदं च ॥८॥

मातः श्रीमन्त्रराज स्मरति यदि जनो वारमेकं जितात्मा कामेशाङ्क स्थितां त्वामरुणित वसनां सुस्मितामम्बुजस्थाम्। खं व्योमाकाश चन्द्र प्रमित दल युताम्भोज मध्ये विभाव्य सर्वैः पापर्विमुक्तस्तदवधि चरितैः पुण्यरूपः स एव ॥९॥

तारान्ते वाक् त्रयान्ते स्मरमपि कमलान्तेऽपि तच्छक्तिकूटं पूर्वोक्तैः पञ्च बीजैः कृतपुटित महामन्त्र राजं तवेदम्। ध्यायन् विद्याक्ष पाशांकुश करकमलां गौर वर्णां त्रिनेत्रां सर्वज्ञः। स्याज्जपेद् यः कुलपथ विधिना श्रीमहाषोडशीं त्वाम् ॥१०॥

शक्त्याख्यं चैव कामं प्रथम निगदितं कूटमब्जासनाढ्यां मायावेदादि युक्तं पुटितमपि सदा पञ्चबीजैः पुरोक्तैः। ध्यायन् नीलाम्बरां त्वां शशि सकल धरां पान पात्रां त्रिनेत्रां त्रैलोक्यं क्षोभयेद् यः प्रजपति विधिना दीक्षितः कौलिकेन्द्रः ॥११॥

मातः! श्रीमन्त्रमेतत् त्रितयमपि सदा दिव्य भावानुरक्तो दीक्षां सम्प्राप्य यत्नाज्जपति निजगुरु प्रोक्त मार्गेण कश्चित्। जीवन्मुक्तः स एव त्रिभुवन विजयी सर्व वेद गमज्ञः साक्षान्नारायणस्य प्रतिनिधिरचिरात् त्वत् पदं प्राप्नुयाद् यः ॥१२॥

प्रातः श्रीचक्र संस्थामविरतं महिलाभिर्युतः साधकेन्द्रः शुक्लैर्वोक्तोपचारैः क्रमपथनिहितैर्मन्त्रवर्यैः समर्च्य। साङ्गां साम्नाय विद्यामकुलकुलगतां षोडशाधारमूलां ध्यायन् यो वर्ण लक्षं जपति शिव समः स्यान्महाषोडशीं त्वाम् ॥१३॥

त्रिवृत्तं भूगेहे रसविधु - दलान्तर्वसुदलं ततो मन्वस्रान्तः सुललितदशार द्वयमपि ।
तदन्तः सर्पारं जननि! कुल बालार्क सदृशं, त्रिकोणं तन्मध्ये विमल तर विन्दुर्भगवति ॥१४॥

तवेदं श्रीचक्रं जगदखिलमात्मा त्वमिति च शरीरं तच्छैवं चिदपि परमे शाक्तममलम् ।
गुरोर्ज्ञात्वा सर्वं विलिखति सदा भावनपरस्त्रि लक्षं सिन्दूरैः स भवति नरेन्द्रः क्षितितले ॥१५॥

सुधाक्तैः सिन्दूरैरपि कुलरजोभिः सुरुचिरं, विलिख्य श्रीचक्रं प्रणमति च सन्तर्पयति यः ।
निशायां प्रालेयाचल कुल महोत्तंस कलिके, भवेच्छक्त्या युक्तः सकल जगतामेव वशकृत् ॥१६॥

गुरुप्रोक्तैर्मार्गैः परशिवमुखाम्भोज मुदिते, स्वदेहे श्रीचक्रं सततमपि सञ्चिन्तयति यः ।
स योगीशो वाग्मी वर निकर चूडामणिरपि, प्रवालप्राले य प्रभजति सुगुप्तं प्रभवति ॥१७॥

तदस्मिञ्छ्री पीठाश्रितरुचिर सिंहासनगतां, महापञ्च प्रेतैः सुर निकर कोलैश्च सहिताम् ।
समुक्ता माणिक्यैरसुर विवुधालभ्य मणिभिः, कृताङ्गालङ्कारां जितमदन रूपां त्रिनयनाम् ॥१८॥

नवीनादित्याभां धृत शशिकलां मुक्त चिकुरां, शरांश्चापं पाशं शृणिमपि धृतां हस्त कमलैः ।
महाकामेशाङ्के - कृतनिवसतीं रक्तवदनां, स्मितं कामं दृष्ट्वा स्मितमुख सरोजां परशिवाम् ॥१९॥

जनो योध्यायेत् त्वामकुलकुलमार्ग क्रमयुतः, समर्चायां नित्यं भुवन भय भङ्ग व्यासनिनि ।
मयूखाभिस्ताभिः प्रकट वदनाभिश्च सहितां, चतुः पीठासीनां त्रिदशगण वन्द्यः स भवति ॥२०॥

शिवे! त्वं संक्षोभिण्यसि जननि! विद्रावणकरी, परे! सर्वाकर्षिण्यसि सुललिते! सर्व वशिनी ।
अजे! सर्वोन्मादिन्यसि भगवति! त्वं त्रिनयने, त्वमेका कल्याणीश्वरि! कुलमहेश्यंकुशधरी ॥२१॥

भवाधारे खेचर्यसि जननि! बीजा त्वमसि च, महायोनिस्त्वं वै निखिलभुवनानामपि सदा ।
त्रिखण्डारूपा त्वं जगदघहरे! कौलसुखदे, करेमुद्रारूपा ब्रजसि यदि कस्यापि स शिवः ॥२२॥

समाराध्यां देवीं सकलकुल मुद्राक्रम युतां, विभाव्य त्वां नित्यं परमशिव - पर्यङ्कनिलये ।
गुरूक्तैस्तद् वीजैः सहरचित मुद्रास्तव मुदे, पुरस्त जायन्ते मदनहरतुल्याः सुरनुताः ॥२३॥

उमा त्वं काली त्वं त्वमसि भुवना दुर्गतिहरे, परा गुह्या तारा स्मरहरसती चन्द्रवदने ।
महाकुब्जा बाला त्रिपुर ललिता त्वं च विमले, रमा वाणी सर्वावरणजननी त्वं भगवति ॥२४॥

कलाभिर्नित्याभिस्तिथि परिमिताभिः परिवृतां, समभ्यर्चच्छ्री मद्‌गुरु कुलमपि प्रोक्त विधिना ।
स्मरेद् यस्त्वामङ्गाश्रित युवतिषड्भिः स्मितमुखि, स सर्वार्थावासः प्रमुदितमना स्यादिह सदा ॥२५॥

धरित्रि चक्रस्थां स्फटिक दृशदच्छच्छविमयीं, त्रिनेत्रामम्भोज - द्वय धृतकरां पुस्तकधराम् ।

तथाक्ष स्त्रग्धस्तां प्रकट जननीभिः परिवृतां, स चार्वाकां रम्यां निखिल भव सम्मोहन कराम् ॥२६॥

त्रिवृत्तस्थां रक्तां कठिन कुचभारां त्रिनयनां, विचित्रालङ्कारामभययुत विद्याक्ष वरदाम् ।

महाक्षैः संयुक्तां स विजितमनस्कांश्च युवतीं, सदा त्रैवर्गाणां फलमपि सकृत् साधन कराम् ॥२७॥

कलापत्राब्जस्थां हिमगिरि निभां शुभ्रवसनां, महागुप्ताख्याभिः करकलित पाशामभि युताम् ।

त्रिनेत्रां पाणिभ्यामभय वरदामकुश करां, स बौद्धां सर्वेषामभिलषित दानाश्वासनिनीम् ॥२८॥

जपापुष्पारक्तामभय वर विद्याक्ष विलसत्, कराम्भोजामष्टच्छद कमलसंस्थां त्रिनयनाम् ।

सदैनां देवीं गुप्ततर सकलाभिः परिवृतां, सुधासक्तां शान्तां पशुजनमहा - क्षोभण कराम् ॥२९॥

सदा शक्रारस्थामरुण वसनां सम्पदयुत, प्रदायाख्याभिस्ताभिरखिल सुसौभाग्यजननीम् ।

त्रिनेत्रां विद्याक्षाभय वर कराब्जैरपि युतां, ससांख्यां स्वच्छंदां स्मितमुखसरोजां च सुभगाम् ॥३०॥

सहस्त्रार्काभासामखिल कुल कौलादि सहितां, त्रिनेत्रां विद्याक्षाभय वरकरां रक्तवसनाम् ।

बहिः खैकारस्थां निखिलनिगमैः संयुतपदां, सतां सर्वार्थानामपि सुतरसा साधन करीम् ॥३१॥

दशारस्थामन्तः सकल सुररक्षणकरीं, प्रवालारक्ताभां त्रिनयनयुक्तां साभय वराम् ।

स पाशां शृण्याढ्यां सुरुधिर कपालं जपवटीं, धृतां सौरोपेतामभि नुतनिगर्भादि सहिताम् ॥३२॥

शशाङ्काभां शुभ्राभरण वसनां सस्मितमुखीं, त्रिनेत्रां तां प्राशांकुशयुत कपालाभय कराम् ।

रहस्याभिर्युक्तां निखिल भवरोग क्षयकरीं, सदाष्टारे संस्थां सुमदमुदितां वैष्णव - युताम् ॥३३॥

महाचक्रे कोणाश्रितभुवन कूटादि सहिते, स्थितां माणिक्याभामभय वरदां पुस्तक धराम् ।

तथा सालङ्कारां स्फटिक गुटिकामण्डितकरां, त्रिनेत्रां मुण्डाढ्यामपि कुसुममालां च दधतीम् ॥३४॥

स्मितास्यामारक्तामरुण वसनां मन्दहसितां, निशानाथोत्तंसामभयवर विद्याक्ष सहिताम् ।

त्रिनेत्रां पञ्चाशत् परिमित महामुण्डरचितां, दधानां तां मालां गलित चिकुरां रत्नखचिताम् ॥३५॥

क्रमात् त्वां नित्यं यः स्मरति दशचक्रेषु परमे, पुनस्तत्तन्मन्त्रैः सहकुल गुरुप्रोक्त विधिना ।

स वित्ते वित्तेशः सुर गुरु समः शास्त्र कुशलो, भवेत् त्रैलोक्याधीश्वरि! तव दयापाङ्गविषयः ॥३६॥

प्रतीहारान् मातस्तव चरणविद्यां च ललिते, प्रपञ्चाख्यां विद्यां तदनु दशदिक्पाल निवहाम् ।

ततस्तेषां शस्त्राण्यपि कुल पथाभ्यचर्य मुदितः, कहानन्ताराध्ये! ब्रजति परमधाम मनुजः ॥३७॥

रसैकास्याम्मबां धृतशशिकलां मुक्तचिकुरां, त्रिनेत्रामापीनोन्नत कुचयुगां रक्तवसनाम् ।

हरि ब्रह्मेशानाजिनमभिधानां करशतैरथाष्टोपेतैर्वा सुरनिकरयुक्तैरपि युताम् ॥३८॥

महापञ्च - प्रेतोपरि रुचिरसिंहासनमथों परीशस्तन्त्राभ्युद्भवममल रक्ताभ - कमलम् ।

श्मशानं तन्मध्ये वृषभविगतानन्द पुरुषोरसिस्थां, यो ध्यायेज्जननि स हि मोक्षं च लभते ॥३९॥

स्मरेन्निर्वाणाख्यं तव चरणसम्पूजन विधौ षडाम्नायोपेतां ब्रज गतममुं पञ्चवदनम् ।

कराम्भोजैः पद्मानि च दश दधानां च दशभिर्महाविद्यायुक्तं किमपि कुलकल्पं विदधतम् ॥४०॥

जपेद् यस्तवन्मन्त्रं जननि! सकलाम्नाय जनकं, सदा सर्वाचारैरपि यजनशीलः प्रमुदितः ।

स वाग्मार श्रीसम्पुटित दश कूटात्मकमथ, श्रुतिश्रीशाकिन्यादिकमिति सुगुह्यद्वयमपि ॥४१॥
सजीवनमुक्तः स्यादिह जननि! निर्वाणसुखदे, पयोधिः सिद्धिर्नाममर दितिजर्वन्दितपदः ।
बहूक्तैः किं पञ्चाननदश शतास्याद्यविदिते, महिम्ना संयुक्तो मदन महिला मोहनकरः ॥४२॥
जनो यो हालाभिर्जननि! तव सम्पूज्यचरणौ, करे पात्रं धृत्वा भगवति! कुलज्ञान निरतः ।
सहस्रारे ध्यात्वा परशिव गुरुं शक्तिसहितं, पिवेद् वामोच्छिष्टं स हि भवति शम्भोः प्रतिनिधिः ॥४३॥
कुलागारं पश्यन्नति दृढमना यस्तव मनुं, जपेल्लक्षं रात्रौ रहसि च मदामोद मुदितः ।
तथा श्रीदूतीं तां गजदशनपयङ्क निलयां, यजेद् यस्त्वद्रूपां स भवति हरिमन्मथकले ॥४४॥
स्मरागारे कुर्वन निजकर सरोजं त्रिनयने, त्रिलक्षं त्वन्मन्त्रं भगवति! सदा घोर विधिना ।
महापीठे मातस्तव दश शतार्णं शुभमनुं जपेद्, यः कौलेन्द्रः स हि भुवनसौख्यं च लभते ॥४५॥
शिवे! लक्षं मन्त्रं जपति विपरीतो यदि नरः, स एव श्रीमातः! सकल भुवनानामधिपतिः ।
शवारूढः कौलः पितृ वनगतः श्रीक्रमयुतस्त्रिकूटाख्यां विद्यामपि जपति स स्यात् कुलपतिः ॥४६॥
नरं मेषं छागं महिषमपि मार्जारमथवा शुभं मत्स्यं हंसं हरिहरनुते कुक्कुटमपि ।
बलिं ते पूजायां वितरति यदा कौलिक जनस्तदा क्रोधादीनामपि रिपुगणानां प्रहरणम् ॥४७॥
महामूलाधारोपरि रसदलं यद् रविनिभं, ततो दिग्पत्राख्यं ललितमणिपूरं तदुपरि ।
हृदम्भोजं मातस्तदुपरि विशुद्धाख्यमपरं, ततस्त्वां वै ध्यायन् द्विदलयुत पद्मोपरिगताम् ॥४८॥
हठाभ्यां संयोगाद् विलसति सुषुम्णाख्य रमणि, तथा सार्द्धं प्रीत्वाऽमर मुनि मनोभ्यर्थित सुधाम् ।
परां दीपाकारां निखिलभुवनाधार जननीं, स्मरन्तस्त्वां मातर्भुवन नमिताः कौलमुनयः ॥४९।
त्वदीयं श्रीस्तोत्रं भगवति! महामन्त्रसदनं, तथा ते ध्यानाङ्गावरण नवमुद्रादि सहितम् ।
महाचक्रोद्धारैर्यतमिदमहो साधकवरः, पठेद् यः पूजाऽन्ते भुवि भवति स श्रीप्रियतरः ॥५०॥

॥ श्री श्रीविद्या वृहत् कर्पूर स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री आवरण सहस्राक्षरी ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः ॐ नमो भगवति अक्षोभ्ये रूक्ष कर्णे राक्षसि पक्षत्रणे क्षपे पिङ्गलाक्षि अरुणे क्षये लीले लोले ललिते लूते लुलिते लम्बिके लङ्केश्वरि लासे विमले हुताशनि विशालाक्षि हूँकारे वडवामुखि महारवे महाक्रीड क्रोधिनि खरास्ये सर्वज्ञे तरले तारे दृष्टि हृष्टे खगकन्धरे सारसि रससंग्रहिणि तालजङ्घे करङ्किणि मेघनादे प्रचण्डोग्रे कालकर्णि चेलप्रदे चम्पे चम्पावति प्रचम्पे मलयान्तकि पितृवक्त्रे पिशाचाक्षि पिशुनि लोलुपे वानति वानरि वायु विकृतास्ये वागुवेगे बृहत्कुक्षि विकृते विश्वरूपिणि।

यम जिह्वे जये दुर्जये पुमन्तकि बिडाल रेवति पूतने विजये अनन्ते क्रन्दिनि चण्डि रेकर्णि (सर्वसंक्षोभिणि) सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहांकुशे खेचरि (ख चक्र धारिणि) सर्वबीजरूपे महायोनिरूपे त्रिखण्डे!

अनंगब्राह्मि अनङ्गमाहेश्वरि अनङ्गकौमारि अनङ्गवैष्णवि अनङ्गवाराहि अनङ्गइन्द्राणि अनङ्गचामुण्डे अनङ्ग महालक्ष्मि प्रकटयोगिनीशि चार्वाक दर्शनाङ्गि त्रैलोक्यमोहनचक्र स्वामिनि!

कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिणि अहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिणि आत्माकर्षिणि अमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि गुप्तयोगिनीशि बौद्धदर्शनाङ्गि सर्वाशापूरकचक्रस्वामिनि!

अनङ्गकुसुमे अनङ्गमेखले अनङ्गमदने अनङ्गमदनातुरे अनङ्गरेखे अनङ्गवेगिनि अनङ्गांकुशे अनङ्गमालिनि अतिगुप्त योगिनीशि रौद्रदर्शनाङ्गि सर्वसंक्षोभिणिचक्रस्वामिनि पूर्वाम्नायेशि सृष्टि प्रदे!

सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भनि सर्वजृम्भिनि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधनि सर्वसम्पत् - प्रपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सप्रदाययोगिनीशि सर्वदर्शनाङ्गि सर्वसौभाग्यदायकचक्र स्वामिनि!

सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमंगलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःख विमोचनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्न निवारणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्य दायिनि कुलकौल योगिनीशि सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनि।

सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्य प्रदायिनि सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधरस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपे सर्वेप्सितफलप्रदे निगर्भयोगिनीशि सर्वरक्षाकरचक्र स्वामिनि दक्षिणाम्नायेशि स्थिति प्रदे!

ब्लूँ वशिनि कलह्रीं कामेशि न्व्लूँ मोदिनि य्लूँ विमले ज्म्रीं अरुणे हसलवरयूँ जयिनि झमरयूं सर्वेश्वरि क्ष्म्रीं कौलिनि रहस्ययोगिनीशि शाक्तदर्शनाङ्गि सर्वरोगहरचक्र स्वामिनि द्रां क्लिन्नेमोहनकामबाण द्रीं शोषणकामवाण क्लीं नित्यसन्दीपन कामबाण ब्लूँ मन्दसन्तापन कामबाण सः द्रवे उन्मादन कामबाण द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।

जम्भिनि! जम्भय जम्भय मोहिनि! मोहय मोहय आं आकर्षिणि! आकर्षय आकर्षय स्तम्भिनि! स्तंभय स्तंभय ऐं कामेशि! क्लीं वज्रेशि! सौः भगमाले! अतिरहस्य योगिनीशि सर्वसिद्धिमय चक्रस्वामिनि कामराजविद्या महात्रिपुरसुन्दरी मातः परापर रहस्य योगिनीशि सौगत दर्शनाङ्गि सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनि पश्चिमाम्नायेशि!

अं आं सौः त्रिपुरे ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरि ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरि हैं हक्लीं हसौः त्रिपुरवासिनि हसैं हसक्लीं हसौः त्रिपुराश्रि ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनि ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धे हस्त्रैं हसकलरीं हस्त्रौं त्रिपुराम्बे हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः महात्रिपुरभैरवि अं कामेशि आं भगमाले इं नित्यक्लिन्ने ईं भैंरुण्डें उं वह्निवासिनि ऊं महावज्रेश्वरि ऋं शिवदूति ॠं त्वरिते लृं कुल सुन्दरि लॄं नित्ये ॱं नीलपताके ऐं विजये ओं सर्वमङ्गले औं ज्वालामालिनि अं विचित्रे अः कामेश्वरि!

विद्यामालिनि अकुले कुलाकुल महाकुले सर्वोत्तर पञ्चार्थ ज्ञानप्रदे सर्वदर्शनाङ्गमयि सर्वदर्शनोत्तीर्ण स्वरूपिणि सर्वाध्व शोधनि काल कालेश वर्णे नवाक्षरि बालविद्या षोडशाधिका च नवकूटद्वयं सहखफ्रें आनन्देश्वरि घोरकालिनि! अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि हंसः श्रीं ह्रीं ऐं ॥

॥ इत्यावृत्ति सहस्त्रावर्णाविद्या त्रैलोक्यपूजिता ॥

॥ श्रीराजराजेश्वरी तर्पण स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र का प्रथम श्लोक श्रीराजराजेश्वरी का वामेश्वरी स्वरूप में पैरों से मुख तक वाङमयी ध्यान है। अन्य श्लोक तर्पण प्रयोग हेतु है।

छन्दः पादयुगां निरुक्ति सुमुखां शिक्षां च जङ्घायुगाम्, ऋग्वेदोरु युगां यजुस्तु जघनां या साम वेदोदराम् ।
तर्कन्याय कुचां श्रुति स्मृतिकरां काव्यादिवेदाननाम्, वेदान्तामृत लोचनां भगवती श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१॥
कल्याणायुत पूर्णबिम्बवदनां पूर्णेश्वरानन्दिनीम्, पूर्णां पूर्णपरां परेशमहिषीं पूर्णामृतास्वादिनीम् ।
सम्पूर्णां परमोत्तमामृतकलां विद्यावतीं भारतीं, श्रीचक्रप्रिय बिन्दुतर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥२॥
एकानेकमनेक कार्य विविधां कार्यैकं चिद्रूपिणीम्, चैतन्यात्मक एकचक्र रचितां चक्राङ्क एकाकिनीम् ।
भावाभव विवर्द्धिनीं भयहरां सद्भक्ति चिन्तामणिम्, श्रीचक्रप्रिय बिन्दुतर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥३॥
ईशाधीश्वर योगिवृन्द विदितां सानन्द भूत्यंपराम्, पश्यन्तीं तनु मध्यमां विलसतीं श्रीभैरवी रूपिणीम् ।
आत्मानात्म-विचारिणीं विवरगां विद्यां त्रिबीज त्रयीम्, श्रीचक्रप्रिय बिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥४॥
लक्ष्यालक्ष्य निरीक्षणां निरुपमां रुद्राक्षमालाधराम्, साक्षात् कारणदक्षवंशकलितां दीर्घाक्षि दीर्घेश्वरीम् ।
भद्रां भद्रवरप्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं भद्रिणीम्, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥५॥
ह्रीं बीजान्वित नाद बिन्दु भरितां ॐ कार नादात्मिकाम्, ब्रह्मानन्द घनोदरीं गुणवतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम् ।
इच्छाज्ञान क्रियावतीं जितवतीं गन्धर्वसंसेविताम्, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥६॥
हर्षोन्मत्त सुवर्णपात्रभरितां पानोन्नवाघूर्णिताम्, हुङ्कारप्रिय शब्द ब्रह्मनिरतां सारस्वतोल्लासिनीम् ।
सारासार विचार चारु चतुरां वर्णाश्रमाकारिणीम्, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥७॥
सर्वज्ञान कलावतीं सकरुणां सन्नादिनीं नन्दिनीम्, सर्वान्तर्गत शालिनीं शिवतनुं सन्दीपिनीं दीपिनीम् ।
संयोग प्रिय रूपिणीं प्रियवतीं प्रीति प्रतापोन्नताम्, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥८॥
कर्माकर्मविवर्जितां कुलवतींकर्मप्रदां कौलिनीम्, कारुण्यां तनु बुद्धिकर्म निरतां सिन्धुप्रियां शालिनीम् ।
पञ्चब्रह्म सनातनां शवहृदां ज्ञेयाङ्ग योगान्विताम्, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥९॥
हस्ते कुम्भनिभां पयोधर धरां पीनोन्नतां नौमिताम्, हाराद्याभरणां सुरेन्द्रविनुतां शृङ्गार पीठालयाम् ।
योन्याकारिणि योनिमुद्रितकरां नित्यां च वर्णात्मिकां, श्रीचक्रप्रिय बिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१०॥
लक्ष्मी लक्षणपूर्ण भक्ति वरदां लीला विनोद स्थिताम्, लाक्षारञ्जितपाद-पद्म युगलां ब्रह्माण्डसंसेविताम् ।
लोकालोकित लोककामजननीं लोकश्रियाङ्कस्थिताम्, श्रीचक्रप्रिय बिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥११॥
ह्रींकारायुत शङ्करप्रिय तनुं श्रीयोगपीठेश्वरीम्, माङ्गल्यायुत पङ्कजाभनयनां माङ्गल्यसिद्धि प्रदाम् ।
तारुण्यां तपसार्चितां तरुणिकां तत्रोद्भवां तत्त्विनीम्, श्रीचक्रप्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१२॥
सर्वेशाङ्ग विहारिणीं सकरुणां सर्वेश्वरीं सर्वगाम्, सत्यां सर्वमयीं सहस्त्रदलजां सप्तार्णवोपस्थिताम् ।
संगासंग विवर्जितां शुभकरीं बालार्ककोटिप्रभाम्, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१३॥

कादिक्षान्त सुवर्ण बिन्दु सुतनुं स्वर्णादि सिंहासिनीम्, नानावर्ण विचित्रचित्रचरितां चातुर्य चिन्तामणिम् ।
चित्तानन्द विधायिनीं सुविपुलां रूढत्रयां शेषिकां, श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१४॥
लक्ष्मीशादि विधीन्द्र चन्द्रमुकुटामष्टाङ्गपीठार्चिताम्, सूर्येन्द्राग्निमयैक पीठ निलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम् ।
गोप्त्रीं गुर्विणि गर्वितां गगनगां गङ्गा गणेशप्रियाम्, श्रीचक्रप्रिय बिन्दु तर्पण परां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१५॥
ह्रीं कूटत्रय रूपिणीं समयिनीं संसारिणीं हंसिनीम्, वामाचार परायणां सुकुलजां बीजावतीं मुद्रिणीम् ।
कामाक्षीं करुणार्द्रचित्त चरितां श्रीमन्त्रमूर्त्यात्मिकाम्, श्रीचक्रप्रिय बिन्दु तर्पणपरांश्रीराजराजेश्वरीम् ॥१६॥

॥ श्री शङ्कराचार्य विरचितं श्रीराजराजेश्वरी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री विद्या शाप विमोचनम् ॥

श्रीविद्या शापविमोचन हेतु लघु प्रयोग इस प्रकार है।

विनियोग:- **ॐ अस्य श्रीविद्या शापविमोचन मंत्रस्य वसिष्ठ नारद सामवेदाधिपतिर्ब्रह्मऋषय:, गायत्री छन्द:, सवैश्वर्यकारिणी सर्वमंगला राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्ति:, क्लीं कीलकं संकल्पित मंत्र सिद्धये यथा कामराज- लोपामुद्रा- नंदिकेश्वरोपासिता श्रीविद्या प्राप्तये शाप विमोचने विनियोग:।**

शापविमोचन मंत्रा:- **ॐ श्रीं श्रीविद्या स्वरूपिण्यै अक्षय फलदात्र्यै ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्र शापद् विमुक्ता भव। ॐ कां कान्ति स्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्र शापद् विमुक्ता भव। ॐ ह्रीं श्रीं सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्र शापद् विमुक्ता भव।**

इन मंत्रों से पठन करते हुए व्यापक न्यास करें।

॥ इति श्री श्रीविद्या तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीभुवनेश्वरी तंत्रम् ॥

दशमहाविद्याओं में चौथी महाविद्या भुवनेश्वरी हैं। हिन्दी तंत्रसार, भुवनेश्वरी रहस्य, भुवनेश्वरी स्तव मंजरी इत्यादि में विस्तृत विधान हैं। आपको **हल्लेखा विद्या** भी कहते हैं। आप १४ भुवनों की अधिष्ठात्री है। शांति विधान, वशीकरण, आर्थिक विकास हेतु इनका प्रयोग करना चाहिये।

॥ एकाक्षरी मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रोद्धारः- **नकुलीशोऽग्निमारूढो वामनेत्रार्द्ध चन्द्रवान। नकुलीश (ह) अग्नि (र) वामनेत्र (ई) अर्द्धचन्द्र (ँ) इन वर्ण चतुष्टय से** एकाक्षरी मंत्र ''ह्रीं'' **बनता हैं। यह भुवनेश्वरी मंत्र तांत्रिक प्रणव भी कहलाता हैं। ह कार से आकाश, ई कार से वायु रकार से अग्नि (पृथ्वी) मानने से भूः भुवः स्वः त्रिलोक जननी होने से भुवनेश्वरी** कहा हैं। माया बीज भी उक्त मंत्र को कहा हैं। आप अन्नपूर्णा स्वरूपा हैं। साधक को ज्ञान एवं आर्थिक समृद्धि देती हैं।

एकाक्षरी मंत्रः - ह्रीं।

विनियोगः- **अस्य श्री भुवनेश्वरी मंत्रस्य शक्तिर्ऋषिः, गायत्रीश्छंदः, भुवनेश्वरी देवता, हकारो बीजं, ईकार शक्तिः रेफः कीलकं चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ शक्तये ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्र्यै छंदसे नमः मुखे। ॐ भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः हृदि। हं बीजाय नमः गुह्ये। ईं शक्तये नमः पादयोः। रं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।**

कराङ्गन्यासः- **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः** इत्यादि से न्यास करें।

षडाङ्गन्यासः- **ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।**

मंत्रवर्णन्यासः- **ॐ हल्लेखायै नमः शिरसि। एं गगनायै नमः वदने। उं रक्तायै नमः हृदि। इं करालिकायै नमः गुह्ये। अं महोच्छुष्मायै नमः पादयोः।**

पञ्चवक्त्रन्यासः-**ॐ हल्लेखायै नमः इत्यादि पूर्वोक्त देवताओं का उर्ध्व, पूर्व, दक्षिण, उत्तर एवं पश्चिम वक्त्र** में न्यास कर स्वयं को शिव स्वरूप माने। **शिवोऽहंपरिचिन्तयेत्।**

देवन्यासः- **भाले ॐ गायत्री सहित ब्रह्मणे नमः। दक्षकपोले ॐ सावित्री सहित विष्णवे नमः। वाम कपोले ॐ वागीश्वरी सहित महेश्वराय नमः। वाम कर्णोपरि श्री सहित धनपतये नमः। मुखे ॐ रतिसहितस्मराय नमः।**

सव्य कर्णोपरि ॐ पुष्टि सहित गणपतये नमः। दक्षिणगण्डे ॐ शंखनिधये नमः। वामगण्डे ॐ पद्मनिधये नमः। मुखे ॐ भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः। ''शारदा तिलक'' में कहा हैं कि इसी प्रकार इन मंत्रों से कण्ठमूल दक्ष वामस्तन, बायां कन्ध, हृदय, दायाँ कंधा, दक्ष वामपार्श्व एवं नाभि में न्यास करे। पश्चात् -

मातृकान्यास :- **भाले ॐ ब्राह्म्यै नमः, वामांसे ॐ माहेश्वर्यै नमः। वामपार्श्वे ॐ कौमार्यै नमः। जठरे ॐ वैष्णव्यै नमः। दक्षिणपार्श्वे ॐ वाराह्यै नमः। दक्षिणांसे ॐ इन्द्राण्यै नमः। गले ॐ चामुण्डायै नमः। हृदि ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पश्चात्**- मूलमंत्र से ३ या ७ बार व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यद् दिनकरद्युतिमिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रय युक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरांकुश पाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

॥ यंत्र आवरण पूजा ॥

यंत्र बनाने हेतु पहले षट्कोण, अष्टदल, वृत्त, षोडशदल बनाये उनके बाहर चारद्वार युक्त चतुरस्र बनाये। भद्रपीठ पर '' **ॐ मण्डूकादि परतत्वान्त देवतायै नमः**। पश्चात् केसरों में नवपीठशक्तियों की यंत्रपीठ में पूजा करे। **ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः। ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः** से पुष्प द्वारा देवी को आसन देकर ध्यान करे।''

प्रथमावरणम्-(देवीसमीपे)- मध्ये - **ॐ हृल्लेखायै नमः। पूर्वे - एं गगनायै नमः।** दक्षिणे - **उं रक्तायै नमः।** उत्तरे - **इं करालिकायै नमः।** पश्चिमे - **अं महोच्छूष्मायै नमः।**

॥ भुवनेश्वरी यन्त्रम् ॥

द्वितीयावरणम् - (षट्कोणे) :- **ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।** पुनः षट्कोणे- पूर्वे- **ॐ गायत्र्यै नमः, ब्रह्मणे नमः।** नैऋते- **सावित्र्यै नमः विष्णवे नमः।** वायवे- **सरस्वत्यै नमः रुद्राय नमः।** अग्निकोणे- **श्रियैनमः, धनपतये नमः।** पश्चिमे- **रत्यै नमः, स्मराय नमः।** ऐशान्यां- **पुष्ट्यै नमः, गणपतये नमः।** षट्कोणदक्षिणे- **शंखनिधये नमः।** वामे- **पद्मनिधये नमः।**

तृतीयावरणम्- (अष्टदले) **ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः। अनङ्ग कुसुमातुरायै नमः। अनङ्ग मदनायै नमः। अनङ्ग मदनातुरायै नमः। भुवनपालायै नमः। अनङ्ग वेद्यायै नमः। शशिरेखायै नमः। गगन रेखायै नमः।**
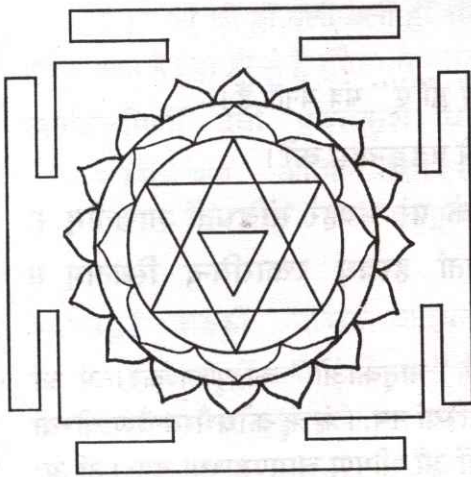
चतुर्थावरणम्:- (षोडशदले) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ कराल्यै नमः। विकराल्यै नमः। उमायै नमः। सरस्वत्यै नमः। श्रियै नमः। दुर्गायै नमः। उषायै नमः। लक्ष्म्यै नमः। श्रुत्यै नमः। स्मृत्यै नमः। धृत्यै नमः। श्रद्धायै नमः। मेधायै नमः। मत्यै नमः। कान्त्यै नमः। आर्यायै नमः।**

पंचमावरणम्- (भूपूर अंतराले) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ अनङ्गरूपायै नमः। अनङ्गमदनायै नमः। अनङ्ग मदनातुरायै नमः। भुवनवेगायै नमः। भुवनपालिकायै नमः। सर्व शिशिरायै नमः। अनङ्ग वेदनायै नमः। अनङ्ग मेखलायै नमः।**

षष्ठावरणम् - (भूपूरे)- **इन्द्रादि दश दिग्पालों का सायुध पूजन करें।**

पुरश्चरण हेतु ३२ लाख जप कर दशांश होम त्रिमधु एवं अष्टद्रव्यों (अश्वत्थ, यज्ञोडुम्बर, पाकड़ वटसमिध, तिल, श्वेतसरसों, पायस एवं घृत)द्वारा होम करे। २५ दिन तक नित्य अभिमंत्रित जल पीवे अभिषिंचन करे तो कवि होवें। कर्पूर, अगर, कुंकुम से तिलक करे तो सबका वशीकरण होवे। कमल, पलाशपुष्प, कुमुदपुष्पों से होम करे सौभाग्यवान होवें। शालिपुष्टि की मधुसिक्त पुतली बनाये। प्राणप्रतिष्ठा करें रविवार को प्रयोग करे तो नरनारी राजा का वशीकरण होवें। कंठमात्र जल में स्थित होकर सूर्यबिम्ब को पानी में देखें ३ हजार जप करे तो कन्या को वर प्राप्त होवें। मंत्री श्री प्राप्त करें। भस्म से साध्य नाम को मूल मंत्र से आवृत करे एवं गर्भिणि को दिखावे तो सुखपूर्वक प्रसव होवें।

॥ त्र्यक्षरी मंत्र प्रयोगः ॥

त्र्यक्षरी मंत्रों के ऋषि देवता एकाक्षरी मंत्रवत् हैं।

मंत्र - **१. ऐं ह्रीं श्रीं।**

वाग्भव (ऐं) शंभुवनिता (ह्रीं) रमा बीज (श्रीं) त्रयात्मकं। अर्थात् **ऐं ह्रीं श्रीं** मंत्र होता हैं।

न्यास - **ऐं ह्रां, ऐं ह्रीं, ऐं ह्रूं, ऐं ह्रैं, ऐं ह्रौं, ऐं ह्रः** से षडङ्गन्यास करें।

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुरत्। तारा नायक शेखरां स्मितमुखी- मापीन वक्षोरुहम् ॥
पाणिभ्यां मणिपूर्ण रत्नचषकं रक्तोपल विभ्रतीम्। सौम्यां रत्नघटस्थ सव्यचरणां ध्यायेत् परामाम्बिकाम् ॥

१२ लाख जपकर त्रिमधुयुक्त पायस द्वारा दशांश होम करें।

मंत्र - **२. "ऐं ह्रीं ऐं"।**

वाग्बीज (ऐं) पुटिता माया (ह्रीं) विद्येयं त्र्यक्षरी मता। अर्थात् **"ऐं ह्रीं ऐं"** मंत्र बनता हैं।

न्यास - **ऐं ह्रां ऐं, ऐं ह्रीं ऐं, ऐं ह्रूं ऐं, ऐं ह्रैं ऐं, ऐं ह्रौं ऐं, ऐं ह्रः ऐं, से षडङ्गन्यास करें।**

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां निजकरैर्दानं च रक्तोत्पलम्, रत्नाढ्यं चषकं परं भयहरं संबिभ्रतीं शाश्वतीम् ।
मुक्ताहार लसत् पयोधरनतां नेत्रत्रयोल्लासिनीम्, वन्हेऽहंसुरपूजितां हरवधूं रक्तारविन्द स्थिताम् ॥

॥ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

एकाक्षरी मंत्रवत् आवरण पूजा करें। **अष्टदलों में "अष्टभैरव"** एवं **"मातृकाओं"** का पूजन करें। **अं आं असिताङ्ग ब्राह्मीभ्यां नमः। इं ईं रुरुमाहेश्वरीभ्यां नमः। उं ऊं चण्डकौमारीभ्यां नमः। ऋं ॠं क्रोधभैरव वैष्णवीभ्यां नमः। लृं लॄं उन्मत्तवाराहीभ्यां नमः। एं ऐं कपालीइन्द्राणीभ्यां नमः। ओं औं भीषण चामुण्डाभ्यां नमः। अं अः संहार महालक्ष्मीभ्यां नमः।** अन्य प्रयोग, विनियोग, पूजाविधि पूर्ववत् हैं।

३. त्र्यक्षरी मंत्रः- आं ह्रीं क्रों।

न्यास - **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः** से अङ्गन्यास करें।

वरांकुशौ पाशमभीतिमुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थाम्।
बालार्ककोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां भजेऽहमाद्यां भुवनेश्वरीताम्॥

षोडश दल पूजा का विधान नहीं हैं अन्य विधान पूर्वोक्त हैं।

भद्रातिथि युक्त तिथि को सोमवार को आग्नेय दिशा में मुख करके जप करें सभी कामनाऐं पूरी होती है।

द्वयबीजाक्षर युक्तमंत्रः- श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।

एक बीजाक्षर युक्तमंत्रः- ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।

त्र्यय बीजाक्षर युक्त मंत्रः- ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः। इस मंत्र को मंगलवार को दक्षिणाभिमुख होकर जप करने से सभी कामनायें पूरी होती हैं।

चतुरक्षरबीज युक्तमंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः। चतुर्थी युक्त बुधवार को नैऋत्य दिशा में मुँहकर जपने से सर्वसिद्धियां प्राप्त होवें।

पंचाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। पंचमी गुरुवार को पश्चिमाभिमुख होकर जपने से अभीष्ट प्राप्ति हो।

षडाक्षर बीजयुक्त मंत्रः-ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नमः। षष्ठीयुक्त शुक्रवार को वायव्याभिमुख कर जपने से मंत्रसिद्धि होवें।

सप्ताक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। सप्तमी युक्त शनिवार को उत्तराभिमुख कर जपने से सिद्धि प्राप्त होवें।

अष्टाक्षर एवं बीजयुक्तमंत्रः-

(१) ''आं श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं क्रों'' इस मंत्र के **''शारदा तिलक'' में अजऋषि, गायत्री छंद, देवता शक्ति कहा हैं। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से षडङ्गन्यास करें।**

आनंदरूपिणीं देवीं पाशांकुश धनुः शरान्। बिभ्रतीं दोर्भिररुणां कुचार्त्तां हृदि भावयेत् ॥

(२) मंत्रो यथा- **कामिनि रञ्जिनि स्वाहा। इस मंत्र के ऋषि संमोहन, छन्द निवृती, देवता संमोहिनी है।** इस के तीन पदों की दो आवृत्ति करके षडङ्गन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

श्यामाङ्गीं वल्लकीं दोर्भ्यां वादयन्तीं सुभूषणां। चन्द्रावतंसां विविधगानैर्मोहयन्तीं जगत् ॥

(३) **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।** भुवनेश्वरी रहस्य तृतीय पटल में अष्टमीतिथि रविवार को ईशान दिशा की ओर मुख करके जप करने से मंत्र सिद्धि कही हैं।

नवाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नमः। नवमी युक्त सोमवार को पूर्वाभिमुख होकर मंत्र जप करने से परम सिद्धि प्राप्त होवें।

दशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। दशमीयुक्त मंगलवार को आग्नेय दिशा की ओर मुखकर इस मंत्र का जप करने से ब्रह्मशक्ति का साक्षात्कार होवे।

अन्य मंत्रः- श्रीं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै स्वाहा।

एकादशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं सौः श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। एकदशी तिथि

युक्त बुधवार को दक्षिणाभिमुख होकर जप करें।

द्वादशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- **ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौंः सौंः भुवनेश्वर्यै नमः।** द्वादशी युक्त गुरुवार को नैऋत्य दिशा की ओर मुख कर जप करें।

अन्य मंत्रः- **ॐ ह्रीं ऐं क्लीं सौं भुवनेश्वरि स्वाहा (द्वितीय पटले भुव. रह.)**

त्रयोदशाक्षर बीजयुक्तमंत्र :- ॐ ह्रां क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौंः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं सौंः क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः। त्रयोदशी युक्त शुक्रवार को पश्चिमाभिमुख होकर जप करें।

अन्य- **(भुव. रह. द्वि.पटले) ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौंः हसौंः भुवनेश्वरि स्वाहा। तथा च- ॐ ह्रीं ऐं सौंः क्लीं श्रीं भुवनेश्वरि स्वाहा।**

चतुर्दशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- (१) ॐ ॐ क्लीं क्लीं सौंः सौंः श्रीं श्रीं ऐं ऐं सौंः सौंः ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। चतुर्दशीयुक्त शनिवार को उत्तराभिमुख होकर जप करें।

अन्य मंत्रः- (भुव. रह. द्वि.पटले) **(२) ॐ सौंः क्लीं श्रीं ऐं ह्रीं हूं भुवनेश्वरि स्वाहा।** तथा च- **(३) ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं हूं ह्रौं भुवनेश्वरि स्वाहा। (४) ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं हूं हौं भुवनेश्वरि हूं स्वाहा।**

पंचदशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं क्लीं सौंः क्लीं सौंः क्रीं क्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। अमावस्या या पूर्णिमा रविवार को ईशानाभिमुख हो जप करें।

अन्य मंत्रः- ह्रौं सौंः ह्रीं भुवनेश्वरि ह्रीं तत्वरूपिणि ह्रीं। (भुव. रह. चतु. पटले) ऋष्यादि षोडशाक्षरवत् हैं। अन्य मन्त्रः- ऐं सौंः श्रीं क्लीं भुवनेश्वरि ॐ हूं फट् स्वाहा।

षोडशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- (भुव. रह तृती. पटले) **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौंः हसौंः ॐ हसौंः सौंः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।** इस मंत्र का जप प्रतिदिन करें।

अन्य मंत्रः- (भुव रह. चतुर्पटले) **ॐ ऐं सौंः ह्रीं तत्वरूपिणी ह्रीं भुवनेश्वरि ह्रीं।** इस मंत्र के **ऋषि भैरव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्री तत्वरूपिणि भुवनेश्वरि, ह्रीं बीज, हूं शक्ति, ह्रः कीलक वीर साधने विनियोग कहा हैं।**

स्मरेद् रवीन्द्वग्नि विलोचनां तां सत्पुस्तकां जाप्यवटीं दधानाम् ।
सिंहासनां मध्यम पत्रसंस्थां श्री तत्त्वविद्यां परमां भजामि ।

अन्य मंत्रः- (शारदा तिलक) **ह्रीं गौरि रुद्रदयिते योगेश्वरि हुं फट् स्वाहा।**

इस मंत्र के **ऋषि अज, छंद अनुष्टुप् देवता गौरी चण्ड कात्ययनी हैं। ह्रां, ह्रीं, ह्रूं इत्यादि से षडङ्गन्यास करे।**

हेमाभां बिभ्रतीं दोर्भिर्दर्पणाञ्जन साधने ।
पाशांऽकुशौ सर्वभूषां तां गौरीं सर्वदा भजे ।।

सप्तदशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- ॐ श्रीं क्लीं सौंः ह्रीं भुवनेश्वरि ॐ हूं ठः ठः ठः स्वाहा। (भुव रह. द्वि. प.)

एकोनविंशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- (भुव. रह. द्वि. पटले) **ॐ ऐं सौं क्लीं ह्रीं श्रीं हौं सौंः हूं हूं भुवनेश्वरि ॐ ऐं स्वाहा।**

अन्य मंत्रः- **१. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हूं क्रीं क्रीं ऐं सौंः भुवनेश्वरि क्रीं हूं फट् स्वाहा। २. ॐ ह्रीं क्लीं हूं क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौंः क्लीं भुवनेश्वरि हूं फट् स्वाहा।**

विंशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- (भुव. रह. द्वि.प.) **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ऐं ॐ ॐ श्रीं श्रीं भुवनेश्वरि ऐं क्लीं सौः स्वाहा।**

एकविंशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- **ॐ सौः क्लीं ऐं क्लीं सौः स्त्रीं हूं श्रीं ह्रीं क्रीं भुवनेश्वरि ॐ हूं फट् स्वाहा।**

द्वाविंशाक्षर बीजयुक्तमंत्रः- **ॐ क्लीं ऐं सौः ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं भुवनेश्वरि क्रीं ठः ठः ठः फट् स्वाहा।**

॥ भुवनेश्वरि गायत्री मंत्राः॥

१. भुवनेश्वरि गायत्री-ह्रीं भुवनेश्वर्यै विद्महे आद्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्। २. ॐ नारायण्यै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

(१) मूल गायत्री- ऐं ह्ल्लेखायै विद्महे ह्री भुवनायै धीमहि श्रीं तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। प्रातः गायत्री- ऐं ह्ल्लेखायै विद्महे भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। मध्याह्न गायत्री- ह्रीं ह्ल्लेखायै विद्महे भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। सायं गायत्री-श्रीं ह्ल्लेखायै विद्महे भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।
अर्द्धरात्रि गायत्री- **ऐं ह्ल्लेखायै विद्महे ह्रीं भुवनायै धीमहि तन्नशक्तिः प्रचोदयात्।**

॥ भुवनेश्वरि मातृकाः ॥

ह्रीं अं नमः, ह्रीं आं नमः......इस तरह से मातृका वर्णों से युक्त मंत्र जाप करें। इसके **ऋषि शक्ति, छन्द गायत्री, देवता मातृका भुवनेशी, बीज ह्रीं, नमः शक्ति, मूल प्रकृति कीलक हैं। ह्रां ह्रीं से षडङ्गन्यास करें।**

उद्यत्कोटि दिवाकर प्रतिभटा तुङ्गोरुपीन - स्तनी, मूर्धार्धेन्दु किरीट हार रशना मंजीर संशोभिता ।
विभ्राणा करपङ्कजैर्जपवटीं पाशांकुशौ पुस्तकम्, द्विश्याद् वो जगदीश्वरी त्रिनयना पद्मे निषण्णा सुखम् ॥

॥श्रीभुवनेश्वरी मातृका॥

जया च विजया चैव अजिता चापराजिता। नित्या विलासिनी दोग्ध्री अघोरा मङ्गला तथा ॥१॥
डाकिनी राकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा । शाकिनी हाकिनी चैव याकिनी स्वरशक्तयः ॥२॥
मङ्गला च महाकाली कुण्डली कुलसुन्दरी। कपाली कमलावत्या चामुण्डा मेरुवासिनी ॥३॥
भुवनेशी सरस्वत्यौ कपिला कुलमालिनी। विनायिका जया नन्दा महालक्ष्मीश्च भैरवी ॥४॥
ब्रह्माणी च तथा ज्वालावली लिंगप्रभा तथा। मुण्डिनी च महावेगा उद्भवा वैष्णवी शिवा ॥५॥
महामाया तु चक्रांगी एकपादा सुरेश्वरी। कौवेरी मण्डली चैव वाराही च जलन्धरी ॥६॥
कामाख्या काममध्यस्था व्यञ्जनानां तु शक्तयः ।

॥ दशाक्षर ईश्वरमंत्रः ॥

भुवनेश्वरि के भैरव ईश्वर हैं। मंत्रो यथा- ॐ **ईं ह्रीं श्रीं सीं हसवरयूं।**

॥ध्यानम्॥

शुद्धस्फटिक संकाशं त्रिनेत्रमीश्वरं प्रभुं, सिंहचर्मपरीधानं गजचर्मोत्तरीयम् ।
सुधाढ्यं कलशं शूलं वरं चाभयमेव च, धारयन्तं कराम्भोजं शशाङ्ककृत शेखराम् ।
पद्मासनं स्मितमुखं वामाङ्गं संस्तृतं परम्, भुवनेश्यां महादेव्याः हत्पद्मे भावयाम्य हम् ॥

पुरश्चर्यार्णव के अनुसार भुवनेश्वरी के शिव पञ्चाक्षर महादेव हैं।

॥ भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मंगल कवचम् ॥

इस कवच में दुर्गा, भुवनेश्वरी एवं त्रिपुरा के मंत्रों का मंत्रोद्धार है।

॥ देव्युवाच ॥

भुवनेश्याश्च देवेश! या या विद्याः प्रकाशिताः । श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि सांप्रतं ॥१॥
त्रैलोक्य मङ्गलं नाम कवचं यत् पुरोदितम् । कथयस्व महादेव! मम प्रीतिकरं परम् ॥२॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु पार्वति! वक्ष्यामि सावधानाऽवधारय । त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्र विग्रहम् ॥३॥
सिद्धविद्यामयं देवि! सर्वैश्वर्य प्रदायकम् । पठनाद् धारणान्मर्त्य स्त्रैलोक्यैश्वर्यवान् भवेत् ॥४॥
त्रैलोक्य मंगलस्यास्य कवचस्य ऋषिशिवः, छन्दो विराट् जगद्धात्री देवता भुवनेश्वरी । धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥५॥

॥ कवच स्तोत्र ॥

ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम्। ऐं पातु दक्ष नेत्रं मे ह्रीं पातु वाम लोचनम् ॥१॥
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी। वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा ॥२॥
ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम। वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु पराम्बिका ॥३॥
श्रींस्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा। क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्य दायिनी ॥४॥
ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदाऽवतु। क्रों पातु नाभि देशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ॥५॥
सर्व - बीजप्रभा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी। ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम् ॥६॥
माहेश्वरी सदा पातु सक्थिनी जानुयुग्मकम्। अन्नपूर्णा सदापातु स्वाहा पातु पदद्वयम् ॥७॥
सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णाऽखिलं वपुः तारं। माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परं ॥८॥
शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा। तारं दुर्गे युगं रक्षिणि स्वाहेति दशाक्षरी ॥९॥
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां पूर्वतो मुदा। माया - बीजादिका चैषा दशार्णा च परा तथा ॥१०॥
उत्तप्त काञ्चनाभासा जय दुर्गाऽनलेऽवतु। तारं ह्रीं दुं दुर्गायै नमोऽष्टवर्णात्मिका परा ॥११॥
शङ्खचक्र धनुर्बाण- धरा मां दक्षिणेऽवतु। महिष मर्दिनी स्वाहा वसु वर्णात्मिका परा ॥१२॥
नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुर- नाशिनी। माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता ॥१३॥

पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु। पाशांकुश- पुटा मायेति परमेश्वरि स्वाहा ॥१४॥
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनिलेऽवतु। सरस्वती पञ्चस्वरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ॥१५॥
स्वाहा च त्र्यक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु। तारं माया तु कवचं खे रक्षेत् सततं वधूः ॥१६॥
हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाऽखिलप्रदा। त्वरिताष्टादिभिः पायाच्छिव कोणे सदा च मां ॥१७॥
ऐं क्लीं सौः सततं बाला मामूर्ध्व देशतोऽवतु विन्द्वन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु ॥१८॥

॥फलश्रुति ॥

इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्य मङ्गलं परं। सारात् सारतरं पुण्यं महाविद्यौघ विग्रहम् ॥१॥
अस्य हि पठनात् सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः। इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद धारणाद्यतः ॥२॥
सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः। पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत् ॥३॥
संवत्सर कृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्। प्रीतिमान् योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ॥४॥
वाणी च निवसेद् वक्त्रे सत्यं न संशयः। यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्य म ङ्गलाभिधम् ॥५॥
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः। सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥६॥
पुरुषो दक्षिणे- बाहौ नारी वामभुजे तथा। बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्याऽपि लभते सुतम् ॥७॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्। एतत् कवचमज्ञात्वा यो जपेद् भुवनेश्वरीम् ॥
दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥८॥

॥ भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मोहन कवचम् ॥

॥श्रीदेव्युवाच ॥

भगवन् परमेशान, सर्वागम विशारद, कवचं भुवनेश्वर्याः कथयस्व महेश्वर!

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

शृणु देवि महेशानि! कवचं सर्वकामदं त्रैलोक्य मोहनं नाम सर्वेप्सित फलप्रदं।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहन कवचस्य श्रीसदाशिव ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीभुवनेश्वरी देवता। चतुवर्ग सिद्ध्यर्थं कवच पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीसदाशिव ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीभुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि। चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थं कवच पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥कवचस्तोत्र॥

ॐ ह्रीं क्लीं मे शिरः पातु श्रीं फट् पातु ललाटकम्। सिद्धपञ्चाक्षरी पायान्नेत्रे मे भुवनेश्वरी ॥१॥
श्रीं क्लीं ह्रीं मे श्रुतीः पातु नमः पातु च नासिकाम्। देवी षडक्षरी पातु वदनं मुण्डभूषणा ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं गलं पातु जिह्वां पायान्महेश्वरी। ऐं स्कन्धौ पातु मे देवी महात्रिभुवनेश्वरी ॥३॥
हूं घण्टां मे सदा पातु देव्येकाक्षर रूपिणी। ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायादीश्वरी मे भुजद्वयम् ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् पायाद् भुवनेशी स्तन द्वयम् । ह्रां ह्रीं ऐं फट् महामाया देवी च हृदयं मम ॥५॥
ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायात् पार्श्वौ कामस्वरूपिणी । ॐ ह्रीं क्लीं ऐं नमः पायात् कुक्षिं महाषडक्षरी ॥६॥
ऐं सौः ऐं ऐं क्लीं फट् स्वाहा कटिदेशे सदाऽवतु । अष्टाक्षरी महाविद्या देवेशी भुवनेश्वरी ॥७॥
ॐ ह्रीं ह्रौं ऐं श्रीं ह्रीं फट् पायान्मे गुह्यस्थलं सदा । षडक्षरी महाविद्या साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणी ॥८॥
ऐं ह्रां ह्रौं हूं नमो देव्यै देवि! सर्वं पदं ततः, दुस्तरं पदं तारय तारय प्रणवद्वयम् ।
स्वाहा इति महाविद्या जानुनि मे सदाऽवतु ॥९॥
ऐं सौः ॐ ऐं क्लीं फट् स्वाहा जंघेऽव्याद् भुवनेश्वरी । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् पायात् पादौ मे भुवनेश्वरी ॥१०॥
ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौः सौः वद वद । वाग्वादिनीति च देवि विद्या या विश्वव्यापिनी ॥११॥
सौः सौः सौः ऐं ऐं ऐं क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ। ॐ ॐ चतुर्दशात्मिका विद्या पायात् बाहू तु मे ॥१२॥
सकलं सर्वभीतिभ्यः शरीरं भुवनेश्वरी । ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्रदिग्भागे पायान्मे चापराजिता ॥१३॥
स्त्रीं ऐं ह्रीं विजया पायादिन्दुमदग्नि दिक्स्थले । ॐ श्रीं सौः क्लीं जया पातु याम्यां मां कवचान्वितम् ॥१४॥
ह्रीं ह्रीं ऐं सौः ह्सौः पायान्नैर्ऋतिर्मां तु परात्मिका । ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं सदापायात् पश्चिमे ब्रह्मरूपिणी ॥१५॥
ॐ ह्रां ऐं सौः मां भयाद् रक्षद् वायव्यां मन्त्ररूपिणी । ऐं क्लीं श्रीं सौः सदाऽव्यान्मां कौवेर्यां नगनन्दिनी ॥१६॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महादेवी ऐशान्यां पातु नित्यशः । ॐ ह्रीं मन्त्रमयी विद्या पायादूर्ध्वं सुरेश्वरी ॥१७॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मां पायादधस्था भुवनेश्वरी । एं वं दशदिशो रक्षेत् सर्वमन्त्रमयी शिवा ॥१८॥
प्रभाते पातु चामुण्डा श्रीं क्लीं ऐं सौः स्वरूपिणी । मध्याह्नेऽव्यान्मामम्बा श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः स्वरूपिणी ॥१९॥
सायं पायादुमा देवी ऐं ह्रीं क्लीं सौः स्वरूपिणी । निशादौ पातु रुद्राणी ॐ क्लीं क्रीं सौः स्वरूपिणी ॥२०॥
निशीथे पातु ब्रह्माणी क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी । निशान्ते वैष्णवी पायादो मैं ह्रीं क्लीं स्वरूपिणी ॥२१॥
सर्वकाले च मां पायादो ॐ ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरी । एषा विद्या मया गुप्ता तन्त्रेभ्यश्चापि साम्प्रतम् ॥२२॥

॥फलश्रुति ॥

देवेशि! कथितां तुभ्यं कवचेच्छा त्वयि प्रिये! इति ते कथितं देवि! गुह्यतर परं ।
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं मन्त्रविग्रहं, ब्रह्मविद्यामयं भद्रे! केवलं ब्रह्मरूपिणं ॥१॥
मन्त्रविद्या मयं चैव कवचं मन्मुखोदितं, गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं धारयेद्यदि ।
साधको वै यथा ध्यानं तत्क्षणाद् भैरवो भवेत्, सर्वपापविनिर्मुक्तः कुलकोटि समुद्धरेत् ॥२॥
गुरुः स्यात् सर्वविद्यासु ह्यधिकारो जपादिषु, शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या विधिः स्मृता ।
शतमष्टोत्तरं जप्त्वा तावद्धोमादिकं तथा, त्रैलोक्ये विचरेद्वीरो गणनाथो यथा स्वयं ॥३॥
गद्य-पद्यमयी वाणी भवेद् गङ्गाप्रवाहवत्, पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत् ॥४॥

॥ श्रीभुवनेश्वरी पञ्जर स्तोत्रम् ॥

तंत्र में लिखा है कि पञ्जर स्तोत्र ''**दुर्ग-किले** '' के समान साधक की रक्षा करता है। इस स्तोत्र के पाठ में प्रत्येक दिशा में रक्षा करने के लिए भुवनेश्वरी के बाद '**योगविद्ये महामाये योगिनी गणसेविते..........**' से ' लेकर **............त्रैलोक्य मोहिन्यैविद्महे विश्व जनन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥**' तक अवश्य पढ़ें।

॥पञ्जर स्तोत्रम् ॥

इदं श्रीभुवनेश्वर्याः पञ्जरं भुवि दुर्लभम्। येन संरक्षितो मर्त्यो वाणैः शस्त्रैर्न बाध्यते ॥१॥

ज्वरमारी पशु व्याघ्र- कृत्या चौराद्युपद्रवैः। नद्यम्बु - धरणी विद्युत्कृशानु - भुजगारिभिः ॥२॥

सौभाग्यारोग्य - सम्पत्ति - कीर्ति - कान्ति - यशोऽर्थदम् ॥३॥

ॐ क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौः पूर्वेऽधिष्ठाय मां पाहि चक्रिणि भुवनेश्वरि! योगविद्ये महामाये योगिनी- गणसेविते! कृष्णवर्णे महद्भूते वृहत् कर्णे भयङ्करि। देव-देवि! महादेवि! मम शत्रून् विनाशय। उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं ॥ यदि शक्यमशक्यं तन्मे भगवति! शमय स्वाहा। त्रैलोक्य - मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥१॥

ममाग्नेयां स्थिता पाहि गदिनी भुवनेश्वरि ! योगविद्ये ... कृष्णवर्णे .... तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥२॥

याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरि ! योगविद्ये ... कृष्णवर्णे .... तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥३॥

नैर्ऋत्ये मां स्थिता पाहि खड्गिनी भुवनेश्वरि ! योगविद्ये ... कृष्णवर्णे .... तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥४॥

पश्चिमे मां स्थिता पाहि पाशिनी भुवनेश्वरि ! योगविद्ये ... कृष्णवर्णे .... तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥५॥

वायव्ये मां स्थिता पाहि शक्तिनी भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥६॥

सौम्येऽधिष्ठाय मां पाहि चापिनी भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥७॥

ईशेऽधिष्ठाय मां पाहि शूलिनी भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥८॥

ऊर्ध्वेऽधिष्ठाय मां पाहि पद्मिनी भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥९॥

अधस्तान्मां स्थिता पाहि वाणिनी भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥१०॥

अग्रतो मां सदा पाहि सांकुशे भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥११॥

पृष्ठतो मां स्थिता पाहि वरदे भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥१२॥

सर्वतो मां सदा पाहि सायुधे भुवनेश्वरि। योगविद्ये...कृष्णवर्णे....तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥१३॥

फलश्रुति में १४ दिशाओं का रक्षण कहा गया है परन्तु स्तोत्र में १२ दिशओं का ही लेख है अतः यदि १३वे श्लोक में ''**सर्वतो मां**'' की जगह **वामे-दक्षे** प्रयुक्त होतो १४ दिशाओं का रक्षण होता है।

॥फलश्रुति ॥

प्रोक्ता दिङ्मनवो देवि! चतुर्दश शुभ प्रदाः। एतत् पञ्जरमाख्यातं सर्व रक्षाकरं नृणाम् ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्व-योनिरिव पार्वति। न भक्ताय प्रदातव्यं नाशिष्याय कदाचन ॥

सिद्धिकामो महादेवि! गोपयेन्मातृ -जारवत्। भयकाले होमकाले पूजाकाले विशेषतः ॥

दीपस्यारम्भ- काले वै यः कुर्यात् पञ्जरं सुधीः । सर्वान् कामानवाप्नोति प्रत्यूहैर्नाभि भूयते ॥
रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत् । कृत्या- रोग- पिशाचाद्यैर्न कदाचित् प्रबाध्यते ॥
प्रातः काले च मध्याह्ने सन्ध्यायामर्द्धरात्रके । यः कुर्यात् पञ्जरं मर्त्यो देवीं ध्यात्वा समाहितः ॥
काल - मृत्युमपि प्राप्तं जयेदत्र न संशयः ।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद् गात्रं न लगन्ति च ॥
पुत्रवान् धनवाँल्लोके यशस्वी जायते नरः ॥

॥ श्रीभुवनेश्वरी हृदय स्तवः ॥

॥ देव्युवाच ॥

भगवन्! ब्रूहि तत्स्तोत्रं सर्वकाम प्रसाधनम्, यस्य श्रवण मात्रेण नान्यच्छ्रोतव्यमिष्यते ॥
यदि मेऽनुग्रहः कार्यः प्रीतिश्चापि ममोपरि । तदिदं कथय ब्रह्मन्! विमलं यन्महीतले ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि सर्वकामप्रसाधनम् । हृदयं भुवनेश्वर्या स्तोत्रमस्ति यशोदयम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्रीशक्तिः ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीभुवनेश्वरी देवता । हं बीजं । ईं शक्तिः । रं कीलकं । सकल मनोवाञ्छित सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यास :- श्रीशक्ति ऋषये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमः मुखे । श्रीभुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि । हं बीजाय नमः गुह्ये । ईं शक्तये नमः नाभौ । रं कीलकाय नमः पादयोः । सकल मनोवांच्छित सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

मन्त्रः	करन्यास	षड्ङ्गन्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः ।	हृदयाय नमः ।
ह्रीं श्रीं ऐं	तर्जनीभ्यां नमः ।	शिरसे स्वाहा ।
ह्रीं श्रीं ऐं	मध्यमाभ्यां नमः ।	शिखायै वषट् ।
ह्रीं श्रीं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः ।	कवचाय हुँ ।
ह्रीं श्रीं ऐं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ह्रीं श्रीं ऐं	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।	अस्त्राय फट् । ।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृतजनि जननी योगिनीं योग - योनिम् ।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित- जय पर- ज्योतिरुग्राङ्ग - धात्रीम् ॥
शङ्खं चक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैः ।
मायामाद्यां विशिष्टां भव भव भुवनां भूभवा भार भूमिम् ॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य, पठेत् -

यदाज्ञया यो जगदाद्यशेषं सृजत्यजः श्रीपतिरौरसं वा ।
बिभर्ति संहन्ति भवस्तदन्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥१॥

जगज्जनानन्द - करीं जयाख्यां यशस्विनीं यन्त्रसुयज्ञ - योनिम् ।
जितामितामित्र- कृत प्रपञ्चां भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥२॥

हरौ प्रसुप्ते भुवनत्रयान्ते अवातरन्नाभिज पद्मजन्मा ।
विधिस्ततोऽब्धे विदधार यत्पदं भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥३॥

न विद्यते क्वापि तु जन्म यस्या न स्थितिः सान्ततिकीह यस्याः ।
न वा निरोधेऽखिलकर्म यस्याः भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥४॥

कटाक्ष मोक्षा चरणोग्रवित्ता निवेशितार्णाः करुणार्द्रचित्ता ।
सुभक्तये एति समीप्सितं या भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥५॥

यतो जगज्जन्म बभूव योनेस्तदेव मध्ये प्रतिपाति यां वा ।
तदत्ति यान्तेऽखिलमुग्र - काली भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥६॥

सुषुप्तिकाले जनमध्ययन्त्या यया जनः स्वप्नमवैति किंचित् ।
प्रबुध्यते जाग्रति जीव एष भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥७॥

दयास्फुरत् कोरकटाक्ष लाभान्नैकत्र यस्या प्रलभन्ति सिद्धाः ।
कवित्वमीशित्वमपि स्वतन्त्रा भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥८॥

लसन्मुखाम्भोरुहमुत्-स्फुरन्तं हृदि प्रणिध्याय दिशि स्फुरन्तः ।
यस्याः कृपार्द्रं प्रविकाशयन्ति भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥९॥

यदानुरागानुगतालि - चित्राश्चिरन्तन प्रेम परिप्लुताङ्गाः ।
सुनिर्भयाः सन्ति प्रमुद्य यस्याः भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥१०॥

हरिर्विरिञ्चिर्हर ईशितारः पुरोऽवतिष्ठन्ति परव्रताङ्गाः ।
यस्या समिच्छन्ति सदानुकूल्यं भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥११॥

मनुं यदीयं हरमग्निसंस्थं ततश्च वामश्रुति चन्द्रसक्तम् ।
जपन्ति ये स्युः सुरवन्दितास्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥१२॥

प्रसीदतु प्रेमरसार्द्र चित्ता सदा हि सा श्रीभुवनेश्वरी मे ।
कृपा कटाक्षेण कुबेर कल्या भवन्ति यस्याः पदभक्ति भाजः ॥१३॥

मुदा सुपाठ्यं भुवनेश्वरीयं सदा सतां स्तोत्रमिदं सुसेव्यं ।
सुखप्रदं स्यात् कलिकल्मषघ्नं सुश्रृण्वतां सम्पठतां प्रशस्यम् ॥१४॥

एतत्तु हृदय स्तोत्रं पठेद् यस्तु समाहितः । भवेत् तस्येष्टदा देवी प्रसन्ना भुवनेश्वरी ॥१५॥

ददाति धनमायुष्यं पुण्यंपुण्यमतिं तथा । नैष्ठिकीं देवभक्तिं च गुरु- भक्तिं विशेषतः ॥१६॥
पूर्णिमायां चतुर्दश्यां कुजवारे विशेषतः । पठनीयमिदं- स्तोत्रं देवसद्मनि यत्नतः ॥१७॥
यत्रकुत्रापि पाठेन स्तोत्रस्यास्य फलं भवेत् । सर्वस्थानेषु देवेश्याः पूतदेहः सदा पठेत् ॥१८॥

पूर्ववत् न्यासध्यानादि कुर्वन् निवेद्य प्रणमेत् ।

मंत्रमहार्णव में पाठान्तर भेद भी कहीं-कहीं है

॥ इतिश्रीनीलसरस्वती तंत्रे भुवनेश्वरी पटले हृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्रीभुवनेश्वरी स्तवः ॥

आद्यामशेष - जननीमरविन्द - योनेर्विष्णोः, शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम् ।
सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां, स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके ! त्वां ॥१॥
पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतां वरेण, होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः ।
देवस्य मन्मथ - रिपोरपि - शक्तिमत्ता, हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराज पुत्रि! ॥२॥
त्रिस्त्रोतसः सकललोक समर्चिताया, वैशिष्ट्य कारणमवैमि तदेव मातः ।
त्वत् पद्पङ्कज - पराग पवित्रतासु, शम्भोर्जटासु नियतं परिवर्तनं यत् ॥३॥
आनन्दयेत् कुमुदिनीमधिपः कलानां, नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा ।
एकस्य मोदनविधौ परमेकमिष्टे, त्वं तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्ट्या ॥४॥
आद्याप्यशेष - जगतां नवयौवनाऽसि, शैलाधिराज - तनयाप्यति कोमलाऽसि ।
त्रय्याः प्रसूरपि तया न समीक्षिताऽसि, ध्येयाऽपि गौरि ! मनसो न पथि स्थिताऽसि ॥५॥
आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद् दुरापं, तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणां ।
नाभ्यर्चयन्ति जगतां जनयित्रि! ये त्वां, निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति ॥६॥
कर्पूरचूर्ण हिमवारि विलोडितेन, ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुजातगन्धैः ।
आराधयन्ति हि भवानि! समुत्सुकास्त्वां, ते खल्वशेष - भुवनादि भुवं प्रथन्ते ॥७॥
आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे, सुप्ता हि राजसदृशी विरचय्य विश्वम् ।
विद्युल्लता - वलय विभ्रममुद्वहन्ती, पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ॥८॥
तन्निर्गतामृत - रसैरभिषिच्य गात्रं, मार्गेण तेन विलयं पुनरप्यवाप्ता ।
येषां हृदि स्फुरति जातु न ते, भवेयुमतिर्महेश्वर कुटुम्बिनि ! गर्भभाजः ॥९॥
आलम्बि कुन्तल - भरामभिराम - वक्त्रां, पीवर - स्तनतटीं च तनुवृत्त मध्यां ।
चिन्ताक्ष - सूत्र कलशालिखिताढ्य - हस्तां, मातर्नमामि मनसा तव गौरि ! मूर्तिम् ॥१०॥
आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्कमाबध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।
पाशाङ्कुशाभय वराढ्यकरां सुवक्त्रामालोकयन्ति भुवनेश्वरि ! योगिनस्त्वाम् ॥११॥

उत्तप्त हाटक निभा करिभिश्चतुर्भिरावर्तितामृत घटैरभिषिच्यमाना ।
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती, पद्मापि साऽभयकरा भवसि त्वमेव ॥१२॥
अष्टाभिरुग्र विविधायुध वाहिनीभिर्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजं ।
पूर्वादलद्युतिरमर्त्य विपक्षपक्षान्, न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि, भवानि दुर्गे ॥१३॥
आविर्निदाघ जलशीकर शोभि- वक्त्रां, गुंजाफलेन परिकल्पितहार यष्टिम् ।
रत्नांशुकामसित - कान्तिमलंकृतां त्वामाद्यां पुलिन्दतरुणीं असकृत् स्मरामि ॥१४॥
हंसैर्गति क्वणित - नूपुरदूर - कृष्टैर्मूर्तैरिवाप्त वचनैरनु - गम्यमानौ ।
पद्माविवोर्ध्व मुख रूढ़ सुजात नालौ, श्रीकण्ठपत्नि! शिरसैव दधे तवांघ्रिं ॥१५॥
द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्ति - मतेन दृग्भ्यामुत्पाद्यता त्रिनयनं वृषकेतनेन ।
सान्द्रानुराग भवनेन निरीक्ष्यमाणे, जंघे उभेऽपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥१६॥
ऊरुं स्मरामि शितहस्ति करावलेपौ, स्थौल्येन मार्दवतया परिभूत रम्भौ ।
श्रोणी भरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ, स्तम्भाविवाङ्ग वयसा तव मध्यमेन ॥१७॥
श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत् प्रथयिष्यतोच्चैर्बाल्यात् परेण वयसा परिहृष्टसारौ ।
रोमावली विलसितेन विभाव्यमूर्तिं, मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥१८॥
सख्यः स्मरस्य हरनेत्र हुताश - भीरोर्लावण्य - वारि भरितं नवयौवनेन ।
आपाद्य - दत्तमिव पल्वलमप्रविष्ट, नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयं ॥१९॥
ईशोपगूह - पिशुनं भसितं दधाने , काश्मीर कर्दममनु - स्तन - पङ्कजे ते ।
स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणलक्ष फेनौ, सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥२०॥
कण्ठातिरिक्त गलदुज्ज्वल कान्तिधारा, शोभौ भुजौ निज रिपोर्मकरध्वजेन ।
कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ, मातर्मम स्मृतिपथं न विलङ्घ्येताम् ॥२१॥
नात्यायतं रचित कम्बुविलास चौर्यं, भूषाभरेण विविधेन विराजमानं ।
कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराज कन्ये!, संचिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहं ॥२२॥
अत्यायताक्षमभिजात - ललाट पट्टं, मन्दस्मितेन दरफुल्ल कपोलरेखं ।
बिम्बाधरं वदनमुन्नतदीर्घ - नासं यत्ते, स्मरत्यसकृदम्ब! स एव जातः ॥२३॥
आविस्तुषार करलेखमनल्प - गन्ध पुष्पोपरि भ्रमदलि व्रज निर्विशेषं ।
यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं तस्य स्वयं गलति देवि! पुराणपाशः ॥२४॥
श्रुतिसुरचित - पाकं श्रीमतां स्तोत्रमेतत् , पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रः, क्षितिप मुकुट लक्ष्मी लक्षणानां चिराय ॥२५॥

॥ आनन्दमयी श्रीभुवनेश्वरी स्तवः ॥

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्द ब्रह्मस्वरूपिणीम् । ईडे सकल सम्पत्त्यै जगत्कारणम्बिकाम् ॥१॥
आद्यामशेष जननीमरविन्द योनेर्विष्णोः, शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम् ।
सृष्टिस्थिति क्षयकरीं जगतां त्रयाणां स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके! त्वाम् ॥२॥
पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतां वरेण, होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्त्तिभाजः ।
देवस्य मन्मथ रिपोरपि शक्तिमत्ता, हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि! ॥३॥
त्रिस्रोतसः सकलदेव - समर्च्चिताया, वैशिष्ट्य कारणमवैमि तदेव मातः ।
त्वत्पाद - पङ्कज - पराग पवित्रितासु, शम्भोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत् ॥४॥
आनन्दयेत् कुमुदिनीमधिपः कलानां, नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा ।
एकस्य मोदनविधौ परमेक इष्टे, त्वं तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्ट्या ॥५॥
आद्याऽप्यशेष जगतां नवयौवनाऽसि, शैलाधिराज - तनयाऽप्यति कोमलाऽसि ।
त्रय्याः प्रसूरपि तथा न समीक्षिताऽसि, ध्येयाऽसि गौरि! मनसो न पथि स्थिताऽसि ॥६॥
आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद् दुरापं, तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम् ।
नाभ्यर्चयन्ति जगतां जनयित्रि! ये त्वां, निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति ॥७॥
कर्पूरचूर्ण हिमवारि विलोडितेन, ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुगन्धिगन्धैः ।
आराधयन्ति हि भवानि! समुत्सुकास्त्वां, ते खल्वशेष भुवनाधिभुवः प्रथन्ते ॥८॥
आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे, सुप्ताहि राजसदृशी विरचय्य विश्वम् ।
विद्युल्लता वलय विभ्रममुद्वहन्ती, पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ॥९॥
तन्निर्गतामृतरसैः परिषिक्तगात्र मार्गेण तेन निलयं पुनरप्यवाप्ता ।
येषां हृदि स्फुरसि जातु न ते, भवेयुर्मातर्महेश्वर कुटुम्बिनि! गर्भभाजः ॥१०॥
आलम्बि - कुण्डल - भरामभिराम वक्त्रामापीवर - स्तनतटीं तनुवृत्त मध्याम् ।
चिन्ताक्ष सूत्र कलशालिखिताढ्य हस्तामावर्त्तयामि मनसा तव गौरि! मूर्तिम् ॥११॥
आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्कमाबद्ध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।
पाशाङ्कुशाभय वराढ्यकरां सुवक्त्रामालोकयन्ति भुवनेश्वरि! योगिनस्त्वाम् ॥१२॥
उत्तप्तहाटक - निभा करिभिश्चतुर्भिरावर्तितामृत - घटैरभिषिच्यमाना ।
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती पद्माऽपि साऽभयवरा भवसि त्वमेव ॥१३॥
अष्टाभिरुग्र विविधायुध - वाहिनीभिर्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम् ।
दूर्वादलद्युतिरमर्त्य - विपक्ष-पक्षान् न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि भवानि! दुर्गा ॥१४॥
आविर्न्निदाघ - जल शीकर शोभि वक्त्रां, गुञ्जाफलेन परिकल्पित हारयष्टिम् ।
पीतांशुकामसित कान्तिमनङ्ग - तन्द्रामाद्यां पुलिन्दतरुणीमसकृत् स्मरामि ॥१५॥

हंसैर्गति क्वणित - नूपुर दूरदृष्टे, मूर्तैरिवार्थ वचनैरनुगम्य मानौ ।
पद्माविवोर्ध्व - मुख - रूढ सुजात नालौ, श्रीकण्ठपत्नि शिरसा विदधे तवांघ्री ॥१६॥
द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव दृग्भ्यात्मुपाट्य भाल नयनं वृषकेतनेन ।
सान्द्रानुराग तरलेन निरीक्ष्यमाणे, जङ्घे शुभे अपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥१७॥
ऊरू स्मरामि जितहस्ति करावलेपौ, स्थौल्येन मार्दवतया परिभूत रम्भौ ।
श्रोणीभरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ, स्तम्भाविवाङ्ग वयसा तव मध्यमेन ॥१८॥
श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत् प्रथयिष्यतोच्चैर्बाल्यात् परेण वयसा परिहृष्टसारौ ।
रोमावली विलसितेन विभाव्यमूर्ति मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥१९॥
सख्यः स्मरस्य हर नेत्रहुताश शान्त्यै, लावण्य वारिभरितं नवयौवनेन ।
आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं नाभिं, कदापि तव देवि न विस्मरेयम् ॥२०॥
ईशेऽपिगेहपिशुनं भसितं दधाने, काश्मीरकर्दममनुस्तन पङ्कजे ते ।
स्नातोत्थितस्य करिणः क्षणलक्ष्य फेनौ, सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥२१॥
कण्ठातिरिक्त गलदुज्ज्वल कान्ति धारा, शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकर - ध्वजेन ।
कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ, मातर्मम स्मृतिपथं न विलंघयेताम् ॥२२॥
नात्यायतं रचित कम्बुविलास चौर्यं, भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
कण्ठं मनोहर गुणं गिरिराजकन्ये!, संचिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ॥२३॥
अत्यायताक्षमभिजात ललाटपट्टं, मन्दस्मितेन दरफुल्लकपोल - रेखम् ।
बिम्बाधरं वदनमुन्नत दीर्घनासं, यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जातः ॥२४॥
आविस्तुषार करलेखमनल्प - गन्ध, पुष्पोपरि भ्रमदलि व्रज निर्विशेषम् ।
यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं, स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥२५॥
श्रुतिसुचरित पाकं श्रीमतां स्तोत्रमेतत्, पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र, क्षितिप मुकुट लक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय ॥

॥ श्रीरुद्रयामले तन्त्रे आनन्दमयी श्रीभुवनेश्वरी स्तवः ॥

॥ श्रीभुवनेश्वरी खड्गमाला ॥

इस स्तोत्र के पाठ से यंत्रार्चन का फल प्राप्त होता है।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरी खड्गमाला मन्त्रस्य श्रीप्रकाशात्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीभुवनेश्वरी देवता, हं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, श्रीभुवनेश्वरी परामबाप्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीप्रकाशात्मा ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीभुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि। हं बीजाय नमः गुह्ये। ईं शक्तये नमः पादयोः। रं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीभुवनेश्वरी पराम्बा प्रसन्नार्थे जपे

विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

स्मरेद् रवीन्द्वग्नि विलोचनां तां , सत्पुस्तकां जाप्यवटीं दधानाम् ।
सिंहासनां मध्यमयन्त्र संस्थां, श्रीतत्त्व विद्यां परम्बां भजामि ॥
य एनां सचिन्तयेन्मन्त्री, सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् ।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः ॥
तादृशं खड्गमाप्रोति येन हस्त स्थितेन वै ।
अष्टादश महाद्वीपे सम्राट् भोक्ता भविष्यति ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीभुवनेश्वरी हृदय देवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्र देवि कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये श्रीभुवनेश्वरि दिव्यौघगुरु- रूपिणि, सिद्धौघगुरु- रूपिणि, मानवौघगुरु रूपिणि, श्रीगुरु- रूपिणि, परमगुरु- रूपिणि, परापरगुरु- रूपिणि, परमेष्ठीगुरु रूपिणि, अमृतभैरव सहित श्रीभुवनेश्वरि हृदयशक्ति, शिरःशक्ति, शिखाशक्ति, कवचशक्ति, नेत्रशक्त्यस्त्रशक्ति हृल्लेखे गगने रक्ते करालिके महोच्छूष्मे सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनि ॥१॥

गायत्री सहित ब्रह्ममयि, सावित्री सहित विष्णुमयि, सरस्वतीसहित रुद्रमयि, लक्ष्मीसहित कुबेरमयि, रतिसहित काममयि, पुष्टिसहित विघ्नराजमयि, शङ्खनिधिसहित वसुधामयि, पद्मनिधिसहित वसुमतिमयि, गायत्र्यादि सहश्रीभुवनेश्वरि ह्रां हृदय देवि, ह्रीं शिरोदेवि, ह्रूं शिखा देवि, ह्रैं कवच देवि, ह्रौं नेत्रदेवि, ह्रः अस्त्रदेवि, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनि ॥२॥

अनङ्गकुसुमे अनङ्गकुसुमातुरे अनङ्गमदने अनङ्गमदनातुरे भुवनपालिके गगनवेगे शशिरेखे अनङ्गवेगे सर्वरोग-हरचक्र स्वामिनि ॥३॥

कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि ॥४॥

ब्राह्मी माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे महालक्ष्म्यनङ्ग रूपेऽनङ्ग -कुसुमे अनङ्गमदनातुरे भुवनवेगे भुवनपालिके सर्वशिशिरेऽनङ्ग - मदनेऽनङ्ग -मेखले सर्वाशा- परिपूरक- चक्र स्वामिनि ॥५॥

इन्द्रमय्यग्नि मयि यममयि निऋतिमयि वरुणमयि वायुमयि सोममयि शानमयी ब्रह्ममय्यनन्तमयि वज्रमय्यग्निमयि दण्डमयि खड्गमयि पाशमय्यंकुशमयि गदामयि त्रिशूलमयि पद्ममयि चक्रमयि वरमय्यंकुशमयि पाशमय्यभयमयि बटुकमयि योगिनीमयि क्षेत्रपालमयि गणपतिमय्यष्टवसुमयि द्वादशादित्यमय्येकादशरुद्रमयि सर्वभूतमय्यमृतेश्वर सहित श्रीभुवनेश्वरि त्रैलोक्यमोहन चक्रस्वामिनि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥६॥

॥ फलश्रुति ॥

कथयामि महादेवि भुवनेशीं महेश्वरीं । अनया सदृशी विद्या नान्या ज्ञानस्य साधने ॥१॥
नात्र चित्त विशुद्धिर्वा नारि मित्रादि दूषणम् । न वा प्रयास बाहुल्यं समयासमयादिकम् ॥२॥
देवैर्देवत्व विधये सिद्धैः खेचर सिद्धये । पन्नगै राक्षसैर्मर्त्यैर्मुनिभिश्च मुमुक्षुभिः ॥३॥
कामिभिर्धर्मिभिश्चार्थ लिप्सुभिः सेविता परा । न तथा व्यय बाहुल्यं काम क्लेश करं तथा ॥४॥

य एवं चिन्तयेन्मन्त्री सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् । तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः ॥५॥
गद्य-पद्यमयी वाणी सभायां विजयी भवेत् । तस्य दर्शन मात्रेण वादिनो निष्कृतादरः ॥६॥
राजानोऽपि हि दासत्वं भजन्ते किं प्रयोजनः । दिवारात्रौ पुरश्चर्या कर्तुश्चैव क्षमो भवेत् ॥७॥
सर्वस्यैव जनस्येह वल्लभः कीर्तिवर्धनः । अन्ते च भजते देवीगणत्वं दुर्लभं नरः ॥८॥
चन्द्र-सूर्य-समो भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि । न तस्य दुर्लभं किञ्चित् यो वेत्ति भुवनेश्वरीम् ॥

॥श्रीभुवनेश्वरी रहस्ये खड्गमाला स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥श्रीभुवनेश्वरी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्॥

कैलाश शिखरे रम्ये नानारत्नोप शोभिते । नर-नारी हितार्थाय शिवं पप्रच्छ पार्वती ॥

॥देव्युवाच ॥

भुवनेश्वरी महाविद्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् । कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा ॥

॥ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि महाभागे स्तवराजमिदं शुभम् । सहस्र नाम्नामधिकं सिद्धिदं मोक्षहेतुकम् ॥
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः । त्रिकालं श्रद्धया युक्तैः सर्व कामफल प्रदम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रस्य श्रीशक्तिर्ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीभुवनेश्वरी देवता। चतुर्वर्ग साधने विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीशक्ति ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि। चतुर्वर्ग साधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥स्तोत्रम्॥

महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा। माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥१॥
वागीश्वरी योगरूपा योगिनी कोटि सेविता। जया च विजया चैव कौमारी सर्वमङ्गला ॥ २॥
हिंगुला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी। ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्ग प्रदायिनी ॥३॥
वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्या कुलपूजिता। वामाङ्गा वामाचारा च वामदेवप्रिया तथा ॥४॥
डाकिनी योगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका । पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती ॥५॥
भूचरी खेचरी माया मातङ्गी भुवनेश्वरी । कान्ता पतिव्रता साक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥६॥
उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिनी । इन्द्राणी ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा ॥७॥
सर्वधातुमयी - मूर्तिर्जलरूपा जलोदरी । आकाशी रणगा चैव नृकपाल विभूषणा ॥८॥
शर्म्मदा मोक्षदा चैव काम धर्मार्थदायिनी । गायत्री चाथ सावित्री त्रिसंध्या तीर्थगामिनी ॥९॥
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा। पौर्णमासी कुहूरूपा तिथिमूर्ति - स्वरूपिणी ॥१०॥
सुरारि - नाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला । अनला अर्द्धमात्रा च अरुणा पीतलोचना ॥११॥

क्षयरूपी क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता । अव्यक्ता व्यक्तलोका च शम्भुरूपा मनस्विनी ॥१३॥
मातङ्गी मत्तमातङ्गी महादेवप्रिया सदा। दैत्यहा चैव वाराही सर्वशास्त्रमयी शुभा ॥१४॥

॥फलश्रुति ॥

य इदं पठते भक्त्या शृणुयाद् वा समाहितः । अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत् ॥१॥
वैश्यस्तु धनवान् भूयात् शूद्रस्तु सुखमेधते। अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥३॥
मूर्खोपि लभते शास्त्रं चौरोपि लभते गतिम्। वेदानां पाठको विप्रः क्षत्रियो विजयो भवेत्॥२॥
ये पठन्ति सदाभक्त्या न ते वै दुःख भागिनः ॥४॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा चतुर्थकं। ये पठन्ति सदा भक्त्या स्वर्ग लोके च पूजिताः ॥५॥
रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा पन्नगा गरुडं यथा। शत्रवः प्रपलायन्ते तस्य वक्त्र विलोकनात् ॥६॥

॥श्रीरुद्रयामले श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीभुवनेश्वरी सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

देव देव! महादेव! सर्वशास्त्र विशारद, कपाल खट्वाङ्गधर! चिता-भस्मानुलेपन! ।
या आद्या प्रकृतिर्नित्या सर्वशास्त्रेषु गोपिता, तस्याः श्रीभुवनेश्वर्या नाम्नां पुण्यं सहस्त्रकम् ।
कथयस्व महादेव! येन देवी प्रसीदति॥

॥ श्रीमहेश्वर उवाच ॥

साधु पृष्टं महादेवि! साधु लोकहिताय च, या आद्या प्रकृतिर्नित्या सर्वशास्त्रेषु गोपिता
यस्याः स्मरणमात्रेणसर्वपापैः प्रमुच्यते, आराधनाद् भवेद् यस्या जीवन्मुक्तो न संशयः॥
तस्या नाम सहस्त्राणि कथयामि शृणुष्व तत् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरी सहस्त्रनाम स्तोत्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, आद्या श्रीभुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम धर्मार्थ काम मोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे। आद्या श्रीभुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः नाभौ। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। धर्मार्थ काम मोक्षार्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥सहस्त्रनाम स्तोत्रम्॥

ॐ आद्या कमला वाणी माया श्रीभुवनेश्वरी । भुवना भावना भव्या भवानी भवमोचनी ॥
रुद्राणी रुद्रभक्ता च तथा रुद्रप्रिया सती । उमा कामेश्वरी दुर्गा सर्वाणी सर्वमङ्गला ॥
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी सुन्दरप्रिया । रमणी रमणा रामा रामकार्यकरी शुभा ॥
ब्राह्मी नारायणी चण्डा चामुण्डा चण्डनायिका । माहेश्वरी च कौमारी वाराही चापराजिता ॥
महामाया मुक्तकेशी महात्रिपुरसुन्दरी । सुन्दरी शोभना रक्ता रक्तवस्त्र - पिधायिनी ॥

रक्ताभा रक्तवर्णा च रक्तबीज - निसूदिनी । रक्तचन्दन - लिप्ताङ्गी रक्तपुष्पप्रिया सदा ॥
कमला कामिनी कान्ता कामदेवप्रिया सदा । लक्ष्मीर्लोलाञ्चला चञ्चलाक्षी च चपलप्रिया ॥
भैरवी भयहर्त्री च महाभय - विनाशिनी । भयङ्करी महाभीम भयहा भयनाशिनी ॥
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे संस्मृता भयहारिणी । जया च विजया चैव जयपूर्णा जयप्रदा ॥
यमुना यामुना याम्या यमश्रेष्ठा यमप्रिया । सर्वेषां जनिका जन्या जनवर्द्धनकारिणी ॥
काली कपालिनी कुल्ला कालिका कालरात्रिका । महाकाल - हृदिस्था च कालभैरवरूपिणी ॥
कपाल खट्वांगधरा पाशाङ्कुश - विधारिणी । अभया च भया चैव तथा चाभयदायिनी ॥
महामाया भीमवेगा तथा च वरहस्तिनी । गौरी गौराङ्गिनी गौरा गौरवर्णा जयप्रदा ॥
उग्रा उग्रप्रभा शान्तिः शान्तिदाऽशान्ति- नाशिनी । उग्रतारा तथा चोग्रा नीला चैकजटा तथा ॥
हंसरूपा महातारा तथा च सिद्धिकालिका। तारा नीला च वागीशी तथा नीलसरस्वती ॥
गङ्गा काशी सती सत्या सर्वतीर्थमयी तथा । तीर्थरूपा तीर्थपुण्या तीर्थदा तीर्थसेविका ॥
पुण्यापुण्य - स्वरूपा च पुण्यदात्री सनातनी । पुण्यकाला पुण्यसंस्था तथा पुण्यजनप्रिया ॥
तुलसी तुलना तुल्या बालिका वेधसः प्रिया । सत्या सत्यवती भीमा रुक्मिणी कृष्णवल्लभा ॥
देवकी कृष्णमाता च सुभद्रा भद्ररूपिणी । मनोहरा तथा सौम्या सोमांगी सोमदर्शना ॥
घोररूपा घोरतेजा घोरवत् प्रियदर्शना । कुमारी बालिका क्षुद्रा कुमारी - रूपधारिणी ॥
युवती युवतीरूपा युवतीरस - रञ्जिका । पीनस्तनी क्षीणमध्या प्रौढ़ा मध्या जरातुरा ॥
अतिवृद्धा स्थाणुरूपा चार्वङ्गी चञ्चलानना । देवमाता देवरूपा देवकार्यकरी शुभा ॥
देवमाता दितिर्दक्षा सर्वमाता सनातनी । पानप्रिया पायिनी च चपला पललप्रिया ॥
मत्स्यमांस- प्रिया मांसाशिनी च जनवल्लभा । तपस्विनी तपी तप्या तपः सिद्धिप्रदायिनी ॥
हविष्याशी हविर्भोक्ती हव्यकव्य विलाशिनी । स्वधा स्वाहा स्वधाधारा यज्ञाङ्गी यज्ञभुक्सदा ॥
दक्षा दाक्षायणी दुर्गा दक्षयज्ञ - विनाशिनी । पार्वती पर्वतप्रीता तथा पर्वतवासिनी ॥
हैमी हर्म्या हेमरूपा मौलिमान्या मनोरमा । कैलासवासिनी शुक्ला शिवक्रोड - निवासिनी ॥
चार्वङ्गी चारुरूपा च शुभा चैव शुभानना। चलत् कुण्डलगण्डा श्रीलसत् - कुण्डल - धारिणी ॥
हेमसिंहोपरिस्था च हेमभूषणभूषणा । हेमाङ्गदा हेमभूषा सूर्यकोटिसमप्रभा ॥
तरुणादित्य सङ्काशा सिन्दूराञ्जित - विग्रहा । यवा यावकरूपा च रक्तचन्दन रूपधृक् ॥
कोटरी कोटराक्षी च निर्लज्जा च दिगम्बरी । पूतना वत्समाता च सूर्यमण्डलवासिनी ॥
श्मशान - वासिनी शून्या दृप्तचत्वर -वासिनी । मधुकैटभ -संहर्त्री महिषासुरघातिनी ॥
निशुम्भ-शुम्भ - शमनी चण्डमुण्ड विनाशिनी । शिवानी शिवरूपा च शिवदूती शिवप्रिया ॥
शिवदा शिववक्षःस्था शिवेष्टा शिवकारिणी । इन्द्राणी इन्द्रकन्या च राजकन्या सुरप्रिया ॥

लज्जाशीला साधुशीला कुलस्त्री कुलपूजिता । महाकुलीना निष्कामा विलज्जा भूषणान्विता ॥
कुलीना कुलकन्या सा तथैव कुलभूषिता । अनन्तानन्त - पाणिकाऽनन्तासुर - विनाशिनी ॥
सदाशिव सुसंगेन वाञ्छिताऽऽनन्द - दायिनी। नागांगी नागभूषा च नागहार- विधायिनी ॥
धरणी धारिणी धन्या महासिद्धिप्रदायिनी । भूतप्रेत पिशाचा च राकिनी लाकिनी तथा ॥
भूत-प्रेत पिशाचानां वलदा यक्षिणी शिवा । धृतिः कीर्तिः स्मृतिर्मेधा पुष्टिस्तुष्टिरुमा उषा ॥
शाङ्करी शाम्भवी मेना रतिः प्रीतिः सुलोचना । अनंग- मदना देवी अनंगमदनाऽऽतुरा ॥
भुवनेशी महामाया तथा भुवनपालिनी । ईश्वरी ईश्वरप्रीता चन्द्रशेखर -भूषिता ॥
चित्तानन्दकरी नन्दा चित्तसंस्था जनस्य च । अरूपा बहुरूपा च सर्वरूपा चिदात्मिका ॥
आनन्दरूपिणी नित्या तथाऽऽनन्द प्रदायिनी । नन्दा चानन्दरूपा च तथाऽऽनन्दप्रकाशिनी ॥
सदानन्दा सदानित्या साधकानन्ददायिनी । त्वरिता तरुणा भव्या भाविका च विभाविनी ॥
चन्द्रसूर्य - समादीप्ता चन्द्रसूर्यस्य - पालिका । नारसिंही हयग्रीवा हिरण्याक्ष - विनाशिनी ॥
वैष्णवी विष्णुभक्ता च शालग्राम - निवासिनी । चतुर्भुजा चाष्टभुजा सहस्त्रभुज - संज्ञिता ॥
आद्या कात्यायनी नित्या सर्वाद्या सर्वदायिका । सर्वमन्त्रमयी देवी सर्ववेदमयी शुभा ॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वलोकमयी परा । सर्वसम्मोहिनी देवी सर्वलोकवशङ्करी ॥
रंजनी रंजिता रागा देहलावण्य रंजिता । नटी नटप्रिया धूर्ता तथा धूर्त्तजनप्रिया ॥
महामाया महामोहा महासत्त्व विमोहिता । बलिप्रिया मांसरुचिर्मधु -मांसप्रिया सदा ॥
मधुमत्ता माधविका मधुमाधव - रूपिका । दिवामयी रात्रिमयी सन्ध्या सन्ध्या - स्वरूपिणी ॥
कामरूपा सूक्ष्मरूपा सूक्ष्मिणी चातिसूक्ष्मिणी । तिथिरूपा वाररूपा तथा नक्षत्ररूपिणी ॥
सर्वभूतमयी देवी पञ्चभूत - निवासिनी । शून्याकारा शून्यरूपा शून्यसंस्था च स्तम्भिनी ॥
ग्रहाणां स्थितिरूपा च रुद्रादीनां च सम्भवा । आकाश - गामिनी देवी ज्योतिश्चक्रनिवासिनी ॥
ऋषीणां ब्रह्मपुत्राणां तपःसिद्धि प्रदायिनी । अरुन्धती च गायत्री सावित्री सत्त्वरूपिणी ॥
चितासंस्था चितारूपा चित्तसिद्धि प्रदायिनी । शवस्था शवरूपा च शवसङ्गकुतूहला ॥
योगिनी योगरूपा च योगिनां मलहारिणी । सुप्रसन्ना महादेवी यामिनी मुक्तिदायिनी ॥
निर्मला विमला शुद्धा शुद्धसत्त्वा जयप्रदा । महामाया विष्णुमाया मोहिनी विश्वमोहिनी ॥
कार्यसिद्धिकरी देवी सर्वकार्य - निवासिनी । कार्याकार्यकरी रौद्री महाप्रलय - कारिणी ॥
स्त्री पुं भेदाह्यभेद्या च भेदिनी भेदनाशिनी । सर्वरूपा सर्वमयी अद्वैतानन्दरूपिणी ॥
प्रचण्डा चण्डिका चण्डा चण्डासुर - विनाशिनी । सुप्रशस्ता समस्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ॥
अरूपा च विरूपा च सुरूपा रूपवर्जिता । चित्ररूपा महारूपा विचित्रा च चिदात्मिका ॥
बहुशस्त्रा अशस्त्रा च सर्वशास्त्र - प्रदाहिणी । शास्त्रार्था शास्त्रवादा च नानाशात्रार्थवादिनी ॥

काव्यशास्त्रप्रमोदा च काव्यालङ्कार- वासिनी । रसज्ञा रसना जिह्वा रसामोदा रसप्रिया ॥
नानाकौतुक संयुक्ता नानारसविलासिनी । अव्यक्ता व्यक्तरूपा च विश्वरूपा सुरूपिणी ॥
रूपावस्या तथा जीवा वेशाढ्या वेशधारिणी । नानावेशधरा देवी नाना वेशेषु संस्थिता ॥
कुरूपा कुत्सिता कृष्णा कृष्णरूपा च कालिका । लक्ष्मीप्रदा महालक्ष्मीः सर्वलक्षण संयुता ॥
कुबेरगृह - संस्थाना धनरूपा धनप्रदा । नानारत्नप्रदा देवी रत्नपुष्पेषु संस्थिता ॥
वर्णसंस्था वर्णरूपा सर्ववर्णमयी तथा । ॐकाररूपिणी आद्या आदित्यज्योति- रूपिणी ॥
संसारमोचिनी देवी संग्रामे जयदायिनी । जयस्वरूपा जयाख्या जयिनी जयकारिणी ॥
मानिनी मानरूपा च मानभङ्ग - प्रणाशिनी । मान्या मानप्रिया मेधा मानिनी मानदायिनी ॥
साधका साधिका साध्या साधना साधनप्रिया । स्थावरा जङ्गमा सूक्ष्मा चपला चपलप्रिया ॥
ऋद्धिदा ऋद्धिरूपा च सिद्धिदा सिद्धिरूपिणी । क्षेमङ्करी शङ्करी च सर्वसम्मोह कारिणी ॥
वाञ्छिता वाञ्छनीया च सर्ववाञ्छा प्रदायिनी । भग - लिङ्ग प्रमोदा च भग-लिङ्गनिवासिनी ॥
भगरूपा भगाभोग्या लिङ्गरूपा च लिङ्गिनी । भगगीतिर्महाप्रीति लिङ्गगीति -र्महासुखा ॥
स्वयम्भू - कुसुमाराध्या स्वयम्भू - कुसुमाकुला । स्वयम्भूपुष्परूपा च स्वयम्भूकुसुमप्रिया ॥
शुक्ररूपा महाशुक्ला शुक्रबिन्दुनिवासिनी । शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्र पूजक पूजिता ॥
कामाक्षा कामरूपा च योगिनीपीठवासिनी । सर्वपीठमयी देवी पीठमध्यनिवासिनी ।
अक्षमालाधरा देवी पानपात्रविधायिनी । शूलहस्ता चक्रहस्ता पाशिनी पाशरूपिणी ।
खड्गिनी गदिनी चैव तथा सर्वास्त्रधारिणी । भाव्या भव्या भवानी सा भवभुक्ति प्रदायिनी ।
चतुरा चतुरप्रीता चतुराननपूजिता । देवस्तव्या देवपूज्या सर्वपूज्या सुरेश्वरी ।
जननी जनपुण्या च जनमानसचारिणी । जटिनी केशबद्धा च सुकेशी केशवासिका ।
अहिंसा द्वेषिका द्वेश्या सर्वद्वेषविनाशिनी । उच्चाटिनी स्तम्भिनी च मोहिनी मधुरेक्षणा ॥
क्रीडा क्रीडनखेला च खेलाकरणकारिका । सर्वज्ञा सर्वकार्या च सर्वभक्षा सुरारिहा ॥
सर्वरूपा सर्वशान्ता सर्वेषां प्राणरूपिणी । सृष्टिस्थितिकरी देवी तथा प्रलयकारिणी ।
मुग्धा साध्वी तथा रौद्री नानामूर्ति - विधारिणी । सर्वतत्वात्मिका गौरी नानामूर्तिविहारिणी ॥
उक्तानि यानि देवेशि! अनुक्तानि महेश्वरि । यत् किञ्चिद् दृश्यते देवि! तत् सर्वं भुवनेश्वरी ॥
इति श्रीभुवनेश्वर्या नामानि कथितानि ते । सहस्राणि महादेवि! फलमेषां निगद्यते ।

॥ फलश्रुति ॥

यः पठेत् प्रातरुत्थाय अर्द्धरात्रौ तथा परे । प्रातःकाले तथा मध्ये सायाह्ने हरवल्लभे !
यत्र-तत्र पठित्वा च भक्त्या एकाग्र - मानसः । यथाकाले यथास्थाने तस्य सिद्धिर्न संशयः ।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणुयाच्छ्रावयेत् तथा । तस्य सर्वंभवेत् सत्यं मनसा यच्च वाञ्छितम् ॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां च विशेषतः। कुहू-मङ्गल-संयुक्ते संक्रान्त्या शनिभौमयोः॥ य पठेत् पाठयेद् भक्त्या देव्या नाम सहस्त्रकं। तस्यसर्वं भवेद् देहे सफलं भुवनेश्वरी॥ श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे च पार्वति! चतुष्पथे चैकलिङ्गे मेरुदेशे तथैव च। जलमध्ये वह्निमध्ये संग्रामे ग्रामशान्तये। रणमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये। जत्वा मंत्र सहस्त्रं तु पठेन्नाम सहस्त्रकं। तस्य तुष्टा भवेद् देवी सर्वदा भुवनेश्वरी॥८॥

॥ इति श्री भुवनेश्वरी सहस्त्रनाम स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ अथ अन्नपूर्णा मंत्रः॥

(अन्नपूर्णा की आवरण पूजा प्रयोग ग्रंथ के दुसरे भाग में अवलोकन करें इस ग्रंथ में अन्नपूर्णा भैरवी नाम से यंत्रार्चन है।)

अन्नपूर्णा मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

विनियोगः- **ॐ अस्यान्नपूर्णा मंत्रस्य द्रुहिण (ब्रह्मा) ऋषिः। कृतिच्छन्दः। अन्नपूर्णेशी देवता। ममाखिल सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ द्रुहिण ऋषये नमः शिरसि। कृतिच्छन्दसे नमः मुखे। अन्नपूर्णा देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः- **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः इत्यादि से करन्यास एवं हृदयादि न्यास करें।**

॥ ध्यानम्॥

तप्तस्वर्णनिभा शशाङ्कमुकुटा रत्नप्रभासुरा, नानावस्त्र विराजिता त्रिनयना भूमिरमाभ्यां युता। दर्वीं हाटक भजानं च दधती रम्योच्चपीन-स्तनी, नित्यं तं शिवमाकलय मुदिता ध्यायेन्नपूर्णेश्वरी॥

॥ अन्य मंत्राः॥

(१) ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्येन्नपूर्णे स्वाहा।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्नं देहि देहि अन्नपूर्णे स्वाहा।

(३) ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्न पारिजातेश्वर्यन्नपूर्णे स्वाहा।

(४) ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्न वरदेऽन्नपूर्णे स्वाहा।

चार लाख जप कर पायसान्न, मिष्ठान्नादि से उदुम्बर समिध से बिल्व होम करे तो अन्न-धन की वृद्धि होवें।

॥ अन्नपूर्णा कवचम् ॥

॥ देव्युवाच ॥

भवता त्वन्नपूर्णाया या या विद्याः सुदुर्ल्लभाः ।
कृपया कथिताः सर्वाः श्रुताश्चाधिगता मया ॥१॥
सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं मंत्र विग्रहम् ।

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु पार्वति! वक्ष्यामि सावधानावधारय ॥२॥
ब्रह्मविद्यास्वरूपं च महदैश्वर्यदायकम् ।
पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्य भाग्भवेत् ॥३॥

विनियोगः– ॐ अस्यश्रीत्रैलोक्यरक्षणस्यास्य कवचस्यऋषिः शिवः। छन्दो विराट् देवता स्यादन्नपूर्णा समृद्धिदा ॥४॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।

ह्रीं नमो भगवत्यन्ते माहेश्वरिपदं ततः ॥५॥
अन्नपूर्णे ततः स्वाहा चैषा सप्तदशाक्षरी। पातु मामन्नपूर्णा सा या ख्याता भुवनत्रये ॥६॥
विमायाप्रणवाद्यैषा तथा सप्तदशाक्षरी। यात्वन्नपूर्णा सर्वाङ्गे रत्नकुम्भान्नपात्रदा ॥७॥
श्रीबीजाद्या तथैवैषा द्विरन्ध्रार्णा तथा मुखम् । प्रणवाद्या भ्रुवौ पातु कण्ठं वाग्बीजपूर्विका ॥८॥
कामबीजादिका चैषा हृदयं तु महेश्वरी। ऐं श्रीं ह्रीं च नमोऽन्ते च भगवतीपदं ततः ॥९॥
माहेश्वरी पदं चान्नपूर्णे स्वाहेति पातु मे। नाभिमेकार्ण विंशर्णा पायान्माहेश्वरी सदा ॥१०॥
तारं माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परम् । शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ॥११॥
अन्नपूर्णा महाविद्या ह्रीं पातु भुवनेश्वरी। शिरः श्रीं ह्रीं तथा क्लीं च त्रिपुटा पातु मे गुदम् ॥१२॥
षट्दीर्घभाजा बीजेन षडङ्गानि पुनन्तु माम् । इन्द्रो मां पातु पूर्वे च वह्निकोणेऽनलोऽवतु ॥१३॥
यमो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिश्च माम् । पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां पवनोऽवतु ॥१४॥
कुबेरश्चोत्तरे पातु चैशान्यां शंकरोऽवतु। ऊर्ध्वाधः पातु सततं ब्रह्मानन्तो यथाक्रमात् ॥१५॥
पान्तु वज्राद्यायुधानि दशदिक्षु यथाक्रमात् । इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यरक्षणं परम् ॥१६॥
यद्धृत्वा पठनाद्देवाः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च धारणात्पठनाद्यतः ॥१७॥
सृजत्यवति हन्त्येव कल्पेकल्पे पृथक् पृथक् । पुष्पाञ्जल्यष्टकं देव्यै मूलेनैव समर्पयेत् ॥१८॥
कवचस्यास्य पठनात्पूजायाः फलमाप्नुयात् । वाणी वक्त्रे वसेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ॥१९॥
अष्टोत्तरशतं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥२०॥
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोपि पुण्यवतां वरः। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रं प्राप्य पार्वति ।
माल्यानि कुसुमान्येव सुखदानि भवन्ति हि ॥२१॥

॥ इति श्रीभैरवतन्त्रेऽन्नपूर्णा कवचं समाप्तम् ॥

॥ अन्नपूर्णास्तोत्र ॥

ॐ नमः कल्याणदे देवि नमः शङ्करवल्लभे । नमो मुक्तिप्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमो मायागृहीताङ्गि नमः शङ्करवल्लभे । माहेश्वरि नमस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥२॥
अन्नपूर्णे हव्यवाहपत्नीरूपे हरप्रिये । कलाकाष्ठास्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥३॥
उद्यद्भानु सहस्राभे नयनत्रयभूषिते । चन्द्रचूडे महादेवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥४॥
विचित्रवसने देवि त्वन्नदानरतेऽनघे । शिवनृत्यकृतामोदे ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥५॥
षट्कोण पद्ममध्यस्थे षडङ्गयुवतीमये । ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥६॥
देवि चन्द्रकलापीठे सर्वसाम्राज्यदायिनि । सर्वानन्दकरे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥७॥
साधकाभीष्टदे देवि भवदुःख विनाशिनि । कुचभारनत देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥८॥
इन्द्राद्यर्चित पादाब्जे रुद्रादिरूपधारिणि । सर्वसम्पत्प्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥९॥
पूजाकाले पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतत्समाहितः । तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥१०॥
प्रातःकाले पठेद्यस्तु मन्त्रजापपुरः सरम् । तस्यैवात्र समृद्धिः स्याद्वर्द्धमाना दिनेदिने ॥११॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन । प्रकाशात्सिद्धि हानिस्तद्गोपायेद्यत्नतः सुधीः ॥१२॥

॥ इति श्रीभैरवतन्त्रेऽन्नपूर्णा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्री भुवनेश्वरी तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ भैरवी तंत्रम् ॥

दशमहाविद्याओं में आपका पांचवाँ स्थान हैं। त्रयीसिद्ध विद्या में पहला स्थान हैं। यह भगवती त्रिपुर सुंदरी का ही रौद्ररूप हैं। सृष्टि स्थिति संहार की अधिष्ठात्री हैं। भैरवी के अनेक मंत्र कार्यभेद से प्रचलित हैं आप शीघ्र सिद्धिप्रदा हैं। भगवती के अनेक स्वरूपों के प्रयोग प्रचलित हैं।

॥ अथ त्रिपुर भैरवी मंत्र प्रयोग: ॥

त्रिपुरा के तीन प्रकार हैं। **१. बाला २. भैरवी ३. सुन्दरी।** शारदा तिलक में इसके तीन कूटों का उद्धार लिखा हैं। हकार, सकार एवं रकार अर्धाक्षर तथा ऐंकार के योग से प्रथम वाग्भव कूट मंत्र **''हस्रैं''** हुआ। हकार, सकार, ककार, लकार, रकार अर्द्धाक्षर में ईकार का योगकर बिन्दु लगाने से द्वितीय कामराजकूट **''हस्क्लीं''** बनता हैं। हकार, सकार और रकार अर्द्ध में औं कार का योग कर विसर्ग लगाने से तृतीय शक्तिकूट **''हस्रौंः''** बनता हैं।

त्र्यक्षरी मंत्र :- हस्रैं हस्क्लीं हस्रौंः यह त्रिकूटा मंत्र हैं। पांच व्यञ्जनों से रचित होने के कारण त्रिपुर भैरवी का यह मंत्र पञ्चकूटा भी कहा जाता हैं।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, त्रिपुरभैरवी देवता, ऐं बीजम्, सौः (तार्तीय) शक्तिः, क्लीं कीलकं सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास - क्रमशः शिर, मुख, हृदय, गुह्य, पाद एवं सर्वाङ्ग में करें। इसके बाद नाभि से पैर तक **''हस्रैं नमः''** हृदय से नाभि तक **''हस्क्ल्रीं नमः''** से और मस्तक से हृदय तक **''हस्रौंः नमः''** से न्यास करें। **हस्रैं नमः दक्ष हस्ते, हस्क्लीं नमः वाम हस्ते, हस्रौं नमः करयोः, हस्रैं नमः शिरसि, हस्क्ल्रीं नमः मूलाधारे, हस्रौं नमः हृदये** से न्यास करें।

नवयोनि न्यासः- **हस्रैं नमः दक्ष कर्णे। हस्क्लीं नमः वामकर्णे। हस्रौंः नमः चिबुके। हस्रैं नमः दक्षगण्डे। हस्क्लीं नमः वामगण्डे। हस्रौंः नमः मुखे। हस्रैं नमः दक्षनेत्रे। हस्क्ल्रीं नमः वाम नेत्रे। हस्रौं नमः नासिकायां। हस्रै नमः दक्ष स्कंधे। हस्क्ल्रीं नमः वाम स्कंधै। हस्रौंः नमः उदरे। हस्रैं नमः दक्षकर्पूरे। हस्क्लीं नमः वाम कर्पूरे। हस्रौंः नमः जठरे। हस्रैं नमः दक्षजानै। हस्क्लीं नमः वाम जानौ। हस्रौंः नमः लिङ्गे। हस्रैं नमः दक्षपादे। हस्क्लीं नमः वाम पादे। हस्रौंः नमः गुह्ये।। हस्रैं नमः दक्षपार्श्वे। हस्क्लीं नमः वाम पार्श्वे। हस्रौंः नमः हृदये। हस्रैं नमः दक्षस्तने। हस्क्लीं नमः वाम स्तने। हस्रौंः नमः कण्ठे।** त्रिपुरसुंदरी विधान की तरह रत्यादि न्यास करें।

रत्यादि न्यासः- **मूलाधारे ऐं रत्यै नमः। हृदि क्लीं प्रीत्यै नमः। भ्रूमध्ये सौः मनोभवाय नमः। भ्रूमध्ये सौः अमृतेश्यै नमः। हृदि क्लीं योगेश्यै नमः। मूलाधारे ऐ विश्वयोन्यै नमः।**

मूर्तिन्यासः- **मूर्ध्नि स्ह्रों ईशान मनोभवाय नमः। वक्त्रे स्ह्रें तत्पुरुष मकरध्वजाय नमः। हृदि स्ह्रूं अधोरकुमार कन्दर्पाय नमः। गुह्ये स्ह्रिं वामदेवाय मन्मथाय नमः। पादयोः स्ह्रं सद्योजात कामदेवाय नमः।**

वाणन्यासः- **द्रां दाविण्यै नमः अंगुष्ठयोः। द्रीं क्षोभण्यै नमः तर्जन्योः। क्लीं वशीकरण्यै नमः मध्यमयोः। ब्लूं आकर्षण्यै नमः अनामिकयोः। सः सम्मोहन्यै नमः कनिष्ठयोः।** (ज्ञानार्णव में पंचवाणो को स्त्री संज्ञा से संबोधन करने को कहा हैं।)

कामन्यासः- **ह्रीं कामाय नमः अंगुष्ठयोः। क्लीं मन्मथाय नमः तर्जन्योः। ऐं कंदर्पाय नमः मध्यमयोः। ब्लूं मकरध्वजाय नमः अनामिकयोः। स्त्रीं मीनकेतवेनमः कनिष्ठयोः। तदन्तर द्रां द्रावण्यै नमः** इत्यादि पंचवाणों से मस्तक, पद, मुख, गुह्य, हृदय में क्रमशः न्यास करे। पुनः कराङ्गन्यास करे। यथा- **हस्त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, हस्त्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हस्त्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। हस्त्रें अनामिकाभ्यां हुं। हस्त्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। हस्त्रः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्। इसी तरह से "हृदयादि न्यास" करे।**

सुभगादि न्यासः- **भाले ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सुभगायै नमः। भ्रूमध्ये ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः भगायै नमः। वदने ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः भगसर्पिण्यै नमः। कण्ठिकायां ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः भगमालिन्यै नमः। कण्ठे ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्गायै नमः हृदि। ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्गकुसुमायै नमः नाभौ। ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः मेखलायै नमः लिङ्ग- मूले। ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्गमदनायै नमः।**

भूषणन्यासः- सब वर्णों के बाद "**नमः**" लगाकर न्यास करे। **अं नमः शिरसि। आं भाले। इं ईं भ्रुवोः। उं ऊं कर्णयोः। ऋं ॠं नेत्रयोः। लृं नसि। ॡं एं गण्डयोः ऐं ओं ओष्ठयोः। औं अधोदन्ते। अः उर्ध्वदन्तपंक्ते। कं चिबुके। खं गले। गं कण्ठे। घं ङं पार्श्वयोः। चं छं स्तनयो। जं झं बाहुमूलयोः। ञं टं कर्पूरयोः। ठं डं पाण्यो। ढं णं करपृष्ठयोः। तं नाभौ। थं गुह्ये। दं धं ऊर्वोः। नं पं जानुनोः। फं बं जङ्घयोः। भं मं स्फिचोः। यं चरणतलयोः। रं चरणांगुष्ठयोः। वं काञ्च्यां लं ग्रीवायां। ळं कटके। शं हृदये। क्षं गुह्ये। षं कर्णयोः। सं गण्डयोः। हं मौलौ।** उसके बाद त्रिखण्डा मुद्रा दिखाकर ध्यान करे।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यद्भानु सहस्त्रकांतिमरुण- क्षौमां शिरोमालिकाम्, रक्तालिप्त- पयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद् वक्त्रार्विन्द श्रियम्। देवीं बद्धहिमांशु रत्नमुकटां वन्देऽरविन्द स्थिताम्॥

पीठपूजा- "**ॐ आधार शक्तये नमः**" से आधार शक्ति की पूजा करे। **ॐ मण्डूकादि पीठदेवताभ्यो नमः** से पीठ देवता पश्चात् पीठ शक्तियों की पूजा करें। **ॐ इच्छायै नमः। ज्ञानायै, क्रियायै, कामिन्यै, कामदायिन्यै, रत्यै रतिप्रियायै, नन्दायै, नन्दिन्यै, मध्ये मनोन्मन्यै नमः। ऐं परायै नमः। ऐं अपरायै नमः। ऐं परापरायै नमः। हसौः सदाशिव- महाप्रेत-पद्मासनाय नमः** से आसन शक्ति की पूजा करे।

॥ अथ आवरण पूजनम् ॥

शारदातिलक के अनुसार दुर्गायंत्र की तरह नवयोनि (नव त्रिकोण) मय कर्णिका के ऊपर अष्टदल बनाये। उसके बाहर चारद्वार युक्त भूपूर बनायें। अन्य ग्रन्थों में एक पर एक नव त्रिकोण बनाते हुये उन पर अष्टदल, भूपुर युक्त यंत्र है।
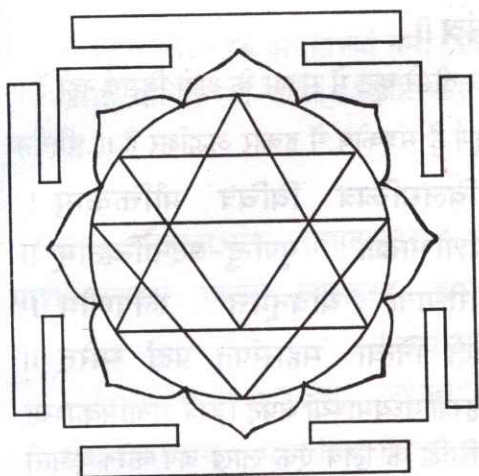
॥ श्री त्रिपुर भैरवी यन्त्रम् ॥
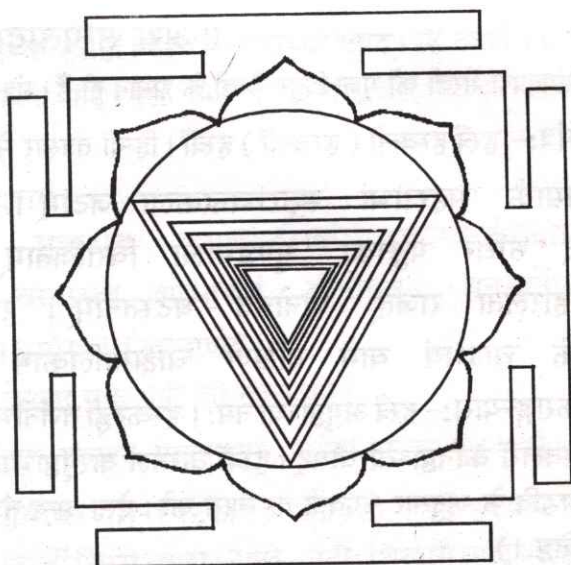
॥ मन्त्रमहार्णवोक्त नवयोन्यात्मकत्रिपुरभैरवी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम्:- मध्य बिन्दु में **''ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसौः''** से देवी की मूर्ति की कल्पना करे। देवी का आवाहन करे- **ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते। यावत् त्वां पूजयिमामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव॥** अपने चार गुरु का अमुकानंदनाथ नाम सहित पूजन करे। **ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमगुरुभ्यो नमः। ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठी गुरुभ्यो नमः।** मध्य त्रिकोण में- **ऐं रत्यै नमः, क्लीं प्रीत्यै नमः, सौः मनोभवायै नमः** से पूजन करे।

द्वितीयवरणम्:- (मध्ये) षट्दिक्षु चारों कोणों में- **ह्सां हृदयाय नमः। ह्सीं शिरसे स्वाहा। ह्सूं शिखायै वषट्। ह्सें कवचाय हुं।** अग्रे - **ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्सः अस्त्राय फट् दिक्षु।**

तृतीयावरणम्:- (मध्ये) देवी के उत्तर में- **''द्रां द्राविण्यै नमः, द्रीं क्षोभिण्यै नमः।** दक्षिण में- **क्लीं वशीकरण्यै नमः ब्लूं आकर्षण्यै नमः।** अग्रभाग में- **सः संमोहिन्यै नमः।** से पंचबाणों की पूजा करे। पुनः उत्तर में **ह्रीं कामाय नमः, क्लीं मन्मथाय नमः।** दक्षिण में- **ऐं कन्दर्पाय नमः, ब्लूं मकरध्वाज नमः।** अग्रभाग में- **स्त्रीं मीनकेतवे नमः।** पंचकामों की पूजा करे।''

चतुर्थावरणम्:- अष्टयोनियों में (अष्ट त्रिभुजों में) सभी नाम मंत्रों के प्रारंभ में **''ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः''** एवं अंत में ''नमः'' लगाकर पूजा करे। यथा- **ऐ क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सुभगायै नमः। भगायै। भगसर्पिण्यै। भगमालिन्यै। अनङ्गायै। अनङ्ग- कुसुमायै नमः। अनङ्ग- मेखलायै। अनङ्गमदनायै नमः।**

पंचमावरणम्- अष्टदलों में अष्ट भैरव एवं अष्टमातृकाओं का पूजन करे। **ॐ असिताङ्ग- भैरव ब्राह्मीभ्यां नमः। ॐ रुरुभैरवमाहेश्वरीभ्यां नमः। ॐ चण्ड- भैरव कौमारीभ्यां नमः। ॐ क्रोधभैरव वैष्णवीभ्यां नमः। ॐ उन्मत्त- भैरव वाराहीभ्यां नमः। ॐ कपालीभैरव इन्द्राणीभ्यां नमः। ॐ भीषणभैरव चामुण्डाभ्यां नमः। ॐ संहारभैरव महालक्ष्मीभ्यां नमः।**

षष्ठमावरणम्- भूपूर में इन्द्रादि दिक्पालों एवं उनके आयुधों का पूजन करे। नैवेद्य के बाद गणेश, भैरव, योगिनी क्षेत्रपाल को बलि देवे। दस लाख जपकर पलाश पुष्पों द्वारा बारह सहस्त्र होम करे।

॥ अथ सम्पत्प्रदा भैरवी मंत्र ॥

संपत्प्रदा भैरवी की पूजा त्रिपुर भैरवी के समान ही हैं। मंत्र में मूल अंतर तीसरे कूट में सकार के आगे विसर्ग नहीं हैं।

मंत्रः- **हस्त्रैं हस्क्ल्रीं (हस्क्ल्रीं) हस्त्रौं**। हिन्दी तंत्रसार में **ह** अक्षर पूर्ण हैं मंत्रकोष में हकार अर्द्धाक्षर हैं।

आताम्रार्क सहस्राभां स्फुरच्चन्द्रकला जटाम्। किरीटरत्नविलसच्चित्र विचित्र मौक्तिकाम्। स्रवद रुधिर पङ्काढ्य मुण्डमाला विराजिताम्। नयनत्रयशोभाढ्यां पूर्णेन्दु-वदनान्विताम् ॥ मुक्ताहारलता राजत् पीनोन्नत-घटस्तनीम्। रक्ताम्बर परीधानां योवन्मत्त रूपिणीम्। पुस्तकं चाऽभयं वामे दक्षिणे चाक्षमालिकाम्। वरदानप्रदा नित्यां महासंपत् प्रदां स्मरेत् ॥

कराङ्गन्यासः- **हस्त्रैं अगुष्ठाभ्यां नमः। हस्कल्ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हस्त्रौं मध्यमाभ्यां वषट्। हस्त्रैं अनामिकाभ्यां हुं। हस्क्लरीं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। हस्त्रौं करतल करपृष्ठाभ्यां फट्**। मंत्रसिद्धि के लिये एक लाख जप करे। कुमारी पूजा पद्धति के अनुसार भगवती के न्यास करे। ऐसा अन्य तंत्रों में लिखा हैं। **(पाठान्तर- हस्क्ल्रीं तर्जनी.। स्क्लरीं कनितिष्ठ.।)**

॥ कौलेश भैरवी ॥

मंत्र - **स्हैं स्हक्लीं (स्ह्क्ल्रीं) स्हौं** ध्यान संपत्प्रदा भैरवी के समान। ऋष्यादि भी **त्रिपुरा** के समान हैं। तंत्रसार में द्वितीय कूट में **ह** पूर्णाक्षर हैं। मंत्र कोष में **ह** अर्द्धाक्षर हैं।

॥ सकलसिद्धिदा भैरवी ॥

मंत्र - **''स्हैं स्हक्लीं स्हौं''** कौलव भैरवी एवं इस मंत्र में रकार का अभाव हैं। इसका ध्यान संपत्प्रदा भैरवी के समान ही हैं। मंत्रकोष में मध्यकूट में **''ह''** अर्द्ध है। तथा रेफ हीन के लिये लिखा है एतस्या एव विद्याया आद्यन्ते रेफ वर्जिते।

॥ भय विध्वंसिनी भैरवी ॥

मंत्र - **(१) हस्त्रैं हस्त्रीं हसौं** इसका ध्यान भी संपत्प्रदा भैरवी के समान हैं।
(२) हसैं हस्क्ल्रीं हसौं (मंत्रकोषे)।

॥ चैतन्य भैरवी ॥

मंत्रः- **१. स्हैं स्क्ल्हीं स्हौं** इसको त्रैलोक्यमातृका चैतन्य भैरवी विद्या भी कहते हैं।

२. स्हैं स्क्ल्हीं स्हौंः तृतीय कूट का मंत्रोद्धार यथा - चन्द्रशेखर वह्नि बीजं चतुर्दश स्वर युक्तं विसर्गाढ्यं (मंत्रकोष)

॥ आवरण पूजा ॥

मण्डूकादि पीठदेवताभ्यो नमः से पीठ पूजा तथा वामादि पीठ शक्तियों का पूजन करे। **ॐ वामायै नमः, ज्येष्ठायै नमः, रौद्रै नमः, अंबिकायै नमः, इच्छायै नमः। ज्ञानायै नमः, क्रियायै नमः, कुब्जिकायै नमः, चित्रायै नमः, विषघ्निकायै नमः, भ्रामयैं (भूचयैं) नमः मध्ये- आनन्दायै नमः**। पश्चात् मध्ये में- **''हसौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः''** से पीठ पूजा करे। ज्ञानार्णव ग्रंथ के अनुसार संपत्प्रदा, बाला, कौलेशी, सकलसिद्धिदा विद्याओं की उपरोक्त पीठशक्तियाँ ही हैं।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छंद, चैतन्य भैरवी देवता इष्टार्थे जपे विनियोगः।**

करांगन्यासः- **स्हैं अंगुष्ठाभ्यां नमः। स्क्ल्ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। स्ह्रौः मध्यमाभ्यां वषट्। स्हैं अनामिकाभ्यां हुं। स्क्स्ह्रीं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। स्हरौः करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।** इसी तरह षडङ्गन्यास करे(पाठान्तर- **स्क्ल्ह्रीं कनिष्ठि.**)।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यद्भानु सहस्राभां नानालङ्कार भूषिताम्, मुकुटाग्र लसच्चन्द्ररेखां रक्ताम्बरान्विताम्। पाशांकुशधरां नित्यां वामहस्ते कपालिनीम्, वरदाभय शोभाढ्यां पीनोन्नत- घनस्तनीम् ॥

॥ अथ आवरण पूजा प्रयोगः॥ (ज्ञानार्णवे)

पहले त्रिकोण पश्चात् षट्कोण, अष्टदल उसके बाहर चारद्वार युक्त भूपूर की रचना करे।

प्रथमावरणम् - मध्य बिन्दु में देवी का ध्यान कर गुरु, परमगुरु, परात्पर गुरु, परमेष्ठी गुरु का पूजन करे।
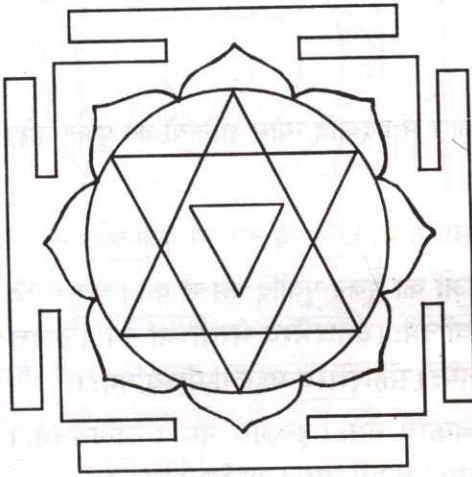
द्वितीयावरणम्-(षट्कोणे) अग्निकोणे - **स्हैं हृदयाय नमः।** ईशाने - **स्क्ल्ह्रीं शिरसे स्वाहा।** नैर्ऋते - **स्ह्रौः शिखायै वषट्।** वायुकोणे - **स्हैं कवचाय हुं।** मध्ये - **स्क्ल्ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। चतुर्दिके स्ह्रौः अस्त्राय फट्।** पुनः **रत्यै नमः। प्रीत्यै नमः। मनोभवायै नमः। अमृतेश्यै नमः। योगेश्यै नमः। विश्वयोन्यै नमः।** से षट्कोण में पूजा करे। देवीके अग्रभाग में **ॐ वसन्ताय नमः।** वामे - **ॐ कामदेवाय नमः।** दक्षिणे-**ॐ चापाय नमः।** फिर पञ्च बाणों की पूजा करे- **द्रां द्राविण्यै नमः। द्रीं क्षोभण्यै नमः। क्लीं वशीकरण्यै नमः। ब्लूं आकषण्यै नमः। सः संमोहन्यै नमः।** पुनः षट्कोणे- **ॐ डाकिन्यै नमः। ॐ राकिण्यै नमः। ॐ लाकिन्यै नमः। ॐ काकिन्यै नमः। ॐ साकिन्यै नमः। ॐ हाकिन्यै नमः।**

॥ श्री भैरवी यन्त्रम् ॥

तृतीयावरणम्:- (अष्टदले) सभी शक्तियों के नाम के पहले **ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः एवं पश्चात् नमः** लगाकर पूजा करे। **सुभगायै नमः। भगायै नमः। भगसर्पिण्यै नमः। भगमालिन्यै नमः। अनङ्गायै नमः। अनङ्ग कुसुमायै नमः। अनङ्गमेखलायै नमः। अनङ्गमदनायै नमः।**

चतुर्थावरणम्:- (अष्टदल पत्राग्रे) **ॐ परभृतायै (परभृते) नमः। सारसाय नमः। शुकाय नमः। मेघाह्वयाय (मेघच्छयाय) नमः। मेघाय नमः। अपाङ्गाय नमः। भ्रूविलासाय नमः। हावाय नमः। भावाय नमः।**

पंचमावरणम्:- भूपूर में इन्द्रादि १० दिग्पालों एवं उनके आयुधों का पूजन करे। धूप दीप नैवेद्यादि अर्पण कर जप करे। मंत्र के पुरश्चरण हेतु एक लाख जप करे।

॥ कामेश्वरी भैरवी ॥

''ज्ञानार्णव तंत्र'' में कामेश्वरी भैरवी को पंचसिंहासनों में पूर्वदिशा में स्थित सिंहासन पर विराजमान कहा हैं।

एकादशाक्षर मंत्रः- स्हैं स्क्ल्ह्रीं नित्य-क्लिन्ने मदद्रवे स्ह्रौः। इसका ध्यान पूजन चैतन्य भैरवी के समान हैं। आवरण पूजा में कुछ भेद से त्रिकोण में **''ॐ नित्यायै नमः, ॐ क्लिन्नायै नमः, ॐ मदद्रवायै नमः''** से पूजन कर एक एक कूट से **''षडङ्गपूजा एवं न्यास''** करे।

॥ षट्कूटा भैरवी ॥

मंत्रः- **इ्र्ल्क्स्हैं इ्र्ल्क्स्हीं इ्र्ल्क्स्हौं**। कहीं कहीं तृतीय बीज ''**इ्र्ल्क्स्हौः**'' रूप में ग्रहण किया हैं।

॥ ध्यानम् ॥

बालसूर्यप्रभां देवीं जवाकुसुम - सन्निभाम् । मुण्डमावली - रम्यां बालसूर्यमांशुकाम् ॥ सुवर्णकलशाकार पीनोन्नत-पयोधराम् । पाशांकुशौ पुस्तकं च तथा च जप मालिकाम् ॥

कराङ्गन्यासः- **इ्र्ल्क्स्हैं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इ्र्ल्क्स्हीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। इ्र्ल्क्स्हौं मध्यमाध्यां वषट्। इ्र्ल्क्स्हैं अनामिकाभ्यां हुं। इ्र्ल्क्स्हीं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। इ्र्ल्क्स्हौं करतल करपृष्ठाभ्यां फट्**। इसी तरह हृदयादि न्यास करे।

॥ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

पूजा यंत्र हेतु पहले **त्रिकोण, अष्टदल उसके बाहर द्वादशदलकमल, उसके बाहर चारद्वार युक्त चतुरस्त्र बनाये**। यंत्र मध्य में देवी का आवाहन करे।

१. यन्त्र मध्य में देवी का ध्यान कर आवाहन पूजा करे।
२. षट्कोण में पूर्व में जो ''**षडङ्गन्यास**'' मंत्र कहे है उनसे एक एक कोण में हृदयादि न्यास शक्तियों का पूजन करे।
३. त्रिकोण में- **ऐं रत्यै नमः, क्लीं प्रीत्यै नमः, सौः मनोभवायै नमः**।
४. षट्कोण में- **ॐ डाकिन्यै नमः, राकिण्यै, लाकिन्यै, काकिन्यै, साकिन्यै, हाकिन्यै** नमः से पूजा करे।
५. अष्टदल में- **असिताङ्गादि अष्टभैरव एवं ब्राह्मी आदि अष्टमात्तृकाओं** का पूजन पूर्वादि क्रम से करे। यथा- **ॐ असिताङ्ग ब्राह्मीभ्यां नमः। रुरुमाहेश्वरीभ्यां नमः। चण्डकौमारीभ्यां नमः। क्रोधभैरव भैरवीभ्यां नमः। उन्मत्त वाराहीभ्यां नमः। कपालीन्द्राणीभ्यां नमः। भीषण चामुण्डाभ्यां नमः। संहारभैरव महालक्ष्मीभ्यांनमः।**
६. द्वादशदलेः- **ॐ वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। अंबिकायै नमः। इच्छायै नमः। ज्ञानायैनमः। क्रियायै नमः। कुब्जिकायै नमः। विचित्रायै नमः। विषध्निकायै नमः। भूचर्यै नमः। आनंदायै नमः।**
७. चतुरस्त्र में सायुध ''इन्द्रादि द्वारपालों'' का पूजन करे।

॥ नित्या भैरवी ॥

मंत्रः- **हस्क्ल्डैं हस्क्ल्र्डीं हस्क्ल्डौं**। (मंत्रकोष में ''**ह**'' अर्द्ध है।)

ज्ञानार्णव में **षट्कूटा भैरवी** मंत्र को **विलोम** करके यह मंत्र लिखा हैं। पूजा पद्धति षट्कूटा भैरवी के समान हैं। मेरे अनुमान से इसकी आवरण पूजा षट्कूटा के विलोम क्रम अर्थात् पहले चतुरस्त्र, द्वादशदल अष्टदल, षट्कोण में कर पश्चात् मध्य त्रिकोण में पूजा करे। मध्य बिन्दु में देवी का ध्यान कर पूजा करे।

॥ रुद्रभैरवी ॥

मंत्रो यथा- **हस्ख्फ्रें हस्क्ल्रीं हसौः**।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। रुद्रभैरवी देवता इष्टार्थे जपे विनियोगः।**

कराङ्गन्यासः- **हस्ख्फ्रें अंगुष्ठाभ्यां नमः। हस्क्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हसौः मध्यमाभ्यां वषट्। हस्ख्फ्रें**

अनामिकाभ्यां हुं। हस्क्लीं कनिभ्यां वौषट्। हसौः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

उद्यद्भानु सहस्राभां चन्द्रचूडां त्रिलोचनाम्। नानाऽलङ्कार सुभगां सर्ववैरि-निकृन्तनीम्॥ वमद्-रुधिर-मुण्डाली कलितां रक्तवाससीम्। त्रिशूलं डमरुं खड्गं तथा खेटकमेव च। पिनाकं च शरान् देवीं पाशांकुश युगं क्रमात्। पुस्तकं चाक्षमालां च शिवसिंहासन स्थिताम्॥

॥ आवरण पूजा ॥

पहले त्रिकोण उसके बाहर दो वृत्त एवं अष्टदल बनाये उसके बाहर वृत्त तथा चारद्वार युक्त चतुरस्त्र बनाये। शिव की पीठ शक्तियों का आधारपीठ में पूजन करे। **ह्रीं ज्ञानात्मने नमः** से आधार शक्ति की पूजा करे। **वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। काल्यैनमः। कलविकरण्यै नमः। बलविकरण्यै नमः। बल प्रमथन्यै नमः। सर्वभूतदमन्यै नमः** (इति पूर्वादिक्रमेण)। मध्ये- **ॐ मनोन्मन्यै नमः**। पीठपर मंत्र से भद्रमण्डल पर न्यास करे। यथा- **अघोरे ऐं घोरे ह्रीं सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो घोर घोरतरे श्री नमोऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ऐं ह्रीं श्रीं।**

इस प्रकार ध्यान कर चैतन्य भैरवी के समान पीठ पूजा करे।

प्रथमावरणम् - चैतन्य भैरवी के समान मध्य बिन्दु में गुरु चतुष्टय व भगवती का पूजन करे।

द्वितीयावरणम्ः- (षट्कोणे)- अग्निकोणे- **हस्ख्रें हृदयाय नमः**। ईशाने- **हस्क्लीं शिरसे स्वाहा**। नैऋते- **हसौः शिखायै वषट्**। वायुकोणे **हस्ख्रे कवचाय हुं**। मध्ये- **हस्क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्**। चतुर्दिक्षु- **हसौः अस्त्राय फट्**। देवी के वाम कोण में- "**ऐं रत्यै नमः**" दक्षिणकोण में- "**क्लीं प्रीत्यै नमः**" अग्निकोण में- "**सौः मनोभवायै नमः**" से पूजन करे।

तृतीयावरणम्ः- (अष्टदलमूले)- **सुभगायै नमः। भगायै नमः। भगसर्पिण्यै नमः। भगमालिन्यै नमः। अनङ्गायै नमः। अनङ्गकुसुमायै नमः। अनङ्ग- मेखलायै नमः। अनङ्गमदनायै नमः।**

चतुर्थावरणम्-(अष्टदले) दलों के मध्य भाग में असितांगादि अष्टभैरव तथा दलों के अग्रभाग में ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का पूजन करे। पूर्वादि क्रमेण- **ॐ असिताङ्ग ब्राह्मीभ्यां नमः। रुरुभैरव माहेश्वरीभ्यां नमः। चण्डभैरव भैरवीभ्यां नमः। क्रोधभैरव भैरवीभ्यां नमः। उन्मत्तभैरव वाराहीभ्यां नमः। कपालीन्द्राणीभ्यां नमः। भीषण भैरव चामुण्डाभ्यां नमः। संहार भैरव महालक्ष्मीभ्यां नमः।**

पंचमावरणम्ः- चतुरस्त्र में इन्द्रादि दिग्पालों का सायुध पूजन करे।

॥ भुवनेश्वरी भैरवी ॥

मंत्रा :- **(१) हसैं हस्क्ल्हीं हसौः** इस मंत्र के दक्षिणामूर्ति ऋषि, पंक्तिछंद, "**भुवनेश्वरी भैरवी**" देवता हैं
(२) स्हैं हस्क्ल्हीं स्हौः दोनों मंत्रों की पूजा पद्धति समान हैं। इसे "**कमलेश्वरी भैरवी**" भी कहा हैं।

मंत्रकोष में प्रथम मंत्र तथा द्वितीय मंत्र के मध्यकूट में "**ह**" अर्द्ध है।

कराङ्गन्यासः- **हस्क्ल्हां अंगुष्ठाभ्यां नमः। हस्क्ल्हीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हस्क्ल्हूं मध्यमाभ्यां वषट्। हस्क्ल्हैं अनामिकाभ्यां हुं। हस्क्ल्हौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। हस्क्ल ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।** इसी तरह से हृदयादि षडङ्गन्यास करे।

जवाकुसुम - सङ्काशां दाडिमी - कुसुमोपमाम्। चन्द्ररेखां जटाजूटां त्रिनेत्रां रक्तवाससीम् ॥ नानाऽलङ्कार सुभगां पीनोन्नत - घनस्तनीम्। पाशांकुश - वराभीतिधारयन्तीं शिवां प्रिये।

इस प्रकार ध्यान कर शेषकर्म **''चैतन्य भैरवी''** की पूजा पद्धति के अनुसार पूर्ण करे।

॥ अष्टाक्षरी त्रिपुर भैरवी ॥

अष्टाक्षरी मंत्रः- **हसैं हसकरीं हसैं।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। त्रिपुरभैरवी देवता। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिं। क्लीं कीलकं। ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **हसरां हृदयाय नमः। हसरीं शिरसे स्वाहा। हसरूं शिखायै वषट्। हसरैं कवचाय हुं। हसरों नेत्रत्रयाय वौषट्। हसरः अस्त्राय फट्।** इसी तरह कराङ्गन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यद्भानु - सहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां, रक्तालिप्तपयोधरां जपपरां विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र - विलसद्वक्त्रारविन्द श्रियं, देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम् ॥

॥ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः से सर्वतोभद्र पीठ की पूजा करे। उस नवपीठशक्तियों का पूजन करें। **ॐ इच्छायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ कामदायिन्यै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ रतिप्रियायै नमः। ॐ नंदायै नमः। ॐ परायै नमः।** पश्चात् देवी यंत्र को शुद्धकर पीठ पर स्थापित करे। मध्य में **''नव योनि त्रिकोण''** एक के ऊपर एक बनाये मंत्रमहार्णव में त्रिकोण उर्ध्वमुखी बनाये है जो अशुद्ध हैं स्त्री देवता का त्रिकोण नीचे एवं पुरुष देवता का त्रिकोण ऊपर हैं। अथवा **नवदुर्गा यंत्र की तरह नव त्रिकोण बनाये। उनके बाहर अष्टदल एवं चारद्वारयुक्त चतुरस्त्र बनायें।** हाथ में पुष्प लेकर देवी को आसन प्रदान करे। **हसौं सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः।** पुनः पीठ मध्ये में - **''ऐं ह्रीं स ह स ष ह क्रे ह्भौं''** इस मंत्र से यंत्र मध्य में मूर्ति कल्पना करे एवं देवी का ध्यान कर आवाहन करें।

प्रथमावरणम्:- यंत्र मध्य में अग्निकोणादि में तथा मध्य व दिक्षु दिशा में षडङ्गन्यास मंत्रों से हृदयादि अंग पूजा करे।

द्वितीयावरणम् :- (मध्ये) उत्तरे- **द्रां द्राविण्यै नमः। द्रीं क्षोभिण्यै नमः।** दक्षिणे- **क्लीं वशीकरण्यै नमः। प्लुं लोपाकर्षिण्यै नमः।** आग्रेयां- **स्त्रीं संमोहिन्यै नमः।** उत्तरे- **ह्रीं कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः।** दक्षिणे- **ऐं कंदर्पाय नमः। प्लूं मकरध्वजाय नमः।** आग्रेयां- **स्त्रीं मीनकेतवे नमः।**

तृतीयावरणम् (अष्टयोनिषु) :- **रुद्र भैरवी की तरह सुभगादि से ''अनङ्ग मदनादि''** देवियों तक का पूजन करें।

चतुर्थावरणम्:-(अष्टदले) **अष्टदल में रुद्रभैरवी के समान अष्टभैरव व ब्राह्मी आदि अष्टमातृका का पूजन करें। चण्ड भैरव के साथ ''कौमारी'' तथा क्रोध भैरव के साथ ''वैष्णवी'' का पूजन करे यहीं अंतर हैं।**

पंचमावरणम् - (भूपूरे) :- **इन्द्रादि लोकपालों का सायुध अर्चन करे।** मंत्र के २४ लाख जप व १२ हजार बहेडे के पुष्पों से होम करे।

॥ त्रिपुराबाला भैरवी ॥

१. ऐं क्लीं सौः। यह बाला त्रिपुरा का मंत्र हैं २. ऐं सौः क्लीं। ३. ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं यह पंचाक्षर मंत्र हैं। ४-५ **हंसः ऐं क्लीं सौः एवं ऐं क्लीं सौः हंसः।** इन दोनों मंत्रों के जप से बाला देवी के सुप्तादि दोषों की शुद्धि होती हैं। **६-७ आं सहैं ह्रीं सहकलरीं क्रों सहरौंः।** इस मंत्र के अंत में "**हंसः**" जोड़ने से षोडशाक्षरी मंत्र बन जाता हैं।

॥ नवकूटाबाला भैरवी ॥

मंत्रो यथा-(१) **ऐं क्लीं सौः हसैं हस्क्लीं हसौं हस्त्रैं हस्क्लीं हस्त्रौः।** अन्यत्र **हकार** अर्द्धाक्षर हैं तथा आखिरी दो कूट **ह्स्क्लीं हसौः**, हैं। (२) **ऐं क्लीं सौः ह्सैं ह्स्क्लैं हसौः स्हैं स्ह्क्लैं स्हौः।**

दीपनी मंत्रः- (३) ऐं वद वद वाग्वादिनि क्लिन्ने क्लेदिनि महामोक्षं कुरु क्लीं ॐ महामोक्षं कुरु सौः। (श्रीक्रमे)

॥ एकादशाक्षरी कामेश्वरी भैरवी ॥

मंत्रो यथा- **स्हैं स्क्ल्हीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्हौः।** पूजन विधि चैतन्य भैरवी के समान हैं।

॥ माहेश्वरी अन्नपूर्णा भैरवीश्वरि ॥

षोडशाक्षरी मंत्रः-नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

सप्तदशाक्षरी मंत्रः- (१) ह्रीं नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। (२) ॐ नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। (३) "श्रीं" अथवा **"ऐं"** या **"क्लीं"** बीजाक्षर युक्त- **श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।**

अष्टादशाक्षरी मंत्र :- (१) ह्रीं ॐ नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। (मेरु तंत्रे) (२) ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। (३) ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। (४) श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

ऊनविंशाक्षरी मंत्रः- तीसरे, चौथे मंत्र के आगे "ॐ" लगावे।

॥ विंशत्यक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्र - **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।** (मेरु तंत्रे) इस मंत्र के **ऋषि ब्रह्मा, त्रिष्टुप्छंद, अन्नपूर्णा देवता, ह्रीं बीज, श्रीं शक्ति, क्लीं कीलक हैं। (२) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।** (तंत्रसारे)

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री अन्नपूर्णा भैरवी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिं, क्लीं कीलकं, अन्न धन ऐश्वर्यादि प्राप्तये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदि अन्नपूर्णेश्वर्यै नमः। गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः। पादयोः श्रीं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे क्लीं कीलकाय नमः।**

पदन्यासः- **मूर्ध्नि ॐ नमः। नेत्रयोः ह्रीं नमः, श्रीं नमः। कर्णयोः क्लीं नमः नमो नमः। नसोः भगवति नमः माहेश्वरि नमः। मुखे अन्नपूर्णे नमः। गुह्ये स्वाहा नमः।** फिर पुनः विपरीत क्रम से गुह्य से मूर्ध्नि तक न्यास करे। पुनः **ॐ नमः ब्रह्मरंध्रे। ह्रीं नमः मुखे। श्रीं नमः हृदये। क्लीं नमः मूलाधारे। नमो नमः भ्रूमध्ये। भगवति नमः नासिकायां। माहेश्वरि नमः कण्ठे। अन्नपूर्णे नमः नाभौ। स्वाहा नमः लिङ्गे।** पश्चात् मूल मंत्र से व्यापक न्यास करे।

ध्यानम् :- अन्नपूर्णा का शरीर तपे हुये सुवर्ण के समान हैं, मस्तक पर नवोदित चन्द्रमा हैं, नवीन रत्नों की चमक से मुकुट देदीप्यमान हैं। शरीर का वर्ण कुंकुम के समान अरुण हैं। त्रिलक्षण वस्त्र धारण किये हुये हैं। त्रिनेत्रा हैं दोनों स्तन स्वर्ण कलशों के समान उन्नत हैं उनके सामने श्वेत वर्ण के **पांचमुखवाले, नीलकण्ठ, सर्पों से विभूषित शंभु नृत्य कर रहे हैं।** उन्हे देखकर माहेश्वरि प्रसन्न हो रही हैं, देवी अन्न प्रदान कर रही हैं। **भगवती अन्नपूर्णा लक्ष्मी** एवं **पृथ्वी** से विभूषिता हैं।

॥ शिवध्यानम् ॥

गोक्षीरधाम धवलं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनं, प्रसन्नवदनं शान्तं नीलकण्ठ विराजिताम् ।
कपर्दिनं स्फुरत् सर्पभूषणं मल्लसन्निभं, नृत्यन्तमीश्वरं देवं त्रिकोणाग्रे सुरेश्वरम् ॥

॥ देवी ध्यानम् ॥

तप्तकाञ्चन सङ्काशां बालेन्दुकृतशेखरां, नवरत्नप्रभा दीप्तमुकुटां कुंकुमारुणाम् ।
चित्रवस्त्र परीधानां मीनाक्षीं कमलस्तनीं, नृत्यन्तीमीशमनिशं दृष्ट्वानन्दमयीं पराम् ॥
सानन्दमुख लोलाक्षीं मेखलाढ्य नितम्बिनीं, अन्नदानरतः नित्यां भूमि श्रीभ्यां नमस्कृताम् ।
दुग्धान्नभरितं पात्रं सरत्नं वाम हस्तके, दक्षिणे तु करे देव्या दर्वीं ध्यायेत् सुवर्णजाम् ॥

॥ आवरण पूजा ॥

पहले त्रिकोण, उसके बाहर चतुर्दल उसके बाहर अष्टदल पश्चात् षोडशदल एवं चार द्वार युक्त भूपूर बनाकर यंत्र बनावे। यंत्र पीठ पर मंडूकादि पीठ देवताओं का पूजन करे। "**ॐ वामायै नमः, ज्येष्ठायै नमः, रौद्र्यै नमः, काल्यै नमः, कलविकरण्यै नमः, बलविकरण्यै नमः, बलप्रमथनायै नमः, सर्वभूतदमन्यै नमः** से न्यास कर मध्ये **मनोन्मन्यै नमः** से न्यास करे। वहीं पूर्वादिक्रम से -**ॐ जयायै नमः विजयायै नमः, अजितायै नमः, अपराजितायै नमः, नित्यायै नमः, विलासिन्यै नमः दोग्ध्र्यै नमः, अघोराय नमः, मध्ये मंगलाय नमः** से नव पीठ शक्तियों का न्यास करे। तब उनके ऊपर **हसौः सदाशिव महाप्रेत-पद्मासनाय नमः** से न्यास करे। मूल बिन्दु का ध्यान कर पञ्च पुष्पाञ्जलि देवे। षट्कोणों की कल्पना करें-

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) आग्नेयादि कोणे- **ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।**
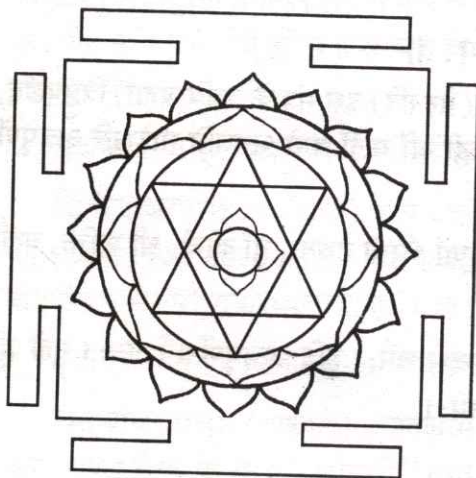
द्वितीयावरणम् - (त्रिकोणे):- अग्रे **ॐ ह्रौं नमः शिवाय नमः।** ईशानेकोणे **ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वः पतये भूपतित्वं मे देहि ददापय स्वाहा।** अग्निकोणे- **ॐ नारायणाय**

स्वाहा। देवि के वाम व दक्षिण में ''भूमि'' तथा ''श्री'' की पूजा करें। ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा। श्रीं ग्लौं भूम्यै नमः॥ ॐ श्रियै नमः।

तृतीयावरणम् - (चतुर्दले) पूर्वे-**ॐ परविद्यायै नमः**। दक्षिणे- **ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः**। पश्चिमे- **श्रीं कमलायै नमः**। उत्तरे- **क्लीं सुभगायै नमः**।

चतुर्थावरणम् - (अष्टदले)-**ॐ ब्राह्म्यै नमः, माहेश्वर्यै नमः, वैष्णव्यै नमः, कौमार्यै नमः, वाराह्यै नमः, ऐन्द्राण्यै नमः, चामुण्डायै नमः, महालक्ष्म्यै नमः**।

पंचमावरणम् - (षोडशदले) **ॐ नं अमृतायै अन्नपूर्णायै नमः**। सभी नामावलि के अंत में **अन्नपूर्णायै नमः** कहे। **मों मानदायै। भं तुष्ट्यै। गं पुष्ट्यै। वं प्रीत्यै। तिं रत्यै। मां क्रियायै। हे श्रियै। श्वं सुधायै। रिं रात्र्यै। अं ज्योत्स्नायै। न्नं हैमवत्यै। पूं छायायै। णें पूर्णिमायै। स्वां नित्यायै। हां अमावस्यायै।**

षष्ठमावरणम्- चतुरस्त्र में इन्द्रादि १० दिग्पालों व आयुधों का पूजन करे। पुरश्चरण में एक लाख जप कर पायस, घृताक्त अन्न से दशांश होम करें।

॥ श्मशान भैरवी ॥

मंत्रो यथा- **श्मशान भैरवि नररुधिरास्थि- वसाभक्षिणि सिद्धिं मे देहि मम मनोरथान् पूरय पूरय हुं फट् स्वाहा।**

॥ भैरवी गायत्री ॥

मंत्रो यथा- **ॐ त्रिपुरायै विद्महे महाभैरव्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।**

॥ त्रिपुर भैरव ॥

मंत्रो यथा- **ह्रीं श्रीं हंसः ह्सौं स्वाहा।**

॥ ध्यानम् ॥

एकवक्त्रं त्रियनं चतुर्बाहु समन्वित, दक्षिणे चांकुशं खड्गं वामे खेटकपाशकौ ।
धारयन्तं रक्तवर्णं वृषासनंगतं, उर्ध्वकेशं हार-हारं कपालमालयाऽन्वितम् ॥
एवं विधं महादेवि! ध्यायेत् त्रिपुरभैरवम्॥ (पुरश्चर्यार्णवे)

॥ श्री भैरवी मातृका ॥

त्रिपुरा त्रिपुरेशी च तथा त्रिपुरसुन्दरी । त्रिपुराद्या वासिनी च त्रिपुराश्रीस्ततः परम् ॥१॥
त्रिपुरामालिनी चैव त्रिपुरसिद्धा ततः परम् । त्रिपुराम्बा ततश्चैव महात्रिपुरभैरवी ॥२॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा स्वरशक्तयः ॥३॥
विशाला च विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता । काली च कालकल्पा च कालरात्रिर्निशाचरी ॥४॥
ऊर्ध्वकेशी मुक्तकेशी वीरा चैव महाभया । जयदा मानिनी माया प्रचण्डा विन्दुमालिनी ॥५॥
विरूपा च विरूपाक्षी खट्वाङ्गी विश्वरूपिणी । रौद्री माया च प्रेताक्षी फेत्कारी भयनादिनी ॥६॥
धम्राक्षी योगिनी घोरा विश्वरूपा [illegible]

॥ अथ श्री भैरवी त्रैलोक्य विजय कवचम् ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया । सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम् ॥१॥
त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारणम् । त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति ॥२॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सुन्दरी प्राणवल्लभे । त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम् ॥३॥
पठित्वा धारयित्वेदं त्रैलोक्यविजयी भवेत् । जघान सकलान्दैत्यान् यद्धृत्वा मधुसूदनः ॥४॥
ब्रह्मासृष्टिं वितनुते यद्धृत्वाभीष्टदायकम् । धनाधिपः कुबेरोऽपि वासवस्त्रिदशेश्वरः ॥५॥
यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी विभुः । न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन ॥६॥
पुत्रेभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्चेन्मृत्युमाप्नुयात् । ऋषिस्तु कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरेव च ॥७॥
विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी । धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥८॥
अधरो बिन्दुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः । भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गोबीजत्रयात्मकः ॥९॥
बालैषा मे शिरः पातु बिन्दुनादयुतापि सा । भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका ॥१०॥
दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु । कामबीजं सदा पातु घ्राणयुग्मं परावतु ॥११॥
सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा । हस्त्रैं कंठं हसकलरीं स्कंधौ पातु हस्त्रौ भुजौ ॥१२॥
पंचमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु । हृदयं हसकलीं वक्षः पातु हसौः स्तनौ मम ॥१३॥
पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम । हस्त्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हसकलरीं सदा ॥१४॥
कुक्षिं पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा । ऐंईंओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु ॥१५॥
हस्त्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हसकलह्रीं सदा । पातु हसौं करौ पातु षट्कूटा भैरवी मम ॥१६॥
सहस्त्रैं सक्थिनी पातु सहसकलरीं सदावतु । गुह्यदेशं हस्त्रौं पातु जनुनी भैरवी मम ॥१७॥
संपत्प्रदा सदा पातु हैं जंघे हसक्लीं पदौ । पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु ॥१८॥
हसैं मामवतु प्राच्यां हरक्लीं पावकेऽवतु । हसौं मे दक्षिणे पातु भैरवी चक्रसंस्थिता ॥१९॥
ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु निर्ऋत्यां चक्रभैरवी । क्रीं क्रीं क्रीं पातु वायव्ये हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥२०॥
ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु । ऊर्द्धं प्रागुक्तबीजानि रक्षन्तु मामधः स्थले ॥२१॥
दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधारिणी । ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सा तारा सर्वत्र मां सदावतु ॥२२॥
संग्रामे कानने दुर्गे तोये तरंगदुस्तरे । खड्गकर्त्रिधरा सोग्रा सदा मां परिरक्षतु ॥२३॥
इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं महत् । त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥२४॥
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात् । स्पर्द्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥२५॥
यः शत्रुभीतो रणकातरो वा भीतो वने वा सलिलालये वा । वादे सभायां प्रतिवादिनो वा रक्षःप्रकोपाद् ग्रहसकुलाद्वा ॥२६॥
प्रचंडदंडाक्षमनाच्च भीतो गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्रसाध्यात् । अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्रिसंध्यं स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च ॥२७॥

त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम् । विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥२८॥
कंठे वा दक्षिणे बाहौ त्रैलोक्यविजयी भवेत् । तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवंति कुसुमानि च ॥२९॥
लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भवने मुखे । एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीं पराम् ।
बालां वा प्रजपेद्विद्वान्दरिद्रो मृत्युमाप्नुयात् ॥३०॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसंवादे त्रैलोक्यविजयं नाम भैरवीकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री त्रिपुरभैरवी कवचम् ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

देवदेव महादेव सर्वशास्त्र विशारद । कृपां कुरु जगन्नाथ धर्म्मज्ञोऽसि महामते ॥१॥
भैरवी या पुरा प्रोक्ता विद्या त्रिपुरपूर्विका । तस्यास्तु कवचं दिव्यं मह्यं कथय तत्त्वतः ॥२॥
तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा जगाद जगदीश्वरः । अद्भुतं कवचं देव्या भैरव्या दिव्यरूपि वै ॥३॥

॥ईश्वर उवाच ॥

कथयामि महाविद्या कवचं सर्वदुर्लभम् । शृणुष्व त्वं च विधिना श्रुत्वा गोप्यं तवापि तत् ॥४॥
यस्याः प्रसादात्सकलं बिभर्मि भुवनत्रयम् । यस्याः सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ॥५॥
माता पिता जगद्धन्या जगद् ब्रह्मस्वरूपिणी । सिद्धिदात्री च सिद्धास्या ह्यसिद्धा दुष्टजंतुषु ॥६॥
सर्वभूतप्रियकरी सर्वभूतस्वरूपिणी । ककारी पातु मां देवी कामिनी कामदायिनी ॥७॥
एकारी पातु मां देवी मूलाधारस्वरूपिणी । इकारी पातु मां देवी भूरिसर्वसुखप्रदा ॥८॥
लकारी पातु मां देवी इन्द्राणी वरवल्लभा । ह्रींकारी पातु मां देवी सर्वदा शम्भुसुन्दरी ॥९॥
एतैर्वर्णैर्महामाया शाम्भवी पातु मस्तकम् । ककारे पातु मां देवी शर्वाणी हर - गेहिनी ॥१०॥
मकारे पातु मां देवी सर्वपापप्रणाशिनी । ककारे पातु मां देवी कामरूपधरा सदा ॥११॥
ककारे पातु मां देवी शम्बरारिप्रिया सदा। पकारे पातु मां देवी धरा धरणिरूपधृक् ॥१२॥
ह्रींकारी पातु मां देवी अकारार्द्ध - शरीरिणी । एतैर्वर्णैर्महामाया कामराहुप्रियाऽवतु ॥१३॥
मकारः पातु मां देवी सावित्री सर्वदायिनी । ककारः पातु सर्वत्र कलाम्बर स्वरूपिणी ॥१४॥
लकारः पातु मां देवी लक्ष्मीः सर्वसुलक्षणा । ह्रीं पातु मां तु सर्वत्र देवी त्रिभुवनेश्वरी ॥१५॥
एतैर्वर्णैर्महामाया पातु शक्तिस्वरूपिणी । वाग्भवं मस्तकं पातु वदनं कामराजिका ॥१६॥
शक्तिस्वरूपिणी पातु हृदयं यंत्रसिद्धिदा । सुन्दरी सर्वदा पातु सुन्दरी परिरक्षतु ॥१७॥
रक्तवर्णा सदा पातु सुन्दरी सर्वदायिनी । नानालंकार - संयुक्ता सुन्दरी पातु सर्वदा ॥१८॥
सर्वांगसुन्दरी पातु सर्वत्र शिवदायिनी । जगदाह्लाद- जननी शम्भुरूपा च मां सदा ॥१९॥
सर्वमंत्रमयी पातु सर्वसौभाग्यदायिनी । सर्वलक्ष्मीमयी देवी परमानन्द दायिनी ॥२०॥
पातु मां सर्वदा देवी नानाशंखनिधिः शिवा । पातु पद्मनिधिर्देवी सर्वदा शिवदायिनी ॥२१॥

मां पातु दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः सर्वत्र मस्तके । पंक्तिश्छन्दः स्वरूपा तु मुखे पातु सुरेश्वरी ॥२२॥
गंधाष्टकात्मिका पातु हृदयं शाङ्करी सदा । सर्वसम्मोहिनी पातु पातु संक्षोभिणी सदा ॥२३॥
सर्वसिद्धिप्रदा पातु सर्वाकर्षणकारिणी । क्षोभिणी सर्वदा पातु वशिनी सर्वदावतु ॥२४॥
आकर्षिणी सदा पातु सम्मोहिनी सदावतु । रतिर्देवी सदा पातु भगांगा सर्वदावतु ॥२५॥
माहेश्वरी सदा पातु कौमारी सर्वदावतु । सर्वाह्लादनकरी मां पातु सर्ववशंकरी ॥२६॥
क्षेमंकरी सदा पातु सर्वांगसुन्दरी तथा । सर्वांग युवतिः सर्वा सर्वसौभाग्यदायिनी ॥२७॥
वाग्देवी सर्वदा पातु वाणिनी सर्वदावतु । वशिनी सर्वदा पातु महासिद्धिप्रदा सदा ॥२८॥
सर्वविद्राविणी पातु गणनाथः सदावतु । दुर्गादेवी सदा पातु वटुकः सर्वदावतु ॥२९॥
क्षेत्रपालः सदा पातु पातु चा वीरशांतिका । अनंतः सर्वदा पातु वराहः सर्वदावतु ॥३०॥
पृथिवी सर्वदा पातु स्वर्णसिंहासनं तथा । रक्तामृतं च सततं पातु मां सर्वकालतः ॥३१॥
सुरार्णवः सदा पातु कल्पवृक्षः सदावतु । श्वेतच्छत्रं सदा पातु रक्तद्वीपः सदावतु ॥३२॥
सततं नन्दनोद्यानं पातु मां सर्वसिद्धये । दिक्पालाः सर्वदा पातु द्वन्द्वौघाः सकलास्तथा ॥३३॥
वाहनानि सदा पांतु अस्त्राणि पांतु सर्वदा । शस्त्राणि सर्वदा पातु योगिन्यः पांतु सर्वदा ॥३४॥
सिद्धाः पांतु सदा देवी सर्वसिद्धिप्रदावतु । सर्वांगसुन्दरी देवी सर्वदा पातु मां तथा ॥३५॥
आनन्दरूपिणी देवी चित्स्वरूपा चिदात्मिका । सर्वदा सुन्दरी पातु सुन्दरी भवसुन्दरी ॥३६॥
पृथग्देवालये घोरे संकटे दुर्गमे गिरौ । अरण्ये प्रांतरे वापि पातु मां सुन्दरी सदा ॥३७॥
इदं कवचमित्युक्तो मंत्रोद्धारश्च पार्वति । यः पठेत्प्रयतो भूत्वा त्रिसंध्यं नियतः शुचिः ॥३८॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते । गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दननेन वा ॥३९॥
स्वयंभूकुसुमैः शुक्लैर्भूमिपुत्रे शनौ सुरै । श्मशाने प्रांतरे वापि शून्यागारे शिवालये ॥४०॥
स्वशक्त्या गुरुणां यंत्रं पूजयित्वा कुमारिकाः । तन्मनुं पूजयित्वा च गुरुपंक्तिं तथैव च ॥४१॥
देव्यै बलिं निवेद्याथ नरमार्जार सूकरैः । नकुलैर्महिषैर्मेषैः पूजयित्वा विधानतः ॥४२॥
धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं कण्ठे वा दक्षिणे भुजे । सुतिथौ शुभनक्षत्रे सूर्यस्योदयने तथा ॥४३॥
धारयित्वा च कवचं सर्वसिद्धिं लभेन्नरः । कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ॥४४॥
शक्नोमि तु महेशानि वक्तुं तस्य फलं तु यद् । न दुर्भिक्षफलं तत्र न चापि पीडनं तथा ॥४५॥
सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वव्याधि - विनाशनम् । सर्वरक्षाकरं जंतोश्चतुर्वर्ग- फलप्रदम् ॥४६॥
मंत्रं प्राप्य विधानेन पूजयेत्सततं सुधीः । तत्रापि दुर्लभं मन्ये कवचं देवरूपकम् ॥४७॥
गुरोः प्रसाद मासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् । तत्रापि कवचं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये ॥४८॥
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः । तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेण प्रभाषितः ॥४९॥
गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य च पार्वती । अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥५०॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले भैरव-भैरवीसंवादे श्रीत्रिपुरभैरवी कवचं समाप्तम् ॥

॥ श्री भैरवीस्तवराज प्रारम्भः ॥

ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपं जानंति नैव जगदादिमनादिमूर्तिम् ।
तस्माद्वयं कुचनतां नवकुंकुमाभां स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मयमातृभूताम् ॥१॥
सद्यः समुद्यतसहस्त्रदिवाकराभां विद्याक्षसूत्र वरदाभयचिन्हहस्ताम् ।
नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृत वक्त्र पद्मां त्वां तारहाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥२॥
सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं जन्मांतरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ।
अन्योन्यभेद कलहाकुल मानसास्ते जानंति किं जडधियस्तवरूपमम्ब ॥३॥
स्थूलां वदंति मुनयः श्रुतयो गृणंति सूक्ष्मां वदंति वचसामधिवासमन्ये ।
त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि मन्यामहे वयमपारकृपांबुराशिम् ॥४॥
चन्द्रावतंसकलितां शरदिंदुशुभ्रां पंचाशदक्षरमयीं हृदि भावयंतीम् ।
त्वां पुस्तकं जपवटीममृताम्बुकुंभं व्याख्यां च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥५॥
शंभुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो विष्णुस्त्वमम्ब कमलापरिरब्धदेहः ।
पद्मोद्भवस्त्वमपि वागधिवासभूमिस्तेषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ॥६॥
आश्रित्य वाग्भवभवांश्चतुरः परादीन् भावान्पदेषुविहितान्समुदीरयंतीम् ।
कंठादिभिश्च करणैः परदेवतां त्वां संविन्मयीं हृदि कदापि न विस्मरामि ॥७॥
आकुंच्य वायुमवजित्य च वैरिषट्कमालोक्य निश्चलधिया निजनासिकाग्रम् ।
ध्यायंति मूर्ध्नि कलितेंदुकलावसंतं त्वद्रूपमंब कृतिनस्तरुणार्कमित्रम् ॥८॥
त्वं प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः ।
सत्यं तदद्रितनये जगदेकमातर्नो चेदशेषजगतः स्थितिरेव न स्यात् ॥९॥
पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां पीठे तवाम्ब कनकाचलगह्वरेषु ।
गायंति सिद्धवनिताः सह किंनरीभिरास्वादिता सवरसारुणनेत्रपद्माः ॥१०॥
विद्युद्विलासवपुषः श्रियमुद्वहंतीं यांतीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम् ।
सौषुम्नवर्त्मकमलानि विकासयंतीं देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम् ॥११॥
आनन्दजन्मभवनं भवनं श्रुतीनां चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि ।
ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां सौभाग्यजन्मवसतिं त्रिपुरे यथावत् ॥१२॥
शब्दार्थभावि भवनं सृजतीन्दुरूपा या तद्बिभर्ति पुनरर्कतनुः स्वशक्त्या ।
ब्रह्मात्मिका हरति तत्सकलं युगांते तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि ॥१३॥
नारायणीति नरकार्णवतारिणीति गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति ।
ज्ञानप्रदोति नयनत्रयभूषितेति त्वामद्रिराजतनये बहुधा वदंति ॥१४॥
ये स्तुवंति जगन्मातः श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात् । त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धिं प्राप्नुयुस्ते नराः श्रियम् ॥१५॥

॥ इति रुद्रयामले भैरवीस्तवराज स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री भैरव्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

कैलासवासिन् भगवन्प्राणेश्वर कृपानिधे । भक्तवत्सल भैरव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१॥
न श्रुतं देवदेवेश वद मां दीनवत्सल ।

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु प्रिये महागोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥२॥
भैरव्याः शुभदं सेव्यं सर्वसम्पत्प्रदायकम् । यस्यानुष्ठानमात्रेण किं न सिद्ध्यति भूतले ॥३॥
ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना । कार्य्या ब्राह्मी कामधेनुः सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥४॥
त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्दिनी । मोहघ्नी मालतीमाला महापातक नाशिनी ॥५॥
क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहूः । त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी ॥६॥
देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी । दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥७॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा । प्रत्यंगिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी ॥८॥
प्रभावती गुणवती गणमाता गुहेश्वरी । क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी ॥९॥
महामारी महामोहा महाक्रोधा महानदी । महापातकसहंर्त्री महामोहप्रदायिनी ॥१०॥
विकराला महाकाला कालरूपा कलावती । कपालखट्वांगधरा खड्गखर्प्परधारिणी ॥११॥
कुमारी कुंकुमप्रीता कुंकुमारुणरंजिता । कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्तिप्रदायिनी ॥१२॥
नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी । घर्घरा घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी ॥१३॥
कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी । किशोरी केशवप्रीता क्लेशसंघनिवारिणी ॥१४॥
महोत्तमा महामत्ता महाविद्या महीमयी । महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी ॥१५॥
मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी । अट्टाट्टहासनिरता कणन्नूपुरधारिणी ॥१६॥
दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका । दनुजांतकरी दुष्टा दुःखदारिद्र्यभंजिनी ॥१७॥
दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा । मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी ॥१८॥
श्यामा श्यामतनुः शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी । इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१९॥
भैरव्या देवदेवेश्यास्तव प्रीत्यै सुरेश्वरि । अप्रकाश्यमिदं गोप्यं पठनीयं प्रयत्नतः ॥२०॥
देवीं ध्यात्वा सुरां पीत्वा मकारपञ्चकैः प्रिये । पूजयेत्सततं भक्त्या पठेत्स्तोत्रमिदं शुभम् ॥२१॥
षण्मासाभ्यंतरे सोऽपि गणनाथसमो भवेत् । किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे ॥२२॥
सर्वं जानासि सर्वज्ञे पुनर्मां परिपृच्छसि । न देयं परशिष्येभ्यो निन्दकेभ्यो विशेषतः ॥२३॥

॥ इति श्री भैरव्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ त्रिपुरभैरवी सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ महाकालभैरव उवाच ॥

अथ वक्ष्ये महेशानि देव्या नाम सहस्रकम् । यत्प्रसादान्महादेवि चतुर्वर्गफलं लभेत् ॥१॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वमृत्युविनाशनम् । सर्वसिद्धिकरं स्तोत्रं नातः पर तरः स्तवः ॥२॥
नातः परतरा विद्यातीर्थं नातः परं स्मृतम् । यस्यां सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ॥३॥
क्षयमेष्यति तत्सर्वं लयकाले महेश्वरि । नमामि त्रिपुरां देवीं भैरवीं भयमोचिनीम् ।
सर्वसिद्धिकरीं साक्षान्महापातकनाशिनीम् ॥४॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीत्रिपुरभैरवी सहस्रनामस्तोत्रस्य भगवान् ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । आद्या शक्तिः । भगवती त्रिपुरभैरवी देवता । सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ त्रिपुरा परमेशानी योगसिद्धिनिवासिनी । सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वसिद्धिप्रवर्तिनी ॥१॥
सर्वाधारमयी- देवी सर्वसम्पत्प्रदा शुभा । योगिनी योगमाता च योगसिद्धि प्रवर्तिनी ॥२॥
योगिध्येया योगमयी योगियोगनिवासिनी । हेला लीला तथा क्रीडा कालरूपप्रवर्तिनी ॥३॥
कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी । कमला कांतिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया ॥४॥
कटुः कपटकेशा च कपटा कुटिलाकृतिः । कुमुदा चर्चिका कांतिः कालरात्रिप्रिया सदा ॥५॥
घोराकारा घोरतरा धर्म्माधर्म्मप्रदामतिः । घण्टाघर्घरदा घण्टा घण्टानादप्रिया सदा ॥६॥
सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा स्थूला अतिस्थूला सदामतिः । अतिसत्या सत्यवती सत्यसङ्केत वासिनी ॥७॥
क्षमा भीमा तथाऽभीमाभीमनाद प्रवर्तिनी । भ्रमरूपा भयहरा भयदा भयनाशिनी ॥८॥
श्मशानवासिनी देवी श्मशानालयवासिनी । शवासना शवाहारा शवदेहा शिवाऽशिवा ॥९॥
कंठदेशशवाहारा शवकंकणधारिणी । दंतुरा सुदंती सत्या सत्यसंकेतवासिनी ॥१०॥
सत्यदेहा सत्यहारा सत्यवादनिवासिनी । सत्यालया सत्यसंगा सत्यसंगरकारिणी ॥११॥
असंगसंगरहिता सुसंगासंगमोहिनी । माया मतिर्महामाया महामखविलासिनी ॥१२॥
गलद्रुधिरधारा च मुखद्वयनिवासिनी । सत्यायासा सत्यसंगा सत्यसंगतिकारिणी ॥१३॥
असंगा संगनिरता सुसंगा संगवासिनी । सदासत्या महासत्या मांसपाशा सुमांसका ॥१४॥
मांसाहारा मांसधरा मांसाशी मांसभक्षका । रक्तपाना रक्तरुचिरारक्ता रक्तवल्लभा ॥१५॥
रक्ताहारा रक्तप्रिया रक्तनिन्दकनाशिनी । रक्तपानप्रिया -बाला रक्तदेशा सुरक्तिका ॥१६॥
स्वयंभूकुसुमस्था च स्वयंभूकुसुमोत्सुका । स्वयंभूकुसुमाहारा स्वयंभूनिन्दकासना ॥१७॥
स्वयंभूपुष्पकप्रीता स्वयंभूपुष्पसम्भवा । स्वयंभूपुष्पहाराढ्या स्वयंभूनिन्दकांतका ॥१८॥
कुण्डगोल विलासा च कुण्डगोलसदामतिः । कुण्डगोलप्रियकरी कुण्डगोलसमुद्भवा ॥१९॥
शुक्रात्मिका शुक्रकरा सुशुक्रा च सुशुक्तिका । शुक्रपूजकपूज्या च शुक्रनिन्दकनिन्दका ॥२०॥
रक्तमाल्या रक्तपुष्पा रक्तपुष्पकपुष्पका । रक्तचन्दनसिक्तांगी रक्तचन्दननिन्दका ॥२१॥

मत्स्या मत्स्यप्रिया मान्या मत्स्यभक्षा महोदया । मत्स्याहारा मत्स्यकामा मत्स्यनिन्दकनाशिनी ॥२२॥
केकराक्षी तथा क्रूरा क्रूरसैन्यविनाशिनी । क्रूरांगी कुलिशांगी च चक्रांगी चक्रसम्भवा ॥२३॥
चक्रदेहा चक्रहारा चक्रकंकाल वासिनी । निम्ननाभिर्भीतिहरा भयदा भयहारिका ॥२४॥
भयप्रदा भया भीता अभीमा भीमनादिनी । सुन्दरी शोभना सत्या क्षेम्या क्षेमकरी तथा ॥२५॥
सिन्दूराञ्चितसिन्दूरा सिन्दूरसदृशाकृतिः । रक्तारंजितनासा च सुनासा निम्ननासिका ॥२६॥
खर्वा लम्बोदरी दीर्घा दीर्घघोणा महाकुचा । कुटिला चञ्चला चण्डी चण्डनाद प्रचण्डिका ॥२७॥
अतिचण्डा महाचण्डा श्रीचण्डा चण्डवेगिनी । चाण्डाली चण्डिका चण्डशब्दरूपा च चञ्चला ॥२८॥
चम्पा चम्पावती चोस्ता तीक्ष्णतीक्ष्णा प्रिया क्षतिः । जलदा जयदा योगा जगदानन्दकारिणी ॥२९॥
जगद्वन्द्या जगन्माता जगती जगतः क्षमा । जन्या जयजनेत्री च जयिनी जयदा तथा ॥३०॥
जननी च जगद्धात्री जयाख्या जयरूपिणी । जगन्माता जगन्मान्या जयश्रीर्जयकारिणी ॥३१॥
जयिनी जयमाला च जया च विजया तथा । खड्गिनी खड्गरूपा च सुसंगा खड्गधारिणी ॥३२॥
खड्गरूपा खड्गकरा खड्गिनी खड्गवल्लभा । खड्गदा खड्गभावा च खड्गदेहसमुद्भवा ॥३३॥
खड्गा खड्गधरा खेला खड्गिनी खड्गमण्डिनी । शंखिनी चापिनी देवी वज्रिणी शूलिनी मतिः ॥३४॥
बलिनी भिन्दिपाली च पाशिनी चांकुशी शरी । धनुषी चटकी चर्म्मादंती च कर्णनालिकी ॥३५॥
मुसली हलरूपा च तूणीरगणनासिनी । तूणालया तूणहरा तूणसंभवरूपिणी ॥३६॥
सुतूणी तूणखेदा च तूणांगी तूणवल्लभा । नानास्त्रधारिणी देवी नानाशस्त्रसमुद्भवा ॥३७॥
लाक्षा लक्षहरा लाभा सुलाभा लाभनाशिनी । लाभहारा लाभकरा लाभिनी लाभरूपिणी ॥३८॥
धरित्री धनदा धान्या धान्यरूपा धरा धनुः । धुरशब्दा धुरा मान्या धरांगी धननाशिनी ॥३९॥
धनहा धनलाभा च धनलभ्या महाधनुः । अशांता शान्तिरूपा च श्वासमार्गनिवासिनी ॥४०॥
गगणा गणसेव्या च गणांगा वागवल्लभा । गणदा गणहा गम्या गमनागमसुन्दरी ॥४१॥
गम्यदा गणनाशी च गदहा गदवर्द्धिनी । स्थैर्य्या च स्थैर्य्यनाशा च स्थैर्य्यांतकारिणी कुला ॥४२॥
दात्री कर्त्रीप्रिया प्रेमा प्रियदा प्रियवर्द्धिनी । प्रियहा प्रियभव्या च प्रियप्रेमांघ्रिपा तनुः ॥४३॥
प्रियजा प्रियभव्या च प्रियस्था भवनस्थिता । सुस्थिरा स्थिररूपा च स्थिरदा स्थैर्य्यवर्हिणी ॥४३॥
चञ्चला चपला चोला चपलांगनिवासिनी । गौरी काली तथा च्छिन्ना माया मायाहरप्रिया ॥४५॥
सुन्दरी त्रिपुरा भव्या त्रिपुरेश्वरवासिनी । त्रिपुरनाशिनी देवी त्रिपुरप्राणहारिणी ॥४६॥
भैरवी भैरवस्था च भैरवस्य प्रिया तनुः । भवांगी भैरवाकारा भैरवप्रियवल्लभा ॥४७॥
कालदा कालरात्रिश्च कामा कात्यायनी क्रिया । क्रियदा क्रियहा क्लैव्या प्रियप्राणक्रिया तथा ॥४८॥
क्रींकारी कमला लक्ष्मीः शक्तिः स्वाहा विभुः प्रभुः । प्रकृतिः पुरुषश्चैव पुरुषा पुरुषाकृतिः ॥४९॥
परमः पुरुषश्चैव माया नारायणी मतिः । ब्राह्मी महेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥५०॥
वाराही चैव चामुण्डा इन्द्राणी हरवल्लभा । भार्गी माहेश्वरी कृष्णा कात्यायन्यपि पूतना ॥५१॥

राक्षसी डाकिनी चित्रा विचित्रा विभ्रमा तथा । हाकिनी राकिनी भीता गंधर्वा गंधवाहिनी ॥५२॥
केकरी कोटराक्षी च निर्मांसा लूकमांसिका । ललज्जिह्वा सुजिह्वा च बालदा बालदायिनी ॥५३॥
चन्द्रा चन्द्रप्रभा चान्द्री चन्द्रकांतिसुतत्परा । अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः ॥५४॥
शशिनी चन्द्रिका कांतिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरंगदा । पूर्णा पूर्णामृता कल्पलतिका कल्पदानदा ॥५५॥
सुकल्पा कल्पहस्ता च कल्पवृक्षकरी हनुः । कल्पाख्या कल्पभव्या च कल्पानन्दकवन्दिता ॥५६॥
सूचीमुखी प्रेतमुखी च उल्कामुखी महामुखी । उग्रमुखी च सुमुखी काकास्या विकटानना ॥५७॥
कृकलास्या च संध्यास्या मुकुलीशा रमाकृतिः । नानामुखी च नानास्या नानारूपप्रधारिणी ॥५८॥
विश्वार्च्या विश्वमाता च विश्वाख्या विश्वभाविनी । सूर्य्या सूर्य्यप्रभा शोभा सूर्य्यमण्डलसंस्थिता ॥५९॥
सूर्य्यकांतिः सूर्य्यकरा सूर्य्याख्या सूर्य्यभावना । तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ॥६०॥
सुरदा भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा । युगदा योगहा योग्या योग्यहा योगवर्द्धिनी ॥६१॥
वह्निमण्डलसंस्था च वह्निमण्डलमध्यगा । वह्निमण्डलरूपा च वह्निमण्डलसंज्ञका ॥६२॥
वह्नितेजा वह्निरागा वह्निदा वह्निनाशिनी । वह्निक्रिया वह्निभुजा कला वह्निस्थिता सदा ॥६३॥
धूम्रार्चिषा चोज्ज्वलिनी तथा वै विस्फुलिंगिनी । शूलिनी वै स्वरूपा च कपिला हव्यवाहिनी ॥६४॥
नानातेजस्विनी देवी परब्रह्मकुटुम्बिनी । ज्योतिर्ब्रह्ममयी देवी परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६५॥
परमात्मा परा पुण्या पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी । पुण्यदा पुण्यनाम्नी च पुण्यगंधा प्रिया तनुः ॥६६॥
पुण्यदेहा पुण्यकरा पुण्यनिन्दकनिन्दका । पुण्यकालकरा पुण्या सुपुण्या पुण्यमालिका ॥६७॥
पुण्यखेला पुण्यकेली पुण्यनामसमा पुरा । पुण्यसेव्या पुण्यखेल्या पुराणपुण्यवल्लभा ॥६८॥
पुरुषा पुरुषप्राणा पुरुषात्मस्वरूपिणी । पुरुषांगी च पुरुषी पुरुषस्य कला सदा ॥६९॥
सुपुष्पा पुष्पकप्राणा पुष्पहा पुष्पवल्लभा । पुष्पप्रिया पुष्पहारा पुष्पवन्दकवन्दका ॥७०॥
पुष्पहा पुष्पमाला च पुष्पनिन्दकनाशिनी । नक्षत्रप्राणहंत्री च नक्षत्रालक्ष्यवन्दका ॥७१॥
लक्षमाल्या लक्षहारा लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपिणी । नक्षत्राणी सुनक्षत्रा नक्षत्राहा महोदया ॥७२॥
महामाल्या महामान्या महती मातृपूजिता । महामहाकनीया च महाकालेश्वरी महा ॥७३॥
महास्या वन्दनीया च महाशब्दनिवासिनी । महाशंखेश्वरी मीना मत्स्यगंधा महोदरी ॥७४॥
लम्बोदरी च लम्बोष्ठी लम्बनिम्नतनूदरी । लम्बोष्ठी लम्बनासा च लम्बघोणा ललत्सुका ॥७५॥
अतिलम्बा महालम्बा सुलम्बा लम्बवाहिनी । लम्बार्हा लम्बशक्तिश्च लम्बस्था लम्बपूर्विका ॥७६॥
चतुर्घण्टा महाघण्टा घण्टानाद- प्रिया सदा । वाद्यप्रिया वाद्यरता सुवाद्या वाद्यनाशिनी ॥७७॥
रमा रामा सुबाला च रमणीयस्वभाविनी । सुरम्या रम्यदा रम्भा रम्भोरू रामवल्लभा ॥७८॥
कामप्रिया कामकरा कामांगी रमणी रतिः । रतिप्रिया रतिरती रतिसेव्या रतिप्रिया ॥७९॥
सुरभिः सुरभीशोभा दिक्शोभाऽशुभनाशिनी । सुशोभा च महाशोभाऽतिशोभा प्रेततापिनी ॥८०॥
लोभिनी च महालोभा सुलोभा लोभवर्द्धिनी । लोभांगी लोभवंद्या च लोभाही लोभवासका ॥८१॥

लोभप्रिया महालोभा लोभनिन्दकनिन्दका । लोभांगवासिनी गंधा विगंधा गंधनाशिनी ॥८२॥
गंधाङ्गी गंधपुष्टा च सुगंधा प्रेमगंधिका । दुर्गंधा पूतिगंधा च विगंधा चातिगंधिका ॥८३॥
पद्मांतिका पद्मवहा पद्मप्रियप्रियंकरी । पद्मनिन्दकनिन्दा च पद्मसंतोषवाहना ॥८४॥
रक्तोत्पलवरा देवी रक्तोत्पलप्रिया सदा । रक्तोत्पलसुगंधा च रक्तोत्पलनिवासिनी ॥८५॥
रक्तोत्पलमहामाला रक्तोत्पलमनोहरा । रक्तोत्पलसुनेत्रा च रक्तोत्पलस्वरूपधृक् ॥८६॥
वैष्णवी विष्णुपूज्या च वैष्णवांगनिवासिनी । विष्णुपूजकपूज्या च वैष्णवे संस्थिता तनुः ॥८७॥
नारायणस्य देहस्था नारायण मनोहरा । नारायणस्वरूपा च नारायणमनःस्थिता ॥८८॥
नारायणांगसम्भूता नारायणप्रिया तनुः । नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया ॥८९॥
हरपूज्या हरश्रेष्ठा हरस्य - वल्लभा क्षमा । संहारी हरदेहस्था हरपूजनतत्परा ॥९०॥
हरदेहसमुद्भूता हरांगवासिनी कुहूः । हरपूजकपूज्या च हरवन्दकतत्परा ॥९१॥
हरदेहसमुत्पन्ना हरक्रीडासदागतिः । सुगणा - संगरहिता असंगा संगनाशिनी ॥९२॥
निर्जना विजना दुर्गा दुर्गक्लेशनिवारिणी । दुर्गदेहांतका दुर्गारूपिणी दुर्गतस्थिता ॥९३॥
प्रेतप्रिया प्रेतकरा प्रेतदेहसमुद्भवा । प्रेतांगवासिनी प्रेता प्रेतदेहविमर्द्दिका ॥९४॥
डाकिनी योगिनी कालरात्रिः कालप्रिया सदा । कालरात्रिहरा काली कृष्णदेहा महातनुः ॥९५॥
कृष्णांगी कुटिलांगी च वज्रांगी वज्ररूपधृक् । नानादेहधरा धन्या षट्चक्रक्रमवासिनी ॥९६॥
मूलाधारनिवासा च मूलाधारस्थिता सदा । वायुरूपा महारूपा वायुमार्गनिवासिनी ॥९७॥
वायुयुक्ता वायुकरा वायुपूरकपूरका । वायुरूपधरा देवी सुषुम्नामार्गगामिनी ॥९८॥
देहस्था देहरूपा च देहध्येया सुदेहिका । नाडीरूपा महीरूपा नाडीस्थाननिवासिनी ॥९९॥
इडा च पिंगला चैव सुषुम्नामध्यवासिनी । सदाशिवप्रियकरी मूलप्रकृतिरूपधृक् ॥१००॥
अमृतेशी महाशाली श्रृंगारांगनिवासिनी । उत्पत्तिस्थितिसंहारिप्रलया - पदवासिनी ॥१०१॥
महाप्रलययुक्ता च सृष्टिसंहारकारिणी । स्वधा स्वाहा हव्यवाहा हव्या हव्यप्रिया सदा ॥१०२॥
हव्यस्था हव्यभक्षा च हव्यदेहसमुद्भवा । हव्यक्रीडा कामधेनुस्वरूपा रूपसम्भवा ॥१०३॥
सुरभिर्नन्दिनी पुण्या यज्ञांगी यज्ञसंभवा । यज्ञस्था यज्ञदेहा च योनिजा योनिवासिनी ॥१०४॥
अयोनिजा सती सत्या असती कुटिला तनुः । अहल्या गौतमी गम्या विदेहा देहनाशिनी ॥१०५॥
गांधारी द्रौपदी दूती शिवप्रिया त्रयोदशी । पौर्णमासी पञ्चदशी पञ्चमी च चतुर्दशी ॥१०६॥
षष्ठी च नवमी चैव अष्टमी दशमी तथा । एकादशी द्वादशी च द्वाररूपाऽभयप्रदा ॥१०७॥
संक्रांतिः सामरूपा च कुलीना कुलनाशिनी । कुलकांता कृशा कुम्भा कुम्भदेहविवर्द्धिनी ॥१०८॥
विनीता कुलवत्यर्था अंतरी चानुगाप्युषा । नदीसागरदा शान्तिः शान्तिरूपा सुशान्तिका ॥१०९॥
आशा तृष्णा क्षुधा क्षोभ्या क्षोभरूपनिवासिनी । गङ्गासागरगा कांतिः श्रुतिः स्मृतिर्द्धृतिर्मही ॥११०॥
दिवा रात्रिः पंचभूतदेहा चैव सुदेहिका । तण्डुला च्छिन्नमस्ता च नागयज्ञोपवीतिनी ॥१११॥

वर्णिनी डाकिनी शक्तिः कुरुकुल्ला सुकुल्लका । प्रत्यंगिराऽपरा देवा अजिता जयदायिनी ॥११२॥
जया च विजया चैव महिषासुरघातिनी । मधुकैटभहंत्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥११३॥
निशुंभशुंभहननी रक्तबीजक्षयंकरी । काशी काशीनिवासा च मधुरा पार्वती परा ॥११४॥
अपर्णा चण्डिका देवी मृडानी चाम्बिका कला । शुक्ला कृष्णा वर्ण्यवर्णा शरदिन्दुकलाकृतिः ॥११५॥
रुक्मिणी राधिका चैव भैरव्याः परिकीर्तितम् । अष्टाधिकसहस्त्रं तु देवीनामानुकीर्त्तनात् ॥११६॥
महापातकयुक्तोऽपि मुच्यते नात्र संशयः । ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः ॥११७॥
महापातक कोट्यस्तु तथा चैवोपपातकम् । स्तोत्रेण भैरवोक्तेन सर्वनश्यति तत्क्षणात् ॥११८॥
सर्वं वा श्लोकमेकं वा पठनात्स्मरणादपि । पठेद्वा पाठयेद्वापि सद्यो मुच्येत बन्धनात् ॥११९॥
राजद्वारे रणे दुर्गे संकटे गिरिदुर्गमे । प्रांतरे पर्वते वापि नौकायां वा महेश्वरि ॥१२०॥
वह्निदुर्गभये प्राप्ते सिंहव्याघ्रभयाकुले । पठनात् स्मरणान्मर्त्यो मुच्यते सर्वसंकटात् ॥१२१॥
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत् । सर्वशास्त्रपरो विप्रः सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥१२२॥
अग्निवायुजलस्तंभं गतिस्तंभं विवस्वतः । मारणे द्वेषणे चैव तथोच्चाटे महेश्वरि ॥१२३॥
गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः । गुरुणा वैष्णवैर्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥१२४॥
वशीकरणमंत्रैर्वा जायंते सर्वसिद्धयः । प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा मध्याह्ने च निशामुखे ॥१२५॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् । वादी मूको भवेद्दुष्टो राजा च सेवको यथा ॥१२६॥
आदित्यमंगलदिने गुरौ वापि महेश्वरि । गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥१२७॥
धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं सर्वान् कामानवाप्नुयात् । स्त्रीभिर्वामकरे धार्य्यं पुंभिर्दक्षकरे तथा ॥१२८॥
आदित्यमंगलदिने गुरौ वापि महेश्वरि । शनैश्चरे लिखेद्वापि सर्वासिद्धिं लभेद्ध्रुवम् ॥१२९॥
प्रांतरे वा श्मशाने वा निशायामर्द्धरात्रके । शून्यागारे च देवेशि लिखेद्यत्नेन साधकः ॥१३०॥
सिंहराशौ गुरुगते कर्कटस्थे दिवाकरे । मीनराशौ गुरुगते लिखेद्यत्नेन साधकः ॥१३१॥
रजस्वलाभगं दृष्ट्वा तत्रस्थो विलिखेत्सदा । सुगंधिकुसुमैः शुक्लैः सुगन्धिगंधचन्दनैः ॥१३२॥
मृगनाभि – मृगमदैर्विलिखेद्यत्नपूर्वकम् । लिखित्वा च पठित्वा च धारयेच्चाप्यनन्यधीः ॥१३३॥
कुमारीं पूजयित्वा च नारीश्चापि प्रपूजयेत् । पूजयित्वा च कुसुमैर्गंधचन्दन वस्त्रकैः ॥१३४॥
सिन्दूररक्तकुसुमैः पूजयेद्भक्तियोगतः । अथवा पूजयेद्देवि कुमारीर्दश नान्यधीः ॥१३५॥
सर्वाभीष्टफलं तत्र लभते तत्क्षणादपि । नात्र सिद्ध्याद्यपेक्षास्ति न वा मित्रारिदूषणम् ॥१३६॥
न विचार्य्यं च देवेशि जपमात्रेण सिद्धिदम् । सर्वदा सर्वकालेषु षट्साहस्त्रप्रमाणतः ॥१३७॥
बलिं दत्त्वा विधानेन प्रत्यहं पूजयेच्छिवाम् । स्वयंभूकुसुमैः पुष्पैर्बलिदानं दिवानिशम् ॥१३८॥
पूजयेत्पार्वतीं देवीं भैरवीं त्रिपुरात्मिकाम् । ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यं दश वा द्वादशं तथा ॥१३९॥
अनेन विधिना देवि बालां नित्यं प्रपूजयेत् । मासमेकं पठेद्यस्तु त्रिसंध्यं विधिनाऽमुना ॥१४०॥
अपुत्रो लभते पुत्रं निर्द्धनो धनवान्भवेत् । सदा चानेन विधिना तथा मासत्रयेण च ॥१४१॥

कृतकार्यो भवेद्देवि तथा मासचतुष्टये । दीर्घरोगात्प्रमुच्येत पञ्चमे कविराड् भवेत् ॥१४२॥
सर्वैश्वर्य्यं लभेद्देवि मासषट्के तथैव च । सप्तमे खेचरत्वं च अष्टमे च बृहद्द्युतिः ॥१४३॥
नवमे सर्वसिद्धिः स्याद्दशमे लोकपूजितः । एकादशे राजवश्यो द्वादशे तु पुरन्दरः ॥१४४॥
वारमेकं पठेद्यस्तु प्राप्नुयात् पूजने फलम् । समग्रं श्लोकमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः ॥१४५॥
स पूजाफलमाप्नोति भैरवेण च भाषितम् । आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्राह्मैन्द्रे च विशेषतः ॥१४६॥
पंचम्यां च तथा षष्ठ्यां यत्र कुत्रापि तिष्ठति । शंका न विद्यते तत्र न च मायादिदूषणम् ॥१४७॥
वारमेकं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसंकटात् । किमन्यद्बहुना देवि सर्वाभीष्टफलं भवेत् ॥१४८॥

॥इति श्रीविश्वसारे महाकालविरचितं श्रीमत्त्रिपुरभैरवी सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ इति भैरवी तंत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री छिन्नमस्ता (प्रचण्ड चण्डिका) तंत्रम् ॥

छिन्नमस्ता दशमहाविद्याओं में षष्ठी महाविद्या हैं। इनका दूसरा नाम "**प्रचण्ड चण्डिका**" भी हैं। विद्यात्रयी में इनका दूसरा स्थान हैं। इस विद्या का प्रयोग "**मणिपूर चक्र**" में करना चाहिये। योगी लोगों का ध्यान जब ऊपर "**रोधिनी**" नाड़ी के पास वायु के अवरोध होने पर रुक जाता हैं तब इस "**कपालवेधनी**" विद्या का सहारा लेते हैं। यह विद्या उग्र हैं, शास्त्रज्ञान हेतु यह विद्या उत्तम हैं। शिवशक्ति के विपरीत रति आलिंगन पर आप स्थित हैं एक हाथ में खड्ग दूसरे में अपना मस्तकलिये हैं अपने कटे हुये स्कंध से रक्त की तीन धारायें जो निकलती हैं उनमें एक तो स्वयं पीती हैं अन्य दो धाराओं से अपनी "**वर्णिनी**" एवं "**डाकिनी**" नाम की सहेलियों को पिलाकर तृप्त करती हैं। अतः यह इडा पिंगला व सुषुम्ना त्रिनाड़ी का संधान कर योग मार्ग में सिद्धि प्रशस्त करती हैं।

जो देवि अपनी सहेलियों की क्षुधा को शांत करने के लिये अपने रुधिर से उन्हे तृप्त कर सकती हैं तो वह देवी अपने पुत्रवत् भक्तों के लिये क्या कुछ नहीं कर सकती, अर्थात् संकट शीघ्र हरने वाली हैं। भगवती छिन्नमस्त स्वरूप हे अतः इस देवी के नेत्र इनके हृदय में है। वज्रानाड़ी पर आपका अधिकार है तथा हिरण्यकश्यपु और वैरोचन का मनोरथ सिद्ध करने वाली होने से **वज्रवैरोचनीया** कहते हैं। वैरोचन अग्नि को भी कहते हैं। बिरले साधकों के अनेक किस्से सुनने में आते हैं। महाराष्ट्र में एक अच्छे उपासक थे उनसे कोई मिलने जाता तो कभी-कभी व्यक्ति को उनका शिर दिखाई नहीं देता था। बंद कमरे में विशिष्ट साधक जो साधना करते हैं उससे अंग छेदन साधना अंतर्गत साधक के हाथ, पैर, शिर छिन्न-भिन्न होकर अलग अलग कोने में हो जाते हैं तथा क्रम पूर्ण होने पर सभी अंग सिमट कर एक हो जाते है। अर्थात् उसका शरीर आकाश तत्वमय होजाता है, अब तो ऐसे साधक असंभव से लगते हैं।

देवी गले में हड्डियों की माला व नाग यज्ञोपवीत धारण किये हुये है। मेरा यह अनुभव है कि शांत स्थिर चित्त से उपासना करने पर देवी शांतभाव ही प्रकट करती है। उग्र व क्रोधमुद्रा में तापस भाव से उग्रउपासना करने पर ही उग्रस्वरूप में दर्शन देती है परन्तु ऐसी स्थिति में साधक के उच्चाटन का भय अधिक रहता है।

मेरे अनुमान से इसकी साधना का अधिकारी दीक्षित व्यक्ति जो नवार्ण मन्त्र के २०-२५ लाख या त्रिपुरसुन्दरी के १६ लाख जप अथवा भैरव के १२ लाख जप कर चुका हो ध्यान योग का अभ्यास हो उसी को इसकी साधना करनी चाहिये।

भगवती के मंत्र बीजाक्षरों में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, वरुण, इन्द्र, वसुधाधिप, त्रिपुरा एवं त्रिपुरसुंदर, गणेश चन्द्रमा, काम एवं रति की समष्टि है जैसा कि आगे मन्त्रोद्धार में समझाया गया है।

एकाक्षर मंत्र :- हूं।

त्र्यक्षर मंत्रः - ॐ हूं ॐ , हूं स्वाहा। चतुरक्षर मंत्र - ॐ हूं स्वाहा। पंचाक्षर मंत्र - ॐ हूं स्वाहा ॐ।

षडक्षर मंत्रः - १. ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हूं फट्। २. ह्रीं क्लीं हूं ऐं हूं फट्। ३. ह्रीं ऐं हूं ऐं हूं फट्।

द्वादशाक्षर मंत्रः – हूं वज्रवैरोचनीये हूं फट् स्वाहा।

त्रयोदशाक्षर मंत्रः – ॐ वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।

चतुर्दशाक्षर मंत्रः – (१) ह्रीं हूं ऐं ॐ वज्रवैरोचनीये फट् स्वाहा। (२) ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं फट् स्वाहा। (३) ॐ ह्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हूं फट् स्वाहा। (४) ॐ ह्रीं ऐं ॐ वज्रवैरोचनीये फट् स्वाहा।

पंचदशाक्षर मंत्रः – (१) हूं श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट स्वाहा। (२) श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं हूं फट् स्वाहा। इस मंत्र के बीजाक्षरों के परिवर्तन से अलग-अलग कामना मंत्र बनते है।

षोडशाक्षर मंत्राः – १. श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

मंत्र की व्याख्या इस प्रकार है – **श्रीं-लक्ष्मीं, क्लीं-कालीं, ह्रीं-माया भुवनेश्वरीं, ऐं-सरस्वती, व-वरुण, ज-इन्द्र, र-अग्नि, पुनः व-वसुधाधिप, ऐ-(मात्रा) त्रिपुरादेवी, पुनः र-त्रिपुरसुंदरी, ओ (मात्रा)-विजयदेवी = रो। च-चन्द्रमा, न-विनायक। ई (मात्रा) कमला = नी। ये-सरस्वती। पुनः ह्रीं-माया युग्म। फट्-वैखरीशक्ति। स्वा-काम, हा-रति।**

२. क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। ३. ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। ४. ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। ५. श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा। ६. क्लीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा। ७. हूं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा। ८. ऐं ह्रीं हूं श्रीं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा। ९. ह्रीं श्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा। १०. ऐं श्रीं ह्रीं हूं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।

कामनाभेद में पंचदशी या षोडशी मंत्रों के पहले **"हूं"** लगाने से पापनाश, **"ऐं"** से वागीत्व, **"ह्रीं"** से वश्य तथा **"श्रीं"** से लक्ष्मी प्राप्ति होवें।

सप्तदशाक्षर मंत्रः – पूर्वोक्त षोडशाक्षरी मंत्रों केआगे **ॐ** लगाने से सप्तदशाक्षरी मंत्र हो जाते हैं। **(मन्त्रमहौदधौ)** **ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।**

अष्टादशाक्षरी मंत्रः – श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये श्रीं ह्रीं हूं ऐं फट् स्वाहा। ह्रीं क्लीं हूं ऐं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा।

(मंत्र महार्णवे) – ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

एकोनविंशाक्षर मंत्रः – ॐ श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये श्रीं ह्रीं हूं ऐं फट् स्वाहा। (मंत्रकोषे)

वज्रवैरोचनीय के आगे एवं पीछे क्रमभेद से क्रमशः **श्रीं हूं ह्रीं ऐं** को जोड़ने पर चार प्रकार के १९ अक्षरात्मक मंत्र बनते हैं।

विंशाक्षर मंत्रः – १९ अक्षरों वाले मंत्र चार मंत्रों के आगे **श्रीं** जोड़ने पर २० अक्षर के मंत्र बनते हैं।

एकविंशत्यक्षर मंत्रः – २० अक्षरों वाले मंत्र चार मंत्रों के आगे **ॐ** जोड़ने पर २१ अक्षर के मंत्र बनते हैं।

॥ अस्य पूजा–प्रयोग विधानम् ॥

कुल्लुकादि निर्णयः– सेतु, महाकेतु, कुल्लुका बगलामुखी के अनुसार जाने। मंत्र प्रयोग के प्रारंभ एवं अन्त में **"ॐ ह्रीं ॐ"** एक सौ आठ बार जपने से मंत्र सिद्धिप्रद होता है।

विनियोग:- **अस्य शिरश्छिन्ना मंत्रस्य भैरव ऋषिः, सम्राट् छन्दः, छिन्नमस्ता देवता, ह्रींकार द्वयं बीजम्, स्वाहा शक्तिः। अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।** (अन्यत्र - " **क्रोधभैरव ऋषिः** भी लिखा है'')

ऋष्यादि न्यास- **ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि, सम्राट् छन्दसे नमः मुखे, छिन्नमस्ता देवतायै नमः हृदये, ह्रींह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।** इति ऋष्यादिन्यास।

करन्यास- **ॐ आं खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठयोः, ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्योः, ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमयोः, ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकयोः, ॐ औं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठयोः, ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतलयोः।** इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास :- **ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा, ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा, ॐ ऊं वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा, ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा, ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा, ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा।**

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा मस्तकादि पाद पर्यन्तम्। ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा पादादि मस्तकांतम्। इति त्रिवारं न्यसेत्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णालकं, स्फारास्यं प्रपिबद्गलात्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम् ।
याभासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनीवर्णिन्यौ परिदृश्य मोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे ॥१॥
तंत्रांतरेऽपि- **प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः, कर्त्रिकां दिग्वस्त्रां स्वकबंधशोणित सुधाधारां पिबंतीं मुदा ।**
नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालं कृतां, रत्यासक्त- मनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम् ॥२॥
दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्रीं तथा खर्परं, हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी ।
देव्याश्छिन्नकबंधतः पतदसृग्धारां पिबंती मुदा, नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः॥३॥
प्रत्यालीढपदा कबंधविगलद्रक्तं पिबंती मुदा, सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी, ध्येया ध्यानपरैः सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा ॥४॥

अन्यत्रापि-

स्वनाभौ नीरजं ध्यायेदर्द्धं विकसितं सितम् । तत्पद्मकोशमध्ये तु मण्डलं चण्डरोचिषः ॥१॥
जपाकुसुमसंकाशं रक्तबन्धूकसन्निभम् । रजः सत्त्वतमोरेखा योनिमण्डल मण्डितम् ॥२॥
मध्ये तु तां महादेवीं सूर्य्यकोटिसमप्रभाम् । छिन्नमस्तां करे वामे धारयन्तीं स्वमस्तकम् ॥३॥
प्रसारितमुखीं देवीं लेलिहानाग्र जिह्विकाम् । पिबंती रौधिरीं धारां निजकंठविनिर्गताम् ॥४॥
विकीर्णकेशपाशां च नानापुष्प समन्विताम् । दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुण्डमालाविभूषिताम् ॥५॥
दिगम्बरां महाघोरां प्रत्यालीढपदे स्थिताम् । अस्थिमालाधरां देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥६॥
रतिकामोपरिष्ठां च सदा ध्यायंति मंत्रिणः । सदा षोडशवर्षीयां पीनोन्नतपयोधराम् ॥७॥
विपरीत रतासक्तौ ध्यायेद्रतिमनोभवौ । योनिमुद्रा समारूढां विचित्रासन संस्थिताम् ॥८॥
डाकिनीवर्णिनीयुक्तां वामदक्षिणयोगतः । देवीगलोच्छलद्रक्त धारापानं प्रकुर्वन्तीम् ॥९॥

वर्णिनीं लोहितां सौम्यां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् । कपालकर्त्रिकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः ॥१०॥
नागयज्ञोपवीताढ्यां ज्वलत्तेजोमयीमिव । प्रत्यालीढपदां विद्यां नानालंकारभूषिताम् ॥११॥
सदा द्वादशवर्षीयामस्थिमाला- विभूषिताम् । डाकिनी वामपार्श्वे तु कल्पसूर्य्यानलोपमाम् ॥१२॥
विद्युज्जटां त्रिनयनां दंतपंक्तिबलाकिनीम् । दंष्ट्राकरालवदनां पीनोन्नतपयोधराम् ॥१३॥
महादेवीं महाघोरां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् । लेलिहानमहाजिह्वां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥१४॥
कपालकर्त्रिकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः । देवीं गलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम् ॥१५॥
करस्थितकपालेन भीषणेनातिभीषणाम् । आभ्यां निषेवमाणां तां ध्यायेद्देवीं विचक्षणः ।

इति ध्यायेत्।

॥ अथ आवरण पूजनम् ॥

यंत्रोद्धार - यंत्र में त्रिकोण बनायें। उसके बाहर श्वेत, रक्त, कृष्णवर्ण के "सूर्यमण्डल" बनाये। मध्यत्रिकोण में "ॐ हुं फट्" लिखें। उसके बाद षट्कोण, अष्टदल, एवं ३ रेखाओं से युक्त भूपूर बनावें। अष्टदल में पूर्व में श्वेत, अग्निकोण में रक्त, दक्षिण में कृष्ण (काला), नैऋत्य में पीत (पीला) पश्चिम में श्वेत, वायव्य में रक्त, उत्तर में श्वेत, ईशान में कृष्ण रंग भरें। मध्यकर्णिका पीली बनावें। भूपूर के पूर्वादि द्वार- लाल, काले, श्वेत, पीले रंग के है उनमें क्षेत्रपाल गण अधिष्ठित है (हि. तंत्रसार)
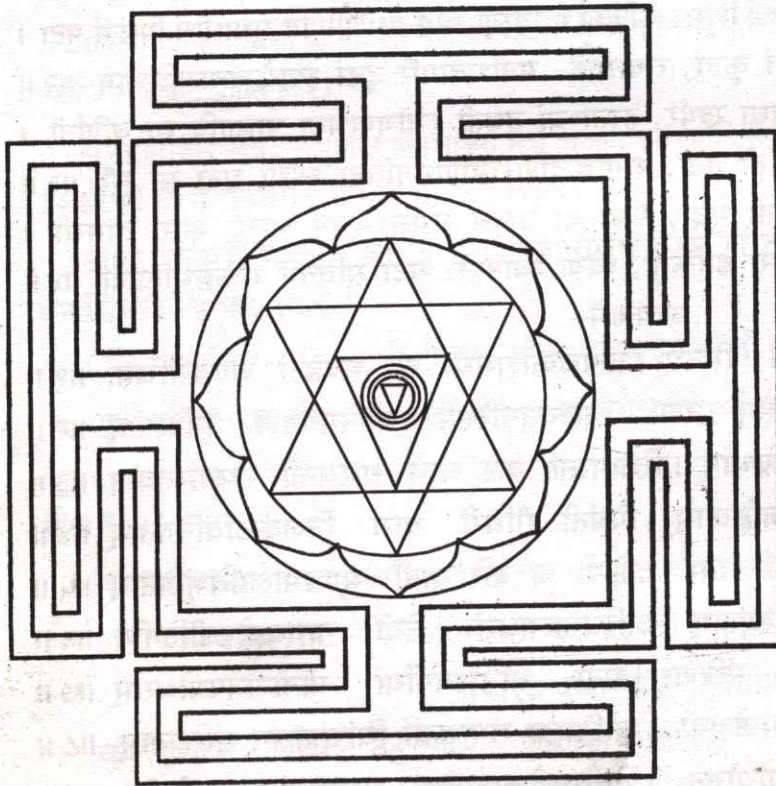
॥ छिन्नमस्ता यन्त्रम् ॥

भद्रपीठ पर आधार शक्तये नमः, मं मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः से आधार शक्ति की पूजा कर **"जयादि"** नवपीठ शक्तियों की पूजा करें। (मंत्र महा., हि. तंत्रसार में चित्र व यंत्रोद्धार के अनुसार पूजाक्रम नही दिया गया है। हमने शेषक्रम देने का प्रयास किया है।)

पूर्वादिक्रमेण - **ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्र्यै नमः, ॐ अघोरायै नमः।** मध्ये - **ॐ मंगलायै नमः।**

स्वर्णनिर्मित मूर्ति को ताम्रपात्र में रखें दुग्धधारा देवे अग्न्युतारण करें, प्राणप्रतिष्ठा करें।

देवी का आवाहन करें पुष्पादि से

आसन देवे - **ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीयै ॐ वज्रवैरोचनीये एह्येहि नमः।**

भैरवमत के अनुसार आधारशक्ति, कूर्म, नाग, पद्मनाल, पद्म, मण्डल, चतुरस्त्र, सत्त्व, रज, तम, रति एवं काम की पूजा कर शक्ति पूजा करें। रति व काम के ऊपर - **"ॐ वज्रवैरोचनीये देहि देहि एहि एहि गृह्ण गृह्ण स्वाहा मम सिद्धिं देहि देहि मम शत्रून् मारय मारय करालिके हुं फट् स्वाहा"।**

इसके बाद पुनः ध्यान करें - **"ॐ सर्वसिद्धिवर्णनीये सर्वसिद्धडाकिनीये वज्रवैरोचनीये इहागच्छागच्छ इहतिष्ठ इहसंन्निधेहि इह सान्निरुध्यस्व इत्येननावाह्य "हूंकार' बीजेन मूर्ति प्रकल्प।**

आं ह्रीं क्रों हंसः से प्राणप्रतिष्ठा करें।

तंत्रसार एवं मंत्रमहार्णव में आवरणपूजा में नामभेद है क्रम में कमी रही है, अतः एकदूसरे का पूरक करते हुये समष्टि पूजा दी जा रही है। आवरण पूजा विपरीत क्रम से अर्थात् भूपूर से मूल त्रिकोण तक होगी। पुष्प लेकर परिवार पूजन की आज्ञा मांगें -

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां छिन्नके देहि परिवारार्चनाय मे॥

प्रत्येक नाम मन्त्र के बाद **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** कहें।

प्रथमावरणम् - (भूपूरे पूर्वादिक्रमेण) **ॐ वं वज्राय नमः, वज्रश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** इति सर्वत्र। **ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पां पाशाय नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः।** इन्द्रेशानयोर्मध्ये - **ॐ पं पद्माय नमः।** वरुणनिर्ऋति मध्ये - **ॐ चं चक्राय नमः।**

इसके बाद पुष्पांजलि देवे।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

विशेषार्घ्य से जल छोड़कर कहें **पूजितास्तर्पिताः सन्तु**। इस तरह सभी आवरणपूजा के बाद पुष्पांजलि देवें।

द्वितीयावरणम् - (भूपूरे) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ मं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ कुं कुबेराय नमः। ॐ हं ईशानाय नमः। ॐ आं ब्रह्मणे नमः। ॐ ह्रीं अनंताय नमः।**

यहीं पर पूर्वादि द्वारों में क्षेत्रपाल गणों का पूजन करें- **पूर्वे- गं गणेशाय नमः।** दक्षिणें- **वं वटुकाय नमः।** पश्चिमे- **यां योगिन्यभ्यौ नमः।** उत्तरे- **क्षां क्षेत्रपालाय नमः।** ईशाने- **ॐ सर्वभूत दमनाय नमः।**

तृतीयावरणम् - (भूपूरे चतुर्द्वारि) **ॐ करालाय नमः। ॐ विकरालाय नमः। ॐ अतिकरालाय नमः। ॐ महाकालाय नमः।**

चतुर्थावरणम् - (अष्टदले केसरेषु) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ लज्जायै नमः। ॐ मायायै नमः। ॐ वाण्यै नमः।** आग्नेयादि कोणे - **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ ईश्वराय नमः।** मध्ये- **ॐ सदाशिवाय नमः।**

पंचमावरणम् - (अष्टदल मध्ये) **ॐ ह्रीं काल्यै नमः। (ॐ एकलिंगाय नमः।)ॐ वर्णिन्यै नमः। (ॐ योगिन्यै नमः।) ॐ डाकिन्यै नमः। ॐ भैरव्यै नमः। ॐ महाभैरव्यै नमः। ॐ इन्द्राक्ष्यै नमः। ॐ पिङ्गाक्ष्यै नमः।**

(ॐ असितांग्यै नमः।) ॐ संहारिण्यै नमः।

षष्ठमावरणम्– अष्टदल के मध्य में– **''हूं फट् नमः, स्वाहाय नमः''** । देवी के दक्षिण में– **ॐ सम्राटछन्दसे नमः, ॐ बीजशक्तिभ्यां नमः।** देवी के उत्तर की ओर– **ॐ सर्व वाणेभ्यो नमः।** पुनः अष्टदलाग्रे– **ॐ ब्रह्मयै नमः, माहेश्वर्यै., कौमार्यै., वैष्णव्यै., वाराह्यै., इन्द्राण्यै., चामुण्डायै., महालक्ष्म्यै.।**

सप्तमावरणम् – (षट्कोणे) आग्नेयादि कोणे) – **ॐ आं खड्गाय नमः। हृदयश्री पादुकां पूजयामि। ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा। ॐ ऊं वज्राय शिखायै वषट्। ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं।** मध्ये – **ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट्।** दिक्षु – **ॐ अः वसु रक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट्।**

अष्टमावरणम् – (त्रिकोणे) – **ॐ ऐं छिन्नमस्तायै नमः।** देवी दक्षिणतः – **ॐ ऐं डाकिन्यै नमः। ॐ शंखनिधये नमः।** देवीवामतः – **ॐ ऐं वर्णिन्यै नमः। ॐ पद्मनिधये नमः।** तंत्रसार में डाकिनी वाम ओर तथा वर्णिनी दाँयी ओर कही है।

नवमावरणम्– (सूर्य के तीन वृत्तमण्डलो में)– **ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः।**

पश्चात् धूपदीप नैवेद्यादि समर्पण कर नमस्कार करें। पूजा समय व मध्यरात्रि में मत्स्यमांसादि की बलि देवे। यदि पूजा दिन में करें, बलिरात्रि को देवे तो पुनः पंचोपचार पूजन कर बलि देवें।

मंत्र – **ॐ सर्वसिद्धिप्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये वज्रवैरोचनीये एह्येहि इमं बलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं देहि ह्रीं फट् स्वाहा।**

इस देवी का मंत्र पुरश्चरण ४ लाख जप का है। पलाश बिल्व पुष्प फल से दशांश होम करें। तर्पण मार्जन कर ब्राह्मण कुमारी भोजन करायें। बिल्वपुष्प व बिल्वफल होम से लक्ष्मी प्राप्ति होवे।

॥नमस्कार मंत्रः॥

नाभौ शुद्धारविंदं तदुपरि कमल - मण्डलं चण्डरश्मेः।
संसारस्यैक- सारां त्रिभुवन- जननी धर्म- कामोदयाढ्याम् ॥
तस्मिन् मध्ये त्रिकोण त्रितय - तनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्ताम्।
तां वन्दे ज्ञानरूपां निखिल भयहरां योगिनी योगमुद्राम् ॥

यदि कोई स्त्री इस मंत्र को ग्रहण करे तो वह डाकिनी होती है। प्रति पुत्रादि से रहित होकर सिद्धयोगिनी के समान विचरण करती है। मालती पुष्पों के होम से वाक्सिद्धि, चंपा के होम से सुख प्राप्ति। घृताक्त १०० छागमांस खण्डों के होम से एक महीने में सब का वशीकरण करें। सफेद करवीर पुष्पों से १ लाख होम करने पर साधक रोगदोष से मुक्त होकर सुखी जीवन जीता है। लालकनेर के होम से राजा का वशीकरण होवे।

विल्बफल, पुष्प, उदुम्बर, पलाश एवं फल के होम से लक्ष्मी प्राप्ति। पायसान्न होम से कवित्व, बन्धूक पुष्प से सौभाग्य प्राप्ति तथा तिल तण्डुल होम से सभी का वशीकरण होवे।

स्त्री का रज मृगमांस होम से आकर्षण, महिषमांस से स्तंभन होवे। चिताग्नी में परमृत्कोकिल होम से शत्रु का मारण होवे। धतूर की काष्ठ एवं काक मांस से होम करें तो शत्रु मृत्यु होवें।

भुक्ति मुक्ति हेतु श्वेत, उच्चाटन हेतु नील, वशीकरण हेतु रक्त, मारण में धूम्र, स्तंभन में कनकप्रभा देवी का ध्यान करें। निर्जनस्थान में कृष्णपक्ष में रात्रिसमय पंचपुरुषगामी नवयौवना सुंदरी का विवस्त्र रूप में छिन्नमस्ता स्वरूप मानकर

पूजा करें। भूषणदानादि से संतुष्ट करें। बलिप्रदान करें, ब्राह्मण भोजन करायें तो लक्ष्मीवान पुत्रवान होवे।

॥ छिन्नमस्ता गायत्री ॥

ॐ वैरोचन्ये विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

॥ अङ्गदेवता:॥

१ क्रोधभैरव- मंत्रो यथा- (भूतडामर तंत्रे)- ॐ वज्र ज्वालेन हन हन सर्वभूतान् हूं फट्।

इस विद्या के भैरव क्रोधभैरव है। साधना रहस्य व पुरश्चर्यार्णव में मंत्र उल्लिखित है।

साट्टहासं महारौद्रं भिन्नाञ्जन चयोपमं प्रत्यालीढं चतुर्बाहुं दक्षिणे चक्रधारिणम्।
तर्जनी वामहस्तेन तीक्ष्णदंष्ट्रा करालिनं कपाल रत्नमुकुटं त्रैलोकस्य विनायकम्।
आदित्य कोटि सङ्काशमष्टनाग विभूषितं अपराजित पदाक्रांत मुद्रावान् बलविष्टिभिः॥

२. कोकिलार्णवतंत्र के अनुसार अंगदेवता नृसिंह एवं शरभ है- नृसिंहो विष्णुराख्यातो, शरभो ब्रह्मचारीवान्।

३. विज्ञानाकर्षिणी- ॐ ब्रह्ममुखे फट् फट्। (डामर तंत्रे)

४. रक्षाकरण सुरेखा मंत्र- ॐ वज्ररेखे सुरेखे हुं हुं फट्।

॥ श्री त्रैलोक्यविजय छिन्नमस्ता कवचम् ॥

॥ देव्युवाच ॥

कथिताश्छिन्नमस्ताया या या विद्याः सुगोपिताः। त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चाधिगता मया ॥१॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्। त्रैलोक्यविजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो ॥२॥

॥ भैरव उवाच ॥

शृणु वक्ष्यामि देवेशि! सर्वदेवनमस्कृते। त्रैलोक्यविजयं नामकवचं सर्वमोहनम् ॥३॥
सर्वविद्यामयं साक्षात्सुरासुर जयप्रदम्। धारणात्पठनादीशस्त्रैलोक्यविजयी विभुः ॥४॥
ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धारणात्पठनाद्यतः। कर्ता पाता च संहर्ता भुवनानां सुरेश्वरि ॥५॥
न देयं परशिष्येभ्योऽभक्तेभ्योऽपि विशेषतः। देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योऽप्यधिकाय च ॥६॥
देव्याश्च च्छिन्नमस्तायाः कवचस्य च भैरवः। ऋषिस्तु स्याद्विराट् छंदो देवता छिन्नमस्तका ॥७॥
त्रैलोक्यविजये मुक्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः। हुंकारो मे शिरः पातु छिन्नमस्ता बलप्रदा ॥८॥

ह्रां ह्रूं ऐं त्र्यक्षरी पातु भालं वक्त्रं दिगंबरा । श्रीं ह्रीं ह्रूं ऐं दृशौ पातु मुंडं कर्त्रिधरापि सा ॥९॥
सा विद्या प्रणवाद्यंता श्रुतियुग्मं सदाऽवतु । वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा च ध्रुवादिका ॥१०॥
घ्राणं पातु च्छिन्नमस्ता मुण्डकर्त्रिविधारिणी । श्रीमायाकूर्चवाग्बीजै र्वज्रवैरोचनीय हूं ॥११॥
हूं फट् स्वाहा महाविद्या षोडशी ब्रह्मरूपिणी । स्वपार्श्वे वर्णिनी चासृग्धारां पाययती मुदा ॥१२॥
वदनं सर्वदा पातु च्छिन्नमस्ता स्वशक्तिका । मुण्डकर्त्रिधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी ॥१३॥
वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु । रामाद्या पातु जिह्वां च लज्जाद्या पातु कंठकम् ॥१४॥
कूर्चाद्या हृदयं पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम् । रमया पुटिता विद्या पार्श्वौ पातु सुरेश्वरी ॥१५॥
मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगंबरा । कूर्चेण पुटिता देवी पृष्ठदेशे सदाऽवतु ॥१६॥
वाग्बीजपुटिता चैषा मध्यं पातु सशक्तिका । ईश्वरी कूर्चवाग्बीजै र्वज्रवैरोचनीय हूं ॥१७॥
हूं फट् स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्य्यसमप्रभा । छिन्नमस्ता सदा पायादुरुयुग्मं सशक्तिका ॥१८॥
ह्रीं ह्रूं वर्णिनी जानुं श्रीं ह्रीं च डाकिनी पदम् । सर्वविद्यास्थिता नित्या सर्वांगं मे सदाऽवतु ॥१९॥
प्राच्यां पायादेकलिंगा योगिनी पावकेऽवतु । डाकिनी दक्षिणे पातु श्रीमहाभैरवी च माम् ॥२०॥
नैर्ऋत्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेऽवतु । इन्द्राक्षी पातु वायव्येऽसितांगी पातु चोत्तरे ॥२१॥
संहारिणी सदापातु शिवकोणे सकर्त्रिका । इत्यष्टशक्तयः पांतु दिग्विदिक्षु सकर्त्रिकाः ॥२२॥
क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वं ह्रीं ह्रीं मां पातु पावके । ह्रूं ह्रूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु ॥२३॥
क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैर्ऋत्यां ह्रीं ह्रीं च पश्चिमेऽवतु । हूं हूं पातु मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे ॥२४॥
महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु । तारो माया वधूः कूर्चं फट्कारोऽयं महामनुः ॥२५॥

खड्गकर्त्रिधरा तारा चोर्द्धदेशं सदाऽवतु ।
ह्रीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले मां पातु चैकजटा सती ।
तारा तु सहिता खेऽव्यान्महानीलसरस्वती ॥२६॥

इति ते कथितं देव्याः कवचं मन्त्रविग्रहम् । यद्धृत्वा पठनाद्भीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः ॥२७॥
सुरासुर मुनीन्द्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम् । यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम् ॥२८॥
भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याद्याश्च खेचराः । आज्ञां गृह्णंति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः ॥२९॥
एतदेव परं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् । देवीमभ्यर्च्य गंधाद्यैर्मूले - नैव पठेत्सकृत् ॥३०॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् । भूर्जे विलिखितं चैतद्गुटिकां कांचनस्थिताम् ॥३१॥
धारयेद्दक्षिणे - बाहौ कंठे वा यदि वान्यतः । सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥३२॥
तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणी च वदनांबुजे । ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रे यांति सौम्यताम् ॥३३॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम् । सोऽपि शस्त्रप्रहारेण मृत्युमाप्नोति सत्वरम् ॥३४॥

॥ इति भैरवतन्त्रे भैरव भैरवीसंवादे त्रैलोक्यविजयं नाम छिन्नमस्ता कवचं समाप्तम् ॥

॥ श्री छिन्नमस्ता हृदय स्तोत्रम् ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

श्रुतं पूजादिकं सम्यग्भवद्वक्त्राब्ज निःसृतम् । हृदयं छिन्नमस्तायाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥१॥

॥ महादेव उवाच ॥

नाद्यावधि मया प्रोक्तं कस्यापि प्राणवल्लभे । यत्त्वया परिपृष्टोऽहं वक्ष्ये प्रीत्यै तव प्रिये ॥२॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताहृदय स्तोत्र मन्त्रस्य भैरव ऋषिः। सम्राट् छन्दः। छिन्नमस्ता देवता। हूं बीजम्। ॐ शक्तिः। ह्रीं कीलकम्। शत्रुक्षयकरणार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि। सम्राट् छन्दसे नमो मुखे। छिन्नमस्ता देवतायै नमो हृदि। हूं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ह्रीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः – ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हूं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यास।

हृदयादिषड्ङ्गन्यास :– ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ हूं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं कवचाय हुम्। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हूं अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

रक्ताभां रक्तकेशीं करकमललसत्कर्त्रिकां कालकांतिं
विच्छिन्नात्मीय मुण्डासृगरुण बहुलोदग्रधारां पिबंतीम् ।
विघ्नाभ्रौघप्रचण्डश्वसनसमनिभां सेवितां सिद्धसंघैः पद्माक्षीं
छिन्नमस्तां छलकरदितिजच्छेदिनीं संस्मरामि ॥१॥

वन्देऽहं छिन्नमस्तां तां छिन्नमुण्डधरां पराम् । छिन्नग्रीवोच्छटाच्छन्नां क्षौमवस्त्रपरिच्छदाम् ॥२॥

सर्वदा सुरसंघेन सेवितां- घ्रिसरोरुहाम् । सेवेसकल - सम्पत्त्यै छिन्नमस्तां शुभप्रदाम् ॥३॥

यज्ञानां योगयज्ञाय या तु जाता युगे युगे । दानवांतकरीं देवीं छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥४॥

वैराचनीं वरारोहां वामदेवविवर्द्धिताम् । कोटिसूर्य्यप्रभां वंदे विद्युद्वर्णाक्षिमण्डिताम् ॥५॥

निजकण्ठोच्छलद्रक्तधारया या मुहुर्मुहुः । योगिनीस्तर्पयन्त्युग्रा तस्याश्चरणमाश्रये ॥६॥

हूमित्येकाक्षरं मंत्रं यदयि युक्तमानसः । यो जपेत्तस्य विद्वेषी भस्मतां याति तां भजे ॥७॥

हूं स्वाहेति मनुं सम्यग्यः स्मरत्यर्तिमान्नरः । छिनत्ति च्छिन्नमस्ताया तस्य बाधां नमामिताम् ॥८॥

यस्याः कटाक्षमात्रेण क्रूरभूतादयो द्रुतम् । दूरतः सम्पलायंते च्छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥९॥

क्षितितलपरिरक्षाक्षांतरोषा सुदक्षा, छलयुतखलकक्षाच्छेदने क्षांतिलक्ष्या ।
क्षितिदितिजसुपक्षा क्षोणिपाक्षय्यशिक्षा, जयतु जयतु चाक्षा च्छिन्नमस्तारिभक्षा ॥१०॥

कलिकलुषकलानां कर्त्तने कर्त्रिहस्ता, सुरकुवलयकाशा मन्दभानुप्रकाशा ।
असुरकुलकलापत्रासिकाऽम्लान मूर्तिर्जयतु, जयतुकाली छिन्नमस्ता कराली ॥११॥

भुवनभरणभूरिभ्राजमानानुभावा भवभवविभवानां भारणोद्धातभूतिः ।
द्विजकुलकमलानां भासिनी भानुमूर्तिर्भवतु भवतु वाणी छिन्नमस्ता भवानी ॥१२॥
मम रिपुगणमाशु च्छेत्तुमुग्रं कृपाणं सपदि, जननि तीक्ष्णं छिन्नमुण्डं गृहाण ।
भवतु तव यशोऽलं छिंधि शत्रूनखलान्मे, मम च परिदिशेष्टं छिन्मस्ते क्षमस्व ॥१३॥
छिन्नग्रीवा छिन्नमस्ता छिन्नमुण्ड धराऽक्षता । क्षोदक्षेमकरी स्वक्षा क्षोणीशाच्छादनक्षमा ॥१४॥
वैरोचनी वरारोहा बलिदानप्रहर्षिता । बलिपूजितपादाब्जा वासुदेवप्रपूजिता ॥१५॥
इति द्वादशनामानि च्छिन्नमस्ताप्रियाणि यः । स्मरेत्प्रातः समुत्थाय तस्य नश्यंति शत्रवः ॥१६॥

यां स्मृत्वा संति सद्यः सकलसुरगणाः सर्वदा सम्पदाढ्याः
शत्रूणां संघमाहत्य विशदवदनाः स्वस्थचित्ताः श्रयंति ।
तस्याः संकल्पवंतः सरसिजचरणं संततं संश्रयंति
साऽऽद्या श्रीशादिसेव्या सुफलतु सुतरां छिन्नमस्ता प्रशस्ता ॥१७॥

इदं हृदयमज्ञात्वा हंतुमिच्छति यो द्विषम् । कथं तस्याचिरं शत्रुर्नाशमेष्यति पार्वति ॥१८॥
यदीच्छेन्नाशनं शत्रोः शीघ्रमेतत्पठेन्नरः । छिन्नमस्ता प्रसन्ना हि ददाति फलमीप्सितम् ॥१९॥
शत्रुप्रशमनं पुण्यं समीप्सितफलप्रदम् । आयुरारोग्यदं चैव पठतां पुण्यसाधनम् ॥२०॥

॥ इति श्रीनंद्यावर्ते महादेवपार्वती संवादे श्रीछिन्नमस्ता हृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री छिन्नमस्ता स्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डलं चण्डरश्मेः
संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्म्मकर्म्मार्थदात्रीम् ।
तस्मिन्मध्ये त्रिभागे त्रितयतनुधारां छिन्नमस्तां प्रशस्तां
तां वन्दे छिन्नमस्तां शमनभयहरां योगिनीं योगमुद्राम् ॥१॥

॥ स्तोत्रम् ॥

नाभौ शुभ्रसरोजवक्त्र विलसद्बंधूक - पुष्पारुणं, भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत् ।
तन्मध्ये विपरीत मैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनी पृष्ठस्थां तरुणार्क कोटिविलसत्तेजः स्वरूपां शिवाम् ॥१॥
वामे च्छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्त्रिकां, प्रत्यालीढपदां दिगंतवसनामुन्मुक्तकेश - व्रजाम् ।
छिन्नात्मीयशिरः समुच्छलदसृग्धारां पिबंतीं परां, बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्र त्रयोद्भासिनीम् ॥२॥
वामादन्यत्र नालं बहुगहनगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः, पायंतीमस्थिभूषां करकमललसत्कर्त्रि कामुग्ररूपाम् ।
रक्ताभांरक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्तिं, प्रत्यालीढोरुपादामरुणि तनयनां योगिनींयोनिमुद्राम् ॥३॥
दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोटरूपां प्रचण्डां, दंष्ट्रादुष्प्रेक्ष्य वक्रोदरविवरल सल्लोलजिह्वाग्रभासाम् ।
विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिनीमात्ममूर्तिं, सद्यश्छिन्नात्मकंठ प्रगलितरुधिरैर्डाकिनीं वर्द्धयंतीम् ॥४॥

ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहितां मंदपादारविंदैराज्ञैर्योगीन्द्रमुख्यैः प्रतिपदमनिशं चिंतितां चिंत्यरूपाम्।
संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्नमस्तां प्रशस्तामिष्टां तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिंतयामि ॥५॥
उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुं, त्रैगुण्याज्जगतो यदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ।
तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थसंसिद्धये, यस्याः स्मेरपदारविंदयुगले लाभं भजंतेऽमराः ॥६॥
अभिलषित परस्त्रीयोगपूजापरोऽहं, बहुविधजनभावारंभसंभावितोऽहम्।
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीसंयुतोऽहं, गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥७॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषित पुरा । सर्वसिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम् ॥८॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितो भवेत् । तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वांछितार्थप्रदायिनी ॥९॥
धनं धान्यं सुतान् जायां हयं हस्तिनमेव च । वसुंधरां महाविद्यामष्टसिद्धीर्लभेद्ध्रुवम् ॥१०॥
वैयाघ्राजिनरंजितस्य जघने रम्ये प्रलंबोदरे, खर्वानिर्वचनीयसर्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते।
कर्त्रीं कुंदरुचिं विचित्रकलितां ज्ञाने दधाने पदेमातर्भक्तजनानुकंपिनि महामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ॥११॥

॥ इति श्रीब्रह्मविरचितं प्रचण्डचण्डिका स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री छिन्नमस्ता (प्रचण्डचण्डिका स्तवराज) स्तोत्रम् ॥

आनन्दयित्रि परमेश्वरि वेदगर्भे मातः पुरंदरपुरांतरलब्धनेत्रे ।
लक्ष्मीमशेषजगतां परिभावयंतः सन्तो भजंति भवतीं धनदेशलब्ध्यै ॥१॥
लज्जानुगां विमलविद्रुमकांतिकांतां कान्तानुरागरसिकाः परमेश्वरि त्वाम् ।
ये भावयन्ति मनसा मनुजास्त एते सीमन्तिनीभिरनिशं परिभाव्यमानाः ॥२॥
मायामयीं निखिलपातककोटिकूटविद्राविणीं भृशमसंशयिनो भजन्ति ।
त्वां पद्मसुंदरतनुं तरुणारुणास्यां पाशांकुशाभयवराद्यकरां वरास्त्रैः ॥३॥
ते तर्ककर्कशधियः श्रुतिशास्त्र शिल्पैश्छंदोऽभिशोभितमुखाः सकलागमज्ञाः ।
सर्वज्ञलब्धविभवाः कुमुदेन्दुवर्णां ये वाग्भवे च भवतीं परिभावयंति ॥४॥
वज्रप्रणुन्नहृदया- समयद्रुहस्ते वैरोचने मदनमंदिरगास्यमातः ।
मायाद्वयानुगतविग्रहभूषिताऽसि दिव्यास्त्रवह्निवनितानुगताऽसि धन्ये ॥५॥
वृत्तत्रयाष्टदलवह्निपुरःसरस्य मार्तण्डमण्डलगतां परिभावयन्ति ।
ये वह्निकूटसदृशीं मणिपूरकान्तस्ते कालकंटकविडंबन चंचवः स्युः ॥६॥
कालागरुभ्रमर चंदनकुण्डगोल- खण्डैरनंगमदनोद्भवमादनीभिः ।
सिन्दूरकुंकुमपटी- रहिमैर्विधाय सन्मण्डलं तदुपरीह यजेन्मृडानीम् ॥७॥
चंचत्तडिन्मिहिरकोटिकरां विचेलामुद्यत्कबंधरुधिरां द्विभुजां त्रिनेत्राम् ।
वामे विकीर्णक च शीर्षकरे परे तामीडे परं परमकर्त्रिकया समेताम् ॥८॥

कामेश्वरांगनिलयां कलया सुधांशोर्विभ्राजमानहृदयामपरे स्मरंति ।
सुप्ताहिराजसदृशीं परमेश्वरस्थां त्वामद्रिराजतनये च समानमानाः ॥९॥

लिंगत्रयोपरिगतामपि वह्निचक्रपीठानुगां सरसिजासनसन्निविष्टाम् ।
सुप्तां प्रबोध्य भवतीं मनुजा गुरूक्तहूंकार वायुवशिभिर्मनसा भजन्ति ॥१०॥

शुभ्रासि शान्तिककथासु तथैव पीता स्तम्भे रिपोरथ च शुभ्रतरासि मातः ।
उच्चाटनेऽप्यसितकर्म सुकर्म्मणि त्वं संसेव्यसे स्फटिककांतिरनन्तचारे ॥११॥

त्वामुत्पलैर्मधुयुतैर्मधुनोपनीतैर्गव्यैः पयोविलुलितैः शतमेव कुंडे ।
साज्यैश्च तोषयति यः पुरुषस्त्रिसंध्यं षण्मासतो भवति शक्रसमो हि भूमौ ॥१२॥

जाग्रत्स्वपन्नपि शिवे तव मन्त्रराजमेवं विचिंतयति यो मनसा विधिज्ञः ।
संसारसागरसमुद्धरणे वहित्रं चित्रं न भूतजननेऽपि जगत्सु पुंसः ॥१३॥

इयं विद्या वंद्या हरिहरविरंचिप्रभृतिभिः पुरारातेरन्तः पुरमिदमगम्यं पशुजनैः ।
सुधामंदानंदैः पशुपतिसमानव्यसनिभिः सुधासेव्यैः सद्भिर्गुरुचरणसंसार चतुरैः ॥१४॥

कुंडे वा मण्डले वा शुचिरथ मनुना भावयत्येव मन्त्री, संस्थाप्योच्चैर्जुहोति प्रसवसुफलदैः पद्मपालाशकानाम् ।
हैमंक्षीरैस्तिलैर्वा समधुककुसुमैर्मालती बंधुजातीश्वेतैरब्धंसकानामपि वरसमिधा संपदे सर्वसिद्ध्यै ॥१५॥

अंधः साज्यं समांसं दधियुतमथवा योऽन्वहं यामिनीनां मध्ये देव्यै ददाति प्रभवति गृहगा श्री रमुष्यावखंडा ॥
आज्यं मांसं सरक्तं तिलयुतमथवा तंडुलं पायसं वा हुत्वा मांसं त्रिसंध्यं स भवति मनुजो भूतिभिर्भूतनाथः ॥१६॥

इदं देव्याः स्तोत्रं पठति मनुजो यस्त्रिसमयं, शुचिर्भूत्वा विश्वे भवति धनदो वासवसमः ।
वशा भूपाः कांता निखिलरिपुहन्तुः सुरगणा, भवंत्युच्चैर्वाचो यदिह ननु मासैस्त्रिभिरपि ॥१७॥

॥ इति श्रीशंकराचार्य विरचितः प्रचण्डचण्डिका स्तवराजः समाप्तम् ॥

॥ श्री छिन्नमस्ता मातृका ॥

लक्ष्मीर्लज्जा शिवा माया वाणी ब्राह्मी च वैष्णवी । रौद्रीश्वरी जया पद्मा वर्णिनी डाकिनी तथा ॥१॥
कराली विकराली च घोरा च स्वर शक्तयः । काली च खड्गिनी चण्डा भैरवी पिङ्गला तथा ॥२॥
इन्द्राणी चैव फट्कारी हारिणी योगिनी तथा । प्रकाशिनी वज्रिणी च सिता पीता रमा तथा ॥३॥
दिगम्बरी महाघोरा मुक्तकेशी चिदाश्रया । चामुण्डा छिन्नमस्ता च भीमा हूङ्कारिणी सिता ॥४॥
पद्मानना पद्मगर्भा पुष्पिणी चारुहासिनी । विजया मङ्गला कान्तिर्मालिनी तारिणी तथा ॥५॥
महोदर्यस्थिमाला च नागयज्ञोपवीतिनी । व्यञ्जनानां च सम्प्रोक्ताः शक्तयः सर्वकामदः ॥६॥

॥ श्री छिन्नमस्ताष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

नाम्नां सहस्त्रं परमं छिन्नमस्ताप्रियं शुभम् । कथितं भवता शंभो सद्यः शत्रुनिकृन्तनम् ॥१॥
पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि । सहस्त्रनामपठने ह्यशक्तो यः पुमान् भवेत् ॥२॥
तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहि कृपामय ॥

॥ श्री सदाशिव उवाच ॥

अष्टोत्तरशतं नाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा ।
सहस्त्रनामपाठस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ॥३॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीच्छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीछिन्नमस्ता देवता । मम सकल सिद्धिप्राप्तये पाठे विनियोगः ।

ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी । चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्ड - प्रभंजिनी ॥४॥
महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी । क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहूः कला ॥५॥
कोपातुरा कोपयुता कोपसंहारकारिणी । वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी ॥६॥
डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता । डाकिनीसङ्गनिरता डाकिनीप्रेमपूरिता ॥७॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्गखर्प्परधारिणी । प्रेतासना प्रेतयुता प्रेतसङ्गविहारिणी ॥८॥
छिन्नमुण्डधरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी । घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी ॥९॥
योगिनी योगनिरता जपयज्ञपरायणा । योनिचक्रमयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी ॥१०॥
योनिमुद्रा योनिगम्या योनियंत्रनिवासिनी । यंत्ररूपा यंत्रमयी यंत्रेशी यंत्रपूजिता ॥११॥
कीर्त्या कपर्द्दिनी काली कङ्काली कलविकारणी । आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा ॥१२॥
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी । भैरवाचारनिरता भूतभैरव सेविता ॥१३॥
भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनाद परायणा । भवाराध्या भवनुता भवसागर तारिणी ॥१४॥
भद्रकाली भद्रतनुर्भद्ररूपा च भद्रिका । भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी ॥१५॥
सुभव्या भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता । सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धा सिद्धनिषेविता ॥१६॥
शुद्धदा सुभगा शुद्धा शुद्धसत्त्वा शुभावहा । श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी ॥१७॥
शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमङ्गल- कारिणी । शिवा शांता शांतिरूपा मृडानी मदनातुरा ॥१८॥
इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परमदुर्ल्लभम् । गुह्याद्गुह्यतरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१९॥
किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे । मारणं मोहनं देवि ह्युच्चाटनमतः परम् ॥२०॥
स्तंभनादिक कर्माणि ऋद्धयः सिद्धयोऽपि च । त्रिकालपठनादस्य सर्वे सिद्ध्यंत्यसंशयम् ॥२१॥
महोत्तमं स्तोत्रमिदं वरानने मयेरितं नित्यमनन्य बुद्धयः ।
पठंतिये भक्तियुता नरोत्तमा भवेन्न तेषां रिपुभिः पराजयः ॥२२॥

॥ इति श्रीच्छिन्नमस्ताष्टोत्तर शतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री छिन्नमस्ता सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देवदेव महादेव सर्वशास्त्रविदांवर । कृपां कुरु जगन्नाथ कथयस्व मम प्रभो ॥१॥
प्रचण्ड चण्डिका देवी सर्वलोक हितैषिणी । तस्याश्च कथितं सर्वं स्तवं च कवचादिकम् ॥२॥
इदानीं छिन्नमस्ताया नाम्नां साहस्रकं शुभम् । त्वं प्रकाशय मे देव कृपया भक्तवत्सल ॥३॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि च्छिन्नायाः सुमनोहरम् । गोपनीयं प्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥४॥
न वक्तव्यं च कुत्रापि प्राणैः कण्ठगतैरपि । तच्छृणुष्व महेशानि सर्वं तत्कथयामि ते ॥५॥
विना पूजां विना ध्यानं विना जाप्येन सिद्ध्यति । विना ध्यानं तथा देवि विना भूतादिशोधनम् ॥६॥
पठनादेव सिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने । पुरा कैलासशिखरे सर्वदेवसभालये ॥७॥
परिपप्रच्छ कथितं तथा शृणु वरानने ॥८॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्री प्रचण्ड चण्डिका सहस्रनाम स्तोत्रस्य भैरव ऋषिः । सम्राट् छन्दः । प्रचण्डचण्डिका देवताः । धर्मार्थ काममोक्षार्थे पाठे विनियोगः ।

ॐ प्रचण्ड चण्डिका चण्डा चण्ड देव्यविनाशिनी । चामुण्डा च सुचण्डा च चपला चारुदेहिनी ॥९॥
ललज्जिह्वा चलद्रक्ता चारु चन्द्रनिभानना । चकोराक्षी चण्डनादा चञ्चला च मनोन्मदा ॥१०॥
चेतना चितिसंस्था च चित्कला ज्ञानरूपिणी । महाभयंकरी देवी वरदाभयधारिणी ॥११॥
भवाढ्या भवरूपा च भवबंधविमोचिनी । भवानी भुवनेशी च भवसंसारतारिणी ॥१२॥
भवाब्धिर्भवमोक्षा च भवबंधविघातिनी । भागीरथी भगस्था च भाग्यभोग्यप्रदायिनी ॥१३॥
कमला कामदा दुर्गा दुर्गबंधविमोचिनी । दुर्द्दर्शना दुर्गरूपा दुर्ज्ञेया दुर्गनाशिनी ॥१४॥
दीनदुःखहरा नित्या नित्यशोकविनाशिनी । नित्यानन्दमया देवी नित्यं कल्याणकारिणी ॥१५॥
सर्वार्थसाधनकरी सर्वसिद्धिस्वरूपिणी । सर्वक्षोभणशक्तिश्च सर्वविद्राविणी परा ॥१६॥
सर्वरञ्जनशक्तिश्च सर्वोन्मादस्वरूपिणी । सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी ॥१७॥
सकला निष्कला सिद्धा कलातीता कलामयी । कुलज्ञा कुलरूपा च चक्षुरानन्ददायिनी ॥१८॥
कुलीना सामरूपा च कामरूपा मनोहरा । कमलस्था कञ्जमुखी कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥१९॥
कुलरूपा कोटराक्षी कमलैश्वर्य्य दायिनी । कुंती ककुब्निनी कुल्ला कुरुकुल्ला करालिका ॥२०॥
कामेश्वरी काममाता कामतापविमोचिनी । कामरूपा कामसत्त्वा कामकौतुककारिणी ॥२१॥
कारुण्यहृदया क्रीं क्रीं मन्त्ररूपा च कोटरा । कौमोदकी कुमुदिनी कैवल्या कुलवासिनी ॥२२॥
केशवी केशवाराध्या केशिदैत्यनिषूदिनी । क्लेशहा क्लेशरहिता क्लेशसंघविनाशिनी ॥२३॥
कराली च करालास्या करालासुरनाशिनी । करालचर्मासिधरा करालकलनाशिनी ॥२४॥
कंकिनी कंकनिरता कपालवरधारिणी । खड्गहस्ता त्रिनेत्रा च खण्डमुण्डासिधारिणी ॥२५॥

खलहा खलहंत्री च क्षरंती खगता सदा । गङ्गागौतमपूज्या च गौरी गंधर्ववासिनी ॥२६॥
गंधर्वा गगणाराध्या गणा गंधर्वसेविता । गणत्कारगणा देवी निर्गुणा च गुणात्मिका ॥२७॥
गुणता गुणदात्री च गुणगौरवदायिनी । गणेशमाता गम्भीरा गगणा ज्योतिकारिणी ॥२८॥
गौराङ्गी च गया गम्या गौतमस्थानवासिनी । गदाधर - प्रिया ज्ञेया ज्ञानगम्या गुहेश्वरी ॥२९॥
गायत्री च गुणवती गुणातीता गुणेश्वरी । गणेशजननी देवी गणेशवरदायिनी ॥३०॥
गणाध्यक्षनुता नित्या गणाध्यक्षप्रपूजिता । गिरीशरमणी देवी गिरीशपरिवन्दिता ॥३१॥
गतिदा गतिहा गीता गौतमी गुरुसेविता । गुरुपूज्या गुरुयुता गुरुसेवनतत्परा ॥३२॥
गंधद्वारा च गंधाढ्या गंधात्मा गंधकारिणी । गीर्वाणपतिसंपूज्या गीर्वाणपतितुष्टिदा ॥३३॥
गीर्वाणाधीशरमणी गीर्वाणाधीशवन्दिता । गीर्वाणाधीशसंसेव्या गीर्वाणाधीशहर्षदा ॥३४॥
गानशक्तिर्गानगम्या गानशक्तिप्रदायिनी । गानविद्या गानसिद्धा गानसंतुष्टमानसा ॥३५॥
गानातीता गानगीता गानहर्षप्रपूरिता । गंधर्वपतिसंहृष्टा गंधर्वगुणमण्डिता ॥३६॥
गंधर्वगणसंसेव्या गंधर्वगणमध्यगा । गंधर्वगणकुशला गंधर्वगणपूजिता ॥३७॥
गंधर्वगणनिरता गंधर्वगणभूषिता । घर्घरा घोररूपा च घोरघुर्घुरनादिनी ॥३८॥
धर्मबिन्दुसमुद्भूता धर्मबिन्दुस्वरूपिणी । घण्टारवा घनरवा घनरूपा घनोदरी ॥३९॥
घोरसत्त्वा च घनदा घण्टानादविनोदनी । घोरचाण्डालिनी घोरा घोरचण्डविनाशिनी ॥४०॥
घोरदानवदमनी घोरदानवनाशिनी । घोरकर्मादिरहिता घोरकर्म्मनिषेविता ॥४१॥
घोरतत्त्वमयी देवी घोरतत्त्वविमोचनी । घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मादिपूरिता ॥४२॥
घोरकर्मादिनिरता घोरकर्मप्रवर्द्धिनी । घोरभूतप्रमथिनी घोरवेतालनाशिनी ॥४३॥
घोरदावाग्निदमनी घोरशत्रुनिषूदिनी । घोरमन्त्रयुता चैव घोरमन्त्रप्रपूजिता ॥४४॥
घोरमन्त्रमनोभिज्ञा घोरमन्त्रफलप्रदा । घोरमन्त्रनिधिश्चैव घोरमन्त्रकृतास्पदा ॥४५॥
घोरमन्त्रेश्वरी देवी घोरमन्त्रार्थमानसा । घोरमन्त्रार्थ तत्त्वज्ञा घोरमन्त्रार्थपारगा ॥४६॥
घोरमन्त्रार्थविभवा घोरमन्त्रार्थबोधिनी । घोरमन्त्रार्थनिचया घोरमन्त्रार्थजन्मभूः ॥४७॥
घोरमन्त्रजपरता घोरमन्त्रजपोद्यता । ङकारवर्णनिलया ङकाराक्षरमण्डिता ॥४८॥
ङकारापररूपा च ङकाराक्षररूपिणी । चित्ररूपा चित्रनाडी चारुकेशी चयप्रभा ॥४९॥
चञ्चला चञ्चलाकारा चारुरूपा च चण्डिका । चतुर्वेदमयी चण्डा चण्डालगणमण्डिता ॥५०॥
चाण्डालच्छेदिनी चण्डतपोनिर्मूलकारिणी । चतुर्भुजा चण्डरूपा चण्डमुण्डविनाशिनी ॥५१॥
चन्द्रिका चन्द्रकीर्तिश्च चन्द्रकांतिस्तथैव च । चन्द्रास्या चन्द्ररूपा च चन्द्रमौलिस्वरूपिणी ॥५२॥
चन्द्रमौलिप्रिया चन्द्रमौलिसंतुष्टमानसा । चकोरबंधुरमणी चकोरबंधुपूजिता ॥५३॥
चक्ररूपा चक्रमयी चक्राकारस्वरूपिणी । चक्रपाणिप्रिया चक्रपाणिप्रीतिप्रदायिनी ॥५४॥
चक्रपाणिरसाभिज्ञा चक्रपाणिवरप्रदा । चक्रपाणिवरोन्मत्ता चक्रपाणिस्वरूपिणी ॥५५॥
चक्रपाणीश्वरी नित्यं चक्रपाणिनमस्कृता । चक्रपाणिसमुद्भूता चक्रपाणिगुणास्पदा ॥५६॥

चन्द्रावली चन्द्रवती चन्द्रकोटिसमप्रभा । चन्दनार्चितपादाब्जा चन्दनान्वितमस्तका ॥५७॥
चारुकीर्तिश्चारुनेत्रा चारुचन्द्रविभूषणा । चारुभूषा चारुवेषा चारुवेषप्रदायिनी ॥५८॥
चारुभूषाभूषिताङ्गी चतुर्वक्त्र - वरप्रदा । चतुवक्त्र - समाराध्या चतुर्वक्त्रसमाश्रिता ॥५९॥
चतुर्वक्त्र चतुर्वाहा चतुर्थी च चतुर्दशी । चित्रा चर्मण्वती चैत्री चन्द्रभागा च चम्पका ॥६०॥
चतुर्द्दशयमाकारा चतुर्दशयमानुगा । चतुर्दशयमप्रीता चतुर्दशयमप्रिया ॥६१॥
छलस्था च्छिद्ररूपा च च्छद्मदा च्छद्मराजिका । छिन्नमस्ता तथा छिन्ना छिन्नमुण्डविधारिणी ॥६२॥
जयदा जयरूपा च जयंती जयमोहिनी । जया जीवनसंस्था च जालंधरनिवासिनी ॥६३॥
ज्वालामुखी ज्वालदात्री जाज्वल्यदहनोपमा । जगद्वंद्या जगत्पूज्या जगत्त्राणपरायणा ॥६४॥
जगती जगदाधारा जन्ममृत्युजरापहा । जननी जन्मभूमिश्च जन्मदा जयशालिनी ॥६५॥
ज्वररोगहरा ज्वाला ज्वालामालाप्रपूरिता । जंभारातीश्वरी जंभारातिवैभवकारिणी ॥६६॥
जंभारातिस्तुता जंभारातिशत्रुनिषूदिनी । जयदुर्गा जयाराध्या जयकाली जयेश्वरी ॥६७॥
जयतारा जयातीता जयशङ्करवल्लभा । जयदा जह्नुतनया जलधित्रासकारिणी ॥६८॥
जलधिव्याधिदमनी जलधिज्वरनाशिनी । जंगमेशी जाड्यहरा जाड्यसंघनिवारिणी ॥६९॥
जाड्यग्रस्तजनातीता जाड्यरोगनिवारिणी । जन्मदात्री जन्महर्त्री जयघोषसमन्विता ॥७०॥
जपयोगसमायुक्ता जपयोगविनोदिनी । जपयोगप्रिया जाप्या जपातीता जयस्वना ॥७१॥
जायाभावस्थिता जाया जायाभावप्रपूरणी । जपाकुसुमसंकाशा जपाकुसुमपूजिता ॥७२॥
जपाकुसुमसम्प्रीता जपाकुसुममण्डिता । जपाकुसुमवद्भासा जपाकुसुमरूपिणी ॥७३॥
जमदग्निस्वरूपा च जानकी जनकात्मजा । झंझावातप्रमुक्ताङ्गी झोरझंकारवासिनी ॥७४॥
झंकारकारिणी झंझावातरूपा च झंकरी । अकाराणुस्वरूपा च टनटंकारनादिनी ॥७५॥
टंकारी टकुवाणी च ठकाराक्षररूपिणी । डिण्डिमा च तथा डिम्भा डिण्डुडिण्डिमनादिनी ॥७६॥
ढक्कामयी ढिलमयी नृत्यशब्दा विलासिनी । ढक्का ढक्केश्वरी ढक्काशब्दरूपा तथैव च ॥७७॥
ढक्कानादप्रिया ढक्कानादसंतुष्टमानसा । णकारा णाक्षरमयी णाक्षरादिस्वरूपिणी ॥७८॥
त्रिपुरा त्रिपुरमयी त्रिशक्तिस्त्रिगुणात्मिका । तामसी च त्रिलोकेशी त्रिपुरा च त्रयीश्वरी ॥७९॥
त्रिविद्या च त्रिरूपा च त्रिनेत्रा च त्रिरूपिणी । तारिणी तरला तारा तारकारिप्रपूजिता ॥८०॥
तारकारिसमाराध्या तारकारिवरप्रदा । तारकारिप्रसूस्तन्वी तरुणी तरलप्रभा ॥८१॥
त्रिरूपा च त्रिपुरगा त्रिशूलवरधारिणी । त्रिशूलिनी तंत्रमयी तंत्रशास्त्रविशारदा ॥८२॥
तंत्ररूपा तपोमूर्तिस्तंत्रमंत्रस्वरूपिणी । तडित्तडिल्लताकारा तत्त्वज्ञानप्रदायिनी ॥८३॥
तत्त्वज्ञानेश्वरी देवी तत्त्वज्ञानप्रमोदिनी । त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेश्वरी ॥८४॥
तापविध्वंसिनी तापसंघनिर्मूलकारिणी । त्रासकर्त्री त्रासहर्त्री त्रासदात्री च त्रासहा ॥८५॥
तिथीशा तिथिरूपा च तिथिस्था तिथिपूजिता । तिलोत्तमा च तिलदा तिलप्रीता तिलेश्वरी ॥८६॥
त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिपुरी त्रिपुरात्मिका । त्रिकुटा त्रिकुटाकारा त्रिकूटाचलमध्यगा ॥८७॥

त्रिजटा च त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरसुन्दरी । तृतीया च त्रिवर्षा च त्रिविधा त्रिमतेश्वरी ॥८८॥
त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणयंत्रमध्यगा । त्रिसंध्या च त्रिसंध्यार्च्या त्रिपदा त्रिपदास्पदा ॥८९॥
स्थानस्थिता स्थलस्था च धन्यस्थलनिवासिनी । थकाराक्षररूपा च स्थलरूपा तथैव च ॥९०॥
स्थूलहस्ता तथा स्थूला स्थैर्य्यरूपप्रकाशिनी । दुर्गा दुर्गार्तिहंत्री च दुर्गबंधविमोचिनी ॥९१॥
देवी दानवसंहंत्री दनुजेष्ठनिषूदिनी । दारापत्यप्रदा नित्या शंकरार्द्धाङ्गधारिणी ॥९२॥
दिव्याङ्गी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी । दीनदुःखहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी ॥९३॥
दीनमाता दीनसेव्या दीनदंभविनाशिनी । दनुजध्वंसिनी देवी देवकी देववल्लभा ॥९४॥
दानवारिप्रिया दीर्घा दानवारिप्रपूजिता । दीर्घस्वरा दीर्घतनुर्द्दीर्घदुर्गतिनाशिनी ॥९५॥
दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्द्दीर्घकेशी दिगम्बरा । दिगम्बरप्रिया दांता दिगम्बरस्वरूपिणी ॥९६॥
दुःखहीना दुःखहरा दुःखसागरतारिणी । दुःखदारिद्र्यशमनी दुःखदारिद्र्यकारिणी ॥९७॥
दुःखदा दुस्सहा दुष्टखण्डनैकस्वरूपिणी । देववामा देवसेव्या देवशक्तिप्रदायिनी ॥९८॥
दामिनी दामिनीप्रीता दामिनीशतसुन्दरी । दामिनीशतसंसेव्या दामिनीदामभूषिता ॥९९॥
देवताभावसंतुष्टा देवताशतमध्यगा । दयाद्र्द्रा च दयारूपा दयादानपरायणा ॥१००॥
दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता । दशविद्यात्मिका देवी दशविद्यास्वरूपिणी ॥१०१॥
धरणी धनदा धात्री धन्या धन्यपरा शिवा । धर्म्मरूपा धनिष्ठा च धेया च धीरगोचरा ॥१०२॥
धर्म्मराजेश्वरी धर्म्मकर्म्मरूपा धनेश्वरी । धनुर्विद्या धनुर्गम्या धनुर्द्धरवरप्रदा ॥१०३॥
धर्म्मशीला धर्म्मलीला धर्म्मकर्म्मविवर्जिता । धर्म्मदा धर्म्मनिरता धर्म्मपाखण्डखण्डिनी ॥१०४॥
धर्म्मेशी धर्म्मरूपा च धर्म्मराजवरप्रदा । धर्म्मिणी धर्म्मगेहस्था धर्म्माधर्म्मस्वरूपिणी ॥१०५॥
धनदा धनदप्रीता धनधान्यसमृद्धिदा । धनधान्यसमृद्धिस्था धनधान्यविनाशिनी ॥१०६॥
धर्म्मनिष्ठा धर्म्मधीरा धर्म्ममार्गरता सदा । धर्म्मबीजकृतस्थाना धर्म्मबीजसुरक्षिणी ॥१०७॥
धर्म्मबीजेश्वरी धर्म्मबीजरूपा च धर्म्मगा । धर्म्मबीजसमुद्भूता धर्म्मबीजसमाश्रिता ॥१०८॥
धराधरपतिप्राणा धराधरपतिस्तुता । धराधरेन्द्रतनुजा धराधरेन्द्रवन्दिता ॥१०९॥
धराधरेन्द्रगेहस्था धराधरेन्द्रपालिनी । धराधरेन्द्रसर्वार्तिनाशिनी धर्म्मपालिनी ॥११०॥
नवीना निर्म्मला नित्या नागराजप्रपूजिता । नागेश्वरी नागमाता नागकन्या च नग्निका ॥१११॥
निर्लेपा निर्विकल्पा च निर्लोमा निरुपद्रवा । निराहारा निराकारा निरञ्जनस्वरूपिणी ॥११२॥
नागिनी नागविभवा नागराजपरिस्तुता । नागराजगुणज्ञा च नागराजसुखप्रदा ॥११३॥
नागलोकगता नित्यं नागलोकनिवासिनी । नागलोकेश्वरी नागभागिनी नागपूजिता ॥११४॥
नागमध्यस्थिता नागमोहसंक्षोभदायिनी । नृत्यप्रिया नृत्यवती नृत्यगीतपरायणा ॥११५॥
नृत्येश्वरी नर्तकी च नृत्यरूपा निराश्रया । नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी ॥११६॥
नरमांसप्रिया नित्या नररक्तप्रिया सदा । नरराजेश्वरी नारीरूपा नारीस्वरूपिणी ॥११७॥
नारीगणार्च्चिता नारीमध्यगा नूतनाम्बरा । नर्मदा च नदीरूपा नदीसंगमसंस्थिता ॥११८॥

नर्मदेश्वरसम्प्रीता नर्मदेश्वररूपिणी । पद्मावती पद्ममुखी पद्मकिञ्जल्कवासिनी ॥११९॥
पट्टवस्त्रपरीधाना पद्मरागविभूषिता । परमा प्रीतिदा नित्या प्रेतासननिवासिनी ॥१२०॥
परिपूर्णरसोन्मत्ता प्रेमविह्वलवल्लभा । पवित्रासवनिष्पूता प्रेयसी परमात्मिका ॥१२१॥
प्रियव्रतपरा नित्यं परमप्रेमदायिनी । पुष्पप्रिया पद्मकोशा पद्मधर्म्मनिवासिनी ॥१२२॥
फेत्कारिणी तंत्ररूपा फेरुफेरवनादिनी । वंशिनी वंशरूपा च बगला वामरूपिणी ॥१२३॥
वाङ्मयी वसुधा धृष्या वाग्भवाख्या वरा नरा । बुद्धिदा बुद्धिरूपा च विद्या वादस्वरूपिणी ॥१२४॥
बाला वृद्धमयीरूपा वाणी वाक्यनिवासिनी । वरुणा वाग्वती वीरा वीरभूषण भूषिता ॥१२५॥
वीरभद्रार्चितपदा वीरभद्रप्रसूरपि । वेदमार्गरता वेदमंत्ररूपा वषट्प्रिया ॥१२६॥
वीणावाद्यसमायुक्ता वीणावाद्यपरायणा । वीणारवा तथा वीणाशब्दरूपा च वैष्णवी ॥१२७॥
वैष्णवाचारनिरता वैष्णवाचारतत्परा । विष्णुसेव्या विष्णुपत्नी विष्णुरूपा वरानना ॥१२८॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता विश्वनिर्माणकारिणी । विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी ॥१२९॥
भैरवी भैरवाराध्या भूतभैरवसेविता । भैरवेशी तथा भीमा भैरवेश्वरतुष्टिदा ॥१३०॥
भैरवाधीशरमणी भैरवाधीशपालिनी । भीमेश्वरी भीममाता भीमशब्दपरायणा ॥१३१॥
भीमरूपा च भीमेशी भीमा भीमवरप्रदा । भीमपूजितपादाब्जा भीमभैरवपालिनी ॥१३२॥
भीमासुरध्वंसकरी भीमदुष्टविनाशिनी । भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिदा सदा ॥१३३॥
भयदा भयहंत्री च अभयाऽभयरूपिणी । भीमनादा विह्वला च भयभीतिविनाशिनी ॥१३४॥
मत्ता प्रमत्तरूपा च मन्दोन्मत्तस्वरूपिणी । मान्या मनोज्ञा माना च मंगला च मनोहरा ॥१३५॥
माननीया महापूज्या महामहिषमर्द्दिनी । महिषासुरहंत्री च मातंगी मयवासिनी ॥१३६॥
माध्वी मधुमयी मुद्रा मुद्रिका मंत्ररूपिणी । महाविश्वेश्वरी दूती मौलिचन्द्रप्रकाशिनी ॥१३७॥
यशःस्वरूपिणी देवी योगमार्गप्रदायिनी । योगिनी योगगम्या च याम्येशी योगरूपिणी ॥१३८॥
यज्ञांगी च योगमयी जपरूपा जपात्मिका । युगाख्या च युगांता च योनिमण्डलवासिनी ॥१३९॥
अयोनिजा योगनिद्रा योगानन्दप्रदायिनी । रमा रतिप्रिया नित्यं रतिरागविवर्द्धिनी ॥१४०॥
रमणी राससम्भूता रम्या रासप्रिया रसा । रणोत्कण्ठा रणस्था च वरा रंगप्रदायिनी ॥१४१॥
रेवती रणजैत्री च रसोद्भूता रणोत्सवा । लता लावण्यरूपा च लवणाब्धिस्वरूपिणी ॥१४२॥
लवंगकुसुमाराध्या लोलजिह्वा च लेलिहा । वशिनी वनसंस्था च वनपुष्पप्रिया वरा ॥१४३॥
प्राणेश्वरी बुद्धिरूपा बुद्धिदात्री बुधात्मिका । शमनी श्वेतवर्णा च शाङ्करी शिवभाषिणी ॥१४४॥
शाम्यरूपा शक्तिरूपा शक्तिबिन्दुनिवासिनी । सर्वेश्वरी सर्वदात्री सर्वमाता च शर्वरी ॥१४५॥
शांभवी सिद्धिदा सिद्धा सुषुम्ना - सुरभासिनी । सहस्त्रदलमध्यस्था सहस्त्रदलवर्त्तिनी ॥१४६॥
हरप्रिया हरध्येया हूँकारबीजरूपिणी । लंकेश्वरी च तरला लोममांसप्रपूजिता ॥१४७॥
क्षेम्या क्षेमकरी क्षामा क्षीरबिन्दुस्वरूपिणा । क्षिप्तचित्तप्रदा नित्या क्षौमवस्त्रविलासिनी ॥१४८॥
[illegible] ॥१४९॥

सर्वसम्पत्प्रदात्री च सम्पदापद्विभूषिता । सत्त्वरूपा च सर्वार्था सर्वदेवप्रपूजिता ॥१५०॥
सर्वेश्वरी सर्वमाता सर्वज्ञा सुरसात्मिका । सिन्धुर्मंदाकिनी गंगानदी सागररूपिणी ॥१५१॥
सुकेशी मुक्तकेशी च डाकिनी वरवर्णिनी । ज्ञानदा ज्ञानगगना सोममण्डलवासिनी ॥१५२॥
आकाश- निलया नित्या परमाकाशरूपिणी । अन्नपूर्णा महानित्या महादेवरसोद्भवा ॥१५३॥
मंगला कालिका चण्डा चण्डनादातिभीषणा । चण्डासुरस्य मथिनी चामुण्डा चपलात्मिका ॥१५४॥
चण्डी चामरकेशी च चलत्कुण्डलधारिणी । मुण्डमालाधरा नित्या खण्डमुण्डविलासिनी ॥१५५॥
खड्गहस्ता मुण्डहस्ता वरहस्ता वरप्रदा । असिचर्मधरा नित्या पाशांकुशधरा परा ॥१५६॥
शूलहस्ता शिवहस्ता घण्टानादविलासिनी । धनुर्बाणधराऽऽदित्या नागहस्ता नगात्मजा ॥१५७॥
महिषासुरहंत्री च रक्तबीजविनाशिनी । रक्तरूपा रक्तगा च रक्तहस्ता भयप्रदा ॥१५८॥
असिता च धर्म्मधरा पाशांकुशधरा परा । धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी ॥१५९॥
परस्था देवतामूर्तिः शर्वाणी शारदा परा । नानावर्णविभूषांगी नानारागसमापिनी ॥१६०॥
पशुवस्त्रपरीधाना पुष्पायुधधरा परा । मुक्तरंजितमालाढ्या मुक्ताहारविलासिनी ॥१६१॥
स्वर्णकुण्डलभूषा च स्वर्णसिंहासनस्थिता । सुन्दरांगी सुवर्णाभा शांभवी शकटात्मिका ॥१६२॥
सर्वलोकेशविद्या च मोहसम्मोहकारिणी । श्रेयसी सृष्टिरूपा च च्छिन्नच्छद्ममयी च्छला ॥१६३॥
छिन्नमुण्डधरा नित्या नित्यानन्दविधायिनी । नन्दा पूर्णा च रिक्ता च तिथयः पूर्णषोडशी ॥१६४॥
कुहूः संक्रांतिरूपा च पञ्चपर्वविलासिनी । पञ्चबाणधरा नित्या पञ्चमप्रीतिदा परा ॥१६५॥
पञ्चपत्राभिलाषा च पञ्चामृतविलासिनी । पञ्चाली पञ्चमी देवी पञ्चरक्तप्रसारिणी ॥१६६॥
पञ्चबाणधरा नित्या नित्यदात्री दयापरा । पललादिप्रिया नित्याऽपशुगम्या परेशिता ॥१६७॥
परा पररहस्या च परमप्रेमविह्वला । कुलीना केशिमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी ॥१६८॥
कुलाकुलस्वरूपा च कुलार्णवमयी कुला । रुक्मा च कालरूपा च काल- कम्पनकारिणी ॥१६९॥
विलासरूपिणी भद्रा कुलाकुलनमस्कृता । कुबेरवित्तधात्री च कुमारजननी परा ॥१७०॥
कुमारीरूपसंस्था च कुमारीपूजनाम्बिका । कुरंगनयना देवी दिनेशास्याऽपराजिता ॥१७१॥
कुण्डली कदली सेना कुमार्गरहिता वरा । अनंतरूपाऽनंतस्था आनन्दसिंधुवासिनी ॥१७२॥
इलास्वरूपिणी देवी इईभेदभयंकरी । इडा च पिंगला नाडी इकाराक्षररूपिणी ॥१७३॥
उमा चोत्पत्तिरूपा च उच्चभावविनाशिनी । ऋग्वेदा च निराराध्या यजुर्वेदप्रपूजिता ॥१७४॥
सामवेदेन संगीता अथर्ववेदभाषिणी । ऋकाररूपिणी ऋक्षा निरक्षरस्वरूपिणी ॥१७५॥
अहिदुर्गासमाचारा इकारार्णस्वरूपिणी । ओंकारा प्रणवस्था च ओंकारादिस्वरूपिणी ॥१७६॥
अनुलोमविलोमस्था थकारवर्णसम्भवा । पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका ॥१७७॥
प्रत्येका दशसंख्या च षोडशीच्छिन्नमस्तका । षडंगयुवतीपूज्या षडंगरूपवर्जिता ॥१७८॥
षड्वक्त्रसंश्रिता नित्या विश्वेशी खड्गदालया । मालामन्त्रमयी मन्त्रजपमाता मदालसा ॥१७९॥

सर्वविश्वेश्वरी - शक्तिः सर्वानन्दप्रदायिनी । इति श्रीच्छिन्नमस्ताया नामसाहस्त्रमुत्तमम् ॥१८०॥
पूजाक्रमेण कथितं साधकानां सुखावहम् । गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं न संशयः ॥१८१॥
अर्द्धरात्रे मुक्तकेशो भक्तियुक्तो भवेन्नरः । जपित्वा पूजयित्वा च पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥१८२॥
विद्यासिद्धिर्भवेत्तस्य षण्मासाभ्यासयोगतः । येन केन प्रकारेण देवीभक्तिपरो भवेत् ॥१८३॥
अखिलान्स्तंभयेल्लोकान्राज्ञोऽपि मोहयेत्सदा । आकर्षयेद्देवशक्तिं मारयेद्देवि विद्विषम् ॥१८४॥
शत्रवो दासतां यांति यांति पापानि संक्षयम् । मृत्युश्च क्षयतां याति पठनाद्धाषणात्प्रिये ॥१८५॥
प्रशस्तायाः प्रसादेन किं न सिद्ध्यति भूतले । इदं रहस्यं परमं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥१८६॥
धृत्वा बाहौ महासिद्धिः प्राप्यते नात्र संशयः । अनया सदृशी विद्या विद्यते न महेश्वरि ॥१८७॥
वारमेकं तु योऽधीते सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् । कुलवारे कुलाष्टम्यां कुहूसंक्रांतिपर्वसु ॥१८८॥
यश्चेमां पठते विद्यां तस्य सम्यक्फलं शृणु । अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥१८९॥
भक्त्या स्तुत्वा महादेवि सर्वपापात्प्रमुच्यते । सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥१९०॥
अष्टम्यां वा निशीथे च चतुष्पथगतो नरः । माषभक्तबलिं दत्त्वा पठेन्नामसहस्त्रकम् ॥१९१॥
सुदर्शवामवेद्यां तु मासत्रयविधानतः । दुर्जयः कामरूपश्च महाबलपराक्रमः ॥१९२॥
कुमारीपूजनं नाम मंत्रमात्रं पठेन्नरः । एतन्मंत्रस्य पठनात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥१९३॥
इति ते कथितं देवि सर्वसिद्धिपरं नरः । जप्त्वा स्तुत्वा महादेवीं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१९४॥
न प्रकाश्यमिदं देवि सर्वदेवनमस्कृतम् । इदं रहस्यं परमं गोप्तव्यं पशुसंकटे ॥१९५॥
इति सकलविभूतेर्हेतुभूतं प्रशस्तं पठति य इह मर्त्त्यश्छिन्नमस्तास्तवं च ।
धनद इव धनाढ्यो माननीयो नृपाणां स भवति च जनानामाश्रयः सिद्धिवेत्ता ॥१९६॥

॥ इति श्रीविश्वसारतंत्रे शिवपार्वती संवादे श्रीछिन्नमस्तासहस्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ इति छिन्नमस्ता तंत्रम् ॥

॥ धूमावती तंत्रम् ॥

धूमावती देवी जिन्हे ज्येष्ठा लक्ष्मी भी कहा है दशमहाविद्याओं में यह सातवीं महाविद्या हैं। इसका स्वरूप वृद्धा कृशकाय तथा विधवारूप में है, बालबिखरे हुये हैं रथ पर आरूढ है जिसके ऊपर काक विराजमान है। शूप इनका मुख्य अस्त्र है जिसमें समस्त विश्व को समेट कर महाप्रलय कर देती हैं। शूप व मूसल से शत्रुसंहार करती हैं भयानक रूप वक्रदंता है। **विशेष ध्यान देने की बात हैं कि** इस विद्या का **स्थायी आवाहन नहीं होता** अर्थात् इसे अपने घर में चिरकाल विराजमान होने की भावना नहीं रखनी चाहिये यह दुःख, क्लेश व दरिद्रता की अधिष्ठात्री है। अर्थात् पूजा व जप करते समय ऐसी भावना करनी चाहिये कि देवी प्रसन्न होकर मेरे समस्त विघ्न, रोग, दोष, क्लेश, प्रेतादि बाधाओं को अपने शूप में समेट कर हमारे घर से विदा हो रही है और हमें धन, लक्ष्मी, सुख, शांति का आशीर्वाद दे रही है। शत्रु निग्रह में यह भावना करनी चाहिये कि शत्रु के धन, वैभव, यश पराक्रम को अपने शूप में समेट रही है मूसल से उसे प्रताडित कर रही है। शत्रु के घर में दुःख दरिद्रता का पूर्ण निवास हो गया है। शत्रु के घर में काकपक्षी बहुसंख्या में विराजमान हैं उसका घर निर्जन होता जा रहा है। शत्रु संहार प्रयोगों में **बगलामुखी** व **काली** के प्रयोगों में ''**समयाविद्या**'' के रूप में इसका जप पूजन करना चाहिये ऐसी मेरी अभिव्यक्ति है। अगर दुर्भाग्य भी काफी समय से पीछा कर रहा हो तो दुःख दरिद्रता की इस देवी को प्रसन्न कर घर से विदा होने की प्रार्थना करनी चाहियें तो यह धन अवश्य देती है ऐसा मेरा अनुभव है। इसकी मुख्य उपासना शून्यगार में करनी चाहियें।

सप्ताक्षर मंत्रः– धूं धूमावती स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेत् कालाभ्रनीलां विकलितवदनां काकनासां विकर्णाम् ।
संमार्जन्युक शूर्पैयुत मुसल करां वक्रदन्तां विषास्याम् ॥
ज्येष्ठां निर्वाणवेषां प्रकुटित नयनां मुक्तकेशीमुदाराम् ।
शुष्कोत्तुङ्गाति तिर्यक् स्तनभर युगलां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम् ॥

विनियोगः– इस मंत्र के **नारसिंह ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, धूमावती देवता, धूं बीज, स्वाहा शक्तयः शत्रु निग्रहे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास– **धां, धीं, धूं, धैं, धौं, धः** से षडङ्गन्यास करें।

अष्टाक्षर मंत्रः– (१) **धूं धूं धूमावती स्वाहा।**

इस मंत्र के **पिप्पलाद ऋषि, निवृचछंद देवता धूमावती,** हैं। **धूं बीज, स्वाहा शक्ति** हैं।

(२) धूं धूं धूमावती ठः ठः। शाक्त प्रमोद में इसके षडङ्गन्यास **ॐ धां, ॐ धीं, ॐ धूं, ॐ धें, ॐ धौं, ॐ धः** से करने को कहा हैं।

॥ध्यानम्॥

विवर्णां चञ्चलां दीर्घां च मलिनाम्बरां। विमुक्तकुन्तलां दीर्घां विधवां विरल द्विजाम् ॥
काकध्वज - रथारूढां विलम्बित पयोधरां। शूर्पहस्तां तु रुक्षाक्षीं धूतहस्तां तरान्विताम् ॥
प्रवृद्ध - रोमणी तु भृशं जटिलं कुटिलेक्षणां। क्षुत् पिपासार्दितां नित्यं सदा कलह- तत्पराम् ॥

दशाक्षर मंत्रः- धूं धूं धूं धूमावती स्वाहा।

इस मंत्र के **ऋषि स्कन्द। पंक्ति छन्द। देवता धूमिनी। धूं बीज एवं शक्ति स्वाहा** हैं।

॥ध्यानम्॥

श्यामाङ्गीं रक्तनयनां श्याम - वस्त्रोत्तरीयकां। वामहस्ते शोधनं च दक्षहस्ते च शूर्पकम् ॥
धृत्वा विकीर्ण केशांश्च धूलिधूसर विग्रहां। लंबोष्ठीं शुभ्रदशनां लम्बमान पयोधराम् ॥
संलग्न भ्रूयुगगतां कटुदंष्ट्रोष्ठ - वल्लभां। कृसरस्तु कुलुत्थोत्थं भग्नभाण्डतले स्थितम् ॥
तिलपिष्टसमायुक्तं मुहुर्मुहुश्च भक्षितं। महिषीशृङ्ग ताटङ्कीं लम्बकर्णाति भीषणाम् ॥

चतुर्दशाक्षर मंत्रः- धूं धूं धुर धुर धूमावती क्रों फट् स्वाहा। इस मंत्र के **ऋषि क्षपणक, छन्द गायत्री, देवता धूमावती, बीज धूं, शक्ति स्वाहा तथा उच्चाटन हेतु विनियोग हैं।** अतः इस मंत्र को **शत्रु के उच्चाटन हेतु** प्रयोग करे।

काकारूढाऽति कृष्णाभा भिन्नदन्ता विरागिणी
मुक्तकेशां सुधूम्राक्षी क्षुत् - तृषार्ता रयातुरा।
चञ्चला चातिकामार्त्ता क्लिष्टा पुष्टा पिशङ्गिका
मलिना श्रमणी रक्ता व्यक्त - गंधा विरोधिनी ॥
धूत शूर्पाग्रहस्ता च ध्येया धूमावती परा॥

शक्ति सङ्गम तंत्र में पाठान्तर है- **रयातुरा - भयातुरा विशङ्किका। गंधा-गर्भा। धूत-धृत। शूर्पाग्र-सर्पाग्र।**

षडङ्गन्यासः- **धां, धीं, धूं, धैं, धौं, धः** से षडङ्गन्यास करें।

पंचदशाक्षर मंत्रः- (१) ॐ धूं धूमावति देवदत्त धावति स्वाहा।

(२) धूं धूं धूं धुरु, धुरु धूमावति क्रों फट् स्वाहा। देवदत्त का अर्थ अमुक व्यक्ति अमुकशत्रुनाम। उपरोक्त मंत्र के ऋषि ध्यान १४ अक्षर वाले मंत्र के समान हैं।

धूमावती गायत्री- ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिणे धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

॥ अष्टाक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्रो यथा (मंत्रमहोदधौ) - **धूं धूं धूमावति स्वाहा।** इत्यष्टाक्षरो मंत्रः। (मेरुतंत्र के अनुसार "**धूमावती**" के स्थान पर "**धूमावती**" होना चाहिये।)

विनियोगः - **अस्य धूमावतीमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः। निवृच्छंदः। ज्येष्ठा देवता। धूं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। धूमावती कीलकम्। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि ॥१॥ निवृच्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि ॥३॥ धूं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ धूमावती कीलकाय नमः नाभौ ॥६॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥७॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः- **ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ तिं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥** इति करन्यासः।

हृदयादिषडंगन्यास :- **ॐ धूं धूं हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ धूं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ मां शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ वं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥६॥** इति हृदयादिषडंगन्यासः। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

अत्युच्चा मलिनांबराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना, रूक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्य्योदरी चंचला ।
प्रस्वेदाम्बुचिताक्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरूक्षाप्रभा, ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मंत्रिणा ॥१॥

तंत्रांतरेऽपि ध्यानं यथा-

विवर्णा चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनांबरा । विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।
काकध्वजरथारूढा विलंबितपयोधरा । शूर्प्पहस्तातिरक्ताक्षी धृतहस्ता वरान्विता ।
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा । क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ॥२॥

॥ आवरण पूजनम् ॥

भद्रपीठ पर मण्डूकादि पीठदेवता का पूजन करे पश्चात् पूर्वादि क्रम से **पीठ की नौ शक्तियों** का पूजन करें।

यथा- ॐ कामदायै नमः। ॐ मानदायै नमः। ॐ नक्तायै नमः। ॐ मधुरायै नमः। ॐ मधुराननायै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ भोगदायै नमः। ॐ नंदायै नमः। मध्ये ॐ प्राणदायै नमः।

॥ धूमावती यन्त्रम् ॥

स्वर्ण यंत्र को दुग्धधारा से शुद्धकर ताम्रपात्र में रखकर पीठ पर स्थापित करे। "**ॐ धूमावती योगपीठाय नमः**" से पुष्पादि से आसन देवे। मूर्ति की पूजा करने के पश्चात् आवरण पूजा की आज्ञा हेतु पुष्पांजलि प्रदान करे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे ॥

त्रिकोण मध्य में देवी का ध्यान करें।

प्रथमावरणम्- (षट्कोणे)- आग्नेयादि चतुर्दिक्षु- **ॐ धूं धूं**
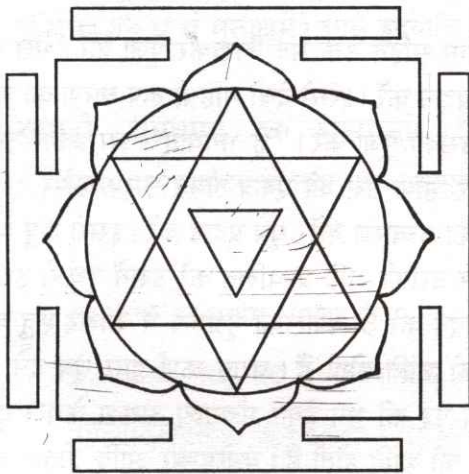
हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इति सर्वत्र)। **ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ वं नमः कवचाय हुं। ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट्** (इति देव्यग्रे)। **ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।** (इति दिक्षु) पश्चात् पुष्पांजलि देवे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

विशेषार्ध्य से जल छोड़कर कहे "**पूजितास्तर्पिताः संतु**"। इस तरह सभी आवरण पूजा हेतु करें।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले)- **ॐ क्षुधायै नमः। ॐ तृष्णायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ निद्रायै नमः। ॐ निर्ऋत्यै नमः। ॐ दुर्गत्यै नमः। ॐ रुषायै नमः। ॐ अक्षमायै नमः।** पुनः पुष्पांजलि देवे।

तृतीयावरणम् - (भूपूरे)- **ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनंताय नमः।**

चतुर्थावरणम् - (भूपूरे)- दिक्पालों के समीप उनके आयुधों की पूजा करे। **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्ये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

पश्चात् धूपदीप नैवेद्यादि अर्पण करें। पश्चात् जप करे। बलि प्रदान करे। एक लक्ष जप कर पुरश्चरण करे, निशाभोजन करे। दशांश होम करे। तर्पण मार्जन कर ब्राह्मण भोजन करें। पुरश्चरण के लिये **कृष्णपक्ष की चतुर्दशी** से उपवास रखे। किसी सूने घर, श्मशान या वन प्रदेश में मौन रहते हुये एक लाख जप करे। पुरश्चरण काल में उष्णीय और आर्द्रवस्त्र धारण करना आवश्यक हैं। फिर शत्रु के नाम पर मूलमंत्र लिखकर उसके ऊपर शिवलिङ्ग का स्थापन कर पूजन पूर्वक जप करें। अन्यत्र लिखा है कि शिवलिङ्ग का निर्माण कर "**अमुकं मारय**" इस प्रकार शत्रुनाम का निर्देश कर जप करना चाहिये। इस प्रकार पाँच सौ बार जप करने से शत्रु ज्वर ग्रस्त होगा। पञ्चगव्य या दूध द्वारा होम से उसका ज्वर छूट सकेगा। पश्चात् देवी का पंचोपचार पूजन करें। जप करें। हरिद्रापत्र पर शत्रु का नाम लिखकर किसी वन के बीच में डालकर उसके ऊपर उक्त मंत्र का १० हजार जप करे तो शत्रु का उच्चाटन होगा। श्मशाग्नि में कौए को दग्ध कर उसकी भस्म को लेकर उसे १०८ मंत्र से अभिमंत्रित करें एवं उस भस्म को शत्रु का नाम लेते हुये आठों दिशाओं में फेंके। इससे भी शत्रु का उच्चाटन होता हैं।

कृष्णपक्ष में श्मशान की भस्म से शिवलिङ्ग बनायें उस पर शत्रुनाम सहित उक्त मंत्र लिखकर पूजा करें। भैंस के दूध द्वारा धूप देकर जो जो पदार्थ शत्रु के अमङ्गल सूचक है वे ही द्रव्य प्रदान करें। इससे देवी महिषी रूप धारण का शत्रु का विनाश करती हैं। श्मश्मान भस्म से शिवलिङ्ग बनाये। पुष्पादि से उसकी पूजा करे। "हे भगवान्" इस प्रकार उन्हे संबोधन कर अपने अन्तःमन में कर्त्तव्य की चिन्ता करते हुये नीम और काक पक्ष को एकत्र लेकर उसके ऊपर १०८ बार मंत्र का जप करे। फिर "**अमुकं द्वेषय द्वेषय**" कहकर मूल मंत्र का उच्चारण करें, धूप प्रदान करें। इससे शत्रु वर्ग में विद्वेषण होगा। इस विद्वेषण की शांति करनी हो तो चिता काष्ठ लाकर उसकी अग्नि प्रज्वलित करें उसमें दूध से हवन करें। रजस्वला के रक्ताक्तवस्त्र द्वारा निर्मित धूप को जलाकर यदि निवेदन करे तो कालिका गृध्ररूप में आकर शत्रु का संहार करती हैं। निर्माल्य पत्र पुष्पादि द्वारा धूप देने से इस प्रयोग की शांति होती हैं। वराह कर्ण द्वारा धूप देने से देवीरात्रिकाल में शूकर रूप में आकर शत्रु का नाश करती हैं। अश्वत्थ पत्र की धूप देकर पंचगव्य अथवा केवल दूध अथवा घृत, मधु एवं शर्करा से होम करने से सभी प्रकार के अभिचार की शांति होती हैं। यज्ञोडुम्बर आदि श्रीवृक्ष की कील बनाकर उसके ऊपर शत्रुनाम सहित धूमावती का मंत्र लिखे। फिर इस कील के ऊपर मंत्र का जप कर शत्रु के

दोनों पैरों को भूमि में कील द्वारा जटिल करने की भावना करें। इससे शत्रु का उच्चाटन होता है। शत्रु के दोनों पैरों की धूल और घृतसहित पक्षियों की बलि देकर चिता भस्म के ऊपर मूल मंत्र का जप करें। फिर उसी भस्म को शत्रु के घर के भीतर गुप्तरूप से पहुँचाये। इससे शत्रु का उच्चाटन होगा।

॥ धूमावति गायत्री मंत्राः ॥

(१) धूं धूमावति विद्महे विवर्णा देवी धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्। (२) ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

॥ अंग देवता अघोर रुद्र ॥

(धूमावत्या सपर्यार्णवे) - १. धूमावत्यङ्गमन्त्राश्च वीरेशोबटुकः शिवे। प्रत्यंगिरा च शरभस्तथा पाशुपतो मनुः॥ संहारास्त्रं च ककुदी तथा कर्कटिका शिवे। मारिणी त्वरिता विद्या कुल्लुका पञ्चकं शिवे ॥

२. अघोर मंत्र - ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोरतर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्।

॥ धूम्रवाराही ॥ (कालमृत्यु तंत्रे)

वाराही विद्या में धूमावती का प्रयोग "**धूम्रवाराही**" नाम से है। यंत्रार्चन आदि प्रयोग पुस्तक के द्वितीय पुस्तक उत्तरार्द्ध भाग में वाराही प्रयोगान्तर दिया गया है।

मंत्र- **ॐ धूं धूं मृत्युधूमे धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्रवाराहि हुँ फट् स्वाहा।**

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री धूम्रवाराही मंत्रस्य कालमृत्यु ऋषिः। बृहतीश्छन्दः। धूम्रवाराही देवता। धूं बीजं। हूं शक्तिः। स्वाहा कीलकं। शत्रुमारणे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **सप्तभिः पुनः षड्भिर्द्वाभ्यां वेदैद्विका (द्वाभ्यांत्रिका) ब्धिभिः। न्यासं चैवानुलोमेन विलोमेन पुनर्न्यसेत् ॥**

ॐ धूं धूं मृत्युधूमे। धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्र। वाराहि हूं फट् स्वाहा। वाराहि हुं फट् स्वाहा। धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्र। ॐ धूं धूं मृत्युधूमे। इनसे हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम्-

वाराही धूम्रवर्णा च भक्षयन्ती रिपून् सदा। पशुरूपान् मुनिसुरैर्वन्दितां धूम्ररूपिणीम् ॥

त्रिमधु एवं गुडौदन से तथा मधूक कुसुमों से होम करें।

॥ अस्त्र वाराही ॥

इस विद्या का प्रयोग भी शत्रू के मारण में होता है।

मंत्रः- **ॐ फट् फट् मृत्युरूपे फट् फट् कालरूपे फट् फट् अस्त्रवाराही हुं फट् स्वाहा।**

ऋष्यादिन्यासः- ऋष्यादिन्यास पूर्व मंत्रवत् है।

॥ ध्यानम् ॥

नमस्ते अस्त्रवाराहि वैरिप्राणापहारिणी । गोकण्ठमिव शार्दूलो गजकण्ठं यथा हरिः ॥
शत्रूरूपपशून् हत्वा आशु मांसं च भक्षय । वाराहि त्वां सदा वन्दे वन्द्ये चास्त्रस्वरूपिणी ॥

॥ श्री धूमावती मातृका ॥

धूमावती धूमनेत्रा घर्मटी मर्कटी तथा। घोररूपा च लम्बोष्ठी श्यामा श्याममुखी शिवा ॥१॥
काकध्वजा कोटराक्षी धूमा धूमान्धकारिणी । मुक्तकेशी महाघोरा तथा लम्बपयोधरा ॥२॥
स्वराणां शक्तयः प्रोक्ताः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः । कोटरा कोटराक्षी च ऊर्ध्वकेशी दिगम्बरी ॥३॥
तमिस्रा तामसी चोग्रा विवर्णा मलिनाम्बरा। लम्बस्तनी च विरलद्विजा दीर्घा कृशोदरी ॥४॥
विधवा शूर्पहस्ता च रूक्षा रूक्ष शिरोधरा । चलहस्ता चञ्चलाक्षी जटिला कुटिलेक्षणा ॥५॥
क्षुधातुरा पिपासार्त्ता तीक्ष्णा रौद्रा भयानका । उत्कारी क्रोधिनी मृत्युः क्रिया रिपुविमर्दिनी ॥६॥
सत्वरा काकजङ्घा च श्मशानालयवासिनी । महाकाली च गदिताः सिद्धा व्यञ्जनशक्तयः ॥७॥

॥ श्री धूमावती कवचम् ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

धूमावत्यर्चनं शंभो श्रुतं विस्तरतो मया । कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे ॥१॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे । कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम् ॥२॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः । योगिनो भवंति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः ॥३॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीधूमावती देवता । धूं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । धूमावती कीलकम् । शत्रुहनने पाठे विनियोगः ।

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु । धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु ॥४॥
दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा । शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ॥५॥
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् । सर्वविद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम् ॥६॥
चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु । धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ॥७॥
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा । क्षुत्पिपासार्द्दिता देवी भयदा कलहप्रिया ॥८॥
सर्वांगं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी । इति ते कथितं पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम् ॥९॥
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे । पठनीयं महादेवि त्रिसंध्यं ध्यानतत्परः ॥१०॥
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत् ॥११॥

॥ इति भैरवी भैरव संवादे धूमावतीतत्त्वे धूमावती कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री धूमावती हृदय स्तोत्रम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीधूमावतीहृदय स्तोत्र मन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः। अनुष्टुप्छंदः। श्रीधूमावती देवता। धूं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। सर्वशत्रुसंहरणे पाठे विनियोगः।

हृदयादिषडङ्गन्यास :- ॐ धां हृदयाय नमः। ॐ धीं शिरसे स्वाहा। ॐ धूं शिखायै वषट्। ॐ धैं कवचाय हुम्। ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ धः अस्त्राय फट्। पश्चात् करन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तवालां वराढ्यां,
काकांकस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षामदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवांछाविचित्रां,
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ॥१॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ। कल्पांते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ॥२॥
गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्द्धिनी। गीतावेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम् ॥३॥
खट्वांगधारिणी खर्वा खण्डिनीखलरक्षसाम्। धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम् ॥४॥
घूर्णा घूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना। घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम् ॥५॥
चर्वंतीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम्। चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥६॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्। छेदिनीं दुष्टसंघानां भजे धूमावतीमहम् ॥७॥
जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी। जल्पंती बहु गर्जंती भजे तां धूम्ररूपिणीम् ॥८॥
झंकारकारिणीं झंझां झंझमाझमवादिनीम्। झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥९॥
टीपटंकार संयुक्तां धनुष्टंकारकारिणीम्। घोरां घनघटाटोपां वंदे धूमावतीमहम् ॥१०॥
ठंठंठंठं मनुप्रीतिं ठःठः मंत्रस्वरूपिणीम्। ठमकाह्वगति प्रीतांभजे धूमावतीमहम् ॥११॥
डमरू डिंडिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम्। डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम् ॥१२॥
ढक्कानादेन संतुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम्। ढक्कावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम् ॥१३॥
तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम्। तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम् ॥१४॥
थां थीं थूं थें मंत्ररूपां थैं थौं थं थः स्वरूपिणीम्। थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम् ॥१५॥
दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम्। देवदैत्यकृतध्वंसां वंदे धूमावतीमहम् ॥१६॥
ध्वांताकारांधकध्वंसां मुक्तधम्मिल्लधारिणीम्। धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम् ॥१७॥
नर्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्म्मविवर्द्धिनीम्। नारसिंहीं नराराध्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥१८॥
पार्वतीपतिसंपूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम्। पद्मारूपां पद्मपूजां नौमि धूमावतीमहम् ॥१९॥
फूत्कारसहितश्वासां फट्मंत्रफलदायिनीम्। फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२०॥

बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम् । ब्रह्मादिवंदितां विद्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥२१॥
भव्यरूपां भवाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम् । भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥२२॥
मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम् । मत्स्यमांसमहास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥२३॥
योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम् । यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ॥२४॥
रामाराध्यपदद्वंद्वां रावणध्वंसकारिणीम् । रमेशरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ॥२५॥
लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवंद्यपदांबुजाम् । लंबितां बीजकोशाढ्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥२६॥
बकपूज्यपदांभोजां वकध्यानपरायणाम् । बालां बकारिसंध्येयां वंदे धूमावतीमहम् ॥२७॥
शांकरीं शंकरप्राणां संकटध्वंसकारिणीम् । शत्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम् ॥२८॥
षडाननारिसंहंत्रीं षोडशीरूपधारिणीम् । षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२९॥
सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम् । सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥३०॥
हेरंबजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम् । हारिणीं शत्रुसंघानां सेवे धूमावतीमहम् ॥३१॥
क्षीरोदतीरसंवासां क्षीरपानप्रहर्षिताम् । क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ॥३२॥
चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः । कृतं तु हृदयं स्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम् ॥३३॥
य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम् । स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः ॥३४॥
पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः । तत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३५॥

॥ इति धूमावतीहृदयं स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री धूमावती स्तोत्रम् ॥

प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमालां जपंती, मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।
संध्यायां वृद्धरूपागलितकुचयुगा मुण्डमालां वहंती सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिकापातु युष्मान् ॥१॥
वद्धा खट्वांगखेटौ कपिलवरजटामण्डलं पद्मयोनेः, कृत्वा दैत्योत्तमांगैः स्त्रजमुरसि शिरःशेखरं ताक्ष्र्यपक्षैः ।
पूर्णं रक्तैः सुराणां यममहिष महाशृङ्गमादाय पाणौ, पायाद्वो वंद्यमानः प्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ॥२॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्द संघातमुग्रं, कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशांगी ।
नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमान् स्फारयंती मुखाब्जं, पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमाजल्पमाना भ्रमंती ॥३॥
टंटंटंटंटटंटाप्रकर टमटमा नादघंटां वहंती, स्फेंस्फेंस्फेंस्फारकारा टकटकितहसा नादसंघट्टभीमा ।
लोलन्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचं, चर्वंती चण्डमुण्डं मटमटमटितैश्चर्वयंती पुनातु ॥४॥
वामे कर्णे मृगांकं प्रलय परिगतं दक्षिणे सूर्य्यबिंबं, कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकट जटाजूटके मुण्डमालाम् ।
स्कंधे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालभारं संहारे, धारयंती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ॥५॥
तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रांतकर्णा, लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिन कामात्मनः पादशोभाम् ।

दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं या यवाकर्णपूरा, वर्षिण्यातिप्रवृद्धा ध्वजवितत भुजा सासि देवि त्वमेव ॥६॥
संग्रामे हेतिकृत्तैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभिर्मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजवितत भुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा ।
दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरजघनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची, शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्री निशायाम् ॥७॥
दंष्ट्रारौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्द्धात्, संसारस्यांतकाले नररुधिरवशासम्प्लवे धूमधूम्रे ।
कालीकापालिकी सा शवशयनरता योगिनीयोगमुद्रारक्ता ऋद्धिःसभास्था मरणभयहरा त्वं शिवाचण्डघण्टा ॥८॥
धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम् । यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विंदति वांछिताम् ॥९॥
महापदि महाघोरे महारोगे महारणे । शत्रूच्चाटे मारणादौ जंतूनां मोहने तथा ॥१०॥
पठेत्स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत् । देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥११॥
सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः । दूराद्दूरतरं यांति किं पुनर्मानुषादयः ॥१२॥
स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले । सर्वशांतिर्भवेद्देवि ह्यंते निर्वाणतां व्रजेत् ॥१३॥

॥ इत्यूर्द्ध्वाम्नाये धूमावतीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री धूमावत्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा । धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥१॥
अघोराचारसंतुष्टा अघोराचारमण्डिता । अघोरमंत्रसम्प्रीता अघोरमंत्रपूजिता ॥२॥
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी । वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ॥३॥
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा । कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ॥४॥
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः । क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरा ॥५॥
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घांगी दीर्घमस्तका । विमुक्तकुंतला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥६॥
क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी । विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥७॥
चण्डीचण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना । चण्डवेगा चण्डगतिश्चंडमुण्डविनाशिनी ॥८॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्रांगी चित्ररूपिणी । कृष्णा कपर्द्दिनी कुल्ला कृष्णारूपा क्रियावती ॥९॥
कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला । चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥१०॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी । दुराराध्या दुराचारा दुर्ज्जनप्रीतिदायिनी ॥११॥
निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता । कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ॥१२॥
महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता । महादेवप्रिया मेधा महासंकटनाशिनी ॥१३॥
भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी । भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ॥१४॥
भूरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी । त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ॥१५॥
त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी । इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम् ॥१६॥

मया ते कथितं देवि शत्रुसंघविनाशनम् । कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ॥१७॥
इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसंकटैः । गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१८॥
चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।

॥ इति धूमावत्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री धूमावती सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

धूमावत्या धर्म्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर । सहस्त्रनामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणि। सहस्त्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रुविनाशनम् ॥२॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीधूमावती सहस्त्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। धूमावती देवता। शत्रुविनिग्रहे पाठे विनियोगः।

धूमा धूमवती धूमा धूमपानपरायणा । धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वरनिवासिनी ॥३॥
अनंताऽनंतरूपा च अकाराकाररूपिणी । आद्या आनन्ददा नंदा इकारा इन्द्ररूपिणी ॥४॥
धनधान्यार्थवाणीदा यशोधर्म्मप्रियेष्टदा । भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वत - वासिनी ॥५॥
रामरावणसुग्रीव मोहदा हनुमत्प्रिया । वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छंदः स्वरूपिणी ॥६॥
चातुर्य्यचारुरुचिरा रंजनप्रेमतोषदा । कमलास्या सुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना ॥७॥
चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा । कला कलाधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा ॥८॥
हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना । दंभमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा ॥९॥
नरदेवकरी रामा रामानन्द मनोहरा । योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता ॥१०॥
दानमानज्ञानमान पानगानसुखप्रदा । गजगोऽश्वपदा गुंजा भूतिदा भूतनाशिनी ॥११॥
भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा । भगभंगभया माला मालतीमालना ह्लदा ॥१२॥
जालवालहालकाल - कपालप्रियवादिनी । करंजशीलगुंजाढ्या चूतांकुरनिवासिनी ॥१३॥
पनसस्था पानसक्ता पनशेशकुटुम्बिनी । पावनी पावनाधारा पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥१४॥
पूता पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी । परेशी परदा पारा परमात्मा प्रमोहिनी ॥१५॥
जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी । जननी जयिनी जायाजिता जिनजयप्रदा ॥१६॥
कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी । काव्यव्याकरणज्ञा काप्रज्ञा प्रज्ञानदायिनी ॥१७॥
विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता । परावरेज्या वरदा पारदा शारदा दरा ॥१८॥

दारिणी देवदूती च दमना दमनामदा । परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा ॥१९॥
यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञान कार्य्यकरी शुभा । शोभिनी शुभ्रमथिनी निशुंभासुरमर्दिनी ॥२०॥
शांभवी शंभुपत्नी च शंभुजाया शुभानना । शांकरी शंकराराध्या संध्यासंध्यासुधर्मिणी ॥२१॥
शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी । शैवी शिवालयां शैला शैलराजप्रिया सदा ॥२२॥
शर्वरी शर्वरी शंभुः सुधाढ्या सौधवासिनी । सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवारवा ॥२३॥
गौरांगी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः । गौर्गौगर्व्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी ॥२४॥
गणेशगणदा गुण्या गुणा गौरववांछिता । गणमाता गणाराध्या गणकोटिविनाशिनी ॥२५॥
दुर्गा दुर्जनहंत्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी । स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती ॥२६॥
दुर्निरीक्ष्या दुरा दुःस्था दौःस्थ्यभंजनकारिणी । श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी ॥२७॥
कर्मनर्मकरी नर्मा धर्माधर्मविनाशिनी । गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया ॥२८॥
गङ्गा भागीरथी भंगा भगा भाग्यविवर्द्धिनी । भवानी भवहंत्री च भैरवी भैरवासना ॥२९॥
भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्दप्रदायिनी । शरण्या शरणा शम्या शशिनी शंखनाशिनी ॥३०॥
गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी । जनमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी ॥३१॥
जिता जाया च विजयाविजया जयदायिनी । कामा काली करालास्या खर्वा खञ्जा खरागदा ॥३२॥
गर्वा गरुत्मती घर्मा घर्घरा घोरनादिनी । चराचरी चराराध्या च्छिन्ना छिन्नमनोरथा ॥३३॥
छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी । झकारा झीष्कृतिष्टीका टंका टंकारनादिनी ॥३४॥
ठीका ठक्कुरठक्कांगी ठठठांकारढुण्ढुरा । ढुण्ढीता राजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी ॥३५॥
थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी । धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी ॥३६॥
पद्मा पद्मावती पीता स्फीता फूत्कारकारिणी । फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥३७॥
भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली मन्दगामिनी । मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता ॥३८॥
याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललिता लता । लंकेशी वाक्प्रदा वाच्या सदाश्रमनिवासिनी ॥३९॥
श्रांता शकाररूपा च षकारा खरवाहना । सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी ॥४०॥
हराराध्या बालवा च लवंगप्रेमतोषिता । क्षपा क्षयप्रदा क्षीरा ह्यकारादिस्वरूपिणी ॥४१॥
कालिक कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया । शिवा शंदायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी ॥४२॥
भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमंगला । शत्रुविद्राविणी शैवी शुंभासुरविनाशिनी ॥४३॥
धकारमंत्ररूपा च धूंबीजपरितोषिता । धनाध्यक्षसुता धीरा धरारूपा धरावती ॥४४॥
चर्विणी चन्द्रपूज्या च च्छन्दोरूपा छटावती । छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा ॥४५॥
वलिनी वर्द्धिनी वंद्या वेदमाता बुधस्तुता । धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा ॥४६॥
गर्भिणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता । धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादपरायणा ॥४७॥

घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी । कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्या कलिप्रिया ॥४८॥
कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी । वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी ॥४९॥
घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी । धूंबीजा धूंजपा नन्दा धूंबीजजपतोषिता ॥५०॥
धूंधूंबीजजपासक्ता धूंधूंबीजपरायणा । धूंकारहर्षिणी धूमा धनदा धनगर्विता ॥५१॥
पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता । अपारा पूर्णपूर्णा तु पूर्णिमापरिवन्दिता ॥५२॥
फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी । फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलान्विता ॥५३॥
वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा । विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी ॥५४॥
नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा । तारिणीताररूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा ॥५५॥
स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी । स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता ॥५६॥
शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी । शारिणी शांखिनी शुद्धा शंखासुरविनाशिनी ॥५७॥
शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीशप्रपूजिता । शर्वरीजागृता योग्या योगिनी योगिवंदिता ॥५८॥
योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोगभाविता । योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी ॥५९॥
योगभावा योगयुक्ता यमिनीपतिवन्दिता । अयोग्या योधिनी योद्धी युद्धकर्मविशारदा ॥६०॥
युद्धमार्गरतानंता युद्धस्थाननिवासिनी । सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी ॥६१॥
सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धांतकारिणी । सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवंद्या सुसिद्धिदा ॥६२॥
साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी । साधनीया साध्यसाध्या साध्यसंघसुशोभिनी ॥६३॥
साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसंततिदायिनी । साधुपूज्या साधुवंद्या साधुसंदर्शनोद्यता ॥६४॥
साधुदृष्टा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा । सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया ॥६५॥
सत्त्ववृद्धिकरी शांता सत्त्वसंहर्षमानसा । सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धांतकारिणी ॥६६॥
सत्त्ववृद्धिः सत्त्वसिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा । चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना ॥६७॥
छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्ता क्षमाप्रिया । हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्त्ता हठोद्यमा ॥६८॥
हठकार्य्या हठधर्म्मा हठकर्मपरायणा । हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिया ॥६९॥
हठसंभेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया । हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा ॥७०॥
हरिणाक्षी हरिणपा हरिणीगणहर्षदा । हरिणीगणसंहंत्री हरिणीपरिपोषिका ॥७१॥
हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमानपुरःसरा । दीना दीनाकृतिर्दूना द्राविणी द्रविणप्रदा ॥७२॥
द्रविणाचलसंवासा द्रविता द्रव्यसंयुता । दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः ॥७३॥
दृढा दुष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभंजिनी । दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी ॥७४॥
देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसंघविदारिणी । दुष्टदानवहंत्री च दुष्टदैत्य निषूदिनी ॥७५॥
देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी । नटनायकसंसेव्या नर्त्तकी नर्त्तकप्रिया ॥७६॥

नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी । नवीना नूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी ॥७७॥
नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालंकारशोभिता । नकारवादिनी नम्या नवभूषणभूषिता ॥७८॥
नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः । नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानंदप्रदायिनी ॥७९॥
नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी । नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा ॥८०॥
नारीप्रीतिर्नराराध्या नरनामप्रकाशिनी । रति रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा ॥८१॥
रतिस्थानस्थिताऽऽराध्या रतिहर्षप्रदायिनी । रतिरूपा रतिध्याना रतिरीतिसुधारिणी ॥८२॥
रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी । रतिकांतस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी ॥८३॥
अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता । रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती ॥८४॥
रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा । मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा ॥८५॥
मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी । मद्यपानन्ददात्री च मद्यपप्रेमतोषिता ॥८६॥
मद्यपानरता मत्ता मद्यपानविहारिणी । मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी ॥८७॥
मदिरापानसंतुष्टा मदिरापानमोहिनी । मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा ॥८८॥
माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता सदा । मोदिनी मोदसंदात्री मुदिता मोदमानसा ॥८९॥
मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी । मोदकादान संतुष्टा मोदकग्रहणक्षमा ॥९०॥
मोदकालब्धिसंक्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी । मांसादा मांससंभक्षा मांसभक्षणहर्षिणी ॥९१॥
मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता । मत्स्यमांसकृतास्वादा मकारपञ्चकाचिता ॥९२॥
मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी । मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा ॥९३॥
मुद्रिकालंकृता माद्री मन्दराचलवासिनी । मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी ॥९४॥
मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी । मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता ॥९५॥
महामारी महामारीशमिनी शवसंस्थिता । शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी ॥९६॥
श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशानभवनस्थिता । श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता ॥९७॥
श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी । शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता ॥९८॥
शमनाचारसंतुष्टा शमनागारवासिनी । शमनस्वामिनी शांतिः शांतसज्जन पूजिता ॥९९॥
शांतपूजापरा शांता शांतागारप्रभोजिनी । शांतपूज्या शांतवंद्या शांतग्रहसुधारिणी ॥१००॥
शांतरूपा शांतियुक्ता शांतचन्द्रप्रभाऽमला । अमला विमलाऽम्लाना मालतीकुंजवासिनी ॥१०१॥
मालतीपुष्पसंप्रीता मालतीपुष्पपूजिता । महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी ॥१०२॥
मध्यमध्वनिसंप्रीता मध्यमध्वनिकारिणी । मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेमपूरिता ॥१०३॥
मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता । महेन्द्रसुरसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता ॥१०४॥
महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी । महेन्द्रमानिता मान्या मानिनीगणमध्यगा ॥१०५॥

मानिनीमानसंप्रीता गानविध्वंसकारिणी । मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिदा ॥१०६॥
मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी । निर्मूला मूल संयुक्ता मूलिनी मूलमंत्रिणी ॥१०७॥
मूलमन्त्रकृतार्हाद्या मूलमंत्रार्घहर्षिणी । मूलमंत्रप्रतिष्ठात्री मूलमंत्रप्रहर्षिणी ॥१०८॥
मूलमंत्रप्रसन्नास्या मूलमंत्रप्रपूजिता । मूलमंत्रप्रणेत्री च मूलमंत्रकृतार्चना ॥१०९॥
मूलमंत्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा । विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी ॥११०॥
वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा । वटपूजापरिप्रीता वटदर्शनलालसा ॥१११॥
वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्द्धिनी । वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमंत्रिणी ॥११२॥
वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा । बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी ॥११३॥
बटुकार्चापरा पूज्या बटुकार्चाविवर्द्धिनी । बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी ॥११४॥
बटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया । पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥११५॥
पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा । पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी ॥११६॥
पर्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी । पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता ॥११७॥
पद्मजाढ्यपदा पद्ममालालंकृतमस्तका । पद्मार्चितपदद्वंद्वा पद्महस्ता पयोधिजा ॥११८॥
पयोधिपारगंत्री च पयोधिपरिकीर्त्तिता । पाथोधिपारगा पूता पल्वलांबुप्रतर्पिता ॥११९॥
पल्वलांतः पयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः । पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकांक्षिणी ॥१२०॥
पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा । मुण्डिनी मुण्डहंत्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता ॥१२१॥
मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता । महामोहा महाशौर्या महामाया महाहवा ॥१२२॥
मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी । मठिनी मठसंहंत्री मठसम्पत्तिहारिणी ॥१२३॥
महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रुविनाशिनी । पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णाहारविहारिणी ॥१२४॥
प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी । प्रलयार्णव संमग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी ॥१२५॥
महाप्रलयसंभूता महाप्रलयकारिणी । महाप्रलयसंप्रीता महाप्रलयसाधिनी ॥१२६॥
महाप्रलयसंपूज्या महाप्रलयमोदिनी । छेदिनी च्छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्नरुहार्थिनी ॥१२७॥
शत्रुसंछेदिनी छन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी । लक्षिणी लक्षसंपूज्या लक्षिता लक्षणान्विता ॥१२८॥
लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी । लक्षपूजापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी ॥१२९॥
लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी । लक्षलीलालया लभ्या लक्षागारनिवासिनी ॥१३०॥
लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता । लोकिनी लोकसंपूज्या लोकरक्षणकारिणी ॥१३१॥
लोकवन्दित पादाब्जा लोकमोहनकारिणी । ललिता लालितालीना लोकसंहारकारिणी ॥१३२॥
लोकलीलाकरी लोक्या लोकसंभवकारिणी । भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी ॥१३३॥
भूतवेताल संयुक्ता भूतसेनासमावृता । भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूतपूजिता ॥१३४॥
डाकिनी शाकिनी डेया डिण्डिमारावकारिणी । डमरुवाद्यसंतुष्टा डमरुवाद्यकारिणी ॥१३५॥

हूंकारकारिणी होत्री हविनी हवनार्थिनी । ह्रासिनी ह्रासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥१३६॥
अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी । टंकिनी टंकिता टंका टंकामात्रसुवर्णदा ॥१३७॥
टंकारिणी टकाराढ्या शत्रुत्रोटनकारिणी । त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसंदेहकारिणी ॥१३८॥
तर्षिणी तृट्परिक्लांता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता । अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी ॥१३९॥
कांक्षिणी कुट्टिनी क्रूरा कुट्टिनीवेश्मवासिनी । कुट्टिनीकोटिसंपूज्या कुट्टिनीकुलमार्गिणी ॥१४०॥
कुट्टिनीकुलसंरक्षा कुट्टिनीकुलरक्षिणी । कालपाशावृता कन्या कुमारीपूजनप्रिया ॥१४१॥
कौमुदी कौमुदीदृष्टा करुणादृष्टिसंयुता । कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी ॥१४२॥
काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता । काकांकरथसंस्थाना काकांकस्यन्दनस्थिता ॥१४३॥
काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी । काकमाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता ॥१४४॥
काकदर्शनसंशीला काकसंकीर्णमन्दिरा । काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्याऽधमावृता ॥१४५॥
धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी । धुंधुरा धुंधुराकारा धूम्रलोचन - घातिनी ॥१४६॥
धूंकारिणी च धूंमंत्रपूजिताधर्मनाशिनी । धूम्रवर्णा च धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी ॥१४७॥
धूंबीजजपसंतुष्टा धूंबीजजपमानसा । धूंबीजजपपूजार्हा धूंबीजजपकारिणी ॥१४८॥
धूंबीजकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा । धूलिप्रक्षेपिणी धूलिव्याप्तधम्मिल्लधारिणी ॥१४९॥
धूंबीजजपमालाढ्या धूंबीजनिन्दकांतका । धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता ॥१५०॥
धारास्तंभकरी धूर्ता धारावारिविलासिनी । धां धीं धूं धैं मंत्रवर्णा धौं धः स्वाहास्वरूपिणी ॥१५१॥
धरित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी । धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्याननिवासिनी ॥१५२॥
धामोद्यानपयोदात्री धामधूलिप्रधूलिता । महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी ॥१५३॥
धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी । धीवरीगणसंपूज्या धीवरीवरदायिनी ॥१५४॥
धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी । धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता ॥१५५॥
धीवरीधनधात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी । धात्रीशा धातृसंपूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया ॥१५६॥
धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी । धूम्रपान रतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ॥१५७॥
धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी । धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुंधुकारिजनच्छिदा ॥१५८॥
धुंधुकारीष्टसंदात्री धुंधुकारिसुमुक्तिदा । धुंधुकार्य्याराध्यरूपा धुंधुकार्रिमनःस्थिता ॥१५९॥
धुंधुकारिहिताकांक्षी धुंधुकारिहितैषिणी । धिंधिमाराविणी ध्यात्री ध्यानगम्या धनार्थिनी ॥१६०॥
धोरिणी धोरणप्रीता घोरिणी घोररूपिणी । धरित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी ॥१६१॥
धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः । धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्द्धनधान्यविवर्द्धिनी ॥१६२॥
धनाकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी । धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया ॥१६३॥
धनसंवृद्धिसंपन्ना धनदानपरायणा । धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी ॥१६४॥
धनरक्षा धनप्राणा धनानंदकरी सदा । शत्रुहंत्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी ॥१६५॥

शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी । शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी ॥१६६॥
शत्रुप्राणहरा हार्य्याशत्रुन्मूलनकारिणी । शत्रुकार्य्यविहंत्री च सांगशत्रुविनाशिनी ॥१६७॥
सांगशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदाहिनी । सांगसायुधसर्वारि - सर्वसम्पत्तिनाशिनी ॥१६८॥
सांगसायुधसर्वारिदेहगेह प्रदाहिनी । इतीदं धूमरूपिण्याः स्तोत्रं नामसहस्त्रकम् ॥१६९॥
यः पठेच्छून्यभवने संध्यांते यतमानसः । मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायणः ॥१७०॥
तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोऽपि वै । भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत् ॥१७१॥
स्तोत्रं सहस्त्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् । पठेद्वा शृणुयाद्वापि शत्रुघातकरो भवेत् ॥१७२॥

न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे ।
देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तपराय च ।
इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम् ॥१७३॥

॥ इति श्रीभैरवीतंत्रे भैरवीभैरव संवादे धूमावती सहस्त्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ इति श्री धूमावती तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री बगलामुखी तंत्रम् ॥

बगलामुखी देवी दशमहाविद्याओं में आठवीं महाविद्या के नाम से उल्लेखित है। **वेदिक शब्द वल्गा कहा है** जिसका अर्थ कृत्या संबंध है जो बाद में अपभ्रंश होकर **बगला** नाम से प्रचारित हो गया। बगलामुखी शत्रुसंहारक विशेष है अतः इसके दक्षिणाम्नायी पश्चिमाम्नायी मंत्र अधिक मिलते है। नैऋत्य व पश्चिमाम्नायी मंत्र प्रबल संहारक व शत्रु को पीड़ा कारक होते हैं। इसलिये इसका प्रयोग करते समय व्यक्ति घबराते हैं। वास्तव में इसके प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिये। ऐसी बात नहीं है कि यह विद्या शत्रुसंहारक ही है, ध्यान-योग में इससे विशेष सहायता मिलती हैं ऐसा मेरा अनुभव है। यह विद्या प्राणवायु व मन की चंचलता का स्तंभन कर उर्ध्वगति देती है इस विद्या के मंत्र के साथ ललितादि विद्याओं के कूट मंत्र मिलाकर भी साधना की जाती है। **बगला मंत्रों को मैंने ललिता, लक्ष्मी व काली मंत्रों से पुटित करके व पदभेद करके प्रयोग कराये हैं, सफल रहे हैं।** इस विद्या के उर्ध्वआम्नाय व उभय आम्नाय मंत्र भी है जिनका ध्यानयोग से ही विशेष संबंध रहता है। त्रिपुर सुंदरी के कूट मंत्रों के मिलाने से यह विद्या बगलासुंदरी हो जाती है जो शत्रुनाश भी करती है, वैभव भी देती है।

त्रयीसिद्ध विद्याओं में आपका पहला स्थान है। आवश्यकता में शुचि अशुचि अवस्था में भी इसके प्रयोग का सहारा लेना पड़े तो शुद्धमन से स्मरण करने पर भगवती आपकी सहायता करेगी ऐसा मेरा अनुभव है।

लक्ष्मीप्राप्ति व शत्रुनाश उभय कामना मंत्रों का प्रयोग भी सफलता से किया जा सकता है।

बगलामुखी उपासना पीलेवस्त्र पहनकर, पीले आसन पर बैठकर करें। गंधार्चन में केसर हल्दी का प्रयोग करें, स्वयं के पीला तिलक लगायें। दीपवर्तिका पीली बनायें। पीतपुष्प चढायें, पीला नैवेद्य चढावें। हल्दी से बनी हुई माला से जप करें। अभाव में रुद्राक्ष माला से जप करें। या सफेद चंदन की माला को पीली कर लेवें। तुलसी की माला पर जप नहीं करें।

शत्रु व राजकीय विवाद मुकदमेबाजी में विद्या शीघ्रसिद्धिप्रदा है। शत्रु के द्वारा कृत्या अभिचार किया गया हो, प्रेतादिक उपद्रव होतो उक्तविद्या का प्रयोग करना चाहिये। परन्तु मेरा यह अनुभव है कि यदि शत्रु का प्रयोग या प्रेतोपद्रव भारी होतो मंत्र क्रम में निम्न विघ्न बनते हैं -

१. जप नियम पूर्वक नहीं हो सकेगें।
२. मंत्र जाप में समय अधिक लगेगा, जिह्वा भारी होने लगेगी।
३. मंत्र में जहां **'जिह्वां कीलय'** शब्द आता है उस समय स्वयं की जिह्वा पर संबोधन भाव आने लगेगा उससे स्वयं पर ही मंत्र का कुप्रभाव पड़ेगा।
४. **'बुद्धिं विनाशय'** पर परिभाषा का अर्थ मन में स्वयं पर आने लगेगा।

सावधानियाँ

१. ऐसे समय तारा मंत्र पुटित बगलामुखी मंत्र प्रयोग में लेवें, अथवा कालरात्रि देवी का मंत्र व काली अथवा प्रत्यंगिरा मंत्र पुटित करें। तथा कवच मंत्रों का स्मरण करें। सरस्वती विद्या का स्मरण करें अथवा गायत्री मंत्र साथ में करें।

२. बगलामुखी मंत्र में **ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाश ह्लीं ॐ स्वाहा।** इस मंत्र में आप अगर यजमान का कार्य कर रहें है तो **सर्वदुष्टानां** शब्द से आशय यजमान के शत्रु को मानते हुये आगे ध्यान पूर्वक आगे का मंत्र पढ़ें तो कार्य सफल होवे।

३. यही संपूर्ण मंत्र जप समय यदि यजमान की शक्ल को ध्यान में रखकर किया तो यजमान का अहित हो जायेगा। स्वयं के लिये भी अगर निष्काम जप कर रहें हो तो **सर्वदुष्टानां** की जगह काम क्रोध लोभादि शत्रु एवं विघ्नों का ध्यान करें तथा **वाचं मुखं ...... जिह्वां कीलय** के समय देवी के बाँयें हाथ में शत्रु की जिह्वा है तथा **बुद्धिं विनाशय** के समय देवी शत्रु को पाशबद्ध कर मुद्गर से उसके मस्तिष्क पर प्रहार कर रही है ऐसी भावना करें।

४. बगलामुखी के अन्य उग्रप्रयोग **वडवामुखी, उल्कामुखी, ज्वालामुखी, भानुमुखी, वृहद्भानुमुखी, जातवेदमुखी** इत्यादि तंत्र ग्रंथों में वर्णित है। समय व परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करना चाहियें।

५. विशेष विषय गुरुमुख से ज्ञात करना चाहियें। बगला प्रयोग के साथ भैरव, पक्षिराज, धूमावती विद्या का ज्ञान व प्रयोग करना चाहियें।

॥ बगला उत्पत्ति ॥

एक बार समुद्र में राक्षस ने बहुत बड़ा प्रलय मचाया, विष्णु उसका संहार नहीं कर सके तो उन्होने सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप महात्रिपुरसुन्दरी की आराधना की तो श्रीविद्या ने ही **बगला** रूप में प्रकट होकर राक्षस का वध किया। **मंगलवार युक्त चतुर्दशी, मकरकुल नक्षत्रों से युक्त वीररात्रि कही जाती है।** इसी अर्धरात्रि में **श्रीबगला का आविर्भाव** हुआ था। मकारकुल नक्षत्र- भरणी, रोहिणी, पुष्य, मघा, उ. फा., चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पू. षा., श्रवण, उ.भा. नक्षत्र है।

॥ बगला उपासनायां उपयोगी कुल्लुकादि साधना ॥

बगला उपासना व दशमहाविद्याओं में मंत्र जाग्रति हेतु शापोद्धार मंत्र, सेतु, महासेतु, कुल्लादि मंत्र का जप करना जरुरी हैं। अतः उनकी जानकारी व अन्य विषय साधकों के लिये आवश्यक हैं।

नाम – बगलामुखी, पीताम्बरा, ब्रह्मास्त्रविद्या।

आम्नाय – मुख आम्नाय दक्षिणाम्नाय हैं इसके उत्तर, उर्ध्व व उभयाम्नाय मंत्र भी हैं।

आचार – इस विद्या का वामाचार क्रम मुख्य हैं, दक्षिणाचार भी हैं। कुल यह श्रीकुल की अङ्गविद्या हैं। शिव इस विद्या के त्र्यंबकशिव हैं।

भैरव – आनंद भैरव हैं। कई विद्वान आनंद भैरव को प्रमुख शिव व त्र्यंबक को भैरव बताते हैं। गणेश- इस विद्या के हरिद्रागणपति मुख्य गणेश हैं। स्वर्णाकर्षण भैरव का प्रयोग भी उपयुक्त है।

यक्षिणी – विडालिका यक्षिणी का मेरु तंत्र में विधान हैं। प्रयोग हेतु अंगविद्यायें - मृत्युंजय, बटुक आग्रेयास्त्र, वारुणास्त्र, पार्जन्यास्त्र, संमोहनास्त्र, पाशुपतास्त्र, कुल्लुका, तारा स्वप्नेश्वरी, वाराही मंत्र की उपासना करनी चाहिये।

कुल्लुका – "**ॐ क्ष्रौं**" अथवा **ॐ हूं क्ष्रौं** शिर में १० बार जप करना। **सेतु** – कण्ठ में १० बार "**ह्रीं**" मंत्र का जप करे। **महासेतु**- "**स्त्रीं**" इसका १० बार हृदय में जप करे। **निर्वाण- हूं, ह्रीं श्रीं** से संपुटित करे एवं मंत्र जप करे। दीपन पुरश्चरण आदि में "**ईं**" से संपुटित मंत्र का जप करे। **जीवन**-मूल मंत्र के अंत में "**ह्रीं ओं स्वाहा**" १० बार जपे नित्य आवश्यक नहीं हैं। **मुखशोधन**- (दातून) करने के बाद "**हं ह्रीं ऐं**" जल संकेत से जिह्वा पर अनामिका से लिखें एवं १० बार मंत्र जप करे।

शापोद्धार- "**ॐ ह्लीं बगले रुद्रशापं विमोचय विमोचय ॐ ह्लीं स्वाहा**" १० बार जपे। **उत्कीलन** :- "**ॐ ह्लीं स्वाहा**" मंत्र के आदि में १० बार जपे।

॥ वृहत् उत्कीलन् विधानम् ॥

पीताम्बरापीठ के स्वामीजी ने बगलामुखी रहस्य में विस्तृत विधान दिया है इसकी नित्य आवश्यकता नहीं हैं पर्वादि में या पुरश्चरण काल में अवश्य करना चाहिये।

विनियोग :- **अस्य श्री उत्कीलन मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, वृहत् गायत्री छंदः, सूचीमुख्यै उत्कीलन देवता, ॐ ऐं क्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं अं बीजाय, ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय शक्तिः, ॐ ब्लूं ह्लौं ह्लं ह्लीं ह्लां ॐ कीलकं, श्रीं बगलामुखी मंत्र उत्कीलनार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **उत्कीलन मंत्र सदाशिव ऋषिः नमः शिरसि। वृहत् गायत्री छंदसे नमो मुखे। श्री ब्रह्मास्त्रोत्कीलनायै क्लीं ब्लूं ग्लौं ह्लीं ग्लौं ब्लूं क्लीं सं सं सं सूच्यग्रेणोत्कीलन सूचीमुख्यै देवतायै नमो हृदये। ॐ ऐं क्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं अं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्लीं अं आं इं ईं....अं अः** (तीन बार कहकर मूलमंत्र उच्चारण करें) **ॐ ऐं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय ॐ अं ह्लीं आं इं ब ईं ग उं ला ऊं मु ऋं खि ॠं स लृं वं लॄं दु एं ष्टा ऐं नां ओं वा औं चं अं मु अं खं अः प अं दं औं स्त ओं म्भ ऐं य एं जि लृं ह्वां लॄं की ॠं ल ऋं य ऊं बु उं द्धिं ईं वि इं ना आं श अं य ह्लीं ॐ क्षं ॐ स्वाहा। ॐ ऐं क्लीं क्लीं ह्लीं क्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय उत्कीलय, ॐ ब्लूं ह्रौं ह्रं ह्रीं ह्रां ॐ कीलकाय नमो नाभौ। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रसौं ॐ बगलामुखीमहामन्त्रे उत्कीलनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

पश्चात् **ॐ ऐं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय उत्कीलय** से व्यापक न्यास करें।

करादिन्यासः- **ॐ इं लं हंसः ह्लां सोहं लं ईं ॐ उत्कीलिन्यै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं लं हंसः ह्लीं सोहं लं ईं ॐ महोत्कीलिन्यै नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ इं लं हंसः ह्लूं सोहं लं ईं ॐ रुद्रसूच्या उत्कीलिन्यै नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ इं लं हंसः ह्लैं सोहं लं ईं ॐ ब्रह्मग्रंथि उत्कीलिन्यै नमः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ इं लं हंसः ह्लौं सोहं लं ईं ॐ योगिन्यै उत्कीलिन्यै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ इं लं हंसः ह्लः सोहं लं ईं ॐ सर्वोत्कीलिन्यै नमः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।** इसी तरह हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

रुद्रसूचीमुखीं ध्याये सर्वाभरणभूषिताम्। वरदाऽभयसूच्यग्र नखदंष्ट्राभयानकाम् ॥
चतुर्भुजां त्रिनयनां वरदाऽभय कुण्डिकाम्। शूलाग्रान खरतीक्ष्णग्रान् कुर्वतीं ग्रथिताक्षरान् ॥
वर्णमाला विभूषाङ्गी सर्ववर्णात्मिकां शिवाम्। प्रोद्यश्वतां मनून् सर्वान् नानावर्ण विजृंभितान् ॥

विविच्य वरदे मंत्रान् मालायां कुसुमानिव। प्रवेशय मनुं देहि प्रकटीकुरु सर्वदा ॥
अभयं टङ्कं वरदं पाशं पुस्तकमङ्कुशम्। शूलं सूच्यग्रमादाय देहि मे प्रणमामि त्वाम् ॥
इति ध्यात्वा जगद्धात्रीं जगदान्दरूपिणीम्। ग्रंथित्रय विशेषज्ञं शिवं ध्यात्वा जपेन्मनुम् ॥

ॐ इं लं हंसः ह्लीं उत्कीलिन्यै नमः। ॐ ईं लं हंसः ॐ वः ॐ ह्लीं बगलामुखि.....पूरा मंत्र ह्लीं लं ईं वः उत्कीलिन्यै स्वाहा। ॐ ईं हंसः रं सं रं ह्लः मूल मंत्र ॐ ईं लं हंसः हं ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा। यह तीन बार जपे। पुनः अं आं......सं हं लं क्षं ॐ ईं हंसः ॐ वः मूलमंत्र ॐ वः सः हं लं इं लं क्षं लं हं क्षकार से अकार तक विलोममातृका उच्चारण करे ॐ वः ह्लां इं लं हंसः मूलमंत्र सोहं लं ईं ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा।

जागरण :- **ॐ इं लं हंसः सोहं ॐ वः वः वः ॐ हंसः सोहं लं ईं ॐ मम हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा हृदय पर हाथ रख कर ३ बार जपे। पुनः ॐ ह्लीं हंसः मूलमंत्र ॐ अं आं.....अं अः हंसः ह्लीं ॐ जप करे।**

मंत्र शुद्धिः- **अं आं.....हं लं क्षं ॐ ह्लीं हंसः सोहं ह्लीं सः सोहं मूल मंत्र पश्चात् क्षं लं हं.....आं अं विलोममातृका मम विद्याशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

शापविमोचन :- **ॐ ह्लूं ह्लूं ह्लूं क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ऐं ह्लीं ह्लीं ह्लीं क्रीं क्रीं क्रीं रुद्रसूच्यग्रेण उत्कीलय उत्कीलय अं आं ....अं अः बगलाशापोद्धारं कुरु कुरु अं आं......अं अः क्रीं क्रीं क्रीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं ऐं ऐं क्लीं क्लीं क्लीं ह्लूं ह्लूं ह्लूं ॐ रुद्रसूच्यग्रेण बगलाशापविमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।** मूल मंत्र का आठ बार जप करे। ब्राह्मीमुद्रा दिखावें। अन्य पंचमुद्राओं से नमस्कार करें।

अन्य उत्कीलन विधिः- **१. ॐ ह्लीं क्लीं स्वाहा** जपने से **उत्कीलन** होवें। **२. ॐ ह्लीं स्वाहा** अथवा **ह्लीं ॐ स्वाहा** जपने से **संजीवन** होवें। **३. ॐ ह्लीं बगले रुद्रशाप विमोचय ह्लीं ॐ** से शापोद्धार होवें। **४. क्रीं ह्लीं क्लीं** से मूल मंत्र को संपुटित करें तो विद्या का जागरण होवें।

॥ अथ बगलामुखी मंत्र प्रयोगाः॥

एकाक्षरी मंत्रः- 'ह्लीं'।

इसे स्थिर माया कहते हैं। यह मंत्र दक्षिण आम्नाय का हैं। दक्षिणाम्नाय में बगलामुखी के दो भुजायें हैं। अन्य बीज "**ह्रीं**" का उल्लेख भी बगलामुखी के मंत्रों में आता हैं इसे "**भुवनमाया**" भी कहते हैं। चतुर्भुज रूप में यह विद्या विपरीत गायत्री (ब्रह्मास्त्र विद्या) बन जाती हैं। **ह्लीं** बीज युक्त अथवा चतुर्भुज ध्यान में बगलामुखी उत्तराम्नाय या उर्ध्वाम्नायात्मिका होती हैं। **ह्लीं** बीज का उल्लेख ३६ अक्षर मंत्र में करेंगे।

विनियोग :- **एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, गायत्री छंदः, बगलामुखी देवता, लं बीजं, ह्लीं शक्तिः, ईं कीलकं, सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।** (बगलामुखी रहस्य में ह्रूं शक्तिः कहा जाता हैं।)

षडङ्गन्यास :- **ह्लां, ह्लीं, ह्लूं, ह्लैं, ह्लौं, ह्लः** से षडङ्गन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

वादीभूकति रङ्कति क्षितिपतिः वैश्वानर शीतति, क्रोधी साम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्व विच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः, श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः

॥

एक लाख जप कर, पीतपुष्पों से होम करे, गुड़ोदक से दशांश तर्पण करे।

त्र्यक्षर मंत्र :- "ॐ ह्लीं ॐ"।

चतुरक्षर मंत्र :- ॐ आं ह्लीं क्रों।

विनियोग :- इस मंत्र के बीज "ह्लीं" शक्ति "आं" कीलक "क्रों" हैं शेष पूर्ववत् हैं।

ॐ ह्लां, ॐ ह्लीं, इत्यादि से षडङ्गन्यास करे।

कुटिलालक संयुक्तां मदाघूर्णित लोचनां
मदिरामोदवदनां प्रवाल सदृशाधराम् ।
सुवर्णकलशप्रख्य कठिनस्तन मंडलां
आवर्त्त विलसन्नाभिं सूक्ष्ममध्यम संयुताम् ॥
रम्भोरु पादपद्मां तां पीतवस्त्र समावृताम्।

पञ्चाक्षर मंत्र:- ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट्। इस मंत्र में तारा का बीज "स्त्रीं" संयुक्त हैं अतः इसके ऋषि, ध्यान तारा महाविद्या के समान हैं।

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य अक्षोभ्यऋषि, वृहतीछंदः, श्री बगलामुखी चिन्मयी देवता, हूं बीजं, "फट्" शक्ति "ह्लीं स्त्रीं" कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।** ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः से षडङ्गन्यास करें।

प्रत्यालीढपरां घोरां मुण्डमालां विभूषितां। खर्वांलंबोदरीं भीमां पीताम्बर परिच्छदाम् ॥
नवयौवन संपन्नां पंचमुद्रा विभूषितां। चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम् ॥
खड्गकर्त्री समायुक्तां सव्येतर भुजद्वयां। कपालोल्पल संयुक्तां सव्यपाणि युगान्विताम् ।
पिङ्गोग्रैक सुखासीनं मौलावक्षोभ्य भूषितां। प्रज्वलत् पितृ-भूमध्यगतां दंष्ट्राकरालिनीम् ।
तां खेचरां स्मेरवदनां भस्मालङ्कार भूषितां। विश्व व्यापक तोयान्ते पीतपद्मोपरि स्थिताम् ।

सप्ताक्षर मंत्र:- मायाद्य (ह्लीं) च द्विठान्ता (स्वाहा) भगवति बगलाख्या चतुर्थीनिरूढा। ह्लीं बगलायै स्वाहा।

अष्टाक्षर मंत्र :- (१) ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा। इस मंत्र का सांख्यायन तंत्र में "ॐ" **बीज, कीलक "क्रों"**, कहा है शेष एकाक्षरी मंत्रवत्। **(२) ॐ ह्लीं श्रीं आं क्रों बगला।** (बगलाकल्पतरु तथा रहस्ये)।

नवाक्षर मंत्र :- ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि ठः।

एकादशाक्षर :- "ॐ" ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि ठः ठः। (मंत्रोद्धार में **ठद्वयं** का अर्थ **स्वाहा** भी हो सकता है।)

पंचादशाक्षर मंत्र :- माया (ह्लीं) प्रद्युम्न (क्लीं) योनि (ऐं) व्युनुगतबगलाऽग्रे च मुख्यै गदाधारिण्यै स्वाहेति। अथ मंत्र - **ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै स्वाहा।**

एकोनविंशाक्षर मंत्राः :- (भक्तमंदार मंत्र) यह मंत्र वांछाकल्पलता मंत्र हैं अर्थ प्राप्ति हेतु उत्तम मंत्र हैं। मैनें इसके पद को विभाग करके अन्य मंत्रों के साथ प्रयोग कराये हैं सफल रहे हैं।

मंत्र - (१) **श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।**

(२) इस मंत्र के पद विभाग करके श्रीमद्‌भागवत के आठवें स्कंद के आठवें अध्याय के आठवें मंत्र से संयोग कर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु काफी प्रयोग करायें सफल रहे हैं।

यथा - **श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले ततश्चाविरभूत साक्षाच्छ्री रमा भगवत्पुरा । रञ्जयन्ती दिशः कान्त्या विद्युत् सौदामिनी यथा मे श्रियं देहि देहि स्वाहा॥** इस मंत्र से पुटित शतचण्डी प्रयोग आर्थिक रूप से आश्चर्य जनक से सफल रहें हैं।

त्रयविंशाक्षर मंत्रः- ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा ।

ॐ पीत शङ्ख गदाहस्ते पीतचन्दन चर्चिते । बगले मे वरं देहि शत्रुसङ्घविदारिणि ॥

चतुस्त्रिंशदक्षर मंत्रः- ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

हिन्दी तंत्रसार व मूलमंत्रकोष में **नारद ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, देवता बगलामुखी, ह्लीं बीज, स्वाहा शक्ति** कहा गया हैं। पुरश्चर्यार्णव में **ऋषि नारायण, छन्द पंक्ति** कहा है।**ॐ ह्लीं। बगलामुखी। सर्वदुष्टानां। वाचं मुखं स्तंभय। जिह्वां कीलय। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।** इनसे क्रमशः हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र एवं अस्त्र न्यास करे।

गंभीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्ती समप्रभां चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम् ।
मुद्‌गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकं पीताम्बरधरां देवीं दृढपीन पयोधराम् ॥
हेमकुण्डलभूषां च पीत चन्द्रार्द्ध शेखरां पीतभूषण भूषां च रत्नसिंहासने स्थिताम् ॥

तंत्र दीपनी में बीज मंत्र **''ह्लीं''** ही बताया हैं।

षट् त्रिंशदक्षर मंत्रः- (१) ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। इसके ऋष्यादि ३४ अक्षर के समान है।

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गीं देवीं स्मरामि धृतमुद्‌गर वैरिजिह्वाम् ॥१॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥२॥

''ह्लींकार ह्लींकार मतभेदाः'' बगलामुखी के मूलमंत्र का उद्धार सांख्यायन तंत्र के पांचवें पटल में इस प्रकार हैं सो(ह) ऽन्तरा (ल) न्तसमायुक्तं चतुर्थस्वर (ई) संयुतं। रेफान्तान्तं (र) बिन्दुयुक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरो मनुः। दूसरे तंत्रों में- (पुरश्चर्यार्णव एवं मूल मंत्रकोष)-वह्निहीनेन्दुयुग् माया स्थिरमाया प्रकीर्तिता। अर्थात् **''ह्लीं'' का उल्लेख हैं।** सांख्यायन तंत्र में रेफहीन बीज को कीलित व स्तंभित बताया हैं रेफयुक्त ह्ल्रीं को श्रेष्ठ माना हैं। यथा सांख्यायन तंत्र ३२ वां पटल में उल्लेख हैं।

स्थिर बीजं समुद्धृत्य रतिविन्दुविभूषितम्। स्थिर माया त्वियं पुत्र विन्द्वर्ध चन्द्रभूषिता ॥
इयं शप्ता महाविद्या कीलिता स्तंभिता सुत। रेफयोगान्तहाशैव निःशप्ता फलदायिनी ॥
रेफयुक्तां जिपेद्विद्यां फलहीनां न संजपेत्। रेफहीनां जपन्विद्यां कोटि जापन्न सिद्धयति ॥

षट् त्रिंशदक्षर मंत्रः- (२) ॐ ह्लीं (ह्रीं) बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं (ह्रीं) ॐ स्वाहा। (यह मंत्र अधिक प्रयोग में आता है)।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य नारदऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे च शत्रूणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः।**

मंत्र महोदधि में छंद वृहती लिखा हैं। सांख्या. तंत्र में छंद **अनुष्टुप् लं बीज, ह्रीं शक्ति, रं बीज** बताया है।

ऋष्यादि न्यास :- **नारदऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे मुखे, श्री बगलामुखी देवतायै हृदये। ह्रीं बीजाय गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयो। ॐ कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास :- **ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास :- **ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखि शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुं। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।**

ध्यान अधिकतर **''मध्येसुधाब्धि मणिमण्डप''** का पूर्व लिखित बोलते हैं। अन्य ध्यान भी दिया हैं जो मेरे अनुमान से उत्तराम्नाय व उर्ध्वाम्नाय मंत्रों के लिये उपयुक्त हैं।

सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्क मुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भूषणै र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तभ्मिनीं चिंतयेत्॥

सांख्यायन तंत्र में अन्य ध्यान दिया हैं। तथा न्यास हेतु मंत्र के जो विभाग हैं उनमें प्रत्येक के आगे **'' ॐ ह्रीं ''** जोड़ने की विधि दी हैं।

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन - संस्थितां, त्रिशूलं पान पात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ।
बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च सम पीनपयोधराम्, पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद ब्रह्मास्त्र - देवताम् ॥

एक लाख जप करके चम्पा के फूल से व बिल्वकुसुमों से दशांश होम करे।

(३) ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा। उपर्युक्त मंत्र में **ह्लीं** की जगह **भुवनमाया (ह्रीं) बीज** हैं अतः मंत्र **उभयाम्नाय उत्तर** व **उर्ध्वाम्नाय** बनता हैं। अतः उपर्युक्त दोनों ध्यान करे। मेरु तंत्र के अनुसार इसके **नारायण ऋषि, त्रिष्टुप्छंद, बगलामुखी देवता ह्रीं बीज तथा स्वाहा शक्ति** हैं।

(४) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं बगलामुखि रिपून् नाशय नाशय ऐश्वर्यं देहि देहि अभीष्टं साधय साधय ह्रीं स्वाहा। इस मंत्र के **भैरव ऋषि, विराट् छंद, बगलामुखी देवता, क्लीं बीज, अपरा शक्ति, ऐं कीलक, अभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोग** हैं। इसके लिये **उर्ध्वाम्नायात्मिक बगलामुखी** का **''सौवर्णासन संस्थिता''** ध्यान करे।

अष्ट त्रिंशदक्षर मंत्र - ॐ ह्लीं (ह्रीं) बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं गतिं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं (ह्रीं) ॐ स्वाहा।

त्रि चत्वारिंशदक्षर मंत्र :- ह्रीं हूं ग्लौं बगलामुखि वाचं मुखं पदं ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणितं

पिब पिब बगलामुखि ह्लीं ग्लौं हुं फट्। (साँख्यायन तंत्रे) परन्तु इस मंत्र में अमुक का उल्लेख नहीं हैं अतः बगलाकल्प तरु का ४५ अक्षरों का मंत्र जपना ही श्रेयकर हैं।

पंच चत्वारिंशदक्षर मंत्र :- ह्लीं हूं ग्लौं बगलामुखि मम शत्रून् वाचं मुखं ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणितं पिब पिब बगलामुखि ह्लीं ग्लौं हुं फट्। (बगलाकल्पतरु)

सप्तचत्वारिंशदक्षर :- (ऐश्वर्यप्राप्ति हेतु) ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं श्रीबगलामुखि मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा। अन्य जगह दूसरा मंत्रः- **नाशय नाशय के बाद ऐश्वर्याणि** है तथा **शीघ्रं** शब्द नहीं हैं। इस मंत्र के प्रयोग काफी अनुभूत हैं इससे प्रेतादिक उपद्रव दूर होते हैं, बंद होने वाले व्यापार पुनः चालू व स्थिर वृद्धि को प्राप्त करते हैं। शत्रु नाश व अर्थ प्राप्ति दोनों ही फल हैं। दुर्गा सप्तशती के संपुट पाठ से अधिक फल प्राप्ति होवे। विशेष बाधा में शतचण्डी प्रयोग करना चाहिये।

विनियोग :- **अस्य मंत्रस्य भैरव ऋषि, विराट् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, क्लीं बीजं, सौः शक्तिः ऐं कीलकं अमुक रोग शांति, अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

न्यास :- **भैरव ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः शक्तये नमः पादयोः। ऐं कीलकाय नमः नाभौ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास :- **ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं नमः हृदये। श्री बगलामुखि शिरसे स्वाहा। मम रिपुन नाशय नाशय शिखायै वषट्। ममैश्वर्याणि देहि देहि कवचाय हुं। शीघ्रं मनोवांछितं नेत्रत्रयाय वौषट्। कार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा अस्त्राय फट्। इसी तरह करन्यास करे।**

एकोन पंचाशदक्षर मंत्र :-(पूर्व मंत्र से कुछ भिन्न)- **ॐ श्रीं ह्लीं ऐं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्लीं श्रीं स्वाहा।** इसका प्रयोग भी पूर्ववत् फलदायी हैं। तीनों मंत्र उभय एवं उर्ध्वाम्नाय के हैं।

ध्यान - **सौवर्णासन संस्थितां.....चिन्तयेत्।** तथा **चतुर्भुजा त्रिनयनां ब्रह्मास्त्र देवतां** से ध्यान करे तथा अन्य ध्यान भी तीनों मंत्रों हेतु हैं।

वन्दे स्वर्णाभवर्णां मणिगण विलसद्धेम सिंहासनस्थां पीतं वासो वसानां वसुपद मुकुटोत्तंस हाराङ्गदाढ्याम्। पाणिभ्यां वैरिजिह्वामध उपरिगदां विभ्रतीं तत्पराभ्यां हस्ताभ्यां पाशमुच्चैरध उदितवरां वेदबाहुं भवानीम्॥

॥ अशीत्यक्षर हृदय मंत्रः॥

आं ह्लीं क्रों ग्लौं हूं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखि आवेशय आवेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणि एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय सान्निध्यं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों ममैव हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा। पाठान्तर ममैव हृदये की जगह **ममहृदये** भी हैं।

॥ शताक्षर मंत्र॥

ह्लीं ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं ग्लौं ह्लीं बगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वां कीलय महाभ्रमकरि बुद्धिं नाशय विराण्मयि सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञां नाशय उन्मादं कुरु कुरु मनोपहारिणि ह्लीं ग्लौं श्रीं क्लीं ह्लीं ऐं ह्लीं स्वाहा।

॥ बगलागायत्री मंत्राः॥

१. ह्लीं बगलामुखी विद्महे दुष्टस्तंभनी धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्। २. ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तंभनवाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्। ३. ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तंभनं तन्नः बगला प्रचोदयात्। (बगलामुखी रहस्ये तथा बगला कल्पतरु) **४. ॐ बगलामुख्यै विद्महे स्तंभिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्। ५. बगलाम्बायै विद्महे ब्रह्मास्त्र विद्यायै धीमहि तन्न स्तंभिनी प्रचोदयात्। ६.** (बाला बीज पुटित) **ॐ ऐं बगलामुखि विद्महे ॐ क्लीं कान्तेश्वरि धीमहि ॐ सौः तन्नः प्रह्लीं प्रचोदयात्।**

॥ शाबर मंत्रः॥

शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं। **ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुबंधनं कालमुखबंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनबंधनं वशीकुरु हुं फट् स्वाहा।**

पाण्डवी चेटिका विद्या-(मेरुतंत्रेऽष्टादश प्रकाशे) **ॐ पाण्डवी बगले बगलामुखि शत्रोः पदं स्तंभय स्तंभय क्लीं ह्लीं श्रीं ऐं ह्लीं स्फ्रीं स्वाहा।**

॥ ध्यानम् ॥

पीताम्बरां पीतवर्णां पीतगन्धानुलेपनाम्। प्रेतासनां पीतवर्णां विचित्रां पाण्डवीं भजे ॥

प्रतिप्रदा शुक्रवार को जपे। ३० हजार कुसुंभकुसुमों से होम करे। प्रसन्न होकर पाण्डवी साधक को वस्त्र प्रदान करती हैं तथा शत्रु का स्तंभन करती हैं।

॥ अथ बगलामुखी मातृका॥

प्रत्येक मंत्र के पहले **'ह्लीं श्रीं'** लगायें व **'नमः'** जोड़ें।

ॐ ह्लीं श्रीं अं बगलामुख्यै नमः शिरसि। आं स्तंभिन्यै मुखे। इं जिभृण्यै दक्षनेत्रे। ईं मोहिन्यै वामनेत्रे। उं वश्यायै दक्षकर्णे। ऊं चलायै वामकर्णे। ऋं अचलायै दक्षनासापुटे। ॠं दुर्द्धरायै वामनासापुटे। लृं कल्पगायै दक्षगण्डे। लॄं धीरायै वामगण्डे। एं कल्पनायै ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं कालकर्षिण्यै अधरोष्ठे। ओं भ्रामिकायै उर्ध्वदंत पंक्तौ। औं मंदगमनायै अधोदंत पंक्तौ। अं भोगिन्यै मुखवृत्ते। अः योगिन्यै कण्ठे।

कं भगाम्बायै दक्ष बाहुमूले। खं भगमालायै दक्ष कर्पूरे। गं भगवाहायै दक्षिण मणिबन्धे। घं भगोदरियै दक्ष करांगुलिमूले। ङं भगिन्यै दक्ष करांगुल्यग्रे। चं भगजिह्वायै वामबाहुमूले। छं भगस्थायै वामकर्पूरे। जं भगसर्पिण्यै वाममणिबन्धे। झं भगलोलायै वामकरांगुलिमूले। ञं भगाक्ष्यै वामकरांगुल्यग्रे। टं शिवायै दक्षोरूमूले। ठं भगनिपातिनी दक्ष जानुनि। डं जयायै नमः दक्ष गुल्फे। ढं विजयायै दक्ष पादांगुलिमूले। णं धात्र्यै दक्षपादांगुल्यग्रे। तं अजितायै वामोरूमूले। थं अपराजितायै वाम जानुनि। दं जृभिन्यै वामगुल्फे। धं स्तंभिन्यै वामपादांगुलिमूले। नं मोहिन्यै वाम पादांगुल्यग्रे। पं आकर्षिण्यै दक्षपार्श्वे। फं ह्यूमायै वामपार्श्वे। बं रंभिण्यै पृष्ठे। भं जृम्भिण्यै नाभौ। मं कीलिन्यै जठरे। यं वशिन्यै हृदि। रं रंभायै दक्षांसे। लं माहेश्वरी ककुदी। वं मंगलायै वामांसे। शं रूपिण्यै हृदयादि दक्षकरान्तम्। षं पीतायै हृदयादि वामकरान्तम्। सं पीताम्बरायै हृदयादि दक्षपादान्तम्। हं भव्यायै हृदयादि वामपादान्तम्। क्षं सुरूपायै हृदयादि शिरसि। लं बहुभाभिन्यै हृदयादि मुखे।

॥ अथ पीताम्बरा पञ्चास्त्र मंत्राः॥

पीताम्बरा के पांच विशेष उग्र मंत्र हैं जो शत्रु समूह के नष्ट करने में समर्थ हैं। **(१) वडवामुखी। (२) उल्कामुखी। (३) जातवेदमुखी। (४) ज्वालामुखी। (५) वृहद्भानुमुखी**

यंत्रार्चन का विशेष विधान देवीखण्ड उत्तरार्द्ध में हैं।

॥१. वडवामुखी मंत्रः॥

ॐ ह्लीं हूं ग्लौं बगलामुखि ह्लां ह्लीं ह्लूं सर्वदुष्टानां ह्लैं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तंभय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूं ह्लीं ह्लां बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूं ह्लीं हुं फट्। इस मंत्र के वशिष्ठ ऋषि, पंक्ति छंद शेष न्यासादि ३६ अक्षर मंत्र के समान हैं।

ध्यानम्:- **पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्त्रभुजान्विताम्। अर्द्धं जिह्वां गदां चार्द्धं धारयन्तीं शिवां भजे॥**

अर्थात् सहस्त्र हाथों जिह्वा व सहस्त्र हाथों में गदा धारण किये हुये है। सांख्यायन तंत्र में साध्य जिह्वां गदा चाप धारयन्ती लिखा है। १२ लाख जप करें। हरताल की आहुति देवे।

॥२. उल्कामुखी मंत्रः॥

ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि ॐ ह्लीं ग्लौं सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तंभय स्तंभय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा।

विनियोग :- **अस्य मंत्रस्य यज्ञवराह ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्ति ॐ कीलकं सर्वशत्रु क्षयार्थे जपे विनियोग।**

ध्यानम् :- **विलयानलसंकाशं वीरावेशन संस्थिता। वीराट्टहास महादेवी स्तम्भनास्त्रं भजाम्यहम् ॥**

१४ लाख जप। हरताल की १ लाख आहुतियां देवे। सांख्यायन्न तंत्र में वीरावेशन संभृताम्। वीराश्रयां महादेवी स्तंभनार्थं भजाम्यहम्॥ लिखा है।

॥३. जातवेदमुखीः॥

विशेष विघ्नों व पर कृत्या प्रयोग को नष्ट करने हेतु यह प्रयोग अच्छा है। **ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ स्वाहा।** पाठान्तर भेद से कहीं **''पदं''** नहीं हैं तथा **विनाशय** की जगह **नाशय हैं।**

विनियोग :- **अस्य मंत्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, पंक्तिछंद शेष पूर्ववत् ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः हूं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।** (सांख्या. तंत्र में **ह्लीं शक्ति, ह्रौं कीलक** कहा है।)

ध्यानम् :- जातवेदमुखीं देवीं देवतां प्राणरूपिणीं। भजेऽहं स्तंभनार्थं च चिन्मयी विश्वरूपिणीम्॥

पुरश्चरण ३० लाख जप।

॥४. ज्वालामुखीः॥

ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर ज्वालामुखि ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर स्वाहा। पाठान्तर भेद में **विनाशय** की जगह **नाशय** हैं तथा कई आचार्यों का मत हैं कि ज्वालामुखी की जगह बगलामुखि होना चाहिये।

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य अत्रि ऋषिः, गायत्री छंदः, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं सर्वशत्रु स्तंभनार्थे, क्षयार्थे जपे विनियोगः।**

ध्यानम्:- **ज्वलत्पुञ्ज समायुक्तां कालानलसमप्रभाम्। चिन्मयीं स्तंभनाद्देवीं भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥**

१२ लाख जप, हरताल से २ लाख आहुति, गोदुग्ध से तर्पण ४ लाख, ब्राह्मण भोजन दो हजार करे।

॥५. वृहद्भानुमुखीः॥

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ (इन १४ वर्णो की बार बार पुनरावृत्ति हैं) बगलामुखि १४ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय १४ जिह्वां कीलय १४ बुद्धिं विनाशय १४ ॐ स्वाहा।
पाठान्तर भेद "**ह्वां ह्वीं**" की जगह "**ह्लां ह्लीं**" तथा "**विनाशय**" की जगह "**नाशय**" हैं। यह विद्या शत्रु का तेजहरण करती हैं। स्तंभन करती है। परविद्या स्तंभन कर स्वविद्या को प्रकाशित करती हैं।

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य अत्रि ऋषिः, गायत्री छंदः, ह्लीं बीजं, ह्लीं शक्तिः, ॐ कीलकं परसैन्य परविद्या स्तंभनार्थे स्वविद्या प्रकाशनार्थे जपे विनियोगः।**

॥ ध्यानम् ॥

कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्ज शिरोरुहां। कोटिबाहु समायुक्तां वैरिजिह्वां समन्वितान्। स्तंभनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम्। मदिरामोद संयुक्तां वृहद्भानुमुखीं भजे ॥

१२ लाख जप, दशांश तालक हवन, गुडोदक तर्पण दशांश ब्राह्मण भोजन करें।

॥ अथ श्रीबगला मालामन्त्रः॥

ॐ नमो भगवति ॐ नमो वीरप्रतापविजयभगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं गतिं स्तम्भय स्तम्भय ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रय बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपराबुद्धिं कुरु कुरु, आत्मविरोधिनां शत्रूणां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पद अणुरेणु दन्तोष्ठ जिह्वा तालु गुह्य गुद कटि जानु सर्वाङ्गेषु केशदिपादपर्यन्तं पाददिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, खें खां मारय मारय, परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्राणि छेदय छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्वग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय दुखं हर हर, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्वमन्त्रस्वरूपिणि, सर्वतन्त्रस्वरूपिणि, सर्वशिल्पप्रयोगस्वरूपिणि, सर्वतत्वस्वरूपिणि, दुष्टग्रह भूतग्रह आकाशग्रह पाषाणग्रह सर्वचाण्डालग्रह यक्षकिन्नरकिम्पुरुषग्रह भूतप्रेतपिशाचानां शाकिनी डाकिनीग्रहाणां पूर्वदिशां बन्धय बन्धय वार्तालि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशां बन्धय बन्धय, किरातवार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमदिशा बन्धय बन्धय, स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशां बन्धय बन्धय, कालि मां रक्ष रक्ष ऊर्ध्वदिशं बन्धय बन्धय उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पातालदिशं बन्धय बन्धय, बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकलरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रून्पलायनाय पञ्चयोजनमध्ये राजजनस्त्रीवशतां कुरु कुरु शत्रून् दह दह, पच पच स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय,आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय, उच्चाटय हुं फट् स्वाहा॥

॥ इति बगलामालामन्त्रः॥

॥ ब्रह्मास्त्र उपसंहार विद्या ॥

यदि शत्रु भी बगला ब्रह्मास्त्र का ज्ञाता हैं, परप्रयोग भारी हैं तो यह कालरात्रि का मंत्र शीघ्र काम करता हैं कृत्या व शत्रु शक्तिको संमोहित कर निष्प्राण कर शिथिल कर देता हैं ऐसा अनुभवोक्त हैं।

मंत्रः- **ग्लौं हूं ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय महामोहे महामोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तंभनास्त्र शमनि हुं फट् स्वाहा।** विशेष विधि हेतु **कालरात्रि विधान** पुस्तक में अलग से दिया गया हैं।

॥ आम्नाय भेद क्रम दीक्षा ॥

बगलामुखि आराधना क्रम पूर्वक करने से लाभ मिलता हैं क्रम भिन्न कर एकदम उच्च प्रयोगों को करने से बाधा व हानि होती हैं। पहले एकाक्षरी, चतुरक्षरी, अष्टाक्षरी मंत्र जप के बाद ३६ अक्षरात्मक मंत्र ग्रहण करना चाहिये। साथ में गणेश, वटुक, मृत्युंजय, दक्षिणकालिका, सौभाग्यविद्या, हृदय, शताक्षर, बगलापञ्चास्त्र, कुल्लुका, ब्रह्मास्त्र गायत्री। छिन्नमस्ता मंत्र प्रयोग का विधान भी कहा हैं।

पूर्णाभिषेक क्रम दीक्षाः- **पूर्णाभिषिक्त साधक को षड् आम्नाय मंत्रों का प्रयोग कर संपूर्णता प्राप्त करनी चाहिये।**

पूर्वाम्नाय- **ब्रह्मास्त्र गायत्री, हृदय, नवाक्षर, एकदशाक्षर मंत्र। अन्य षोडशीवत्।**

दक्षिणाम्नाये- **षट्त्रिंशदक्षरी, एकाक्षरी, चतुरक्षरी, अष्टाक्षरी मंत्र।**

पश्चिमाम्नाये:- **त्र्यक्षर, शताक्षरः माला मंत्र, शाबर मंत्र, पर प्रयोग भक्षिणी विद्या।**

उत्तराम्नाये:- **पञ्चास्त्रमंत्राः, बगलास्त्रम्, कवचविद्या, उर्ध्वाम्नाये :- (१) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सकल ह्रीं हसकहल ह्रीं कएईल ह्रीं। (इति पराषोडशी) (२) ऐं ह्रीं श्रीं सौं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सकल ह्रीं हसकहल ह्रीं कएईल ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं। (इति पराषोडशीरूपम्।)**

ध्यायेत् पद्मासनस्थां विकसित वदनां पद्मपत्राऽऽयताक्षीम्। हेमाभां पीतवस्त्रां करकलित लसद्धेमपद्मां वराङ्गीम्॥ सर्वाऽलङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीम्। श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसंपत्प्रदात्रीम्॥

परागायत्री मंत्रः- हंसः सोहं ह्रौं ह्रौं।

॥ अथ श्री महाषोढान्यासः ॥

॥ चक्रन्यास ॥

त्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या तंत्र खण्ड में लघुषोढा तथा महाषोढा अंतर्गत भुवनन्यास, प्रपंचन्यास, मूर्तिन्यास इत्यादि में त्रिपुरा के बीजाक्षरों की जगह **ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः** बीजाक्षर प्रारंभ में लगाकर न्यास करें।

मूलाधरे - **ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङंअनन्तकोटि भूचरी कुलसहितायैआं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि भूचरादि कुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः।**

स्वाधिष्ठाने- ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः चं छं जं झं ञं अनन्तकोटि खेचरीकुलसहितायै ईं लां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं लां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि बेताल कुलसहिताय इं लं चर्चिकनाथाय इं लं भैरवनाथाय नमः।

मणिपूरके - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटि पातालचरी कुलसहितायै ऊं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्याम्बादेव्यै अनन्तकोटि पिशाचकुलसहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्ड भैरवनाथाय नमः।

अनहते - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः तं थं दं धं नं अनन्तकोटि दिक्चरी कुलसहितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बा देव्यै अनन्तकोट्यपस्पार कुलसहिताय ॠं सं हरसिद्धनाथाय ॠं सं क्रोध भैरवनाथाय नमः।

विशुद्धौ - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः पं फं बं भं मं अनन्तकोटि सहचरी कुलसहितायै ॡं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै ॡं षां वाराह्याम्बादेव्यै अनन्तकोटि ब्रह्मराक्षस कुल सहिताय ॡं षं भट्टिनाथाय ॡं षं उन्मत भैरवनाथाय नमः।

आज्ञायां - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः यं रं लं वं अनन्तकोटि गुरुचरी कुलसहितायै ऐं शां किलिकिल्यम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बा देव्यै अनन्तकोटि चेटक कुलसहिताय ऐं शं किलिकिलिनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नमः।

भाले - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः शं षं सं हं अनन्तकोटि वनचरी कुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डादेव्यै अनन्तकोटि प्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषण भैरवनाथाय नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे- ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः लं क्षं अनन्तकोटि जलचरी कुलसहितायै अः लां भीषणाम्बादेव्यै अः लां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि कूष्माण्ड कुलसहिताय अं लं भीषणनाथाय अं लं संहार भैरवनाथाय नमः।

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह्सौः स्हौः समस्तमातृका उच्चार्य (अं आं .... हं लं क्षं) समस्त मातृकाभैरवाधिदेवतायै श्री बगलाम्बादेव्यै नमः स्हौः ह्सौः ऐं श्रीं क्लीं ह्लीं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्।

॥ इति महाषोढान्यासः॥

॥ अंग देवता:॥

गरुड, शरभराज, मृत्युंजय आनंदभैरव अंग देवता हैं। इनकी आराधना भी प्रयोग में सहायता करती हैं। कुछ विद्वान स्वर्णाकर्षण भैरव का प्रयोग इस विद्या के साथ करते हैं।

द्वात्रिंशदक्षर तार्क्ष्यः- ॐ क्षीं ॐ नमो भगवते क्षीं पक्षिराजाय क्षीं सर्वाऽभिचार ध्वंसकाय क्षीं ॐ हुं फट् स्वाहा।

मृत्युंजय- त्र्यक्षर-हौं जूं सः। ३२ अक्षर व ५२-६२ अक्षरात्मक मंत्र के प्रयोग सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाशः 'देवखण्ड' में विस्तृत हैं। शरभराज का भी उक्त पुस्तक में विशेष वर्णन हैं।

॥ आनंदभैरव:॥

मंत्रो यथा- ह स क्ष म ल व र यूं आनंदभैरवाय स्वाहा।

सूर्यकोटि संकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् । अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम् । वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाऽऽभरणभूषितम् ॥
कपालखट् वाङ्गधरं घण्टा डमरु वादिनम् । पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुसल धारिणम् ॥
खङ्ग खेटक पट्टीश मुद्गर शूल धारिणम् । विचित्रं खेटकं मुण्डं वरदाभयपाणिनम् ॥
लोहितं देव देवेशं भावयेत् साधकोत्तमः ॥

॥ स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रः॥

जप मन्त्र- "ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।"

विनियोग - ॐ अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्तिश्छन्दः हरिहरब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजम्, सः शक्ति ओम् कीलकम् ममदारिद्र्यनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्द से नमः मुखे। स्वर्णाकर्षण दैवताया नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सः शक्तिः नमः पादयोः ओम् कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास - ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः । (हृदायाय नमः)। ॥१॥ ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय तर्जनीभ्यां नमः ।शिरसि स्वाहा। ॥२॥ ओम् लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः।(शिखायैवषट्)॥३॥ ओम् स्वर्णाकर्षण भैरवाय अनामिकाभ्यां नमः।(कवचाय हुम्)॥४॥ ओम् ममदारिद्र्य विद्वेषणाय कनिष्ठकाभ्यां नमः। (नेत्रत्र याय वौषट्)॥५॥ ओम् महा भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। (अस्त्राय फट्)॥६॥

॥ध्यानम्॥

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् । अक्ष्यं स्वर्णमाणिक्यं-तडितपूरित पात्रकम् ॥
अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम् । सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥१॥
मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानाम् च वर प्रदम् । सततं चिन्तये द्वेवं भैरवं सर्वसिद्धिदम् ॥
पारिजात द्रुमुकान्तारस्थिते मणिमण्डपे । सिंहासनगतं ध्यायेद भैरवं स्वर्णदायकम् ॥२॥
गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरंकरैः संदधतंत्रिनेत्रं । देव्यायुतं तप्तस्वर्णवर्ण स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥३॥

॥ अथ बगलामुखी मंत्र प्रयोगः ॥

बगलामुखी उपासना शत्रुनाशक है तो लक्ष्मी प्राप्ती कारक भी, रोग स्तंभन में मृत्युञ्जय के साथ इसका प्रयोग भी करना चाहिये परन्तु भावना यह रहे की इससे रोग व शत्रु का स्तंभन हो रहा है। शत्रु द्वारा किये गये अभिचार को भी शमन करती है

ऐसी स्थिति में भगवति बगलामुखि का अभिषेक पहिले सरसों के तेल से करके स्तोत्र पढ़कर फिर दुग्धादि से अभिषेक करे । अलग-अलग कामनाओं के लिए अलग- अलग मंत्र व स्तोत्र तथा हवन अभिषेक द्रव्य है ।

जिस मंत्र में **र कार** का अभाव होता है वह मंत्र विलम्ब से फल देता है। अतः **ह्लीं** के अलावा **र कार** युक्त बगलाबीज मंत्र **ह्रीं (ह्ल्रीं)** का प्रयोग भी मिलता है।

विनियोग – ॐ अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, प्रणवः कीलकं, श्री महामाया बगलामुखी देवता वरप्रसाद सिद्धि द्वारा मम सन्निहितानाम् असन्निहितानाम् विरोधिनां सर्वदुष्टानां वाङ्मुखबुद्धिनां गतिं स्तभन्नार्थे जिह्वां कीलनार्थे सर्वोपद्रव शमनार्थे ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- शिरसि नारद ऋषिये नमः। मुखे-त्रिष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि बगलामुख्यै नमः। गुह्ये ह्लीं बीजाय नमः। पादयोः स्वाहा, शक्तये। प्रणव कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

३.षडङ्गन्यास – ॐ ह्लीं -अंगुष्ठाभ्यां नमः। (हृदयाय नमः।) बगलामुखी -तर्जनीभ्यां नमः। (शिरसे स्वाहा।) सर्वदुष्टानां-मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायै वषट्।) वाचं मुखं पदं स्तंभय -अनामिकाभ्यां नमः। (कवचाय हुँ।) जिह्वां कीलय-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (नेत्रत्रयाय वौषट्।) बुद्धिं विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा, करतलपृष्ठाभ्यां नमः। (अस्त्राय फट्।)

जप मंत्र – ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय। जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

॥ ध्यानम् ॥

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेद्यां, सिंहासनो परिगतां परिपीतवर्णां ।
पीताम्बराभरण माल्य विभूषिताङ्गी, देवीं भजामि धृतमुदगर वैरिजिह्वाम् ॥१॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन् परिपीडयन्तीं ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढयां द्विभुजां नमामि ॥२॥

अन्य मंत्र-(४८ अक्षरात्मक मंत्र)- निम्न मंत्र का दुर्गा सप्तशती के संपुट लगाकर प्रयोग करने से भूमि दोष,प्रेतादि दोष, राज्य शत्रु बाधा दमन होकर बंद होने के कागार पर पहुचने वाले उद्योगो में भी तरक्की हुई अनुभूत है।

विनियोग- ॐअस्य श्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र मंत्रस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, क्लीं बीजं, ऐं शक्तीः, श्रीं कीलकं, श्री महामया बगलामुखी वरप्रसाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास- शिरसि,भैरव ऋषये नमः। मुखे विराट् छन्द से नमः। हृदि, बगलामुखी देवतायै नमः। गुह्ये, क्लीं बीजाय नमः। पादयो,ऐं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे,श्रीं कीलकाय नमः।

मंत्र	करन्यास	षडङ्गन्यास
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
श्रीबगलानने	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा ।
ममरिपून् नाशय नाशय	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ममैश्वर्याणि देहि-देहि	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं।
शीघ्रं मनोवाञ्छित कार्यं साधय-साधय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रीं स्वाहा	करतलपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लसिनीम् । हेमाभाङ्ग रुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम् ॥
हस्तैर्मुद्‌गरै पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः । व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ॥

मन्त्र – (४८अक्षरात्मक मंत्र)– **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।** (यह मंत्र उभयाम्नायात्मक है)

अथवा –(४९अक्षरात्मक मंत्र)– **ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्रीं श्रीं स्वाहा।**

॥ अथ यन्त्र आवरण पूजा ॥

इसे यन्त्र मध्य से प्रारंभ करे तो मध्य में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल, षोडशदल एवं भूपुर आवरण क्रमशः होंगें। कहीं-कहीं अष्टदल के ऊपर अष्टदल उसके ऊपर षोडशदल है। आवरण पूजा में भी ३-४ भेद हैं, जो प्रचलित हो वही प्रकिया करें। या जो गुरु आज्ञा हो वही करें। श्रीपीताम्बरा के दक्षिण की ओर श्रीललिता सुन्दरी बांयी ओर काली का ध्यान भी करें। मध्य में मृत्युञ्जय सहित बगलामुखी का आवाहन करें। पात्रासादन करें।

हाथ में पुष्प लेकर मन्त्र पढ़ें, भगवती से आज्ञा मांगें –

ॐ सचिन्मये परा देवि परामृतरस प्रिये । अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चन मे ॥

प्रथमावरण – बिन्दु में मूल मंत्रेन् – **श्रीपीताम्बरा देव्या त्रिनेत्र सहिताय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** गंधाक्षत पुष्प छोड़ें, तर्पण करें।
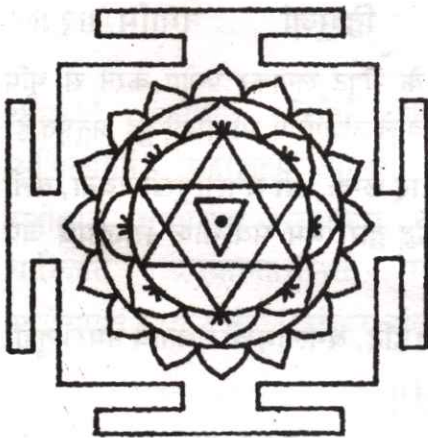
गुरुमण्डल – **श्रीनाथादिगुरु त्रयं...।** (षोडशी यंत्र पूजा प्रकरणे)

दिव्यौघ गुरु – ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो नमः। पुष्प छोड़ें। पूजन तर्पण करें । **श्रीउन्मयानन्दनाथ सहाम्बा श्री पा. पू. त्. नमः। श्री उन्मन्याकाशानन्द सहाम्बा श्री पा. पू. त्. नमः। श्रीपरमानन्दनाथ सहाम्बा.। श्री सहजानन्दनाथ सहाम्बा श्री पा. पू. त्. नमः। श्री परमानन्दनाथ सहाम्बा श्री पा. पू. त्. नमः। श्रीउन्मान्याकाशानन्दनाथ सहाम्बा श्री पा. पू. त्. नमः।**

सिद्धौघ – **ॐ सिद्धौघ गुरुभ्यो नमः** से पुष्प छोडें। नाम मन्त्रों के प्रत्येक नाम के आगे **'सशक्ति श्री पादुका पूजयामि तर्पयामि नमः'** बोलकर पुष्प गंधाक्षत् छोडें एवं (कारण द्रव्य) या अर्घजल में पञ्चामृत डालकर तर्पण करें। **श्री महेशानन्दनाथ सशक्ति श्री पा. पू. त्. नमः। परेशानन्दनाथ.। सच्चिदानन्दनाथ.। चिदानन्दनाथ.।**

मानवौघ– **ॐ मानवौघ गुरुभ्यो नमः** पुष्प छोडें। पहले कि तरह तर्पण करे। **ॐ ईश्वरानन्द नाथ स शक्तीं श्री पादुकां पु. ज. त. नमः। श्री रुद्रानन्दनाथ .। ब्रह्मानन्दनाथ.। नारदानन्दनाथ.।**

स्वगुरु क्रमः– **ॐ गुं स्व गुरुभ्यो स शक्तीं श्री पादुकां पू. ज. त. नमः। ॐ परम गुरुभ्यो नमः। ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठी गुरुभ्यो नमः।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें एवं "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" कह कर अर्घ जल से तृप्त करें।

द्वितीयावरणम् – (त्रिकोण) की रेखाओ में पूर्व दक्षिण वाम रेखाओं में पूजन तर्पण करे। गंधाक्षत पुष्प छोडते हुये तर्पण करे। **ॐ सं सत्वाय नमः श्री पादु. पू. त.। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः पा. पू. त.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

तृतीयावरणम् – (षष्टकोण में)पूजन तर्पण करें। **ॐ ह्लीं डां डाकिन्यै नमः अग्निकोणे । श्री पादुकां पू. तर्प. नमः। ॐ बगलामुखी रां राकिन्यै नमः ईशानकोणे। ॐ सर्वदुष्टानां लौलाकिन्यै नमः श्री पादु. पू. त. नैऋत्ये कोणे। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कां काकिन्यै नमः श्री पा. पू. त. वायव्य कोणे। ॐ जिह्वां कीलय शांशाकिन्यै नमः श्री पादु. पू. त. पूर्वे। ॐ बुद्धिं विनाशाय ह्लिं ॐ स्वाहा हां हाकिन्यै नमः श्री पा. पू. त. पूर्वादि दिक्चतुष्टये।**

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

चतुर्थावरणम् – (अष्टदलो में) पूर्वादि क्रम से तर्पण करें । **ॐ ह्लीं अं आं ईं........अः ब्राह्मयै नमः श्री पा. पू. तर्प। ॐ ह्लीं कं ......ङं नारायण्यै नमः। ॐ ह्लीं चं छं ......ञं माहेश्वरायै नमः। ॐ ह्लीं टं .....णं चामुण्डायै नमः। ॐ ह्लिीं तं थं .....नं कौमार्यै नमः। ॐ ह्लीं पं फं......मं वाराह्यै नमः। ॐ ह्लीं यं......वं इंद्राण्यै नमः। ॐ ह्लीं शं षं सं हं महालक्ष्म्यै नमः श्री पा. पू. ज. तर्प. ।**

ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

पंचमावरणम् – दलों के अग्रभाग में (कर्णिका) में पूर्वादि क्रम से अष्टभैरव का तर्पण करें। नाम मंत्रो के प्रत्येक के आगे **ऐं ह्रीं** (पहले) बोले नाम मंत्र बाद में **श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कह कर गंधाक्षत् पुष्प छोडें एवं (कारण) पात्र से तर्पण करें।

यथा – **ऐं ह्रीं आं असितांगाय नमः श्री पादु. पू. त.। ईं रुरवे नमः। ऊं चण्डाय नमः। ऋं क्रोधाय नमः। लृं उन्मत्ताय नमः। ऐं कपालिने नमः। औं. भीषणाय नमः। अः संहाराय नमः। ॐ अभिष्ट सिद्धीं ....पंचमावरणार्चनम्। पुष्पाञ्जलि देवें। पूजिताः तर्पिताः सन्तु** से तृप्त करें।

अथ षष्ठामावरणम्– षोडशदलों में पूर्वादि क्रम से अर्चन करें। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं मङ्गलायै नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। आं स्तंभिन्यै नमः। इं जृम्भिण्यै नमः। ईं मोहिन्यै नमः। उंवश्यायै नमः। ऊं अचलायै नमः। ऋं चंचलायै नमः। ॠं दुर्धरायै नमः। लृं कल्मषायै नमः। ॡं धीरायै नमः। एं कलनायै नमः। ऐं कालकर्षिण्यै नमः। ओं भ्रामिकायैनमः। औं मन्दगमनायै नमः। अं भोगदायै नमः। अः भाविकायै नमः।**

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

अथ सप्तमावरणम् – प्राच्यां गं गणेशाय नमः श्री पा. पू. त.। दक्षिणे बं बटुकाय नमः। पश्चिमे यां योगिनीभ्यो नमः। उत्तरे क्षां क्षेत्रपालाय नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

अथ अष्टमावरणम् - भूपूर में पूर्वादिक्रम से - **ॐ वं वज्र सहिताय इं इन्द्राय नमः श्री पा. पू. त.। शं शक्ति सहिताय कं कृष्णवर्त्मने नमः। दं दण्ड सहिताय कीं कीनाशाय नमः। कं खड्गसहिताय नीं निर्ऋतये नमः। पं पाश सहिताय वं वरुणाय नमः। अं अंकुश सहिताय वायव्ये नमः। गं गदा सहितायै सों सोमाय नमः। त्रिं त्रिशूल सहिताय ईं ईशानाय नमः। पूर्व ईशान मध्ये-पं पद्म सहिताय ब्रह्मणे नमः। निर्ऋति पश्चिम मध्ये चक्र सहिताय अं अनंताय नमः।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः** सन्तु से अर्घेन संतृप्त।

पुनः सिंह की पूजा करें - **ॐ व्रजनखदंष्ट्रायुधाय सिंहाय हुं फट् नमः।**

फिर मूल मंत्र से तीन पुष्पाञ्जलि भगवती पीताम्बरा को अर्पण करें। एवं यंत्र पर से निर्माल्य उतार कर शुद्धोदक स्नान कर गंध पुष्पाक्षत, धूप, दीप नैवेद्य अर्पण कर नीराजन करें।

॥ श्री बगलामुखी यंत्र द्वितीय प्रकारा: ॥

इसमें दो अष्टदल है तथा पूजन के नाम मंत्रो में भी भेद है श्री बगलामुखी रहस्यानुसार इस प्रकार है(क्रम में कुछ भिन्नता भी है)।
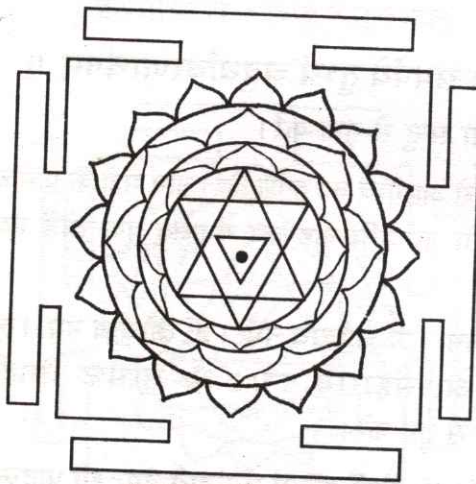
॥ बगलामुखी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् - मध्य विन्दौ - मूल मंत्रेण ..... **ॐ ह्रौं जूं सः त्र्यंबक सहिताय श्री बगलामुखी देवता श्री पादुकां पू. ज. त. नमः** यहीं सत् रज तम तीन रेखाओं के मध्य में गुरुमण्डल का पूजन करें।

(तर्पण यंत्र पर करें या सामने अन्य कोई पात्र में करते रहें।)

दिव्यौघ :- ॐ द्विव्यौघ गुरुभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि देवें। प्रत्येक नाम मंत्र के पहले ''**ह्रीं श्रीं**'' तथा नाम के बाद ''**सशक्तिं श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि**'' कहते हुये पुष्प गंधाक्षत् ज्ञान मुद्रा से छोडें, एवं तत्व मुद्रा से तर्पण करे। यदि साधक स्वयं हि करे तो तर्पण बायें हाथ से कर लेवे। तर्पण करें। सामान्य क्रम में कारण या अर्घजल में पंचामृत मिलाकर तर्पण करें।

ॐ ह्रीं श्री परमशिवानन्दनाथ सशक्तिं श्री पादुकां पूजयामि नमः। श्री पराशक्त्यम्बा श्री पा. पू. त. नमः। श्री पराधिकानन्दनाथ। श्री कुलेश्वरानंदनाथ। शुक्ला देव्यम्बा। श्री कामेश्वरानंदनाथ। कामेश्वर्यम्बा।

सिद्धौघ - ॐ सिद्धौघाख्य गुरुभ्यो नमः। पुष्पाजलि दत्वा। ॐ ह्रीं श्रीं श्री भोगानंदनाथ श्री पादुकां पू. ज. त. नमः। श्री क्लिन्नानंदनाथ। श्री सहजानंदनाथ सशक्तिं श्री पादुकां पू. ज. त. नमः।

मानवौघ - ॐ मानवौघाख्य गुरुभ्यो नमः। पुष्पांजलि दत्वा। ॐ ह्रीं श्रीं श्री गगनानंदनाथ सशक्ति श्री पादुकां पू. ज. त. नमः। श्री विश्वानंदनाथ.। श्री विमलानंदनाथ। श्री भुवनानंदनाथ.। श्री मदनानंदनाथ.। श्री लीलानंदनाथ.। स्वात्मानंदनाथ.। श्री प्रियानंदनाथ.।

स्वगुरु क्रम - **ॐ ह्लीं श्रीं अमुक स्वगुरु नाथ सशक्तिं पा. पू. त. नमः। अमुक परम गुरुनाथ.। अमुक परात्परगुरुनाथ.। अमुक परमेष्ठी गुरुनाथ.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** से अर्घेन संतृप्त।

द्वितीयावरणम् - **ॐ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः।** पुष्प छोडें त्रिकोण में पूजन तर्पण करें।

ऐं ह्लीं श्रीं क्रोधिन्यै पा. पूज. त. नमः स्वाहा। ऐं ह्लीं श्रीं स्तंभिन्यै (जृम्भिण्यै) स्वाहा पा. पू. नमः तर्प.। ऐं ह्लीं श्रीं चामरधारिण्यै स्वाहा पा. पू. ज. नमः तर्प.। पुनस्त्रिकोणे - **ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओडयानपीठाय स्वाहा पा. पूज. नमः तर्प.। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं जालंधरपीठाय स्वाहा पा. पूज. नमः तर्प.। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कामगिरि पीठाय स्वाहा पा. पूज. नमः तर्प.।** पुनः - **ॐ ऐं ह्लीं श्रीं अनन्तनाथाय स्वाहा पा. पूज. नमः तर्प.। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कण्ठनाथाय स्वाहा पा. पूज. नमः तर्प.। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं दत्तात्रेयनाथाय स्वाहा पा. पूज. नमः तर्प.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

अथ तृतीयावरणम् :- (षट्कोणे) **"ॐ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः"** पुष्पाञ्जलिं दत्वा। षट्कोण में अर्चन तर्पण करें । **ॐ ऐं ह्लीं श्रीं सुभगायै स्वाहा. श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं भगसर्पिण्यै स्वाहा. श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं भगवाहिन्यै स्वाहा. श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं भगमालिन्यै स्वाहा. श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं भगशुद्धाय स्वाहा. श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं भगपत्न्यै स्वाहा. श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि दत्वा। **"पूजिताः तर्पिताः सन्तु"** कहकर अर्घेन संतृप्त।

अथ चतुर्थावरणम् - (अष्टदले) **ॐ चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः।** पुष्पाञ्जलि देवें। (अगर यंत्र में एक हि अष्टदल बना हो तो यह आवरण पूजा दल के मूल भाग में करें तथा पंचावरण पूजा दल के मध्य भाग में करें।)

अथ वसुपत्रे (अष्टदले)- **ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ब्राह्मयै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं महाश्वर्यै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कौमार्यै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं वैष्णव्यै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं वाराह्यै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं चन्द्राण्यै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं चामुण्डायै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा पा. पूजयामि नमः तर्पयामि।**

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

अथ पंचमावरणम् - (द्वितीय वसुपत्रे)- **पंचमावरण देवताभ्यो नमः।** पुष्पाञ्जलि अर्पण करें । प्रत्येक नाम मंत्र के पहिले **"ऐं ह्लीं श्रीं "** बोले और नाम के बाद **"स्वाहा. श्री पादुकां पूज. तर्प. नमः"** कहकर अर्चन व तर्पण करें। **ॐ ऐं ह्लीं श्रीं जयाय स्वाहा श्री पादुकां पूज. नमः तर्प.। विजयायै.। अजितायै.। अपराजितायै.। जृम्भिण्यै.। स्तंभिन्यै.। मोहिन्यै.। आकर्षिण्यै.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धीं ....**पंचमावरणार्चनम्।** से पुष्पाञ्जलि देवे, **पूजिताः तर्पिता सन्तु** से तृप्त करें।

अथ षष्टावरणम् – (पत्राग्रे)– **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं असिताङ्ग भैरवाय स्वाहा श्री पा. पू. न. त.। रुरुवभैरवाय.। चण्डभैरवाय.। उन्मत्त भैरवाय.। कपाली भैरवाय.। क्रोध भैरवाय.। भीषण भैरवाय.। संहार भैरवाय.।**

अभीष्ट सिद्धीं ......षष्टावरणार्चनम्। पुष्पाञ्जलि अर्पण करें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" कहकर अर्घेन संतृप्त।

अथ सप्तमावरणम् – (षोडश दले) "**अथ सप्तमावरण देवताभ्यो नमः**"। पुष्पाञ्जलि देवें। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बगलामुख्यै स्वाहा, श्री पादुकां पूज. नमः तर्प.। स्तंभिन्यै.। जृम्भिण्यै.। मोहिन्यै.। चंचलायै.। वश्यायै. कालिकायै.। कल्मषायै.। धात्र्यै.। कल्पन्तायै.। आकर्षिण्यै.। शाकिन्यै.। अष्टगंधायै.। भोगेच्छायै.। भाविकायै.।**

ॐ अभिष्ट सिद्धिं ....सप्तमावरणार्चनम्। पुष्प अर्पण करें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" कहकर अर्घेन संतृप्त।

अथ अष्टमावरणम् – (भपूरे) **ॐ अष्टमावरण देवताभ्यो नमः।** पुष्प छोडें। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्राय स्वाहा श्री पादुकां पूज नमः तर्प.। अग्नये अग्निं। यमाय.। निर्ऋत्याय। वरुणाय.। वायव्याय। कुबेराय.। ईशानाय। ब्रह्मणे.। अनंताय.।**

पुनः –पूर्वादि क्रमेण – **ऐं ह्रीं श्री वज्राय स्वाहा श्री पादु. पू. नमः तर्प.। शक्त्यै.। दण्डाय.। खड्गाय.। पाशाय.। अंकुशाय.। गदाय.। त्रिशूलाय.। पद्माय.। चक्राय.।**

अभिष्ट सिद्धिं ...... अष्टमावरणार्चनम्। पुष्प अर्पण करें। "**पूजिता सर्पिता सन्तु**" कहकर अर्घेन संतृप्त।

अथ नवमावरणाम् – (भूपुरे वहिः) – **ॐ नवमावरण देवताभ्यो नमः।** पूर्वे– **ऐं ह्रीं श्रीं गं गणेशाय स्वाहा श्री पादु. पूज. नमः तर्प.।** दक्षिणे – **वं वटुकाय.।** पश्चिमें – **यां योगिन्यै.।** उत्तरे– **क्षां क्षेत्रपालाय.।**

ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि अर्पण करें। "**पूजिता सर्पिता सन्तु**" कहकर अर्घेन संतृप्त।

मूल मंत्र पढ़कर ३ पुष्पाञ्जलि भगवती के अर्पण करें। यंत्र को शुद्ध कर गंधाक्षत् पुष्प, धूप, नैवेद्य अर्पण कर नीराजन करें।

॥ अथ श्री षडाम्नायपूजनम् ॥

॥ पूर्वाम्नाय पूजनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः गणपते श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवाय शिव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं वटुक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा अन्नपूर्णे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं भुवनेश्वरि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः बाले श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति पूर्वाम्नायः।

॥ दक्षिणाम्नाय पूजनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ हौं जूं सः मृत्युंजय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा बगलामुखि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति दक्षिणाम्नायः।

॥ पश्चिमाम्नाय पूजनम् ॥

ॐ ह्लीं श्रीं ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा रक्त चामुण्डे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे चण्डिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ॐ ह्लीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं हस्त्रैं हसकल्ह्रीं हस्त्रैं भैरवि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति पश्चिमाम्नायः।

॥ उत्तराम्नाय पूजनम् ॥

ॐ ह्लीं श्रीं क्रीं कालि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं त्रीं तारे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं हूं छिन्नमस्ते श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं धूं धूं धूमावति स्वाहा धूमावति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं मातङ्गि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं श्रीं कमले श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति उत्तराम्नायः।

॥ उर्ध्वाम्नाय पूजनम् ॥

ॐ ह्लीं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा महाविद्ये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।ॐ ह्लीं श्रीं ॐ ह्रीं बगलामुखि इत्यादि बगलामुखि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति ऊर्ध्वाम्नायः।

॥ अनुत्तराम्नाय पूजनम् ॥

ॐ ह्लीं श्रीं ह्सौः ह्सौः परा प्रासाद विद्ये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति अनुत्तराम्नायः।

ततो गन्धपुष्पधूपदीपसोपस्करं महानैवेद्यं पूर्ववत आधारोपरि देव्यग्रे निधाय, पूर्ववत् सम्पूज्य, धेन्वाऽमृतीकृत्य, ''अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा '' इति विशेषार्घ्यजलं दत्वा-

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् । पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ॥

'नैवेद्यं समर्पयामि' प्राणादिपञ्चमुद्राभिरर्पयेत्। प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा।

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद् । दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः । नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान् भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते, षड्रसान लोकधात्री ॥

किञ्चिन्मूलं प्रजप्य मध्ये पानीयं दत्वा पुनः क्षणं विलम्ब्य, 'अमृतापिधानमसि स्वाहा' इति जलं दत्वा॥ हस्त प्रक्षालन, ताम्बूलादि सर्वोपचार पूजनं कृत्वा।

॥ अथ विविध कामना प्रयोगाः ॥

बगलामुखी मंत्र जाप पश्चात् दशांश हवन करें। हरिद्रा एवं हरताल का प्रयोग स्तंभन हेतु हवनीय द्रव्यों में करें सर्वत्र पूजा क्रम पीताचार से करें अर्थात् हरिद्रा की माला, आसन, वस्त्र, पुष्प, नैवेद्यादि सभी पीत हो।

वल्लीसिद्धि- अथवा **मुक्तकेशस्तु चितायां परमेश्वरि। बगलां पूजयेद् यत्नादुपचारै र्यथोचितैः। मंत्र-ॐ नमो बगले ह्लीं स्वाहा।** १८००० जप करे। फिर गोधिका की देवि रूप में पूजा कर पुनः जप करे तो वल्ली के समान शब्द उच्चारित करेगी जिससे भूत भविष्य वार्ता का ज्ञान होवे।

वश्य प्रयोगः– कृष्ण वर्ण वैश्या के यहाँ से अंगार लाकर अग्नि प्रज्ज्वलित कर अर्धरात्रि को कज्जल बनायें एवं मंत्र जपे।

मंत्रः– ॐ बगलामुखि सर्व स्त्री हृदयं मम वश्यं कुरु ऐं ह्रीं स्वाहा।

स्वप्न विद्या– मंगलवार शनिवार को पीताचार से पूजन कर सौभग्यार्चन करें। १०८ मंत्र जप रात्रि में करें। मंत्र– **ॐ ह्रैं ह्रूं वाग्वादिनि सत्यं सत्यं ब्रूहि वद वद बगलामुखि ह्रैं ह्रूं नमः स्वाहा।**

दीपदान प्रयोगः– ३६ तंतु की वर्तिका बनाये, पीतार्चित करे। गोघृत या कौसुम्भ तैलकाम में लेवे। हरिद्रा युक्त रक्तवस्त्र भूमि पर बिछायें पीताचार से पूजन करे। दीप को त्रिकोण पर स्थापित कर नित्य एक मास तक जप करे कार्य सिद्धि होवे।

॥ वीराचार सिद्धि प्रयोगाः ॥

वीराचार से पूजन करने वाले मद्य, मांस, मीन, मुद्रा एवं मैथुन इन पंचतत्त्वों से देवी का अर्चन करते हैं। चक्रार्चन व पात्रा सादन पात्र वंदना पश्चात् शक्त्यार्चन सौभाग्यार्चन करते है। तंत्र में लिखा हैं कि जितेन्द्रिय होकर रतिसाधन करे। अर्थात् बिन्दु का पतन नहीं होना चाहिये, बिन्दुकाप्राणायाम कुंभक द्वारा उर्ध्वगमन करना चाहिये जो साधक सुख हेतु ऐसा करता हैं वह पतित होता हैं देवी उसे शाप दे देती हैं।

॥ सौभाग्यार्चनम् ॥

दीक्षिता शक्ति को ग्रहण करे अथवा उसे "**ह्रीं**" मंत्र देकर दीक्षित करे। उसको देवी समान उच्चासन देवे। ऊरु , नितंब, ऊरोज, स्तन, हस्त अंग प्रत्यंग में सुगंधित द्रव्यों का लेपन अर्चन करे। उसके अंगों में विविध देवी न्यास करे। योनिमुख का "**ऐं**" बीज से अर्चन करे। योनिकवच का पाठ करे (प्राणतोषणी तंत्रे) अपने अंगों में भी विविधन्यास कर दण्ड का शिव रूप में पूजन करे। मातृमुख में पितृमुख का समागम करे। दण्ड के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में शिव का अर्चन करे। योनि त्रिकोण में **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती** का पूजन करे। रति एवं काम की तृप्ति करे मंत्र का जाप करें।

गर्भंदेहि (धेहि) सिनिवाली गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं तेऽश्विनौ देवी आधत्तां पुष्करस्त्र जौ ॥ ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥

सौभाग्य मुद्रा में मूल मंत्र का जप करें। साधारण साधक "**रेतस्**" से तर्पण करे, परिपक्वसाधक उर्ध्वरेता होने का प्रयास करे। रेतस् तर्पण में अमुकामुक देवता पूजयामि तर्पयामि कहे।

॥ शय्या साधनम् ॥

कूहूवालि अमावस्या, पूर्णिमा वा संक्रांति दिन अथवा मंगल–शनिवार को, अष्टमी वा चतुर्दशी को चिता या शव का पूजन करे अशक्ति में शय्या साधना करे। अर्धरात्रि में नग्न होकर शय्या के समीप जाये। मूल मंत्र से शय्या को अभिषिंच करे। अपने दक्षिण में **गुरु चतुष्टय** तथा वामभाग में **गणपति** का स्मरण करे।

मध्ये **श्मशानवासिन्यै नमः। ह्रीं** से आसन की पूजा करें। आसन या शय्या तले "**ॐ ऐं फट्**" लिखे। मूल मंत्र से आचमन करे। **ॐ मणिधरवज्रिणि महाप्रतिसरे मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा** में शिखा बंधन कर, अंगन्यास, भूतशुद्धि

करे देवता का हृदय में मानसिक पूजन करे। शय्यातले लिखित मंत्र पर "**वं वटुकेभ्यो नमः**" से पूजन करे। मनसा पाद्यादि अर्पण करे जल से चारों ओर प्राकार बनाकर रक्षारेखा बनाये। ८ हजार जप का संकल्प करे। दशांश हवनादि कर्म करे। विशिष्ट साधक स्वयं को शिवस्वरूप माने। शय्या के चारों कोनों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर तथा मंच पर सदाशिव का आसन मानकर **कामेश्वर कामेश्वरि** का ध्यान करे। एवं त्रिपुरसुंदरी विधानवत् करे।

॥ त्रिपथ चतुष्पथ साधनम् ॥

त्रिपथ या चतुष्पथ पर जाकर भूमिशोधनादि कर्म करे दिग्रक्षण पूर्वक पूजा कर्म करे। इष्ट की पूजा कर आठों दिशाओं में बलिप्रदान करे। **काली कलालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी। विप्रचित्ता तथा नीला बलाका च धनत्विषा ॥** इन देवियों को आठों दिशाओं बलिप्रदान करे। पश्चात् मंत्र जप करे। विषाण वृक्ष के नीचे व निर्जन स्थान पर इष्ट सिद्धि हेतु कर्म करे।

बिल्वमूलेसाधनम्- बिल्वमूल के समीप जाकर आराधना करे गुरु गणेशादि पूजन कर कुबेर एवं क्षेत्रपाल से आज्ञा मांगे। बिल्व पेड़ में यक्ष का निवास भी मानते हैं इसलिये कुबेर से आज्ञा भी जरुरी हैं। क्षेत्रपाल व दिग्पाल बलि अवश्य देवें। आसन समीप "**ऐं ह्सौं ऐं**" लिखे। **ॐ क्षेत्रपाल महाभाग श्मशानाधिप सुव्रत। सिद्धिं देहि जगत्कर्तः देहि स्थानं नमोऽस्तु ते ॥**

॥ त्रिमुण्ड साधनम् ॥

शून्यागारे नदीतीरे पर्वते वा चतुष्पथे। बिल्वमूले श्मशाने वा निर्जनैः चैकलिङ्ग के ॥ ऐतेषु योजपेन् मुण्डं सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ मनुष्य के त्रिमुण्ड अथवा वानर, महिष एवं मार्जार के त्रिमुण्ड ग्रहण करे। गंधोदक से प्रोक्षण करे। कुछ लोगों का मत हैं गंगाजल से प्रोक्षण नहीं करे। नव अंगुल प्रमाण की वेदी बनाये। उन पर मुण्डों को स्थापित करे। न्यासादिकर्म एवं रक्षाकर्म कवचादि पठन करे। पूर्वादि दिशाओं में देवों का पूजन कर बलि प्रदान करे।

पूर्वे भूतनाथाय नमः। दक्षिणे श्मशानाधिपतये नमः। पश्चिमे काल भैरवाय नमः। उत्तरे ईशानाधिपतये नमः। प्रार्थना :- **देवेश देवदेवेश मुण्डरूप जगत्पते। दयां कुरु महाभाग सिद्धिदौ भवमुण्ड मे ॥**

पुष्पांजलि देकर "**ह्रीं ह्रीं हुं फट्**" इससे मुण्डों को पाद्यादि अर्पण करे। चारों कोणों में देवियों के हेतु बलि देवे। अग्निकोणे- **ह्रीं चण्डिकायै नमः।** नैऋत्य कोणे - **ह्रीं चामुण्डायै नमः।** वायव्ये - **ह्रीं भट्टुकरिण्यै नमः।** ईशाने - **ह्रीं दयायै नमः। श्मशानवासिनो ये ये देवा देव्यश्च भैरवाः। दयां कुर्वन्तु ते सर्वे सिद्धिदास्तु भवन्तु मे।** पुष्पांजलि देवे। स्थान को स्पर्श कर कहे - **वशोभव।** "**रं**" इस मंत्र से जलधारा द्वारा अष्टप्राकार की रक्षा रेखा की कल्पना करे। ८००० जप करे। कामनाका उल्लेख पूर्वक संकल्प कर जपसिद्धि करे।

॥ शत्रुविध्वंसक प्रयोगः ॥

मंत्रः- **ॐ ह्लीं ह्लीं पीताम्बरे अस्मत् शत्रूणां जिह्वां कीलय कीलय वाणीं स्तंभय स्तंभय मर्दय मर्दय ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा।**

विनियोगः- **अस्य श्री बगलामुखि शत्रुनिवारिणी स्तोत्र मंत्रस्य आदि सृष्टिकर्ता दारुण ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, पीताम्बरा देवता, ह्लीं शक्तिः, क्लीं कीलकं मम शत्रुविध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।**

ऋषि न्यासः- **आदिसृष्टि कर्त्रे दारुण ऋषये नमः पादयोः, अनुष्टुप् छन्दसे नमो नाभौ, पीताम्बरा देवतायै**

नमो मुखे, ह्रीं शक्तये नमः शिरसि, क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

ह्लां, ह्लीं इत्यादि से षडङ्गन्यास करें।

ध्यायेत् प्रेतासनां देवीं द्विभुजां च चतुर्भुजाम्। पीतवासां मणिग्रीवां सहस्रार्क समद्युतिम् ॥
ॐ ह्लीं हंकारिणी प्रोक्ता श्रीं श्रीं त्र्यम्बकतोषिणी। विम्बाकराल वदना ह्यस्मद् वैरिनिवारिणी ॥
स्नं स्नं दुकूल लंबोष्ठी फं फं स्वराग्रनासिका। खं खं खड्गप्रहारेण दुष्टवाणनिकृन्तिनी ॥
ठं ठं विध्वंसिनी देवी बं बं बुद्धिस्तंभनमुत्तमा। रं रं राज्यादिकं देवी बुद्धिव्यतिक्रमा ॥
लं लं लंबोदरी ध्यानात् सं सं सिद्धिप्रदा सदा। ह्रीं ह्लीं जय 'शत्रुलक्ष्मीं रुं रुं रुद्धयते सदा' ॥

अश्वचर्मासन पर दक्षिणाभिमुख वीरासन बैठकर हरिद्रा या वज्रमाला पर जप करे। अष्टगंध व हरिताल से पूजन करे। बलिकर्मादि पूर्ण क्रम करे।

॥ मारण प्रयोग ॥

प्रतिमाग्रे वा श्मशाने, नदीतटे, वा एकान्ते वा स्वगृहे दृढचित्तो भक्तिसहितो निर्भयं जपेत्। श्मशान मृत्तिका लाये उस पर कुश का आसन लगाकर जप करे। ऐसे क्रूर कर्मों में स्वरक्षा विधान अवश्य करना चाहिये।

मंत्र :- **ॐ नमो भगवति भक्षकरणे चतुर्भुजे पीताम्बरे उर्ध्वकेशे विकृतानने कालरात्रि मानुषाणां वसारुधिरभोजने अमुकस्य मृत्युपदे लं फट् हन हन दह दह मासं रुधिरं पिव पिव पच पच हुं फट् स्वाहा।**

इस मंत्र को कृष्णा चतुर्दशी वा उग्रदिन, वार नक्षत्रों में प्रारम्भ करे। रात्री को रोष चित्त से रिपुवध का स्मरण करते हुये जपे। अर्धरात्रि को हाथों से लिङ्गमस्तक पर मार्जन करे।

अथ बलिदानम् :- ॐ नमो ह्रीं अष्टभैरवाधिपतये सर्वकार्य प्रवृत्यर्थं सर्वशत्रु निवृत्यर्थं बलिं गृहाण गृहाण दीपं गृहाण गृहाण मे कार्यं कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं फट् स्वाहा।

॥ इति अथर्ववेदोक्त बगलारहस्ये सावर तंत्रे उल्लिखित विधानम् ॥

॥ अथ श्री बगला ब्रह्मास्त्र मालामन्त्रः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवति चामुण्डे नरकंकगृध्रोलूक परिवार सहिते श्मशानप्रिये नररुधिर मांसचरु भोजन प्रिये सिद्धविद्याधर वृन्द वन्दित चरणे ब्रह्मेश विष्णुवरुण कुबेर भैरवी भैरवप्रिये इन्द्रक्रोध विनिर्गत शरीरे द्वादशादित्य चण्डप्रभे अस्थिमुण्डकपालमालाभरणे शीघ्रं दक्षिणदिशि आगच्छागच्छमानय २ नुद २ अमुकं मारय २ चूर्णय २ आवेशयावेशय त्रुट २ त्रोटय २ स्फुट २ स्फोटय २ महाभूतान् जृम्भय २ ब्रह्मराक्षसानुच्चाटयोच्चाटय भूत-प्रेत पिशाचान् मूर्च्छय २ मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शत्रून् चूर्णय २ सत्यं कथय २ वृक्ष्येभ्यः संन्नाशय २ अर्कं स्तम्भय २ गरुड पक्षपातेन विषं निर्विषं कुरु २ लीलांगालय वृक्षेभ्यः परिपातय २ शैलकाननमहीं मर्दय २ मुखं उत्पाटयोत्पाटय पात्रं पूरय २ भूत भविष्यं यत्सर्वं कथय २ कृन्त २ दह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ घर्घर २ ग्रासय २ विद्रावय २ उच्चाटयोच्चाटय विष्णुचक्रेण वरुणपाशेन इन्द्रवज्रेण ज्वरं नाशय नाशय प्रविदं स्फोटय २

सर्वशत्रून् मम वशं कुरु कुरु पातालं प्रत्यंतरिक्षं आकाशग्रहं आनयानय करालि विकरालि महाकालि रुद्रशक्ते पूर्वदिशं निरोधय २ पश्चिमदिशं स्तम्भय २ दक्षिणदिशं निधय २ उत्तरदिशं बंधय २ ह्रां ह्रीं ॐ बंधय २ ज्वालामालिनि स्तम्भिनि मोहिनि मुकुट विचित्र कुण्डल नागादि वासुकी कृतहार भूषणेमेखला चन्द्रार्कहास प्रभंजने विद्युत्स्फुरित सकाश साट्टहासे निलय २ हुं फट् २ विजृंभितशरीरे सप्तदीपकृते ब्रह्माण्ड विस्तारितस्तनयुगले असिमुसल परशुतोमरक्षुरिपाशहलेषु वीरान् शमय शमय २ सहस्त्रबाहु परापरादि शक्ति विष्णु शरीरे शंकर हृदयेश्वरि बगलामुखि सर्वदुष्टान् विनाशय २ हुं फट् स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि ये केचनापकारिणः सन्ति तेषां वाचं मुखं पदं स्तम्भय २ जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय २ ह्रीं ॐ स्वाहा ॐ ह्लींह्रीं हिली हिली अमुकस्य वाचं मुखं पदं स्तम्भय शत्रुंजिह्वां कीलय शत्रूणां दृष्टिमुष्टि गतिमति दंत तालु जिह्वां बंधय २ मारय २ शोषय २ हुं फट् स्वाहा।

॥ इति बगलातन्त्रे ब्रह्मास्त्रमालामन्त्रः सम्पूर्णः ॥

॥ अथ बगलामुखी कवचम् ॥

(रुद्रयामले)

॥ श्रीभैरवी उवाच ॥

श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर । इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ॥१॥
वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम् । शुभदं स्मरणात् पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशन ॥२॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे । पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥३॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीबगलामुखी देवता। लं बीजं। ईं शक्तिः। ऐं कीलकम्। पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः।

शिरो मे बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा । ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी ॥४॥
गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी । वैरिजिह्वा धरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥५॥
उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात् परा । परात् परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ॥६॥
हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे । विवादे विषमे घोरे संग्रामेरिपुसंकटे ॥७॥
पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्गं शिवनर्तकी । श्रीविद्या समयं पातु मातङ्गी पूरिता शिवा ॥८॥
पातु पुत्रं सुतां चैव कलत्रं कालिका मम । पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा ॥९॥
रन्ध्रे हि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम् । न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१०॥
पठनाद् धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छितं लभेत् । इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥११॥
पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः । वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ॥१२॥
महाभये विपत्तौ च पठेद् वा पाठयेत् तु यः । तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति ॥१३॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले श्रीबगलामुखी कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ बगलामुखी ब्रह्मास्त्र कवचम् ॥

(१)

इस कवच में प्रयुक्त मंत्र के जप एवं संपुटित दुर्गापाठ कराने पर शत्रुनाश, प्रेतदोषशमन, आर्थिक उन्नति हेतु कई सफल प्रयोग किये है। षट्त्रिंशतात्मक (३६ अक्षर वाले) मंत्र के विकल्प में इस मंत्र में मंत्रोच्चारण या ध्यान समय त्रुटि की संभावना भी नहीं रहती है। हमने विकट परिस्थिति में इस मंत्र के कई सफल प्रयोग कियें है।

कैलासाचलमध्यगं पुरवहं शान्तं त्रिनेत्रं शिवम् । वामस्था गिरिजा प्रणम्य कवचं भूतिप्रदं पृच्छति ॥
देवीश्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या । तस्याश्चापविमुक्तमन्त्रसहितं प्रीत्याधुना ब्रुहिमाम् ॥१॥

॥ श्रीशङ्कर उवाच ॥

देवि श्रीभवबल्लभे शृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदम् । देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम् ॥
तारं रुद्रवधू विरिञ्चिमहिला विष्णुप्रिया कामयुक् । कान्ते श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय युग्मं त्वति ॥२॥
ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं । कार्यं साधय युग्मयुच्छिववधूवह्निप्रियान्तो मनुः ॥
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणी तथा । कीलं श्रीमति भैरवर्षिसहितं छन्दो विराट्संयुतम् ॥३॥
स्वेष्टार्थस्य परस्य वेति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये । नानाऽसाध्यमहागदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये ॥
ध्यात्वाश्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकम् । दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिलाबीजैर्विन्यस्याङ्गके ॥४॥

॥ ध्यानम् ॥

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनांपीतांशुकोल्लासिनीम् । हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटांसच्चम्पकस्रग्युताम् ॥
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः । व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीबगलामुखी ब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम (परस्य) च मनोभिलषितेष्टकार्य सिद्धये विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **शिरसि भैरव ऋषये नमः। मुखे विराट्छन्दसे नमः। हृदि बगलामुखी देवतायै नमः। गुह्ये क्लीं बीजाय नमः। पादयोः ऐं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे श्रीं कीलकाय नमः।**

करन्यास :- **ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यास :- **ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्, ॐ ह्रैं कवचाय हुम्, ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।**

मन्त्रोद्धारः :- **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय, ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।**

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् । सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने ॥१॥
श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम् । पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ॥२॥
देहिद्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम । कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ॥३॥

कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम । मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥४॥
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढ्या बगलामुखी । रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ॥५॥
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु । मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥६॥
ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु । मुखिवर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम् ॥७॥
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् । वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी ॥८॥
जङ्घायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी । स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥९॥
जिह्वावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च । पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ॥१०॥
विनाशयपदं पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे । ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे ॥११॥
सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु । ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ॥१२॥
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु । कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥१३॥
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु । ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥१४॥
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः । राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥१५॥
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु । द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ॥१६॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम । इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ॥१७॥
श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम् । अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥१८॥
निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठतः । जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम् ॥१९॥
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु यः । यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले ॥२०॥
तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शङ्करि । गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः ॥२१॥
कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन । यं ध्यात्वा प्रजपेन् मंत्रं सहस्रं कवचं पठेत् ॥२२॥
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः । लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ॥२३॥
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम् । एकविंशद्दिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्रकम् ॥२४॥
जप्त्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम् । संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा ॥२५॥
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् । श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ॥२६॥
नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि । वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्यावलसमन्वितः ॥२७॥
श्मशानाङ्गारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ । पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया ॥२८॥
भूमौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत् । हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम् ॥२९॥
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः । म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः ॥३०॥
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत् । धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥३१॥
संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् । ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ॥३२॥

सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् । वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः ॥३३॥
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः । कवितालहरी तस्य भवेद् गङ्गाप्रवाहवत् ॥३४॥
गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवीप्रसादतः । एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते ॥३५॥
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् । न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ॥३६॥
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।
शतकोटि जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न- जायते ॥३७॥
दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेष्टगन्धेन वै
धृत्वा राजपुरं ब्रजन्ति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृपः ॥३८॥

॥ इति श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचम् सम्पूर्णम् ॥

(२) ॥ अथ श्री ब्रह्मास्त्र बगला वज्र कवचम् ॥

॥ श्री ब्रह्मोवाचः ॥

विश्वेश दक्षिणामूर्ते निगमागमवित् प्रभो । मह्यं पुरा त्वया दत्ता विद्या ब्रह्मास्त्रसंज्ञिता ॥१॥
तस्य मे कवचं बूहि येनाहं सिद्धिमाप्नुयाम् । भवामि वज्रकवचं ब्रह्मास्त्रन्यासमात्रतः ॥२॥

॥ श्री दक्षिणामूर्तिरुवाचः ॥

शृणु ब्रह्मन् परंगुह्यं ब्रह्मास्त्रकवचं शुभम् । यस्योच्चारणमात्रेण भवेद् वै सूर्यसन्निभः ॥३॥
सुदर्शनं मयादत्तं कृपया विष्णवे तथा । तद्वत् ब्रह्मास्त्रविद्यायाः कवचं कथयाम्यहम् ॥४॥
अष्टाविंशत्यस्त्रहेतुमाद्यं ब्रह्मास्त्रमुत्तमम् । सर्वतेजोमयं सर्व सामर्थ्य विग्रहं परम् ॥५॥
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वदारिद्र्यनाशनम् । सर्वापच्छैलराशीनामस्त्रकं कुलिशोपमम् ॥६॥
न तस्य शत्रवश्चापि भयं चौर्यभयं जरा । नरा नार्यश्च राजेन्द्र खगा व्याघ्रादयोऽपि च ॥७॥
तं दृष्ट्वा वशमायान्ति किमन्यत् साधवो जनाः। यस्य देहे न्यसेद् धीमान् कवचं बगलामयम् ॥८॥
स एव पुरुषो लोके केवलः शङ्करोपमः । न देय परशिष्याय शठाय पिशुनाय च ॥९॥
दातव्यं भक्तियुक्ताय गुरुदासाय धीमते । कवचस्य ऋषिः श्रीमान् दक्षिणामूर्तिरेव च ॥१०॥
अस्यानुष्टुप् छन्दः स्यात् श्रीबगला चास्य देवता। बीजं श्रीवह्निजाया च शक्तिः श्रीबगलामुखी ॥११॥
कीलकं विनियोगश्च स्वकार्ये सर्वसाधके।

॥ अथ ध्यानम् ॥

शुद्धस्वर्णनिभां रामां पीतेन्दुखण्डशेखराम् । पीतगन्धानुलिप्ताङ्गीं पीतरत्नविभूषणाम् ॥

पीनोन्नतकुचां स्निग्धां पीतलाङ्गीं सुपेशलाम् । त्रिलोचनां चतुर्हस्तां गम्भीरां मदविह्वलाम् ॥
वज्रारि रसनापाशमुदगरं दधतीं करैः । महाव्याघ्रासनां देवीं सर्वदेवनमस्कृताम् ॥
प्रसन्नां सुस्मितां क्लिन्नां सुपीतां प्रमदोत्तमाम् । सुभक्तदुःखहरणे दयार्द्रां दीनवत्सलाम् ॥

एवं ध्यात्वा परेशानि बगलाकवचं स्मरेत्।

॥ अथ रक्षाकवचम् ॥

बगला मे शिरः पातु ललाटं ब्रह्मसंस्तुता । बगला मे भ्रुवौ नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणि ॥
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा । मोहिनी नासिकां पातु श्रीदेवी बगलामुखी ॥
ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला । सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रे शारदाम्बिके ॥
अकल्मषा मुखे पातु चिबुके बगलामुखी । धीरा मे कण्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी ॥
शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका । कण्ठमूले महाभोगा सकन्धौ शत्रुविनाशिनी ॥
भुजौ मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा । बगला मे सदा पातु कूर्परे कमलोद्भवा ॥
बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धे महाबला। बगलाश्रीर्हस्तयोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम् ॥
नखेषु वज्रहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनी । स्तनौ मे मन्दगमना कुक्षयोर्योगिनी तथा ॥
उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवता । पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पातु नो देववन्दिता ॥
पार्श्वयोर्हनुमद्वन्द्या पशुपाशविमोचिनी । करौ रामप्रिया पातु ऊरुयुग्मं महेश्वरी ॥
भगमाला तु गुह्यं मे लिङ्गं कामेश्वरी तथा । लिङ्गमूले महाक्लिन्ना वृषणौ पातु दूतिका ॥
बगला जानुनी पातु जानुयुग्मं च नित्यशः । जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावण-पूजिता ॥
चरणौ दुर्जया पातु पीताम्बा चरणाङ्गुलीः । पादपृष्ठं पद्महस्ता पादाधश्चक्रधारिणी ॥
सर्वाङ्गं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखी । ब्राह्मी मे पूर्वतः पातु माहेशी बह्निभागतः ॥
कौमारी दक्षिणे पातु वैष्णावी स्वर्गमार्गतः । ऊर्ध्वं पाशधरा पातु शत्रुजिह्वाधरा ह्यधः ॥
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये । बगला भैरवी पातु नित्यं क्लींकाररूपिणी ॥
इत्येवं वज्रकवचं महाबह्मास्त्र संज्ञकम् । त्रिसन्ध्यं यः पठेद् धीमान् सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥
न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च । बलेनाकृष्य शत्रुं सोऽपि मित्रत्वमाप्नुयात् ॥
शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः । रूपेण कामतुल्यः स्याद् आयुषा शूलधृक्समः ॥
सनकादिसमो धैर्य श्रिया विष्णुसमो भवेत् । तत्तुल्यो विद्यया ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः ॥
नारी वापि प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात् । द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः ॥
तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्रंयात् । याता तुरीयं संध्यायां भूशय्यायां प्रयत्नतः ॥
सर्वान् शत्रून् क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयान् नरः । दारिद्र्यान् मुच्यते चाऽऽशु स्थिरा लक्ष्मीर्भवेद् गृहे ॥
सर्वान् कमानवाप्नोति सविषो निर्विषो भवेत् । ऋण निर्मोचनं स्याद् वै सहस्त्रावर्तनाद् विधे ॥

भूतप्रेतपिशाचदिपीडा तस्य न जायते । द्युमणिभ्राजते यद्वत् तद्वत् स्याच्छ्रीप्रभावतः ॥
स्थिराभया भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम् । जयदं बोधनं काममसुकं देहि मे शिवे ॥
जपस्यान्ते स्मरेद् यो वै सोऽभीष्टफलमाप्नुयात् । इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥
न स सिद्धिमवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं ब्रह्मतेजसम् ॥
नित्यं पदाम्बुजध्यानन् महेशानसमो भवेत्।

॥ इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां ब्रह्मास्त्रबगलामुखीकवचम् समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री त्रैलोक्यविजय कवचम् ॥

॥ श्री भैरव उवाचः ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम् । श्रुत्वा गोप्यं गुप्ततमं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि ॥१॥
कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ । तत्सर्वस्वं परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मना ॥२॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम् । मन्त्रगर्भं ब्रह्ममयं सर्वविद्या विनायकम् ॥३॥
रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपकम् । ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ ॥४॥
पूर्णमेकोनपञ्चाशद् वर्णैरुक्त महेश्वरि । त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५॥

॥ श्री देव्युवाचः ॥

भगवन् करुणासार विश्वनाथ सुरेश्वर । कर्मणा मनसा वाचा न वदामि कदाचन् ॥१॥

॥ श्री भैरव उवाचः ॥

त्रैलोक्य विजयाख्यस्य कवचास्यास्य पार्वति । मनुगर्भस्य गुप्तस्य ऋषिर्देवोऽस्य भैरवः ॥१॥
उष्णिक्छन्दः समाख्यातं देवी श्रीबगलामुखी । बीजं ह्लीं ॐ शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते ॥२॥
विनियोगः समाख्यातः त्रिवर्गफलप्राप्तये । देवि त्वं पठ वर्मैतन्मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि ॥३॥
बिनाध्यानं कुतः सिद्धि सत्यमेतच्च पार्वति। चन्द्रोद्भासितमूर्धजां रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकराम् ॥४॥
बालांसत्त्रकचञ्चलां मधुमदां रक्तां जटाजूटिनीम्। शत्रुस्तम्भनकारिणीं शशिमुखीं पीताम्बरोद्भासिनीम् ॥५॥
प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे । ॐ ह्लीं मम शिरः पातु देवी श्रीबगलामुखी ॥६॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे भालं देवी स्तम्भनकारिणी । ॐ अं इं हं भ्रुवौ पातु क्लेशहारिणी ॥७॥
ॐ हं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी । ॐ ह्लीं श्रीं पातु मे गण्डौ अं आं इं भुवनेश्वरी ॥८॥
ॐ ऐं क्लीं सौः श्रुतौ पातु इं ईं ऊं च परेश्वरी । ॐ ह्लीं ह्लूं ह्लीं सदाव्यान्मे नासां ह्लीं सरस्वती ॥९॥
ॐ ह्लां ह्लीं मे मुखं पातु लीं एं ऐं छिन्नमस्तिका । ॐ श्री वं मेऽधरौ पातु ओं औं दक्षिणकालिका ॥१०॥
ॐ क्लीं श्रीं शिरसः पातु कं खं गं घं च सारिका । ॐ ह्रीं ह्रूं भैरवी पातु ङं अं अः त्रिपुरेश्वरी ॥११॥
ॐ ऐं सौः मे हनुं पातु चं छं जं च मनोन्मनी । ॐ श्रीं श्रीं मे गलं पातु झं ञं टं ठं गणेश्वरी ॥१२॥

ॐ स्कन्धौ मेऽव्याद् डं ढं णं हूं हूं चैव तु तोतला । ॐ ह्रीं श्रीं मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी ॥१३॥
ऐं क्लीं सौः स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी । क्रों क्रों मे रक्षयेद् वक्षः फं बं भं भगवासिनी ॥१४॥
ॐ ह्रीं रां पातु कक्षि मे मं यं रं वह्निवल्लभा । ॐ श्रीं हूं पातू मे पार्श्वौ लं बं लम्बोदर प्रसूः ॥१५॥
ॐ श्रीं ह्रीं हूं पातु मे नाभि शं षं षण्मुखपालिनी । ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठ सं हं हाटकरूपिणी ॥१६॥
ॐ क्लीं ऐं कटि पातु पञ्चाशद्वर्णमालिका । ॐ ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं अं आं कं गुह्यकेश्वरी ॥१७॥
ॐ श्रीं ऊं ॠं सदाव्यान्मे इं ईं खं खां स्वरूपिणी । ॐ जूं सः पातु मे जंघे रुं रूं धं अघहारिणी ॥१८॥
श्रीं ह्रीं पातु मे जानू उं ऊं णं गणवल्लभा । ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ लिं लीं ऊं चं च चण्डिका ॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं पातु मे वाणी एं ऐं छं जं जगत्प्रिया । ॐ श्रीं क्लीं पातु पादौ मे झं ञं टं ठं भगोदरी ॥२०॥
ॐ ह्रीं सर्वं वपुः पातु अं अः त्रिपुरमालिनी । ॐ ह्रीं पूर्वे सदाव्यान्मे झं झां डं ढं शिखामुखी ॥२१॥
ॐ सौःयाम्यं सदाव्यान्मे इं ईं णं तं च तारिणी । ॐ वारुण्यां च वाराही ऊं थं दं धं च कम्पिला ॥२२॥
ॐ श्रीं मां पातु चैशान्यां पातु ॐ नं जनेश्वरी । ॐ श्रीं मां चाग्नेयां ॠं भं मं धं च यौगिनी ॥२३॥
ॐ ऐं मां नैऋत्यां लूं लां राजेश्वरी तथा । ॐ श्रीं पातु वायव्यां लृं लं वीतकेशिनी ।
ॐ प्रभाते च मो पातु लीं लं वागीश्वरी सदा ॥२४॥
ॐ मध्याह्ने च मां पातु ऐं क्षं शङ्करवल्लभा । श्रीं ह्रीं क्लीं पातु सायं ऐ आं शाकम्भरी सदा ॥२५॥
ॐ ह्रीं निशादौ मां पातु ॐ सं सागरवासिनी । क्लीं निशीथे च मां पातु ॐ हं हरिहरेश्वरी ॥२६॥
क्लीं ब्राह्मे मुहूर्तेऽव्याद लं लां त्रिपुरसुन्दरी । विसर्गा तु यत्स्थानं वर्जित कवचेन तु ॥२७॥
क्लीं तन्मे सकलं पातु अं क्षं ह्रीं बगलामुखी । इतीदं कवचं दिव्यं मन्त्राक्षरमय परम् ॥२८॥
त्रैलाक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम् । अप्रकाश्यं सदा देवि श्रोतव्यं च वाचिकम् ॥२९॥
दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति । न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥३०॥
दीक्षाकार्य विहीनाय शक्तिभक्ति विरोधिने । कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत् ॥३१॥
कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम् । ब्रह्मविद्यामयं गोप्यं यथेष्टफलदं शिवे ॥३२॥
न कस्य कथितं चैतद् त्रैलोक्य विजयेश्वरम् । अस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्योवशी भवेत् ॥३३॥
पठनाद् धारणादस्य कवचेशस्य साधकः । कलौ विचरते वीरो यथा श्रीबगलामुखी ॥३४॥
इदं वर्म स्मरन् मन्त्री संग्रामे प्रविशेद् यदा । युयुत्सुः पठन् कवचं साधको विजयी भवेत् ॥३५॥
शत्रुं कालसमानं तु जित्वा स्वगृहमेति सः । मूर्ध्नि धृत्वा यः कवचं मन्त्रगर्भं सुसाधकः ॥३६॥
ब्रह्माद्यमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत् । धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि ॥३७॥
वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः । उत्पातेषु धोरेषु भयेषु विविधेषु च ॥३८॥
रोगेषु च कवचेशं मन्त्रगर्भं पठेन्नरः । कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शांतिमेष्यति ॥३९॥
श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मयोदितम् । त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्र धनप्रदम् ॥४०॥

ऋणं च हरते सम्यक् लक्ष्मीर्भोगविवर्धिनी । बन्ध्या जनयते कुक्षौ पुत्ररत्नं न चान्यथा ॥४१॥
मृतवत्सा च विभृयात् कवचं च गले सदा । दीर्घायुर्व्याधिहीनश्च तत्पुत्रो वर्धतेऽनिशम् ॥४२॥
इतीदं बगलामुख्याः कवचेशं सुदुर्लभम् । त्रैलोक्यविजयं नाम न देयं यस्यकस्यचित् ॥४३॥
अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनायदम्भिने । लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन् ॥४४॥
लोभदम्भविहीनाय कवचेशं प्रदीयताम् । अभक्तेभ्यो अपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेन्नरः ॥४५॥
रवौ रात्रौ च सुस्नातः पूजागृहगतः सुधीः । दीपमुज्वाल्य मूलेन पठेद्वर्मेदमुत्तमग् ॥४६॥
प्राप्तौ सत्यां त्रिरात्रौ हि राजा तद्गृहमेष्यति । मण्डलेशो महेशानि देवि सत्यं न संशय ॥४७॥
इदं तु कवचेशं तु मया प्रोक्त नगात्मजे । गोप्यं गुह्यतरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४८॥

॥ इति विश्वयामले बगलामुख्यास्त्रैलोक्यविजयं कवचम् ॥

॥ अथ श्री बगला यंत्रराज रक्षा स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र में बगला मंत्र ऋषि नारद, छंद पंक्ति, देवता पीताम्बरा, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्ति, सं कीलक, शत्रुविनाशक विनियोग कहा गया है तथा इस स्तोत्र के पाठ से यंत्रार्चन का फल प्राप्त होता है।

वन्दे सकलसन्देह दावपावकमीश्वरम् । करुणावरुणावासं भक्तकल्परुं गुरुम् ॥१॥
उल्लसत्पीतविद्योति विद्योतिततनुत्रयम् । निगमागम सर्वस्वमीडेऽहं तन्महन्महः ॥२॥
ॐ पूर्वं स्थिरमायां च बगलामुखि सर्वतः । दुष्टानां वाचमुच्चार्य मुखं पदं तथोद्धरेत् ॥३॥
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति समुद्धरेत् । बुद्धिंविनाशयेति पदं स्थिरमायामनुस्मरेत् ॥४॥
प्रणवं वह्निजायां चेत्येष पैताम्बरो मनुः । पातु मां सर्वदा सर्वनिग्रहानुग्रहक्षमः ॥५॥
कण्ठं नारद ऋषिः पातु पङ्क्तिश्छन्दोऽवतान्मुखम् । पीताम्बरा देवता तु हृन्मध्यमवतान्मम् ॥६॥
ह्लीं बीजं स्तनयोर्मेऽव्यात् स्वाहा शक्तिश्च दन्तयोः । सं कीलकं तथा गुह्ये विनियोगोगोऽवताद् वपुः ॥७॥
षड्दीर्घभाजा बीजेन न्यासोऽव्यान्मे करादिकम् । द्विपञ्चपञ्चनन्देषुदशभिर्मन्त्र वर्णकैः ॥८॥
षडङ्गकल्पना पातु षडङ्गानि ह्यनुक्रमात् । ऐं विद्यातत्वं क्लीं मायातत्वं सौश्च शिवात्मकम् ॥९॥
तत्वत्रयं सं बीजं च मूलं हृत्कण्ठमध्यगः । सुधाब्धौ हेमभूरुढचम्पकोद्यानमध्यतः ॥१०॥
गारुडोत्पलनिर्व्यूढ स्वर्णसिंहासनोपरि । स्वर्णपङ्कजसंविष्टां त्रिनेत्रां शशिशेखराम् ॥११॥
पीतालङ्कारवसनां मल्लीचन्दनशोभिताम् । सव्याभ्यां पञ्चशाखाभ्यां वज्रं जिह्वां च विभ्रतीम् ॥१२॥
मुद्गरं नागपाशं च दक्षिणाभ्यां मदालसाम्। भक्तारिविग्रहोद्योग प्रगल्भां बगलामुखीम् ॥१३॥
ध्यायमानस्य मे पातु शात्रवोद्द्वेषणे भृशम् । भूकलादलदिक्पत्रषट्कोणं त्र्यस्त्रबैन्दुकम् ॥१४॥
यन्त्रं पैताम्बरं पायाद् पायात् सा माम् अविग्रहा । आधारशक्तिमारभ्य ज्ञानात्मान्तास्तु शक्तयः ॥१५॥
पीठाद्याः पान्तु पीठेऽत्र प्रथमं मां च रक्षतु। शान्तिशङ्खविशेषात्मशक्ति भूतानि पान्तु माम् ॥१६॥

आवाहनाद्याः पञ्चापि मुद्राश्च सुमनोजलैः। त्रिकोणमध्यमारभ्य पूजिता बगलामुखी ॥१७॥
क्रोधिनी स्तम्भिनी चापि धारिण्यश्चापि मध्यगाः। ओजः पूषादिपीठानि कोणाग्रेषु स्थितानि वै ॥१८॥
त्रिकोणबाह्यतः सिद्धनाथाद्या गुरवस्तथा। सिद्धनाथः सिद्धनन्दनाथः सिद्धपरेष्ठि-हि ॥१९॥
नाथः सिद्धः श्रीकण्ठश्च नाथः सिद्धचतुष्टयम्। पातु मामथ षट्कोणे सुभगा भगरूपिणी ॥२०॥
भगोदया च भगनिपातिनी भगमालिनी। भगावह च मां पातु षट्कोणाग्रेषु च क्रमात् ॥२१॥
त्वगामा शोणितात्म च मांसात्मा मेदसात्मकः। रूपात्मा परमात्मा च पातु मां स्थिरविग्रहा ॥२२॥
अष्टपत्रेषु मूलेषु ब्राह्मी माहेश्वरी तथा। कौमारी वैष्णवी वाराहीन्द्राणी च तथा पुनः ॥२३॥
चामुण्डा च महालक्ष्मीस्तत्र मध्ये पुनर्जया। विजया च जयाम्बा च राजिता जृम्भिणी तथा ॥२४॥
स्तम्भिनी मोहिनी वश्याऽकर्षिणी, अथ तदग्रके। असिताङ्गी रुरुश्चण्डः क्रोधोन्मत्तकपालिनः।
भीषणश्चापि संहार एते रक्षन्तु मां सदा ॥२५॥
ततः षोडशपत्रेषु मङ्ला स्तम्भिनी तथा। जृम्भिणी मोहिनी वश्या ज्वालासिंही वलाहका ॥२६॥
भूधरा कल्मषा धात्री कन्यका कालकर्षिणी। भान्तिका मन्दगमना भोगस्था भाविकेति च ॥२७॥
पातु मामथ भूसद्म दशदिक्षु दिगीश्वराः। इन्द्रोऽनलो यमो रक्षो वरुणो मारुतः शशी।
ईशाऽनन्तः स्वयम्भूश्च दशैते पान्तम मे वपुः ॥२८॥
वज्र शक्तिर्दण्डखड्गौ पाशाङ्कुशगदाः क्रमात्। शूलं चक्रं सरोजं च तत्तच्छस्त्राणि पान्तु माम् ॥२९॥
अथ च पूर्वादिचतुद्वरिषु परतः क्रमात्। पातु विघ्नेशवटुकौ योगिनी क्षेत्रपालकः ॥३०॥
गुरुत्रयं त्रिरेखासु पातु मे वपुरञ्जसा। पुनः पीताम्बरा पातु उपचारैः प्रपूजिता ॥३१॥
साङ्गावरणशक्तिश्च जयश्रीः पातु सर्वदा। वलयं, वटुकादिभ्यो रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥३२॥
शक्तयः साधका वीराः, पान्तु मे देवता इमाः। इत्यर्चाक्रमतः प्रोक्तं स्तोत्रं पैताम्बरं परम् ॥३३॥
यः पठेत् सकृदप्येतत् सोऽर्चाफलमवाप्नुयात। सर्वथा कारयेत् क्षिप्रं प्रपद्यन्ते गदातुरान् ॥३४॥
राजानो राजपत्न्याश्च पौर जानपदास्तथा। वशगास्तस्य जायन्ते सततं सेवका इव ॥३५॥
गुरुकल्पाश्च विबुधा मूकता यान्ति तेऽग्रतः। स्थिरीभवति तद्गेहे चपलानि हरिप्रिया ॥३६॥
पीताम्बराङ्गवसनो यदि लक्षसंख्यं, पैताम्बरं मनुममुं प्रजपेत् नरो यः ॥
हैमीं सकृन्नियमवान् विधिना हरिद्रामालां दधत् भवति तदवशगा त्रिलोकी ॥३७॥
भवानि बगलामुखि त्रिदशकल्पवल्लि प्रभो कृपाजलनिधे तब चरणधूतबाधाखिलः ॥
सुरासुरनरादिक सकलभक्तभाग्यप्रदे, त्वदङ्घ्रिसरसीरुहद्वयमहं तु ध्याये सदा ॥३८॥
त्वमम्ब जगतां जनिस्थितिविनाशर्बी निज प्रकाशबहुलद्युतिर्भवति भक्तहृन्मध्यगा।
त्रयीमनुसुपूजिता हरिहरादिवृन्दारकै, रनुक्षणमनुक्षणं मयि शिवे क्षणं वीक्ष्यताम् ॥३९॥
शिवे तव तनूमहं हरिहराद्यगम्यां पराम्, निखिलतापप्रत्यूह हृद्दयाभावयुक्तां स्मरे ॥
विदारय विचूर्णय ग्लपय शोषय स्तम्भय, प्रणोदय विरोधय प्रविलय प्रबद्धारीणाम् ॥४०॥

क्व पार्वति कृपालसन् मयि कटाक्षपातं मनाग्। अनाकुलतया क्षणं क्षिप विपक्षसंक्षोभिणि।
यदीक्षणपथं गतः सकृदपि प्रभुः कश्चन स्फुटं मय वशंवदा भवतु तेन पीताम्बरे ॥४१॥
ॐ नमो भगवतेमहारुद्राय हुं फट् स्वाहा। इति भैरवमन्त्रः। इति अथर्वणरहस्ये बगलामुख्या अर्चाक्रमस्तोत्रम्॥

॥ इति श्रीदेवानन्दनाथशिष्यरामचन्द्रनाथविरचितायां मन्त्रसंग्रह दीपिकायां श्रीबगलास्तवराजः समाप्तः ॥

॥ अथ बगलापञ्जर स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र स्वरक्षा कारक एवं श्रीवृद्धि कारक है।

॥ सूत उवाच ॥

सहस्त्रादित्यसंकाशं शिवं साम्बं सनातनम्। प्रणम्य नारदः प्राह विनम्रो नतकन्धरः ॥१॥

॥ श्री नारद उवाच ॥

भगवन् साम्ब तत्त्वज्ञ सर्वदुःखापहारक। श्रीमत्पीताम्बरादेव्याः पञ्जरं पुण्यदं सताम् ॥२॥
प्रकाशय विभो नाथ कृपां कृत्वा ममोपरि। यद्यहं तव पादाब्जधूलिधूसरितोऽभवम् ॥३॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

विनियोग च ऋष्यादिन्यास : – ॐ अस्य श्रीमद्बगलामुखीपीताम्बरा पञ्जररूपस्तोत्र मन्त्रस्य भगवते नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, जगद्वश्यकरी श्रीपीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो दक्षिणस्तने स्वाहा शक्तये नमो वामस्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम विपक्ष परसैन्यमन्त्रतन्त्र यन्त्रादिकृत क्षयार्थं श्रीमत्पीताम्बराबगलादेव्याः प्रीतये जपे विनियोगः। करसम्पुटेन मूलेन करशुद्धिः। ह्लामिति षट्दीर्घेण षडङ्गः। मूलेन व्यापकन्यासं कुर्यात्।

ह्लां, ह्लीं, ह्लूं, ह्लैं, ह्लौं, ह्लः से षडङ्गन्यास करें।

॥ अथ ध्यानम् ॥

मध्येसुधाब्धिमणिमण्डित रत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥

इति ध्यात्वा मनसा सम्पूज्य, मुद्रां प्रदर्श्य, ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, पञ्जरं न्यसेत्।

॥ श्रीशिव उवाच ॥

पञ्जरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम्। यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नराः क्वचित् ॥१॥
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिवर्धिनी। पातु मामनिशं साक्षात् सहस्त्रार्कसमद्युतिः ॥२॥
शिखादिपाद पर्यन्तं वज्रपञ्जरधारिणी। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमद्ब्रह्मास्त्रविद्या या पीताम्बर विभूषिता ॥३॥
बगला मामवत्वत्र मूर्धभागं महेश्वरी। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कामाङ्कुशकला पातु बगला शास्त्रबोधिनी ॥४॥
पीताम्बरा सहस्त्राक्षा ललाटं कामितार्थदा। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी ॥५॥
कर्णयोश्चैव युगपद अतिरत्नप्रपूजिता। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ॥६॥

पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्माविष्णवादिसेविता ॥७॥
पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद् भ्रुवौ । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला वलिदा पीतवस्त्रधृक् ॥८॥
अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वां च मुखगां मम । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी ॥९॥
गले हस्ते तथा वाह्वोः युगपद् बुद्धिदा सताम् । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्त्रगनुलेपना ॥१०॥
हृदये च स्तनौ नाभौ करावपि कृशोदरी । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रघनावृता ॥११॥
जङ्घायां च तथा चोर्वोर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी । अनुक्तमपि यत् स्थानं त्वक्केशनखलोमकम् ॥१२॥
असृङ्मांसं तथाऽस्थीनि सन्धयश्चापिमे परा ॥

॥फलश्रुति॥

इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः ॥१३॥
पञ्जरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यनाशनम् । पञ्जरं यः पठेत् भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूयते ॥१४॥
अव्याहतगतिश्चास्य ब्रह्मविष्णवादिसत्पुरे । स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नाऽरयस्तं कदाचन ॥१५॥
प्रबाधन्ते नरव्याघ्रं पञ्जरस्थं कदाचन । अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥१६॥
पठनीयं प्रयत्नेन सर्वाऽनर्थविनाशनम् । महादारिद्र्यशमनं सर्वमाङ्गल्यवर्धनम् ॥१७॥
विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम् । इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम् ॥१८॥
पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जीयान् मरणान् नरः । यः पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि ॥१९॥
कौलिकोऽकौलिको वापि व्यासवद् विचरेद् भुवि । चन्द्रसूर्यप्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ॥२०॥

॥ श्री सूत उवाच ॥

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं । भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम् ॥
स्मरणमतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यः । यदि विशति सदा वै पञ्जरं पण्डितः स्यात् ॥२१॥

॥ इति श्रीपरमरहस्यातिरहस्ये पीताम्बरापञ्जर स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ पञ्जरन्यास स्तोत्रम् ॥

(दिग्रक्षण प्रयोगः)

बगला पूर्वतो रक्षेद् आग्नेय्यां च गदाधरी । पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते ॥१॥
जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा हि माम् । वायव्ये च मदोन्मत्ता कौवेर्यां च त्रिशूलिनी ॥२॥
ब्रह्मास्त्रदेवता पातु ऐशान्यां सततं मम । संरक्षेन् मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका ॥३॥
ऊर्ध्वं रक्षेन् महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी। एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥४॥
एवं न्यासविधिं कृत्वा यत् किञ्चिंज्जपमाचरेत् । तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत् ॥५॥

॥ इति पञ्जरन्यासस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बगलामुखी कीलक स्तोत्रम् ॥

स्थान व देह रक्षा, शत्रुनिग्रह एवं विजय प्राप्ति हेतु

ह्लीं ह्लीं ह्लींकारवाणे रिपुदलदलने घोरगम्भीरनादे। ह्रीं ह्रींकाररूपे मुनिगणनमिते सिद्धिदे शुभ्रदेहे॥
भ्रों भ्रों भ्रोंकारनादे निखिलरिपुघटात्रोटने लग्नचित्ते। मातर्मातर्नमस्ते सकलभयहरे नौमि पीताम्बरे त्वाम्॥१॥
क्रौं क्रौं क्रौंमीशरूपे अरिकुलहनने देहकीले कपाले। हस्त्रौं हस्त्रौं स्वरूपे समरसनिरते दिव्यरूपे स्वरूपे॥
ज्रौं ज्रौं ज्रौं जातरूपे जहिजहि दुरितं जम्भरूपे प्रभावे। कालिकङ्कालरूपे अरिजनदलने देहि सिद्धिंपरां मे॥२॥
हस्त्रां हस्त्रीं च हस्त्रें त्रिभुवनविदिते चण्डमार्त्तण्डचण्डे। ऐं क्लीं सौं कौलविद्ये सततशमपरे नौमि पीतस्वरूपे॥
द्रौं द्रौं द्रौं दुष्टचित्ताऽऽदलनपरिणतबाहुयुग्मत्वदीये। ब्रह्मास्त्रे ब्रह्मरूपे रिपुदलहनने ख्यातदिव्यप्रभावे॥३॥
ठं ठं ठंकारवेशे ज्वलनप्रतिकृतिज्वालमालास्वरूपे। धां धां धां धारयन्तीं रिपुकुलरसनां मुद्गरं वज्रपाशम्।
मातर्मातर्नमस्ते प्रबलखलजनं पीडयन्तीं भजामि। डांडांडां डाकिन्याद्यैर्डिमकडिमडिमं डमरुकं वादयन्तीम्॥४॥
वाणीं व्याख्यानदात्रीं रिपुमुखखनने वेदशास्त्रार्थपूताम्। मातः श्री बगले परात्परतरे वादे विवादे जयम्॥
देहि त्वं शरणागतोऽस्मि विमले देवि प्रचण्डो द्धते। माङ्गल्यं वसुधासु देहि सततं सर्वस्वरूपे शिवे॥५॥
निखिलमुनिनिषेव्यं स्तम्भनं सर्वशत्रोः। शमपरमिह नित्यं ज्ञानिनां हार्दरूपम्॥
अहरहरनिशायां यः पठेद्देवि कीलम्। भवति परमेशो वादिनामग्रगण्यः॥६॥

॥ अथ बगलामुखी ह्रदय स्त्रोतम्॥

विनियोग - ॐ अस्य श्रीबगलामुखी ह्रदयमालामन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकं श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यासः- ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि, ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, ॐ श्रीबगलामुख्यै देवतायै नमः ह्रदये, ॐ ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ कराङ्गन्यासौ - ॐह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्लीं ह्रदयाय नमः, ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ऐं शिखाये वषट्, ॐ ह्लीं कवचाय हुम्, ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्॥ ॐ ह्लीं क्लीं ऐं इति दिग्बन्धः।

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरणभूषिताम्। पीतकञ्जपदद्वन्द्वां बगलां चिन्तयेऽनिशम्॥

इति ध्यात्वा सम्पूज्य

पीतशङ्खगदाहस्ते पीतचन्दनचर्चिते। बगले मे वरं देहि शत्रुसङ्घविदारिणी॥

इति सम्प्रार्थ्य, ॐह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधिरिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा इति मन्त्रं जपित्वा स्तोत्रं च पठेत्।

॥ स्त्रोतम् ॥

वन्देऽहं बगलां देवीं पीतभूषणभूषिताम् । तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजः स्वरूपिणीम् ॥ १ ॥
गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भ्रुकुटीभीषणाननाम् । भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भव्यस्य भक्तिदाम् ॥ २ ॥
पूर्णचन्द्रसमानास्यां पीतगन्धानुलेपनाम् । पीताम्बरपरीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम् ॥ ३ ॥
पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले । पीताचाररतां भक्तां स्ताम्भवानीं भजाम्यहम् ॥ ४ ॥
पीतपद्मपदद्वन्द्वां चम्पकारण्य रूपिणीम् । पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मजवन्दिताम् ॥ ५ ॥

लसच्चारुसिञ्जत्सुमञ्जीरपादां चलत्स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम् ।
वलत्पीतचन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीड्यसत्पादपद्माम् ॥ ६ ॥

सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते ।
रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद्वैरकृद्घातमातः ॥ ७ ॥

भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागञ्जितामित्रगर्वां गरिष्ठाम् ।
गरीयोगुणागारगात्रां गुणाढ्यां गणेशादिगम्यां श्रये निर्गुणाढ्याम् ॥ ८ ॥

जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम् ।
भवेद् वादिनां वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम् ॥ ९ ॥

तव ध्याननिष्ठाप्रतिष्ठात्मप्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः ।
प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिगा दासतुल्या भवन्ति ॥ १० ॥

नमामस्ते मातः कनककमनीयाङ्घ्रिजलजम् । बलद्विद्युद्वर्णं घनतिमिरविध्वंसकरणम् ॥
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणम् । प्रपन्नानां मातर्जगति बगले दुःखदमनम् ॥ ११ ॥
ज्वलज्ज्योत्स्ना रत्नाकरमणिविभुषिक्ताङ्क भवनम् । स्मरामस्ते धाम स्मरहरहरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः ॥
अहोरात्रं प्रातः प्रणयनवनीयं सुविशदम् । परं पीताकारं परिचितमणिद्वीपवसनम् ॥ १२ ॥
वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितम् । लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम् ॥
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने । भजामोयच्छ्रेयो दिवि दूरवलभ्यं दिविषदाम् ॥ १३ ॥
पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु । यथा ते प्रासन्न्यं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम् ॥
अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो । दिशातः सद्भक्तिं भुवि भगवतां भूरि भवदाम् ॥ १४ ॥
मम सकलरिपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु । भगवति रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम् ॥
व्यवसितखलबुद्धिं नाशयाऽऽशु प्रगल्भाम् । मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपे ऽम्ब प्रसीद ॥ १५ ॥
व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था । करधृतगदया तान् घातयित्वाऽऽशु रोषात् ॥
सधनवसनधान्यं सद्म तेषां प्रदह्य । पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम् ॥ १६ ॥
करधृतुरिपुजिह्वा पीडनव्यग्रहस्तां । पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम् ॥
प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां । बहुबलबगलान्तां पीतवस्त्रां नमामः ॥ १७ ॥
हृदयवचनकायः कुर्वतां भक्तिपुञ्जं । प्रकटति करुणार्द्रा प्रीणती जल्पतीति ॥

धनमथ बहुधान्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिः । सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम् ॥१८॥
तव चरणसरोजं सर्वदा सेव्यमानं । द्रुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम् ॥
मृदुलमपि शरं ते शर्म्मदं सूरिसेव्यं । वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम् ॥१९॥
बगलाहृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः । पठेद् यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत् ॥२०॥
पीताध्यानपरो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पत । निष्कल्मषो भवेन् मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥२१॥
आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम् । यस्त्विदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः ॥२२॥
देव्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम् । पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः ॥२३॥
पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन् । बगलां यः पठेन् नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम् ॥२४॥
न किंचिद्दुर्लभं तस्यदृश्यते जगतीतले । शत्रवो ग्लानिर्मायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः ॥२५॥

॥ इति श्रीसिद्धेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले श्रीबगलाहृदय समाप्तमं ॥

॥ अथ श्रीब्रह्मास्त्रमहाविद्यास्तोत्रम् ॥

(बगलामुखी स्तोत्रम्)

विनियोग – ॐ अस्य श्री बगुलामुखीस्तोत्रस्य भगवान् नारद ऋषिः, श्री बगुलामुखी देवता, त्रिष्टुप् छन्दः, मम सन्निहितानामसन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुखबुद्धीनां स्तभ्भनार्थं श्री महामायाबगलामुखी वरप्रसाद सिद्ध्यर्थं जपे (पाठे) विनियोगः।

करन्यास – ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ वाचं मुखं पदं स्तंम्भय अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु।

॥ अथ ध्यानम् ॥

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम् ॥
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तभ्भिनीं चिन्तयेत् ॥

जपमन्त्रः – ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गीम् देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥ १ ॥
जिह्वाग्रमादाय करेणदेवीं, वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् । गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥२॥
त्रिशूलधारिणीमम्बां सर्वसौभाग्यदायिनीम् । सर्वशृङ्गारवेशाढ्यां देवीं ध्यात्वा प्रपूजयेत् ॥३॥
पीतवस्त्रां त्रिनेत्रां च द्विभुजां हाटकोज्ज्वलाम् । शिलापर्वतहस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम् ॥४॥

रिपुजिह्वाग्रहां देवीं पीतपुष्पविभूषिताम् । वैरिनिर्दलनार्थाय स्मरेत् तां बगलामुखीम् ॥५॥
गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् । चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च कमलासनसंस्थिताम् ॥६॥
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम् । पीताम्बरधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम् ॥७॥
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम् । पीतभूषणपीताङ्गीं स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ॥८॥
एवं ध्यात्वा जपेत् स्तोत्रमेकाग्रकृतमानसः । सर्वसिद्धिमवाप्नोति मन्त्रध्यानपुरः सरम् ॥९॥
आराध्या जगदम्ब दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभिः । माल्यैश्चन्दनकुङ्कुमैः परिमलैरभ्यर्चिता सादरात् ॥
सम्यङ्न्यासिसमस्तभूतनिवहे सौभाग्यशोभाप्रदे श्रीमुग्धे बगले प्रसीद विमले दुःखापहे पाहि माम् ॥१०॥
आनन्दकारिणी देवी रिपुस्तम्भनकारिणी । मदनोन्मादिनी चैव प्रीतिस्तम्भनकारिणी ॥११॥
महाविद्या महामाया साधकस्य फलप्रदा । यस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात् ॥१२॥
वामे पाशाङ्कुशौ शक्तिं तस्याधस्ताद् वरं शुभम् । दक्षिणे क्रमतो वज्रं गदाजिह्वाऽभयानि च ॥१३॥
विभ्रतीं संसमरेन्नित्यं पीतमाल्यानुलेपनाम् । पीताम्बरधरां देवीं ब्रह्मादिसुरवन्दिताम् ॥१४॥
केयूराङ्गदकुण्डलभूषां बालार्कद्युतिरञ्जितवेषाम् । तरुणादित्यसमानप्रतिमां कौशेयांशुकबद्धनितम्बाम् ॥१५॥
कल्पद्रुमतलनिहितशिलायां प्रमुदितचित्तौल्लासदलकान्ताम् । पञ्चप्रेतनिकेतनबद्धां भक्तजनेभ्यो वितरणशीलाम् ॥१६॥
एवं विधां तां बगलां ध्यात्वा मनसि साधकः । सर्वसम्पत्समृद्ध्यर्थं स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ॥१७॥
चलत् कनककुण्डलोल्लसित चारुगण्डस्थलाम् । लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् ॥
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वां चलाम् । स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम् ॥१८॥
पीयूषोदधि मध्यचारुविलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे । तत्सिंहासनमूलपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ॥
स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमां । यस्त्वां ध्यायति, यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥१९॥
देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलिं मुद्रां वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् ॥
पीताध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं । तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥२०॥
मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते । यन्त्रं वादिनियन्त्रणे त्रिजगतां जैत्रं न चित्रं हि तत् ॥
मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे । तन्नामस्मरणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम् ॥२१॥
वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति । क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ॥
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥२२॥
दुष्टस्तम्भनमुग्र विघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं । भूभृत्संनमनं चं यन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् ॥
सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णेक्षणे । शत्रोर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥२३॥
मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय । ब्राह्मीं यन्त्रय मुद्रयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ॥
शत्रूश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे । विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥२४॥
मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये । श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे ॥

मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे। दासोऽहं शरणागतोऽस्मि कृपया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥२५॥
त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघविध्वंसिनी । योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्धिनी ॥
दुष्टोच्चाटनकारिणी पशुमनःसंमोहसंदायिनी जिह्वाः कीलय वैरिणां विजयसे ब्रह्मास्त्रविद्या परा ॥२६॥
मातर्यस्तु मनोरमं स्तवमिमं देव्याः पठेत् सादरम् धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाह्वोः करे वा गले ॥
राजानो वरयोषितोऽथ करिणः सर्पामृगेन्द्राः खलास्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वदा ॥२७॥
अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रिकालं पठति स भुवनेऽसौ पूज्यते देववर्गैः ॥
सकलममलकृत्यं तत्त्वद्रष्टा च लोके भवति परमसिद्धा लोकमाता पराम्बा ॥२८॥
पीतवस्त्रवसनामरिदेह प्रेतजासननिवेशितदेहाम्। फुल्लपुष्परविलोचनरम्यां दैत्यजालदहनोज्वलभूषाम् ॥२९॥
पर्यङ्कोपरि लसद्द्विभुजां कम्बुहेमनतकुण्डललोलाम्। वैरिनिर्दलनकारणरोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे ॥३०॥
चिन्तयामि सुभुजां शृणिहस्तां सद्भुजांचसुरवन्दितचरणाम्। षष्ठिसप्ततिशतैधृतशस्त्रैर्बाहुभिः परिवृतां बगलाम्बाम् ॥३१॥
चौराणां संकटे च प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये। वह्नौ वादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ॥
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये प्राणबाधे रणे वा। गच्छंस्तिष्ठस्त्रिकालं स्तवपठनमिदं कारयेदाशु धीरः ॥३२॥

विद्यालक्ष्मीःसर्वसौभाग्यमायुः पुत्राः सम्पद् राज्यमिष्टं च सिद्धिः।
मातः श्रेयः सर्ववश्यत्वसिद्धिः प्राप्तं सर्वं भूतले त्वत्परेण ॥३३॥

गेहं नाकति गर्वितः प्रणमति स्त्रीसंगमो मोक्षति द्वेषी मित्रति पातकं सुकृतति क्ष्मावल्लभो दासति ॥
मृत्युर्वैद्यति दूषणं गुणति वै यत्पादसंसेवनात् तां वन्दे भवभीतिभञ्जनकरीं गौरीं गिरीशप्रियाम् ॥३४॥
यत् कृतं जपसंध्यानं चिन्तनं परमेश्वरि । शत्रूणां स्तम्भनार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तुते ॥३५॥
ब्रह्मास्त्रमेतद् विख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् । गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥३६॥
पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्वलाम् । शिलामुद्गरहस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम् ॥३७॥
सिद्धिं सध्येऽवगन्तुं गुरुवरवचनेष्वार्हविश्वासभाजाम्। स्वान्तः पद्मासनस्थां वररुचिंबगलां ध्यायतां तारतारम् ॥
गायत्रीपूतवाचां हरिहरमनने तत्पराणां नराणाम्। प्रातर्मध्याह्नकाले स्तवपठनमिदं कार्यसिद्धिप्रदं स्यात् ॥३८॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उत्तरखण्डे श्रीब्रह्मास्त्रमहाविद्याबगलामुखीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री दिग्बंधन रक्षा स्तोत्रम् ॥

ब्रह्मास्त्रां प्रवक्ष्यामि बगलां नारदसेविताम्। देवगन्धर्वयक्षादि सेवितपादपङ्कजाम् ॥

त्रैलोक्यस्तम्भिनी विद्या सर्वशत्रुवशङ्करी आकर्षणकरी उच्चाटनकरी विद्वेषणकरी जारणकरी मारणकरी जृम्भणकरी स्तम्भनकरी ब्रह्मास्त्रेण सर्ववश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लां द्राविणि द्राविणि भ्रामिणि एहि एहि सर्वभूतान् उच्चाटय उच्चाटय सर्वदुष्टान निवारय निवारय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनीः छिन्धि छिन्धि खड्गेन भिन्धि भिन्धि मुद्गरेण संमारय संमारय, दुष्टान् भक्षय भक्षय, ससैन्यं भूपतिं कीलय कीलय मुखस्तम्भनं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

आत्मा रक्षा ब्रह्म रक्षा विष्णु रक्षा रुद्र रक्षा इन्द्र रक्षा अग्नि रक्षा यम रक्षा नैर्ऋत रक्षा वरुण रक्षा वायु रक्षा कुवेर रक्षा ईशान रक्षा सर्व रक्षा भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी रक्षा अग्निवैताल रक्षा गण गन्धर्व रक्षा तस्मात् सर्वरक्षां कुरु कुरु, व्याघ्र गज सिंह रक्षा रणतस्कर रक्षा तस्मात् सर्व बन्धयामि ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लीं भो बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं बगलामुखि एहि एहि पूर्वदिशायां बन्धय बन्धय इन्द्रस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय इन्द्रशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पीताम्बरे एहि एहि अग्निदिशायां बन्धय बन्धय अग्निमुखं स्तम्भय स्तम्भय अग्निशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं अग्निस्तम्भं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं महिषमर्दिनि एहि एहि दक्षिणदिशायां बन्धय बन्धय यमस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय यमशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं हृज्जृम्भणं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं चण्डिके एहि एहि नैर्ऋत्यदिशायां बन्धय बन्धय नैर्ऋत्यमुखं स्तम्भय स्तम्भय नैर्ऋत्यशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं करालनयने एहि एहि पश्चिमदिशायां बन्धय बन्धय वरुणमुखं स्तम्भय स्तम्भय वरुणशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कालिके एहि एहि वायव्यदिशायां बन्धय बन्धय वायुमुखं स्तम्भय स्तम्भय वायुशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरि एहि एहि उत्तरदिशायां बन्धय बन्धय कुबेरमुखं स्तम्भय स्तम्भय कुबेरशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं महाभैरवि एहि एहि ईशानदिशायां बन्धय बन्धय ईशानमुखं स्तम्भय स्तम्भय ईशानशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु करु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं गाङ्गेश्वरि एहि एहि ऊर्ध्वदिशायां बन्धय बन्धय ब्रह्माणं चतुर्मुखं स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्य कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ललितादेवि एहि एहि अन्तरिक्षदिशायां बन्धय बन्धय विष्णुमुखं स्तम्भय स्तम्भय विष्णुशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां

बगलामुखिं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं चक्रधारिणि एहि एहि अधोदिशायां बन्धय बन्धय वासुकिमुखं स्तम्भय स्तम्भय वासुकिशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

दुष्टमन्त्रं दुष्टयन्त्रं दुष्टपुरुषं बन्धयामि शिखां बन्ध ललाटं बन्ध भ्रुवौ बन्ध नेत्रे बन्ध कर्णौ बन्ध नसौ बन्ध ओष्ठौ बन्ध अधरौ बन्ध जिह्वां बन्ध रसनां बन्ध बुद्धिं बन्ध कण्ठं बन्ध हृदयं बन्ध कुक्षिं बन्ध हस्तौ बन्ध नाभिं बन्ध लिङ्गं बन्ध गुह्यं बन्ध ऊरू बन्ध जानू बन्ध जङ्घे बन्ध गुल्फौ बन्ध पादौ बन्ध स्वर्ग मृत्यु पातालं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि इन्द्राय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय स्वेतवर्णाय वज्रहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् निरासय निरासय विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि अग्नये तेजोधिपतये छागवाहनाय रक्तवर्णाय शक्तिहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि यमाय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय कृष्णवर्णाय दण्डहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वरुणाय जलाधिपतये मकरवाहनाय श्वेतवर्णाय पाशहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वायव्याय मृगवाहनाय धूम्रवर्णाय ध्वजाहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि ईशानाय भूताधिपतये वृषभवाहनाय कर्पूरवर्णाय त्रिशूलहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि ब्रह्मणे ऊर्ध्वदिग्लोकपालाधिपतये हंसवाहनाय श्वेतवर्णाय कमण्डलुहस्ताय सपरिवारय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वैष्णवीसहिताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय श्यामवर्णाय चक्रहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवति पुण्यपवित्रे स्वाहा।

ॐ ह्लीं बगलामुखि नित्यम् एहि एहि रविमण्डलमध्याद् अवतर अवतर सान्निध्यं कुरु कुरु। ॐ ऐं परमेश्वरीम्

आवाहयामि नमः। मम सान्निध्यं कुरु कुरु। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौ ह्लः बगले चतुर्भुजे मुद्गरशरसंयुक्ते दक्षिणे जिह्वावज्रसंयुक्ते वामे श्रीमहाविद्ये पीतवस्त्रे पञ्चमहाप्रेनाधिरूढे सिद्धविद्याधरवन्दिते ब्रह्मविष्णुरुद्रपूजिते आनन्दस्वरूपे विश्वसृष्टिस्वरूपे महाभैरवरूप धारिणि स्वर्गमृत्युपातालस्तम्भिमनि वाममार्गाश्रिते श्रीबगले ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपनिर्मिते षोडशकलापरिपूरिते दानवरूप सहस्त्रादित्यशोभिते त्रिवर्णे एहि एहि मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय शत्रुमुखं स्तम्भय स्तम्भय अन्यभूतपिशाचान् खादय खादय अरिसैन्यं विदारय विदारय परविद्यां परचक्रं छेदय छेदय वीरचक्रं धनुषां संभारय संभारय त्रिशूलेन् छिन्धि छिन्धि पाशेन् बन्धय बन्धय भूपतिं वश्यं कुरु कुरु संमोहय संमोहय विना जाप्येन सिद्धय सिद्धय विना मन्त्रेण सिद्धि कुरु कुरु सकलदुष्टान घातय घातय मम त्रैलोक्यं वश्यं कुरु कुरु सकलकुलराक्षसान् दह दह पच पच मथ मथ हन हन मर्दय मर्दय मारय मारय भक्षय भक्षय मां रक्ष रक्ष विस्फोटकादीन् नाशय नाशय ॐ ह्लीं विषमज्वरं नाशय नाशय विषं निर्विषं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ क्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय क्लीं क्लीं ह्लीं स्वाहा।

ॐ बगलामुखि स्वाहा। ॐ पीताम्बरे स्वाहा। ॐ त्रिपुरभैरवि स्वाहा। ॐ विजयायै स्वाहा। ॐजयायै स्वाहा। ॐशारदायै स्वाहा। ॐ सुरेश्वर्यै स्वाहा। ॐ रुद्राण्यै स्वाहा। ॐ विन्ध्यवासिन्यै स्वाहा। ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ भवान्यै स्वाहा। ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा। ॐमहामायायै स्वाहा। ॐकमललोचनायै स्वाहा। ॐतारायै स्वाहा। ॐ योगिन्यै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ शिवायै स्वाहा। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लीं शिवतत्वव्यापिनि बगलामुखि स्वाहा। ॐ ह्लीं मायातत्वव्यापिनि बगलामुखि हृदयाय स्वाहा। ॐ ह्लीं विद्यातत्वव्यापिनि बगलामुखि शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः शिरो रक्षतु बगलामुखि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः भालं रक्षतु पीताम्बरे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः नेत्रे रक्षतु महाभैरवि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कर्णौ रक्षतु विजये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः नसौ रक्षतु जये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः वदनं रक्षतु शारदे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कण्ठं रक्षतु रुद्राणि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः स्कन्धौ रक्षतु विन्ध्यवासिनि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बाहू रक्षतु त्रिपुरसुन्दरि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः करौ रक्षतु दुर्गे रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः हृदयं रक्षतु भवानी रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः उदरं रक्षतु भुवनेश्वरि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः नाभिं रक्षतु महामाये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कटिं रक्षतु कमललोचने रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः उदरं रक्षतु तारे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः सर्वाङ्गं रक्षतु महातारे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः अग्रे रक्षतु योगिनि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः पृष्ठे रक्षतु कौमारि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः दक्षिणपार्श्वे रक्षतु शिवे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः वामपर्श्वे रक्षतु इन्द्राणि रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये सर्वजनमुखस्तम्भनाय आगच्छ आगच्छ मम विघ्नान् नाशय नाशय दुष्टं खादय खादय दुष्टस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय अकालमृत्युं हन हन भो गणाधिपते ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं

बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा सिद्धिर्भवति नान्यथा। भूयुग्मं तु पठेत नात्र कार्यं संख्याविचारणम् ॥
यन्त्रिणां बगला राज्ञी सुराणां बगलामुखि। शूराणां बगलेश्वरी ज्ञानिनां मोक्षदायिनी ॥
एतत् स्तोत्रं पठेन् नित्यं त्रिसन्ध्यं बगलामुखि। विना जाप्येन सिध्येत साधकस्य न संशयः ॥
निशायां पायसतिलाज्यहोमं नित्यं तु कारयेत्। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि देवी तुष्टा सदा भवेत् ॥
मासमेकं पठेत् नित्यं त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्। सर्वसिद्धिमवाप्नोति, देव्या लोकं स गच्छति ॥

॥ इति श्रीबगलामुखिकल्पे वीरतन्त्रे बगलासिद्धिप्रयोगः सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपीताम्बरा बगलामुखी खड्ग मालामन्त्रः ॥

यह स्तोत्र शत्रुनाश एवं कृत्यानाश, परविद्या छेदन करने वाला एवं रक्षाकार्य हेतु प्रभावी है। साधारण साधकों को कुछ समय आवेश व आर्थिक दबाव रहता है, अतः पूजा उपरांत नमस्तस्यादि शांति स्तोत्र पढ़ने चाहिये।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा बगलामुखी खड्गमाला मन्त्रस्य नारायण ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे सर्वशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।**

हृद यादिन्यास :- **नारायण ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास :- **ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि न्यास कृत्वा।**

॥ ध्यानम् ॥

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डित - रत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवस्त्राम् ।
भ्राम्यद्गदां करनिपीडित वैरिजिह्वां पीताम्बरां कनकमाल्यवतीं नमामि ॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

ॐ ह्लीं सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपरबुद्धिं कुरु कुरु अपस्मारं कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिका दन्तोष्ठ जिह्वा तालुकण्ठ बाहूदर कुक्षि नाभि पार्श्वद्वय गुह्य गुदाण्ड त्रिक जानुपाद सर्वाङ्गेषु पादादिकेशपर्यन्तं केशादिपादपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्राणि छेदय छेदय आत्ममन्त्र यन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्वग्रहान् निवारय निवारय सर्वम् अविधिं विनाशय विनाशय दुःखं हनहन दारिद्र्यं निवारय निवारय सर्वमन्त्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोग स्वरूपिणि दुष्टग्रहचण्डग्रह भूतग्रहाऽऽकाशग्रह चौरग्रह पाषाणग्रह चाण्डालग्रह यक्षगन्धर्वकिंनरग्रह ब्रह्मराक्षसग्रह भूत-प्रेत-पिशाचादीनां शाकिनी डाकिनी ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय, वाराहि बगलामुखी मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय, किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय, स्वप्नवाराहि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशं बन्धय बन्धय धूम्रवाराहि मां रक्ष रक्ष सर्वदिशो बन्धय बन्धय, कुक्कुटवाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय बन्धय

परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय नाशय, शत्रूणां राज्यवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोकस्तम्भिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्वरिपूणाम् उच्चाटनं कुरु कुरु ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वाक्प्रदानाय क्लीं जगत्त्रयवशीकरणाय सौः सर्वमनः क्षोभणाय श्रीं महासम्पत्प्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डलाधिपत्य प्रदानाय दां चिरंजीवने। ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लां क्लीं क्लूं सौः ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजन संमोहिनि सभास्तंभिनि स्त्रां स्त्रीं सर्वमुखरञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल ज्वल हंस हंस राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्वां बन्धयामि सकलजन सर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्व मृग सर्प विहङ्गम वृश्चिकादि विषं निर्विषं कुरु कुरु शैलकानन महीं मर्दय मर्दय शत्रूनोत्पाटयोत्पाटय पात्रं पूरय पूरय महोग्रभूतजातं बन्धयामि बन्धयामि अतीतानागतं सत्यं कथय कथय लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

पुनः विशेष –

मूलमन्त्रवता कुर्याद् विद्यां न दर्शयेत् क्वचित्। विपत्तौ स्वप्रकाले च विद्यां स्तम्भिनीं दर्शयेत्।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः। प्रकाशनात् सिद्धिहानिः स्याद् वश्यं मरणं भवेत्।
दद्यात् शान्ताय सत्याय कौलाचारपरायणः। दुर्गाभक्ताय शैवाय मृत्युञ्जयरताय च।
तस्मै दद्याद् इमं खड्गं स शिवो नात्र संशयः। अशाक्ताय च नो दद्याद् दीक्षाहीनाय वै तथा।
न दर्शयेद् इमं खड्गम् इत्याज्ञा शङ्करस्य च।

॥ इति श्रीविष्णुयामले बगलाखड्गमालामन्त्रः समाप्तः ॥

॥ अथ श्री बगला प्रत्यंगिरा कवचम् ॥

॥ श्री शिव उवाच ॥

अधुनाऽहं प्रवक्ष्यामि बगलायाः सुदुर्लभम्। यस्य पठन मात्रेण पवनोपि स्थिरायते ॥
प्रत्यंगिरां तां देवेशि शृणुष्व कमलानने। यस्य स्मरण मात्रेण शत्रवो विलयं गताः ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

स्नेहोऽस्ति यदि मे नाथ संसारार्णव तारक। तथा कथय मां शम्भो बगलाप्रत्यंगिरा मम ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

यं यं प्रार्थयते मन्त्री हठात्तंतमवाप्नुयात्। विद्वेषणाकर्षणे च स्तम्भनं वैरिणां विभो ॥
उच्चाटनं मारणं च येन कर्तुं क्षमो भवेत्। तत्सर्वं ब्रूहि मे देव यदि मां दयसे हर ॥

॥ श्री सदाशिव उवाच ॥

अधुना हि महादेवि परानिष्ठा मतिर्भवेत्। अतएव महेशानि किंचिन्न वक्तुमर्हसि ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

जिघान्सन्तं जिघान्सीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् । श्रृतिरेषाहि गिरिश कथं मां त्वं निनिन्दसि ॥

॥ श्री शिवउवाच ॥

साधु साधु प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वावहितानघे । प्रत्यंगिरां बगलायाः सर्वशत्रुनिवारिणीम् ॥
नाशिनीं सर्व - दुष्टानां सर्व - पापौघ - हारिणीम् । सर्वप्राणिहितां देवीं सर्व दुःख विनाशिनीम् ॥
भोगदां मोक्षद्रा चैव राज्य सौभाग्य दायिनाम् । मन्त्र - दोष - प्रमोचनीं ग्रहदोष निवारिणीम् ॥

विनियोगः :- अस्य श्री बगला प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य नारद ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः, प्रत्यंगिरा देवता, ह्लीं बीजं, हुं शक्तिः ह्रीं कीलकं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु विनाशे विनियोगः।

ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल कामान् साधय मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान शत्रून् खादय खादय मारय मारय घातय घातय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनी देवी क्षोभिणीमोहिनी तथा । संहारिणी द्राविणी च जृम्भिणी रौद्ररूपिणी ॥
इत्यष्टौ शक्तयो देवि शत्रु पक्षे नियोजिताः । धारयेत् कण्ठदेशे च सर्वशत्रु विनाशिनी ॥

ॐ ह्रीं भ्रामरि सर्वशत्रून् भ्रामाय भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं क्षोभिणि मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं मोहिनि मम शत्रून्मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं संहारिणि मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं द्राविणि मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं जृम्भिणि मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं रौद्रि मम शत्रून् सन्तापय सन्तापय ॐ ह्रीं स्वाहा।

इयं विद्या महाविद्या सर्व शत्रु निवारिणी। धारिता साधकेन्द्रेण सर्वान् दुष्टान् विनाशयेत् ॥
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्स्थिरमानसः। न तस्य दुर्लभं लोके कल्पवृक्ष इव स्थितः ॥
यं य स्पृशति हस्तेन यं यं पश्यति चक्षुषा। स एव दासतां याति सारात्सारामिमं मनुम् ॥

॥ इति श्री रुद्रयामले शिवपार्वति सम्वादे बगला प्रत्यंगिरा कवचम् ॥

॥ कृत्यानाशक श्रीबगला सूक्तम् ॥

(अथर्ववेद पंचमकाण्डे षष्ठेऽनुवाक)

इस स्तोत्र का प्रयोग कृत्यानाश के लिये श्रेष्ठ है। किसी भी शत्रु ने अस्थि, मज्जा, वसा, माँस, पशुबलि या धान्यादि के द्वारा यज्ञशाला या श्मशान में कोई प्रयोग किया होतो उसका शमन होता है। मंत्र में शपथ है कि हे कृत्या तू हमारी अँगुलि की भी हानि नहीं कर सकती, तु कृत्या करने वाले पर ही वापस लौट जा। अन्यथा इन्द्र वज्र से मारेगा और अग्नि तुझे जला देगी।

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्यके । आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥१॥
यां ते चक्रुः कृकवाका वजे वा यां कुरीरिणि । अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥२॥
यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति । गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥३॥

यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराच्याम् । क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥४॥
यां ते चक्रुगार्हिपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः । शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥५॥
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवते । अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥६॥
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे । दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥७॥
यां ते कृत्यां कूपे वदधुः श्मशाने वा निचख्नुः । सद्मनि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥८॥
यां ते चक्रुः पुरुषस्यास्थे अग्नौ संकसुके च याम् । म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥९॥
अपथैनाज भारैणां तां पथेतः प्रहिण्मसि । अधीरो मर्या धीरेभ्यः संजभाराचित्या ॥१०॥
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः ॥११॥
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेऽप्ययम् । इन्द्रस्तं हन्तुमहता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया ॥१२॥

॥ अथ श्री बगलाशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्री नारद उवाच ॥

भगवन् देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मकम् । शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाऽधुना ॥१॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् । पीताम्बर्याः महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥२॥
यस्य प्रपठनात् सद्यो वादी मूको भवेत् क्षणात् । रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३॥

विनियोगः - ॐ अस्य नीमाम्बर्य्यष्टोत्तर शतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टप् छन्दः, श्रीपीताम्बरी देवता, श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः।

ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशङ्करभामिनी । बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ॥१॥
महामत्स्या महाकूर्म्मा महावाराहरूपिणी । नरसिंहप्रिया रम्या वामना वटुरूपिणी ॥२॥
जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता । कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलविकारिणी ॥३॥
बुद्धिरूपा बुद्धिभार्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी । कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी ॥४॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी । केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ॥५॥
केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता । रुद्ररूपा रुद्रमूर्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ॥६॥
नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता । नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ॥७॥
नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता । नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥८॥
नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता । नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी ॥९॥
रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी । सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णभा स्वर्गतिप्रदा ॥१०॥

रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी । भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा ॥११॥
रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी । यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी ॥१२॥
लङ्कापतिध्वंसकरी लङ्केशरिपुवन्दिता । लङ्कानाथकुलहरा महारावणहारिणी ॥१३॥
देवदानव सिद्धौघपूजिता परमेश्वरी । पराऽणुरूपा परमा परतन्त्र - विनाशिनी ॥१४॥
वरदा वरदाऽऽराध्या वरदानपरायाणा । वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषणभूषिता ॥१५॥
वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना । बलदा पीतवसना पीतभूषण - भूषिता ॥१६॥
पीतपुष्पप्रिया पीतहरा पीतस्वरूपिणी । इति ते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१७॥
यः पठेत् पाठयेद् वापि शृणुयाद् वा समाहितः। तस्य शत्रः क्षयं सद्यो याति वै नात्र संशय ॥१८॥

प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत् सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम् ।
द्रुतं भवेत् तस्य समस्तवृद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ॥१९॥

॥ इति श्रीविष्णुयामले नारदविष्णुसंवादे श्रीबगलाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

॥ अथ बगलाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

शतनाम स्तोत्र से देव कृपा होती है तथा अंगरक्षक के समान कार्य करता है।

ब्रह्मास्त्ररूपिणी देवी माताश्रीबगलामुखी । चिच्छक्तिर्ज्ञानरूपा च ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१॥
महाविद्या महालक्ष्मी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी । भुवनेशी जगन्माता पार्वती सर्वमङ्गला ॥२॥
ललिता भैरवी शान्ता अन्नपूर्णा कुलेश्वरी । वाराही छिन्नमस्ता च तारा काली सरस्वती ॥३॥
जगत्पूज्या महामाया कामेशी भगमालिनी । दक्षपुत्री शिवांकस्था शिवरूपा शिवप्रिया ॥४॥
सर्वसम्पत्करी देवी सर्वलोक वशङ्करी । वेदविद्या महापूज्या भक्ताद्वेषी भयङ्करी ॥५॥
स्तम्भरूपा स्तम्भिनी च दुष्टस्तम्भनकारिणी । भक्तप्रिया महाभोगा श्रीविद्या ललिताम्बिका ॥६॥
मैनापुत्री शिवानन्दा मातङ्गी भुवनेश्वरी । नारसिंही नरेन्द्रा च नृपाराध्या नरोत्तमा ॥७॥
नागिनी नागपुत्री च नगराजसुता उमा । पीताम्बा पीतपुष्पा च पीतवस्त्रप्रिया शुभा ॥८॥
पीतगन्धप्रिया रामा पीतरत्नार्चिता शिवा । अर्द्धचन्द्रधरी देवी गदामुद्गरधारिणी ॥९॥
सावित्री त्रिपदा शुद्धा सद्योराग विवर्धिनी । विष्णुरूपा जगन्मोहा ब्रह्मरूपा हरिप्रिया ॥१०॥
रुद्ररूपा रुद्रशक्तिश्चिन्मयी भक्तवत्सला । लोकमाता शिवा सन्ध्या शिवपूजनतत्परा ॥११॥
धनाध्यक्षा धनेशी च नर्मदा धनदा धना । चण्डदर्पहरी देवी शुम्भासुरनिवर्हिणी ॥१२॥
राजराजेश्वरी देवी महिषासुरमर्दिनी । मधुकैटभहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी ॥१३॥
धूम्राक्षदैत्यहन्त्री च भण्डासुर विनाशिनी । रेणुपुत्री महामाया भ्रामरी भ्रमराम्बिका ॥१४॥
ज्वालामुखी भद्रकाली बगला शत्रुनाशिनी । इन्द्राणी इन्द्रपूज्या च गुहमाता गुणेश्वरी ॥१५॥

वज्रपाशधरा देवी जिह्वामुद्गरधारिणी । भक्तानन्दकरी देवी बगला परमेश्वरी ॥१६॥
अष्टोत्तरशतं नाम्नां बगलायास्तु यःपठेत् । रिपुबाधाविनिर्मुक्तः लक्ष्मीस्थैर्यमवाप्नुयात् ॥१७॥
भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रहपीड़ानिवारणम् । राजानो वशमायांति सर्वैश्वर्यं च विन्दति ॥१८॥
नानाविद्यां च लभते राज्यं प्राप्नोति निश्चितम् । भुक्तिमुक्तिमवाप्नोति साक्षात् शिवसमो भवेत् ॥१९॥

॥ इति रुद्रयामले सर्वसिद्धिप्रद बगलाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ अथ बगला सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

सहस्त्रनाम से देव की प्रीति प्राप्त होती है तथा सेना के समान कार्य करता है।

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम् । शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह ॥१॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

परमेष्ठिन् परंधाम प्रधान परमेश्वर । नाम्नां सहस्त्रं बगलामुख्याद्या ब्रूहि वल्लभ ॥२॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्त्रकम् । परब्रह्मास्त्र विद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥३॥
गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम् । अतिगुप्ततरं विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥४॥
विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्योघदायिनी । गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥५॥
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुब्रते । रोधिनी विघ्नसंघानां मोहिनी सर्वयोषिताम् ॥६॥
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् । पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः ॥७॥
सुन्दरीसहितो देव केशवं क्लेशनाशनः । उरगासनमासीनं योगनिद्रामुपागतम् ॥८॥
निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः । महास्तम्भकरं देवि! स्तोत्रं वा शतनामकम् ॥९॥
सहस्त्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित् ।

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

शृणु शङ्कर देवेश परमातिरहस्यकम् ॥१०॥
अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः । गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धिहानिकृत् ॥११॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीपीताम्बरीसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ अथ ध्यानम् ॥

पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम् । जटामुकुटशोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम् ॥१२॥
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च विभ्रतीं परमां कलाम् । सर्वागमपुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये ॥१३॥
सृष्टिस्थिति विनाशानामादिभूतां महेश्वरीम् । गोप्यां सर्वप्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते ॥१४॥
जगद्विध्वंसिनीं देवीमजरामरकारिणीम् । तां नमामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम् ॥१५॥

॥स्तोत्रम्॥

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत् । बगलामुखि सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च ॥१६॥
मुखं पदं स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत् । विनाशयेति तारं च स्थिरमायां ततो वदेत् ॥१७॥
वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः । ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाया सनातनी ॥१८॥
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्य बगला ब्रह्मचारिणी । नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया ॥१९॥
सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी । कमला विमला नीला रत्नकान्तिर्गुणाश्रिता ॥२०॥
कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी । मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी ॥२१॥
कामिनी कामनी काम्या कामुका कामचारिणी । कामप्रिया कामरता कामा कामस्वरूपिणी ॥२२॥
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी । कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ॥२३॥
कंसारि कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा । कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ॥२४॥
क्रिया कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा । कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी ॥२५॥
खचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधा वरा । खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया ॥२६॥
गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्धिनी । गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी ॥२७॥
गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुड़ासना । गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी ॥२८॥
गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठनिवासिनी । गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा ॥२९॥
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा । दैत्येन्द्रप्रवला घण्टावादिनी घोरनिस्वना ॥३०॥
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना । उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ॥३१॥
चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्पहरेति च । उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी ॥३२॥
चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी । चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी ॥३३॥
क्षत्रप्रायश्शिरोवाहा छला छलतरा छली । क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी ॥३४॥
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा । जायिनी जयनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रियाऽजिता ॥३५॥
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी। जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा ॥३६॥
झङ्कारा झञ्झरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी । झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी ॥३७॥
झञ्झरा झमुरी झारा झरा झरतरा परा । झञ्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी ॥३८॥
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया । टङ्कारी टिटिका टीका टङ्किनी चटवर्गगा ॥३९॥
टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया । ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया ॥४०॥
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया । डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ॥४१॥
डाकिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा । ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी ॥४२॥
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी । अनेकरूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धिदायिनी ॥४३॥

अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्धानुसंस्थिता । तार तन्त्रवती तन्त्रतत्त्वरूपा तपस्विनी ॥४४॥
तरङ्गिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा । तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीति प्रघर्षिणी ॥४५॥
तन्त्रयन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी । तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ॥४६॥
स्थाणुप्रिया स्थपरास्थिलता स्थानप्रदायिनी । दिगम्बरा दयारूपा दावाग्निदमनी दमा ॥४७॥
दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी । दमनप्रमदा दैत्यदया - दानपरायणा ॥४८॥
दुर्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता । दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी ॥४९॥
दमना दशनसौन्दर्या दानवेन्द्रविनाशिनी । दयाधरा च दमनी दर्भपत्र विलासिनी ॥५०॥
धारणी धरणी धात्री धराधरधरप्रिया । धराधरसुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी ॥५१॥
धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी । धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ॥५२॥
धन्वन्तरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी । नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा ॥५३॥
नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा । नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी ॥५४॥
सुनीलपुष्पखचिता नीलजम्बुसमप्रभा । नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा ॥५५॥
नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दानन्दविवर्धिनी । यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ॥५६॥
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी । नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ॥५७॥
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता । पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिङ्गमूर्धजा ॥५८॥
पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता । परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी ॥५९॥
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परापरा । पराविद्या परासिद्धिः परास्थानप्रदायिनी ॥६०॥
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता । पुरातना पूर्वपरा परसिद्धिप्रदायिनी ॥६१॥
पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नतपयस्विनी । प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी ॥६२॥
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा । पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी ॥६३॥
पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा । प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६४॥
जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतप्रिया । पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा ॥६५॥
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी । फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी ॥६६॥
परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी । फुत्कारा फुत्करा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना ॥६७॥
फट्मन्त्रास्फटिका स्वाहा स्फोटाच फट्स्वरूपिणी । स्फाटिका घुटिकाघोरा स्फाटिकाद्रिस्वरूपिणी ॥६८॥
वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा । विन्दुस्था विन्दुनी वाणी विन्दुचक्रनिवासिनी ॥६९॥
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया । वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग् बहुरूपिणी ॥७०॥
ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया । वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी ॥७१॥
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी । भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ॥७२॥

भवपारा भवाधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी । भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्यविनाशिनी ॥७३॥
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका । भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ॥७४॥
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा । भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ॥७५॥
भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा । भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी ॥७६॥
भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी । भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ॥७७॥
भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी । भगलिङ्गासम्भोगा भगलिङ्गासवावहा ॥७८॥
भगलिङ्गसमाधुर्य्या भगलिङ्गनिवेशिता । भगलिङ्गसुपूजा च भगलिङ्गसमन्विता ॥७९॥
भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता । माधवी माधवी मान्या मधुरा मधुमानिनी ॥८०॥
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा । महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ॥८१॥
मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना । मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषिता ॥८२॥
मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा । मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ॥८३॥
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासनी । महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यञ्च मिथुनात्मजा ॥८४॥
महाकाल्या महाकाली मनोबुद्धिर्महोत्कटा । माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी ॥८५॥
मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्तमातङ्गगामिनी । मदप्रिया मांसरता मत्तयुक् कामकारिणी ॥८६॥
मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा । मरीचिर्मा रतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ॥८७॥
मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्पदप्रदायिनी । यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ॥८८॥
याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्धिनी । रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ॥८९॥
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता । रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा ॥९०॥
रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्धिनी । रमणारिपरिभ्राज्या रैधा राधिकरत्नजा ॥९१॥
रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा । ऋतुजदा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ॥९२॥
रक्तप्रिया रक्तवती रङ्गिणी रक्तदन्तिका । लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीलालग्ना निताक्षिणी ॥९३॥
लीला लीलावती लोभा हर्षाह्लादनपट्टिका । ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता ॥९४॥
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी । वेदाङ्गना वेदरूपा वनिता विनता बसा ॥९५॥
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा । विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च विन्दुयुग् विन्दुभूषणा ॥९६॥
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला । वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचारपरायणा ॥९७॥
वामाचाररता देवी वासुदेवप्रियोत्तमा । बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च वुद्धा चरणमालिनी ॥९८॥
बन्धमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया । शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका ॥९९॥
शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा । शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया ॥१००॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुकरूपा च शुक्रिका । षण्मुखी च षडङ्गा च षट्चक्रविनिवासिनी ॥१०१॥

षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका । षडङ्गयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी ॥१०२॥
षडानना षडस्त्रा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया । षडङ्गवादा षोडशी च षोढा न्यासस्वरूपिणी ॥१०३॥
षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थस्वरूपिणी । षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षड्रदान्विता ॥१०४॥
सनकादिस्वरूपा च शिवधर्मपरायणा । सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ॥१०५॥
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धासिद्धस्वरूपिणी । हरा हरप्रिया हारा हरिणी हारयुक्तथा ॥१०६॥
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया । हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ॥१०७॥
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा । क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना ॥१०८॥
अजाऽनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी । स्वान्तर्गता च साधूनामन्तरानन्तरूपिणी ॥१०९॥
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी । स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चारविन्दलोचना ॥११०॥
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती । अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी ॥१११॥
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता । अरविन्दमुखी देवी भोगसौख्यप्रदायिनी ॥११२॥
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदायिनी । सीत्काररूपिणी देवी सर्वासनविभूषिता ॥११३॥
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी । इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रवद्योक्षिणी तथा ॥११४॥
ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा । जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्मकृत् ॥११५॥
उमा कात्यायनी ऊर्द्धा मीना चोत्तरवासिनी । उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी ॥११६॥
उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा । उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ॥११७॥
ऊर्द्धदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी । उमासिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ॥११८॥
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धिसिद्धि प्रदायिनी । उत्सवोत्सवसीमान्ता कामिका च गुणान्विता ॥११९॥
एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा । ॐकार वलयोपेता ॐकारपरमा कला ॥१२०॥
ॐवद वद वाणी च ॐकाराक्षरमण्डिता । ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐलोकपरवासिनी ॥१२१॥
ॐकारमध्यबीजा च ॐनमो रूपधारिणी । परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा ॥१२२॥
ॐकारा अः फट्मंत्रा च अक्षाक्षरविभूषिता । अमन्त्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्विता ॥१२३॥
प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः । ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा ॥१२४॥
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता । बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी ॥१२५॥
क्लीं कामराजक्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा । क्लींक्लींक्लीं रूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रीं नामधारिणी ॥१२६॥
कमला शक्तिबीजा च पाशाङ्कुशविभूषिता । श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धाद्धाश्रवती तथा ॥१२७॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमा कला । ह्रीं क्लीं श्रीङ्कारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा ॥१२८॥
सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा । सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ॥१२९॥
सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी । गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी ॥१३०॥

सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी । सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ॥१३१॥
सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी । सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१३२॥
मनोवाञ्छितदात्री च मनोबुद्धि समन्विता । अकारादिक्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥१३३॥
पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी । स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता ॥१३४॥
अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा । तत्त्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी ॥१३५॥
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनी च । वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ॥१३६॥
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा । सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥१३७॥
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता । स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्याचरण शुक्रभा ॥१३८॥
संक्रांतिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता । प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ॥१३९॥
पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा । अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ॥१४०॥
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा । अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा ॥१४१॥
खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा । भुशुण्डी चापिनी वाणा सर्वायुधविभीषणा ॥१४२॥
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा । कुलकर्म्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्धिनी ॥१४३॥
कीर्तिः श्रीः चरमा रामा धर्म्मायै सततं नमः । क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ॥१४४॥
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्या विवर्धिनी । साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ॥१४५॥
काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी । कौलिनी कालिकी चैव कचटतपवर्णिका ॥१४६॥
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा । स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी ॥१४७॥
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वालामालासमाकुला । भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी ॥१४८॥
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला । काश्यपी विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च ॥१४९॥
कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्धिनी । सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छिन्नासिशङ्करा ॥१५०॥
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च । अग्निनैर्ऋति वायव्या ईशान्या दिक् तथा स्मृता ॥१५१॥
ऊर्ध्वाङ्गाऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका । चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रामित्मकाक्षरा ॥१५२॥
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा । वतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१५३॥
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी । सुरा मुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा ॥१५४॥
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिका शिवा । नील्या सरस्वती सा त्वं बगला छिन्नमस्तका ॥१५५॥
सर्वेश्वरी सिद्धिविद्या परा परमदेवता । हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुलाधरवासिनी ॥१५६॥
हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुलाभरणा च सा । जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥१५७॥
जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा । जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ॥१५८॥
ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया । जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ॥१५९॥
विद्याधरा च विम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी । विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ॥१६०॥

मन्त्ररूपा परा देवी तथैव गुरुरूपिणी । गया गङ्गा गांमती च प्रभासा पुष्करापि च ॥१६१॥
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी । बहुबहुसुन्दरी च कंसासुरविनासिनी ॥१६२॥
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रहरापि च । दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ॥१६३॥
सर्वलोकप्रणेत्री च सर्वरोगहरापि च । मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमाकला ॥१६४॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता हसितानना । सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥१६५॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा । ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याणकारिणी ॥१६६॥
योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता । योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्ददायिनी ॥१६७॥
इन्द्रादिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया । विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयङ्करी ॥१६८॥
भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी । बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी ॥१६९॥
पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी । सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ॥१७०॥
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी । सावित्री च महादेवी परप्रियनिनायिका ॥१७१॥
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा । चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ॥१७२॥
चन्दनेन्द्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी । सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ॥१७३॥
महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी । विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ॥१७४॥
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी । कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ॥१७५॥
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च । परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥१७६॥
इति ते कथितं देवि पीतानामसहस्त्रकम् । पठेद् वा पाठयेद् वापि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये ॥१७७॥
इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम् । प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वती ॥१७८॥
एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति । एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१७९॥
द्विवारं च पठेद् यस्तु विघ्नेश्वर समोभवेत् । त्रिवारं पठनाद् देवि सर्वं सिध्यति सर्वथा ॥१८०॥
स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते । मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ॥१८१॥
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम् । महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते ॥१८२॥
क्षोणीपतिर्वशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत् । यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये ॥१८३॥
गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः । गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत् सदा ॥१८४॥
हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत् । यः इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशौ भवेत् ॥१८५॥
जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान् मृतो मोक्षपतिर्भवेत् । सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः ॥१८६॥
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते । सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥१८७॥
पीताम्बरपरीधानां पीतगन्धानुलेपनाम् । परमोदयकीर्तिः स्यात् स्मरतः सुरसुन्दरि ॥१८८॥

॥ इतिश्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्त्रे। विष्णुशङ्करसंवादे श्रीपीताम्बरीसहस्त्रनामस्तोत्रम् ॥११॥

॥ अथ श्री पूर्णाभिषेक स्तोत्रम् ॥

ग्रह शांतिवत् कर्म करें। प्रधान घट में देवी का आवाहन करें। पश्चात् घट के द्रव्य से शिष्य अभिषेक करें। शिष्य के सहस्त्रदल को जाग्रत करें, कुण्डलिनी का उत्थापन करें।

ततो गुरुः पूर्वोक्ते घटे शिष्येण देवीमर्चयित्वा । श्रीं ह्रीं जप्त्वा घटं चालयेत् ।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मकलश देवताभीष्टसिद्धद । सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेन पूरयाऽस्य मनोरथम् ॥

विनियोगः :- **ॐ अस्य श्री अभिषेक स्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शिष्येष्टदेवता देवता, प्रणवो बीजम्, आयुःकीर्तिबलारोग्याद्यवाप्त्यै पूर्णाभिषेके विनियोगः।**

ॐ गुरवस्त्वाऽभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । दुर्गालक्ष्मीभवान्यस्त्वामभिषिञ्चन्तु मातरः ॥१॥
षोडशी तारिणी नित्या स्वाहा महिषमर्दिनी। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥२॥
जयदुर्गा विशालाक्षी ब्रह्माणी च सरस्वती । एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु बगला वरदा शिवा ॥३॥
नारसिंही च वाराही वैष्णवी वनमालिनी इन्द्राणी वारुणी रौद्री त्वाऽभिषिञ्चन्तु शक्तयः ॥४॥
भैरवी भद्रकाली च तुष्टिः पुष्टिरुमा क्षमा। श्रद्धा कान्तिर्दया शान्तिरभिषिञ्चन्तु ते सदा ॥५॥
महाकाली महालक्ष्मी र्महानीलसरस्वती। उग्रचण्डा प्रचण्डाद्य अभिषिञ्चन्तु सर्वदा ॥६॥
मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा। रामो भार्गवरामस्त्वामभिषिञ्चन्तु वारिणा ॥७॥
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधोन्मत्तक्षयङ्करः। कपाली भीषणश्च त्वामभिषिञ्चन्तु वारिणा ॥८॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी । विप्रचित्ता महोग्रा त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वदा ॥९॥
इन्द्रोऽग्निः शमनो रक्षो वरुणः पवनस्तथा । धनदश्च तथेशानः सिञ्चन्तु त्वां दिगीश्वराः ॥१०॥
रविः सोमा मङ्गलश्च बुधो जीवः सितः शनिः। राहुः केतुः सनक्षत्रा अभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः ॥११॥
नक्षत्रं करणं योगा वाराः पक्षौ दिनानि च । ऋतुर्मासो हायनस्त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वदा ॥१२॥
लवणेक्षुसुरा सर्पिर्दधिदुग्धजलान्तकाः । समुद्रास्त्वाऽभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥१३॥
अनन्ताद्या महानागाः सुपर्णाद्याः पतत्रिणः। तरवः कल्पवृक्षाद्याः सिञ्चन्तु त्वां दिगीश्वराः ॥१४॥
पतालभूतलव्योमचारिणः क्षेमचारिणः। पूर्णाभिषेकसन्तुष्टा स्त्वाऽभिषिञ्चन्तु पाथसा ॥१५॥
दौर्भाग्यं दुर्यशो रोगा दौर्मनस्य तथा शुचः । विनश्यन्त्वभिषेकेण कालीबीजेन ताडिताः ॥१६॥
भूताः प्रेताः पिशाचाश्च ग्रहा येऽरिष्टकारिणः। विद्रुतास्ते विनश्यन्ति रमाबीजेन ताडिताः ॥१७॥
अभिचारकृता दोषा वैरिमन्त्रोद्भवाश्च ये । मनोवाक्कायजा दोषा विनश्यन्त्वभिषेचनात् ॥१८॥
नश्यन्तु विपदः सर्वाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः। अभिषेकेण पूर्णेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥१९॥

इत्येतैर्मन्त्रैः शिष्यमभिषिञ्चय पशोर्मुखाद् यो मन्त्रो लब्धस्तं पुनः गुरु श्रावयेत्। पूर्वोक्तनाम्ना शिष्यं संबोध्य शक्तिसाधकान् विज्ञाप्य गुरूरानन्दनाथान्तं नाम शिष्याय दद्यात्। श्रुतमन्त्रो गुरौ इष्टदेवतां सम्पूज्य पञ्चतत्वैर्गुरमर्चयेत्। ततो गोभूहिरण्यवासोयानालङ्करणानि दक्षिणां च गुरवे दद्यात्। ततः पञ्चतत्वैः कौलशक्तिसाधकान् अभ्यर्च्य

गुरोश्चरणौ स्पृष्ट्वा, प्रार्थयेद्। यथा -

श्रीनाथ जगतां नाथ मन्नाथ करुणानिधे। परामृतप्रदानेन पूरयास्मन्मनोरथम् ॥

ततो गुरुः-

आज्ञा मे दीयतां कौलाः प्रत्यक्षशिवरूपिणः। सच्छिष्याय विनीताय ददामि परमामृतम् ॥

ते ब्रूयुः-

चक्रेश परमेशान कौलपङ्कजभास्कर। कृतार्थं कुरु सच्छिष्यं देह्यमुष्मै कुलामृतम् ॥

इति कौलाज्ञामादाय शुद्धिसहित कारणपात्रं शिष्याय दद्यात्। ततः स्रुवलग्नभस्मना सर्वेषां ललाटे तिलकं दद्यात्। ततश्चक्रं संपूर्णं कृत्वां यथेष्टं विहरेत्।

(वामेकेश्वर तंत्रे)

पूजावसाने देवेशि कलशैरभिषेचयेत्। विशेषतश्च तन्मन्त्रं वक्ष्यामि शृणु सादरात् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्सौः पुत्र त्वं सर्वसिद्धीश्वरो भव। इति पूर्वकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं क्रौं हौं हंसः पुत्र त्वं वेतालो भव। इत्यग्निकलशेनैव गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ ह्रीं ऐं ह्लीं ह्सौः हं सःपुत्र त्वं अणिमादिसिद्धीश्वरो भव। इतिदक्षिणनकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ हुं ह्रौं क्रीं श्रीं पुत्र त्वम् अञ्जनासिद्धीश्वरो भव। इति नैऋतकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ अं आं ऐं क्रौं श्रीं ह्लीं पुत्र त्वं लघिमासिद्धीश्वरो भव। इति वारुणकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ आं ऐं क्रीं ह्रीं पुत्र त्वं काम्यसिद्धीश्वरो भव। इति मरुत्कलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ ऐं ओं ह्लीं पुत्र त्वं स्तम्भनादिसिद्धीश्वरो भव। इति कुबेरकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम् ॥
ॐ हं सः ऐं ह्लीं नवनवनामकरणाभिधान पूर्वकं। पुत्र त्वमाकर्षणसिद्धीश्वरो भव ॥
इतीशानकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्। दक्षिणान्तं क्रियाकाण्डं कुर्यात् साधकसत्तमः ॥

॥ इति श्री बगलामुखी तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री मातंगी तंत्रम् ॥

दशमहाविद्याओं में आप नवमी महाविद्या है। सिद्धविद्यात्रयी में आप दूसरी है। मातंगीविद्या की प्रसन्नता से ज्ञान वृद्धि शास्त्रज्ञाता व कवित्व शक्ति एवं संगीत विद्या की प्राप्ति होती है। मातंगी वशीकरण एवं संमोहन की अधिष्ठात्री भी है। इसके प्रयोग से भंडार की अक्षयवृद्धि प्राप्त होती है।

इनके कई नामान्तर है - **१. सुमुखी। २. लघुश्यामा या श्यामला। ३. उच्छिष्ट चाण्डालिनी। ४. उच्छिष्टमातंगी। ५. राजमातंगी। ६. कर्णमातंगी। ७.चण्डमातंगी। ८. वश्यमातंगी। ९. मातंगेश्वरि। १०. ज्येष्ठामातंगी। ११. सारिकाम्बा। १२. रत्नाम्बा मातंगी। १३. वार्ताली मातंगी।**

१. अष्टाक्षर मातङ्गी मंत्र:

मंत्र :- **कामिनी रञ्जिनी स्वाहा।**

विनियोग - **अस्य मंत्रस्य संमोहन ऋषिः निवृत् छन्दः सर्वसंमोहिनी देवता सर्वजन संमोहनार्थे जपे विनियोगः।**

॥ ध्यानम् ॥

श्यामङ्गीं वल्लकीं दोर्भ्यां वादयन्तीं सुभूषणाम्। चन्द्रावतंसां विविधैर्गायनैर्मोहतीं जगत् ॥

२० हजार जप करके मधुयुक्त मधूक पुष्पों से होम करें।

२. दशाक्षर मातङ्गी मंत्र:

मंत्र - **ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।**

विनियोग - **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिर्विराट् छन्दः, मातङ्गी देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

अङ्गन्यास - ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से हृदयादि न्यास करें।

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां सद्रत्न सिंहासने - संस्थां रत्न विचित्र भूषणयुतां संक्षीण मध्यस्थलाम्। आपीनस्तनमण्डलां स्मितमुखीं ध्यायेद् दधन्तीं क्रमाद् वेदैर्बाहुभिरंकुशासि लतिके पाशं तथा खेटकम् ॥१॥

श्यामाङ्गी शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्विभ्रतीम् पाशं खेटमथांऽकुश दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम्। रत्नालङ्करण प्रभोज्वलतनुं भास्वत् किरीटां शुभाम् मातङ्गीं मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धि प्रदाम् ॥२॥

श्याङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासन स्थिताम्। ध्यायेऽहं वेदैर्बाहु दण्डैरसि खेटक पाशांकुशधराम् ॥

॥ अथ यंत्रार्चनम् ॥

सर्वतोभद्रमण्डल पर '**ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवतायै नमः**' से पूजन करें। यंत्र को आग्न्युत्तारण पूर्वक शुद्धकरें '**ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः**' से पुष्पादि से आसन देकर यंत्र स्थापित करें। अष्ट दिशाओं में पीठ शक्तियों की पूजा करें।

॥ आवरण पूजनम् ॥

मध्य में ध्यान पूर्वक आवाहन देवी का करें, षट्कोण में षड्ंग पूजा करें। **ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।** से देवी की षडङ्ग पूजा करें।पश्चात् अष्टदल में आवरण पूजा करें।

अष्टदलेषु - **ॐ रत्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। ॐ मनोभवायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ शुद्धायै नमः। ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः। ॐ अनङ्गमदनायै नमः। ॐ मदनालसायै नमः।**

भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का सायुध पूजन करें।

साधक छः हजार जप नित्य करते हुये २१ दिन प्रयोग करें, दशांश होम करें। चतुष्पद श्मशान या कलामध्य में मछली, मांस, खीर, गुगल का धूप देवे। इससे कवित्व शक्ति प्राप्त होवे। जल अग्नि एवं वाणी स्तंभन करने में समर्थ होता है। वादविवाद में वह दूसरा वृहस्पति बन जाता है। ऐसे साधक के घर में स्वयं कुबेर आकर धन प्रदान करते है। बिना मांस मछली के परदेवता की पूजा नहीं करें। पूजा अपने कुलधर्म व अनुकल्पों के आधार पर असमर्थ साधक को करनी चाहिये।

३. लघुश्यामा मातंगी

यह मातंगी विद्या वशीकरण हेतु प्रमुख है। इसका उच्छिष्ट नाम से संबोधन के कारण साधकों के मन में शंका रहती है कि उच्छिष्ट गणपति की तरह क्या **इसका प्रयोग भी उच्छिष्ट मुंह से करना चाहिये।** इसके मंत्र प्रयोगों में तो उच्छिष्ट मुंह की नहीं कही है परन्तु संभवतया ऐसा कर सकते हैं। क्योंकि **पुरश्चार्णव व मंत्रमहोदधि उच्छिष्ट भोजन देवता में इसके लिये लिखा है।** इसके पूजन की अंग देवियां सब कुमारीरूपा है। सुमुखी के मंत्र में उच्छिष्ट मुंह से जप करने का उल्लेख है।

विंशाक्षर मंत्र - ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा।

विनियोगः - **अस्य श्री लघुश्यामा मंत्रस्य मदनऋषिः, निचद्गायत्रीछन्दः, देवी लघुश्यामा देवता, ऐं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममाखिलभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ॐ मदनऋषये नमः शिरसि। निचृद्गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। देवी लघुश्याम देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

रत्यादिन्यास :- **ऐं रत्यै नमः मूर्ध्नि। ह्रीं प्रीत्यै नमः हृदि। क्लीं मनोभवायै नमः पादयोः। ऐं इच्छाशक्त्यै नमो मुखे। ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः कण्ठे। क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः लिङ्गे।**

वाणन्यासः - **द्रां द्रावणबाणाय नमः शिरसे। द्रीं शोषणवाणाय नमो मुखे। क्लीं तापनवाणाय नमो हृदि। ब्लूं मोहनवाणाय नमो गुह्ये। सः उन्मादनवाणाय नमः पादयोः।**

करन्यास :- ऐं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। उच्छिष्ट तर्जनीभ्यां नमः। चाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः। मातंग्यनामिकाभ्यां नमः। सर्ववशङ्करी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास :- ऐं नमः हृदयाय नमः। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा। चाण्डालि शिखायै वषट्। मातङ्गि कवचाय हुं। सर्ववशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ब्राह्मयादि मातृकान्यास :- आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमः मूर्ध्नि। ईं लां माहेश्वरीकन्यकायै नमो वामांसे। ऊं हौं कौमारी कन्यकायै नमो वामपार्श्वे। ॠं सां वैष्णवीकन्यकायै नमः नाभौ। लृं षां वाराही कन्यकायै नमो दक्षपार्श्वे। ऐं शां इन्द्राणीकन्यकायै नमः दक्षांसे। औं वां चामुण्डा कन्यकायै नमः ककुदि। अः लां महालक्ष्मी कन्यकायै नमो हृदि।

सिद्धिन्यास :- ऐं अणिमासिद्धि कन्यकायै नमो ललाटे। इस तरह सब जगह नाम के बाद कन्यकायै नमः कहें। ऐं महिमा सिद्धि भ्रूमध्ये। ऐं लघिमासिद्धि क. कण्ठे। ऐं गरिमासिद्धि क. हृदि। ऐं असिता (ईशिता) सिद्धि क. नाभौ। ऐं वशितासिद्धि नमः क. आधारे। ऐं प्राकाम्यसिद्धि नमः क. लिङ्गे। ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धि कन्यकायै नमो मूर्ध्नि। (मन्त्र महोदधि में ये न्यास मुर्ध्नि से लिङ्गे इस तरह दिये हैं)

अप्सरोन्यास - सर्वत्र अमुक नाम के बाद कन्यकायै नमः का उच्चारण करें। यथा - ॐ क्लीं उर्वश्यप्सर कन्यकायै नमो मूर्ध्नि। ॐ क्लीं मेनकाप्सरः क. नमः ललाटे। ॐ क्लीं रम्भाप्सरः क. दक्षनेत्रे। ॐ क्लीं घृताच्यप्सरः क. वामनेत्रे। ॐ क्लीं पुञ्जिकस्थल्यप्सरः क. वक्त्रे। ॐ क्लीं सुकेश्यप्सरः क. दक्षकर्णे। ॐ क्लीं मञ्जघोषाप्सर क. वामकर्णे। ॐ क्लीं महारङ्गवत्यप्सरः क. ककुदि।

अष्टकन्यान्यास :- ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमः दक्षांसे। ॐ क्लीं गंधर्व क. नमः वामांसे। ॐ क्लीं सिद्धकन्यकायै नमः हृदि। ॐ क्लीं नरकन्यकायै नमः दक्षस्तने। ॐ क्लीं नागकन्यकायै नमः वामस्तने। ॐ क्लीं विद्याधरकन्यकायै नमो जठरे। ॐ क्लीं किंपुरुषकन्यकायै नमः गुह्ये। ॐ क्लीं पिशाचकन्यकायै नमः मूलाधारे।

मंत्रवर्णन्यास :- ॐ ऐं नमः दक्षिणबाहुमूले। ॐ नं नमः दक्षिण कर्पूरे। ॐ मं नमः दक्षिणमणिबंधे। ॐ उं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले। ॐ च्छि नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। ॐ ष्टं नमः वामबाहूमूले। ॐ चां नमः वामकर्पूरे । ॐ डां नमः वाममणिबन्धे। ॐ लिं नमः वामहस्तांगुलिमूले। ॐ मां नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। ॐ तं नमः दक्षपादमूले। ॐ गिं नमः दक्ष जानुनि। ॐ सं नमः दक्षगुल्फे। ॐ र्वं नमः दक्षपादांगुलिमूले। ॐ वं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। ॐ शं नमः वामपादमूले। ॐ कं नमः वामजानुनि। ॐ रिं नमः वामगुल्फे। ॐ स्वां नमः वामपादांगुलिमूले। ॐ हां नमः वामपादांगुल्यग्रे।

॥ध्यानम्॥

माणिक्याभरणान्वितां स्मितमुखीं नीलोत्पलाभाम्बराम्
रम्यालक्त कलिप्त पादकमलां नेत्रत्रयोल्लासिनीम् ।
वीणावादन - तत्परां सुरनतां कीरच्छदश्यामलां
मातङ्गीं शशिशेखरामनु भजेत् तांबूलपूर्णाननाम् ॥

॥ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

सर्वतोभद्रमण्डल पर **ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ देवताभ्यों नमः** से पीठ देवताओं का पूजन करे। पश्चात पीठशक्तियों का पूजन करे। **ॐ भूत्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ उन्नत्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ कान्त्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ सृष्ट्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ कीर्त्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ सन्नत्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ व्युष्ट्यै लघुश्यामायै नमः। ॐ उत्कृष्ट्यै लघुश्यामायै नमः।** मध्ये- **ॐ ऋद्धयै लघुश्यामायैनमः।** यंत्र का शोधन कर भद्रमण्डल रखे, पुष्पादि से देवी को आसन देवे। ध्यान मंत्र से आवाहन करे। पश्चात –
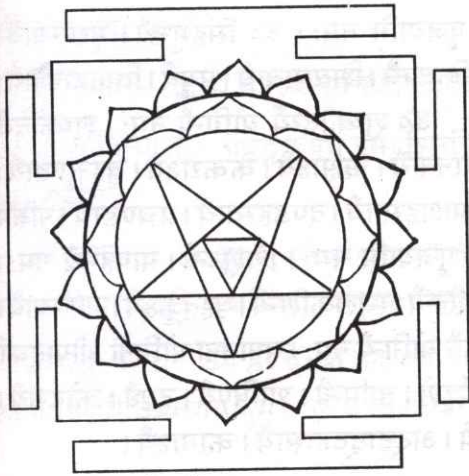
॥ मातंगी (विंशत्यक्षर) यन्त्रम् ॥

ऐं शुकप्रियायै विद्महे क्लीं कामेश्वरि धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात् ॥

उक्त मंत्र से यागवस्तुओं का प्रोक्षण करे। **समस्त पूजन क्रम में चतुर्थी से आवाहन तथा प्रथमा नाम मंत्र सहित पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः कहे।** गंधाक्षत पुष्प से अर्चन करे। पुष्पांजलि लेकर देवी से पूजन की आज्ञा मांगे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे।

प्रथमावरणम्:– (त्रिकोणे) देवी के अग्र भाग में – **ॐ ऐं रत्यै नमः। रति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** इस तरह सर्वत्रनाम मंत्र के साथ सभी आवरण पूजा करे। देवी दक्षिणतः **ॐ ह्रीं प्रीत्यै नमः।** देवीवामे-**ॐ क्लीं मनोभवायै नमः।** पुनः त्रिकोण में देवी के आगे-**ऐं इच्छाशक्त्यै नमः।** देवीदक्षिणतः– **ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः।** देवीवामे **क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः।**

पुष्पांजलि अर्पण करे-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अर्घ पात्र से जल छोड़ कर कहे **पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** ऐसा सभी आवरण पूजा बाद करें।

द्वितीयावरणम्:– (पंचकोणे) देवी के पास में पांचवाणों का पूजन करे। **ॐ द्रां द्रावणवाणाय नमः। द्रीं शोषणवाणाय नमः। क्लीं तापनवाणाय नमः। ब्लूं मोहन वाणाय नमः। सः उन्मादनवाणाय नमः।**

तृतीयावरणम् :– पंचकोण एवं वृत्तमध्ये षड्दिक्षु – **ऐं नमः हृदयाय नमः। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा। चाण्डालि शिखायै वषट्। मातङ्गि कवचाय हुं। सर्ववशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहास्त्राय फट्।**

चतुर्थावरणम् :– (अष्टदले) अष्टदल में ब्राह्मयादि अष्टमातृओं का पूजन करे। उनके नाम मातृकान्यास में कहें जा चुके हैं। यथा-**पूर्वे आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमः। ब्राह्मीकन्याका श्री पादुकां पूजयामि।**

पंचमावरणम् :– (अष्टदलाग्रे) अष्टदल में अणिमादि अष्टसिद्धियां जो सिद्धिन्यास में कहीं हैं उनका पूजन करे। यथा– **ॐ ऐं अणिमासिद्धि कन्यकायै नमः। अणिमा सिद्धि कन्यका श्री पादुकां पूजयामि नमः।**

षष्ठमावरणम् :– (षोडशदले) अष्टअप्सरा तथा अष्टकन्या नाम में जो नाम न्यासविधि में कहे हैं उनसे पूजन करे।

यथा-ॐ **क्लीं उर्वश्यप्सरः कन्यकायै नमः। उर्वश्यप्सरः कन्यका श्री पादुकां पूजयामि नमः।**

सप्तमावरणम्ः- भूपूर के चारों द्वारों में पूर्वादि क्रम से १६-१६ योगनियों का पूजन करे। प्रत्येक नाम के पहले ॐ तथा **पश्चात् योगिन्यै नमः** कहकर पूजन करे। यथा-

ॐ गजाननायै योगिन्यै नमः। गजानना योगिनी श्री पादुकां पूजयामि नमः। ॐ सिंहमुख्यै। गृध्रास्यायै। काकतुण्डिकायै। उष्ट्रग्रीवायै। हयग्रीवायै। वाराह्यै। शरभाननायै। उलूकिकायै। शिवारावायै। मयूर्यै। विकटाननायै। अष्टवक्त्रायै। कोटराक्ष्यै। कुब्जकायै। विकटलोचनायै। दक्षिण द्वारेः- **ॐ शुष्कोदर्य्यै योगिन्यै नमः। शुष्कोदरी योगिनी श्री पादुकां पूजयामि नमः। ललज्जिह्वायै। अश्वदंष्ट्रायै। वानराननायै। ऋक्षाक्ष्यै। केकराक्ष्यै। वृहत्तुण्डायै। सुराप्रियायै। कपालहस्तायै। रक्ताक्ष्यै। शुक्यै। श्येन्यै। कपोतिकायै। पाशहस्तायै। दण्डहस्तायै। प्रचण्डायै।** पश्चिम द्वारेः- **ॐ चण्डविक्रमायै योगिन्यै नमः। चण्डयोगिनी श्री पादुकां पूजयामि नमः। शिशुध्न्यै। पापहन्त्र्यै नमः। काल्यै। रुधिरपायिन्यै। वसाधरायायै । गर्भभक्षायै। शवहस्तायै। अन्त्रमालिन्यै। स्थूलकेशिन्यै। वृहत्कुक्ष्यै। सर्पास्यायै। प्रेतवाहनायै। दंदशूककरायै। क्रौंच्यै। मृगशीर्षायै।** उत्तरद्वारेः- **वृषाननायै योगिन्यै नमः। वृषानना योगिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। वृत्तास्यायै। धूम निःश्वासायै। व्योमैकचरणायै। उर्ध्वदृशे। तापिन्यै। शोषिण्यै। दृष्ट्यै। कोटरायै। स्थूलनासिकायै। विद्युत्प्रभायै। बलाकास्यायै। मार्जार्यै। कटपूतनायै। अट्टाट्टहासायै। कामाक्ष्यै।**

अष्टमावरणम् :- (भूपूरे) अग्निकोणे- **ॐ बं बटुकाय नमः।** नैऋत्ये- **गं गणपतये नमः।** वायवे-ॐ **क्षं क्षेत्रपालाय नमः।** ईशाने - **ॐ दुं दुर्गायै नमः।**

नवमावरणम् :- (भूपूरे) **इन्द्रादि दशदिक्पालों** का पूर्वादिक्रमेण पूजन करे।

दशमावरणम् :-(भूपूरे) **इन्द्रादि के वज्रादि आयुधों** का पूजन करे।

एकादशावरणम् :- (भूपुरे) पूर्वादि चारों दिशाओं में - **ॐ वीणाय नमः। ॐ वीतताय नमः।** ॐ घनाय **नमः। ॐ सुषिराय नमः।**

इसके पश्चात् देवि की विधिवत् पूजा करे। एक लक्ष जप कर महुये के पुष्पों व समिध से दशांश होम कर तर्पण मार्जन करे। इसके प्रयोग से शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत बाधा नहीं पहुंचा सकते। देवी साधक की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करती हैं तथा वह मनुष्य देवतुल्य हो जाता हैं। साधक को स्त्रियों का सदैव आदर करना चाहिये। राजा, प्रजा का साधक वशीकरण करने में समर्थ हो जाता है।

४. एकोन विंशाक्षर उच्छिष्ट मातङ्गी

मंत्र - **नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य नारद तुम्बुर ऋषि, सगायत्री निवृत् छंदः, मातंगी देवता, सर्वजन वशीकरणार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **नमः हृदयाय नमः। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा। चाण्डालि शिखायै वषट्। मातङ्गि कवचाय हुं। सर्ववशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

कृष्णाम्बरां यावकार्द्र चरणामुन्नत स्तनीं। मुक्ता प्रवाल मालाढ्यां शङ्ख कुण्डल धारिणीम्॥

अन्य मंत्रः- **उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि नमः स्वाहा।**

५. द्वात्रिंशदक्षरो मातंगी

मंत्र:- **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्टचाण्डालि श्रीमातङ्गेश्वरि सर्वजन वशङ्करि स्वाहा।** अन्यत्र **''नमो''** की जगह **नमः** भी हैं।

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य मतंगऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्रीमातङ्गी देवता, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास:- **मतङ्गऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। मातंगी देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास:- **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। नमो भगवति तर्जनीभ्यां नमः। उच्छिष्ट चाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः। श्रीमातंगेश्वरि अनामिकाभ्यां नमः। सर्वजनवशंकरि कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास:- **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः। नमो भगवति शिरसे स्वाहा। उच्छिष्टचाण्डालि शिखायै वषट्। श्रीमातंगेश्वरि कवचाय हुम्। सर्वजनवशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

घनश्यामलाङ्गीं स्थितां रत्नपीठे शुकस्योदितं शृण्वतीं रक्तवस्त्राम्।
सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं भजे वल्लकीं वादयन्तीं मातंगीम् ॥

॥ अथ यंत्रार्चनम् ॥

भद्रमण्डल पर पीठदेवताओं का **''ॐ मं मंडूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः''** से पूजन करे। देवी यंत्र को शोधित कर पीठ पर रखे। भद्रपीठ में नव पीठ शक्तियों का पूजन करे। **ॐ विभूत्यै मातंग्यै नमः। ॐ उन्नत्यै मातंग्यै नमः। ॐ कांत्यै मातंग्यै नमः। ॐ सृष्ट्यै मातंग्यै नमः। ॐ कीर्त्यै मातंग्यै नमः। ॐ सन्नत्यै मातंग्यै नमः। ॐ व्युष्ट्यै मातंग्यै नमः। ॐ उत्कृष्टये मातंग्यै नमः। मध्ये- ॐ ऋद्धयै मातंग्यै नमः। ''ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः''** से पुष्पासन देकर यंत्र रखे।

॥ अथ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

पुष्पांजलि लेकर देवी से आज्ञा मांगे-

ॐ संविन्मये देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मातङ्गी परिवारार्चनाय मे॥

ध्यान मंत्र से देवी का आवाहन करे।

प्रथमावरणम् :- (त्रिकोणे) **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रत्यै मातंग्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं प्रीत्यै मातंग्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं मनोभवायै मातंग्यै नमः।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

मंत्र से पुष्पांजलि देकर अर्घ्यपात्र से बिन्दु छोड़ते हुये कहे **पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** इस तरह प्रत्येक आवरण पूजा के बाद कहे।

द्वितीयावरणम् :- (षट्कोणे) आग्नेयादि चतुष्कोणे -**ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः। हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** इति सर्वत्र। **नमो भगवति शिरसे स्वाहा। उच्छिष्ट चाण्डालि शिखायै वषट्। श्रीमातंगेश्वरि कवचाय हुं।** अग्रे- **सर्वजन वशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्र श्री पा.पू.।** दिक्षु- **स्वाहा अस्त्राय फट्, अस्त्र श्री पा. पू.।**
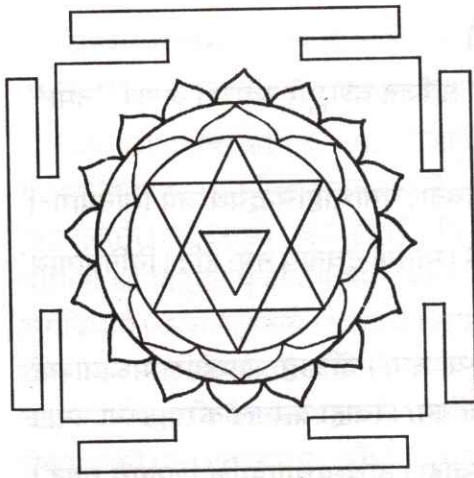
॥ मातंगी (द्वात्रिंशदक्षरो) यन्त्रम् ॥

तृतीयावरणम्:- (अष्टदले) प्रत्येक नाम के पहले "**ॐ ह्रीं ऐं श्रीं**" तथा बाद में **अमुक मातंगी पादुकां पूजामि तर्पयामि** कहे। यथा- **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ब्राह्मयै मातंग्यै नमः। ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि नमः। माहेश्वर्यै मातंग्यै नमः कोमार्यै मातंग्यै नमः। वैष्णव्यै मातंग्यै नमः। वाराह्यै मातंग्यै नमः। इन्द्राण्यै मातंग्यै नमः। चामुण्डायै मातंग्यै नमः। महालक्ष्म्यै मातंग्यै नमः।**

चतुर्थावरणम् :- (अष्टदलाग्रे) प्रत्येक भैरव नाम के पहले **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं** तथा बाद में **मातंग्यै नमः** बोलकर आवाहन पूजन करे। **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं असितांग भैरवाय मातंग्यै नमः। असितांग भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। रुरुभैरवाय। चण्डभैरवाय। क्रोधभैरवाय। उन्मत्तभैरवाय। कपालभैरवाय। भीषणभैरवाय। संहार भैरवाय।**

पंचमावरणम् :-(षोडशदले) पूर्व की तरह नाम मंत्र पहलें **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं** तथा पश्चात् **मातंग्यै नमः** से आवाहन पूजन करे। **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वामायै मातंग्यै नमः। वामा श्री पा.। जेष्ठायै। रोद्र्यै। शान्त्यै। श्रद्धायै। माहेश्वर्यै। क्रियायै। लक्ष्म्यै। सृष्ट्यै। मोहिन्यै। प्रमथायै। श्वासिन्यै। विद्युल्लतायै। सुन्दर्यै। नन्दायै। नन्दबुद्ध्यै।**

षष्ठमावरणम् :- (भूपूरे) पूर्वे- **मातंग्यै**। दक्षिणे- **महामातंग्यै**। पश्चिमे- **महालक्ष्म्यै**। उत्तरे- **सिद्ध्यै**। आग्नेयादि चारों कोणों में **ॐ विघ्नेशाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ वटुकाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

सप्तमावरणम् :- (भूपूरे) भूपूर में इन्द्रादि दशदिक्पालों का उनके वज्रादि आयुध सहित पूजन करे।

पुरश्चरण १० हजार जप का कहा हैं। मधुयुक्त महुये के पुष्प व समिधा से होम करें। मल्लिका पुष्प होम से योग सिद्धि। बेलपुष्प होम से राज्य प्राप्ति। पलाश पत्र व फल होम से जनवशीकरण। गिलोय होम से रोगनाश। नीम के टुकड़ों (निमित्त मात्र) व चावल से होम करने पर लक्ष्मी प्राप्ति होवे। नीम के तेल से सिक्त नमक के होम से शत्रुनाश। लवणहोम से आकर्षण। तगर व वेतस होम से जलसिद्धि। अन्न (पक्वान्न) होम से आहार सिद्धि। हरिद्रा व नमक होम से स्तंभन। गंधाष्टक होम से संसार का वशीकरण। अष्टगंध को अभिमंत्रित कर तिलक करने से जगत्प्रिय होवे। केले के फल के होम से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती हैं। मधुसिक्त नमक से बनायी गयी पुतली को दाहिने पैर की ओर से तपाने से एवं १०८ बार में खैर की अग्नि में होम करने से शत्रु वश्य होवे।

॥ सुमुखी मातङ्गी प्रयोगः ॥

यहां दो मंत्र दिये जा रहे हैं, दोनों में **केवल ई की मात्रा का भेद** हैं परन्तु ऋषि अलग अलग हैं।

मंत्रो यथा- **१. उच्छिष्ट चाण्डालिनी सुमुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः**। पुरश्चार्यार्णव में इस मंत्र के **ऋषि अज, छंद गायत्री तथा देवता सुमुखी मातंगी हैं।**

मंत्रमहार्णव में ध्यान **गुंजानिर्मितहार ....**। फेत्कारिणी तंत्र में ध्यान इस प्रकार है -

शवोपरि समासीनां रक्तांबर परिच्छदां रक्तालङ्कार संयुक्तां गुञ्जाहार विभूषिताम् ।
षोडशाब्द च युवतीं पीनोन्नत पयोधरां कपाल कर्त्रिका हस्तां परज्योतिः स्वरूपिणीम् ॥

पुरश्चरण में आठ हजार जप उच्छिष्ट मुंह से करे।

२. (मंत्र महोदधौ) **उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः।**

विनियोग:- **अस्य सुमुखि मंत्रस्य भैरव ऋषि गायत्रीश्छन्दः सुमुखि देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास:-**ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि। गायत्रीश्छंद से नमः मुखे। सुमुखीदेवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास:- **ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि अंगुष्ठाभ्यां नमः। सुमुखि तर्जनीभ्यां नमः। देवि मध्यमाभ्यां नमः। महापिशाचिनि अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ठः ठः ठः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास:- **उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः। सुमुखि शिरसे स्वाहा। देवि शिखायै वषट्। महापिशाचिनि कवचाय हुँ। ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ठः ठः ठः अस्त्राय फट्।**

गुञ्जानिर्मितहार भूषित कुचां सद्यौवनोल्लसिनीं, हस्ताभ्यां नृकपाल खड्गलतिके रम्ये मुदा बिभ्रतीम्।
रक्तालंकृति वस्त्रलेपन लसद् देहप्रभां ध्यायतां, नृणां श्रीसुमुखीं शवासनगतां स्युः सर्वदा सम्पदः।

॥ यंत्रार्चनम् ॥

फेत्कारिणि तंत्र में पूर्व मंत्र वाला ध्यान दिया हैं। इसके बाद भद्रपीठ पर "**ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त देवताभ्यो नमः**" से पीठ देवताओं का पूजन करे। अष्ट दिशाओं में - **ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोराय नमः।** मध्ये **ॐ मंगलायै नमः।** इन नव पीठ शक्तियों का पूजन करे।

॥ आवरण पूजा प्रयोगः ॥

सर्वतोभद्र पर पीठशक्तियों के पूजन पश्चात् स्वर्ण यंत्र का शोधन कर घी से अभ्यङ्ग कर दुग्धधारा से अग्न्युत्तारण कर "**ॐ ह्रीं सुमुखीयोग पीठात्मने नमः**" से पुष्पाद्यासन देकर पीठ मध्य में रखे। प्राणप्रतिष्ठा करे। देवी का ध्यानपूर्वक आवाहन करे। पुष्पांजलि लेकर देवि से आज्ञा मांगे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि सुमुखि परिवारार्चनाय मे॥

प्रथमावरणम् :- (पंचकोणे) **ॐ चन्द्रायै नमः, चन्द्रा, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र। ॐ चन्द्राननायै नमः। ॐ चारुमुख्यै नमः। ॐ चामीकरप्रभायै नमः। ॐ चतुरायै नमः।**

पुष्पांजलि देवे-

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अर्घ्यपात्र से बिन्दु छोड़कर करे "**पूजितास्तर्पिताः सन्तु**"। इति सर्वत्र॥

द्वितीयावरणम्- हृदयादि न्यास मंत्रों से देवि की अंग पूजा करे।

तृतीयावरणम्- (अष्टदले) **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**
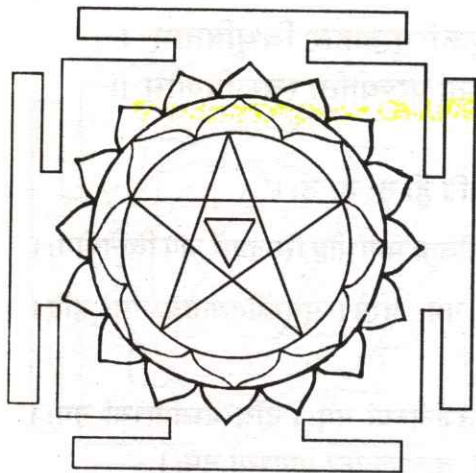
॥ सुमुखी यन्त्रम् ॥

महालक्ष्मी श्री पा. पू.।

चतुर्थावरणम् :- (षोडशदले) **ॐ कलायै नमः। ॐ कलानिधये नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कमलायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ कृपायै नमः। ॐ कुलायै नमः। ॐ कुलनीयै नमः। ॐ कल्याण्यै नमः। ॐ कुमार्यै नमः। ॐ कलभाषिण्यै नमः। ॐ करालाख्यायै नमः। ॐ किशोर्यै नमः। ॐ कोमलायै नमः। ॐ कुलभूषणायै नमः। ॐ कल्पदायै नमः।**

पंचमावरणम् :- (भूपूरे) इन्द्रादि दिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करे।

धूपदीपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजन कर मंत्र जपे। एक लाख मंत्र जप कर पलाश, किंशुक पुष्प व समिधा से होम करे। जो इस मंत्र को जूठे मुंह दस हजार बार जपता हैं वह संपत्तिवान हो जाता हैं। जूठे मुंह ही निरंतर बलि देनी चाहिये। दही से सिक्त पीली सरसों व चावल से हवन करे तो मंत्री राजा सभी वशी होवे। बिल्ली के मांस होम से शस्त्र वशीकरण होवे। बकरे के मांस होम से धनसमृद्धि प्राप्त होवे। खीर के होम से विद्या प्राप्ति होवे। मधुयुक्त खीर तथा स्त्री के रज से युक्त वस्त्र से होम करने से जनता साधक के वश में हो जाती हैं। मधु तथा घृत युक्त पान के पत्तों के होम से महासमृद्धि प्राप्त होवे। मधु और घी के साथ तत्काल मारी गयी बिल्ली के मांस को चाण्डाल के बालों के साथ होम करने से स्त्री का आकर्षण होता हैं। मधु से युक्त खरहे के मांस से होम करने से विद्या की सिद्धि होती हैं। धत्तूरे की समिधाओं से प्रदीप्त चिता की अग्नि में कोयल और कौए के पंखों से होम करने से साधक शीघ्र ही शत्रुओं को मार देता हैं। कौए एवं उल्लू के पंखों के होम से शत्रुओं में विद्वेषण होवे। उल्लू के पंख का होम करने से सगर्भा स्त्री का गर्भपात हो जाता हैं। जो साधक घी से सिक्त बेल के हजार पत्रों से एक मास तक होम करता हैं उससे बंध्या स्त्री भी पुत्र प्राप्त करे। बन्धूक पुष्पों के होम से दुर्भगा भी सौभाग्य प्राप्त करे। वाममार्ग से देवी शीघ्र फल प्रदान करती हैं। श्मशान, चौराहा अथवा निर्जन में बलि अवश्य देनी चाहिये। सुमुखि शीघ्र फल प्रदा हैं।

बलि मंत्र :- श्री मातङ्गीश्वरि बलिं गृह्ण, गृह्ण हुं फट् स्वाहा क्षेत्रे इमं बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा।

६. ज्येष्ठ मातंगी मंत्रा:

१. एकोन त्रिंशाक्षर ज्येष्ठ मातंगी- ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठमातंगि नमामि उच्छिष्ट चाण्डालिनि त्रैलोक्यवशङ्करि स्वाहा। (हिन्दी तन्त्रसार)

२. त्रिंशाक्षर ज्येष्ठ मातङ्गी- हूं ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठमातङ्गि नमामि उच्छिष्ट चाण्डालिनि त्रैलोकवशङ्करि स्वाहा।

३. एकत्रिंशाक्षर ज्येष्ठमातङ्गी- ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठमातङ्गि नमामि उच्छिष्ट चाण्डालिनि त्रैलोक्यवशङ्करि स्वाहा। यह मंत्र जूठे मुंह जपना चाहिये। तंत्रदीपिनी के अनुसार न्यासादि की आवश्यकता नहीं हैं। सिद्धविद्या होने के कारण १८ हजार जप कहे। एक लाख मंत्र जप आवश्यक नहीं हैं।

ध्यान **''शवोपरि समासीनां''** सुमुखीमातंगी का करें।

७. सारिकाम्बा (चतुस्त्रिंशाक्षर) मंत्र:

मंत्र - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति सारिके सकलकला कोविदे मम देवि बोधय बोधय स्वाहा।**

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य शौनक ऋषि:, अति जगती छन्द:, सारिकाम्बा देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्ति:, श्रीं कीलकं, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोग:।**

॥ ध्यानम् ॥

श्यामां कराम्भोरुह केलिलग्नां, सोमवतंसां श्रुतिपाठ दक्षाम् ।
विद्यातिहृद्यां विशदामुपासे, सारीं चतुष्षष्टिकल स्वरूपाम् ॥

ध्यान के अनुसार सिद्ध हैं कि इस विद्या की कृपा से साधक समस्त शास्त्रों का ज्ञाता एवं ६४ लाख कला निदान हो जाता हैं।

८. हसन्ती श्यामलाम्बा (एक चत्वारिंशाक्षर) मंत्र:

मंत्र - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हसन्तीं हसतालापे मातङ्गि परिचारिके मम विघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।**

विनियोग:- (महाविद्या चतुष्टये) **अस्तयमंत्रस्य मतङ्गऋषि, अनुष्टुप् छंद:, हसन्तीश्यामलाम्बा देवता, ऐं बीजं ह्रीं शक्ति:, श्रीं कीलकं, ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग:।**

॥ ध्यानम् ॥

अंगुल्यान्तावलम्बामरुण मणिनिभां कुंचुकीं धारयन्ती कादम्बर्या कपालं नयनत्रयुता कन्दला मन्दहासा।
मेघश्यामा मृगङ्की लसित कबरिका पाणि पद्मात्तवेत्रा मातङ्गी सा हसन्ती मम भवतु सदा मंत्रविघ्नोपशान्त्यै॥

९. कर्णमातङ्गी (त्रिचत्वारिंशाक्षर) मंत्र:

मंत्र :- **ऐं नमः श्री मातङ्गि अमोघे सत्यवादिनि ममकर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नमः।** पुरश्चर्मार्णव के अनुसार ''ऐं'' बीज से षडङ्गन्यास करे।

१०. वश्यमातङ्गी (सप्त चत्वारिंशाक्षर) मंत्र:

मंत्र :- **ॐ राजमुखि राजाधिमुखि वश्यमुखि ह्रीं श्रीं क्लीं देव-देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।** ऋष्यादि विवरण राजमातङ्गी वत्।

११. राजमातङ्गी (चतुष्पञ्चाक्षर) मंत्र:

मंत्र :- **(१) ह्रीं नमः ब्रह्म श्रीराजिते राजपूजिते जये विजये गौर्यषे गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सु सु दु दु घे घे वा वा स्वाहा।**

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य अज ऋषि निवृद्गायत्री छंदः श्रीराजमातङ्गी देवता सर्वराजपुरुषानां वशमानार्थे जपे विनियोग:।**

षडङ्गन्यास:- **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः** से न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यान में जो यंत्रोद्धार दिया है तदानुसार त्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल एवं चार द्वारयुक्त भूपुर यंत्र बनायें।

अमृतोदधिमध्यस्थे रत्नद्वीपे मनोहरे, स्वर्णप्राकार संवीते मणिरत्न विनिर्मिते ।
कदम्बविल्वकद्वारे कल्पवृक्षोपशोभिते, वेदिमध्ये सुखास्तीर्णे रत्नसिंहासने शुभे ॥
अष्टपत्रं महापद्मं केशराढ्यं सकर्णिकं, तन्मध्ये तु त्रिकोणं स्यादष्टपत्रं ततो बहिः ।
पुनः षोडशपत्रं स्यात् तद्बाह्ये स्याच्चतुर्दलं, वेदास्त्रं स चतुर्द्वारं मण्डलं प्रोक्तमुत्तमम् ॥
तस्य मध्ये सुखासीनां श्यामवर्णां शुचिस्मितां, कदम्बमाला भरणं पूजितां च सुरासुरैः ।
प्रलम्बालक संयुक्तां चन्द्ररेखा वतंसिकां, ललाटे तिलकोपेताभीषत् प्रहसिताननाम् ॥
किञ्चित् स्वेदाम्बुमधुर ललाट फलकोज्ज्वलां, वलीतरङ्गमध्यमां रोमराजी विराजिताम् ।
सर्वाभरण संयुक्तां मुक्ताहार विभूषितां, नानामणि गणोन्नद्ध कटिसूत्रैरलंकृताम् ॥
वलयै रत्नखचितैः केयूरैर्मणिभूषितैः। भूषितां द्विभुजां बालां मदाघूर्णित लोचनाम् ।
आपीन मण्डलाभोग समुन्नत पयोधरां, प्रलम्ब वर्णाभरणां कर्णोत्तंस विराजिताम् ॥
तमालनीलां तरुणीं मधुमत्तां मतङ्गिनीं, चतुः षष्टिकलारूपां पार्श्वस्थ शुक सारिकाम् ।
कोटिबालार्क सङ्काशां जपाकुसुम सन्निभां एवं वा पीतवर्णां वा ध्यायेन्मातङ्गिनीं पराम् ॥

पुरश्चरणमें अयुत जप, मधुत्रय युक्त बंधूकपुष्पों से दशांश होम करे।

(२) राजमातंगी पञ्चाशीत्यक्षर मंत्रः- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ नमो भगवति मातङ्गीश्वरि सर्वजन मनोहारि सर्वजन मुखरञ्जनि क्लीं सर्वराज वशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सर्वदुष्ट मृग वशङ्करि सर्वसत्व वशङ्करि सर्वलोकं अमुकं मे वशमानय स्वाहा। महाविद्या चतुष्टय में बीजाक्षरों में भेद हैं तथा सर्वसत्व के स्थान पर सर्वशत्रु छपा हैं तथा स्वाहा के बाद लघुश्यामा का मंत्र देने से कुछ भ्रम बनता हैं।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य मतङ्गऋषि, अमित छन्द, मातंगीश्वरि देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोग हैं।**

षडङ्गन्यास हेतु मंत्र के विभाग इस प्रकार हैं। **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ नमो भगवति मातंगीश्वरि सर्वजन मनोहारि। सर्वजन मुखरञ्जनि क्लीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि। सर्वदुष्ट मृग वशंकरि सर्वसत्व वशङ्करि। सर्वलोकं अमुकं मे वशमानय। स्वाहा।**

॥ ध्यानम् ॥

मातङ्गीं भूषिताङ्गीं विविधमणि धरामिन्दु सूर्याक्षि युग्माम् ।
स्विद्यद् वक्त्रां कदम्ब प्रसद परिलसद् वेणुकामात्र वीणाम् ॥
बिम्बोष्ठीं रक्तवस्त्रां मृगमदतिलकामिन्दुरेखा वतंसाम् ।
कर्णोद्यच्छङ्ख पत्रां कठिनकुचभराक्रान्त मध्यां नमामि ॥

(३) राजमातंगी अष्टाशीत्यक्षर मंत्रः- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजन मनोहारि सर्वसुखराजि सर्वमुखरञ्जिनि सर्वराज वशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सर्वदुष्ट मृग वशङ्करि सर्वसत्व वशङ्करि अमुकं सर्वलोकं मे वशमानय स्वाहा।

विनियोग :- (शारदा तिलके)- **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छंदः, राजमातंगी देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- मंत्र के २४,१३,१८,१८,१३,२ अक्षरों के पद विभाग करके हृदयादि न्यास करे।

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककल पठितं शृण्वतीं श्यामलांगीं
न्यस्तैकांघ्रि सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कल्हाराबद्धमालां नियमित विलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां मातंगीं
शङ्खपात्रां मधुमद विवशां चित्रकोद्भासि मालाम् ॥

पुरश्चरणमें दस सहस्त्र जप त्रिमधुरयुक्त मधूकपुष्पों से दशांश होम करे।

(४) राजमातंगी एकोत्तरशताक्षर मंत्रः- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति राजमातंगीश्वरि सर्वजनमनोहारिणि सर्वमुख रञ्जनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज वशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सर्वदुष्ट मृग वशंकरि सर्वसत्व वशङ्करि सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। ध्यानादि पूर्व राज मातंगी मंत्रवत् हैं।

१२. चण्डमातंगी (पञ्चदशाक्षर) मंत्र

मंत्र - **ह्रीं नमः हिलि हिलि चण्डमातंगिनी स्वाहा।** ऋष्यादि सर्व राजमातंगी के समान हैं। यह विद्या शत्रु मानमर्दन कर शास्त्रार्थ में विजय दिलाती है।

१३. रत्नाम्बा मातंगेश्वरी (त्रयस्सप्तत्यक्षर) मंत्र

मंत्रः- **(१) ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मातङ्गेश्वरि सर्वजन मनोहरि सर्वराज वशङ्करि सर्वमुखरंजनि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सर्वदुष्ट मृग वशङ्करि सर्वलोक वशंकरि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य मातङ्ग ऋषिः, गायत्री छन्द, श्रीमातङ्गेश्वरी रत्नाम्बा देवता, क्लीं बीजं, ऐं शक्तिः, सौः कीलकं, चतुर्विध पुरुषार्थे, सिद्धये जपे विनियोगः।**

अम्भोजर्पित दक्षांघ्रि क्षौमां ध्यायेन्मतङ्गिनीं, लसद्वीणा लसन्नाद श्लाध्यां दीक्षित कुण्डलाम् ।
दन्तपंक्तिप्रभां रम्यां शिवां सर्वाङ्गसुन्दरीम्, कदम्बपुष्प वामाढ्यं वीणावादन तत्पराम् ॥
श्यामाङ्गीं शंखवलयां ध्यायेत् सर्वार्थसिद्धये॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर मधूकपुष्पों से दशांश होम करे।

(२) अष्टसप्तत्यक्षर मंत्रः- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुख रंजनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज वशंकरि सर्वसत्व वशंकरि सर्वलोक वश्यंकरि अमुकं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य महायोगी मतङ्ग ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः, सर्वकाम प्रदायिनी श्रीमातंगीश्वरी देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः श्रीं कीलकं सर्वकार्य सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास हेतु **ऐं ह्रीं श्रीं** से सभी न्यास करे। ध्यानम् -

नीलोत्पल प्रतीकाशां नीलमेघ समप्रभाम्। महामरकत प्रख्यां नीलाम्बर विराजिताम् ।
इन्द्रनीलमणि - प्रख्यां कमलायत - लोचनाम्, वीणासक्तां महादेवीं शङ्ख - कुण्डल - धारिणीम् ॥
गानासक्तां जगद्वन्द्यां बिम्बाधर - विराजितां, सर्वालङ्कार - भूषाङ्गीं कदम्बवन - वासिनीम् ।
सर्वकामप्रदां देवीं भक्तानामभय - प्रदां, स्मितास्यां तामहं वन्दे मातङ्गीं परमेश्वरीम् ॥

नित्य १०८ बार उक्त मंत्र जप करने से साधक सभी सुखों का उपभोग कर अंत में मोक्ष को प्राप्त करता हैं।

१४. मातङ्गी गायत्री:

१. ॐ शुकप्रियायै विद्महे श्रीकामेश्वर्यै धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात्।

२. ऐं शुक्र प्रियायै विद्महे क्लीं कामेश्वरीं धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात्।

१५. वार्ताली मातंगी

ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्वकार्य प्रसाधिनि सर्वनिमित्त प्रकाशिनि एह्येहि त्वर त्वर वरं देहि लिहि लिहि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा। उपरोक्त मंत्र के १ लाख जप करें, विल्वपुष्प फल, पलाश समिध या महुआ समिध तथा कुष्माण्डखण्ड से होम करें। रमल विद्या से ज्योतिष फलित कहने वाला इस मंत्र को जप कर पाशे डाले। जौ, गेहूं, या चावल अक्षत से फलित कहने वाले ज्योतिषी इस विद्या का स्मरण कहे तो सत्य फलित होवें। ऐसा अनुभवी विद्वानों को प्रयोगिक हैं। सिद्ध होने पर साधक को स्वप्न में प्रश्नों के उत्तर देती है।

१६. शुक मंत्र

मंत्र :- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवते धन्वन्तरये अमृतकलश हस्ताय महाशुकाय त्रिभुवनालङ्काराय राजमद मर्दनाय शीघ्रं राजानं वशमानय स्वाहा।**

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य शुकऋषि पंक्तिश्छंदः श्रीशुक देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, सर्वराज पुरुषां वशमानार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास:- **ऐं, ह्रीं, श्रीं, पुनः ऐं, ह्रीं, श्रीं से अंगन्यास करें।**

निगम सहकार मूले निर्मितालवाल तार वलायन्ते।
प्रति फलितागम शाखा फल रसिकः शुकोऽस्तु मम तुष्टयै॥

१७. वीणा मंत्र

मंत्र:- **ॐ नमो भगवति वीणायै मम सङ्गीत विद्यां प्रयच्छ स्वाहा।**

विनियोग:- **अस्य मंत्रस्य मतङ्ग ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्रीवीणा देवता सवार्थ साधने जपे विनियोगः।**

॥ ध्यानम् ॥

कामगान गुणनामकल्पना कल्पशिष्य सरसी परस्परम् ।
वेणुकीं स्तनतटे विहारिणीं वल्लकीं मनसि भावयाम्यहम् ॥

१८. वेणुमंत्र :-

मंत्र :- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवते वेणवे मम सङ्गीतविद्यां प्रयच्छ स्वाहा।

विनियोग के ऋषि देवता वीणा मंत्रवत् हैं।

॥ ध्यानम् ॥

वक्त्र सौरभ वशीकृतरन्ध्रो ब्रह्म वाग्वदन शीलनयुक्तः।
गानदोहन कलाकलनादो मानदो भवतु मे मणिवेणुः॥

॥ अथ मातङ्गी त्रैलोक्य मङ्गल कवचम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीमातङ्गी कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीमातङ्गी देवता। चतुर्वर्ग सिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीदक्षिणा मूर्ति ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमातङ्गी देवतायै नमः हृदि। चतुवर्ग सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ मूल कवच स्तोत्र ॥

ॐ शिरो मातङ्गिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी। तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम॥
पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा। त्रिपुष्पा पार्श्वयोः पातु गुदे कामेश्वरी मम॥
ऊरुद्वये तथा चण्डी जङ्घयोश्च हरप्रिया। महामाया पादयुग्मे सर्वाङ्गेषु कुलेश्वरी॥
अङ्गं प्रत्यङ्गकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी। ब्रह्मरन्ध्रे सदा रक्षेन् मातङ्गी नाम संस्थिता॥
रक्षेन्नित्यं ललाटे सा महापिशाचिनीति च। नेत्रयोः सुमुखी रक्षेत् देवी रक्षतु नासिकाम्॥
महापिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा। लज्जा रक्षतु मां दन्ताञ्चौष्ठौ सम्मार्जनी करा॥
चिबुके कण्ठदेशे च ठकार त्रितयं पुनः। सविसर्गं महादेवि! हृदयं पातु सर्वदा॥
नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकाऽवतु लोचने। उदरे पातु चामुण्डा लिङ्गे कात्यायनी तथा॥
उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतुचाम्बिका। भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चण्डभूषणा॥
जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका। विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे॥
नैर्ऋत्ये सुदया रक्षेद् वायव्यां पातु लक्ष्मणा। ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी मातङ्गी शुभकारिणी॥
रक्षेत् सुरेशी चाग्नेय्यां बगला पातु चोत्तरे। ऊर्ध्वं पातु महादेवी! देवानां हितकारिणी॥
पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी। प्रणवं च तमो माया कामबीजं च कूर्चकम्॥
मातङ्गिनी ङेयुतास्त्रं वह्निजायाऽवधिर्मनुः। सार्द्धैकादश वर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा॥

॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं देवि! गुह्याद् गुह्यतरं परम् । त्रैलोक्य - मङ्गलं नाम कवचं देव दुर्लभम् ॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते सम्पदालयम् । परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि । ऐश्वर्यं सु कवित्वं च वाक् सिद्धिं लभते ध्रुवम् ॥
नित्यं तस्य तु मातङ्गी महिला मङ्गलं चरेत् । ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुर सत्तमाः ॥
ब्रह्मराक्षस वेताला ग्रहाद्या भूतजातयः । तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवंति ते ॥
कवचं धारयेद्यस्तु सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम् । राजानोऽपि च दासाःस्युः षट्कर्माणि च साधयेत् ॥
सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहु भाषितैः । इदं कवचमज्ञात्वा मातङ्गीं यो भजेन्नरः ॥
अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः । गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः ॥
तस्मै मातङ्गिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति ॥

॥ इति नन्द्यावर्ते उत्तरखण्डे त्वरित फलदायिनी मातंगिनी कवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ मातंगी स्तोत्रम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विस्तृतकीर्तिमापुः ।
अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्राः परां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये ॥१॥
नमामि देवीं नवचन्द्रमौलेर्मातंगिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं प्रबोधयंतीं प्रियमादरेण ॥२॥
विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्नीराजितं ते चरणारविंदम् ।
भजंति ये देवि महीपतीनां व्रजंति ते संपदमादरेण ॥३॥
कृतार्थयंतीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयंतीं कृतवल्लकीं ताम् ।
मातंगिनीं सद्धृदयां धिनोमि लीलांशुकां शुद्धनितम्बबिंबाम् ॥४॥
तालीदलेनार्पितकर्णभूषां माध्वीमदोद्घूर्णित नेत्रपद्माम् ।
घनस्तनीं शंभुवधूं नमामि तडिल्लता कांतिमनर्घ्यभूषाम् ॥५॥
चिरेण लक्ष्यं नवलोमराज्या स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे ।
वलित्रयाढ्यं तव मध्यमम्ब नीलोत्पलांशु श्रियमावहंत्याः ॥६॥
कांत्या कटाक्षैः कमलाकराणां कदम्बमालाञ्चितकेशपाशाम् ।
मातङ्गकन्यां हृदि भावयामि ध्यायेयमारक्तकपोलबिंबाम् ॥७॥
बिम्बाधरन्यस्त ललामवश्यमालील लीलालकमायताक्षम् ।

मन्दस्मितं ते वदनं महेशि स्तुत्यानया शंकरधर्मपत्नीम् ॥८॥
मातंगिनीं वागधिदेवतां तां स्तुवंति ये भक्तियुता मनुष्याः ।
परां श्रियं नित्यमुपाश्रयंति परत्र कैलासतले वसन्ति ॥९॥
उद्यद्भानुमरीचिवीचिविलसद्वासो वसाना परां गौरीं संगतिपानकर्परकरामानन्द कन्दोद्भवाम् ।
गुंजाहारचलद्विहारहृदयामापीनतुंगस्तनीं मत्तस्मेरमुखीं नमामि सुमुखीं शावासनासेदुषीम् ॥१०॥

॥ इति रुद्रयामले मातंगीस्तोत्रं समाप्तम् ।

॥ अथ मातंगी शतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि मातंग्याः शतनामकम् । यद्गुह्यं सर्वतंत्रेषु न कस्यापि प्रकाशितम् ॥१॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् । नाख्येयं यत्र कुत्रापि पठनीयं परात्परम् ॥२॥
यस्यैकवारपठनात्सर्वे विघ्ना उपद्रवाः । नश्यंति तत्क्षणादेवि वह्निना तूलराशिवत् ॥३॥
प्रसन्ना जायते देवि मातंगी चास्य पाठतः । सहस्रनामपठने यत्फलं परिकीर्तितम् ।
तत्कोटिगुणितं देवि नामाष्टशतकं शुभम् ॥४॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीमातंगीशतनामस्तोत्रस्य भगवान्मतंग ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । मातंगी देवता । मातंगीप्रीतये पाठे विनियोगः ।

महामत्तमातंगिनी सिद्धिरूपा तथा योगिनी भद्रकाली रमा च ।
भवानी भयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवाराधिता भूतिसम्पत्करी च ॥१॥
धनाधीशमाता धनागारदृष्टिर्धनेशार्चिता धीरवापी वरांगी ।
प्रकृष्टा प्रभारूपिणी कामरूपा प्रहृष्टा महाकीर्तिदा कर्णनाली ॥२॥
काराली भगा घोररूपा भगांगी भगाह्वा भगप्रीतिदा भीमरूपा ।
भवानी महाकौशिकी कोशपूर्णा किशोरी किशोरप्रिया नन्दईहा ॥३॥
महाकारणा कारणा कर्मशीला कपाली प्रसिद्धा महासिद्धखण्डा ।
मकारप्रिया मानरूपा महेशी मलोल्लासिनी लास्यलीलालयांगी ॥४॥
क्षमा क्षेमशीला क्षपाकारिणी चाक्षयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवानी ।

भवाराधिता भूतिसत्यात्मिका च प्रभोद्भासिता भानुभास्वत्करा च ॥५॥
धराधीशमाता धनागारदृष्टिर्द्धनेशार्चिता धीवरा धीवरांगी ।
प्रकृष्टप्रभारूपिणी प्राणरूपा प्रकृष्टस्वरूपा स्वरूपप्रिया च ॥६॥
चलत्कुंडला कामिनी कांतयुक्ता कपालाचला कालकोद्धारिणी च ।
कदम्बप्रिया कोटरी कोटदेहा क्रमा कीर्तिदा कर्णरूपा च काक्ष्मीः ॥७॥
क्षमांगी क्षयप्रेमरूपा क्षया च क्षयाक्षा क्षयाह्वा क्षयप्रांतरा च ।
क्षवत्कामिनी क्षारिणी क्षीरपूर्णा शिवांगी च शाकंभरी शाकदेहा ॥८॥
महाशाकयज्ञा फलप्राशका च शकाह्वा शकाह्वाशकाख्या शका च ।
शकाक्षांतरोषा सुरोषा सुरेखा महाशेष - यज्ञोपवीतप्रिया च ॥९॥
जयंती जया जाग्रती योग्यरूपा जयांगा जपध्यानसंतुष्टसंज्ञा ।
जयप्राणरूपा जयस्वर्णदेहा जयज्वालिनी यामिनी याम्यरूपा ॥१०॥
जगन्मातृरूपा जगद्रक्षणा च स्वधावौषडंता विलम्बाविलम्बा ।
षडङ्गा महालंबरूपासिहस्ता पदाहारिणीहारिणी हारिणी च ॥११॥
महामंगला मंगलप्रेमकीर्तिर्निशुंभच्छिदा शुम्भदर्पत्वहा च ।
तथाऽनन्दबीजादिमुक्तिस्वरूपा तथा चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डा ॥१२॥
प्रचण्डाऽप्रचण्डा महाचण्डवेगा चलच्चामरा चामरा चन्द्रकीर्तिः ।
सुचामीकरा चित्रभूषोज्ज्वलाङ्गी सुसंगीतगीतञ्च पायादपायात् ॥१३॥

इति ते कथितं देवि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् । गोप्यं च सर्वतंत्रेषु गोपनीयं च सर्वदा ॥१४॥
एतस्य सतताभ्यासात्साक्षाद्देवो महेश्वरः । त्रिसंध्यं च महाभक्त्या पठनीयं सुखोदयम् ॥१५॥
न तस्य दुष्करं किंचिज्जायते स्पर्शतः क्षणात् । सुकृतं यत्तदेवाप्तं तस्मादावर्त्तयेत्सदा ॥१६॥
सदैव सन्निधौ तस्य देवी वसति सादरम् । अयोगा ये त एवाग्रे सुयोगाश्च भवंति वै ।
त एव मित्रभूताश्च भवंति तत्प्रसादतः ॥१७॥
विषाणि नोपसर्प्पंति व्याधयो न स्पृशंति तान् । लूताविस्फोटकाः सर्वे शमं यांति च तत्क्षणात् ॥१८॥
जरापलितनिर्मुक्तः कल्पजीवी भवेन्नरः । अपि किं बहुनोक्तेन सान्निध्यं फलमाप्नुयात् ॥१९॥
यावन्मया पुरा प्रोक्तंफलं साहस्त्रनामकम् । तत्सर्वं लभते मर्त्यो महामायाप्रसादतः ॥२०॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले मातंगीशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ मातङ्गी सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं तत्त्वतः परम् । नाम्नां सहस्त्रं परमं सुमुख्याः सिद्धये हितम् ॥१॥
सहस्त्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत् । पराभवो न तस्यास्ति सभायां वा महारणे ॥२॥
यथा तुष्टा भवेद्देवी सुमुखी चास्य पाठतः । तथा भवति देवेशि साधकः शिव एव सः ॥३॥
अश्वमेघसहस्त्राणि वाजपेयस्य कोटयः । सकृत्पाठेन जायंते प्रसन्ना सुमुखी भवेत् ॥४॥
मातंगोऽस्य ऋषिश्छंदोऽनुष्टुप् देवी समीरिता । सुमुखी विनियोगः स्यात्सर्वसंपत्तिहेतवे ॥५॥
एवं ध्यात्वा पठेदेतद्यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥६॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां श्यामांगीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुंजावलीशोभिताम् ।
हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णं तथा कर्त्रिकां ध्यायेन्मानसपङ्कजे भगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम् ॥१॥

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

ॐ सुमुखी शेमुषी सेव्या सुरसा शशिशेखरा । समानास्या साधनी च समस्तसुरसम्मुखी ॥२॥
सर्वसम्पत्तिजननी सम्पदा सिंधुसेविनी । शम्भुसीमंतिनी सौम्या समाराध्या सुधारसा ॥३॥
सारंगासवलीवेला लावण्यवनमालिनी । वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी ॥४॥
वेगिनी वेगदा वेगा बगलस्था बलाधिका । काली कालप्रिया केली कामला कालकामिनी ॥५४॥
कमला कमलस्था च कमलस्था कलावती । कुलीना कुटिला कांता कोकिला कलभाषिणी ॥६॥
कीरा केलिकरा काली कपालिन्यपि कालिका । केशिनी च कशावर्ता कौशाम्भी केशवप्रिया ॥७॥
काली काशी महाकालसङ्काशा केशदायिनी । कुण्डला च कुलस्था च कुण्डलाङ्गदमंडिता ॥८॥
कुण्डपद्मा कुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्द्धिनी । कुण्डप्रिया कुण्डरुचिः कुरंगनयनाकुला ॥९॥
कुन्दबिम्बालिनदिनी कुसुंभकुसुमाकरा । काञ्चीकनकशोभाढ्या क्वणत्किंकिणिकाकटिः ॥१०॥
कठोरकरणा काष्ठा कौमुदी कण्ठवत्यपि । कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कलकण्डिनी ॥११॥
कीरहस्ता कुमारी च कुरूढकुसुमप्रिया । कुंजरस्था कुंजरता कुंभी कुंभस्तनी कला ॥१२॥
कुम्भिकांगा करभोरूः कदलीकुशशायिनी । कुपिता कोटरस्था च कङ्कीला कन्दलालया ॥१३॥
कपालवासिनी केशी कम्पमानशिरोरुहा । कादम्बरी कदम्बस्था कुंकुमप्रेमधारिणी ॥१४॥
कुटुम्बिनी कृपायुक्ता क्रतुः क्रतुकरप्रिया । कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकी कुशवर्तिनी ॥१५॥
कामपत्नी कामदात्री कामेशी कामवन्दिता । कामरूपा कामरतिः कामाख्या ज्ञानमोहिनी ॥१६॥
खड्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खगा । खरगा खरनादा च खरस्था खेलनप्रिया ॥१७॥
खरांशुः खेलिनी खट्वा खरा खट्वांगधारिणी । खरखण्डिन्यपि ख्यातिः खण्डिता खण्डनप्रिया ॥१८॥

खण्डप्रिया खण्डखाद्या खण्डसिंधुश्च खण्डिनी । गंगा गोदावरी गौरी गौतम्यपि च गोमती ॥१९॥
गंगा गया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा । गीता गीतप्रिया गेया गुणप्रीतिर्गुरुर्गिरी ॥२०॥
गौर्गौरी गण्डसदना गोकुला गोप्रतारिणी । गोप्ता गोविन्दिनी गूढा गूढविग्रस्तगुञ्जिनी ॥२१॥
गजगा गोपिनी गोपी गोक्षा जयप्रिया गणा । गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवासिनी ॥ २२॥
घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घन - निस्स्वना । घुङ्कारिणी घुक्षकरी घूघूकपरिवारिता ॥२३॥
घण्टानादप्रिया घण्टा घोटा घोटकवाहिनी । घोररूपा च घोरा च घृतप्रीतिर्घृताञ्जनी ॥ २४॥
घृताची घृतवृष्टिश्च घण्टाघटघटावृता । घटस्था घटना घातकरी घातनिवारिणी ॥२५॥
चंचरीकी चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी । चातुरी चपला चञ्चुश्चिता चिंतामणिस्थिता ॥२६॥
चातुर्वर्ण्यमयी चंचुश्चोराचार्य्या चमत्कृतिः । चक्रवर्तिवधूश्चित्रा चक्रांगी चक्रमोदिनी ॥२७॥
चेतश्चरी चित्तवृत्तिश्चेतना चेतनप्रिया । चापिनी चम्पकप्रीतिश्चण्डा चण्डालवासिनी ॥२८॥
चिरंजीविनी तच्चित्ता चिंचामूलनिवासिनी । छुरिका छत्रमध्यस्था छिन्दा छिन्दकरी छिदा ॥२९॥
छुच्छुन्दरी छलप्रीतिश्छुच्छुन्दरिनिभस्वना । छलिनी छत्रदा छिन्ना छिण्टिच्छेदकरी छटा ॥३०॥
छद्मिनी छान्दसी छाया छरुच्छन्दकरीत्यपि । जयदाजयदा जाती जायिनी जामला जतुः ॥३१॥
जम्बूप्रिया जीवनस्था जंगमा जंगमप्रिया । जपापुष्पप्रिया जप्या जगज्जीवा जगज्जनिः ॥३२॥
जगज्जंतुप्रधाना च जगजीवपरा जवा । जातिप्रिया जीवनस्था जीमूतसदृशीरुचिः ॥३३॥
जन्या जनहिता जाया जन्मभूर्जंभसी जभूः ॥३४॥
जयदा जगदावासा जायिनी ज्वरकृच्छ्रजित् । जपा च जपती जप्या जपार्हा जायिनी जना ॥३५॥
जालन्धरमयी जानुर्जालाका जाप्यभूषणा । जगज्जीवमयी जीवा जरत्कारुर्जनप्रिया ॥३६॥
जगतीजननिरता जगच्छोभाकरी जवा । जगतीत्राणकृज्जङ्घा जातीफलविनोदिनी ॥३७॥
जातीपुष्पप्रिया ज्वाला जातिहा जातिरूपिणी । जीमूतवाहनरुचिर्जीमूता जीर्णवस्त्रकृत् ॥३८॥
जीर्णवस्त्रधरा जीर्णा ज्वलती जालनाशिनी । जगत्क्षोभकरी जातिर्जगत्क्षोभविनाशिनी ॥३९॥
जनापवादा जीवा च जननी गृहवासिनी । जनानुरागा जानुस्था जलवासा जलार्तिकृत् ॥४०॥
जलजा जलवेला च जलचक्रनिवासिनी । जलमुक्ता जलारोहा जलसा जलजेक्षणा ॥४१॥
जलप्रिया जलौका च जलशोभावती तथा । जलविस्फूर्जितवपुर्ज्वलत्पावकशोभिनी ॥४२॥
झिञ्झा झिल्लमयी झिञ्झाझणत्कारकरी जया । झंझी झंपकरी झंपा झंपत्रासनिवारिणी ॥४३॥
टंकारस्था टंककरी टंकारकरणांहसा । टंकारोट्टकृतष्ठीवा डिण्डीरवसनावृता ॥४४॥
डाकिनी डामरी चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी । डकारनिस्स्वनरुचिस्तपिनी तापिनी तथा ॥४५॥
तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तमः प्रिया । ताम्रा तामवती तंतुस्तुन्दिलातुलसंभवा ॥४६॥
तुलाकोटिसुवेगा च तुल्यकामा तुलाश्रया । तुदनी तुननी तुम्बी तुलाकाला तुलाश्रवा ॥४७॥

तुमुला तुलजा तुल्या तुलादानकरी तथा । तुल्यवेगा तुल्यगतिस्तुला-कोटिनिनादिनी ॥४८॥
ताम्रौष्ठा ताम्रपर्णी च तमःसंक्षोभकारिणी । त्वरिता ज्वरहा तीरा तारकेशी तमालिनी ॥४९॥
तमोदानवती ताम्रतालस्थानवती तमी । तामसी च तमिस्त्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा ॥५०॥
तटस्था तिलतैलाक्ता तरुणी तपनद्युतिः । तिलोत्तमा च तिलकृत्तारकाधीशशेखरा ॥५१॥
तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशी कुटुम्बिनी । स्थाणुपत्नी स्थिरकरी स्थूलसम्पद्विवर्द्धिनी ॥५२॥
स्थितिः स्थैर्यस्थविष्ठा च स्थपतिःस्थूलविग्रहा । स्थूलस्थलवती स्थाली स्थलसंगविवर्द्धिनी ॥५३॥

दण्डिनी दंतिनी दामा दरिद्रां दीनवत्सला ।
देवी देववधूर्द्दित्या दामिनी देवभूषणा ।
दयादमवती दीनवत्सला दाडिमस्तनी ॥५४॥
देवमूर्तिकरा दैत्या दारिणी देवतानता ।
दोलाक्रीडा दयालुश्च दम्पती देवतामयी ।
दशादीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी ॥५५॥

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गम्या दुर्गवासिनी । दुर्गन्धनाशिनी दुःस्था दुःखप्रशमकारिणी ॥५६॥
दुर्गंधा दुन्दुभिध्वांता दूरस्था दूरवासिनी । दरदा दरदात्री च दुर्व्याधदयिता दमी ॥५७॥
धुरंधरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी । धीरारवा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा ॥५८॥
धनुर्द्धरा च धमनी धमनीधूर्तविग्रहा । धूम्रवर्णा धूम्रपाना धूमला धूममोदिनी ॥५९॥
नन्दिनीनन्दिनी नन्दा नन्दिनी नन्दबालिका । नवीना नर्मदा नर्मनेमिर्नियमनिस्स्वना ॥६०॥
निर्मला निगमाधारा निम्नगा नग्नकामिनी । नीला निरत्ना निर्वाणा निर्लोभा निर्गुणा नतिः ॥६१॥
नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनानवा । निर्गुण्डिका च निर्गुण्डा निर्नासा नासिकाभिधा ॥६२॥
पताकिनी पताका च पत्रप्रीतिः पयस्विनी । पीना पीनस्तनी पत्नी पवनाशा निशामयी ॥६३॥
परा परपरा काली पारकृत्यभुजप्रिया । पवनस्था च पवना पवनप्रीतिवर्द्धिनी ॥६४॥
पशुवृद्धिकरी पुष्पपोषिका पुष्टिवर्द्धिनी । पुष्पिणी पुस्तककरा पूर्णिमाऽतलवासिनी ॥६५॥
पेशी पाशकरी पाशा पांशुहा पांशुला पशुः । पटुः पराशा परशुधारिणी पाशिनी तथा ॥६६॥
पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापनी । पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिणी ॥६७॥
पानदा पानपात्री च पानदानकरोद्यता । पेया प्रसिद्धा पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥६८॥
पतंगाभा पतंगा च पौनः पुन्यमिवापरा । पङ्किला पंकमग्ना च पानीया पञ्जरस्थिता ॥६९॥
पञ्चमी पञ्चयज्ञा च पञ्चता पञ्चमप्रिया । पिचुमन्दा पुण्डरीका पिकी पिंगललोचना ॥७०॥
प्रियंगुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा । प्रेतासना प्रियालस्था पाण्डुघ्नी पीनसापहा ॥७१॥
फलिनी फलदात्री च फलश्रीः फलभूषणा । फूत्कारकारिणी स्फारी फुल्ला फुल्लाम्बुजानना ॥७२॥
स्फुलिंगहा स्फीतमतिः स्फीतकीर्तिकरी तथा । बलमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी ॥७३॥

वेणुवाद्या वनचरी विरिञ्चिजनयित्र्यपि । विद्याप्रदा महाविद्या बोधिनी बोधदायिनी ॥७४॥
बुद्धमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा । वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा ॥७५॥
विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा । वैद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता ॥७६॥
विद्यौघविह्वला वेला वित्तदा विगतज्वरा । विरावा विवरीकारा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला ॥७७॥
विंध्यस्था वरवंद्या च वीरस्थानवरा च वित् । वेदांतवेद्या विजया विजया विजयप्रदा ॥७८॥
विरोगिवन्दिनी वंध्या वंद्यबधनिवारिणी । भगिनी भगमाला च भवानी भवनाशिनी ॥७९॥
भीमा भीमाननाभीमा भंगुरा भीमदर्शना । भिल्ली भिल्लधरा भीरुर्भरुण्डा भीर्भयावहा ॥८०॥
भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया । भगासना भगाभोगा भेरीझङ्काररञ्जिता ॥८१॥
भीषणा भीषणारावा भगवत्यहिभूषणा । भारद्वाजा भोगदात्री भूतिघ्नी भूतिभूषणा ॥८२॥
भूमिदा भूमिदात्री च भूपतिर्भरदायिनी । भ्रमरी भ्रामरी भाला भूपालकुलसंस्थिता ॥८३॥
माता मनोहरा माया मानिनी मोहिनी मही । महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदिरा मदिरालया ॥८४॥
मदोद्धता मतंगस्था माधवी मधुमर्द्दिनी । मोदा मोदकरी मेधा मेध्या मध्याधिपस्थिता ॥८५॥
मद्यपा मांसलोमस्था मोदिनी मैथुनोद्यता । मूर्द्धावती महामाया मायामहिममन्दिरा ॥८६॥
महामाला महाविद्या महामारी महेश्वरी । महादेववधूर्मान्या मथुरा मेरुमण्डिता ॥८७॥
मेदस्विनी मिलिन्दाक्षी महिषासुरमर्द्दिनी । मण्डलस्था भगस्था च मदिरारागगर्विता ॥८८॥
मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालविलासिनी । मातंगिनी च मातंगी मातंगतनयापि च ॥८९॥
मधुस्रवा मधुरसा बंधूककुसुमप्रिया । यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता ॥९०॥
यवांकुरप्रिया यामा यवनी यवनार्द्दिनी । यमघ्नी यमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी ॥९१॥
यज्ञा यज्ञयजुर्यक्षी यशोनिष्कंपकारिणी । यक्षिणी यक्षजननी यशोदायासधारिणी ॥९२॥
यशस्सूत्रपदा यामा यज्ञकर्मकरीत्यपि । यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी ॥९३॥
रंजिता राजपत्नी च रमा रेखा रवीरणा । रजोवती रजश्चित्रा रंजनी रजनीपतिः ॥९४॥
रोगिणी रजनी राज्ञो राज्यदा राज्यवर्द्धिनी । राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥९५॥
रमणी रमणीया च रामा रामावती रतिः । रेतोरती रतोत्साहा रोगघ्नी रोगकारिणी ॥९६॥
रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्दया । रामिका रजकी रेवा रजनी रंगलोचना ॥९७॥
रक्तचर्मधरा रंगी रंगस्था रंगवाहिनी । रमा रंभाफलप्रीती रंभोरू राघवप्रिया ॥९८॥
रंगा रंगांगमधुरा रोदसी च महारवा । रोगकृद्रोगहंत्री च रोगभृद्रोगस्राविणी ॥९९॥
बन्दी बन्दिस्तुता बन्धुर्बन्धूककुसुमाधरा । वंदिता वंद्यमाना च वैद्रावी वेदविद्विधा ॥१००॥
विकोपा विकपाला च विकस्था विङ्कवत्सला । वेदिर्विलग्नलग्ना च विधिविङ्ककरी विधा ॥१०१॥
शङ्खिनी शङ्खवलया शंखमालावती शमी । शंखपात्राशिनी शंखस्वना शंखगला शशी ॥१०२॥

शबरी शांबरी शंभुः शंभुकेशा शरासिनी । शवा श्येनवती श्यामा श्यामांगी श्यामलोचना ॥१०३॥
श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थानभूषणा । शमदा शमहंत्री च शंखिनी शंखरोषणा ॥१०४॥
शांतिः शांतिप्रदा शेषा शेषाख्या शेषशायिनी । शेमुषी शोषिंणी शेषा शौर्य्या शौर्य्यशरा शरी ॥१०५॥
शापदा शापहा शापा शापपंथाः सदाशिवा । भंगिणी भंगिपलभुक् शङ्करी शांकरी शिवा ॥१०६॥
शवस्था शवभुक् शांता शवकर्णा शवोदरी । शाविनी शवशिंशा श्रीः शवा च शवशायिनी ॥१०७॥
शवकुण्डलिनी शैवा शीकरा शिशिराशना । शवकाञ्ची शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः ॥१०८॥
स्रवंती सङ्ग्चा शक्तिः शंतनुः शवदायिनी । सिंधुः सरस्वती सिंधुः सुंदरी सुन्दरानना ॥१०९॥
साधुः सिद्धिप्रदात्री च सिद्धा सिद्धसरस्वती । संततिः सम्पदा संविच्छंकिसम्पत्तिदायिनी ॥११०॥
सपत्नी सरसा सारा सारस्वतकरी सुधा । सुरा समांसाशना च समाराध्या समस्तदा ॥१११॥
समधीः सामदा सीमा संमोहा समदर्शना । सामतिः सामदा सीमा सावित्री सविधा सती ॥११२॥
सवना सवनासारा सवरा सावरा समी । सिमरा सतता साध्वी सध्रीची ससहायिनी ॥११३॥
हंसी हंसगतिर्हंसी हंसोज्वलनिचोलयुक् । हलिनी हालिनी हाला हलश्रीर्हरवल्लभा ॥११४॥
हला हलवती ह्वेषा हेला हर्षविवर्द्धिनी । हंतिर्हंता हया हाहाहताऽहंतातिकारिणी ॥११५॥
हंकारी हंकृतिर्हंका हीहीहाहाहिता हिता । हीतिर्हेमप्रदा हारा राविणी हरिसम्मता ॥११६॥
होरा होत्री होलिका च होमा होमहविर्हविः । हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी ॥११७॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा । लीला लीलावती लोला ललना ललिता लता ॥११८॥
ललामलोचना लोम्या लोलाक्षीसत्कुलालया । लपत्नी लपती लम्या लोपामुद्रा ललंतिका ॥११९॥
लतिका लंघिनी लंघा लालिमा लघुमध्यमा । लघीयसी लघूदर्य्या लूता लूताविनाशिनी ॥१२०॥
लोमशा लोमलम्बी च ललंती च लुलुम्पती । लुलायस्था च लहरी लङ्कापुरपुरंदरा ॥१२१॥
लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदाऽलभ्या लाक्षाक्षी लुलितप्रभा । क्षणा क्षणक्षुः क्षुत्क्षीणी क्षमा क्षांतिः क्षमावती ॥१२२॥
क्षमा क्षामोदरी क्षेम्या क्षोभभृत्क्षत्रियांगना । क्षया क्षयकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा ॥१२३॥
क्षेमंकरी क्षयकरी क्षयकृत्क्षयदा क्षतिः । क्षुद्रिकाऽक्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामा क्षीणपातका ॥१२४॥
मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकम् । यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः ॥१२५॥
अनाचारात्पठेन्नित्यं दरिद्रो धनवान्भवेत् । मूकः स्याद्वाक्पतिर्द्देवि रोगी नीरोगतां व्रजेत् ॥१२६॥
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् । वंध्यापि सूते सत्पुत्रं विदुषः सदृशं गुरोः ॥१२७॥
सत्यं च बहुधा भूयाद्गावश्च बहुदुग्धदाः । राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य हासा इव स्फुटाः ॥१२८॥
अरयः संक्षयं यांति मनसा संस्मृता अपि । दर्शनादेव जायंते नरा नार्य्योऽपि तद्वशाः ॥१२९॥
कर्ता हर्ता स्वयं वीरो जायते नात्र संशयः । यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥१३०॥
दुरितं न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कथंचन । चतुष्पथेऽर्द्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः ॥१३१॥

एकाकी निर्भयो वीरो दशवारं स्तवोत्तमम् । मनसा चिंतितं कार्यं तस्य सिद्ध्येन्नसंशयः ॥१३२॥
विना सहस्त्रनाम्नां यो जपेन्मंत्रं कदाचन । न सिद्धिर्जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥१३३॥
कुजवारे श्मशाने वा मध्याह्ने यो जपेत्सदा । कृतकृत्यः स जायेत कर्ता हर्ता नृणामिह ॥१३४॥
रोगार्तोऽर्द्धनिशायां यः पठेदासनसंस्थितः । सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा ॥१३५॥
अर्द्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम् । अष्टोत्तरसहस्त्रं तु दशवारं जपेत्ततः ॥१३६॥
सहस्त्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा । महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी ॥१३७॥
ततो यदि न भीतिः स्यात्तदा देहीति वाग्भवेत् । तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चण्डिका ॥१३८॥
यथेष्टं च वरं दत्त्वा प्रयाति सुमुखी शिवा । रोचनागरुकस्तूरीकर्पूरैश्च सचन्दनैः ॥१३९॥
कुंकुमेन दिने श्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके । शुभनक्षत्रयोगे च कृतमारुतसत्क्रियः ॥१४०॥
कृत्वा सम्पातनविधिं धारयेद्दक्षिणे करे । सहस्त्रनाम स्वर्णस्थं कण्ठे वां विजितेन्द्रियः ॥१४१॥
तदा यं प्रणमेन्मंत्री क्रुद्धः स म्रियते नरः । दुष्टश्वापदजंतूनां न भीः कुत्रापि जायते ॥१४२॥
बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि प्रिये । मोहनस्तंभनाकर्षमारणोच्चाटनानि च ॥१४३॥
यंत्रधारणतो नूनं जायंते साधकस्य तु । नीलवस्त्रे विलिख्यैतत्तद्ध्वजे स्थापयेद्यदि ॥१४४॥
तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डाप्यरिवाहिनी । एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत् ॥१४५॥
तद्विलोकन एव स्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः । राजपत्न्योऽपि विवशाः किमन्याः पुरयोषितः ॥१४६॥
एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासेन स्यान्महाकविः । पण्डितश्च महावादी जायते नात्र संशयः ॥१४७॥
अयुतं च पठेत्स्तोत्रं पुरश्चरणसिद्धये । दशांशं कमलैर्हुत्वा त्रिमध्वाक्तैर्विधानतः ॥१४८॥
स्वयमायाति कमला वाण्या सह तदालये । मंत्रो निष्कील तामेति सुमुखी सुमुखी भवेत् ॥१४९॥
अनंतं च भवेत्पुण्यमपुण्यं च क्षयं वज्रेत् । पुष्करादिषु तीर्थेषु स्नानतो यत्फलं भवेत् ॥१५०॥
तत्फलं लभते जंतुः सुमुख्याः स्तोत्रपाठतः । एतदुक्तं रहस्यं ते स्वसर्वस्वं वरानने ॥१५१॥
न प्रकाश्यं त्वया देवि यदि सिद्धिं त्वमिच्छसि । प्रकाशनादसिद्धिः स्यात्कुपिता सुमुखी भवेत् ॥१५२॥
नातः परतरं लोके सिद्धिदं प्राणिनामिह ॥१५३॥

वन्दे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेन्दुविम्बाननां, सिन्दूरांकितमस्तकां मधुमदोल्लोलोच्चमुक्तावलीम् ।
श्यामां कज्जलिकाकरां करगतं चाध्यापयंतीं शुकं, गुंजापुंजविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणीलताम् ॥१५४॥

॥ इति श्रीनन्द्यावर्ततंत्रे उत्तरखण्डे मातंगीसहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्री मातंगी तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री कमला तंत्रम् ॥

दशमहाविद्याओं के अन्तर्गत कमला महाविद्या का दसवां स्थान है। सिद्धविद्यात्रयी में कमला को तीसरा स्थान प्राप्त है। कमला की उपासना दक्षिण और वाम दोनों मार्गों से होती है। इसके अधिष्ठाता का नाम सदाशिव-विष्णु है। कमला षड्ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री है।

मंत्र की सफलता साधक की श्रद्धा व नियमोपासना पर निर्भर है। प्रारब्ध के कारण फल विलंब से भी प्राप्त हो सकता है। एक डाक्टर साहब ऋण समस्या से ग्रस्त थे मंत्र में अशुद्ध उच्चारण के भय से उसे एकाक्षरी मंत्र '**श्रीं**' के १२ लाख जप करने को कहा। १०० माला नित्य के हिसाब से ४ महिने में जप पूरा हुआ। उन्होने होम विषय में पूछा तो मैंने उनकी विपरीत परिस्थिति देखकर कहा कि ताम्र या लोह पात्र में "**श्रीं स्वाहा**" से यथा शक्ति १-२ किलो घी से होम कर लेना। दूसरे दिन डाक्टर साहब आँखों पर पट्टी बाँधकर आये तो उन्होने कहा कि रात्रि को कमरे के बाहर से वेल्डिंग की तरह की तेज रोशनी आ रहीं थी मैं भय के मारे बाहर नहीं निकल सका, गर्दन झुका रखी तो भी रोशनी से आँखे जैसे कच्ची हो गई। शान्ति स्तोत्र का पाठ किया १-२ दिन में आँखे ठीक हो गई परन्तु प्रारब्ध के कारण कुछ समय शेष था सो २ महिने बाद उनकी समस्या का निदान हुआ जबकि ऐसे अच्छे दृष्टान्त का अर्थ है कि कार्य शीघ्र सफल होना चाहिऐ।

एकाक्षर मंत्र- "श्रीं" ।

विनियोगः- **अस्य श्री कमला एकाक्षर मंत्रस्य भृगु ऋषिः, निवृद् गायत्री छन्दः, श्री लक्ष्मी देवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

अंगन्यासः- **श्रां हृदयाय नमः। श्रीं शिरसे स्वाहा। श्रूं शिखायै वषट्। श्रैं कवचाय हुं। श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रः अस्त्राय फट्।** इसी तरह करन्यास करें।

ध्यानम्-

कान्त्या कांचनसन्निभा हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः । हस्तोत्क्षिप्त हिरण्याऽमृत घटैरासिच्यमानां श्रियम् । विभ्राणां वरमब्जयुतमभयं हस्तैः किरोटोज्ज्वलाम् क्षौमाबद्ध नितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्द स्थिताम्॥

१२ लाख जप करके घृत, मधु, शर्करायुत पद्म-तिल बिल्वफलों से होम करें।

द्व्यक्षर साम्राज्य लक्ष्मी मंत्रः- स्ह्क्लीं हं।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य हरि ऋषिः, गायत्री छन्दः, साम्राज्यदा मोहिनी लक्ष्मी देवता, स्ह्क्लीं बीजं, श्रीं शक्तिं, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रः से षड्ङ्गन्यास करें।

त्र्यक्षर साम्राज्य लक्ष्मी मंत्रः- १. श्रीं क्लीं श्रीं। इसके ऋषिन्यास एकाक्षरी मंत्र की तरह है।

२. **श्रीं स्हक्ल्हीं श्रीं।** इसका विनियोग तथा ध्यान द्वयक्षर मंत्रवत् है।

षडङ्गन्यास- आं, ईं, ऊं, ऐं, औं, अः, से षडङ्गन्यास करें।

अतशीपुष्य सङ्काशा रत्नभूषणभूषितां शङ्खचक्रगदा- पद्मशार्ङ्ग- बाणधरां करैः। षड्भिः कराभ्यां देवेशीं वरदाभय शोभितां एवमष्टभुजां लक्ष्मीं नौमि साम्राज्यदायिनीम् ॥

चतुरक्षर मंत्रः- (१) ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं (हिन्दी तंत्रसारे)- ऋष्यादि एकाक्षरी मंत्रवत् है।

॥ ध्यानम् ॥

माणिक्य प्रतिमप्रभां हिमनिभैस्तुङ्गैश्चतुर्भिर्गजैः, हस्तग्राहित रत्नकुंभ सलिलैरासिञ्च्यमानां मुदा । हस्ताब्जैर्वरदानम्बुज युगाभीतिर्दधानां हरेः, कान्तां कांक्षित परिजात लतिकां वन्दे सरोजसनाम् ॥

(२) मंत्र- **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं (मेरु तंत्रोक्त) ऋषि भृगु, छन्द निवृत्पूर्वमनुष्टुप्, देवता कमला है।**

आसिच्यमाना रत्नाभा पद्मस्था पद्मलोचना ।
पद्मद्वयं च हस्तेषु बिभ्रती नृपसेविता ॥

पञ्चाक्षर मंत्र- श्रीं क्लीं श्रीं नमः।

सप्ताक्षर रमा मंत्रः - नमः ब्रह्मतनये ।

ऋषि, ध्यान, एकाक्षर मंत्रवत् है। अंगन्यास हेतु दोनों पदों से तीन-तीन आवृत्ति करें।

॥ अथ यंत्रपूजा विधानम् ॥

उपरोक्त सभी मंत्रों की यंत्र पूजा एकाक्षरी मंत्रवत् समान है।

यंत्रोद्धार- षट्कोण, अष्टदल एवं भूपूर बनायें। सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर उस पर पीठ पूजा कर यंत्र स्थापित करें।
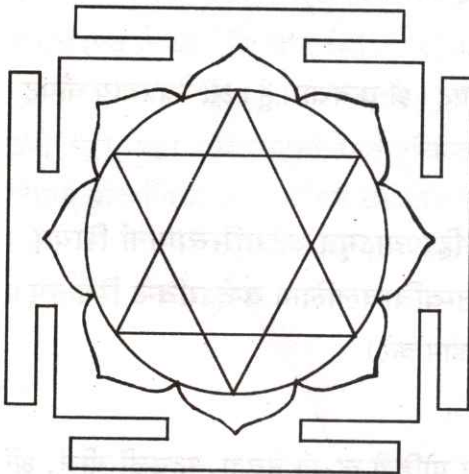
॥ श्री कमला यन्त्रम् ॥

पीठ पूजा- **ॐ मण्डूकादि परतत्वांत पीठ देवताभ्यो नमः।** अष्ट दिशाओं में पीठ शक्तियों का पूजन करें। **ॐ विभूत्यै नमः। ॐ उन्मन्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ सृष्ट्यै नमः। ॐ कीर्त्यै नमः। ॐ सन्नत्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ उत्कृष्ट्यै नमः। मध्ये- ॐ ऋद्ध्यै नमः।**

यंत्र पर देवता हेतु आसन प्रदान करें पुष्प चढ़ावें '' **ॐ कमलासनाय नमः** '' प्रधान देवता का आवाहन करें पूजन करें यंत्रावरण देवताओं का गंधाक्षत पुष्प से पूजन एवं तर्पण करें तथा नाम के बाद **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहें। चतुर्थी से आवाहन करे, तथा प्रथमा से पूजन तर्पण करें। यथा-

प्रथमावरण- (षट्कोण केसरेषु)- **ॐ श्रां हृदयाय नमः** - अग्निकोणे। **ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा** - नैर्ऋत्ये। **ॐ श्रूं शिखायै वषट्**

- वायव्ये। **ॐ श्रैं कवचाय हुं** - ऐशान्ये। **ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्** - अग्रे। **ॐ श्रः अस्त्राय फट्**- **देवी** पश्चिमे।

प्रत्येक आवरण के बाद आवरण का नाम लेते हुए पुष्पांजलि देवें।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

"**पूजिताः स्तर्पिताः सन्तुः**" कहकर जल छोड़े। इति सर्वत्र॥

द्वितीयावरणम्- (अष्टदले)- पूर्वे- **ॐ वासुदेवाय नमः। वासुदेव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति सर्वत्र॥** दक्षिणे-**ॐ संकर्षणाय नमः**। पश्चिमे- **ॐ प्रद्युम्नाय नमः**। उत्तरे- **ॐ अनिरुद्धाय नमः**। आग्नेये- **ॐ दमकाय नमः**। नैर्ऋत्ये- **ॐ सलिलाय नमः**। वायव्ये- **ॐ गुग्गुलाय नमः**। ऐशान्ये- **ॐ करुंटकाय नमः**। देव्या दक्षिणे- **ॐ शंखनिधये नमः। ॐ वसुधायै नमः**। देव्या वामे- **ॐ पद्मनिधये नमः। ॐ वसुमत्यै नमः**।

तृतीयावरणम्- (अष्टदलाग्रे)-पूर्वादि क्रमेण- **ॐ बलाक्यै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ कमलायै नमः। ॐ वनमालिकायै नमः। ॐ विभिषिकायै नमः। ॐ मालिकायै नमः। ॐ शांकर्य्यै नमः। ॐ वसुमालिकायै नमः।**

चतुर्थावरणम्- (भूपूरे)- **ॐ लं इन्द्राय नमः** पूर्वे। **ॐ रं अग्नये नमः** आग्नेये। **ॐ मं यमाय नमः** दक्षिणे। **ॐ क्षं निर्ऋतये नमः** नैर्ऋत्ये। **ॐ वं वरुणाय नमः** पश्चिमे। **ॐ यं वायवे नमः** वायव्ये। **ॐ कुं कुबेराय नमः** उत्तरे। **ॐ हं ईशानाय नमः ऐशान्ये**। ईशानपूर्वयोर्मध्ये- **ॐ आं ब्रह्मणे नमः**। निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये- **ॐ ह्रीं अनंताय नमः।**

पंचमावरणम्- (भूपूरे)- दिक्पालों के पास उनके आयुधों का पूजन करें। **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

पूजन तर्पण कर पुष्पांजलि देवें।

॥ नवाक्षर सिद्धि लक्ष्मी मंत्र ॥

मंत्र - **ॐ ह्रीं हूं हां ग्रें क्षों क्रों नमः।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, सिद्धि लक्ष्मी देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रों कीलकं, सर्वार्थसाधने जपे विनियोगः।**

श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से षडङ्गन्यास करें।

श्वेतां श्वेतश्वारूढां नृमुण्डकृतकुण्डलां । पञ्चवक्त्रां महारौद्रीं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनाम् ॥
व्याघ्रचर्मावृतकटीं शुष्कावयव-भूषितां । आबद्धयोगपट्टां च नरास्थिकृत-भूषणाम् ॥
हस्तैः षोडशाभिर्दीप्तां विस्त्रस्त-घनकुन्तलां । खड्गं बाणं तथा शूलं चक्रं शक्तिं गदामपि ॥
जपमालां कर्तृकां च विभ्रतीं दक्षिणेर्भुजैः । फलकं कार्मुकं नागपाशं परशुमेव च ॥
डमरुं फेरु-पोतं च नरमुण्डकपालकं । उद्वहन्तीं करैर्वामै दीर्घ सर्वाङ्गभूषणाम् ॥

॥ दशाक्षरी कमला मंत्र ॥

मंत्र - 'श्रीः' १. मंत्रः- नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य दक्ष ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री लक्ष्मी देवता, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **दक्ष ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रियै देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यासः- **ॐ देव्यै नमोऽगुष्ठाभ्यां। ॐ पद्मिन्यै नमः तर्जनीभ्यां। ॐ विष्णुपत्न्यै नमो मध्यमाभ्यां। ॐ वरदायै नमोऽनामिकाभ्यां। ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां।**

षडङ्गन्यासः- इन्हीं मंत्रों से नेत्रन्यास के अलावा अन्य न्यास करें।

आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजै र्बिभ्रती दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनी सन्निभा ।
मुक्ताहार-विराजमान पृथुलोत्तुङ्गस्तनोद् भासिनी पायाद् वः कमला कटाक्ष विभवैरानन्दयन्ती हरिम् ॥

अन्य मंत्रः- २. ॐ क्लीं श्रौं श्रीं लक्ष्मी देव्यै नमः।

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यंत्रोद्धार- षट्कोण, अष्टदल एवं भूपूर बनायें। पीठपूजा व पीठ शक्तियों का पूजन कर यंत्र स्थापित कर मूल देवता का आवाहन कर आवरण पूजा करें।

प्रथमावरणम् :- (षट्कोणे)- **ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः**, अग्निकोणे। **ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा**, नैर्ऋत्ये। **ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायै वषट्**, वायवे। **ॐ वरदायै नमः कवचाय हुं** ऐशान्ये। देवीपश्चिमे - **ॐ कमलरूपायै नमोऽस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम्- (अष्टदले)- पूर्वादि क्रमेण- ॐ बलाक्यै नमः .... **इत्यादि सभी देवता एवं भूपूर में तृतीय-चतुर्थावरण** पूजन एकाक्षरी मंत्र की यंत्रवत् पूजा करें।

॥ एकादशाक्षर सिद्ध लक्ष्मी मंत्र ॥

मंत्र - **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्वक्लेश पीड़ा परिहारार्थं सर्वदुःख-दारिद्रयनाशार्थं च सर्वकार्य सिद्ध्यर्थे** जपे **विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **श्रीं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। क्लीं शिखायै वषट्। श्रीं कवचाय हुं। सिद्धलक्ष्म्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। नमः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीं, त्रिनेत्रां खड्गशूलाभी पद्मचक्रगदा-धराम् ।
पीताम्बरधरां देवीं नानालंकार भूषितां, तेजपुञ्जधरीं श्रेष्ठीं ध्यायेद् बालकुमारिकाम् ॥

॥ एकादशाक्षर लक्ष्मी मंत्रः ॥

मंत्र - **यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः। (मेरुतंत्रे)**

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य जमदग्नि ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीरमा देवता, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **यौं नौं मौं नमः ऐं हृदयाय नमः। यौं नौं मौं नमः ऐं शिरसे स्वाहा। यौं नौं मौं नमः ऐं शिखायै वषट्। यौं नौं मौं नमः ऐं कवचाय हुं। श्रियै नमः नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रीं नमः अस्त्राय फट्।**

ध्यान- २७ अक्षरात्मक मंत्र के अनुसार करें। सात रात्रियों में नित्य १२ हजार जप करें।

॥ द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मंत्रः ॥

मंत्र - **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः (ह्सौः) जगत्प्रसूत्यै नमः।**

शारदातिलक में पाँचवा बीज **सौः** है। हिन्दीतंत्रसार के अनुसार **ह्सौः** तथा मेरुतंत्र के अनुसार पांचवां बीज **ह्स्रौः** है

विनियोगः- **अस्यमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीश्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजम्, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।**

करन्यासः- **ऐं। ह्रीं। श्रीं। क्लीं। सौः। जगत्प्रसूत्यै नमः।** से क्रमशः करन्यास करें।

षडङ्गन्यासः- **ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट्। ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुं। ॐ सौः (ह्सौः) वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट्।** इसी तरह करन्यास करें।

वर्णन्यासः- **ऐं नमः मूर्ध्नि। ह्रीं नमः मुखे। श्रीं नमः हृदये। क्लीं नमः गुह्ये। सौः नमः पादयोः।**

पश्चात् हृदय पर हाथ रखकर न्यास करें- **जं नमः त्वचि। गत् नमः रक्ते। प्रं नमः मांसे। सूं नमः मेदसि। त्यैं नमः अस्थिनि। नं नमः मज्जायाम्। मं नमः शुक्रे।**

॥ ध्यानम् ॥

बालाऽर्कद्युतिमिन्दुखण्ड विलसत् कोटिरहारोज्ज्वलाम् ।
रत्नाकल्प विभूषितां कुचनतां शालेः करैर्मञ्जरीम् ॥
पद्मं कौस्तुभ रत्नमप्यविरतं संविभ्रतीं सस्मिताम् ।
फुल्लाम्भोज विलोचन त्रययुतां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यंत्रोद्धार- षट्कोण, अष्टकोण एवं भूपूर बनायें। सर्वतोभद्र पीठ पर पीठ देवता एवं नवपीठशक्तियों का अर्चन करें। प्रधानदेव का यंत्र मध्य में आवाहन करें। यंत्र के देवताओं का गंधाक्षत पुष्पों से पूजन कर तर्पण करें।

प्रथमावरणम्- देव्या दक्षिणे- **ॐ शंकरनन्दनाय नमः। ॐ शंकरनंदन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** देव्या वामे- **ॐ पुष्पधन्वने नमः। ॐ पुष्पधन्व श्री पादुकां पू. त.॥ इति सर्वत्र॥** प्रत्येक आवरण के बाद पुष्पाञ्जलि देवें।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजितास्तर्पिताः सन्तुः कहकर विशेषार्घ पात्र से जल छोड़े। इति सर्वत्र॥

द्वितीयावरणम्- (षट्कोणे)- **ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः** अग्निकोणे। **ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा** नैर्ऋत्ये। **श्रीं शक्तये शिखायै वौषट्** वायव्ये। **क्लीं बलाय कवचाय हुँ** ऐशान्ये। **सौः वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्** देवाग्रे। देव्या पश्चिमे- **जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट्।**

तृतीयावरणम्-(अष्टदले)- पूर्वादि क्रमेण- **ॐ उमायै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सरस्वत्यै नम। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ धरण्यै नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ देव्यै नमः। ॐ उषायै नमः।**

चतुर्थावरणम्-(देव्या दक्षिणे) **ॐ जह्नुसुतायै नमः। ॐ शंखनिधये नमः।** देव्या वामे- **ॐ सूर्यसुतायै नमः। ॐ पद्मनिधये नमः।**

पश्चिमे **धृतातपत्रं वरुणं** पूजयित्वा। पुष्पांजलिं दद्यात्।

पंचमावरणम्-(अष्टदलाग्रेषु)- पूर्वादिक्रमेण- **ॐ सूर्याय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः।**

षष्ठावरणम् - (भूपूर एवं अष्टदल अभ्यंतरे) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुंडरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अंजनाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ सर्वभौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।**

सप्तमावरण में भूपूर में इन्द्रादि दशदिक्पालों का एवं अष्टमावरण में उनके आयुधों का पूजन करें।

॥ काम्य प्रयोगः ॥

एक लक्ष जप करें। तिल, त्रिमधु, श्रीफल, बिल्वफल, एवं कमल के होम से श्रीवृद्धि। दूर्वा, गुडूची, आज्य होम से आयुवृद्धि। शालीहोम पुष्प-लक्ष्मीवल्ली (विल्वकाष्ठ) तथा सर्षप होम से लक्ष्मी प्राप्ति होवें। मरीची-जीरा, नारिकेल, गुडौदक, आज्यपक्वान्न के होम से राज्य लाभ। नागवल्ली भस्म से तिलक करने से वशीकरण। ब्राह्मण ब्रह्मवृक्ष (पलाश) की समिद्-पुष्पों से, वैश्य रक्तपुष्प व राजा जातीपुष्प से होम करें। शूद्र नीलपुष्प से होम करें। यंत्र मध्य में कलश स्थापित कर उसमें शतौषधियाँ डाले। यंत्रार्चन कर अभिषेक करने से सभी बाधाऐं दूर होवें। संतान की प्राप्ति होवें।

॥ इति द्वादशाक्षर मंत्र प्रयोगः॥

त्रयोदशाक्षर महालक्ष्मी मंत्रः-(१) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।** (शारदायाम्)। (२) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।** (तंत्रसारे)। (३) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्स्रौः जगत्प्रसूत्यै नमः।** (मेरुतंत्रे)।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य भृगु ऋषिः, निवृत् छन्दः, श्री देवता, श्रीं बीजम्, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

चतुर्दशाक्षर लक्ष्मी हृदय मंत्रः- ॐ शुद्धवाससे नमो महाश्रियै नमः।

चतुर्दशाक्षर पद्मप्रभा लक्ष्मी मंत्रः- पद्मप्रभे पद्मसुन्दरि पद्मेशि स्वाहा।

दोनों मंत्रों के ऋष्यादि ध्यान एकाक्षरी मंत्रवत् है।

षोडशाक्षर सिद्धि लक्ष्मी मंत्रः- ह्रीं हूं फ्रें ह्सौः ह्रीं क्रों फ्रें स्त्रीं श्रीं हों जूं ब्लौं व्रीं स्वाहा।

ऋष्यादि नवाक्षर मंत्रवत् है।

॥ ध्यानम् ॥

खट्वाङ्गांऽकुश पाशशूलवरकृद्भीत्राण - पात्रं शिरः
कुंभासि ज्वलितोद्भटैर्भुज-वैराभासमानां शिवाम् ।
रुद्रस्कंधगतां शरच्छशिनिभां पञ्चाननां सुन्दरीम्
पञ्चत्र्यक्ष विराजितां भगवतीं श्रीसिद्धलक्ष्मीं भजे ॥

॥ सप्तविंशाक्षर महालक्ष्मी मंत्र प्रयोगः॥

मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजम्, नमः शक्तिः, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। गायत्री च्छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यासः- मंत्र के पहिले सर्वत्र आदि व अन्त में "**ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं**" जोड़कर न्यास करें।

मंत्र	करन्यासः	षडङ्गन्यासः
कमले	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
कमलालये	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
प्रसीद	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
प्रसीद	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुँ।**
महालक्ष्म्यै नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

(यहाँ नेत्र न्यास का अभाव है)

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुणकान्तिमब्ज वसतिं सौन्दर्यवारां निधिं कोटीराङ्गदहारकुण्डल कटीसूत्रादिभिर्भूषिताम् ॥
हस्ताब्जैर्वसुपात्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शार्ङ्गिणः ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

(पीठ पूजा एकाक्षरी मंत्रवत्)

यंत्रोद्धार-षट्कोण अष्टदल एवं भूपूर युक्त यंत्र बनायें। यंत्र की पीठ पूजा एकाक्षरी मंत्रवत् करें। पश्चात् प्रधान देव का आवाहन करें।

प्रथमावरणम्-(षट्कोणे) अग्निकोणे- **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः।** निर्ऋतिकोणे- **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा।** वायव्ये- **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्।** ऐशान्याम्- **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम्।**

देवी पश्चिमे- **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्।**

इति पंचाङ्गानि पूजयेत्। पुष्पांजलिमादाय-

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर जल छोड़े।
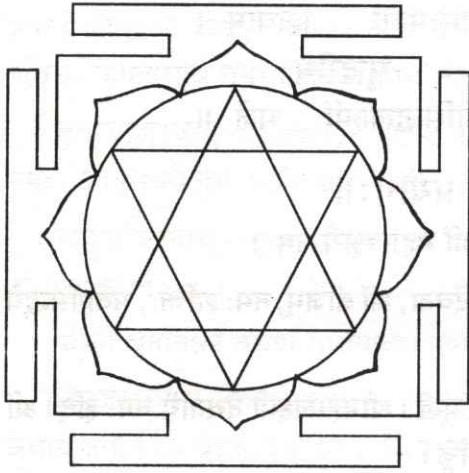
॥ श्री महालक्ष्मी यन्त्रम् ॥

द्वितीयावरणम् – (अष्टदलेषु)– पूर्वादिक्रमेण– **ॐ श्रीधराय नमः। श्रीधर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥** इति सर्वत्र॥ **ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ विश्वरूपाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ संकर्षणाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदलमध्येषु) पूर्वादिक्रमेण– **ॐ भारत्यै नमः। ॐ पार्वत्यै नमः। ॐ चान्द्र्यै नमः। ॐ शच्यै नमः। ॐ दमकायै नमः। ॐ सलिलाय नमः। ॐ गुग्गुलवे नमः। ॐ कुरुण्टकाय नमः।**

चतुर्थावरणम्– (अष्टदलाग्रेषु) पूर्वादिक्रमेण– **ॐ अनुरागाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ संवादाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ विजयाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ वल्लभाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ मदाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ हर्षाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ बलाय महालक्ष्मीवाणाय नमः। ॐ तेजसे महालक्ष्मीवाणाय नमः।**

पंचमावरणम्–(भूपूरे) पूर्वादिक्रमेण– **पूर्वे– इन्द्राय नमः। अग्नेये नमः। यमाय नमः। नैर्ऋत्यै नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। कुबेराय नमः। ईशानाय नमः। ईशानपूर्वयोर्मध्ये– ॐ ब्रह्मणे नमः। नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये– अनन्ताय नमः।**

षष्ठमावरणम् – (भूपूरे) लोकपालों के समीप में आयुध पूजन करें। **वज्राय नमः। शक्तये नमः। दण्डाय नमः। खड्गाय नमः। पाशाय नमः। अंकुशाय नमः। गदायै नमः। त्रिशूलाय नमः। पद्माय नमः। चक्राय नमः।**

धूप, दीप नीराजन कर जपादि प्रयोग करें। होमद्रव्य एकाक्षरी व द्वादशाक्षर मंत्रवत् है।

॥ वसुधा लक्ष्मी मंत्र प्रयोगः॥

अष्टाविंशाक्षर मंत्रः– **ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ।**

विनियोगः– **अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, निचृद् गायत्री छन्दः, वसुधा श्री देवता, ग्लौं बीजम्, श्रीं शक्तिः, ममाभीष्ट प्राप्त्यै जपे विनियोगः।**

मंत्र	करन्यासः	पञ्चाङ्गन्यासः
ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
ममान्न प्रदापय ग्लैं श्रीं	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुँ।**
स्वाहा ग्लौं श्रीं	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

॥ यंत्रार्चनम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

कल्पाद्रुमाधो मणिवेदिकायां समास्थिते वस्त्रविभूषणाढ्ये ।
भूमिश्रियौ वाञ्छितवामदक्षे संचिंतयेद् देवमुनीन्द्रवंद्ये ॥

यंत्रोद्धार- षट्कोण, अष्टदल एवं भूपूर बनायें। सर्वतोभद्र मण्डल पर पीठ देवता व पीठ शक्तियों का आवाहन कर यंत्र स्थापित करें।

ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठ देवताभ्यो नमः। पूर्वादि क्रमेण- **ॐ विमलायै नमः। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ योगायै नमः। ॐ प्रह्वायै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ ईशानाय नमः।** मध्ये- **ॐ अनुग्रहायै नमः।**

प्रत्येक नामावलि का गंधपुष्पाक्षत् से अर्चन कर तर्पण करते हुयें प्रथमा नाम सम्बोधन पूर्वक कहें- **अमुकीं पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

पुष्पांजलि प्रदान कर आवरण पूजा की आज्ञा माँगे।

ॐ सविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे ॥

ध्यान पूर्वक मूल देवता का आवाहन करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः** अग्निकोणे। **ॐअन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा** नैर्ऋत्ये। **ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट्** वायव्ये। **ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुं** ऐशान्ये। **ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट्** देवी पश्चिमे।

पुष्पांजलि- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥**

पूजितास्तर्पिताः सन्तुः कहकर जल छोड़ें। इति सर्वत्र॥

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ पृथिव्यै नमः पूर्वे। ॐ अग्नये नमः दक्षिणे। ॐ जलाय नमः पश्चिमे। ॐ मारुताय नमः उत्तरे। ॐ निवृत्यै नमः आग्नेये। ॐ प्रतिष्ठायै नमः नैर्ऋत्ये। ॐ विद्यायै नमः वायवे। ॐ शांत्यै नमः ऐशान्ये।**

तृतीयावरणम् - (अष्टदलाग्रेषु) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ बलाकायै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ कमलायै नमः। ॐ वनमालायै नमः। ॐ विभीषायै नमः। ॐ मालिकायै नमः। ॐ शांकर्यै नमः। ॐ वसुमालिकायै नमः।**

चतुर्थावरण - में इन्द्रादि लोकपालों एवं पञ्चमावरण में उनके आयुधों का पूजन करें। धूप दीपादि अर्चन कर नीराजन करें।

॥ काम्य प्रयोगः ॥

एक लक्ष जप करें। उसका दशांश कुबेर मंत्र के जप करें। पश्चात् मूल मंत्र का दशांश होम करें। तिल, बिल्वपत्र, बिल्वफल, पायस, तिलाज्य से हवन करें। वटवृक्ष की समिद् से कुबेर हेतु होम करें तो बहुअन्नसंपदा प्राप्त करें। **अग्नि मध्ये कुबेरं तु चिंतयेद्।**

कुबेर मंत्र - ॐ वैश्रवणाय स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

धनपूर्णं स्वर्णकुंभं तथा रत्नकरंडकम् । हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकरपादं च तुंदिलम् ॥

॥ अथ त्रयोविंशत्यक्षर लक्ष्मी मंत्रः ॥

मंत्र – **(प्राकृत ग्रंथे) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छाऽगच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।**

इस मंत्र का नित्य १०८ बार जप करे तो लक्ष्मी प्रसन्न होकर द्रव्य प्रदान करती है।

॥ ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र प्रयोगः ॥

पुराणों में ज्येष्ठा लक्ष्मी को दुःख दरिद्रता की अधिष्ठात्री माना है इसके निवास को क्लेश कारक माना है परन्तु यहाँ ध्यान मंत्र में इसका स्वरूप कुंभ-धनपात्र युक्त कमल पर विराजमान कहा है। अतः **साधक को मंत्र जप करते समय भावना करनी चाहियें कि क्लेश, चिन्ता, दुःख, दरिद्रता हमारे घर से विदा हो रहे है** एवं लक्ष्मी जी हमें धन धान्य तथा अभय प्रदान कर रही है। भाद्रपद शुक्ला अष्टमी- ज्येष्ठा नक्षत्र को इसकी पूजा का विशेष महत्व है।

मंत्र महोदधि में वसुधा लक्ष्मी के विनियोग में भी **ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य**.....प्रयुक्त किया गया है।

मंत्र- **ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।**

विनियोगः- **अस्य ज्येष्ठालक्ष्मी मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अष्टिश्छन्दः, ज्येष्ठालक्ष्मी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अष्टिच्छन्दसे नमो मुखे। ज्येष्ठालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे। श्रीं शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

मंत्र	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ऐं ह्रीं श्रीं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
ज्येष्ठालक्ष्मि	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
स्वयंभुवे	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
ह्रीं	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुँ।**
ज्येष्ठायै	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**
नमः	**करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

उद्यद्भास्करसन्निभा स्मितमुखी रक्ताम्बरालेपना
सत्कुंभं धनभाजनं सृणिमथो पाशं करैर्बिभ्रती ।
पद्मस्था कमलेक्षणा दृढकुचा सौन्दर्य्य वारांनिधि-
र्ध्यातव्या सकलाभिलाष फलदा श्रीज्येष्ठालक्ष्मीरियम् ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यंत्रोद्धार - षट्कोण, अष्टदल एवं भूपूर युक्त यंत्र बनायें। सर्वतोभद्रमण्डल पर पीठ देवता व पीठ शक्तियों का पूजन करें। **ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः।**

पीठ शक्तियों का पूर्वादि क्रम से पूजन करें- **ॐ लोहिताक्ष्यै नमः। ॐ विरूपायै नमः। ॐ करात्यै नमः। ॐ नीललोहितायै नमः। ॐ समदायै नमः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ अमोघायै नमः। मध्ये- ॐ विश्वमोहिन्यै नमः।**

प्रधान देवता का आवाहन करें। यंत्रावरण पूजा में चतुर्थी से आवाहन कर नामावली के बाद प्रथमा से गंधाक्षत पुष्प से पूजन करते हुए **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** कहते हुए तर्पण करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे)- **ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः** आग्नेये। **ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा** नैर्ऋत्ये। **स्वयंभुवे शिखायै वषट्** वायवे। **ह्रीं कवचाय हुँ ऐशान्ये। ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट्** अग्रे। **नमः अस्त्राय फट्** देवी पश्चिमे। पुष्पाञ्जलि- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥**

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर जल छोड़े॥ इति सर्वत्र॥

द्वितीयावरणम् -(अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - में भूपूर में इन्द्रादिलोकपालों का एवं चतुर्थावरणम् में उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करें। धूप, दीप नैवेद्यादि अर्पण कर नीराजन कर पुष्पांजलि देवें।

ज्येष्ठा गायत्री मंत्रः- ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

॥ अथ श्रीसूक्त प्रयोग विधानम् ॥

विनियोगः- **ॐ हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य श्री सूक्तस्य आनंद कर्दम चिक्लीत श्रीपुत्रेभ्यो ऋषयाः, श्रीविभावसुभ्यां-श्रीरग्निर्देवता, आद्यास्तिस्त्रोऽनुष्टुण्, चतुर्थी वृहती, पंचमी षष्ठ्यो त्रिष्टुभौ ततौष्टावनुष्टुभः अन्त्या प्रस्तार पंक्तिछन्दाः, हिरण्यवर्णामिति बीजम्, तामावह जातवेद इति शक्तिः, कीर्तिमृद्धिं ददातु मे कीलकम्, ममगृहे श्रीमहालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे च विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **आनंद कर्दम चिक्लीत श्री पुत्रेभ्यः ऋषिभ्यो नमः शिरसि। श्रीविभावसुभ्यां देवताभ्यां नमः हृदि। अनुष्टुप्-वृहती त्रिष्टुप्-अनुष्टुप्- प्रस्तार पंक्तिभ्यश्छन्दोभ्यो नमः मुखे। हिरण्यवर्णामिति बीजाय नमो नाभौ। तां आवह जातवेदेति शक्तये नमः कट्यां। कीर्तिमृद्धिं ददातु मे इति कीलकाय नमः पादयोः। मम सकुटुम्बस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धये श्री महालक्ष्मी वरप्रसाद सिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः सर्वाङ्गे।**

मंत्र	करन्यासः	षडङ्गन्यासः
ॐ हिरण्यायै नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ चन्द्रायै नमः	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ रजतस्त्रजायै नमः	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ हिरण्यायै नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हिरण्यवर्णायै नमः	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

षडङ्गन्यासः- **श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से षडङ्गन्यास करें।**

अंगन्यासः- ऋचा का प्रारंभिक संकेत दिया है पूरी ऋचा बोलकर न्यास करें। शिरसि- **हिरण्यवर्णां०**। नेत्रयोः-**तां मावह०**। कर्णयोः- **अश्वपूर्वां**। नासिकायां- **कांसोस्मितां०**। मुखे- **चन्द्रां प्रभा०**। गले- **आदित्यवर्णे०**। बाह्वोः- **उपैतु मां०**। हृदि-**क्षुत्पिपासा०**। नाभौ- **गंधद्वारां**। गुह्ये- **मनसः काम**। गुदे- **कर्दमेन०**। ऊर्वोः- **आपः सृजन्ति०**। जान्वोः - **आर्द्रां०**। जङ्घयोः- **आर्द्रां०**। पादयोः- **ताम्म आवह०**।

॥ ध्यानम् ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा, करकमलधृतेष्टाभीति-युग्माम्बुजा च। मणिमुकुट विचित्रालङ्कृता कल्पजातैः, भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रिये वः ॥

॥ श्रीसूक्तम् ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषिः, अग्निदेवताः आदौत्रयस्य अनुष्टुप् छंद शेषांसा प्रसार पंक्ति, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप् पुनः प्रसार पंक्तिश्छंदः, हिरण्य वर्णां बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृद्धिं ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्धर्थं पाठे जपे विनियोगः।**

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी र्जुषताम् ॥३॥

कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्रांप्रभासांयशसां ज्वलन्तींश्रियंलोके देवजुष्टामुदाराम्।
तांपद्मनेमिशरणमहं प्रपद्येअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्यफलानि तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्चबाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि - राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातुमे ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् । अभूतिं समृद्धिं च सर्वानिर्णुद मे गृहात् ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिल्कीत (चिक्लीत) वसमे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१३॥

आर्द्रां यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१४॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

(कहीं कहीं पुष्टिं, सुवर्णां तथा यष्टिंपिंगलां पद्ममालिनीम् है)

॥श्रीसूक्त यन्त्रार्चनम्॥

यंत्रोद्धार- षट्कोण, अष्टदल बनायें उसके बाहर द्वादश दल बनायें एवं उसके बाहर षोडश दल बनायें पश्चात् तीन वृत्तबनाकर बाद में भूपूर बनायें।

षट्कोण में षडङ्ग पूजा करें। अष्टदल में **हिरण्यवर्णा से तामिहोपह्वये** श्रियम् इन चार श्लोकों की आधी आधी ऋचा लिखें। द्वादशदल में **चन्द्रां प्रभासा से श्रीः श्रयतां यशः** इन छः ऋचाओं की आधी-आधी ऋचा लिखें। इस तरह १० ऋचा का लेखन हुआ। शेष छः ऋचाओं की आधी-आधी ऋचा ६ करने पर १२ बार लेखन षोडशदल में होगा फिर भी ४ दल बाकी रहेगें। इसका उल्लेख श्री विद्यार्णव तंत्र द्वाविंशश्वास में नहीं है। यहाँ ३ संभावनायें है।

॥ श्री सूक्त यन्त्रम् ॥

(१) किन्हीं दो ऋचा की आधी-आधी ऋचायें चार दलों में पुनरुक्त होगी।

(२) दुर्गेस्मृता मंत्र के १४-१४ वर्ण एक-एक दल में होगें।

(३) महालक्ष्मी मंत्र- श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः को चार पदों में चार दलों में लिखा जायें। यथा-**१. श्रीं ह्रीं श्रीं कमले। २.कमलालये प्रसीद। ३. प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं। ४. महालक्ष्म्यै नमः**। ऐसा क्रम होवें तभी षोडशदल पूर्ण होगा।
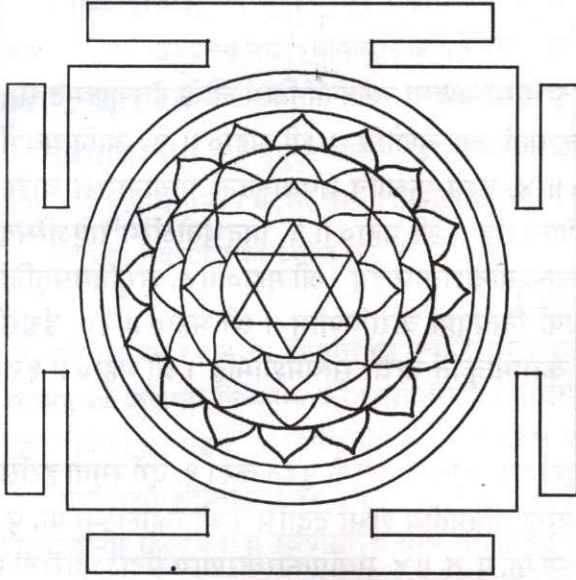
षोडश दल पश्चात् तीन वृतों के मध्य में दो मार्ग वीथिकायें बनेगीं। प्रथम वीथिका में ''**यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्**'' लिखें। द्वितीय मार्ग वीथिका में मातृका वर्ण **अं आं....हं लं क्षं** वेष्टित करते हुयें वृत्ताकार लिखें। उसके बाहर भूपूर के कोणों में **श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं** लिखें यंत्र मध्य में **श्रीं सहित साध्य नामः**। यथा- **श्रीं कमले, श्रीं लक्ष्मी।**

॥ आवरण पूजनम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर मंडूकादि पीठ देवता तथा पीठ शक्तियों का **एकाक्षरी मंत्रवत्** पूजन करें। यंत्र मध्य में प्रधानदेव का आवाहन करें। श्री सूक्त की एक-एक ऋचा से देवता की षोडशोपचार पूजन करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ हिरण्यायै हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**। इति सर्वत्र। **ॐ चन्द्राय शिरसे स्वाहा। रजतस्त्रजायै शिखायै वषट्। हिरण्यस्त्रजायै कवचाय हुं। हिरण्यायै नेत्रत्रयाय वौषट्। हिरण्यवर्णायै अस्त्राय फट्। अस्त्रश्री पा.पू.त.।**

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण प्रत्येक अर्धऋचा के बाद **श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः कहें।**

१. हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजस्त्रजाम् । श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ २. चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ३. ताम्म आवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। श्रीमहालक्ष्मी

श्री पा. पू. त. ॥ ४. यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त. ॥ ५. अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिमीम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त. ॥ ६. श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त. ॥ ७. कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त. ॥ ८. पद्मेस्थितां स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त. ॥

पुष्पाञ्जलि देवे - ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर जल छोड़ें। इति सर्वत्र।

तृतीयावरणम् - (द्वादश दले) पूर्वादिक्रमेण- १. चन्द्रा प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । श्री महा० ॥ २. तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि । श्री महा० ॥ ३. आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व। श्री महा० ॥ ४. तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तराश्च बाह्या अलक्ष्मीः। श्री महा० ॥ ५. उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । श्री महा० ॥ ६. प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे। श्री महा० ॥ ७. क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् । श्री महा० ॥ ८. अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् । श्री महा० ॥ ९. गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । श्री महा० ॥ १०. ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् । श्री महा० ॥ ११. मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । श्री महा० ॥ १२. पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः । श्री महा० ॥

चतुर्थावरणम् - (षोडशदले) प्रारम्भ के चार दलों में दुर्गा मंत्र या लक्ष्मी मंत्र से पूजन करें। १. दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ २. स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ३. दारिद्र्य दुःख भय-हारिणी कात्वदन्या । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ४. सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥

अथवा चार दलों में लक्ष्मी मंत्र से पूजन करें।

१. श्रीं ह्रीं श्रीं कमले नमः । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ २. कमलालये प्रसीद नमः । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ३. प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ४. महालक्ष्म्यै नमो नमः। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥

पश्चात्-

५.कर्दमेन प्रजाभूतामयि संभव कर्दम। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ६. श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ७. आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिल्कीत (चिक्लीत) वस मे गृहे। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ८. नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ९. आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ १०. चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ११. आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ १२. सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ १३. ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ १४. यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान विन्देयं पुरुषानहम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ १५. यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ १६. श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥

पंचमावरणम् - वृत्त की प्रथम वीथिका में- ''यः शुचिः ....श्रीकामः सततं जपेत्'' ऋचा से पूजन करें। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥

षष्ठमावरणम् – (द्वितीय वीथिका) – **अं आं......हं लं क्षं मातृका रूपायै श्री महालक्ष्म्यै नमः। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥**

सप्तमावरणम् – (षोडशदल एवं भूपुर मध्ये) पूर्वादिक्रमेण–**ॐ पद्मायै नमः। ॐ पद्मवर्णायै नमः। ॐ पद्मस्थायै नमः। ॐ आर्द्रायै नमः। ॐ तर्पयन्त्यै नमः। ॐ तृप्तायै नमः। ॐ ज्वलन्त्यै नमः। ॐ स्वर्णप्राकारायै नमः।**

अष्टमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वे **इन्द्राय नमः।** आग्नेयां– **आग्नेये नमः।** दक्षिणे– **यमाय नमः।** नैऋत्यां– **निर्ऋत्ये नमः।** पश्चिमे– **वरुणाय नमः।** वायव्यां– **वायवे नमः।** उत्तरे– **कुबेराय नमः।** ऐशान्यां– **ईशानाय नमः। ईशानपूर्वयोर्मध्ये– ब्रह्मणे नमः।** नैऋत्य– पश्चिमयोर्मध्ये– **अनन्ताय नमः।**

नवमावरणम् – (भूपुरे) लोकपाल समीपे– **वज्राय नमः। शक्तये नमः। दण्डाय नमः। खड्गाय नमः। पाशाय नमः। अङ्कुशाय नमः। गदायै नमः। त्रिशूलाय नमः। पद्माय नमः। चक्राय नमः।**

धूप दीप नैवेद्यादि का अर्पण कर नीराजन करें।

॥ काम्य प्रयोगः ॥

श्री सूक्त की १२ हजार आवृत्ति का एक पुरश्चरण कहा है। कमल, बिल्वफल, क्षीरान्न, वीरान्न से होम करें। ४० दिन अथवा ४० शुक्रवार नित्यहोम करें। तुरीयसंध्या (मध्यरात्रि) में ११ आहुति ६ मास तक श्रीसूक्त की देवें, अचल संपत्ति प्राप्त होवे। हवन पश्चात् ३२ योगिनियों को बलि प्रदान करें। यथा –

प्रणवाद्या हृदन्ताश्च (ॐ एवं स्वाहा युक्त नाम से बलि देवें) **श्रीर्लक्ष्मीर्वरदायिका। विष्णुपत्नी च वसुदा रूपाप्यन्या हिरण्यतः॥ स्वर्णमालिन्यपि परा ततः स्याद् रजतस्त्रजा। सुवर्णादिगृहा स्वर्णप्राकारा पद्मवासिनी॥ पद्महस्तप्रिया मुक्तालङ्कारा सूर्यकापरा। चन्द्राविश्व** (बिल्व) **प्रियेश्वर्यौ भुक्तिश्चापि प्रमुक्तियुक्॥ विभुर्वृद्धिः** (भूत्यृद्धी) **समृद्धिश्च तुष्टिः पुष्टिर्धनाद्यदा। भुवनेशी च शुद्धा स्याद्योगिनी भोगदामता॥ धात्री विधात्री द्वात्रिंच्छक्तयः समुदीरिताः। द्वात्रिंशाद्भिश्च पूजान्ते मन्त्रैर्बलिं हरेत्॥**

॥ संपुटित श्रीसूक्त प्रयोगः ॥

१. दुर्गा मंत्रेण संपुट प्रयोगः

दुर्गेस्मृता... मन्त्र से प्रत्येक ऋचा को पाद भेद क्रम से संपुटित करें। यथा –

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम् दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह दारिद्र्य दुःखभय हारिणि कात्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता॥

२. **श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।** मन्त्र प्रत्येक ऋचा के आगे-पीछे संपुटित करके पाठ करें।

३. **दुर्गे स्मृता....।** मन्त्र से पुटित ऊपर जो विधान बताया गया है, उसे भी पुनः लक्ष्मीं मन्त्र से पुटित करें।

श्रीं ह्रीं श्रीं कमले.....महालक्ष्म्यै नमः। हिरण्यवर्णां.....रजतस्त्रजात्, दुर्गेस्मृता....शुभां ददासि। चन्द्रां....ममावह, दारिद्र्य....सदार्द्रचित्या ॥ श्रीं ह्रीं कमले महालक्ष्म्यै नमः॥

४. बीजाक्षर पुष्टित सिद्धि लक्ष्मी ''श्रीसूक्त''

(क) सिद्धि लक्ष्मी के षोडशाक्षरी मन्त्र - **'ह्रीं हूं फ्रें ह्सौः ह्रीं क्रों फ्रें स्त्रीं श्रीं ह्रों जूं ब्लौं व्रीं स्वाहा'** से क्रम २ या क्रम ३ के विधान की तरह प्रत्येक ऋचा को पुटित करके पाठ करें।

(ख) **'ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं'** मन्त्र से पुटित करके पाठ करें।

(ग) **'ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं'**

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम् दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह दारिद्र्य दुःखभय - हारिणी कात्वदन्या सर्वोप्रकार करणाय सदार्द्रचित्ता ॥

'ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं'।

(घ) प्रत्येक ऋचा के ऋष्यादिन्यास व ध्यान पूर्वक जप विधान सहित।

श्रीसूक्त के संपुट के अलग-अलग प्रयोग आगे दिये गये है।

ऋष्यादिन्यास हेतु प्रत्येक ऋचा के पठन पूर्व ऋष्यादिन्यास एक बार अवश्य करें। अधिक आवृत्तियों के करने पर बार-बार न्यास करना जरुरी नहीं है।

जिसप्रकार **मन्त्रात्मक सप्तशती** में विनियोग ऋषि देवता, बीजं शक्ति, उत्कीलन के अलावा, तत्व, मुद्रा, ज्ञानेन्द्रिय, रस, स्वर कर्मेन्द्रिय सहित विनियोग है उसी प्रकार श्रीसूक्त के विनियोग हैं।

उपरोक्त प्रयोगों में से किसी एक विधि से संपुट लगाये। अलग-अलग ऋचाओं के विनियोग इस प्रकार है।

॥ प्रति ऋचा संकल्पित श्रीसूक्त प्रयोगः॥

१. विनियोगः :- **अस्य श्री हिरण्यवर्णां इति सूक्तस्य कर्दम चिक्लीत ऋषि, सर्वसिद्धि प्रदात्री श्रीमहाविद्या देवता, श्रीं बीजं, सर्वार्थ साधिनी शक्ति, भुवनेशी महाविद्या, रजोगुणा, रसना-वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यमस्वरस्वरूपा भूतत्व प्रकृति कलारूपा, ह्रीं उत्कीलनं प्रवाहिनी मुद्रा द्वारा मम गृहे अतुलधनायुरारोग्यादि वृद्ध्यर्थं च जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **कर्दम चिक्लीत ऋषये नमः शिरसि, सर्वसिद्धि प्रदात्री श्रीमहाविद्या देवतायै नमः हृदि, श्रीं बीजाय जाप गुह्ये, सर्वार्थ साधिनी शक्तिः नाभौ, भुवनेशी महाविद्यायै नमः कण्ठे, रजोगुणारूपायै नमः मनसि, रसना-वाक् कर्मेन्द्रियै नमः चेतसि, मध्यमस्वररूपायै नमः कण्ठे, भूतत्वाय नमो गुदे। प्रकृति कलायै नमः करतले। ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः प्रवाहिनी मुद्रा च विनियोगः सर्वाङ्गे।**

मंत्र	करन्यासः	षडंगन्यासः
ॐ हिरण्यवर्णां	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
श्रीं हरिणीं	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
ह्रीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
श्रीं चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुँ।**
ऐं जातवेदो	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**
सौः ममावह	**करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्**

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटि पद्मपत्रायताक्षी
गंभीरावर्तनाभिः स्तनभरनिमितां शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुंभैर्नित्यं
सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

२. विनियोग: :- अस्य श्री ताम्म आवह इति सूक्तस्य कर्दमचिक्लीत ऋषिः सर्वकामप्रदात्री भगवती देवी, श्रीं बीजं ज्योति शक्ति कमलामहाविद्या, रजोगुणा श्रौत्रज्ञानेन्द्रिय शान्तिरसा, वाक्अधिष्ठात्री उच्चस्वरा, भूतत्व विद्याकलायै, क्लीं उत्कीलनं, संकोचिनी मुद्रा मम.... विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: - श्री कर्दमचिक्लीत ऋषये नमः शिरसि। सर्वकामप्रदा भगवती देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ज्योति शक्त्यै नमः नाभौ। कमलामहाविद्यायै नमः कंठे। रजोगुणाय नमः मनसि। श्रोत्रेन्द्रिय नमः कर्णयोः। वाक्उच्चस्वरायै नमः कंठे। भूतत्वाय नमः मूलाधारे। विद्याकलाय नमः करतले। क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः। संकोचिनी मुद्रा च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ॐ श्रीं ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। ताम्म आवह जातवेदो शिखायै वषट्। लक्ष्मीमनपगामिनीम् कवचाय हुं। यस्यां हिरण्यं विन्देयं नेत्रत्रयाय वौषट्। गामश्वं पुरुषानहम अस्त्राय फट्। इसी तरह करन्यास करें।

कान्त्या कांचनसन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः। हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानां श्रियम् ॥
विभ्राणं वरमब्जयुग्ममभयं हस्तै किरीटोज्वलाम् । क्षौमाबद्ध नितम्बलसितां वन्देऽरविन्द स्थिताम् ॥

३. विनियोग : अस्य श्री अश्वपूर्वा श्रीसूक्त कर्दमचिक्लीत ऋषिः, महालक्ष्मीदेवता श्रीं बीजं। पद्मावतीशक्तिं। मातंगीमहाविद्या, रजोगुणा, स्वःज्ञानेन्द्रिय शान्तरसा वाक्कर्मेन्द्रिय मध्यमस्वरायुक्त। आकाशतत्वाय शांतिकलायै। क्रों उत्कीलनं योनिमुद्रा मम.... . विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- कर्दमचिक्लीत ऋषये नमः शिरसि। महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। पद्मावती शक्त्यै नमः नाभौ। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। मातंगीमहाविद्यायै नमः कंठे। रजोगुणाय नमः मनसि। स्वः नमः ज्ञानेन्द्रिये। शांतरसाय नमः चेतसि। वाक्मध्यमस्वराय नमः कंठे। आकाशतत्वाय नमः मूलाधारे। शांतिकलायै नमः करतले। क्रों उत्कीलये नमः पादयोः। योनि मुद्रा च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास: - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। नमो नमः शिरसे स्वाहा। अश्वपूर्वां रथमध्यां शिखायै वषट्। हस्तिनादप्रबोधिनीम् कवचाय हुं। श्रियं देवीमुपह्वये नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रीर्मा देवीजुषताम् अस्त्राय फट्।

इसी प्रकार से करन्यास करें।

निधे नित्यस्मरे निरवधिगुणे नीति निपुणे । निराधाट ज्ञाने नियम परचित्तैकनिलये ॥
नित्यानित्य निर्मुक्ते निखिल निगमान्तस्तुत पदे । निरांतके नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम् ॥

४. विनियोग: :- अस्य श्री कांसोस्मिता श्रीसूक्तस्य कर्दमचिक्लीत ऋषि। सर्वकामप्रदा देवी। ह्रां बीजं। चूडामणिशक्तिः। महाविद्या श्रीमहाशक्ति। सत्वगुणा। नेत्र ज्ञानेन्द्रिय। सौम्यरस। करकर्मेन्द्रिय मध्यमस्वर। भूतत्व प्रवृत्तिकलायै। श्रीं ह्रीं उत्कीलनं मोहिनी मुद्रा मम...... विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - कर्दमचिक्लीत ऋषये नमः शिरसि। सर्वकामप्रदा देव्यै नमः हृदि। चूडामणि शक्त्यै नमः नाभौ। ह्रां बीजाय नमः गुह्ये। महाविद्या महाशक्त्यै नमः कंठे। सत्वगुणाय नमः मनसि। करकर्मेन्द्रिये नमः करे। मध्यमस्वराय नमः कंठे। भूतत्वाय नमः मूलाधारे (गुदे)। प्रवृत्तिकलायै नमः करतले। श्रीं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः। मोहिनी मुद्रा च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। कांसोस्मिता हिरण्यप्राकारा शिखायै वषट्। मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् कवचाय हुं। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां नेत्रत्रयाय वौषट्। तामिहोपह्वये श्रियम् अस्त्राय फट्।

इसी तरह से करन्यास करें।

प्रदीप ज्वालाभिर्दिवस करनी राजन विधिः। सुधासुतेश्चन्द्रोपल जल लवैरर्घ्यं रचना ॥
स्वकीयै रंभोमि सलिल निधि सौहित्य करण । त्वदीयाभिर्वाग्मिस्त व जननि वाचां स्तुतिरियम् ॥

५. विनियोग :- अस्य चन्द्रां प्रभासां सूक्त मन्त्रस्य श्री असितऋषि। विष्णुर्देवता। वं बीजं ह्रीं शक्तिं कुमारीमहाविद्या रजोगुणप्रधान श्रौत्रेन्द्रिय मृदुरसा वाक्कर्मणि सौम्यस्वर। आवाशतत्व विद्याकला। ब्लौं उत्कीलन द्राविणीमुद्रायुता मम...... विनियोग।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ असित ऋषये नमः शिरसि। विष्णुर्देवतायै नमः हृदि। वं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्त्यै नमः नाभौ। कुमारी महाविद्यायै नमः कंठे। रजोगुणाय नमः मनसि। श्रोत्रेन्द्रियाय नमः श्रोत्रे। मृदुरसाय नमः चित्ते। वाक्कर्मेन्द्रिय नमः मुखे। सौम्यस्वराय नमः कंठे। आकाशतत्वाय नमः मूलाधारे। विद्याकलायै नमः कराग्रे। ब्लौं उत्कीलनाय नमः पादयोः। द्राविणीमुद्रा च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। चन्द्रांप्रभासां यशसा ज्वलन्तीं शिखायै वषट्। श्रियं लोके देव जुष्टामुदारां कवचाय हुं। तां पद्मनेमि शरणं प्रपद्ये नेत्रत्रयाय वौषट्। अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे अस्त्राय फट्।

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा। करकमलधृतेष्टाऽभीति- युग्माम्बुजाता ॥
मणिमुकुट विचित्रालंकृता कल्पजालैः। सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥

६. विनियोगः - अस्य श्री आदित्यवर्णे तपसोधिजात इति सूक्तस्य ब्रह्माऋषि सूर्योदेवता ॐ बीजं तेजसः शक्ति श्री मातंगीमहाविद्या तमोगुण। चक्षुः ज्ञानेन्द्रिय। मृदुरस। करकर्मेन्द्रिय। मृदुस्वर। खः तत्व। पराशान्तिकला। ह्रीं उत्कीलन। संपुटमुद्रा मम .... विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। सूर्योदेवताय नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। तेजसः शक्त्यै नमः नाभौः। मातंगी महाविद्यायै नमः कंठे। तमोगुणाय नमः मनसि। चक्षु ज्ञानेन्द्रिय नमः चक्षुषि। मृदुरसाय नमः चित्ते। करकर्मेन्द्रिय नमः करतले। मृदुस्वराय नमः कंठे। खः तत्वाय नमः मूलाधारे। शान्तिकलायै नमः कराग्रे। ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः। संपुटमुद्रायै च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो शिखायै वषट्। वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व कवचाय हुं। तस्य फलानि तपसानुदन्तु नेत्रत्रयाय वौषट्।

मायान्तरायाश्च बाह्याऽलक्ष्मी अस्त्राय फट्।

कान्त्या कांचनसन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यमयामृत-घटैरासिंच्यमानां श्रियम् ॥
विभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तै किरीटोज्वलाम् ।
क्षौमाबद्ध नितम्बबिम्बलसितां वन्देऽरविन्द स्थिताम् ॥

७. विनियोगः – अस्य श्री उपैतु मां देव सखः इति सूक्तस्य। मृकण्ड ऋषिः। सर्वसंपत्ति पूरिण्यै देवता। सौः बीजं। शिवाशक्ति। श्री मातंगीमहाविद्या तमोगुण। रसना ज्ञानेन्द्रिय। मृदुरस करकर्मेन्द्रिय। मध्यमस्वर। जल तत्व। प्रतिष्ठाकला। ऐं उत्कीलन। राजसीमुद्रा मम .... विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ मृकण्ड ऋषये नमः शिरसि। सर्वसंपत्तिपूरिण्यै नमः हृदि। सौः बीजाय नमः गुह्ये। मातंगी महाविद्यायै नमः कंठे। तमोगुणाय नमः मनसि। रसना ज्ञानेन्द्रियाय नमः रसने। मृदुरसाय नमः चित्ते। करकर्मेन्द्रियाय नमः कराग्रे। मध्यमस्वराय नमः कंठे। जल तत्वाय नमः मूलाधारे। प्रतिष्ठाकलायै नमः करतले। ऐं उत्कीलनायै नमः पादयोः। राजसीमुद्रा च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। उपैतु मां देवसखः शिखायै वषट्। कीर्तिश्चमणिनासह कवचाय हुं। प्रादूर्भूतोस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् नेत्रत्रयाय वौषट्। कीर्तिमृद्धिं ददातु मे अस्त्राय फट्। इसी तरह करन्यास करें।

॥ मातंगी स्वरूपा ध्यानम् ॥

कदाकाले मातः कथय कलितालक्तक सम । पिबेयं विद्यार्थी तवचरण निर्णेजन जलम् ॥
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारण तया । यदाधत्ते वाणीमुखकमल ताम्बूलरसताम् ॥

८. विनियोगः– अस्य श्रीक्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठा इति सूक्तस्य नारदऋषिः, सर्वसौभाग्य प्रदा देवता, सौं बीजं, सर्वेश्वर्यै इतिशक्ति, कमलामहाविद्या रजोगुण, चक्षु ज्ञानेन्द्रिय, मोहरस भगकर्मेन्द्रिय, सौम्यस्वर, भूतत्व प्रवृत्तिकला ह्रीं उत्कीलन संपुटमुद्रा मम....विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। सर्वसौभाग्यप्रदा देवतायै नमः हृदि। सौं बीजाय नमः गुह्ये। सर्वेश्वर्य शक्त्यै नमः नाभौः। कमलामहाविद्यायै नमः कंठे। रजोगुणाय नमः मनसि। चक्षुज्ञानेन्द्रियाय नमः चक्षुषिः, मोहरसाय नमः चित्ते। भगाय नमः भगे, सौम्यस्वराय नमः कण्ठे। भूतत्वाय नमः गुदे। प्रवृत्तिकलायै नमः करतले।, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, संपुटमुद्रायै च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ रों नमः शिरसि। क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा शिखायै वषट्। अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् कवचाय हुं। अभूतिमसमृद्धिं च नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वानिर्णुद मे गृहात् अस्त्राय फट्।

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तकेशीं दुरन्ताम् ।
नित्यं कलहान्तरालां मुहुरति कुटिलां क्रोधमोहाधिकाराम् ॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डं विषयद्विषकरा शत्रूणां भीतिदास्या ।
लक्ष्मीद्विषतामलक्ष्मी हरतु मम भयं पातु मां श्रीरनाद्या ॥

९. विनियोगः– अस्य श्री गंधद्वारां दुराधर्षां सूक्तस्य मेधसऋषि, श्री सर्वसिद्धिप्रदा देवता ब्रीं बीजं, भ्रामरी

शक्ति, कमलामहाविद्या रजोगुण, नासिका ज्ञानेन्द्रिय सौम्यरस, पाणिकर्मेन्द्रिय, मृदुस्वर भूतत्व मोहिनीकला क्लीं उत्कीलनं द्राविणी मुद्रा मम......विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - मेधस ऋषये नमः शिरसि। श्रीसर्वसिद्धि देवतायै नमः हृदि। ब्रीं बीजाय नमः गुह्ये। भ्रामरी शक्त्यै नमः नाभौ। कमलामहाविद्यायै नमः कंठे। रजोगुणाय नमः मनसि। नासिका ज्ञानेन्द्रियाय नमः नासिकायां। सौम्यरसाय नमः चित्ते। पाणिकर्मेन्द्रियाय नमः कराग्रे। मृदुस्वराय नमः कण्ठे। भूतत्वाय नमः मूलाधारे। मोहिनीकलायै नमः करतले। क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः। द्राविणीमुद्रायै च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडंगन्यास- ॐ ऐं रं नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। गंधद्वारां दुराधर्षां शिखायै वषट्। नित्यपुष्टां करीषिणीं कवचाय हुं। ईश्वरी सर्वभूतानां नेत्रत्रयाय वौषट्। तामिहोपह्वये श्रियम् अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

कान्तिर्कर्णिक-रागपुञ्ज पिहितां त्वत्तेजसाद्यामिमां
मुर्वीं चापि विलीन यावक रस प्रस्तार मग्नामिव ।
पश्यन्तीं कुलमप्यनन्य मनसस्तेषां कलाद्या गुणाः
सद्या सिद्धि-सुशील-श्लाध्य सगुणो सर्वेशि तुभ्यं नमः ॥

१०. विनियोगः- अस्य श्री मनसकाम माकूतिं सूक्तस्य श्री वेदव्यास ऋषिः, श्रीसर्वप्रियंकर्यै देवी, क्रों बीजं, शताक्षी शक्ति, श्रीसुन्दरीमहाविद्या रजोगुण, श्रोत्र कर्मेन्द्रिय, मोहरस मन कर्मेन्द्रिय सौम्यस्वर जलतत्वं अविद्याकला श्रीं उत्कीलनं योनिमुद्रा मम........विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- श्रीवेदव्यास ऋषये नमः शिरसि। श्रीसर्वप्रियंकर्यै देव्यै नमः हृदि। क्रों बीजाय नमः गुह्ये। शताक्षी शक्त्यै नमः नाभौ। श्री सुन्दरी महाविद्यायै नमः कण्ठे। रजोगुणाय नमः मनसि। श्रोत्रेन्द्रियाय नमः श्रोत्रे। मोहरसाय नमः कर्मेन्द्रिये। सौम्यस्वराय नमः कण्ठमूले। जलतत्वाय नमः गुह्ये। अविद्याकलायै नमः करतले। श्रीं उत्कीलनाय च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडंगन्यासः- ॐ ऐं ब्लूं नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। मनसः काममाकूतिं शिखायै वषट्। वाचः सत्यमशीमहि कवचाय हुँ। पशूनांरूपमन्नस्य नेत्रत्रयाय वौषट्। मयि श्रीः श्रयतां यश अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ऐन्द्रस्येव शरासनं विदधतीं मध्ये ललाट प्रभाम् शौक्लीं कान्तिममुष्य गोरिव शिरस्यातन्वतीं सर्वतः ।
एषाऽसौ त्रिपुराहृदि द्युतिरिवोष्मांशोः सदाहस्थिता रोगान् सर्वभयाननुग्रहयुता हन्ति स्वयं सिद्धिदा ॥

११. विनियोगः- अस्य श्री कर्दमेनप्रजाभूता सूक्तस्य श्रीविष्णु ऋषिः, सर्वव्याधिविनाशिनि देवी, ह्रां बीजं, श्रीमहासरस्वती देवता, रूं बीजं, इन्द्राणि शक्ति, भुवनेश्वरी महाविद्या सतोगुण त्वक्ज्ञानेन्द्रिय, स्तवनरस करकर्मेन्द्रिय मृदुस्वर वायुस्तत्वं शान्तिकला, ऐं उत्कीलनं संपुटमुद्रा मम.....विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- विष्णु ऋषये नमः शिरसि। सर्वव्याधि विनाशिनि देव्यै नमः हृदि। ह्रां बीजाय नमः गुह्ये। इन्द्राणि शक्त्यै नमः नाभौ। श्रीभुवनेश्वरी महाविद्यायै नमः कण्ठे। सतोगुणाय नमः मनसि। त्वक् ज्ञानेन्द्रिय नमः त्वचे। स्तवनरसाय नमः चित्ते। करकर्मेन्द्रिय नमः कराग्रे। मृदुस्वराय नमः कण्ठे। वायुस्तत्वाय नमः मूलाधारे। शांतिकलायै नमः करतले। ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः। संपुटमुद्रा च......... विनियोगाय नमः सवाङ्गे।

षडंगन्यासः- ॐ ऐं ज्रां नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। कर्दमेन प्रजाभूता शिखायै वषट्। मयि संभव कर्द्दम कवचाय हुं। श्रियम् वासय मे कुले नेत्रत्रयाय वौषट्। मातरं पद्ममालिनीम् अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

या बालेन्दु दिवाकराक्षि-मधुरा या श्वेतपद्मासना, रत्नाकल्प विराजिताङ्ग लतिका पूर्णेन्दु-वक्त्रोज्वला । अक्षस्त्रक् सृणि पाश पुस्तक करा या बालभानुप्रभा, तां देवीं त्रिपुरां शिवां हृदि भजे श्रीशारदाम्बां सदा ॥

१२. विनियोगः- ॐ अस्य श्री आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि सूक्तस्य अजय ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीदेवता, ह्रां बीजं, शूलधारिणी शक्तिः, पीताम्बरा महाविद्या, रजोगुण, त्वक् ज्ञानेन्द्रिय, गांभीर्यरस, गुदकर्मेन्द्रिय, गंभीर स्वर, भूतत्व प्रवृत्तिकला, ह्लीं उत्कीलनं, मत्स्यमुद्रा मम.......विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- अजय ऋषये नमः शिरसि। श्रीमहालक्ष्मी देव्यै नमः हृदि। ह्रां बीजाय नमः गुह्ये। शूलधारिणी शक्त्यै नमः नाभौ। पीताम्बरा महाविद्यायै नमः कण्ठे। रजोगुणाय नमः मनसि। त्वक् ज्ञानेन्द्रियाय नमः त्वचे। गंभीर रसाय नमः चित्ते। गुदकर्मेन्द्रिय नमः गुदे। गंभीरस्वराय नमः कण्ठे। भूत्त्वाय नमः मूलाधारे। प्रवृत्ति कलायै नमः करतले। ह्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः। मत्स्यमुद्रायै च..........विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडंगन्यास - ऐं स्त्रीं नमः हृदयाय । ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि शिखायै वषट्। चिक्लीतवस मे गृहे कवचाय हुं। नि च देवी मातरं नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रियं वासय मे कुले अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ज्वलत्कोटि-बालार्क-भासारुणाङ्गीं, सुलावण्य श्रृंगारशोभाभिरामाम् ।
महापद्म किंजल्कमध्ये विराजत् त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवनीम् ॥

१३. विनियोगः- अस्य श्री आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टीं सूक्तस्य मेधस ऋषिः, श्रीसर्वसौभाग्यदायिनी देवीं द्रां बीजं, भीमाशक्ति ज्येष्ठामहाविद्या रजोगुण, घ्राणं ज्ञानेन्द्रिय, गंभीररस, पाणिकर्मेन्द्रिय, दीनस्वर, वायुस्तत्वं, पराशांति कला ऐं उत्कीलनं धेनुमुद्रा मम......... विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- श्री मेधस ऋषये नमः शिरसि। श्रीसर्वसौभाग्यदायिनी देव्यै नमः हृदि। द्रां बीजाय नमः गुह्ये। भीमा शक्त्यै नमः नाभौ। ज्येष्ठा महाविद्यायै नमः कण्ठे। रजोगुणाय नमः मनसि। घ्राणं ज्ञानेन्द्रियाय नमः घ्राणे। गांभीर्यरसाय नमः चित्ते। पाणिकर्मेन्द्रियाय नमः कराग्रे। दीनस्वराय नमः कण्ठे। वायुस्तत्वाय नमः गुदे। पराशांतिकलायै नमः करतले। ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः। धेनुमुद्रायै च..........विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ॐ ऐं ह्रीं नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं शिखायै वषट्। पिंगलां पद्ममालिनीं कवचाय हुं। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं नेत्रत्रयाय वौषट्। जातवेदो ममावह अस्त्राय फट्।

हंसो बाह्यान्धकार प्रदलनचतुरो मोदचोद प्रकाशः ।
पद्मानामेष मे दत्तः स्थित तिमिर ततेवरियित्र्याश्च रात्रौ ॥
देवानां देहभूतं शिरसि शिवमयं पूर्णतेजस्वरूपाज्जाता ।
रूपाधिरूपा अनलबलमया शक्तिरूपा पुनातु ॥

१४. विनियोगः- अस्य श्री आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सूक्तस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीसर्वाह्लादिन्यै देवी, रूं

बीजं, वारुणी शक्तिं, श्रीतारा महाविद्या सतोगुण, श्रोत्रज्ञानेन्द्रिय, सौम्यरस, पदकर्मेन्द्रिय मध्यमस्वर वायुस्तत्वं, विद्याकला क्रीं उत्कीलनं आकर्षिणी मुद्रा मम....... विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- वेदव्यास ऋषये नमः शिरसि। सर्वाह्लादिन्यै देव्यै नमः हृदि। रूं बीजाय नमः गुह्ये। वारुणी शक्त्यै नमः नाभौ। ताराह्लह्लह्लह्यवज्रविमहाविद्यायै नमः कण्ठे। सतोगुणाय नमः मनसि। श्रोत्रेन्द्रियाय नमः श्रोत्रेः। सौम्यरसाय नमः चित्ते। पदकर्मेन्द्रियाय नमः पादयोः। मध्यमस्वराय नमः कण्ठे। वायुस्तत्वाय नमः मूलाधारे। विद्याकलायै नमः करतले। क्रौं उत्कीलनाय नमः पादयोः। आकर्षिणी मुद्रा च..........विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडंगन्यास - ॐ ऐं कृं नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं शिखायै वषट्। सुवर्णां हेममालिनीं कवचाय हुं। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं नेत्रत्रयाय वौषट्। जातवेदो ममावह अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यदभानु सहस्त्रकान्तिममलां विद्युच्छटाभास्वरां। खड्ग चर्मवराभयं विदधतीं केयूरहारोज्ज्वलाम् ॥
सूर्यकाल समुद्रवेद प्रकृतिं श्रीश्चोदयन्तीं भुवे। विष्णुब्रह्म सुरेन्द्रसेवितपदां श्रीक्षीरजां चिन्तयेत् ॥

१५. विनियोगः- अस्य श्री तां म आवह जातवेदो सूक्तस्य ब्रह्मा ऋषिः, श्रीसर्वशक्ति देवी, ज्रां बीजं, धनदाशक्ति, मातंगी महाविद्या, रजोगुण, त्वक् ज्ञानेन्द्रिय, स्तवनरस, पादकर्मेन्द्रिय मृदुस्वर, आकाश तत्त्व, पराशांतिकला, श्रीं उत्कीलन संपुटमुद्रा मम.........विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। सर्वशक्त्यै देव्यै नमः हृदि। ज्रां बीजाय नमः गुह्ये। धनदा शक्त्यै नमः नाभौ। मातंगी महाविद्यायै नमः कण्ठे। रजोगुणाय नमः मनसि। त्वक्ज्ञानेन्द्रियाय नमः त्वचे। स्तवनरसाय नमः चित्ते। पादकर्मेन्द्रियाय नमः पादयोः। मृदुरसाय नमः कण्ठे। आकाश तत्वाय नमः मूलाधारे। पराशांति कलायै नमः करतले। श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः। संपुट मुद्रा च..........विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ॐ ऐं नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। तां म आवह जातवेदो शिखायै वषट्। लक्ष्मीमनपगामिनीम् कवचाय हुं। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो नेत्रत्रयाय वौषट्। दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

स्मरयोनिं लक्ष्मीं त्रितयमिमादौ तवमनोर्निधायैके नित्ये निरवधि महाभोग रसिकाः।
भजंति त्वां चिन्तामणि गुण निबद्धाक्षरलयाः शिवाऽग्नौ जुहवन्तः सुरभिघृतधाराऽहुतिशतः ॥

१६. विनियोगः- अस्य श्री यः शुचिः प्रयतो भूत्वा सूक्तस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, प्रूं बीजं, सिद्धिदा शक्ति, श्रीकमला महाविद्या, सतोगुण, घ्राणं ज्ञानेन्द्रिय, स्तवनरस, पादकर्मेन्द्रिय मृदुस्वर जलतत्व, शांतिकला, ह्रीं उत्कीलनं संपुटमुद्रा मम........विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। श्रीमहासरस्वती देवतायै नमः हृदि। प्रूं बीजाय नमः गुह्ये। सिद्धिदा शक्त्यै नमः नाभौ। श्रीकमला महाविद्यायै नमः कण्ठे। सतोगुणाय नमः मनसि। घ्राणं ज्ञानेन्द्रियाय नमः घ्राणे। स्तवनरसाय नमः चित्ते। पादकर्मेन्द्रियाय नमः पादयोः। मृदुस्वराय नमः कण्ठे। जलतत्वाय नमः मूलाधारे।

षडङ्गन्यास - ॐ ऐं क्लीं श्रीं नमः हृदयाय नमः। ॐ नमो नमः शिरसे स्वाहा। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा शिखायै वषट्। जुहुयादाज्यमन्वहम् कवचाय हुं। सूक्तं पंचदर्शर्चं च नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रीकामः सततं जपेत् अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे ममकरधरितं मा कदाचित् त्यजेथा ।
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनोभक्तिहीनां कदाचित् ॥

॥ श्री लक्ष्मी सूक्त प्रयोगः॥

श्री सूक्त की तरह लक्ष्मी सूक्त भी लक्ष्मी मंत्र से अथवा दुर्गेस्मृता मंत्र से भी संपुटित किया जा सकता है तथा यथा संख्या अथवा ११००० पाठ करें।

॥ श्री लक्ष्मी सूक्तम् ॥

सरसिज निलये सरोजहस्ते धवलतरां शुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा । सोमं धनस्य सोमनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां सूक्तजापिनाम् ॥
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे । तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् । विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम् ॥
महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।
पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः । ऋषयः श्रियपुत्राश्च मय श्रीर्देवी देवता ॥
ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्युवः । भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥
श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते । धनंधान्यंपशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥

॥ इति श्रीलक्ष्मी सूक्तम् ॥

॥ श्री महालक्ष्मी सूक्तम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री महालक्ष्मी सूक्तस्य ओं विष्णुः ऋषिः। ओं अनुष्टुप्छन्दः। ॐ महालक्ष्मी देवता। ॐ ओं बीजं। ॐ श्री महालक्ष्मी शक्तिः। ॐ स्वाहा कीलकम्। श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं महालक्ष्मी सूक्त पारायणे विनियोगः।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः। षट् करन्यासाः, हृदयादिन्यासाश्च। ।।

ॐ श्रीं नमः ॐ श्रीं ॐ॥ नित्यां स्वर्ण सरोरुह प्रकटितां बालार्क कोटि प्रभां, श्वेतास्य स्तन मंडलारुण मयां मध्ये विचित्र प्रभाम्। सत्साला कमलेषु खड्ग कुलिशं कौमोदकीं चक्रकम्, शूलं वै परशुं च शंखममलं घंटा च पाशक्रमात्। ॐ श्रीं ॐ मः न श्रीं ॐ ॥१॥

इसी तरह सभी श्लोकों के ॐ श्रीं नमः ॐ श्रीं ॐ का लोम विलोम संपुट लगावें।

शक्ति दंडक चर्मं चाप दशकं दोर्भिर्बहंती मुदा, सांद्रानंदमयीं कमण्डलु धरां नीलोरजंघाकुचाम्। चित्रां माहिषै मर्दिनीं गुणमयीं साम्राज्य लक्ष्मीप्रदां, माया बीजमयीं परावर महालक्ष्मीं भजे राजसीम् ॥२॥

हिरण्य वर्णा० (इत्यादि श्री सूक्त मंत्राः) ॥३॥ ताम् आवह० ॥४॥ अश्वपूर्णां० ॥५॥ कांसोस्मितां० ॥६॥ चंद्रांप्रभासां० ॥७॥ आदित्यवर्णे० ॥८॥ उपैतुमां देवसखः ॥९॥ क्षुत्पि पासामलां ज्येष्ठां० ॥१०॥ गंध द्वारां० ॥११॥ मनसः काममाकूतिं० ॥१२॥ कर्दमेन प्रजा भूता० ॥१३॥ अपः स्त्रजंतु० ॥१४॥ आर्द्रांयः करिणीं० ॥१५॥ तांम आवहजात वेदो० ॥१६॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा० ॥१७॥

अज्ञान संभ वमना कलितान्वयं हि भिक्षुं कपालिनमन्ना मसमा द्वितीयाम्।
पूर्वकर ग्रहण मंगलतो भवत्याः, शंभुं कररवि विबुधे गिरिराजकन्ये ॥१८॥
चर्मांबरं च शव - भस्म विलेपनं च, वेताल संहति परिग्रहता च शंभोः।
भिक्षाट नं च नटनं च परेत भूमौ शोभां विभर्ति गिरिजे तव साहचर्यात्॥ ॥१९॥

॥नारायण उवाच ॥२०॥

परावरेशीं जगदादि भूतां परां वरेण्यां वरदां वरिष्ठाम्।
वागीश्वरीं बहुवाग्भिः प्रणीतां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२१॥
श्रियं समस्तैरधिवास भूतां महासुलक्ष्मीं धरणी धरां च।
अनादिमादिं परमार्थरूपां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२२॥
एकामनेकां विविधां सुकार्यां सुकारिणीं सदसद्रूपिणीं च।
कल्याणरूपां च शिवो शिवप्रदां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२३॥
सर्वाश्रयां सर्वजगन्निवासां श्रीमन्महालक्ष्मी मनादि देवीम्।
शक्तिस्वरूपां च शिवस्वरूपां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२४॥
कामाभिधानां श्याधिवास भूतां ह्रीं - रूपिणीं कपि बीज प्रभावाम्।

कर्णाष्टबीजां परमार्थ संज्ञांत्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२५॥
वैश्वानर स्त्री सहितेन देवीं श्री मंत्रराजेन विराजमानाम् ।
सर्वार्थदात्रीं परमां पवित्रां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२६॥
त्रिकोण पंचार युग प्रभावां षट्कोण मिश्रां द्विदशार युक्ताम् ।
अष्टार चक्रादि निवासभूतां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२७॥
पुनर्दशार द्वितीयेन युक्तां पंचार कोणांकित भूगृहां च ।
यंत्राधि वासामपि यंत्ररूपां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२८॥
संभावितां सर्वदा न्यास गम्यां सर्व स्वरूपा मपि सर्व सेव्याम् ।
सर्वाक्षर न्यासवशां वरिष्ठां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥२९॥
विधायकुंडं विधिनास्थंडिलंवा सुगंधि होमं सफलं प्रकुर्वते ।
त्वत्तोषणा ज्जायते भाग्यपात्रं तेषांसुदेवैरपि योगगम्यम् ॥३०॥

॥ऋषि उवाच ॥३१॥

इति स्तुत्वाऽवसाने समहालक्ष्मीं ददर्श सः ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां महिषासुर घातिनीम् ॥३२॥

॥ इति श्री महालक्ष्मी सूक्तं समाप्तम् ॥११॥

॥ श्री लक्ष्मी द्वादशनामानि स्तोत्रम् ॥

त्रैलोक्य पूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे । यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया । पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीः पद्मधारिणी ॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत् । स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह ॥

॥ इति श्रीलक्ष्मी द्वादश नामानि स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री कमला कवचम् ॥

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम् । यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥१॥
नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः । स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रविशारदः ॥२॥
विद्यार्थिनां सदा सेव्या धनदात्रीविशेषतः । धनार्थिभिः सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा ॥३॥

विनियोग:- अस्याश्चतुरक्षरी विष्णुवल्लभायाः कवचस्य श्रीभगवान शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दो वाग्भवी शक्तिर्देवता, वाग्भवं बीजं, लज्जा रमा कीलकं, कामबीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्य कवित्व सर्वसिद्धि समृद्धये पाठे विनियोगः ।

ऐङ्कारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा । ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शाङ्करी ॥४॥
जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि । ओष्ठाधरे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः ॥५॥
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी ॥६॥
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती । हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः ॥७॥
पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा । उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः ॥८॥
जानुचक्रे पदद्वद्वे घुटिकेंगुलिमूलके । स्वधातुप्राणशक्त्यात्मसीमन्ते मस्तके पुनः ॥९॥
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम । सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती ॥१०॥
तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु । ऋद्धिः पातु महादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा ॥११॥
वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी । रमा पातु महादेवीं पातु माया स्वराट् स्वयं ॥१२॥
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी । शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ॥१३॥
शैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु । त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु ॥१४॥
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु । नवदुर्गा सदा पान्तु कामाक्षी सर्वदाऽवतु ॥१५॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम । मात्रा पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः ॥१६॥
सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा । पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥१७॥
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये । यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥१८॥
शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरी । न्यूनांगे चातिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन ॥१९॥
न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत् । कुलीनाय महेच्छाय दुर्गाभक्तिपराय च ॥२०॥
वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम् । निजशिष्याय शांताय धनिने ज्ञानिने तथा ॥२१॥
दद्यात् कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम् । शनौ मङ्गलवारे च रक्तचन्दनकैस्तथा ॥२२॥
यावकेन लिखेन्मन्त्रं सर्वतन्त्रसमन्वितम् । विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः ॥२३॥
स्वशुक्रः परशुक्रैर्वा नानागन्धसमन्वितैः । गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ॥२४॥
सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने । आश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च ॥२५॥
पूर्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मंगलवासरे । विलखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये ॥२६॥
आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः । इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्रयोगे तथैव च ॥२७॥
कौलके बालके चैव वणिजे चैव सत्तमः । शून्यागारे श्मशाने च विजने च विशेषतः ॥२८॥
कुमारीं पूजयित्वादौ यजेद्देवीं सनातनीम् । मत्स्यैर्मांसैः शाकसूपैः पूजयेत्परदेवताम् ॥२९॥
घृताद्यैः सोपकरणैः पुष्पधूपैर्विशेषतः । ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पूजयेत्परमेश्वरीं ॥३०॥
अखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम् । तदाधरेन्महाविद्यां शंकरेण प्रभाषिताम् ॥३१॥
मारणद्वैषणादीनि लभते नात्र संशयः । स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः ॥३२॥

गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया । अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥३३॥
पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम् ।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र- क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय ॥३४॥

॥ इति विश्वसारतंत्रे कमलात्मिका कवचम् ॥

॥ श्रीमहालक्ष्मी हृदयम् ॥

विनियोगः- आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीहृदयमाला मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, अनुष्टुबादिनानाछन्दासि, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

न्यासः- ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुबादिनानाछन्देभ्यो नमः मुखे। आद्यादिमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदये। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ऐं कीलकाय नमः नाभौ। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यासः- ॐश्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास :- ॐश्रीं हृदयाय नमः। ॐह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ श्रीं कवचाय हुँ। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं इति दिग्बन्धः।

॥ध्यानम्॥

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया। हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये ॥

सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि । मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा। इति मंत्रं जपित्वा स्तोत्रं पठेत्। यथा-

वन्दे लक्ष्मीं परिशिवमयीं शुद्धजांबूनदाभां । तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलांगीम् ॥
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानामाद्यां । शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥१॥
श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीं । सर्वकामफलावाप्ति साधनैकसुखावहां ॥२॥
स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसः । त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीं ॥३॥

समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं, समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्तकल्याणकरीं महाश्रियम्, भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥४॥
विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं, विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहराम् ।
अनन्तसामोदसुखप्रदायिनीं, नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥५॥
समस्तभूतान्तरसंस्थिता त्वं, समस्तभोक्त्रीश्वरि विश्वरूपे ।

तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु, त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्री ॥६॥
दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्रि, त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः, कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीं ॥७॥
अम्बं प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या, मां त्वत्कृपा द्रविण गेहमिमं कुरुष्व ।
आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहन्त्रि, त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥८॥
शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागत रक्षणायै, कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै, धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥९॥
शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै, रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै ।
भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै, मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥१०॥
लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै, सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धपूजितायै ।
धृत्यै नमोऽस्त्वमित दुर्गतिभञ्जनायै, गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायकायै ॥११॥
देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै, भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्तिविनाशनायै ।
दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै, पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥१२॥
सुतीव्र दारिद्र्यविदुःख हन्त्र्यै, नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै ।
श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै, नमो नमस्सर्वविभूतिदायै ॥१३॥
जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी, जयतु जयतु पद्मा पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या ।
जयतु जयतु विद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था, जयतु जयतु सम्यक्सर्वसम्पत्करी श्रीः ॥१४॥
जयतु जयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या, जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा ।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या, जयतु जयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था ॥१५॥
जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था, जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा ।
जयतु जयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी, जयतु जयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये ॥१६॥
यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या, रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः ।
जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः, प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते ॥१७॥
लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं, विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये ।
तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनी श्रीरमां , समर्पयं समुद्रिकां सकलभाग्य संसूचिकाम् ॥१८॥
कलया ते यथा देवि जीवन्ति सचराचराः । तथा सम्पत्करे लक्ष्मि सर्वदा सम्प्रसीद मे ॥१९॥
यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां सन्न्यवेशयत् । तथैव स्वकलां लक्ष्मि मयि सम्यक् समर्पय ॥२०॥
सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे । अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम् ॥२१॥
मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला । सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः ॥
वसेत्सत्ये लोके मम वचसि लक्ष्मीवरकला । श्रियश्श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः ॥२२॥

तावन्नित्यं ममांगेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत् । सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रिया ॥२३॥
सर्वमंगलसम्पूर्णा सर्वैश्वर्य समन्विता । आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥२४॥
अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका । सर्वैश्वर्यप्रदामेस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता ॥२५॥
अलक्ष्मीं हरतुः क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा । वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता ॥२६॥
ऐश्वर्य मंगलोत्पत्तिस्त्वत्कलायां निधीयते । मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव ॥२७॥
भवदावेश भाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि । त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोस्तु ते ॥२८॥
पुनासिमां त्वंकलयैवयस्मादतः समागच्छममाग्रतस्त्वम् । परम्पदंश्रीर्भवसुप्रसन्नामय्यच्युतेनप्रविशादिलक्ष्मि ॥२९॥
श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः । नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्याऽवलोकय ॥३०॥
सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम् । वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥३१॥
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते । विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥३२॥
क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे । त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ॥३३॥
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णहिरणमये । समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम ॥३४॥
स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले । प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव ॥३५॥
श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थं महानिधिम् । शीघ्रमुद्धृत्य परतः प्रदर्शय समर्पय ॥३६॥
वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धि कृपामयि । त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे सम्प्रदर्शय ॥३७॥
विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे । त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ॥३८॥
रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मे पुरः । न जाने परमं रूपं मातर्मे सम्प्रदर्शय ॥३९॥
आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः । मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम् ॥४०॥
देविं शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते । मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात् ॥४१॥
उत्तिष्ठ जागृहि त्वंमे समुत्तिष्ठ सुजागृहि । अक्षयान् हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान् ॥४२॥
निक्षेपान् मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः । समुन्नतानना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात् ॥४३॥
मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात् । प्रसीद श्रेयसान्दोग्धि लक्ष्मि मे नयनाग्रतः ॥४४॥
अत्रोपविश लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरणमयि । सुस्थिरा भव सम्प्रीत्या प्रसीद वरदा भव ॥४५॥
आनीय त्वं तथा देवि निधीन् मे सम्प्रदर्शय । अद्य क्षणेन सहसा दत्वा संरक्ष मां सदा ॥४६॥
मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि । अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥४७॥
समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनद प्रभे । प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ॥४८॥
लक्ष्मि भुवं गता भासि यत्र यत्र हिरणमयी । तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय ॥४९॥
क्रीडते बहुधा भूमौ परिपूर्णहिरणमये । मम मूर्द्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय ॥५०॥
फलद्भाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि । प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे ॥५१॥

अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते । वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते ॥५२॥
समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा । करुणारसनिष्पन्द नेत्रद्वय विलासिनी ॥५३॥
सन्निधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके । करुणासुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु ॥५४॥
सर्वराजगृहे लक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते । स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाऽभयं कुरु ॥५५॥
सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयाऽर्पय । सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥५६॥
आद्यादि श्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामाङ्कसंस्थिते । प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ॥५७॥
प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे । अचला भव सम्प्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे ॥५८॥
यावत्तिष्ठन्ति वेदाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति । यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपांमयि ॥५९॥
चान्द्रीकला यथा शुक्ले वर्द्धते सा दिने दिने । तथा दया ते मय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥६०॥
यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे । तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥६१॥
योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना । तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥६२॥

नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते नारायणोपि तव हृत्कमले यथाऽस्ते ।
नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः ॥६३॥

विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
दया सुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥६४॥

न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्तचिन्तामणि कामधेनो ।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥६५॥

आद्यादि माये त्वमजाण्डबीजं त्वमेव साकार निराकृति स्त्वम् ।
त्वया धृताश्चाब्जभवाण्ड सङ्घान् चित्रं चरित्रं तव देवि विष्णोः ॥६६॥

ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः । महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ॥६७॥
अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्ता सूक्तानि यानि च । तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥६८॥
भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः । इति संचिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं ब्रजे ॥६९॥
अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः । इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरण ब्रजे ॥७०॥
तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित् । इति सञ्चिन्त्य संचिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम् ॥७१॥
त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते । यावत्सम्पूर्णकामः स्यात्तावद्देहि दयानिधे ॥७२॥
क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना । न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः ॥७३॥
यथाहि पुत्र वात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी । वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीणयति वत्सला ॥७४॥
यदि स्यान्तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी । दया पयोधरस्तन्य सुधाभिरभिषिञ्च माम् ॥७५॥
मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे । पांसूनां वृष्टिविन्दूनां दोषाणाञ्च नमेमितिः ॥७६॥

पापिनामहमेवान्यो दयालूनान् त्वमग्रणीः । दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥७७॥
विधिनाहन्न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता । आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥७८॥
कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः । विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे ॥७९॥

माता पिता त्वं गुरु सद्गतिः श्रीस्त्वमेव सञ्जीवनहेतुभूता ।
अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये ॥८०॥
आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना विशुद्धविज्ञान सुखैकदोग्ध्री ।
अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना ॥८१॥
अशेषवाग् जाड्यमलाप हन्त्री नवन्नवं स्पष्ट सुवाक् प्रदायिनी ।
ममेह जिह्वाग्र सुरङ्ग नर्त्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ॥८२॥
समस्तसम्पत्सु विराजमाना, समस्ततेजश्चय भासमाना ।
विष्णुप्रिये त्वम् भव दीप्यमाना वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना ॥८३॥
सर्वं प्रदर्शे सकलार्थदे त्वं प्रभा सुलावण्य दया प्रदोग्ध्री ।
सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ॥८४॥
सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः सर्वेश्वरी सर्वभयाप - हन्त्री ।
सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ॥८५॥
समस्त विघ्नौघ विनाशकारिणी समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा ।
अनन्त सौभाग्य सुखप्रदायिनी हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ॥८६॥
देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं देवाधिनाथ भव देवगणाभिवन्द्ये ।
मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना ॥८७॥
मा वत्सभैरभयदानकरोऽर्पितस्ते मौलौ ममेति मम दीनदयानुकम्पे ।
मातः समर्पय मुदा करुणाकटाक्षं मांगल्यबीजमिह नः सृज जन्प्रमातः ॥८८॥
कटाक्ष इहकामधुक्तव मनस्तु चिन्तामणिः करः सुरतरुः सदा नवनिधिस्त्वमेवेन्दिरे ।
भवेत्तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं मुखं तव कलानिधिर्विविध वाञ्छितार्थप्रदम् ॥८९॥
यथा रसस्पर्शनतोऽयसोपि सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते ।
कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाममङ्गलानामपि मंगलं त्वम् ॥९०॥
देहीति नास्तीति वचः प्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये ।
अतः सदाऽस्मिन्नऽभयप्रदा त्वं सहैव पत्या मयि सन्निधेहि ॥९१॥
कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या श्रीस्ते कलामयि रसेन र सायनेन ।
आस्तां यतो मम च दृक् शिरपाणिपादस्पृष्टाः सुवर्णवपुषः स्थिरजङ्गमाः स्युः ॥९२॥
आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्मपत्नी त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि ।

आद्यादिलक्ष्मि त्वदनुग्रहेण पदे पदे मे निधिदर्शनं स्यात् ॥९३॥
आद्यादि लक्ष्मीहृदयं पठेद्यः स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति ।
महादरिद्रोऽपि भवेद्-धनाढ्यस्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति ॥९४॥
यस्य स्मरण मात्रेण तुष्टा स्याद् विष्णुवल्लभा । तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत् ॥९५॥
इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम् । जपः पंचसहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ॥९६॥
त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः । यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम् ॥९७॥
महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे । इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पंचवारं धनी भवेत् ॥९८॥
अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम् । ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम् ॥९९॥
नरेण वाऽथवा नार्य्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते । जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते ॥१००॥

य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे रमोत्सवे सन्निहितेसु भक्त्या ।
पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या लभेत्स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम् ॥१०१॥
य एकभक्तोन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी ।
स मन्दभाग्योपि रमाकटाक्षाद् भवेत् सहस्त्राक्षशताधिक श्रीः ॥१०२॥
श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमन्त्रार्थदृढैकनिष्ठाम् ।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मातः परमं पदं श्रीः ॥१०३॥
पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम् ।
सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं प्रदेहि मे लक्ष्मि पुनः पुनस्त्वम् ॥१०४॥
वादार्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं वयः स्थिरत्वं ललनासुभोगं ।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गविजन्मजन्मनि ॥१०५॥
सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीर्विभूतिवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
शिरोबीजं - ॐ यं हं कं लं पं श्रीं ।
ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासां ।
विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ॥१०६॥
बीजापूरं सरसिजयुगलं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं । भर्त्रायुक्तां मुहुरभयदां मह्यमप्यच्युत श्रीः ॥१०७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृत जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥१०८॥

॥ इति श्रीअथर्वणरहस्ये श्रीलक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सद्य: फलदा लक्ष्मीस्तव हृदयम् ॥

श्रीमत्सौभाग्य जननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् । सर्वकामफलवाप्ति साधनैकसुखावहाम् ॥१॥
श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः । नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्यावलोकय ॥२॥
सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं समागच्छ सन्निधिम् । वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥३॥
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते । विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥४॥
क्षीराब्धिसंस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे । त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ॥५॥
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्ण हिरणमयि । समागच्छ समागच्छ स्थित्वा सुपुरतो मम ॥६॥
स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले । प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्ना वरदा भव ॥७॥
श्रीधरे श्रीमहाभूमे त्वदन्तस्थ महानिधिम् । शीघ्रमुद्धृत्य पुरतः प्रदर्शय समर्पय ॥८॥
वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धे कृपामयि । त्वत्कुक्षिगत सर्वस्वं शीघ्रं मे तु प्रदर्शय ॥९॥
विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे । त्वद्गर्भगत हेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ॥१०॥
अत्रोपविश्य लक्ष्मि त्वं स्थिराभव हिरण्यमयि । सुस्थिराभव सुप्रीत्या प्रसन्न वरदाभव ॥११॥
सादरे मस्तके हस्तं मम तव कृपयार्पय । सर्वराजग्रहे लक्ष्मि त्वत्कलामयि तिष्ठतु ॥१२॥
यथा वैकुण्ठनगरे यथैव क्षीरसागरे । तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥१३॥
आद्यालक्ष्मि महालक्ष्मि विष्णुवामाङ्कसंस्थिते । प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ॥१४॥
समागच्छ महालक्ष्मि धनधान्यसमन्विते । प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ॥१५॥
दया सुदृष्टिं कुरुतां मयि श्रीः । सुवर्णवृष्टिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥१६॥
महालक्ष्मीः समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे । इदं श्रीहृदयं जप्त्वा शतवारं धनी भवेत् ॥

॥ इति श्रीसद्यः फलदा लक्ष्मीस्तव हृदयं ॥

॥ श्रीमहालक्ष्मी पञ्जर स्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीपञ्जर महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रियै इति कीलकं, मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे लक्ष्मी पञ्जरस्तोत्र जपे विनियोगः।

करन्यासः- ॐ श्रीं ह्रीं विष्णुवल्लभायै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धिसेवितायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धिदात्र्यै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं वाञ्छितपूरिकायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रियै नमः स्वाहेति करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः- ॐ श्रीं ह्रीं विष्णुवल्लभायै हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धिसेवितायै शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धिदात्र्यै कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रींवाञ्छितपूरिकायै नेत्राभ्यां वौषट्। श्रीं ह्रीं श्रीं श्रियै नमः स्वाहेत्यस्त्राय फट्।

॥ध्यानम्॥

ॐ वन्दे लक्ष्मीं परिशिवमयीं शुद्धजांबूनदाभां । तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलांगीम् ॥
बीजापूरं कनककलशः हेमपद्मं दधानामाद्यां । शक्तिं भुक्ति सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥१॥
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि महालक्ष्मि हरिप्रिये । प्रसादं कुरु देवेशि मयि दुष्टेऽपराधिनि ॥२॥
कोटिकन्दर्पलावण्यां सौन्दर्य्यैकस्वरूपताम् । सर्वमंगल मांगल्यां श्रीरामां शरणं ब्रजे ॥३॥

॥ मूलमन्त्र षट्क्रम ॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णुवल्लभायै महामायायै कं खं गं घं ङंनमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष धनं धान्यं श्रियं समृद्धि देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै वात्सल्यनिधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष श्रियं प्रतिष्ठां वाक्सिद्धि मे देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि सेवितायै सकलाभीष्टदान- दीक्षितायै टं ठं डं ढं णं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष सर्वतोऽभयं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धिदात्र्यै महा अचिन्त्यशक्तिकायै तं थं दं धं नं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष मे सर्वाभीष्ट सिद्धिं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो वाञ्छितपूरिकायै सर्वसिद्धिमूलभूतायै पं फं बं भं मं नमस्ते नमस्ते मांपाहिपाहि रक्षरक्षमे मनोवाञ्छितां सर्वार्थभूतां सिद्धिं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कमले कमलालये मह्यम् प्रसीद प्रसीद महालक्ष्मि तुभ्यं नमो नमस्ते जगद्धितायै यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष मे वश्याकर्षण मोहनस्तंभनोच्चाटन ताडनाचिन्त्यशक्तिवैभवं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं बीजरूपायै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं विष्णुवल्लभायै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सिद्ध्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं बुद्ध्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धृत्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं मत्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कान्त्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं शान्त्यै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वतोभद्ररूपायै नमः स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं श्रियै नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवति ब्रह्मादि वेदमातर्वेदोद्भवे वेदगर्भे सर्वशक्तिशिरोमणे श्रीं हरिवल्लभे ममाभीष्टं पूरय पूरय मां सिद्धिभाजनं कुरु कुरु अमृतं कुरु कुरु अभयं कुरु कुरु सर्व कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल मे सुतशक्तिं दीपय दीपय ममाहितान् नाशय नाशय असाध्य कार्यं साधय साधय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ग्लौं ग्लौं ग्लौं श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

॥ इति लक्ष्मीमाला मन्त्रः १०८ जपं कुर्यात् ॥

॥ लक्ष्मी पञ्जर स्तोत्रम् ॥

ॐ शिरो मे रक्षताद् देवी पद्मा पङ्कजधारिणी । भालं पातु जगन्माता लक्ष्मीः पद्मालया च मे ॥१॥
मुखं पायान्महामाया दृशौ मे भृगुकन्यका । घ्राणं सिन्धुसुता पायान्नेत्रे मे विष्णुवल्लभा ॥२॥
कण्ठं रक्षतु कौमारी स्कन्धौ पातु हरिप्रिया । हृदयं मे सदा रक्षेत्सर्वशक्तिविधायिनी ॥३॥
नाभिं सर्वेश्वरी पायात्सर्वभूतालया च मे । कटिञ्च कमला पातु ऊरू ब्रह्मादि देवता ॥४॥
जंघे जगन्मयी रक्षेत्पादौ सर्व सुखावहा । श्रीबीज वास निरता सर्वाङ्गे जनकात्मजा ॥५॥
सर्वतोभद्ररूपा मामव्याद् दिक्षु विदिक्षु च । विषमे सङ्कटे दुर्गे पातु मां व्योमदासिनी ॥६॥
इतीदं पञ्जरं लक्ष्म्या गुह्याद् गुह्यतरं महत् । गोपनीयं प्रयत्नेन न दद्याद्यस्य कस्य च ॥७॥
यः पठेत्प्रयतोनित्यं फलाहारी जितेन्द्रियः । ध्यायेल्लक्ष्मीपदं प्रीत्या तस्य किञ्चिन्न दुर्लभं ।
विष्णोर्नाम्ना सहस्रेण सम्पुटीकृत्य यः पठेत् ॥८॥
पञ्चायुत प्रयत्नेन स सिद्धस्स्याद्यथा हरिः । विल्वपीठे लिखेद्यन्त्रं षट्कोणं मन्त्रसंयुतम् ॥९॥
तत्र सम्पूजयन्देवीं तदग्रे पाठमाचरेत् । हरिद्रामालया संख्यां कुर्वन्नित्यमतन्द्रितः ॥१०॥
सर्वसिद्धिमवाप्नोति यद्यद्वाञ्छिति सत्वरम् ॥११॥

॥ इति श्रीअथर्वणरहस्ये श्रीलक्ष्मीपंजरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री लक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

क्षमस्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे । शुद्धसत्त्वस्वरूपे च कोपादिपरिवर्जिते ॥
उपमे सर्वसाध्वीनां देवीना देवपूजिते । त्वया विना जगत्सर्वं मृततुल्यं च निष्फलं ॥
सर्वसम्पत्स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी । रासेश्वर्यधिदेवी त्वं त्वत्कलाः सर्वयोषितः ॥
कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धुकन्यका । स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं मर्त्यलक्ष्मीश्च भूतले ॥
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्देवदेवी सरस्वती । गंगा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मलोकतः ॥
कृष्णप्राणाधिदेवी त्वं गोलोके राधिका स्वयं । रासे रासेश्वरी त्वं च वृन्दावनवने वने ॥
कृष्णप्रिया त्वं भाण्डीरे चन्द्रा चन्दनकानने । विरजा चम्पकवने शतशृङ्गे च सुन्दरी ॥
पद्मावती पद्मवने मालती मालतीवने । कुन्ददन्ती कुन्दवने सुशीला केतकीवने ॥
कदम्बमाला त्वं देवी कदम्बकाननेऽपि च । राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मीर्गृहे गृहे ॥
इत्युक्त्वा देवताः सर्वे मुनयो मनवस्तथा । रुरुदुर्नम्रवदनाः शुष्ककण्ठोष्ठतालुकाः ॥
इति लक्ष्मीस्तवं पुण्यं सर्वदेवैः कृतं शुभं । यः पठेत्प्रातरुत्थाय स वै सर्वं लभेद्ध्रुवं ॥
अभार्यो लभते भार्यां विनीतां च सुतां सतीं । सुशीलां सुन्दरीं रम्यामतिसुप्रियवादिनीं ॥

पुत्रपौत्रवतीं शुद्धां कुलजां कोमलां वरां । अपुत्रो लभते पुत्रं वैष्णवं चिरजीवनम् ॥
परमैश्वर्ययुक्तं च विद्यावन्तं यशस्विनम् । भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भ्रष्टश्रीर्लभते श्रियं ॥
हतबन्धुर्लभेद्बन्धुं धनभ्रष्टो धनं लभेत् । कीर्तिहीनो लभेत्कीर्तिं प्रतिष्ठां च लभेद्ध्रुवं ॥
सर्वमंगलदं स्तोत्रं शोकसन्तापनाशनम् । हर्षानन्दकरं शश्वद्धर्ममोक्षसुहृत्प्रदम् ॥

॥ इति श्रीलक्ष्मीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री सिद्धलक्ष्मी स्तोत्रम् ॥

विनियोग:- **ॐ अस्य श्रीसिद्धिलक्ष्मीस्तोत्र मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम सर्वक्लेशपीडा परिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्य नाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्र पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास:- **ॐ हिरण्यगर्भ ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमो हृदि, श्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयौः, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे।**

करन्यास:- **श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नमः। क्लीं अमृतानन्दायै मध्यमाभ्यां नमः। श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास:- **ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं अमृतानन्दायै शिखायै वषट्। ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै कवचाय हुं। ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट्।**

"**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः**" इस मंत्र से तालत्रय कर दिग्बंधन करें। फिर ध्यान करें।

॥ ध्यानम् ॥

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् । त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदाधराम् ॥१॥
पीताम्बरधरां देवीं नानालंकारभूषिताम् । तेजपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम् ॥२॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदयमव्ययम् । विष्णुमानन्दमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम् ॥१॥
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां सदात्यानन्द दायिनीम् । श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्दिनीम् ॥२॥
तेजः प्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम् । ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं कालिकारूपशोभिनीम् ॥३॥
अकारे लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययं । मकारः पुरुषोऽव्यक्तो देवीप्रणव उच्यते ॥४॥
सूर्यकोटि प्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभं । तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम् ॥५॥
ॐकारं परमानन्दं सदैव सुखसुन्दरीं । सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा ॥७॥
तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा । पञ्चमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा ॥८॥
वाराही सप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा । नवमी खड्गिनी प्रोक्ता दशमं चैव देविका ॥९॥
एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंसवाहिनी । एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठन्ति सदा नराः ॥१०॥
सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते नात्र कार्या विचारणा । एकमासं द्विमासं च त्रिमासं माञ्चतुष्टयं ॥११॥
पञ्चमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत् । ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामयपीडितः ॥१२॥
जन्मान्तरसहस्त्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः । दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥१३॥
धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च । शाकिनी भूतवेताल सर्पव्याघ्रनिपातने ॥१४॥
राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबन्धने । ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकं ॥१५॥
स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते । सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥१६॥

॥ इति श्रीब्रह्मपुराणे श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ प्रसन्न वरदा श्री लक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

जय पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपतिप्रिये । जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणि ॥१॥
महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि । हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥२॥
पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे । सर्वभूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरु ॥३॥
जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे । दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोस्तु ते ॥४॥
नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्यधारिणि । वसुदृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम् ॥५॥
रक्ष त्वं देव देवेशि देवदेवस्य वल्लभे । दरिद्रात्त्राहि मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि ॥६॥
नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि । ब्रह्मादयो नमन्ते त्वां जगदानन्ददायिनि ॥७॥
विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते । आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धिं कुरु मे सदा ॥८॥
अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः । चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः ॥९॥
नमः प्रद्युम्नजननिमातस्तुभ्यं नमो नमः । परिपालय भो मातर्मातुभ्यं शरणागतम् ॥१०॥
शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये । त्राहि-त्राहि महालक्ष्मि परित्राण परायणे ॥११॥
पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ति गुणा नरे । शीलत्वं नैव शोभेत महालक्ष्मि त्वया विना ॥१२॥
तावद्विराजते रूपं तावच्छील विराजते । तावद्गुणा नराणाञ्च यावल्लक्ष्मी प्रसीदति ॥१३॥
लक्ष्मित्वयालंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्याः ।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः ॥१४॥

(१) ॥ श्री कमला स्तोत्रम् ॥

ओङ्कार रूपिणी देवि विशुद्धसत्त्वरूपिणी । देवानां जननी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरी ॥
तन्मात्रञ्चैव भूतानि तव वक्षःस्थलं स्मृतम् । त्वमेव वेदगम्या तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
देवदानवगंधर्वयक्षराक्षसकिन्नरैः । स्तूयसे त्वं सदा लक्ष्मि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
लोकातीता द्वैतातीता समस्तभूतवेष्टिता । विद्वज्जनकीर्त्तिता च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
परिपूर्णा सदा लक्ष्मि त्रात्री तु शरणार्थिषु । विश्वाद्या विश्वकर्त्री च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
ब्रह्मरूपा च सावित्री त्वद्दीप्त्या भासते जगत् । विश्वरूपा वरेण्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
क्षित्यप्तेजो मरुद्व्योमपंचभूतस्वरूपिणी । बन्धादेः कारणं त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
महेशे त्वं हेमवती कमला केशवेऽपि च । ब्रह्मणः प्रेयसी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
चण्डी दुर्गा कालिका च कौशिकी सिद्धिरूपिणी । योगिनी योगगम्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
बाल्ये च बालिका त्वं हि यौवने युवतीति च । स्थविरे वृद्धरूपा च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
गुणमयी गुणातीता आद्या विद्या सनातनी । महत्तत्त्वादिसंयुक्ता प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
तपस्विनी तपः सिद्धिः स्वर्गसिद्धिस्तदर्थिषु । चिन्मयी प्रकृतिस्त्वं तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
त्वमादिर्जगतां देवि त्वमेव स्थितिकारणम् । त्वमन्ते निधनस्थानं स्वेच्छाचारा त्वमेव हि ॥
चराचराणां भूतानां वहिरन्तस्त्वमेव हि । व्याप्यव्यापकरूपेण त्वं भासि भक्तवत्सले ॥
त्वन्मायया हृतज्ञाना नष्टात्मानो विचेतसः । गतागतं प्रपद्यन्ते पापपुण्यवशात्सदा ॥
तावन्सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा । यावन्न ज्ञायते ज्ञानं चेतसा नान्वगामिनी ॥
त्वज्ज्ञानात्तु सदा युक्तः पुत्रदारगृहादिषु । रमन्ते विषयान्सर्व्वानन्ते दुःखप्रदान् ध्रुवम् ॥
त्वदाज्ञया तु देवेशि गगने सूर्यमण्डलम् । चन्द्रश्च भ्रमते नित्यं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
ब्रह्मेशविष्णुजननी ब्रह्माख्या ब्रह्मसंश्रया । व्यक्ताव्यक्ता च देवेशि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
लचला सर्वगा त्वं हि मायातीता महेश्वरि । शिवात्मा शाश्वता नित्या प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
सर्वकायनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी । अनन्ता निष्कला त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
सर्वेश्वरी सर्ववन्द्या अचिन्त्या परमात्मिका । भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
ब्रह्माणी ब्रह्मलोके त्वं वैकुण्ठे सर्वमंगला । इन्द्राणी अमरावत्यामम्बिका वरुणालये ॥
यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा । महानन्दाग्निकोणे च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
नैर्ऋत्यां रक्तदन्ता त्वं वायव्यां मृगवाहिनी । पाताले वैष्णवीरूपा प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
सुरसा त्वं मणिद्वीपे ऐशान्यां शूलधारिणी । भद्रकाली च लंकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
रामेश्वरी सेतुबंधे सिंहले देवमोहिनी । विमला त्वं च श्रीक्षेत्रे प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
कालिका त्वं कालिघट्टे कामाख्या नीलपर्वते । विरंजा ओड्रदेशे त्वं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

(१) ॥ श्री कमला स्तोत्रम् ॥

ओंङ्कार रूपिणी देवि विशुद्धसत्त्वरूपिणी । देवानां जननी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरी ॥
तन्मात्रञ्चैव भूतानि तव वक्षःस्थलं स्मृतम् । त्वमेव वेदगम्या तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
देवदानवगंधर्वयक्षराक्षसकिन्नरैः । स्तूयसे त्वं सदा लक्ष्मि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
लोकातीता द्वैतातीता समस्तभूतवेष्टिता । विद्वज्जनकीर्त्तिता च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
परिपूर्णा सदा लक्ष्मि त्रात्री तु शरणार्थिषु । विश्वाद्या विश्वकर्त्री च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
ब्रह्मरूपा च सावित्री त्वद्दीप्त्या भासते जगत् । विश्वरूपा वरेण्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
क्षित्यप्तेजो मरुद्व्योमपंचभूतस्वरूपिणी । बन्धादेः कारणं त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
महेशे त्वं हेमवती कमला केशवेऽपि च । ब्रह्मणः प्रेयसी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
चण्डी दुर्गा कालिका च कौशिकी सिद्धिरूपिणी । योगिनी योगगम्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
बाल्ये च बालिका त्वं हि यौवने युवतीति च । स्थविरे वृद्धरूपा च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
गुणमयी गुणातीता आद्या विद्या सनातनी । महत्तत्त्वादिसंयुक्ता प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
तपस्विनी तपः सिद्धिः स्वर्गसिद्धिस्तदर्थिषु । चिन्मयी प्रकृतिस्त्वं तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
त्वमादिर्जगतां देवि त्वमेव स्थितिकारणम् । त्वमन्ते निधनस्थानं स्वेच्छाचारा त्वमेव हि ॥
चराचराणां भूतानां वहिरन्तस्त्वमेव हि । व्याप्यव्यापकरूपेण त्वं भासि भक्तवत्सले ॥
त्वन्मायया हृतज्ञाना नष्टात्मानो विचेतसः । गतागतं प्रपद्यन्ते पापपुण्यवशात्सदा ॥
तावन्सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा । यावन्न ज्ञायते ज्ञानं चेतसा नान्वगामिनी ॥
त्वज्ज्ञानात्तु सदा युक्तः पुत्रदारगृहादिषु । रमन्ते विषयान्सर्व्वानन्ते दुःखप्रदान् ध्रुवम् ॥
त्वदाज्ञया तु देवेशि गगने सूर्यमण्डलम् । चन्द्रश्च भ्रमते नित्यं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
ब्रह्मेशविष्णुजननी ब्रह्माख्या ब्रह्मसंश्रया । व्यक्ताव्यक्ता च देवेशि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
लचला सर्वगा त्वं हि मायातीता महेश्वरि । शिवात्मा शाश्वता नित्या प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
सर्वकायनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी । अनन्ता निष्कला त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
सर्वेश्वरी सर्ववन्द्या अचिन्त्या परमात्मिका । भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
ब्रह्माणी ब्रह्मलोके त्वं वैकुण्ठे सर्वमंगला । इन्द्राणी अमरावत्यामम्बिका वरुणालये ॥
यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा । महानन्दाग्निकोणे च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
नैर्ऋत्यां रक्तदन्ता त्वं वायव्यां मृगवाहिनी । पाताले वैष्णवीरूपा प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
सुरसा त्वं मणिद्वीपे ऐशान्यां शूलधारिणी । भद्रकाली च लंकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
रामेश्वरी सेतुबंधे सिंहले देवमोहिनी । विमला त्वं च श्रीक्षेत्रे प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
कालिका त्वं कालिघट्टे कामाख्या नीलपर्वते । विरजा ओड्रदेशे त्वं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

वाराणस्यामन्नपूर्णा अयोध्यायां महेश्वरी । गयासुरी गयाधाम्नि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
भद्रकाली कुरुक्षेत्रे त्वञ्च कात्यायनी व्रजे । महामाया द्वारकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
क्षुधा त्वं सर्वजीवानां वेला च सागरस्य हि । महेश्वरी मथुरायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
रामस्य जानकी त्वञ्च शिवस्य मनमोहिनी । दक्षस्य दुहिता चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
विष्णुभक्तिप्रदा त्वं च कंसासुरविनाशिनी । रावणनाशिनी चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥
लक्ष्मीस्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः । सर्वज्वरभयं नश्येत्सर्वव्याधि निवारणम् ॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यमापदुद्धारकारणम् । त्रिसंध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्सततः नरः ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यो तथा तु सर्वसंकटात् । मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ॥
समस्तं च तथा चैकं यः पठेद्भक्तितत्परः । स सर्वदुष्करं तीर्त्वा लभते परमां गतिम् ॥
सुखदं मोक्षदं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः । स तु कोटितीर्थफलं प्राप्नोति नात्र संशयः ॥
एका देवी तु कमला यस्मिंस्तुष्टा भवेत्सदा । तस्याऽसाध्यं तु देवेशि नास्ति किंचिज्जरत्रये ॥
पठनादपि स्तोत्रस्य किं न सिद्ध्यति भूतले । तस्मात्स्तोत्रवरं प्रोक्तं सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥

॥ इति श्रीकमला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(२) ॥ श्री कमला स्तोत्रम् ॥

॥ श्री पुरन्दर उवाचः ॥

नमः कमलावासिन्यै नारायण्यै नमो नमः । कृष्णप्रियायै सततं महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥१॥
पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः । पद्मसनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः ॥२॥
सर्वसम्पत्स्वरूपिण्यै सर्वाराध्यै नमो नमः । हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमो नमः ॥३॥
कृष्णवक्षः स्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः । चन्द्रशोभायस्वरूपायै रत्नपद्मे च शोभने ॥४॥
सम्पत्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः । नमो वृद्धिस्वरूपायै वृद्धिदायै नमो नमः ॥५॥
वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्यालक्ष्मीः क्षीरसागरे । स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये ॥६॥
गृहलक्ष्मीश्च गृहिणी गेहे च गृहदेवता । सुरभिः सागरे जाता दक्षिणा यज्ञकामिनी ॥७॥
अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालया । स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्यदाने स्वधा स्मृता ॥८॥
त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा । शुद्धसत्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायणा ॥९॥
क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा शारदा शुभा । परमार्थ प्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा ॥१०॥
यया विना जगत्सर्वं भस्मीभूतमसारकम् । जीवन्मृतं च विश्वं च शश्वत्सर्व यया विना ॥११॥
सर्वेषां च परा माता सर्वबांधवरूपिणी । धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी ॥१२॥
यथा माता स्तनांधानां शिशूना शैशवे सदा । तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपतः ॥१३॥

मातृहीनः स्तनांधस्तु स च जीवति दैवतः । त्वया हीनो जनः कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम् ॥१४॥
सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मां प्रसन्ना भवाम्बिके । वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि ॥१५॥
अहं यावत्त्वया हीनो बन्धुहीनश्च भिक्षुकः । सर्वसम्पद्विहीनश्च तावदेव हरिप्रिये ॥१६॥
ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम् । प्रभावं च प्रतापं च सर्वाधिकारमेव च ॥१७॥
जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्यमेव च ।

॥श्रीनारायण उवाच:॥

इत्युक्त्वां च महेन्द्रश्च सर्वैः सुरगणैः सह ॥१८॥
प्रणमाम साश्रुनेत्रो मूर्ध्ना चैव पुनः पुनः । ब्रह्मा च शङ्करश्चैव शेषो धर्मश्च केशवः ॥१९॥
सर्वे चक्रुः परीहारं सुरार्थे च पुनः पुनः । देवेभ्यश्च वरं दत्वा पुष्पमालां मनोहराम् ॥२०॥
केशवाय ददौ लक्ष्मीः संतुष्टा सुरसंसदि । ययुर्देवाश्च संतुष्टाः स्वं स्वं स्थानं च नारद ॥२१॥
देवी ययौ हरेः स्थानं दृष्ट्वा क्षीरोदशायिनः । ययतुश्चैव स्वगृहं ब्रह्मेशानौ च नारदः ॥२२॥
दत्वा शुभाशिषं तौ च देवेभ्यः प्रीतिपूर्वकम् । इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसंध्यं य पठेन्नरः ॥२३॥
कुबेरतुल्यः स भवेद्राजराजेश्वरो महान् । पंचलक्षजपे नैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥२४॥
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं तु सन्ततम् । महासुखी च राजेन्द्रो भविष्यति न संशयः ॥२५॥

॥ इति श्रीकमला स्तोत्रम् ॥

॥ श्री महालक्ष्म्यष्टकस्तव:॥

॥इन्द्र उवाचः॥

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि । सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मंत्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि । योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे । महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः । सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् । द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् । महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥

॥ इति इन्द्रकृतः महालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णः ॥

॥ श्री कमलात्मिकोपनिषत् ॥

अथ लोकान् पर्यटन् सनत्कुमारो ह वैदेहः। पुण्यचिंताल्लोकानतीत्य वैष्णवंधाम दिव्यगणोपेतं। विद्रुमवेदिकामणि मुक्तागणार्चितं प्राप। तत्रापश्यन् महामायां पराद्धर्य वस्त्राभरणोत्तरीयां पर्यङ्कस्थांपारे चरन्तीमादि देवं भगवन्तं परमेश्वरं दृष्ट्वा च तां गद्‌गदवाक्-प्रफुल्लरोमा स्तोतुमुपचक्रमे ॥

वाचं मे दिशतु श्रीर्देवी मनो मे दिशतु वैष्णवी। ओजस्तेजो बलं दाक्ष्यं बुद्धेर्वैभवमस्तु मे। त्वत्प्रसादाद् भगवति प्रज्ञानं मे ध्रुवं भवेत्। शन्नो दिशतु श्रीर्देवी महामाया। वैष्णवी शक्तिराद्या यामासाद्य स्वयमादिदेवो भगवान् परावरज्ञस्तिधा सम्भिन्नो लोकांस्त्रीन् सृजत्यवत्यत्ति च। यद् भ्रू विक्षेपबलमापन्नो ह्यब्जयोनिस्तदितरे चामरा मुख्याः सृष्टिचक्रप्रणेतारः सम्बभूवुः या वै वरदा स्वोपायां सुप्रसन्ना सुखयति सहस्त्रपुरुषान् ये लोकाः सन्ततमानमन्ति शिरसा हृदये न च तामेकां लोकपूज्यां न ते दुर्गतिं यान्ति भूताः ।

अथ महत्या सम्वृद्ध्या साम्राज्येन पुत्रैः पौत्रैरन्वितो भूमिपृष्ठे शतं समास्त इज्याभिरिष्ट्वा देवान् पितृन मनुष्यानथ भूरिदक्षिणाभिस्त्वत्प्रसादान्महान्तो गच्छन्ति वैष्णवं लोकमपुनर्भवाय ये राजर्षयो ब्रह्मर्षयस्तेऽपि चासत्-कृत् त्वां प्रागसन्त एव सुखमामनन्ति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय किं पुनरिहादिदेवो भगवान् नारायणस्त्वामाधिदेवाखिलं करोति। किं वर्णये त्वां सहस्त्रकृत्वो नमस्ते ॥

य इमा ऋचः पठन्ति प्रातरुत्थाय भूरि दान तेषां किञ्चिदिहियावशिष्टय्यदैश्वर्यं दुर्लभं प्राणिनां हि॥

॥ इति श्रीकमलात्मिकोपनिषत् सम्पूर्णा ॥

॥ श्रीकमला अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्री शिव उवाच ॥

शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने । प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत् ॥१॥
महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी । महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्द्दिनी ॥२॥
कालरात्रिः कुहूः पूर्णानन्दाऽद्या भद्रिका निशा । जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी ॥३॥
शचीन्द्राणी शक्रनुता शंकरप्रियवल्लभा । महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही ॥४॥
वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षःस्थलस्थिता । विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा ॥५॥
शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शङ्खधारिणी । गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया ॥६॥
पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णुप्रियंकरी । गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता ॥७॥
गया गंगा च यमुना गोमती गरुडासना । गण्डकी सरयूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी ॥८॥
नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी । किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता ॥९॥
ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता । कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी ॥१०॥
श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा । इन्दिरा सिन्धुनतया मातंगी लोकमातृका ॥११॥
त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमंत्रस्वरूपिणी । तरुणी च तमोहन्त्री मंगला मंगलायना ॥१२॥

मधुकैटभमथनी शुम्भासुरविनाशिनी । निशुम्भादिहरा माता हरिशंकरपूजिता ॥१३॥
सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी । शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी ॥१४॥
गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा । त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपतारुण्यपूरिता ॥१५॥
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता । चन्द्रा शशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा ॥१६॥
सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी । इति ते कथितं देवि रमानामशताष्टकम् ॥१७॥
त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः । यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोत्यसंशयः ॥१८॥

इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो वैकुण्ठपत्न्या : परमादरेण ।
धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात् प्रयास्यति श्रीपदमन्तकाले ॥१९॥

॥ इति श्रीकमलाया अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीलक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

ॐ तामाह्वयामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम् । एह्येहि देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये ॥१॥
आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा । आयाह्यायाहि धर्मार्थकाममोक्षमये शुभे ॥२॥
एवं विधैः स्तुतिपदैः सत्यैस्सत्यार्थसंस्तुता । कनीयसी महाभागा चन्द्रेण परमात्मना ॥३॥
निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः । उत्पन्नमात्रौ तावास्तां शिवकेशवसंश्रितौ ॥४॥
सनत्कुमारस्तमृषिं समाभाष्य पुरातनम् । प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम् ॥५॥
अथेदृशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्कथम् । मुक्तिर्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥६॥

॥ सनत्कुमार उवाच ॥

पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत् । सृष्टिं नानाविधां कृत्वा पश्चाच्चिन्तामुपेयिवान् ॥७॥
किमाहाराः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यन्ति भूतले । तथैव चासान्दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत् ॥८॥
दारिद्र्यान्मरणं श्रेयस्त्विति संचिन्त्य चेतसि । क्षीरोदस्योत्तरे कूले जगाम कमलोद्भवः ॥९॥
तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरम् । ददर्श पुण्डरीकाक्षं वासुदेवं जगद्गुरुम् ॥१०॥
सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनम् । सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुम् ॥११॥
सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदविमले जले । अनन्तभोगशयनं विश्रान्तं श्रीनिकेतनम् ॥१२॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरम् । योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावास सुरेश्वरम् ॥१३॥
जगदुत्पत्ति संहारस्थिति कारणकारणम् । लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमण्डलमण्डितम् ॥१४॥
आयुधैर्देहवद्भिश्च चक्राद्यैः परिवारितम् । दुर्निरीक्ष्यं सुरैः सिद्धैर्महायोनिशतैरपि ॥१५॥
आधारं सर्वशक्तिनां परं तेजः सुदुस्सहम् । प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसम्भवः ॥१६॥
शिरस्यञ्जलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाचह । मनोवाञ्छित सिद्धिं त्वं पूरयस्य महेश्वर ॥१७॥

जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥१८॥
सर्वेश्वर जयानन्द सर्वावास परात्पर । प्रसीद मम भक्तस्य छिन्धि सन्देहजं तमः ॥१९॥
एवं स्तुतः स भगवान् ब्राह्मणाऽव्यक्तजन्मना । प्रसादाभिमुखः प्राह हरिर्विश्रान्तलोचनः ॥२०॥

॥ श्रीभगवान् उवाच ॥

हिरण्यगर्भ तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवाञ्छितम् । तद्वक्ष्यामि न सन्देहो भक्तोसि मम सुव्रत ॥२१॥
केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः । प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवन्तं जनार्दनम् ॥२२॥
चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव । परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतम् ॥२३॥
दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परम् । सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत् ॥२४॥
श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतम् । नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युतः ॥२५॥
त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः । इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः ॥२६॥

॥ श्रीभगवान् उवाच ॥

महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुरुषः प्रभोः । भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैषाऽनपायिनी ॥२७॥
एकैव वर्त्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः । सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥२८॥
सर्वैश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी । प्राणशक्तिः परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि ॥२९॥
शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता परा कला । अहं तस्याः परं नाम्नां सहस्रमिदमुत्तमम् ॥३०॥
श‍ृणुष्वावहितो भूत्वा परमैश्वर्यभूतिदम् । देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥३१॥
श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया । केवला निष्फला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा ॥३२॥
व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमा मतोद्भवा । निर्व्योमा व्योममध्यस्था पंचव्योमपदाश्रिता ॥३३॥
अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी । नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा ॥३४॥
ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा । स्नेहाभाषा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला ॥३५॥
अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी । शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी ॥३६॥
मूर्तिः सनातनी हार्द्दी निस्तरङ्गा निरामया । ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकासिनी ॥३७॥
स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पाऽर्चिः सुनिर्मला । स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता ॥३८॥
अकलङ्का निराधारा निस्सङ्कल्पा निराश्रया । असङ्कीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा ॥३९॥
अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यन्त्रा यन्त्रवाहिनी । अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा ॥४०॥
अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी । अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ॥४१॥
अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी । एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी ॥४२॥
सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिवृग्गद्धिर्ध्रुवा गतिः । ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा ॥४३॥
अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा । नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा ॥४४॥
तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्वांशुमालिनी । अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी ॥४५॥

अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा । सन्धानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी ॥४६॥
लक्ष्यीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरपूरणेन वा । अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः ॥४७॥
सत्या प्रह्वाक्रियायोग्या ह्यपर्णाह्लादिनी शिवा । सम्पूर्णाह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा ॥४८॥
रजोवत्यर्कप्रतिभाऽकर्षिणी कर्षिणी रसा । परा वसुमती देवी कान्तिः शान्तिर्मतिः कला ॥४९॥
कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः । सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा ॥५०॥
अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा । धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा ॥५१॥
शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च । प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी ॥५२॥
अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी । अनन्तरूपाऽनन्तात्मा ऽनन्तस्थाऽनन्तसम्भवा ॥५३॥
महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा । महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा ॥५४॥
प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धि गोचरा । नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी ॥५५॥
सहस्त्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका । सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी ॥५६॥
नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना । व्यक्ताऽव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता ॥५७॥
सङ्कल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा । भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता ॥५८॥
प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा । कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी ॥५९॥
निरूपोद्धिन्नसन्ताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया । महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया ॥६०॥
महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना । प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करी ॥६१॥
चिन्ता बुद्धिर्यशः प्रज्ञा शान्तिराप्तातिवर्द्धिनी । प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥६२॥
काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा । सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला ॥६३॥
वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा । हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता ॥६४॥
योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा । महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया ॥६५॥
ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा । त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥६६॥
सुतारा तारिणी तारा दुर्गा सन्तारिणी परा । सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा ॥६७॥
गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्यासुशोभिता । अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी ॥६८॥
आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका । गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा ॥६९॥
विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा । सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी ॥७०॥
इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा दया मतिः । श्रुतिर्मेधा धृति ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ॥७१॥
अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा । प्रतिज्ञासन्ततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी ॥७२॥
स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा । सन्ध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती ॥७३॥
कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया । सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी ॥७४॥

सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना । हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा ॥७५॥
चन्द्रा हिरणमयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा । त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वर वरार्चिता ॥७६॥
त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी । पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता ॥७७॥
पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता । विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा ॥७८॥
विचित्रमाल्यगंधाढ्या विचित्रायुधवाहना । महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता ॥७९॥
कालसङ्कर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणी कला । जगत्सम्पूरणी विश्वा महावैभवभूषणा ॥८०॥
वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता । नृसिंह भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ॥८१॥
ऐन्द्री कामधेनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा । दृष्टा काम्या विश्वशक्ति र्बीजगत्यात्मदर्शना ॥८२॥
गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना । महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा ॥८३॥
युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला । त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी ॥८४॥
महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना । शङ्खिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचरेश्वरी ॥८५॥
भद्रकाली चैव वीरा कौमारी भवमालिनी । कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका ॥८६॥
वालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका । अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना ॥८७॥
वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा । महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया ॥८८॥
उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी । सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया ॥८९॥
सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी । हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा ॥९०॥
सूर्या हिरण्यप्रकट सदृशी हेममालिनी । पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा ॥९१॥
महाधना च या शृङ्गी कार्द्दमी कम्बुकन्धरा । आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा ॥९२॥
वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा । कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी ॥९३॥
योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी । कंसविद्रावणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा ॥९४॥
कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया । विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥९५॥
बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता । घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना ॥९६॥
महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना । सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी ॥९७॥
आर्या यशोदा सुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा । दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी ॥९८॥
भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी । क्षीराब्धितनया पद्म कमला धरणीधरा ॥९९॥
रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी । प्रज्ञाधाराऽमिताबुद्धिर्वेद माता यशोवती ॥१००॥
समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला । अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरागतिः ॥१०१॥
दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला । अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता ॥१०२॥
सुदीप्ता लेलिहाना च कराला विश्वपूरका । विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया ॥१०३॥

उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी विन्दुमालिनी । क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा ॥१०४॥
हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा । आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया ॥१०५॥
मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा । सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमंगला ॥१०६॥
श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना । हंसा हीनकरी हंसी हृद्या हृत्कमलालया ॥१०७॥
सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायते क्षणा । सावित्री सत्यसंकल्पा कामदा कामकामिनी ॥१०८॥
दर्शनीया दृशा दश्या स्पृश्या सेव्या वराङ्गना । भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना ॥१०९॥
आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी । श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्य भूतिदा ॥११०॥
अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी । निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता ॥१११॥
बला बलाधिका देवी गौमती गोकुलालया । तोषणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना ॥११२॥
उद्यानगरद्वारहर्म्यो - पवनवासिनी । कूष्माण्डीदारुणा चण्डा किराती नन्दनालया ॥११३॥
कालायना कालगम्याऽभयदा भयनाशिनी । सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्द्दिनी ॥११४॥
जगन्माता भयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा । काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा ॥११५॥
धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी । गान्धर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलानना ॥११६॥
इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया । आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया ॥११७॥
जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना । मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता ॥११८॥
व्योमलक्ष्मी र्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजोज्वला । रसलक्ष्मीर्जगद्यो निर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया ॥११९॥
श्रवणा श्रावणा नेत्रा रसनाप्राणचारिणी । विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना ॥१२०॥
वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्द्धिनी । अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥१२१॥
गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती । सर्वमंगलमाङ्गल्या सर्वकामसमृद्धिदा ॥१२२॥
सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता । सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः ॥१२३॥
अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तुदेवता । मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना ॥१२४॥
अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा । राजश्रीरूपसहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता ॥१२५॥
जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम् । सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया ॥१२६॥
धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी । कद्रूर्द्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी ॥१२७॥
महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा । सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी ॥१२८॥
तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती । रत्ना रत्नावलीभूता शतधामा शतापहा ॥१२९॥
त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्द्दिनी घोषवर्जिता । साध्याऽदितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगाङ्कगा ॥१३०॥
चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नाकराश्रया । हिरण्यरजतद्वन्द्वा शङ्खभद्रासनस्थिता ॥१३१॥
गोमूत्र गोमयक्षीरदधि सर्पिर्जलाश्रया । मरीचिश्चीरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा ॥१३२॥

सुसूक्ष्मा निर्वृतिस्थूला निवृत्तारातिरेव च । मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा ॥१३३॥
दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी । भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला ॥१३४॥
साङ्गा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः । कपिला नीररक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिङ्गिनी ॥१३५॥
अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा । सम्पूर्णमण्डला पूषा स्त्रांसिनी सुमनोहरा ॥१३६॥
जया पुष्टिकरीच्छाया मानसा हृदयोज्ज्वला । सुवर्णकारिणी श्रेष्ठा मृतसंजीवनी रणे ॥१३७॥
विशल्यकरणी शुभ्रा सन्धिनी परमौषधिः । ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा ॥१३८॥
विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका । नित्योदिता नित्यदृष्टा नित्यकामकरीषिणी ॥१३९॥
पद्माङ्का वज्रजिह्वा व वक्रदण्डा विभासिनी । विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी ॥१४०॥
मानिनी मंगला मान्या मानिनी मानदायिनी । विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥१४१॥
हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी । प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोभिज्ञा वदन्मतिः ॥१४२॥
यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धिनी । अमृताधारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची ॥१४३॥
संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यामृता प्रभा । आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता ॥१४४॥
सर्वार्थसाधनकरी धानुर्द्धारणिकामला । करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया ॥१४५॥
सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी । माला कांचनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा ॥१४६॥
प्रक्रियापरमा भोक्त्री क्षोभिका च सुखोदया । विजृम्भणा च वज्राख्या शृङ्खला कमलेक्षणा ॥१४७॥
जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा । मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा ॥१४८॥
धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा । धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता ॥१४९॥
सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा । सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्य शक्तिर्गुहालया ॥१५०॥
हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्रसुधारिणी । व्यौमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मग्नमन्मयी ॥१५१॥
गंगा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती । तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी ॥१५२॥
बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी । ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा ॥१५३॥
काम्यचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी । हिमशैलेन्द्र संकाशा गजेन्द्रवरवाहना ॥१५४॥
अशेषसुखसौभाग्य सम्पदां योनिरुत्तमा । सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया ॥१५५॥
सर्वाङ्गयोनिः साऽव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी । विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते ॥१५६॥
परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया । सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम ॥१५७॥
इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम् । परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागतः ॥१५८॥
यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणुयाद्वापि पद्मज । शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥१५९॥
श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः । भोगैश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम् ॥१६०॥
तत्पार्श्वस्थांश्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधर प्रियाम् । ततो नामसहस्रैण तोषयेत्परमेश्वरीम् ॥१६१॥

नानारत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत् । प्रसादाभिमुखी लक्ष्मीः सर्वं तस्मै प्रयच्छति ॥१६२॥
यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा । कारणत्वं न तिष्ठन्ति जगत्यस्मिंश्चराचरे ॥१६३॥
तस्मात्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा । सुप्रीता शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि ॥१६४॥
एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः । तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा ॥१६५॥
तथैवैका परा शक्तिः श्रीस्तस्य करुणाश्रया । ज्ञानादिषड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा ॥१६६॥
एकैकशक्तिः श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्त्तते । परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी ॥१६७॥
अनन्तनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका । जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥१६८॥
तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी । सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् ॥१६९॥
योयो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः । याया तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥१७०॥
प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते । अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः ॥१७१॥
अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः । महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम् ॥१७२॥
ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मी संशुद्धचेतसः । पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठं स्तोत्रमिदं क्रमात् ॥१७३॥
दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् । सकामानाञ्च फलदामकामानां च मोक्षदाम् ॥१७४॥
पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम् । महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः ॥१७५॥
करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना, क्वचिद्मलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः ।
क्वचिदपि दयिताङ्गे चामरव्यग्रहस्ता, क्वचिदपि सृंणिपाशं विभ्रती हेमकान्तिः ॥१७६॥

॥इति श्रीब्रह्मपुराणे काश्मीर वर्णने हिरण्यगर्भ हृदये सर्वकामप्रदायकं पुरुषोत्तम प्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ इति श्री कमला तंत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ मिश्र तंत्रम् ॥

॥ श्रीसंग्राम विजया विद्या मालामंत्र ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीसंग्राम विजया विद्यायाः श्रीईश्वर ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। श्रीचामुण्डा देवता सर्व कार्येषु जयार्थे, शत्रु नाशार्थे, वा जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यास :- **शिरसि श्रीईश्वर ऋषये नमः। मुखे उष्णिक् छन्दसे नमः। हृदि श्रीचामुण्डा देवतायै नमः। सर्वाङ्गे सर्व कार्येषु जयार्थे (शत्रु नाशार्थे वा) जपे विनियोगाय नमः।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रां	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ ह्रीं	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ ह्रूँ	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्**
ॐ ह्रैं	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुम्**
ॐ ह्रौं	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ ह्रः	**करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्**

॥ ध्यानम् ॥

अष्टाविंश भुजा चण्डी असिखेटक धृक्करौ। गदामुण्ड युतौ चान्यौ शरचाप धरौ परौ ॥ मुष्टिमुद्गर संयुक्तौ शङ्ख खड्ग युतौ परौ। ध्वज वज्रयुतौ चान्यौ सचक्रपरशुपरौ ॥ डमरु दर्पणाढ्यौ च शक्तिकुन्तधरौ परौ। हलेन मुसलेनाढ्यो पाश तोमरसंयुतौ ॥ ढक्कापणव संयुक्तौ अभयस्वस्ति कान्वितौ। तर्जनी च वरमुद्रा युतां ध्यायेच्छ्रीचामुण्डाम् ॥

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य मालामन्त्रं जपेत्। यथा -

॥ श्रीईश्वर उवाच ॥

संग्राम विजयां विद्या **पदमालां वदाम्यहम्।**

ॐ ह्रीं चामुण्डे, श्मशान वासिनि, खट्वाङ्ग कपाल हस्ते, महाप्रेत समारूढे, महाविमान समाकुले, कालरात्रि महागणपरिवृते, महामुखे, बहुभुजे, घण्टा डमरु किङ्किणी अट्टाट्टहासे। किलि किलि ॐ हूँ फट्। दंष्ट्रा घोरान्धकारिणि

नाद शब्द बहुले गजचर्म प्रावृत शरीरे मांस दिग्धे लेलिहानोग्र जिह्वे महाराक्षसि रौद्रदंष्ट्रा कराले भीमा अट्टाट्टहासे स्फुरद् विद्युत् प्रभे। चल चल ॐ चकोरनेत्रे। चिलि चिलि। ॐ भीं भ्रकुटी मुखि हुङ्कार भय त्रासनि कपाल मालावेष्टित जटामुकुट शशाङ्क धारिणि अट्टाटहासे किलि किलि ॐ हूं फट् दंष्ट्रा घोरान्धकारिणि सर्वविघ्न विनाशिनि इदं कर्म साधय साधय। ॐ शीघ्रं कुरु कुरु ॐ फट्। ॐ अंकुशेन शमय प्रवेशय। ॐ रङ्ग रङ्ग कम्पय कम्पय। ॐ चालय। ॐ रुधिरमांस मद्य प्रिये। हन हन ॐ कुट्ट कुट्ट ॐ छिन्द, ॐ मारय, ॐ अनुक्रमय, ॐ वज्र शरीरं पातय। ॐ त्रैलोक्य गतं दुष्टमदुष्टं वा गृहीतम गृहीतंवा आवेशय। ॐ नृत्य ॐ वन्द। ॐ कोटराक्षि ऊर्ध्वकेशि उलूकवदने करङ्किणि ॐ करङ्कमाला धारिणि दह ॐ पच पच। ॐ गृह्ण। ॐ मण्डलमध्ये प्रवेशय। ॐ किं विलम्बसि? ब्रह्मसत्येन विष्णुसत्येन रुद्रसत्येन ऋषिसत्येन आवेशय। ॐ किलि किलि ॐ खिलि खिलि विलि विलि। ॐ विकृतरूप धारिणि कृष्णभुजङ्ग वेष्टित शरीरे सर्वग्रहा वेशनि प्रलम्बौष्ठिनि भ्रू भङ्गलग्रनासिके विकट मुखि कपिल जटे ब्राह्मि भञ्ज। ॐ ज्वालामुखि। स्वन ॐ पातय। ॐ रक्ताक्षि। घूर्णय भूमिं पातय। ॐ शिरो गृह्ण चक्षुर्मीलय। ॐ हस्तपादौ गृह्ण मुद्रां स्फोटय। ॐ फट् ॐ विदारय, ॐ त्रिशूलेन छेदय छेदय। ॐ वज्रेण हन हन। ॐ दण्डेन ताड़य ताडय। ॐ चक्रेण छेदय छेदय। ॐ शक्त्या भेदय। ॐ दंष्ट्रया कीलय। ॐ कर्णिकया पाटय। ॐ अंकुशेन गृह्ण। ॐ शिरोऽक्षि ज्वरमैकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं डाकिनी स्कन्द ग्रहान् मुञ्च मुञ्च। ॐ पच ॐ उत्सादय ॐ भूमिं पातय ॐ गृह्ण। ॐ ब्रह्माणि! एहि ॐ माहेश्वरि! एहि ॐ कौमारि! एहि ॐ वैष्णवि एहि ॐ वाराहि एहि ॐ एन्द्रि एहि ॐ चामुण्डे एहि, ॐ रेवति ! एहि ॐ आकाश रेवति ! एहि ॐ हिमवच्चारिणि ! एहि ॐ रुरु मर्दिनि असुर क्षयङ्करि आकाशगामिनि! पाशेन बन्ध बन्ध अंकुशेन कट कट समयं तिष्ठ। ॐ मण्डलं प्रवेशय। ॐ गृह्ण ॐ मुखं बन्ध ॐ चक्षुर्बन्ध हस्त पादौ च बन्ध दुष्ट ग्रहान् सर्वान् बन्ध ॐ दिशो बन्ध ॐ विदिशो बन्ध अधस्ताद् बन्ध ऊर्ध्वं बन्ध। ॐ भस्मना पानीयेन वा मृत्तिकया सर्षपैर्वा सर्वान् आवेशय। ॐ पातय। ॐ चामुण्डे ! किलि किलि। ॐ विच्चे हुँ फट् स्वाहा॥

पदमाला जयाख्येयं सर्वकर्म प्रसाधिका ।
सर्वदा होम जप्याद्यैः पाठाद्यैश्च रणे जयः ॥

विधि :- ग्रह पीड़ा, सिर और आँख के रोगों व ज्वरों से ग्रस्त व्यक्ति को ३, ५ या ७ बार अभिमन्त्रित जल के छींटे दें अथवा भस्म, मिट्टी या सरसों मारें। शत्रुविजय के लिये अभिमन्त्रि लाल सरसों को शत्रु के घर में फेंके। अभिचार नाश के लिए पाठ करें। १०००० पाठ का पुरश्चरण करने से ब्रह्मास्त्रवत् कार्य सिद्धि प्रदान करता है। व अभिष्ट सिद्धि के लिए १००० पाठ करें।

॥ इति श्री आदि अग्निपुराणे युद्धजयार्णवे श्रीसंग्राम विजया विद्या माला मन्त्रम् ॥

॥ अथ श्रीत्रिशिरा देवी विधानम् ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्री शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्र मन्त्रस्य ज्वलत् पावकः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशत्रुविध्वंसिनी देवता, मम शत्रुं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **ज्वलत् पावक ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखेः। श्रीशत्रुविध्वंसिनी देवतायै नमः हृदि। श्री शत्रुविध्वंसिनी देवता प्रसादात् मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

मन्त्रः	करन्यास	मंत्र	षड्ङ्गन्यास
ॐ शत्रुविध्वंसिन्यै	अंगुष्ठाभ्यां नमः	घोर दंष्ट्रायै	हृदयाय नमः
ॐ रौद्रायै	तर्जनीभ्यां नमः।	त्रिशूलिन्यै	शिरसे स्वाहा
ॐ त्रिशिरसे	मध्यमाभ्यां नमः।	दिगम्बर्यै	शिखायै वषट्
ॐ रक्त लोचनायै	अनामिकाभ्यां नमः।	मुक्तकेश्यै	कवचाय हुँ
ॐ अग्निर्ज्वालायै	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	रक्तपाण्यै	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ रौद्रमुख्यै	करतलकरपृष्ठाभ्यां नम।	महोदर्यै	अस्त्राय फट्।

'फट्' से ताल-त्रय दें और 'ॐ रौद्रमुख्यै नमः' से दशों दिशाओं में चुटकी बजाकर दिग्बन्धन करें।

॥ ध्यानम् ॥

रक्ताङ्गीं शिव वाहनां त्रिशिरसां रौद्री महाभैरवीम्
धूम्राक्षीं भवनाशिनीं घननिभां नीलालंकार कृताम्।
खड्गं शूलं त्रिशूलं वराभय युतां ध्यात्वा कृताङ्गीं
महासर्वाङ्गीं त्रिजटां महानलनिभां ध्यायेत् पिनाकीं च ताम्।

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ शत्रुविध्वंसिनी रौद्रीत्रिशिरा रक्तलोचना। अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी घोरदंष्ट्रा त्रिशूलिनी ॥
दिगम्बरी मुक्तकेशी रक्तपाणिर्महोदरी। सर्वदा विप्लवे घोरे, शीघ्रं वश्यकरी द्विषाम् ॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं स्तवं जपेन्नित्यं, विजयं शत्रुनाशनम्। सहस्त्रं त्रिदिनं कुर्यात्, कार्य सिद्धिर्न संशयः ॥
गुग्गुलं चन्दनं सर्पिः, होमयेत् सर्पिषाऽथवा। विवादे वाद संग्रामे, विजयं भवति ध्रुवम् ॥

शापोद्धार मन्त्र - 'ॐ श्रीं ह्लीं क्लीं क्रों ऐं लोभाय मोहाय उत्कीलय स्वाहा'

अग्निमंत्र - 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शत्रुभस्मं कुरु कुरु ॐ हूँ फट् स्वाहा।''

शत्रुविध्वंसिनी मंत्र - ॐ नमो भगवति चामुण्डे रक्तवाससे अप्रतिहतरूप पराक्रमे अमुकं वधाय विचेतसे स्वाहा।

॥ नन्दजा स्तोत्राष्टकम् ॥

नवीनार्ककोटिप्रभा भासयन्ती। चतुर्भिः करैः शङ्खचक्रे दधन्ती।
वरं चाभयं वैभवं भावयन्ती। जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥१॥
विधेर्दुर्लिपिं मस्तके खण्डयन्ती। सदा साधकानां सुखं चिन्तयन्ती।
सुभाग्याक्षरै - र्भालमामण्डयन्ती। जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥२॥
दरिद्रं दहन्ती नरेन्द्रं वहन्ती। कलत्रं सुपुत्रं सुपौत्रं वहन्ती।
हयं वा गजं वाहनं संददन्ती। जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥३॥

बलिष्ठं रिपूणामरिष्टं ग्रहाणां । विनाशैककर्त्री सुखैकप्रदात्री ।
जडानां च जाड्यं सदा ह्रासयन्ती । जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥४॥

बलं बाधकानामलं बाधयन्ती । छलं छद्मिनां सर्वदा मर्दयन्ती ।
शठानां हठं हाटके खण्डयन्ती । जगत्यत्र विन्धेश्वरी क्रीडयन्ती ॥५॥

शवानां करौघैः कटौ क्षुद्रघण्टी । कृता व्याघ्रचर्म्माम्बराढ्यां हसन्ती ।
निजानां जनानाम - शेषाघहन्ती । जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥६॥

सदा षोडशाब्दा नवीनस्तनीयम् । ममान्तः स्फुरत्वीश जायार्द्रचित्तैः ।
कटाक्षैः सुखानां समूहं ददन्ती । जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥७॥

परब्रह्मविज्ञान बोधैककर्त्री । जरामृत्यु संसार धारोपकर्त्री ।
त्रिभिर्नेत्र वर्गैस्सुधा प्लावयन्ती । जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥८॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं नन्दजायाः स्तवं धन्यजन्मा । पठेदष्टकं नष्टसन्देहवृत्ति ।
स भाग्याधिको जायते लोकमध्ये । पुनर्नैति जन्मान्तरं तत्प्रसादात् ॥९॥

॥ श्री कामाख्या स्तोत्रम् ॥

सर्वमन्त्राक्षर मयीं कुमारीरूप - धारिणीम् । निर्गुणां योनिरूपां त्वां ज्ञानमूर्ते! नमाम्यहम् ॥१॥
सर्वभूतान्तरात्मा च देवानां दैवतं पराम् । ज्ञानगम्यां निराकारां कामाख्यां प्रणमाम्यहम् ॥२॥
निर्विकारां चिदानन्दां निर्मलां ज्योतिरूपां च । विश्वगर्भां नमो योनिं कामाख्यां प्रणमाम्यहम् ॥३॥
आदिमध्यान्तहीनां च गीयमाना सदाशिवे । कोटिनीलाम्बरामाद्यां कामाख्यां प्रणमाम्यहम् ॥४॥
सर्वविद्या स्वरूपां त्वां मातृणां रूपधारिणीम् । बालरूपां भद्रविद्यां कामाख्यां प्रणमाम्यहम् ॥५॥
भोगदात्रीं भोगकर्त्रीं भोगरतां भोगप्रियाम् । ज्ञानदात्रीं चिन्मयां त्वां वामानन्द प्रदायिनीम् ॥६॥
विश्वकर्त्रीं विश्वहर्त्रीं विश्वसंसार पालिकाम् । कामरूपां कामदात्रीं कामाख्यायै नमो नमः ॥७॥
विदेहेन संस्थितायै पूज्य देहायै ते नमः । कुलबालां पराविद्यां कामाख्यां प्रणमाम्यहम् ॥८॥
सदैकरूप संस्थितां चिद्रूपायै नमो नमः । स्वबिम्बभावेन विलासयुक्तायै नमो नमः ॥९॥
योगशान्तिप्रदायै त्वं आत्मतत्त्वप्रकाशिनी । त्वां विहाय कथं देवि! भवति शान्तमानसः ॥१०॥
अतएव महादेवि! नित्यं रक्ष सनातनि । देववृन्दसमायुक्तां कामाख्यां प्रणमाम्यहम् ॥११॥

॥ इति श्री कामाख्या स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री शीतला कवचम् ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्र विशारद! शीतला कवचं ब्रूहि सर्वभूतोपकारकम् ॥१॥
वद शीघ्रं महादेव! कृपां कुरु ममोपरि । इति देव्याः वचं श्रुत्वा क्षणं ध्यात्वा महेश्वरः ॥२॥
उवाच वचनं प्रीत्या तत् शृणुष्व मम प्रिये! शीतला कवचं दिव्यं शृणु मत्प्राण - वल्लभे ॥३॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शीतला - सार सर्वस्वं कवचं मंत्र गर्भितं। कवचं विना जपेत् यो वै नैव सिद्ध्यन्ति कलौ ॥४॥
धारणादस्य मन्त्रस्य सर्वरक्षाकरं नृणाम् । कवचस्यास्य देवेशि! ऋषिर्प्रोक्तो महेश्वरः ।
छन्दोऽनुष्टुप् कथितं च देवता शीतला स्मृता । लक्ष्मी बीजं रमा शक्तिः तारं कीलकमीरितम् ॥५॥
लताविस्फोटकादीनि शान्त्यर्थे परिकीर्त्तितः । विनियोगः प्रकुर्वीत पठेदेकाग्र मानसः ॥६॥

विनियोग:- ॐ अस्य शीतला कवचस्य श्री महेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री शीतला भगवती देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं , लताविस्फोटकादि शान्त्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास:- श्री महेश्वर ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीशीतला भगवती देवतायै नमः हृदये, श्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः नाभौ, ॐ कीलकाय नमः पादयोः, लताविस्फोटकादि शान्त्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यत्सूर्य - निभां नवेन्दुमुकुटां सूर्याग्नि - नेत्रोज्ज्वलाम्,
नाना गन्ध विलेपनां मृदुतनुं दिव्याम्बरालंकृताम् ।
दोर्भ्यां सन्दधतीं वराभय - युगं वाहे स्थितां रासभे,
भक्ताभीष्ट फलप्रदां भगवतीं श्रीशीतलां त्वां भजे ॥

॥ अथ कवच पाठ ॥

ॐ शीतला [illegible] मे प्राणे रुनुकी पातु चापाने । समाने झुनुकी पातु उदाने पातु मन्दला ॥१॥
व्याने च सेढला [illegible]र्मे शङ्करी तथा। पातु भामिन्द्रियान् सर्वान् श्रीदुर्गा विन्ध्यवासिनी ॥२॥
ॐ मम पातु [illegible]दुर्गा कमला पातु मस्तकम् । ह्रीं मे पातु भ्रुवोर्मध्ये भवानी भुवनेश्वरी ।
[illegible] मे मधुमती देवी ॐकारं भृकुटी - द्वयम् ॥३॥
नासिकां शार[illegible] पातु तमसा वर्त्म संयुतम् । नेत्रौ ज्वालामुखी पातु भीषणा पातु श्रुतिर्मे ॥४॥
कपोलौ कालिका पातु समुखी पातु चोष्ठयोः । सन्ध्ययोः त्रिपुरा पातु दन्ते च रक्तदन्तिका ॥५॥
जिह्वां सरस्वती पातु तालुके च वाग् वादिनी । कण्ठे पातु तु मातङ्गी ग्रीवायां भद्रकालिका ॥६॥
स्कन्धौ च पातु मे छिन्ना ककुभे स्कन्द - मातरः । बाहु युग्मौ च मे पातु श्रीदेवी बगलामुखी ॥७॥
करौ मे भैरवी पातु पृष्ठे पातु धनुर्धरी । वक्षःस्थले च मे पातु दुर्गा महिषमर्दिनी ॥८॥

हृदये ललिता पातु कुक्षौ पातु महेश्वरी । पार्श्वौ च गिरिजा पातु चान्नपूर्णा तु चोदरम् ॥९॥
नाभिं नारायणी पातु कटिं मे सर्वमङ्गला । जङ्घयोर्मे सदा पातु देवी कात्यायनी पुरा ॥१०॥
ब्रह्माणी शिश्नं पातु वृषणं पातु कपालिनी । गुह्यं गुह्येश्वरी पातु जानुनोर्जगदीश्वरी ॥११॥
पातु गुल्फौ तु कौमारी पाद पृष्ठं तु वैष्णवी । वाराही पातु पादाग्रे ऐन्द्राणी सर्वमर्मसु ॥१२॥
मार्गे रक्षतु चामुण्डा वने तु वनवासिनी । जले च विजया रक्षेत् वह्नौ मे चापराजिता ॥१३॥
रणे क्षेमङ्करी रक्षेत् सर्वत्र सर्वमंगला । भवानी पातु बन्धून् मे भार्यां रक्षतु चाम्बिका ॥१४॥
पुत्रान् रक्षतु माहेन्द्री कन्यकां पातु शाम्भवी । गृहेषु सर्वकल्याणी पातु नित्यं महेश्वरी ॥१५॥
पूर्वे कादम्बरी पातु वह्नौ शुक्लेश्वरी तथा । दक्षिणे करालिनी पातु प्रेतारूढा तु नैर्ऋते ॥१६॥
पाश हस्ता पश्चिमे पातु वायव्ये मृगवाहिनी । पातु मे चोत्तरे देवी यक्षिणी सिंहवाहिनी ।
ईशाने शूलिनी पातु ऊर्ध्वे च खगगामिनी ॥१७॥
अधस्तात् वैष्णवी पातु सर्वत्र नारसिंहिका । प्रभाते सुन्दरी पातु मध्याह्ने जगदम्बिका ॥१८॥
सायाह्ने चण्डिका पातु निशीथेऽत्र निशाचरी । निशान्ते खेचरी पातु सर्वदा दिव्य - योगिनी ॥१९॥
वायौ मां पातु वेताली वाहने वज्रधारिणी । सिंहा सिंहासने पातु शय्यां च भगमालिनी ॥२०॥
सर्वरोगेषु मां पातु कालरात्रि स्वरूपिणी । यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु राक्षसे डाकिनी तथा ॥२१॥
भूत प्रेत पिशाचेभ्यो हाकिनी पातु मां सदा । मन्त्रं मन्त्राभिचारेषु शाकिनी पातु मां सदा ॥२२॥
सर्वत्र सर्वदा पातु श्रीदेवी गिरिजात्मजा । इत्येतत् कथितं गुह्यं शीतला कवचमुत्तमम् ॥२३॥

॥ फलश्रुति ॥

ब्रह्मराक्षस वेतालाः कूष्माण्डा दानवादयः । विस्फोटक भयं नास्ति पठनाद् धारणाद्यदि ॥१॥
अष्टसिद्धिप्रदं नित्यं धारणात् कवचस्य तु । सहस्त्र पठनात् सिद्धिः सर्वकार्यार्थ सिद्धिदम् ॥२॥
तदर्धं वा तदर्धं वा पठेदेकाग्र मानसः । अश्वमेघ सहस्त्रस्य फलमाप्नोति मानवः ॥३॥
शीतलाग्रे पठेद् यो वै देवी भक्तैक मानसः । शीतला रक्षयेन्नित्यं भयं क्वापि न जायते ॥४॥
घटे वा स्थापयेद् देवीं दीपं प्रज्वाल्य यत्नतः । पूजयेत् जगतां धात्रीं नाना गन्धोपहारकैः ॥५॥
अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने । अन्य शिष्याय दुष्टाय निन्दकाय दुरार्थिने ॥६॥
न दद्यादिदं वर्म तु प्रमत्तालाप शालिने । दीक्षिताय कुलीनाय गुरु भक्तिरताय च ॥७॥
शान्ताय कुल - शाक्ताय शान्ताय कुल - कौलिने । दातव्यं तस्य देवेशि! कुलवागीश्वरो भवेत् ॥८॥
इदं रहस्यं परमं शीतला कवचमुत्तमम् । गोप्यं गुह्यतमं दिव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥९॥

मूल मंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं ॐ

॥ इति श्रीईश्वर पार्वती संवादे शक्तियामले शीतला कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री वाराही स्तोत्रम् ॥

वाराही देवी के अन्य प्रयोग पुस्तक के द्वितीय खण्ड 'उत्तरार्ध खण्ड' में दिये गये हैं।

मंत्र - **ॐ एहि परमेश्वरी स्वाहा।**

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीवाराही मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सकलवशीकरणार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास : - **श्रीब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, सकलवशीकरणार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास : - **ॐ एहि अंगुष्ठाभ्यां नमः। परमेश्वरी तर्जनीभ्यां नमः। स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एहि अनामिकाभ्यां नमः। परमेश्वरी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

अङ्गन्यास :- **ॐ एहि हृदयाय नमः। परमेश्वरी शिरसे स्वाहा। स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ एहि कवचाय हुं। परमेश्वरी नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

नीलाञ्जन गिरीन्द्राभ्यां, नानारत्नविभूषिताम्।
अश्वारूढां च वरदां, पाशांकुशधरां शुभाम्।
भीमामुग्रां महादेवीं, खड्गखेटकधारिणीम्।
चतुर्भुजां तीक्ष्णदंष्ट्रां, दंष्ट्राग्रस्थ वसुन्धराम्।
जगत्संहारकारिणीं, साधकस्य वरप्रदाम्॥

इस प्रकार 'ध्यान' कर मानसपूजा करे। भगवती वाराही का मन ही मन चिन्तन करते हुए स्तोत्रपाठ करे। यथा-

॥ **स्तोत्रपाठ** ॥

अश्वारूढे रक्तवर्णे, स्मितसौम्यमुखाम्बुजे! राजस्त्रीसर्वजन्तूनां, वशीकरणनायिके॥ वशीकरणकार्यार्थं, पुरा देवेन निर्मिता। तस्मादवश्यं वाराहि, सर्वान् मे वशमानय॥ अन्तर्बहिश्च मनसि, व्यापारेषु सभासु च। यथा मामेव स्मरति, तथा देवि! वशं कुरु। चामरां दोलिकां छत्रं, राजचिह्नानि यच्छति। अभीष्टसम्पदो राज्यं, रामाराज्यमथापि वा। मन्मथ स्मरद्रामा यान्ति रन्तु मया स्महस्त्रीरत्नेषु महत् प्रेम तथा जनय कामदे! मृगपक्ष्यादयः सर्वे, दृष्ट्या मां प्रेमवीक्षिताः। अनुगच्छन्तु मामेव, त्वत्प्रसादात्तथा कुरु, वशीकरणकार्यार्थं यत्र कुत्र प्रयुज्यते। सम्मोहनास्त्रं वर्षित्वा तत्, कार्यं तत्र वर्षय वशीकरणबालास्त्रं भक्ता वामनिवारितं तस्मादवश्यं वाराहि! जगत्सर्वं वशं कुरु। वश्यस्तोत्रमिदं देव्या, त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः। सोऽपि तत्तत्क्षणाद् देव्या, रामराज्यमवाप्नुयात्।

॥ इति श्रीवशीकरण वाराही स्तोत्रम् ॥

॥ अथ नव कुमारी पूजा लघु प्रयोग: ॥

नव चण्डी या शतचण्डी में कुमारी पूजा अवश्य करें पूर्व दिन उनको निमन्त्रण देवें। चौकी आसन पर बैठाकर उनका पादप्रक्षालन गंधोपचार कर प्रार्थना करे।

अलग-अलग कामना हेतु अलग अलग जाति की कन्या की पूजा करें। शांति हेतु ब्राह्मण कन्या, विजय हेतु क्षत्रिय कन्या, अर्थप्राप्ति हेतु वैश्यकन्या, वंशवृद्धि हेतु गोपकन्या, वश्यलाभ हेतु वैश्या या नटी की कन्या, अभिचार कर्म हेतु शूद्र कन्या की पूजा करें।

पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवत्कुमारीपूजार्थं त्वं मया निमंत्रितासि मां कृतार्थयेति निमंत्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कार्याकेशं परिष्कृत्य ललाटे सिंदूरंनयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गे चंदनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पूजागृहमानीय पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य तांबूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वामुकसिद्ध्यर्थं श्रीदुर्गादेवी प्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य न्यासं कुर्यात्।

षड्ङ्गन्यास :- **ॐ क्लां कुमारिके हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ क्लीं कुमारिके शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ क्लैं कुमारिके कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ क्लौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ क्लः कुमारिके अस्त्राय फट् ॥६॥** इति षडंगं विन्यस्य एवमेव विधिना करांगन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ बालरूपां च त्रैलोक्यसुंदरीं वरवर्णिनीम्। नानालंकारनम्राङ्गीं भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥१॥
चारुहास्यां महानंदहृदयां शुभदां शुभाम्। शंखकुंदेन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥२॥

एवं त्वात्मशिरसि पुष्पं दत्त्वामहयेत्॥ "मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्या-मावाहयाम्यहम् ॥१॥" इत्यावाह्य **ॐ ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यम् एवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिद-मनुलेपनमेतेऽक्षताः** एतानि पुष्पाणि एष धूपः एष दीपः इदं नैवेद्यमिदं तांबूलमिति पूजयित्वा उपर्युक्तषडंगन्यासमंत्रेण षडंगं पूजयेत्।

नवकन्याओं का एक एक नामावलि से पूजन करें। नवदुर्गाओं के नामों **शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी ..... इत्यादि नामों से** भी पूजन कर सकते हैं।

ततः ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिके पुष्पांजलिं समर्पयामि। इति पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा नवनामभिः पूजयेत्। तद्यथा-**ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं चंडिकायै नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं शांकर्यै नमः ॥७॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ॥९॥** इति नामभिः संपूज्य मूलेन पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत्। तत्र मन्त्रः।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥१॥
त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्। त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥२॥
कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्। कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥
अणिमादिगुणोपेता मकारा दिस्वरात्मिकाम्। शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥४॥

कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् । कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥५॥
चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुंडविनाशिनीम् । प्रणमामि च देवेशीं चंडिकां पूजयाम्यहम् ॥६॥
सुखानन्दकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वभूतात्मिकां देवीं शांकरीं पूजयाम्यहम् ॥७॥
दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् । पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥८॥
सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्य - दायिनीम् । सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥९॥

इति प्रणम्य तदंगे श्रीदुर्गामावाह्य षोडशनामभिः पूजयेत्।

तद्यथा- **ॐ ह्रीं उमायै नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं शूलधारिण्यै नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं खेचर्यै नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं चत्वरवासिन्यै नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं सुगंधनासिकायै नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं सर्वधारिण्यै नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं चंडिकायै नमः ॥७॥ ॐ ह्रीं सौभद्रिकायै नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं अशोकवासिन्यै नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं वज्रधारिण्यै नमः ॥१०॥ ॐ ह्रीं ललितायै नमः ॥११॥ ॐ ह्रीं सिंहवाहिन्यै नमः ॥१२॥ ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः ॥१३॥ ॐ ह्रीं विंध्यवासिन्यै नमः ॥१४॥ ॐ ह्रीं महाबलायै नमः ॥१५॥ ॐ ह्रीं भूतलवासिन्यै नमः ॥१६॥**

॥ इति संपूज्य साष्टांगं प्रणमेत्। आदर सहित नवकन्याओं को भोजन करायें। द्रव्य दक्षिणा फल वस्त्रालंकार अर्पण करें।

॥ इति कुमारीपूजनम् ॥

॥ अथ कुमारी पूजा वृहत् प्रयोगः॥

दुर्गा तंत्र पटल में नवरात्र विधान में कुमारी पूजा समय प्रचलित नवदुर्गा नाम एवं उनके मंत्र दिये है। ग्रंथांतर के आधार पर नामान्तर मिलते है उनके अनुसार- **''मंत्र महोदधि''**- २ वर्ष की कुमारी। ३ वर्ष की त्रिमूर्ति। ४ वर्ष की कल्याणी। ५ वर्ष की रोहिणी। ६ वर्ष की कालिका। ७ वर्ष की चण्डिका। ८ वर्ष की शांभवी। ९ वर्ष की दुर्गा। १० वर्ष की सुभद्रा।

इनमें नामान्तर भेद से १. कुमारी (कौमारी) २. त्रिमूर्ति (त्रिपुरा) ३. कालिका (कामिनी) ४. शांभवी (शाङ्करी) अन्य नाम भी है। ''पुरश्चर्यार्णव'' में ये नाम भेद है तथा सुभद्रा की जगह शुभदा एवं चण्डिका की जगह अंबिका है। महाकाल संहिता के अनुसार १८ नाम कौमारी देवी के कहे है। १. महाचण्ड योगेश्वरी २. सिद्धिकराली ३. सिद्धि विकराली ४. महामारी ५. वज्रकापालिनी ६. मुण्डमालिनी ७. अट्टहासिनी ८. चण्डकापालिनी ९. कालचक्रेश्वरी १०. गुह्यकाली ११. कात्यायनी १२. कामाख्या १३. चामण्डा १४. सिद्धिकाली १५. कुब्जिका १६. मातङ्गी १७. चण्डेश्वरी १८. कौमारी। वहीं अन्य १८ नाम भी बताये है। १. दुर्गा २. नारायणी ३ शिवा ४. महामाया ५. योगनिद्रा ६. कालरात्रि ७. कपर्दिनी ८. उग्रचण्डा ९ भद्रकाली १० अजिता ११ अपराजिता १२ त्रिपुरा १३ महाकाली १४ कामाख्या १५ कुलनायिका १६ भैरवी १७. भुवनेशी १८. कौमारी।

मंत्र महार्णव में रुद्रयामल के अनुसार एक वर्ष से सोलह वर्ष तक की कन्या कही है। २० वर्ष की सुकुमारी कही गई है।

॥ अथ वर्षभेदेन कुमारीभेदः॥

एकवर्षा भवेत्सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती । त्रिवर्षा च त्रिधामूर्तिश्चतुर्वर्षा च कालिका ॥१॥
सुभगा पञ्चवर्षा तु षड्वर्षा च भवेदुमा । सप्तभिर्भिल्लिनी साक्षादष्टवर्षा तु कुब्जिका ॥२॥

नवभिः कालसन्दर्भा दशभिश्चापराजिता । एकादशे तु रुद्राणी द्वादशाब्दे तु भैरवी ॥३॥
त्रयोदशे महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका । क्षेत्रज्ञा पञ्चदशाभिः षोडशे चाम्बिका मता ॥४॥
एवं क्रमेण संगृह्य यावत्पुष्पं न जायते । प्रतिपदादिपूर्णान्तं वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥५॥

विश्वासार तंत्रानुसार १ वर्ष से ७ वर्ष तक कुमारी नाम है। पश्चात् **अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने। नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका॥** अतः **उर्ध्वं महामाया भवेत्सैव रजस्वला।** १२ वर्ष से २० वर्ष सुकुमारी कही है।

कुब्जिका तन्त्र के सप्तम पटल में यह विशेष है : पाँच वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक की कन्या, हे देवि! अपने रूप को प्रकाशित करने वाली **कुमारी** कहलाती है। छह वर्ष से लेकर नव वर्ष तक की कन्या, हे महेशानि! साधक की अभीष्टसिद्धि के लिए उपयुक्त होती है। आठ वर्ष से लेकर तेरह वर्ष की अवस्था तक की कन्या **कुलजा** कहलाती है और उसमें पूजा करनी चाहिये। दश वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक अवस्था वाली **युवती** कहलाती है। उसे देवता के समान समझना चाहिये। रुद्रयामल तंत्र में इस प्रकार कुछ विशेष कहा गया है। दूसरे वर्ष से ऊपर जब तक आठ वर्ष तक की हो तब तक सुन्दर मोहिनी कन्या की जप और पूजा करनी चाहिये।

अथ कुमारीणां वर्णभेदो यथा- रुद्रयामले उत्तरखण्डे सप्तमपटले :

नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कपालिकन्यकाम् । रजकस्यापि कन्यां च तथा नापितकन्यकाम् ॥१॥
गोपालकन्यकाञ्चैव ब्रह्मणस्यापि कन्यकाम् । शूद्रकन्यां वैद्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम् ॥२॥
चण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम् । सुहृद्वर्गस्य कन्यां च समानीत प्रयत्नतः ॥३॥

योगिनी तन्त्र के अनुसार : इसलिये सब जातियों में उत्पन्न कन्याओं की पूजा करनी चाहिये। हे शिवे, कुमारीपूजन में जातिभेद नही करना चाहिय। हे महेशानि! जातिभेद करने साधक नरक में जाता है। शङ्का में पड़ा हुआ मन्त्रसाधक निश्चित रूप से पातकी होता है। इसलिए देवी बुद्धि से कुमारी का पूजन करना चाहिये। कुमारी समस्त विद्यास्वरूपा है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे देवि! यदि भाग्य से वेश्या- कुलोत्पन्न कोई कुमारी सर्वस्व देकर भी मिल जाय तो साधक को यत्नपूर्वक स्वर्ण, रौप्य आदि देकर प्रसन्न होकर उसकी पूजा करनी चाहिये। तब साधक को महासिद्धि की प्राप्ति होती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

॥ अथ कुमारीदान क्रम फलम् ॥

विवाहयेत्स्वयं कन्यां ब्रह्महत्या विनश्यति। यो यश्च पुण्यकाले तुं कन्यादानं समापयेत् ॥१॥
भुक्तिमुक्तिफलं तस्य सौभाग्यं सर्वसम्पदः । रुद्रलोके वसेन्नित्यं त्रिनेत्रो भगवान्हरः ॥२॥
तीर्थकोटि सहस्त्राणि अश्वमेधशतानि च । तत्फलं लभते मर्त्यो यस्तु कन्यां विवाहयेत् ॥३॥
वालुकाः सागरे ज्ञेयास्तावदब्द सहस्त्रकम् । एकैकं कुलमुद्धत्य रुद्रलोके महीयते ॥४॥
तत्तदिष्टदेवतायाः प्रीतये तुष्टये सुधीः । कन्यादानं समाहृत्य मुक्तिमाप्नोति भैरव ॥५॥
तत्तज्जातीय कन्यायास्तत्तद्बुद्ध्या च साधकः । विभाव्य शिवरूपत्वं सम्प्रदानीयकन्यके ॥६॥
पूर्णरूपं शिवं ध्यात्वा वरं सर्वाङ्गसुन्दरम् । तेजोमयं यशः कानतं कालभैरवरूपिणम् ॥७॥

बटुकेशं महादेवं वरयेत्साधकाग्रणीः।

॥ अथ कुमारी पूजा प्रयोगः॥

॥ ध्यानम् ॥

बालारूपाञ्च त्रैलोक्य सुंदरीं वरवर्णिनीम् ।
नानालंकार नम्राङ्गीं भद्रविद्या प्रकाशिनीम् ।
चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभद्रां शुभाम् ।
ध्यात्वा द्वादशपत्राब्ज पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥

कुमारीपूजा समय अथवा किसी कुमारी का कन्यादान करे उस समय इस मंत्र से ध्यान कर उसे ग्रहण करनी चाहिये।

पूजादिन से पूर्व दिन गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि के द्वारा मूलमन्त्र से **भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रितासि मां कृतार्थय** इस प्रकार निमन्त्रण देकर प्रातः बुलाकर उसकी प्रदक्षिणा करके उद्वर्तन आदि से स्नान कराकर तेल से शरीर का संस्कार करें। केशों को परिष्कृत करके, ललाट में सिंदूर, आँखों में काजल तथा सर्वाङ्ग में चन्दन लगाकर वस्त्रालङ्कारों से आभूषित कर पादप्रक्षालन करके अष्टदल पीठ पर उसे बैठाकर ताम्बूल से मुख शुद्ध करके देशकाल का स्मरण करके "**अमुक फल प्राप्तयेऽमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करष्यि**" ऐसा संकल्प करके इस प्रकार न्यास करें।

हृदयादि षडङ्गन्यास : **ॐ क्लां कुलकुमारिके हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ क्लीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ क्लैं कुलकुमारिके कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ क्लौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट् ॥६॥** इति हृदयादिषडङ्गन्यासः। इसी प्रकार करन्यास भी करें। तदनन्तर ध्यान करें।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ शंखकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् । चन्द्रमध्यमहाम्भोज हावभावविराजिताम् ॥१॥ बालरूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् । नानालङ्कारनम्राङ्गीम्भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥२॥ चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥३॥

इस प्रकार ध्यान करे अपने शिर पर हाथ रखकर मानसोपचार से पूजा करके गन्धादि से इस प्रकार पूजा करें : "**ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं हसौः सन्ध्यायैं कुमार्य्यै नमः।**" इस प्रकार पूर्व बीजमन्त्रों का उच्चारण करके '**सरस्वत्यै कुमार्य्यै नमः**' इत्यादि वर्ष के क्रम से चतुर्थ्यन्त नाम से आसन आदि षोडशोपचारों से इस प्रकार पूजा करें :

ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः कुलकुलमारिकायै नमः। जलं समर्पयामि ॥१॥ इदं पाद्यमेवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति पूजयित्वा षडङ्गन्यासविधिना षडङ्गानि पूजयेत्।

तत्र क्रमस्तु कुमार्या हृदयं दक्षिणहस्तेन धृत्वा महातेजोमयं शुक्लवर्णं विभाव्य। ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः कुलकुमारिके हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि। इति सर्वत्र। शिरः शुक्लवर्णं सर्वमयं विभाव्य। हैं ह्रीं श्रीं ऐं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० ॥२॥ शिखां नीलाञ्जनप्रभां विभाव्य। श्रीं कुलकुमारिके शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ॥३॥ कवचं प्रथमारुणसंकाशं सुतेजस्कं विभाव्य। ऐं कुलकुमारिके कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ॥४॥ ततो नेत्रत्रयं सर्वबीजमयं महाप्रभं रक्तवर्णं कोटिजपापुष्पोज्ज्वलं विभाव्य। ऐं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥५॥ ह्रीं कुलकुमारिके अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ॥६॥

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करके षोडश नामों से षोडश बार इस प्रकार पूजा करें :- **ॐ ऐं सन्ध्यायै नमः ॥१॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः ॥२॥ ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः ॥३॥ ॐ ऐं कालिकायै नमः ॥४॥ ॐ ऐं सुभगायै नमः ॥५॥ ॐ ऐं उमायै नमः ॥६॥ ॐ ऐं मालिन्यै नमः ॥७॥ ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः ॥८॥ ॐ ऐं कालसङ्कर्षिण्यै नमः ॥९॥ ॐ ऐं अपराजितायै नमः ॥१०॥ ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः ॥११॥ ॐ ऐं भैरव्यै नमः ॥१२॥ ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः ॥१३॥ ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः ॥१४॥ ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः ॥१५॥ ॐ ऐं चर्चिकायै नमः ॥१६॥**

इस प्रकार पूजा करके नव नामों से इस प्रकार पूजा करें। **ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं शाङ्कर्यै नमः ॥७॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ॥९॥**

इस प्रकार नामों से पूजा करके **''ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञ्जलि समर्पयामि''** इससे तीन पुष्पाञ्जलि देकर उसके अंग में अपनी इष्टदेवी का आवाहन करके पूजा तथा प्रदक्षिणा करने के बाद इस प्रकार प्रणाम करें।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि । पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥१॥
त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् । त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥२॥
कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् । कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥
अणिमादिगुणोपेतामकारादि स्वरात्मिकाम् । शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥४॥
कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् । कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥५॥
चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम् । प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥६॥
सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्। सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं पूजयाम्यहम् ॥७॥
दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् । पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥८॥
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्य - दायिनीम् । सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥९॥

इस प्रकार प्रणाम करके उसके कुण्डबिल में सपरिवार बालभैरव का '[illegible] **कुलकुमारिके सपरिवारबालभैरवाय नमः**' इस मन्त्र से गन्ध-पुष्पों द्वारा पूजा करें। ततः **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ हसौः कुलकुमारिके नमः** स्वाहा।

इसके बाद **''ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ हसौः कुलकुमारिके नमः स्वाहा''** इस कुमारी मूलमन्त्र का या स्वीय मन्त्र का यथाशक्ति जप करके प्राणायाम के पश्चात् जप समर्पित करें। तदुपरान्त स्तोत्र, कवचादि का पाठ करके अष्टाङ्ग या पञ्चाङ्ग प्रणाम करके दक्षिणा देवें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप से तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करें।

हे महादेव! अब मैं कुमारी के जप और होम का वर्णन करूँगी। हे नाथ! माया (**ह्रीं**) या वाग्भव (**ऐं**) या रमा (**श्रीं**) या काली (**क्रीं**) अथवा कामबीज (**क्लीं**) को बिन्दुचन्द्र-विभूषित सदाशिव (**हौं**) से सम्पुटित कर एक लाख जप करें। अथवा हे त्रिदेश्वर !प्रणव (**ॐ**) से सम्पुटित मूलमन्त्र का विधानपूर्वक एक लाख जप करके उसका दशांश घृताक्त बिल्वपत्रों से, अथवा श्वेत पुष्पों से या कुन्द के पुष्पों से होम करने से महाफल प्राप्त होता है। इसी प्रकार क्रम से घृताक्त कनेर के पुष्पों से या केवल कनेर के पुष्पों अथवा चन्दन अगर मिश्रित कनेर के पुष्पों से होम करना चाहिये। दिन में हविष्याशी होते हुए पूजातत्पर होना चाहिये। शिवपूजन से अवशिष्ट कुल द्रव्यों से पूजा करनी चाहिये। इसके बाद

परमानन्दरूप धारण करके बारह जप करें और जप के अन्त में मेरे द्वारा उक्त द्रव्यों से साधक होम करें। इसके बाद प्राणवायु का पुनः पुनः शोधन करके तीन प्राणायाम करके मुदित मन से साष्टाङ्ग प्रणाम करें। हे नाथ! प्राणायाम के सयम यति इस स्तोत्र का और कवच का पाठ करें, अथवा कुमारियों या निजदेवी के महास्तोत्र का और कवच का पाठ करें। हे महादेव! कुमारियों के अष्टोत्तरसहस्रनाम का पाठ करके साधक सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें अशक्त होने पर स्वदेवी का अष्टोत्तर सहस्रनाम मङ्गलकारी होता है। हे नाथ! सिद्धि के आकांक्षी को निःसंशय इसे पढ़ना चाहिये।

हे नाथ, सुनिये! उन देवियों के शुभ स्तोत्र सर्वत्र मङ्गलकारी होते हैं और उत्तम साधक उनके पढ़ने से अकस्मात् सिद्धि प्राप्त करता है। अपने आगे करोड़ों रत्नों से भी अतिशीतल उन सभी कुमारी देवियों को स्थापित करके समाहित चित्त होकर बुद्धिमान जितेन्द्रिय साधक स्तोत्र का पाठ करें। वह चाहे दिव्याचाररत हो या वीरभावोल्बण, उसे भक्तिभावपरायण होकर क्रम से स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। साधक महाविद्या, महासेवा, महाभक्ति, तथा महाश्रद्धा से युक्त होकर यदि पाठ करे तो शीघ्र ही महाज्ञानी होकर इच्छानुसार सिद्धि प्राप्त करता है। **कुब्जिका तन्त्र** में कहा गया है कि जो मनुष्य कुमारी को अन्न, वस्त्र तथा जल देता है, उसका अन्न पर्वत के समान तथा जल समुद्र के समान असीम हो जाता है। वस्त्र देने से वह खरबों वर्षो तक शिवलोक में निवास करता है। जो कुमारी को पूजोपकरण देता है उससे संतुष्ट होकर देवता उसके पुत्र रूप में उत्पन्न होते हैं। योगिनी तन्त्र के पूर्णखण्ड के सत्रहवें पटल में कहा गया है कि, हे सुन्दरि, मैं कुमारीपूजन का फल सहस्रकोटि जिह्वाओं और शतकोटि मुखों से भी कहने में असमर्थ हूँ।

यामल में भी कहा है कि जिस देश में कुमारी पूजन होता है वह देश समस्त पृथिवी पर पवित्र स्थान हो जाता है। उस स्थान के चारों ओर पाँच कोश तक समस्त भूभाग पुण्यतम हो जाता है। इसलिये कुमारी षोडश वर्ष पर्यन्त युवती कही जाती है। उसमें भावप्रकाश हो जाता है। भाव ही श्रेष्ठ माना गया है। उसकी प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये। उसे अक्षतयोनि के रूप में यत्नपूर्वक रखना चाहिये। वस्त्र, अलङ्कार और आभूषणादि से कुमारी की महापूजा आदि यह मन्द भाग्यवाला भी करता है तो वह जय और मङ्गल को प्राप्त करता है। हे नाथ! दूसरे को जो कन्या पूजन की बात बताता है, उसे महाफल प्राप्त होता है।

जो व्यक्ति दिव्य भाव में, वीर भाव में या पशु भाव में स्थिर होकर विधिपूर्वक कुमारीपूजन करता है, उसे महासुख प्राप्त होता है। तीनों भावों में कुमारी पूजन रूप दिव्य कर्म करने पर उत्तम फल प्राप्त होता है। दिव्य भाव में स्थित होकर जो मनुष्य कुमारी पूजन करता है या कुमारियों को भोजन कराता है उसे तन्त्र-मन्त्र का साक्षात् फल मिलता है। कुमारीपूजन के द्वारा एक, दो या तीन बीजों की पूजा फलदायक होती है इसमें कोई संशय नहीं है। कुमारियों को फूल, फल, अनुलेपन, बालप्रिय नैवेद्य (मिष्ठान्न) आदि देकर और तद्भावभावित होकर, अङ्गों को मिट्टी से लिप्त कर बालभावोचित चेष्टाओं से अत्यन्त प्रिय कथालाप तथा क्रीड़ा करते हुये उन्हें (कुमारियो को) जो प्रिय हो वह कर्म करनेवाला मनुष्य सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। कन्या समस्त सिद्धियों का रूप है। कन्या सम्पूर्ण और परम तप है। होम, मन्त्र, पूजा, नित्यक्रिया, कौलिकों का सत्कार तथा नाना फलों को देने वाले बड़े बड़े धर्म कुमारी पूजन के बिना व्यर्थ हैं। हे नाथ! कुमारी पूजन से साधक इन सभी कर्मो का फल साधक प्राप्त कर लेता है।

बृहन्नीलतन्त्रे :

महाभयाति दुर्भिक्षाद्युत्पातास्तु कुलेश्वरि । दुःखस्वप्नभयमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः ॥१॥
कुमारी पूजनादेव न ते च प्रभवन्ति हि । नित्यं क्रमेण देवेशि पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥२॥
घ्नन्ति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान् । ग्रहा रोगाः क्षयं यान्ति भूतवेतालपन्नगाः ॥३॥

तन्त्रान्तरेऽपि :

शृणु नाथ कुलार्थं मे कुमारीपूजने मनुम् । महाविद्यामहामन्त्रं सिद्धमन्त्रं ना संशयः ॥४॥
एतन्मन्त्रप्रभावेण जीवन्मुक्तो भवेत्सुधीः । अन्ते देवीपदं याति सत्यमानन्दभैरव ॥५॥
ऐहिका सुखसम्पत्तिर्मधुमत्याः प्रसादतः । अवश्यं प्राप्नुयान्मर्त्यो विश्रामं कुरु शङ्कर ॥६॥
वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम् । श्रियो बीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥७॥
भैरवेण तु बीजेन खेचरत्वं सुरादिभिः । कुमारिका ह्यहं नाथ सदा त्वं हि कुमारकः ॥८॥
शतमष्टोत्तरं वापि एकां वा परिपूजयेत् । पूजिताः परिपूज्यन्ते ह्याविघ्नन्त्यवमानिताः ॥९॥
कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता । असुरा दुष्टनागाश्च येये दुष्टग्रहा अपि ॥१०॥
भूतवेतालगन्धर्वा डाकिनी यक्ष राक्षसाः । या चान्या देवतास्सर्वा भूर्भुवस्वश्च भैरवाः ॥११॥
पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डं सचराचरम् । ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥१२॥
सन्तुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत् । विधियुक्तां कुमारीन्तु भोजयेच्चैव भैरव ॥१३॥
पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चन्दनं शुभम्। भक्तिभावेन सम्पूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत् ॥१४॥

॥ इति कुमारीपटलं समाप्तम् ॥

॥ कुमारी कवचम् ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि कुमारीकवचं शुभम् । त्रैलोक्य मङ्गलं नाम महापातकनाशनम् ॥१॥
पठनाद्धारणाल्लोका महासिद्धाः प्रभाकरः । शक्रो देवाधिपः श्रीमान्देवगुरुर्बृहस्पतिः ॥२॥
सम्यक् तेजोमयो वह्निर्द्धर्मराजो भयानकः । वरुणो देवपूज्यो हि जलानामधिपस्स्वयम् ॥३॥
सर्वहर्ता महावायुः कुमारः कुञ्जरेश्वरः । धनाधिपः प्रियश्शम्भोस्सर्वे देवा दिगीश्वराः ॥४॥
स एकः प्रभुरेकात्मा सर्वेशो निर्मलोदयाः । एतत्कवचपाठेन सर्वेभूपा धनाधिपाः ॥५॥

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

प्रणवो मे शिरः पातु माया सन्ध्यात्मिका सती । ललाटोर्ध्वं महामाया पातु मे श्रीसरस्वती ॥६॥
कामाख्या बटुकेशानी त्रिमूर्तिर्भालमेव तु । चामुण्डा बीजरूपा च वदनं कालिका मम ॥७॥
पातु मां सूर्य्यगा नित्यं तथा नेत्रद्वय मम । कर्णयुग्मं कामबीजस्वरूपोमा तपस्विनी ॥८॥
रसनाग्रं तथा पातु वाग्देवी मालिनी मम । तमोवस्था कामरूपा दन्ताग्रं कुब्जिका मम ॥९॥
देवी प्रणवरूपा सा पातु नित्यं शिरो मम । ओष्ठाधरौ शक्तिबीजात्मिका स्वाहास्वरूपिणी ॥१०॥
गलदेशं महारौद्री पातु मे चापराजिता । क्षौं बीजं मे सदा कण्ठं रुद्राणी स्वाहयान्विता ॥११॥
हृदयं षोडशी विद्या पातु षोडशसुस्वरा । द्वौ बाहू पातु सर्वत्र महालक्ष्मीः प्रधानिका ॥१२॥
सर्वमंत्रस्वरूपा मे चोदरं पीठनायिका । पार्श्वयुग्मं तथा पातु हृद्देवी वाग्भवात्मिका ॥१३॥

कैशोरी कटिदेशं मे मायाबीजस्वरूपिणी । जंघायुग्मं जयन्ती मे योगिनी कुल्लुकावृता ॥१४॥
सर्वाङ्गमम्बिका देवी पातु मन्त्रार्थगामिनी । केशाग्रं कमला देवी नासाग्रं नरमोहिनी ॥१५॥
चुबुकं चण्डिका देवी कुमारी पातु मे सदा । हृदयं ललितादेवी पृष्ठं पर्वतवासिनी ॥१६॥
त्रिशक्तिः षोडशी देवी लिङ्गं गुह्यं सदावतु । श्मशाने चाम्बिका देवी गङ्गा गर्भे च भैरवी ॥१७॥
शून्यागारं पञ्चमुद्रा मंत्रयंत्रप्रकाशिनी । चतुष्पथे सदा पातु मामेव वज्रधारिणी ॥१८॥
शवासनगता चण्डा मुण्डमालाविभूषिता । पातु मामेव लिङ्गे च ईश्वरी शक्तिरूपिणी ॥१९॥
वने पातु महाबला महारण्ये रणप्रिया । महाजले तडागे च शत्रुमध्ये सरस्वती ॥२०॥
महाकाशपथे पृथ्वी पातु मां शीतला सदा । रणमध्ये राजलक्ष्मीः कुमारी कुलकामिनी ॥२१॥
अर्द्धनारीश्वरी पातु मम पादतलं मही । नवलक्षमहाविद्या कुमारी रूपधारिणी ॥२२॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटि सुशीतला । पातु मां वरदा बाणी बटुकेश्वरकामिनी ॥२३॥
इति ते कथितं नाथ कवचं परमाद्भुतम् । कुमार्याः कुलदायिन्याः पञ्चतत्त्वार्थपारगम् ॥२४॥
यो जपेत्पञ्चतत्त्वेन स्तोत्रेण कवचेन च । आकाशगामिनी सिद्धिर्भवेत्तस्य न संशयः ॥२५॥
वज्रदेहो भवेत्क्षिप्रं कवचस्य प्रसादतः । सर्वसिद्धीश्वरो योगी ज्ञानी भवति यः पठेत् ॥२६॥
विवादे व्यवहारे च संग्रामे कुलमण्डले । महापथे श्मशाने च योग सिद्ध्युद्भवेषु च ॥२७॥
पठित्वा फलमाप्नोति सत्यं सत्यं कुलेश्वर । वशीकरणमेतद्धि सर्वत्र जयदं शुभम् ॥२८॥
पुण्यव्रती पठेन्नित्यं यतिः श्रीमान्भवेद् ध्रुवम् । सिद्धविद्याकुमारी च ददाति सिद्धिमुत्तमाम् ॥२९॥
पठेद्यः शृणुयाद्वापि स भवेत्कल्पपादपः । भुक्तिं मुक्तिं तुष्टिपुष्टी राजलक्ष्मीं सुसम्पदम् ॥३०॥
प्राप्नोति साधकश्रेष्ठो धारयित्वा भवेज्जयी । असाध्यं साधयेद्विद्वान्पठित्वा कवचं शुभम् ॥३१॥
कुलीनानां महासौख्यं धर्मार्थकाममोक्षदम् । योगिनां दिवसे नित्यं कुमारीं पूजयेन्निशि ॥३२॥
उपचारविशेषेण त्रैलोक्यं वशमानयेत् । पललेनाशनेनापि मत्स्येन मुद्रया सह ॥३३॥
नानाभक्ष्येण भोज्येन गंधद्रव्येण साधकः । माल्येन स्वर्णरजतालङ्कारेण सुचेलकैः ॥३४॥
पूजयित्वा जपित्वा च तर्पयित्वा वराननाम् । यज्ञ दान तपस्याभिः प्रयोगेण महेश्वर ॥३५॥
स्तुत्वा कुमारी कवचं यः पठेदेव भावतः । तस्य सिद्धिर्भवेत्क्षिप्रं राजराजेश्वरो भवेत् ॥३६॥
वाञ्छाफलमवाप्नोति यद्यन्मनसि वर्त्तते । भूर्जपत्रे लिखित्वा यः कवचं धारयेद्यदि ॥३७॥
शनिमङ्गलवारेच नवम्यामष्टमीदिने । चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कृष्णपक्षे विशेषतः ॥३८॥
लिखित्वा धारयेद्विद्वानुत्तराभिमुखो भवेत् । महापातक युक्तोपि मुक्तः स्यात्सर्व पातकैः ॥३९॥
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वकल्याणमालभेत् । बहुपुत्रान्विता कान्ता सर्वसम्पत्ति संयुक्ता ॥४०॥
तथैव पुरुषश्रेष्ठो दक्षिणे धारयेद् भुजे । इहैव दिव्यदेहः स्यात्पञ्चाननसमप्रभः ॥४१॥
शिवलोके परं याति वायुवेगो निरामयः । सूर्यमण्डलमाभेद्य परं मोक्षमवाप्नुयात् ॥४२॥

लोकानामति सौख्यदं भयहरं श्रीपादभक्तिप्रदं मोक्षार्थं कवचं शुभं प्रपठतामानन्दसिन्धूद् भवम् ।
पन्थानं कलिकालघोर कलुषध्वंसैकहेतुं जयं ये लोकाः प्रपठन्ति धर्ममतुलं मोक्षं व्रजन्ति क्षणात् ॥४३॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतंत्रे महातन्त्रोद्दीपने कुमार्य्युपचर्य्या विन्यासे कुमारी कवचोल्लासे सिद्धमन्त्रप्रकरणे भावनिर्णय कुमारी कवचं समाप्तम् ॥

॥ कुमारी स्तोत्रम् ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

देवेन्द्रादय इन्दुकोटिकिरणां वाराणसीवासिनीं, विद्यां वाग्भवकामिनीं त्रिनयनां सूक्ष्मत्रियागामिनीम् ।
चण्डोद्वेगनिकृन्तनीं त्रिजगतां धात्रीं कुमारीं वरां, मूलाम्भोरुहवासिनीं शशिमुखीं सम्पूजयन्तिश्रियम् ॥१॥
भाव्यां देवगणैः शिवेन्द्रयतिभिर्मोक्षार्थिभिर्बालिकां, सन्ध्यां नित्यगुणोदयां द्विजगणश्रेष्ठोदयांशारुहाम् ।
शुक्लाभां परमेश्वरीं शुभकरीं भद्रां विशालाननां, गायत्रीं गणमातरं दिनपतिं कृष्णां च वृद्धां भजे ॥२॥
बालां बालकपूजितां गुणयुतां विद्यावतां मोक्षदां, धात्रीं शुक्लसरस्वतीं नरवरां वाग्वादिनीं चण्डिकाम् ।
स्वाधिष्ठान हरप्रियां प्रियकरीं वेदान्तविद्याप्रदां, नित्यं मोक्षहिताय योगवपुषां चैतन्यरूपां भजे ॥३॥
नानारत्नसमूहनिर्मितगृहे पूज्यां सुरैर्बालिकां, वन्दे नन्दनकानने मनसि सिद्धान्तैक बीजानने ।
अर्थं देहि निरर्थकाय वपुषे हित्वा कुमारीं कलां, मह्यं मातृकुमारिके च त्रिविधा मूर्त्या च तेजोमयी ॥४॥
हालाहाल करालिकां कुलपथोल्लासैः कराब्जोद्वहां, नासामोदकरालिनीं हि भजतां कामातिरिक्तप्रदाम् ।
बालोऽहंबटुकेश्वरस्य चरणाम्भोजाश्रितोऽहं सदाहि, त्वां बालकुमारिकेशिरसि शुक्लाम्भोरुहेसम्भजे ॥५॥
सूर्याह्लाद बलाकिनीं कलिमहापापार्दितापापहां, तेजोगां भुवि सूर्य्यगां भयहरां तेजोमयीं कालिकाम् ।
वन्दे हृत्कमले सदा रविदले बालेन्द्रविद्यां सतीं साक्षात्सिद्धिकरीं कुमारि विमले त्वामाद्यरूपेश्वरीम् ॥६॥
नित्यंश्रीकुलकामिनीं कुलवतींकौलामुनामम्बिकां नानायोग विलासिनीं सुरमणीं नित्यां तपस्यान्विताम् ।
वेदान्तार्थ विशेषदेशवसनभाषाविशेषस्थितां, वन्दे पर्वतराजराजतनयां कालप्रिये त्वामहम् ॥७॥
कौमारीं कुलमालिनीं रिपुगणक्षोभाग्निसन्दायिनीं, रक्ताभानयनां शुभां परममार्गां मुक्ति संज्ञाप्रदाम् ।
भार्यां भोगवतीं पतिं त्रिभुवनेष्वामोदपञ्चाननां, पञ्चास्यप्रियकामिनीं भयहरां सर्पादिहारां भजे ॥८॥
चन्द्रास्यां चरणद्वयां भुजमहाशोभाविनोदीं नदीं, मोहादिक्षयकारिणीं वरकरां श्रीकुब्जिकां सुन्दरीम् ।
ये नित्यं परिपूजयन्ति सहसा राजेन्द्रचूडामणिं, सम्पत्तिं धनमायुषं त्रिजगतां व्याप्येश्वरत्वं जगुः ॥९॥
योगीशं भुवनेश्वरं प्रियकरं श्रीकालसंदर्भया, शोभासागरगामिनं सुरतरुं वाञ्छाफलोद्दीपनम् ।
लोकानामघनाशनाय शिवया श्रीसंज्ञया विद्यया, धर्मप्राणसदैवतं प्रणमतां कल्पद्रुमं भावये ॥१०॥
विद्यान्तामपराजितां मदनगामामो दमत्ताननां, हृत्पद्मस्थितपादुकां कुलकलां कात्यायनीं भैरवीम् ।
ये ये पुण्यधियो भजन्ति परमानन्दाब्धिमध्ये मुदा, सर्वाच्छादित तेजसाऽभयकरीं मोक्षाय सत्कीर्तये ॥११॥
रुद्राणीं प्रणमामि पद्मवदनां कोट्यर्कतेजोमयीं, नानालंकृत भूषणां कुलभुजामानन्द सन्दायिनीम् ।

श्रीमायां कमलान्वितां हृदिगतां सन्तानबीजक्रियां वन्दे वाग्भवरूपिणीं कुलवधूं हूंकारबीजोद्भवाम् ॥१२॥
नमामि वरभैरवीं क्षितितलाधकालानलां, मृणालकुसुमारुणां भुवनदोषसंशोधिनीम् ।
जगद् भयहरां परां हरति या च योगेश्वरी, ममापदमहर्निशं सकलभोगदां तामहम् ॥१३॥
साम्राज्यं प्रददाति या भगवती विद्या महालक्षणा, साक्षादष्ट समृद्धिदा भुवि महालक्ष्मीः कुलक्षोभहा ।
स्वाधिष्ठान सुपंकजे विवसितां विष्णोरनन्तश्रियं, वन्दे राजपदप्रदां शुभकरीं कौलेश्वरीं सर्वदा ॥१४॥
पीठानामधिपाधिपामसुरहां विद्यां शुभां नायिकां, सर्वालंकरणान्वितां त्रिजगतां क्षोभापहां वारुणीम् ।
वन्दे पीठगनायिकां त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां सर्वेषां हितकारिणीं जयवतामानन्द रूपेश्वरीम् ॥१५॥
क्षेत्रज्ञां मदविह्वलां कुलवतीं सिद्धप्रियां प्रेयसीं, शम्भोः श्रीबटुकेश्वरस्य महतामानन्दसञ्चारिणीम् ।
साक्षादात्मपरोद्गमां निजमनः क्षोभपहां शाकिनीं वाक्यार्थप्रकटामहं रजतभां वन्दे महाभैरवीम् ॥१६॥
सुपूर्णविधुवन्मुखीं कमलमध्यसम्भाविनीं, शिरोदशशते दलेऽमृत महाब्धिधाराधराम् ।
प्रणामफलदायिनीं सकलराजवश्यां गुणां, नमामि परमाम्बिकां विषयपाशसंहारिणीम् ॥१७॥
साक्षादहं त्रिभुवनेऽमृतपूर्णदेहां, संध्यादिदेविकललः कुलपण्डितेन्द्राम ।
तन्नो भजे सुरवरे वरकालिके त्वां, सिद्धानले प्रतिदिनं प्रणमामि भक्त्या ।
भक्तिं धनं जयपदं यदि देहि दास्यं तस्मिन्महामधुमतीलघुगेहभार्य्याम् ॥१८॥
एतत्स्तोत्रप्रसादेन कवितावाक्यपतिर्भवेत् । महासिद्धीश्वरो दिव्यो वीरभावपरायणः ॥१९॥
सर्वत्र जयमाप्नोति स हि स्याद्धरवल्लभः । वाचामीशो भवेत्क्षिप्रं कामरूपी भवेन्नरः ॥२०॥
पशुरेव महावीरो दिव्यो भवति निश्चितम् । क्रमशोप्यष्टसिद्धिः स्याद्वाग्मी भवति निश्चितम् ॥२१॥
सर्वविद्याः प्रसीदन्ति तुष्टास्सर्वदिगीश्वराः । वह्निः शीतलतां याति जलस्तम्भं स कारयेत् ॥२२॥
धनवान्पुत्रवानाजा इहलोके भवेन्नरः । स सञ्चरति वैकुण्ठे कैलासे शिव सन्निधौ ॥२३॥
मुक्त एव महादेव यो नित्यं सर्वदा पठेत् । महाविद्यापदाम्भोजं स हि पश्यति निश्चितम् ॥२४॥

॥ इति श्री कुमारी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री कुण्डलिनी कवचम् ॥

॥ श्री आनन्द भैरवी उवाच ॥

अथ वक्ष्ये महादेव! कुण्डलीकवचं शुभम् । परमानन्ददं सिद्धं सिद्धवृन्दनिषेवितम् ॥१॥
यद् धृत्वा योगिनः सर्वे धर्माधर्म प्रदर्शकाः । ज्ञानिनो मानिनो धीरा विचरन्ति यथा नराः ॥२॥
सिद्धयोऽप्यणिमाद्याश्च करस्थाः सर्वदेवताः । एतत् कवचपाठेन देवेन्द्रो योगिराड् भवेत् ॥३॥
ऋषयो योगिनः सर्वेजटिलाः कुलभैरवाः । प्रातःकाले त्रिवारं च मध्याह्ने वारयुग्मकम् ॥४॥
सायाह्ने वारमेकं तु पठेत् कवचमुत्तमम् । पाठादेव महायोगी कुण्डलीदर्शनं लभेत् ॥५॥

विनियोग – ॐ अस्य श्रीकुलकुण्डली कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीकुलकुण्डली देवता, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्रीकुलकुण्डली देवतायै नमः हृदि, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ कवचपाठ ॥

ॐ ईश्वरी जगद्धात्री ललितासुन्दरी परा। कुण्डली कुलरूपा तु पातु मां कुलचण्डिका ॥१॥
शिरो मे ललिता देवी पातूग्राख्या कपोलकम्। ब्रह्मरन्ध्रेण पुटिता भ्रूमध्यं पातु मे सदा ॥२॥
नेत्रत्रयं महाकाली कालाग्नि भक्षिका शिखां। दन्तावलीं विशालाक्षी ओष्ठमिष्ठान्नवासिनी ॥३॥
कामवीजात्मिका विद्या अधरं पातु मे सदा। लृ युगस्था गण्डयुग्मं मायाबीजा रसप्रिया ॥४॥
भुवनेशी कर्णयुग्मं चिबुकं कनकेश्वरी। कपिला मे गलं पातु सर्वबीजस्वरूपिणी ॥५॥
मातृका वर्णपुटिता कुण्डली कण्ठमेव च। हृदयं कालपुत्री च कङ्काली पातु मे मुखम् ॥६॥
भुजयुग्मं चण्डदुर्गा चण्डदोर्दण्डखण्डिनी। स्कंधयुग्मं स्कन्दमाता कपोलं क्रोधकालिका ॥७॥
अंगुल्यग्रं कुलानन्दा श्रीविद्या नखमण्डलम्। कालिका भुवनेशानी पृष्ठदेशं सदाऽवतु ॥८॥
पार्श्वयुग्मं महावीरा वीरासन – धराऽभया। पातु मां कुलदर्भस्था, नाभिमुदरमम्बिका ॥९॥
कटिदेशं पृष्ठसंस्था महामहिषघातिनी। लिङ्गस्थानं महामुद्रा भगमाला मनुप्रिया ॥१०॥
भगीरथप्रिया धूम्रा मूलाधारं गणेश्वरी। चतुर्दलं कामविद्या दलाग्रं मे वसुन्धरा ॥११॥
धीर्धरा धारणाख्या च ब्रह्माणी पातु मे मुखम्। मेदिनी पातु कमला वाग्देवी पूर्वगं दलम् ॥१२॥
छेदिनी दक्षिणे पार्श्वे पातु चण्डा महातपा। चण्डघण्टा सदापातु योगिनी वारुणं दलम् ॥१३॥
उत्तरस्थं दलं पातु पृथिवीमिन्द्र – लालिता। चतुष्कोणं कामविद्या ब्रह्मविद्याष्ट – कोणकम् ॥१४॥
अष्टदलं सदापातु सर्ववाहन वाहना। चतुर्भुजा सदापातु डाकिनी कुल चञ्चला ॥१५॥
मेढ्रस्था मदनाधारा पातु मे चारुपङ्कजम्। स्वयम्भूलिङ्गं चार्वङ्गी कोटराक्षी ममासनम् ॥१६॥
कदम्बं वनगा पातु कदम्बवनवासिनी। वैष्णावीं परमा माया पातु मे वैष्णवं पदम् ॥१७॥
षड्दलं राकिणी पातु रङ्गिनी कामवासिनी। कामेश्वरी कामरूपा कृष्णं मे पीतवाससं ॥१८॥
धनुः सा वनदुर्गा मे शङ्खं मे शङ्खिनी शिवा। चक्रं चक्रेश्वरी पातु कमलाक्षी गदां मम ॥१९॥
पद्मं मे पद्मगन्धा च पद्ममाला मनोहरा। बादिलान्ताक्षरं पातु लाकिनी लोकपावनी ॥२०॥
षड्दले स्थित देवांश्च पातु कैलास – वासिनी। अग्निवर्णा सदापातु गलं मे परमेश्वरी ॥२१॥
मणिपूरं सदापातु मणिमाला – विभूषणा। दशपत्रं दशवर्णं डादिफान्तं त्रिविक्रमा ॥२२॥
पातु नीला महाकाली भद्रा भीमा सरस्वती। अयोध्यावासिनी देवी महापीठ – निवासिनी ॥२३॥
वाग्भवाद्या महाविद्या कुण्डली कालरूपिणी। दशच्छदशतं पातु रुद्रं रुद्रात्मकं मम ॥२४॥
सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा पातु सूक्ष्मस्थान निवासिनी। राकिनी लोकजननी पातु कूटाक्षरान्विता ॥२५॥

तैजसं पातु नियतं रजकी राजपूजिता । विजया कुलवीजस्था तवर्गतिमिरापहा ॥२६॥
चन्द्रात्मिका मणिग्रन्थिं भेदिनी पातु सर्वदा । भगमाला भृगुसुता पातु मां नाभिवासिनी ॥२७॥
नन्दिनी पातु सकलं कुण्डली कालकल्पिता । हृत्पद्मं पातु कालाख्या धूम्रवर्णा मनोहरा ॥२८॥
दलद्वादश वर्णं च भास्करी भाव सिद्धिदा । पातु मे परमा विद्या क वर्गं कामचारिणी ॥२९॥
च वर्गं चारुरसना व्याघ्रास्या टङ्कधारिणी । टकारं पातु कृष्णाख्या हाकिनी पातु कालिका ॥३०॥
ठंकुराङ्गी ठकारं मे बीजभाषा महोदया । ईश्वरं पातु विमला मम हृत् पद्मवासिनी ॥३१॥
कर्णिकां कालसन्दर्भा योगिनी योगमातरं । इन्द्राणी वारुणी पातु कुलमाला कुलान्तरम् ॥३२॥
तारिणी शक्तिमाता च कण्ठवाक्यं सदाऽवतु । विप्रचित्ता महोग्रोग्रा प्रभा दीप्ता घनाऽमला ॥३३॥
वाक्स्तम्भिनी वज्रदेहा वैदेही वृषवाहिनी । उन्मत्तानन्दचित्ता च कुलेशी सा भगातुरा ॥३४॥
मम षोडशपत्राणि पातु मातृतया स्थिता । सुरान् रक्षतु वेदज्ञा सर्वभाषा च कालिका ॥३५॥
ईश्वरार्द्धासनगता प्रपायान्मे सदाशिवा । शाकम्भरी महामाया शाकिनी पातु सर्वदा ॥३६॥
भवानी भवमाता च पायाद् भ्रूमध्य पङ्कजं । द्विदलं व्रतकामाख्या अष्टाङ्गसिद्धिदायिनी ॥३७॥
पातु मामखिलानन्दा मनोरूपा जपप्रिया । लकारं लक्षणाक्रान्ता सर्वलक्षणलक्षणा ॥३८॥
कृष्णाजिनधरा देवी क्षकारं पातु सर्वदा । द्विदलस्थं सर्वदेवं सदापातु वरानना ॥३९॥
बहुरूपा विश्वरूपा हाकिनी पातु चण्डिका । हरा परशिवं पातु मानसं पातु पञ्चमी ॥४०॥
षट्चक्रस्था सदापातु षट्चक्रकुलवासिनी । अकारादि क्षकारान्ता विन्दुसर्ग समन्विता ॥४१॥
मातृकार्णा सदापातु कुण्डली ज्ञानकुण्डली । पूर्णकाली गतिप्रेता पूर्णगिरितटं शिवा ॥४२॥
उड्डीयानेश्वरी देवी सकलं पातु सर्वदा । कैलास पर्वतं पातु कैलासगिरि - वासिनी ॥४३॥
डाकिनी राकिणी शक्तिर्लाकिनी काकिनी कला । शाकिनी हाकिनी देवी षट्चक्रादीन् प्रपातु मे ॥४४॥
कैलासाख्यं सदापातु पञ्चानन - तनूद्भवा । हिरण्यवर्णा रजनी चन्द्रसूर्याग्नि - भक्षिणी ॥४५॥
सहस्त्रदलपद्मं मे सदापातु कुलाकुला । सहस्त्रदलपद्मस्था दैवतं पातु भैरवी ॥४६॥
काली तारा षोडशाख्या मातङ्गी पद्मवासिनी । श[illegible]कोटि गलद्रूपा पातु मे सकलां तनुम् ॥४७॥
रणे घोरे जले दोषे युद्धे वादे श्मशानके । सर्वत्र गमने ज्ञाने सदा मां पातु शैलजा ॥४८॥
पर्वते विविधावासे विनाशे पातु कुण्डली । पादादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं सर्वाकाशं सुरेश्वरी ॥४९॥
सदापातु सर्वविद्या सर्वज्ञानं सदा मम । नवलक्षमहाविद्या दशदिक्षु प्रपातुमाम् ॥५०॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं देव कुण्डलिन्याः प्रसिद्धिदं ।
ये पठन्ति ध्यानयोगे योगमार्ग व्यवस्थिताः ।
ते यान्ति मोक्षपदवीमैहिके नात्र संशयः ॥१॥

॥ रुद्रयामले उत्तरखण्डे कन्दवासिनी कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ कुण्डलिनी सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र क-कारादि नामावलि से है तथा उत्तरार्ध में श्लोक१६८ पश्चात् की नामावलि रक्षासूत्रमय है

॥ श्रीआनन्द भैरवी उवाच ॥

अथ कान्त! प्रवक्ष्यामि, कुण्डली चेतनादिकं। सहस्रनाम सकलं, कुण्डलिन्याः प्रियं सुखं ॥१॥
अष्टोत्तरं महापुण्यं, साक्षात् सिद्धिप्रदायकं। तव प्रेमवशे नैव, कथयामि शृणुष्व तत् ॥२॥
बिना यजनयोगेन, बिना ध्यानेन यत्फलं। तत्फलं लभते सद्यो, विद्यायाः सुकृपा भवेत् ॥३॥
या विद्या भुवनेशानी, त्रैलोक्यपरिपूजिता। सा देवी कुण्डली माता, त्रैलोक्यं पाति सर्वदा ॥४॥
तस्या नामसहस्राणि, अष्टोत्तरशतानि च। श्रवणात् पठनान्मन्त्री, महाभक्तो भवेदिह ॥५॥
ऐहिके स भवेन्नाथ! जीवन्मुक्तो महाबली ॥६॥

विनियोग- अस्य श्रीमहाकुण्डलीसाष्टोत्तरशत सहस्रनामस्तोत्रस्य ब्रह्माऋषिः, जगती छन्दः, भगवती श्रीमहाकुण्डली देवता, सर्वयोग समृद्धिसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- श्रीब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। भगवती श्रीमहाकुण्डली देवतायै नमः हृदि। सर्वयोग समृद्धिसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ अष्टोत्तरशतनामसाहस्रं ॥

कुलेश्वरी कुलानन्दा, कुलीना कुलकुण्डली। श्रीमन्महाकुण्डली च, कुलकन्या कुलप्रिया ॥
कुलक्षेत्रस्थिता कौली, कुलीनार्थप्रकाशिनी। कुलाख्या कुलमार्गस्था, कुलशास्त्रार्थपातिनी ॥
कुलज्ञा कुलयोग्या च, कुलपुष्पप्रकाशिनी। सुकुलीना कुलाध्यक्षा, कुलचन्दनलेपिता ॥
कुलगर्भासना कुल्ला, कुलच्छात्रा कुलात्मजा। कुलीना नागललिता, कुण्डली कुलपण्डिता ॥
कुलद्रव्यप्रिया कौला, कलिकन्या कुलान्तरा। कुलकाली कुलामोदा, कुलशब्दोत्सवाकुला ॥
कुलरूपा कुलोद्भूता, कुलकुण्डलिवासिनी। कुलाभिन्ना कुलोत्पन्ना, कुलाचारविनोदिनी ॥
कुलदृक्षसमुद्भूता, कुलमाला कुलप्रभा। कुलज्ञा कुलमध्यस्था कुल - कंकण - शोभिता ॥
कुलोत्तरा कौलपूजा कुलालापा कुलक्रिया। कुलभेदा कुलप्राणा, कुलदेवी कुलस्तुतिः ॥
कौलिका कालिका काल्या, कलिभिन्ना कलाकला। कलिकल्मषहन्त्री च, कलिदोषविनाशिनी ॥
कङ्काली केवलानन्दा, कालज्ञा कालधारिणी। कौतुकी कौमुदी केका, काका काकलयान्तरा ॥
कोमलाङ्गी करालास्या, कन्दपूज्या च कोमला। कैशोरी काकपुच्छस्था, कम्बलासनवासिनी ॥
कैकेयीपूजिता कोला, कोलपुत्री कपिध्वजा। कमला कमलाक्षी च, कम्बलाश्वतर - प्रिया ॥
कलिकाभङ्गदोषस्था, कालज्ञा कालकुण्डली। काव्यदा कवितावाणी, कालसन्दर्भभेदिनी ॥
कुमारी करुणाकारा, कुरुसैन्यविनाशिनी। कान्ता कुलागता कामा, कामिनी कामनाशिनी ॥
कामोद्भवा कामकन्या, केवला कालघातिनी। कैलासशिखरारूढा, कैलासपति - सेविता ॥

कैलासनाथनमिता, केयूरहारमण्डिता । कन्दर्पा कठिनानन्दा, कुलगा कीचकृत्यहा ॥
कमलास्या कुठोरा च, कीटरूपा कटिस्थिता । कंदेश्वरी कंदरूपा कौलिका कंदवासिनी ॥
कटकस्था कामवीजा, कृच्छाकृच्छगुणोदया । कृच्छानन्दा कृच्छपूज्या, कृच्छहा कृच्छरक्षिका ॥
कारणांगी कृच्छवर्णा, कीलिता कोकिलस्वरा। काञ्चीपीठस्थिता काञ्ची, कामरूपनिवासिनी ॥
कूटस्था कूटभक्षा च, कालकूटविनाशिनी । कामाख्या कमला काम्या, कामराजतनूद्भवा ॥
कामरूपधरा कम्रा, कमनीया कविप्रिया कञ्जानना कञ्जहस्ता, कञ्जपत्रायतेक्षणा ॥
काकिनी कामरूपस्था, कामरूपप्रकाशिनी। कोलाविध्वंसिनी कङ्का, कलङ्कार्ककलङ्किनी ॥
महाकुलनदी कर्णा, कर्णकाण्ड विमोहिनी। काण्डस्था काण्डकरुणा, कर्मकस्था कुटुम्बिनी ॥
कमलाभा कल्मा कल्ला, करुणा करुणामयी । करुणेशी कराकर्त्री कर्तृहस्ता कलोदया ॥
कारुण्यसागरोद्भूता, कारुण्यसिन्धुवासिनी। कार्तिकेशी कार्तिकस्था, कार्तिकप्राणपालिनी ॥
करुणानिधिपूज्या च, करणीया क्रिया कला। कल्पस्था कल्पनिलया, कल्पातीता च कल्पिता ॥
कुलपा कुलविज्ञाना, कर्षिणी कालरात्रिका। कैवल्यदा कोकरस्था, कलमञ्जीर रञ्जिनी ॥
कलयन्ती कालजिह्वा, किङ्करासनकारिणी । कुमुदा कुशलानन्दा, कौशल्याकाशवासिनी ॥
कसापहासहन्त्री च, कैवल्यगुणसम्भवा । एकाकिनी अर्करूपा, कुवला कर्कटस्थिता ॥
कर्कोटका कोष्ठरूपा, कूटवह्निकरस्थिता । कूजन्ती मधुरध्वानं, कामयन्ती सुलक्षणं ॥
केतकीकुसुमानन्दा, केतकीपुष्पमण्डिता । कर्पूरपूररुचिरा, कर्पूरभक्षणप्रिया॥
कपालपात्रहस्ता च, कपालचन्द्रधारिणी । कामधेनुस्वरूपा च, कामधेनुः क्रियान्विता ॥
कश्यपी काश्यपा कुन्ती, केशान्ता केशमोहिनी । कालकर्त्री कूपकर्त्री कुलपा कामचारिणी ॥
कुंकुमाभा कज्जलस्था, कमिता कोपघातिनी । केलिस्था केलिकलिता, कोपना कर्पटस्थिता ॥
कलातीता कालविद्या, कालात्मपुरुषोद्भवा । कष्टस्था कष्टकुष्ठस्या, कुष्ठहा कष्टहा कुशा ॥
कलिकास्फुट कर्त्री च, काम्बोजा कामला कुला। कुशलाख्या काककुष्ठा, कर्मस्था कूर्ममध्यगा ॥
कुण्डलाकारचक्रस्था, कुण्डगोलोद्भवा कफा । कपित्थाग्रवसाकाशा, कपित्थरोधकरिणी ॥
काहोड़ी काहड़ा काड़ा, कङ्कलाभाषकारिणी। कनका कनकाभा च, कनकाद्रि - निवासिनी ॥
कार्पासयज्ञसूत्रस्था, कूटब्रह्मार्थसाधिनी । कलञ्जभक्षिणी क्रूरा, क्रोधपुञ्जा कपिस्थिता ॥
कपालीसाधनरता, कनिष्ठाकाशवासिनी । कुञ्जरेशी कुञ्जरस्था, कुञ्जरा कुञ्जरागतिः ॥
कुञ्जस्था कुञ्जरमणी , कुञ्जमन्दिरवासिनी । कुपिता कोपशून्या च, कोपाकोपविवर्जिता ॥
कपिञ्जलस्था कापिञ्जा, कपिञ्जलतरूद्भवा। कुन्तीप्रेमकथाविष्टा, कुन्तीमानसपूजिता ॥
कुन्तला कुन्तहस्ता च, कुलकुन्तलमोहिनी । कान्तांघ्रिसेविका कान्तकुशला कोशलावती ॥
केशिहन्त्री कुकुत्स्था च, ककुत्स्थवनवासिनी । कैलासशिखरानन्दा, कैलासगिरिपूजिता ॥

कीलालनिर्मलाकारा, कीलालमुग्धकारिणी । कुतुका कुट्टनी कुट्टा, कूटनामोदकारिणी ॥
क्रौङ्कारी क्रौङ्करी काशी, कुहुशब्दस्था किरातिनी। कूजन्ती सर्ववचनं कारयन्ती कृताकृतं ॥
कृपानिधिस्वरूपा च, कृपासागरवासिनी । केवलानन्दनिरता, केवलानन्दकारिणी ॥
कृमिला कृमिदोषघ्नी, कृपा कपटकूट्टिता । कृशाङ्गी क्रमभङ्गस्था, किङ्करस्था, कटस्थिता ॥
कान्तरूपा कान्तरता, कामरूपस्य सिद्धिदा । कामरूपपीठदेवी, कामरूपांकुजा कुजा ॥
कामरूपा कामविद्या, कामरूपादिकालिका । कामरूपकला काम्या, कामरूपकुलेश्वरी ॥
कामरूपजनानन्दा, कामरूपकुशाग्र - धीः । कामरूपकराकाशा, कामरूपतरुस्थिता ॥
कामात्मजा कामकला, कामरूपविहारिणी । कामशास्त्रार्थमध्यस्था, कामरूपक्रियाकला ॥
कामरूपमहाकाली, कामरूपयशोमयी । कामरूपरमानन्दा, कामरूपादिकामिनी ॥
कुलमूला कामरूपपद्ममध्यनिवासिनी । कृताञ्जलिप्रिया कृत्या, कृत्यादेवीस्थिता कटा ॥
कटका काटका कोटिकटिघण्टविनोदिनी । कटिस्थूलतरा काष्ठा, कात्यायन सुसिद्धिदा ॥
कात्यायनी काचलस्था, कामचन्द्राननाकथा । काश्मीरदेशनिरता, काश्मीरी कृषिकर्मजा ॥
कृषिकर्मस्थिता कौर्मा, कूर्मपृष्ठनिवासिनी। कालघण्टानादरता, कलमञ्जीरमोहिनी ॥
कलयन्ती शत्रुवर्गान्, क्रोधयन्ती गुणागुणं । कामयन्ती सर्वकामं काशयन्ती जगत्त्रयं ॥
कौलकन्या कालकन्या, कौलकालकुलेश्वरी । कौलमन्दिरसंस्था च, कुलधर्मविडम्बिनी ॥
कुलधर्मरताकारा, कुलधर्मविनाशिनी । कुलधर्मपण्डिता च, कुलधर्मसमृद्धिदा ॥
कौलभोगमोक्षदा च, कौलभोगेन्द्रयोगिनी । कौलकर्मा नवकुला, श्वेतचम्पकमालिनी ॥
कुलपुष्पमाल्यकान्ता, कुलपुष्पभवोद्भवा । कौलकोलहलकरा, कौलकर्मप्रियापरा ॥
काशीस्थिता काशकन्या, काशीचक्षुप्रिया कुथा। काष्ठासनप्रिया काका, काकपक्षकपालिका ॥
कपालरसभोज्या च, कपालनवमालिनी । कपालस्था च कापाली, कपालसिद्धिदायिनी ॥
कपाला कुलकर्त्री च, कपालशिखरस्थिता। कथना कृपणश्रीदा, कृपी कृपणसेविता ॥
कर्महन्त्री कर्मगता, कर्माकर्मविवर्जिता । कर्मसिद्धिरता कामी, कर्मज्ञाननिवासिनी ॥
कर्मधर्मसुशीला च, कर्मधर्मवशङ्करी । कनकाब्जसुनिर्माण - महासिंहासन - स्थिता ॥
कनकग्रन्थिमाल्याढ्या, कनकग्रन्थिभेदिनी । कनकोद्भवकन्या च, कनकाम्भोजवासिनी ॥
कालकूटादिकूटस्था, किटिशब्दान्तरस्थिता । कङ्कपक्षिनादमुखा, कामधेनूद्भवा कला ॥
कङ्कणाभा - धरा कर्दा, कर्दमा कर्दमस्थिता । कर्दमस्थजलाच्छन्ना, कर्दमस्थजनप्रिया ॥
कमठस्था कार्मुकस्था, कम्प्रस्था कंसनाशिनी । कंसप्रिया कंसहन्त्री, कंसाज्ञानकरालिनी ॥
काञ्चनाभा काञ्चनदा, कामदा क्रमदा कदा । कान्तभिन्ना कान्तचिन्ता, कमलासनवासिनी ॥
कमलासनसिद्धिस्था, कमलासनदेवता । कुत्सिता कुत्सितरता, कुत्साशापविवर्जिता ॥

कुपुत्ररक्षिका कुल्ला, कुपुत्रमानसापहा । कुजरक्षकरी कौजी, कुब्जाख्या कुब्जविग्रहा ॥
कुनखी कूपदिक्षुस्था, कुकरी कुधनी कुदा । कुप्रिया कोकिलानन्दा, कोकिला कामदायिनी ॥
कुकामिनी कुबुद्धिस्था, कूर्मवाहनमोहिनी । कुलका कुललोकस्था, कुशासनसिद्धिदा ॥
कौशिकीदेवता कस्या, कन्नादनादसुप्रिया । कुसौष्ठवा कुमित्रस्था, कुमित्रशत्रुघातिनी ॥
कुज्ञाननिकरा कुस्था, कुजिस्था कर्जदायिनी । ककर्जा कर्जकारिणी, कर्जबद्धविमोहिनी ॥
कर्जशोधनकर्त्री च, कालास्त्रधारिणी सदा । कुगतिः कालसुगतिः, कलिबुद्धिविनाशिनी ॥
कलिकालफलोत्पन्ना, कलिपावनकारिणी । कलिपापहरा काली, कलिसिद्धिसुसूक्ष्मदा ॥
कालिदासवाक्यगता, कालिदाससुसिद्धिदा । कलिशिक्षा कालशिक्षा, कन्दशिक्षापरायणा ॥
कमनीयभावरता कमनीयसुभक्तिदा । करकाजनरूपा च, कक्षावादकराकरा ॥
कञ्चुवर्णा काकवर्णा, क्रोष्टुरूपा कषामला । कोष्टनादरता कीता, कातरा कातरप्रिया ॥
कातरस्था कातराज्ञा, कातरानन्दकारिणी । काशमर्दतरुद्भूता, काशमर्दविभक्षिणी ॥
कष्टहानिः कष्टदात्री, कष्टलोकविरक्तिदा । कायागता कायसिद्धिः कायानन्दप्रकाशिनी ॥
कायगन्धहरा कुम्भा कायकुम्भाकठोरिणी । कठोरतरुसंस्था च, कठोरलोकनाशिनी ॥
कुमार्गस्थापिता कुप्रा, कार्पासतरुसम्भवा । कार्पासवृक्षसूत्रस्था, कुवर्गस्था करोत्तरा ॥
कर्णाटकर्मसम्भूता, कार्णाटी कर्णपूजिता । कर्णास्त्ररक्षिका कर्णा, कर्णहा कर्णकुण्डला ॥
कुन्तलादेशनमिता, कुटुम्बा कुम्भकारिका । कर्णासरासना कृष्टा, कृष्णहस्ताम्बुजार्जिता ॥
कृष्णाङ्गी कृष्णदेहस्था, कुदेशस्था कुमङ्गला । क्रूरकर्मस्थिता कोरा, किरातकुलकामिनी ॥
कालवारिप्रिया कामा, काव्यवाक्यप्रिया क्रुधा। कुञ्जलता कौमुदी च, कुज्योत्स्ना कलनप्रिया ।
कलना सर्वभूतानां, कपित्थवनवासिनी। कटुनिम्बस्थिता काख्या, कवर्गाख्या कवर्गिका ॥
किरातच्छेदिनी कार्या, कार्याकार्यविवर्जिता । कात्यायनादिकल्पस्था, कात्यायनसुखोदया ॥
कुक्षेत्रस्था कुलाविघ्ना, करणादिप्रवेशिनी। काङ्काली किङ्कला काला, कीलितासर्वकामिनी ॥
कीलितापेक्षिता कूटा, कूटकुंकुमचर्चिता । कुंकुमागन्धनिलया, कुटुम्बभवन स्थिता ॥
कुंकृपा कारणानन्दा कवितारसमोहिनी । काव्यशास्त्रानन्दरता, काव्यपूज्या कवीश्वरी ॥
कटकादिहस्तिरथहयदुन्दुभि - शब्दिनी । कितवा क्रूरधूर्तस्था, केकाशब्दनिवासिनी ॥
कें केवलाम्बिता केता, केतकी - पुष्पमोहिनी । कैं कैवल्यगुणोद्वास्या, कैवल्यधनदायिनी ॥
करीधनीन्द्रजननी, काक्षताक्ष कलङ्किनी । कुडुवान्ता कान्तिशान्ताकांक्षापारमहंस्यगा ॥
कर्त्रीचित्ता कान्तवित्ता, कृषणा कृषिभोजिनी । कुंकुमासक्तहृदया, केयूरहारमालिनी ॥
कीश्वरी केशवा कुम्भा, कैशोरजनपूजिता । कालिकामध्यनिरता, कोकिलस्वरगामिनी ॥
कुरदेहहरा कुम्बा, कुडुम्बा कुरमेदिनी । कुण्डलीश्वरसंवादा, कुण्डलीश्वरमध्यगा ॥

कालसूक्ष्मा कालयज्ञा, कालहारकरी कहा । कहलस्था कलहस्था, कलहा कलहङ्करी ॥
कुरङ्गीश्री कुरङ्गस्था, कोरङ्गी कुण्डलापहा । कुललक्ष्मीः कृष्णबुद्धिः, कृष्णाध्याननिवासिनी ॥
कुतवा काष्ठवलता, कृतार्थकरणी कुसी । कनकस्था क स्वरस्था, कलिकादोषभङ्गजा ॥
कुसुमाकारकमला कुसुमस्रग्विभूषणा । किंजल्का कैतवाकाशा, कमनीय - जालोदया ॥
ककारकूट सर्वाङ्गी, ककाराम्बरमालिनी । कालभेदकरा काटा, कर्पवासा ककुत्स्थला ॥
कुवासा कबरी कर्वा, कूसवी कुरुपालिनी । कुरुपृष्ठा कुरुश्रेष्ठा, कुरूणां ज्ञाननाशिनी ॥
कुतूहलरता कान्ता, कुव्याप्ता कष्टबन्धना । कषायणतरुस्था च , कषायणरसोद्भवा ॥
कविविद्या कुष्टहन्त्री, कुष्ठशोकविसर्जनी। काष्ठासनगता कार्याश्रया काश्रयकौलिका ॥
कालिका कालिसंत्रस्ता, कौलिकध्यानवासिनी। क्लृप्तस्था क्लृप्त जननी क्लृप्तच्छन्ना कलिध्वजा ॥
केशवा केशवानन्दा केश्यादि - दानवापहा । केशवाङ्गज - कन्या च केशवाङ्गजमोहिनी ॥
किशोरार्चन योग्या च किशोर देव देवता । कांतश्री करणी कुल्या कपटाप्रिय घातिनी ॥
कुकामजनिता कौञ्चा कौञ्चस्था कौञ्चवासिनी । कूपस्था कूपबुद्धिस्था कूपमाला मनोरमा ॥
कुलपुष्पाश्रया कान्तिः, क्रमदाक्रमदा क्रमा । कुविक्रमा कुक्रमस्था, कुण्डली कुण्डदेवता ॥
कौण्डिल्यनगरोद्भूता, कौडिल्यगोत्रपूजिता । कपिराजस्थिता कापी, कपिबुद्धिबलोदया ॥
कपिध्यानपरामुख्या, कुव्यवस्था कुसाक्षिदा । कुमध्यस्था कुकल्पा च, कुलपंक्तिप्रकाशिनी ॥
कुलभ्रमरदेहस्था, कुलभ्रमरनादिनी। कुलासङ्गा कुलाक्षी च, कुलमत्ता कुलानिला ॥
कलिचिह्ना कालचिह्ना, कण्ठचिह्ना कवीन्द्रजा। करीन्द्रा कमलेशश्रीः, कोटिकन्दर्प दर्पहा ॥
कोटितेजोमयी कोट्या कोटीर पद्ममालिनी । कोटीरमोहिनी कोटिः कोटिकोटिविधूद्भवा ॥
कोटिसूर्यसमानास्या, कोटि कालानलोपमा । कोटीरहारललिता, कोटिपर्वतधारिणी ॥
कुलयुग्मधरादेवी, कुचकामप्रकाशिनी । कुचानन्दा कुचाच्छन्ना, कुचकाठिन्यकारिणी ॥
कुचयुग्ममोहनस्था, कुचमायातुरा कुचा । कुचयौवनसम्मोहा, कुचमर्दनसौख्यदा ॥
काचस्था काचदेहा च, काचपूरनिवासिनी । काचग्रस्था काचवर्णा, कीचकप्राणनाशिनी ॥
कमलालोचनप्रेमा, कोमलाक्षीमनुप्रिया । कमलाक्षी कमलजा, कमलास्या करालजा ॥
कमलांघ्रिद्वया काम्या, कराख्या करमालिनी । करपद्मधरा कन्दा, कन्दबुद्धिप्रदायिनी ॥
कमलोद्भवपुत्री च, कमलापुत्रकामिनी । किरन्ती किरणाच्छन्ना, किरणप्राणवासिनी ॥
काव्यप्रदा काव्यचित्ता, काव्यसारप्रकाशिनी । कलाम्बा कल्पजननी, कल्पभेदासनस्थिता ॥
कालेच्छा कालसारस्था, कालमारणघातिनी । किरणक्रमदीपस्था, कर्मस्था क्रमदीपिका ॥
काललक्ष्मीः कालचण्डा, कुलचण्डेश्वरप्रिया । काकिनीशक्तिदेहस्था, कितवा किंतकारिणी ॥
करञ्चा कञ्चुका कौञ्चा, काकचंचुपुटस्थिता। काकाख्या काकशब्दस्था, कालाग्निदहनार्थिका ॥

कुचक्षनिलया कुत्रा, कुपुत्रा क्रतुरक्षिका। कनकप्रतिमाकारा, करबन्धाकृतिस्थिता ॥
कृतिरूपा कृतिप्राणा, कृतिक्रोधनिवारिणी। कुक्षिरक्षाकरा कुक्षा, कुक्षिब्रह्माण्डधारिणी ॥
कुक्षिदेवस्थिता कुक्षिः, क्रियादक्षा क्रियातुरा। क्रियानिष्ठा क्रियानन्दा, क्रतुकर्मा क्रियाप्रिया ॥
कुशलासवासंसक्ता, कुशारिप्राणवल्लभा। कुशारिवृक्षमदिरा, काशीराजवशोद्यमा ॥
काशीराजगृहस्था च कर्तृभ्रातृगृहस्थिता। कर्णाभरणभूषाढ्या, कण्ठभूषा च कण्ठिका ॥
कण्ठस्थानगता कण्ठा, कण्ठपद्मनिवासिनी, कण्ठप्रकाशकरिणी, कण्ठमाणिक्यमालिनी ॥
कण्ठपद्मसिद्धिकरी, कण्ठाकाशनिवासिनी। कण्ठपद्मसाकिनीस्था, कण्ठषोडशपत्रिका ॥
कृष्णाजिनधराविद्या, कृष्णाजिनसुवाससी। कुतकस्था कुखेलस्था, कुण्डवालंकृताकृता ॥
कलगीता कालध्वजा, कलभङ्गपरायणा। कालीचन्द्रा कला काव्या, कुचस्था कुचलप्रदा ॥
कुचौरघातिनी कच्छा, कच्छादस्था कजातना। कंजाछदमुखी कंजा, कंजतुण्डाकजीवनी ॥
कामराजीवरवाद्यस्था, कियद्हुङ्कारनादिनी। कणादयज्ञसूत्रस्था, कीलालमज्ञसंज्ञका ॥
कटिहासा कपाटस्था, कटुधूमनिवासिनी। कटिनादघोरतरा, कुट्टलापाटलिप्रिया ॥
कामचाराब्जनेत्रा च, कामचोद्गारसंक्रमा। काष्ठपर्वतसन्दाहा, कष्टाकष्टनिवारिणी ॥
कहोडमन्त्रसिद्धस्था, काहलाडिण्डिमप्रिया। कुलडिण्डिमवाद्यस्था, कामडामरसिद्धिदा ॥
कुलतामरमध्यस्था, कुलकेकानिनादिनी। कोजागरढोलनादा, कास्यवीररणस्थिता ॥
कालादिकरणच्छिद्रा, करुणानिधिवत्सला। क्रतुश्रीदा कृतार्थश्रीः, कालताराकुलोत्तरा ॥
कथापूज्या कथानन्दा, कथना कथनप्रिया। कार्थचिन्ता कार्थविद्या, काममिथ्यापवादिनी ॥
कदम्बपुष्पसङ्काशा, कदम्बपुष्पमालिनी। कादम्बरीपानतुष्टा, कायदम्भा कदोद्यमा ॥
कंकुलेपत्रमध्यस्था, कुलाधारधराप्रिया। कुलदेवशरीरार्धा, कुलधामा कलाधरा ॥
कामरागभूषणाढ्या, कामिनीरगुणप्रिया। कुलीननागहस्ता च, कुलीननाग वाहिनी ॥
कामपूरस्थिता कोपा, कपालीवन्दनोद्भवा। कारागारजनापाल्या, कारागारप्रपालिनी ॥
क्रियाशक्तिः कालपंक्तिः, कर्णपंक्तिः कफोदया। कामफुल्लारविन्दस्था, कामरूपफलाफला ॥
कायफला कायफेणा, कान्ता नाड़ीफलीश्वरा। कामफेरुगतागौरी, कायवाणी कुवीरगा ॥
कबरीमणिबन्धस्था, कावेरीतीर्थसङ्गमा। कामभीतिहरा कान्ता, कामवाकुभ्रमातुरा ॥
कविभावहराभामा, कमनीयभयापहा। कामगर्भदेवमाता, कामकल्पलतामरा ॥
कमठप्रियमांसादा, कमठा कामठप्रिया। किमाकारा किमाधारा, कुम्भकारमनस्थिता ॥
काम्ययज्ञस्थिताचण्डा, कामयज्ञोपवीतिका। कामयज्ञसिद्धिकरी, काममैथुनयामिनी ॥
कामाख्यायमलासस्था, कालयामा कुयोगिनी। कुरुयागहतायोग्या, कुरुमांसविभक्षिणी ॥
कुरुरक्तप्रियाकारी, किङ्करप्रियकारिणी। कर्त्रीश्वरी कारणात्मा, कविभक्षा कविप्रिया ॥

कविशत्रुप्रष्ठलग्रा, कैलासोपवनस्थिता । कलित्रिधात्रिसिद्धिस्था, कलित्रिदिनसिद्धिदा ॥
कलङ्करहिता काली, कलिकल्मषकामदा । कुलपुष्परङ्गसूत्रमणिग्रन्थिसुशोभना ॥
कम्बोजवङ्गदेशस्था, कुलवासुकिरक्षिका । कुलशास्त्रक्रियाशान्तिः, कुलशान्तिः कुलेश्वरी ॥
कुशलप्रतिभा काशी, कुलषट्चक्रभेदिनी । कुलषट्पद्ममध्यस्था, कुलषट्पद्मदीपिनी ॥
कृष्णमार्जारकोलस्था, कृष्णमार्जारषष्ठिका । कुलमार्जारकुपिता, कुलमार्जारषोडशी ॥
कालान्तकवलोत्पन्ना, कपिलान्तकघातिनी । कलहासा कालहश्री, कहलार्था कलामला ॥
कक्षपपक्षरक्षा च, कुक्षेत्रपक्षसंक्षया । काक्षरक्षारक्षिणी च, महामोक्षप्रतिष्ठिता ॥
अर्ककोटिशतच्छाया, आन्वीक्षिकिंकरार्चिता । कावेरीतीरभूमिस्था, आग्नेयार्कास्त्रधारिणी ॥
इं किं श्रीं कामकमला, पातु कैलासरक्षिणी। मम श्री ईंबीजरूपा, पातु काली शिरस्थलम् ॥
उरुस्थलाब्जं सकलं, तमोल्का पातु कालिका। उडूमूलार्करमणी, उष्टोग्रा कुलमातृका ॥
कृतापेक्षा कृतमती, कुङ्कारी किंलिपिस्थिता। कुंदीर्घस्वरा क्लृप्ता, के कैलासकरार्चिका ॥
कैशोरी कैं करी कैं कें वीजाख्या नेत्रयुग्मकं । कोमामतङ्गयजिता, कौशल्यादिकुमारिका ॥
पातु मे कर्णयुग्मं तु, क्रौं क्रौं जीवकरालिनी । गण्डयुग्मं सदा पातु, कुण्डलीस्वाङ्कवासिनी ॥
अर्ककोटिशताभासा, अक्षराक्षरमालिनी । आशुतोषकरी हस्ता, कुलदेवी निरञ्जना ॥
पातु मे कुलपुष्पाढ्या, पृष्ठदेशं सुकृत्तमा । कुमारी कामनापूर्णा, पार्श्वदेशं सदाऽवतु ॥
देवी कामाख्यका देवी, पातु प्रत्यङ्गिरा कटिं । कटिस्थदेवता पातु, लिङ्गमूलं सदा मम ॥
गुह्यदेशं काकिनी मे, लिङ्गाधः कुलसिंहिका । कुलनागेश्वरी पातु, नितम्बदेशमुत्तमं ॥
कङ्कालमालिनी देवी मे पातु चोरुमूलकं । जङ्घायुग्मं सदा कीर्तिः, चक्रापहारिणी ॥
पादयुग्मं पाकसंस्था, पाकशासनरक्षिका । कुलालचक्रभ्रमरा पातु, पादांगुलीर्मम ॥
नखाग्राणि दशविधा, तथा हस्तद्वयस्य च । विंशरूपा कालनाक्षा, सर्वदा परिरक्षतु ॥
कुलच्छत्राधाररूपा, कुलमण्डलगोपिता । कुलकुण्डलिनीमाता, कुलपण्डितमण्डिता ॥
काकानना काकतुण्डी, काकायुःप्रखरार्कजा। काकञ्वरा काकजिह्वा, कपिक्रोधासनस्थिता ॥
कपिध्वजा कपिक्रोशा, कपिबाला कपिस्वरा। कालकाञ्चीविंशतिस्था, सदाविंशनखाग्रहं ॥
पातु देवी कालरूपा, कलिकालफलालया । वाते वा पर्वते वापि, शून्यागारे चतुष्पथे ॥
कुलेन्द्रसमयाचारा, कुलाचारजनप्रिया । कुलपर्वतसंस्था च, कुलकैलासवासिनी ॥
महादावानले पातु, कुमार्गे कुत्सिताग्रहे । राज्ञोऽप्रिये राजवश्ये, महाशत्रुविनाशने ॥
कलिकालमहालक्ष्मीः, क्रियालक्ष्मीः कुलाम्बरा। कवीन्द्रकीलिता कीला, कीलालस्वर्गवासिनी ॥
दशदिक्षु सदा पातु, इन्द्रादिदशलोकपा । नवच्छिन्ने सदा पातु, सूर्यादिकनवग्रहाः ॥
पातु मां कुलमांसाढ्या, कुलपद्मनिवासिनी । कुलद्रव्यप्रिया मध्या, षोडशी भुवनेश्वरी ॥
विद्यावादे विवादे च, मत्तकाले महाभये । दुर्भिक्षादिभये

सर्वत्र सर्वदेशे च, कुलरूपा सदाऽवतु। इत्येतत् कथितं नाथ! मातुः प्रसादहेतुना ॥
अष्टोत्तरशतं नामसहस्त्रं कुण्डलीप्रियं। कुलकुण्डलिनीदेव्याः, सर्वमन्त्रसुसिद्धये ॥

॥ फलश्रुति ॥

सर्वदेवमनूनां च, चैतन्याय सुसिद्धये । अणिमाद्यष्टसिद्ध्यर्थं साधकानां हिताय च ॥
ब्राह्मणाय प्रदातव्यं, कुलद्रव्यपराय च । अकुलीनेऽब्राह्मणे च, न देयः कुण्डलीस्तवः ॥
प्रवृत्ते कुण्डली चक्रे, सर्वे वर्णा द्विजातयः। निवृत्ते भैरवीचक्रे, सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥
कुलीनाय प्रदातव्यं, साधकाय विशेषतः । दानादेव हि सिद्धिः स्यान्ममाज्ञाबलहेतुना ॥
मम क्रियायां यः तिष्ठेत्, स मे पुत्रो न संशयः। स आयाति मम पदं, जीवन्मुक्तः स मानवः ॥
आसवेन समांसानि, कुलवह्नौ महानिशि । नाम प्रत्येकमुच्चार्य, जुहुयात् कार्यसिद्धये ॥
पञ्चाचाररतो भूत्वा, ऊर्ध्वरेता भवेद् यतिः। सम्वत्सरान्मम स्थाने, आयाति नात्र संशयः ॥
ऐहिके कार्यसिद्धिः स्यात्, दैहिके सर्वसिद्धिदः । वशी भूत्वा त्रिमार्गस्थाः, स्वर्गभूतलवासिनः ॥
अस्य भृत्याः प्रभवन्ति, इन्द्रादिलोकपालकाः । स एव योगी परमो, यस्यार्थेऽयं सुनिश्चलः ॥
यो लोकः प्रजपत्येवं, स शिवो न च मानुषः। स समाधिगतो नित्यो, ध्यानस्थो योगि वल्लभः ॥
चतुर्व्यूहगतो देवः, सहसा नात्र संशयः । यः प्रधारयते भक्त्या, कण्ठे वा मस्तके भुजे ॥
स भवेत् कालिकापुत्रो, विद्यानाथः स्वयं भुवि । धनेशः पुत्रवान् योगी, यतीशः सर्वगो भवेत् ॥
यदि पठति मनुष्यो मानुषी वा महत्या। सकलधनजनेशी पुत्रिणी जीववत्सा ॥
कुलपतिरिह लोके, स्वर्गमोक्षैकहेतुः । स भवति भवनाथो योगिनीवल्लभेशः ॥
पठति य इह नित्यं भक्तिभावेन मर्त्यो । हरणमपि करोति प्राणविप्राणयोगः ॥
स्तवनपठनपुण्यं कोटि जन्माघनाशं । कथितुमपि न शक्तोऽहं महामांसभक्षा ॥

॥श्रीरुद्रयामले महाकुलकुण्डलिनी अष्टोत्तरसहस्त्रनामस्तोत्रम्॥

॥ गर्भ स्तम्भन मन्त्र ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय श्रीमते वीर वटुकाय ते नमः। कष्टं नाशय गर्भ पक्षात् सौख्यं वितर सर्वान् कामान् पूरय पूरय। वं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।

यह मंत्र १००० जप करने से सिद्धि प्रदान करता है। हवन सामग्री- **गुडुचि, शतावर, गुग्गुल,** इन तीनों को घी में मिलाकर हव्य प्रस्तुत करें।

॥ अथ गंगा पूजन प्रयोगः॥

॥ अथ गङ्गादेव्यास्य मंत्राः॥

१. ॐ भगवत्यै दशहरायै भागीरथ्यै नमः।

२. ॐ भगवत्यै दशपापहरायै भागीरथ्यै नमः।

३. ॐ ह्रीं गङ्गादेव्यै नमः।

४. ॐ नमो भगवति हिलि हिलि मिलि मिलि गङ्गे माँ पावय पावय नमः स्वाहा।

५. ॐ नमो भगवत्यै नारायण्यै दशपापहरायै शिवायै गंगायै विष्णुमुख्यायै क्षयायै रेवत्यै भागीरथ्यै नमो नमः।

६. ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति गंगे दयति नमो हुं फट्।

७. ॐ नमः शिवायै नारारयण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा। ॥

॥ गंगाभद्रमण्डले देवता आवाहनम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर गंगा का आवाहन करे। अथवा गंगा यंत्र बनाये। षट्कोण, अष्टदल के बाहर भूपूर बनाकर गंगा यंत्र बनाये। अथवा अगर सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर गंगा यंत्र रखें यंत्र नहीं हो तो यंत्र की कल्पना कर पूजन करे। **जयादि नव पीठ शक्तियों** का पूजन करे।

यथा- **ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्र्यै नमः, ॐ अघोरायै नमः। मध्ये ॐ मंगलायै नमः।**

त्रिकोण मध्य में गंगाजी का ध्यान करे। (गंगा जी की शीशी लायी हुई हो तो उसे भद्रमण्डल पर रखें)

उत्फुल्लामलपुण्डरीक रुचिरा कृष्णेश विध्यात्मिका,
कुंभोष्टाभयतोयजा विदधती श्वेताम्बरालंकृता ।
हृष्टास्या शशिशेखराखिल नदीशोणादिभिः सेविता,
ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकैः॥

ॐ इमं में गंगे श्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके। अध क्षय करे देवि चन्द्रचूड़ प्रियेऽनघे। निजरूप समासाद्य ह्यागच्छ मम सन्निधोभव।
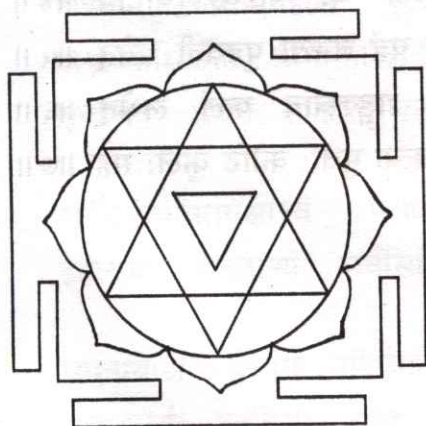
॥ गंगा यन्त्रम् ॥

॥ अथ श्री गंगायंत्रार्चनम् ॥

षट्कोणे- **ॐ नमः हृदयाय नमः। ॐ शिवायै शिरसे स्वाहा। ॐ नारायण्यै शिखायै वषट्। ॐ दशहरायै कवचाय हुँ। ॐ गंगायै नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।**

अष्टदले- **ॐ रुद्राय नमो रुद्रमावाहयामि। ॐ हरये नमः, हरि.। ॐ ब्रह्मणे नमो, ब्रह्मणं.। ॐ सूर्याय नमो सूर्यम। ॐ हिमाचलाय नमो, हिमाचलं.। ॐ मैनायै नमः, मैनाय.। ॐ भागीरथाय नमो, भागीरथम्.। ॐ अपांपतये नमः अपांपति आवाहयामि।**

अष्टदल मध्यै- **ॐ नंदिन्यै नमः, नन्दीय आस्था.। ॐ नलिन्यै नमः।**

ॐ जाह्नव्यै नमः। ॐ मालत्यै नमः। ॐ मलापहन्त्र्यै नमः। ॐ विष्णुपादाब्जसंभूत्यै नमः। ॐ त्रिपथगामिन्यै नमः। ॐ भागीरथ्यै नमः।

अष्टदलाग्रे- ॐ मीनाय नमो मीन.। ॐ कूर्माय नमः, कूर्म.। ॐ मण्डूकाय नमो, मंडूकम्। ॐ मकराय नमो, मकरम्.। ॐ हंसाय नमो, हंसम्.। कारंडाय नमः, कारंडम्.। ॐ चक्रवाजकाय नमः चक्रवाजकम्.। ॐ सारसाय नमः। सारसम्.॥

अष्टदलाग्रवहिः- ॐ भीष्मादि अष्टगंगापुत्रेभ्यो नमः आ. स्था.।

भूपुरे - परिधि में इन्द्रादि दशदिक्पालों का सायुध आवाहन करें।

॥ श्रीगङ्गा कवचम् ॥

गङ्गा अष्टाक्षर मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं गङ्गायै स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

ददर्श पुरतो गङ्गां द्विभुजां मकरासनाम् ।
कुन्देन्दु शङ्ख धवलां सर्वाभरण भूषिताम् ॥

विनियोग :- ॐ गङ्गायै नमः। ॐ अस्य श्रीगङ्गा कवचस्य श्रीविष्णुः ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीगङ्गा देवता। चतुर्दश पुरुषोद्धारणार्थ पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :- श्रीविष्णु ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीगङ्गा देवतायै नमः हृदि। चतुर्दश पुरुषोद्धारणार्थ पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ द्रव्यरूपा महाभागा स्नाने च तर्पणेऽपि च । अभिषेके पूजने च पातु मां शुक्लरूपिणी ॥१॥
विष्णु पादप्रसूताऽसि वैष्णवी नामधारिणी । पाहि मां सर्वतो रक्षेत् गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥२॥
मन्दाकिनी सदा पातु देहान्ते स्वर्ग वल्लभा । अलक नन्दा च वामभागे पृथिव्यां या तु तिष्ठति ॥३॥
भोगवती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा । पञ्चाक्षरमिमं मन्त्रं यः पठेच्छृणुयादपि ॥४॥
रोगी रोगात् प्रमुच्येत् बद्धो मुच्येत बन्धनात् । गर्भिणी जनयेत् पुत्रं बन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥५॥
गङ्गा स्मरण मात्रेण निष्पापो जायते नरः । यः पठेद् गृहमध्ये तु गङ्गास्नान फलं लभेत् ॥६॥
स्नान काले पठेद् यस्तु शतकोटि फलं लभेत् । यः पठेत् प्रयतो भक्त्या मुक्तः कोटि कुलैः सह ॥७॥

॥ इति श्रीविष्णु यामलोक्त श्रीगङ्गा कवचम् ॥

॥ कालिन्दि तंत्रम् ॥

गर्गाचार्य संहितायां माधुर्यखण्डे-

॥ श्रीनारद उवाच ॥

व्रजेशो हि पुराधीशो गोपो नन्दो धनी महान् ।
तद्गृहं मंगलो गत्वा कुटुंबभरणाक्षमः ।
अदात्सहस्त्रशस्तस्मै पोषणार्थं स्वकन्यकाः ॥१॥

जाता मत्स्यवरात्तास्तु समुद्रे गोपकन्यकाः । तथाऽन्याश्चात्रि वाचापि पृथिव्या दोहनान्नृप ॥२॥
बर्हिष्मतीपुरंध्र्यो या जाता जातिस्मराः पराः । तथान्याप्सरसोऽभूवन् वरान्नारायणस्य च ॥३॥
तथा सुतलवासिन्यो वामनस्य वरात्स्त्रियः । तथा नागेन्द्रकन्याश्च जाताः शेषवरात्परात् ॥४॥
ताभ्यो दुर्वाससा दत्तं कृष्णापंचांगमद्भुतम् । तेन सम्पूज्य यमुनां वव्रिरे श्रीपतिं वरम् ॥५॥
एकदा श्रीहरिस्ताभिर्वृन्दारण्ये मनोहरे । यमुना निकटे दिव्ये पुंस्कोकिल मधुव्रते ॥६॥
मधुपध्वनि संयुक्ते कूजत्कोकिलसागरे । मधुमासे मन्दवायौ वसंतलतिकावृते ॥७॥
दोलोत्सवं समारेभे हरिर्मदनमोहनः । कदम्बवृक्षे रहसि कल्पवृक्षमनोहरे ॥८॥
कालिन्दीजल कल्लोल कोलाहल समाकुले । सद्दोलाखेलनं चक्रुस्ता गोप्यः प्रेमविह्वलाः ॥९॥
राधया कीर्तिसुधया चन्द्रकोटिप्रकाशया । रेजे वृन्दावने कृष्णो यथा रत्या रतीश्वरः ॥१०॥
एवं प्राप्ताश्च याः सर्वाः श्रीकृष्णं नन्दनन्दनम् । परिपूर्णतमं साक्षात्तासां किं वर्ण्यते तपः ॥११॥
नागेन्द्रकन्यकाः सर्वाश्चैत्रमासे मनोहरे । बलभद्रं हरिं प्राप्ताः कृष्णातीरे तु ताः शुभाः ॥१२॥
इदं मया ते कथितं गोपीनां चरितं शुभम् । सर्वपापहरं पुण्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥१३॥

॥ बहुलाश्व उवाच ॥

यमुनायाश्च पंचांगं दत्तं दुर्वाससा मुने । गोपीभ्यो येन गोविन्दः प्राप्तस्तद् ब्रूहि मां प्रभो ॥१४॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

अत्रैवोदाहरंतीममितिहासं पुरातनम् । यस्य श्रवणमात्रेण पापहानिः परा भवेत् ॥१५॥
अयोध्याधिपतिः श्रीमान्मान्धाता राजसत्तमः । मृगयां विचरन् प्राप्तः सौभरेराश्रमं शुभम् ॥१६॥
वृन्दावने स्थितं साक्षात्कृष्णातीरे मनोहरे । नत्वा जामातरं राजा सौभरिं प्राहमानदः ॥१७॥

॥ मान्धातोवाच ॥

भगवन्सर्ववित्साक्षात्त्वं परावरवित्तमः । लोकानां तमसांधानां दिव्यसूर्य इवापरः ॥१८॥
इहलोके भवेद्राज्यं सर्वसिद्धि समन्वितम् । अमुत्र कृष्णसारूप्यं येन स्यात्तद्वदाशु मे ॥१९॥

॥ सौभरिरुवाच ॥

यमुनायाश्च पंचांगं वदिष्यामि तवाग्रतः । सर्वसिद्धिकरं शश्वत्कृष्ण सारूप्यकारणम् ॥२०॥
यावत्सूर्य्ये उदेतिस्म यावच्च प्रतितिष्ठति । तावद्राज्यप्रदं चात्र श्रीकृष्णवशकारकम् ॥२१॥

कवचं च स्तवं नाम्नः सहस्त्रं पटलं तथा । पद्धतिं सूर्यवंशेन्द्र पंचांगानि बिदुर्बुधाः ॥२२॥

तत्रादौ यमुना पटल प्रारंभः

॥ मान्धातोवाच ॥

कृष्णायाः पटलं पुण्यं कामदं पद्धतिं तथा । वद मां मुनि- शार्दूल त्वं साक्षाज्ज्ञानशेवधिः ॥१॥

॥ सौभरिरुवाच ॥

पटलं पद्धतिं वक्ष्ये यमुनाया महामते । कृत्वा श्रुत्वाऽथ जप्त्वा वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥२॥

एकादशाक्षर मंत्रः-(मन्त्रो यथा)- **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्दी देव्यै नमः।** इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः।

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीकालिन्दी मन्त्रस्य सौभरिः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीयमुना देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीकलिन्द- नन्दिनी प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ सौभरि ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, श्रीयमुना देवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।**

करन्यासः- **ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। कालिन्दी देव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। नमः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।**

हृदयादि षडङ्गन्यासः- **ॐ हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। श्रीं शिखायै वषट्। क्लीं कवचाय हुम्। कालिन्दी देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। नमः अस्त्राय फट्। इति हृदयादि षडङ्गन्यासः।**

॥ ध्यानम् ॥

ॐ श्यामाम्भोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमञ्जीर कूजत्कांची-
-केयूरयुक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे ।
भ्राजच्छ्रील नीलवस्त्रां स्फुरदमल चलद्धारभारां मनोज्ञां
ध्याये मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरण चयोद्दीप्तदीपाभिरामाम् ॥१॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

ध्यान करने के पश्चात् रचित पीठादि पर सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित कर - **ॐ मं मंडूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः** इस मंत्र से पीठदेवताओं की पूजा करके मध्य में देवी सिंहासन स्थापित करें तत् पश्चात् स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र पत्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से उस पर अभ्यङ्ग करके अग्न्युत्तारण मन्त्रोपचारण पूर्वक उस पर दूध एवं जल की धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर देव्यष्टगंध से कर्णिका, षोडशदल भूपुरात्मक यन्त्र को लिखकर **ॐ नमो भगवत्यै कलिन्द नन्दिन्यै सूर्यकन्यायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै पद्मपीठाय नमः।**

इस मंत्र से पुष्पाद्यासन देकर एवं सिंहासन पर स्थापित कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें। तत् पश्चात् कर्णिका के मध्य में श्रीकृष्ण के साथ कालिन्दी का ध्यान करें-

"**ॐ नमो भगवत्यै कलिन्द नन्दिन्यै सूर्यकन्ययायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा**"। इस मंत्र से आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदानान्त उपचारों के साथ पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण की पूजा करें एवं पुष्पांजलि देकर मूलमंत्र का उच्चारण करके-

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि यमुने परिवारार्चनाय मे ॥

इस मंत्र से पुष्पांजलि देवें, इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा प्रारंभ करें। त्रिकोण मध्य में देवी का आवाहन करें। तत् पश्चात् पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से षोडश दलों में-
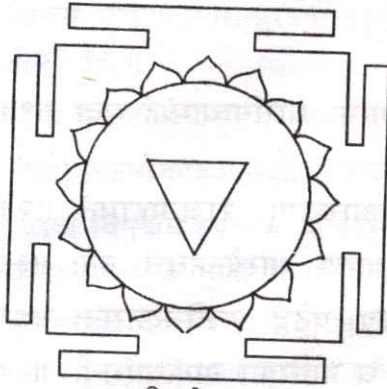
॥ कालिन्दी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – (षोडश दले) **ॐ जाह्नव्यै नमः। जाह्नवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥ ॐ विरजायै नमः। विरजा श्रीपा.॥ ॐ कृष्णायै नमः। कृष्णा श्रीपा.॥ ॐ चन्द्रभागायै नमः। चन्द्रभागा श्रीपा.॥ ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वती श्रीपा. ॐ गोमत्यै नमः। गोमती श्रीपा.। ॐ कौशिक्यै नमः। कौशिकी श्रीपा.। ॐ वेण्यै नमः। वेणी श्रीपा.॥ ॐ सिन्धवे नमः। सिन्धु श्रीपा.॥ ॐ गोदावर्यै नमः। गोदावरी श्रीपा.॥ ॐ वेदस्मृत्यै नमः। वेदस्मृति श्रीपा.॥ ॐ वेत्रवत्यै नमः। वेत्रवती श्रीपा.॥ ॐ शतद्रवै नमः। शतद्रु श्रीपा.॥ ॐ सरयवै नमः। सरयू श्रीपा.॥ ॐ ऋषिकुल्यायै नमः। ऋषिकुल्या श्रीपा.॥ ॐ ककुद्मत्यै नमः। ककुद्मती श्रीपा.॥**

इन मंत्रों से सोलह देवताओं की पूजा करें। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

यह मंत्र पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विषेश अर्घ से बिन्दु छोडकर "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**" कहें।

द्वितीयावरणम् – इसके बाद भूपूर के भीतर चारों दिशाओं में पूर्वादिक्रम से- **ॐ वृन्दावनाय नमः। वृन्दावन श्रीपा.। ॐ गोवर्द्धनाय नमः। गोवर्द्धन श्रीपा.। ॐ वृन्दायै नमः। वृन्दा श्रीपा.। ॐ तुलस्यै नमः। तुलसी श्रीपा.।**

इससे चारों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें । इति द्वितीयावरणम्।

तृतीयावरणम् – इसके बाद भूपुर के बारह पूर्वादि क्रम से- **ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ मं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋत्ये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ कुं कुबेराय नमः। ॐ हं ईशानाय नमः।** इन्द्रेशानयोर्मध्ये- **ॐ आं ब्राह्मणे नमः।** वरुणनिर्ऋतिमध्ये- **ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।**

चतुर्थावरणम् – इसके बाद दश दिक्पालों की पूजा करें एवं उनके समीप- **ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पां पाशाय नमः। ॐ अं अङ्कुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः।**

इससे अस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा और धूपदान से नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण ग्यारह लाख जप का है। तत्तद्दशांश से होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मंत्र सिद्ध होता है और मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है।

ग्यारह लाख मंत्र का जप करने पर मंत्र की सिद्धि होती है इसके बाद मनुष्य जो कामना करता है उसे वह सब स्वतः प्राप्त होता है। जब तक पुरश्चरण पूर्ण न हो तब तक साधक ब्रह्मचारी एवं मौनव्रती होकर जप करें। यव का भोजन करें। भूमि पर सोये व फलों का भोजन करें, मन को वश में रखें। काम, क्रोध, लोभ, मोह व द्वेष को छोड़कर साधक परम भक्ति से वर्तमान ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर कालिन्दी देवी का ध्यान करके सूर्योदय बेला में नदी में स्नान करें। मध्याह्न व

साँयकाल भी संध्या वन्दन में तत्पर रहें। नियम के समाप्त हो जाने पर कालिन्दी के किनारे रहते हुए ब्राह्मणों की पूजा करके गन्ध-पुष्पों के साथ उन्हें उत्तम भोजन देकर वस्त्र, आभूषण, पात्र एवं दक्षिणा देवें। इसके बाद निश्चित रूप से सिद्धि प्राप्त होती है।

॥ श्री यमुना कवचम् ॥

॥ मान्धातोवाच ॥

यमुनायाः कृष्णराज्ञाः कवचं सर्वतोऽमलम् । देहि मह्यं महाभाग धारयिष्याम्यहं सदा ॥१॥

॥ सौभरिरुवाच ॥

यमुनायाश्च कवचं सर्वरक्षाकरं नृणाम् । चतुष्पदार्थदं साक्षाच्छृणु राजन्महामते ॥२॥
कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुण्डरीकदलेक्षणाम् । रथस्थां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत्कवचं ततः ॥३॥
स्नातः पूर्वमुखो मौनी कृतसंध्यः कुशासने । कुशैर्बद्धशिखो विप्रः पठेद्वै स्वस्तिकासनः ॥४॥
यमुना मे शिरः पातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा । श्यामा भ्रूभंगदेशं च नासिकां नाकवासिनी ॥५॥
कपोलौ पातु मे साक्षात्परमानन्दरूपिणी । कृष्णवामांससंभूता पातु कर्णद्वयं मम ॥६॥
अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका । यमस्वसा कंधरां च हृदयं मे महानदी ॥७॥
कृष्णप्रिया पातु पृष्ठं तटिनी मे भुजद्वयम् । श्रोणीतटं च सुश्रोणी कटिं मे चारुदर्शना ॥८॥
उरुद्वयं तु रंभोरूर्जानुनी अधिमेदिनी । गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापपहारिणी ॥९॥
अंतर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च । समंतात्पातु जगतः परिपूर्णतमप्रिया ॥१०॥
इदं श्रीयमुनायाश्च कवचं परमाद्भुतम् । दशवारं पठेद्भक्त्या निर्धनो धनवान् भवेत् ॥११॥
त्रिभिर्मासैः पठेद्धीमान् ब्रह्मचारी मिताशनः । सर्वराज्याधिपत्यं च प्राप्नोति नात्र संशयः ॥१२॥
दशोत्तरशतं नित्यं त्रिमासावधि भक्तितः । यः पठेत्प्रयतो भूत्वा तस्य किं किं न जायते ॥१३॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वतीर्थफलंलभेत् । अंते व्रजेत्परं धाम गोलोकं योगिदुर्लभम् ॥१४॥

॥ इति श्रीमद्गर्गाचाऽर्यः संहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनाकवचं समाप्तम् ॥

॥ श्री यमुनास्तवम् ॥

॥ मान्धातोवाच ॥

यमुनायाः स्तवं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं परम् । सौभरे मुनि शार्दूल वद मां कृपया त्वरन् ॥१॥

॥श्रीसौभरिरुवाच ॥

मार्तण्डकन्यकायास्तु स्तवं शृणु महामते । सर्वसिद्धिकरं भूमौ चातुर्वर्ग्यफलप्रदम् ॥२॥

ॐ कृष्णवामांसंभूतायै कृष्णायै सततं नमः । नमः श्रीकृष्णरूपिण्यै कृष्णे तुभ्यं नमो नमः ॥३॥

यः पापपंकांबु- कलंककुत्सितः कामी कुधीः सत्सु कलिं करोति हि । वृन्दावनं धाम ददाति तस्मै

नदन्मिलिन्दारिकलिन्दनन्दिनी ॥४॥

कृष्णे साक्षात्कृष्णरूपा त्वमेव वेगावर्ते वर्तते मत्स्यरूपी । ऊर्मावूर्मौ कूर्मरूपी सदा ते बिंदौ बिंदौ भाति गोविंददेवः ॥५॥

वन्दे लीलावतीं त्वां सघनघननिभां कृष्णवामांसभूतां वेगं वै वैरजाख्यं सकलजलचयं खण्डयंतीं बलात्स्वात्।

छित्त्वा ब्रह्माण्डमारात्सुरनगरनगान् गंडशैलादिदुर्गान् भित्त्वा भूखण्डमध्ये तटिनि वृतवतीमूर्मिमालां प्रयांतीम् ॥६॥

दिव्यं कौ नामधेयं श्रुतमथ यमुने दंडयत्यद्रितुल्यं पापव्यूहं त्वखंडं वसतु मम गिरां मंडलेऽनुक्षणं तत् ।

दंड्यांश्चाकार्य दण्ड्यान्सकृदपि वचसा खंडितं यद्गृहीतं भ्रातुर्मार्तण्डसूनोररतिपरिदृढस्ते प्रचण्डोऽतिदंडः ॥७॥

रज्जुर्वा विषयांधकूपतरणे पापाखुदर्वीकरीवेण्युष्णिक् च विराजमूर्तिशिरसो मालास्ति वा सुन्दरी । धन्यं भाग्यमतः परं भुवि नृणां यात्रादिकृद्दुल्लभा गोलोकेऽप्यतिदुर्लभाति सुभगा भात्यद्वितीया नदी ॥८॥

गोपीगोकुलगोपकेलिकलिते कालिन्दि कृष्णप्रभे त्वत्कूले जललोलगोलविचलत्कल्लोलकोलाहलः । त्वत्कांतारकुतूहलालिकुल कृज्झंकारकेकाकुलः कूजत्कोकिलसंकुलो व्रजलतालंकारभृत्पातु माम् ॥९॥

भवंति जिह्वास्तनुरोमतुल्या गिरो यदा भूसिकता इव स्युः । तदप्यलं यांति न ते गुणांतं संतो महांतः किल शेषतुल्याः ॥१०॥

कलिन्दगिरिनन्दिनीस्तव उषस्ययं वा परः श्रुतं च यदि पाठितो भुवि तनोति सन्मंगलम् । जनोऽपि यदि धारयेत्किल पठेच्च यो नित्यशः स याति परमं पदं निज-निकुंजलीलावृतम् ॥११॥

॥ इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनास्तवराजः समाप्तः ॥

॥ यमुना सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ मान्धात्तोवाच ॥

नाम्नां सहस्त्रं कृष्णायाः सर्वसिद्धिकरं परम् । वद मां मुनिशार्दूल त्वं सर्वज्ञो निरामयः ॥१॥

॥ सौभरिरुवाच ॥

नाम्नां सहस्त्रं कालिन्द्या मान्धातस्ते वदाम्यहम् । सर्वसिद्धिकरं दिव्यं श्रीकृष्णवशकारकम् ॥२॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीकालिन्दी सहस्त्रनाम स्तोत्रमंत्रस्य सौभरिर्ऋषिः । श्रीयमुना देवता । अनुष्टुप्छंदः । मायाबीजमिति कीलकम् । रमाबीजमिति शक्तिः । श्रीकलिन्दनन्दिनीप्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ श्यामामंभोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमंजीर-
कूजत्कांचीकेयूरयुक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे ।
भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रां स्फुरदमलचलद्धारभारां मनोज्ञां
ध्यायेन्मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरण-चयोद्दीप्तदीपाभिरामाम् ॥३॥

ॐ कालिन्दी यमुना कृष्णा कृष्णरूपा सनातनी । कृष्णवामांससंभूता परमानन्दरूपिणी ॥४॥
गोलोकवासिनी श्यामावृन्दावनविनोदिनी । राधासखी रासलीला रासमण्डलमण्डिता ॥५॥
निकुंजमाधवी वल्ली रङ्गवल्लीमनोहरा । श्रीरासमण्डली भूता यूथीभूता हरिप्रिया ॥६॥
गोलोकतटिनी दिव्या निकुंजतलवासिनी । दीर्घोर्मिवेगगंभीरा पुष्पपल्लववासिनी ॥७॥
घनश्यामा मेघमाला बलाका पद्ममालिनी । परिपूर्णतमा पूर्णा पूर्णब्रह्मप्रिया परा ॥८॥
महावेगवती साक्षान्निकुंजद्वारनिर्गता । महानदी मन्दगतिर्विरजा वेगभेदिनी ॥९॥
अनेकब्रह्माण्डगता ब्रह्मद्रवसमाकुला । गङ्गा मिश्रा निर्मलाभा निर्जला सरितां वरा ॥१०॥
रत्नबद्धोभयतटा हंसपद्मादिसंकुला । नदी निर्मलपानीया सर्वब्रह्माण्डपावनी ॥११॥
वैकुण्ठपरिखीभूता परिखा पापहारिणी । ब्रह्मलोकागता ब्राह्मी स्वर्गा स्वर्गनिवासिनी ॥१२॥
उल्लसंती प्रोत्पतंती मेरुमालामहोज्वला । श्रीगंगांभः शिखरिणी गण्डशैलविभेदिनी ॥१३॥
देशान्पुनंती गच्छंती महती भूमिमध्यगा । मार्तण्डतनुजा पुण्या कलिन्दगिरिनन्दिनी ॥१४॥
यमस्वसा मन्दहासा सुद्विजा रचिताम्बरा । नीलाम्बरा पद्ममुखी चरंती चारुदर्शना ॥१५॥
रम्भोरूः पद्मनयना माधवी प्रमदोत्तमा । तपश्चरंती सुश्रोणी कूजन्नूपुरमेखला ॥१६॥
जलस्थिता श्यामलांगी खाण्डवाभा विहारिणी । गाण्डीविभाषिणी वन्या श्रीकृष्णाम्बरमिच्छती ॥१७॥
द्वारकागमना राज्ञी पट्टराज्ञी परंगता । महाराज्ञी रत्नभूषा गोमतीतीरचारिणी ॥१८॥
स्वकीया स्वसुखा स्वार्था स्वीयकार्यार्थसाधिनी । नवलांगाऽबला मुग्धा वरांगा वामलोचना ॥१९॥
अज्ञातयौवनाऽदीना प्रभा कांतिर्द्युतिश्छविः । सोमाभा परमा कीर्तिः कुशला ज्ञातयौवना ॥२०॥
नवोढा मध्यगा मध्या प्रौढिः प्रौढा प्रगल्भका । धीराऽधीरा धैर्य्यधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कुलांगना ॥२१॥
क्षणप्रभा चंचलार्चा विद्युत्सौदामिनी तडित् । स्वाधीनपतिका लक्ष्मीः पुष्टा स्वाधीनभर्तृका ॥२२॥
कलहांतरिता भीरुरिच्छा प्रोत्कंठिताकुला । कशिपुस्था दिव्यशय्या गोविन्दहृतमानसा ॥२३॥
खण्डिताखण्डशोभाढ्या विप्रलब्धाभिसारिका । विरहार्ता विरहिणी नारी प्रोषितभर्तृका ॥२४॥
मानिनी मानदा प्राज्ञा मन्दारवनवासिनी । झङ्कारिणी झणत्कारी रणन्मंजीरनूपुरा ॥२५॥
मेखला मेखलाकांची श्रीकांची कांचनामयी । कंचुकी कंचुकमणिः श्रीकंठाढ्या महामणिः ॥२६॥
श्रीहारिणी पद्महरा मुक्ता मुक्ता फलार्चिता । रत्नकंकणकेयूरा स्फुरदंगुलिभूषणा ॥२७॥
दर्पणा दर्पणीभूता दुष्टदर्पविनाशिनी । कंबुग्रीवा कंबुधरा ग्रैवेयक विराजिता ॥२८॥
ताटंकिनी दंतधरा हेमकुण्डलमण्डिता । शिखाभूषा भालपुष्पा नासामौक्तिकशोभिता ॥२९॥
मणिभूमिगता देवी रैवताद्रिविहारिणी । वन्दावनगता वृन्दा वृन्दारण्यनिवासिनी ॥३०॥
वृन्दावनलता माध्वी वृन्दारण्यविभूषणा । सौन्दर्यलहरी लक्ष्मीर्मधुरा- तीर्थवासिनी ॥३१॥
विश्रांतवासिनी काम्या रम्या गोकुलवासिनी । रमणस्थल- शोभाढ्या महावन- महानदी ॥३२॥

प्रणता प्रोन्नता पुष्टा भारती ·भारतार्च्चिता । तीर्थराज- गतिर्गात्रा गंगासागरसंगमा ॥३३॥
सप्ताब्धिभेदिनी लोला सप्तद्वीपगता बलात् । लुठंती शैलभिद्यंती स्फुरंती वेगवत्तरा ॥३४॥
कांचनी कांचनीभूमिः कांचनीभूमिभाविता । लोकदृष्टिर्लोकलीला लोकालोकाचलार्चिता ॥३५॥
शैलोद्गता स्वर्गगता स्वर्गार्च्या स्वर्गपूजिता । वृन्दावन वनाध्यक्षा रक्षा कक्षा तटी पटी ॥३६॥
असिकुण्डगता कच्छा स्वच्छन्दोच्छलिताद्रिजा । कुहरस्था रयप्रस्था प्रस्था शांतेतरातुरा ॥३७॥
अंबुच्छटासीकराभा दर्दुरा दर्दुरीधरा । पापांकुशा पापसिंही पापद्रुमकुठारिणी ॥३८॥
पुण्यसंधा पुण्यकीर्तिः पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी । मधोर्वन - नदीमुख्या तुला तालवनस्थिता ॥३९॥
कुमुद्वननदी कुब्जा कुमुदांभोजवर्द्धिनी । प्लवरूपा वेगवती सिंहसर्वादिवाहिनी ॥४०॥
बहुली बहुदा बह्वी बहुला वनवन्दिता । राधा कुण्डकुलाराध्या कृष्णा कुण्डजलाश्रिता ॥४१॥
ललिता कुण्डगा घंटा विशाखा कुण्डमण्डिता । गोविन्दकुण्डनिलया गोपकुंडतरंगिणी ॥४२॥
श्रीगंगा मानसीगंगा कुसुमांबरभाविनी । गोवर्धिनी गोधनाढ्या मयूरी वरवर्णिनी ॥४३॥
सारसी नीलकंठाभा कूजत्कोकिलपोतकी । गिरिराजप्रभू- र्भूरिरातपत्रातपत्रिणी ॥४४॥
गोवर्द्धनांका गोदंती दिव्यौषधिनिधिः श्रुतिः । पारदी पारदमयी नारदी शारदी भृतिः ॥४५॥
श्रीकृष्णचरणांकस्था कामा कामवनांचिता । कामाटवी नन्दिनी च नन्दग्राम-महीधरा ॥४६॥
बृहत्सानुद्युतिः प्रोता नन्दीश्वरसमन्विता । काकली कोकिलमयी भांडारकुशकौशला ॥४७॥
लोहार्गलप्रदाकारा काश्मीरवसनावृता । बर्हिषदी शोणपुरी शूरक्षेत्रपुराधिका ॥४८॥
नानाभरणशोभाढ्या नानावर्णसमन्विता । नानानारी कदम्बाढ्या नानावस्त्रविराजिता ॥४९॥
नानालोकगता वीचिर्नानाजलसमन्विता । स्त्रीरत्नं रत्ननिलया ललनारत्नरंजिनी ॥५०॥
रंगिणी रंगभूमाढ्या रंगा रंगमहीरुहा । राजविद्या राजगुह्या जगत्कीर्तिर्घनापहा ॥५१॥
विलोलघंटाकृष्णांगी कृष्णदेहसमुद्भवा । नीलपंकजवर्णाभा नीलपंकजहारिणी ॥५२॥
नीलाभा नीलपद्माढ्या नीलांभोरुहवासिनी । नागवल्ली नागपुरी नागवल्लीदलार्चिता ॥५३॥
ताम्बूलचर्चिता चर्चा मकरन्दमनोहरा । सकेसरा केसरिणी केशपाशाभिशोभिता ॥५४॥
कज्जलाभा कज्जलाक्ता कज्जलीकलितांजना । अलक्तचरणा ताम्रा लालाताम्रकृतांबरा ॥५५॥
सिन्दूरिता लिप्तवाणी सुश्रीः श्रीखण्डमंडिता । पाटीरपंकवसना जटामांसीरुचाम्बरा ॥५६॥
आगर्व्य गरुगंधाक्ता तगराश्रितमारुता । सुगंधितैलरुचिरा कुंतलालिः सुकुंतला ॥५७॥
शकुंतलाऽपांसुला च पातिव्रत्यपरायणा । सूर्यकोटिप्रभा सूर्यकन्या सूर्यसमुद्भवा ॥५८॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशा सूर्यजा सूर्यनन्दिनी । संज्ञा संज्ञासुता स्वेच्छा संज्ञामोदप्रदायिनी ॥५९॥
संज्ञापुत्री स्फुरच्छाया तपंती तापकारिणी । सावर्ण्यानुभवा वेदी वडवा सौख्यदायिनी ॥६०॥
शनैश्चरानुजा कीला चन्द्रवंशविवर्धिनी । चन्द्रवंशवधूश्चन्द्रा चन्द्रावलि सहायिनी ॥६१॥

चन्द्रावती चन्द्रलेखा चन्द्रकांतानुगांशुका । भैरवी पिंगलाशंकी लीलावत्यागरीमयी ॥६२॥
धनश्रीदेवगांधारी स्वर्मणिर्गुणवर्द्धिनी । व्रजमल्लार्यंधकरी विचित्रा जयकारिणी ॥६३॥
गांधारी मंजरी टोडी गुर्ज्जर्यासावरी जया । कर्णाटी रागिणी गौडी वैराटी गारवाटिका ॥६४॥
चतुश्चन्द्रकला हेरी तैलंगी विजयावती । ताली तालस्वरा गानक्रिया मात्राप्रकाशिनी ॥६५॥
वैशाखी चंचला चारुर्माचारी घुंघटी घटा । वैरागरी सोरठी सा कैदारी जलधारिका ॥६६॥
कामाकरश्रीकल्याणी गौडकल्याणमिश्रिता । रामसंजीवनी हेला मन्दारी कामरूपिणी ॥६७॥
सारंगी मारुती होढा सागरी कामवादिनी । वैभासी मंगला चान्द्री रासमंडलमंडना ॥६८॥
कामधेनुः कामलता कामदा कमनीयका । कल्पवृक्षस्थली स्थूला क्षुधा सौधनिवासिनी ॥६९॥
गोलोकवासिनी सूभ्रूयोष्टिभृद्द्वारपालिका । श्रृंगारप्रकरा श्रृंगा स्वच्छाक्षय्योपकारिका ॥७०॥
पार्षदा सुमुखी सेव्या श्रीवृन्दावनपालिका । निकुंजभृत्कुंजपुंजा गुंजाभरणभूषिता ॥७१॥
निकुंजवासिनी प्रेष्या गोवर्द्धनतटीभवा । विशाखा ललितारामा नीरुजा मधुमाधवी ॥७२॥
एकानैकसखी शुक्ला सखीमध्या महामनाः । श्रुतिरूपा ऋषिरूपा मैथिलाः कौशलाः स्त्रियः ॥७३॥
अयोध्यापुरवासिन्यो यज्ञसीताः पुलिंदकाः । रमा वैकुण्ठवासिन्यः श्वेतद्वीपसखीजनाः ॥७४॥
उर्ध्ववैकुण्ठवासिन्यो दिव्याजितपदाश्रिताः । श्रीलोकाचलवासिन्यः श्रीसख्यः सागरोद्भवाः ॥७५॥
दिव्या अदिव्या दिव्यांगा व्याप्तास्त्रिगुणवृत्तयः । भूमिगोप्यो देवनार्य्यो लता ओषधिवीरुधः ॥७६॥
जालंधर्य्यः सिंधुसुताः पृथुबर्हिष्मतीभवाः । दिव्यांबरा अप्सरसः सौतला नागकन्यकाः ॥७७॥
परंधाम परंब्रह्म पौरुषा प्रकृतिः परा । तटस्था गुणभूर्गीता गुणागुणमयी गुणा ॥७८॥
चिद्घना सदसन्माला दृष्टिर्दृश्या गुणाकरा । महत्तत्त्वमहंकारो मनोबुद्धिः प्रचेतना ॥७९॥
चेतोवृत्तिः स्वांतरात्मा चतुर्द्धा चतुरक्षरा । चतुर्व्यूहश्चतुर्मूर्ति- र्व्योम-वायुरदो जलम् ॥८०॥
मही शब्दो रसो गंधः स्पर्शो रूपमनेकधा । कर्मेन्द्रियं कर्ममयी ज्ञानं ज्ञानेन्द्रियं द्विधा ॥८१॥
त्रिधाधिभूतमध्यात्ममधि दैवमधिस्थितम् । ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः सर्वदेवाधिदेवता ॥८२॥
तत्त्वसंघा विराण्मूर्तिर्धारणा धारणामयी । श्रुतिः स्मृतिर्वेदमूर्तिः संहिता गर्गसंहिता ॥८३॥
पाराशरी सैव सृष्टिः पारहंसी विधातृका । याज्ञवल्की भागवती श्रीमद्भागवतार्चिता ॥८४॥
रामायणमयी रम्या पुराणपुरुषप्रिया । पुराणमूर्तिः पुण्यांगी शास्त्रमूर्तिर्महोन्नता ॥८५॥
मनीषा धिषणा बुद्धिर्वाणी धीः शेमुषी मतिः । गायत्री वेदसावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मलक्षणा ॥८६॥
दुर्गापर्णा सती सत्या पार्वती चंडिकांबिका । आर्या दाक्षायणी दाक्षी दक्षयज्ञविघातिनी ॥८७॥
पुलोमजा शचीन्द्राणी वेदी देववरार्पिता । वाधुना धारिणी धन्या वायवी वायुवेगगा ॥८८॥
यमानुजा संयमनी संज्ञाच्छाया स्फुरद्द्युतिः । रत्नदेवी रत्नवृन्दा तारा तरणिमण्डला ॥८९॥
रुचिः शांतिः क्षमा शोभा दया दक्षा द्युतिस्त्रपा । तलतुष्टिर्विभा पुष्टिः संतुष्टिः पुष्टभावना ॥९०॥

चतुर्भुजा चारुनेत्रा द्विभुजाष्टभुजा बला। शंखहस्ता पद्महस्ता चक्रहस्ता गदाधरा ॥९१॥
निषंगधारिणी चर्मखड्गपाणिर्धनुर्धरा। धनुष्टंकारिणी योद्ध्री दैत्योद्भटविनाशिनी ॥९२॥
रथस्था गरुडारूढा श्रीकृष्णहृदयस्थिता। वंशीधरा कृष्णवेषा स्रग्विणी वनमालिनी ॥९३॥
किरीटधारिणी याना मन्दा मन्दगतिर्गतिः। चन्द्रकोटिप्रतीकाशा तन्वी कोमलविग्रहा ॥९४॥
भैष्मी भीष्मसुता भीमा रुक्मिणी रुक्मरूपिणी। सत्यभामा जांबवती सत्या भद्रा सुदक्षिणा ॥९५॥
मित्रवृन्दा सखीवृन्दा वृन्दारण्य ध्वजोर्ध्वगा। शृंगारकारिणी शृंगा शृंगभूः शृंगदाशुगा ॥९६॥
तितिक्षेक्षा स्मृतिः स्पर्धा स्पृहा श्रद्धा स्वनिर्वृतिः। ईशा तृष्णाभिधा प्रीतिर्हिता याञ्चाक्लमा कृषिः ॥९७॥
आशा निद्रा योगनिद्रा योगिनी योगदायुगा। निष्ठा प्रतिष्ठा समितिः सत्त्वप्रकृतिरुत्तमा ॥९८॥
तमःप्रकृतिर्दुर्मर्षा रजःप्रकृतिरानतिः। क्रियाऽक्रियाकृतिर्ग्लानिः सात्त्विक्याध्यात्मिकी वृषा ॥९९॥
सेवा शिखामणि- र्वृद्धिराहूतिः सुमतिर्द्युभूः। राज्जुर्द्विदाम्नी षड्वर्गा संहिता सौख्यदायिनी ॥१००॥
मुक्तिः प्रोक्तिर्देशभाषा प्रकृतिः पिंगलोद्भवा। नागभावा नागभूषा नागरी नगरी नगा ॥१०१॥
नौर्नौका भवनौर्भाव्या भवसागरसेतुका। मनोमयी दारुमयी सैकती सिकतामयी ॥१०२॥
लेख्या लेप्या मणिमयी प्रतिमा हेमनिर्मिता। शैला शैलभवा शीला शीकारामा चलाचला ॥१०३॥
अस्थिता स्वस्थिता तूली वैदिकी तांत्रिकी विधिः। संध्या संध्याभ्रवसना वेदसंधिः सुधामयी ॥१०४॥
सायंतनी शिखावेध्या सूक्ष्मा- जीवकला कृतिः। आत्मभूता भाविताऽण्वी प्रह्वा कमलकर्णिका ॥१०५॥
नीराजनी महाविद्या कंदली कार्यसाधिनी। पूजा प्रतिष्ठा विपुला पुनंती पारलौकिकी ॥१०६॥
शुक्लशुक्तिर्मौक्तिका च प्रतीतिः परमेश्वरी। विराजोष्णिग् विराट् वेणी वेणुका वेणुनादिनी ॥१०७॥
आवर्तिनी वार्तिकदा वार्त्ता वृत्तिर्विमानगा। सासाढ्यरासिनी सासी रासमण्डलमंडली ॥१०८॥
गोपगोपीश्वरी गोपी गोपीगोपालवंदिता। गोचारिणी गोपनदी गोपानन्दप्रदायिनी ॥१०९॥
पशव्यदा गोपसेव्या कोटिशो गोगणावृता। गोपानुगा गोपवती गोविंदपदपादुका ॥११०॥
वृषभानुसुता राधा श्रीकृष्णवशकारिणी। कृष्णप्राणाधिका शश्वद्रसिका रसिकेश्वरी ॥१११॥
अवटोदा ताम्रपर्णी कृतमाला विहायसी। कृष्णा वेणी भीमरथी तापी रेवा महापगा ॥११२॥
वैयासकी च कावेरी तुंगभद्रा सरस्वती। चन्द्रभागा वेत्रवती गोविंदपदपादुका ॥११३॥
गोमती कौशिकी सिंधुर्बाणगंगातिसिद्धिदा। गोदावरी रत्नमाला गंगा मंदाकिनीबला ॥११४॥
स्वर्णदी जाह्नवी वेला वैष्णवी मंगलालया। बाला विष्णुप्रदीपोक्ता सिंधुसागरसंगता ॥११५॥
गंगासागरशोभाढ्या सामुद्री रत्नदा धुनी। भागीरथी स्वर्धुनी भूः श्रीवामनपदच्युता ॥११६॥
लक्ष्मी रमा रामणीया भार्गवी विष्णुवल्लभा। सीतार्चिर्जानकी माता कलंकरहिता कला ॥११७॥
कृष्णपादाब्जसंभूता सर्वा त्रिपथगामिनी। धरा विश्वंभराऽनंता भूमिर्धात्री क्षमामयी ॥११८॥
स्थिरा धरित्री धरणिरुर्वी शेषफणस्थिता। अयोध्या राघवपुरी कौशिकी रघुवंशजा ॥११९॥

मथुरा माथुरी पंथा यादवी ध्रुवपूजिता । माया पूर्बिल्वनीला द्वार्गंगाद्वारविनिर्गता ॥१२०॥
कुशावर्तमयी ध्रौव्या ध्रुवमण्डलमध्यगा । काशी शिवपुरी शेषा विंध्या वाराणसी शिवा ॥१२१॥
अवंतिका देवपुरी प्रोज्ज्वलोज्जयिनी जिता । द्वारावती द्वारकामा कुशभूता कुशस्थली ॥१२२॥
महापुरी सप्तपुरी नन्दिग्रामस्थलस्थिता । शास्त्रग्रामशिलादित्या शंभलग्राममध्यगा ॥१२३॥
वंशगोपालिनी क्षिप्रा हरिमन्दिरवर्त्तिनी । बर्हिष्मती हस्तिपुरी शक्रप्रस्थनिवासिनी ॥१२४॥
दाडिमी सैंधवी जंबुः पौष्करी पुष्करप्रसूः । उत्पलावर्तगमना नैमिषी नैमिषावृता ॥१२५॥
कुरुजांगलभूः काली हैमवत्यर्बुदी बुधा । शूकरक्षेत्रविदिता श्वेतवाराहधारिता ॥१२६॥
सर्वतीर्थमयी तीर्था तीर्थानां कीर्तिकारिणी । हारिणी सर्वदोषाणां दायिनी सर्वसम्पदाम् ॥१२७॥
वर्द्धिनी तेजसां साक्षाद्गर्भवासनिकृंतनी । गोलोकधामधनिनी निकुंजनिजमंजरी ॥१२८॥
सर्वोत्तमा सर्वपुण्या सर्वसौंदर्य्यशृंखला । सर्वतीर्थोपरिगता सर्वतीर्थाधिदेवता ॥१२९॥
नाम्नांसहस्त्रं कालिन्द्याः कीर्तिदं कामदं परम् । महापापहरं पुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥१३०॥
एकवारं पठेद्रात्रौ चोरेभ्यो न भयं भवेत् । द्विवारं प्रपठेन्मार्गे दस्युभ्यो न भयं क्वचित् ॥१३१॥
द्वितीयां तु समारभ्य पठेत्पूर्णावधिं द्विजः । दशवारमिदं भक्त्या ध्यात्वा देवीं कलिन्दजाम् ॥१३२॥
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात् । गुर्विणी जनयेत्पुत्रं विद्यार्थी पंडितो भवेत् ॥१३३॥
मोहनं स्तंभनं शश्वद्वशीकरणमेव च । उच्चाटनं घातनं च शोषणं दीपनं तथा ॥१३४॥
उन्मादनं तापनं च निधिदर्शनमेव च । यद्यद्वांछति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति मानवः ॥१३५॥
ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी राजन्यो जगतीपतिः । वैश्यो निधिपतिर्भूयाच्छूद्रः श्रुत्वा तु निर्मलः ॥१३६॥
पूजाकाले तु यो नित्यं पठते भक्तिभावतः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवांभसा ॥१३७॥
शतवारं पठेन्नित्यं वर्षावधिमतः परम् । पटलं पद्धतिं कृत्वा स्तवं च कवचं तथा ॥१३८॥
सप्तद्वीप महीराज्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः । निष्कारणं पठेद्यस्तु यमुनाभक्तिसंयुतः ॥१३९॥
त्रैवर्ग्यमेत्य सुकृती जीवन्मुक्तो भवेदिह ॥१४०॥
निजकुंजलीला ललितं मनोहरं कलिन्दजाकूल- लताकदम्बकम् ।
वृन्दावनोन्मत्त- मिलिन्दशब्दितं व्रजेत्स गोलोकमिदं पठेच्च यः ॥१४१॥

॥इति श्रीमद्गर्गाचार्य्यसंहितायां श्रीमाधुर्य्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

॥ इति श्री मिश्र तंत्रं सम्पूर्णम् ॥

ग्रंथ कर्ता वंश परिचय

वंशे ह्यस्मिन् रूपरामो महाभागेषु सत्तमः। स्वर्ण-दीनार-संवृष्ट्या तीर्थेष्वकरदीकृतः ॥ १ ॥ श्री किशनश्च चन्द्राख्यो, 'मिश्र' इत्येव विश्रुतः। विराज मानस् साखूणे, जिलान्तर्जैपुरे स्थितः ॥ २ ॥ सानन्दावसतस्तस्याऽनन्दी लालात्मजोऽभवत्। कथयां कर्मकाण्डे च 'मिश्राख्य' पदवी गतः ॥ ३ ॥ कृष्णवल्लभ शास्त्र्याख्य उपवीतेन दीक्षितः। दुर्गालालाऽभिधस्तस्य तनयाध्यापकः स्मृतः ॥ ४॥ तस्यात्मजो रमेशश्च, चन्द्रोडोभाऽवटंकितः। ग्रन्थान् संकलितान्प्रास्तौ च्वतुश्चन्द्रैरलंकृतान् ॥ ५ ॥ सेवामेवाशयारूढ़ः क्षनतव्योऽयं च सूरिभिः। अनेन विद्या विदुषां स्यामहं ह्यनुकम्पितः ॥ ६ ॥

(उद्गीतकः- **कृष्णवल्लभ शास्त्री**, वेद-साहित्याचार्य एम०ए०, शिक्षा शास्त्री, कचनारिया वाले)
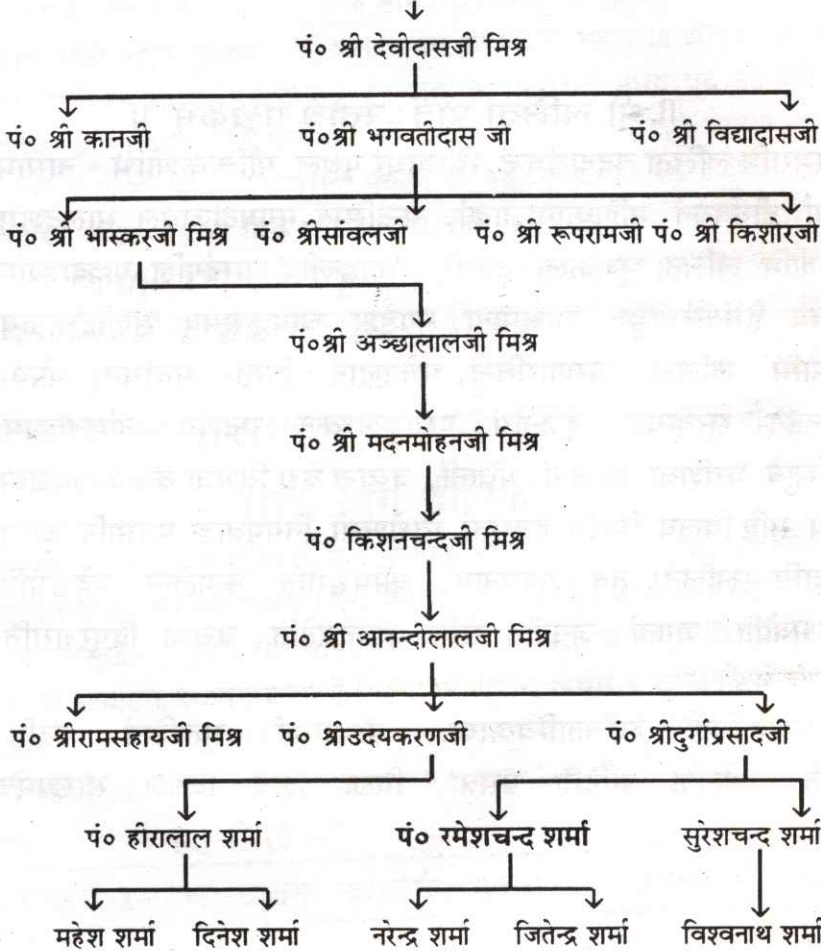
श्रीचक्र पूजा करते समय देवी के पूर्ण स्वरूप का ध्यान करें -

प्रातः पद्मनिभां देवीं बालार्ककिरणारुणाम् ।
जपाकुंकुम संकाशां दाडिमी कुसुमोपमाम् ॥१॥
पद्मराम प्रतिकाशां कुंकुमोदर संनिभाम् ।
स्फुरन्मुकुट माणिक्य किङ्किणी ज्वालमण्डिताम् ॥२॥
कालिलिकुल संकाश कुटिलालक पल्लवाम् ।
प्रत्यग्रारुण संकाश वदनाम्भोज मण्डलम् ॥३॥

॥ श्री ललिता प्रातः स्तोत्र पञ्चकम् ॥

प्रातः स्मरामि ललिता वदनारविन्दं, बिम्बाधरं पृथुल मौक्तिकशोभि - नासाम् ।
आकर्ण दीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं, मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वल भालदेशम् ॥१॥
प्रातर्भजामि ललिता भुजकल्प वल्लीं, रक्ताङ्गुलीय लसदंगुलि पल्लवाढ्याम् ।
माणिक्य हेमवलयाङ्गद शोभमानां, पुण्ड्रेक्षु चापकुसुमेषु सृणीर्दधानाम् ॥२॥
प्रातर्नमामि ललिता चरणारविन्दं, भक्तेष्टदान निरतं भवसिन्धु पोतम् ।
पद्मासनादि सुरनायक पूजनीयं, पद्माङ्कुशध्वज सुदर्शन लांछनाढ्यम् ॥३॥
प्रातः स्तुवै परशिवां ललितां भवानीं, त्रय्यन्त वेद्य विभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टि विलय स्थिति हेतुभूतां, विश्वेश्वरीं निगमवाङ मनसादि दूराम् ॥४॥
प्रातर्वदामि ललिते! तव पुण्यनाम, कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवोति जगतां जननी परेति वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥५॥

॥ फलश्रुति ॥

यच्छ्लोक पञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः, सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते ।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना, विद्यां श्रियं विमल सौख्यमनन्तकीर्तिम् ॥